

शिवपुराण भाषा

(ग्यारहवाँ खण्ड)

अनुवादक

पं० प्यारेलाल रुग्गू

प्रकाशक

नवलकिशोर प्रेस

लखनऊ

बारहवीं बार } सर्वाधिकार सुरक्षित { सन् १९३५ ई०

यदुवंशी व चंदेल आदि छः क्षत्रिय हैं॥वैश्य॥ जो बारह प्रकार के हैं और दश भांति के भी हैं और इनमें की सुनार आदि हैं शूद्र में कायस्थ हैं जो बारह प्रकार के हैं और अहीर, नाई, कोरी, काछी आदि संयुक्त हैं यद्यपि कायस्थों का हाल भविष्योत्तर-पुराण में भी पाया जाता है पर पद्मपुराण में अधिक है॥ चार आश्रम॥ पहिला ब्रह्मचर्य अर्थात् सोलह वर्ष पर्यन्त विद्या सीखना॥ दूसरा गृहस्थ अर्थात् ३२ वर्ष पर्यन्त गृहस्थी कार्य में प्रवृत्त रहना॥ तीसरा वानप्रस्थ अर्थात् अड़तालीस वर्ष तक योग में स्थित रहे॥ चौथा संन्यास अर्थात् चौंसठ वर्ष तक दण्ड को लिये रहे॥ फिर परमहंस का नाम पाता है पर कलियुग में संन्यास और अश्वमेधयज्ञ व गोमेधयज्ञ और मांस के पिण्ड और देवर से पुत्रोत्पत्ति निषेध हैं छन्द चाहे यह एक हजार तक हैं पर मैंने छः सौ तक देखे हैं और छन्द नाम वेद का भी है सो वह सात छन्द हैं—दशों दिशा पूर्व १ अग्नि २ दक्षिण ३ नैर्ऋत्य ४ पश्चिम ५ वायव्य ६ उत्तर ७ ईशान ८ स्वर्ग ९ भूमि १० जिनके अधिपति क्रम से इन्द्र १ अग्नि २ यम ३ कुबेर ४ वरुण ५ वायु ६ राजराज ७ हर ८ ब्रह्मा ९ विभत्स १० हैं॥ अठारह वर्ण॥ चार वेद, चार वर्ण, चार युग, तीन लोक, तीन काल, सम्पूर्ण १८॥ श्रीविष्णुजी के दश अवतार॥ मत्स्य १ कूर्म २ वाराह ३ नृसिंह ४ वामन ५ परशुराम ६ राम ७ कृष्ण ८ बौध ९ कलङ्की १०॥ व श्रीशिवजी महाराज के सौ अवतार॥ वामदेव आदि ५ शर्वादि ८ महाकालादि १० अहिर्बुध्न्यादि ११ जैगीषव्यादि २८ ज्योतिर्लिङ्ग॥ नन्दी भैरव, वीरभद्र, स्कन्द, कृतमुख, सर्वचक्षुदुर्वासा, ग्रहपति, वागीश, पिप्लादि, अवधूत-पति महेश, शार्दूल हनुमान्, वैश्यानाथ, जितनाथ, द्विज-द्विजेश, नरजरेश, भिक्षुकजटल, नर्तक, नटादि सम्पूर्ण १००॥

ग्यारह रुद्र शिवपुराण में लिखे हैं परन्तु कोषादि की पुस्तकों में ग्यारह रुद्र और बारह सूर्य के नाम अन्य रीति पर लिखे हैं जैसा कि लिखा जाता है ॥ ग्यारह रुद्र ॥ पशुपति १ भैरव २ रुद्र ३ विश्व ४ विशेष ५ अघोर ६ रूप ७ त्र्यम्बक ८ कपर्दि ९ शूल १० ईशान ११ ॥ द्वादश सूर्य ॥ सूर्य १ वरुण २ वेदांग ३ रवि ४ भानु ५ गभस्ति ६ विष्णु ७ दिवाकर ८ मित्र ९ यम १० रैति ११ आदित्य १२ ॥ सप्तऋषि ॥ कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ वशिष्ठ ४ गोतम ५ विश्वामित्र ६ जमदग्नि ७ इस मन्वन्तर में सप्त ऋषि हैं ॥ सात प्रकार की राज श्री ॥ मन्त्री १ शस्त्र २ घोड़ा ३ हाथी ४ देश ५ कोष ६ गढ़ ७ यह सात राजश्री कहलाते हैं और राजों को यह सात वस्तु आवश्यक हैं ॥ चौदह परम भागवत ॥ प्रह्लाद १ नारद २ पराशर ३ अम्बरीष ४ व्यास ५ शुक ६ शौनक ७ भीष्म ८ रुक्म ९ अङ्गद १० अर्जुन ११ पुण्डरीक १२ वशिष्ठ १३ विभीषण १४ आदि ॥ चौदह परम पशुपति ॥ दुर्वासा १ कौशिक २ ब्रह्मा ३ मार्कण्डेय ४ ऐन्द्र ५ बाणासुर ६ विष्णु ७ शुक्रि ८ मरीचि ९ रामचन्द्र १० गणादि ११ भार्गव १२ बृहस्पति १३ गोतमादि १४ ॥ हथियारों के नाम ॥ खट्वाङ्ग १ खड्ग २ चर्म ३ पाश ४ अंकुश ५ डमरू ६ शूल ७ चाप ८ बाण ९ गदा १० शक्ति ११ भिन्दिपाल १२ तोमर १३ मुशल १४ मुद्गर १५ पट्टिश १६ परिघ १७ भुशुण्डी १८ चक्र १९ आदि ॥ चौंसठि तन्त्र ॥ वीर १ सुतन्त्र २ फट्कारी ३ गलचूड़ामणि ४ कालीकल्प ५ कालिकाकुल ६ काली ७ तत्त्व ८ भैरव ९ कौमारी १० कालक ११ कौलार्णव १२ ज्ञानार्णव १३ कालकुलार्णव १४ शारदातिलक १५ कालिकाश्रुति १६ कौमारीकल्प १७ बीजचूड़ामणि १८ उत्तर विजयाकल्क १९ रुद्रयामलि २० सम्मो-

हन २१ नारायणी २२ सारस्वत २३ भावचूड़ामणि २४ श्रीकर्म २५ क्षीणतुण्ड २६ विमलेश्वरी २७ मुण्डमाला २८ संकर्षणगन्धर्व २९ दक्षिणामूर्ति ३० सन्धित ३१ तारातन्त्र ३२ नीलतन्त्र ३३ मन्त्ररत्नावली ३४ कुब्जका ३५ कालिकाश्रुति ३६ सिद्धेश्वर ३७ कोलककुल ३८ नीलभद्र ३९ कुलप्रकाश ४० सिद्धसारस्वत ४१ कुलसद्भाव ४२ वामकेश्वर ४३ तारार्णव ४४ कालिकाकल्प ४५ योगिनीतन्त्र ४६ वीरतन्त्र ४७ शुक्लियामलि ४८ लिङ्गागम ४९ ताराप्रदीप ५० गोपतन्त्र ५१ कालिकामहोग्र ५२ ताराकल्प ५३ वाराहीसंहिता ५४ मत्स्यसूत ५५ उड्डीस ५६ मेरु ५७ तारास्वर ५८ चूड़ामणि ५९ गलुशंभार ६० गलतन्त्र ६१ ब्रह्मयामलि ६२ आदि॥ चौदह विद्या॥ ब्रह्मज्ञान १ गायनविद्या २ रसायनविद्या ३ ज्योतिष् ४ वैद्यक ५ शस्त्रविद्या ६ पैरने की विद्या ७ व्याकरण ८ छन्द ९ कोक १० काव्य ११ घोड़े आदि की सवारी १२ नटविद्या १३ चातुरी १४॥ वेद के छः अङ्ग॥ शिक्षा १ ज्योतिष् २ कल्प ३ निरुक्ति ४ छन्द ५ व्याकरण ६॥ चौंसठिकला॥ लिखना १ चोरी २ बजाना ३ नाचना ४ गाना ५ नटकर्तब ६ झूठ को सच दिखलाकर कहना ७ चित्र खैंचना ८ तीर से फूल और चावल आदि काटना ९ फूलों की सेज सजाना १० दांतों की सफ़ाई ११ कपड़ों की सफ़ाई १२ बालों की सफ़ाई १३ रत्नों की पहिंचान १४ स्वांग करना १५ सोने की युक्ति १६ कुआं नाला आदि बनाना १७ दरिया या किश्ती में निशान मारना १८ मछली मारना १९ माला बनाना २० जूड़ा बांधना २१ मुकुट बांधना २२ पोशाक की सजावट २३ फूलों का गहना बनाना २४ इत्र आदि बनाना २५ इन्द्रजाल २६ प्रसूति में सुगमता की युक्ति २७ जल्दी खेलना २८ तरकारी के प्रकार व चावल

पकाना २९ कसार पकाने की युक्ति ३० चूर्ण का बनाना ३१ मद्य और आसवादि का खींचना ३२ सीना ३३ बद्धीखेलना ३४ डमरू का बजाना ३५ छलियों को खेल में परास्त करना ३६ सम्पूर्ण पुस्तकों को तुरन्त पढ़ लेना ३७ नाटक ३८ सामयिक श्लोक कहना ३९ लट्ठबाजी ४० तलवार की लड़ाई ४१ बाण-युद्ध ४२ हास्य ४३ गढ़ी बनाना ४४ रत्नों का परखना ४५ रुपये का परखना ४६ सम्पूर्ण धातुओं की पहिंचान ४७ रत्नों के रङ्ग की पहिंचान ४८ बुरे अच्छे आदमी की पहिंचान ४९ रस आदि बनाना ५० चिकित्सा औषधि आदि तुरन्त करना ५१ मेढ़ा और पक्षियों आदि को लड़ाना ५२ तोता मैना आदि का पढ़ाना ५३ बालों का गिराना ५४ बालों के धोने में नाना प्रकार की युक्ति ५५ मन और हाथ की चीज़ को जो गुप्त हो उसका बताना ५६ बहुत देशों की भाषा जानना ५७ पुष्प और उद्यान की सजावट ५८ सम्पूर्ण अक्षर यन्त्र में लाना ५९ अपनी ओर से अक्षर रखना ६० मन में श्लोक कहना ६१ काम करके छोड़ देना ६२ कपड़ों को चुरा लेना ६३ लड़कों को खिलाना ६४ ॥ आठ सिद्धियां ॥ अणिमा जिससे बहुत छोटा शरीर हो सक्ता है और दूसरा उसको देख नहीं सक्ता १ महिमा जिससे उड़ने की शक्ति प्राप्त होती है २ गरिमा जिससे उसको कोई उठा नहीं सक्ता ३ लघिमा सूक्ष्म से सूक्ष्म बनना ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ यह भी इसी प्रकार के हैं ॥ चार फल अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४ चार प्रकार की मुक्ति। सालोक्य अर्थात् परमात्मा के लोक में रहना १ सारूप्य अर्थात् परमात्मा के स्वरूप के अनुसार स्वरूप धारण करके वह रहना २ सामीप्य अर्थात् परमात्मा के समीप रहना ३ सायुज्य अर्थात् परमात्मा में मिल जाना ४ ॥ पञ्चरत्न ॥ सोना १ चांदी

मोती ३ लाजवर्द ४ प्रवाल ५ ॥ नवरत्न ॥ माणिक्य १ मुक्ता २ पन्ना ३ पुखराज ४ हीरा ५ नीलम ६ लहसुनियां ७ वैडूर्य ८ गोमेदक ९ ॥ ग्यारह रत्न ॥ बिल्लौर १ वज्र २ पद्मराग ३ नीलम ४ सरिक्क ५ यह पांच महारत्न कहलाते हैं और पुष्पराग १ वैडूर्य २ गोमेदक ३ स्फटिक ४ लहसुनियां ५ प्रवाल ६ यह सब मिलकर ग्यारह होते हैं ॥ चौदह धातु ॥ पहिले सात धातु सोना १ चांदी २ तांबा ३ रांगा ४ जस्त ५ सीसा ६ लोहा ७ दूसरे सात उपधातु सोनामाखी १ रूपरज २ तूतिया ३ कांसा ४ सिन्दूर ५ शिलाजीत ६ ॥ छः रस ॥ मधुर १ कषारी २ खटाई ३ कटुक ४ तिक्त ५ लवणखार ६ ॥ छत्तीस व्यञ्जन ॥ मुख्य करके चार प्रकार के भोजन हैं उनकी ३६ साखा हैं भक्ष्य १ भोज्य २ लेह्य ३ चोष्य ४ ॥ पञ्चामृत यथा शिवधर्मे ॥ पञ्चामृतं दधिक्षीरं सितामधुघृतं तथा ॥ छः चक्र ॥ मूलाधारचक्र १ स्वाधिष्ठानचक्र २ मणिपूरचक्र ३ अनाहदचक्र ४ विशुद्धचक्र ५ ब्रह्मरन्ध्रचक्र ६ ॥ तीन नाड़ी ॥ पिङ्गला १ इङ्गला २ सुषुम्णा ३ यह तीनों सूर्य चन्द्रमा और अग्नि से सम्बन्ध रखती हैं और पिङ्गला दाहिनी श्वास और इङ्गला बाईं श्वास और सुषुम्णा दोनों श्वास कहलाते हैं और कुम्भक १ रेचक २ पूरक ३ अर्थात् वायु का खींचना वायु का छोड़ना पवन का रोकना इन्हीं तीन नाड़ियों से होता है ॥ दश प्रकार की वायु ॥ प्राण १ अपान २ समान ३ व्यान ४ उदान ५ और इनका स्थान क्रम से चित्त १ गुदा २ नाभि ३ कण्ठ ४ और शरीर ५ हैं और नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनञ्जय [illegible] पांच मिलकर दश हुये ॥ महानाग ॥ वासुकी १ तक्षक [illegible] ३ शंख ४ कुलिक ५ पद्म ६ महापद्म ७ महा[illegible] परमानन्दनाथ १ प्रकाशनानन्दनाथ २ [illegible]

कोलेश्वरानन्दनाथ ४ भुगानन्दनाथ ५ सहजानन्दनाथ ६ गङ्गतानन्दनाथ ७ विमलानन्द ८ नाथ ६॥ वाहन॥ शिव के वाहन नन्दीश्वर बैल हैं॥ विष्णु के गरुड़॥ ब्रह्मा के हंस॥ सूर्य के घोड़ा॥ गणेश के मूषक॥ इन्द्र के हाथी॥ अग्नि के तोता॥ चन्द्रमा के हरिण॥ स्कन्द के मोर॥ देवी के सिंह॥ यमराज के भैंसा॥ लक्ष्मी के कमल॥ बुध के शशा॥ जल के बादल॥ मेघ के वायु॥ राहु के कछुवा॥ शुक्र के मेंढुक॥ पञ्च उपासक॥ शैव १ वैष्णव २ शाक्त ३ सौरि ४ गाणपत्य ५ और बौद्ध व जैनमती इन पांच से बाहर हैं॥ दशकाव्यांग॥ शब्द १ अर्थ २ छन्द ३ प्रसना ४ नायक ५ रीति ६ गुण ७ अलङ्कार ८ रस ९ व्यंग १० और शब्द तीन प्रकार का है॥ देवता १ नाग २ मनुष्य ३ अर्थात् यह तीन भाषा हैं और इनका बहुत बड़ा विस्तार है॥ पुराण के दश लक्षण॥ सर्ग १ विसर्ग २ स्थान ३ पोषण ४ ऊति ५ मन्वन्तर ६ ईशान ७ निरुद्ध ८ मुक्ति ९ अश्रेर्या १० इसका भी बहुत विस्तार है इस से नहीं लिखा॥ पांच प्रकृति॥ दुर्गा १ राधा २ लक्ष्मी ३ वाणी ४ शाकम्भरी ५॥ आठ शक्ति॥ इन्द्राणी १ कौमारी २ ब्रह्माणी ३ वाराही ४ चामुण्डी ५ वैष्णवी ६ माहेश्वरी ७ विनायकी ८॥ दश महाविद्या॥ तारा १ काली २ भुवनेश्वरी ३ भैरवी ४ कमला ५ बगलामुखी ६ छिन्नमस्ता ७ धूमावती ८ मातङ्गी ९ महाविद्या १०॥ शक्ति॥ वैष्णवी १ ब्रह्माणी २ रुद्राणी ३ माहेश्वरी ४ नारसिंही ५ बाराही ६ ऐन्द्राणी ७ कौमारी ८ सर्वमंगला॥ ९॥

पीठि ५२ भैरवसमेत।

छन्द।

हिंगुला पीठि भीमलोचन हैं कोटरिपीठि दिगम्बर।

कहि करवीर पीठि में भैरव तहां त्रिनेत्र अडम्बर ॥
सुगन्धा पीठि क्रोध हैं भैरव त्र्यम्बक पीठि सुनन्द ।
काश्मीर में हैं त्रिनेत्तर कहि भैरव सानन्द ॥
ज्वालामुखी पीठि में उन्नत जालन्धर में भीषण ।
हृदपीठि में बैजनाथ नैपाल कपाली तीक्षण ॥
मालव में अमरेश बिराजें भैरवरूप विशाल ।
उत्कलहू में जगन्नाथ कहि भैरवरूप कराल ॥
पीठिमण्डकी चक्रपाणि कहि भैरवजन सुखदानि ।
बहुलापीठि अभीरुभैरव उजयनि कपिल बखानि ॥
पट्टनपीठि चन्द्रशेखर करि त्रिपुर पीठि नकुलेश ।
तिस्रो पीठि उमानँद भैरव प्राग पीठि त्रलितेश ॥
भुवनेश्वरी पीठि सर्वोत्तम देवि भागवत गावे ।
वाराणसी कालभैरव हैं तन्त्र ग्रन्थ दरशावे ॥
मणिकर्णिका पीठि में भैरव निमिषि नाम अस गावे ।
कालपीठि असितांग नर्मदा भैरव चण्ड बतावे ॥
सावित्री में अश्वनाथ कहि गायत्री आनन्द ।
काञ्चीपुरी रुद्र भैरव कहि श्रीशैल बिन छन्द ॥
वृन्दावन भूतेश कहावे पीठि सँहारक रुद्र ।
वाराही में महा भैरवे जाकी कीर्ति समुद्र ॥
करतोया में वामन भैरव श्रीगिरि सुन्दरानन्द ।
पीठि कपाली भीमरूप कहि भैरवरूप सनन्द ॥
प्रभास पीठि में भैरव राजें चक्रतुण्ड तहँ छाजें ।
पीठिवन्तिकापुरी में भैरव लम्बकरण छवि छाजें ॥
चित्रपीठि कृत्यायू भैरव गोदावरि दशपानि ।
कीतुराख्य में वत्सनाभ कहि रत्नपीठि शिव जानि ॥
मिथिलापीठि जोमेश्वर भैरव कालिपीठि नकेश ।

चक्रेश्वर में चक्रनाथ कहि भैरव पूजावेश ॥
पद्मपीठि में मञ्जुल राजैं कहिये भैरव चण्ड।
अट्टहास में विश्वेश्वर कहि भैरव तेज अखण्ड ॥
हारपीठि में नन्दकेशव कहि भैरव तेज बखानि।
लङ्कापुरी में राक्षसेश्वर कहि भैरव व्रज वरदानि ॥
उड्यानपीठि में रुरुभैरव हैं मणि हेरम्ब संहार।
बावनपीठि में बावन भैरव फलदायक संसार ॥

पञ्चकन्या। अहल्या १ द्रौपदी २ तारा ३ कुन्ती ४ मन्दोदरी ५।

षोडशशृङ्गार यथा।

आदौ मज्जनचारुचीरतिलकं नेत्राञ्जनं कुण्डलं
नासामौक्तिकवेशहारकुसुमं झङ्कारिणौ नूपुरौ।
अङ्गे चन्दनचारुकञ्चुकिमणिं क्षुद्रावलीं घण्टिकां
ताम्बूलं करकङ्कणं चतुरता शृङ्गारकाः षोडश ॥ १ ॥

द्वादशभूषण यथा।

स०-शील औ लाज मिठाइ बतानिमों, तैसी इठाई सों धर्मसयूषन। साधुता और पतिव्रत तोष, मिताई सबै सों न काहे को दूषन ॥ तैसी विनै औ अचार क्षमा, गुरुलोगन सेवे को कोषन भूषन। एई तियान को तीरथ से शुभ, कीरतिकारी हैं द्वादश भूषन ॥

शृङ्गार १ हास्य २ करुणा ३ रुद्र ४ वीर ५ भयानक ६ बीभत्स ७ अद्भुत ८ शान्त ९ और भाव अभाव आदि असंख्य हैं इसके कारण नहीं लिखे। अठारह व्यसन। शिकार १ दिन में सोना २ निरर्थ बकना ३ स्त्री के अधीन होना ४ मैथुन आदि की वार्ता करना ५ मद्यपान ६ जुवा खेलना ७ गाना ८ नाच देखना ९ बाजा बजाना १० व्यभिचार ११ शत्रुता १२ ईर्षा १३

विपरीतवाक्य १४ कठोर वचन १५ शीघ्र मारना १६ गाली १७ और अपने स्वामी का अहित चाहना १८ षट्कर्म। वेद पढ़ना १ वेद पढ़ाना २ दान देना ३ दान लेना ४ जप करना ५ जप कराना ६ मुख्य करके ब्राह्मण के दश कर्म हैं जैसे शान्ति, दान्ति आदि उपचार जो ३८, १६, १०, ५ हैं।

व्रतार्के यथा।

अर्घ्यं च पाद्याचमनं मधुपर्कमुपस्पृशम् । स्नानं नीराजनं वस्त्रमाचामं चोपवीतिकम् ॥ पुनराचम्य भूषे च दर्शनालोकनात्ततः। गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः परम् ॥ पानीयं तोयमाचामं हस्तवासस्ततः परम्। ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं पुनः पुनः॥ गीतवाद्यं तथा नृत्यं श्रुतं चैव प्रदक्षिणम् । पुष्पाञ्जलिनमस्कारा अष्टत्रिंशत्समीरिताः ॥ इत्यष्टत्रिंशदुपचाराः ॥

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम् । मधुपर्कसमायुक्ता वसनाभरणानि च ॥ सुगंधिसुमनो धूपदीपमन्नेन तर्पणम्। माल्यानुलेपनं चैव नमस्कारं विसर्जनम् ॥ इति षोडशोपचाराः ।

अर्घ्यं पाद्यं च वसनमधुपर्काचमान्यपि । गन्धादयो निवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात् ॥ इति दशोपचाराः ।

गन्धपुष्पौ धूपदीपौ नैवेद्यं पञ्चमं स्मृतम् ॥ इति पञ्चोपचाराः ।

नवधा भक्ति । सेवन १ स्मरण २ कीर्तन ३ अर्चन ४ श्रवण ५ दास्य ६ वन्दन ७ सख्य ८ समर्पण ९ ॥ दश इन्द्रिय ॥ श्रवण १ त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ यह पांच ज्ञान इन्द्रिय हैं और हाथ १ गरदन २ गुदा ३ लिङ्ग ४ पग ५ यह पांच कर्म इन्द्रियां हैं ॥ सात धातु ॥ चर्म १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मज्जा ६ वीर्य ७ ॥ ५ तत्त्व ॥ पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ ॥ २५ प्रकृति ॥ काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ भय ५ यह पांच आकाश के गुण हैं और दौड़ना १

लेटना २ कांपना ३ चलना ४ संकोच ५ यह वायु के गुण हैं और ज्योति १ पसीना २ रक्त ३ लार ४ मूत ५ यह जल के गुण हैं।

त्वचा १ केश २ मांस ३ नाड़ियां ४ अस्थि ५ यह पांच पृथ्वी के गुण हैं। और प्यास १ भूख २ नींद ३ थकना ४ आलस्य ५ यह पांच अग्नि के गुण हैं।

८४०००००० योनि॥ वृक्ष २०००००० और जल से जो उत्पन्न हुये ९०००००० और कृमि आदि ११०००००० और पक्षी १०००००० और चतुष्पद ३०००००० और मनुष्य ४०००००० राजनीति॥साम अर्थात् मीठे वचन कहना १ दाम द्रव्य और धन देना २ भेद शत्रु के मित्रों को अपनी ओर कर लेना ३ दण्ड प्रकट अथवा गुप्त शत्रु को नाश करना ४ और सन्धि विग्रह आदि इन्हीं चार उपायों के विषय हैं।

चार अवस्था। जाग्रत् १ स्वप्न २ सुषुप्ति ३ तुरीय ४ चार प्रकार के दर्शन। राजा १ यति जो सम्पूर्ण विद्यानिधान हो २ पतिव्रता स्त्री ३ ब्राह्मणबौना ४ इनके दर्शन से अति पुण्य होता है।

आवश्यक कामों का व्योरा।

गुरु शिष्य का सम्बन्ध।

उचित है कि गुरु बहुत जान बूझ के करे और गुरु को उचित है कि एक वर्ष तक शिष्य का आचरण अवलोकन कर के चेला करे। यथा सारसंग्रहे।

(सद्गुरुस्स्वाश्रितं शिष्यं वर्षमेकं परीक्षयेत्)

क्योंकि जिस तरह से मन्त्री और अन्य सभासदों के पापों का भागी राजा होता है उसी तरह से गुरु शिष्य की दशा है यथा रुद्रयामले। राज्ञि चामात्यजो दोषः पत्नीपापं च भर्त्तरि। यथा शिष्यार्जितं पापं गुरुं प्राप्नोति निश्चितम्॥

और दिव्यागमन में लिखा है कि गुरु का वस्त्र, आसन, जटा, छाया, पानी जहां नहाया हो वहां नाँघना न चाहिये।

और गुरु * के निकट पूजन और गर्व के साथ कोई काम और शिष्यों को विद्या पढ़ाना और आज्ञा चलानी न चाहिये और जो मनुष्य गुरु को मनुष्य और मन्त्र को अक्षर और परमात्मा को पत्थर के सदृश जानते हैं वह नारकीय हैं जैसा कि ज्ञानार्णव में लिखा है और देवता की प्रसन्नता से अधिक गुरु की प्रसन्नता उचित है जैसा कि तन्त्रराज में आज्ञा है और गुरु के न होने पर उनके भाई, स्त्री और लड़के की पूजा उचित है और जो मनुष्य कि मन्त्र को छोड़ देते हैं वह मानो मृत्यु के मुख में पड़े होते हैं और जो मनुष्य कि गुरु का त्याग करते हैं वह निर्धन रहते हैं और यह मनुष्य दोनों के त्यागने से घोर नरक पाता है और गुरु के हाथ कोई चीज़ बेचना या गुरु से कुछ लेना मना है गुरु को आते हुये देखकर अगवानी करनी चाहिये और चलने के समय पीछे पीछे चलना उचित है और गुरु का पद माता पिता सबसे बड़ा है जैसा कि आगम-कल्पद्रुम और चक्रसार में लिखा है और योगिनी तन्त्र में लिखा है कि बाप, नाना, छोटा भाई आदि गुरु होने के योग्य नहीं हैं और गणेशाघमर्षण में आज्ञा है कि यती, पिता, वन-वासी जो वर्णाश्रम से रहित हों इनका मन्त्र शुभ नहीं होता और स्त्री को अपने पति से मन्त्र लेना उचित नहीं और कुरु-क्षेत्र में या और किसी महातीर्थ में सूर्यग्रहण के समय मन्त्र लेना उचित है और मत्स्यसूक्त में पिता अपने पुत्र को शिष्य करने का अधिकारी है।

---

* "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकः। अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरुरित्य-भिधीयते" ॥ १ ॥

दूसरी दीक्षा।

चारों वर्ण दीक्षा लेने के अधिकारी हैं क्योंकि दीक्षा बिन कोई कर्म फल नहीं देता और पूजा जप आदि फल नहीं देते जैसा कि पत्थर से मोती नहीं उपजता और दीक्षा लेने से करोड़ों जन्म के पाप दूर होजाते हैं और जो लोग दीक्षा लेने विना मर जाते हैं वे रौरवनरक में पड़ते हैं और जो मनुष्य कि आप पोथी में मन्त्र देखकर गुरु बिन मन्त्र जप करते हैं वे करोड़ जन्मतक नरक में रहेंगे कदाचित् अपने जन्मनक्षत्र राशि और नाम का ठीक चक्र मिले तो दूसरे चक्र में मन्त्र लेना अवश्य नहीं और जो मन्त्र बीस अक्षर से अधिक रखता है वह सिद्ध होने के योग्य नहीं और सब महीनों से मन्त्र लेने को चैत्र का महीना अति लाभदायक है और वैशाख में मन्त्र लेने से रत्न प्राप्त होते हैं ज्येष्ठ में मन्त्र लेने से मृत्यु और आषाढ़ में मन्त्र लेने से भाई मरता है और श्रावण में मन्त्र लेनेवाले के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं और भादों में मन्त्र लेने से लड़का मर जाता है और कुवार में मन्त्र लेना धन की प्राप्ति का कारण है और कार्त्तिक में मन्त्र लेने से मन्त्र सिद्ध होता है और अगहन में मन्त्र लेना किसी बड़े शत्रु के भय का कारण है और माघ व फाल्गुन में मन्त्र लेनेसे बुद्धि बढ़ती है इसकी गणना संक्रान्ति से है चन्द्रमा से नहीं और रविवार, बुध, बृहस्पति, शुक्र बहुत अच्छे दिन मन्त्र लेने के लिये हैं और द्वीज, तीज, पञ्चमी, छठ, सप्तमी, नवमी, द्वादशी और पूर्णमासी तक उत्तम मन्त्र लेने के लिये हैं और सन्ध्या और बिजली के गिरने और भूकम्प और अन्य उपद्रवों के समय मन्त्र लेना न चाहिये और जो नीचे लिखे हुये महीनों में मन्त्र लें उनको कुछ मास तिथि योग की आवश्यकता नहीं अर्थात् भाद्रपद षष्ठी आश्विन कृष्ण-

पक्ष की चतुर्दशी कार्त्तिक की नवमी अगहन तीज फाल्गुन नवमी पौष नवमी शुक्लपक्ष की माघ चतुर्थी चैत्र चतुर्दशी वैशाख तीज ज्येष्ठ दशहरा पञ्चमी सुदी असाढ़ तीज श्रावण शुक्ला पञ्चमी पर सूर्यग्रहण सबसे उत्तमोत्तम हैं कदाचित् मङ्गल के दिन चौथ पड़े या इतवार को सप्तमी हो अथवा सोमवार के दिन अमावस हो तो सूर्यग्रहण से सौ हिस्से अधिक फल मिलता है इसके सिवाय जिस दिन गुरु कृपा करके मन्त्र दें वह दिन सबसे उत्तम है।

तीसरे माला आसन जप मन्त्र का संस्कार।

प्रकट हो कि माला तीन प्रकार की हैं एक कर माला दूसरी मनमाला तीसरी मणिमाला। करमाला यह है जैसा कि माला-तन्त्र में श्लोक लिखा है।

मालातन्त्रे श्लोकः।

अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु। तर्जनीमूलपर्यन्तं करमाला प्रकीर्तिता १ अंगुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात्। पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् २ संस्थाप्य हृदये हस्तं तिर्यक्कृत्वा करांगुलीः। आच्छाद्य हस्तं वस्त्रेण दक्षिणेन सदा जपेत्॥ ३॥

अर्थात् बीच में दो पोर छोड़कर बाकी सब पोरों में जाप करे और कपड़े से हाथ बन्द करके हाथ को छाती में रखकर तिरछे हाथ से जाप करना चाहिये और पोरों की लकीरों में जप करने से वह जप व्यर्थ हो जाता है और सब मालाओं से रुद्राक्ष की माला श्रेष्ठतर है।

सौरसंहितायां यथा।

इन्द्राक्षशङ्खपद्माक्षपुत्रजीवकमौक्तिकैः। स्फाटिकैर्मणिरत्नैश्च स्वर्णैश्च विद्रुमैस्तथा १ राजितैः कुशमूलैश्च गृहस्थस्याहमा-

लिकाः। अंगुलीगणनादेकं पर्वपर्यन्तमुच्यते २ पुत्रजीवैर्दश-
गुणं शतसंख्यैः सहस्रकम्। प्रवालैर्मणिरत्नैश्च दशसाहस्रकं
फलम् ३ तदेव स्फाटिकैः प्रोक्तं मौक्तिकैर्लक्षमुच्यते। पद्माक्षैर्दश-
लक्षं स्यात् सौवर्णैः कोटिरुच्यते ४ कुशग्रन्थ्याकोटिशतं रुद्राक्षै-
स्स्यादनन्तकम्। सर्वैर्विरचिता माला नृणां मुक्तिफलप्रदा ५॥

और जब कि माला न मिले तब उँगलियों पर जप करना चाहिये और पच्चीस दाने की माला मुक्ति देनेवाली है और तीस दाने की माला धन और सत्ताईस दाने की सर्वकार्य और मनोरथ और पन्द्रह दाने की माला शत्रु को नष्ट करनेवाली है चौवन दाने की माला से तमाम काम सिद्ध होते हैं और एकसौ आठ दाने की माला सबसे उत्तम है (आसन) सकाम लोगों के वास्ते लाल आसन अच्छा है और काला आसन ज्ञान और मुक्ति के चाहनेवालों को उचित है और माया के चाहनेवालों को बाघम्बर का आसन योग्य है और मन्त्र केवल कुश आसन के ऊपर जप करने से सिद्ध होता है और आसन के ऊपर मन्त्र जप करने से दुःख होता है और काठ के ऊपर आसन लगाने से निर्धनता प्राप्त होती है और पत्थर का आसन रोग को उत्पन्न करता है और घास आदि का आसन यश कीर्ति नष्ट करनेवाला है और वृक्ष के पत्तों का आसन बुद्धि का कारण है और वस्त्र के आसन से जप और तप नष्ट हो जाता है हां यद्यपि कुछ और न मिले तो कुछ हानि नहीं और जो वस्त्र में रेशम या ऊन मिला हो तो अयोग्य नहीं और कोई गृहस्थ विना दीक्षा के मृगचर्म पर किसी प्रकार बैठे नहीं इस प्रकार से कि यह आसन केवल उदासी ब्रह्मचारी और यती के लिये रक्खा गया है और भेड़, हाथी, शेर, ऊँट, रीछ और सांप की खाल पर केवल मोहन आदि मन्त्र जप करते समय बैठना

योग्य है और गृहस्थ को चाहिये कि माला को विधि संयुक्त डोरे में पिरोकर मन्त्रों से ठीक करे और फिर उसको छिपा रक्खे नहीं तो जप नष्ट हो जाता है जप चारों पदार्थ का देनेवाला है जो विधि से किया जावे और यज्ञ से कम जप नहीं है और यह जप तीन प्रकार का है प्रथम वाचक द्वितीय उपांशु तृतीय मानस जब मन्त्र वचन के साथ पढ़ा जाता है तो यह वाचक जप कहा जाता है और जब कि केवल अपने कान तक कुछ सुनने में आता है तो यह उपांशु है और जब कि मन्त्र केवल मन ही मन में अक्षर और मात्राओं समेत जप किया गया तो यह मानस है और उचित है कि जप करने के समय मन्त्र के अर्थ समझता जावे और मन को दृढ़ करके दूसरी ओर न जाने दे और मानस जप दोनों प्रकार के जपों से दश हज़ार गुण बड़ा है यदि कोई मनुष्य बहुत उतावली मन्त्र का जप करता है तो रोगी होता है जो बहुत धीरे २ जप करता है तो उसके धन का अभाव होता है इस कारण उचित है कि समानता को काम में लावे जैसा कि तागे में मोती पिरोया जाता है और जो मनुष्य मन्त्र को प्रकट और स्तोत्र को गुप्त और जप को ऊँचे पढ़ता है तो उसको फल नहीं प्राप्त होता है जैसा कि पानी कच्चे कुलहड़े से नहीं निकल सक्ता और जो मनुष्य मन्त्र को अर्थ चैतन्यता भग और मुद्रा के जानने बिना सवा लक्ष पर्यन्त भी जप करे तौ भी सिद्ध नहीं हो सक्ता मन्त्र के संस्कार जो दश प्रकार के हैं जैसा कि रुद्रयामल तन्त्र में लिखा है ।

मन्त्राणां संस्काराः ।

जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा । तथाभिषेको विमलीकरणाप्यायनं पुनः ॥ तर्पणं दीपनं गुप्तिरित्येता मन्त्रसंस्क्रियाः ॥

सो जो मनुष्य विना भूप कलावती भूषण उपदेश प्रयोग और

पञ्च आदि के मालूम करने विना कुछ जप या उपदेश करता है वह निरर्थक है।

चौथे त्रिपुण्ड्र तिलक आदि।

शिवपुराण के नवें खण्ड में त्रिपुण्ड्र की विधि विस्तार से लिखी है इस जगह पर कुछ संक्षेप में लिखा जाता है कि दोनों भवों के बीच भाल में अनामिका अर्थात् छुंगनी के पास की और मध्यमा अर्थात् बीच की अंगुली से दो लकीरें भस्म से सजाकर और तीसरी लकीर अंगुष्ठ से दोनों लकीरों के बीच सजावे और मृत्युञ्जय अथवा कालाग्नि मन्त्र से त्रिपुण्ड्र लगावे। द्वादश तिलक। शिर, माथा, गर्दन, छाती, पांजर, दोनों भुजा, नाभि, कमर, कण्ठ, हृदय अथवा छाती के ऊपर बारह जगह तिलक लगाने को द्वादश तिलक कहते हैं—और ब्राह्मण को अछिद्र तिलक लगाना चाहिये बाक़ी तीन वर्ण छिद्रसहित तिलक लगावें—जो चारों वर्ण में नहीं है वह तिलक लगाने का अधिकारी नहीं है—और शैव लोगों को त्रिपुण्ड्र लगाना उचित है—और शाक्त लोगों को अर्द्धचन्द्र और सौर लोगों को गोल और गणेश के पूजकों को चौकोण लगाना उचित है और वैष्णव को दीपज्योति सीधा और कनेर व बांस के पत्ते के सदृश छिद्र सहित द्वादश तिलक धारण करने योग्य हैं और यह भी योग्य है कि पूजन से पहिले भस्म को लगावे और पूजन के मध्य में मृत्तिका को काम में लावे और केशर व चन्दन आदि पूजन के पीछे धारण करे और भस्म होम आदि की राख से बनाई गई हो और मृत्तिका तीर्थ या किसी देवता के स्थान की या तुलसीवृक्ष के नीचे की हो और चन्दन लाल सफ़ेद और पीला जो देवता के पूजन के पीछे बाक़ी रह गया हो धारण करना योग्य है और चन्दन विना

कपूर मिलाने के देवता को चढ़ाना अयोग्य है और केवल अपने लिये चन्दन बनाना नहीं चाहिये और सूर्य को अञ्जलि देने विना किसी देवता का पूजन योग्य नहीं है ।

पांचवां षोडशोपचार ।

उपचार सोलह प्रसिद्ध हैं अर्थात् सोलह चीज़ के साथ पूजन करना कहा जाता है—परन्तु देवी आदि के पूजन विषे चौंसठ उपचार तक हैं और १६, १५, २८, ५, ८, ६ और तीन तक उपचार हैं—इस कारण हर एक का विस्तार अच्छे प्रकार लिखते हैं । षोडशोपचार ये हैं—आवाहन १ आसन २ पाद्य ३ अर्घ्य ४ आचमन ५ स्नान ६ बिछौना ७ यज्ञोपवीत ८ चन्दन सुगन्धदार ९ पुष्प १० धूप ११ दीप १२ नैवेद्य १३ प्रणाम १४ प्रदक्षिणा १५ विसर्जन १६ जैसा कि लिंगपुराण में लिखा है ।

श्लोक लिङ्गपुराणे यथा ।

आवाहनासनं पाद्यमार्घ्यमाचमनीयकम् । स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धम्पुष्पञ्च धूपकम् १ दीपमन्नन्नमस्कारम्प्रदक्षिणाविसर्जनो

जो कोई मनुष्य यह प्रश्न करे कि शालग्राम और नर्मदेश्वर लिङ्ग के पूजन में आवाहन १ विसर्जन २ दो उपचार नहीं होते तो सोलह किस तरह से होंगे तो कहना चाहिये कि उनके पूजन में आवाहन की जगह पर ध्यान और विसर्जन की जगह पर क्षमापन संयुक्त किये जाते हैं और स्कन्दपुराण में षोडशोपचार यह लिखे हैं ।

स्कन्दपुराणे यथा ।

ध्यान १ आसन २ पाद्य ३ अर्घ्य ४ आचमन ५ स्नान ६ वस्त्र ७ उपवीत ८ भूषण ९ गन्ध १० पुष्प ११ धूप १२ दीप १३ नैवेद्य १४ प्रदक्षिणा १५ नमस्कार १६ ।

और यह पूजन पांच प्रकार का है अर्थात् पूजा १ आराधन २ यजन ३ अर्हण ४ अर्चन ५ पाँच प्रकार के पूजा का विस्तार—उत्सव के अन्ततक पूजन है—दीपन तक आराधन है—आचमन तक यजन है—और हव्य तक अर्चन है—और ब्रह्मभोजन तक अर्हण है।

आठ उपचार।

अगर किसी मनुष्य को सोलह उपचार करने की पूजन में सामर्थ्य न हो तो वह केवल आठ उपचार से पूजन करे जैसी शैवागम में आज्ञा है।

गन्धं पुष्पं च धूपं च दीपमन्ननिवेदनम्।
ताम्बूलञ्च नमस्कारम्प्रदक्षिणाक्षमापने॥ १॥

और जो आठ उपचार की भी शक्ति न हो तो केवल ६ उपचार से (जैसा कि स्कन्दपुराण की आज्ञा है) पूजन करे—स्नान १ गन्ध २ फूल ३ धूप ४ दीप ५ नैवेद्य ६ और जो इतनी भी सामर्थ्य न हो तो केवल तीन उपचार से पूजन करे अर्थात् स्नान १ नैवेद्य २ चरणों पर गिर पड़े ३।

तदुक्तं सौरसंहितायाम्।

अभिषेकं च नैवेद्यं नमस्कारस्तथैव च।
एतावदेव कर्तव्यं शिवभक्तेन यत्नतः॥ १॥

और जो इतना भी न हो सके तो केवल पुष्प चढ़ावे।

छठे प्रदक्षिणा।

उचित है कि तीन प्रदक्षिणा दण्डवत् के साथ देवता की करे क्योंकि प्रदक्षिणा करने से पूजन सम्पूर्ण दोषों से निवृत्त होता है।

तदुक्तं पाराशरस्मृतौ।

प्रदक्षिणात्रयंकुर्यात्प्रकृत्याप्रणतिर्भुवि।शान्तिपूजातिकल्याणी सर्वदोषविवर्जिता १ अयत्नलभ्या सर्वेषां भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।

और जो आदमी दण्डवत् करने से लाचार हो तो उसको चलते फिरते सोते जागते में केवल स्मरण करने से पूजन का फल प्राप्त होता है।

सातवां बिल्वपत्र।

और विना बिल्वपत्र के शिवजी की पूजा और विना तुलसी विष्णुजी की पूजा और बलिदान विना देवी की पूजा उत्तम और रुचिकारक नहीं है और जो कोई मनुष्य दो या तीन बिल्वपत्र भी शुद्धतापूर्वक शिवजी के ऊपर चढ़ावे तो उसके मुक्त होने में कुछ भी सन्देह नहीं है और जो बिल्वपत्र कटी न हो तो जो ऐसी एक बिल्वपत्र भी शिव के ऊपर चढ़ावे तो शिव-लोक में जा रहे और बिल्ववृक्ष के दर्शन व स्पर्शन व प्रणाम करने से रात दिन के सम्पूर्ण पाप दूर हो जाते हैं और चौथ, अमावस, अष्टमी, नवमी, चौदस, संक्रान्ति और सोमवार के दिन बिल्वपत्र तोड़ना मना है।

तदुक्तं लिङ्गपुराणे।

अमा रिक्ता च संक्रान्तावष्टम्यां चन्द्रवासरे।
बिल्वपत्रं न च च्छिन्द्याच्छिन्द्याच्चेन्नरकं व्रजेत् ॥ १ ॥

और जो बिल्वपत्र किसी जगह पर न मिले तो बासी और सूखी बिल्वपत्र लेकर पूजन करे क्योंकि तुलसी तीस दिन और बिल्वपत्र चालीस दिन और कमल तीन दिन और केतकी पांच दिन तक के तोड़े हुये पवित्र और चढ़ाने के योग्य रहते हैं और जायफल, जावित्री, लौंग, केशर एक वर्ष पर्यन्त चढ़ाने के काम के हैं अन्य और कोई फूल व पत्र बासी और दूसरे दिन के तोड़े हुये किसी देवता के चढ़ाने योग्य नहीं रहते हां माला और माली के घर के फूल में कुछ हानि नहीं और जहां कहीं हर दिन बिल्वपत्र न मिले वहां सात दिन तक बिल्वपत्र

रोज़ चढ़ाने के पीछे धोकर रख लेवे और रोज़ सात दिन तक वही चढ़ाया करे आठवें दिन न चाहिये यदि संयोग से कहीं बिल्वपत्र न मिले तो नये और नर्म चावल को बिल्वपत्र के बदले चढ़ाना ठीक है और नारदीयपुराण में लिखा है कि बिल्वपत्र और तुलसी उलटी चढ़ाना चाहिये बाक़ी और सब फूल और फल जिस तरह पैदा होते हैं उसी तरह चढ़ाना चाहिये पर स्कन्दपुराण व कई और पुराणों में आज्ञा है कि बिल्वपत्र फूल आदि औंधे कभी न चढ़ावें वरन् जिस तरह उपजते हैं उसी तरह चढ़ाना चाहिये और शिवज़ी महाराज का श्रीमुख से वाक्य है कि हमको रत्न, मोती, मूंगा, हीरा आदि बिल्वपत्र विना रोचक नहीं और बिल्वपत्र व कमल चढ़ाने की संख्या एक हज़ार तक की है पर एक या दो या आठ हज़ार से अधिक होजाने चाहिये जब कि बासी में कुछ हानि नहीं तो संख्या पूरी कर देनी चाहिये और जहां कहीं कि धूप, दीप और नैवेद्य आदि न हों वहां बिल्वपत्रों से पूजा पूर्ण कर देनी चाहिये और जो अपने पुत्र या शिष्य या नौकर के सिवाय किसी दूसरे मनुष्य की लाई हुई या शूद्र से मोल पर लाई हुई बिल्वपत्र कोई चढ़ावे तो बड़ा पाप होता है और जो अपने हाथ से कोई मनुष्य नर्म और साफ़ बिल्वपत्र लाकर चढ़ावे तो वह शिवलोक में पहुँचकर शिव के सदृश आप भी होजावे और जो हर दिन एक बिल्वपत्र भी अपनी लाई हुई कि वह कीड़े और मकड़ी आदि से साफ़ हो शिवजी महाराज के ऊपर चढ़ावे तो बहुत फल पाता है और जो शिवजी के पञ्चाक्षरी मन्त्र से निश्चयपूर्वक बिल्वपत्र शिव के ऊपर चढ़ावे तो अवश्य शिव होजावे।

आठवें फूल।

जो कोई मनुष्य फूलों के विना शिव और विष्णु आदि की

पूजा करे तो उसका कुल और धर्म नष्ट होजावे और जो एक फूल से भी शिव और विष्णु आदि की पूजा करे तो कुल समेत प्रसन्न बना रहे और फूल चाहे नदी में उपजें वा फुलवाड़ी के हों पर सुगन्धित हों ऐसे पुष्प चढ़ाने चाहियें और पत्र और पुष्प जो जंगल या पहाड़ में उपजे हों सब शिवजी के ऊपर चढ़ सक्ते हैं पर उनमें कीड़े और छिद्र न हों और वासी और रङ्ग से लाल भी न हों और कनेर कमल के फूल लाल रङ्गवाले भी शिवजी पर चढ़ाने चाहियें इन दोनों की मनाही नहीं है जैसा कि सौरपुराण में लिखा है।

यथा।

रक्तोत्पलैः कर्णिकारैर्यः करोति ममार्चनम्।
स भाग्यवान्मनुष्येषु मम स्यात्प्रियकृत्तमः॥ १॥

और तर्जनी अंगुली और अंगूठे से मुद्रा करके फूल देवतों के ऊपर चढ़ावे और मदार व धतूरे के फूल विष्णुजी के ऊपर न चढ़ाने चाहियें मना हैं और लाल कनेर या सफ़ेद कनेर का एक फूल भी शिवजी व विष्णुजी के ऊपर चढ़ावे तो अवश्य मुक्ति पावे और कचरी १ कुन्द २ केतकी ३ गुड़हल ४ दोप-हरिया ५ मालती ६ और जूही ७ यह सात प्रकार के फूल किसी अवस्था में शिवजी के ऊपर न चढ़ावे—इसी प्रकार से देवी के ऊपर दूब और मदार के फूल चढ़ाना अयोग्य है—और तगर और अगस्त्य के पुष्प सूर्य के ऊपर चढ़ाना मना है—और तुलसी किसी अवस्था में गणेश के ऊपर न चढ़ावे और ज्ञानमाला में यह आज्ञा है कि अक्षत विष्णुजी के ऊपर—तुलसी गणेश के ऊपर—दूब देवी के ऊपर—बिल्वपत्र सूर्य के ऊपर—धतूरा और मदार के पुष्प विष्णु के ऊपर किसी अवस्था में नहीं चढ़ावे—और सफ़ेद व पीले पुष्प विष्णुजी को और

देवीजी व सूर्यजी व गणेशजी को लाल पुष्प अतिरोचक और प्रिय हैं–और जो फूल कि कीड़ों आदि के साथ हों १ या बाल पुष्पों में सिमटे हों २ या सुगन्धहीन हों ३ या सुगन्ध अतितीक्ष्ण हो ४ या कली हों ५ वा मैले हों ६ या सूंघे हुये हों ७ या धरे हुये हों ८ या काले वस्त्र या बासन में बाँधे या रक्खे हों ९ या सूखे हों १० या बासी हों ११ या ज़मीन के गिरे हों अथवा स्नान के पीछे तोड़े गये हों १२ इस भांति के पुष्प सब देवताओं पर चढ़ाना अयोग्य है परन्तु चम्पा और कमल की कली इन दोनों को तोड़ना और चढ़ाना योग्य है पर जो स्नान के पीछे तोड़े गये हों इस कारण यह दोनों प्रकार के पुष्प स्नान के पीछे तोड़ना योग्य है और जिस प्रकार से कि माला और माली के घर के फूलों में कुछ बासी की हानि नहीं है–उसी प्रकार पुष्पाञ्जलि देने में सीधे उलटे का कुछ विचार नहीं है और तुलसी १ चम्पा २ कोकाबेलि ३ मौलासिरी ४ कुशा ५ दूब ६ पान ७ बिल्व ८ देवनी ९ फरसा १० मणिद्रुम ११ विष्णुक्रांता १२ आँवला १३ अपामार्ग (अर्थात् लटजीरा) १४ इन सबके पत्ते देवताओं के ऊपर चढ़ाना अति उत्तमोत्तम है।

नवें धूप आदि–पहिले सर्वगन्ध।

कस्तूरी दो भाग १ चन्दन चौथाई भाग २ कुंकुम तीसरा भाग ३ और कर्पूर ४ सबके बराबर मिलाकर देवता पर चढ़ावे तो यह धूप सब देवताओं को रोचक है–इसका नाम सर्वगन्ध है।

दूसरी यक्षकर्दम। कर्पूर १ अगुरु २ कस्तूरी ३ चन्दन ४ कङ्कोल ५ इन पांचों चीज़ों से बनाना चाहिये।

तदुक्तं व्रतार्के।

कर्पूरमगुरुश्चैव कस्तूरीचन्दनं तथा।
कङ्कोलं च भवेदेभिः पञ्चभिर्यक्षकर्दमः॥ १॥

तीसरी धूप । अगुरु १ चन्दन २ मुस्ता ३ सिह्लाद ४ कस्तूरी ५ बराबर लेकर धूप बनावे जैसा कि भविष्यपुराण में आज्ञा दी है ।

हेमाद्रौ भविष्ये ।

अगुरुं चन्दनं मुस्ता सिह्लादं दृषदं तथा ।
समभागं तु कर्तव्यं धूपोऽयममृताह्वयः ॥ १ ॥

और धूप के दश अङ्ग हैं जैसा कि इस श्लोक में प्रसिद्ध होगा ।

षड्भागकुष्ठं द्विगुणो गुडश्च लाक्षात्रयं पञ्च नरस्य भागः ।
हरीतकीसर्जरसश्च मांसी भागैकमेकं त्रिलवं शिलाजम् १
घनस्य चत्वारि पुरस्य चैको धूपो दशाङ्गः कथितो मुनीन्द्रैः ।

दशवें मुद्रा—शिवलिङ्ग की मुद्रा ये हैं ।

स्कन्दपुराणे ।

उच्छ्रिते दक्षिणाङ्गुष्ठे वामाङ्गुष्ठेन बन्धयेत् । वामाङ्गुली-दक्षिणाभिरङ्गुलीभिश्च वेष्टयेत् १ लिङ्गमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यकारिणी । श्रीकामः शीर्षिण कुर्वीत राज्यकामस्तु नेत्रयोः २ मुखे त्वन्नादिकामस्तु ग्रीवायां रोगशान्तिकृत् । हृदये सर्वकामश्च ज्ञानार्थं नाभिमण्डले ३ राज्यकामस्तु बाह्वोर्वै राष्ट्रकामस्तु पादयोः ।

विष्णुजी की सत्रह मुद्रा ये हैं—रामार्चनचन्द्रिकायामगस्त्यः ।

आवाहनी स्थापनी च सन्निधीकरणी तथा । सुसन्निरोधिनी मुद्रा सम्मुखीकरणी तथा १ संकलीकरणी चैव महामुद्रा तथैव च । शङ्खचक्रगदापद्मधेनुकौस्तुभगारुडाः २ श्रीवत्सवनमाले च योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ।

ग्यारहवें व्रत ।

जो मनुष्य कि अपने वर्ण और आश्रम में सन्तोष करता है

और सत्यवादी है और जीवों के ऊपर दयालु होता है ऐसे मनुष्य का व्रत नष्ट नहीं होता—व शीघ्र ही फल देता है—और कूर्मपुराण में यह आज्ञा है कि ब्राह्मण १ क्षत्रिय २ वैश्य ३ शूद्र ४ महादेवजी का पूजन दान यज्ञ और व्रत करने से शिवजी की सायुज्य और सामीप्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं।

कूर्मपुराणे यथा।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैव द्विजोत्तम। अर्चयन्ति महादेवं यज्ञदानसमाधिभिः १ व्रतोपवासनियमैर्होमस्वाध्यायतर्पणैः। तेषां वै रुद्रसायुज्यं सामीप्यं नापि दुर्लभम् २॥ देवलोऽपि॥ व्रतोपवासनियमैः शरीरोत्तापनैस्तथा। वर्णाः सर्वेऽपि मुच्यन्ते पातकेभ्यो न संशयः ३॥ भारते॥ मामुपाश्रित्य कौन्तेय येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्याश्च शूद्राश्च तेऽपि यान्ति पराङ्गतिम् ४॥ देवीपुराणे॥ स्नातैः समुदितैर्हृष्टैर्ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृपैः। वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेच्छैरन्यैश्च मानवैः ५ स्त्रीभिश्च कुरु शार्दूल तद्विधानमिदं शृणु॥

और देवल का वाक्य है कि सब वर्ण व्रत और संयम से अपने शरीर को जलाकर सर्व पापों से रहित हो सक्ते हैं और महाभारत में लिखा है—कि व्रत करने से स्त्री, शूद्र और वैश्य भी परम पद को प्राप्त होते हैं—और देवीपुराण में स्त्री और म्लेच्छ को भी व्रत करने की आज्ञा दी गई है—परन्तु स्त्री को विना आज्ञा अपने स्वामी के किसी अवस्था में व्रत रखने की आज्ञा नहीं है जैसा कि वर्णन होता है।

मार्कण्डेयपुराणे।

नारी नाल्पमनुज्ञाता भर्त्रा पित्रा सुतेन वा।
निष्फलं तु भवेत्तस्या यत्करोति व्रतादिकम्॥ १॥

कात्यायनोक्ते यथा ।

पत्यौ जीवति या नारी तूपवासं व्रतं चरेत् ।
आयुष्यं हरते भर्त्तुः सा नारी नरकं व्रजेदिति ॥ १ ॥

और विधवा स्त्री को अपने माता पिता की आज्ञा लेने के उपरांत व्रत रखना उचित है और जब व्रत रक्खे तो पहिले ताम्रपात्र हाथ में रखकर संकल्प करे और प्रभात को स्नान करके नित्यकृत्य से निश्चिन्त हो जावे और हो सके तो उस दिन पृथ्वी पर लेटे और कुछ दिन भर न खावे और जप और होम करे और व्रत के अन्त में कुछ दान दे और चौबीस या बारह या पांच या तीन ब्राह्मणों को भोजन खिलाकर दक्षिणा दे और व्रत के दिन चार बातें अवश्य करनी चाहिये पहिले ब्रह्मचर्य रहे अर्थात् जूता आदि न पहिने दूसरे सिवाय सच के झूठ बात अपने मुख से न निकाले तीसरे किसी जीवधारी को न मारे चौथे आमिष अर्थात् मांस न खावे और ब्रह्मचर्य शब्द के अर्थ स्त्रीप्रसंग के त्याग करने के भी हैं कइयों का वचन है कि परस्त्री के साथ मैथुन मना है परन्तु बहुत से महात्मा इस बात पर सम्मति रखते हैं कि उस दिन कोई स्त्री प्रसंग के योग्य नहीं है और आमिष शब्द से केवल मांस ही के अर्थ नहीं हैं बरन और चीज़ें भी मांस के सदृश उसमें गिनी गई हैं और कोई व्रत रखकर उसका छोड़ना महापाप है ।

मदनरत्नछागले यथा ।

पूर्वं व्रतं गृहीत्वा यो नाऽचरेत्काममोहितः ।
जीवनेऽपि च चाण्डालो मृते श्वाऽभिजायते ॥ १ ॥

और श्राद्ध और व्रत के दिन दतवनि नहीं करनी चाहिये ।

वृद्धवशिष्ठः ।

उपवासे तथा श्राद्धे न कुर्याद्दन्तधावनम् । काष्ठं विनेति शेषः ॥

व्यासोक्तिः ।

अपो द्वादशगण्डूषैर्विदध्याद्दन्तधावनम् ॥

और देवल ऋषि का वाक्य है कि खाने और पानी पीने और पान खाने और दिन के सोने और स्त्रीप्रसंग से व्रतभंग होता है पर अशक्त मनुष्यों को मनाही नहीं है वह पानी आदि पीवें।

यथा देवलः ।

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलचर्वणात् ।
उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् ॥ १ ॥

और व्रत के एक दिन पहले और पारण के दिन मांस न खावे और अपने पति के रोगी होने पर स्त्री व्रत रखने की अधिकारिणी है कि अपने पति के बदले व्रत रक्खे और जो चीजें कि व्रत में खानी चाहिये और जिनकी मनाही है वे नीचे लिखी जाती हैं और नियमित प्रण के उपरान्त व्रत का उद्यापन करना चाहिये।

अथ व्रतहविष्याणि कात्यायनः ।

हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनुव्रीहयः स्मृताः ।
माषकोद्रवगौरादीन् सर्वाभावेपि वर्जयेत् ॥ १ ॥

अग्निपुराणे ।

व्रीहिषष्टिकमुद्गाश्च कलायाः सलिलं पयः ।
श्यामाकाश्चैव नीवारा गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥ २ ॥

कूष्माण्डालाबुवार्त्ताकपालक्योतिस्निकास्त्यजेत् । चरुभैक्ष्यं सक्तुकणाः शाकं दधि घृतं मधु ३ श्यामाकाः शालिनीवारा यावकं मुद्गतण्डुलम् । हविष्यं व्रतनक्तादावग्निकार्यादिके हितम् ४ मधुमांसं विहायान्यद्व्रते च हितमीरितम् ॥ ५ ॥

भविष्ये यथा।

हैमन्तिकं सितास्विन्नं धान्यं मुद्गयवास्तिलाः। कलायकंगुनीवारावास्तुकं हिलमोचिका १ षष्टिकाकालशाकं च मूलकं केमुकेतरत्। कन्दः सैन्धवसामुद्रे गव्ये च दधिसार्षपी २ पयोनुघृतसारश्च यमसाम्रहरीतकी। पिप्पलीजीरकं चैव नागरङ्गकतिन्तिडी ३ कदली लवली धात्री फलानि गुडमैक्षवम्। अतैलपक्कं मुनयो हविष्याणि प्रचक्षते ॥ ४ ॥

वारहवें तीर्थयात्रा महाभारतपुराण के अनुसार।

यद्यपि तीर्थयात्रा और सब तीर्थों के नाम भारत महापुराण वनपर्व के तेरहवें अध्याय के बीच में विस्तार से सब वर्णन किये गये हैं परन्तु विस्तार के भय से संक्षेप रीति पर केवल प्रसिद्ध २ तीर्थों का वर्णन किया जाता है और प्रकट हो कि जिनके हाथ पैर और मन अपने अधीन हैं और विद्या और तप में प्रसिद्ध हैं और दानादि नहीं लेते और अहंकार को त्याग किये हैं और कोई काम छल से नहीं करते और फलाहार करते हैं और पाप न करके क्रोध से अलग रह कर इन्द्रियों को जीतते हैं और सत्यता और शीलता और व्रतादि को अङ्गीकार करते हैं उनको घर बैठे तीर्थ का फल मिलता है और यज्ञ से अधिक फल तीर्थयात्रा करने में मिलता है जो मनुष्य तीर्थ में जाकर तीन दिन उपवास अर्थात् व्रत नहीं करते और सोना या गोदान नहीं देते वे दरिद्री का जन्म पाते हैं। (प्रथम पुष्करतीर्थ का वर्णन) यह तीर्थ इस सृष्टि में ऐसा है कि जहां तीनों सन्ध्या अर्थात् प्रातः मध्याह्न सन्ध्या में दश करोड़ हजार तीर्थ रोज़ जाया करते हैं और सूर्य, चन्द्रमा, मरुद्गण, अप्सरा, गन्धर्व वे प्रति दिन प्राप्त हो जाते हैं और ब्रह्मा प्रति समय वहां स्थित रहते हैं यह वही स्थान है कि जहां अगले

समय में सम्पूर्ण देवता और ऋषि तप करके सिद्धि पाते रहे जो कोई मनुष्य पुष्कर में स्नान करके देवता और पितरों का पूजन करता है वह अश्वमेध यज्ञ से दश भाग अधिक फल पाता है और फिर उसको आवागमन का भय नहीं रहता और कार्तिकी पौर्णमासी में पुष्कर के नहाने से ब्रह्मलोक मिलता है और जो पुरुष कि प्रभात सन्ध्या में पुष्कर का स्मरण करता है उसको सब तीर्थों के स्नान का फल मिल जाता है।

रेवा अर्थात् नर्मदा, सरस्वती, चर्मण्वती, प्रभास, द्वारका, पिण्डारक, सिन्धु, सागरसंगम, भद्रतुङ्ग, कुमारी, पञ्चनदतीर्थ और सप्तचरुवंश आदि तीर्थ सौ २ अश्वमेध के फल देनेवाले हैं और कुरुक्षेत्र के जाने से फिर कोई पाप बाकी नहीं रहता अर्थात् जो कुरुक्षेत्र की मिट्टी उड़कर किसी के ऊपर पड़ जावे तो वह भी परमगति पाता है और परशुराम ने वहां पुष्करतीर्थ को लाकर स्थापन किया है और कई कुण्ड वहां हैं जो परशुराम ने क्षत्रियों के रुधिर से भरे थे और उन्हीं पांच कुण्डों में पितरों का तर्पण किया था और ब्रह्मावर्त, केदार, कपिल, श्यामकानन, ब्रह्मदुम्बर, अपागांदी, काशीसर तीर्थ की अति महिमा है और केदार जिसको कपिष्ठल तीर्थ कहते हैं वहां कृष्ण चतुर्दशी में जाकर शिवजी की पूजा करे तो सर्व मनोरथ पाकर स्वर्ग में बास हो और केदार में तीन करोड़ तीर्थ स्थिर रहते हैं (मिश्रिष) यहां श्रीव्यासजी ने सब तीर्थों को स्थापित किया था और वहां जाने से हज़ार गौ के दान का फल प्राप्त होता है। और नैमिष अर्थात् नैमिषारण्य की बड़ी महिमा है और जितने कि तीर्थ पृथ्वी भर में हैं वे सब नैमिषारण्य में हैं और वहां जाने से दश पीढ़ी तक मुक्त होजाती हैं और प्रथोदक स्वामिकार्त्तिक का यह तीर्थ है यहां स्नान करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है और

पञ्चवटी में महादेव का पूजन करने से सत्यलोक मिलता है और गङ्गाद्वार में स्नान करने से करोड़ों तीर्थ का फल होता है और कनखल में आकर तीन दिन व्रत करके स्नान करे तो अश्वमेध के यज्ञ के फल को पाकर स्वर्ग लोक को चला जावे और गोप्रतार अर्थात् गुप्तार जो सरयू में है और जहां से कि श्रीरामचन्द्रजी अपने सर्वकुटुम्ब और पुरवासी लोगों समेत सुरलोक को गये हैं यदि कोई मनुष्य वहां स्नान करे तो उसे अवश्य स्वर्गलोक मिलेगा और वाराणसी में जाकर शिवजी की पूजा करे और कपिलाह्रद में स्नान करे तो राजसूय यज्ञ का फल मिलता है और मुक्ततीर्थ जिसको 'काशी' कहते हैं वहां जाने से पापों के दूर होने का कुछ वर्णन नहीं बरन ब्रह्महत्या भी दूर होजाती है और वहां मरने से मोक्ष प्राप्त होता है इसलिये संसार में और कोई तीर्थ काशीजी के बराबर नहीं और गया के जाने से केवल अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है और अक्षयवट के नीचे पिण्ड देने से बड़ा फल है और गण्डकी और बसात्तिया नदी के नहाने से बड़ा फल होता है और गोकर्ण में जिसको ब्रह्मा आदि देवता नमस्कार करते हैं जो कोई मनुष्य जाकर शिवजी की पूजा करे और बारह दिन व्रत करके वहां स्थित रहे तो उसका कोई पाप नष्ट हुये विना नहीं रहता और अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है व कालिञ्जर और चित्रकूट और सुरङ्गवीर-पुर में जाने से वाजपेय अश्वमेध आदि यज्ञों का फल होता है और प्रयाग जहां ब्रह्मा आदिक देवता लोकपालों और सब सप्तर्षि सनत्कुमार आदि और नाग सिद्ध सूर्य आदि और ग्रह सम्पूर्ण नदी समुद्र अप्सरा गन्धर्व महादेव विष्णु प्रजापति आदि स्थित रहते हैं वहां तीन कुण्ड अग्नि के हैं और सर-स्वती गङ्गा और यमुना से मिलकर तीनों लोक के पवित्र करने

को बहती हैं वहां वेद यज्ञशरीर धारण किये हुये दिखाई देते हैं और संसार में जितने पुण्यतीर्थ हैं उन सबसे प्रयाग बड़ा है वहां एक के देने से करोड़ का फल होता है वहां साठ करोड़ और दशहज़ार तीर्थ स्थिर रहते हैं और कनखल और प्रयाग में गङ्गास्नान करने का सब जगह से अधिक फल और जिस तरह कि आग लकड़ी को जलाती है उसी तरह प्रयाग में गङ्गा सर्वपापों को जला देती हैं और सत्ययुग में सब तीर्थ बराबर थे पर त्रेता में पुष्कर का माहात्म्य था और द्वापरयुग में कुरुक्षेत्र बड़ा था और कलियुग में गङ्गा के बराबर दूसरा तीर्थ नहीं है और पुष्कर में जो मनुष्य कि तप करके बड़ा दान देते हैं और मलयाचल में जो मनुष्य जल जाते हैं और भृगुतुङ्ग में जो मनुष्य मर जाते हैं वह फल केवल गङ्गापुष्कर और कुरुक्षेत्र में स्नान करने से प्राप्त हो जाता है गङ्गा का नाम लेने से मनुष्य पवित्र हो जाता है और दर्शन करने से मुक्ति मिलती है और स्नान करने और जल पीने से सात पीढ़ियां तर जाती हैं जब तक कि मनुष्य की हड्डियां गङ्गा में रहती हैं तब तक उस मनुष्य को स्वर्ग में वास मिलता है।

श्रीमहाभारतवनपर्वणि यथा।

न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात्परः ।
ब्राह्मणेभ्यः परं नास्ति एवमाह पितामहः ॥ १ ॥

और गङ्गा जिस देश में हैं वह तपोवन है और सिद्धक्षेत्र श्रीगङ्गाजी का किनारा है यह गुप्तभेद है और हर एक के कहने के योग्य नहीं दूसरे धूम्रमुनि के वर्णन के अनुसार पहिले पूर्व दिशा के तीर्थ नैमिष जहां गोमती नदी है और जहां गई नाम पहाड़ है और वहां जाने से पिछली दश पीढ़ियां और आगे की दश पीढ़ियां मुक्त होजाती हैं और फल्गूनदी और कौशिकी

और कान्यकुब्ज और गङ्गा यमुना का संगम जिसको प्रयाग कहते हैं और अगस्त्याश्रम और तपसारण्य और भृगुआश्रम जो महेन्द्र के ऊपर है और केदारआश्रम और गरकुण्ड और नद ये सब पूर्व के तीर्थ हैं दूसरे दक्षिण के तीर्थ गोदावरी, वेणी, चक्रपियूषिणी, वाराह पियूषिणी, हरशेषर, माटरीन, कण्वआश्रमवेदी, सूर्यार्किचन्द्रातीर्थ, अशोकतीर्थ, व्रणतीर्थ, कुमारीतीर्थ ये दोनों द्राविड़ देश में हैं और गोकर्ण और प्रभास-वेदूर्य अलस्यहुब्बूभेदन पुण्डारक उज्जयिनी शिखर द्वारावती। और पश्चिम की ओर के तीर्थ। ऊनती नर्मदानदी जो पश्चिम को वहती हैं और विश्वश्रवाश्रम गरवैदूर्य शिखरहर्दनी नदी पुण्यहृद जो मैनाक के ऊपर है असितगिरि जहां कच्छसेन मुनि का आश्रम है और च्यवनाश्रम और जम्बूमार्ग केतुमाल गङ्गाद्वार सिन्दूरान पुष्कर चौथे उत्तर की ओर के तीर्थ। मालिनी तीर्थ सरस्वती जो सिन्धु के मिलने पर है प्लक्षावतन तीर्थ यमुना के ऊपर है और शरभङ्गाश्रम दृषद्वती न्यग्रोध जो पाञ्चालदेश में है और दालभ्याश्रम और पलाशवन किरात और किन्नरगिरि कनखल पुण्य भृगुतुङ्ग बदर्याश्रम।

तेरहवें दान।

भारतपुराण के शान्तिपर्व के अनुसार जो कि दानरूपी अगाध समुद्र का पता नहीं है इसलिये विस्तार और संक्षेप दोनों से हाथ उठाया गया केवल इतना ही कहा जाता है कि गोदान १ भूमिदान २ अन्नदान ३ सुवर्णदान ४ सब दानों से श्रेष्ठ हैं और महाभारत के *शान्तिपर्व दानधर्म को अवलोकन करना चाहिये क्योंकि उसके देखे विना ठीक हाल मालूम नहीं होसक्ता।

॥ इति ॥

* यह पुस्तक महाभारत जिसमें शान्तिपर्व दानधर्म मोक्षधर्म आदि अठारहों पर्व संयुक्त हैं इस छापेखाने में मौजूद है।

ॐ नमः शिवाय ।



शिवपुराण भाषा

पूर्वार्द्ध

प्रथम खण्ड

पहिला अध्याय

एक समय श्रीसूतजी महामुनि श्रीमद्वेदव्यासजी के सत्शिष्य जिन्होंने अपने गुरु की सेवा से बड़ाई पाई नैमिषारण्य के वनमें श्रीसदाशिवजी महाराज की तपस्या में लगे थे और शिवजी महाराज के गुणकीर्तन अपने मनमें प्रतिसमय ध्यान करके मग्न रहा करते थे कि संयोग से शौनकादि अन्य मुनीश्वरों समेत सूतजी के सामने आये और प्रश्न किया कि आप सदाशिवजी के गुणकीर्तन बखान करें क्योंकि हमलोग अथाह संसारसागर में डूबते हैं हमारे बड़े भाग्य से आप मिले हैं थोड़े समय में वह युग आनेवाला है जिसमें पाप अधिक होंगे और पुराने धर्म का नाश होकर सब लोग उसको छोड़कर कुमार्गी होजावेंगे मनुष्य आप निन्दित होकर दूसरों की निन्दा करनेवाले अस्तव्यस्त झूठे लोभी होकर तीनों समय की संध्या से

और व्रतसे भी हीन होकर केवल संसारीकार्य में प्रवृत्त रहकर बिचरेंगे और कलियुगवासी महाहंकारी होकर अपने नित्यकर्म से हीन जप तप यज्ञ से विवर्जित महामूर्ख अति वितण्डावाद करनेवाले महानीच और यम संयम जो योग के अङ्ग हैं उनसे अज्ञानी होकर व्यभिचारादि दुष्टकर्मों में फँसे रहकर दूसरों की बुराई कहने में चतुर होंगे और महादुःखी निर्बुद्धि अन्यायी गर्ववान् होकर सत्यमार्ग से विमुख अप्रीतिमान् होंगे और चारों वर्ण की यह दशा होजावेगी कि ब्राह्मण खेती करेंगे उन को छलछिद्र के सिवाय अपने धर्म से अज्ञानता होगी क्षत्रिय भी अपने सत्यधर्मोंको त्यागकरके युद्ध से मुख मोड़कर भागेंगे और चोरी में अति चातुर्यता दिखलावेंगे और शूद्रों के सदृश होकर प्रसन्न रहेंगे और गऊकी रक्षा न करके जो शत्रु वेहथियार होंगे उनसे युद्ध करेंगे और व्यभिचार में पशुओं की भांति होकर स्त्रियों के अधीन रहकर नाना प्रकार के दुःख और क्लेश उठावेंगे और जुआ और मद्यपान से अपने धर्मको नष्ट कर डालेंगे और पशुओं के घात और दुःख देने से तृप्त न होकर ब्राह्मणों से अपने को बड़ा जानकर नरक में जावेंगे क्योंकि जो मनुष्य अपने धर्म को नष्ट करता है वह नरक में जाता है इस प्रकार क्षत्रिय अति अन्यायी और दुःख देनेवाले होजावेंगे इसी प्रकार वैश्य अपने अच्छे धर्मको छोड़कर पापों से धन संचित कर अपने उत्तम मार्गको खोदेवेंगे और अपने देवता गुरु और गऊ की बड़ाई का विचार न करके बड़े कृपण होकर अपने सब कुटुम्ब सहित दुःखकी अग्नि में जला करेंगे मुट्ठी बंद करके न खोलेंगे अर्थात् ब्राह्मण आदि को भोजन भी न देंगे पर प्रकट के शीलसे अपने को अति चतुर बुद्धिमान् समझकर निरर्थक वचन कहेंगे और लोभ क्रोध और अहम्भावरूपी सर्प उनको

अपने अधीन करके संसाररूपी अथाह सागर में डाला करेगा और शूद्र भी अपने धर्म को छोड़कर ब्राह्मणों की रीति अङ्गीकार करेंगे और इन्हीं शूद्रों के ऐसे कर्म से ब्राह्मणों का तेज हत हो जावेगा और सम्पूर्ण जीवधारियों की आयुष् कम हो जावेगी और वे शालग्राम की पूजा करके ब्राह्मणों की निन्दा करेंगे और दुष्ट मनके धनवान् और अपकर्मी होकर दूसरों की निन्दा करके अपने धर्म को भूल जावेंगे और ब्राह्मणों से विमुख होकर हर समय ब्राह्मणों की निन्दा में लगे रहेंगे और भिक्षुक चाहे उच्चस्वर से भीख मांगेंगे तो भी न देंगे और जो मनुष्य कि वर्णसंकर होंगे वे अपने को उच्चजाति के समझेंगे स्त्रियां भी बहुतही दुष्टप्रकृति होकर अपने पति की सेवा से विमुख वरन दुश्शीलता के साथ अपने पतियों को सहस्र अवगुणों से प्रसिद्ध करेंगी और व्यभिचारी पुरुषों में मन लगाकर उनके साथ कटाक्ष विहारादि कर आपही उनकी प्रीति में फँस जावेंगी और अपने मन को अन्यपुरुष की प्रीति में फँसाकर अपने आपको जलावेंगी और अपने प्रियतम की जांघ पर बैठकर उसके शरीर को शीतल करेंगी और लड़के भी माता पिता के साथ प्रीति न रक्खेंगे और वितण्डावाद से मत को झूठाकर आप अपने गुरुसे भी विवाद करेंगे और लोग विद्या न पढ़ेंगे जो दूसरे देशमें भी सहायक होती है ऐसे दुष्टमन पापी अपने माताकी निन्दा से भी न हटेंगे उनके शरीर रोगों से क्षीण और दुःखी रहेंगे और माला, जप, तप, शील मनुष्यों में न रहेगा ऐसे समय में दिन २ सत्यता और शौचका अभाव हो जावेगा स्त्री को केवल अपनी इच्छा के पूर्ण करने और प्रसंग के लिये समझ कर और ब्राह्मण को जनेऊ के कारण बड़ा समझेंगे और तपस्वी को छलसे बड़ा जानकर स्नान और

शौचको मुख्य करके पुत्रकी इच्छा आदि के लिये विचार करेंगे और कलियुग में सुन्दरता केवल बालका सँवारना होगा और अपना पेट भर लेना भी अच्छा काम समझा जावेगा और दान केवल यश कीर्ति के लिये समझा जावेगा और अपने कुटुम्ब के पालनेको बुद्धिमानी जानेंगे और छलछिद्रकी वार्ता बुद्धिमानी और चतुरता समझी जावेगी और सब कामों से अधिक कठिन किसी तीर्थ का मार्ग चलना जाना जावेगा ऐसे समय में हर छोटे बड़ों को आपत्ति पड़ेगी तेज, बल कम और जीविका और आयुष् की अधिक चिन्ता होगी सिवाय इसके सबसे अधिक धर्म संसार में लोभ समझा जावेगा न तो मन में किसी पर निश्चय होगा न कुछ अच्छे बुरेका विवेक रहेगा तो कहिए कि ऐसे समय में कलियुगवासी क्योंकर मुक्त होंगे और अपने पाप और हजारों दुष्कर्मों को जलाकर सत्यमार्ग क्योंकर प्राप्त करेंगे और अति उत्तम इच्छा अर्थात् मुक्ति उनको क्योंकर मिलेगी हे सूतजी ! यह चिन्ता मेरे मन से दूर नहीं होती सो आप कोई ऐसी युक्ति बतावें जिससे लोग प्रसन्न हों क्योंकि आप केवल लोगों के उपकार के लिये जीते हैं आप चिन्ता दूर करके प्रसन्नता उपजानेवाले हैं हम इसी चिन्ता में डूबते थे कि आपको देखा आप कृपा करके यह बात कहिए जिससे चिन्ता दूर होकर हर्ष प्राप्त हो और जो थोड़ी प्रीति करने में बड़ा फल दे और तुम अधिक प्रीति करनेवाले योग्य हो रीति है कि दयावान् गुरु होते हैं वे छिपी हुई बातको भी शिष्य से कह देते हैं आपके बराबर संसार में संसारी लोगों का हित चाहनेवाला कौन है आपने व्यासजी की सेवा बहुत की है और पापियों को पापके समुद्र से पार उतारा है व्यास-जीने बहुत कृपा करके सब पुराण आपको कृपा किये हैं ये

शौनक के वचन सुनकर सूतजी अति प्रसन्न हुये और शिवजी के चरणों में अधिक ध्यान करके कुछ मुखसे न कहा फिर थोड़ी देर के पीछे प्रेम से अश्रुपात करते बोले ॥

कि हे शौनक ! और अन्य मुनीश्वरलोगो ! तुम लोग ज्ञानी और संसार के हित चाहनेवाले हो चाहे सबलोगों की वह बुद्धि भ्रष्ट होगई कि जो संसारी लोगों के हित से सम्बन्धित है पर आपने यह प्रश्न केवल सबलोगों के उपकार के लिये किया है और यह अटन आपका संसारीलोगों के उपकार के लिये प्रकट है सो अब हम तुम्हारी प्रीति से संसार की भलाई के लिये शिवजी की परम स्तुति जिससे कलियुग के दुःख दूर होजावें और मुक्ति प्राप्त हो कहते हैं यह शिवजीका वर्णन कलियुग के पापों को दूर करके प्रसन्नता देता है और तीनों लोकों में अतिपवित्र और मनोहर है जो मनुष्य शिवजी की प्रीति में लगगया वह सदा प्रसन्न है और वह मनुष्य सन्तानवान् और धनसम्पन्न होता है वरन कोटानिकोटि पाप नष्ट होजाते हैं इसी कारण जो लोग बुद्धिमान् हैं वे सदाशिव की तपस्या करके सम्पूर्ण पदार्थ पाते हैं और करोड़ों जन्म के अच्छे काम अपने आप प्रकट हुये हैं ऐसा शिवका वर्णन करके बहुत से परमपद पाचुके हैं वरन बहुधा पापी जहां शिव रहते हैं वहाँ तक पहुँचगये हैं और जो लोग कि भाल में भस्म लगाकर शिव का नाम लेते हैं वे बेप्रयास शिवलोक में पहुँचजाते हैं कि जहां शोक और दुःख कोई नहीं और जो शिवको नमस्कार करते हैं वे बहुत सन्तान पाते हैं जो लोग ब्राह्मणों की पृथ्वी छीनलेते और हिंसक और ब्राह्मणों के मारनेवाले मद्यप व्रतहीन और व्रतभङ्ग करनेवाले हैं ऐसे लोग भी शिवका नाम लेकर नरक के दुःख से छूटजाते हैं इससे उचित है कि संसार को दुःखरूप समझकर शिवमें

प्रीति लगावै और जिन लोगोंने संसार का मोह त्याग दिया है वे और अच्छे वेदपाठी उसी त्रिशूलपाणि महाराज की स्तुति से अपना काल व्यतीत करते हैं इसलिये जो मनुष्य कलियुग के दुःख से छूटना चाहे वह शिव का यशगावे सिवाय इसके और युक्ति नहीं है हे शौनक ! वेदों से भी शिव की स्तुति नहीं होसक्ती शिवजी को सबसे बड़ा जानकर ध्यान न छोड़ना चाहिये जिस तरह से कमल के पत्तोंपर पानी की बूंद नहीं ठहरती उसी तरह शिवके भक्तों पर कलियुग के सब पाप प्रभाव नहीं करते यह सुनकर शौनक दोनों हाथ जोड़कर सूतजी के सामने बैठ गये और बड़ाई और प्रशंसा करने के उपरान्त सब ऋषीश्वरोंने सम्मति करके यह प्रश्न किया कि शिव निर्गुण कहलाते हैं पर सगुण किसतरह होगये उनके तत्त्व का जाननेवाला कोई नहीं है शिवने पहले संसारको क्योंकर उपजाया फिर आप क्योंकर उपजे और प्रलयमें संसारका नाश करके आप किस तरह से रहते हैं वे किस बात में प्रसन्न होते हैं और प्रसन्न होकर क्या देते हैं वे किस तरह अवतार लेकर कौनकार्य करते हैं और अपने भक्तों के अधीन होकर किसतरह उनके दुःख दूर कर देते हैं यह सब वर्णन कीजिये और जो कुछ कि उचित हो सब आप वर्णन कीजिये क्योंकर आप व्यासजी की कृपा से गत वर्तमान और भविष्य के वृत्तान्त को जानते हैं हमारे माता, पिता, बन्धु, मित्र, विद्या सब कुछ आप हैं संसार में आपसे अधिक विद्वान् और रीतिपर चलनेवाला कौन है जिसने सब व्यासजी के मुख से सुना और यह बात प्रकट है कि भाग्य विना अच्छे ब्रह्मज्ञानियों से भेंट नहीं होती और न शोक व मोह दूरहोता है हम उसी को बड़ा भाग्यवान् जानते हैं जो शिवजी कीकथाकीर्तन से सम्बन्ध रक्खे ।

दूसरा अध्याय।

इतना सुनकर सूतजी अतिप्रसन्न हुये और उन सबकी बड़ाई करके कहा कि हे शौनकादि मुनीश्वरो ! यही प्रश्न जो तुमने किया है एक वेर नारदजी ने ब्रह्माजी से किया था और ब्रह्माजी ने यथार्थ उत्तर देकर नारद को प्रसन्न कर दिया था सो कहते हैं कि एक समय श्रीनारदजी तप के लिये हिमालय पर्वत पर जिसके निकट श्रीगङ्गाजी बहती हैं पहुँचे और एक जगह बैठकर अति कठिन तप करने लगे और श्वास ब्रह्माण्ड में चढ़ाकर कुटी में बैठरहे ऐसी कठिन तपस्या देखकर इन्द्र अति भयभीत हुये और समझे कि नारद हमारे पद प्राप्त होने के लिये ऐसा कठिन तप करते हैं रीति है कि व्यभिचारी मन पापी लोग कौवे की तरह डरा करते हैं सो इन्द्र ने चाहा कि नारद के तप में अन्तर आजावे तुरन्त इसी इच्छा से काम को बुलाया कामदेव तुरन्त आया इन्द्रने कहा कि हे मित्र ! आपके द्वारा हमने बहुत गर्ववानों का अहंकार तोड़ डाला है देखो नारद हिमालयपर्वतपर शिवका तप करते हैं हमको सन्देह है कि वे हमारे पद को न छीन लेवें इसलिये आप ऐसा उपाय करें जिससे नारदका तप भङ्ग होजावे यह सुनकर कामदेव ने अपनी सब सामग्री सजाई और नारद के निकट जाकर अपनी सम्पूर्ण माया प्रकटकी अर्थात् नानाप्रकार के पुष्प खिले खिलाये और कोकिला आदि पक्षी अपनी मीठी मीठी वाणी बोलनेलगे और तीनों प्रकार की शीतल मन्द मन्द सुगन्धित जो कामदेव के उपजानेवाली है पवन चलनेलगी छह ऋतु प्रकट हुईं और रम्भादि उत्तमोत्तम अप्सरा जो नाचने और गाने में अतिप्रवीण थीं नृत्य करनेलगीं यह विजय करनेवाली सेना देखकर काम अतिप्रसन्न हुआ और वहां जाकर जो २

करसका वह किया पर नारदका मन कुछ चलायमान न हुआ अब इसका मुख्य कारण हम वर्णन करते हैं कि उस जगहपर कामदेवका बल क्यों न चला हेतु यह है कि जब सदाशिवने कामको उसी जगह पर जलादिया था और फिर उसको जिलानेका वर देकर यह कहा था कि चाहे कामदेव जी जावेगा पर इस जगह पर उसकी कुछ न चलेगी अर्थात् जहां तक कि ये स्थान दिखाई देते हैं वहां तक काम प्रकट न होगा इसी कारण कामदेव निराश और निर्लज्ज होकर इन्द्र के निकट गया और अपने निरर्थक लौट आने का हाल कहा और सम्पूर्ण सभासद् कामदेव का वर्णन सुनकर आश्चर्य से नारद की स्तुति करनेलगे नारदने अपने तपको पूर्ण समझकर अपने को कामदेवपर प्रबल समझा और यह न जाना कि यह तपोभूमि ऐसी है और अपने तपोबल पर मग्न होकर अति प्रसन्नतापूर्वक शिवजी के पास गया और अपने तपका हाल विस्तार से वर्णन किया शिवजी ने उत्तर दिया कि कामदेव का जीतनेवाला तीनों लोक में कोई नहीं है अब हम तुमको समझाते हैं कि तुम विष्णुलोक में यह बात न कहना और इस बातको हरतरह से गुप्त रखना यहांतक कि किसी से पूछने पर भी न कहना हे नारद ! तुम विष्णुजी के तपसे मुझे बहुत प्रिय हो नारदको यह शिवजी की बात कुछ अच्छी न लगी और शिवजी की माया से जो मिथ्या और नष्ट नहीं होसक्ती शिवजी से विदा होकर ब्रह्माजी के निकट गये और वहां भी अपनी प्रशंसा की और अपने तप पर गर्वित होकर कामदेव पर अपना विजयपाना वर्णन किया ब्रह्माजी अपने पुत्रका ऐसा अहंकार देखकर सदाशिवकी भांति समझाने लगे पर नारद को बहुतही अहंकार हो गया था इस कारण पिता का

समझाना फलदायक न हुआ और विष्णुलोक में भी उसी अहंकार से गये विष्णु ने उठकर कण्ठ में लगाय पूछा कि अब तक तुम कहां रहे नारद ने अपने तप और कामदेव पर विजय पाने आदिका हाल कह सुनाया यह सुनकर विष्णुजी हँसे और महादेवजी की इच्छा समझकर कहने लगे कि तुम धन्य हो धन्य हो हे शिव! आपकी माया जिसके बल से सम्पूर्ण संसार अज्ञान और भूला हुआ है और शिव के चरणों के स्मरण में नेत्र मूंद चुप होरहे और सदाशिवकी इच्छा भली भांति समझ मधुर वचन से कहा कि हे नारद! जो मनुष्य ब्रह्मज्ञानी संसार को छोड़े हुये ईश्वराराधन से वर्जित हैं उनके मन में मोह उपजता है आपने तो ब्रह्मचर्य अङ्गीकार किया है काम तो आपका क्या करसक्ता है आपके चरणों की सेवा से भय दूर होती है और कामकी कुछ नहीं चलती ऐसी वार्ता सुनकर नारद और भी अहंकार में डूबकर कहने लगे कि यह बात केवल आपकी कृपासे प्राप्त है यह कहकर नारदजी बिदा हुये उसीसमय सदाशिवजी की माया से नारदजी के मार्ग में एक बहुत अच्छा शहर बस गया मानों दूसरा स्वर्ग है लम्बाई उसकी चारसौ कोस की और वहां के स्त्री पुरुष नाना प्रकार से विहार करते वहां के वासियों का रूप देखकर काम लज्जित होता था और एक शीलनिधि नाम राजा वहां का राज्य करता था जिसके यहां स्वयम्बर होता उसमें उस राजा की लड़की जिसकी सुन्दरता पर संसार भर मोहित था शृङ्गार किये मानों सभा का अलंकार होरही थी और चारों ओर के राजा उस महासुन्दरी चम्पकवर्णी गजगामिनी कन्या की इच्छा से उस सभा में वर्तमान थे नारद यह सभाका हाल सुनकर स्वयम्बर में पहुँचे राजा ने इनका अतिआदर सन्मान करके

अपनी लड़की को बुलाकर नारद के साम्हने किया पहले नारद जी उस कन्या का अनूप रूप देरतक देखा किये और उसको शीलवान् पाकर विचार किया कि जो मनुष्य इसका पति होगा वह अमर होकर किसी से युद्ध में परास्त न होगा यह बात अपने मनमें विचारकर फिर अपनी राह चले गये पर मार्ग में कामसे अतिविह्वल होकर बुद्धिके विपरीत काम के जाल में फँस गये विचार किया कि रीति है कि सुन्दरी स्त्री स्वरूपवान् पुरुष को चाहती है हम सुन्दर नहीं हैं उसको किस तरह पावेंगे सुन्दरता सबको भाती है हमको उचित है कि विष्णुजी का स्वरूप लाकर उस कामिनी को प्राप्त करें यह विचारकर विष्णु का ध्यानकर कहने लगे कि इस संसार में आपके बराबर हमारा और कोई नहीं निश्चय है कि आप प्रकट होकर हमारा मनोरथ पूर्ण करेंगे यह विनती नारद की सुनकर विष्णुजी उस स्थानपर प्रकट हुये और कहा कि जिसतरह वैद्य रोगी की इच्छा के प्रतिकूल भोजन देता है उसीतरह हम आपकी सहायता करें यह युक्ति विष्णुजी कहकर अन्तर्धान होगये और वह युक्ति नारदने न समझी सो सम्पूर्ण शरीर नारदका विष्णुजी के सदृश होगया पर मुख वानर कासा रहा और यह भेद नारद ने न जाना और स्वयंवरस्थल में पहुँचे कि जहां सब राजा बैठे थे वहां नारद बैठ कर बार २ उचकते थे और विचार करते थे कि यह लड़की सिवाय मेरे और किसीकी इच्छा न करेगी यह स्वरूप और किसी ने न देखा और पहिलेकी तरह सब लोग नारद को देखकर आदर करने लगे उस सभा में सदाशिव के दो गण भी ब्राह्मण के रूप से वर्तमान थे वे भी नारदजी के पास जा बैठे और नारदकी निन्दा करके परस्पर हास्य बड़े शब्द से करनेलगे और ऐसी निन्दापूर्वक संकेत में वार्ता करते थे जिसको नारदजी कुछ नहीं

समझते थे वे कहने लगे कि हे नारद ! आपने विष्णु से क्या सुन्दर स्वरूप प्राप्त किया है अब लड़की क्यों किसीको चाहेगी राजा की लड़की इसी अवसर में स्वयंवर के बीच आई और नारद का भयानक स्वरूप देखकर मनमें अति अप्रसन्न हुई और मुँह फेरकर दूसरी पंक्ति में अपनासा पति ढूंढ़ने लगी और जिस ओर नारद बैठते थे उस ओर भूलकर भी नहीं देखती थी और नारद की यह दशा थी कि शिर ऊंचा करके उस कन्या की ओर चारों ओर से देखते थे और शिवके दोनों गण यह दशा नारद की देखकर हास्य करते थे ऐसे समय में आप विष्णुजी उस सभा में आये लड़की ने प्रसन्न होकर तुरन्त जयमाल विष्णुजी को पहनादी जिससे सब राजा निराश होगये यह दशा देखकर नारदजी विह्वल होगये उस समय दोनों गणोंने नारद से कहा कि आप नाहक इतने दुःखी होते हैं भला अपने मुखको तो देखिये ।

तीसरा अध्याय।

यह सुनकर नारदजी पानी के बीच में अपना मुख देखकर आश्चर्य में हुये और क्रोधित होकर दोनों गणों को यह शाप दिया कि तुम दोनों बन्दर छली और पापी होजाओ क्योंकि तुमने हँस २ कर हमारी बहुत अप्रतिष्ठा की है उसका फल पाओ कि फिर ऐसा अपकर्म तुमसे न होसके यह शाप दोनों गण सुनकर और नारद को मोहवश जान चुप होरहे और अति चिन्तावान् होकर अपने लोकको गये और शिवजी की स्तुति करनेलगे और नारद अपनी मुख्यदशा में आकर ईश्वर के भेद को समझे और अपना वह वानर का स्वरूप विचारकर मनमें कहने लगे कि यह मेरी अप्रतिष्ठा केवल विष्णुजी के छलसे हुई यातो विष्णुजीको शाप दूंगा या अपने प्राण त्यागदूंगा यह सोच

श्रीहरिमन्दिर पहुँचे सो विष्णुजी नारद की इच्छा जान मार्ग में खड़े हुये और वह कन्या भी जिसको स्वयंवर में लिया था साथ थी विष्णुने नारद को प्रणामकर हास्यपूर्वक कहा कि हे नारद ! तुम चिन्तित होकर कहां जाते हो यह सुनकर नारद अति कोपित हुये जैसे जलती हुई अग्नि में कोई सूखी लकड़ी डाल दे और उस क्रोधमें यह शब्द मुखपर लाये कि तुम इस समय हमको अच्छे मिले तुम दूसरे की प्रसन्नता न देख सके तुम बड़े छली हो तुमने कहां छल नहीं किया वरन तुम छलरूप हो मोहनीरूप धारणकर तुमने दिति के पुत्रों के साथ अमृत के बांटने पर जो छल किया वह प्रसिद्ध है फिर जलन्धर की स्त्रीसे छल करके उसका पतिव्रत धर्म छुड़ाया यदि सदा-शिव हलाहल विषको न पीते तो तुम्हारी सब माया निकल जाती अच्छे लोग छल का अभ्यास नहीं डालते यह बात सदाशिव को उचित न थी जैसा कि तुमको वरदान दिया था अर्थात् तुमको सम्पूर्ण सृष्टि का स्वाधीन स्वामी बनाया तुम इस योग्य न थे इसी अहंकार पर कि तुमसे और कोई बड़ा और उत्तम नहीं है तुम जो चाहते हो वह करते हो सदाशिव भी तुमको ऐसा स्वाधीन और सर्वसृष्टि का स्वामी करके अपने मन में चिन्ता करते हैं और यह उपाय निकाला है अब हम सदाशिव की आज्ञा समझकर इसलिये कि फिर ऐसा काम तुमसे न बन पड़े तुमको तुम्हारे कर्म का फल देते हैं आजतक तुम सिंह के सदृश ऐसे वन में जहां दूसरा न था तीनों लोक में निर्भय होकर फिरा किये पर अब हम तुमको ऐसी स्वाधी-नता का फल देते हैं क्योंकि तुमसे भले बुरेका विवेक न हो सका और न तुम संसार के लिये नियम बांधसके चाहे सदाशिवने तुमको वरदान दिया है पर तो भी हम तुमको

सिखलाते हैं यह कहकर नारद शाप को इस तरह मुखपर लाये कि तुमने जिस शरीर से हमको छला है उसी शरीर में तुमको दुःख होगा और जिनके सदृश हमारा मुख करदिया था वेही तुम्हारी सहायता करेंगे और जोकि तुमने स्त्री के लिये हमारी ऐसी अप्रतिष्ठा की इसलिये तुमभी स्त्री के वियोग से अति दुःखी होकर सम्पूर्ण वनों में घूमते रहोगे यह सुनकर विष्णुजीने अपना शिर नारद के चरणों पर रखदिया पर नारद ने क्षमा न की तब सदाशिव ने नारदके मनसे माया खींच ली उस समय न कोई स्त्री दिखलाई देती थी न वह दशा नारदकी रही नारद आश्चर्य में होकर खेद करने लगे और कहा कि जाना नहीं जाता कि यह सब वृत्तान्त सत्य है या स्वप्न में मैंने देखा है प्रेमपूर्वक कहा कि धन्य २ आपकी माया जिसमें हम ऐसे बुद्धिमान् भूलगये और फिर विष्णुजी के चरणों पर गिरपड़े और कहा कि हे सदाशिव! हमारे शाप को खण्डनकर दीजिये और जो कठोर वचन मैंने तुमसे कहे हैं वे महापाप के भरे हैं वे क्योंकर क्षमा होंगे विष्णुने कहा कि जो तुमने सदाशिव के वचन को न माना उसका फल यह तुमको मिला है अब तक तुमको इस ईश्वरीगति का भेद मालूम न हुआ इसलिये ये सब बातें बताई गईं सो अबभी आपको उचित है कि चैतन्य होकर समझो कि सदाशिव सबसे बड़े हैं और तीन कार्यों के निमित्त तीन स्वरूप होकर सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी वर्तमान हैं कि ब्रह्मा सृष्टि उपजाते और हम भी उन्हीं की सेवा करके संसारको पालते और वे आपही प्रलय करते हैं हम केवल सदाशिवके तपसे सबसे बड़े गिने गये हैं हे नारद! ऐसी सदाशिव की तपस्या करो क्योंकि सदाशिव की तपस्या विना किसी को परमपद नहीं मिलता आपको उचित है कि सब

छोड़कर केवल सदाशिव वाक्य मुखपर रक्खो और शिवके शतनाम जपो उनके जपते २ सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं और अब खेद न करो क्योंकि आपही सदाशिव ने यह माया की है और हमको आपके द्वारा यह शाप दिलाया वे सदाशिव काल के भी काल अद्वितीय अप्रमेय हैं हमको सदाशिव से अधिक प्रिय और कोई नहीं और हमारा सबसे अधिक बल वही हैं तुमको उचित है कि हृदय में शिव का चरण रखकर देशाटन करो जिसके प्रताप से दुःख न होगा और पृथ्वी भर में सदाशिव की माया देखते हुये काशीजी को सिधारो उसे रुद्रक्षेत्र वाराणसी मुक्तिक्षेत्र और महाश्मशान भी कहते हैं और फिर ब्रह्माजी अपने पिता के निकट जाकर सदाशिव के सौ नाम पूछो क्योंकि ब्रह्माजी बड़े शिवके भक्त हैं और रात्रि दिन उनकी सेवा करते हैं इतना कहकर विष्णु अन्तर्धान हुये और नारद सदाशिवजी के पास चले मार्ग में दोनों गण नारद के चरणोंपर गिरपड़े और कहने लगे कि हम ब्राह्मण नहीं हैं बरन सदाशिव के गण हैं और आपकी बड़ी अवज्ञा हमसे हुई है सो आप अपना किंकर समझकर कृपाकरें क्योंकि हम अपने कर्मका फल पाचुके यह सुनकर नारद खेद करके कहने लगे कि मेरी सब बुद्धि भ्रष्ट होगई सदाशिवकी माया अति बलवान् है जो मैंने कहा वह तो होहीगा पर हम यह वर देते हैं कि तुम दोनों भाई मुनि के वीर्य और राक्षसी से उत्पन्न होगे और तुम्हारा बड़ा प्रताप होगा तुम बड़े विजयी महाराजा होकर सम्पूर्ण सृष्टि को विजय करोगे और नाना प्रकार के भोग भोगकर सदाशिवकी भक्ति से अचेत न रहोगे अन्त को वानर और मनुष्य तुम्हारी मुक्ति करेंगे और सदाशिव और विष्णु तुम्हारे घर जाकर मुक्ति कृपा करेंगे इतना कह नारद

सदाशिव फिर ब्रह्मा के पास गये और स्तुति करके हाथ बांध ब्रह्मा से कहने लगे कि आपने जो विष्णु की कथा कही थी वह तो हमने सुनी जिसमें भक्ति वैराग्य तप और दानकी रीति और तीर्थ आदिका वर्णन है परन्तु सदाशिवजी की भक्ति से हम हीन हैं सो आप क्रम से कहिये कि क्योंकर सदाशिव आदि मध्य और अन्त में रहते हैं और क्योंकर प्रसन्न होते हैं और फिर वे क्योंकर निर्गुण होकर सगुण होजाते हैं और अपनी और विष्णुजी की उत्पत्ति वर्णन कीजिये और जिस तरह सदाशिव कैलास में आये और सतीजी का विवाह और गिरिजा का वर्णन और स्वामिकार्त्तिक की उत्पत्ति तारक, वृत्रासुर, त्रिपुर, जलन्धर, अन्धक आदि वध और सदाशिवजी के सम्पूर्ण गुण और अवतार विस्तार से कहिये और जितने शिव पार्वती के चरित्र हों वे सब मुझ पर कृपा करके प्रकाश कीजिये जिससे मुझे और आपको प्रसन्नता हो।

चौथा अध्याय।

इतना कह फिर सूतजी बोले कि हे शौनक! यह नारद का प्रश्न सुनकर ब्रह्मा ऐसे प्रेम में मग्न हुये कि आंखों से आंसू की धारा बहने लगी और उनको कुछ तन मन स्त्री पुत्र घर द्वार की सुधि न रही बड़ी देरके पीछे चेत में आकर शिव शिव कहते और शिवका ध्यान करते हँसकर बोले कि तुमको धन्य है धन्य है तुमने हमारा कुलभर मुक्त कर दिया क्योंकि तुमको सदाशिवजी की भक्ति उपजी ऐसी प्रशंसा करके ब्रह्मा ने नारद के प्रश्न का यह उत्तर दिया कि हम पहले सदाशिव के निर्गुण चरित्र अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन करेंगे फिर सदाशिवकी सगुण महिमा कहेंगे प्रकट हो कि जब कोई सृष्टि का चिह्नभी न था तब निर्गुण सदाशिव सर्वव्यापक ब्रह्म सत् चित् आनन्दही थे

वह सत्य है अनन्तर परमानन्द है उनका मन और वचन उनके आधीन है कोई नाम रूप नहीं न वे सूक्ष्म हैं न स्थूल न बड़े न छोटे न उनमें न्यूनता है न ऊंचता और न वे किसी के अधिकारी हैं माया और पापसे अलग मृत्यु उनके साम्हने जा नहीं सक्ती वे देखने में नहीं आते और अनादि हैं और किसी के वश्य नहीं और सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी और सबके महाराजा हैं और संसारी मनुष्यों के कर्मों के साक्षी हैं और सर्वव्यापक और सबसे भिन्न हैं उनमें एक या दो का शब्द भी नहीं कह सक्के और दोनों हैं उन सदाशिव को ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि आदि सब तप और ध्यान करते हैं परन्तु उनकी कृपा विना कोई उनको नहीं पाता उनकी स्तुति करने में शेषजी भी हारे हैं चाहो योगी देखते हैं पर उनके आदि और अन्तको नहीं जानते उस सम्पूर्ण ज्ञान और सत्यस्वरूप ईश्वर को वेद नेति नेति वर्णन करते हैं मूर्ख मनुष्य क्या जान सक्के हैं वे निर्गुण स्वरूप विना कान सुन सक्के हैं वे विना आंख सब कुछ देखते हैं विना नाक के संसार भरकी सुगन्ध लेते हैं मुख विना सब कुछ खाते हैं विना जिह्वा सब कुछ पढ़ते हैं विना त्वचा ठंडे और गरम का विवेक रखते हैं विना हाथ के सर्व कार्य करते हैं विना पांव वेपरिश्रम सर्व सृष्टि में घूमते हैं लिङ्ग विना सर्व सृष्टि उपजाते विना गुदा मल दूर करते जिस स्वामी की ऐसी विचित्र बातें हैं उसकी स्तुति किस तरह वर्णन हो सक्की है ऐसे स्वामी निर्गुण स्वरूप सदाशिव ने यह इच्छा की कि हम एक हैं अनेक होजावें यह विचार कर आप सगुणरूप होगये ऐसे निर्गुण और सगुण स्वरूप में कुछ अन्तर नहीं है सो हम सगुण स्वरूप का वर्णन करते हैं जिनके स्मरण से सर्वपाप नष्ट हो जाते हैं वह सर्व कर्मों का देखनेवाला है उसने विष्णु और ब्रह्मा को उपजाया

और सर्व कर्मों का साक्षी और प्रतिष्ठित विराट्रूप है उसके नाम शिवशंकर, हरनाथ, महेश, परमदेव, जगदीश, परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म, गिरीश, शंभु, सदाशिव, अनीश, विबुध, पार्वतीपति, त्रिशूलपाणि, चक्री, ईश्वर, सुखदाता आदि अनन्त नाम हैं वही सदाशिव हैं और शिव ब्रह्मा और विष्णु से मान पाते हैं और सम्पूर्ण सृष्टि के कर्ता भक्तों को हर्ष देनेवाले उमापति, भगवान्, परमानन्द, सूर्य, चन्द्रमा आदि हज़ारों गुणों से भरे हुये सम्पूर्ण सृष्टि और ब्रह्मा विष्णु और रुद्र के उपजानेवाले हैं ऐसा जो कोई सबका स्वामी है उसको वैष्णव मत रखनेवाला विष्णु कहता है और शाक्त शक्ति, सूर्योपासक रवि गाणपत्य उसीको विनायक जानते हैं ऐसे सदाशिव लोक में हज़ारों नाम से विख्यात हैं ऐसे त्रिशूलपाणि महाराज का सगुण स्वरूप हम वर्णन करते हैं जिनके स्मरण से सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं सगुण स्वरूप अर्थात् शिरपर जटा और गङ्गा, भाल में चन्द्रमा और चाप की तरह त्रिपुण्ड् कान में कुण्डल पहने हुए तीनों नेत्र लाल २ सूर्य चन्द्रमा, अग्नि, कीर सदृश नासिका ओष्ठ लाल कुँकुम से हैं पञ्चमुख अतिपवित्र और सुन्दर ये हैं पहला मुख पूर्वकी ओर वह मानों प्रभातके सूर्यवत् है और तीन नेत्र कमलवत् द्वितीयाका चन्द्रमा मस्तकपर धारण किये हैं दूसरा मुख जो दक्षिण की ओर है उसमें कमान के सदृश भौंहें हैं और तीनों नेत्र लाल और भारी होंठ फड़कते हुये जिनसे भय होता है और दांत भी भयानक मस्तक में चन्द्रमा विराजमान है और तीसरा मुख जो पश्चिम में है उसमें तीन नेत्र हैं और अर्धचन्द्र शिरपर है मुस्कान से तीनों भुवन का मन मोहरहे हैं चौथा मुख जो उत्तर की ओर है वह विद्रुम अर्थात् मूंगे के वर्ण का है श्यामवर्ण केश मुखपर लटकते हैं

और तीनों नेत्र ललाई लिये भाल पर दुइजका चन्द्रमा अलंकृत है पांचवां मुख जो नीचे को है उससे अपने भक्तों को प्रसन्नता उपजाते हैं उसके तीनों नेत्र कमलपुष्प के सदृश खिले हुये हैं श्वेतवर्ण हैं अतिसुन्दर चन्द्रमा की एक लकीर भालपर जिसकी उपमा वर्णन नहीं हो सक्ती है विराजमान है इस तरह सदाशिव पञ्चवदन प्रसिद्ध हैं गले में तीन लकीरें और उसमें जो हलाहल की श्यामता है वह भक्तों के मन को हरती है शूल धारण किये गले में मुण्डों की माला चारभुजा और कोई पांचभुजा भी कहते हैं और कइयों ने दश भी कहा है ऐसे हाथों में अलग २ शस्त्र लिये हैं और हाथ कमलवत् लाली लिये उँगली भी लाल नख परेवा के चन्द्रवत् प्रकाशमान हैं और जब आठ भुजा वर्णन की जाती हैं तो उनके शस्त्र ये हैं शूल, फरसा, खड्ग, पवि दाहिनी ओर लिये हुये हैं और बाईं ओर अंकुश, खट्वाङ्ग, नाग धारण किये हुये हैं और जब कि सदाशिव की दश भुजा कही जाती हैं तो यह सब सामग्री सब हाथों में वर्णन होती है अर्थात् दाहिने हाथों में शूल, फरसा, पवि, चक्र और बायें हाथों में नाग, घण्टा, पाश, अंकुश, डमरू लिये हुये हैं हृदय बहुत चौड़ा फैला हुआ और उदर में त्रिबली पड़ी हुई नाभि गम्भीर विचित्र कटि और ऊरू मानों मन हरलेते हैं और कदलीथम्भ से साफ चमकते हुये गोल सुडौल हैं और तलुवा लाल नवीन चन्द्रमा के समान चमकते हैं ऐसा विचित्र सुन्दर स्वरूप श्वेतवर्ण माथे पर भस्म रमाये पांचकला और पञ्चब्रह्म सदाशिव के शरीर में वर्तमान हैं और तीनों शक्ति भी शरीर से जुदा नहीं और पांच या छः अक्षर से सदाशिव का शरीर है ऐसे पवित्र सम्पूर्ण कला समेत सदाशिव के स्वरूप को बड़े २ तपस्वी और मुनि छलरहित ध्यान करते हैं

जैसे कि बहुतरूप सदाशिवके हैं उसी तरह से उनके ध्यान भी असंख्य हैं पर उसके जाननेवाले बहुत ही कम पायेजाते हैं ऐसे सदाशिव की महिमा और रूप नाम असंख्य हैं जिनको वेद पुराण तपस्वी भी नहीं जानसक्के चाहे मूर्ख भी सदाशिव की कृपा से बेपरिश्रम यह रूप देख लेते हैं जैसा कि व्याध और गणिका आदि मुक्ति पाचुके हैं और इस बात की साक्षी वेद और पुराण देते हैं वह महाराज विना प्रेम दिखाई नहीं देता और संसार भर में वही प्रकट है और गज और गणिका के सदृश असंख्य मूर्ख महापापी जो वेद का नाम भी जानते न थे सदाशिवकी दया दृष्टि से मुक्ति पाचुके हैं ऐसे सदाशिव का कौन वर्णन करसक्ता है फिर सदाशिव ने शक्ति को अपने आनन्द के लिये उपजाया अर्थात् सदाशिव की महाशक्ति ने शरीर से प्रादुर्भाव होकर अपना तेजस्वरूप प्रकट किया जो षोडश शृङ्गार किये शरीर श्यामकमल सदृश नरम और श्याम ही केश केशरपुष्पवत् केशरही का ललाट पर चमत्कृत अर्ध-चन्द्र धारण किये श्यामकुन्तल विराजमान और कानों में रत्नों के दो कुण्डल पहिनेहुये ललाई लिये तीन नेत्र भौंहें कमान के सदृश कीर सम नासिका ओष्ठ कुँदुरू और मूँगेसे अतिसुन्दरी चम्पकवर्णी कटिकेहरी दन्तपंक्ति मानों मोतियों की लड़ी ठोढ़ी और गर्दन कैसी दिव्यस्वरूप जिसका वर्णन हो नहीं सक्ता वस्त्राभूषण से अलंकृत चार हस्तकमलों में अंकुश, पाश आदि शस्त्र लिये हुये थीं कई अष्टभुजीरूप से उस महामाया का ध्यान करके और उनमें ये शस्त्र बतलाते हैं धनुष् १ शूल २ बाण ३ चर्म ४ कृपाण ५ शङ्ख ६ चक्र ७ गदा ८ कमलके सदृश कलाई उँगलियां नख हृदय और उदर त्रिबली और नाभिकूप का कौन वर्णन करसक्ता है कटि महाक्षीण पांव के

नव दुइज के चन्द्रमा के सदृश ऐसे सुन्दर अनूप का ध्यान करके अति प्रसन्नता प्राप्त होती है सदाशिव ने इस शक्ति को श्यामरूप उपजाया पर कई श्वेत वर्ण और सोने के रङ्ग की अथवा विद्युत् के सदृश विचार करते हैं यह सदाशिव की आदिशक्ति ब्रह्मा विष्णु की माता और सृष्टि के होने का कारण है और सबकी स्वामिनी सदाशिवकी स्त्री जिसका आदि किसी को मालूम नहीं जो वह संसार में है और जहां तक कि वचन और मनकी शक्ति है वह सब इसीकी कृपा से है कई इन्हें सदाशिव दोनोंरूप और शक्ति को प्रकृति और पुरुषरूप कहते हैं इस बातमें सन्देह न करना चाहिये वरन विश्वास रखना उचित है कि जो कुछ सदाशिव चाहते हैं वही होताहै अब हम श्रीसदाशिवजी महाराज के सगुण स्वरूप के गुण चरित्र वर्णन करते हैं मन लगाकर सुनो श्रीसदाशिव को परब्रह्म और उमा को शक्ति जानना चाहिये पहिले सदाशिवने उमाके साथ विहार करने के लिये एकलोक बनाया जिसमें दुःख चिन्ता शोक दरिद्र को मार्ग नहीं और वह लोक परम रमणीय चित्र विचित्र परम मनोहर है और उस स्थानको किसी समय पर नहीं छोड़ते इसी कारण उस स्थान को अविमुक्त कहते हैं और जोकि वह स्थान सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों का आनन्द देने-वाला है इसलिये आनन्दवन भी उसका नाम है और जोकि वह स्थान सिद्धरूप तेजस्वरूप अद्वितीय है इसी से उसका नाम काशी रक्खागया बड़ा नगर है ऐसे नगरमें एक महल बनाया जो चित्र विचित्र रत्नों से अलंकृत है और उसमें मोतियों की झालरैं लटकतीं छत्र विमानादि असंख्य रक्खे हुये और वृक्ष कल्पतरु के सदृश ऐसे मन्दिर में सदाशिव ने अपने बैठने की जगह उत्तम २ रत्नों से बनाकर शक्ति समेत उस स्थान को

सुशोभित किया ऐसा सजा हुआ नगर देखकर सदाशिव ने अपनी शक्ति से कहा कि यह लोक अतिउत्तम पवित्र प्रसन्नता उपजानेवाला मुझे अतिप्रिय और उसी तरह पर तुमको भी प्रियतम है यहां किसी के साम्हने दुःख न आवेगा और यहां पहुँचकर कोई मनुष्य नारकी न होगा यद्यपि हम श्रीकाशीजी की प्रशंसा करते हैं पर तौ भी हम इसकी स्तुति वर्णन नहीं करसक्ते इतना कहकर सदाशिवने उमा के साथ विहार किया इच्छा हुई कि कुछ रचना करें यह विचारकर उमा से कहा कि हमारी इच्छा जो हम दोनों को प्रसन्नता उपजावेगी उसे सुनो।

पांचवां अध्याय।

सदाशिव ने कहा कि एक मनुष्य ऐसा उत्पन्न करना चाहिये जो सर्वविद्या में पूर्ण हो उसको सम्पूर्ण संसारी कार्य सौंपकर आप आनन्दपूर्वक विहार करें यह श्रवण करके श्रीजगदम्बाजी ने अपनी बाईं ओर देखा कि तुरन्त एक मनुष्य प्रकट हुआ अतिरूपवान् कलावान् शीलवान् बुद्धिमान् गुणवान् उसका सब शरीर मानों श्यामवर्ण चन्द्रमा कासा भालपर त्रिपुण्ड्र धारण किये हुये नेत्र मानों कमल के फूल के सदृश होठ लाल गले में कौस्तुभ मणि पहिने हुये शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, कमल धारण किये चारभुजा और कण्ठ में वैजयन्ती और वनमाला पहिनेहुये उदर में त्रिवली महासुन्दरी नाभि और कटि की प्रशंसा नहीं होसक्ती पीतवस्त्र पहिने प्रत्यङ्ग अति सुडौल सम्पूर्ण विद्यानिधि महाप्रतापवान् सिद्धरूप पवित्र वारंवार दण्डवत् करते हुये श्रीसदाशिवजी के सम्मुख आखड़ा हुआ ऐसे मनुष्य को देखकर सदाशिवजी और उमा अतिप्रसन्न हुये और वह भी अतिहर्ष को प्राप्त हुआ दोनों से हाथ जोड़ स्तुति महिमा और दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप मेरा

नाम और काम कहिये सदाशिवने कहा कि आपका नाम विष्णु जी होगा आपके समान अन्य मनुष्य सृष्टि में उत्पन्न न होगा और प्रकाश आपका सब संसार में प्रकट रहेगा तुमको हरि चतुर्भुज भगवान् अच्युत आदि अनेक नामों से मनुष्य पुकारेंगे और भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने के लिये तुम उत्पन्न किये गये हो अब उचित है कि तप करो जिस कारण कि प्रकाश की अधिकता हो यह कहकर सदाशिवजी ने विष्णुजी को योगविद्या पढ़ा दी उसके पीछे विष्णुजी तप करने लगे और दिव्य द्वादश सहस्रवर्ष पर्यन्त एकही आसन पर योग के साथ सदाशिवजी के ध्यान में बैठेरहे जब कि ऐसे तप का कुछ फल न मिला तो उस समय विष्णु बहुत शोकवान् हुये इस समय में ऐसी आकाशवाणी हुई कि जैसे वर्षा में बादल गर्जते हैं कि हे विष्णुजी ! तुम फिर मन लगाकर तप करो इस कारण कि हम सुगमता से दिखलाई नहीं देते यह आकाशवाणी श्रवण करके विष्णुजी ने अति कठिन तपस्या की और कठिन तपके कारण से इतना पसीना विष्णुजी के पवित्र शरीर से निकला कि नदी बह चली विष्णुजी मूर्च्छित होगये इस कारण विष्णुजी का नाम हरनारायण है वे ऐसे मूर्च्छित होगये जैसे कोई निद्रा में होता है इस अवस्था में सदाशिव की इच्छा से एक कमल विष्णुजी की नाभि से उत्पन्न हुआ उसमें बहुत सी पङ्खड़ियां देखने में बहुत ऊंचा महामनोहर और लम्बाई में बहुत ऊंचा था उसके पीछे सदाशिव ने मुझको अपनी दाहिनी भुजा से उत्पन्न करके उसी कमल में रख दिया मेरा रङ्ग लाल अतिसामर्थ्यवान् चार शिर धारे मुँह चारों कोण की तरफ़ जिनमें त्रिपुण्ड्र लगा हुआ था और दो दो आंख और हरएक अङ्ग मानो विष्णु के अङ्ग के सदृश था उस समय मैंने आकाश

से यह वाणी सुनी कि तुम्हारे अनेक नाम अज, ब्रह्मा, धाता, प्रजेश, विधाता, परमेष्ठी, बहुगर्भ, प्रमुख आदि होंगे पर मैंने अपने उपजानेवाले को न जाना कि कौन है हे नारद! सदाशिव की माया तीनों भुवन को घेरे है वह जो चाहते हैं करते हैं विष्णु, हम, देवता, मुनि, ऋषीश्वर, सिद्ध, तपस्वी, दैत्य, दानवादि सब सदाशिवजी की माया के अधीन हैं वह अनादि है मैंने यह न जाना कि मैं किससे उत्पन्न हुआ किसका पुत्र हूं और उस कमल के पुष्प की जड़ कहां से है फिर मैंने विचार किया कि जिसके ऊपर और मूल से यह कमल उत्पन्न हुआ वही हमारा पिता होगा मैं यह विचार कर उस तालाब के अन्दर गया और उसी कमल की डराडी के मार्ग बहुत दूर सैकड़ों कोसों पर्यन्त चला गया पर जब उसके मूलको न पाया तो मैं शोकवान् होकर वहां से लौटा और सौ वर्ष के पीछे जिस जगह से चला था वहां लौट आया परन्तु कमल को न देखा मैं कमल के न देखने से चिन्तित हुआ मैंने इस सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी से रक्षा चाही जो सबसे श्रेष्ठ है उस समय आकाशवाणी हुई और दो अक्षर प्रकट हुये उसके सहारे से १६ और २१ अक्षर मुझको प्रकट हुये और बहुतसी बातें जानी गईं उस समय सदाशिवकी इच्छा से विष्णु जो अचेत हुये नदी में पड़े हुये थे सचेत होकर मेरे नगर में आये जो किरीट और कुराडल आदि रत्न पहिने हुये नेत्र लाली लिये हुये हास्य उनका खिले हुये कुन्द के पुष्प के सदृश होंठ उनके लाल अतिरूपवान् कौस्तुभमणि कराठ में उत्तमवस्त्र धारण किये चार भुजा में शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये दोनों हाथ, अंगुली, नख, हृदय, उदर, नाभि और कटि बहुत ही सुडौल पीतवस्त्र पहिने शरीर का रङ्ग मेघ के सदृश जिसको देखकर कामदेव लजाय-

मान हो और शरीर के सुन्दर वर्ण से अतसीपुष्प नम्र हो ऐसे स्वरूप को देखकर हम अचम्भे में हुये और सदाशिव उमा-सहित ऐसे विचित्र सुन्दर स्वरूप को देखते ही मोहित होगये इतना कहकर श्रीब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! इसमें कुछ चिन्ता न करो सदाशिव जो चाहते हैं वह करते हैं इसके पीछे हमने कहा कि आप कौन हैं विष्णु ने कहा कि हे ब्रह्मन् ! हम ब्रह्म और अलख निरञ्जन हरि अचिन्त्य भूपति अविकार सत् चित् आनन्द हैं किस कारण आप अचेत होकर ऐसा प्रश्न करते हैं हम तुम्हारे पिता हैं और तुम हमारे नाभिकमलपुष्प से उत्पन्न हुये हो अब निर्भय रहो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे हमारे ऊपर और अन्य मनुष्य उत्तम नहीं हैं सबके स्वामी हम हैं यह बात विष्णुजीने अज्ञानता की अवस्था में कही कि हम ब्रह्म हैं हमसे उत्तम कोई नहीं है इस कारण कि वह शिवजीकी माया से अचेत थे ऐसा संसार में कौन है जिसको सदाशिव की माया भुला नहीं देती यह वचन विष्णुजी का श्रवण करके हमको बहुत क्रोध हुआ और कहा कि हे विष्णुजी ! तुम ऐसा असत्य वचन न कहो और केवलीभाव पर निश्चय रक्खो इस कारण कि जो हम आपही उत्पन्न होते तो वेद हमको ब्रह्मा, पितामह, विधाता, परमेष्ठी, विधि आदि नामों से न पुकारते हम अपने तई तीन गुण करके सर्व सृष्टि को उत्पन्न करते हैं हमारा उत्पन्न करनेवाला कोई नहीं है यह श्रवण करके विष्णुजी ने कहा कि ऐसी अज्ञानता तुमको अयोग्य है हम सर्व सृष्टि को उत्पन्न करके पालना करते हैं फिर ठहराकर सबको नष्ट कर देते हैं और हरीश अच्युत आदि हमारे नाम सबसे उत्तम हैं तुममें कोई अवगुण नहीं हमारी माया के अधीन होकर सब लोगों की यही अवस्था है संसार सब हमारे अधीन है हमने वेदों को बनाया और तुमको अपनी नाभि के

कमल से उत्पन्न किया हमसे उत्तम कोई मनुष्य नहीं है अपने नाम के अहंकार पर अहंकार न करो और निष्क्रोध होकर योग्य वचन कहो जैसा कि अन्धा आंखों की महिमा और निर्धन धनवान् की अवस्था वर्णन करे उसीप्रकार तुम्हारे नाम वेद ने वर्णन किये हैं भला होगा अगर हमारा पूजन करो ऐसे अहंकार के वचन विष्णुजी के सुनकर हम बहुत हँसे परन्तु मन में क्रोध इतना उत्पन्न हुआ कि जिससे हम विष्णुजी के शत्रु होगये और हमने कहा कि तुम बार २ मुझको गुरु के सदृश कि जैसा गुरु अपने चेले को झिड़क कर बुलाता है उपदेश करते हो हम वेद के पाठक हैं और तुम नहीं जानते हो कि वेद क्या है इस वार्ता को वेद आपही वर्णन करता है कि तुम निष्फल इतना क्रोध करते हो वेद की कठिन गति वर्णन करके तुमने इतना वाद निष्फल किया इसी वचनपर हम और विष्णुजी परस्पर बहुत लड़े और मूर्खों के सदृश शिवमाया से बड़ा युद्ध किया और शिवजी की माया से दोनों आपको सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी समझे रहे हे नारदजी ! कुछ आश्चर्य न करना क्योंकि सदाशिव की माया बहुत गुप्त है।

छठवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! सदाशिव हमारी और विष्णुजी की मूर्खता की लड़ाई देखकर अन्तकाल की जलती हुई बड़वाग्नि के सदृश प्रकट हुये उनका दृष्टान्त क्या दूं ऐसा स्वरूप देखकर हम दोनों ने लड़ाई को रोकदिया और विष्णुजी भयवान् और आश्चर्यवान् होकर मुझसे कहनेलगे कि हे ब्रह्मन् ! यह तेज कहां से आया जो मनुष्य इसके आदि और अन्त को देख आवे वही सबका मालिक है और यह आदि अन्त रहित है तुम ऊपर के लोक को देख आवो और हम नीचे के लोक को

जाते हैं हम यह वचन सुनकर अहंकारी हो उस ज्योति के अन्त को ढूंढ़ने चले परन्तु पूरा नियम है कि जो काम अहंकार की अवस्था में किया जाता है उसका परिणाम भला नहीं मिलता अच्छा काम अहंकार से पूर्ण नहीं होता और सुख और बुद्धि को नष्ट कर डालता है और अनेक मनुष्य जैसे रावण बाणासुर इस अहंकार से नष्ट हुये हैं विना त्याग अहंकार के कोई मनुष्य कार्य सिद्ध नहीं करसक्ता और निर्जरमुनि, गज और अन्धकादि ने अहंकार त्यागकर मन के मनोरथ पाये हैं जैसा कि वेदों में लिखा है सो विष्णुजी श्वेतशूकर का रूप धारणकर पाताल में गये उसी दिन से संसार में श्वेतशूकर प्रसिद्ध है यह पहिला चरित्र हमारा और विष्णुजी का जो कोई मनुष्य प्रातःकाल के समय हाथ पांव धोकर ध्यान करता है उसको इसलोक में बड़ा सुख और आरोग्यता और परलोक में भी अच्छी अवस्था मिलती है निदान हम और विष्णुजी दिव्य एकसहस्र वर्ष पर्यन्त उस ज्योतिको ढूंढ़ते रहे परन्तु उसका आदि अन्त कुछ न मिला निदान लौट आये परन्तु पहिला स्थान जहां से चले थे वह न मिला और दिव्य सहस्रवर्ष पर्यन्त पहिले स्थान के ढूंढ़ने में खराब रहे उस समय यह वार्ता हृदय में निश्चय भासी कि हमारे ऊपर और कोई मनुष्य उत्तम और पुरातन है यह विचार कर हम दोनों पवित्र स्वरूप की रक्षा में आये और परस्पर मिलकर शत्रुता का त्याग किया उस समय आकाशवाणी हुई कि तुम दोनों योग करो यह श्रवण कर हम दोनों योग करने लगे और महिमा और स्तुति की कि हे केवल! हे स्वामी! हे अलख निरञ्जन! हे अन्तर्यामी! हम दोनों ने अपनी बुद्धि को नष्ट करके अपने को सर्वसृष्टि का उत्पन्न करनेवाला ठहराया था अब तुमको दण्डवत् है सो अनुग्रह करके हमको अपना

सेवक विचार कर दया करो और प्रकट हो यह कहकर देखने लगे कि उस समय हमको ऐसे गुप्त अक्षरों से प्रेरणा हुई जिसको हम समझ न सके और दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप शरीर सहित प्रकट हूजिये यह कहते थे कि महाराज कृपानिधान ने अपने स्वरूप को जिसको देख संसारभर मोहित हो दिखलाया और प्रणव अर्थात् ॐकार प्रकट हुआ जिसको कि हम दोनों सदाशिवजी की माया के कारण जानने से अचेत रहें परन्तु जब उसके चार भाग हुये और उसके अन्दर से होकर सदाशिव आपही प्रकट हुये तो हमने जाना कि अक्षर अकार, उकार, मकार नाद और बिन्दु के यह अर्थ हैं कि पहिला अक्षर अर्थात् अकार लिङ्ग की ज्योति है और अक्षर उकार जो दूसरा है वह उस लिङ्गकी ज्योति का मध्य है और आधी मात्रा जो नाद है वह उसी लिङ्ग की ज्योति का शिर है और जो विन्दु अर्थात् बिन्दी भासती है वह सर्वलिङ्गकी ज्योति है और सिवाय इसके और प्रकार पर प्रणव को वर्णन करते हैं अर्थात् अकार से ऋग्वेद उकार से यजुर्वेद मकार से सामवेद अथर्वण नाद से और ब्रह्मविद्या बिन्दु से ठहराते हैं और प्रसिद्ध रहे कि हर वेद ने दश २ अर्थ से सदाशिव को वर्णन किया है जिसको हमने श्रवण नहीं किया ऋग्वेद जो रजोगुणी है लिङ्ग का दक्षिणीय भाग है यजुर्वेद जो सतोगुणी है उत्तरीय भाग लिङ्गका है सामवेद जो तमोगुणी है वह मध्यभाग लिङ्ग का है और अथर्वण वेद जो निर्गुण कहलाता है उसका वाक्य है कि सदाशिव कुछ नहीं करते जो होता है वह शक्ति की इच्छा से होता है और ऋग्वेद को जाग्रत् से उपमा करते हैं और स्वप्नकी अवस्था को यजुः बताते हैं व सुषुप्ति अवस्था को साम-वेद समझते हैं और अथर्वण वेद को तुरीया अवस्था कहते

हैं जोकि जानने से रहित है और यद्यपि यह प्रणव जपने विना ही मुक्ति देता है इसकारण इसका नाम तारक है और यही मोक्ष देने का अधिकारी है और इस कारणसे कि यह मोक्ष देता है इसलिये इसका प्रणव नाम है और तीनों अक्षर प्रणव में हैं और तुरीया को जो अति गुप्त है उससे वेद अङ्गों सहित प्रकट होते हैं वह इस सृष्टिमें सबसे उत्तमोत्तम है उसको वृष-तन कहते हैं उसी प्रणव में तीनलोक हैं वह कभी नष्ट नहीं होता और ब्रह्मा से लेकर तृणतक उसमें मिलजाते हैं और ढूंढ़नेपर उस प्रणव के लिङ्ग को नहीं पाते चारों वेद और अठारहों पुराण उसके अन्दर हैं हे नारद ! सदाशिवजी को वेद प्रणवरूप वर्णन करते हैं सदाशिवजी जो दाहिना अकार है उससे सृष्टि उपजाते हैं और बायां अङ्ग जो उकार है उससे पालन करते हैं और हृदय में जो मकार है उससे प्रलय प्रकट होता है और सम्पूर्ण वर्णमाला के अक्षरों से श्रीसदाशिवजी का शरीर अलंकृत है शिर अकार उकार दाहिनी आंख दोनों ओकार दोनों कान हैं दोनों ऋकार कपोल दोनों नकार नाक दोनों ई दोनों होंठ दोनों ऊ दोनों ओर के दांत और जो अनङ्ग है वह जिह्वा है अ तालु है कवर्ग पांच अक्षर दाहिनी भुजा चवर्ग पांच अक्षर बाईं भुजा टवर्ग पांच अक्षर दाहिना पांव तवर्ग पांच अक्षर बायां पांव प पीठ फ दोनों पांजर भ, कन्धा म हृदय और यवर्ग सदाशिवजी का वीर्य प्रकट करते हैं ऐसा जो सदाशिवजी का शरीर अक्षरों से अलंकृत है उसका ध्यान करके अति प्रसन्नता प्राप्त होती है हमने और विष्णुने यह रूप सदाशिवजी का जो प्रणव था देखकर अति प्रसन्नता से दोनों हाथ जोड़कर दण्डवत् की और बहुत स्तुति और प्रशंसा की।

सातवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अति प्रशंसा महिमा और स्तुति के पीछे हमने प्रार्थना की कि आप अपना स्वरूप हम पर प्रकट कीजिये यह हमसे और विष्णुजी से सुनकर सदाशिवजी शक्ति संयुक्त प्रकट हुये शरीर उनका श्वेत पत्थर के सदृश भस्म धारण किये शिर में जटा और बायें ओर शक्ति उत्तम वस्त्र और अच्छे गहना धारण किये हुये दर्शन दिये ऐसा स्वरूप देख कर हम दोनों को इतना सुख हुआ कि नेत्रों में से पानी बह निकला और प्रेम के कारण बाणी बन्द होगई परन्तु चेतकर हम स्तुति करने लगे और स्तुति के पीछे प्रार्थना की कि हमारी लड़ाई और वार्ता शुभ हुई कि दयानिधान के दर्शन हुये धन्य भाग्य और शुभ कर्म हमारे उदय हुये कि आपको देखकर लोक परलोक का सुख प्राप्त हुआ हमसे जो कुछ अपराध हुआ हो वह क्षमा कीजिये इस प्रकार हम विष्णुजी बहुत प्रशंसा करके अहम्भाव और अहंकार से रहित होगये और सदाशिवजी को अपना स्वामी बनाया और अतिनम्रता और शीलसे हाथ जोड़कर महिमा बखान कर दण्डवत् की और शिर नीचे किये उनके चरणारविन्द को देखते रहे ।

आठवां अध्याय

ब्रह्मा ने कहा कि हे नारद! हमारी और विष्णुजी की जिह्वा से स्तुति और प्रशंसा सदाशिवजी सुनकर हँसे और बोले कि हे ब्रह्मन्! हे विष्णो! जो हम कहते हैं वह सुनो अर्थात् तुमने मोह में आकर परस्पर लड़ाई की अन्त में हमने तुम दोनों को अपना भक्त समझकर अपने लिङ्ग प्रकट किये जिससे तुम दोनों ने हमको पहिंचाना अब उत्तम है कि परस्पर वार्ता को जाने दो और अहंकार का त्याग करो वह काम करो जिसकी

हम आज्ञा दें यह कहकर हमको श्वास के मार्ग से सब वेद पढ़ा दिये और पांच मन्त्र बता दिये जिसमें सब विद्याएँ हैं पहिले प्रणव की शिक्षा दी जिसके अक्षर वेद हैं और पहिला वाक्य सदाशिवजी का वही है और फिर गायत्री जो वेदों की माता है और जिसमें २४ अक्षर हैं वर्णन की उसके पीछे महामृत्युञ्जय मन्त्रकी शिक्षा दी फिर चिन्तामणि सिखाया जो भक्तों को बहुत सुख को प्राप्त करे यह वेद और मन्त्र पढ़कर हम अति सुखको प्राप्त हुये और हम और विष्णुजी सदाशिव को देखने लगे और दर्शन में इसी तरह डूबे रहे और इस प्रकार सुख और स्वाद उस दर्शन से पाया जिसको हम वर्णन नहीं कर सके जैसे कि दरिद्री को सरदी में धूप और कामी पुरुष को स्त्री मिलने से अत्यन्त सुख प्राप्त होता है उसी प्रकार हम दोनोंको सदाशिव की मूर्ति अति प्रिय लगी और अचेत हो गये यह हमारा प्रेम देखकर सदाशिवजी अति प्रसन्न हुये और कहा कि ब्रह्मा तुमको धन्य है जो सब सृष्टि के स्वामी हुये और मेरी ओर देखकर कहा कि तुम संसार उत्पन्न करो और विष्णुजी से कहा कि तुम उनकी पालना के अधिकारी हो और वेदों को देखकर मुझको पहिंचानो और जैसा योग्य है उस प्रकार अपना काम अच्छे प्रकार से करो मुझको वेद ही जानो और जो वेद में लिखा है वही हमारी आज्ञा मानो यह श्रवण कर हम दोनोंने प्रार्थना की कि आपभी अवतार लीजिये और हमारी सहायता कीजिये और तीनों लोकों की पालना करके अपने अधिकार में अन्तकाल को रखिये हमारा यह मनोरथ है फिर हमने प्रार्थना की कि आप हमको पहिले पूजन की रीति बताइये कि उसके अनुसार करें यह श्रवण कर सदाशिव जी ने वर्णन किया कि संसार में तुमसे अधिक हमको प्रिय कोई

न होगा अब सब शोक और चिन्ता आदि से रहित होकर सुख करो और औरों को सुख दो पहिले जो हमने तुमको लिङ्गका स्वरूप दिखाया था उसीका पूजन करना योग्य है उसीके पूजन से अधिक सुख मिलेगा और लिङ्गकी उत्पत्ति यह है कि जिस क्षेत्र में सब संसार लीन हुआ है उसका नाम लिङ्ग है ऐसे लिङ्ग के पूजन से इसलोक और परलोक में सुख मिलेगा जिस समय तुम पर कोई आपत्ति पड़े हमारे लिङ्गका पूजन करना और जो हमारे लिङ्ग का पूजन करेगा उसके सब पाप क्षमा होजावेंगे और लिङ्ग के पूजन की महिमा अधिक है जो मनुष्य लिङ्ग की स्तुति हमारे पास पढ़ेगा उसको दोनों लोक में सुख होगा और वर्णन किया कि हम आप समय पर प्रकट होंगे और तुम्हारे नगर में आवेंगे उस अवतार का नाम रुद्र जानना और मुझमें और उसमें कुछ भी न्यूनाधिक्य न समझना मुझको सब सृष्टि के जीवों में समझना हम चारों एकही स्वरूप हैं और जो कोई अलग विचारेगा उसको अधिक दुःख प्राप्त होगा यह कहकर सदाशिवजी ने बड़ा गुप्तभेद हम पर प्रकट किया और कहा कि यह भेद वेद में अधिक गुप्त है अर्थात् हम सगुणरूप शिव और शक्ति दो नामों से होते हैं और तीनों गुणसे तीनों देवता भिन्न २ उपजते हैं एक समय तो पहिले विष्णुजी फिर ब्रह्मा फिर हर उत्पन्न होते हैं और अन्य समय पहिले महादेव और किसी समय पहिले विष्णु और फिर ब्रह्मा सो तुम दोनों शक्ति के चिह्न से रजोगुण और सतोगुण को धारण करते हो और हर महादेव हमारे अंश और हमारे स्वरूप हैं और तमोगुणी हैं अन्त में अन्तकाल करदेते हैं और जहां तक कि सर्व सृष्टि का विस्तार है वह सब शक्ति का घेरा समझ लेना उसको भी नष्ट करनेवाला स्वामी रुद्र जानो परन्तु जिस निमित्त कि हम तमो-

गुण धारण करके रुद्र का स्वरूप बनाकर प्रकट होंगे सो सब हमने वर्णन कर दिया और तुम दोनों जो काला और लाल स्वरूप धारण किये हो इस निमित्त हर श्वेत स्वरूप होंगे सो तुम पर तमोगुण न व्यापेगा और हर की यह अवस्था होगी कि वे रात्रि दिन पवित्र योग में प्रवृत्त रहेंगे उनका स्वरूप हमारा ही सा होगा ऐसा जानकर अब तुम तीनोंलोक को उत्पन्न करो जिसमें अधिक अनेक प्रकार के अधिक जीव देवता मनुष्य और असुरादि हों फिर विष्णुजी की ओर देखकर कहा कि तुम उत्तम भांति जीवों की पालना करना हम हर का स्वरूप धारकर प्रेमके समय दोनों की सहायता करेंगे और वर्णन किया कि हमारे दाहिनी ओर के शरीर से ब्रह्माजी और बायें से विष्णुजी और हृदय से रुद्रजी प्रकट होंगे तीन प्रकार से हम अलग हैं और उमा जो शक्ति वह दो अंशों में प्रकट होगी जिससे तुम अलग न समझे जाओगे पहिला भाग लक्ष्मीजी होकर विष्णु जी को मिलेगी दूसरा भाग सुरा जो ब्रह्मा लेंगे और उमा आपही प्रकट होकर हरको अङ्गीकार करेंगी और सती नाम उनका संसार में होगा वे तीनों लोककी उत्पन्न करनेवाली हैं इसी प्रकार तीनों देवता शक्ति को लेकर आज्ञानुकूल वेद का पूजन करेंगे सो तुम दोनों को उचित है कि हमारी आज्ञानुसार चलो और हर तुमको चिन्ता से रहित करते रहेंगे सहस्र चौयुगी के व्यतीत होनेपर ब्रह्मा का एक दिन समझा जावेगा सो एक सौ वर्ष ब्रह्मा की आयुर्दाय जानो और ब्रह्माजी की आयु विष्णुजी का आधा दिन और हर का एक दिन है ऐसा दिन व्यतीत होनेपर सगुणरूप सदाशिव निर्गुण होकर अन्तकाल करते हैं यह कहकर सदाशिवजीने दोनों हाथ हम दोनोंके शिरपर फेरा जिस समय हमारा और विष्णुजी का शिर सदाशिवजी ने छू

लिया उस समय का सुख हम किस जिह्वा से वर्णन कर सकें ऐसी शिक्षा और उपदेश देकर सदाशिवजी अन्तर्धान हुये हम दोनों शोकवान् होकर दोनों हाथ जोड़ कर शिव शिव कहते जिस ओर को वे गुप्त हुये थे उसी ओर को दण्डवत् करते रहे और वही स्वरूप सदाशिव का हृदय में दृढ़कर चुप हुये।

नवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि सदाशिव की आज्ञा पाकर विष्णुजी भी गुप्त होगये और सबलोक को ब्रह्माण्ड से अलग कर दिया और हमने भी सदाशिव की आज्ञानुकूल जीवों को उत्पन्न करने की इच्छा की और सदाशिवजी की कृपा से शक्ति को पाकर स्वच्छ ब्रह्माण्ड अर्थात् उत्तमोत्तम सृष्टि को देखा अब हम जीवों की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं जैसे कि वे प्रकृति और पुरुष से उत्पन्न होते हैं अर्थात् जब सदाशिव और प्रकृति ने चाहा तो उनकी इच्छा करके मति अर्थात् बुद्धि उपजी उसको सूत्र और महत्तत्त्व करके भी वर्णन किया है फिर उससे अहंकार अहंकारसे तीनों गुण सतोगुण रजोगुण और तमोगुण उत्पन्न हुये इन्हीं तीनों गुणों से धरती और आकाश हुये और धरती से गन्धादि हुये और महाभूत से सर्वजीव और एक अण्डा सात दलोंका प्रकट हुआ और इस प्रकार क्रम से देवता मनुष्य आदि हुये फिर हमने सदाशिव के चरणों का ध्यान करके सब से पहिले सनक १ सनातन २ सनन्दन ३ ऋभु ४ सनत्कुमार ५ पांच मनुष्यों को उत्पन्न किया ये बड़े पवित्र योगी त्यागी और ब्रह्मविद्या जाननेवाले सिवाय ध्यान सदाशिवजी के और कुछ न जानते थे और हमसे कहा कि हम सृष्टि उत्पन्न न करेंगे मैंने अवज्ञा करने के कारण क्रोध किया परन्तु विष्णुजी के समझाने से क्रोध शान्त हुआ फिर मैं अति परिश्रम से अधिक

समय तक तप करता रहा और फल न मिलने के कारण आश्चर्यवान् हुआ और सदाशिवजी की माया से ऐसा डरा कि नेत्रों से अश्रुकी बूंदें टपकीं उस समय सदाशिव ने दयावान् होकर मुझको यह बुद्धि दी कि जिससे मेरी यह इच्छा हुई कि जो आप सदाशिवजी हमारे पुत्र होकर आवें तो हमारे सर्व कार्य सिद्ध होजायँ यह वार्ता मन में ठहराकर अधिक समय पर्यन्त फिर योग में लीन रहा यह मेरा तप ऐसा अङ्गीकार किया कि सृष्टि की वृद्धि के लिये शिवजी हमारी भौंके नीचे से उत्पन्न हुए और सब चिह्न अपने उस मूर्ति में प्रकट कर दिये अर्थात् शिर में गङ्गाजीकी धारा वहती हुई माथे में चन्द्रमा त्रिपुण्ड्र धारण किये पांच मुख चार हाथ और सर्व अङ्ग उसी प्रकार के जैसा कि ऊपर वर्णन होचुका है मेरी सहायता के निमित्त प्रकट हुये ।

दशवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि यह रूप सदाशिवजी का प्रकट हुआ और मुझसे कहा कि जो कहो हम वेद की आज्ञानुकूल करें मैं सदाशिवजी की माया में डूबकर पिता के सदृश पुत्र को शिक्षा देनेलगा और मैं ऐसा सुपुत्र पाकर फूला न समाया और कहा कि जब तुम ऐसे पुत्र उत्पन्न हुये तो हमारे सर्व मनोरथ पूर्ण होजावेंगे और मैंने कहा कि तुम्हारे ग्यारह नाम वेद के अनुसार विस्तार से ये हैं—मन्यु १ मनु २ महिनस ३ महान् ४ शिव ५ ऋतुध्वज ६ उग्ररेता ७ भव ८ काल ९ वामदेव १० धृतव्रत ११ और ग्यारह रुद्राणियों के ये नाम हैं—धी १ वृत्ति २ उसना ३ उमा ४ नियुत्सर्पि ५ इला ६ अम्बिका ७ इरावती ८ सुधा ९ दीक्षा १० रुद्राणी ११ इसके सिवाय तुम्हारे और भी नाम जैसे रुद्र महेश्वर हर जगदीश आदि अनेक होंगे और पांच

तत्त्व अर्थात् जल १ धरती २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ और सूर्य, शशि, जीव हृद ये योगस्थान तुम्हारे स्थान होंगे और अपनी स्त्रियों को भी उन्हीं स्थानों विषे अपने साथ लिये रहो और सन्तान उत्पन्न करो जिससे सृष्टि अधिक हो यह वचन श्रवणकर शिवजी ने अति कुपुत्र भूत, प्रेत, पिशाच, कूष्माण्ड, वेताल, ब्रह्मराक्षस आदि सहस्र प्रकार के जीव भयंकर उत्पन्न किये जिसको देखकर हमको आश्चर्य हुआ और भयवान् होकर कहा कि ऐसी सन्तान को इसी समय नष्ट करो और सत्पुत्र उत्पन्न करो यह सुनकर शिवजी को हँसी आई और कहा कि ऐसे जीव जिसको मरना जीना हो हम उत्पन्न न करेंगे तुम उत्पन्न करो जो पुरुष चिन्ता का मार्ग छोड़कर सुखी रहेंगे उनको हम मुक्त करेंगे और हमको न भूलना ऐसे कहकर सदाशिवजी ने अपनी माया को खींच लिया उस समय में चेता और मैंने अपना शिर दण्डवत् करने के वास्ते झुकाया थोड़े समय के पीछे मैंने चेत कर स्तुति की और चरणों पर गिरपड़ा तब सदाशिवजी ने मुझको धरती से उठाकर मेरे सब शरीर पर हाथ फेरा उस समय सनकादि आकर चरणारविन्दोंपर गिरे और महिमा बखानी सदाशिवजीने दयालु होकर अति उत्तम बुद्धि कृपा की और फिर हमारे ललाट के मार्ग से गुप्त होकर अपने लोक को चले गये हे नारद ! हम तीनों देवताओं में कुछ अन्तर नहीं है कभी विष्णुजी हमारे गृह उत्पन्न होते हैं और किसी समय हम विष्णु से उत्पन्न होते हैं इसीप्रकार से किसी समय शिव हमारे पुत्र और किसी समय हमारे पिता होजाते हैं अब हम फिर सृष्टि का वर्णन करते हैं जिस प्रकार से उत्पन्न की गई है।

गेरहवां अध्याय ।

ब्रह्माजीने कहा कि हमने सदाशिवजीकी आज्ञा पाकर पहिले

आकाश और धरती पांच तत्त्व पहाड़ मूल और कला आदि उत्पन्न किये उसके पीछे अपनी इच्छा से विरञ्चि १ अङ्गिरस २ शातातप ३ भृगु ४ पुलस्त्य ५ पुलह ६ वसिष्ठ ७ ये सप्तऋषि हुये और तुम १ कर्दम २ और दक्षादि दश पुत्र मैंने अपने हर अङ्गसे उत्पन्न किये और दाहिने स्तन से मनुष्य और पीठ से पाप और इसी प्रकार प्रीति तृष्णा आदि हर अङ्ग से प्रकट किये और तारे दिशा दिक्पति चन्द्रमा आदि क्रमसे उत्पन्न किये परन्तु यह सृष्टि अपनी उत्पन्न की हुई तामसी देख कर मुझको चिन्ता हुई और रात्रि के कारण क्षुधातुर हुआ और राक्षस यक्षादि के खाने को दौड़ा और अपना शरीर भयंकर बनाकर काल को उपजाया फिर ऐसा शरीर त्याग कर स्त्री का स्वरूप मैंने धारण किया उस समय सब मुनि मेरे ऊपर दौड़े मैंने वह शरीर बदल कर अन्य शरीर को धारण किया और अपने घुटने से असुरों को उत्पन्न किया वे वीर्य से भरे हुये थे मुझको उन्होंने न पहिंचाना और निर्लज्जतापूर्वक काम की इच्छा से मेरे पास आये उनसे अधिक डर कर मैंने सदाशिवजी से रक्षा मांगी और प्रार्थना की कि इनको आप झटपट नष्ट करें आज्ञा हुई कि इस शरीर को बदल डालो मैंने ज्योंही कि शरीर को बदला असुरादि अचेत होगये वही सायंकाल समय फिर आया फिर मैंने मनुष्य उत्पन्न किये उस समय मेरा शरीर चांदनी रात्रि के सदृश प्रकाशवान् था और फिर दूसरा स्वरूप धार कर राक्षस, गन्धर्व, यक्ष, गुह्य, किन्नर, कम्पिरिष, विद्याधर, ईश्वर, भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, वेताल, भुजंग, डाकिनी, शाकिनी, योगिनी, कूष्माण्ड और काम की इच्छा करनेवाली स्त्री को उत्पन्न किया परन्तु ऐसे जीवके उत्पन्न करने से मन और हृदय को प्रसन्नता न हुई और शिवजी की इच्छा से फिर दूसरी

सृष्टि जैसे हाथी, शेर, बैल, ऊँट, घोड़ा आदि जो जीव कुछ भी ब्रह्मज्ञान नहीं जानते और जो केवल बुद्धिहीन हैं उपजाये और सर्व सृष्टि के बनाने के पीछे मैंने विचार किया कि ये क्या काम करेंगे ऐसा विचार कर मैंने सदाशिवजी का ध्यान किया तो झटपट चारों वेद मुझ से उपजे और धनुर्विद्या गानविद्या और सर्वपुराण कथाओं से संयुक्त जो पांचों वेद कहलाते हैं प्रकट किया और सब आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यस्त, वानप्रस्थ व्रत संयुक्त और सब विद्या और धर्मशास्त्र, नीति, मोक्ष, धर्म, काम, अर्थ और वैद्यकादि बनाये जब मैं सृष्टि बनाकर तय्यार कर चुका तो विष्णुजी पालना करनेलगे और महेश को धरती के थांभने के निमित्त उत्पन्न किया यह सृष्टि का वर्णन चिन्ता से रहित करके सुख देता है।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! यह सृष्टि जो ऊपर वर्णन हुई सब शरीर और हृदय से उपजी अब हम उस सृष्टि का वर्णन करते हैं जो सङ्ग करने से उत्पन्न होती है यद्यपि हमने अनेक यत्न किये परन्तु दृढ़ शक्ति प्राप्त न हुई तब मैंने पूरा उद्योग कर और इन्द्रियों को आधीन कर सदाशिवजी की पूजन की इस कारण से कि ऐसे कार्य शिव की प्रसन्नता विना पूरे नहीं होते अन्त में सदाशिवजीने मुझको अपने दर्शन दिये वह स्वरूप अर्धाङ्गी था तात्पर्य यह कि दाहिनी ओर तो पुरुष का रूप जो सदाशिवजी का था और बाईं ओर स्त्री का रूप अर्थात् महारानी जगदम्बाजी प्रकट हुई एक ओर जटा और दूसरी ओर सुगन्धित केश एक ओर ललाट पर त्रिपुण्ड्र लगा हुआ दूसरी ओर बेंदी एक आंख में भस्म लगी हुई दूसरी में सुरमा लगा हुआ एक ओर केवल नाक दूसरी ओर नासिका में अलंकृत

न्थ थी एक ओर कण्ठ में तीन लकीरें दूसरी ओर सोने का गहना एक ओर भुजा में सर्पादि लपटे हुये दूसरी में बाजू पहिने हुये एक हाथ में सर्प दूसरे में कङ्कण एक ओर दश उँगलियां हैं दूसरी ओर रत्न के गहने एक ओर मुण्डों की माला धारण किये दूसरी ओर हीरों की हमेल एक ओर कटि में पटका बांधे हुये दूसरी ओर रत्नों की करधनी पहिने हुये एक ओर स्वरसमूह भक्तों के सुखदेनेवाले दूसरी ओर घुँघरू ऐसा रूप अर्धाङ्गी देखकर मैं अति प्रसन्न हुआ और विचार करलिया कि अब शीघ्र ही कार्य सिद्ध होगा इस निमित्त दण्डवत् करके स्तुति करने लगा और प्रशंसा के पीछे प्रार्थना की कि धन्यभाग हमारे हैं कि आपने दर्शन दिये मेरी स्तुति सुन कर सदाशिवजी हँसे और कहा कि जिस मनोरथ के निमित्त तुमने इतना कष्ट भोगा वह हम जानते हैं और तुम्हारी इच्छा अधिक सन्तान की सृष्टि विषे है यह कहकर सदाशिवजी और शक्ति अलग अलग हो गये उस समय मैंने शक्ति की महिमा वखानी और कहा कि आपकी आज्ञा से मैंने सृष्टि उत्पन्न की परन्तु वह बढ़ी नहीं है अब कामदेव से सृष्टि उत्पन्न किया चाहता हूं और आपसे शक्ति प्राप्त होना मांगता हूं आप दक्ष की पुत्री हूजिये मैं आपका लड़का हूं यह सुन कर शक्ति ने दया से हँसकर सदाशिवजी की ओर देखा और वर्णन किया कि अच्छा समय पर तुम्हारी नवासी हूंगी और हमारा नाम सती होगा जिस समय कि दक्ष सदाशिव का अपमान करेगा उस समय हम जायँगी यह कहकर सदाशिवजी के शरीर में समाय गईं और सदाशिव भी गुप्त होगये ।

तेरहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारदजी ! जिस प्रकार से कि यह

सृष्टि मैथुन से उत्पन्न हुई उसको हम क्रम से वर्णन करते हैं मैंने सदाशिवजी से शक्ति पाकर एक पुरुष और एक स्त्री आधी आधी अपने शरीर से उत्पन्न किया पुरुष का नाम स्वायंभुवमनु और स्त्री का नाम शतरूपा हुआ और शतरूपा ने योग करके मनु ऐसा स्वामी पाया सो दोनों पुरुष और स्त्री ने हाथ में हाथ मिलाकर हमसे कहा कि आप कुछ आज्ञा दीजिये मैं अति प्रसन्न हुआ और आज्ञा दी कि पहिले सदाशिवजी का पूजन करो फिर आज्ञा पाकर सन्तान उत्पन्न करो यह श्रवण कर दोनों ने ऐसा योग किया कि सदाशिवजी आप प्रकट हुये और कहा कि जो चाहो सो मांगो मनु ने कहा कि आप क्या नहीं जानते हमारे कहने की क्या आवश्यकता है परन्तु आपकी आज्ञा पाकर कहते हैं यद्यपि अपनी इच्छा को आपके सामने कहना मूर्खता है परन्तु मैंने यह भी सुना है कि पिता की अवज्ञा करनी घोर पाप है अब आप जैसा हमारे लिये भला समझैं सो करें यह श्रवणकर श्रीसदाशिवजी बहुत प्रसन्न हुये और बोले कि हे मनो! तुम्हारा नाम संसार में रहे और प्रथम स्वामी संसार के तुम हो और मनुष्य की सृष्टि को उपजाओ तुमको कुछ कष्ट न होगा और ब्रह्मा के एक दिन के चौदहवें अंश तक तुम राजा रहो और अपनी स्त्री संयुक्त राज्य करो तिस पीछे हम तुमको अङ्गीकार करेंगे परन्तु हमको न भूलना और तीन प्रकार के ऋण तुमको करने योग्य होंगे देवऋण १ पितृऋण २ ऋषिऋण ३ सो तीनों ऋण विद्या के पढ़ने, यज्ञ के करने और सन्तान उत्पन्न करने से उऋण हो जायँगे फिर वह मनुष्य मुक्तस्वरूप गिने जायँगे यह कहकर सदाशिवजी गुप्त होगये ऐसे वर पाकर दोनों मेरे निकट आये और सब वार्ता मुझसे कही यह वचन श्रवण कर हम मनु और शतरूपा पर अति प्रसन्न हुये और

आज्ञा दी कि सन्तान उत्पन्न करो यह आज्ञा पाकर दोनों सृष्टि उपजाने लगे पहिले दो पुत्र और तीन पुत्रियां उत्पन्न कीं एक लड़के का नाम परवीरथ हुआ जिसने गृहस्थ होकर अच्छी रीति पकड़ी जिसकी सन्तान महाशीलवान् हुई उसी कुल में श्री-कृष्णजी का अवतार हुआ दूसरे का नाम उत्तानपाद जिसके सन्तान में ध्रुवके सदृश योगी भक्त उपजा और पहिली पुत्री का नाम अनवती था जिसका विवाह मेरे पुत्र रुचि मुनि के साथ हुआ वह पुत्र मुझे अति प्रिय था इन दोनों से दो लड़के यज्ञ और दीक्षा उत्पन्न हुये और दूसरी लड़की जिसका नाम देव-हूती था कर्दम मुनि के साथ ब्याही गई जिससे कपिल मुनि का अवतार हुआ और कर्दम मुनि के दश पुत्रियां उत्पन्न हुईं कला १ अनसूया २ श्रद्धा ३ निवर्च ४ कर्मागति ५ शान्ति ६ अरुन्धती ७ ख्याति ८ बर्हती ९ बृहति १० कन्या नौ ऋषीश्वरों को ब्याही गईं जिनके नाम यह हैं मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरा ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ भृगु ७ वसिष्ठ ८ अथर्वण ९ और तीसरी पुत्री मनुकी जिसका नाम प्रसूति था उसका दक्षके साथ विवाह हुआ और साठि कन्या उन दोनोंसे उत्पन्न हुईं उनमें से दश कन्या दक्ष ने धर्मराज को दीं और सत्ताईस शशि को दीं और कश्यप को तेरह और तार्क्षपि को चार और भूत अङ्गिरस और कृशाश्वको दो दो पुत्रियां दीं जिनकी सन्तान अधिक प्रकट हुई जो विस्तार के भय से वर्णन नहीं होसक्ती और देवता, मुनि, पक्षी, और ब्राह्मणादि अनेक प्रकार की सृष्टि उनसे उत्पन्न हुई और हमने विष्णुजी और महादेवजी ने उसी कुल में जन्म लिया इस विधि से दक्ष साठों पुत्रियों का विवाह कर मेरे निकट आये और सब वर्णन किया और कहा कि अब आपकी क्या आज्ञा है? मैंने यह वार्ता श्रवण करके अपने पुत्रकी प्रशंसा की और कहा कि तुमने

अवश्य ही हमारी आज्ञा पाली अब हम एक और बात की इच्छा करते हैं सो तुम ऐसा यत्न करो कि जिसमें तुम्हारी लड़की शिव को व्याही जावे और तुम्हारा कार्य सिद्ध हो और मेरी सृष्टि पवित्र हो यह वचन सुनकर दक्ष ने कठिन योग किया और फल पाकर गृह में आया शक्ति ने आय दक्ष के गृह में अवतार लिया जिसमें १४ लोक को सुख प्राप्त हुआ।

चौदहवां अध्याय

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! हमने सृष्टि का प्रारम्भ वर्णन किया अब जो तुम्हारी इच्छा हो वह करें यह वचन श्रवण करके नारदजी बहुत हँसे और प्रसन्न होकर मुझ से प्रश्न किया कि आप ब्रह्माजी विष्णुजी महेशजी के लोकों को वर्णन कीजिये मैंने यह प्रश्न श्रवण किया और श्रीसदाशिवजी का ध्यान करके सब लोकों का इस प्रकार वर्णन किया कि हमारे लोक का नाम सत्य-लोक है उसके ऊपर विष्णुजी और महादेवजी के लोक हैं जिसे वेद और पुराण कहते हैं और श्रीलोक के ऊपर वैकुण्ठ है जो शरीर को सुख देता है वह सोलह कोटि योजन चौकोण घिरा हुआ है और उसमें सोने के मन्दिर रत्नों से भरे हुये बाग फुलवारी और कुओं आदि से संयुक्त बने हुये हैं और अनेक प्रकार के वन उपवन सुगन्धित पुष्पों से अलंकृत और फलों के भारों से सुशोभित हैं जिनमें नाना प्रकार के पक्षी अपनी मिष्ट और प्रियवाणी से चहचहाते वहां विष्णुजी रमासमेत क्रीड़ा करते हैं अपने भक्तों के दुःख दूर करके सर्वसृष्टि का राज्य करते हैं और सदाशिव के ध्यान में मग्न रहते हैं और षट्अक्षरीमन्त्र हृदय में जपा करते हैं और स्तुतिकर दोनों हाथ जोड़े दण्डवत् करते बैठे रहते हैं अब हम उस लोक का वर्णन करते हैं जो स्वर्ग के ऊपर है जो स्थान चिन्ता से मुक्त है अर्थात् वह स्वर्ग

के ऊपर स्वामिकार्त्तिकलोक है और चौंसठि योजन चौकोण है और वह चिन्ता शोक मोह और माया से रहित है वहां सर्वदा सुख और आनन्द प्राप्त होता है सब गृह रत्नों से भरे हुये हैं वहां के स्वामी शिवजी हैं जिन्होंने तारकासुर का वधकर संसार को सुख दिया है और सदाशिवजी के पुत्र होकर श्रीसदाशिवजी की पदवी पर हैं और लोक के लाभ के निमित्त अपनी वीरता प्रकट करके सब संकट और कष्ट को दूर करते हैं और रात्रि दिन सदा शिवजी का ध्यान करके मन्त्र षडक्षरी को जपा करते हैं और महिमा और स्तुति करते रहते हैं उस लोक के ऊपर शक्तिलोक है उस स्थान में सृष्टि की माता शक्ति भवानी वास करती हैं जिसकी कृपा से मैंने सर्वसृष्टि को उत्पन्न किया सूर्य, शशि, इन्द्र और देवता ऐसी जगत्माता की सेवा और पूजन करके चरणों का ध्यान करते हैं और अन्य चराचर उमा का तप करके सुखी रहते हैं जानना चाहिये कि सब जीव शक्ति से ठहरे हैं विना उसके सब अशक्त हैं यह जगदम्बा श्रीसदाशिवजी की स्त्री हैं और इन्हीं के अंशों से ब्रह्माणी अर्थात् हमारी स्त्री रमा विष्णुजीकी स्त्री और स्वधा, सिद्धा, विश्वा और इन्द्राणी हैं यह शक्तिलोक बहुत सजा हुआ है उसके किवाड़ रत्नों से जड़े हुये हैं और उसके खम्भे मूंगे की लकड़ी के हैं उसका घेरा अट्ठाइस करोड़ योजन है ऐसे गृह में शक्ति अपनी सहेलियों के साथ वास करती हैं और योगसंयुक्त तीर्थ धर्म करती हैं और शिवजी की सेवा प्रशंसा और स्तुति में मग्न हैं शक्तिलोक के ऊपर शिवलोक है जहाँ मोह चिन्ता किसी को किसी समय प्रवेश नहीं करता करोड़ों सूर्य के समान प्रकाश है और सब गृह सोने और रत्नों से जड़े हैं अनेक अप्सरा नाचती हैं और जिस स्थान पर श्रीसदाशिवका सिंहासन है वह भी रत्नों का है अच्छी

फुलवारियां और नदियां हैं नदी के किनारे शुद्ध लोग रहते हैं जिस स्थान में शिवजी रहते हैं उसके आस पास बहुत से घर शिवभक्तों के हैं और शिवजी व शक्ति के अनेक घर विहारादि के बने हुये हैं उस स्थान पर अपने सेवकों समेत विहार करते हैं ऐसे सेवक शिवजी के पचास कोटि हैं उस शिव बृहस्थल के बाहर की सब पृथ्वी रत्नों से जड़ी हुई है यह शिवजी का लोक दोसौ छप्पन २५६ कोटि योजन लम्बाई में है उसके बीच में एक अच्छा घर है सुडौल सुखदायक पवित्र चिन्ता से रहित करनेवाला जिसको देखकर अति प्रीति उपजे रत्न के सदृश उस का प्रकाश है और करोड़ों सूर्य की सी वहां रोशनी और उसमें बहुत बनावट बनी हुई है यह पहिला स्थान शिवजी का है जिसमें सफ़ेद हीरों और रत्नों से दीवार बनाई गई है मूंगे के खम्भे रत्न के किवाड़ और जवाहिर लाल और हीरों से जड़ा हुआ है उस मन्दिर के अन्दर एक सिंहासन जिसका वर्णन करना कठिन है और जो आश्चर्य को अधिक करे रक्खा हुआ है उसके ऊपर शिवजी बैठे हुये हैं उन्हीं से हम विष्णुजी और महादेव उत्पन्न हुये वही सबका स्वामी स्वाधीन एकरूप है जिसको वेद भी नहीं जानते और हम और विष्णु भी नहीं पहिचानते वह महाशुद्ध पवित्ररूप अलखनिरञ्जन अविनाशी निराकार अचिन्त्य अगोचर सिद्धरूप है और उसी लोकमें शिव का अच्छा सा गोशाला है जिसको धेनुलोक कहते हैं उस गोशाले के स्वामी श्रीकृष्णजी व राधाजी हैं वही सदाशिवजी की पूजा करते हैं हे नारद! यह विस्तार लोकों का हो चुका अब और क्या सुना चाहते हो वह कहो।

पन्द्रहवां अध्याय।

सूतने कहा कि यह वचन ब्रह्माजी से सुनकर नारदजी

प्रसन्नता के कारण प्रीति और सुख के सागर में डूब गये और जब चिन्ता से रहित हुये तब प्रीतिसंयुक्त दोनों हाथ जोड़कर ब्रह्मा से नारद ने पूछा कि जो आपने शिवलोक को सबके ऊपर वर्णन किया वह श्रवण करके हम अति प्रसन्न हुये परन्तु एक सन्देह निश्शङ्क उत्पन्न हुआ कि मैंने आगे से सुना था कि शिवस्थान कैलास पर्वत पर है और जो शिवपुरी में जाता है उसको कैलास प्राप्त होता है न दूसरे स्थान में जैसा आप विस्तार से कहते हैं सो आप वर्णन कीजिये कि यह शिवजी जो कैलास में वास करते हैं वही शिव हैं जिनका आप वर्णन करते हैं अथवा अन्य हैं आप विस्तार से ठीक २ कहिये जिससे यह मेरा विचार जाता रहे यह प्रश्न नारद से सुनकर ब्रह्माजी ने कहा कि तुम धन्य हो मैंने अब जाना कि तुम मेरे सुपुत्र और परम शैव हो यद्यपि तुम जानते हो परन्तु सृष्टि की भलाई के निमित्त ऐसा प्रश्न करते हो सो तुमको ऐसा ही योग्य है इस कारण कि उत्तम पुरुषों की यही रीति है और शिवजी भी ऐसी वार्ता में बहुत प्रसन्न होते हैं सो अब हम विस्तार से कहते हैं कि जो परब्रह्म सगुणरूप महेश्वर जिसकी इच्छा से शक्ति उत्पन्न होकर शिवरानी हुई वही ब्रह्म शिव अपनी शक्ति से संसार को उत्पन्न करते हैं उनके लोक काशी ब्रह्मपुर और आनन्दवन हम वर्णन कर चुके हैं फिर हमने सहायता के निमित्त विनय करके कहा कि आप भी सगुणरूप अङ्गीकार करके आइये और शिवजीने यह श्रवण कर कहा कि हम समय पर आवेंगे और नाम आदि जिस प्रकार कि मुझको देखते हो और जैसा कि मैं हूं सब अपने अवतार में प्रकट करूंगा यह कहकर शिवजी गुप्त हुये और समय पर प्रकट हुये और मेरा मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त कैलास पर्वत पर आये और गौरी को अलग करके

आप कठिन योग करके तीनों लोक की पालना की अब हम वह कारण विस्तार से वर्णन करते हैं जिससे शिवजी कैलासपर्वत में आये यह वर्णन जो अब हम करते हैं कल्पभेद के कारण दूसरे प्रकार पर है अर्थात् शिवजी की आज्ञा पाकर हमने संसार को उपजाया चौदह लोक और उपलोक द्रुपदपुरी और कपिला आदि जिसके देखने से अति प्रसन्नता प्राप्त होती है और जहां काली मृत्युरूप बैठी है और जहां गङ्गाजी वह रही हैं जो पापों को नष्ट करती हैं वहां कपिलमुनि का गृह पापों को दूर करनेवाला है उस स्थान में एक ब्राह्मण यज्ञदत्त उत्पन्न हुआ वह यज्ञविद्या में बड़ा यशवन्त हुआ जिसको वहां के राजा ने बहुत सा धन दिया वह वेद को ऋचा-समेत जानता था वाचाल शुद्ध मन शीलवान् वेद में निपुण उपकार करने में प्रसिद्ध उदार और शिवजी का बड़ा भक्त था उसकी स्त्री अतिपवित्र पतिव्रता गृह-कार्य में अति चतुर स्त्रीधर्म की जाननेवाली और भले कार्यों को देखा करती थी थोड़े समय में उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम गुणनिधि रक्खा थोड़े दिनों के पीछे उसने अनेक विद्या सीखीं परन्तु थोड़े दिनों के पीछे उसने अपने कुल की रीति को छोड़कर बुरी रीति पकड़ी एकवार उसने बुरे मनुष्यों से संगति की उसी से उसकी बुद्धि नष्ट होगई अच्छे और बुरे कार्य संगति के प्रवेश से होते हैं और भले मनुष्य संगति से बुरे होजाते हैं अज्ञान अवस्था में गुणनिधि बुरी संगति के मनुष्यों के निकट जाया करता था शनैः शनैः उसके सब धर्म नष्ट होने लगे और वेद के विपरीत बुरे कार्य करने लगा अनेक कार्यों में से उसके थोड़े से बुरे कार्य यह थे उसने तीनों समय की संध्याको त्यागकर स्नान को भी छोड़ दिया और वेद और धर्मशास्त्र की रीति से जो उचित और अनुचित और योग्य और अयोग्यके

धर्म थे उनको भी त्याग दिया वेद नहीं पढ़ता था जुआ बहुत खेलने लगा और पिता की सर्व माया उड़ा दी और अपनी माता से रुपया लेकर जुआरियों को देदिया और उन लोगों से जो छली वेद धर्मशास्त्र ब्राह्मण देवता की बुराई बखाननेवाले और विष्णुजी और शिवजी की निन्दा करनेवाले थे उनसे मिल मित्रता उपजाई इस प्रकार वह सबसे बड़ा छली और जुआरी हुआ यद्यपि उसकी माता उसको नित्य उपदेश करती परन्तु वह किञ्चित् भी पिता के निकट न जाता और जिस समय कि उसकी माता गृहकार्य करती वह घर की द्रव्य चुराकर ले जाता एक बेर उसके पिता ने अपनी स्त्री से पूछा कि 'गुणनिधि' कहां गया है उसने उत्तर दिया कि स्नान और देवतों का पूजन और भोजन कर अपने मित्र और पाठकों के साथ पाठशाला गया है इस प्रकार उसकी माता ने उसके अवगुणों को छिपाया हे नारद ! लड़का कैसा ही कुपुत्र हो पर उसकी माता उसका किसी अवस्था में बुरा नहीं चाहती ।

सोलहवां अध्याय ।

ब्रह्माजीने कहा कि इसी प्रकार जिस समय उसका स्वामी पुत्र का वृत्तान्त पूछता वह उसी प्रकार उत्तर देती इस कारण यज्ञदत्त ने अपने पुत्र के अवगुण न जाने और समय तक वह इसी प्रकार के काम करता रहा जिस समय वह सोलह वर्ष का हुआ उसका विवाह कर दिया और विवाह में बहुत धन खर्च किया उसको स्त्री पतिव्रता और शीलवती मिली परन्तु जब अपने स्वामी के अवगुण किसी से श्रवण करती प्रतीत न करती यह रीति उत्तम और पवित्र पतिव्रता स्त्री की है कि अपने स्वामी के अवगुण श्रवणकर सेवा और टहल करती है सो गुणनिधि ने यद्यपि ऐसी पवित्र पतिव्रता पाई तौभी कुसंगति को

न छोड़ा उसकी माता सर्वदा उपदेश देती और कथाओं में उत्तमोत्तम दृष्टान्त कहती कि हे गुणनिधि! तुम हमारे अकेलौते पुत्र हो इस कारण यह त्याग दो तुम्हारे पिता अति क्रोधी हैं उनसे तुम अभय हो वह तुम्हारे अवगुण नहीं जानते क्योंकि पूछने पर भी मैं नहीं कहती जो वह किसी दिन सुन लेगा तो हमको और तुमको दण्ड देगा इससे उत्तम है कि कुसंगति को त्यागकर अच्छी संगति करो और विद्या के सीखने में उदार हो जे ब्रह्मकार्य हैं उनमें चित्त दो और तुम्हारी स्त्री सुन्दर बुद्धिमती महारूपवती और बड़े कुल की है उसी प्रकार तुम भी हो ऐसी स्त्री के साथ सुख और विहार करो इस कारण स्त्री का त्याग देना महापाप है और अन्य स्त्रियों को छोड़ दो और उत्तम कार्य करो और पिता के धर्म पर चलो वरन सारा संसार तुमको बुरा कहेगा और तुम्हारा श्वशुर जो मान योग्य है यह अवस्था तुम्हारी सुनकर हमको व्यंग्य कहेगा मुझको और अपने पिताको किस कारण लज्जावान् कराते हो तुमको उचित है कि अपने पिताके अनुसार काम करो और विचारो कि तुम दोनों ओर से उत्तम कुल के हो और घरों के लड़कों को देखो कि यह वेदपाठी हैं जब कि तुम्हारे ऐसे अवगुण समय का राजा सुनेगा तो तुम्हारे पिता से अप्रसन्न होगा और मासिक न देगा अभी तो सब मनुष्य कहते हैं कि तुम यह अवगुण लड़कपन से करते हो मगर फिर लोग हँसेंगे और कहेंगे कि अब तुम्हारा कुल अति पवित्र हुआ और तुम्हारे पिता की निन्दा करेंगे और पितृ नरकगामी होंगे और सब पुरुष मुझको अवगुणी बतावेंगे कि इसने पापकर्म से गर्भ धारण कर ऐसा पुत्र उत्पन्न किया क्योंकि तुम्हारा पिता निष्पाप है वह वेद और धर्मशास्त्र में उदार है और मैं भी अपने स्वामी के सिवाय और किसी को नहीं जानती

और निष्पाप होकर गृहकार्य में चतुर हूं हमारे साक्षी श्रीसदा-
शिवजी हैं कि मैंने मासिकधर्म में भी मूर्ख की स्त्री नहीं देखी
परन्तु उसकी इच्छा है कि तू ऐसा कुपुत्र दुःखदायक उत्पन्न
हुआ अपना दुःख कहांतक वर्णन करूं यह कर्महीनता के लक्षण
हैं इस प्रकार गुणनिधि की माता उसको उपदेश देती परन्तु
गुणनिधि कब विचार करता था हे नारद! यद्यपि मेरे सदृश
गुरु मिलता तौ भी उस मूर्ख के मन में बुद्धि न उपजती जैसा कि
अमृत के बरसने से बेत के वृक्ष में फल नहीं आते और न फूलता
है अन्त में गुणनिधि की माता उपदेश करते करते थकगई परन्तु
गुणनिधिने कुछ न माना वह सर्वदा अहेर खेलता और चोरी और
मद्यपान करता था और चुगली बहुत खाता था मांस खाकर
पराई स्त्री से भोग करता और पातुरों के साथ भोग करके जुआ
खेलने में समय व्यतीत करता था वह तो सम्पूर्ण कुकर्मों की
मानों खानि हो गया और पिता का धन चुराकर जुए भोग
और वेश्याओं के भोगमें खर्च डाला और निर्धन होगया और
जितने बहुमूल्य रत्न और उत्तम वस्त्र उसके पिता ने विद्या से
राजा के यहाँ से प्राप्त किये थे उनमें से कुछ न रहा तब एक दिन
अपनी माता को पूर्णनिद्रा में पाकर अँगूठी जो उसके हाथ में थी
चुपचाप उड़ाली जिसको जुआरियों ने जीत लिया अकस्मात्
वही अँगूठी यज्ञदत्त उसके बाप ने एक जुआरी के पास देखकर
पहिंचान ली उस पुरुष से अलग जाकर पूछा कि तुमने यह
अँगूठी कहांसे पाई है जुआरी ने उत्तर दिया कि यह अँगूठी और
इसी प्रकार की अनेक अँगूठियां हमारे पिता के घर हैं मैंने जाना
कि तुम पराया धन देखकर तृष्णा करते हो ऐसी चतुराई किससे
सीखी है इसी प्रकारके अनेक असत्य वचन कहे तब यज्ञदत्त
क्रोधवान् होकर कहने लगा कि अब तुम हँसी छोड़ दो और

छल आदिसे रहित होकर सत्य २ वर्णन करदो यह अँगूठी मुझको राजाने दी थी तुम इसको ले नहीं सके परन्तु जब उन्होंने दृढ़तासे जांचकर पूछा तो जुआरी ने सत्य २ वृत्तान्त विस्तारसे कह सुनाया और कहा कि तुम मुझको भय देते हो हमने चोरी नहीं की यह क्या परन्तु अन्य वस्तु हमने आपके लड़के से जुए में जीती है रत्न, सोने चांदी के जेवर, पीतल, तांबे और फूल आदिके बासन जो तुम्हारे घरमें थे वे सब हम सब मनुष्यों ने ले लिये और नित्य तुम्हारे लड़के को नङ्गा करके मुस्कें बांध हाथों से ताड़ना करते हैं तुम्हारे पुत्रके समान और दूसरा जुआरी संसार में कोई नहीं है वह केवल जुआरीही नहीं बरन चोर महापापी और वेश्यागामी भी है ऐसे वचन जुआरी के श्रवणकर यज्ञदत्त आश्चर्यवान् हुआ और वस्त्र से अपना मुख लपेट शिर नीचे किये शोकवान् रुदन करता हुआ घर आया और स्त्रीसे कहा कि गुणनिधि कहां है और वह हमारी अँगूठी कहां है यह वचन सुनकर स्त्रीने भयवती होकर चतुराई से उत्तर दिया कि इस समय मुझको अनेक कार्य हैं और तुम्हारा भी पूजनका समय है और तुमको अतिथियों से अति प्रेम है उनके निमित्त भोजन बनाना है मैंने किसी स्थान में अँगूठी को रख दिया है परन्तु स्मरण नहीं है जिस समय कि आवश्यक कार्यों से छूटूंगी उस समय अँगूठी देदूंगी यह सुनकर यज्ञदत्तने क्रोध किया कि हे सुपूत की माता, छलवार्त्ता में चतुर ! मैंने जब तुझ से पूछा कि गुणनिधि कहां है तब तूने यही उत्तर दिया कि अभी गुणनिधि अपने साथियों सहित पाठशाला गया है और अँगूठी नहीं मिलती तो जाने दो परन्तु और वस्तु हमको दिखाओ यह पुत्र गुणनिधि किन पापों से हमारे गृह में उत्पन्न हुआ सो अब तुम पुत्रकी प्रीति त्याग करो इस कारण कि कुपुत्र कुछ भी सुख

नहीं देता अब मुझको विना पुत्र के रहने की इच्छा है मुझे ऐसी सन्तान नहीं चाहिये अब तुमको योग्य है कि हाथ में कुश और जल लेकर लड़के के नाम तिलाञ्जलि छोड़ो और हम जबतक कि ऐसा न कर लेवें तबतक भोजन न करेंगे यह वचन अपने स्वामी का श्रवणकर गुणनिधि की माता चरणों पर गिरपड़ी और कहा कि इस बेर क्षमा करो यह कहकर गुणनिधि की माता ने मौन किया और यज्ञदत्त का भी क्रोध कुछ कम हुआ ।

सत्रहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि जब गुणनिधि ने यह वृत्तान्त श्रवण किया तब बहुत चिन्ता और शोक में डूब २ अपने को भाग्यहीन समझा और रुदन करके कहने लगा कि हाय २ हे मेरी सहायक, माता ! मैं कहां जाऊं क्या करूं तुमने मुझको अनन्त बेर उपदेश किया परन्तु मुझको आपकी शिक्षा देनी उत्तम न जँची और भाग्य की हीनता से न समझा सो मैं कहां जाऊं और क्या कार्य करूँ? मुझको इस काल में कुछ नहीं भासता मुझे धिक्कार है २ और मेरी भाग्य को भी सहस्रों धिक्कार हैं यह कह और रुदन कर पिता के भय से गुणनिधि घर से भाग गया और कुछ समय में मार्ग के श्रम से थक के और शोक के सागर में डूबकर हाय २ करके रुदन करने लगा और रोते २ में कहा कि हे मेरी माता ! मैं कहां जाऊं और क्या करूं कुछ यत्न नहीं भासता मैं तो विद्याहीन भी हूं जो मुझको इस समय में फलदायक होती और न द्रव्यसंग्रह की जिससे विद्वान् और बुद्धिमान् सब सुखी रहते हैं और विद्या में द्रव्य से अधिकतर बल है इस समय मुझको यह बात सूझ पड़ती है इस कारण कि धनवाले को वन आदि में चोरों का भय है परन्तु विद्यावान् निडर है मैंने कोई दीर्घ पाप किया था जिससे ऐसे कुल में उत्पन्न हुआ सो ऐसे

कुल में भी उत्पन्न होकर अवगुण करनेलगा यह मेरी कर्महीनता है जो बात होनी होती है वही होती है यद्यपि सूर्य पश्चिम में उदय हो पर्वत चले और कमल के फूल पर्वत पर उपजें परन्तु होनी अवश्य होती है मैं तो भिक्षा मांगने योग्य भी नहीं जब मैं प्रातःकाल नींद से जागता था तो मेरी सहायक माता भोजन देती थी हाय वह माता अब मैं कहां पाऊं क्या करूं और कहां जाऊं इसी प्रकार गुणनिधि भय से बातें कर अचेत होगया और पृथ्वी पर गिर पड़ा इसी प्रकार गुणनिधि रोता रहा कि सूर्य अस्त हुआ कुछ समय के पीछे सचेत होकर फिर इसी चिन्ता में डूबा कि एक पुरुष शिवभक्त शिवजी के पूजन निमित्त चलाजाता था उसके पास अनेक प्रकार की सामग्री पूजन के निमित्त थीं और भांति २ के नैवेद्य शिवजी के निमित्त थे उसके संग अन्य भी अनंत शिवसेवक साथ थे उस दिन शिवरात्रि थी जिसमें मनुष्य व्रत करके मुक्त होते हैं शिवरात्रि सब व्रतों में उत्तमोत्तम है और अधिक सुखदायक है और शिवजीको अतिप्रिय है जिससे मूर्ख भी मनोरथ सिद्ध करचुके हैं जैसे कि चारों वर्णों में ब्राह्मण ग्रहोंमें शशि नदियों में गङ्गा शिवभक्तों में श्रीकृष्णजी वेदों में सामवेद मन्त्रों में प्रणव और पुराणों में भारत उत्तमोत्तम है इसी प्रकार सर्व व्रतों में यह शिवरात्रि का व्रत राजा के सदृश है जैसे कि शिवजी सब देवताओं को सुखदायक हैं यह व्रत करके मनुष्य सुख प्राप्तकर अनंत संसारके ऋणों और नियमों से मुक्त हो जाते हैं ऐसा व्रत शिवरात्रि का रक्खे हुये वे मनुष्य शिवालय में चले गये और अनेक प्रकार के नैवेद्य और व्यञ्जन जो वह पुरुष अपने संग लाया था उसकी सुगन्ध पाकर गुणनिधि बहुत भूखा हुआ और विचार किया कि रात्रि के समय जब ये लोग भोग शिवार्पण करेंगे और सो जायँगे उस समय यह सुगन्धित भोजन हम ले लेंगे यह वार्त्ता

अपने मनमें ठहराकर उन्हीं के साथ चला गया और शिवालय के ऊपर ठहरा शिवभक्त ने सच्चे मन से षोडशोपचार करके शिव-पूजा की और प्रीति की प्रबलता से गाने लगा और नाचा गुण-निधि यह सब देखता रहा और कहता ही था कि अगर उनकी दृष्टि हीन होती तो मैं अपना काम करता अकस्मात् वे सब पुरुष अर्थात् शिवभक्त ऊंघ गये गुणनिधि उनको निद्रा की अवस्था में देखकर झटपट शिवालय में गया और धीरे २ पोले पाँवों से दब के चाहा कि नैवेद्य लेलूं परन्तु नैवेद्य देखने के निमित्त उसने अपना वस्त्र फाड़कर वत्ती बनाकर उसको जलाया उसके प्रकाश से उसने सर्व व्यञ्जन उठा लिये और झटपट बाहर आया और बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु चलते समय प्रसन्नता की अवस्था में उसका एक पैर किसी शिवभक्त के जो वहां लेटा था लग गया वह जगकर चिल्लाया और कहने लगा कि यह कौन भागा जाता है चोर है पकड़ो ऐसी चिल्लाहट में नगर के रक्षक आ गये और भागते हुये गुणनिधि को एक तीर मारा कि जिससे गुणनिधि पृथ्वी पर गिर पड़ा और शरीर छोड़ दिया और शिवजीकी नैवेद्य खाने से बच रहा इस कारण कि शिवजीकी नैवेद्य खाने से बड़ा पाप होता है इसी प्रकार सब देवताओंकी नैवेद्य खाने योग्य नहीं है जैसा कि वेद व धर्मशास्त्र की आज्ञा है इस समय यमदूत आये और मुद्गर आदि जो भयंकर शस्त्र थे वह गुणनिधि को पापी जानकर दिखलाकर बांधने लगे परन्तु शिवजीने अपने गणों से कहा कि यद्यपि गुणनिधि ने असंख्य बड़े पाप किये परन्तु शिवरात्रिका व्रत रखकर रात्रिभर सोया नहीं और हमारी पूजा रात्रि भर देखता रहा और हमारी नैवेद्य जो खाने योग्य नहीं उसने नहीं खाया और नगर के रक्षकों से मारा गया उसको यम के गण बांधते हैं इस कारण

तुमको आज्ञा दी जाती है कि गुणनिधिको यमगणों की बन्दी से मुक्त करो और हमारे लोक में लावो क्योंकि गुणनिधि को मैंने अपना करलिया अब वह नरकगामी न होगा मुझको शिवरात्रि अति प्रिय है और सब व्रतों से उत्तम है जिसको शिवरात्रि व्रत करते हुये पाता हूं उससे अधिक प्रीति रखता हूं जो मेरी पूजन देखता है वह मुझे बहुत प्यारा है जो मृत्यु के समय ऐसा न हो तो भी उसके सब क्लेश नाश करता हूं यह गुणनिधि अब कलिङ्गदेशका राजा होगा और मेरा बड़ा भक्त और मित्र होगा यह आज्ञा शिवजी के गण सुनकर वहां गये उनके हाथों में त्रिशूल थे उनको देखकर यमगण भयवान् होकर दुःखी हुये शिवगणों ने कहा कि तुम कौन हो जो इस निष्पापी को विना दोष बन्द करते हो यह श्रवणकर यमदूत आश्चर्यवान् हुये और कहने लगे कि तुम कौन हो जो यमकी अवज्ञा करके ऐसे पापी को छुड़ाते हो किसकी शक्ति पर इतने प्रबल हो शिवगणों ने उत्तर दिया कि क्या तुम हमको नहीं जानते कि हम शिवगण हैं जिनको ब्रह्मा-विष्णु आदि ध्यान करते हैं इसको छोड़दो यमगणों ने कहा कि आपकी आज्ञा प्रबल है परन्तु ऐसे पापी को छुड़ाते हो और पाप का विचार नहीं करते इसने अपने कुल की रीतिका त्याग किया है और वेद की अवज्ञा की है इस पापी असत्य बोलनेवाले ने अपने माता पिताका कहना भी न माना और अपनी स्त्री को त्यागकर अन्य स्त्रियों से गमन करता था और धर्म छोड़कर वेश्याओं से मैथुन किया और देवताओं की निन्दा करता रहा और जुये में अपने बापकी सब माया नाश की हम इसकी मूर्खता कहां तक बखानें यह सब पापियों का राजा है और सबसे बड़ा पाप यह है कि शिवनिर्माल्य चोरी करके ले भागा और खाने लगा सो तुम भी देखते हो तुम

इसको अच्छी भांति जानते हो कि जो कोई शिवनिर्माल्य खाता है अथवा उसके ऊपर से लांघ जाता है अथवा शिवनिर्माल्य किसी को देता है यह सब नरकगामी होते हैं हलाहल पानी में डालकर पीना अच्छा है परन्तु शिवजी पर चढ़ाई वस्तु खाना अयोग्य है चाहे प्राण जाते रहें परन्तु इस संसार में धर्म रखना कठिन है यह सुनकर शिवगणों ने उत्तर दिया कि यह ब्राह्मण निष्पापी है और इसने प्रथम बड़ा धर्म किया है अर्थात् मरने के समय शिवके मन्दिर में जाकर अपने शरीर का वस्त्र फाड़ और उससे दिया बालकर ज्योति जलाई दूसरा बड़ा धर्म इसने यह किया कि शिवरात्रि को व्रत रात्रिदिन रक्खा और रात्रिभर जागता रहा और शिवजीकी पूजा देखता रहा और शिवजी के नाम सुनता रहा यद्यपि यह धर्म इससे अकस्मात् हुआ परन्तु इसको पुण्य प्राप्त हुई है अब यह कलिङ्गदेश का राजा होगा और शिवपूजन करेगा यह कहकर और गुणनिधि को छुड़ाकर शिवगण गुप्त होगये ।

अठारहवां अध्याय ।

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! ऐसे वचन शिवगणों के सुनकर यमदूत लज्जावान् होकर यम के निकट गये और सब वार्त्ता विस्तार संयुक्त कही यह श्रवणकर यम आश्चर्यवान् हुये और शिवजी को दण्डवत् की और अपने गणों को आज्ञा दी कि तुम तीनों लोकमें फिरो जो मनुष्य शरीर में भस्म लगाये हो अथवा रुद्राक्ष पहिने हो अथवा शिवलिङ्ग की पूजन करता हो या शिवनाम जिह्वा से लेता हो अथवा शिवजी का यश वर्णन करता हो अथवा शिवजीका यश श्रवण करता हो अथवा शिवजी के मन्दिर में दर्शन करता हो अथवा शिवजी के पूजन और योग में डूबा हो अथवा छल संयुक्त भी शिवजी का बाना

और वेष धारण किये हो अथवा मृत्युकाल में उसने छल से मरने के समय शिवका नाम न लिया हो और किसी प्रकार उसका शिवसे सम्बन्ध हो उन सबको तुम छोड़ देना और कुछ दुःख न देना और दासों के समान उनकी सेवा करना इतना कह यमराजने शिवकी बड़ी स्तुति पढ़ी और कहा कि हमारे पाप क्षमा कीजिये यह अपराध मुझसे अज्ञानता में हुआ है फिर बहुत स्तुति करके चुप होगये अब गुणनिधि का हाल सुनिये कि वह यमगणों से छूट विमान पर आरूढ़ हो शिव-लोक को चला गया और समयतक सुख भोग कलिङ्गदेशका राजा हुआ वहां के पूर्वराजा का नाम इन्द्रमुनि था गुणनिधि उसी के यहां उपजा और कर्दम के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बड़ा शिव का भक्त था इन्द्रमुनि ने अपने पुत्र में राज्यलक्षण उदारता वीरता धीरतादि देख अपना सब राज्य उसको सौंपा और रानी समेत वन जाय शिवका कठिन तपकर शिवलोक में प्राप्त हुआ जोकि कर्दमको पूर्व जन्म की सुधि थी इसलिये वह सब शिवालयोंमें दीपदान करने लगा और हरएक मण्डलेश्वर को बुला आज्ञा दी कि जितने गांव में शिवालय हों दीपक जलाये जावें जो इस बातको न करेगा उसका शिर धड़से जुदा किया जावेगा इस भयसे गांवके स्वामी दीपदान करते रहे और राजा आप इस बात को बड़े हर्ष से करता रहा और प्रजाको अपनी नीति से प्रसन्न रक्खा और जन्म भर अपने दीपदानसे अचेत न रहा जब मरा तब तो दीपदान के पुण्यसे शिवलोक में पहुँचा और उसको शिवलोकमें बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और बहुत आनन्द और सुख उठा शिवचरणोंका ध्यान किया फिर मृत्युलोक में आया अब अपने लड़के पुलस्त्य के पुत्रका हाल हम कहते हैं अर्थात् हमारे बेटे पुलस्त्यके विश्रवा नाम से एक पुत्र उपजा

विश्रवाकी तीन स्त्रियां थीं जो शिव और विष्णुकी बड़ी भक्ता थीं जो सबसे छोटी स्त्री विश्रवा की थी उसके विभीषण नामी बेटा पैदा हुआ विभीषण विष्णुका ऐसा भक्त हुआ कि बेखटके इस अथाह संसारसागर से पार होगया और जो उससे बड़ी थी उससे दो पुत्र रावण और कुम्भकर्ण तुम्हारे शाप से उत्पन्न हुये वे दोनों शिवके भक्त हो नाना प्रकार के संसारी भोग विलासों में फँस गये उनमें से रावण ने कठिन तपकर शिवसे वरदान पाया और बड़े प्रताप और तेज से संसार भर में उसने राज्य किया उसी के नाश करने को विष्णु भगवान् ने आप द्विभुज धार अवतार लिया जिनका नाम राम हुआ पर वह रावण का नाश न कर सके शिव का तपकर और अपने तपश्रम से शिवको प्रसन्न पाकर शिवके अवतार अर्थात् श्रीहनुमान्‌जीको साथ लेगये और बड़े परिश्रम से बानरों की सहायता पाकर रावण का बध कर डाला वरन उस के कुलको मूलसे उखाड़डाला और जो सबसे बड़ी स्त्री विश्रवा मुनिकी थी अर्थात् तीसरी स्त्री और जिसका नाम षट्तिला था उसके उदरसे गुणनिधि जिसका पहले वर्णन होचुका है उपजा और विश्रवामुनिने पहले लङ्कामें रहकर जो उचित था वह किया फिर काशी में जाकर अति तप किया जिससे शिवजी अति प्रसन्न हुये और शिवके वरदानसे वह उलका नगरी का राजा होकर दिक्पालके नामसे प्रसिद्ध हुआ और शिवजीकी पूजा में मग्न रहा उसे राज्य करते हुये हमारा एक कल्प बीता जब कि घनवाहन कल्प का प्रारम्भ हुआ उस समय गुणनिधिने तप आरम्भ किया अर्थात् उसने दीपदानकी विधि कण्ठ करके उसमें बहुत ध्यान लगाया और काशीमें जो शिवकी पुरी कहलाती है आकर उसमें कठिन तप करने लगा और हृदयके नेत्र खोले शिवजीका दर्शन किया मनको ब्रह्मज्ञान से पूर्णकर

सम्पूर्ण मनके मनोरथोंको शान्त कर दिया और उसी जगह शिवलिङ्गकी प्रतिमा स्थापनकर नानाप्रकार के फूलों और षोडशोपचार से लिङ्गपूजा की यहांतक कि विश्रवा के शरीर का रुधिर और मांस सूख गया चर्म और अस्थिमात्र शेष रह गये ऐसी तपस्या करते हुये विश्रवा को सौ करोड़ वर्ष बीते और वह मनको जीते हुये शिवका तप किया किये ऐसा घोर तप देख शिव पार्वतीसहित विश्रवा के स्थानमें सुशोभित हुये और कहा कि वर मांगो।

उन्नीसवां अध्याय।

शिवजीने कहा कि अब तू तप मतकर जो इच्छा हो वह ले यद्यपि सदाशिवने अति उच्चस्वरसे यह बात कही पर विश्रवा अपने ध्यान में बैठे रहे और उनके कथन को कुछ भी न सुना तब शिवजीने अपनी मूर्ति उसके मनसे निकाल ली उस समय दिक्पति अति आश्चर्य में हुआ और नेत्र खोल देखा तो शिवजी को पूर्णरूपसे जैसा पहिले वर्णन होचुका है देखकर और शिव-रानीको शिवके बाईंओर अवलोकन करके महाप्रसन्न हुआ पर उस प्रकाशवान् तेजके देखने की शक्ति न रखकर नेत्र मूंद लिये और कहा हे नाथ! मुझे अपने चरण दिखा दो और वह उपाय करो जिसमें मैं आपको देखूं सिवाय इसके और कुछ नहीं चाहता क्योंकि इससे अधिक और कोई पदार्थ संसारमें नहीं है यह कहकर दिक्पति चुप होगया सो शिवजी प्रसन्न हुये व दिक्पति को अपने तेज के देखने की शक्ति कृपा की और अपने हस्तकमलसे उसका हाथ पकड़ लिया पहिले दिक्-पतिने नेत्र खोल शिवकी प्यारी शिवरानीको देखा और पूछा कि यह कौन स्त्री है जो इतनी सुन्दरी है और सबके मनों को मोहित करलेती है इसका बड़ा भाग्य है जो शिवके निकट

रहती है इसने मुझसेभी अधिक तप किया होगा इसके पुण्य और प्रेमको धन्य है और इसके माता पिता भी धन्य हैं और उन सबके बड़े भाग्य हैं जहां ऐसी स्त्री हो यह बात वारवार कहकर प्रत्यक्ष कुदृष्टिसे देखा तुरन्त उसकी आंखें फूटगईं और देवीने क्रोधित होकर कहा कि यह तपस्वी बहुत बुरी कुदृष्टि रखनेवाला है और इसीसे अपना कष्ट चाहता है और व्यङ्ग्य वचन कहकर मुझको अपनी स्त्रीके सदृश देखता है हे शिव ! यह तुम्हारा कैसा भक्त है ये वाक्य शिवरानी के सुनकर शिवजी हँसकर बोले कि इसने छल छोड़ इकबारगी ऐसा तप किया है जो प्रकट है और तुमको मेरे साथ होने से और तुम्हारे भाग्य अपने से अधिक जान तुम्हारी प्रशंसा करता है दुष्टदृष्टि से नहीं देखता और दिक्पति से कहा जो इच्छा हो वह मांग हम तुमसे कहते हैं कि तुम वस्तुओं के स्वामी होगे और सब भूमि के राजाओंके स्वामी होगे विद्याधर और किन्नर तुम्हारे आधीन रहेंगे और जो तुम्हारी गुप्त इच्छा है वह भी हम जानते हैं अच्छा हम मित्र होकर तुम्हारे निकट रहेंगे अर्थात् कैलास पर्वत में स्थित रह कर तुमसे अति प्रीति रक्खेंगे और तुम्हारी कठिनता दूर किया करेंगे अब तुम शिवरानी के चरणों पर गिरपड़ो क्योंकि यह तुम्हारी माता है इससे तुम पर प्रसन्न होकर क्रोध शान्त करलेंगी और शिवरानी से कहा कि यह तुम्हारा बड़ा भक्त है इसके ऊपर कृपा करो और क्रोध निवृत्त करो इसको अपना सेवक समझो क्योंकि तुमको और हमको लोक में भक्तवत्सल कहते हैं ऐसी बातें शिवजी की सुनकर शिवरानी ने अपना क्रोध शान्त कर लिया और दिक्पति से कहा कि तुम हमारे पुत्र हुये तुममें शिवकी भक्ति सदा बनी रहेगी और तुम हमारे पुत्र होचुके जो वरदान शिवने तुमको दिया है वह सत्य है

और जोकि तुमने मेरे स्वरूप की इच्छा करके मेरा भय मनमें न लाये इस कारण तुम्हारा नाम कुबेर होगा और जो शिवका लिङ्ग तुमने स्थापन कियाहै वह सिद्धि देनेवाला होकर तुम्हारे नामसे प्रसिद्ध होगा वह सम्पूर्ण पापोंका नाश करके मुक्ति देगा क्योंकि जो कोई कुबेरेश्वर महादेव के दर्शन करेगा वह थोड़ी भक्तिमें भी तपका फल पावेगा यह कुबेरेश्वर महादेव विश्वेश्वर की दाहिनी ओर हैं जिनकी पूजाकर लोग अति आनन्द पाते हैं यह वर देकर शिव और शिवरानी तो गुप्त होगये और कह गये कि हमारे आने की बाट देखना और कुबेर भी अपने घर को चले और बड़ा धन द्रव्य पाया वह अलकापुरी के महाराजा होकर शिवमित्र के नाम से उपनाम पाकर शिवके भण्डारी हुये वही शिवकी भक्तिमें सदा लगे रहते हैं अलकापुरी ऐसीहै जिसको देख मनुष्य का मन मोह जाता है ऐसी अलकापुरी में बड़ा उत्सव हुआ और शिव सदा कुबेर की प्रशंसा किया करते हैं, हे नारद! यह विश्रवाकी कथा कि जिस तरह उसने वरदान पाया तुमसे कह सुनाई यह कथा आनन्द देनेवालीहै जो शिवका थोड़ासा पूजन करता है वह समय पर बड़ा फल देता है जैसा कि गुणनिधि की कथा से प्रसिद्ध है और शिवकी बराबर तीनों लोक में कौन है।

बीसवां अध्याय।

ब्रह्माने कहा कि जब शिव निधिपति को वरदान देकर अन्तर्धान हो गये तब मन में विचारा कि हमने जो निधिपति को अपना पुत्र बनाया है तो उसके यहां किस विधि से जाकर मनुष्यों की भलाई के लिये क्या काम करें आगे भी सम्मति हुई थी सो अब हम कुबेर के मित्र होकर वहां स्थित रहेंगे जो हमारा मुख्य स्वरूप है वह परब्रह्म स्वरूप है तो उस स्वरूप से

और इस रूप से जो अब धारण करके अपने मित्र के यहां जा-वेंगे कुछ भेद नहीं होगा जो कोई उसमें अन्तर या द्वैतभाव समझेगा वह दुःख पावेगा वही स्वरूप जो ब्रह्मा और विष्णु आदि करके पूजा जाता है तो मैं उसी रूप और नाम से वहां स्थित रहूंगा और कुबेर के साथ मित्रता उपजाऊंगा और जो कि उमा अर्थात् शिवरानी ने अबतक अवतार नहीं लिया अकेले हमने अवतार लिया है सो हम योग और कठिन तप करके वहां स्थित रहकर अपने भक्तों को मुक्त करेंगे और दुष्ट और कुमार्गी मनुष्यों को मारेंगे कुछ दिन इसी तरह रहकर और अपना रूप देखते हुये रहेंगे इसी अवसर में समय पर शक्ति भी अवतार लेवेंगी और संसार की रीति के अनुसार वह हमारी स्त्री होंगी हम उस दशा में गृहस्थ होकर नाना प्रकार के विहार करेंगे ऐसा विचारकर वह रूप जो शिव का था उसने चलने का उद्योग किया और डमरू बजा दिया जिसका शब्द तीनों लोक में पूरित होगया और उसी शब्द की ओर सब चले विष्णु गरुड़पर हम हंस पर चढ़ चले और सनकादिक मुनि, सिद्ध, देवता, वेद, धर्म, शास्त्र, पुराण, तुम और तुम से जो और मुनि हैं और सर्पों के यूथप उसी शब्द की ओर चले और प्रथम जो शिव के गण हैं वह सब उस ओर को चले और परस्पर कहने लगे कि क्या कारण है डमरू आज बजाया गया और किसके भाग्य उदय हुये और हमारे भी बड़े भाग्य हैं कि हम भी शिवजी के शुभचरण देखेंगे निदान सब लोग इस प्रकार की बातें करते हुये अति प्रसन्नता से शिवके पास पहुँचे और सब दण्डवत् प्रणाम के उपरान्त हाथ जोड़ खड़े हुये और स्तुति करने लगे शिवजी अति प्रसन्न हुये और विष्णुको बाईं ओर हाथ पकड़ के बैठा लिया और दाहिनी ओर मुझे स्थान दिया और

कुशल पूछकर हमें अति प्रतिष्ठित किया और हाथकी सैनसे सूर्यका आदर किया और मुनियों को जो अमर हैं देखकर प्रसन्न हुये और शिव के गण शिवजीकी इच्छा समझकर अपने आप बैठ गये वहां लोगों का बड़ा समूह होगया और बड़ा उत्सव हुआ फिर शिवने कैलास जानेका उद्योग किया कि कुबेरका मनोरथ पूरा हो उस समय मनुष्यों की सेना गणों का समूह बहुत भारी था जो चलनेकी इच्छा से उठखड़ा हुआ और विष्णुजी नन्द और सुनन्द दो गणों समेत उठ खड़े हुये और इसीतरह वेद और सनकादिक आदि और हमभी उद्यत हुये और तेंतीसकोटि देवता जो अमर हैं उनको इन्द्र लेकर खड़े हुये इन सबका ब्योरा संक्षेप से नीचे लिखाजाता है उस स्थान पर ग्यारह रुद्र, अपने गणों समेत बारह सूर्य, आठों वसु, तेरह विश्वेदेवा, सत्ताईस नक्षत्र, बारह भक्त, चौंसठ आभासुर, उनचास पवन आदि और इसके विशेष और भी देवताओं के प्रकार जिनको हम विस्तारभय से नहीं लिखते साथ हुये और दश प्रकार के देवता अर्थात् विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, ऋक्ष, सिद्ध, भूत, पिशाचादि वह भी प्रतिष्ठित होकर चले और दिशापति अपने २ गणों समेत वासुकि तक्षक आदि कुलवान् सर्प और नागों के राजा और शेषजी भी साथ हुये और संसार भरकी माता श्रीगायत्री, गरुड़, पहाड़, समुद्र जो सात हैं और दोनों अयन अर्थात् उत्तरायण, दक्षिणायन, सर्व ऋतु, काल, यम, पक्ष, सब नदियां और बड़े नद, वनके वासी सब यकबारगी खड़े हुये और साथ चलने का उद्योग किया और मुनियों का समूह जो अट्ठासी सहस्र का था वहभी तत्पर हुआ अब हम सेना के सब अधिपतियों का वर्णन करते हैं और उनकी सेना की संख्या भी कहते हैं पहला करणगण जो

एक करोड़ सेनाका सरदार था दूसरे कैयक राक्षस के साथ दश कोटि सेना थी तीसरा विकृत जो आठ कोटि सेनाका अधिपति था चौथा पारयात्रिक जो नवकोटि सेनाका स्वामी पांचवां सुर-मान्तिक छःकोटि सेना लिये हुये था छठां विकटानन भी उतनी ही सेना का अधिपति था सातवां जालक जो बारह करोड़ सेनापर आज्ञा चलाता आठवां दुन्दुभि चौदह कोटिका स्वामी नवां कुन्दक एक हज़ार दशवां अव्यसन आठ करोड़ सेना का स्वामी था ग्यारहवां विष्टम्भ आठ करोड़ सेनाका बारहवां सन्धारक छः कोटि कटक का तेरहवां कपाली पांच कोटि सेना का स्वामी था और सिवाय इनके गणप, सन्नाद दश दश कोटि सेना के आधिपति थे और करडीगण के साथ बारह कोटि सेना थी और बुद्धतान के साथ आठ कोटि, महाकेश के साथ सहस्र कोटि और पर्वत के साथ में बारह कोटि और अनलसदन की अर्दली में एक कोटि और महाकाल कालक और कालके साथ सौ कोटि और आगनिक और सन्नाह के साथ और रविशतक, कोकिल, अमोघ, समन्त्रिक के साथ एक २ कोटि सेनाथी और काकपाद सन्तान के साथ साठ २ कोटि थी और मधुपुंग के साथ नवकरोड़ और इसीतरह पन्नग के साथ और नील के साथ नवकोटि और इसीतरह पूर्णभद्र के साथ थी और चित्र-वक्र के आधीन सात कोटि और विजयी काष्ठाके एक कोटि और परिघ के नवकोटि और सुखेश के एक करोड़ बीस हज़ार और विरूपाक्ष और प्रमेश आदिके साथ असंख्य सेना थी और इसी तरहपर बहुत से यूथप थे और शिवके गणों में तालकेत, षड्वदन, पञ्चवदन, भयानक, लङ्कलेश, संवर्तिक, भृङ्गी एक हज़ार भूत लिये थे और दशकोटि और भी जानना चाहिये और लोकान्त और दैत्यान्त और दीप और आसन जो देवताओं

को अतिप्रिय हैं ये सब चौंसठ हज़ार एकही स्वरूप के थे और रुद्रके असंख्य गण थे उन सबके मस्तकों पर नवीनचन्द्रवत् एक रेखा जटा मुकुट धारण किये त्रिनेत्र और कण्ठ में हलाहलका चिह्न विराजमान कुण्डल और हार पहने कि जिनको देवता विष्णुजी और हमभी देखकर आश्चर्य में हुये और उनके शरीर का प्रकाश सहस्रसूर्य की दीप्ति से कम न था यह सब रुद्रगण उद्यत हुये ऐसा समूह देख शिव अति प्रसन्न हुये और चारों ओर से जय २ शब्द होने लगा उस समय शिवजी अपने स्वरूप का ध्यानकर और प्रणाम नमस्कारकर बैल पर सवार हुये हम और विष्णु दहिने बायें हंस व गरुड़ पर चढ़े हुये साथ हो लिये और ऐरावत हाथी पर इन्द्र चढ़े इसी प्रकार समस्त देवता और मुनि आदि सब साथ चले और सबके मनमें शिवकी मूर्ति स्थिर होगई और हर प्रकार की सेवा करने लगे उस समय बड़ा आनन्द था हर मनुष्य अति हर्षपूर्वक चला जाता था और शिवजी बहुत धीरे २ चलते थे कि कोई दुःख न पावे जिस २ के देश में शिव आते थे वहां भेंट पाते थे और स्वीकार करते थे इसी तरह से शिव अलकापुरी के निकट पहुँचे और अलकापुरी के स्वामी शिव से बिदा होय ज्यवनार की सामग्री के तय्यार करने को आगे चले गये और अपने घर में जाकर बड़ी विधि से पूजा और ज्यवनार की सामग्री तय्यार की और फिर शिवजी की अगवानी को अपनी सेना समेत आगे पहुँचकर शिव के चरणों पर गिरे और प्रेम में मग्न होगये और भेंट देकर पूजन किया और प्रेमानन्द में मग्न होकर जो उचित था वह सब भूल गये और शिव को प्रणामकर विष्णु और हमारा भी आदर किया शिवने उनको हृदय से लगाया और मस्तक चूमा और उनको साथ लेकर आगे चले।

इक्कीसवां अध्याय ।

इतना कहकर श्रीब्रह्माजी बोले कि शिवजी देवताओं समेत इस तरह की सामग्री सहित अलकापुरी में पहुँचे और निधिनाथकी विनय के अनुसार वहां स्थित हुये अलकापुरी के अधीश्वर निधिनाथ ने शिवजी की पूजा करके हमारा भी अतिआदर सम्मान किया सब लोगों का बहुत ही आदर किया यही बात हर गृहस्थ को उचित है कि जो कोई अपने घर आवे उसकी सेवा करे और वेद और धर्मशास्त्र को जानकर अच्छे कामों से संसार में प्रसिद्ध रहे शिवजी ने सिंहासन पर विराजमान हो तुरन्त विश्वकर्मा को आज्ञा दी कि कैलास पर्वत पर हमारा मन्दिर अतिसुन्दर बनाओ और केवल मेरे ही लिये नहीं वरन हमारे गणों के वास्ते और सुर मुनि लोगों के लिये भी विचित्र मन्दिर स्थापन करो यह आज्ञा सुन विश्वकर्मा अति प्रसन्नतापूर्वक कैलास पर्वत को गया और मन्दिरों के बनाने में प्रवृत्त हुआ और एक अति विचित्र स्थान निर्माण किया जिसमें तरह तरह की सामग्री रत्नों से अलंकृत बहुमूल्य पत्रों से सजाई और धरती उसकी नीलमणि से बनाई और मूंगे के लट्ठे लगाये और शुद्ध स्वर्ण से दीवार और वज्रके द्वार सजाये और उसके बीच में एक स्थान मुख्य शिवजी के लिये निर्मित किया और अन्तःपुर जुदा बनाया और शिवजी की सेवा में आकर विनय की कि मन्दिर तय्यारहै और जो कुछ आज्ञा हो वह पालन करूं शिवजी अति प्रसन्न हुये और सबकी इच्छा हुई कि जो अब शिवजी कैलास को चलें तो अतिउत्तम है शिवजी अन्तर्यामी अपने भक्तों के मन की बात जान गये और अपने चरणसरोज से कैलास पर्वत को तथा सबको सुशोभित किया इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उसी समय में हम और विष्णु ब्राह्मणों को साथ

लिये हुये शिवजी के निकट पहुँचे और निधिपति ने हम सब लोगों की ओर से प्रतिज्ञा की कि हे स्वामी! सबका बड़ा यह मनोरथ है कि आपका अभिषेक किया जावे और पूजा की जावे और आपको सिंहासन पर बैठाकर पूजन करें कि हमारा मनोरथ हो शिवने प्रसन्न होकर अङ्गीकार किया यह आज्ञा सुन सब लोग इस आनन्द की तय्यारी में लगे और दूत चारों ओर भेजे गये और पवित्र और आवश्यक वस्तुओं को इकट्ठा करने लगे और जब ज्योतिषमुनि ने जाना कि शुभ मुहूर्त आन पहुँचा प्रसन्न होकर विष्णु से कहा कि शिवजी के अभिषेक का मुहूर्त नियत होगया है अब देर न कीजिये हम और विष्णु ने शिव से कहा कि अब आप स्नान कीजिये और वस्त्र जैसा इस समय के योग्य हो पहिनिये शिवजीने स्वीकार किया और सब विद्यमान मनुष्य प्रसन्न होगये उस समय पुष्पोंकी वृष्टि हुई और सब देवता और अमरगण अपनी २ स्त्रियों समेत अति प्रसन्नता को प्राप्त हुये सब तीर्थों का जल लाया गया जिससे शिवजी ने स्नान किया और हम और विष्णुने शिवजी के शरीर को अपने हाथों से अच्छीतरह मलकर धोया फिर शिवजी दिव्यवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर सुशोभित हुये उस समय सब बाजे बाजने लगे और पुष्पों की महावृष्टि हुई और ब्राह्मण स्वस्तिवाचन पढ़ने लगे हमने वेदध्वनि प्रारम्भ की और शिवजी को सिंहासन पर सुशोभित कर हम अति प्रसन्न हुये पहिले विष्णुजी ने निगम मन्त्र पढ़कर शिवपूजा की और लक्ष्मीजी समेत अतिभक्ति से बार २ आरती उतारी और भिक्षुकों को बहुत सा दान दिया हरतरफ़ से बाजन बजने लगे आकाशकी दुन्दुभि ने दिशा पूरित की उस समय अच्छा समा हो रहा था कि गन्धर्व गाते और अपने प्रियस्वरों और मधुर-

वाणी से मन हरलेते अप्सरादि नृत्य करने लगीं जिससे चारों ओर आनन्द छागया फिर हमने देवताओं के साथ पूजा की इसके उपरान्त सनकादिक, मरीचि, देवऋषि, ब्रह्मऋषि और मुनि आदि ने पूजा की फिर विष्णु के अमर पार्षद शिवकी पूजा करने लगे फिर शिवके गणोंने और जो लोग आये सबने यथाशक्ति शिवजी को पूजा और हम सब ने प्रसन्नता में बड़ा द्रव्य लुटाया और ग़रीबोंको अमीर बना दिया उस समय चारों ओर से धन्य धन्य का शब्द सुनाई देता था कोई उस हर्ष में गाता कोई दौड़ता कोई नाचता कोई शिवकी स्तुति बखानता कोई सुरमुनि की सेवा करता इसी प्रकार सबने अतिआनन्द मनाया और अतिहर्ष को प्राप्त होकर शोक नष्ट करदिया और सबने अलग२ शिवजी की स्तुति की जिसको हम भी जुदा २ वर्णन करते हैं।

बाईसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजीने कहा कि पहिले विष्णुजी ने दोनों हाथ जोड़कर यह स्तुति की जिसका संक्षेप यह है कि हे ईश्वर ! आपकी स्तुति वेद नहीं करसकते और चाहे वह सब कुछ कहते हैं तो भी आपका अन्त उनको नहीं मिलता और चुप हो रहते हैं और मैंने भी स्तुति की पर आदि अन्त नहीं जानता और देवताओं ने एक मति होय यह स्तुति की कि आपका तेज इस निर्मल सूर्य से करोड़ों भाग अधिक है हम क्या कहें हम भी चाहते हैं कि आपके चरणों में हमारा मन लगा रहे और मुनीश्वरों ने भी शिर झुकाकर बहुत प्रशंसा की इसी प्रकार देवता, उपदेवता, गणादि सबोंने अपनी अपनी बुद्धि और मति के अनुसार अति विस्तृत स्तुति की और सबने खड़े होकर प्रसन्नता के चिह्न प्रकट किये कि जिससे सबकी प्रीति देखकर शिवजी अतिप्रसन्न हुये और श्रीमुख पर इस प्रकार के

शुभ वचन लाये कि तुम सब लोगों की जो इच्छा हो वह मांग लो हम देंगे ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसको हम दे नहीं सकते यह सुन सब हाथ जोड़ बोले कि आपने जब ऐसे वचन कहे तो हम तृप्त होगये और हमारे सब दुःख मिटे इससे और कौन वस्तु है जिसको हम आपसे मांगें और आपसे क्या छिपा है पर तोभी हम एक बात चाहते हैं कि हमको सदा आपकी भक्ति बनीरहे और आपके चरणों की इच्छा किया करें और हमको कुछ भय न हो हमारे अपराध क्षमा हुआ करें और जब असुर हमारा अपमान करें उस समय हमारा दुःख आप दूर किया करें और जो हमारे लिये उत्तम हो उसको आप किया कीजिये वेद आपको जगत्पिता कहते हैं इस कारण आपसे विनय की इतना कह सब चुप होगये और शिव सबको निर्भयकर आप सगुणरूप हो वहीं स्थित हुये और सबको समझाकर विदा किया केवल हमको और विष्णु को रख दिया और निकट बुलाकर कहा कि तुम दोनों हमारे शरीर हो और संसार उपजाकर तुम्हीं पालते हो जब तुमको कुछ दुःख हो तो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं और अपने २ लोक को सुखपूर्वक चले जाओ और जो इच्छा हो वह हमसे मांग लो यह सुनकर हम दोनों ने भक्ति मांगी और विदा होकर चले फिर शिवजी निधिपति का हाथ पकड़ के कहने लगे कि तुम्हारी प्रीति में फँसकर हम तुम्हारे निकट स्थित हुये हैं और हमारी तुम्हारी मित्रता तीनों लोक में प्रसिद्ध होगई तुम्हारा क्या उत्तम भाग्य है कि तुम मुझको अतिप्रिय हुये तुम प्रसन्न रहो और दुःख तुम्हारे सामने न आवे अब तुम भी अपने देश को जाओ इतना कह निधिपति प्रेम में मग्न होगये और आंसुओं की नदी बहने लगी और विनय की कि चाहे मेरा मनोरथ पूरा हुआ पर मुझे

घर जाने की इच्छा नहीं पर महाराज की आज्ञा से निष्पाप हूं यह कहकर बार २ शिवजी को प्रणाम करने लगे और अपने घर अति प्रसन्न होकर जा पहुँचे और शिवजी भी उसी कैलास पर्वत पर निर्भय होकर स्थित हुये और कभी २ इस लोक में आकर देखा करते और कभी कोई विचित्र कथा प्रीति से कहते और कभी योग अङ्गीकारकर अपने स्वरूप के ध्यान में मग्न रहते कभी अपने गणों का मन विचित्र कथा में कहकर बहलाते और कभी अपने भक्तों के लिये कुछ लीला रचते इसी प्रकार एक समय तक शिवजी अकेले लीला करते रहे और उमा प्रकट न हुईं और शिव अपने भक्तों के उपकार के लिये समय तक कैलास पर्वत पर विहार करते रहे फिर उमा ने अवतार लिया और दक्ष के घर उपजीं और दक्षने शिवजी के साथ विवाह कर दिया और शिवभक्तों के लिये विहार करने लगे शिवरानी अतिप्रसन्न रहा करतीं और परस्पर दिन २ अधिक प्रीति होती जाती थी हे नारद ! हमने शिवअवतार और शिवजीके कैलास में जाने का हाल तुम्हें सुनाया इसके उपरान्त और हज़ारों शिवजी की लीला हैं यह लीला मैंने अपनी बुद्धि के प्रमाण कही यह शिव की कथा अति पवित्र है जिसके सुनने से बड़े २ पाप नष्ट होजाते हैं यह कथा मोहरूपी सागर के लिये नाव है जो चढ़नेवाले को पार कर देती है जो मनुष्य इस कथा को सुनता या सुनाता है वह प्रसन्न रहता है और निर्वाणपद पाता है जो इसको स्मरण करता है उसके सब शोक और दुःख नाश को प्राप्त होते हैं जो मनुष्य इसे शिवप्रीतिसंयुक्त पढ़े उसके धन सन्तान बहुत होगा ।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसंवादे शिवविलासे प्रथमखण्डः समाप्तः ।

प्रथमखण्ड पूर्ण हुआ ।

ॐ नमः शिवाय

शिवपुराण भाषा

द्वितीय खण्ड

पहिला अध्याय।

इतना कहकर फिर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम शिवजी का अनादि चरित्र वर्णन करते हैं और जिसप्रकार सतीने दक्षके घर अवतार लिया पुनः जिसप्रकार शिवजी से विवाह किया और जो जो चरित्र शिवजी के घर किया वह हम विस्तार से वर्णन करते हैं हमने पहिले दश पुत्र उपजाकर उनको आज्ञा दी कि तुम सृष्टि उपजाओ वे ये हैं मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरस ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ भृगु ७ वसिष्ठ ८ सुरऋषि ९ दक्ष १० और इनको हमने मानसी सृष्टिकी रीति पर उत्पन्न किया अर्थात् क्रमपूर्वक मन, शरीर, मुख, कर्ण, नाभि, त्वचा, हाथ, प्राण, अण्डकोष, अंगुष्ठ से ये सब पैदा हुये और हृदय से धर्म और पीठ से अधर्म और होठों से मोह और भौंह से क्रोध उपजाया पर जब हमने सरस्वती को जो सुन्दर स्त्री रूपसे उपजीं तब उसके सुन्दर मोहन स्वरूप को जो कामकी भरीहुई अपने नयनों से तीनों लोक मोहनेवाली मालूम होती थी देखकर कामजाल में फँस गये और उसके साथ मैथुन करना चाहा जोकि कामदेवने हृदय में प्रवेश किया था यह देख मेरे सब पुत्र हाहा करने लगे और शिवजी की स्तुति करने लगे कि मैं ऐसे महापाप से बचजाऊं तथाच तुरन्त सदाशिवजी प्रकटे और मुझे ऐसे महापाप से बचाया जिसका परिणाम नरक है मैं बुद्धि के भ्रष्ट होने से अति लज्जित होय शिवजीकी निन्दा करनेलगा

और मेरा मन बहुत पापी होगया रीति है कि जो कोई मनुष्य दूसरे की बुराई चाहता है तो वह आपही कष्ट पाता है हे नारद! मुझे केवल सदाशिव ने ऐसे पाप से बचालिया क्योंकि वे अपने सेवकों की इसी तरह रक्षा करते हैं इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो! यह सुनकर नारदजी विचारपूर्वक कहने लगे कि हे पिता! आप सम्पूर्ण सृष्टि देवता और सबके उपजानेवाले हैं मुझे बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई है इससे आप फिर इस कथा को विस्तार से वर्णन करें जिससे मेरे मनका कष्ट दूर हो क्योंकि आप सब सृष्टि के महाराज हैं और सर्वसृष्टि आपकी कृपा से शरीर धारण करती है और तीनों लोक के आप सहायक हैं फिर क्यों आपका मन ऐसा अधीर हुआ जब आपकी सेवा से लोग ब्रह्मज्ञानी होते हैं तो आपसे ऐसे कर्मका प्रकट होना आश्चर्य की बात है यह नारदका प्रश्न सुन ब्रह्माजी बोले कि हम अच्छी तरह से समझाकर मुख्य वृत्तान्त कहते हैं कि लोक में शिवजी की माया धन्य है वह सबको कठपुतली की तरह नचाती है तुमको जिस तरह उस माया ने चरित्र दिखलाया वह प्रकट है क्या तुम वह भूलगये जो मुझसे मूर्ख जीवों की सदृश पूछते हो अच्छा जिस तरह हमको शिवमाया ने नचाया हम वर्णन करते हैं वही सदाशिव हमारी सहायता करें जब हमने मुखसे एक लड़की उत्पन्न की कि सृष्टि बढ़े उसको बनाकर हमारे मनमें कुछ अहंकार उपजा जो अहंकार हर गर्ववान् को दुःख देता है उस समय शिवने यह चरित्र ठाना अर्थात् हमारे मुखसे एक अतिसुन्दर स्त्री जिसके देखने से सब दुःख नष्ट होजावें उपजी और उसका नाम संध्या रक्खा गया ऐसी सुन्दरी इस मनुष्यलोक में तो क्या देवलोक में भी न थी उसके सम्पूर्ण अङ्ग उचित दोषरहित मोहनेवाले जिसका दृष्टान्त हमको नहीं

मिलता शीशपर श्याम सुगन्धित केश मानों सजलघन लट मानों काली नागिनिसी लटकती थी नासिका कीर के सदृश नेत्र ललाई लिये दोनों ओष्ठ कुन्दरूसे अति सुन्दरी मयनहरणी रूपराशि मनको चुराय लेती थी दाँत अनार के सदृश ठोढ़ी अतिसुन्दर गर्दन में तीन रेखा दोनों हस्तकमलों में नाना प्रकार का भूषण पहिने और इसी प्रकार हर उंगली में अँगूठी आदि थीं गले में रत्नों की दुलड़ी दोनों उरोज उठे हुये मानो कन्दुक उदर में त्रिबली नाभि गम्भीर कटि क्षीण नितम्ब बहुत ऊंचे जङ्घा केले के स्तम्भ की तरह गोल सुडौल पांव में घुंघुरू आदि भूषण अलंकृत पांवके नख एँड़ी नवीनचन्द्र से झलकते ऐसी कामिनी गजगामिनी कटिकेहरी चम्पकवर्णी का रूप अनूप देखकर मैं कामवासना से उठ खड़ा हुआ उस समय दक्ष आदि पुत्रों ने मुझे निषेध किया और वह सब आप भी उसकी ओर देख इकबारगी कामियों के सदृश बुद्धि से हीन होगये यह विचार में अपने मनमें कर रहा था कि अकस्मात् एक मनुष्य शुद्ध स्वरूप प्रकट हुआ इस तरह पर कि शिर पर मुकुट मुख ऐसा कि जिसे देख करोड़ों चन्द्रमा लज्जित होजावें कुण्डल कान में पहने गले में मोतियों का हार रत्नों समेत पीतवस्त्र पहने मगर के ऊपर चढ़े पांचों प्रकार के शस्त्र अर्थात् हर्षण १ रोचन २ शोषण ३ मोहन ४ मारण ५ धारण किये आ खड़ा हुआ और बोला कि हे हमारे पिता ब्रह्मा ! हमारा नाम और काम बता दीजिये कि हम अपने अच्छे कार्यों के साथ जहां आप कहैं वहां स्थित रहैं मेरे ऊपर कृपा करके मेरी इच्छा पूर्ण करो ऐसी वार्त्ता सुनकर हम आश्चर्य में हुये और अति विचार के उपरान्त हमने उत्तर दिया कि तेरे प्रकट होते सबके मन और गात कांप उठे इसलिये तुम्हारा नाम मन्मथ रक्खा गया इसके सिवाय

मनसिज, मथन, काम, मदन आदि बहुत नाम तुम्हारे प्रकट होंगे और अपने पांचों बाणों और अपने सौन्दर्य से सबको अपने आधीन किया करो तुम्हारे आधीन सब सृष्टि रहा करेगी अब तुम भी पुत्र उपजावो और विष्णु और रुद्रभी तुम्हारे आधीन रहेंगे और की क्या कथा और अलग २ सबके हृदय में स्थित रहो इस तरह से मैंने अपने पुत्र का अधिकार बढ़ाया और प्रसन्नता से अपना कार्य हुआ देखकर मन में बड़ा अहंकार उपजा और सिंहासन पर बैठे और अपने पुत्रों को देख सब दुःख दूर किया और सब लोगों ने हमारी इच्छा समझकर यह नाम मन्मथ बहुत उचित समझा और कहा कि कामदेव की पदवी सबसे बड़ी और ऊंची है और उसको तीनों लोकों के आधीन करनेवाला जाना इस चरित के उपरान्त हम सब लोग प्रसन्न होगये और कामदेव ने अपने उस कमान को सीधा किया जिससे तीनों लोक की बुद्धि नष्ट होजाती है ऐसे चाप को कान तक चढ़ाये हुये काम खड़ा हुआ और मन में शोचा कि जो वरदान मुझे ब्रह्माने दिया है उसकी अब परीक्षा करूं और मेरी लड़की सन्ध्या को मेरे निकट खड़े देख बाणको चाप में चढ़ाया और मेरे शरीर में मोहन रूप बाण मार दिया फिर मेरे पुत्रों को भी मार मूर्च्छित कर दिया अर्थात् वह सब कामदेव के वश हुये और जब कि उसने देखा कि सन्ध्या प्रसन्न खड़ी है और उस पर कुछ प्रभाव नहीं हुआ तो उसने सन्ध्या के हृदय में भी ऐसा बाण मारा कि जिससे वह भी काम वश हुई और काम के वेग से आधीन होकर बांकी तिरछी तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगी उस समय उसके शरीर में उल्लास भाव और नव हाव और चौंसठ कला आदि प्रकट हुईं पहिले हम सब अधिक बुद्धि भ्रष्ट करके मोहित हुये और उसकी अभिलाषा में हमने

चाहा कि उसको पकड़ लें और मरीचि और दक्ष आदि भी मेरी भांति स्थित हुये और आश्चर्यपूर्वक सन्ध्या को देखने लगे और कुकर्म का विचार न करके अधीर होगये हे नारद ! हम सदाशिवजी की महिमा कहां तक कहें।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इस प्रकार हमको मोहित देख धर्मसुता सत्य बहुत घबड़ाये और चिन्ता करने लगे और दोनों हाथ जोड़ शिवजी के निकट गये और प्रणामकर स्तुति करने के उपरान्त मन में ध्यान लगाये बैठे रहे शिवजी ऐसा धर्म के विरुद्ध व्यवहार विचार कर उस स्थान पर प्रकट हुये शिवको देख हम और हमारे पुत्र सब लज्जित होगये और कामदेव भी अति लज्जित हुआ तब शिवने मेरी ओर क्रोधदृष्टि से देख कहा कि हे ब्रह्मन् ! तुम क्यों ऐसे कुकर्मी हुये और अच्छी बुद्धि को भूल तुमने आप अपनी लड़की से भोग करना चाहा यह तुमको उचित नहीं इसमें बड़ा पाप है जो मनुष्य अपनी पुत्री या पुत्र की स्त्री या माता या भाईकी स्त्री या भगिनी से मैथुन करताहै वह घोरनरक में पड़ता है यह सब स्त्रियां बराबर हैं इस बात को वेद और धर्मशास्त्र बखानते हैं तुमने वेदपाठी होकर सब कुछ भुला दिया और लज्जा को छोड़कर धर्मको नष्ट कर दिया हमने संसार में बहुत से कामी देखे पर तीनोंलोक में ऐसा पाप करनेवाला एकभी नहीं है तुमको धिक्कार है और तुम्हारी बुद्धि और वेद पढ़नेपर धिक्कार है ऐसा पाप न किसी ने किया है न कोई करेगा और न इस बात के करने का कोई उद्योग करेगा इतना कहकर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इसप्रकार शिवजीने मेरी बहुत बुराई की और मेरे पुत्रोंकी ओर अतिभयानक स्वरूप से देखा और कहा कि हे मरीचि आदि ! तुम क्यों ऐसे अधीर और कामी होगये तुम्हारे

धर्म पर धिक्कार है जिसको कामने अपने आधीन करलिया कुछ भी धर्म सुकर्मका विचार न किया तुम ब्रह्मा के लड़के होकर वेद पढ़ेभी होऔर ऐसे अधीर हुये धिक्कार है २ तुम ऐसेकुमार्ग चलनेवालों पर सहस्रों धिक्कार हैं और तुमने अपना उत्तम धर्म छोड़ दिया इससे क्या २ कुकर्म नहीं हुये यह बातें शिवकी सुन हम अति लज्जित हुये इसी प्रकार हमारे पुत्रभी लज्जा से दब गये और कुछ बात किसी से न बन पड़ी उस समय सबके मनमें अतिलज्जा और खेद उपजा हमने इन्द्रियों और वीर्य को शिर पर करके सन्ध्याका त्याग किया और शिवके भय से हमारा मन ऐसे पापकर्म से बचगया और मेरे शरीर से पसीना टपकपड़ा पहिले उससे चौंसठ योगिनी उपजीं जो संसार छोड़े हुये हैं और तपस्या के सिवाय दूसरा काम नहीं करतीं फिर छियासी पुत्र उपजे और दक्ष प्रजापति का पसीना पृथ्वी में गिरा उससे स्त्री उपजी और अत्रि, मरीचि, पुलह, भृगु और तुम इन सबके शरीरों से प्रस्वेद न निकला और जो पसीना वशिष्ठ, विश्रवा, अङ्गिरस, क्रतु से निकलकर धरतीपर पड़ा उससे सर्वाङ्गसहित पितर उपजे जो सबकी प्रतिष्ठा के योग्य और प्रसन्नता देनेवाले हैं वे तुरन्त वेद और धर्मशास्त्र के ज्ञानी होगये वरन उनको सम्पूर्ण विद्याओं में पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ वे अतिधर्मिष्ठ और धर्म बतानेवाले और सब काम करने की शक्ति रखते थे अब हम उनका वर्णन करते हैं कि क्रतु से सोमि वशिष्ठ से काली बुध पुलस्त्य से अजय अङ्गिरस से हशमन्त हुये इस प्रकार चार प्रकार के पितरहैं जो छः प्रकार के प्रसिद्ध हैं सो सन्ध्या हमारी आज्ञा से पितरों से गर्भवती हुई उस समय शिव धर्म बचाकर अन्तर्द्धान होगये शिवजी के चलेजाने के उपरान्त मैंने काम की ओर देखा और अतिक्रोध से शाप देना चाहा मेरी इच्छा को

मेरे सब पुत्र जानकर समझाने लगे पर मैंने मायावश उनके समझाने को न माना और मेरा क्रोध ज्वालाकी तरह ऊंचा हुआ और ऐसे क्रोध के वश होय मन्मथ से कहने लगा कि हे मूर्खदुष्ट ! तूने यह कैसा दुःखदायक कर्म किया कि मुझसे ऐसा पाप कराना चाहा पिताकी क्या अच्छी सेवा तूने की जैसा तूने किया तू वैसा फल पावेगा और जोकि तेरे कारण शिवने मेरी अति निन्दा की और मुझे धिक्कार दिये इसलिये अब तुझे शाप देते हैं कि तुम जलकर भस्म होजावो तुमको शिवजीकी नेत्रज्वाला जला दे कि हमारा दुःख तेरी यह दशा देख दूर हो जावे ऐसे कुपुत्र से निःसन्तान रहना उत्तम है यह शाप सुन कामदेव थरथराने लगा और दोनों हाथ जोड़कर अहंकार छोड़ मेरी शरण आया और अति लज्जित होय यह वचन मुखपर लाया कि हे संसार उपजानेवाले और दुःख दूर करने-वाले और न्याय अन्याय के स्थापन करनेवाले पिता ! हमने कोई आपका अपराध नहीं किया आपने मुझे क्यों शाप दिया और आपकी आज्ञा के विरुद्ध मुझसे कोई काम नहीं हुआ केवल मैंने आपकी आज्ञा की परीक्षा की थी और जो कुछ आपने मेरे भाग्य से मेरे लिये आज्ञा दी वह तो अवश्य ही होगा पर कृपा करके ऐसा कीजिये जिसमें मैं फिर उत्पन्न होजाऊं यह शाप मेरा दूर कीजिये और मेरा दुःख मिटाइये बहुधा ऐसा होता है कि कुपुत्र पिता को दुःख देता है पर तो भी पिता सदा कृपा किया करता हैं इतना कह काम हाथ पांव जोड़ मेरी ओर देख गर्दन नीचे किये रहा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! कामदेव की यह विनती सुन हम अतिप्रसन्न हुये और कहा कि जो कुछ हमने तेरे लिये कहा है वह तो अवश्य होगा पर तुम्हारे जलने के पीछे कुछ दिनों के उपरान्त शिवजी अपना

विवाह करेंगे तब फिर तुझको यही तनु मिलेगा और शिव तुम्हारे सहायक रहेंगे यह कहकर हम चुप हुये और काम प्रसन्न हुआ और सुर मुनि आदि भी सब प्रसन्न हुये फिर हमारी सर्वसभा में नवीन आनन्द छा गया और चिन्ता दूर हुई।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हमने शिवजी की माया के आधीन होकर शिवके साथ गर्वपूर्वक वैर किया और काम पर कृपा कर अपना मनोरथ दक्षप्रजापति से कहा कि तुम्हारी लड़की जिसका नाम स्वेदका है उसे काम से विवाह दो इस बात से हम अपना मनोरथ पूरा करेंगे यह सुन दक्षने हमारी आज्ञा अपने शीश पर रख काम से कहा कि हमारी पुत्री जिसका नाम रति है उसको अङ्गीकार करो और प्रसन्नता से तीनों लोक पर विजयी रहो काम ने स्वीकार किया और बड़ी धूम-धाम से विवाह हुआ ऐसी सिद्धता देखकर हम अति प्रसन्न हुये और दक्षको बुलाय अति हर्ष से अपनी बाईं ओर बिठा लिया और जो वचन शिव ने पितावत् हमसे कहे थे उनको स्मरणकर और शिव की माया से मोहित होय उनके साथ वैरभाव करके यह विचार किया कि शिव योगी रूप से तीनों लोक को जीते हुये स्त्री रहित और भोग विलास छोड़े प्रसन्न रहा करते हैं और संसार की रीति से हटकर योगियों की तरह कालक्षेप करते हैं और कामदेव को तृणवत् जानते हैं और दशों इन्द्रियों पर विजय पाकर स्वाधीन हैं और मुझको अपकर्म करने के समय धिक्कार और कटुक वचन कहकर कुछ भी संकोच मन में न लाये हे दक्ष! ऐसा उपाय करो जिसमें शिवजी संसारी रीति के अनुसार विवाह करें जब यह बात होगी तो हम निश्चिन्त हो जावेंगे और हमारा मनोरथ पूर्ण होगा और तुमको भी शिवने धिक्कार दिया है और आप सबसे बड़े

बनकर अपने अहंकार से किसी को बड़ा न समझा जो हमको विष्णु ऐसा कहते और हमको धिक्कार देते तो हमको कुछ बुरा न मालूम होता शिव हमारे पुत्र होकर हमको धिक्कार देने लगे और बहुत से कटु वचन मुख पर लाये और तुमको भी भाई का विचार न करके जो चाहा सो कहा तो जब तक शिव स्त्री से विवाह नहीं करते हमारा शोक दूर न होगा ऐसी संसार में कौन स्त्री है जिसके ऊपर शिव मोहित होकर विवाह करें और शिव की चतुरता को नष्ट कर दे पर जब काम शिव को वश नहीं कर सका तो कौन देवता उनको आधीन कर सका है वह तो भय से उनकी सेवा किया करते हैं केवल एक उपाय है अर्थात् जो कामदेव कुछ परिश्रम करे तो सब काम बनजावें इतना कह हँसते २ काम के पास गये और उनका सुन्दर स्वरूप देखकर निश्चय किया कि प्रायः हमारा कार्य कामदेव से सिद्ध होगा कामने आदरपूर्वक हमको बिठा लिया उस समय हमारी श्वास से एक सुन्दर पुरुष उपजा जिसका नाम हमने वसन्त रक्खा उस समय वसन्त के उपजने से अति आनन्द प्रकट हुआ कामदेव की वृद्धि हुई तीनों प्रकार की वायु चलने लगी और पक्षी मधुरवाणी से बोलने लगे सर्व पुष्प एकही समय खिल गये कोकिल भौंरा पांचों स्वर अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, निषाद अलापने लगे और सारस हंस नदियों के किनारे फिरने लगे भौंरे ने हर फूल पर भ्रमणकर अपनी गुञ्जार की और कोकिला भी अतिआनन्द से बोलउठी ऐसी कामकी सासा देख हमने कामदेव से कहा कि अपना प्रताप दिखावो और शिवको अपने वश करो तब तुम्हारी बड़ाई तीनों भुवन में प्रसिद्ध होगी और शिवको वश करके लोक में बड़ी कीर्ति पावोगे तुमको लोग विश्वकेतु और पृथुनाम से प्रसिद्ध

करेंगे सत्पुत्र माता पिता की प्रसन्नता सर्वोपरि जानते हैं मेरे इस वचन को सुन कामदेवने अपनी सब सेना तत्पर की और मुझे प्रणामकर जीव से निराश हो शिवके पास चला ।

चौथा अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय कामदेव ने कुछ ऐसी सामा रची कि कामी तो विवश हो अधीर होगये और ऐसा हावभाव कामने किया कि सबलोग अपने धर्मको भूल गये और उस वनमें सम्पूर्ण स्त्री पुरुष मोहित होगये वरन शिव के गणभी बचे न रहे यह कामदेवका कार्य शिवने जाना और अपनी इन्द्रियों को जीते हुये ध्यान में बैठे रहे कामकी कुछ न चलसकी और काम दुःख और चिन्ता में डूबा हुआ लौट आया और हमारी स्तुति के उपरान्त कायर के सदृश पृथ्वी पर गिर पड़ा और लज्जित हो कहा कि मैंने अपनी सेना से मुनि और देवता आदि को तो वश कर लिया और जितने जीवधारी थे वह सब मोहित होगये पर शिवको कुछभी मोह न हुआ मैं बहुत डरता हूं कि वे क्रोध न करें उनका प्रज्वलित अग्निसमान रूप देखकर बड़ा भयवान् होता हूं मैं सच कहता हूं कि मैं हार गया शिवके मनमें कुछ प्रभाव न होगा मैं शिवके वश करने का कुछ बल नहीं रखता क्योंकि मैंने अच्छी तरह परीक्षा कर ली है यह सुन मुझे अतिचिन्ता हुई और मेरे मुखपर उदासीनता छागई और मैंने शोक में बैठकर जो बहुत से श्वास छोड़े उनसे बहुत प्रकार के गण उत्पन्न हुये जिनके हाथों में नानाप्रकार के शस्त्र थे कई तो सिंह के सदृश और कइयों के मुँह हाथी से कई ऋक्ष का सा मुख धारण किये और घोड़े आदि के से मुख लगाये थे और कई शेरका सा शरीर रखते थे कोई अति हृष्टपुष्ट कोई अति क्षीण मलिन कोई

मध्य वर्णका कोई श्वेत कोई पीत कोई हरित आदि वर्ण का था जिनका स्वरूप देखते हुये भय होता था वे बड़ा शब्द करते गाते कई नाचते और मार २ ऐसा शब्द कहते थे जिनका शब्द चहुँओर फैल गया वे बहुत उपद्रव करते उनकी संख्या हम वर्णन नहीं करसके ऐसे समूहको कामने देखा और मुझसे प्रसन्न हो कहा कि ये कौन हैं और इनका क्या नाम है हमने कहा इनका शब्द मार २ है इसलिये इनका नाम मार होगा यह तुम्हारे साथी होंगे और सब तपस्वियों का तप बिगाड़ेंगे यह अच्छे बुद्धिमानोंकी बुद्धि नष्ट करदिया करेंगे इनसे बढ़कर तीनों लोक में दुःखदायी और कोई न होगा हे काम! यह सेना लेकर इस वेर फिर जावो और यह उपाय करो कि शिव स्त्रीअङ्गीकार करें तब कामदेव बोला कि मेरी कुछ नहीं चली और न अब आशा है पर यह बात हम आपसे कहते हैं कि शिवका ध्यान तो भटकेगा मेरे प्राण जाते हैं वह जावेंगे इतना कह काम नई सेनासमेत वहां से चला और वहां पहुँचा जहां शिवजी ध्यानावस्थित थे और शिवजीको शिरके बल प्रणाम करता हुआ उनकी प्रसन्नता के लिये असंख्यनामों से स्तुति करनेलगा और कहा कि मैं अपने पिता की आज्ञा से यह काम करने आया हूं सो आप मुझपर कृपा रक्खेंगे इतना कह वसन्तको चारों ओर फैला दिया उस समय किसी के मनमें धीर न रहा और काम वसन्त, मन्दपवन और मारगणों ने अपना २ पूरा काम किया पर शिवका ध्यान न भटका और कामको अहंकार से रहित देख न जलाया सो काम लज्जित होकर फिर लौट आया और कहा कि हम सब कुछ करके हारगये हमारी कुछ नहीं चलती यदि आपकी इच्छा है कि शिव विवाह करें तो इसके सिवाय कोई अन्य उपाय कीजिये यह कह काम तो अपने घर चलागया

और हम निराश होकर चिन्तित हुये और बहुतसमय तक इसी शोक में मग्न रहे पर कोई युक्ति न सूझी उसमें हमने विष्णुजीका ध्यान किया और उनकी बहुत स्तुति की।

पांचवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब मैंने यह कहा कि हे विष्णु, भगवन्! मुझे अपना किंकर समझ कृपा करके मेरा दुःख दूर कीजिये हे भक्तवत्सल! आप तो अपने सेवकों के लिये अवतार लेते हैं इस समय आप प्रकट हों और मेरे दुःख को दूर करें यह सुन विष्णुजी प्रकट हुये हमने बहुत स्तुति करके प्रणाम किया तो विष्णुजी हँसकर कहने लगे कि क्यों तुमने हमारी स्तुति पढ़ी है तुमको कौन कष्ट है हमने पिछला सम्पूर्ण वृत्तान्त कामदेव का जाना और वहां से निराश होकर लौटने का सब कह सुनाया विष्णुजीने कहा कि तुम क्यों शिव को स्त्री सहित देखा चाहते हो और उनका एकान्त रहना नहीं चाहते तुम्हारी इच्छा के सुनने के उपरान्त हम उपाय करेंगे हमने जिस तरह कि अपनी पुत्री सन्ध्या के साथ मैथुन करना चाहा था और सर्व वृत्तान्त कह सुनाया और यह भी विनय की कि जब तक हम शिवको स्त्रीसहित न देखेंगे तब तक वह धिक्कार जो मुझे शिवजी ने दिया है न भूलेंगे यह सुन विष्णुजी बोले कि हे ब्रह्मन्! यह मूर्खता जाने दो तुम शिवको अपना पुत्र जानकर अपनी बुद्धि के विरुद्ध बातें करते हो तुमने वेद का पढ़ना भुला दिया तुम बुद्धि छोड़ शिवके साथ वैर करते हो मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि शिव परब्रह्म सबके स्वामी और हम तुम सब उनके सेवक हैं वे आदि अन्त मध्य से रहित और सब प्रकट गुप्त के जाननेवाले हैं और स्वाधीन और भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले हैं यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि शिव स्त्री अङ्गीकार करें तो तुमको

उचित है कि उनकी शरण में जावो और कठिन तप से उनको प्रसन्न कर और उमा को भी स्मरण करो और दक्ष से भी उसी प्रकार का तप करावो तो दक्षप्रजापति की पुत्री शिव से व्याही जावेगी और वह कृपाकर सब दुःख निवृत्त करेंगे इस तरह तुम्हारा कार्य पूर्ण होगा इतना विष्णुजी कह और शिवके चरणों का ध्यान धर अपने लोक को चले गये।

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मैंने जो वैर शिवसे उनकी माया से मोहित होकर किया था वह छोड़ दिया और दक्ष को बुलाया और जिस तरह विष्णुभगवान् ने मुझसे कहा था सब कहा और फिर मैंने कहा कि अब तुम एक लड़की उपजावो जो तुम्हारी पुत्री शिवरानी होजावे तो हम तुम संसार में धन्य होंगे अब तुम सदाशिव का तप करो और उनको ऐसा प्रसन्न करो कि तुमको उनके दर्शन प्राप्त हों और वरदान में केवल यह मांगना कि आप हमारे पुत्र होकर अवतार लें और हमभी तप करके यही वरदान लेंगे वह आदिशक्तिमान् हैं और सगुण निर्गुण दोनों रूप हैं उनकी महिमा वेद कहकर पार नहीं पाते निश्चय है कि सदाशिव तपकी फांस में आकर दर्शन देंगे यद्यपि शिव श्रुतिगोचर नहीं और हमको भी जब शिवने उपजाया था तब हमारी और विष्णुजी की बिनती से कहा था कि हमभी अवतार लेंगे जिसका नाम हर होगा वह तुम्हारे सब काम पूरे करेगा आदिशक्ति जिसका अंश लक्ष्मी है उसकी एक कला से हमारी शक्ति उमा के स्वरूप से अवतार लेकर हरकी पत्नी होगी जो हमारे स्वरूप की है उसी आदिशक्ति से संसार भर उपजता है और वह संसार भर की माता है वह तुम्हारे घर में सतीनाम से उपजेगी सो हे दक्ष! हम और विष्णुजी को

तुम स्त्रीसहित देखते हो पर हर नें अब तक स्त्री को अंगीकार न किया और न अब तक सती का अवतार हुआ सो अब मन लगाकर ऐसा उपाय करो कि सती अवतार लें ऐसी बातें कहकर हमने दक्ष को बिदा किया और हम भी तपके लिये मन्दर पर्वत पर गये और वेद के अनुसार सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश कर ध्यान में लगे श्रीजगदम्बा में मन लगाया और श्वास शीशपर चढ़ाया और मनके वेग को जीतकर स्तुतिनिर्माण करके सुनाई जगदम्बा मेरी स्तुति सुन अति प्रसन्न हुई और अपना सेवक जान कृपाकर प्रकट हुईं ।

सातवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! कौन ऐसा सुर मुनि है जो उस महासुन्दर रूप छवि अनूप को देखकर मनको वश कर सके उसके अवलोकन से अमरगण भी मोहित होजाते हैं अपने मुख्य चिह्न और वस्त्राभूषण से अलंकृत आठ भुजा धारण किये शिर से पांव तक सुन्दरता आभरण से सजी हुई जिसको देखकर कोटि कामदेव लज्जित हों सजल घनकी श्यामता शरीर में प्रकट किये सिंह पर चढ़े ऐसे रूप को देख शिर झुका स्तुति करने लगा फिर मौन होगया भवानी बोली वर मांगो, वर मांगो, मैंने पिछली बात याद करके देवी से मांगा कि रुद्रनाम शिवने व्यर्थ मुझे कटु वचन कहे और धिक्कारा सो आप अवतार लेकर उनको वश में करें कि वह भी गृहस्थ होजावें और यही वरदान आप दक्षप्रजापति को जो आपका तप कर रहा है देवें कि मेरा मनोरथ पूर्ण हो यही मैं मांगता हूं और तीनों लोक में कौन है जो सिवाय आपके शिव को मोहित कर सके भवानी बोली हे ब्रह्मन् ! तुम धोखा देकर हमसे क्या मांगते हो इसमें तुम्हारा क्या लाभ है जो मैं तुमको यह वरदान नहीं देती तो वेद का

मार्ग नष्ट होता है फिर देवी ने योगधारणा से उस परमेश्वर का ध्यान किया जो अपने भक्तों को प्रसन्नता देता है और अन्तःकरण का सब हाल जानता है सो वहां से यह आज्ञा हुई कि हां जो वरदान ब्रह्मा मांगते हैं उनको वही दो और दूसरा अवतार लो हम तुमको बड़ी प्रीति से अङ्गीकार करेंगे और ऐसी दशा में भी ब्रह्मा को ऐसा मोहित करेंगे जिससे उनका गर्व जाता ही रहेगा यह आज्ञा पा देवी ने अति आनन्द हो मुझसे कहा कि हर योगी हैं मोहने लायक़ नहीं पर तुम्हारी विनती के अनुसार युक्ति से तुम्हारा मनोरथ पूर्ण किया जावेगा और जोकि हर को स्त्री के अङ्गीकार किये विना न तो परलोक का फल मिलेगा और न संसार में आनन्द इस कारण हम प्रकट होंगी अर्थात् हम दक्षप्रजापति की पुत्री होंगी और शिव हमपर मोहित होकर हमसे विवाह करलेंगे यह कहते २ यह स्वरूप अन्तर्द्धान होगया और हमको भी प्रसन्नता हुई और हमने फिर आकर प्रसन्नतापूर्वक यह हाल अपने पुत्रों से कहा।

आठवां अध्याय।

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो! ऐसी वार्त्ता ब्रह्मा की सुन नारदने अति प्रसन्नता से विनय की कि हे प्रजापति! जब आपको सदाशिव ने वरदान दिया तो फिर क्या हुआ ब्रह्मा बोले हे पुत्र! यद्यपि तुम सब जानते हो पर जोकि भले लोगों की रीति होती है कि वे अपने को मूर्ख बनाकर औरों से पूछा करते हैं तो यह प्रश्न तुम्हारा इस कारण है सो प्रकट हो कि देवी ने वरदान दे दिया और दक्षप्रजापति ने हमारी आज्ञा के अनुकूल घोर तप किया कि गरमी में जलती हुई अग्नि तापता शीतकाल में कुटी से बाहर रहा और अधिक शीत में पानी में बैठ शिवरानीका तप करता रहा और तीनों

प्रकार का प्राणायाम करके शिवरानी के चरणारविन्दों में मनको स्थिर किया यह दक्ष का तप श्रीजगदम्बाने स्वीकार किया और अपने उसी शुद्ध स्वच्छ स्वरूप से प्रकट होकर दर्शन दिये दक्ष ने प्रणाम कर स्तुति की और कहा कि मैं आपकी शरण आया हूं मुझे सेवक जान कृतार्थ कीजिये ऐसी उत्तम स्तुति सुन जगदम्बा ने कहा कि तुमको जो इच्छा हो वह मांगो वह कौन वस्तु है जिसको हम नहीं देसक्कीं दक्ष बोले हे महामाया! आप हमारे घर अवतार लीजिये और हमारी पुत्री होकर हर के मनको मोहित कीजिये अर्थात् जिसतरह से होसके आप शिवकी स्त्री होवें इसमें केवल मेरा ही अर्थ नहीं है वरन तीनों लोक का उपकार होगा सिवाय इसके जो मैंने मोक्षको छोड़कर यह वरदान मांगा तो यह बात अवश्य हो जगदम्बा बोलीं अच्छा यही होगा हम तुम्हारी स्त्री के उदर से उत्पन्न होकर शिवकी स्त्री होंगी पर तुम कुछ अहंकार न करना वरन तुम्हारा गर्व मिटाया जावेगा इतना कह श्रीजगदम्बा अपने लोक को गईं और दक्ष अपने लोक में बड़ा प्रसन्न होकर आया कि जगदम्बा मेरे घर अवतार लेंगी और स्त्री विना दशसहस्र मानसी सृष्टि उपजाई और वे सब तुम्हारी प्रेरणा से घर छोड़ बाहर चले गये और फिर लौट कर न आये और परमपद को पहुँचे यह सुन दक्षने फिर दशसहस्र उत्पन्न किये सो वह भी तुम्हारे उपदेश के अनुसार जहां उनके भाई गये थे वहीं चले गये यह बात सुनकर दक्षने क्रोधित हो तुमको ऐसा शाप दिया कि हे नारद! तुम बड़े अधम हो कि तुमने हमारे सब पुत्र विरुद्ध करदिये इसलिये तुम एक स्थानपर न रहकर सदा भ्रमण किया करोगे यही तुम्हारे कर्मका फल है ऐसा शाप तुमको देकर कुछ धैर्यवान् हुआ और मनमें ठाना कि अब मैथुनी सृष्टि उपजानी

चाहिये और विवाह की इच्छाकर वीरनी जो. वीरप्रजापति की पुत्री थी उससे विवाह किया और बड़ी धूम विवाह में हुई और जगदम्बाका ध्यान धरा जगदम्बा ने समझा कि अब समय है कि हम दक्ष के घर उत्पन्न हों और दक्ष का मनोरथ पूर्ण करें तथाच दक्ष के मन में प्रवेश कर गईं उस समय दक्षप्रजापति अतिप्रसन्न हुये और भगवती के तेजप्रकाश से दक्ष का शरीर चमकने लगा और दक्ष ने अच्छा समय पा अपनी स्त्री में वह तेज स्थिर करदिया और जगदम्बा वीरनी के मन में स्थित हुईं उसका भी तेज सूर्यवत् चमकने लगा और वीरनी ने गर्भवती स्त्रियों का रूप बनाकर अपना गर्भ सब पर प्रकट किया।

नवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब दक्षकी स्त्री गर्भवती हुई उस समय बड़ी धूमधाम से उत्सव किया गया और दक्षने सब रीतें पूजीं और हम और विष्णु ने भी उस सभा में संयुक्त होकर वीरनी की सेवा और स्तुति करने के उपरान्त दक्ष की प्रशंसा की फिर सभा उठगई और हम सब अपने २ लोक को गये इस प्रकार नव महीने बीते और दशवें का आरम्भ हुआ तो सर्व ओर आनन्द के सामां अपने आप प्रकट हुये साधुओं के मन में प्रसन्नता उपजी और आकाश से बाजे बजने लगे उस उत्तम समय में श्रीमहारानी जगदम्बा ने अवतार लिया उस समय बड़ा उत्सव और आनन्द हुआ तीनों लोक प्रसन्नता से भरपूर हुये तीनों भांति की पवन चलने लगी उस समय कोई मनुष्य खेदवान् दृष्टिगोचर न हुआ और विष्णु और हम और सम्पूर्ण ऋषि मुनि इकट्ठे होकर दक्षप्रजापति के घर गये और अति प्रसन्नता से बाजे बजने लगे पातुर नृत्य करने लगीं गन्धर्व गाये आकाश से पुष्पवृष्टि हुई और सब लोग स्तुति करने

लगे कि हे शिवा-शिवरानी ! तुम सम्पूर्ण संसार की राजरानी हो तुम्हारी महिमा वेद भी नहीं जानता तुम आदिशक्ति हो तुम सबकी माता और प्रसन्नता देनेवाली हो अब जिस कामके लिये तुमने अवतार धारण कियाहै वह कीजिये इसप्रकार विनती कर हम सब अपने २ स्थान को चले गये और वीरनी ने जब अपनी लड़की का मुख देखा तो उसको हृदय के ज्ञान से विदित हुआ कि आदिशक्ति है और हमारे यहां अवतार लिया और उसका अद्वितीय रूप देखकर पहिंचाना जो अष्टभुजी महाप्रकाशमान तेजस्वरूप बादल के सदृश श्यामवर्ण टखनी और पगतली रक्तनख झलकते हुये इसी प्रकार सर्व अङ्ग अतिसुडौल महासुन्दरी सम्पूर्ण प्रकार के भूषण और वस्त्रों से अलंकृत कानों में कुण्डल हाथों में कङ्कण गले में हार माथे पर शिंगरफ़ी बिन्दी से चन्द्रमुख को सजाये हुये वीरनी को दर्शन दिया ।

दशवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! वीरनी ऐसा स्वरूप देख दोनों हाथ जोड़े हुये स्तुति करने लगी और कहा कि मैंने जाना कि तुम आदिशक्ति और सृष्टिकी जननी हो हमारे ऊपर कृपा करके हमारे घर अवतार लिया सो हमपर अनुग्रह करो और यह स्वरूप अपना मेरे मन में स्थित करो और उस समय बाल्यस्वरूप से अपना स्वरूप दिखावो मैं तुमको पहिंचान चुकी तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और तुमको क्या पहिंचानसक्ती हूं तुम्हारी वेद भी स्तुति करके अन्तको हारमान चुप हो रहते हैं उस समय दक्षप्रजापति ने आकर बड़ी स्तुति की और कहा कि तुमने अपना वचन पूरा कर मेरे घर अवतार लिया मैं और मेरे भाई वेद सब जीवन्मुक्त होचुके आपकी महिमा अप्रमेय है कि सुर, मुनि, नारद, शारद भी कहकर पार नहीं पाते

और व्यास आदि जो बड़े पण्डित हैं उनमें भी इतनी वचन-शक्ति नहीं कि कुछ कह सकें और सनकादिक भी आपकी महिमासे अज्ञान और मूर्ख हैं और शेष जिनके सहस्र जिह्वा हैं वह भी तुम्हारे पवित्र नाम कहते २ हार जाते हैं और ब्रह्मा विष्णु तो क्या जानें और वही आपकी महिमा आपकी कृपा से एक मूर्ख मनुष्य भी जान सक्ता है यही बात वेद कहते हैं कि तुम केवल पूजा और तपके वश हो जैसा कि सुरथका तप साक्षी है जिसने अपने तपसे परमपद पाया और शुम्भ निशुम्भने भी कि क्रोध और वैरसे आप में चित्त लगाया तो भी आपके चरणों में ध्यान लगाने से परमगति को पहुँचे इसी प्रकार दक्ष ने महामाया की बहुत स्तुति करके अन्त में यह बिनती की कि यह रूप अपना हमारे मन में बसाकर और और रूप जो समय के योग्य हो धारण कीजिये और वह चरित्र कीजिये जिसमें प्रसन्नता प्रकट हो इस प्रकार से श्रीदेवीजी भी दक्ष और वीरनी अपने माता पिता की बातें सुन बोलीं कि हे दक्ष! और वीरनी! तुमने हमारा बड़ा तप किया और हमने वरदान देने के अनुसार तुम्हारे घर अवतार लिया तुमको उचित है कि जिस प्रकार तुम मुझको शक्ति जानती हो उसी प्रकार का विश्वास रखना और गर्व न करना इतना कह कन्या का रूप धर संसार की रीति के अनुसार रो उठी यह रोना सुन कुलकी असंख्य स्त्रियां इकट्ठी हुईं और सब बांदियां भी आईं और पुत्री को देख प्रसन्न हुईं उस दिन नगर भर प्रसन्न हुआ और चारों ओर से जय जय का शब्द ऊंचा हुआ और आनन्द के बाजे बजने लगे और वीरनी और दक्षने वेद और कुल के अनुसार सब रीतें कीं और बहुत कुछ कोष दान दिये उस समय हम और विष्णु भी सुर मुनि को साथ लेकर वहां पहुँचे और दक्षकी बिनती के अनुसार

हमने उस कन्या का नाम सती रक्खा इस आनन्द की तीनों लोक में चर्चा हुई दक्षप्रजापति ने पुरुषों का और वीरनी ने स्त्रियों का अति आदर सन्मान किया इसके उपरान्त सब लोग अपने २ घरों को सिधारे और दक्ष स्त्रीसहित सती के प्रेम में ऐसे मग्न हुये कि सब काम भूल गये और सती चन्द्रमा की कलाकी तरह दिन २ बढ़ने लगी सती हर दिन शिवपद गाया करती और सदाशिव का ध्यान करती सती के विचित्र खेल थे कि वह पार्थिव पूजन करती और माता पिता की प्रसन्नताको सर्वोपरि समझती यद्यपि शिवमें अहर्निश ध्यान रहता पर इस बातको प्रकट न करती इसी प्रकार खेल तमाशे में लगी रहती निदान खेलते खेलते कुछ बड़ी हुई तो मुख की कान्ति दूनी हुई जिसको हम क्या वर्णन करसक्ते हैं कि उनके बराबर तीनों लोक में कोई सुन्दर नहीं उनके सर्व अङ्ग सुडौल वस्त्रों से अलंकृत जिनको देख कोटि कोटि काम लज्जित होजावें लक्ष्मी, सरस्वती, मोहनी भी उनकी बराबरी न करके अन्त को हार मान गईं यह दक्ष की कन्या का संक्षेप में वृत्तान्त वर्णन किया गया अब और कथा सुनिये।

ग्यारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक समय सतीने दक्ष के पास एक विचित्र चरित्र किया था उस समय हम और तुम दोनों वहां पहुँचे सती ने हमको और तुमको सोने की चौकी बैठने को देकर दोनों की स्तुति की हमने और तुमने सती की ऐसी सेवा और नम्रता देखकर यह वरदान दिया कि जिसकी हम और विष्णु दोनों सेवा करते हैं जिसकी महिमा अप्रमेय है और जो दूसरी स्त्री न चाहे ऐसा मनुष्य तुम्हारा पति हो यह तो सती से कहा फिर दक्ष से बोले कि हे दक्ष! तुम धन्य हो कि जिसके घर में

आदिशक्ति जगदम्बाने अवतार लिया अब तुमको उचित है कि कन्या का विवाह शिव से कर दो मोह को दूर करो कि कन्या-दान बड़ी बात है ऐसे दान करने से अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है इतना कह हम तुम और मुनि आदि अपने अपने घरों को चले गये और दक्ष प्रसन्न होकर कहने लगा कि अब सती युवा भई और घर से बाहर पग नहीं रखती अब हमैं उचित है कि जिस प्रकार शिव उनको स्वीकार करें वह उपाय करें इस प्रकारके विचारों में समय बहुत बीता और कोई बात दक्ष के मन में स्थित न हुई इस समय में सतीने विचारा कि मैं शिव का तप करके शिवकी शक्ति होजाऊं पर लज्जा से माता पिता की आज्ञा विना इस बात को नहीं करसक्ती थी अन्त को एक दिन उसने अपनी माता से यह मनोरथ प्रकट किया और कहा कि जो आज्ञा हो तो वन में जाकर शिवजी का तप करूं क्योंकि वह तप विना मुझसे विवाह न करेंगे और न विवाह विना तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा उत्तम हो कि तुम पिता से आज्ञा दिला दो यह सुन वीरनी ने दक्ष को बुला लिया और सती के तप का मनोरथ कह सुनाया दक्ष अति प्रसन्न हुये और सतीजी अपनी माता पिता की आज्ञा लेकर अपनी सहेलियों समेत हाटकेशवन में पहुँचीं और वहां कठिन तप करने लगीं और तीनों ऋतुओं में शीत और जल में रहकर आश्विन से व्रत का आरम्भ किया और पूरी शिवजी की पूजा की और कार्त्तिक में प्रभातको स्नान कर शिवपूजन करके रात्रि दिन शिव के चरणों में ध्यान लगाये रहीं और अगहन में प्रभात को स्नानकर सदाशिव का शक्ति समेत पूजन किया और पौष के उजियाले पक्ष में जो नागमन्थ का व्रत प्रसिद्ध है करके रात्रिको जागरण करके बड़ा उत्सव किया और माघ में स्नानकर शिवजी की पूजा की और भीगे

हुये कपड़ों से नदी किनारे तप करती रहीं और रात्रि को सखियों समेत जागरणकर अति प्रसन्न हुईं और फाल्गुन मासकी चौदस को शिवपूजा की और नाना प्रकारके पुष्प चढ़ाये और रात्रि को जागरणकर चारों पहर पूजा की और चैत्रमास में शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को किंशुक अर्थात् टेसू के फूल अर्पण किये और पुष्प मँगाकर उन्हीं से शिव पूजन किया और वैशाखसुदी तीज को शिवपूजा की और शिवके सामने नाना प्रकार के नैवेद्य समर्पण किये सिवाय इसके हर दिन यह नियम था कि प्रभात को तारे देख स्नानकर ध्यान में प्रवृत्त होती जब शुभज्येष्ठ का मास आया तो उस मास के अन्त में व्रत रहकर सहस्रों भटकटैया के फूलों से शिव का पूजन किया और आषाढ़मास जो अति पवित्र है मासभर व्रत रखकर नाना प्रकार के पुष्पों से शिवपूजन किया और श्रावण मास की अष्टमी को वस्त्रादिक दान किये और भादों के कृष्णपक्ष की काम तिथि में अच्छे २ फूल फलों से अच्छी तरह शिवपूजा की और चतुर्दशी को भी शिवपूजन यथाशक्ति किया इसी प्रकार सती का नन्दाव्रत पूर्ण हुआ और उसके पूर्ण होने से सती अति प्रसन्न हुई और लोगों को बहुत दान दिया और वेद के अनुसार उत्तम २ वस्तु संग्रहकर शिवपूजन यथोचित किया और ब्राह्मणों को शिवका रूप जान उनको भी पूजा इसी प्रेम में मग्न होगईं फिर योगधारण से तप किया और श्वास चढ़ाकर जल में बैठ रही उस समय हम और विष्णु आये और देखा कि सती सिद्धों और अमरगणों की तरह बैठी है और वहां के सम्पूर्ण जीवों में कुछ वैरभाव नहीं है यहां तक कि सिंह और गौ एक साथ रहते हैं और सांप मोरों की पीठों को अतिप्रीति से खुजला रहे हैं और परस्पर

लिपट रहे हैं और घोड़ा और भैंसा परस्पर लीला कररहे हैं और चूहा और बिल्ली एकही जगह पर बैठे हैं इसी प्रकार सब जीवधारी शत्रुता छोड़ प्रीतिपूर्वक क्रीड़ा करते हैं ऐसी दशा देख हम और विष्णुजी सती की स्तुति करने लगे फिर कैलास पर्वत की ओर यह कहते हुये चले कि सती शिवजी को अङ्गीकार करें ।

बारहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हम, विष्णु, देवता, मुनि, नाग, सिद्ध सबने शिवजी के निकट जाकर देखा कि शिवशंकर शान्तिस्वरूप विराजमान हैं तब हम स्तुति करने लगे और विनती की कि हे महाराज ! जब हमको आपने उपजाया था तब प्रतिज्ञा की थी कि हम तुम्हारे उपकार के लिये अवतार धारण करेंगे और रुद्र हमारा नाम होगा सो ऐसाही हुआ कि आपने अवतार लिया अब हम पर आप कृपा कीजिये यह कह विष्णु और हम सब चुप होगये यह सुन सदाशिव बोले कि तुम दोनों मुझे अतिप्रिय हो तुम किसलिये मुनियों समेत आये ठीक ठीक कह दो यह वचन सुनकर हमने समझा कि अवश्य सिद्धि होगी विष्णु और हम दोनों ने हाथ जोड़ विनय की कि पहिले आपने कहा था कि हम विवाह करके लोक के कार्य सिद्ध करेंगे सो अब वह समय आया है अब अपना वचन पालन कीजिये और जिस प्रकार कि धर्म की वृद्धि हो वही कीजिये यह सुन हँसकर सदाशिव बोले कि हम योगी हैं हमसे और विवाह भोग से क्या वास्ता हमारा शरीर अवधूत और हमारी सामग्री भी अशुभ हमको इसी योग में बड़ा आनन्द है और इसी दशा में हम बड़े प्रसन्न हैं देखो लोक में विवाह से अधिक आनन्द नहीं मानते पर वह बड़ा कारागृह है जैसा कि

वेद कहते हैं और जो बात मुझे नहीं भाती उसीको तुम कराते हो अच्छा हम अपना वचन पूरा करेंगे अब तो विवाह करेंगे पर इतनी बात है कि जैसी स्त्री हम कहैं उसी प्रकार की स्त्री तुमको ढूँढ़नी होगी अर्थात् वह ऐसी ही हो कि हमारा तेज सहसके और गर्व दूर करे और महासुन्दरी कीर्तियुक्त हो जब हम योग करें वह योगिनी होजावे और मैथुन के समय रति के समान हो और फिर दूसरी बात यह है कि हमारी बातको माने और सेवा करे यह सुन हम और विष्णु ने हाथ जोड़ विनय की कि आपके योग्य दक्ष प्रजापति की पुत्री है जो आपका महाकठिन तप कर रही है आप वहां चलकर उसको वरदान दे आइये और उससे विवाह कीजिये यह कह हम चुप होरहे और सदाशिव हँसकर कहने लगे कि 'तथास्तु' यह सुनकर देवता और मुनि आदि जय २ कह उठे फिर सब बिदा हुये और शिव अपने गणों को साथ लिये हुये सती के वरदान देनेको उसी स्वरूप से जिस रूपका सती ध्यान करती थीं सतीके पास जा पहुँचे उस समय सती के मन से वह स्वरूप जिसका सती ध्यान कररही थीं गुप्त होगया सती ने चिन्तित होकर जो आंखों को खोला तो वह स्वरूप सामने दिखाई दिया सती ने प्रणाम किया और मनमें ऐसे स्वरूप को ध्यान धर लज्जा के मारे शिर नीचे करलिया और आनन्द में मग्न हो चुप होरहीं और कुछ न कहा उस समय जो आनन्द सती को हुआ उसको हम कोटि जिह्वा से भी वर्णन नहीं कर सकते निदान शिवजी बोले हे दक्ष प्रजापति की पुत्री ! तुम्हारे तपसे हम प्रसन्न हुये जो इच्छा हो वह मांगो यद्यपि शिव मनोरथ जानते थे पर सती का वचन सुनने को आज्ञा दी पर तौ भी सती ने कुछ न कहा शिवजी को यह भाव अच्छा मालूम हुआ और कहा मांगो २

देर न करो तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा इतना कहकर ब्रह्मा बोले कि हे नारद ! जब इसतरह से शिवजी ने बारम्बार कहा तब सती बोलीं कि हे महाराज ! आप क्या नहीं जानते आपका वास तो घट २ में है आप हमारे मुखसे अपनी प्रीति सुना चाहते हैं और संसारी जीवों के समान पूछते हैं सो हमारा मनोरथ सुनिये कि आप हमारे पति हों हमारे साथ विवाह करके हमको अपने घर की दासी बनाइये यह सती का वचन सुन शिव बोले कि 'तथास्तु' और कृपा दृष्टि से सती की ओर देखा और अन्तर्द्धान होगये।

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सती ऐसा वरदान शिवसे पाकर अति प्रसन्नतापूर्वक अपने घरको सिधारी और सतीकी सखियों ने सम्पूर्ण वृत्तान्त सती का कह सुनाया जिसे सुन उनके माता पिता और सब नगरवासी अति प्रसन्न हुये और दक्षने मङ्गनों को बहुतसा दान दिया और नाना प्रकारके बाजे बजनेलगे इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो ! जब नारदने ब्रह्मा से यह कथा सुनी तो बोले कि हे ब्रह्माजी ! यह चरित्र सुन हमारे सर्वदुःख दूर होगये और आनन्द प्राप्त हुआ अब जो कुछ और इसके आगे चरित्र हो वह सब कहिये आपकी बराबर शिवपूजकों में संसार भरमें कोई नहीं ब्रह्मा बोले कि जब हमको यह वृत्तान्त मालूम हुआ तो मैं प्रसन्न होकर शिवजी की सेवा में गया और हाथ जोड़ बहुत स्तुतिकर विनय की कि मुझे क्या आज्ञा होती है शिव बोले कि सतीने हमारा बड़ा तप किया और हमने उसको वरदान दिया सो तुम जाकर दक्ष प्रजापति से कहो कि वह विवाह की तय्यारी करे हम सती को अङ्गीकार करेंगे यह कह मुझे विदा किया मैंने दक्ष के पास

आकर शिवकी आज्ञा सुनाई दक्ष उत्तम लग्न विचारकर विवाह की सामग्री जोड़ने लगे और रत्नों समेत लग्न शिवके पास भेजा और सबको समाचार कहला भेजा गण अतिप्रसन्न होकर इधर उधर दौड़ने लगे और चारों ओर से पुष्पों की वर्षा हुई बाजे बजने लगे और दोनों ओर से बड़ी तय्यारी हुई शिव बरात साजकर दक्ष प्रजापति के नगर की ओर चले जब बरात दक्ष प्रजापति के नगर के निकट पहुँची तब शिवने सप्तऋषि को दक्ष के पास भेजा दक्ष बरात को नगर के निकट जानकर अगवानी के लिये चले भेंटकर हाथ जोड़े हुये अपने मन्दिर ले चले उस समय शिवजी, हम, विष्णु, आठो वसु, ग्यारह रुद्र, द्वादश सूर्य, सिद्ध, भूत, प्रेत, गन्धर्व, चारों गुह्य, किन्नर, विद्याधर, देवता, मुनि और असुरों समेत दक्ष के द्वारपर जा पहुँचे तब चारों ओरसे जय २ शब्द होनेलगा और वेद और कुलके अनुसार सब रीतें हुईं गान होने लगा दक्षने ब्राह्मणों को बहुत सा दान देकर बरात के ठहरने को अति उत्तम स्थान दिया जहां सब स्थित हुये और दक्षने हमको बुलाकर कहा कि वेदके अनुसार विवाह करो जिससे हमारी पुत्री शुभ और पतिकी प्यारी हो और उसके बहुत सन्तान हों फिर सब प्रकारके उत्तम भोजन बरातियों को खिलाये उसमें चारों प्रकार से षड्रसों के स्वाद थे और बराती सब प्रकार के व्यङ्ग सुनकर अतिप्रसन्न हुये वहां उस समय कोई खेदवान् न था भला जहां जगन्माता हो वहां किस वस्तु की न्यूनता होसक्ती है भोजनके उपरान्त पान बांटे गये और सब शिवस्तुति करने लगे फिर लग्न ठहराकर शिव के आगमन के लिये कहला भेजा शिव तुरन्त आये और दक्ष शिवजी को अन्दर लेगये और प्रसन्न होकर पहिले शिव के चरण आप धोये और सोने की चौकी

पर शिव को बैठाया और फिर इसी प्रकार हमको और विष्णु को भी चरण धोकर सुवर्ण की बैठक दी और मुनियों के भी चरण पखारे और जो मनुष्य जिस स्थान के योग्य था उसको शीलतापूर्वक उस मनुष्य की प्रतिष्ठा के अनुकूल स्थान दिया और हमने जो समयोचित था वह सब किया और सती को बुलाया जिसको देख सबोंने प्रणाम किया और विष्णुने और हमने दक्ष को कन्यादान का समय बताया तो उस समय दक्ष ने कुश और जल और लड़की का हाथ शिवको दिया हे नारद! पहिला यही लोक में कन्यादान हुआ और यही रीति संसार में फैल गई।

चौदहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब शिव ने सती का हाथ पकड़ा तब सर्वमुनि प्रसन्न हो शिव सती का जय २ शब्द कहने लगे फूलों की वर्षा हुई और नाना प्रकार के बाजे बजने लगे दक्ष ने दहेज में बहुत उत्तम बहुमूल्य वस्तु रत्नादिक दिये जिनका विस्तार बहुत है और रीतों के पूरे होने के उपरान्त हमने हवन किया और दोनों का गठबन्धन होकर भांवरी होने लगीं उस समय एक महाभयानक चरित्र हुआ अर्थात् जो कि मेरी इच्छा शिव के वश करने की थी तो मैं आप ही उस रोग में ग्रस्त होगया अर्थात् भांवरी फिरते हुये सती का चरण कपड़े से बाहर निकलगया और मेरी काममयी दृष्टि उस पर पड़ी और मैं मोहित होकर बुद्धिहीन होगया और काम के जाल में फँसकर उसके मोह में मग्न होगया और ऐसी दशा में सती के रूप अनूप के देखने की अभिलाषा बहुत ही उपजी और मैंने यह उपाय किया कि गीली लकड़ी आग में डालदी जिससे बड़ा धुवां उठा और शिव की आंखों में पहुँच ऐसे आंसू बहने लगे कि

शिव दोनों हाथों से वह आंसू दूर करने लगे तो जब शिव आंसू पोंछने में लगे तो मैंने सती के मुख से घूंघट उठाकर उनका स्वरूप देखा और कामदेव के तीक्ष्ण वेग से दुःखित हो सब धर्म कर्म को भुलाया उस समय मेरा वीर्य धरती पर गिरपड़ा हमने उसको किसी प्रकार से ऐसा छिपाया कि किसी पर यह बात प्रकट न हुई पर शिव ने दिव्य दृष्टि से इस बातको जाना और मुझ पर अति कुपित हो धिक्कार २ कहने लगे और कहा तुमने यह महानिन्द्य कर्म धर्म छोड़ क्यों किया तुम बड़े कामी हो तुम पशुओं की भांति वेद की रीतों को भूल गये और हम से छिपाया हम से तीनों लोकों में कौनसी बात छिपी है या छिपी रहसक्ती है यह कह बड़े क्रोध से त्रिशूल हाथ में लिया हे नारद! मैं उस समय थर थर कांपने लगा और बड़ा आश्चर्य किया तब सब लोग मेरे मारे जाने का निश्चयकर शिव की स्तुति करने लगे पर शिव का क्रोध न मिटा और दक्ष प्रजापति हाथ उठा शिव शिव कहने लगे और अति स्तुतिकर मेरे मारने की मनाही की और बोले कि आप रङ्ग में भङ्ग न करो शिव बोले हे दक्ष! अब कुछ न कहो मैं ब्रह्मा को अवश्य मारडालूंगा इसने सती को पाप दृष्टि से देखा है और वेदमार्ग के धर्म अधर्म को भुलादिया और वेद में लिखा है ऐसे मनुष्यों को अवश्य मारडालना चाहिये ऐसे क्रोध के वचन सुन शिव के कोप से सर्व सभा कांप उठी तब विष्णुने बहुत स्तुति करने के उपरान्त कहा कि तुम अप्रमेय हो तुम्हारा आदि अन्त कोई नहीं जानता हम और ब्रह्मा तुम से उपजे तुमहीं प्रलय करते हो आप अपने क्रोध को शान्त करें और मुझे अपना सेवक जान मेरी विनती स्वीकार करें अर्थात् ब्रह्मा का वध न करें क्योंकि आपने उनको सृष्टि रचने के निमित्त उपजाया और कौन

है जो सृष्टि उपजावेगा और प्रकट है कि सृष्टि विना सब लीला निष्फल है फिर आपही ने तो ब्रह्माजी को उत्पन्न किया उनका वध न कीजिये शिवने फिर बड़े क्रोधसे कहा कि नहीं हम ब्रह्मा को अवश्य मारडालेंगे और हम आप सृष्टि उपजावेंगे अथवा दूसरा ब्रह्मा उपजाकर सब लोगों पर इस बातको प्रकटकर देंगे हमको अब न रोंको हमारा क्रोध वृथा नहीं जाता यह कह अपना सम्पूर्ण शरीर प्रज्वलित अग्नि समान करलिया देवता और मुनि आदि कोई ऐसा न था जो वह स्वरूप देखसक्ता मैं तो शिवरूपही होगया और दक्ष को भी अति खेदसे सब आनन्द विस्मरण होगया और महादुःखी हो शिवके चरण-पङ्कजों का ध्यान करते हुये शिवसे बहुत कुछ कहा और विष्णु ने मुझे शिवके चरणों के नीचे डाल दिया और मुझसे बहुत स्तुति पढ़वाई और आप भी की और कहा कि हम और ब्रह्मा दोनों आपके सेवक हैं कृपादृष्टि से अवलोकन कीजिये ऐसे आनन्द उत्सव में खेद उपजता है सिवाय आपके और कौन है जिसकी शरण में जावें केवल आपही हमारी रक्षा करनेवाले हैं जो उचित हो वह कीजिये हर प्रकारसे आपकी शरणमें हैं सो ब्रह्मा के दोनों हाथ पकड़ अभय कीजिये यह कह हम दोनों शिवके चरणोंपर गिरपड़े और दक्षभी महामलिन दीन त्राहि २ कहने लगे और शिवजीने सतीको अतिदुःखी जान अति कृपासे मेरे शिरपर हाथ रखदिया और निर्भय करके अनुग्रह किया हम और विष्णु अतिप्रसन्न हुये और दक्ष और सर्वसभासद् भी अति आनन्द में होगये उस आनन्द में मैंने महाराजकी कई प्रकारकी स्तुति की और कहा कि आपने मुझको नरककी अग्निसे बचा लिया और पापरूपी समुद्रमें डूबने से रक्षा की और स्तुति के उपरान्त मैंने विनय की कि आप वह

उपाय बताइये जिससे मेरा यह महापाप दूर होजावे शिव बोले कि तुम स्त्रीसहित तप करो यही तुम्हारे पाप का बदला है तुम्हारा नाम रुद्रशिरा होगा और जो तुम्हारा मनोरथ है उसे पावोगे और जो कि तुमने सुरपति होकर नरकर्म किये इसलिये तुम मनुष्य होकर लज्जा उठाओगे तब तुम्हारा पाप दूर हो जावेगा यह बात सुन हम और दक्ष अति प्रसन्न हुये ।

पन्द्रहवां अध्याय ।

इतना सुन नारदने पूछा कि हे ब्रह्मन् ! जब शिवने क्रोध शान्त करलिया और प्रसन्न होगये तो इसके उपरान्त क्या हुआ ब्रह्मा बोले कि जब मुझसे प्रसन्न हुये और मेरा वीर्य पृथ्वी पर चमकता हुआ देखा तो मुझसे कहने लगे कि हे ब्रह्मन् ! यह वीर्य तेजरूपसे दृष्टि आता है इसको नष्ट न करना चाहिये और जब तुम्हारा वीर्य पृथ्वी पर गिरा था तब मेरे नेत्रों से अश्रु गिरे थे इससे चार मेघ इस वीर्य से प्रकट होंगे इतना कहतेही उसी समय चार मेघ उत्पन्न होगये और आकाशमार्ग में छागये और गर्ज गर्ज कर वर्षने लगे और शिवके भयसे धीरे २ वर्षते रहे ऐसी वर्षा देख शिव और सब सभाके मनुष्य अति प्रसन्न हुये सबका दुःख दूर होकर फिर आनन्द छागया फिर हमने शिवकी आज्ञा से जो विवाह की रीतें रहगई थीं पूरी कीं और फिर वही बाजे बजनेलगे और लोग हर्ष मनाने लगे दक्षने बहुत धन दान किया उस समय हम सबोंने शिव की बड़ी स्तुति की जिस तरह कि शब्द और अर्थ में अन्तर नहीं उसी तरह आप और शक्ति एक हैं आपकी अप्रमेय महिमा है उसको कोई नहीं जानता पर हां आपकी कृपासे मूर्ख मनुष्य भी जान सक्ता है जैसा कि किरात, बनिज, कुकिट, गज, गङ्गाआदि इस बात के साक्षी हैं आपके

चरणारविन्द के अनुग्रह से इस संसार में किसने क्या नहीं पाया आप लोकके पिता और शक्ति जगन्माता हैं यह स्तुति सुन शिव शक्ति अर्थात् सतीसमेत कैलासपर्वत को चले उस समय शिवके शिरपर छत्र था और दोनों ओरसे स्तुति होती थी शिवने दक्षादि सबको मार्ग से बिदा किया और आप शक्ति और गणों सहित कैलाशपर्वत में सुशोभित हुये चारों ओर से जय २ शब्द सुनाई देने लगा और शुभलग्न में दोनों शिव और सतीने मन्दिर में प्रवेश किया और हम और विष्णु ने शिवको सती समेत एकही सिंहासन पर बैठाया उस समय नाच और गाने की सभा हुई जिसको जिसकी इच्छा थी शिवने सबको वही दिया और हर प्रकार के भोजन सबको खिलवाये और सबको सब कुछ देकर बिदा किया सो सब शिवजी का यश गाते अपने घरों में पहुँचे और हम विष्णु भी शिवकी आज्ञा पाय अपने लोक को गये हे नारद! हमने कौन कौन उपाय शिवके विवाहके लिये न किये पर कुछ न चली जब सतीने तप किया तब शिव ने प्रसन्न हो अङ्गीकार किया यह शङ्कर का चरित्र सुनकर लोक मुक्ति पाते हैं और शिव विवाह होने से हमारा दुःख दूर हो गया इस प्रकार सती के साथ शिव विवाह करके कैलास में सुशोभित हुये और नाना प्रकार की कथा सृष्टि के उपकार के लिये कहते थे जो मनुष्य शिव और सतीके विवाह का पाठ करेगा वह मुक्तिपदवी पावेगा और संसार में भी आनन्द उठावेगा।

सोलहवां अध्याय।

इतना सुनकर शौनकादि मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी! जब नारद ने ब्रह्मा से सती का विवाह सुना तो फिर क्या पूछा वह सुनाइये यह सुन सूतपौराणीक बोले कि जब देव, मुनि,

नारद यह सर्व वृत्तान्त सुन चुके तो ब्रह्मा से पूछा कि विवाह के उपरान्त जो सती शिव ने चरित्र किये वह कहिये ब्रह्मा बोले कि एक दिन सती भी शिवको एकान्त में बैठे देखकर आप भी गई और प्रणाम करने के उपरान्त बहुत स्तुति की और कहा कि आपने तीनों लोक के उपकार के लिये अवतार लिया है मेरी क्या उज्ज्वल भाग्य है कि आपकी स्त्री हुई मैं आपकी शरण में हूं अब मुझे एक इच्छा है जिसको मैंने आजतक नहीं कहा इस समय आपको अपने ऊपर प्रसन्न देख कहती हूं कि वर्षों तक आनन्द उठाया और परमतत्त्व का कभी विचार न किया और विहारादि में प्रसन्न रही अब मेरे मन में वैराग्य उपजा है और मैं परमतत्त्व की इच्छा रखती हूं सो आप मुझे वही मार्ग बतावें और प्रकार से ब्रह्म ज्ञान की युक्ति बतावें अर्थात् क्या करने से मुक्ति प्राप्त होती और परमपद मिलता है आपकी बराबर तीनों लोक में ज्ञानी कौन है आपही परब्रह्म अनादि हैं आपही ने वेदों को उपजाया और सम्पूर्ण विद्यानिधान और तीनों लोक के परमात्मा विष्णु और ब्रह्मा को पदवी देनेवाले हैं जैसे शेषादि अहर्निश इस बात का वर्णन करते हैं यह सती का प्रश्न सुन सदाशिव ने कहा कि सबसे उत्तम वस्तु ज्ञान है जहां दूसरे पदार्थ की गम्य नहीं वह बहुत ही अलभ्य है और वही मेरा स्वरूप ब्रह्म है और उसी ज्ञान की स्त्री क्या है हमारी तपस्या जिसको करके लोग पवित्र हो जाते हैं और भक्ति और ज्ञान में कुछ अन्तर नहीं जो मनुष्य इन दोनों में अन्तर जानते हैं वही दुःख पाते हैं और जो भक्ति के विरुद्ध वाद विवाद के लिये ज्ञान है वह उलटा उसे दुःख देता है इस पर अत्रिमुनि को निश्चय है जो संसार भर में अद्वितीय विद्वान् हैं सो भक्ति को परमतत्त्व देनेवाली समझो और वह मुझे अतिप्रिय है हे देवि!

भक्ति उत्तम वस्तु है उसको अच्छे लोग अङ्गीकार करके अच्छे मार्ग में आते हैं भक्ति के बराबर कोई मार्ग सीधा और निर्भय नहीं क्योंकि उससे परब्रह्म मिलता है इस रीति को पिपीलिका कहते हैं क्योंकि बे परिश्रम किसी वस्तु के आश्रय वृक्ष पर चढ़ फल मिलता है और जो निर्गुण का मार्ग है वह भीषम प्रसिद्ध है क्योंकि किसी वस्तु के आधार विना अति परिश्रम और दुःख के उपरान्त फल प्राप्त होता है भक्ति मनको प्रसन्न करती है और मैं आप भी भक्ति के अधीन हूं जो नीच मनुष्य भी मेरी भक्ति करे वह मेरी समझ में सबसे बड़े और भाई के सदृश हैं जो मनुष्य हमारी भक्ति करता है उसको संसार में आनन्द और परलोक में मुक्ति देता हूं मुझे केवल भक्ति प्रिय है कुलपांति से कुछ प्रयोजन नहीं चाहे चाण्डाल भी हो पर मेरी भक्ति करे तो उसके बराबर मुझे कुलीन मनुष्य प्रिय नहीं है यद्यपि सर्वप्रकार से भक्ति मुझे चारोंयुगों में प्रिय है परन्तु कलियुग में तो केवल मुझको भक्ति अतिही प्रिय है और प्रेम से मैं नीचों के घरों में भी जाता हूं मनुष्य चाहे कितनाही शुद्ध आचरणी हो पर वह भक्ति विना मेरी समझ में उत्तम नहीं हम अपने भक्त के सदा सहायक हैं हमको भक्ति के बराबर कोई प्रिय नहीं और हम भक्तों के लिये अच्छे चरित्र करते हैं हमने अपने भक्त के लिये कामदेव को जलाया जोकि सबसे बड़ी पदवी भक्ति की है इसलिये सब छोड़ भक्ति करो।

सत्रहवां अध्याय

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसी भक्ति की स्तुति सुन सती अति प्रसन्न हुई और दोनों हाथ जोड़ सदाशिव से कहा कि आपने मेरे ऊपर अनुग्रह करके भक्तिकी प्रशंसा वर्णनकी पर मेरी इच्छा है कि आप उसके सम्पूर्ण खण्ड शिरसे पांव तक वर्णन करें

शिवने हँसकर कहा कि हे सती ! हम भक्ति का सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करते हैं जिसको सुन प्रेम उपजता है और तीनों लोक के दुःख शोक दूर होजाते हैं जिस भक्ति को परम तत्त्व वर्णन करके सबसे उत्तम वर्णन किया है वह दो प्रकारकी है पहिली अगुणा दूसरी सगुणा सो उनके भी दो २ प्रकार हैं एक स्वाभाविक जो अपनी प्रकृति से उपजती है दूसरी वैदेही जो प्रारब्ध से प्राप्त होती है और जिसमें तीनों गुण पाये जावें उसको वेद सगुणा भक्ति कहते हैं और जिसमें कोई गुण न हो वह अगुणा भक्ति है उसके दो भाग हैं जिसमें भक्त बड़ी युक्ति से मन लगाते हैं इन दोनों खण्डों के नव २ भाग हैं जब सावधानता से उसको धारण किया जाता है तब पूर्ण होती है वह यह हैं अपने स्वामी का यश सुनना, कीर्तन अर्थात् उसको कहना, स्मरण अर्थात् याद करना, सेवन टहल करना, दासत्व दास्यभाव से पूजन करना, वन्दन प्रणाम करना, सख्य मित्रों के सदृश रहना, आत्मसमर्पण अपने को अर्पण कर देना यही भक्ति के नवभाग मुनि भी कहते हैं और इस नवधा भक्ति के सिवाय और बहुत प्रकार हैं जिनको धारण करके अतिप्रसन्नता होती है जैसे बरगद, बेल, तुलसी और गङ्गा आदिकी सेवा और अतिथियों की सेवा ब्राह्मणों की अधीनता और तीर्थों की स्थिति आदि अब हम अलग नवों प्रकारों के अर्थ वर्णन करते हैं अर्थात् जब मन वच कर्म से मेरी बड़ाई सुन उसकी बड़ाई का विचार करे और मनको दृढ़करे इसका नाम श्रवण है और कुल द्रव्य व्यवहार और मुख्य अपने गर्व को छोड़कर जब हमारी कथा को सुने और जिस जगह पर कथा होती है उसको सजाकर हरदिन शुद्ध करता रहे और उस शास्त्र की अच्छी तरह से पूजाकर नानाप्रकार की वस्तु उस पर चढ़ावे और

इसीतरह से उसके पढ़नेवाले की पूजा करके अच्छे वस्त्र द्रव्य पदार्थ फल रत्न आदि दे स्तुति करे तब फल मिलता है यह श्रवण की प्रशंसा है अब कीर्तन का व्याख्यान सुनिये कि अपने मनको निर्लोभ करके हमारे जन्म और कर्म और गुण को देखे और उनको ऊंचे स्वर से वर्णन करे इसका नाम कीर्तन है और जब कि कर्म काल और काम के भय को दूर करके और संसार की लज्जा और इच्छा को छोड़कर मन लगाय हमारा गुण गावे ऐसा कीर्तन करने से अच्छा फल मिलता है और स्मरण के यह अर्थ हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि जड़ चैतन्य जीवित निर्जीव चलनेवाले और एकही जगह पर स्थित रहनेवालों और सबमें शिवको देखे और मुझे सर्वात्मा समझकर निर्भय रहाकरे ऐसे स्मरण से अति आनन्द मिलता है और सेवन के यह अर्थ हैं कि प्रातःकाल उठ पहिले अपने गुरुका ध्यान करे और रीति के अनुसार शौच दँतवन और नित्यनैमित्तिक आदि से सुचित्त हो रेशमी कपड़े पहिन माथे पर त्रिपुण्ड्र लगावे और रुद्राक्ष की माला पहिने धरती पवित्रकर उत्तम बैठने की जगह बनावे और मनरूपी कमल में अपने स्वामी के स्वरूप का ध्यान प्रेम से लगावे और पूजन की अच्छी सामग्री धुलाने के पीछे अपने पास रक्खे और क्रमपूर्वक पूजाकरे और षोड़शोपचार से पूजाकरे और भोजन करावे और आरती करके दण्डवत् करे और अच्छे सुगन्धित फूल बिछाकर उसके ऊपर अपने स्वामी को सुलावे और अहर्निश अपने स्वामी का गुण कहकर बिता देवे सन्ध्यासमय फिर अपने स्वामी को जगावे और सन्ध्या आदिकर आरती करे और नाम और स्तुति वर्णनकर कुछ रात्रिके बीतने पर गाने बजाने की सामां तय्यार करे और आनन्दपूर्वक बाजे बजवाकर

भोग लगावे और फिर दूसरी बेर आरती करे फिर उत्तम शय्या बिछवाय स्वामी को उसपर सुलावे ऐसी सेवा करनेवाला भक्त लोक परलोक का आनन्द पाता है और तीनों लोक उसके चरणों में प्रणाम करते हैं और वह कभी नरक में नहीं जाता अब अर्चन का वर्णन करते हैं अर्थात् बेलपत्र और फूल आदि और चन्दनको पवित्रता और विचार के साथ लोगों से पूछकर लगावे और धर्म की रीति से जो द्रव्य उपार्जन किया हो उससे पूजा के बर्तन और सामग्री बनावे और अपने स्वामी को षोड़शोपचार से निष्काम पूजन करे और समय और नियम में विरुद्धता होने न पावे इसका नाम अर्चन है और जो हमारे मन्दिर में फुलवाड़ी लगावे अथवा मेरे लिङ्गकी स्थापना करे और हरदिन मेरे लिये उत्सव करे यह सब अर्चन के अङ्ग हैं इसी प्रकार जो हमारा अर्चन करता है वह दोनों लोक में सिद्धि पाता है अब वन्दन का व्याख्यान सुनिये मन्त्र जाप करे तो बेर बेर उसका ध्यान करे मनको एकाग्र करके प्रणाम करे यह वन्दन है और जो वन्दना का फल है वह तीनों लोक में प्रसिद्ध है इसी के प्रताप से सनकादिक निर्भय रहते हैं इस वन्दन के करने से दोनों लोक में आनन्द मिलता है और अन्त को हमारे लोक में उसे स्थान मिलता है अब दास्यभाव को वर्णन करते हैं कि इन्द्रियों को वश करके मुझे प्रसन्न करता रहे और हमारी प्रसन्नता से मन और शरीर का पालन करे और काम वासना को जड़से उखाड़ डाले तो दोनों लोकका सुख पावे अब सख्य के अर्थ सुनिये जिस मनुष्यके विचार में दुःख सुख बुरा भला राग द्वेष अथवा जय पराजय लाभ हानि बराबर हो और इस बात पर पूरा विश्वास रखता हो कि जो कुछ परब्रह्म हमारी भाग्य से करता है वह सब हमारी भलाई के लिये है ऐसे

निश्चयवाले को सख्य कहते हैं ऐसे मनुष्य को तीनों लोक में कोई वस्तु कठिन नहीं अब हम आत्मसमर्पण का वर्णन करते हैं अर्थात् जो मनुष्य अपने शरीर कोष सेवक पशु और धनादि सम्पूर्ण वस्तुओं को छोड़े और उनकी प्रीति दूरकर मेरे लिये संकल्प करदे और फिर कोई युक्ति उनके लिये न करे और उनकी प्रीति और चिन्तना न करे इसको आत्म-समर्पण कहते हैं इससे गर्व दूर हो जाता है पर जबतक कि इसको मन जिह्वा और शरीर से नहीं करते तबतक वह अपने स्वामी को नहीं पाता ऐसे मनुष्य को सब सुगम है उसको कुछ वस्तु अलभ्य नहीं मैं उसकी रक्षा रात्रि दिवस करता हूं और उसके निकट रहा करता हूं भक्ति के अङ्ग केवल यही नव हैं जो वर्णन किये गये अब हम भक्ति के उपअङ्ग कहते हैं वह दश हैं उनमें से हरएक दुःख का दूर करनेवाला है अर्थात् बड़ और पीपल की पूजा सदा करनी चाहिये और उनको जल से सींचे उनका अनादर करना मानो मेरा मान घटाना है उसमें दाहिनी ओर से परिक्रमा करनी चाहिये इन दोनों वृक्षों की सेवा से निर्भय परमपद मिलता है दूसरे बिल्व वृक्षकी सेवा करो और उसको हमारा शरीर समझो उसके पूजन से कुछ दुःख नहीं रहता उसको जल से सिंचनकर पूजन करना और आरती उतारना उचित है जो ऐसा करते हैं वह हमारी पूजा का फल पाते हैं और रेवा अर्थात् नर्मदा आदि और सुरसरी अर्थात् गङ्गाकापूजन तीसरा उपाङ्ग है उसमें पवित्रता पूर्वक स्नान करने में बड़ा पुण्य है जैसा कि व्यास आदि ने कहा है चौथे गुरुकी सेवा जिसकी बराबर कुछ नहीं और वेद उसकी स्तुति करते हैं पांचवें हमारे व्रत चौदस आदि जितने हैं उनमें हमारा पूजनकर व्रत रखना रात्रि भर जागरण करना इनसे जो पुण्य प्राप्त होता है वह वेद

से प्रकट है और शिवरात्रि मास के दोनों प्रदोष और सब महीनों की अष्टमी यह व्रत हमारी बड़ी महिमा रखते हैं और उत्तम गति देते हैं जिनको करके व्याध किरात आदि ने कैसा आनन्द पाया छठवें शैवाराधन अर्थात् शैवलोगों से सत्संग करना इस तरह पर कि जब किसी शिवपूजक को देखे कि आता है उसका आदर करे और उसको देखकर अपने सब घराने समेत प्रसन्न होकर हर प्रकार उसकी सेवा पर तय्यार रहे और उसकी पूजाकर बहुत अच्छा स्वादिष्ठ भोजन करावे यह शैवाराधन अति प्रसन्नता देनेवाला है उसके प्रताप से बहुधा तीनों लोक के राजा हुये सातवें अतिथिमान अर्थात् जो कोई द्वार पर आवे भिक्षा मांगने के लिये तो उसको यथाशक्ति कुछ देना चाहिये इसमें लोक परलोक दोनों बनते हैं और यह अन्तकाल तक भुलादेने या छोड़ने के योग्य नहीं आठवें ब्राह्मण का मान जिसको करके बहुत मनुष्यों ने परमपद पाया है हे देवि ! ब्राह्मण मेरा तन है उसको हमारे बराबर समझ पूजन करना चाहिये नवें तीर्थ और क्षेत्र आदि में अटन करना सम्पूर्ण तीर्थों में से सात पुरियों को बहुत बड़ा वर्णन किया है और उसमें से आनन्दवन अर्थात् श्रीकाशीजी की बड़ाई को सर्वोपरि रक्खा है तो चाहिये कि नियमित रीति के अनुसार प्रीतिपूर्वक परिक्रमा करे और जैसा कि धर्मशास्त्र ने कहा है उसी के अनुसार सब बातें करनी चाहिये और इन सब तीर्थों का फल जो काशी में मरता है उसको प्राप्त होता है यही बात वेद भी कहते हैं दशवें अहिंसा बड़ा धर्म है अर्थात् किसी जीवको दुःख न पहुँचाना जिसने हिंसा को छोड़ा मानो संसार के सर्व धर्म कर चुका जीवधारी पर दयाभाव रखना बड़ा धर्म है यह अहिंसा अतिप्रसन्नता देनेवाली है और हे देवि ! जिसके मन में तुम स्थित होती

हो वह मुझे अतिप्रिय है और कलियुग में लोग ज्ञान वैराग्य को कम चाहेंगे उस युग में केवल भक्ति को मुख्य समझना चाहिये हे पार्वति ! जो तुमने पूछा हमने उसका उत्तर दिया जो इसको पढ़ेगा अथवा सुनेगा उसको बड़े आनन्द का पद मिलेगा।

अठारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! ऐसी बातें सदाशिव की सुनकर सती ने अपने को बड़ी भाग्यवती समझा और प्रीतिपूर्वक भक्ति के अङ्ग पूछे और उपासना के प्रकार जिसमें पांच अङ्ग हैं सब पूछे तो शिवजी ने तन्त्रशास्त्र को स्तोत्र कवच सहस्रनाम पटल और पद्धति समेत और नाना प्रकार के यन्त्र मन्त्र चेटक आदि गुणों समेत वर्णन किये और प्रेम के बढ़ानेवाली कथायें और आनन्द उपजानेवाले वृत्तान्त और अपने भक्तों की महिमा जिन से भक्ति में वृद्धि होती है और बहुत धर्म जैसे नृपधर्म अर्थात् राजनीति स्त्रीधर्म वर्णाश्रम और पुत्रधर्म संकरधर्म आदि वर्णन किये और सामुद्रिक ज्योतिषादि सब सती को सुनाया इसी प्रकार से शिव और सती कैलास में रहते रहे और बहुत वर्ष पर्यन्त विहार करते रहे तो सती ने अपने पिता के यज्ञ में शिवका निरादर देख क्रोध से शरीर को प्राण रहित कर दिया और फिर वही सती हिमाचल के घर उपजकर शिवसेवा में पहुँचीं इतना सुनकर नारद बोले कि हे ब्रह्मा ! यह कथा सुन मुझे बड़ा संशय उपजा क्योंकि सदाशिव जो सर्वसृष्टि के स्वामी हैं और किसी के शत्रु नहीं उनके साथ दक्ष ने इस तरह से वैर किया यह उसकी बुद्धि क्योंकर भ्रष्ट होगई और शिवने अपनी शक्ति को क्यों त्यागा सती ने शिव का क्या पाप किया था और क्यों सतीने अपना तन त्यागा उनका अनादर किन बातों से समझा गया और जिन मनुष्यों ने उनका अनादर किया था

उनको सतीजी ने क्यों न जलाया और आपही क्यों जलगई और आदिशक्ति हो क्योंकर अन्तर्द्धान हुई और अचरज यह है कि दक्षको सती बहुत प्यारी थी फिर ऐसा अशील और अप्रिय कर्म दक्ष से क्योंकर हुआ और श्वशुर जामात्रसे क्यों-कर बिगड़ी ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जिसको हम विष्णु देवता मुनि आदि ध्यान करते हैं यह सब उनकी इच्छा है हम किसको दोष लगावें जिस तरह कि दक्षने अपनी शुद्ध बुद्धि को भ्रष्ट करके शिवके साथ वैर उपजाया वह हम कहते हैं कि एक दिन दक्षप्रजापति ने बड़ा उत्सव रचा और उस सभा में देवता मुनि अग्नि आदि स्त्रियों सहित आये वह सभा विचित्र प्रकार से सजी थी उस यज्ञ में हम भी सेवकों सहित गये हमें देख सब सभा के लोग प्रसन्न हुये और जब शिव सभा में पहुँचे तो उनको देख हम सब आदर से उठ खड़े हुये और स्तुति करने लगे और जय २ शिवका शब्द ऊँचे हुआ और विनती की कि आपने हम लोगों पर अति अनुग्रह किया और इस यज्ञ-शाला में सुशोभित होकर आपने दर्शन दिये फिर शिवजी की आज्ञा से सर्व मनुष्य अपने २ स्थान पर बैठ गये और सबने इस यज्ञ को जिसमें शिवजी आप आये धन्य जाना और अति प्रशंसा की उस समय दक्षप्रजापति भी वहां आये उनको देख सब देव मुनि आदि ने शिर झुकाकर प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़े हुए उनकी स्तुति की और दक्ष मेरा प्रणामकर और मेरी ओर भारी दृष्टि से देख अहंकार के साथ बैठगया पर दक्ष को शिवने प्रणाम नहीं किया और विष्णु के बैठने की जगह में बैठे रहे दक्ष शिवको ऐसा ढीठ विना स्तुति करते हुये देख महा-कुपित हुआ और क्रोधदृष्टि से देखकर अहंकार के वश में हो शिवको अति कटु वचन कहे और शिवकी महिमा भूल गये।

रीति है कि मृत्यु के समय हर मनुष्य की बुद्धि नष्ट होजाती है सो ऐसाही हुआ कि दक्षने शिवकी अतिनिन्दाकर कहा कि तुम सब सभा के लोग मन लगाय सुनो इस रुद्र अर्थात् शिवने मूर्खों के समान हमको क्यों प्रणाम न किया कि बड़े २ देवता आदिने हाथ जोड़ हमको दण्डवत् की और शिवने शुद्धमार्ग छोड़ तीनों वेदों के विरुद्ध यह काम किया है यह बुद्धिहीन अहंकारी जिसके भूत आदि नौकर हैं प्रेतों का राजा माता पिता रहित पापों का पर्वत गर्ववान् अशुभ कर्म करनेवाला है और जोकि बुद्धिमानों की रीति है कि मूर्खोंको दण्ड देकर छोड़ते हैं कि अज्ञानताका प्रचार न हो इसलिये हम शिवको शाप देते हैं और ब्राह्मणकुल का तेज दिखाते हैं यह कहकर शाप दिया हे शिव! यज्ञादि में तुमको भाग न मिले यह सुन शिवने कुछ उत्तर न दिया पर नन्दी महाक्रोधित हो बोला हे मूर्ख, दक्ष! तूने बड़ा गर्व किया कि शिवको शाप दिया ऐसे शिवको जिसे स्मरण कर सम्पूर्ण संसार भरपूर होता और वही सृष्टि के पावन और प्रलय के कारण हैं और जिनके नाम लेने से जप, तप, दान, धर्म, व्रत आदि पवित्र होजाते हैं सो हे दक्ष! तूने ऐसे प्रधान पुरुष की निन्दा की भला जिस मुखसे तुमने शिवनिन्दा की वह मुख तुम्हारा जाता रहे और तुम्हारे सब मनोरथ पूरे न हों तुमको धिक्कार है धिक्कार है तू पापियों में महाअधम वरन् निन्द्यकर्मों का मूल है दक्ष ने ऐसा शाप नन्दी के मुख से सुन भयवान् हो नन्दीको भी शाप दिया कि तुम वेदके विरुद्ध होगे और तुम्हारा विचित्र स्वरूप होगा और संसार में तुम दुःखी रहोगे सब बोझा उठाकर तुमसे अच्छी बुद्धि जाती रहेगी ऐसा शाप देकर भृगु आदि जो शिवसे विरुद्ध रखते थे उनकी ओर हुआ और वे यह बातें दक्षकी सुन अतिप्रसन्न हुये उस समय नन्दी महाक्रोधित

हुआ और अपनी अप्रमेय बड़ाई दिखाकर जिन्होंने शिवनिन्दा की थी उन सबको शाप दिया कि तुम सब व्यर्थही ब्रह्मा के कुलमें उपजे तुमने तत्त्ववस्तु को न पाया और काम, क्रोध, लोभ आदि से भरे हुये हो इसलिये तुमको शुभ कर्मों का फल न मिलेगा और परमपद न पावोगे और जो शिवद्वेषी हैं वह सब वेद के विरुद्ध ब्राह्मणों के शत्रु हो शूद्रों से यज्ञ करावेंगे और घर २ दान मांगने जावेंगे दरिद्री रहेंगे वरदानादि भी लिया करेंगे नरक का अच्छा स्वाद पावेंगे जब ऐसा शाप नन्दीने ब्राह्मणों को दिया तब शिव हँसकर बोले कि अब हम तुम सबको ज्ञान सुनाते हैं उसे सुन कोई अप्रसन्न न होवे अर्थात् वेद को अक्षर और मन्त्र कहते हैं और उसमें भी सूक्तको अति आनन्द देनेवाला कहा इसी से सब के मन सूक्त में लगे हुये हैं ऐसे मन को बुद्धिमान् निकट समझते हैं सो हे नन्दी! ऐसे मनमें ऐसे क्रोध को स्थान न दो दक्षने मुझे कुछ शाप नहीं दिया पर उसने जाननेवाली बातको नहीं जाना हम आप जगत् जगत् के कर्म जग के अङ्ग जग करनेवाले और जग के भीतर बाहर सब हम हैं न तो संसार में किसी के भाई और न पुत्र हैं हम शुद्ध अशुद्ध भूत प्रेत देवता दैत्य और तीनों लोक के स्थित करनेवाले हैं और यह समझ कुछ चिन्ता मत करो जहां तक और जितना तुमको दिखाई देता है उसे माया का विकार जानो तुमको उचित है कि हमारे इस वचन का विचार करके क्रोध को दूर करो यह सुनकर नन्दी शान्त हुये और शिवजी कैलास पर्वतको सिधारे और दक्षप्रजापति भी उसी प्रकार क्रोधकी अग्नि में भरा हुआ अपने घर गया उस दिन से वह शिव की निन्दा करता और शिवजी के भक्तों को देखकर महाक्रोधवान् होता ।

उन्नीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवकी लीला पवित्र शुद्ध

जिसको वेद और पुराण भी पूर्णरूप से नहीं जानते अपनी बुद्धि के अनुसार सब कहते हैं अब और शिव के चरित्र सुनिये कि एक समय में शिवशंकर अपनी स्त्री सती समेत तीनों लोक के अवलोकन के निमित्त चले और पृथ्वी का अटनकर दण्डकवन में पहुँचे और रामचन्द्र को लक्ष्मण समेत देखा कि सीता महारानी को ढूंढ़ रहे हैं और वियोग से महाखेदवान् दुःख के वचन कहते हैं और चारों ओर अटन करते हैं रामचन्द्र को देख शिव ने प्रणाम किया क्योंकि पहिले विष्णुको ऐसा वरदान दे चुके थे शिव फिर जय कहकर आगे चले और कुसमय जान कुछ वार्त्ता न की यद्यपि रामचन्द्र बड़े शिवभक्त हैं और सदा शिवका नाम लेते हैं (कि उसको हम फिर वर्णन करेंगे) सो सतीने यह हाल देखा और आश्चर्य में आकर कहा कि हे अनादि सर्वोपरि ब्रह्म! तुमने सर्वसंसार ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि और सम्पूर्ण सृष्टि को उपजाया जो सब आपकी सेवा करते हैं सो आज के दिन दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जो भाग्यवश आपको वनमें मिले तो पहले आपने उनको प्रणाम किया मुझे चिन्ता है कि इसका क्या कारण है श्रीशिवशंकर ने सती को ऐसी माया में डूबी हुई देख कहा कि हे सती! रामचन्द्र रमापति विष्णु जो संसार के पालन का अधिकार रखते हैं सो यह अवतार भक्तों के निमित्त है और फिर शिवने अवतार लेने का कारण कहा पर तौ भी सती का मन न भरा तब तो शिवने विष्णु के अवतार के नाना चरित्र सती को सुनाये परन्तु उन्हें कोई न भाया और न निश्चय हुआ तब तो शिवने कहा कि जो तुमको निश्चय न हो तो आप जाकर क्यों परीक्षा नहीं करती हो और वह उपाय करो कि तुम्हारा सन्देह दूर हो मैं वृक्ष की छाया में बैठा हूं जब तक तुम परीक्षा लेकर लौट न आवोगी। यह आज्ञा पा सती सन्देह युक्त

चलीं और मनमें विचारा कि क्योंकर परीक्षा लूं तो बहुत सोचने के उपरान्त यह बात ठहराई कि श्रीसीताजी का स्वरूप धारणकर रामचन्द्र के सम्मुख जाऊं यदि वह विष्णु होंगे तो अवश्य मुझे जानलेंगे यदि केवल राजपुत्र हैं तो मुझे क्या जानेंगे यह विचार सीता के रूप से हँसती हुई श्रीरामचन्द्रजी की ओर गईं लक्ष्मण ने सती को ऐसे स्वरूप में देखा और आश्चर्य से धोखा खाकर जाना कि यह सती हैं पर पूर्णज्ञान होने के कारण कुछ न कहा पर जब कि रामचन्द्रने सतीजी को ऐसे छलके स्वरूप में देखा तो हँसपड़े और शिव २ कहते हुये बोले कि जिसके ध्यान करने से सम्पूर्ण खेद और श्रम दूर होजाते हैं और जिसके मनमें सदाशिव का स्थान है उसे आपने धोखा देना चाहा यह सब शिवकी माया है ऐसी माया को धन्य है जो सबको नचाती है फिर रामचन्द्र अति नम्रतापूर्वक यह मधुर वचन मुख पर लाये और अपना पितासमेत नाम कह बोले कि शिवमहाराज कहां हैं और कहां गये हैं हे माता ! तुम शिवसे जुदा वनमें अकेली क्यों फिर रही हो और तुमने अपना स्वरूप छोड़ यह रूप क्यों धारण किया यह सुन सती आश्चर्य में हुईं और सदा-शिव का ध्यानकर रामचन्द्रजी को विष्णु जाना और अपना रूप धारणकर रामचन्द्र से सर्व वृत्तान्त कहा और कहा कि अब मुझे निश्चय है कि तुम विष्णु हो तुम पूर्णविष्णु का अवतार हो और राजा दशरथ के यहां उपजे पर एक शोच है वह मैं तुमसे पूछती हूं अर्थात् आपका चतुर्भुजी स्वरूप देख शिव किसी समय ऐसे प्रसन्न न हुये जैसा कि यह स्वरूप देखकर आज प्रसन्न हुये हैं उनके अति प्रेमसे आंसू चले और बार २ तुम्हारी प्रशंसा करते रहे आप सच २ बतावें कि इसका मुख्य क्या कारण है यह सुन रामचन्द्रजी के नेत्रों से भी आंसू चले

और प्रेम में मग्न होकर चाहा कि उसी समय चलकर शिवको देखें पर ऐसा समय न जानकर और न सती की आज्ञा पाकर केवल शिव का ध्यान किया रामचन्द्र बोले जो तीनों लोक में प्रकट और दिखाई नहीं देता वह आज मैंने देखा वाहरी भाग्य मेरी कि वह मैंने स्वरूप देखा और मेरे धन्य भाग्य हैं कि उनकी ऐसी कृपा मुझ पर है जिसका सिद्ध मुनि देवता आदि ध्यान करते हैं और वेद उसकी स्तुति में मग्न हैं और जिसको हर समय ब्रह्मा बखानते हैं वे भक्त के अधीन हैं उन्होंने कामरूप के मनोरथ को पूरा किया और भीमासुर का वध किया और शौरि और शौर और श्र को कृतार्थ किया और गुणनिधि को अपना कर लिया और बधिक को मुक्ति दी और चन्द्राङ्ग को बहुत द्रव्य और धन दिया और भद्रासुख और पद्माकर को अति प्रसन्नता कृपा की और धर्मगुप्त और मन्त्रव्रत दोनों ब्राह्मणोंका सत्कार किया और पिङ्गलाके सर्व दुःखदूर किये और महानन्दा पातुरको बड़ालोक दिया और हर और कुक्कुट ने उनके वरों से परमपद पाया और व्याध, किरात, नन्दा और पक्षण चौर पञ्चक की स्त्री हरक्ष, इन्द्रद्युम्न को क्या २ पद प्राप्त नहीं हुआ और शिवने कहां किसके ऊपर कृपा नहीं की ऐसे शिव मुझपर प्रसन्न हों इतना कह श्रीरामचन्द्र सती से बोले कि हे देवि! जो शिवने हमको प्रणाम किया उसका यह कारण है।

बीसवां अध्याय।

रामचन्द्रजी बोले कि हे देवि! किसी समय शिवने विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञा दी कि हमारी धेनुशाला में उत्तमोत्तम मन्दिर बनाओ और वहां उत्तम सिंहासन बनाओ सो ऐसे मन्दिर के बनजाने के उपरान्त शिवने सम्पूर्ण सुर मुनि और ब्रह्मा को बुलाया और बड़ा उत्सव किया फिर शिवने वैकुण्ठसे

मुझको ला बैठाला और सामग्री इकट्ठी की और पांच घड़े तीर्थों का जल सरसों दूब और सब जड़ी बूटी और धन द्रव्य वस्त्रादि संचितकर मेरे विष्णुरूप का अभिषेक करना चाहा और बड़ा ऊंचा छत्र मेरे शिरपर रखकर और सिंहासनपर बैठाकर रत्नों का जड़ा हुआ मुकुट मेरे शिरपर बँधवाया और उत्तम वस्त्र पहनाये और लक्ष्मीजी समेत मेरा अभिषेक किया और तुमने उस शरीर से जो उस समय तुम्हारा था लक्ष्मी का अति आदर किया उस समय अति आनन्द हुआ देवतों की स्त्रियां गान करने लगीं नाना प्रकार के बाजे बजे तब शिवने अपने मुखकमल से सकलैश्वर्य का वचन कहा और मुझे सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी बना दिया और कृपा करके तीनों शक्ति कृपा कीं और तीनों लोक का राज्य दिया और बहुत से आशीर्वाद दिये और मेरी स्तुति पहिले आप कहकर फिर ब्रह्मा से कहा कि तुम भी प्रणाम करो और इनकी बड़ाई करो और जानों कि आज से विष्णु तुम सब के स्वामी हुये सबको आनन्द देंगे और तुम्हारे सबके मनोरथ इनसे पूरे होंगे यह तीनों लोक के स्वामी हैं यह आज्ञा सुन सबों ने मुझको प्रणाम किया और जय जय शब्द चारों ओर से ऊंचा हुआ और फिर शिवने यह वरदान दिया कि हे विष्णो! तुम सबके स्वामी होकर उनके दुःख दूर करो और तीनों लोक तुम्हारी पूजा करें और तुम्हीं अर्थ, धर्म, काम देनेवाले होकर बड़े विजयी वीर हो हम आप भी तुमको न जीत सकें तुम ब्रह्मा के भी स्वामी हो हमने तीनों लोक तुमको दिये और अवतार लेकर तीनों लोक की पालना करो तुम्हारे भक्तों को हम आनन्द दिया करेंगे और उनको मुक्त करेंगे और तुम्हारे शत्रुओं का वध किया करेंगे और हर प्रकार से तुम्हारे सहायक रहेंगे ब्रह्मा हमारी दाहिनी और तुम बाईं भुजा हो और तुम्हारे अवतार जो

राम कृष्ण होंगे उनको हम आप जाकर देखेंगे और संसार के देखने के लिये उनकी भक्ति किया करेंगे तब से जहां शिव रहते हैं वहां हमभी स्थित रहते हैं और शिवलोक में विष्णुलोक है जिसको गोलोक कहते हैं और हम शिवकी आज्ञासे अवतार लेते हैं और मत्स्यादि मेरे बहुत अवतार होचुके हैं और संसारी कार्य पूरे किये हैं इस समय चार प्रकार से हमारा अवतार हुआ है अर्थात् राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न मन एक है परन्तु शरीर जुदा २ है हम अपने पिता की आज्ञा से वनमें आये और उस वरदान से जो कैकेयी को दशरथ ने दिया था और हमारे साथ लक्ष्मण और सीताजी भी आई थीं सो रावण सीता को ले भागा है उसी को ढूंढ़ते हैं आपके दर्शन से हमारे सब कार्य सिद्ध होंगे हमको तो सीता का हरण अति शुभ हुआ जिससे आपके चरणों के दर्शन मिले और मुझे इस बात का निश्चय हुआ है कि अब मुझे जल्दी सीता का हाल मालूम होगा और हम शत्रु पर विजय पाकर सीता पावेंगे संसार में उनसे अधिक कौन है जिसके ऊपर शिव तुम समेत कृपा करें शिवकी बराबर तीनों लोक में कोई कृपा करनेवाला दूसरा नहीं इस बातको वेद कहते हैं वे अपने भक्तों को आनन्द देनेवाले और पापियों का पाप छुड़ानेवाले और भक्ताधीन और बहुत अवतार लेनेवाले हैं उन्होंने पापियों को बहुत उद्धारा है उनके चरित्र हम कहां तक कहें यह कह श्रीरामचन्द्र ने सती से बिदा मांगी और सती से आशिष पा शिवका ध्यान धर रामचन्द्र आगे चले और उसी तरह पर अपने कार्य में प्रवृत्त हुये।

इक्कीसवां अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे जगत्पिता! इसके उपरान्त जो शिवने चरित्र किया वह कहिये ब्रह्मा बोले

हे नारद ! रामचन्द्र का हाल सुनकर सती को अत्यानन्द प्राप्त हुआ पर अपने कर्म का विचार कर अति चिन्ता की और मन में अति भयभीत हो महादुःखी लौट गईं मार्ग में विचार किया कि मैंने शिवकी अवज्ञा की और रामचन्द्र पर निश्चय न किया मैं अब शिवको क्या उत्तर दूंगी इस प्रकार अति खेद से शिवके निकट पहुँचीं और हँसकर शिवको प्रणाम किया और शिवने कुशल पूछ हँसकर कहा कि तुमने जाकर परीक्षा की वह सब हमसे कहो यह सुन सतीने शिर नीचाकर कुछ उत्तर न दिया मन में भय उपजा शरीर में घबड़ाहट बहुत हुई तब शिवने ध्यान धर कर देखा और जो चरित्र सती ने किया था वह सब जाना और अपनी पहिली बातको जो विष्णु को अभिषेक के समय कहा था स्मरण कर अतिक्रोध किया निदान मन में यह ठाना कि जो मैं अब सती से प्रीति बढ़ाता हूं तो मेरा प्रथम वाक्य झूठ होता है और शास्त्र के विरुद्ध करना उचित नहीं और सती ऐसी स्त्री को छोड़ भी नहीं सक्ता और जो छोड़ता नहीं तो जो पहिले कह चुका हूं वह मिथ्या होता है पर फिर शिवने कहा कि बस अब सती से भेंट न होगी और अपने वचन को मिथ्या करना उचित न जाना यह विचार सती को छोड़कर अपने स्थान को चले चलने के समय आकाश से यह शब्द हुआ कि जय २ शिव आपने अपने वचन का बड़ा प्रतिपाल किया आपका सा कौन है जिसने अपने वचन को निबाहा ऐसा शब्द सुन सती को अतिभय हुआ और शोचकर शिव से पूछा कि आपने क्या पूरा उद्योग किया है आप तो बड़े सत्यवक्ता हैं मुझसे सत्य कहिये सती ने बार बार पूछा पर शिवने यह बात छिपा रक्खी तब तो सतीको निश्चय हुआ और कहा कि जो कुछ मैंने किया वह अज्ञानता और मूर्खता से किया है अब आप पानी और दूध अलग

करके देखें क्योंकि प्रीति की रीति यही है और मैं अपने कर्म पर आपही लज्जित हूं पर शिवने उस बात का बताना उचित न जान नाना प्रकार की कथा आदि के सुनाने में उस बात को टालदिया अन्त को कहना पड़ा इस प्रकार वह कैलासपर्वत में पहुँचे और शिव अपनी इच्छा का विचार मनमें कर बरगद के नीचे आसन जमा बैठगये और अपने स्वरूप का ध्यान किया और सती मन्दिर में पहुँच अति खेदवान् हुईं उनको एक दिन युग समान बीतता था पर सिवाय उनके और सबको यह हाल मालूम न होने पाया और दिन २ दुःख बढ़ता जाता था मनमें कहती थीं कि यह हमारा दुःख कहने के योग्य नहीं न मालूम कि इस दुःखसमुद्र से कब पार हूंगी मैंने शिव का कहना न माना जिसका फल यह है ऐसा कौन तीनोंलोक में बलवान् है जो शिव के विरुद्ध होकर किंचित् आनन्द उठावे और फिर कहती थीं कि हे शिव ! कुछ तुम्हारा अपराध नहीं है जो मैंने किया उसका फल पाया हे भाग्य ! तुझे ऐसा न चाहिये था कि मुझे शिव के विरुद्ध किया हे ब्रह्मा ! ऐसे समय में हमारी सहायता करो और शरीर मेरा बदल जावे हे मृत्यु ! मैं तुमसे मांगती हूं कि तुम मुझे इस संसारसे उठालो यदि मैं तन मन से शिवकी प्रीति करती हूं तो हे शिव ! मुझ पर दया करो कि मुझे मृत्यु प्राप्त हो और सती ऐसी दुःखी हुईं कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और शिवको ऐसे ध्यान में सत्तासी हज़ार वर्ष बीते जब इतने समय के उपरान्त समाधि से जागे तो सतीजी सामने जाखड़ी हुईं शिवने अपने सम्मुख बैठाला और उस बात को मिटा दिया और कथा वार्त्ता में टाल दिया जिससे सती को दुःख न हुआ और वह प्रसन्न रहने लगीं और शिवने भी अपने वचन को न छोड़ा यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है

कि सतीको पहिली बात का कुछ दुःख न हुआ और वह अगली बातें सब भूलगई शिव हर शरीर में हैं और कई मुनियों का यह वचन है कि शिवशक्ति की जुदाई उचित नहीं है यह बाद के वचन हैं और शिवके चरित्र हर कल्प के भिन्न भिन्न हैं तो किसको कल्पभेद का वृत्तान्त मालूम है वह जो कुछ करें सब उचित है सन्देह न करना चाहिये शिव और शक्ति का भेद अतिगुप्त और कठिन है उसको कोई क्या जान सक्ता है शेष और विष्णु भी उनके चरित्र के वर्णनकरने में अशक्त हैं और शुक सनकादि और देवता उसको अप्रमेय जानकर अन्त नहीं जानसक्के और वेद भी सब कुछ कहते हैं पर तो भी अलख पुकारते हैं यह जानकर भक्तों को उचित है कि निस्सन्देह होकर उनकी पूजा तपादि करें हे नारद ! इसी तरह बहुत दिन बीते तब शिवने और चरित्र किया जिसको देख सबकी बुद्धि भ्रमित हुई अब हम वही वर्णन करते हैं मन लगाय सुनो ।

बाईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब हमने दक्षप्रजापति का अभिषेक कर उसको सब प्रजापतियों का अधिकार दिया तो वह अहंकार में मग्न होगया जिससे उसकी मति भ्रष्ट होगई तुम आप अच्छी तरह से विचारकर देखो कि प्रतिष्ठा पाकर किसको गर्व नहीं उपजा तो उस समय दक्षने सब सामां इकट्ठी कर प्रजापति यज्ञ करना चाहा और इसी इच्छा से कनखल-तीर्थ पर गया और सब मुनियों को बुलाया और व्यास, ककुभ, गौतम, भरद्वाज, कश्यप, संत, सुमंत, त्वरित, कम्प, च्यवन, अगस्त्य, वशिष्ठ, वामदेव, जैमिनि, पिप्पल, पराशर, क्रतु, वैशम्पायन, गर्ग, भार्गव, आसुरि, वीतहोत्र, भृगु, दधीचि, नारद आदि और सिवाय इनके सब देवता ब्राह्मण संसार भरके

वर्तमान हुये और अनल भी अपने गणों समेत दक्ष के यज्ञ में पहुँचे और भी उसके बुलाने से प्रसन्नतापूर्वक विष्णु समेत यज्ञ में सुशोभित हुये और इन्द्र अपनी स्त्री शची समेत ऐरावत हाथी पर चढ़ पहुँचे और पावक मेघ पर और यम भैंसे पर और वायु हरिण पर और शिवके मित्र कुबेर पुष्पक विमान पर चढ़कर यज्ञशालामें आये और वरुण भी अपने वाहन पर आरूढ़ हो पहुँचे और सूर्य अपनी स्त्री समेत और चन्द्रमा अपनी स्त्री रोहिणी सहित आये सो दक्ष ने अति आनन्द में मग्न हो सबका आदर सन्मान किया और सबके ठहरने के लिये विश्वकर्मा के बनाये हुये मन्दिर बतला दिये जिनमें सब स्थित हुये उस समय सतीजी गन्धमादन पर्वत पर अपनी सखियों समेत लीला कर रही थीं देखा कि चन्द्रमा अपनी स्त्री सहित चला जाता है सती ने विजयानामी अपनी सखी को आज्ञा दी कि तुम चन्द्रमा से जाकर पूछो कि कहां जाता है विजयाने चन्द्रमा के निकट जाय कहा कि सती पूछती हैं कि तुम अपनी स्त्री सहित और ऐसे ठाट से कहां जाते हो यह बात सुन रोहिणी बोली कि सती के पिता दक्ष प्रजापति कनखल में यज्ञ करते हैं और वहां बड़ा उत्सव है और उनके बुलाने से सब देवता वहां गये हैं वरन वहां ब्रह्मा विष्णुजी भी शोभित हैं वह देश सर्व सृष्टि से पूर्ण है तुम तो ऐसा पूछती हो जैसे कोई मूर्ख हँसी से पूछे क्या कारण है कि तुम ऐसे यज्ञ को नहीं जानतीं क्योंकि वहां सब अपना अपना भाग लेने गये हैं तुम अपनी इच्छा से नहीं गईं वा दक्ष ने तुमको नहीं बुलाया यह सुन विजया लौट आई और जो कुछ रोहिणी से सुना वह सतीको सुनाया सतीजी को अति दुःख हुआ कि क्यों माता पिताने हमको भुलादिया और हमें और शिवको नहीं बुलाया यह विचार सती तुरन्त शिवके निकट गईं और उसी समय चन्द्रमा भी

अपनी स्त्री रोहिणी समेत दक्ष के पास गया उस समय की सामां और उस काल के आनन्द जो दक्षयज्ञ में थे वर्णन नहीं होसक्के जब सब मुनि देवता कनखल में जो हरद्वार में है आगये तब दक्षने यज्ञ का प्रारम्भ किया और अपनी स्त्री सहित यज्ञ में प्रवृत्त हुआ और भृगु मुनि यज्ञ करानेवाले ठहराये गये और दक्ष ने ऐसे यज्ञ में सबको वर्त्तमान देख वैरभाव अङ्गीकार किया ऐसे समय में दधीचि हमारे पुत्रने सदाशिव को यज्ञशाला में न देख आश्चर्य से कहा कि यह बात हम सब वर्त्तमान मनुष्य कहते हैं कि चाहे इस उत्सव में सम्पूर्ण देवता मुनि ब्रह्मा के पुत्र आदि आये हैं पर हम सत्य कहते हैं कि यह सभा सदाशिव बिन अशोभित है सदाशिव शुभ बातों के मूल हैं हम उस पुरुष परमात्मा को नहीं देखते जिसको वेद पुराण नेति २ बखानते हैं वह सब देवतों का स्वामी है वह इस जगह पर क्यों नहीं है तुम क्यों ऐसे शिव को भूल गये और हे दक्ष! तुम्हारी बुद्धि इस तरह पर भ्रष्ट होगई अब भी कुछ काज नहीं बिगड़ा तुम जितने देवता मुनि हो और ब्रह्मा विष्णु भी सब जानकर शिवको प्रसन्न कर ले आवो और सतीजी को प्रसन्न कर शिव सहित लावो और निश्चय जानो कि शिव के आने विना यह यज्ञ पूर्ण न होगा आश्चर्य है कि ऐसे मनुष्य को जिसके स्मरण अथवा नाम लेने से सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होजाते हैं उसको क्योंकर भूलगये और नहीं बुलाया और इस बातको अच्छी तरह पर समझो कि जबतक शिव न आवेंगे यह यज्ञ पूर्ण न होगा दधीचि के यह वचन सुन दक्ष महाक्रोधित हुआ और हँसकर बोला कि जिस जगह सब देवतों के स्वामी बैठे हैं वहां सब धर्म वेद और शुभकर्म पूर्णरूप से वर्तमान हैं सो ऐसे विष्णु तो हमारी यज्ञ में विराजमान हैं अब क्या बाक़ी है

हमको बतलादीजिये हमारी यज्ञ में तो अपने २ गणों समेत ब्रह्मा, वेद, धर्मशास्त्र, सर्व पुराण, उपनिषद् भी आचुके हैं सो मेरे बड़े भाग्य हैं कि इन लोगों ने मुझपर अनुग्रह किया और आज मेरे यहां इन्द्र सब देवता लिये और विष्णुभगवान् और तुम्हारे समान बहुत मुनि सुशोभित हुये हैं और सब आचुके हैं सो शिवके आनेकी क्या आवश्यकता है तुम सब मिलकर हमारी यज्ञ को पूर्ण करो और मैंने अपनी भाग्य और ब्रह्मा की आज्ञा को मानकर अपनी कन्या शिवको दी यद्यपि यह विवाह अनुचित हुआ क्योंकि वह कुलवान् न था संसार से मुख फेरे महाअहंकारी इसपर यह कि माता पिताहीन जो उसे किसी कर्म से निषेध करे वह भूत प्रेत पिशाचों का स्वामी है वह अवधूत है तो ऐसे शिवको ऐसी यज्ञमें बुलाने की आवश्यकता न जान कर नहीं बुलाया इसलिये हम तुमसे कहते हैं कि ऐसा वचन फिर मुख पर न लाना अब भी उचित है कि तुम सब मिलकर हमको हमारी यज्ञ के पूर्ण करने से आनन्द दो ऐसे वचन दक्षके सुनकर किसी ने कुछ उत्तर न दिया और यह चुप रहना उनका सबके लिये महापाप हुआ क्योंकि सबने शिवनिन्दा अपने कानों सुनी पर फिर भी दधीचि ने कहा कि विना शिवके यह यज्ञ नहीं है बरन तुम सबको छल है जो करते हो यह दक्ष बड़ा अधर्मी और मूर्ख है जो शिवनिन्दा कर रहा है और जो कि इसने शिवको नहीं बुलाया तो यह यज्ञ भी पूरा न होगा और जो इस यज्ञ में रहेगा उस पर बड़ा दुःख पड़ेगा यह कह दधीचि तो उस सभा से उठकर चले गये और बहुत से मुनि लोग भी दुःखी होकर उठगये ऐसे मुनिलोगों को अपनी सभा से जातेहुये देख दक्षने अति प्रसन्नता से कहा कि क्या अच्छी बात हुई कि शिव के प्यारे और शिवभक्त जो हमको दुःख देते

थे अपने आप उठगये अब तुम सब मिलकर हमारे यज्ञ को पूर्ण करो तब उसी समय यज्ञ का प्रारम्भ होगया और जैसा चाहिये वैसा सब काम होनेलगा ।

तेईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सतीने अपने पिता के घर यज्ञ का हाल सुनकर चाहा कि मैं भी जाऊं और इस इच्छा से अकेली सदाशिव के पास गईं और देखा कि सेवकगण शिवजी की सेवा में लगे हुये हैं अर्थात् चण्ड, मुण्ड, बाण, भृङ्ग, नन्दी, महाकाल, महामुण्ड, महाशर, नन्द, उदातकामी, धूम्र, बिभ्रउदात, भीषण, सुपतकेतु, धूम्रविलोचन, सबलबाहु, धूम्रकेतु, धूम्रलचरणादि और बहुत से गण चरण सेवा कर रहे थे उस समय शिवजी का रूप महाभयंकर था नग्नरूप केवल रुद्राक्ष धारण किये हुये जटा लटक रहीं शरीरभर भस्म से शोभित ऐसे स्वरूप से शिव को देख सती ने प्रणाम किया शिवजी ने अति प्रीतिकर सती को बैठा लिया यद्यपि शिव सब जानते थे परन्तु संसारी लीला के निमित्त सती से पूछा कि यहां आने का कारण कहो सती अतिप्रसन्न हो कहने लगीं कि क्या आपको भला मालूम नहीं हुआ जो दक्ष ने यज्ञारम्भ किया है मित्रों और बान्धवों की भेंट बड़ा धर्म है इसलिये अच्छे लोग भले बन्धुओं की संगति स्वीकार करते हैं और बड़ा आनन्द उठाते हैं इसलिये उचित है कि आप चलकर यज्ञ को पवित्र करें और मुझे अपने साथ लेजाकर मेरी इच्छा पूर्ण करें और ब्रह्मा विष्णु आदि सब हमारे पिता की यज्ञ में पहुंचे हैं और आप नहीं गये प्रायः आपको यह यज्ञ अच्छा मालूम नहीं हुआ आप मुझसे न जाने का हेतु विस्तार से कहिये मैं तो आपकी दासी हूं मेरी बड़ी इच्छा है कि अपने पिता के घर जाऊं आप

मुझे साथ लेकर चलिये यह सुन शिव मुसकराकर कहने लगे कि तुम्हारे पिता दक्ष ने हमको निमन्त्रण नहीं भेजा और वैर रखकर हमारा अनादर किया है और केवल तुमको नहीं बुलाया बाकी और सब लड़कियां वहां पहुँची हैं इसका कारण केवल वैर है और बिन बुलाये जाना उचित नहीं यद्यपि धर्मशास्त्र कहता है कि अपने पिता, मित्र, गुरु और स्वामी के घर में बिन बुलाये जाना उचित है पर शत्रुता न होनी चाहिये और बिन बुलाये किसी के घर जाना मृत्यु से अधिक है और अनादर और लोकनिन्दा का कारण है यह सुन सती बोलीं कि हे स्वामिन्! आप इस वैर का कारण बतावें शिवने पहिला वृत्तान्त सब कहदिया और कहा जो बिन बुलाये इन्द्र भी किसी के घर जावें तो वह भी तुच्छ मानहीन समझे जाते हैं इसलिये उचित है कि दक्षके यज्ञ में न जावो नहीं तो बड़ा दुःख होगा और शिव ने बहुत प्रकार से सती को मना ही किया पर यह समझना सती को अच्छा मालूम न हुआ और दक्ष पर अति अप्रसन्न और कोपित हो कहने लगीं कि हे शिव! आप तो तीनों लोक के आनन्द देनेवाले हैं आपका स्मरण देवता करते हैं और आप यज्ञरूप और यज्ञ कर्म और यज्ञ के फल हैं आपकी दृष्टिमात्र से तीनों लोक तृप्त होजाते हैं और आपसे यज्ञ पवित्र और पूर्ण होता सो मूर्ख दक्ष ने आपको न बुलाया मुझे चिन्ता है कि यह यज्ञ क्योंकर पूर्ण होगा मेरा पिता क्यों ऐसा अन्धा होगया मुझे बड़ी चिन्ता है यदि आप आज्ञा दें तो दक्ष के यज्ञ में जाकर उसके शील व दुश्शीलता अथवा उसके वैरभाव को देखूं जो कि शिव को कुछ और लीला और चरित्र करना था तो सती को जाने की आज्ञा देकर कहा कि तुम नन्दी पर सवार होकर जावो और अपने साठहजार गण सती के साथ

देकर बिदा किया और अच्छे २ वस्त्र भूषण दिये और उत्तम स्वरूप सती का करदिया हे नारद ! शिव ने ऐसी माया की कि सती बड़ी धूमधाम से चलीं जिनके शीशपर छत्र भारी मोलका और जिन ब्राह्मणों का शब्द तोते और पपीहे के समान था वे आगे आगे मधुरवाणी से शिव का यश गाते हुये चले और सती ने जैसी उस समय अपनी शोभा प्रकट की ऐसी किसी समय में प्रकट न की थी चलने के समय एक बड़ा शब्द हुआ कि कोई कूदता कोई उछलता और सब प्रसन्न और औरों को भी आनन्द देते हुये चलते कोई सती का प्रताप वर्णन करता कोई शिवमहिमा गाता और महाप्रसन्न नाना प्रकार की गति से चलते सती की सेवा करते हुये दक्ष के यज्ञ में जा पहुँचे।

चौबीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! सती दक्ष से भयभीत यज्ञशाला में पहुँचीं पर किसी ने बात तक न पूछी और न जाना कि यह जगन्माता हैं और दक्षने न तो मान किया और न कुशल पूछी यह देख सती की बहिनों ने जो वहां थीं हँसकर सती की निन्दा की और सती ने जब देखा कि यज्ञ में सबका भाग है और शिव का भाग नहीं तो मन में महाक्रोध किया और अपना अनादर देख शिव का स्मरण किया और कहा कि अपने क्रोध से दक्ष को भस्म कर डालूं फिर सोचा कि यह काम अच्छा नहीं बरन हमने पहिले वचन दिया था कि जब दक्षने हमको बड़ा तप करके प्रसन्न किया था हमने उससे कहा कि हम जब तुममें कुछ गर्व अथवा अपने मान की कमी देखेंगी तो तुरन्त अपने शरीर को छोड़ देंगी और दक्ष ने मान लिया था सो अब वही समय है और फिर सती ने इस बात को सोचकर बड़ा खेद किया और कहा बड़ा पश्चात्ताप है कि शिव अपुत्र रहे और हमारे विवाह का फल न मिला पर

हमारे सिवाय और कौन स्त्री है जो हमारे पीछे शिव को प्रसन्न रक्खेगी और फिर शिवही दूसरी स्त्री को स्वीकार न करेंगे अब हम अपनी प्रतिज्ञा पर अपने शरीर को छोड़कर हिमाचल पर्वत में उपजेंगी और हिमाचल की स्त्री मुझे अपनी लड़की की तरह पालन करके लड़की समझेंगी और मैं भी उसे माता जान आनन्द दूंगी और शिव का तप कर उनके साथ ब्याही जाऊंगी उस समय मेरी सब लज्जा जाती रहेगी और संसार के मनोरथ पूरेहोंगे और वह शिव जो सृष्टि भर के स्वामी हैं मुझ पर कृपा करेंगे यह विचारकर दक्ष से क्रोधित होकर कहा कि हे पिता! तुमने शिवको निमन्त्रण क्यों नहीं भेजा क्या आपकी शुद्ध बुद्धि भ्रष्ट होगई या किसी ने बुरी सम्मति दी जिस शिवस्वामी से तीनों लोक पवित्र होते हैं उनको आपने नहीं बुलाया आपकी बुद्धि नष्ट होगई और शिव बिन सब कर्म अशुद्ध हो जाते हैं और न तो यहां और न कुछ परलोक में कुछ बात बन पड़ेगी और जो तुमने बिना शिव यज्ञ किया तो क्या तुमने अन्य देवताओं के समान शिव को समझ लिया देखो ब्रह्मा विष्णु और देवतों ने जिनके चरणों का ध्यान करके सबके स्वामी होकर बड़ा पद पाया ऐसे शिव को तुमने न पहिचाना और फिर ब्रह्मा विष्णु और सनकादिक से कहा कि तुम शिव बिना क्योंकर इस सभा में आये इसी तरह से सबको ऐसी बातें और शिव का यश वर्णन कर एक २ को अलग २ लज्जित किया विष्णु से कहा कि तुम शिव को क्या नहीं जानते जिनको वेद सगुण और निर्गुण करके बखानते हैं हमने तुमको हज़ारों बेर समझाया है और फिर भी तुम मार्ग को भ्रष्ट करते हो और हे ब्रह्मन्! तुमभी बुद्धिहीन होगये तुम शिव के असंख्य बल को नहीं जानते और यद्यपि शिव ने हज़ारों बेर कहा है पर तो भी तुम्हें बुद्धि न हुई तुम्हारे

पांचमुख थे शिव निन्दा की इससे चारमुख तुम्हारे बाकी रहे और हे विष्णो ! तुम क्या वह शिव महिमा भूल गये जब कि उन्होंने शम्बर को जलादिया और फिर इस यज्ञ में आये हो और हे देवताओ ! तुमने अपनी शुद्ध बुद्धि क्यों खोई हमने समझा है कि तुम सब बड़े अभागी हो चुके और शिव विन इस यज्ञ में चले आये और हे भृगु, अत्रि, वशिष्ठ तुमने यह बात बुद्धि के विरुद्ध क्यों की तुमको शाप देने की वड़ी शक्ति है क्या तुम शिवजी के बल को नहीं जानते और शिव को किसी का शाप नहीं लगता आपही शाप देनेवालों की हानि होती है जैसा कि एक वेर शिव ने लीला करने के लिये अपना नगररूप धरा और दार्बिनपुर को गये और भक्त की परीक्षा के लिये कुछ परीक्षा की जिसको मुनि लोगों ने न जाना और शिव को शाप दिया सो वह शाप उन्हीं के लिये बुरा हुआ तीनों लोक जलने लगे तब शिवने अपने लिङ्ग को पृथ्वी पर गिरा दिया जिससे तीनों लोक फिर जी गये इतना कह फिर सती ने अति क्रोधकर ब्रह्मा और विष्णु से कहा यह जो कुछ दक्ष ने किया है उसके मूल तुम दोनों हो क्योंकि दोनों इस यज्ञ में आये और बुद्धि के विरुद्ध कार्य किया सो जैसा तुमने किया है वैसा फल पावोगे जिससे चारों वेद और सृष्टि उत्पन्न हुई ऐसे शिवको तुमने कुछ भी न जाना जो तुम दोनों दक्ष के यज्ञ में न आते तो उसका इतना अहंकार न होता जो सब देवता मुनि आदि न आते तो दक्ष ऐसी मूर्खता न करता और सब लोगों की बुद्धि कैसी विपरीत है कि मुनि दधीचि का सभा से उठ जाना न भाया ऐसी बातें सती की सुनकर दक्ष अतिक्रोधित हो कहने लगा कि हे अज्ञानिनी ! यह बात क्योंकर और क्या बकती है मुझसे और तुझसे कुछ पिता पुत्री का सम्बन्ध नहीं है जो मन चाहे तो यहां

रह नहीं तो अपने घर जा तुमसे कुछ प्रयोजन नहीं है और तेरा पति बहुत ही अशुभ है उसका नाम तुच्छ शिव है जो तुच्छ और उसमें केवल दो अक्षर हैं वह भूत प्रेत पिशाचादि साथ लिये हुये चिता और श्मशानों में फिरा करता है और उसके मातापिता कुल जाति पांति कुछ नहीं चाहे उसका वर्णन वेद में हो पर उसमें शुभगुण पाये नहीं जाते इसलिये हमने उसको अपने यहां नहीं बुलाया क्योंकि ऐसे मनुष्य के लिये यज्ञ में आना निषेध किया गया है और हे सती ! मैंने बड़ी मूर्खता और बुद्धि की हीनता की कि दूसरे के वश में हो तुम्हारी ऐसी उत्तम पुत्री को ऐसे औढर नङ्गे को देदिया मुझे बड़ा खेद है अब तुमको उचित है कि मेरी यह बात समझ क्रोध छोड़ दो ऐसी बातें पिता की सुन सती फिर क्रोधित हुई और अपने पिता को अति पापी समझा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सती ने कहा कि शिव का अपमान नहीं सुनाजाता यदि कोई शिव की निन्दा करे तो उचित है कि उसकी जिह्वा काटडाले चाहे कुछ हो और जो अपना वश न चले तो दोनों कान बन्द करके वहां से उठजावे या अपने को अग्नि में जलावे तब शुद्ध होवे और यह बड़ा पाप है और लोक परलोक दोनों स्थानों में आनन्द नहीं मिलता और शिवनिन्दा करनेवाला जबतक कि सूर्य चन्द्रमा स्थित रहते हैं तब तक वह नरक में बसता है यह बात वेद कहते हैं यह सोच सती को इस बात का बड़ा पछतावा हुआ कि मैंने शिवनिन्दा सुनी और ऐसे दुःख की दशा में इस बात से और भी अधिक खेद होता था कि मैं क्यों यहां आई और अब क्या सुख लेकर शिव के यहां जाऊं और अवश्य है कि शिव के शुभचरणों को देखूं पर वहां जाकर शिव से क्या कहूँगी मुझे दोनों

तरह से कठिनता है यह विचार अतिक्रोध से शिव शिव कहने लगीं और सबको बड़े ज़ोर से झिड़ककर किसी की बड़ाई का विचार मन में न लाईं और कहा कि तुम यज्ञशाला के मनुष्य सुनो मैं सच सच कहती हूं कि इस समय तुम नहीं समझते हो पर सब तुम पीछे से पछतावोगे तुममें से बहुत से कालवश होंगे और बहुत से भागकर कहीं किसी घर में होंगे इस सभा में जिस किसी ने शिवनिन्दा की है और जिसने उसे सुना है उसे महापाप हुआ है सो इसका फल तुम सबको तुरन्त मिलेगा हम सच कहती हैं और हे दक्ष! पीछे से तुम बहुत पछतावोगे क्योंकि तुमने शिवनिन्दा बहुत की है ऐसे शिव जो सबको सुख देनेवाले हैं उनको तुम और देवतों के समान ज़ानते हो और नहीं जानते कि वे संसार के बड़े हितैषी हैं इसका फल जल्दी पावोगे और जिस पुरुष का न कोई शत्रु है और न मित्र उसको कोई न प्रिय है न अप्रिय वही सर्व में स्थित है ब्रह्मा विष्णु उसकी सेवा करते हैं ऐसे मनुष्य बिन तुम क्या और तुम्हारा यज्ञ क्या है और वेद में मनुष्यों के तीन प्रकार वर्णन किये गये हैं जो किसी के गुण और शील में पाप लगावे उसको अधम कहते हैं और जो किसी के पाप पुण्य का यथार्थ बखान करे उसको मध्यम जानना चाहिये और जो किसी का पाप छिपावे बरन उसकी प्रशंसा कर देवे वह उत्तम कहा जाता है और इनमें भी जे बहुत उत्तम हैं वे केवल गुण वर्णन किया करते हैं और सबको प्रसन्न रखते हैं तो इन तीनों प्रकारों से हमने जाना कि तुम अधम हो क्योंकि शिवनिन्दा तुमने की और जितने बड़े पाप जैसे झूठ बोलना अहंकार क्रोध लोभ आदि हैं उन सबसे बड़ापाप निन्दा है और शिव शब्द में जो दो अक्षर हैं जो मनुष्य उन्हें मुख पर

लावे उसके सब पाप जल जावें ऐसे नाम की तुम निन्दा करते हो और जो शिव अनादि और अप्रमेय हैं उनसे तुम द्वेष रखते हो जिन्होंने शिव को जान लिया है वे शिव की प्रीति में मग्न हैं और शिव के चरणों पर ब्रह्मा अपना शिर रखते हैं उनकी तुम निन्दा करते हो शिव संसार के उपजानेवाले हैं और वही पालन करके फिर प्रलय कर देते हैं यह शरीर मेरा जो तुमसे उपजा है उसका त्याग करूंगी कि मेरा खेद दूर हो और तुमने जो कहा कि शिव कोई कर्म नहीं करता और अशुभ है सो वह तो ब्रह्म है शरीर रहित है अनादि है माया धारण किये हुये है इसको कर्म से क्या प्रयोजन है और जो तुमने कहा कि वह चिता भस्म लगाये रहते हैं और नग्न निर्धन और अवधूत हैं हमको केवल लिङ्ग प्रसन्नता देनेवाला है अब मैं यह शरीर जलाकर अन्य तन धारण करूंगी जिससे शिवको हर्ष प्राप्त होगा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह कह सतीजी धरती की उत्तर दिशा में बैठ गईं और स्नान कर सम्पूर्ण शरीर अपना वस्त्र से लपेट योग धारण कर युक्तिपूर्वक आसन लगा प्राणायाम किया पहले समान वायु को नाभि चक्र में लाकर उदानको ऊपर चढ़ाया और शिवकी मूर्ति मनमें स्थित की और दोनों भौंह के बीच दृष्टि जमाई और अपने पतिके चरणों का ध्यान धर अग्नि और वायु प्रकट की ऐसे पवित्र अग्नि और पवन से अपने निष्पाप शरीर को जला दिया यह दशा देख चारों ओर से हाहाकार का शब्द हुआ और सब लोग दुःखी हो भयभीत हुये और वीरनी दक्ष की स्त्री ने बड़ा शोक किया उस समय शिवके गण कुपित हो कहने लगे।

पचीसवां अध्याय।

शिवगण बोले कि दक्ष की मूर्खता देखो कि सती को जलने

से मना नहीं किया यह शिव का शत्रु संसार में निन्दा पावेगा और यह अहंकारी मूर्ख कामी करोड़ों नरकों में डाला जावेगा यह कहते २ वह सब दक्ष के मारडालने और यज्ञ के भ्रष्ट कर देने को खड़े हुये तो भृगु ने गणों की यह इच्छा जान रक्षा के निमित्त अच्छी पवित्र आहुति यज्ञ में छोड़ी और होम करते २ यज्ञ से दैत्य उपजे जो महावीर धीर बलवान् थे उन्होंने लोक में भू नाम पाया वे गिनती में एक हज़ार थे महाभयानक रूप से शिवगणों के सामने हुये ऐसे समय में शिव ने यह चरित्र किया कि अपने गणों का बल हर लिया और वह महानिर्बल होगये और दूसरी यह बात हुई कि गणों में हाहाकार शब्द होने लगा ऐसे शब्द सुन जो द्वारपर गण स्थित थे वे आश्चर्य में हुये और आत्मघात पर तत्पर हो सती के साथ मरना चाहा तथाच किसी ने अपने शिर को और किसी ने अपने अन्य अङ्गको काटकर अपने आपको वध करडाला इसीप्रकार शिवके बीसहज़ार गण उसी स्थान पर जहां सतीने अपने को जलाया था मरगये यह दशा देख सब सभा के लोग अति चिन्तित हुये और हम और विष्णु के भी ऐसे समय के देखने पर जल्दी २ श्वास चलनेलगी और सर्व मनुष्य चुप होगये कोई तो विष्णुकी स्तुति करने लगा कोई किसी की पर यज्ञ-शाला में दुःख फैल गया प्रसन्नता का कोई चिह्न बाक़ी न रहा और दक्षकी मूर्खता से सबको यह पाप लगा निदान जो गण शेष रहगये थे उन्होंने जाकर शिव से यह सब वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि दक्षने सती का अति निरादर किया और सिवाय दक्ष के और भी किसी ने सती का कुछ मान न किया अब जो उचित हो वह कीजिये शिव यह वृत्तान्त सुन महाक्रोधित हुये उस समय नारद ने भी शिवजी के निकट जा-

कर जो कुछ कि हुआ था वह सब वृत्तान्त वर्णन किया और वेदके अनुसार बदला लेना चाहा और कहा जो आप दक्षको दण्ड नहीं देते तो वेद की आज्ञा और मार्ग झूठ होता है इसी प्रकार देवतों को दण्ड न देना यह भी नीति के विरुद्ध है और दधीचि का वचन जो पहला है मिथ्या होगा और खेद है कि ब्रह्मा विष्णु भी माया के वशमें पड़ गये दधीचि के वचन को न माना और ऐसा उत्पात मचाया और दक्ष से यह काम कराया यह सुन शिवजी ने विचारा यद्यपि ब्रह्मा विष्णु देवता ब्राह्मण मुझे बहुत प्रिय हैं पर वेदकी आज्ञा सर्वोपरि है सो अपने गणों को निर्भय किया और दिव्यदृष्टि से यज्ञ का सर्व वृत्तान्त अवलोकन किया और ऐसे कुपित हुये मानों शिव रुद्र होकर प्रलय करना चाहते हैं और अपने दोनों होंठ दांत से काटने लगे और एक जटा अपने शिर से उखाड़कर पहाड़ पर मारी जिससे एक महाभयानक शब्द सुनाई दिया और तीनों लोक कांप उठे उस जटा से टूटकर दो टुकड़े बराबर अलग होगये जड़की ओर से वीरभद्र उपजे जिन्होंने यज्ञ को नष्ट कर डाला उनका शरीर महाश्याम और केश कालीघटा के समान थे और वह अग्नि के समान मालूम होता था ऊंचा इतना मानों वे परिश्रम आकाश हुआ चाहता है शोक दुःख दूर किये निर्भय मुण्डों की माला पहिने और बड़े भयानक शस्त्र लिये हुये शिर में जटा रखाये और जिनकी इच्छा सदा युद्ध करने की थी और भौंहें धन्वा ऐसी बहुत टेढ़ी महाभयानक शब्द करते हुये सिंह के समान गर्जते तीनों शिर घुमाते सहस्रभुजा और शिर से प्रणाम करते वीरभद्र उपजे और अपने शरीर के रोमों से बहुत गण उपजाये जो सब बातों में उन्हीं के समान थे वे कैलास पर्वत पर शिवकी सैन के अनुसार शब्द कर रहे थे उस समय के शब्द का कुछ वर्णन

नहीं होसक्ता एक जटा के टुकड़े से तो यह सेना उपजी और दूसरे टुकड़े से श्रीमहाकाली उपजीं उनके साथ भूत प्रेतादि करोड़ों प्रकट होकर कूदने और नानाप्रकार की लीला करने लगे और शिवके क्रोध के कारण जो उस समय श्वास निकले उससे सौ प्रकार के और तेरह भांति के सन्निपात प्रकट हुये जो संसार में बड़े उपद्रव कररहे हैं इस तरह से गणों की बड़ी सेना उपस्थित हुई जो यह जाना जाता था कि प्रलय को करेगी ऐसे समय में वीरभद्र ने दोनों हाथ जोड़ शिव से विनय की कि हमको आज्ञा दीजिये कि जो उचित हो वह करें जिसने आपकी अवज्ञा की हो जो काल भी हो तो उसको भी नष्ट करदेवें यह सुन शिव बोले कि कनखल में दक्ष अहंकार से यज्ञ करता है उसने हमसे शत्रुता कर हमें नहीं बुलाया और जोकि सती संसारी रीति के अनुसार उसके घर गईं तौभी उसने कुछ न समझकर बहुत व्यंग्य वचन कहे और यज्ञ में हमको भाग न दिया और दक्ष के सिवाय और किसी ने भी सती का कुछ आदर न किया हमारा ऐसा अपमान देख सती जलभी गईं पर किसी ने निषेध न किया इनके सिवाय हमारे भक्त दधीचि ने उस सभा को यह शाप दिया कि तुमने जो शिव का अपमान किया है तो तुमको उसका फल मिलेगा इसलिये तुम जाकर यज्ञ को भ्रष्ट कर डालो और दक्ष का शिर काटकर किसी प्रकार का कुछ विचार न करो और जिसको जैसा दण्ड चाहिये उसको निर्भय वैसा दण्ड देना कि वेद और दधीच्यादि हमारे भक्तों का वचन सत्य हो और दुर्वासा, कौशिक, मार्कण्डेय, कम्बु, उपमुनि, इन्द्र, गौतम, पुलह, पुलस्त्य, बृहस्पति, सनकादिक चारों भाई जो मेरे भक्त हैं वे सब निराश होकर यज्ञशाला में से चले गये और बड़ा भारी शाप दिया है कि यज्ञ

भ्रष्ट होजावे सो ऐसे अपने भक्तों के वचन को सत्य करना चाहता हूं इसलिये तुमको आज्ञा दी है कि तुम निर्भय होकर सब गणों को साथ ले दक्ष के यज्ञ में जावो यह शिवजी की आज्ञा जिससे क्रोध चिन्ता और हर्ष की वृद्धि हो वीरभद्रने सुनी और प्रसन्न हो महाभयानक रूप से गर्जा और फिर शिवजी की परिक्रमाकर और उत्तम स्तोत्र से स्तुतिकर करोड़ों सेना और काली को साथ ले चला।

छब्बीसवां अध्याय।

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनक! यह कथा सुन नारद ने ब्रह्मा से कहा कि जो नाना प्रकार के महाभयानक यूथप वीरभद्र के साथ गये उनके नाम सुना दीजिये और यह भी कहिये कि यज्ञ में जाकर उन्होंने क्या काम किया और किसको क्या दण्ड दिया मुझे यह बड़ी भारी चिन्ता है कि इस ओर तो शिवजी की ऐसी बलवान् आज्ञा और उस ओर विष्णु महाराज सहायक और यह कि विष्णु ने सहायता की या नहीं और जो कि दोनों पक्ष भारी हैं नहीं जाना जाता कि शिव और विष्णु क्या चरित्र करेंगे मैंने शिव और विष्णु का युद्ध कहीं नहीं सुना पर इस समय सब सामग्री उपस्थित है ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सदाशिव परब्रह्म हैं उनके सब सेवक हैं वे अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करते हैं उनके भक्त और चरण सेवक सब हैं और हम विष्णु हर उसी के तीन स्वरूप हैं तुम कुछ सन्देह मत करो जो सेना वीरभद्र के साथ चलीं उनके अधिप और जितनी सेना उस वीर के साथ थीं उनका विस्तार यह है शंखकरण के साथ एक करोड़ और कैयक राक्षस के साथ एक करोड़ और विकृत के साथ आठ करोड़ और प्रियात्रिक के साथ नौकरोड़ और सुरमन्तक के साथ छः करोड़ और विकृता-

नन के साथ में भी उतनी और जालक के आधीन बारह करोड़ और दुन्दुभी के नीचे आठ करोड़ और उतनी ही आवेश के साथ थी और अनलवरण व घण्टाकरण, कुकट, चित्रासन, संवर्त, रटिभृङ्ग, बकुली, नन्दन, प्रियभानु, सुरसरिनन्द, तारक, छाग, चण्ड, कालपुङ्ग, कपर्दि, शूलकरण, पिङ्गल, मान सुकेश, अङ्कद, भारभूत, मणि, भद्र, लाङ्गूल, बिन्दु, मयूराक्ष के साथ चौंसठ २ कोटि सहस्र सेना जुदी २ वीरभद्र की सहायता के लिये चली इसके विशेष कन्दुक और कन्दूक के साथ एक २ करोड़ सेना थी और यूथप विघ्ननासी था उसके साथ आठ करोड़ सेना थी और सन्दारक के साथ छः करोड़ और कपाली के साथ पांच करोड़ और पिप्पल के साथ एक हज़ार और सनाद के साथ भी उतनी ही और कुन्दी के साथ बारह करोड़ और शुण्डी के साथ भी उतनी ही और बुद्धतीपन के साथ आठ करोड़ और महाकेशके साथ एक करोड़ हज़ार और प्रेत के साथ बारह करोड़ और अतुलवदन के साथ एक करोड़ और महाकाल के साथ सौ करोड़ व कालक और काल के साथ भी उतना ही और इतनी ही अग्नि के और सन्नाह वीर के साथ सेना चली और रविमूर्द्धा एक करोड़ दल साथ ले क्रोध का भरा चला और कोकिल और अमोघ सुमन्त्रक इन तीनों के साथ एक २ करोड़ सेना चली और काकपाद, सन्तानिक दोनों भटों के साथ में साठ २ कोटि वीर थे और क्षुधपिङ्गल और पिङ्गल के साथ नौ २ करोड़ सेना थी और नीलनाम जो भट था उसके साथ नौ कोटि वीर थे और पूर्णभद्र भी उतना ही कटक लिये था और चतुर्वक्त्र सातकरोड़ लककेश, संवर्तिक, लोकान्तिक, मैत्र, भालकेतु इनके साथ सहस्र कोटि भूत थे और तीनहजार दिव्यात्म के साथ एक प्रकार कीसी सेना थी और काष्ठागूढ़ के साथ चौंसठ कोटि और पञ्चवदन, वृष

षडानन, विरूपाक्ष भी चौंसठ कोटि भटों के अधिपति थे और सुकेश भी चौंसठ कोटि सेना लिये हुये था और शिलाद मुनि के पुत्र के साथ एक कोटि और केतु के साथ उतनी ही और उसकी आधी सेना श्वेतनाह के साथ थी और क्षेत्रपाल के साथ असंख्य कटक चला और भैरव जो यूथपों का भी अधिप था और आप से शिवरूप है वह भी सेनापूर्वक चला उनके चलने के समय बड़ा हाहाकार हुआ और उनके साथ असंख्य कटक चला और नौ काली अपने २ स्वरूप से साथ थीं उनके नाम यह हैं काली, कात्यायिनी, ईशानी, चामुण्डा, मुण्डीर-मर्दनी, भद्रकालिका, भद्रा, त्वरिता, वैष्णवी ये नवदुर्गा नाचती हुई भैरव के साथ चलीं और इनके साथ महाभयंकर कटक था अर्थात् शाकिनी, डाकिनी, भूत, प्रेत, लाङ्किनी, मसान्ती, कूष्माण्डी, ब्रह्मराक्षसी, योगिनी के चौंसठ समूहों सहित चले सो हम कहां तक हर एक प्रकार को वर्णन करें कि जैसा कटक यज्ञ के विध्वंस करने को चला और ऐसी गर्द धरती से उठी जो आकाशतक छागई सूर्य छिप गये मानों अँधियारा होगया उस समय बड़ा भयानक अँधियारा प्रकट हुआ यह सेना सब दक्षिण की ओर चली और हरद्वार कनखल के समीप जा पहुँची उस समय यज्ञ में नाना प्रकार के अशकुन होने लगे ।

सत्ताईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जो कुछ उस समय यज्ञशाला में अशकुन हुये वह सब कहता हूं आकाश से पिसी हुई हड्डियां वर्षने लगीं और बहुतसी आश्चर्य की बातें हुईं जिससे कोई कर्म और विचार शेष न रहा और तीनों प्रकार के दुःख सबको हुये कहांतक वर्णन करूं कि ऐसे अशकुन और आश्चर्य की बातें देख सब यज्ञ के लोग बड़े अचम्भे में हुये और उनके

मनों में महादुःख उत्पन्न हुआ उनके मुख से कुछ वचन न निकला और सबके सब थरथर कांपने लगे उस समय दक्ष यज्ञकरनेवाले और भृगु यज्ञकरानेवाले ने उत्तर की ओर बहुत गर्द देखी और कहा कि यह गर्द कहां से गिरती है और कुछ मालूम न हुआ और वे सब आश्चर्य में हरएक प्रकार की बातें करने लगे उस समय दक्ष की पत्नी वीरनी ने कहा कि जो तुमने सती का अनादर किया है और तुम सब मूर्ख बनगये और सती को जलने से किसी ने मना ही न की और दक्ष ने शिव का अनादर किया और उनकी बहिनों के सामने सती का ऐसा अनादर हुआ उसका यह फल हुआ कि शिवका शत्रु कहीं आनन्द नहीं पाता चाहे मन को प्रसन्न करे पर अन्त में नरकगामी होताहै अब इस समय तो क्या होसक्ता है शिवसे सब डरते हैं जो शिव प्रलय करते हैं उनके कोप से कौन बच सक्ता है वीरनी के यह वचन सुन सब देवता और मुनि थरथर कांपने लगे और दक्ष भी भयमान और आश्चर्य में होकर विष्णु की शरण में गया और हाथ जोड़ विनय की कि आप यज्ञरूप और यज्ञ के रक्षक और यज्ञ के कर्म हो और भक्तों की रक्षा करना आपका काम है इस भय से मुझे छुड़ाइये और अपनी कृपा से यज्ञ के नष्ट होने को बचाइये आप तो सबके स्वामी हैं मुझे इस समय कुछ नहीं सूझता विष्णुने हँसकर कहा कि हम जहांतक होसक्ता है तुम्हारी रक्षा करेंगे पर तुमने जो शिवसे वैर करके अपने ऊपर उपद्रव उठाया और तुमने ऐसे संसार के स्वामीके साथ जो जगत् का प्रलय करता है द्वेष किया कौन पार लगावेगा हम और सब अमरगण मुनि उसकी रस्सी से बँधे हुये हैं उसका तप मन लगाय करते हैं उनकी बराबर संसार भरमें कौन बलवान् है कोई मनुष्य चाहे हजारों उपाय करे पर

शिव विना फल नहीं मिलता और न वह काम पूरा होगा जहां कहीं पूजनेयोग्य शिव पूजा न जावेगा और जो देव पूजने के योग्य नहीं उसकी पूजा से दरिद्र मृत्यु भय यह तीनों उपद्रव उत्पन्न होते हैं और जो कि तुमने शिव के साथ ऐसा किया उसी का कारण है सो तुमको अभी फल मिला चाहता है और वेद शिव को सबसे बड़ा कहते हैं इसलिये शिव पूजा के योग्य हैं और जब कि ऐसे शिव के वैर से यह बात हुई है तो अब कौन उसे दूर कर सक्ता है अब कुछ उपाय नहीं है ऐसा तीनों लोक में कौनहै जो शिवसे न डरता हो यह सुन दक्ष अति चिन्तित हुआ और सबलोग महादुःखी और शोकवान् हुये और महाभयवान् होय कहने लगे कि अब कुछ कुशल नहीं क्योंकि कोई रक्षक न रहा यही बातें होरही थीं कि वीरभद्र अपने कटक समेत पहुँच गये और बड़े ज़ोर से शब्द किया और भैरव और कालिका आदिभी अपनी २ सेनासमेत पहुँचे उस समय वीरभद्रका यह स्वरूप था कि पांच मुख तीन नेत्र दश हाथ जटा रखाये हुये भयंकररूप मस्तकपर अर्धचन्द्र शरीरमें सर्प लपेटेहुये रुद्राक्ष पहने बैल पर आरूढ़ भस्म धारण किये उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग महाकठोर वज्रसमान अतिसुन्दर हाथों में नाना प्रकार के शस्त्र लिये छत्र चँवर धरेहुये शिव शिव कहते महाविचित्र सुन्दर स्वरूपसे अलंकृत थे और जिस रथ पर कि आरूढ़ थे वह पच्चीसयोजन ऊंचा था जिसको दशलाख सिंह खींचते थे और शार्दूल और हाथी आदि चारों ओरसे रक्षा को रहाकरते यूथप धावा करनेलगे और नाना प्रकार के युद्धबाजे बजे अर्थात् भेरी, शङ्ख, पटह, गोमुख, शृङ्ग, उपङ्ग, मृदङ्ग आदि बजे और इन्द्र, वायु, यमराज, कुबेर, वरुण, अग्नि, दिक्पाल अपने २ वाहनों पर आरूढ़ होकर आये और दक्ष ने उन सबसे कहा कि यह यज्ञ हमने तुम्हीं सबके बल

पर किया था अब हमारी सहायता करो और इसी तरह सबसे कहा और विष्णु के चरणों पर शिर रख दिया और कहा कि हे विष्णो ! आप जगत् के रक्षक और शुभकर्मों के साक्षी हो तुम्हारी कृपा से संसार का पालन होता है इसलिये आपको यज्ञ की रक्षा करनी उचित है विष्णुजी बोले हां जहां तक हमको अधिकार और बल है हम यज्ञ की रक्षा करेंगे पर तुम्हारे कर्म स्मरण कर हमारी बुद्धि आश्चर्य को प्राप्त होती है तुमने शिव से वैर क्यों किया उस ब्रह्मस्वरूप शिव के हाथ से कौन बचानेवाला है हम तुम्हारे लिये बुरा भला कुछ नहीं जानते तुम केवल अहंकार से काम रखते हो ईश्वर के सिवाय और अन्य फलदायक कौन है वही फल देता है जो मनुष्य कि ईश्वर के प्रकाश को नहीं जानते वह सुख दुःख के कार्य को भी नहीं जानते और सौ करोड़ कल्प तक नरक में रहते हैं और कर्मों की फांसी कण्ठ से नहीं निकलती वारम्वार उत्पन्न होकर मृत्यु होते हैं वेद धर्मशास्त्र और पुराण सब उसी का गुण गाते हैं परन्तु फिर भी वह सदाशिव को नहीं जानते वे शिव तीनों गुणों में पवित्र हैं इससे तुमको योग्य है कि श्रीशिवजी की शरणागत में जाओ कि तुम्हारा यज्ञ सम्पूर्ण हो जाय यह वार्त्ता होही रही थी कि वीरभद्र की सेना चारोंओर फैलगई इस प्रकार से कि जैसे सागर आकाश को जाता है और विष्णुजी को ब्रह्मज्ञान और ज्ञान की वार्त्ता कहतेहुये देखकर हँसपड़े गणों की लड़ाईपर तय्यार देख इन्द्र ने अपना वज्र सँभाला और इच्छा की कि गणों से युद्ध करूं वह सामने हुआ और भी युद्ध के निमित्त इन्द्र के सम्मुख खड़े हुये और शिवजी का ध्यान किया।

अट्ठाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! इन्द्र की सेना युद्ध करने

लगी और बड़े २ हथियारों से युद्ध होनेलगा और अग्नि
अह्निक तोमर बाण और पट्टिशआदि हथियारोंसे युद्ध होने व
भांति २ के बाजे बजने लगे और भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग, डफ
और दुन्दुभि, पटह, निशान, डिमडिम आदि जो प्रसिद्ध हैं
उनकी ध्वनि चारोंओर फैलगई और युद्ध में सर्ववीर अपनी २
सामर्थ्य और वीरता प्रकट करते थे जिस समय कि गणों ने
वीरता प्रकट की उस समय भृगुजी ने उच्चाटन मन्त्र का जप
करके गणों को अशक्त कर दिया और इन्द्र की सेना ने उनको
महादुःखी करदिया और गदा के प्रहार से सहस्रों मनुष्यों को
मारडाला ऐसा कष्ट गण न सहकर भागगये और इन्द्र जीते
इसका कारण यह है कि श्रीशिवजी ने प्रथम ब्राह्मण की बड़ाई
प्रकट की फिर वीरभद्र ने अपनी हार देखकर बड़ा क्रोध किया
और भूत प्रेत आदि सब अपने पीछे करके आप आगे आये
और जो मुख्य बड़े २ भट बैल पर चढ़े थे उनको सेना के
आगे रक्खा और आप त्रिशूल हाथ में लेकर इन्द्र के साथ
बड़ा युद्ध किया और देवता आदि गणों संयुक्त घायल हुये
कोई चोट से भाग गया और कोई टुकड़े टुकड़े होकर गिर
पड़ा इस तरह देवताओं की सेना नष्ट हो गई और भाग भाग
कर अपने घरों को चले गये केवल इन्द्र उस शिवालय में
दृढ़ता से खड़े रहे और अपने गुरु से पूछा कि हम किस प्रकार
जीतें वह यत्न बताइये क्योंकि तुम देवतों की सेना के रक्षक हो
बृहस्पति ने कहा कि जो कुछ हो सके जो विष्णुजी का वाक्य
था वही हुआ मन्त्र, तन्त्र, ओषधि, वेद, धर्मशास्त्र और पुराण
और विचार और प्रतीत कोई शिवमहिमा को नहीं जानते
केवल शान्ति धारणकर जो शिव के भक्त हैं वही उनको जानते
हैं वे अपने भक्त के निमित्त अवतार लेते हैं और संसारी

मनुष्यों की रीति के अनुकूल लीला और चरित्र करते हैं तुम बड़े मूर्ख हो जो ऐसी वार्त्ता हम से कहते हो और लड़कों के सदृश शिवजी से युद्ध करते हो यह शिवजी की आज्ञानुसार आये हैं और यज्ञ को नाश करेंगे और किसी का किया कुछ न चलेगा ऐसे वचन देवताओं के गुरु से सुनकर सब लोकपालों को बड़ी चिन्ता हुई उस समय वीरभद्र ने कहा कि तुम्हारी सब वार्त्ता व्यर्थ और लड़कों के सदृश है तुम सार वस्तु को नहीं जानते जो जो भाग लेने यज्ञ में आये हैं वे हमारे निकट आवें और यज्ञ के भाग लेवें और इन्द्र, अग्नि, कुबेर, वरुण, सूर्य, शशि और देवता आदि एक २ का नाम पुकार कर कहा कि हमारे निकट आवो और अपना २ भाग लो अब मैं तुमको सुख देता हूं और इस प्रकार प्रसन्न करता हूं जिससे तुम चेत जाओ कि शिवजी ऐसे हैं यह कहकर क्रोध से तीर चलाये जिनके लगने से इन्द्र घायल होकर अपने शरीर में उनके सहने की सामर्थ्य न देखी तो देवतों सहित चारों ओर भाग गये और जब इन्द्र देवतों संयुक्त भाग गये तब वीरभद्र के गण गर्जने लगे और फिर वीरभद्र अपने गणों को संग लिये यज्ञ के निकट आये उस समय सब ऋषीश्वर शोकवान् हुये और विष्णु की रक्षा में गये और भयवान् हो प्रणामकर शिर नीचे किये प्रार्थना की कि हम सब आपकी शरणागत हैं हम पर दयालु हूजिये और रक्षा कीजिये ऐसे वचन ऋषीश्वरों के सुनकर विष्णुजी ने लड़ाई की इच्छा की और सब हथियार हाथ में लेकर वीरभद्र के सम्मुख खड़े हुये यह वार्त्ता सब वेद और पुराण कहते हैं कि भक्तों के निमित्त बड़ी चिन्ता शोक और दुःख विष्णु को प्राप्त होता है वीरभद्र ने क्रोध से विष्णु को कहा कि हे विष्णो! तुम यहां किस

निमित्त आये और अपने तेज और प्रकाश से क्यों रहित होते हो और दक्ष के क्यों रक्षक हुये हो तुमको यह अयोग्य है तुम और इन्द्र दोनों भाग लेने आये हो तुम भी तृप्त होगे, जैसा कि शिवजी ने हमसे कहा है ऐसे वचन वीरभद्र के सुनकर विष्णु ने हँसकर कहा कि हे वीरभद्र! तुम शिव के गण और उन्हीं के तेज से उत्पन्न हुये हो और पूजने के योग्य हो जिस कारण हम दक्ष के यहां शिवजी को छोड़कर आये वह हम कहते हैं कि दक्ष हमारे भक्त ने हमारी बड़ी सेवा की और मुझको यहां बुलाया उसकी भक्ति से मैं यहां आया क्योंकि मैं भक्ति के आधीन हूं और इसी प्रकार शिवजी भी अपने भक्तों के आधीन हैं अब हम तुमको अपनी शक्ति से दूर करते हैं और तुमको योग्य है कि अपनी शक्ति से हमको हटाओ और जिस काम को आये हो वह करो विना जीते तुम यज्ञ के निकट न जाने पावोगे वीरभद्र यह श्रवणकर बहुत हँसे और सहनशीलता से कहा कि आप में और शिवजी में कुछ भेद नहीं है जो मनुष्य कि भेद जानते हैं वे शोकवान् होते हैं हम तुम्हारे दोनों के सेवक हैं इस कारण हम आपको कष्ट नहीं देते हम को श्रीसदाशिवजी की आज्ञा करनी है मेरा क्या दोष है तुमने जान बूझकर ऐसा किया है और अपने नगर को न गये अब जैसा योग्य हो वैसी आज्ञा दीजिये तब विष्णुजी ने कहा कि तुम हमारे साथ युद्ध करो और चिन्ता न करो तुम जीतोगे जब हम तुम्हारी चोट से घायल हो कर अपने नगर को जायेंगे उस समय जो योग्य हो वह करना यह कहकर वीरभद्र ने हथियार उठाया और बाजा बजनेलगा और विष्णुजी ने भी अपना शङ्ख फूंक दिया जिससे सर्व संसार में हाहाकार हो गया और जो मनुष्य कि भाग गये थे वे भी चपल हो गये और

इन्द्र भी देवतों समेत लौट आये और विष्णु के सेवक होकर फिर युद्ध स्थान में हाहाकार करनेलगे इसी प्रकार बड़ा संग्राम हुआ और सर्व वीर अपनी जीत कहकर युद्ध करनेलगे ।

उन्तीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! विष्णु के संग नन्दी ने युद्ध किया और अनल और मुनिभद्र युद्ध में सम्मुख हुये और यमराज और महाकाल बराबर खड़े हुये और निर्ऋति और मुण्ड ने लड़कर वीरता दिखाई और वर्ण के संग मुण्ड और वायु के संग भृङ्गी ने युद्ध और मारधार किया और कुबेर ने अज्ञान अवस्था में कूष्माण्डपति के साथ युद्ध करने की इच्छा की इस प्रकार गणों के साथ सर्व दिक्पतियों ने युद्ध किया फिर इन्द्र ने अपना वज्र हाथ में लेकर नन्दी को मारा और नन्दी ने क्रोध संयुक्त अपना त्रिशूल इन्द्र के मारा कि उसकी चोट से इन्द्र अचेत होकर पृथ्वी पर गिरपड़े परंतु झटपट उठकर लड़ने लगे और अनल ने मुनिभद्र को शक्ति की चोट से घायल किया और मुनिभद्र ने अभय होकर अनल के त्रिशूल मारा और कालदन्त ने यमराज से युद्ध करके दुःख दिया और इसी प्रकार से बड़े सरदार बहुत लड़े और कोई युद्धस्थान से न भागा और देवता अच्छीतरह गणों से लड़े और कोई न हारा उस समय भैरवनाथ अतिक्रोधवान् होकर योगिनियों की सेना लेकर देवतों की सेना में घुसगये और सबको घायल करके सबका रुधिर पिया और ऐसा अपना स्वरूप भयंकर बनाया कि अनन्तदेवता देखकर भागगये और सबदेवता भैरवनाथ जी के तेज और प्रकाश से महादुःखी हुये और भय से भैरव भैरव बारम्बार कहने लगे और इसी प्रकार क्षेत्रपाल ने देवतों की सेना के अन्दर घुसकर कष्ट दिया, अन्त में नवकाली देवतों

की सेना को खानेलगीं और देवतों के शिर तोड़कर रुधिर पीने लगीं और भैरवजी क्षेत्रपाल और काली ने देवता और मुनीश्वरों को अधिक क्लेश दिया और हाहाकार मचगया और देवतों ने भागकर विष्णु की रक्षा ली और कहा कि इस समय हम बहुत दुःखी हैं यह समय आपकी सहायता का है और तुम सर्व देवताओं के स्वामी हो और इसीप्रकार अधिक प्रशंसा की और कहा कि भैरवजी क्षेत्रपाल और कालीजी ने यह हमारी गति की जो योग्य हो वह कीजिये विष्णुजी यह दुर्गति देवतों की देखकर क्रोधवान् हुये और अपना चक्र उठाकर क्षेत्रपाल को मारा जिससे दशों दिशा जलने लगीं ऐसी ज्योति जलती हुई अपने ओर आते देखकर क्षेत्रपाल ने अपने मुखमें डाल ली विष्णुजी ने अपनी गदा को क्षेत्रपालके गाल पर मारा जिससे चक्र मुख से गिरपड़ा यह गति देख कालीजी विष्णुजी के सम्मुख हुईं विष्णुजी ने बाण बरसाये कालीजी ने सबको खा लिया विष्णुजी ने नन्दक हथियार मारा कालीजी ने उसको पकड़कर तोड़ डाला तब विष्णुजी कालीजी से युद्ध त्याग भैरव जी के सम्मुख हुये और दोनों में बड़ा युद्ध हुआ भैरवजी ने विष्णुजी के चक्र को काटडाला और अपने बाण विष्णुजी पर छोड़दिये जो मृत्यु के सदृश विष्णु के निकट चले परन्तु विष्णुजी ने उनको बीच से काट डाला इसीप्रकार भैरवजी ने विष्णुजी के बाण निष्फल कर दिये बहुत समयतक यह युद्ध रहा जिसको सर्व देवता आदि देखते रहे फिर भैरवजी ने प्रलय करनेवाला त्रिशूल जो विना मारे नहीं छोड़ता हाथ में लिया यह गति देखकर वीरभद्र दौड़े और भैरवजी की प्रशंसा करके मना किया कि ऐसी आज्ञा शिवजी की नहीं है ऐसा क्रोध न करो सेवक अपने स्वामी पर ऐसा नहीं करते ऐसा कहकर त्रिशूल का चलाना

बन्द करादिया और आप विष्णुजी के सम्मुख आखड़े हुये उस समय दोनों में महायुद्ध हुआ और सर्व प्रकारके हथियार चारों ओर फेंकेगये अन्तमें विष्णुजी ने क्रोध करके अपनी योग मायासे अपने सदृश गणोंको उत्पन्न किया वह गिनती में अनन्त थे वह सब गरुड़ोंपर चढ़े शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म आदि लिये शिवगणों से लड़नेलगे और तीरों को बरसाकर शङ्ख बजानेलगे और चक्र और गदा आदिसे शिवगणों को दुःखी कर दिया वीरभद्र ने यह अवस्था देखकर शिवजी का ध्यान किया और त्रिशूलको चलाया जिससे विष्णुगण सब जलने लगे और गुप्त होगये विष्णुने क्रोधकर अपनी गदा को वीरभद्र के शिरपर मारा और इच्छा की कि वीरभद्र को मारडालूं ऐसा विचारकर वीरभद्र ने अपना त्रिशूल विष्णुजीकी छाती पर मारा जिसकी चोटसे विष्णुजी पृथिवी पर गिरपड़े और हाहाकार हुआ परन्तु विष्णुजी फिर क्रोधवान् होकर पृथिवी से उठे और अपने चक्रको हाथ में लिया उस समय विष्णुजी का स्वरूप विचित्र होगया नेत्र लाल और भयंकर रूप भासता था और ऐसा था कि अपने चक्रसे अन्तकाल करेंगे इस प्रकार के तेजको वीरभद्र ने देखा और शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने वीरभद्र को अभय करके शत्रुके सँभाल लेने की सामर्थ्य कृपा की वीरभद्र बहुत प्रसन्न होगये और विष्णुजी पर्वत की चोटी के सदृश अचल खड़े होगये और वीरभद्र ने अपने पवित्र बाणों से विष्णुजी के धन्वा के दो टूक करडाला और विष्णुजी प्रबोधन मन्त्र को जपकर अचलता से मुक्त हो अपनी सामर्थ्य से खड़े होगये उस समय हमने शिवजी की लीला समझ कर विष्णुजी से कहा कि हे नाथ! होनी किसी के मेटने से नाश नहीं होती वह अवश्य होती है आपने यद्यपि यज्ञ की रक्षा की

परन्तु उसकी भाग्य विपरीत है कि दक्ष पर बड़ी आपदा पड़ेगी अब तुम लड़ाई न जीतोगे परन्तु युद्ध से भाग कर चिन्ता करोगे और वीरभद्र अवश्य यज्ञ को नष्ट करेगा इस कारण केवल दधीचि मुनि का शाप है क्योंकि जो ब्राह्मण का वाक्य सत्य न माने तो सर्व सृष्टि नास्तिक होकर छली होजाय और जिस समय कि शिवजी फिर दयालु होंगे उस समय सब बिगड़ा हुआ कार्य बनजावेगा और तुम्हारी और शिवजी की लीला अपरम्पार है उसको कोई क्या जाने और वेद कहता है कि तुम में और शिवजी में कुछ भेद नहीं है यह वार्त्ता हमारी सुनकर विष्णुजी अपने लोक को चलेगये और हम भी अपने लोकको चलेगये और विचारा कि जब शिवजी कृपादृष्टि करेंगे और हमको प्रतीति थी कि वह सबको प्रसन्न रक्खेंगे ।

तीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! जिस समय विष्णु अपने लोकको चलेगये उस समय यज्ञ अति शोकवान् होकर और हिरण का स्वरूप धारण कर भाग गया परन्तु वीरभद्र ने उसको स्थान पर जाते हुये पकड़ लिया और उसके शरीर से शिर काटडाला और यज्ञकुण्ड में डाल दिया और क्रोधवान् होकर बारम्बार गर्जते हुये यज्ञके निकट आया इसी प्रकार शिवगण यज्ञके निकट आये और भैरव क्षेत्रपाल और काली आदि ने सबको चोरों के सदृश पकड़ा और गृह गिरा दिया कोई गण देवतों को पकड़ता था कोई विष्णुके घण्टे को तोड़ता था कोई मुनीश्वरों को बांधता था कोई क्रोध सहित यज्ञकुण्ड को ठंढा करता था और जल डालता था उस समय शत्रुओं के संग महायुद्ध होता था और मुद्गर की चोट से हाथ पांवों को काटते थे फिर सब बासन तोड़ कर नदी में फेंक दिये और देवताओं

के शरीर काटडाले और सिंह के सदृश ध्वनि कर अनन्त मनुष्यों को दुःखी किया किसी ने यज्ञकुण्ड को खोदडाला और सभागृह अन्तःपुर विहारस्थल को जड़से खोद डाला वीरभद्र ने दक्षको पकड़ लिया और नन्दी ने भग अर्थात् सूर्य को बन्द किया और मणिमान् ने भृगु को पकड़ा और चण्डी ने पूषाको बांधा इसी प्रकार अनेक देवतों आदिको बन्द किया यद्यपि कुछ देवता गुप्त होगये थे परन्तु गणों ने ढूंढ़कर सबको अपनी अधीनता में रक्खा और कोई देवता और मुनीश्वर आदि नहीं बचा सब घायल होगये थे मणिमान् ने अधिक क्रोधसे भृगुकी मूंछ उखाड़ डाली और नगर में सबको ऐसा स्वरूप दिखलाते हुये घुमाया कि सब भयभीत हुये और नन्दीश्वर ने महाक्रोध से भृगु के नेत्र निकाल लिये इस कारण कि उन्होंने दक्षको बहकाया था और पूषा के दांत चण्डी ने तोड़ डाले जिनको खोल कर शिवजी को हँसे थे और वीरभद्र ने झटपट बड़े क्रोधवान् होकर दक्षप्रजापति को पृथिवी पर दे मारा और उसकी छाती पर चरण रखकर उसके शिरको भिन्न करना चाहा और यद्यपि हथियारों से उसे काटना चाहा परन्तु न उसका शिर कटा और न उसको कोई कष्ट हुआ उस समय वीरभद्र ने शिवजी का ध्यान किया और आज्ञा पाकर दक्षके शिरको जोर से मरोरने के पीछे बैठकर तोड़ डाला और अग्नि में डाल कर जलादिया और फिर क्रोध करके उसके शरीर को काटडाला और कश्यप और धर्मराज के हाथमें रख दिया और धृष्टनेमि को महा दुःख दिया और अङ्गिरा को सन्तान समेत लात मारी और जिस तरह शान्तु को मारा उसी तरह अन्य मुनीश्वरों को मारडाला और कइयों को घायल और कइयों को अग्नि में जलादिया और अपने नख से कश्यप की स्त्री की नासिका काटडाली जिससे ऐसे देवतों

की माता ऐसे अंग से हीन होगई और जैसा जिसको योग्य था उसी प्रकार का उसको फल मिला विस्तार के भय से नहीं कहा ऐसे श्रीसदाशिवजी जो सबसे उत्तमोत्तम हैं उनसे शत्रुता करके ऐसा संसार में कौन है जिसको सुख प्राप्त हो उस समय श्रीसदाशिवजी ने सबको यथायोग्य फल दिया और सब देवता जो विना शिवजी के अपना भाग लेना चाहते थे भाग गये इस प्रकार दक्षका यज्ञ नाश होगया हे नारदजी! निश्चय जानो कि इसी प्रकार शिवजी के शत्रु दुःख पाते हैं और उनका कोई रक्षक नहीं होता इस सृष्टि में ऐसा कोई नहीं जो दुःखी न हुआ हो यद्यपि मनुष्य सहस्र युक्ति करे तो भी विना पूजन शिवजी के मुक्ति नहीं मिलती वे सबके स्वामी हैं उनकी महिमा अति कठिन है उनको कोई नहीं जानता जो प्रीति संयुक्त शिव पूजन करते हैं उनको कोई क्लेश नहीं होता क्योंकि श्रीसदाशिवजी उनकी सहायता सर्वदा करते हैं और जो शोक और दुःख अपने पाप कर्मों से होता है उसको भी शिवजी नष्ट कर डालते हैं जो मनुष्य संसार में शिवजी के प्रतिकूल है उसको सर्वदा सुख नहीं होता वह अति दण्ड से नरक में डालाजाता है जो दुर्गति दक्ष की हुई वही शिवजी के शत्रुओं की गति होती है और जो कार्य विना शिवजी के कियाजाता है उसका परिणाम ऐसाही होता है वीरभद्र इस प्रकार यज्ञ का नाश करके श्रीसदाशिवजी के सम्मुख गये।

इकतीसवां अध्याय।

सूतजी बोले हे शौनकादि सुनियो! ब्रह्माजी की यह कथा सुन कर नारदजी आश्चर्यवान् हुये और ब्रह्माजी से प्रार्थना की कि किस निमित्त देवताआदि विष्णुसहित दक्ष के यज्ञ में विना शिवजी के गये और फिर विष्णुजी ने शिवगणों के संग प्रीति

और मित्रता से युद्ध किया और फिर विष्णुजी यज्ञकी रक्षा क्यों न करसके इसका कारण प्रसिद्ध कीजिये ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि पिछले समय में हमारा एक पुत्र छू नाम था और वह राजा था और दधीचि उसका भ्राता था वह आनन्दपूर्वक रहते थे और छू मान के कारण अहंकारी होगया था और सबसे अपने को उत्तमोत्तम विचारता था और च्यवन के पुत्रके संग बड़ा विवाद किया छू कहता था कि राजा सबसे उत्तम है और दधीचि का वाक्य था कि सबसे उत्तम ब्राह्मण है उसको सब प्रणाम करते हैं परन्तु छू नहीं मानता था और उसके प्रमाणों को तर्कणा समेत काटकर कहता था कि देखो आठो दिक्पति जो राजा हैं वह प्रजापति और ईश्वर कहे जाते हैं उनका सब मान करते हैं और उन्हीं का सब पूजन करते हैं इससे योग्य है कि तुम भी हमारी पूजा करो ऐसा वाक्य छू का सुनकर दधीचि ने बायें हाथ से एक थप्पड़ शिर पर मारा और ब्राह्मण की बड़ाई को प्रसिद्ध कर दिखाया छू ने वज्र को हाथ में उठाया और दधीचि को मारकर जीतलिया दधीचि पृथिवी पर गिरपड़ा और शुक्रको स्मरण किया शुक्र झटपट आये और दधीचि का शरीर जो भिन्न २ धरती पर पड़ा था इकट्ठा किया और दधीचि का पूर्व कासा स्वरूप बना दिया ऐसी आरोग्यता प्राप्त करके दधीचि शुक्रसे कहने लगे कि अब ऐसी युक्ति बताइये जिससे हम अटल होजायँ शुक्रजी ने कहा कि ऐसा वरदान केवल शिवजी दे सक्ते हैं जिनका ब्रह्मा विष्णु और देवता आदि सब ध्यान करते हैं उन्हीं के पूजन से हमने संजीवनी विद्या प्राप्त की है उनका नाम मृत्युञ्जय है देखो बाणासुर अटल है शिवजी का कोई सेवक शोकवान् नहीं वह उन्हीं की भक्ति से नृप मुनि सर्व ब्राह्मणों के राजा होकर अटल हैं और अपने कुलसहित शिव-

पुरी में हैं दुर्वासा शिवजी की सेवा से तीनों लोक के राजा हुये और तीनों प्रकार का उत्तम चरित्र करके धर्म को ठहराते हैं विश्वामित्र शिवसेवासे क्षत्रिय होकर ब्राह्मणों के उपनाम से प्रसिद्ध हुये और उन्होंने नवीन सृष्टि उपजा कर भांति भांति की वस्तु उत्पन्न की ब्रह्माजी रात्रि दिन उनके पूजन में दृढ़ रहते हैं और मार्कण्डेय ऋषीश्वर शिवजी के योग करने से कल्प सम्पूर्ण होने पर भी जीते हैं और इन्द्र शिवजी की सेवासे ऐसे हैं कि जिनका शत्रु किसी प्रकार नहीं बचसक्ता और विष्णुजी शिवपुरी के सेवक हैं और शिवजी भी इनसे दूर नहीं रहते और शक्ति रात दिन की सेवा से त्रिलोक में अधिकारिणी हैं और तीनों राम अर्थात् श्रीरामचन्द्रजी व श्रीपरशुरामजी और श्रीरामबलभद्रजी उनके पूजन और योग से कैसे उदार हुये हैं और विकट अङ्गिरस और गौतम भी शिवसेवासे अटल हैं और बृहस्पति ने बड़ी पदवी प्राप्त की है और इन्द्रदेव मुनि शिवजी का नाम विना इच्छा लेकर शिवगणों में मिलगये हैं जिनका नाम चण्ड प्रसिद्ध है और नन्दी वैश्यवर्ण ने शिवसेवा से कैसी पदवी प्राप्त की और महाकाल व्याधा वेदके विरुद्ध शिवपूजन करके मुक्त हुआ और ब्रह्मा और विष्णुजी ने परस्पर वार्त्ता करके अन्त में शिवजी की भक्ति के आदि और अन्त को न पाया देखो एक राक्षसी ने धोखे से शिवमन्दिर को धोया और कैलास में पहुँचकर फिर राजाकी लड़की हुई और एक चोरने शिवालय में शरीर छोड़कर परमपद पाया इस कारण जो तुम ऐसी इच्छा करते हो तो शिवपूजन करो दधीचि यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहा कि आप मुझको मन्त्र दे दीजिये तब शुक्रजी ने वही संजीवनी जो श्रीसदाशिवजी से पाईथी दे दई और ब्रह्माजी ने भी शिक्षा की दधीचि ने मन्त्र जपकर शिव

पूजन निश्चिन्त होकर किया शिवजी प्रसन्न हुये और दधीचि के निकट आये और कहा कि वरदान मांगो और कृपादृष्टि से देख लिया दधीचि ने शिवजी का दर्शन पाकर बड़ी स्तुति की और कहा कि मुझको भक्ति दीजिये और मेरी हड्डियां वज्र के सदृश बना दीजिये कोई मुझको मार न सके और नम्रतापूर्वक किसी से वार्त्ता न करूँ यह तीनों वरदान मुझको भक्ति से अलग दीजिये शिवजी हँसे और वरदान देकर अन्तर्धान होगये ऐसा वरदान लेकर दधीचि राजा छू के निकट आये और आते हुये छू के शिर में एक लात मारी और कहा कि कौन पड़ा है छू ने क्रोध में आकर अपना वज्र दधीचि के हृदय पर मारा जो निष्फल हुआ और उसे कुछ भी पीड़ा न हुई और यद्यपि छू ने बड़ा युद्ध किया परन्तु दधीचि को कुछ भी दुःख न व्यापा तब तो छू ने जाना कि शिवजी ने दधीचि को वरदान दिया है लज्जावान् होकर छू ने विष्णु पूजन मन लगाकर किया और विष्णु का जप किया विष्णुजी अति प्रसन्न हुये और लक्ष्मी संयुक्त गरुड़ पर चढ़े हुये छू को दर्शन दिये छू ने प्रणाम किया और दोनों हाथ बांधकर स्तुति की और कहा दधीचि एक ब्राह्मण प्रथम हमारा मित्र था परन्तु अब शत्रु होगया है वह शिवजी के वरदान से वज्रतनु पाकर मारने के योग्य नहीं रहा उसने हमारा अनादर करके बायें पैरसे मेरे शिर पर लात मारी और अहंकारसमेत कहा कि मैं त्रैलोक्य में निर्भय हूँ उसको जीतने के निमित्त आपका मैंने पूजन किया और इस कारण कि आप अहंकार का नाश करते हैं इससे मेरी विजय कीजिये उस समय विष्णु भगवान् शोकवान् हुये और विचारा कि जो मैं इस समय अपने भक्त को वरदान नहीं देता तो वेद की बड़ाई में भेद होगा और जो वरदान देता हूँ तो भी वेद झूठा होता है क्योंकि प्रथम

ब्राह्मण तो सनातन से निर्भय है और शिवके भक्त को योग्य है कि यथाशक्ति अपने भक्त का भला करे और दोनों वार्त्ता को रक्खूं हमारी कोई युक्ति न चलेगी और शिवकी सृष्टि मुझसे मोहित न होगी यह विचार कर कहा कि ब्राह्मणों को किसी समय भय नहीं होता है राजन्! इस बातको श्रवण कर लीजिये और शिवभक्त को तो कभी किञ्चित् भी किसी प्रकार का भय नहीं होसक्ता परन्तु हम तुम्हारे रक्षक होंगे जिससे दधीचि अपनी हठको त्याग देगा और उसको शाप दिलवायेंगे।

बत्तीसवां अध्याय।

ऐसी वार्त्ता विष्णुजी की सुनकर राजा क्षूने अङ्गीकार किया और विष्णुजी ब्राह्मणों का रूप धार छल से दधीचि के निकट गये और प्रणाम करके कहा कि मुझको एक वरदान दीजिये जब विष्णुजीने अपने भक्त के हेतु ऐसा मनोरथ वर्णन किया तब दधीचि ने विष्णुजी के मनोरथ को जानकर निडर उत्तर दिया कि तुम साक्षात् विष्णु भगवान् हो मेरे संग छलरूपी ब्राह्मण का वेष धारण कर आये हो हमारे ऊपर शिवजी प्रसन्न हैं इससे हम जान गये हैं कि राजा क्षू ने तुम्हारा अति पूजन किया है कि मुझको जीतलो सो तुमको योग्य है कि सत्यस्वरूप दिखावो और अपने घर चले जावो शिवजी की कृपा से हम त्रिकाल की सब वार्त्ता जान लेते हैं हम त्रैलोक्य में किसीसे भय नहीं करते यह वचन श्रवण कर विष्णुजी मुसकराये और कहा कि तुम सत्य कहते हो कि शिवजी की रक्षा के कारण हम निर्भय हैं परन्तु मैं दण्डवत् करके यह प्रार्थना करता हूं कि मेरा मनोरथ अङ्गीकार करो और क्षू के वरदान को पूर्ण करो यह सुन कर दधीचि ने विष्णुजी से कहा कि मैं शिवजी की दया से किसी को नहीं डरता मेरे संग ऐसी चतुराई न करो और अपने घर

जाओ तब विष्णुजी ने कहा कि हे मूर्ख! हमारे उपदेश को नहीं मानता मुझसे शत्रुता करके कौन सुखी रहेगा हमने रावण आदि महावीरों का नाश कर दिया हमारी अवज्ञा न करो वरन चक्र से तुमको मारूंगा दधीचि ने उत्तर दिया कि हां सत्य है कि आप त्रैलोक्य के जीतने के योग्य हैं और करोड़ों असुर, दैत्य और शत्रुओं को आपने मारा परन्तु शिवभक्तों पर आप की कुछ नहीं चलती और तुम्हारा सुदर्शन चक्र निष्फल होता है देखिये वही चक्र आपका तारक के कण्ठ में लगकर निष्फल हुआ और रावण के कण्ठ में कुछ भी न कर सका और जब कि तुमने शिवपूजन किया और उन्होंने प्रसन्न होकर तुमको बाण दिया और आज्ञा दी तब तुमने रावण को जीत लिया तुम भले प्रकार समझो विना शिवजी की भक्ति के कोई कार्य लाभदायक नहीं होता सो जैसी आपकी इच्छा हो वैसा मेरे साथ कीजिये मैं शिवजी की कृपा से अभय हूं यह सुनकर विष्णुजी ने बड़े क्रोध से अपना चक्र दधीचि पर छोड़ दिया परन्तु वह दधीचि के शरीर में लगकर निष्फल होगया विष्णुजी अपनी ऐसी हार देखकर शोकवान् हुये उस समय दधीचि ने मुसकरा कर कहा कि हे विष्णुजी! आप आश्चर्य न करें मैं इसका कारण विस्तार से वर्णन करता हूं कि आपने यह चक्र बड़े यत्नों से प्राप्त किया है परन्तु वह मुझको अपना मित्र समझकर नहीं मारता चाहे कोई हथियार मुझपर अपनी शक्तिपूर्वक चलाओ और कुछ भी अपना बल शेष मत रक्खो विष्णुजी ने ऐसा वचन सुनकर बड़ा भयानक नाद किया जिससे सब सेना विष्णुजी की जिसमें देवता, उपदेवता और वैकुण्ठवासी भी थे आये और विष्णुजी दधीचि के संग युद्ध करने लगे और देवतासंयुक्त सब प्रकार के हथियार दधीचि पर मारे और अकेले दधीचि पर सबने

चढ़ाई की और धर्म के प्रतिकूल एक मनुष्य के संग सबने लड़ना चाहा परन्तु दधीचि निर्भय रहा और एक मुट्ठी कुश की लेकर देवतों की ओर चलाई वह अति पवित्र त्रिशूल होकर अन्तकाल की ज्योति के सदृश चारों ओर प्रकाशित होकर सबको जलाने चला और चाहा कि विष्णु और देवता आदि को नष्ट कर दें परन्तु देवतों ने हथियार डाल दिये और भाग चले उस समय विष्णुजी ने माया से अपने सदृश करोड़ों पार्षद अपने पवित्र शरीर से उत्पन्न किये परन्तु दधीचि ने शिवजी का ध्यान करके सबको जला दिया अपने गणों को नाश हुये देखकर विष्णु ने एक आश्चर्यवान् चरित्र किया अर्थात् विराट्रूप प्रकट करके अपने शरीर में तीनों लोक और जो कुछ कि उसमें था वह सब दधीचि को दिखा दिया परन्तु उस समय भी दधीचि निडर रहा और कहा कि यह आप माया न करें यह केवल मनकी शक्ति है कुछ ऐश्वरीय शक्ति नहीं तुम हमारे शरीर में यह गति देख लो और देखने के पीछे हमसे छल न करो यह कहकर दधीचि ने शिवजी का ध्यान किया और सर्वजीव अपने शरीर से प्रकटकर दिखाये ऐसी गति देखकर सब देवता चले गये और विष्णुजी की इच्छा फिर युद्ध करने की हुई उस समय हमने मना किया कि हे विष्णो! ऐसा हठ क्यों करते हो योग्य और अयोग्य कार्य नहीं समझते आपकी चतुराई और शक्ति कहां गई वेद के विपरीत चलते हो क्या तुम शिवजी के तेज से अचेत हो जो त्रैलोक्य को क्षणमात्र में नष्ट करते हैं जो वेद और धर्मशास्त्र असत्य हो जावें तो तुम निश्शङ्क दधीचि को जीत सक्ते हो यह हमारे वचन सुनकर विष्णुजी युद्ध से रहित हुये और दोनों हाथ जोड़कर क्षू को संग लिये दधीचि की प्रशंसा की और कहा कि हे दधीचि! क्षू तुम्हारी शरण में है और उस

ने हठ को छोड़ दिया छू ने प्रार्थना की कि हे हमारे मित्र ! हमारा अपराध क्षमा करो मैं मूर्ख अज्ञानी हूं और तुम शिवजी के बड़े सेवक हो तुम्हारे वचन हर प्रकार श्रेष्ठ हैं जो शिवभक्त हैं और द्वैतभाव का विचार त्याग करके स्थिर मन और दृढ़ चित्त होकर उनका ध्यान करते हैं वे दुःखी नहीं रहते बरन उनको दुःखदायक विष्णु और देवता भी नहीं हो सके और आप तो भक्तों के राजा हैं और धन्यभाग आपके हैं कि जिनके ऊपर शिवजी ऐसे दयालु हैं हमको निश्चय है कि त्रिलोक में शिवसमान अन्य कोई नहीं यह वचन छू के सुनकर दधीचि ने उस पर बड़ी दया की शिवभक्तों की यही अवस्था है कि जो कोई उनकी शरण में आता है उस पर कृपादृष्टि से देखते हैं और फिर दधीचि ने विष्णु और अन्य देवताओं को शाप दिया और कहा कि रुद्र के क्रोध से तुम हारोगे और विष्णुजी को भी गणसंयुक्त इसका फल मिलेगा केवल ब्रह्मा बच रहेंगे जिनसे चिन्ता और शोक न रहेगा यह कहकर फिर राजा छू की ओर प्रीतिसंयुक्त देखा और कहा कि ब्राह्मण इस संसार में पूजने योग्य हैं इतना देवताओं व राजों और सर्प आदिकोंसे दधीचि कहकर अपने गृह चले गये दधीचि को विष्णुजी ने प्रणाम किया और चिन्ता करके अपने घर लौट गये और ब्रह्माजी विष्णुजी और सनकादिक सब हृदय में दुःखी हुये परन्तु अहंकार से रहित होकर शुद्ध बुद्धि से पहिंचाना कि शिव सबसे उत्तम हैं जिस स्थान में कि दधीचि से युद्ध हुआ उस स्थान का नाम हरपुर तीर्थ है वह थानेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है जिनकी सेवा से कुछ शोक नहीं रहता जो मनुष्य थानेश्वर तीर्थ में जाकर शिवपूजन करेगा वह सुख करेगा जो पुरुष कि दधीचि और छू का यह युद्ध पढ़ेगा उसके सब शोक इस संसार में नष्ट हो जावेंगे और आवागमन

से रहित रहेगा और जो पुरुष इसको पढ़कर किसी युद्धस्थान में जावेगा उसकी जीत होगी और अच्छी मौत से मरकर शिव-लोक में स्थान प्राप्त करेगा।

तैंतीसवां अध्याय।

सूतजी बोले कि हे मुनियो! नारदजी ने ब्रह्माजी से कहा कि दक्ष के यज्ञ का विध्वंसन हमने ऊपर के वर्णन से सुना अब आप विस्तारसंयुक्त कहिये कि यज्ञ के नष्ट होने के पीछे फिर क्या हुआ ब्रह्माजी ने शिवजी का ध्यान करके कहा कि जिस समय गणों ने यज्ञ के मनुष्यों की ऐसी दुर्गति करके लज्जित किया तब सभ्य-जन जहां हम और विष्णुजी बैठे हुये थे वहां आये और रुदन करने लगे और सब विस्तार वर्णन किया हम ऐसी अवस्था और दुर्गति देवताओं और मुनियों की देखकर अति शोकवान् हुये और त्राहि २ किया उसके पीछे कहने लगे कि त्राहि तुमने शिवजी को क्रोधित किया और तुम सबने देवताओं के सदृश श्रीशिवजी को भी जाना और शिवजी के पापी हुये अब तुम सब अपने पाप शिवजी से क्षमा कराओ और छल को त्याग सचेत होकर शिवजी के चरणों पर गिरकर सेवा करो ऐसा कौन है जो शिवजी के क्रोध को सह सके वह तुरन्त प्रसन्न होजाते हैं उनकी सेवा करो शिवजी की रक्षा में जाओ तो कुशल है तुम सब विना शिवजी के अपना भाग यज्ञ में लेना चाहते थे सो तुमने फल पाया जो शिवजी के शत्रु सुख चाहते हैं उनका अन्त ऐसा ही है जो सर्वसृष्टि को क्षणमात्र में नष्ट करना चाहते हैं उनसे शत्रुता करने में किसको सुख प्राप्त हो सक्ता है और हम भी दधीचि के शाप के वश भूलकर यज्ञ में गये इसमें देवता आदिक का कुछ दोष नहीं शिवजी की ऐसी ही माया है उनकी माया कोई नहीं जानसक्ता है उनकी माया के अधीन

संसार भर है उनको कोई जीत नहीं सक्ता तुम चिन्ता न करो शिवजी शीघ्र ही तुम्हें क्षमा करेंगे और भलेप्रकार जानो कि जो शिवजी यज्ञ में ऐसा न करते तो मनुष्य वेद की रीति को त्याग कर नास्तिक होजाते यह कहकर हम विष्णुजी और सर्व देवता कैलास पर्वत पर पहुँचे उसकी सुन्दरता हम कहां तक वर्णन करें सबसे उत्तम यह कि उस स्थान में किसी पुरुष को चिन्ता और शोक नहीं और फुलवारी ऐसी जिसमें संसार के सुगन्धित पुष्प फल भांति २ के पक्षी सिंह चीता आदि और चौपाये थे और उसके आगे कुबेर की अलकापुरी को हम सबने देखा फिर हमने पवित्र बड़ का वृक्ष देखा जिसके नीचे शिवजी बैठे थे धन्य भाग उनके जो शिवजी के दर्शन करें उनका ऐसा विचित्र सुन्दर स्वरूप था जिसका वर्णन करना महा कठिन है शिर पर जटा और भस्म धारण किये श्यामघन के सदृश शरीर माथे पर चन्द्रमा और कुश के आसन पर वीर आसन से बैठे हुये थे ऐसा स्वरूप देखकर सबको भक्ति अधिक हुई और हमने विष्णुजी और दधिगुप्त और मुनि आदिकों ने हाथ जोड़कर अति महिमा और स्तुति की ।

चौंतीसवां अध्याय ।

सब देवता बोले कि जयनाथ शंकर दीनबन्धु सबसे उत्तम अपने रक्षा में आयेहुये मनुष्यों के रक्षक परब्रह्म निर्गुण अलख तुम्हारी लीला कोई नहीं जानता जो आपकी इच्छा होती है वही होता है हमारा संकट काटो हम सब आपकी इच्छा में आये हैं और दक्षप्रजापति ने मूर्खता और अज्ञानता से आपकी बड़ाई न विचारकर ऐसा कहा और नास्तिक होकर आपको नहीं बुलाया और आपके भक्तों का मान न किया जो शाप देकर अपने घर चले गये और उसने आदिशक्ति का भी मान

न किया और जलने से भी मना न किया और देवताओं ने भी न रोका इसका सब फल पाचुके हैं सो आपको कुछ नहीं कहसक्के परन्तु देवताओं का दोष है और हम सबने आपको विस्मरण कर दिया सो ऐसे पाप हमारे आप क्षमा कीजिये और कृपादृष्टि से एकबेर देख लीजिये जो आप ऐसा दण्ड न देते तो धर्म नष्ट ही होजाता और संसार भर छल करता और सब लोग आपकी अवज्ञा करते और वेद का मान कम होजाता और दक्ष अहंकार के मद में लीन होजाता हम सब मानते हैं कि आपसे कोई दूसरा श्रेष्ठ नहीं है आप ही धर्मिष्ठ धर्मदायक धर्मरूप और धर्म के स्थिर करनेवाले हैं तिस पीछे हमने और विष्णुजी ने कहा कि आपकी माया सर्व सृष्टि को अचेत किये हुये है आप परब्रह्म निर्गुण हैं और तीनों रूप से संसार को उत्पन्न करते हैं हम सब आपकी शरण हैं कृपा कीजिये और इसी प्रकार बड़ी प्रशंसा की और प्रार्थना की कि दक्ष को जीवदान दीजिये और भग को नेत्र और भृगु के क्लेश का नाश कीजिये पूषा अपने दांतों को पावे और सब देवतों के घायल शरीर अच्छे होजावें यह सब बातें आपके यज्ञशाला में चलने से पूरी होंगी आगे विना आपके भाग के कोई यज्ञ न होगा ऐसी स्तुति श्रवणकर श्रीसदा-शिवजी अतिप्रसन्न हुये और मुसकराकर बोले कि हम कुछ भी क्रोध नहीं करते और कल्पवृक्ष के सदृश सबके सुखदायक हैं निश्चय जानो कि जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है यह सब माया में फँसकर सारवस्तु पर दृष्टि नहीं रखते दक्ष ने जैसा किया वैसा पाया अब दक्ष बकरे का मुख पाकर जी जावे और भग मित्र के नेत्रों से देखे और यजमान दांतों से खावे देवतों के सब शरीर अच्छे होजावें यह कहकर शिवजी ने मौन

साधा और सब देवता प्रसन्न हुये और विष्णुजी की सेवा करने लगे और जय २ का शब्द ऊँची वाणी से कहकर कहा कि हे शिवजी ! आप भी यज्ञ में चलें क्योंकि विना आपके यज्ञ पूर्ण न होगा और कृपा करके अपना भाग अङ्गीकार कीजिये यह सुन-कर हम सब चुप हुये और शिवजी ने इस वचन को अङ्गीकार किया और चले उस समय सबको बड़ा सुख हुआ और इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि हम यज्ञ की पूर्णता को देखेंगे कोई तो चवँर डुलाता था और कोई छत्र लिये हुये शिवजी की महिमा बखानता था कोई शिवजी के आगे और कोई पीछे जाता था ।

पैंतीसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इस प्रकार हम विष्णुजी और देवता आदि सब शिवजी के संग गये और दक्ष के यज्ञ में विराजमान हुये दक्ष का घरभर अतिप्रसन्न हुआ और शिवजी की आज्ञानुसार सब कुछ किया और जब दक्ष के शरीर में बकरे का शिर लगा दिया उस समय वह उठ खड़ा हुआ मानो निद्रा में था और शिवजी को देखकर अतिप्रसन्नसुख होगया और उसे बहुत प्रेम उपजा और बकरे की जिह्वा से उसने शिव की स्तुति की यह स्तुति प्रेम के कारण उत्तमभासी दक्ष ने कहा कि हे शिवजी ! आपका आदि और अन्त नहीं जाना जाता आप-को सब पूजते हैं आपने जो मुझको दण्ड देकर ब्रह्मज्ञान दिया सो यह आपकी बड़ी कृपा है और मैंने अज्ञानता और मूर्खता से आपको जो सबके स्वामी हो नहीं पहिंचाना और निन्दा की मेरे पाप क्षमा करो अब मेरी इच्छा है कि दया करके मुझको भक्ति दीजिये विष्णुजी ने कहा कि आपका यश अमृतसागर के तुल्य है शुद्ध और शीतल है ऐसे समुद्र में हमारा मन जो

हाथी के तुल्य है और चिन्ता से जला हुआ है पैठकर बड़े सुख को प्राप्त होता है और उसके अन्दर से नहीं निकलता इस कारण आप दया करके हमारे पापों को क्षमा कीजिये ब्रह्माजी ने प्रार्थना की कि सर्व सृष्टि हमको बुरा कहती है परन्तु हम इस बात को आपके तप के कारण विचार नहीं करते क्योंकि आपके पूजन से सब बुरे कार्य नष्ट होजाते हैं ऋत्विज् ने कहा कि हे शिव ! हमने आपको न पहिंचाना और अपने कर्मों से शोक और चिन्ता आदि में पड़े रहे आप तो तीनों लोक में उदार हैं जिनको हम प्रणाम करते हैं वही हो आपका प्रकाश अति-सुन्दर है और इसी प्रकार इन्द्र, वरुण, कुबेर, योगीश्वर, ब्रह्म, अग्नि, देवता आदि गन्धर्व, अप्सरा, ब्राह्मण, भृगु, यजमान, लोकपाल और विद्याधर सबोंने अलग २ स्तुति कहकर प्रार्थना की कि हमारे पाप क्षमा कीजिये आप सबके स्वामी सृष्टि के उप-जानेवाले भर्ता विश्वम्भर और नाश करनेवाले हैं वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, यज्ञ और भले कर्म के रूप तुम्हीं हो अब दया करो और हमारे दोषों को न विचारकर अपनी ओर देखो।

छत्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! तुम सत्य मानो कि विना शिवजी के चरणों के पूजन के दुःख दूर नहीं होता चाहे जन्म भर भटके फिरे जो बुद्धि मनुष्य को पीछे होती है वह बुद्धि मनुष्य को प्रथम हो तो वह कुछ भी कष्ट न भोगे अब हम अन्यलीला शिवजी की कहते हैं उसको श्रवण करो अर्थात् श्रीसदाशिवजी सबकी जिह्वा से स्तुति और नम्रता के वचन सुनकर अतिप्रसन्न हुये और मुसकराकर कहा कि जो ऐसे गलबल के उत्तम वचन दक्ष के सदृश जो हमारे सम्मुख करेगा उसको सर्व ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होगी और कहा कि हम ब्रह्मा और

विष्णु संसार के मुक्ति भुक्ति के देनेवाले हैं और परब्रह्म हैं ईश्वर हैं हम सृष्टि को उत्पन्न करके पालना करते हैं और फिर अपनी इच्छा से नष्ट करदेते हैं और तीनों गुणों से परे हैं केवल ब्रह्म सच्चिदानन्दरूप हमही हैं और ब्रह्मा विष्णु और सर्वजीव हमारा ही स्वरूप हैं यह वेद कहता है परन्तु अज्ञानी इसमें भेद समझते हैं और चिन्ता पाते हैं जिस प्रकार कि बुद्धिमान् शिर, हाथ और मुख शरीर के अङ्गों को देह से अलग नहीं गिनते उसी प्रकार जो पुरुष हमको अलग नहीं जानते उनको मैं मिलता हूं और जो मनुष्य कि तीनों देवताओं को अन्य जीवोंसंयुक्त समान गिनता है और किंचिन्मात्र उसमें भेद नहीं विचारता वह शान्तिपद प्राप्त करके बड़ी पदवी पाता है और जो कोई कि तीनों में भेद गिनता है वह सहस्रयुगपर्यन्त शोकवान् रहता है इससे उचित है कि सुबुद्धि से सब देवताओं और मुनीश्वरों के सेवक रहो और विचारो कि विना पूजन ब्रह्मा का विष्णु की पूजन कुछ नहीं और जो विष्णु के विपरीत हैं उनसे मैं प्रसन्न नहीं इसीप्रकार ऐसे उत्तम उपदेश शिवजी ने सबको दिये और फिर भृगु की ओर दृष्टि की और कहा कि जो वरदान तुम मांगते हो वही हो और संसार में जो कोई विष्णु का या हमारा शत्रु हम दोनों को अलग समझेगा और विष्णु का भक्त होकर हमारी निन्दा करेगा अथवा हमारा सेवक होकर विष्णुजी की बुराई बखानेगा वह सर्वशाप का अधिकारी होगा और वह मनुष्य तत्त्वज्ञान से हीन है इसी प्रकार जब शिवजी ने यह वार्त्ता की कि शापोद्धार हो तब सब सभा के मनुष्य अतिप्रसन्न हुये और दक्ष कुलसहित सुखी और प्रसन्न होकर अचेत होगया जय जय का शब्द हर ओर से सुनाई दिया फिर सब पुरुषों ने शिवस्तुति परस्पर पढ़ी ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिसने जिस प्रकार

की स्तुति की और अपनी इच्छा उस स्तुति में कही वह श्रीशिवजी ने सबकी पूर्ण की और प्रसिद्ध है कि शिवजी की प्रसन्नतासे सुखोंके ढेर मिलते हैं इस वचन को तुम भलेप्रकार विचारो कि जो पुरुष वेद और धर्मशास्त्र को नित्य पढ़कर उसी का बोध करते हैं परन्तु शिवजी के विपरीत हैं उनको भी इस संसारमें सुख नहीं उसको मुक्ति भी प्राप्त नहीं होती यह वेद और पुराण का वाक्य है और समाचार सुनो कि शिवजी ने दक्ष से कहा कि तुम यज्ञ का कार्य करो हम प्रसन्न हैं यह श्रवण-कर सब प्रसन्नहुये और एक बड़ी सभा नवीन बनाई गई और सब स्त्रियां सुखके राग गीत गानेलगीं और शिवजी की आज्ञा से मुनीश्वरों ने युक्तिसे दक्षका यज्ञ कराया और दक्षने भी सर्व देवताओं को यज्ञभाग दिया और सब यज्ञ का भाग श्रीसदा-शिवजी को देदिया इसकारण कि उसने सबसे उत्तम और बड़ा शिवजी को जानलिया और यथायोग्य सर्वब्राह्मणों को दान-दिया दक्षने यज्ञके सम्पूर्ण होनेपर स्त्रियोंसहित स्नानकिया शिवजीने यज्ञको पूर्ण करवाकर दक्षको सुख दिया इसी प्रकार शिवजीने तो यज्ञको पूर्ण करादिया और सर्वदेवता और मुनी-श्वर श्रीसदाशिवजी की स्तुति करतेहुये अपने २ घरोंको सिधारे औरहम और विष्णुजी अपने २ नगरों में चले गये परन्तु शिवजी वहां हीं विराजमान रहे इस कारण कि दक्षने उनको छुट्टी न दी और कहा कि आप थोड़े समय के निमित्त यहां विराजमान रहिये कि हम कुलसहित आपकी सेवा करलें सो शिवजी ने दक्ष को अपना भक्त कर लिया और थोड़े समय के पीछे वहां से अपने गणों संयुक्त कैलास पर्वत पर गये यद्यपि शिवजी प्रसन्न होकर आये परन्तु सती के वियोग का बड़ा दुःख रहा और बड़े २ चरित्र और कथा वर्णन करके रात्रि दिन बिताने लगे और

संसारी जीवों के समान अपना चरित्र दिखाया इसकारण कि जो अनादि अनन्त हैं उनको दुःख क्या और किस प्रकार होसक्ता है पर हे नारद ! शिवजी की ऐसी माया है जो हमको और विष्णुजी को अचेत कर देती है उसका भेद हम नहीं जानते हजारों युक्ति करके हम उनकी महिमा को न जान-सकें वे परब्रह्म हैं और उनकी माया चेती है वे सबके स्वामी हैं और सबसे बड़े हैं वे निर्गुण हैं और वे गुप्त और प्रकट और निरीह हैं उनकी लीला को जान नहीं सक्ता शेष कहते दीन होगया वेद अपने आप कहता है कि मैं नहीं जानता और सरस्वती सब कुछ वर्णन करके फिर भी हारमान कर अपनी अज्ञानता को मानती है और विष्णु प्रति दिवस सेवा करके अपने मनमें भय किया करते हैं उनके बराबर कौन दीन प्रति-पालक है वह हर प्रकार भक्तों के मनोरथ पूरे करते हैं और अपने भक्तों के लिये नाना प्रकार के दुःख उठाया करते हैं उन्हीं की सहायता से हम सृष्टि उपजाते विष्णु भी उन्हीं की आज्ञा से सर्वसृष्टि की पालना करते सो वही शिव निर्गुण स्वरूप हैं ।

सैंतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! हमने दक्ष यज्ञ विध्वंसन और शिवचरित्र और तत्त्वज्ञान जिससे सबका अहंकार नाश होता है तुमको सुनादिया अब और जो २ इच्छा हो वह पूछिये यह सुन नारद ने हाथ जोड़ नम्रता पूर्वक स्तुतिकर विधाता से पूछा कि हे पिता ! यह बताइये कि फिर क्या हुआ ब्रह्मा ने कहा कि जब सती ने अपना शरीर वहां जला दिया तो उससे एक प्रकाशमान ज्योति उठी कि वह पश्चिम की ओर एक देश में गिरपड़ी उसका नाम ज्वालाभवानी हुआ जो सबको प्रसन्न करनेवाली और धर्म की लक्षणा है उसकी कला प्रत्यक्ष है और

उसकी सेवा पूजा से सब कुछ मिलता है उसको ज्वालामुखी कहते हैं पर कल्पभेद के अनुसार सती के और भाग भी पृथ्वी पर प्रकट हुये नारद ने कहा कि अब कल्पभेद से सती के सब चरित्र वर्णन करो उनसे और कौन २ देवी प्रकट हुईं ब्रह्मा बोले जब सतीजी दक्ष के यज्ञ में गईं और अपना अपमान देखा और शिवशंकर के भाग को न देखा तो क्रोधित हुईं और अपनी माता के पास जाकर बहुत समझा कर कहा कि इन सबों से बहुत निन्द्य कर्म दुःख देनेवाला हुआ है हम मर जावेंगी और मुनीश्वर दुःख में पड़ेंगे हे माता! शिव के गण बड़ा उपद्रव मचावेंगे और कोई दण्ड पाने बिन न रहेगा और हमारे वियोग में शिव बड़े खेद से लोक में भ्रमते रहेंगे और फिर हमको पाकर विहार करेंगे ऐसी भविष्य बातें सती ने कहकर चाहा कि अब हम चलें पर उनकी माता और बहिनों ने रोक लिया पर सती प्रसन्नहोकर योगधारणकर अन्तर्धान हुईं और तुरन्त गङ्गाकिनारे जाकर स्नानकर अपने कपड़े पहिने और गन्धमादन पर्वत में शिवपूजा की फिर श्वास ब्रह्माण्ड पर चढ़ाकर शरीर छोड़ अपने लोक को गईं उस समय हाहाकार मचा और एक ऐसा बड़ा शब्द हुआ कि जिससे असंख्य दैत्यों के घर नष्ट होगये और देवता आदि अति दुःखी हुये और सती के साथ जो गण गये थे वह अति दुःखी हुये कुछ तो आत्मघात कर मर गये और कोई दूसरी युक्ति करने लगे पर भृगु ने यज्ञकी रक्षाकर गणों की कुछ न चलने दी वे सब जाकर शिव से पुकारे और शिव ने क्रोधित हो अपनी जटा उखाड़कर उससे गण उपजाये और उन्होंने असंख्य सेना समेत दक्षके यज्ञमें धावा किया और यज्ञको विध्वंस किया और भी बहुत उपद्रव किया और सबको पूरा दण्ड देकर शिव सेवा में पहुँचे तब शिवका क्रोध कुछ कम हुआ पर सती का

वियोग बहुत असह्य हुआ और इसी दुःख में शिवने अपने गणों को साथ लेकर गङ्गा के तट में जहां सती ने अपना शरीर छोड़ा था जाकर सती के शरीर को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखा और मूर्च्छित होकर मोहित होगये और थोड़ी देर में उनको चेत हुआ और फिर वही सती का शरीर उनको दृष्टि आया कि जिस तरह कमलपुष्प उत्तम रीति से खिला हो ऐसा स्वरूप देखकर शिव फिर मूर्च्छागत हुये और चाहे वे परब्रह्म निर्गुण माया से परे और अविनाशीरूप हैं पर संसार की लीला सबको दिखाकर ऐसे विह्वल हुये कि मनुष्यों को विदित हो कि स्त्री दुःख कैसा बड़ा है और यह बात प्रकट दिखाई कि मोह सबसे बड़ा है इतना कहकर ब्रह्मा बोले कि हे नारद! कुछ सन्देह न करना शिवकी विचित्र लीला है थोड़ी देर पीछे जब शिव को संज्ञा हुई तो अपने को बड़ा अभागी देख वेवश चिल्लाकर रोने पीटने लगे और सन्तोष को धारण न करके अधीरता और निर्बलता प्रकट की और सती को देख अन्य जीवों के समान कहने लगे कि हे प्राणप्यारी! उठो मैं तुम्हारे विना बहुत बेचैन हूं वह तुम्हारी तिरछी चितवन नहीं देखता उठो २ हमसे क्यों नहीं बोलती हो यह कह सब शरीर को अपने हाथों से छुवा और हृदय से लगाया और बारम्बार उसको कण्ठ लगाकर चूमा और फिर २ उस सती के शवको लिपट २ कर अतिप्रेम के सागर में मग्न हो मूर्च्छागत हुये और कुछ दिनों के पीछे सचेत हो सती के शरीर को अपने शरीर से लिपटाये चारों ओर दौड़ते फिरे और बड़े दुःख उठाये उन्होंने सब देश, पर्वत, द्वीप, समुद्र, वन लोकालोक और सब पृथ्वी भर में भ्रमण किया और सप्तशृङ्ग पर्वत भरतखण्ड में फिरकर देवनदी के तटपर आये वहां बरगद का बहुत अच्छा वृक्ष था वहां पर कोई न था तो

बहुत ऊँचे स्वर से धाय २ रोने लगे और साध्वी, सती आदि बहुत नाम ले २ पुकारने लगे और आंखों से अश्रु की धारा बह निकली जहां पर कि यह शिव के अश्रु गिरे थे वहां नेत्रसरोवर नाम तीर्थ होगया जिसमें नहाकर मनुष्य अपना मनोरथ पाते हैं और वह तपस्वियों के लिये तपोभूमि है उसके स्नान से कोई पाप नहीं रहता उसकी लम्बाई दो योजन भर है फिर शिव आगे चले और जहां पर कि सतीका कोई अङ्ग शरीर से जुदा होकर गिरा वही स्थान सिद्धपीठ होगया जिसकी पूजा से सब मनोरथ पूरे होते हैं और उस स्थान पर देवी सब कलाओं से रहकर अपने भक्तों को सब कुछ कृपा करती हैं ऐसी लीला करके शिव एक स्थान पर बैठ गये और जो शेष अङ्ग रह गये थे उनका क्रियाकर्म किया और सब हड्डियां इकट्ठीकर उनकी एक माला बनाई और अपने गले में धारण की और चिताकी भस्म अपने शरीर में लगाकर उसी जगह बैठ रहे और सती को प्राणेश्वरी सती भवानी आदि नाम से कह स्मरण किया और रो रो कर विह्वल होगये और फिर सचेत हो बहुत रोये और ऐसी लीला को सब सृष्टि में कोई न देखपाया और परब्रह्म होकर ऐसी लीलाकी इस लीला के पढ़ने सुनने से बड़ी भक्ति प्राप्त होती है।

अड़तीसवां अध्याय।

इतना कह सूत पौराणिक बोले कि हे शौनकादिक मुनियो! जब नारद ने यह सिद्धपीठ का चरित्र सुना तो ब्रह्मा से पूछा कि हे पिता! सती के अङ्गों से जहां २ जो पीठ प्रकट हुये उनको कहिये ब्रह्मा बोले कि हे पुत्र! अब हम ब्योरेवार कहते हैं मन लगा सुनो कि देवपूर जो अतिरमणीक पर्वत है वहां सती के दोनों चरण गिरे जिससे महाभागा देवी प्रकट हुईं और वहां शिवलिङ्ग भी है और वह स्थान सिद्धपीठ है उसके प्रकट होते

ही हम विष्णु और सनत्सुनि ने उसकी पूजा की और उसे प्रसन्नकर अपना मनोरथ पाया और औटयानि देश में सतीके दोनों नितम्बोंसे कात्यायनी नामक सिद्धपीठ स्थित हुई और वहांभी शिवलिङ्गहै और वह देवी अपनी महिमा प्रकटकर सर्वसृष्टि और हम और विष्णुसे पूजी गईं और कामशैलपर्वत पर योनिके गिरनेसे कामाक्षानाम देवी प्रकटीं जिनको कामरूपा कहते हैं वह भी हम सबके हाथों से पूजी गईं जिससे सर्व-मनोरथ पाये और सतीकी अग्निसे पूर्णशैलपूर्णेश्वरी भवानी शिवलिङ्ग सहित स्थित हुईं और जालंधर पहाड़ पर सतीके कुच गिर पड़े जिससे चण्डीनाम देवी सिद्धपीठ प्रकटीं और कामरूप से पूर्व ललित कान्ता नाम सिद्धपीठ प्रकट हुईं और गङ्गा के तटपर महामाया का एक अङ्ग कटकर गिरा जिससे वागीश्वरी देवी सुशोभित हुईं और इसी प्रकार सती के प्रत्यङ्ग से बहुत से सिद्धपीठ प्रकट हुये वहां सब जगह शिवके लिङ्ग स्थापित हुये और हम विष्णु और सब देवतादिकों ने उनकी पूजाकर प्रणाम किया और जो कोई उनकी पूजा करता है उनके निस्सन्देह सब मनोरथ पूरे होते हैं उन्होंने हर प्रकार से अपने भक्तों को मुक्ति दी है शिव ने मुख्य मनुष्यों के उपकार के लिये यह लीला की वह दोनों शिव और भवानी निस्सन्देह सृष्टि के माता पिता हैं उनकी बराबरी लोक में कोई स्त्री पुरुष नहीं कर सक्ता वे दोनों लोक परलोक का सुख देते हैं वह तीनों लोक में सबसे बड़े हैं प्रकृति का मूल जगदम्बा सती से है और विष्णु हम सब उसके सेवक हैं और शिवब्रह्म निर्गुण सगुण और अप्रमेय हैं इन दोनों की सेवा से नर भवसागर पार हो जाता है फिर सती मैनाक के यहां उपजीं और वहां बड़ी लीला की और सुगमता से उस पर्वत के कुल को तारा और माता

पिता को चरित्र करके बड़ा आनन्द दिया और फिर माता पिता की आज्ञा लेकर तपकर शिवजी को ब्याही गईं और शिवजी की अर्धांगी हो देवतों के दुःख छुड़ा दिये और फिर शिव का तपकर अपने शरीर का गौर रङ्ग किया फिर दोनों शिवशक्ति में मिलकर देवताओं के बड़े २ काम निकाले इस बात को सब जानते हैं कि प्रकृति और पुरुष ब्रह्मस्वरूप हैं हे नारद ! इस प्रकार शिवशक्ति अपने भक्तों की भक्ति देख प्रसन्नता दया करते हैं सर्वलोक शिवशक्ति रूप हैं उनसे कोई भी बाहर नहीं शिवसृष्टि के पिता शिवरानी माता हैं इससे उत्तम और कोई बुद्धि नहीं है इस बात के जानने से मुक्ति पदवी प्राप्त होती है और यही बुद्धि जब भाग्य से उदय होती है तो जीव संसार-बन्धन से मुक्त होकर परमपद पाता है वे मनुष्य लोक में धन्य हैं जो शिव और शिवरानी के प्रेम में मग्न हो गये हैं और बहुधा गौरीशंकर के चरणों का ध्यान करके पार लग गये हैं उन्हीं की शक्ति से मैं सृष्टि उपजाता हूं और उन्हीं की कृपा से विष्णु संसार को पालते जिनको हम विष्णु सनकादिक भी नहीं जानते केवल अपनी बुद्धि के अनुसार उनका वर्णन करते हैं वही शिवशक्ति प्रकट रूप धरकर अपने भक्तों की भलाई के लिये नाना प्रकार की लीला करते हैं हमने अपनी बुद्धि के अनुसार शिव सती चरित्र कहा है और इसी प्रकार सब अपनी बुद्धि के अनुकूल शिव सती का वर्णन करते हैं और अन्त को दीन होकर पार नहीं पाते यह शिव और सती का चरित्र अतिपवित्रता और आनन्द देनेवाला है इसके सुनने से कीर्ति और आयु बढ़ती है और शत्रु भी अपने अधीन रहता है और बड़े २ पाप नष्ट हो जाते हैं और शिव अतिप्रसन्न होते हैं यह शिव सती का जो चरित्र पढ़े अथवा औरों को सुनावे वह अपने कुल

समेत मुक्त होकर औरों को मोक्ष करे और बहुत सी आपदाओं से छूटकर सदा प्रसन्न बना रहे और इस संसार में नाना प्रकार के भोग भोगकर अन्त में शिवलोक का वास पावे यह चरित्र तो हम कह चुके अब जो और कुछ सुना चाहते हो वह वर्णन करो ।

इति श्रीशिवपुराणेश्रीशिवविलासेउत्तरखण्डे ब्रह्मानारद-संवादेद्वितीयखण्डस्समाप्तः ॥ २ ॥



ॐ नमः शिवाय।

शिवपुराण भाषा



तृतीय खण्ड

पहिला अध्याय।

सूतजी बोले कि हे मुनियो! नारद ने इतना ब्रह्माजी से सुन कहा कि हे ब्रह्मन्! बतलाइये कि फिर सती ने क्योंकर अवतार लिया और उनका विवाह शिव से क्योंकर हुआ और फिर उन्होंने अर्धाङ्गी नाम क्योंकर पाया इसके सिवाय और सब लीला मुझसे कहिये क्योंकि मुझे शिवचरित्र सुनने से तृप्ति नहीं होती वरन इच्छा बढ़ती जाती है ब्रह्मा ने अति प्रसन्न होकर कहा कि सती ने अपने जलने पर शिवसे यह वरदान मांगा था कि हमको सदा आपके चरणों की भक्ति बनी रहे और आपकी प्रीति कभी कम न हो मैं केवल यही बात चाहती हूं यह कह अपना शरीर जलादिया और फिर मैना के उदर से अवतार लिया नारदजी बोले कि मैं मैना को नहीं जानता वह किसकी लड़की और किसके साथ ब्याही गई विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि उत्तर की ओर हिमालय पर्वत सब पर्वतों का राजा है वह बड़ा रमणीक पहाड़ है और एक देश है जहां उसका राजा रहा करता था उसके वृक्षों के पत्तों के साम्हने कस्तूरी तुच्छ है उसकी स्तुति में जिह्वा लाल है वह विना तैल दीपक जलाते और वनके मनुष्य दारु लकड़ी अपने घरों में जला कर प्रकाश करते वहां की बरफ़ शिला के समान कठोर जिसके ऊपर से लोग मार्ग चलते और

उँगलियां जड़वत् हो जाती थीं जो कोई छोटा मनुष्य भी वहां पहुँचे तो वहां के बड़े २ पदवाले उसका आदर और सन्मान करते थे उस पहाड़ पर ऐसी गायें थीं कि लोग उनकी पूँछ का मोरछल बनाते और वह असंख्य वन में फिरती और उस पर्वत के राजा हर एक मनोरथी का उचित रीति पर मनोरथ पूर्ण करते और वहां की स्त्रियां निर्भय होकर चारों ओर भ्रमण करतीं सैकड़ों प्रकार के सुगन्धित पुष्प फूले हुये थे अब हम उस पर्वत की श्रेष्ठता को वर्णन करते हैं जिस तरह उस पर्वत ने हमसे बड़ाई प्राप्त की तो पहिले हमने विचारा कि सब पहाड़ों पर किसको राजा करना चाहिये सो हिमालय पर्वत में सर्व राज्यलक्षण देखकर हमने उसको राजा बनाया वह पर्वतों का राजा विष्णु के अंश से उपजा है उसका शरीर देवताओं के समान और उसका रूप सत्पुरुषों के समान बहुत ऊंचा और हृदय अति दृढ़ और पुष्ट मानो धर्म ने शरीर धारण किया है अति तेजवान् पापों से रहित महा बुद्धिमान् कि उसके समान वही है औरों को दिखाई नहीं देता और न उनके पास कोई पहुँच सक्ता है कि जिस तरह समुद्र में रत्न हो और किसी को न मिले वह पर्वतों का राजा हुआ और नीतिपूर्वक पाप-रहित राज्य करके प्रजा की पालना करने लगा उसकी प्रजा भी शुद्ध आचरण की नियमव्रत धारण किये हुये है और अपने २ मार्गों में दृढ़ और जो बल अर्थात् कर कि प्रजा से राजा ने लिया वह उन्हीं की भलाई के लिये था जैसा कि सूर्य पृथ्वी से रस लेता है और फिर वर्षा करके उन्हीं को देता है और हिमाचल सम्पूर्ण राजाओं के मुख्य लक्षण धारण किये हुये था और सम्पूर्ण शास्त्रज्ञ बुद्धिमान् दूरदर्शी और भेद के छिपाने में ऐसा निपुण था कि जिसकी सम्मति से जो बात करनी हो

उसको कोई न जानता था और अपने शरीर की चिकित्सा और उपाय विना पालन करता और किसी कार्य में जल्दी न करता और द्रव्यप्राप्ति औरों के आनन्द के लिये उचित समझता वह चुप इसलिये होगया कि मौन से उत्तम बुद्धि प्राप्त होती है और सामर्थ्यवान् होने पर दीनता स्वीकार की और त्याग व निर्लोभ से कीर्ति का प्रकाश बढ़ा गर्व और अहंकार से कुछ प्रयोजन न रक्खा और कामजाल से भिन्न रहा विद्याग्राहक और धर्म का इच्छुक था यद्यपि वह युवा था पर बुढ़ापा लेकर प्रजाको पिता के समान उदारतापूर्वक पालन करता और जो दण्डयोग्य थे उनको दण्ड दिया कि धर्म स्थिर रहे और हर विद्या और गुणका जाननेवाला था उसके राज्य में चोर चोरी छोड़ वेदकी आज्ञा के अनुसार चलने लगे उसकी बराबर किसीने लोक में यश न पाया और जो उसके समान कोई धर्म के काम करता वह बड़ा नीतिमान् था और उसके मित्र उससे प्रीति रखते थे और उसके राज्य में किसी को कष्ट न था ऐसे राजा के लिये देवताओं ने अपने मनोरथ के पूर्ण होने के लिये पितरों से कहा कि अपनी बड़ी लड़की जिसका मैना नाम है उसे हिमाचल से विवाह दो इससे देवताओं के बड़े २ काम निकलेंगे और सबके दुःख दूर होजावेंगे पितरों ने देवताओं की विनय को इस कारण माना कि उन्होंने अपनी लड़कियों के शाप को स्मरण किया और शुभलग्न साध कर मैना को हिमाचल के साथ ब्याह दिया और जो २ रीति भांति आनन्दमङ्गल विवाह में होता है वह उत्तम भांति से हुये और हम और विष्णु और सब देवता आदि इस बातके विचारने से कि जो लड़की मैना से उपजेगी वही सदाशिव के साथ विवाही जावेगी अति प्रसन्न हुये और उसको हिमाचल के साथ

बिदा कर दिया हिमाचल मैना को साथ लिये हुये घर गये।

दूसरा अध्याय ।

सूतजी बोले कि हे शौनक मुनियो ! इतनी कथा सुनने के उपरान्त नारद ने पूछा कि हे पिता ! मुझे एक सन्देह उपजा है इसलिये मैं आपसे पूछता हूं कि मैना की और कितनी बहिनें थीं क्योंकि आपने ऊपर कहा है कि मैना अपनी सब बहिनों में बड़ी थी और किसने यह शाप दिया ब्रह्मा बोले कि हमारा पुत्र दक्षप्रजापति जिसकी सन्तान असंख्य हुई उसने पहिले बहुत पुत्र उपजाये पर उनसे दक्ष को कुछ आनन्द न हुआ और वे मुक्ति पाकर परमपद को पहुँचे तब दक्ष ने साठ कन्या उपजाई और जिस प्रकार उनका विवाह चन्द्रमा आदि के साथ किया वह वृत्तान्त हम तुमसे कह चुके हैं निदान उनमें से एक दक्ष की लड़की जिसका नाम स्वधा था पितरों के साथ ब्याही गई उससे तीन लड़कियां अर्थात् पहिली मैना जो सबसे बड़ी थी दूसरी धन्या जो मँझली थी तीसरी कलावती जो सबसे छोटी थी वह उपजी यह तीनों बड़ी कीर्तिवाली धर्मरूपा अतिसुन्दर थीं जो मनुष्य प्रभात को इनके नाम लेता है उसके सब मनोरथ पूरे होते हैं उनके चरित्र शुद्ध जिनके सुनने से आनन्दप्राप्त होता है यह तीनों लोकों में सम्मान पाती हैं और वास्तव में इसी योग्य हैं एक दिन यह तीनों लड़कियां साथ में श्वेतद्वीप पर क्षीरसमुद्र के निकट विष्णु की सेवा में पहुँचीं और विष्णुजी के दर्शन किये और उनकी स्तुति करने के उपरान्त उनकी आज्ञा से बैठ गईं उस समय हमारे पुत्र सनकादिक भी वहां पहुँच बैठ गये और विष्णु को प्रणाम किया सनकादिक को देख सबउठ खड़े हुये और आदर करके प्रणाम किया पर ये तीनों कन्या भाग्यवश बैठी रहीं और प्रणाम भी न किया हे नारद ! जैसा

शिव चाहते हैं वैसा ही होता है मनुष्य व्यर्थ दूसरों को दोष लगाते हैं होता वही है जो शिवकी इच्छा होती है उसी को भाग्य वा कर्म कहते हैं ऐसी ढिठाई तीनों लड़कियों की देख सनत्कुमार ने बड़ा क्रोध किया यद्यपि वह बड़े योगेश्वर, बुद्धिमान्, निरहंकार, परमहंस पर उस समय सब बातें भूल गये और शिवकी माया में फँसकर क्रोध किया ऐसा तीनों लोक में कौन उपजा है जो शिवकी इच्छा और लीला को रोक दे सनत्कुमार ने कहा कि तुम तीनों बहिनें बड़ी मूर्ख हो वेद का आशय तुमने नहीं पाया और तुमने न जाना कि ब्राह्मण संसार भर के मान के योग्य हैं और अहंकार के वश में पड़ मनुष्यों के सदृश अपने मार्ग को छोड़ा तुमने हमारा बड़ा अपमान किया इस लिये तुम देवताओं के देश व स्वर्ग को छोड़कर मनुष्यों के देश में जा रहो यह शाप सुन तीनों ने आश्चर्य में हो विनय की कि हे मुने! हमसे अपराध हुआ कि आपका सम्मान न किया और मनुष्यों के समान हमसे यह कर्म बन पड़ा सो उसका फल भी हम पा चुकी हैं पर विनय यह है कि जब हमारा पाप नष्ट हो जावे तब फिर हम इसी प्रकार की दशा प्राप्त करें कृपा करके यह वर दीजिये यह विनती सुन सनत्कुमार अति प्रसन्न हुये और कहा कि तुमने जो विनय की तो अब हम प्रसन्न हैं सो तुमको यह वर देते हैं कि तुममें से जो सबसे बड़ी है वह विष्णु के अंश से जो हिमाचल उपजा है उसकी स्त्री होगी और उसकी लड़की जो उत्पन्न होगी वह शिवरानी होकर तुम्हारे कुल भरके पाप नष्ट कर देगी और जो मँझली धन्यानामा है वह त्रेतायुग में जनक के साथ व्याही जावेगी उसकी लड़की सीतानाम होकर श्रीरामचन्द्र के साथ व्याही जावेगी और तीसरी तुम्हारी बहिन द्वापर युग में वैश्य वर्ण वृषभान को

बरेंगी उनसे राधा नामी लड़की उपजकर श्रीकृष्णजी के साथ ब्याही जावेगी और उसी शरीर से तुम तीनों स्वर्ग में पहुँचोगी और कहा कि जिसकी बुद्धि शुद्ध होती है उसको आनन्द प्राप्त होता है और बेपरिश्रम आपदा और दुःख के उठाये विना यश प्राप्त नहीं होता यह कह सनकादिक चले गये और यह तीनों लड़कियां भी अपने पिता के घर आईं नारद बोले कि इसके पीछे क्या हाल हुआ ब्रह्मा ने कहा कि हां हम सब कहते हैं जिसके सुनने से शिव की भक्ति बढ़ती है ।

तीसरा अध्याय ।

ब्रह्मा बोले कि हे नारद ! जब हिमालय विवाह कर अपने घर आये तब बड़ी धूमधाम हुई और ब्राह्मणों को हिमाचल ने प्रसन्न किया और औरों को अपने शुद्धशील से प्रसन्न रक्खा और भाई आदि को बिदा किया फिर देवता, मुनीश्वर आदि अपने मनोरथों को पाकर हिमाचल के निकट आये और हिमाचल ने सबका आदर सम्मान किया और कहा कि हमारा उत्तम भाग्य है कि आपने हमारा घर पवित्र किया आपके दर्शन से हमारे दुःख दूर हो गये अब मुझे अपना जानकर कुछ आज्ञा दो देवताओं ने प्रसन्न हो कहा कि हम इसलिये तुम्हारे पास आये हैं कि देवताओं का काम तुमसे निकलेगा तुम जानते हो कि जिस प्रकार सती ने अपना शरीर छोड़ा अब तुम ऐसी युक्ति करो कि वही सती तुम्हारी कन्या हो इसमें तीनों लोक का आनन्द होगा हे नारद ! यह युक्ति हिमाचल को बताकर श्रीजगदम्बा की सेवा में पहुँचे और सबने बड़ी स्तुति की कि देवी प्रकट हुई और अपने पूर्णस्वरूप से दर्शन देकर सबको प्रसन्न किया जो उत्तम रथपर चढ़ी थी जब देवता उस महामाया के तेज को न सहसके तो देवी की कृपा से उनको ऐसे

स्वरूप के दर्शन की शक्ति प्राप्त हुई तब बारम्बार उन्होंने स्तुति की और देवता और मुनीश्वरों ने हाथ जोड़कर विनय की कि हे जगदम्बा ! तुम सबसे श्रेष्ठ हो तुम्हारी महिमा को वेद भी नहीं जानते हैं जीव तुम्हारी शरण में आकर कोई खेद नहीं पाता तुमने दक्षके घर अवतार लेकर हमारे नाना प्रकार के दुःखनिवृत्त किये और फिर दक्षसे अप्रसन्न होकर तुमने अपना शरीर त्याग दिया और देवताओं के कार्य पूरे न हुये इससे देवता और मुनीश्वर सब दुःखी हैं सो हम तुम्हारी शरण में आये हैं तुम हमारे मनोरथों को पूर्ण करो अर्थात् फिर पृथ्वी में अवतार लेकर शिवरानी हो जिससे देवताओं का दुःख मिटे और ब्रह्मा और विष्णु भी प्रसन्न होवें इसके सिवाय सनत्कुमार ने जो पहिले भविष्यवाणी कही है वह वचन भी पूरा हो केवल तुम्हारे और शिव की कृपाकटाक्ष से हमारे काम ठीक होंगे ऐसी बातें देवताओं से सुनकर देवी प्रसन्न हुईं और मधुरवाणी से कहा कि बहुत अच्छा हमारी यह पहिले ही इच्छा थी हम अवश्य ही अवतार लेंगी हमारा तप आजतक मैना और हिमाचल कर रहे हैं उनसे अधिक हमारा पूजनेवाला और भक्त कोई नहीं उनके घर हमारा अवतार होगा तुम सब इस बात पर निश्चय रखकर अपने २ घरों को जाओ हम तुम सबका दुःख दूर कर देंगी और एक गुप्त वार्त्ता तुमसे हम प्रकट करती हैं कि शिवने हमारे लिये बहुत से उपाय किये हैं कि हम अवतार धारण करें जब से हमने दक्षप्रजापति के यज्ञ में अपने शरीर को छोड़ दिया तब से शिवने गृहस्थों का धर्म छोड़कर संसार से अलग हो हमारे वियोग में दुःखी हुये और हमारे शरीर की भस्म को अपने शरीर में मला और हमारी हड्डियों की गर्दन में माला डाली और वियोग

से दुःखी हो अकेले वनों का भ्रमण कर देवताओं की सभा में भी नहीं गये अब तुम कुछ सन्देह मत करो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे और तुमको उचित है कि शिवकी सेवा करते रहो यह कह देवी तो अन्तर्धान हो गई और देवता जगदम्बा को प्रणामकर अपने २ घरों को चले और समय को देखते रहे इस चरित्र को जो कोई सुनेगा व सुनावेगा वह प्रसन्न रहकर परमपद पावेगा और उसको सदा धन संतान की वृद्धि होती रहेगी ।

चौथा अध्याय ।

ब्रह्मा बोले कि हे नारद ! हिमाचल ने देवताओं की आज्ञा अपनी स्त्री मैना को सुनाई और मैना अतिप्रसन्न हुई और दोनों ने अतिप्रसन्नता के साथ गृहस्थधर्म को उत्तम रीति से अङ्गीकार किया और मैना शिवपूजा करने लगी और जिस २ बात में शिव प्रसन्न होते हैं उनमें रात दिन लगी रही और दोनों शिव शिवरानी के ध्यान में मग्न हुये हे नारद ! जो शिवभक्त हैं वे धन्य हैं वे लोक परलोक दोनों में अति आनन्द और पुण्य पाते हैं और अपने कुल वरन औरों के कुलको भी मुक्त कर देते हैं शिवपूजा से बड़े २ लाभ हैं निदान हिमाचल ने तो देवी का तप किया और मैना से कहा कि तुम अपने तप से शिव को प्रसन्न करो यह सुनकर दोनों शिवशक्ति का तप करने लगे और पूर्ण तपकर दान करते और रात दिन सिवाय इस काम के सब भुला दिया अष्टमी के दिन व्रत रखते और शिवपूजन करते फिर वह मधुमासव्रत करके उसकी पूर्णता के लिये सुरसुरि औषधप्रस्थदेश में गये और देवी की शिवसहित स्थापना की और तप में प्रवृत्त हुये इस तपकी अवधि वीस वर्ष है तथाच कभी २ बिना अन्नजल रहकर और कभी केवल वायु भखकर शिवशक्ति के तपपूजन में एक दिन का भी अन्तर न

किया और हर दिन नाना प्रकार की वस्तु शिव पर चढ़ाया करते और हर दिन प्रभात के समय उठकर पूजन करते और अति प्रीति के साथ स्तुति पढ़ा करते जब यह व्रत पूर्ण हुआ तो उमा प्रकट हुईं जिनका उत्तमोत्तम सजल घनवत् श्याम स्वरूप जगत् की लीला सर्वाङ्ग पहिले के वर्णन के अनुसार आठ हाथ तीन आंखें सम्पूर्ण वस्त्र और भूषणों से अलंकृत थीं बोलीं कि अपना मनोरथ कहो जो मांगो वही दिया जावे मैना ने जो नेत्र खोल जगदम्बा के स्वरूप को देखा तो प्रीति ने बल किया और कहा धन्यभाग कि तुम्हारा दर्शन प्राप्त हुआ और विनय की कि यह बात अवश्य है कि कुछ तुम्हारी स्तुति करूं पर हे माता! मुझको इतना ज्ञान नहीं है और न कुछ किसी प्रकार की विद्याशक्ति रखती हूं देवी ने अपना हाथ मैना को छुवाया जिससे उनको कुछ बोध प्राप्त हुआ और प्रेम में मग्न हो आंखों से आंसू बहाये और चैतन्य होकर ऐसे कठिन पदों और शब्दों में स्तुति की कि जिसको शिवा भी नहीं समझ सकीं ऐसी स्तुति सुन देवी बोलीं कि जो कोई इस स्तुति को सुनेगा वा पढ़ेगा वह सर्व प्रकार के आनन्द पावेगा और स्त्री पुत्र सन्तान पाकर और संसार भर का राज्यभोग हमारे लोक में आवेगा मैना बोली आप कौन ऐसी वस्तु है जिसको नहीं देसक्ती हो मेरी यह बिनती है कि पहिले तो मेरे उदर से सौ पुत्र बड़े वीरधीर उत्पन्न होवें और वे ब्रह्म- ज्ञानी हों और अपने कुल के नाम करनेवाले और दोनों ओर के घरानों की मुक्ति देनेवाले उत्पन्न हों फिर एक कन्या उपजे जिसमें सब बातें तुम्हारे समान हों और तीनों लोक में उसके समान दूसरी न हो और देवता आदि के दुःख दूर करने में कुलहारी के समान हो देवी हँसकर बोली कि तुम्हारी बुद्धि को

धन्य है जो ऐसा वर मांगा अच्छा हमने दिया तुम्हारे सौ पुत्र जैसा कि तुमने कहा उसी तरह के उपजेंगे और जोकि मेरे समान मैं ही हूं इससे मैं आप तुम्हारी लड़की होकर तुम्हारे घर अवतार लूंगी तुमने हमारी बड़ी सेवा की है यह कहकर देवी तो अन्तर्धान होगई और मैना जिस ओर देवी गुप्त हुई थीं उस दिशा को प्रणाम कर जय २ कहती हुई अपने घर की ओर चली और अति प्रसन्न होकर देवी का यश गाती हुई घर पहुँची और दोनों हाथ जोड़ हिमाचल से सब हाल कह सुनाया जिसके सुनने से हिमाचल को बहुत ही प्रसन्नता प्राप्त हुई और मैना की बड़ी स्तुति की और बड़ा उत्सव मनाया उस देश की सर्वप्रजा और वहां के निवासी अति प्रसन्न हुये ।

पांचवां अध्याय ।

ब्रह्मा बोले कि हे नारद ! जिस दिन से कि सती ने अपने शरीर को छोड़ा था उस दिन से शिव अवधूतस्वरूप अङ्गीकार करके मनुष्यों के समान वियोग से दुःखी हो संसार में चारों ओर भ्रमण किया किये और योगियों के सदृश नग्न होकर सर्वाङ्ग में भस्म मली और जटाजूट शीश में धार मुण्डों की माला कण्ठ में पहिनी और सांपों के कुण्डल और उन्हीं के हार और कोपीन बांधकर पर्वत की कन्दरा में बैठ गये और अपना तप करने लगे और अकेले नाना प्रकार के दुःख सहे एक दिन नग्न शरीर से दारुक वन में गये इस प्रकार से नग्न देख मुनियों की स्त्रियां महा कामिनी होकर शिव से लिपट गईं और सब मुनीश्वरों ने यह देख शिव को शाप दिया कि जिससे शिव का लिङ्ग पृथ्वी पर गिरपड़ा और तीनों लोक में बड़ा हाहाकार हुआ इतना सुन नारद ने कहा कि मैं चाहता हूं कि आप ऐसे शिवचरित्र को विस्तृत से वर्णन करें ब्रह्माजी बोले हे

नारद ! जब शिव वनमें नग्न होगये तब मुनि लोग वनमें गये थे केवल वहां स्त्रियां थीं उन्होंने शिवको देखा कि ऐसी कठिन अवस्था पर भी शिव का सा मनोहर रूप तीनों लोक में किसी का नहीं है उन मुनिपत्नियों के मन विवश होगये एक ने कहा देखो उस स्त्री का बड़ा भाग्य होगा जो इनको लिपटे दूसरी बोली यहां चली आवो इनको देखो इसी प्रकार सब स्त्रियां हँस २ कर शिवको लिपट गईं इतने में उनके पति वनसे आये और यह हाल देखा और अति क्रोध कर कहने लगे कि हे मूर्ख, नारकी, अधर्मी ! यह क्या पाप करता है तूने वेद के विरुद्ध धर्म को अङ्गीकार किया और जोकि तुमने हमारा धर्म बिगाड़ा इसलिये तुम्हारा लिङ्ग पृथ्वी पर गिर पड़े इतना कहते ही शिवका लिङ्ग धरती पर गिरपड़ा और पृथ्वी के अन्दर पाताल में चला गया और शिव विना लिङ्ग होकर अति लज्जित हुये और अपने रूपको प्रलय के रूप के सदृश महाभयानक बनाया और किसी पर यह भेद प्रकट न हुआ कि क्यों शिवने यह चरित्र रचा सो शिवलिङ्ग गिरने के उपरान्त बड़े २ उपद्रव उठे जिस से तीनों लोक भयवान् व दुःखी और चिन्तित होकर कांप उठे पर्वत जलने लगे और दिन में आकाश से तारे गिरने लगे हाहा शब्द चारों ओर पूरित हुआ पर किसी पर यह भेद न खुला और सबसे अधिक मुनि लोगों के आश्रमों पर यह उत्पात उठा हे नारद ! हर मनुष्य को उचित है कि जो काम वह करे अच्छी तरह समझ बूझकर करे शीघ्रता और अज्ञान से कुछ न करे और जो मनुष्य विद्या पढ़ने से अहंकारी हैं वे शिव को नहीं जानते और पीछे को दुःख उठाते हैं निदान मुनीश्वर अतिदुःख पाने के उपरान्त देवलोक में गये और वहां भी चैन न पाकर देवताओंसमेत हमारे यहां पहुँचे और इन्द्र

आदि सब देवताओं ने हमको प्रणाम किया और कहा कि क्या कारण है कि तीनोंलोक जले जाते हैं हमने बहुत सोचा पर मूल बात को न समझे और सबको साथ ले विष्णुलोक में जाकर विष्णु को प्रणाम किया और स्तुति की और इस उत्पात का कारण पूछा और कहा कि पृथ्वी में भूकम्प और उल्कापात और पहाड़ों का जलना क्यों हो रहा है आप इसे कहिये और हम सब पर से इस उपद्रव को टाल दीजिये और ऐसा उपाय कीजिये जिसमें तीनों लोक ऐसे ईश्वरीय कोप से छूटें ।

छठवां अध्याय ।

विष्णुजी बोले कि हमने दिव्यदृष्टि से इसका कारण जाना है जैसा कि हम वर्णन करते हैं हम क्या बतावें जैसे कि बुद्धिमान् भी पशुओं के समान हो गये और ऐसा निन्द्यकर्म किया कि जिस बुद्धि की हीनता के कारण ऐसे उपद्रव उठ रहे हैं इन मुनीश्वरों ने अहंकार से शिवको न पहिंचाना चाहे यह बुद्धिमान् भी हैं पर शिवमाया संसार को घेरे हुये है इन्होंने अपनी स्त्रियों को कामभाव से शिव के तन में लिपटे देखकर अपना ब्रह्म तेज दिखाया और जब शिव का लिङ्ग गिर पड़ा उस समय से यह उपद्रव उठे इससे अवश्य है कि हम सब शिव की शरण में चलें जब तक वह अपने लिङ्ग को फिर धारण नहीं करते तब तक चैन नहीं मिलेगा बरन प्रलय हो जावेगी यह कहकर विष्णु सबको साथ लेकर शिव के पास गये और नाना प्रकार की स्तुति करने लगे और कहा कि हे शिव ! हम पर कृपा करो और अपने लिङ्ग को फिर धारण करो यह सुन शिव ने लज्जित हो कहा कि हे विष्णो ! तुम्हारा कुछ दोष नहीं है हमने आप यह चरित्र किया है और बिन स्त्री हमको क्या अवश्य है कि फिर लिङ्ग को धारण करें हमको इसी दशा में

आनन्द है यह सुनकर सब देवता फिर शिवकी स्तुति करने लगे और कहा यद्यपि हमको आपसे ढिठाई न करनी चाहिये पर विनय यह है कि सतीजी ने फिर हिमाचल के यहां अवतार लिया है वह आपका तप करके फिर तुम्हारी स्त्री होंगी उचित है कि आप लिङ्ग को फिर धारण करें शिव बोले कि जो तुम हमारे लिङ्ग की पूजा करो तो हम फिर नये सिरसे लिङ्ग धारण करें और सृष्टि फिर आनन्द से रहने लगे यह सुन विष्णु हम और भी सबों ने कहा कि हम आपके लिङ्ग की पूजा करेंगे इतने में शिव अन्तर्धान हो गये और हम सब पाताल के नीचे जाकर उसी पहिले लिङ्ग की पूजा करने लगे पहिले विष्णु ने फिर हमने फिर इन्द्र ने इसी प्रकार सब देवताओं ने क्रम से पूजा की और इस पूजा में बड़े बड़े उत्सव हुये आकाश से पुष्प बरसे नाना प्रकार के बाजे बजाये तब शिव अपने लिङ्ग से तुरन्त प्रकटे और हँसकर बोले कि हम तुम्हारी पूजा से अति प्रसन्न हुये अब वरदान मांगो हम सबों ने विनय की कि तीनों लोक को आनन्द देकर अपने लिङ्ग को धारण करो और हमको अहंकार न होवे आपकी भक्ति करते रहें शिव ने कहा कि यही होगा और अपने लिङ्ग को धारण कर लिया और विष्णु और हमने उत्तम और शुद्ध हीरा लेकर लिङ्ग के समान एक अच्छी मूर्ति बनाई और उस जगह पर स्थापित की और कहा कि इस मूर्ति हारकेश की जो पूजा करेगा उसको लोक परलोक दोनों में सुख प्राप्त होगा सिवाय इसके और शिव के लिङ्गस्थापन कर बड़ी प्रसन्नता से पूजा की फिर हम सब उस मूर्ति का ध्यान करके अपने अपने लोक को चले गये और शिव को सबसे उत्तम समझा और शिव भी अपने लोक में सुशोभित हुये और चारों ओर भ्रमण करते रहे और कभी

कभी मुनीश्वरों के पास बैठकर अपने मन को बहलाते रहे और कभी पहाड़ पर चढ़ जाते और ऐसी युक्ति से सती के वियोग को भुला दिया करते जो इस कथा को मन लगाकर सुनेगा वह सदा प्रसन्न रहेगा और शिवलिङ्ग की पूजा से कुल समेत मुक्ति मिलती है और शिवलोक वास प्राप्त होता है हम और विष्णु सब लिङ्ग को पूजकर आनन्द में रहते हैं और शिवलोक में पहुँचते हैं हे नारद ! अब क्या सुनोगे ।

सातवां अध्याय ।

नारदजी बोले कि हे हमारे पिता ! आपने शिवचरित्र वर्णन करके मुझको अतिप्रसन्न किया है परन्तु अब यह प्रार्थना है कि अन्य कथा शिवजी की जब वह कैलास पर्वत पर गये विस्तारसहित वर्णन कीजिये ब्रह्माजी ने कहा कि शिवजी ने कैलास पर्वत में जाकर सतीजी को स्मरण किया और वीरभद्र आदि गणों से सतीजी की महिमा बखानने लगे और सतीजी के अलग होने में शोक प्रकट करके कामदेव की प्रबलता को प्रसिद्ध किया इस कारण कि सब मनुष्यों को यह दृढ़ होजाय कि काम कैसा प्रबल है फिर सर्वलोक में फिर कर कैलास पर्वत पर बहुत दिन रहे और एक ही आसन से ध्यान में लिप्त हो गये फिर जब ध्यान और समाधि का त्याग किया तब शिवजी के ललाट से पसीना पृथ्वी पर गिर पड़ा जिससे एक पुरुष उत्पन्न हुआ जिसके चार हाथ लालवर्ण अति तेजस्वरूप माला पहिने और बलवान् था जब उत्पन्न हुआ तब रुदन करने लगा जिस प्रकार कि बालक रोते हैं उस समय पृथ्वी ने विचार किया कि हमको इसकी पालना करनी होगी क्योंकि यह बड़ा तेजस्वी भासता है और शिवजी के शरीर से प्रीति के कारण जो पसीना निकला उससे उत्पन्न हुआ है इस कारण इसके

सिवाय सती भी अपने शरीर को छोड़ चुकी हैं अब इसकी पालना कौन करेगा और जो कि मेरे ऊपर उपजा है मैं मातासमान हूं अब उचित है कि मातासमान इसको पालूं शिवजी से मुझको कुछ भय न होगा और जो मैं स्त्री होकर इसकी पालना नहीं करती तो निश्चय है कि शिवजी मुझको दण्ड देंगे यह विचारकर पृथ्वी ने स्त्रियों के सदृश अपना रूप बनाया जो अतिपवित्र और सुन्दर मानो कामदेव की दूसरी रति ने अवतार लिया है अथवा विष्णुजी ने फिर मोहनी रूप धारण किया ऐसा स्वरूप बनाकर पृथ्वी ने बालक को उठालिया और अपने कुचों में बालक का मुख लगाकर दूध पिलाने लगी और हँस कर उसके मुखको चूमा शिवजी ने ऐसा देखकर उसकी ओर लज्जा से देखा और पृथ्वी की अभिलाषा जानकर मुसकाये और बोले कि हे पृथ्वी! तुम्हारे धन्य भाग्य हैं कि हमारा पुत्र तुम को दिखाई दिया तुम रुचिपूर्वक इसकी पालना करो यद्यपि यह पुत्र हमारे शरीर के पसीने से उपजा परन्तु तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा अर्थात् इसका नाम भौम होगा और तुमको अधिक सुख देगा यह कहा और उनकी कुछ चिन्ता इस बालक के देखने से कम हुई और जो सती के वियोग का दुःख था वह कुछ घटा और पृथ्वी भी प्रसन्न होकर अपने घर गई और अति प्रीति से पालना करने लगी और भौम भी शरत्काल की रात्रि के सदृश बढ़ने लगा कुछ दिनों के पीछे भौम शिवपूजन के निमित्त मधुवन में गये और शिवजी की बड़ी पूजा की गर्मियों में अग्नि चारों ओर जलाकर बड़े श्रम उठाये और शरत्काल में पानी में बैठकर बड़ी पूजा की और अच्छे २ व्रत करके नियम और संयम से तीन करोड़ शिवपूजन किये ऐसा पूजन करके एक स्थान पर बैठ गये और शिवजी

प्रसन्न होकर प्रकट हुये शिवजी के दर्शन किये और अति कठिन शब्दों की एक स्तुति पढ़ी और कहा कि यही आपने मुझको वरदान के बदले कृपा किया कि आप विराजमान हुये मैं कुछ नहीं जानता अब जो बात उचित हो वह कीजिये यह कहकर चुपहो रहा शिवजीने कहा कि धन्य तुम्हारी बुद्धि तुम मुक्त हो चुके तुम पवित्र मङ्गलग्रह हो गये तुम्हारा लोक सूर्य-लोक से भी ऊपर होगा तुम सुखी रहो तुम को सब आनन्द और प्रसन्नता की वस्तु प्राप्त हो यह कहकर शिवजी गुप्त हो गये और भौम अपने लोक को गये और परिवारसहित सुख करने लगे और शिवजी के भक्त रहे हे नारद! इस चरित्र के श्रवण और वर्णन करने से सब कुछ अर्थात् धन सन्तान और सुख प्राप्त होता है और सब रोग नाश हो जाते हैं अब किस कथा को सुनोगे।

आठवां अध्याय।

नारदजी बोले कि इस चरित्र के सुनने से अति सुख प्राप्त होता है अब कहिये कि हिमाचल की स्त्री ने शिवजी से वरदान मांग कर क्या किया ब्रह्माजी ने श्रीसदाशिवजी का ध्यान करके कहा कि जब हिमाचल की स्त्रीने शिवजी से वरदान पाया और शक्ति को प्रसन्न देखा तो सुखी होकर अपने घर सिधारी और पहिले उससे सहस्र पुत्र उत्पन्न हुये उन के नाम मैनाक और क्रौंच आदि थे जिनके शरीर बहुत लम्बे वीर और बलवान् हुये उसके पीछे सतीजी हिमाचल के मनमें प्रवेश करगईं कि उनके सब मनोरथ पूर्ण हों वही तेज सतीजी का हिमाचल ने शुभघड़ी पाकर मैना में स्थित करदिया जिस समयसे सतीजी मैना के मनमें स्थित हुईं तबसे मैना का शरीर अतितेजस्वी भासता था वह गर्भवती होगई इसके प्रकट होनेसे हिमाचल और

सब बहुत प्रसन्न हुये इससे अधिक सुख हिमाचल को किसी समय प्राप्त न हुआ था और मैना भी गर्भ धारण के सिवाय ऐसी सुन्दर और तेजस्विनी कभी न भासी थी हिमाचल की यह गति थी कि वह बारम्बार मैना के निकट आता और नित्य मैना की सखी सहेलियों और मैना से पूछता कि आपको किस २ वस्तु की इच्छा होती है परन्तु मैना लज्जित होकर कुछ उत्तर न देती उस समय जो मैना चाहती वह वस्तु आप ही प्रकट हो जाती ऐसी कोई भी वस्तु न थी जो मिलने में कठिन होती जितना कि गर्भ बढ़ता जाता था उतना ही तेज अधिक होता था हिमाचल ने वह रीति और उत्सव जो कि गर्भअवस्था में करना उचित है बड़े धूमधाम से की सबकी इच्छानुसार सब कुछ दिया गया और विष्णुजी हम और देवताओं ने जाकर शिवरानी की स्तुति की और अपने २ स्थान पर लौट आये जब नवमास व्यतीत हुये और दशवां मास पूरा होने लगा तब सब चिह्न आकाश और पृथ्वी के अच्छे भासे अर्थात् आकाश निर्मल हुआ अशुभग्रह गुप्त हो गये आकाश पर प्रकाश अधिक हुआ पृथ्वी पर किसी को शोक न रहा नदियों में कमल फूल फूले तीनों प्रकार की पवन चलने लगी और मुनीश्वरों को तेज प्राप्त हुआ भक्तों के मन प्रसन्न हुये आकाश में बाजों का शब्द बजने लगा और मुनि और देवता आदि ने फूलों की वर्षा की और गन्धर्व, सिद्ध, चारण, किन्नर, अप्सरा और विद्याधर अपनी स्त्रियोंसहित नाचने और गाने लगे सो मधुमास के शुक्लपक्ष की नवमी मृगशिरा नक्षत्र में आधी रात के समय शिवरानीजी ने जन्म लिया ऐसा कालिकापुराण में भी लिखा है उस समय हम और विष्णुजी सामग्री समेत उस स्थान पर गये और नाना

प्रकार के बाजा बाजे और पुष्पों की वर्षा की और सबों ने अपनी बुद्धि के अनुकूल स्तुति पढ़ी देवताओं ने कहा कि जय जय शिवरानी जगदम्बा तुम त्रैलोक्य की माता हो हमारी आपदा को नाश करो तुम हमारे मन की अभिलाषा से अचेत नहीं हो तुम आदिशक्ति हो और तुम्हारा तेज अधिक है तुम्हारे सर्वजीव सेवक हैं और ब्रह्मा विष्णु और शिव सब आपके पुत्र कहे जाते हैं तीनों गुण तुम्हीं से हैं तुम ब्रह्मस्वरूप आदिशक्ति सब में हो और सबसे भिन्न भी हो यद्यपि वे तुम्हारी महिमा बखानते हैं परन्तु अन्त को नहीं पहुँचते और नारद, शारद, शुक और सनकादिक आदि बड़े वाचाल और बुद्धिमान् हैं परन्तु वह भी कुछ वर्णन करसके और आपकी कृपासे मूर्ख भी स्तुति करते हैं इस बातको उपनिषद् वर्णन करते हैं अपने भक्तोंको मुक्त करती हो और करोड़ों कला अपने वश में किये हो आप अहंकार को भक्षण करनेवाली हो तुम्हीं वेद और वेदान्त हो सहस्रों नाम आप के हैं इसीप्रकार बड़ी स्तुति करके देवीजीकी मूर्तिका ध्यान किया और सब अपने अपने घर गये ।

नवां अध्याय ।

नारदजी बोले कि हमको अब यह अभिलाषा है कि जो इसके पीछे चरित्र हुआ हो उसका आप वर्णन करें अर्थात् वह बालचरित्र जो देवीजीने हिमाचल के यहां किये ब्रह्माजी बोले कि जब देवीजीने जन्म लिया और देवता आदि महिमा बखानके घर चले गये उससमय हिमाचलने बड़ी धूमधामकी और मैना अपनी पुत्री को देखकर अति प्रसन्न हुई और पहिंचाना कि यही आदि शक्ति हैं देवीजी ने अष्टभुजी मूर्ति धारणकर मैना को दर्शन दिये वह स्वरूप वर्णन करना अति कठिन है आठभुजायें तीन नेत्र कुण्डल

धारण किये गहना और वस्त्र पहिनेहुये मैना ने देखा और स्तुति करनेलगी और कहा कि आपने बड़ी सहायता करके हमारे गृह अवतार लिया अब मेरी यह प्रार्थना है कि यह रूप जो आपने इस समय धारण कियाहै वही मेरे हृदयमें स्थित रहे और अब बालकों के सदृश अपना स्वरूप बनाकर मुझको सुख दीजिये देवीजीने कहा कि यह रूपमैंने इस कारण धारण किया है कि तुम निश्शङ्क रहो और जो रूप तुमने हमारा वरदान लेने के समय देखा था उसको स्मरण करके विश्वास करो कि मैं वही देवी हूँ यह कहकर देवीजीने बालकों के सदृश रूप बनाया और रुदन करने लगी उस समय सब स्त्रियां मैना के आसपास इकट्ठी होगईं सबको कन्या उत्पन्न होनेकी प्रसन्नता प्राप्त हुई और हिमाचल अतिसुखी हुआ और पुरोहित गुरु ब्राह्मण और मुनीश्वर आदि घरके अन्दरगये और देख कर कहा कि देवीजी ने अवतार लिया है भिक्षा बहुत बांटी नगर की सब स्त्रियां शृंगार करके बन ठनकर बधावा देने आईं हिमाचलने यथा रीति सर्व कार्य किये ब्राह्मणों ने लड़की के नाम काली और गिरिजा आदि रक्खे गिरिजा ने बहुत से खेल और चरित्र संसार की लड़कियों के अनुसार किये और मैनाको प्रसन्न किया करती प्रथम तो कोरा में लिपटकर मुसकाती फिर तुतली जिह्वा से कुछ बातें करती जिनके श्रवण करने से माता और पिता अतिप्रसन्न होते थे फिर देवीजी का नाम उमा और शिवा भी होगया अर्थात् उस समय जब कि गिरिजा तपस्या करने को जाती थी तब मैना ने चिन्ता से उसको जाने न दिया था यद्यपि हिमाचल सन्तानवान् था तो भी सबसे अधिक प्रीति गिरिजा की थी और गिरिजा चन्द्रमा की सदृश बढ़ती जाती थी गिरिजा कौड़ियों का खेल खेलती और सुरसरी में जाकर पानी का खेल करती थी और संसारी रीति के

अनुसार विद्या की शिक्षा लेती उसको सब विद्यायें आपही स्मरण होगईं और जब बालअवस्था व्यतीत होगई और तरुण अवस्था आनेलगी उस समय के शरीर की सुन्दरता वर्णन नहीं होसक्ती कोकिलों ने गिरिजा की वाणी सुनकर अपने शब्द का अहंकार त्याग दिया और शशि जिसको अपनी सुन्दरता का मद था अति लज्जित हुआ हरिण गिरिजा की आंखें देखकर बहुत प्रसन्न हुये इस रूपके उत्पन्न करने के पीछे ब्रह्माजी को अन्य स्वरूप बनाने में चिन्ता उपजी अर्थात् गिरिजा अनन्य-स्वरूप थीं जिसके बनानेसे हमारी बुद्धिमानी क्रियाकुशलता प्रसिद्ध हुई मानो उमा के उत्पन्न करने से सर्व सृष्टिके उत्पन्न करने का परिश्रम सुफल हुआ और लक्ष्मीजी जिनको विष्णुजी ने बड़ी प्रीति से समुद्रसे वस्त्रसहित निकाला हम उनको भी गिरिजाके बराबर कहते हुये लज्जित होते हैं जब हम कोई दृष्टान्त गिरिजा के निमित्त नहीं पाते तो केवल उनको सूर्य कह देते हैं ऐसी त्रिलोक में अन्य स्त्री नहीं हमारी स्त्री किसी प्रकार उनके बराबर नहीं अगर लक्ष्मी का दृष्टान्त दूं तो उनमें चञ्चलता का अवगुण है और न रति को कह सक्ता हूं कि वह

होकर विवाह हुआ प्रायः यह केवल उन्होंने भ्रम की अवस्था में ऐसा ही देखा होगा परन्तु अन्य मनुष्य और प्रकार से विवाह का वर्णन करते हैं कि शिवजी नङ्गे होकर भिक्षुक का वेष धारण करके हिमाचल के द्वारे विवाह करने आये जो बैल पर चढ़े हुये थे और शुक्र और शनैश्चर देवता को संग लिये थे और देवता आदि प्रकट नहीं थे इस प्रकार विवाह के निमित्त आकर प्रथम उसके अहंकार का नाश किया फिर दया करके बरात सजाकर विवाह करने आये और आचार्य यह कहते हैं कि शिवजी गिरिजा के तप से प्रसन्न हुये और बड़ी बरात लेकर गिरिजा को व्याह लाये वहां पर बड़ी लीला की और मैना को प्रथम शान्त करके सुख दिया ऐसे २ अनेक प्रकार के विचारों के यह कारण हैं कि जिसको जैसी शिवजी की प्रीति होती है उसको उसी प्रकार शिवजी दिखलाई देते हैं शङ्का और विचार करना ऐसी बातों पर अयोग्य है प्रथम हम स्वयम्वर विवाह का वर्णन करते हैं जिसमें विष्णु के गणों और देवताओं की बुद्धि कुण्ठित हो गई और उनकी बड़ाई जाती रही एक दिन गिरिजा को हिमाचल ने तरुण पाकर अपने भाई बन्धुओं से कहा कि कोई बराबर का देवता ढूंढ़कर विवाह कर दो कि पिता का यही धर्म है उन्हीं दिनों में मैना ने हिमाचल को इस निमित्त बुलाया कि अब गिरिजा बड़ी हुई उसके वर ढूंढ़ने की युक्ति करो यह पुत्री मुझको अति प्रिय है इस हेतु अच्छा सा गुणवान् वर ढूंढ़ो बरन लोग तुमको कहेंगे कि हिमाचल मूर्ख अज्ञानी और अकुल है हिमाचल प्रसन्न होकर घर से बाहर आये और मन्त्रियों को बुलाया सभा में मन्त्रियों ने कहा कि स्वयम्वर करना उचित है कि ब्रह्मा विष्णु और दिक्पति सब आवें प्रथम हर पुरुष के गुण भिन्न २ उमा को

सुनाओ फिर उनका रूप दिखलाओ जिसके शिर पर उमा माला रख देवें वही गिरिजापति होगा हिमाचल इस सम्मति से प्रसन्न हुआ और स्वयम्वर का उत्सव लिखकर हर एक को भेजा और इसी से हर एक को समाचार मिला ऐसी वार्त्ता श्रवण कर सब देवता चले और विष्णुजी हंस इन्द्र सूर्य चन्द्रमा अग्नि और दिक्पति इत्यादि अपनी २ बरात सजा-कर बनठन कर हिमाचल के यहां गये इसी प्रकार और भी राजा आये नारद शिवजी की माया का प्रभाव देखो कि जान बूझकर सब पुरुष कैसे अज्ञान हो गये गिरिजा सबकी माता और शिवशक्ति प्रसिद्ध हैं और यह भी सब जानते थे कि वही हिमाचल के यहां उत्पन्न हुई हैं और उन्हीं के संग सबने विवाह करना चाहा शिवजी की माया बड़ी है जब जैसी शिवजी की इच्छा होती है उसी के अनुसार सब मनुष्य कार्य करते हैं किसी को क्या दोष है हिमाचल विष्णु को देखते ही आगे गये और अच्छा सा घर रहने को दिया फिर स्तुति की इसी प्रकार हमारा और अन्य देवताओं का यथाशक्ति बड़ा मान किया और बड़ी सेवा की सब ऐसी सभा देखकर प्रसन्न हुये और परस्पर कहनेलगे कि देखिये गिरिजा किसपर प्रसन्न होती हैं कौन उनको ब्याहकर संसार विषे बड़ाई प्राप्त करता है बहुत से मनुष्य नाम बता २ कर कहनेलगे कि उसके साथ गिरिजा का विवाह होगा कोई कहता था कि विष्णुजी अच्छे वर हैं जिसके सङ्ग गिरिजा का विवाह होगा उसीको हम सबसे उत्तम प्रधान पुरुष कहेंगे और अन्य मनुष्य इस प्रकार आनन्द करते थे कि हम गिरिजा का विवाह देखेंगे ।

ग्यारहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हिमाचलने स्वयम्वर में बड़ी बड़ी सोने

की चौकियां रखवा दीं और अनेक प्रकार से घरको सजाकर विष्णु इत्यादि सबको कहला भेजा कि स्वयम्वर में आवें यह श्रवणकर हरएक धूमधाम से आये इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढ़कर चले और अग्नि विश्वानर के पुत्र अपने अरचक्षुगणों को सङ्ग लिये आये इसी प्रकार विष्णुजी दिक्पति वरुण कुबेर यमराज सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि सभा में आये और चौकियों पर बैठ गये हम भी हंस की सवारी पर पहुँचे देखा कि विष्णुजी चतुर्भुजी स्वरूप धारण किये पीले वस्त्र पहिने सभा में बैठे हैं कोई ऐसा देवता न था जो उस सभा में दिखाई न देता हो और हमारी विष्णुजी और सबलोगों की यही अभिलाषा थी कि हमारे सङ्ग गिरिजा का विवाह हो हरएक नगर से सब मनुष्य स्वयम्वर में आये और सब पर्वत अर्थात् कनकगिरि, देवकूट पूर्वदिशा के पर्वत विन्ध्य, त्रिकूट, करवीर, चित्रकूट जो पर्वतों का राजा है हिमगिरि आदि सब आये और समुद्र के जीव भी मनुष्यों का रूप धारकर सभा में आये अर्थात् सब सुख की सामग्री वहां थी बाजे बाजने लगे घण्टा ढोल आदि जो देवताओं को अतिप्रिय हैं बाजने लगे और वेदपाठी वेद उच्चारण करनेलगे।

बारहवां अध्याय।

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! जब ऐसी सभा स्वयम्वर की हुई तब हिमाचल ने गिरिजाको आज्ञादी कि स्वयम्वर में जाओ उस समय सब कुलकी स्त्रियों ने गिरिजा का नाना प्रकार से शृङ्गार किया गिरिजा शिवजीका ध्यान करके स्वयम्वर की ओर चलीं और सबोंने प्रार्थना की कि गिरिजा को अच्छा सा वर मिले गिरिजा सभा के अन्दर गईं और बीचमें जाकर खड़ी हुई वहांके मनुष्यों ने सहस्र दृष्टि से देखा और अपना को

यथाशक्ति भले वस्त्र गहना मुक्ता और इतर इत्यादि से सजकर गिरिजा को दिखाया जो सखी गिरिजा के साथ थी उसने सबसे पहिले गिरिजा को इन्द्र के पास लेजाकर कहा कि यह इन्द्र हैं जिन्होंने सहस्र यज्ञ किये जो इनकी रक्षा में जाता है उसकी यह रक्षा करते हैं यह चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर हैं इससे उचित है कि इनके साथ विवाह करो इन्द्राणी तुम्हारा नाम होगा और शचीके समान सुख किया करोगी यह सुनकर गिरिजाने एकबेर इन्द्रकी ओर दृष्टि की और मौन साधकर प्रणाम करती आगे बढ़ी इस प्रकार सखी विष्णु आदि देवताओं की प्रशंसा करके कहती कि इनको माला पहिना दो यद्यपि उनके नाना प्रकारके गुण बखानती परन्तु गिरिजा किसी से प्रसन्न न होती फिर जब सखी किसी देवता आदि की प्रशंसा करती तब गिरिजा कहती थीं कि आगे चलो अन्त में हम और विष्णुजीसे भी प्रसन्न न हुईं उस समय शिवजी आकाश से प्रकट हुये और गिरिजा ने उनको माला पहिनादी ।

तेरहवां अध्याय ।

नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी ! आप इस बातको भले प्रकार वर्णन कीजिये कि शिवजी किस प्रकार प्रकट हुये और गिरिजाने उनके गले में माला क्योंकर डालदी विस्तार संयुक्त वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि जो जुगनू को देखकर कमल फूल उठे तो काहे को चन्द्रमा अपनी किरणें उनपर फैलावे गिरिजा जन्म २ की शिवरानी थी वह इस प्रकार और किसी को माला पहिनाती जिसके निकट गिरिजा जाकर आगे को चली जाती वह बहुत लज्जित होता इसी प्रकार गिरिजा ने सब सभा को देखा परन्तु किसी से प्रसन्न न हुई और जब सबसे उत्तमोत्तम और परब्रह्म शिवजी को न देखा तो अति दुःखी

हुई और चिन्ता में डूबकर संतोष के साथ उसने शिवजी का ध्यान किया और विचारा कि क्या कारण है कि शिवजी अभी तक नहीं आये उसने अपने मन में बहुत शिवस्तुति की और कहा कि मेरा क्या दोष है मैं तो तुम्हारी चेरी हूं मुझे दर्शन दीजिये और अपराधों को क्षमा कीजिये और चाहे करोड़ों जन्म मेरे विना पति के हो जावें परन्तु मैं विना आपके और के सङ्ग व्याह न करूंगी इस कारण कि आदि से मैं ही आप की स्त्री हूं यह कहकर गिरिजा प्रीति में ऐसी लीन हो गई कि अचेत हो गई उसी समय शिवजी प्रकट हुये उनके तेज स्वरूप को देखकर सब आश्चर्य में हुये और किसी ने न पहिंचाना और इस हेतु से कि शिवजी सब मनुष्यों के अहंकार का नाश करते हैं उन्होंने एक और लीला रची अर्थात् सुन्दर बालकों के सदृश प्रकट हुये जिसको देखकर सब दूर दूर करने लगे परन्तु वह न भागे और निडर रहे तब सबोंने क्रोध करके सभा से निकालना चाहा पर जब वह न हटे तो सबोंने चाहा कि इसको मार डालें अपने अपने हथियारों को उठाया शिवजी ने केवल एक बेर देखा और सबके हाथ और उनके शरीर जड़वत् हो गये विष्णुजी ने ऐसा देखकर अपने चक्र को घुमाया पर उनकी भी कुछ न चली उसी समय सबने आश्चर्य किया और शिवजी की लीला को न जाना परन्तु गिरिजा यह शिवचरित्र देखकर मुसकाईं और सब सभा मूर्ति सी हो गई उस समय हमने शिवजी का ध्यान किया तब वह लड़का हँसा ऐसा देखकर हमने जाना कि शिवजी यही हैं शिव और शिवाजी को जानकर हमने स्तुति की और कहा कि यह सब आपकी माया है हमारा क्या दोष है आपने चरित्र रचकर हम सबको भुला दिया कि हम सब

जगदम्बा की रक्षा की इच्छा करके आये फिर गिरिजा की स्तुति की और कहा कि अब आप वह चरित्र कीजिये जिससे हमारी चिन्ता दूर हो यह सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और सब चेते फिर उस लड़के को किसी ने न देखा और शिवजी दिखाई दिये ऐसा रूप था जिसको करोड़ों काम देखकर लज्जित हो जायँ मणि आदि के गहने धारण किये और ऐसे सुन्दर कि जिसका वर्णन करना अति कठिन है ।

चौदहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! ऐसा रूप सदाशिव का देखकर सब सभा के मनुष्यों ने एक बड़ी स्तुति अपनी बुद्धि के अनुकूल कही विष्णुजी ने प्रार्थना की कि हम आपकी माया में फँसकर गिरिजा के संग व्याह करने की अभिलाषा रखते थे सो आप यह पाप क्षमा कीजिये आप दोनों लोक के माता और पिता हैं इसी प्रकार प्रजापति अर्थात् हमने और इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति, वरुण, वायु, ईशान, कुबेर, शेष, प्रजापति, सिद्ध और हिमाचल आदि ने स्तुति पढ़कर अपने २ पापों को क्षमा कराना चाहा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उसके पीछे गिरिजा ने अपने पिता की आज्ञा लेकर शिवजी को माला पहिनादी यह कहकर सबोंने जय २ का शब्द चिल्लाकर कहा और सबकी लज्जा दूर हो गई उस समय सबको बड़ा सुख प्राप्त हुआ ।

पन्द्रहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! उस समय का सुख हम कहां तक वर्णन करें हम सब गिरिजा और शिवजी के पीछे गये विष्णु बाईं ओर और हम दाहिनी ओर और शिवजी बीच में चले और सब पीछे चले कोई छत्र शिर पर

लिये हुये था कोई जय जय शब्द देता दौड़ता था इसी प्रकार सब सेवा करते थे और हिमाचल अपने भाइयों और मित्रों सहित चला हिमाचल के नगर में पहुँचे नगर में बड़ी धूमधाम हुई शिवजी के दर्शन के निमित्त नगर की सब स्त्रियां अपने २ कोठों पर चढ़ीं जो स्त्री जिस काम में लीन थी उसको त्यागकर शिवजी के देखने को दौड़ी यहांतक कि जो एक नेत्र में काजल दिया था तो जल्दी से दूसरे नेत्र में न दिया और झरोखों के अन्दर से दर्शन करने में ऐसी लीन हुईं कि जो इज़ारबन्द भी छूटगया तो भी कुछ चिन्ता न की कुछ स्त्रियों ने अपने दूध पीते २ बच्चों को छोड़दिया और दशों इन्द्रियों की शक्तियों को केवल नेत्र की ज्योति में लाकर उनका दर्शन करना ही सिद्ध समझा उन स्त्रियों की ऐसी अवस्था देखकर विष्णुजी शिवजी और हम बहुत हँसते थे शिवजी हिमाचल के गृह उतरे और बरात के निमित्त अच्छा सा घर ढूंढ़ा हिमाचल ने यथाशक्ति सबकी सेवा की फिर शिवजी की आज्ञानुसार कैलास से सब गण आये जिसमें नन्दी और वीरभद्र भी थे उन्होंने हम सबको प्रणाम किया फिर हिमाचल की आज्ञानुसार शिवजी अन्दर गये गर्ग जो हिमाचल के पुरोहित थे सब कार्य करानेलगे उस समय दोनों ओर से बहुतही दान दियागया और हमने और विष्णुजी ने हवन कराया जब शिवजी ने गिरिजा का हाथ पकड़ा उस समय हम सबको बड़ा सुख हुआ जो वर्णन नहीं होसक्ता जिसने जिसकी इच्छा की वह उसको मिला और जब कि भांवरे हो चुकी तब दोनों को एक ही शय्या पर बिठाया तब सबने धन्य २ का शब्द ऊंचा किया शिवजी को बड़ा दहेज दिया और हिमाचल ने नाना प्रकार के व्यञ्जन सबको खिलाये विवाह हो चुका शिवजी वहां से आज्ञानुसार चलकर कैलास-

पर्वत पर आये फिर आज्ञा लेकर हम सब अपने २ स्थान पर चलेगये ।

सोलहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम दूसरी रीति से विवाह शिवजी का वर्णन विस्तारसंयुक्त करते हैं अर्थात् जिस प्रकार शिवजी अद्भुत रूप धारण करके गिरिजा को व्याहने गये सो जब गिरिजा तरुण हुईं तो मैना ने हिमाचल से कहा कि अब गिरिजा व्याह करने के योग्य है तुम एकलक्ष पर्वत के राजा हो जैसे तुम हो वैसाही पति गिरिजा के हेतु ढूंढ़ो हमारे सौ पुत्र हैं परन्तु एकही लड़की है हिमाचल ने कहा कि जो उत्तमोत्तम होगा उसके सङ्ग हम गिरिजा का व्याह करेंगे यह कह राज्य सभा में आये और अपने मन्त्रियों से पूछकर पुरोहितजी को कहा कि तुम गिरिजा के निमित्त अच्छासा पति ढूंढ़ो पुरोहितजी गये प्रथम इन्द्रलोक में जाकर उसकी सुन्दरताई देखी और प्रसन्न हुये और विवाह के वास्ते कहा परन्तु इन्द्र ने उत्तर दिया कि गिरिजाने शिवजी के निमित्त अवतार लिया है तुम क्या बकते हो क्या तुम चाहते हो कि हम नरकगामी हों उसके पीछे पुरोहित अग्निलोक में गये और यही उत्तर पाया और इसीप्रकार जहां २ वह गया वहां यही उत्तर पाया किसी ने न माना और सबने गिरिजा को सबकी माता विचारकर पुरोहित पर क्रोध किया अन्त में पुरोहितजी सबके बताने से विष्णुकी शरणमें आये विष्णुजीने भी न माना और कहा कि हिमाचल से यह कहना कि तुम लड़की से पूछो तुम्हारा पति कौन है जिसको वह बतावे वही उसका पति होगा यह सुनकर पुरोहितजी पलट गये सब समाचार हिमाचल से कह दिया और गिरिजा अति प्रसन्न हुई ।

सत्रहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचलने एकसभा में गिरिजा को बुलाया और जैसा कि विष्णुजीने पुरोहितसे कहाथा वैसाही गिरिजासे कहसुनाया गिरिजाने लज्जित होकर उत्तर दिया कि जोतुम हमारे वाक्य को मानो और सौगन्द खावो तो निश्शङ्क मैं अपना पति पुरोहितजीको बतादूं उसी के अनुसार वह तिलक चढ़ा आवें हिमाचल प्रसन्न हुआ तब गिरिजा ने पुरोहित को अलग लेजाकर कहा कि कैलासपर्वत जिसके बराबर तीनों लोक में कोई स्थान नहीं है और जो सबसे उत्तमोत्तम है वहां शिव रहते हैं जिनका सब तप करते हैं उनके साथ मैं ब्याह करना चाहती हूं इसलिये पुरोहितजी चले और एक नाई को साथ लिया परन्तु उससे भी इसबातको गुप्त रक्खा और शिवजी को कैलासपर्वत पर बड़के वृक्ष के नीचे देखकर दूरही से प्रणाम किया उस समय शिवजी ध्यान में थे दोनों बैठे रहे परन्तु नाईने पुरोहितजी पर बहुत क्रोध किया और कहने लगा कि तुमने क्यों मुझको ऐसे निर्जन स्थान में लाकर डालदिया ऐसे दैत्यों से जो चारों ओर दिखाई देते हैं काहेको प्राण बचेंगे यहां से तुरन्त भागो कि गिरिजा के लिये और पति ढूंढ़ें यह मनुष्य गिरिजा के पति होने के योग्य नहीं पुरोहितजी ने कहा कि क्या बकवाद करता है चुपकर शिवजी ने पुरोहित की दृढ़ता देखकर और गिरिजा की प्रीतिस्मरण करके ध्यान का त्याग किया तब पुरोहितजी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि गिरिजा आपकेसङ्ग विवाह करना चाहती है और उसके सब गुण सुन्दरता और कोमलता आदि वर्णन किये और पुरानी कथा सब सुनादी शिवजी ने कहा कि तुमको ऐसी बात कहना उचित नहीं क्योंकि हिमाचल तो बड़ा राजा और द्रव्यवान् है और हम निर्धन हैं और यों भी कहा है कि

मित्रता शत्रुता और विवाह यह सब अपने तुल्य मनुष्यों में करने योग्य हैं प्रथम तो मैं त्यागी दूसरे मेरे पास न तो घर और न कोई सेवा करनेवाला है गिरिजा मुझको अपना पति वनाकर क्या सुख उठावेगी बरन् भांग घोटते घोटते दुःख पावेगी गिरिजा राजपुत्री है इसलिये उसे किसी राजाके सङ्ग विवाह करना उचित है सिवाय इसके तुमको भी तो कुछ द्रव्य आदि न मिलेगा केवल हमारी भस्म मिलसक्ती है पुरोहितजी ने कहा कि धन्यभाग हमारे जो हमको आपकी भस्म मिले यह कहकर पुरोहितजी ने शिवजीके तुरन्तही तिलक चढ़ादिया शिवजी भी अति प्रसन्न हुये परन्तु नाई को यह बातें भल न भासीं जब पुरोहितजी ने जानाचाहा तो शिवजी ने थोड़ीसी राख देकर बिदा किया इसी प्रकार नाईको भी भस्म देदी यद्यपि पुरोहितजी बहुत प्रसन्न हुये पर नाई को बहुत क्रोध हुआ और कहा कि हे पुरोहितजी! तुमने बहुत बुरा कार्य किया कि राजा हिमाचल की बेटी को एक अवधूत के सङ्ग ब्याहना चाहा तुमको कुछ लोभ है जो किसी राजा के यहां गिरिजा का तिलक होता तो क्या आजकी तरह हमारी राह कटती शिवजीने तो एक मुठी राख देदी और फिर मुँहसे भी कुछ भलेप्रकार न कहा हमारे घरमें ऐसी बहुत सी राख है जो तेरे घरमें ऐसी राख नहीं है तो लेजा हमको तो राह का खर्च भी न दिया अब हम किस प्रकार पहुँचेंगे नहीं मालूम हमको राजा क्या दण्ड देगा चाहे तुम ब्राह्मण अथवा पुरोहित होकर बच जावोगे परन्तु मैं यह सब बातें कहकर जो तुमने की हैं तुम्हारे ही शिर धरूंगा यह कहकर नाईने बड़ा क्रोध किया और भस्म को खोलकर फेंक दिया पुरोहितजी के घर में उस भस्म के प्रभाव से संसारभर के रत्न उत्पन्नहुये एकदिन नाईकी स्त्री पुरोहितजी के घर आई देखा सुखकी सर्व सामग्री है और जब

पुरोहितजीकी स्त्रीसे ऐसे द्रव्य का कारण सुना तो अपने पतिसे कहा नाई ने बड़ा झगड़ा किया कि इस द्रव्यका भाग हमको दो पुरोहितने कहा फिर तू क्यों उसके पास नहीं जाता जिसने पहिले भस्म दी थी नाई गया परन्तु निराश चला आया ।

अठारहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब हिमाचल ने पुरोहित और नाई का झगड़ा सुना तो उन्होंने दोनोंको बुलाकर कहा कि जहां पर तुम गिरिजाके निमित्त वर ढूंढ़ने गये थे वहां की कुछ वार्त्ता वर्णन करो पुरोहितजीने कहा कि आपकी आज्ञानुसार हम गिरिजाके निकट गये और फिर गिरिजा की आज्ञा पाकर कैलास पर्वतपर पहुँचकर शिवजी का तिलक कर आये और शिवजी की पूजन की और उनकी बड़ी स्तुति की और कहा कि तीनों लोक तुम्हारे सेवक हैं सो सिंहआदि जीव भी उनकी सेवा कर रहे हैं वह हर प्रकारसे गिरिजा के पति होनेयोग्य हैं इसी प्रकार पुरोहितजीने शिवजी की अधिक महिमा बखानी और भस्म लेकर अपने घर सिधारे जब नाई आया तब उसने अपने शरीर को सिकोड़ लिया और हाय करके शोकवान् हो बोला कि आपके पुरोहितने सब काम बिगाड़ दिये हमको एक बड़े पर्वतमें लेगया जिसके चढ़नेमें मैं बहुत दुःखी होगया वहां ऐसा शून्य स्थान था कि एक मनुष्य भी दिखाई न दिया एक मनुष्य केवल दिखाई दिया जिसका स्वरूप अवधूत था बिना वस्त्र और बिना घरके था वह योगी था और ध्यान में डूबा हुआ बैठाथा पुरोहितने बिना पूछे तिलक चढ़ादिया यद्यपि मैंने मना किया परन्तु उसने न माना उसके पास सिवाय एक बैलके और कुछ द्रव्य आदि न था अब जो उचित और अच्छा हो वह कीजिये यह कहकर नाई अपने स्थान को सिधारा

यद्यपि हिमाचल को कुछ खेद हुआ पर मैना को बहुत शोक और चिन्ता उपजी और मैना ने हिमाचलसे कहा कि हम सुनते हैं कि पुरोहितजीने एक भिक्षुकके सङ्ग गिरिजा का विवाह करना चाहा है वह अकेला अवधूत है उसका नङ्गा शरीर है निर्बल और भद्दा है मेरी पुत्री जो ऐसी सुन्दर है उसका विवाह कैसे ऐसे पति के साथ होसक्ता है हिमाचलने अपने मित्रों से कहा किसीने तो कहा कि धन्य तुम्हारे भाग्य जो ऐसा पति गिरिजा को मिला और अन्य पुरुषोंने कहा कि ऐसा विवाह करना उचित नहीं है गिरिजा का विवाह किसी राजाके साथ होना चाहिये हिमाचलने कहा कि जो भगवत् की इच्छा होती है वही होता है फिर हिमाचलने पहिले का वृत्तान्त जिस प्रकार से सब देवता गिरिजाके व्याहने से निषेध करते थे और फिर विष्णुजीकी आज्ञानुसार गिरिजा की अभिलाषा से पुरोहितजी को भेजा था सब कह सुनाया और कहा कि देखो शिवजीकी भस्मसे अब हमारे पुरोहितजीके घरमें किसी वस्तु की कमी नहीं अब जो हमको उचित हो वह कहो हम उसीके अनुकूल करेंगे ।

उन्नीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! ऐसी बातें हिमाचलकी सुनकर सब पुरुष आश्चर्यवान् हुये कुछ मनुष्योंने कहा कि विवाह करना उचित है और अन्य मनुष्योंने विवाह करना वर्जित किया अन्त में बुद्धिमान् और विद्यावान् पुरुषों ने कहा कि हे हिमाचल ! तुम शिवजी को एक पत्र लिखो कि अच्छीसी बरात लावें वरन् गिरिजा के सङ्ग विवाह न होगा जो वह योगी और तपस्वी होंगे तो शीघ्रही तुम्हारी बात को अंगीकारकर भारी बरात लावेंगे उस समय व्याह करना क्या अयोग्य है इस

बात को हिमाचल और मैना ने मान लिया और शिवजी को एक चिट्ठी तिथिसंयुक्त और बरात लानेकी लिखी और यह भी लिखा कि तुम्हारी बरातमें देवता आदि मुनीश्वर शशिनाग और सनकादिक सब बरातके सङ्ग आवें और ब्रह्माजी और विष्णुजी भी शीघ्र आवें बरन तुम्हारा विवाह गिरिजा के सङ्ग न होगा फिर वही पुरोहितजी लग्नकी सामग्री लेकर शिवजीके पास गया शिवजी ने पुरोहितजीकी ऐसी अभिलाषा पाकर पहिलेही से देवताओंकी सभा जमाकर रक्खीथी जिसके तुल्य और कोई न होगी सबमनुष्य ऐसी सामग्री शिवजीकी देखकर बहुत प्रसन्न हुये लग्न चढ़ाई और अपना नेग पाया शिवजीसे आज्ञालेकर हिमाचल के निकट आया और शिवजी की महिमा बखानी नाई की निन्दा की और कहा कि आपकी सौगन्द है कि गिरिजाका पति अतिसुन्दर और तेजस्वी है यह सुनकर हिमाचल और मैना सब बान्धवों सहित अतिप्रसन्न हुये और भिक्षा बांटी और सुखको प्राप्त हुये और गिरिजा और नगरके लोग अति प्रसन्न हुये।

बीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचलने सर्वसामग्री इकट्ठी करके एक घर बरातके वास्ते बहुत चौड़ा और लम्बा बनाया जहां एक ओर तो देवीजी और दूसरी ओर सदाशिवजी थे वहां किस बातकी न्यूनता होसक्ती है अब शिवजीकी वार्त्ता सुनिये कि शिवजीने हिमाचलके पत्र को पढ़ा और हँसे हिमाचलके अहंकार को जानकर यह चरित्र किया कि आप एक वृद्ध बन गये और इसी प्रकार अपने बैलको भी बुड्ढा बना लिया और उसका भयंकर रूप बनाकर लदलिया और डमरू और शृङ्गीको बजाकर अलख २ जिह्वा से कहनेलगे और हिमाचलके नगर

में जाकर एक बागमें उतरे और फिर शृङ्गी और डमरू का शब्द किया जोकि हिमाचल बरात की राह देखता था इससे उसने बहुतसे मनुष्य बरात देखने को भेजे वह सब और गिरिजा की सखियां शिवजीके पास जो अवधूत बैठेथे आईं और कहा कि तुमने बरात तो नहीं देखी शिवजीने उत्तर दिया कि हमहीं तो दूलह हैं और हमहीं बराती हैं और कोई नहीं यह सुनकर गिरिजा की सखियोंने बहुतसी गालियां दीं और कहा कि हमारे राजा की बेटीको ऐसा कहता है फिर ऐसा न कहना नहीं तो माराजावेगा परन्तु सत्य कह कि तूने बरात तो नहीं देखी हम तेरी सेवा करके तुझको भिक्षा दिलवा देंगी और अच्छे भोजन देंगी और तेरी गुदड़ी को फेंककर भले वस्त्र पहिनावेंगी और जो तेरे साथ लड़के हैं उनके लिये भोजन देवेंगी पर शिवजीने फिर यही कहा और कहा कि तुम गिरिजासे यह कहदेना कि हम वही हैं जिनकी लग्न पुरोहित रखाकर आया था गिरिजा हमको अच्छे प्रकार जानती है वह तुमको सब कुछ देवेगी यह सुनकर सब स्त्रियोंने शिवजीके पैर पकड़कर घसीटा और बहुत लात और घूंसे मारे और अन्य स्त्रियोंने नखों और चुटकियोंसे पवित्र शरीरको काटा और किसीने बैलको लकड़ी से मारकर भगादिया और लड़के जो उनके सङ्ग थे वह इसप्रकार मारेगये कि वर्णन नहीं होसक्ता उन्होंने यह सब कुछ इस कारण किया थाकि वह सब मायामें भूलकर शिवजीको न पहिंचानाथा शिवजी ने कहा कि धन्यहै हे स्त्रियो ! ससुरालमें ऐसी मार खाना भला है तुम्हारा संकोच करना योग्यहै जब वह स्त्रियां मारपीटकर चलीगईं तो बैल और शनैश्चर देवता और शुक्रजी रुदन करते शिवजीके निकट आये शिवजी बहुत मुसकराये और कहा कि कुछ खेद न करो ससुरालमें इस प्रकारका सुख मिलता है परन्तु जब वह लड़के

इस बातसे प्रसन्न हुये तो उस समय शिवजीने अपनी झोलीसे नाना प्रकार की भीड़ें निकालकर स्त्रियोंके पीछे छोड़दी जिन्होंने उन स्त्रियोंका कोमल शरीर काट काट कर दुःखी कर दिया वह सब चिल्लाती हुई घर आईं जोकि उनके शरीर सूजगये थे पर वह कामदेवकी स्त्रियोंके सदृश मालूम होनेलगीं और इसी अवस्था से गिरिजाके निकट आईं और जो स्त्रियां उनके सङ्ग नहीं गई थीं उनकी ऐसी दुर्गति देखकर बहुत प्रसन्न हुईं और पूछा कि ऐसी गति किसने की है गिरिजा पहिले तो हँसी और फिर कृपादृष्टिसे उनकी ओर देखा तो वह फिर वैसीही होगईं गिरिजाने पूछा कि यह क्या है उन्होंने उत्तर वही दिया जिस प्रकार उनकी गति हुई थी गिरिजा शिवजीके चरित्र को देख श्रवण कर हँस पड़ी।

इक्कीसवां अध्याय।

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! जो मनुष्य हिमाचल की आज्ञानुसार बरात को ढूंढ़ने गये थे वह लौट आये और कहा कि बरात कहीं नहीं मिलती हिमाचल दुःखी हुये परन्तु गिरिजाकी सखियों की दुर्गति सुनकर हिमाचल ने यह विचार किया कि वही गिरिजापति होगा हाय हाय करके कहा कि ब्राह्मण आदि तो शिवजी की बड़ाई करते थे यह क्या बात है कि वह अकेले ऐसा स्वरूप बनाकर आये हैं हाय हाय क्या करते क्या हो गया मुझको ब्राह्मण ने धोखा दिया मेरी ऐसी पुत्री को इस प्रकार का अवधूत व्याहने आया है हम ऐसे राजा होकर ऐसे भिक्षुक के सङ्ग गिरिजा का विवाह न करेंगे हिमाचल और मैना ऐसी २ बातें कहकर बहुत चिन्तावान् हुये और भाई बान्धव जो हिमाचल के यहां आये थे वह भी सब शोकवान् हुये और कहा कि हाय यह जो हमने सामग्री इकट्ठी की थी

इसको अब क्या करें गिरिजा ने हिमाचल आदि का चित्त-भ्रम देखकर विजया सखी को बुलाया कि तुम इसी समय शिवजी के निकट जावो परन्तु निर्भय रहना और हाथ जोड़-कर मेरी ओर से प्रार्थना करना और मेरी चिट्ठी को दे देना जो कुछ उत्तर देवें उसको मेरे पास लाना वह सखी उसी समय सदाशिवजी के निकट गई और गिरिजाजी की लिखी चिट्ठी को शिवजी के हाथ में दे दिया और कहा कि जो आज्ञा दो वह मैं गिरिजा से कहूं गिरिजा ने अपनी चिट्ठी में लिखा था कि मैं आपको जानती हूं कि आप परब्रह्म हैं आप दया कीजिये क्योंकि सर्व मनुष्य शोक में डूबे हुये हैं और मेरे माता पिता बहुत चिन्ता में हैं वह आपकी बड़ाई को नहीं जानते आप अपने रूप को जो अति सुन्दर और कोमल है धारण कीजिये आपकी माया को कौन जान सक्ता है इस समय सब मनुष्य मुझ पर क्रोध करते हैं और कहते हैं कि यह लड़की क्या तमाशा है यह मेरा अपमान दूर कीजिये और अच्छी बरात और सामग्री के साथ आइये और मेरे पुरोहित की लाज रखिये उससे सब ग्लानि करते हैं शिवजी ने पत्र पढ़ और उत्तर लिख सखी को विदा किया और गिरिजा अपने मन का उत्तर पा सन्देहरहित और सुखी हुई ।

बाईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल ने बहुत दुःखी हो गिरिजा को अपने निकट बुलाया और कहा हे बेटी! तूने यह क्या किया कि देवताओं को छोड़ ऐसा पति स्वीकार किया हमको दुःख दिया विवाह क्या यह तो एक तमाशा हो रहा है मुझको लोग क्या कहेंगे मैं प्रतिज्ञा के कारण कुछ नहीं कह सक्ता तुम्हारी माता कुछ चिन्तायुक्त है कि

प्रतिष्ठा गई और हम विष्णु का वचन सत्य समझ ठग गये पर सबसे अधिक पुरोहित ने धोखा दिया और जब कि मैं विचार करता हूं कि मेरी लड़की अवधूत के साथ ब्याही जावेगी तो मैं शोकसागर में डूब जाता हूं बड़ा खेद है कि मैंने तो ऐसी बड़ी सामग्री इकट्ठी की और तुम्हारे पति के साथ केवल दो कुरूप शिष्य बरात में आये हैं और बैल जो साथ है वह अति निर्बल और भङ्ग धतूरा आदि मादक वस्तु और नाना प्रकार के विषों से लदा हुआ है क्या अच्छी बरात आई है और क्या अच्छा उत्सव होगा ऐसी बातें हिमाचल की सुन गिरिजा हँसकर कहने लगीं कि हे हिमाचल ! तुम कुछ चिन्ता मत करो हर प्रकार से शुभ होगा जो इस समय लीला हो रही है वह सब आनन्द देगी विष्णु का वचन कुछ भी झूंठा न होगा और लोग तुम्हारी स्तुति करेंगे और तुम्हारे प्रताप को सर्वोपरि जानेंगे लोक में तुमको बड़ा यश प्राप्त होगा वरन् विष्णु और ब्रह्मा और देवता आदि तुम्हारा बड़ा सन्मान करेंगे इसका अन्त बहुत ही शुभ होगा अब तुमको उचित है कि उस योगी के निकट जावो और हाथ जोड़कर विनती करो तुम्हारी इच्छा को वह पूरा करेंगे वे ऐसे योगी हैं कि संसार को क्षण भर में उपजासके हैं और निमेष भर में ही पालन करके एक आन में प्रलय कर सके हैं इतना कह गिरिजा घर के भीतर चली गई और मैना को बहुत स्तुतिकर समझाया हे नारद ! शिव गिरिजा की लीलायें असंख्य हैं वे दोनों एक ही रूप हैं उनमें कुछ भेद नहीं है जिस तरह कि वचन और अर्थ में भिन्नता नहीं उसी प्रकार शिव गिरिजा में भी भेदभाव न समझना चाहिये उनकी जो इच्छा होती है वह लीला करते हैं जिसको कोई

नहीं समझ सका फिर हिमाचल ने सब बान्धवों और जाति के मनुष्यों को बुलाकर जो कुछ गिरिजा ने कहा था सबको कह सुनाया और कहा कि यह योगी एक निर्बल बैल साथ लिये अवधूत का स्वरूप रचे हुये आया है जिसके साथ कोई नहीं जो तुम सबकी मति हो वह किया जावे यह सुनकर सब बोल उठे।

तेईसवां अध्याय।

सब गिरि अर्थात् पहाड़ों ने कहा कि हे हिमाचल! उस योगी के निकट जाकर पहिले उसकी परीक्षा करो जो कोई उसमें बुराई न हो तो गिरिजा के विवाह देने में क्या हानि है और यही अनुमति सबोंने दी हिमाचल ने सन्देह छोड़ शिव के पास जानेका पक्का उद्योग किया और कई मनुष्य साथ लेकर चले और निकट जाकर हाथ जोड़ खड़े हो शिवका आदर किया तब शिवने यह लीला की कि शनैश्चर और शुक्र जो शिष्यों की भांति साथ थे रोते हुये शिवके पास आये शिव ने रोनेका कारण पूछा और कहा कि जावो खेलो कूदो पर मेरे पास से दूर मत जाना क्योंकि मैं अकेला निर्धन मनुष्य हूं तुम मुझे बड़े परिश्रम से मिले और बैल की रक्षा भी किये जाना क्योंकि मुझे बहुत नशे से कुछ दिखाई नहीं देता इसीप्रकार बहुतसी बातें उन्होंने नशा पिये हुये लोगों के समान कीं पर वह शिष्य न गये और बहुत रोने लगे फिर शिव ने बहुत रोने का कारण पूछा तो दोनों चेलों ने बाबा बाबा कहकर कहा कि हम भूख से मरते हैं अब कुछ भोजन हमको दो शिव बोले कि हमारे पास तो कुछ भी नहीं है तुमको हम क्या देवें ठहर जाओ निश्चय है कि हिमाचल के घर बहुत खानापीना मिलेगा जब मेरा विवाह गिरिजा के साथ होगा तब तुमको बहुत भोजन

दिया जावेगा दोनों चेले बोले तबतक हमको सन्तोष नहीं आता क्योंकि अभी विवाह में विलम्ब है हमतो बहुत दिन से भूखे हैं यह सुनकर हिमाचल ने शिवसे कहा कि जो आज्ञा हो तो हम आपके दोनों शिष्यों को भोजन करावें शिवने कहा कि बहुत अच्छा आप लेजाइये हिमाचल ने दोनों को किसी सेवक के साथ करदिया कि इनको भोजन करालावो दोनों शिष्य बोले कि विना तुम्हारे हम भोजन करने नहीं जावेंगे क्योंकि हमतो ऐसे भूखे हैं और वहां हमको कोई अच्छी तरह से भोजन न करावेगा जो घरका स्वामी आपही चले तो हम जावेंगे शिव बोले हे हिमाचल! तुम आप इनको भोजन कराओ यह बड़े भूखे हो रहे हैं अच्छीतरह से इनको भोजन देना और पानी भी पिला देना यह सुन हिमाचल दोनों को साथ लेकर घर आये और भोजन करानेलगे वे सब भोजन जो इकट्ठा था एकही ग्रास में खा गये और कहने लगे कि हम तो बड़े भूखे हैं भोजन जल्दी दिलावो क्योंकि तुम्हारे यहां सब रक्खा है ईश्वर के लिये तुम ऐसे राजा होकर क्या लोभ करते हो हम भूखे उठे जाते हैं तुमको बड़ा पाप होगा हिमाचल रसोईं करनेवाले पर बड़ा क्रोधकर कहनेलगा कि तुम क्यों ऐसी कृपणता करते हो हमारे यहां तो ढेरके ढेर रक्खे हैं जल्दी लाकर खिलाओ जब बाकी भोजन आया तो उसको एकही ग्रास में खा गये और पानी भी न छोड़ा और चिल्लाकर कहा कि हमको क्यों नाज नहीं देते हो हम तो मारे भूखों के मरे जाते हैं हिमाचल अति चिन्तित हुआ और अपने लोगों से कहा कि अन्न का जो पर्वत लगा है इन दोनों को बतला दो उन दोनों ने वह भी खाडाला और जब कि कुछ शेष न रहा तो रोते हुये अपने गुरु की सेवा में गये शिव उन दोनों को देखकर हँसे और अपने झोलने

में से एक बूटी निकालकर खिलादी तो वह तुरन्त तृप्त होगये।

चौबीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब दोनों चेले हिमाचल के घर से गये तब सब लोग हिमाचल के द्वार पर आकर इकट्ठे हुये और कहा कि अब तो नगर में अन्न का लेश भी नहीं रहा हम क्योंकर जीते रहेंगे अब वह उपाय करो जिसमें सर्व प्रजा जीती रहे हिमाचल बोले कि वास्तव में बड़ा उपद्रव मचा है हमारे नगर के तट पर एक उद्यान में एक बूढ़ा योगी जिसके साथ केवल एक बैलहै शिष्योंसमेत उतरा है और मेरी लड़की के साथ विवाह की इच्छा रखता है और सर्व वृत्तान्त लड़कों के साथ लाने का वर्णन किया और अतिनम्रता और विनय-पूर्वक सब लोगों से सम्मति की कि अब क्या करें सबों ने कहा कि इसका भेद पुरोहित या गिरिजा से पूछना चाहिये हमलोग एकमति हो निश्चय करते हैं कि जो उस योगी में कोई दोष होता तो गिरिजा क्यों ऐसे पति की इच्छा रखतीं निदान जब पुरोहित वहां आया तो हिमाचल ने पूछा कि तुम सत्य २ कहो कि यह दोनों शिष्य साथ लिये हुये कौन हैं पुरोहित ने उत्तर दिया कि मैं गिरिजा के पता बताने से इस योगी को तिलककर आया और सब उनकी सिद्धता कह सुनाई और कहा कि यह तपस्वी शिव हैं और तुम्हारी लड़की गिरिजा पूर्णकला से आदि-शक्ति भवानी है किसी मुख्य कारण से तुम्हारे घर उपजी क्योंकि जहां २ मैं गया वहां २ मुझे यही उत्तर मिला कि हम सृष्टि की माता के साथ क्योंकर विवाह करें यहां तक कि विष्णु ने भी निषेध करके मुझसे जो कुछ कहा वह तुम सबको प्रकट है जो इससे अधिक कुछ सुना चाहते हो तो गिरिजा से पूछो वह सब जानती होंगी तब और सबोंने गिरिजा से पूछना चाहा गिरिजा

ने उस सभा में अपनी माता मैना और दो सखियों के साथ पहुँचकर सबको प्रणाम किया हिमाचल ने आदरपूर्वक गिरिजा से पूछा।

पचीसवां अध्याय।

हिमाचल ने गिरिजा से कहा कि यह क्या दशा और चरित्र हुआ है जिससे सब लोग दुःखसागर में मग्न हैं वह योगी कौन है कि जिसके शिष्यों ने सब भोजन खा डाला और पानी पिया हमारे सन्देह को दूर करो और मुख्य वृत्तान्त बताओ जोकि गिरिजा सभा में सब हाल कहते हुये लज्जित होती थी इसलिये हे नारद! तुम उसी समय सभा में जा पहुँचे और फिर तुमने आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त जा सुना और तुमने कहा कि हे हिमाचल! कुछ सन्देह की बात नहीं है तुमको और तुम्हारी स्त्री को धन्यवाद है कि गिरिजा आदिशक्ति उत्पन्न हुई वह ब्रह्मा विष्णु और महेश की भी माता है वह सबका प्रलय करती और उसकी महिमा अपरम्पार है उनको तुम आदिशक्ति समझो जो अब तुम्हारे घर में सखियों को साथ लिये हुये फिर रही है उन्होंने प्रेम के वश में पड़ तुम्हारे घर अवतार लिया है और यह योगी हरनाम शिव तुम्हारी लड़की के पति हैं जो ब्रह्मा विष्णु के पिता और सर्व सृष्टि के उपजाने के उपरान्त नष्ट करनेवाले हैं और सब मूल वृत्तान्त वर्णन किया और कहा कि गिरिजा उनको अच्छी तरह से जानती है अब उत्तम है कि तुम सब उन्हीं की शरण में चलो वह तुम्हारे अन्न आदिक को जो गुप्त होगया है पूर्ववत् घरों में भर देंगे और जो २ तुम्हारी इच्छा होगी उसको वे पूरा कर देंगे और अपना स्वरूप ऐसा बनावेंगे जिसको देखकर तुम सब आश्चर्य करोगे और बरात तुरन्त तत्पर हो जावेगी जिसमें ब्रह्मा और विष्णु आदि

सेवक बनकर आवेंगे हे नारद ! इस प्रकार तुमने सबको समझाया और अपने लोक को चले गये और हिमाचल सब लोगों समेत अति प्रसन्न हुआ ।

छब्बीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हिमाचल सबको साथ लेकर शिव सेवा में पहुँचे और सबने हाथ बांधकर स्तुति की तब तो सदाशिवजी सबकी ओर एकदृष्टि से देखकर हँसे और कहा कि हे हिमाचल ! क्या चाहते हो हिमाचल ने अपनी सब इच्छा वर्णन की और कहा कि हमने आपकी लीला कुछ नहीं जानी क्षमा कीजिये मेरा गर्व सब जाता रहा क्योंकि आपने कृपादृष्टि से अपना तेज दिखाया कि मैं चैतन्य रहूं आपका वर्णन वेदों से भी नहीं होसक्ता जो नारद हमको आश्चर्यरूपी सागर से न निकालते तो हम सब निर्बुद्धिता से इसी आश्चर्य और चिन्ता में मग्न रहते क्योंकि अपने को ऐसा छिपाया मैंने अहंकर छोड़ दिया अब गिरिजा के साथ विवाह करके सबके दुःख दूर कीजिये और जो कि आपके दोनों चेलों ने नगरभर का अन्न खाडाला है लोग बड़े दुःखी हैं सो इस दुःख को भी दूर कीजिये मेरी प्रतिष्ठा आपके हाथ है मैं आपकी शरण आया हूं तुम्हारे तीनों लोक वश में हैं बरात की अच्छी साभा रचिये और अच्छे शरीर और वस्त्रों को धारण कीजिये अपनी माया को खींचि लीजिये इसमें गिरिजा की हँसी और अपमान होता है अब इससे अधिक उचित नहीं हिमाचल से यह वचन सुनकर शिव प्रसन्न हुये और कहा कि तुम सब बिदा होजाओ तुम्हारे सब मनोरथ पूरे होंगे तुम सामग्री इकट्ठी करो तुमको अपने राज्य और सामग्री के जोड़नेका बड़ा अहंकार होगया था उसके नाश करने को हमने यह लीला रची अब तुम जाकर हमारी आग-

वानी के लिये बाट देखो यह सुन हिमाचल चलेगये और नगर में ज्योंकी त्यों सब सामग्री तत्पर होगई जिसको देखकर नगर-निवासी और हिमाचल अतिप्रसन्न हुये और मैनाने गिरिजाकी ओर देखा और बहुत प्रसन्न हुई फिर हिमाचल सब सामग्री उपस्थित करनेलगे और अगवानीके लिये चले और शिवने हिमाचलके बिदा करनेके उपरान्त शृंगीनाद करके अपने डमरू को बजाया जिसके शब्दसे सम्पूर्ण देवता, मुनीश्वर और पीतवस्त्र पहिने गणों समेत विष्णु और इन्द्रादिक सर्वसृष्टि समेत पहुँचे शिवने सब कपड़ों से सजकर दूलह के समान अपना स्वरूप बनाया ऐसा स्वरूप देखकर सबको प्रसन्नता प्राप्त हुई।

सत्ताईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! हिमाचल अपने भाई बान्धव और देश की प्रजासमेत अगवानी के लिये आगे पहुँचा और ऐसी सजी सजाई और धूमधाम से बरात देखने से आनन्दरूप होगया और अपनी सामग्री को तुच्छ समझा दौड़कर शिवके चरणों में गिरा शिवजीने हाथ पकड़ा और सब हिमाचलके द्वार की ओर गये उस समय सब रीति भांति उत्तम रीतिसे पूर्ण हुई और नगर की स्त्रियां जिस काम में बैठी थीं उसको तुरन्त छोड़ बरात देखनेको चलीं यहांतक कि जिस स्त्रीका पतिभी भोजन कर रहा था तो उस स्त्रीने इस बातकी कुछ परवाह न की तुरन्त घरसे बाहर निकल पड़ी और शिवको ऐसे सुन्दर स्वरूपसे देख प्रेममें बँधकर टकटकी बांधकर यकटक देखने लगीं और गिरिजा की भाग्य को बार बार सराह कर शिवकी बरात पर फूलों की वर्षा करने लगीं जब इस प्रकार शिव बरातसमेत द्वार पर पहुँचे तो हिमाचल और मैना ने अहंकार छोड़ बहुत धन द्रव्य शिवको दिया और फिर जो घर

बरातके ठहरने को नियत हुआ था उसमें बरात ठहरी और गिरिजाने सिद्धि को भेजदिया जिससे किसी वस्तु की कमी न रही और फिर रीति भांतिके करने और दानादिके पीछे नाना प्रकारके व्यञ्जन बरात को खिलाये हे नारद! जिन चरणोंके ध्यान में विष्णु और हम रात दिन मग्न रहते हैं वे चरण हिमाचल ने अपने हाथों धोये व चारों प्रकारके भोजन खिलाये अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य जो प्रसन्नता कि हम सबको भोजन करने के समय हुई वह वर्णन से बाहर है फिर भोजन के उपरान्त पान बटे फिर हिमाचल की ओर से विनय और नम्रता के वचन कहे गये जब बरात अपने उतरने की जगहमें पहुँची तब हिमाचलके भाईबन्दोंने भोजन पाया और शिवके स्थानमें नाना प्रकारके नृत्य गीत होनेलगे जिसको सुन व्यसनी लोग प्रसन्न होते थे उस समय सब लोगों के मुखों पर शिव और गिरिजा की स्तुति थी।

अट्ठाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उस समय हिमाचल के पण्डित ने आकर लग्न का मुहूर्त बताया विष्णु और हम शिवको लेकर हिमाचलके घर गये उस समय शिवके रूप का क्या वर्णन करें कि शिव का शरीर सफ़ेद कपूर अथवा कुन्द के फूल के समान था सर्ववस्त्र धारण किये उसके ऊपर मौर शिरपर रक्खे माथे में चन्दन दिये सर्व भूषणों से अलंकृत शिर से पांव तक सजे जिसका ध्यान करने से दोनों लोक का आनन्द प्राप्त हो करोड़ों सूर्य और चन्द्र की दीप्ति करके युक्त और प्रभा का भरा हुआ रूप था और वृषभ जिस पर महाराज आरूढ़ थे उसकी सजावट और सौन्दर्य को हम कहां तक कहें जब घर के भीतर गये तो हमने शिवकी ओर से और हिमाचल के पुरोहित ने मिलकर

सब रीतें पूरी कीं हिमाचल ने अर्घ्य मधुपर्कसहित शिव को दिया और दो कपड़े भी शिवको भेंट दिये हमने उसी स्थान पर गिरिजा को बुलाया तब पुरोहित ने होम किया और उसी को साक्षी करके हिमाचल ने कन्यादान करदिया और शिवने जब कि गिरिजा के हाथ को पकड़ा तब सब लोग प्रसन्न होगये और हिमाचल के सब कुटुम्बियों ने दोनों के चरणों की पूजा की और दोनों ओर के सेवक पारितोषिकों से तृप्त होगये और भाँवरि के होजाने के उपरान्त दोनों एक सुनहरे सिंहासन पर बैठ गये और जो कुछ बातें बाकी रह गई थीं वह सब हमने पुरोहितसमेत करा दीं और शिवने हमारी आज्ञा से गिरिजाके मस्तक में सिन्दूर देदिया और हम दोनों ने अपना २ पारितोषिक पाया और आशिष दी और इस विवाह का आनन्द तीनोंलोक में छा गया फिर स्त्रियां शिव को अन्तःपुर में ले गईं और वहां जो नियत रीतें हैं सब शिव ने कीं और हिमाचलने दूसरे दिन फिर बरात को ठहराया और इसी प्रकार बरात का आदर करके अन्त को शिव गिरिजा को बिदा किया और बरात कैलास पर्वत पर पहुँची और बड़े उत्सव के उपरान्त सब देवता आदि बिदा होकर अपने २ घरों को गये और विष्णु और हमभी बिदा हुये और प्रतिदिन शिव और शक्तिका वर्णन करके प्रसन्न होते थे।

उन्तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक समय में तुम लोगों की भलाई के लिये हिमाचल के निकट पहुँचे हिमाचल ने गिरिजा को बुलाकर तुम्हारे चरणों पर डालदिया और कहा कि तुम इस कन्या के भले बुरे लक्षण वर्णन करो क्योंकि तुम सब कुछ जानते हो तुमने कहा कि यह गिरिजा सब गुणों से भरी हुई

शीलवती बुद्धिमती शुभाचरणी और अपने पति को प्रसन्नता देनेवाली होगी और माता पिता के यश को दुगुना करेगी और इसका पति योगी निर्गुण निरहंकारी नग्न शरीर बुरे कपड़े पहिननेवाला माता पिता रहित होगा यह सुन हिमाचल अति चिन्तित हुआ पर गिरिजा अति प्रसन्न हुई क्योंकि ऐसे गुण सुन कर उसने निश्चय किया कि ऐसे तो केवल शिव हैं और अधिक-तर वह इस कारण प्रसन्न हुई कि उसको विश्वास था कि नारद का वचन कुछ झूंठ नहीं होता यद्यपि गिरिजा प्रसन्न हुई पर माथे से कुछ प्रसन्नता के चिह्न प्रकट न किये और हिमाचल ने नारद से कहा कि हम क्या उपाय करें तुमने कहा कि भाग्य से क्या वश है हां हम उपाय बताते हैं जो भाग्य भी सहा-यता दे अर्थात् जैसे गुण हमने वर्णन किये हैं वैसे गुण शिव में पाये जाते हैं वही सबसे श्रेष्ठ हैं उनसे विवाह कर दो मुझको निश्चय है कि वह सिवाय गिरिजा के और किसी के साथ व्याह न करेंगे यह सुन गिरिजा को अति आनन्द प्राप्त हुआ पर चिन्तित होकर मुझसे पूछा कि शिव को तो लोग त्यागी कहते हैं और वे तो सदैव काल ध्यान योग में मग्न रहते हैं सिवाय इसके यह भी प्रसिद्ध है कि शिव ने सती के साथ प्रतिज्ञा की है कि बिन तुम्हारे हम किसी अन्य स्त्री के साथ प्रीति और विवाह न करेंगे इस लिये मुझे संशय है कि शिव गिरिजा को अङ्गीकार करें वा न करें तब तो तुमने कहा कि आपकी सती ने तुम्हारे घर अवतार लिया है और सब हाल तुमने हिमाचल से कह सुनाया और फिर गिरिजा को उत्तमोत्तम वर देकर तुम चले गये कुछ दिनों पीछे मैना ने हिमाचल से धीरे से कहा कि गिरिजा के विवाह का यत्न करना चाहिये जैसी कि गिरिजा सुन्दर है

उसी प्रकार का अच्छा पति ढूंढ़ना चाहिये नहीं तो सब हँसेंगे हिमाचल बोला कि सूर्य चाहे पूर्व से पश्चिम में उदय हों पर नारद का वचन झूंठ नहीं होगा सन्देह दूर करो और शिवका ध्यान करो और गिरिजा से कह दो कि वह शिव का बड़ा तप करे तब यह मनोरथ सिद्ध हो मैना ने यह सुनकर बड़ा आनन्द और भरोसा माना और गिरिजा के निकट आकर प्रीति से उसे गोद उठा लिया आंखों से आंसू बहने लगे मुख से कुछ बात न निकलती थी गिरिजा ने अपनी माता के मन का मनोरथ जाना और कहा कि आज हमने एक स्वप्न देखा है कि मुझसे एक मनुष्य कहता है कि हे गिरिजा! तुम वन में जाकर तप करो जिससे तुम्हारे माता पिता और तीनों लोकों को आनन्द प्राप्त हो नारद का वचन झूंठ न होगा तुम्हारा काम केवल तप से पूरा होगा जब हिमाचल और मैना ने यह स्वप्न गिरिजा से सुना तो अति प्रसन्न होकर समय के मार्ग देखने में रात दिन बिताने लगे।

तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एकसमय शिवने चाहा कि हम बड़े श्रम के साथ तप करें और अपने नाम को स्मरण करें यह विचार अपने गणों समेत हिमवान् की ओर चले जब हिमवान् में पहुँचे तब अपने डमरू को बजाया वहां पर सुरसरि की धारा बह रही थी उसी स्थान का नाम औषधप्रस्थ अर्थात् औषधों का कोष है वहां कोई रोग नहीं रहता और सदैव वसन्त ऋतु बनी रहती है पक्षी मधुर ध्वनि करते और वह स्थान उत्तमोत्तम पक्षियों और फलों और नाना प्रकार के रत्नों से पूरित था ऐसी जगह देखकर शिव तप करने की इच्छा से बैठ गये और अपने स्वरूप के ध्यान में

लगे और तीनों प्रकार का प्राणायाम अर्थात् कुम्भक रेचक और पूरक किया और नन्दि भृङ्ग आदि गण शिव को ध्यान में लाकर उसी ध्यान में प्रवृत्त हुये इसी अवसर में हिमाचल बड़ी सजधज से शिव के निकट पहुँचे और बड़ी स्तुति की और कहा कि धन्य भाग्य हमारे हैं कि आप यहां आये मुझे जो आज्ञा दीजावे उसकी पालना करूं शिव ने हँसकर कहा कि हम तपके निमित्त यहां आये हैं कुछ दिन यहीं रहेंगे और हमारी केवल यही आज्ञा है कि कुछ समय तक हमारे निकट कोई न आवे यह कह चुप हो गये हिमाचल ने विनय की कि मेरे बड़े भाग्य थे कि आपने अपने शुभ चरणारविन्दों से प्रतिष्ठा दी और शिवकी आज्ञा लेकर अपने घर आया और सबसे कह दिया कि जो कोई औषधप्रस्थ पर जावेगा वह वध किया जावेगा और फिर आप गिरिजा समेत जाकर शिव पर तिल फूल और पुष्प चढ़ाये और आप गिरिजा समेत स्तुति की और कहा कि जो आज्ञा हो तो हमारी यह कन्या गिरिजा सखियों सहित आपकी सेवा में रहे शिव ने शिर से पांव तक देख विचारा कि संसार में स्त्री उत्तम कार्यों को पूर्ण होने नहीं देती इसलिये स्त्री का पास रखना निषेध किया गया है और कामदेव का उत्तम शस्त्र केवल स्त्री है क्योंकि स्त्री को देखकर कौन ऐसा है जो छल में न आगया हो स्त्री विष से अधिक है क्योंकि एक क्षणभर भी स्त्री संगति से सम्पूर्ण तप नष्ट हो जाता है और यह रोगों की खानि है तो हिमाचल से कहा कि स्त्री और तपस्वी से क्या सम्बन्ध है वह सर्व तप को भ्रष्ट कर डालती है इसलिये हमको गिरिजा का यहां रहना अङ्गीकार नहीं यह सुन हिमाचल आश्चर्य में हुआ तब गिरिजा बोली कि हे तपस्वी ! तुम्हारा मत यह है कि पुरुष किसी समय में

प्रकृति से जुदा नहीं प्रकृति बिन संसार कुछ नहीं जो दृष्टि आता है वह सब प्रकृतिका रूप है प्रकृति जड़ और चैतन्य को लपेटनेवाली है वही संसार को उपजाती वही फिर पालकर नष्ट करदेती है तुम अपने को नहीं देखते कि हम कौन हैं और हमको क्या करना है और कौन सुननेवाला और कौन कहनेवाला और कौन चलता है तुम ये बातें कुछ भी नहीं समझते फिर गिरिजा ने कहा कि तुम बड़े पुरुष हो और हम भी बड़ी माया हैं हमारे अधीन तुम्हारा शरीर है तुम्हारी मति से पुरुष और प्रकृति जुदा है पर हमारी मति से प्रकृति से मिला है कहना सुनना तप करना सब माया है जो माया से अलग है उसको तप करने में क्या भय है फिर शिव ने कहा कि यह मति जो तुम्हारी है केवल अपने मन से उपजाई है और अनुमानिक है केवल ब्रह्म सबसे श्रेष्ठ है और माया स्वाधीन नहीं है वह जड़ है जो तुमको ऐसा अहंकार है तो उसको क्यों नहीं रोकती हो इतना कह शिव चुप हो रहे और हिमाचल स्तुति करने लगा और फिर गिरिजा को उसकी सखियों समेत उसी जगह पर छोड़ गया गिरिजा अपनी सखियों समेत हर दिन सेवा करती थी वह वन से नाना प्रकार के पुष्प आदि तोड़कर शिव पर चढ़ाया करती और हर प्रकार से परीक्षा किया करती पर शिव का चित्त न डोला एक दिन गिरिजा को विचार हुआ कि देखिये शिव हमको कब ग्रहण करेंगे शिवने मन में जाना और विचार किया कि जो इसी समय गिरिजा को ग्रहण करता हूं तो इसको बड़ा अहंकार हो जावेगा इसके सिवाय तीनों लोक में मेरी बड़ी निन्दा होगी लोग कहेंगे कि शिव ऐसे कामवेग से मूर्ख होगये सो जब गिरिजा हमारा बड़ा तप करेगी तब गिरिजा का मनोरथ पूरा करूंगा यह सोच शिवशंकर ध्यान में मग्न हुये उसी

समय तारक से दुःख पाकर सब देवता हमारे पास आये और इन्द्र ने कामदेव को बुलाकर समझाय बुझाय शिवको वश करने के लिये उसे शिव के पास भेजा और कामदेव गया पर आपही शिव की क्रोधाग्नि से जलकर भस्म हो गया जिससे तीनों लोक में हाहाकार मच गया और गिरिजा ने वन में जाकर बहुत तप किया और शिव ने प्रसन्न हो उसे ग्रहण किया ।

इकतीसवां अध्याय ।

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनकादि मुनियो ! जब नारद ने इतना सुना तो संशययुक्त होकर विनय की कि आप तारक के दुःख देने और काम के जलने और गिरिजा के फिर ग्रहण करने का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त सुनाइये ब्रह्माजी बोले कि जो कश्यप की स्त्री दिति नाम्नी थी उससे अति बलवान् दो पुत्र एक हिरण्यकशिपु दूसरा कनकाक्ष उपजे जो अतितेजवान् बलवान् और हृष्ट पुष्ट थे उन्होंने तीनों लोकों को अपने वश करलिया देवताओं को स्वप्न में भी आनन्द न मिलता था उनको विष्णु ने अवतार लेकर वध किया और अपने भक्त को बचा लिया हिरण्यकशिपु को नरहरि अवतार लेकर मारा और कनकाक्ष को दूसरी रीति से वध किया तब देवताआदि सब प्रसन्न हुये और विष्णु की स्तुति की और दिति ने अतिदुःखी होकर कश्यप के पास जाय रो पीटकर सब वृत्तान्त कहा और फिर बड़ी सेवा करके प्रसन्न किया और एक लड़का आनन्द देनेवाला मांगा कश्यप ने कहा कि तुम सहस्र वर्ष पर्यन्त तप करो जो यह तप तुम्हारा सिद्ध होगा तो अवश्य ही भाग्यवान् पुत्र उपजेगा दिति ने बड़ा तप किया और व्रतादि किये निदान इन्द्र दिति के तप को जान उसकी सेवा करने लगा दिति ने इन्द्र से पूछा कि तुम क्या चाहते हो और किस

मनोरथ से हमारी सेवा करते हो जो तुम्हारी इच्छा हो वह तुमको दिया जावे इन्द्र बोले कि हम यही वरदान सेवा के बदले मांगते हैं कि तुम जिस लड़के के लिये तप करती हो वह लड़का जब उत्पन्न हो वह हमारे भाई के समान होकर मेरा हितैषी हो और देवताओं के दुःख को दूर किया करे यह सुन दिति ने दुःखी हो अतिचिन्ता की और कहने लगी कि मेरे साथ बड़ा छल हुआ मैं बहुत ठग गई निरुपाय हो इन्द्र से कहा कि अच्छा हमने माना और फिर तप करने लगी अकस्मात् एक दिन अशुद्ध हुई और इन्द्र छिद्र के मार्ग से प्रवेश करके दिति के गर्भाशय में चला गया और जो बालक गर्भ में था उसके सात खण्ड कर डाले वह बोल उठा और जीता रहा मरा नहीं तब इन्द्र ने उन टुकड़ों के भी टुकड़े किये पर तो भी वह सजीव रहा कि यह सब उञ्चास खण्ड होगये पर प्राण उनमें वर्त्तमान रहे तब दिति निद्रा से जगी और चिन्तित होकर इन्द्र से पूछा इन्द्र ने सत्य सत्य सब हाल कह दिया तब दिति अति-प्रसन्न हुई वे उञ्चासों खण्ड उञ्चास मरुद्गण अर्थात् वायु हो गये और इन्द्र के भाई होकर देवताओं में गिने गये दिति ने कश्यप की फिर बहुत सेवा की और कहा कि इस बेर मुझको एक लड़का वज्राङ्गी दीजिये कि जिस पर कोई शस्त्र लग न सके कश्यप ने कहा कि दश सहस्र वर्ष तप करो तो निस्सन्देह तुमको ऐसा पुत्र उपजेगा दिति ने अतिश्रम से दशहजार वर्ष तप किया जब तप की अवधि पूरी हुई तो पुत्र उपजा उसका नाम वजरङ्ग रक्खा गया जो महाप्रतापवान् पुष्ट वीर धीर तेजवान् हुआ मानों विष्णु का चौथा अवतार है उसने अपनी माता दिति की आज्ञा से इन्द्र को पकड़कर सामने किया और उसको लात घूंसे से अच्छी तरह पर मारा और पृथ्वी पर भली भांति

घसीटा निदान इन्द्र ने बज्राङ्गी की अधीनता अङ्गीकार की तब हम और कश्यप ने जाकर पूछा कि इन्द्र मर गये या जीते हैं अब उचित है कि हम पर कृपा करके इन्द्रको छोड़ दीजिये तुम अपने कुल में सूर्य हो तुम्हारी स्तुति कहां तक करें बज्राङ्गी ने कहा कि हमने तुम्हारे कहने से इन्द्र को छोड़ दिया मुझको कुछ इन्द्रलोक लेने की इच्छा नहीं है यह दण्ड मैंने इन्द्र को अपनी माता की आज्ञा से दिया है यह कह फिर बोला कि हे ब्रह्मा, विष्णु ! तुम तीनों लोक के स्वामी हो मैं चाहता हूं कि आप तीनों लोक का सार मुझको दें तब मैंने बहुत सोच विचार कर तप और योग का सार उसको बता दिया और फिर हमने एक स्त्री वरांगी नाम्नी उसको दी यह उपाय कर हमतो अपने लोक को चले गये और बज्राङ्गी कठिन तप करने लगा उसने समुद्र में बैठकर तप किया और उसी समुद्र के तट पर पर्वत के निकट वरांगी तप करने लगी सो इन्द्र ने अपने गणों को उसके तप के नष्ट करने को भेज दिया उन्होंने नाना प्रकार के स्वरूप बनाकर वरांगी को भय दिया पर उस स्त्री पर कुछ न चली और क्रोध में आकर पर्वत को बड़ी भयानक बातें कहीं तब वह पर्वत अतिभयवान् हो मनुष्य रूप धार शरण में आया यह देखकर वह बैठ गया अर्थात् इन्द्र की माया गुप्त हो गई जैसे शिव के देखने से सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं उसी समय हम वरदान देने को बज्रांगी के समीप गये उसने हमको प्रणाम किया और वरदान मांगा कि हम राज्य नहीं चाहते क्योंकि न तो उसमें कुछ आनन्द है और न परलोक बनता है मुझे अपना सेवक समझ यह वरदान दीजिये कि मुझमें आसुरी भाव न हो और मेरा मन सदा धर्म और तप में लगा रहे और कुमार्ग में न जावे हम यह वरदान देकर अपने लोक को चले और बज्रांगी भी जल

से निकलकर बाहर आया और अपनी स्त्री को बुलाया वह तुरन्त सामने गई और बहुत रोई पीटी और जब बज्राङ्गीने रोनेका कारण पूछा तो स्त्रीने सम्पूर्ण दुःख का कारण बताया बज्राङ्गीने उसको बहुत समझाया और धर्मका मार्ग अच्छी भांति बताया पर उसके मनमें समझाने से कुछ काम न किया क्योंकि वह बहुत क्रोधित थी निदान अपने पति की सेवा उत्तम रीतिसे करती रही एक दिन समय पाकर विनय की कि इन्द्र हमारा बड़ा शत्रु है वह बड़ा दुःख देता है आप बदला लेनेवाला एक लड़का मुझे दीजिये और मेरा मनोरथ पूरा कीजिये यह कह अपने पति के चरणों पर गिरपड़ी।

बत्तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसी बातें बज्राङ्गीने अपनी स्त्री से सुनकर अतिदुःख में विचार किया कि मैं क्या करूँ स्त्री की इच्छा तो है कि देवताओं से शत्रुता हो और मैं नहीं चाहता मालूम नहीं होता कि क्या उचित है और क्या अनुचित और रीति है कि जो स्त्री का मनोरथ पूरा होजावे तो वह बड़ा दुःख देनेवाला होताहै तीनोंलोक में कोई प्रसन्न नहीं और जो पुरुष स्त्री का मनोरथ पूरा नहीं करता उसको बड़ा दुःख होता है और वह अन्त को नरक में गिरता है इसी शोच में बज्राङ्गी बहुत दुःखी होकर तप करनेलगा और बहुत काल उसी अवस्थामें रहा निदान हम अतिप्रसन्न हुये और वरदान देने के लिये उसके पास चलेगये उसने यह वर हमसे मांगा कि हमारे एक पुत्र उपजे जो अपनी माता को आनन्द दे और बड़ा बलवान् और तेजवान् हो हमने मान लिया और अपने लोक को चलेगये और बज्राङ्गी ने भी अपने घर आकर अपनी स्त्री से वरदान पाने का हाल कह सुनाया थोड़े दिनों में वह

गर्भवती हुई और वह लड़का गर्भ में बहुत बढ़कर अन्त को बहुत भयानक उपजा उसके उपजतेही संसार में बड़ा उपद्रव होनेलगा धरती में भूकम्प हुआ तारे आकाशसे गिरने लगे तीनोंलोक में काल पड़गया जिससे देवता आदि सब दीन हो गये बिन वायु वृक्ष गिरनेलगे और समुद्र पहाड़पर चढ़नेलगे जब वह उपजा तो पिताने सब रीतें पूरीं माता उसकी अति-प्रसन्न हुई और जो कि वह माता पिताके दुःख दूर करनेवाला उपजा इससे उसका नाम तारक रक्खा गया उसी तारक ने माता की आज्ञासे पारिजात पर्वतपर जाकर विजय की इच्छासे तप आरम्भ किया पहिले सौ वर्ष पर्यन्त दोनों हाथ ऊपरको उठाये हुये दृष्टि जमाये खड़ारहा फिर सौ वर्षतक अँगूठा दबाये तप किया और गरमियों में आग में रहा और शेषदिवसों में वनों में और जाड़ों में पानी के अन्दर बैठरहा और पवनादि भक्षण कररहा पर शिव कुछ भी प्रसन्न न हुये तब तो तारक ने आसुरी तप का आरम्भ किया अपने शरीर को काटकर अग्नि में होम करने लगा और दृढ़तापूर्वक यही तप करने लगा उसके इस कठिन तप से तीनोंलोक जलने लगे तब देवताओंने हमारे निकट पहुँच अपना दुःखवर्णन किया और कहा कि यह क्या हुआ है कि तीनों लोकमें इस तरह अग्नि ने जोर पकड़ा है जिससे सब जले जाते हैं हे नारद! हमने शिवके चरित्रको कुछ न जाना और सबको अपने साथ लेकर विष्णुके पास गये उन्होंने भी शिवमाया न जानी फिर शिवके पास गये और प्रणाम और स्तुति के उपरान्त सब वृत्तान्त विनय किया और कहा कि अबतो आपकी शरणमें आये हैं आप सबसे श्रेष्ठ हैं इससे अनुग्रह करके हमारे दुःखों को दूर कीजिये शिवने हँसकर कहा कि तारक के कठिन तप से तीनों लोकों की यह अवस्था है

वह देवतों के दुःख देनेको तप करता है इसी कारण हम वरदान देने में संकोच करते हैं यह सुन देवतोंने आश्चर्य में होकर कहा कि बहुत उत्तम आप तारक को वरदान दें क्योंकि आपके वरदान देनेसे इतनी जल्दी नष्ट न होजावेंगे जैसा कि अब मरेजाते हैं शिव बोले तुममेंसे कोई ऐसा बलवान् और पुष्ट नहींहै कि तारकके तप को माया करके भ्रष्ट करदे विष्णुने गर्वपूर्वक कहा जो मुझको आज्ञा हो तो मैं निस्सन्देह करसक्ता हूं शिवने आज्ञा दी विष्णुजी चले और उन्होंने अपना मोहनीरूप धारण किया पर शिव की लीला से तारक पर कुछ फल न हुआ इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवमाया अति बलवान् है देखो विष्णु मोहनीरूप से तारकासुर को जो शिवभक्त था कुछ न करसके तो शिवजी को जीतना कितनी कठिन बात है निदान विष्णुने शिवके निकट जाकर विनय की कि आप जाकर तारक को वरदान दीजिये आपकी माया बहुत बड़ी है यह सुन शिव वरदान देनेके लिये चलेगये और ऊंचे शब्द से कहा कि वरदान मांगो मैं तुम्हारे तपसे अतिप्रसन्नहूं तारकने प्रसन्न हो नेत्र खोल शिव को प्रणाम किया और स्तुति करनेलगा और यह वरदान मांगा कि मैं तुम्हारे हाथके सिवाय और किसी के मारे न मरूं और करोड़ों वर्ष तक लोक में राज्य करूं शिवजी ने मान लिया और विमन हो अपने गणों समेत चलेगये तब तारक अतिप्रसन्न हुआ और प्रसन्नतापूर्वक अपने घर गया।

तेंतीसवां अध्याय।

इतनी कथा सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मा ! ऐसा वरदान पाकर तारकने क्या कार्य किया तारक का शेष वृत्तान्त सुनाइये ब्रह्मा बोले कि तारक वरदान पाकर अपने घर आया और अपनी स्त्री से सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा और सब असुर इकट्ठे

होकर तारक को अतिप्रतिष्ठित और बड़ी पदवीवाला विचार उसकी स्तुति करनेलगे और असुरों की सब सेना इकट्ठी होगई जिसमें करोड़ों वीर थे उनके नाम यह हैं कुम्भक, कुञ्ज, महिष, कुञ्जर, कालनेमि, निमि, कृष्णजठर, प्रजाम्बुक, शुम्भ, कालकेतु यह दशों बड़े प्रसिद्ध वीर सेनाधिप थे और जो सब असुर और जो सब असुरसेना का सेनानी था उसका ग्रसन नाम था यह सब तीनों लोकों को तुच्छ समझते थे यह सेना लेकर तारक ने पहिले इन्द्र पर चढ़ाई की और देवताओं के लोक और इन्द्र के देश को घेर लिया और देवता और दैत्यों का घोर युद्ध हुआ और नाना प्रकार के शस्त्र चले तारक और इन्द्र से युद्ध हुआ और निमि और अग्नि भिड़े और कालनेमि और यमराज ने लड़कर रुधिर बहाया और नमुचि और निर्ऋतिने लड़ाई करके अपनी २ विजय चाही और महिषासुर और वरुण परस्पर भिड़े और मेघ और पवन ने युद्ध किया और कुञ्ज भिण्डसे लड़े और जृम्भक और इन्द्र ने लड़ाई करके चरित्र दिखाया और शुम्भ और दाहपति ने घोरयुद्ध मचाया और कुम्भज और चन्द्रमाने अच्छी मारपीट की और सूर्य और कुञ्जर ने प्रलय किया और ग्रसन सेनापतिने विष्णु से लड़ाई की इसी तरह बड़ा युद्ध हुआ और दैत्यों ने कोपित होकर देवताओं को युद्धस्थानमें दुःखी कर दिया और तारकने अपना प्रताप प्रकट किया कि इन्द्र को परास्त करदिया और विष्णुके सामने जा खड़ाहुआ विष्णुने आश्चर्य किया और तारक का यह प्रताप शिवजी के वरदान से समझा और गुप्त होगये और तारकने सबको जीत लिया और सबको परास्त करके वन्दिमें डाला और अपनी राजधानीमें लेजाकर निर्भय होकर राज्यके सहायकों समेत राज्य करनेलगा और दैत्य देवताओं की वन्दीगृहमें

रक्षा करने लगे जहां पर कि महीनदी समुद्र में मिलगई है उस स्थान पर तारक की राजधानी थी वहां सब दैत्य और देवता इकट्ठे होकर रहते थे और तारक ने निर्भय सर्व देश अलग २ भागों में बांटकर उनका राज्य असुरों को दिया जहां वे अपने परिवार और मित्र और स्त्रियों सहित आनन्द उठाया करते थे तारक आप तीनों लोक का स्वामी विष्णु के स्थान पर हुआ और निमि को अग्नि की पदवी दी और कालनेमि को यमराज के बदले नियत किया और निर्ऋति की पदवी नमुचि को दी और वरुण के देश का प्रबन्ध महिषासुर को सौंपा पवन के बदले मेघ हुआ और कुबेर के स्थान पर कच्छ हुआ और इन्द्र की जगह पर जृम्भक ने नाम पाया और अहिपति के स्थानापन्न शुम्भ किया गया और हमारी जगह पर कुम्भ राज्य करने लगा और मित्र के बदले कुञ्जर स्थित हुआ इसी प्रकार सब देवताओं के स्थान पर दैत्य दानव नियत हुये और सब असुर संसार भरके स्वामी होकर राज्य करने लगे उनकी राज्य में देवताओं के विशेष कोई मनुष्य दुःखी न था थोड़े दिनों के बीतने उपरान्त विष्णु ने गुप्त देवताओं के निकट जाकर उनको यह उपाय बताया कि तारक बड़ा बलवान् प्रतापवान् है क्योंकि उस पर शिवजी की बड़ी कृपा रहा करती है इससे हम विचार करते हैं कि वे तुमसे कभी परास्त न होंगे इसलिये अपने मनोरथ के पूर्ण करने के लिये उसकी तुम सब सेवा करो और उसको नट बनकर प्रसन्न करो जब वह प्रसन्न होगा तब तुमको अवश्य छोड़ देगा ऐसा उपाय बताकर विष्णु तो अपने धाम को गये और देवता भी नटरूप से तारक के पास पहुँचे और ऐसे उपाय से वार्त्ता की कि तारक अतिप्रसन्न होकर कहने लगा कि जो तुम्हारा मनोरथ हो वह मुझसे मांगो

देवताओं ने अति बिनती कर कहा कि हमको बन्दि से छुड़ा दीजिये तारक ने मान लिया और देवताओं ने बन्दि से छुट्टी पाकर चाहे अपना २ पद भी पाया पर तौभी दुःखी रहा करते थे और तारक राज्य करता रहा जिसकी राज्य में सिवाय देवताओं के और किसी को कुछ दुःख भी न था ।

चौंतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब देवताओं ने असुरों के साथ से नाना प्रकार के दुःख उठाये तब अति शोकवान् होकर कहने लगे कि कहां जाइये किससे अपना दुःख कहिये न कोई ऐसा मित्र है और न कोई ऐसा सहायक है सूर्य चन्द्रमा जो संसार के जीव हैं वह तो आपही तारक की सेवा करते हैं तौ भी उनको भय बना रहता है न जानिये यह दैत्य कबतक हमको दुःख देता रहेगा इसी प्रकार बहुत समय तक देवता दुःख और चिन्ता में डूब कर अन्त को मेरे पास पहुँचे और इन्द्र और बृहस्पति भी उनके साथ थे उन्होंने मेरी स्तुति की और बार २ मेरी पूजा करके मुझे प्रणाम किया देवताओं की उस विनय से हम प्रसन्न हुये तो मैंने हँसकर कहा कि हे देवताओ ! तुम्हारी सन्तान और बल तुम्हारे आधीन है या नहीं हम तुमको बहुत दुःखी मुँह सुखाये हुये चिन्तित देखते हैं और इन्द्र के मुख में कुछ तेज नहीं पाते कौन ऐसा संसार में बलवान् है जिसने तुम सबको दुःखी किया है हे पुत्रो ! हमसे अपने यहां आनेका कारण वर्णन करो देवताओं ने बृहस्पति से कहा कि आप हम सबकी ओर से उत्तर दीजिये क्योंकि आप विष्णु और इन्द्र के समान हैं तब बृहस्पति ने हाथ जोड़ मुझसे कहा कि आप हमारे दुःख को क्यों नहीं जानते हैं देखो तारकदैत्य सकल ऐश्वर्य इकट्ठी कर सृष्टि को बड़ा दुःख देता है उसको शिव ने वरदान

देदिया है जिससे उसने तीनों लोक को जीत लिया है सूर्य भी उसके देश में ठंढे होकर गरमी प्रकट करते हैं और चन्द्रमा भी अपनी सब कलाओं से उसकी सेवा में विद्यमान रहकर भय-भीत रहते हैं वे केवल शिवको मानते हैं उसके उद्यान में पवन इसलिये नहीं चल सक्ती कि फूल न गिर पड़ें उसकी सेवा में सर्व ऋतु विद्यमान रहती हैं और भय से वे ऋतु सब फल फलते हैं और वासुकिनाग मानों दीपक बन कर अपने शीश के मुक्तासे मन्दिर में प्रकाश करते हैं इन्द्र आपही उसकी दिन २ सेवा करते हैं यद्यपि सर्व इस प्रकार उसकी सेवा टहल करते हैं पर वह कुछ भी कृपा नहीं करता जिन वृक्षों की पत्तियां देवताओं की स्त्रियां बहुत समझ बूझ कर तोड़ती थीं उन तरुओं को वे मूल से उखाड़ते हैं देवपत्नियां उसके सोने के समय उसकी स्तुति करके अपने अश्रु पृथ्वी पर छो-ड़ती हैं उन्हों ने पर्वतों के शिखर काटकर वहां विहार के स्थान और अन्तःपुर बनाये हैं और देवता अपने लोक को आंखों से नहीं देख सक्के वह आप ही यज्ञ का भाग ले लेते हैं इन्द्रादि को कौन पूछता है हमारा कोई उपाय नहीं चलता जैसा कि सन्निपात के हो जाने पर कोई औषधि काम नहीं करती हम लोगों को विष्णु के चक्र पर बड़ा भरोसा था पर वह भी व्यर्थ हो गया इससे हे ब्रह्माजी! आपको कोई उपाय करना उचित है हमने कहा कि हे देवतो! तारक ने शिवजी से वरदान पाया है और शिव के सिवाय और कोई नहीं जो उसको दूर कर सके और जो शिव के वीर्य से कोई पुत्र हो वह तारक का वध करसक्ता है सो यह बात बहुत कठिन है फिर हमने कहा कि देखो शिव हिमाचल पर्वत पर तप कर रहे हैं और गिरिजा अपनी सखियों समेत उनकी सेवा करती हैं जो

उन दोनों का मिलाप हो जावे तो निस्सन्देह तुम्हारा कार्य पूर्ण हो सिवाय गिरिजा के और कोई तुम्हारा काम नहीं कर सक्ता यही उपाय है अब तुमको उचित है कि कामदेव को भेजो वह शिव के पास जावे और शिव के मन में प्रीति का अंकुर उपजे यह सुन सब देवता हमारी बहुत बिनती और स्तुति कर अपने अपने घर आये और इन्द्र ने कामदेव का ध्यान किया तुरन्त कामदेव इन्द्र के निकट स्त्री सहित आया और हाथ जोड़ विनय की कि आपने मुझे क्यों स्मरण किया है इन्द्र ने दोनों को कृपा दृष्टि से देखा और कहा कि तुम धन्य हो कि देवताओं के हितैषी हो और हमारे कार्य में मन लगाते हो जिस कार्य के लिये मैंने तुमको स्मरण किया है वह वास्तव में तुम्हारा ही काम है यद्यपि हमारे बहुत से मित्र हैं पर तुम्हारे बराबर और कौन हमारा सहायक है अब हमारे काम पर तत्पर होजाओ और जिस तरह पर ब्रह्माजी ने युक्ति कही है उसी प्रकार पूर्ण करो और हे प्यारे मित्र! वीरों की परीक्षा युद्ध के समय की जाती है और उदार लोग काल के समय जाने जाते हैं और मित्र की परीक्षा तब होती है जब कोई आपदा पड़ती है और दरिद्रता और आपत्ति में स्त्री की परीक्षा का समय मिलता है इसलिये अब मुझको तुम्हारी मित्रता की परीक्षा मिल जावेगी और केवल मेरा ही प्रयोजन नहीं बरन सबके कार्य इसमें संयुक्त हैं कामदेव ने यह सुनकर कहा कि आप इतनी बातें घबराहट की क्यों कहते हैं हम सब काम करने को वर्त्तमान हैं कि जो कोई तुम्हारे पदके लेने के लिये तप करता हो उसको उसी समय पापी बना डालूं हमारे सहायक स्त्रियों के तीक्ष्ण कटाक्ष बाण हैं जिसके बल से सर्व संसार को जीत सक्ता हूं देवता, दैत्य, ऋषि सब मेरे वश में हैं और मनुष्य तो सेवकों के समान मुझे पूजते हैं यह बातें

सुन इन्द्र अतिप्रसन्न हुआ और कामदेव से कहा कि बैठ जावो और अपना प्रयोजन यों बखानने लगा कि हे मन्मथ! जो काम मुझको तुमसे कहना था वह तो तुम आप ही कहरहे हो देखो तारक दैत्य ने तप करके शिवजी से बड़ा वर पाया उसने धर्म को नष्ट कर देवताओं के सब रत्न छीन लिये हैं और सब के शस्त्र निष्फल हो गये हैं इससे सब देवता चिन्तायुक्त और दुःखी हो रहे हैं इसलिये ब्रह्माजी ने मुझसे कहा है कि जो शिव के वीर्य से कोई पुत्र उपजे तो तारक का वध होगा इस समय शिव हिमाचल पर्वत पर स्थित हैं तहां गिरिजा उनकी सेवा कर रही हैं जो तुम शिव को छलकर गिरिजा के साथ संयोग करादो तो सब मनोरथ पूरे हो जावें और तुम्हारी यह कीर्ति तीनों लोक में हो और देवताओं को अति प्रसन्नता प्राप्त हो।

पैंतीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! कामदेव ने इन्द्र से यह बात सुनकर मान ली और शिव के विजय करने की सामग्री कुछ कठिन न समझ अपनी पत्नी सहित इन्द्रसे बिदा हुआ उसके चलने के समय कई अशकुन हुये पर भाग्यवश ऐसे अशकुनों का कुछ विचार न किया और वसन्तादि सर्वसामग्री इकट्ठी की और बड़ी धूमधाम और गर्व के साथ चला और मार्ग में इस बात को विचारता हुआ कि क्योंकर शिव को वश करूं, शिव के निकट पहुँच देखा कि चारों ओर वसन्तऋतु फैल गई मोर बोलने लगे वन में कुसुम फूल उठे टेसू के वृक्ष प्रफुल्लित हुये और सर्व प्रकार के पक्षी मधुर वाणी से बोलने लगे जिससे सब देवता भी कामवश हो गये और जिनको अहंकार था वह भी मोहित होकर काम-जाल में फँस गये और कामी लोग तो मानों उसके चेले ही हो गये और कोई चराचर न

रहा जिसके कामदेव का बाण न लगा हो और सबका तप एक ही बेर जाता रहा और बुद्धिमान् कांप उठे और सब देवता अपने शुद्धमार्ग को छोड़कर काम के बाणों से दुःखी हो गये यद्यपि संसार में यह अवस्था केवल मुहूर्त भर रही और किसी से भी धैर्य और संतोष न रहा पर शिव और उनके गणों के साथ कामदेव का कुछ फल न हुआ और जब शिव के निकट कामदेव गया तब शिव को देख अति भयभीत हुआ और तुरन्त संसार से कामदेव का बल नष्ट हो गया जैसा कि पहिले सब लोग थे उसी तरह के हो गये जैसे नशा पिये हुये आदमियों का मद उतर जाता है उसी तरह से सब लोगों का मद उतर गया और मन्मथ अपने मन में कहने लगा कि मुझसे बड़ा पाप हुआ है शिव के कोप से हमारी मृत्यु होगी फिर बिचारा कि जो मैं शिव के हाथ से मारा जाऊंगा तो उत्तम है क्योंकि मैं भी शिव के गणों में गिना जाऊंगा क्योंकि बहुत से लोग शिव के हाथ से वध होकर अन्त को शिव के चरणों में पहुँच गये हैं यह विचार फिर अपने तेज से सृष्टि भर को पहिले की तरह कर डाला फिर सब लोग कामदेव के फंजे में पड़ गये शिव ने यह दशा देखी और दृढ़तापूर्वक मन को अपने वश से जाने न दिया और परिपूर्ण योग साधा और कामदेव बाण चढ़ाय शिव के बाईं ओर जो खड़ा हुआ तब शिव के सिवाय उस तपभूमि में कोई न था जिसको कामदेव ने मोहित न किया हो कामदेव घात लगाये हुये समय की बाट देखता था जब शिव ध्यान को छोड़कर अपने स्थान पर बैठे तब गिरिजा सब पूजा की सामग्री लेकर शिव के पास आई जब गिरिजा पूजा से निश्चिन्त होकर अपने सुन्दर अङ्ग ढांपने लगी तो कामदेव

मदन-दहन।



सौरभ पल्लव मदन विलोका। भयो कोप कम्पेउ त्रयलोका॥
तब शिव तीसर नयन उघारा। चितवत काम भयउ जरि छारा॥

(तुलसीदास)

N. K. P.

ने ऐसा समय पाकर अपना बाण कान तक तान मारा जिससे कुछ प्रीति का अंकुर शिव के मन में जमा और शिव हँसकर गिरिजा के अङ्गों की प्रशंसा करने लगे और चाहा कि गिरिजा का हाथ पकड़ूं पर गिरिजा स्त्रियों के स्वभाव के समान लज्जित होकर पीछे हट गई यह देख शिव मन में सब बात को जान गये और ऐसी प्रीति को विस्मरण कर गये और विचार किया कि क्यों हम इस स्त्री से छले गये जिसने मुझे विवश कर दिया जब चारों ओर देखा तो कामदेव को अपनी बाईं ओर छिपा हुआ देख कोपित हुये जिससे तीनों लोक कांप उठे और जाना कि प्रलय होने वाला है सो शिव ने अपना तीसरा नेत्र खोल काम की ओर देख दिया ज्यों हीं देखा त्यों हीं कामदेव भस्म हो गया और तीनों लोक में हाहाकार मच गया और देवता अप्रसन्न, और दैत्य अति प्रसन्न हुये और देवता अति भयवान् होकर महा दुःखी और दीन हो गये इतना चरित्र सुनकर नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे स्वामी! यह चरित्र सुनकर मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि शिव तो परब्रह्म निष्पाप, तीनों लोक के स्वामी मायारहित तीनों देवताओं करके सेवित योग में स्थित उनका नाम कामंजय और मृत्युंजय है और जिनकी शुभ दृष्टि से उनके भक्त कामदेव को वश किये रहते हैं ऐसे शिव को काम ने क्यों ऐसा फँसाया और सुगमता से काम ने विजय पाई ब्रह्माजी बोले कि इससे पहिले हमारे एक कन्या उपजी थी जिसका संध्या नाम था फिर एक लड़का उत्पन्न हुआ जिसको मन्मथ और काम कहते हैं हमने उसको वरदान दिया था कि तुम तीनों लोक पर प्रबल रहोगे और हम और विष्णु और हर तुम्हारे वश में रहेंगे यह सुन उसने पहिले मुझे ही बाण

मारा और मुझ से कुकर्म कराना चाहा हमने उसे क्रोधित होकर शाप दिया कि तुम शिव के तीसरे नेत्र से जल जाओगे इसी कारण कामने पहिले तो शिवको वश में करालिया और फिर शिवके तीसरे नेत्र से भस्म हो गया अब फिर पिछला चरित्र सुनो कि जब काम को शिवने जलादिया तव कोई तो दुःखी और कोई सुखी हुआ और गिरिजा अति आश्चर्य में हुई और उसके शरीर से बहुत पसीना छूटा और अपनी सुन्दरता का अहंकार छोड़ मूर्च्छित होगई और उसका मुख कमल प्रभात के चन्द्रमा के समान निस्तेज हो गया गिरिजा की ऐसी अवस्था देख सब सखियोंने उसका हाथ पकड़ सँभाला जब गिरिजा चैतन्य हुई तो लज्जित होकर अपने घर लौटी और शिव हिमाचल पर्वत को छोड़ कैलास पर्वतपर जाकर स्थित हुये शिवके चले जाने के उपरान्त गिरिजा की यह दशा होगई कि वह जिस तरह शिव हर दिन चरित्र करते थे उसको करके शिवका ध्यान किया करती और कामदेव की स्त्री रति रोने पीटने लगी और अपने पति के चरित्र वखान कर हाय २ करती और उसको अपने शरीर की कुछ सुध न रही जब चैतन्य हुई तो अति खेद से रोकर अपने पति के शवसे कहने लगी कि मैंने तुमको बहुत शिक्षादी पर दूसरे के वश में पड़ तुम को कुछ विचार न हुआ शिव जो रचते हैं वह अमिट है हे नाथ! तुमने मुझ से कुछ न कहा और मुझ से वियोग कर शिवपुरी को चले गये अब मैं अनाथ हूं और तुमने जैसा किया वैसा फल पाया किसी के प्राण का दुःख देकर किसीने आनन्द उठाया है फिर सबके जीव जो शिव हैं उनसे ऐसा करके आनन्द की क्या आशा है और जो तुमने इन्द्रलोक में अहंकार की बातैं कही थीं उनका यह फल मिला क्योंकि अहंकारी को परलोक

में आनन्द कहां है तुमतो शिव के गणों में मिल गये और हमारा अब कौन है इसी प्रकार की बातें कहकर रति ने अति-विलाप किया और देवता रति को इस प्रकार से रोते हुये देख अति शोकवान् हुये और रति को बहुत तरह से समझाकर शिव के निकट गये।

छत्तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! विष्णु और हम सब देवताओं को साथ लिये हुये शिव के शरण में गये और प्रणाम करके बहुत स्तुति की और विनय की कि हे शिव! हम सब डूबते हैं आप डूबने से बचावें हम सब आपकी शरणमें आये हैं यह विनय हमारी सुनकर शिव प्रकट हुये जो परमहंसों के समान सब सामग्री सजाये हुये जिसको देख हम सब प्रसन्न हुये और एक बार हम सबोंने खड़े होकर अलग अलग शिव की स्तुति की शिव ने प्रसन्न होकर कहा कि हम अतिप्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह मांगो और जो स्तुति तुम सबने पढ़ी वह हमको अतिप्रिय है जो कोई इसको पढ़ेगा हम उससे अतिप्रसन्न होंगे फिर हम सबने विनय की कि आप तो जानते ही हैं हम क्या कहें आपसे कौन बात छिपी है यह सुन शिव हँसपड़े और कहा कि हमने जो काम को जलाया तो केवल ब्रह्मा का शाप था हमारा भक्त ब्रह्मा बहुत बड़ा है जैसा कि विष्णु हमारा भक्त है अब हमारा यह वचन है कि आज से काम निश्शरीर होकर अतननाम से प्रसिद्ध होगा और शरीर विना केवल मन से उपजा करेगा फिर समय पाकर रति को उसका स्वरूप दिखला देवेंगे और वह हमारे पास कैलास में रहा करेगा जब विष्णु का कृष्ण अवतार होगा तब कृष्ण का कामदेव पुत्र होगा और रति को मिलेगा अब चाहिये कि उस समय के

आने तक रति इन्द्र के यहां जाकर स्थित रहे वह विना परिश्रम अपने पति कामदेव को पावेगी उसको उचित है कि कुछ दुःख न माने और कहीं न जावे जब रुक्मिणी के पुत्र उपजेगा तुरन्त उसको इन्द्र उठा ले जावेंगे और समुद्र में डालदेंगे तुरन्त एक मछली निगल जावेगी और वह हमारे प्रताप से नहीं मरेगा बरन् उसको एक केवट ले जाकर एक असुर को देगा जब मछली का पेट फाड़ा जावेगा तब वह प्रकट होकर रति के यहां गुप्त रहा करेगा फिर उस असुर को कृष्ण का पुत्र वध करके यहां आवेगा इतना कह सबके देखते शिव अन्तर्धान होगये और देवताओं ने रति को समझा बुझाकर इन्द्र के साथ करदिया और अपने अपने स्थान को सब चले गये इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह शिवचरित्र हमने कहा अब गिरिजा की कथा सुनो ।

सैंतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब गिरिजा ने काम को जलते हुये देखा तो तुरन्त वहां से भागकर अतिचिन्तायुक्त विह्वल होकर उठती बैठती अपने घर पहुँची यह दशा देख उसके माता पिता तुरन्त गिरिजाके पास आये और नगरभर में खलभल पड़ी जब गिरिजा कुछ चैतन्य हुई तो उसकी माता ने पूछा कि तुमको इस तरह किसने भय दिया कि तुम बार बार ऊर्ध्वश्वास लेती हो गिरिजाने जैसा कि देखा था सब वृत्तान्त वर्णन किया और माता पिताने गिरिजा को भरोसा दिया और बहुत प्रकार से आश्वास किया पर गिरिजा को कुछ संसार का आनन्द न मिला वह चलते बैठते जाग्रत् और स्वप्नावस्था खाने पीने नहाने आदि के समय में प्रतिक्षण शिव के चरित्र को न भूलती और न किसी वस्तुमें उसकी इच्छा रही हे नारद ! उसी समया-

न्तर में तुम गिरिजा के पास गये और गिरिजाने तुमसे लज्जित होकर कहा कि हे नारदजी! तुम कोई ऐसी युक्ति बताओ जिससे हमको शिव मिलें हमने उत्तर दिया कि शिव केवल तप के आधीन हैं जो तुम शिव को अपना पति किया चाहती हो तो तुम वन में जाकर शिव का कठिन तप करो क्योंकि शिव केवल तप के आधीन होकर संसार को वश करके पालते और फिर उसको नाश करदिया करते हैं रुद्र भी केवल तप करके प्रलय करते हैं और शेष पृथ्वी को शिर पर रक्खे रहते हैं ऐसे तप से देवता आदि क्या २ प्राप्त नहीं करते गिरिजा बोली सत्य करके यही बात है पर मुझे आप अपना शिष्य कीजिये और विधि बताइये क्योंकि गुरु विना गति नहीं और कोई कार्य सिद्ध नहीं होता और विष्णु ब्रह्मा और हर भी गुरु विन नहीं हैं हे नारद! तब तुमने शिव का ध्यान करके गिरिजा को पञ्चाक्षरी मन्त्र का उपदेश किया तुम तो वहां से चलकर हमारे पास आये और गिरिजा वह उपदेश पाकर तप की दृढ़ इच्छा से अपनी सखियों समेत हिमाचल के पास गई सो सखियों ने गिरिजा की ओर से विनय की कि गिरिजा कहते हुये लज्जा करती है उसकी ओर से हमारी यह विनती है कि अब गिरिजा की इच्छा है कि शिव का तप करे आपकी आज्ञा चाहती है हिमाचल ने प्रसन्न हो इस विनय को मान लिया और आज्ञा दे दी फिर गिरिजा ने उन्हीं अपनी सखियों समेत अपनी माता के पास पहुँचकर विनती की तो मैना अतिचिन्तित हुई और अँधियारी रात्रि के समान मलिन होकर गिरिजा से कहा कि अपने घर में तप करो और माता पिता के घर को किसी स्थल वा देवालय वा तीर्थ से कम न समझो पहिले तुमने जाकर क्या किया अब फिर क्या करोगी व्यर्थ ही दुःखसहती हो अपने घर को देवताओं का

घर समझो और यहां रहकर मुझे आनन्द देती रहो गिरिजाने कहा हे माता ! शिव केवल तप के वश में हैं विना तप के क्या होसक्ता है संसार में जिसने जो पाया है वह केवल तप का फल है तप से बड़ा सुख मिलता है मैना बोली कि हे गिरिजे ! मेरे सौ पुत्र हैं पर तू मुझे सबसे प्यारी है मेरी आंखों से तुम दूर न हो जो तू कहे वही मैं करूँगी तुम घर छोड़कर बाहर मत जाओ जो जो मांगोगी वह मैं तुझे दूंगी गिरिजा बोली हे माता ! विना जप तप के शिव मेरे साथ विवाह न करेंगे वह तप केवल वनमें होसक्ता है न कि घरमें क्योंकि घर अहंकार मूर्खता दुःख चिन्ता आदिकी खानि है जो घर बैठे तप होसके तो मुनि और राजालोग क्यों वनमें जावें यह सुनि माताने फिर चिन्तित हो कहा कि वन बड़े भय का स्थान है वहां सिंह और हाथी आदि फिरा करते हैं और वहां बड़े विषैले जीव रहते हैं उनकी पवन भी अभी तुमको नहीं लगी तुम वनके दुःख क्योंकर उठावोगी गिरिजा बोली कि संसार में श्रम उठाने विना कोई अच्छा मनोरथ या वस्तु प्राप्त नहीं होती हमारा यह वचन है कि घर और बाहर सब जगह शिव रक्षक हैं ऐसे कुल या सन्तान को धिक्कार है कि जिसने शिवके चरणों का ध्यान न किया विना शिवके मुक्ति कहां है मैनाने कहा कि देखो जो विष और मादक वस्तु भङ्ग आदि खाकर एक वृषभ पर चढ़ता है वह नग्नशरीर और अशुभसामां रक्खेहुये दरिद्री है तुमको उसकी भक्ति से क्या फल प्राप्त होगा ? यह बात गिरिजा ने अपनी माता से सुनकर कहा कि ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि आदि जिस आदि पुरुष का ध्यान करते हैं वही हमारे मन में स्थित होगया है वही तीनों गुणों से प्रकट होकर नाना प्रकार के चरित्र करता है अब मुझे आज्ञा दीजिये यह सुन मैना प्रसन्न हुई और अति

हर्षपूर्वक कहा कि बहुत अच्छा हमारे कुल को पवित्र करो मैंने जान बूझकर तेरे निश्चय के देखने को यह वचन कहे थे वास्तव में शिव का तप तेरा मनोरथ पूरा करेगा इस प्रकार गिरिजा माता पिता की आज्ञा पाकर शिव की बहुत स्तुतिकर हर २ कहती हुई वनको चली जब मैनाने गिरिजा को वन की ओर जाते हुये देखा तो महादुःखी होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी। इसीप्रकार सब कुलके लोगों और नगरवासियों ने खेदसंयुक्त गिरिजा को फिर भी वनमें जाने से बर्जी और वनके दुःख हर प्रकार के वर्णन करके यही अनुमति दी कि घर में तप करना उचित है पर जिस तरह से चकवे के जोड़ को बरात भर की उजियाली अच्छी नहीं लगती इसी प्रकार गिरिजा को यह बातें समझाने की न भाईं और कहा कि तुम लोग कुछ चिन्ता मत करो हम शीघ्र ही शिव का वरदान पावेंगी हमको वन का रहना शुभ होगा इसी प्रकार सब से मधुरवाणी के साथ वार्ता कर ब्राह्मणों को प्रणाम किया और अपने लौट आने तक उनके कालक्षेप को सब कुछ दिया और सर्व प्रकार के मंगन और भिक्षुकों को इस लिये पूर्ण कर दिया कि इससे शिव तृप्त होते हैं इसी प्रकार अपनी सब सखियों को देखती हुई और नाना प्रकार से समझाती अपने माता पिता को प्रणाम करती भई और अच्छा मुहूर्त पाय चल दी सब लोगों ने आशिष दिया और देवताओं ने जय २ शब्द कर फूलों की वर्षा की और दुन्दुभी बजाने लगे चलने के समय गिरिजा के बायें अङ्ग भुजा और नेत्र फड़क उठे जिससे विदित हुआ कि हमको शिव अवश्य मिलेंगे यद्यपि उस समय नगरनिवासी अतिचिन्तित थे पर अशुभ समझ कोई रोता न था और गिरिजा के चले जाने के उपरान्त उनके माता पिता और भाई सब लोगों समेत

मूर्च्छित होगये और हिमाचल के नगर का चमत्कार उड़ गया और नगर मानों कालरात्रि होगया और उस नगर के निवासी कालस्वरूप भासने लगे जो अपने आपही को देख भय खाते थे और घर श्मशान के समान विदित होते थे और मित्र यमदूतवत् प्रकट होते थे और नाना प्रकार के उद्यान पुष्पवाटिका सींचने पर भी चिताभूमि सदृश सूख गये और सब जीवों का तेज जाता रहा नदी नाले अच्छे मालूम न होते थे और सर्व मनुष्य गिरिजा के दुःख और वियोग से चित्रवत् आश्चर्य में रहा करते थे वे अहर्निश गिरिजा की बालक्रीड़ा का स्मरण करते थे हे नारद! तुम इस बात को अच्छी तरह से समझो कि शक्ति विना संसार में कुछ भी आनन्द नहीं है शक्ति ही के प्रकट होने से लोक में बल प्रकट होता है वह अपने चरित्रों से सर्व प्रकार के दुःखों को दूर करती है और जैसे कि इन्द्रियां जीव विना निशि बिन चन्द्रमा जलबिन मीन प्रसन्न नहीं उसी तरह गिरिजा विना वह नगर हो गया यह दशा देखकर वेदज्ञ मुनि उस नगर में पहुँचे जिनकी पूजा वहां के सब नगरवासियों ने की मुनि बोले कि हे हिमाचल! किस शोक में हो पर हिमाचल दुःख और चिन्ता की अधिकता से बोल न सके फिर धैर्य धर कहा कि हमारी पुत्री शिव के तप के लिये वन में गई है और मैना ने बहुत रो रो कहा कि जिस गिरिजा के कभी उष्ण पवन भी न लगी थी वह वन में गई है जो करोड़ों प्रकार के भोजन खाती थी वह वन में क्या खाती होगी जिसके सोते हुये उसकी सखियां स्तुति किया करती थीं उसके लिये सन्देह है कि कहीं वनमें उसको कोई सिंह आदि न खा डाले अब हमारा जीना कठिन है यह सुन मुनि ने माया को बहुत बेर धन्य कहा और कहा कि हे शिव! जब जैसा तुम

चाहते हो वैसा ही करते हो तुम्हारी माया सबको भुलाये रहती है किसी को दुःखी और किसी को सुखी करती है फिर हिमाचल और मैना से कहा कि तुम कुछ खेद मत करो तुम्हारी कन्या अनादि सो ब्रह्मा और विष्णु आदि देवताओं से अपनी सेवा कराया है कि तुम उसको नहीं जानते हो वह अपने तप से हम सबको आनन्द देगी और तुम्हारी बड़ी कीर्ति होगी इसलिये उचित है कि कुछ दुःख मत करो और शिव के ध्यान में बने रहो यह कह मुनि ने गिरिजा को नमस्कार किया और बिदा हुये और हिमाचल और मैना और सब नगरवासी प्रसन्न हुये और शिव का ध्यान करते रहे।

अड़तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! हिमाचल और मैना का दुःख दूर हो गया और शिव की प्रीति अधिक हुई और गिरिजा ने मुनीश्वरों के समान अपने को बनाया और वनमें जाकर शिव के सिवाय सबको भुलादिया और फिर तप के लिये शृङ्गतीर्थ को गई जो उस समय से गौरीशिखर के नाम से प्रसिद्ध है और सब लोग उस स्थान को प्रणाम करते हैं वह पर्वत उत्तम तपस्थल है और वहां नाना प्रकार के वृक्ष और फल हैं और सिद्धपीठ है गिरिजा ने एक तप का स्थान नियत किया और वहां बैठ अपना कार्य करने लगी और चौंसठ वर्ष पर्यन्त शिर नीचे किये एक ही आसन से बैठी रही उष्णकाल में अग्नि तापकर और वर्षा में खुले मैदान में रहकर और शीतकाल में जल के बीच बैठ महाउग्र तप किया जब ऐसे उग्रतप से भी फल न पाया तब उससे भी महाकठिन तप में मन लगाया अर्थात् सहस्र वर्ष पर्यन्त वृक्षों के मूल और पत्र खाकर रही फिर एक वर्ष तक केवल हरी घास और शाक आदि खाया

फिर थोड़े समय तक पवन ही भक्षण की और कुछ समय तक जलमात्र पीकर कालक्षेप किया जब ऐसे तपसे भी सिद्धि न हुई तो उससे भी कठिन तप किया पर ऐसे ऐसे कठिन तपों के करने से भी उसका मनोरथ पूरा न हुआ तब हिमाचल के घर को लौट गई और अर्घा समेत तीन कोटि पार्थिव बनाकर पूजा की और नाना प्रकार के पुष्प हर रङ्ग के गिन कर शिवपर चढ़ाये और रात दिन शिव के गुण कथन और गुण श्रवण और पूजा और ध्यान के सिवाय और किसी बात से प्रयोजन न रक्खा और इतनी शिवकी प्रीति में मोहित हुई कि प्राणायाम करके अपने को आपमें लय कर दिया और ब्रह्मरूप में स्थित रही ऐसे कठिन तप करने में नाना प्रकार की कठिनता सामने आई कि भूतों की सेना ने गिरिजा को चारों ओर से घेर लिया जिनके अति भयानक शब्द थे उनमें कई तो सिंह और कई हस्ती और कई भैंसा और बैल चमगादर आदि का मुख बनाये हुये गिरिजा को भय देने लगे कइयों की एक आंख और कई अन्धे काने और कई हजारों नेत्र लगाये कई हाथों विना और कइयों के बहुत से कर और कई मुख रहित और कई असंख्य मुख सहित और कइयों के बहुत चरण और कई बिन पांव के थे उनके शरीर का वर्ण श्याम, रक्त, पीत, श्वेत आदि भिन्न भिन्न विचित्र प्रकार से था और कोई नाचता कोई दौड़ता कोई उछलता कोई गाता हुआ नाना प्रकार के भयदायक रूपों से आपस में लड़ते झगड़ते मरते मारते हुये दिखाई दिये कोई कोई जम्हाकर अपनी दाढ़ें दिखाता और कोई गिरिजा के निकट आकर अपने को बहुत लम्बा बनाता कोई मार मार शब्द करता हुआ गिरिजा पर चढ़ाई करता कोई गिरिजा की माता का स्वरूप रच रो रो कहता था

कि तुम्हारे पिता ने तुम्हारे वियोग में खाना पीना छोड़ मर जाने की इच्छा की है इसलिये घर चलो यद्यपि भूत प्रेतों ने इस प्रकार के बहुत से चरित्र और छल किये पर गिरिजा का ध्यान शिव में दूना लगा और गिरिजा के तेज से सब भूत आदि भाग गये कोई जल गया कोई पृथ्वी पर गिर पड़ा कोई डूब गया और गिरिजा के तप के स्थल की यह दशा हुई कि कैलास पर्वत के समान हो गया और वहां के वासियों ने अपने आप ऐसा ज्ञान पाया कि संसार की माया छोड़ ब्रह्मज्ञान में दृढ़ हो गये और सिंहों की यह दशा हुई कि बालकों के समान गायों के आगे खेला करते और बिल्ली चूहों को प्यार करके लाड़ करती और मोर सांपों की पीठ खुजलाते और वह भी मोरों के शरीर से लिपट जाते थे घोड़ा और भैंसा मिलकर परस्पर प्रीति प्रकट करते यहां तक कि जिनको कुछ भी किसी प्रकार का दुःख होता वह उस जगह पर जाकर रहता उस स्थान पर वैर का नाम भी न था और तालाब नदी और नाले अति उत्तमता से बहते और वृक्षों में फूल और फल खिले हुये थे निदान वहां किसी वस्तु की कमी न थी और तोता मैना आदि पक्षी मधुर शब्द से प्रीति समय बोलते निदान उसी स्थान पर सब ऋद्धि सिद्धि इकट्ठी हुईं ऐसा तप गिरिजा का प्रसिद्ध हुआ । हम और विष्णु और इन्द्र और सब देवता आदि वहां पर पहुँचे और देखा कि गिरिजा सिद्धि रूपा हो बैठी है सबने प्रणाम किया इन्द्र ने देवतों से कहा कि गिरिजा का तप सबसे श्रेष्ठ है इस प्रकार का तप किसी ने नहीं किया गिरिजा को धन्य है और इसके माता पिता और नगर को भी धन्य है और हमको धन्य है कि गिरिजा के तप को देखा फिर सब लोग शिव के निकट

गये पहिले कैलास पर्वत को देखा जिसमें अति उत्तम सुन्दर वन मानों छहों ऋतु स्वरूप धारण किये वर्त्तमान हैं गङ्गाजी की धारा बहती वायु मन्द २ सुगन्धित चलती वहां किसी को भी दुःख न था कहीं मुनि लोग ध्यान करते कहीं सिद्ध तप में लगे कहीं किन्नर गाना गाते ऐसा आनन्द कैलास में देखते हुये शिव के निकट पहुँचे और शिवजी के योग में स्थित शरीर धारण किये दर्शन किया शिव का स्वरूप देख प्रेम ने इतना बल किया जिसका वर्णन नहीं कर सके जिनके चन्द्रमा भाल पर विराजमान शीश पर गङ्गाजी की धारा बह रही माथे पर त्रिपुण्ड्र लगाये हुये सांपों को कानों में पहिने नेत्र लाल २ जिनके देखने से संसार भर के दुःख नाश को प्राप्त हों इस प्रकार का सुन्दर स्वरूप देख हमने उनकी स्तुति की ।

उन्तालीसवां अध्याय ।

देव गण बोले कि हे शिव ! तुम्हारी बड़ाई और तेज जो असंख्य है उसको कहकर हम पार नहीं पा सके जिसको नारद भी कहकर आश्चर्य में हो जाते हैं तुमने कृपा करके शबरी को मुक्त कर दिया और सुमनी को भी मोक्ष दिया जो महाव्यभिचारिणी थी तुम्हारी सेवा करके बहुत से पापी तुम्हारे लोक में आ गये हैं जिनको कोई दुःख नहीं है जब तक कोई तुम्हारे तप में दृढ़ नहीं होता तब तक उसको संसारसागर से मुक्ति प्राप्त नहीं होती तुम्हीं परब्रह्म परमेश्वर सबके ईश्वर हो उत्पन्न करना पालना मारना सब तुम्हारे वश में है तुम्हीं हमारे स्वामी हो और तुम्हीं जड़ और चैतन्य की बात जानते हो संसार में जहां तुमसे भिन्न कोई पदार्थ नहीं वह एक वृक्ष के समान है जिसका एक अंकुर दो

फल तीन मूल और चार रस हैं तुम्हीं आकाश पृथ्वी दूर और निकट हो मनुष्य तुमको माया के कारण नहीं जानते और जो तुम्हारे भक्त हैं वे तो सब को शिव जानते हैं तुमसे भिन्न किसी वस्तु को नहीं मानते तुम निर्गुण हो पर कृपा करके सगुण भी हो जाते हो और भक्तों के दुःख दूर करने को अवतार लेते हो कोई २ तुम्हारे चरणों की नाव बनाकर संसारसागर से पार लग गये हैं वह बुद्धिमान् जो अहंकार से हीन हैं वे धीरे २ आप तक पहुँच जाते हैं और आपकी भक्ति विना आवागमन बना रहता है पर आपके भक्तों को यह दुःख नहीं है वे निर्भय रहा करते हैं और तुम्हारे चरणों की सेवा करके परमपद प्राप्त करते हैं उत्पत्ति के समय ब्रह्मा और पालने के समय विष्णु और प्रलय के समय हर हो जाते हो यह तीनों तुम्हीं अकेले हो और तुम वेद कर्म तप जप और योग ध्यान से मिलते हो जो तुम सगुण रूप धारण न करते तो हमको सुगम रीति से क्योंकर मुक्ति प्राप्त होती हम आपके नाम और गुण वर्णन करने के योग्य नहीं न हमको ऐसी बुद्धि है तुम्हारी अपरम्पार महिमा है आप हमारे कार्य पूरे करें तुम देवों के देव सर्व सृष्टि के इन्द्र भक्तों को शुभ मार्ग में स्थित करनेवाले सर्व सृष्टि के कारणरूप अविनाशी अनादि अप्रमेय और तुम्हारा शरीर मात्र विद्या और बुद्धि से पूर्ण है ऐसा तुम्हारा शुभ शरीर भक्तों के मनों में स्थित रहता है और भक्त लोग कुसंगति और काम को छोड़कर तुम्हारे तप में प्रसन्न रहा करते हैं तुम पूर्ण ब्रह्म काल के भी काल हर्ष के समूह दुःखरहित और संसार पर अति कृपालु हो और तुम इच्छारहित अद्वितीय निरीह और परब्रह्म हो यद्यपि तुम तीनों गुणों से परे हो पर तो भी संसार की भलाई के लिये अवतार लेते हो तुमने सब से पहिले शरीर धारण किया सो

यह शरीर और तुम्हारा अवतार केवल हमारे मनोरथ पूर्ण करने को है इस तुम्हारे अवतार की महिमा असंख्य और अप्रमेय है हम लोगों का मन जो केवल प्रसन्नता के विचार में लगा रहता है वह तुमको क्या जान सक्ता है तुम्हारे जानने की बुद्धि संसार को नहीं है जो लोग आपके गुण मन लगाकर सुनते हैं वही तुमको जीतते हैं और कोई तुमको नहीं पाता बहुत लोग धर्ममार्ग छोड़ केवल तुमसे प्रीति रखते हैं और अपनी भक्ति तुम पर दृढ़ कर अति सुगमता से तुम्हें पाते हैं और संसार में तुम्हारे भक्त सदा तुम्हारी कथा सुनते हैं वे सब से अधिक तुमको प्रिय हैं तुम उन्हीं के सामने प्रकट होते हो तुम देवता, मनुष्य, मुनि, पशु और पक्षी आदि समस्त जीवों में अवतार लेकर अपने भक्तों के कार्य बनाते हो यह स्तुति कह हम विष्णु और सब देवता चुप हो गये और शिव प्रसन्न होकर बोले कि हे विष्णु और ब्रह्मा और सब देवता ! यह तुम्हारी सेना कहां आई है तुम बहुत चिन्तित भासते हो सर्व वृत्तान्त वर्णन करो विष्णु और हमने विनय की कि हमारे धन्य भाग हैं कि आपकी कृपादृष्टि हम पर हुई संसार में वे लोग शुभ हैं जिन पर आपकी अनुग्रह की दृष्टि है हे शिव ! तुम्हारी महिमा विचित्र है आप हर शरीर में वर्त्तमान हैं आप कानों विना सुनते हैं विन वाणी वेद प्रकट करते हैं विन त्वचा स्पर्श जानते हैं जिह्वा विना स्वाद जानते हैं पांव विना तीनों लोक की यात्रा करते हैं आपमें असंख्य कला हैं और आप अपने भक्तों को दुःखी देखकर बहुत आनन्द देते हैं यह कह हम और विष्णु भी चुप हो गये ।

चालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! इतनी बिनती और स्तुति

सुन शिवजीने कहा कि जिस मनोरथ के लिये तुम सब हमारे पास आये हो उसको वर्णन करो हे ब्रह्माजी और विष्णु! तुम देवताओं के स्वामी हो विष्णु और हमने विनय की कि तुम सब जानते हो तुमतो बैठे २ तीनोंलोक को देखते हो तुम्हारी माया संसारभर को वश्य किये हुये है सो तुम हमसे मूर्खोंके सदृश क्या पूछते हो पर आपने आज्ञा दी है तो हम विनय करते हैं कि नारदसे उपदेश पाकर गिरिजा महाकठिन तप कर रही है ऐसे परिश्रम से कठिन तप आजतक किसीने नहीं किया इसलिये आपको उचित है कि वहां चलकर गिरिजा को वरदान दीजिये क्योंकि देवताओं की बड़ी इच्छा है कि तुम्हारा विवाह गिरिजा के साथ देखें और आपकी बरात में चलें शिव ने हँसकर कहा कि मूर्खलोग विवाह करके संसारजाल में फँसते हैं यह काम बुद्धिमानों का नहीं यद्यपि वेद ने इस विषय में बहुत सी बातें वर्णन की हैं पर बुरी स्त्रियों की संगति के समान और कोई भ्रष्ट कर्म नहीं जो तुम्हारा कहना नहीं करते तो वेद और धर्मशास्त्र की प्रतिष्ठा कम होती है हम तपके वश में होकर तुम्हारा कहा मानते हैं चाहे हमको बहुत दुःख मिले जब राजा कामरूपने इच्छा की तब हमने दैत्य को मारकर आनन्द दिया और गौतम के सर्व दुःख दूर किये और कृपा करके हलाहल विष पीलिया क्योंकि सब देवता जलेजाते थे और रामचन्द्र के लिये हनुमान् का अवतार धारण कर उनके सेवक बनकर नाना प्रकार के दुःख सहे और जहां २ हमारे भक्तोंपर कोई कष्ट पड़ा हमने तुरन्त उनको आनन्द दिया है और हमने ग्रहपति नाम अवतार लेकर विश्वामित्र मुनिके दुःख को दूर किया इसी तरह तुम्हारे लिये भी हम तत्पर हैं जो तुम्हारी इच्छा है वह हम करेंगे हम गिरिजा के साथ विवाह करेंगे तुम सब

बिदा होकर अपने २ घरों को जाओ यह सुन हम सब बहुत प्रसन्न हुये और शिवसे बिदा हुये और उनके गुण कहते सुनते गाते हुये घरों को आये और शिवने हम सबको बिदाकर सप्तऋषि का स्मरण किया कि वे आये और स्तुति कर नीचे शिर किये खड़े हुये और कहा कि जो आज्ञा हो वह हम पालन करें शिवजी बोले कि गिरिजा बड़ा कठिन तप कररही है तुम वहां जाकर गिरिजा को छलो और उसके प्रेम की परीक्षा करो वे उसी समय गिरिजा के पास गये और देखा कि गिरिजा तप-रूप बनकर बैठी है उन्होंने अतिचतुरता और वाचालतापूर्वक कहा कि तुम क्यों ऐसा तप करती हो तुम किसका किस काम के लिये ध्यान करती हो सत्य २ हमसे कहना क्योंकि संसार भर सत्यता पर स्थित है पार्वतीने उत्तर दिया कि यद्यपि मुझे अपने मनोरथ के कहने में लज्जा आती है और निश्चय यह कि तुम उसे सुनकर हँसोगे पर मैं कहती हूं मन देकर सुनो हम देवता और मुनियोंके वचनों को सत्य जान यह तप करती हैं इसी कारण कि शिवके साथ हमारा विवाह हो और यह वही बात है कि जैसे किसी को पङ्खों विना अन्तरिक्षमें उड़ने की इच्छा हो यह बात सुन मुनि बोले कि तुम नारदके चरित्र नहीं जानती हो उनकी बातोंसे तो नगर गांव उड़जाते हैं अब हम एक इतिहास कहते हैं उसको ध्यानधर सुनना कि ब्रह्माजी के पुत्र दक्षने विवाह कर दश सहस्र पुत्र उपजाये वे विष्णुका तप करने लगे कि नारद ने तुरन्त पहुँच कर उनको उपदेश किया तो वह दक्षके पुत्र फिर घर नहीं आये और दक्षने यह सुनकर और उतने पुत्र उपजाये वह भी नारद का उपदेश पाकर जहां उनके भाई पहिले जा चुके थे चलेगये सिवाय इसके नारदने चित्रकेतु का घर तो नष्टही करदिया और कनक-

कशिपु का बिगाड़ कर दिया और जिनको नारदने अपने मत का उपदेश किया वह द्वार २ भीख मांगते हैं हम नारद को अच्छी तरह पर जानते हैं उनका मन तो मलिन है परन्तु प्रकट में श्वेतवस्त्र पहिने रहते हैं वह और हम बहुत दिनों एक साथ रहे हैं इस से उनके बहुत दोष हम जानते हैं क्योंकि सहवासियों का हाल अच्छी तरह मालूम हो सक्ता है सो तुम भी नारद के कहने पर भूल गई हो इसके सिवाय जिन शिव के लिये तुम यह तप करती हो वह शिव तो सदा उदास रहा करते हैं वे निर्गुण अशुभ निर्लज्ज और बुरे वस्त्र पहिननेवाले हैं उनके कुल परिवार और नौकर चाकर कुछ नहीं उसी ठग ने तुमको इतना मोहित किया है कि तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई है ऐसा पति पाकर तुमको क्या आनन्द मिलेगा इस बात को भली भांति अपने मन में विचारो पहिले शिवने दक्ष की पुत्री के साथ विवाह करके कुछ दिन भी निर्वाह न किया और दोष लगा कर उसको छोड़ दिया और आप अपने ध्यान में लगे रहकर निश्चिन्त रहने लगे जो केवल एकान्त में रहता है उसके यहां स्त्री का क्या निर्वाह होगा इसलिये अब भी कुछ नहीं गया अपनी हठ छोड़ घर चली जाओ हां विष्णु तुम्हारे विवाह के योग्य हैं जो स्वर्ग के सब देवताओं के स्वामी हैं उनको लाकर तुमसे मिलादेंगे पार्वतीने उत्तर दिया कि वास्तव में यह सब सत्य है पर हमारे हठ में कुछ न्यूनता न होगी अपना वही राग गावेंगी जो आज तक गाती चली आई हैं क्योंकि हम पहाड़ से उपजी हैं इससे हम में जड़त्व विशेष है और हम नारद के वचन का त्याग न करेंगी हे मुनिश्रेष्ठ! जो अपने गुरु के वचन को सत्य मानते हैं वह सदा प्रसन्न रहकर आवागमन से छुट्टी पाते हैं और जो अपने गुरु के वचन को झूठ समझते हैं उनको ईश्वर

नहीं मिलता चाहे वे कल्पभर भटकते फिरें हमने इस बातको माना कि विष्णु में सब गुण हैं और शिव में सब अवगुण भरे हुये हैं पर वे निर्गुण हैं और उन्होंने केवल अपने भक्तों के लिये शरीर धारा है उनको अपनी शक्ति और ऐश्वर्य दिखाना अङ्गीकार नहीं वह परमहंसी गति में हैं और अपने को लोक में अवधूतों के समान दिखाते हैं और वस्त्र और आभूषण पहिनना मनुष्यों का काम है वे तीनों गुणों से भी श्रेष्ठ और बड़े हैं और धर्म और कुलकी बातें सब माया के कारण प्रकट होती हैं सो इनको तो शिव स्वीकार नहीं करते क्योंकि वह ऐसेही हैं हमने शिवको अपने गुरु की कृपासे अच्छी तरह पहिंचाना है मैं निश्चय करके इस बात को कहती हूं कि जो शिव हम से विवाह न करेंगे तो हम जन्म भर विवाहरहित रहेंगी चाहे सूर्य पूर्वसे पश्चिम में उदय हों और सुमेरु पर्वत अपने स्थान से दूसरे स्थान पर चलाजावे चन्द्रमा में उष्णता उपजे अग्नि शीतल होजावे पर मैं अपनी हठ न छोडूंगी हमारे झगड़े में तुमको न पड़ना चाहिये यह कह गिरिजा ने सप्तऋषि को प्रणाम किया और चुप होगई और पूर्ववत् शिव के ध्यान में मग्न होगई ऐसा निश्चय गिरिजा का देख कर सप्तऋषि जय २ कह उठे और मनमें अशीषें देने लगे और कहा कि तुमको शिव अवश्य मिलेंगे और धन्य धन्य कह कर प्रणाम किया और शिवलोक को चले गये और शिव के पास पहुँच कर कहा कि हमने गिरिजा की अच्छी तरह पर परीक्षा की और अपनी बुद्धि और वाग्जाल से बहुत छला पर उसने कुछ भी धोखा न खाया इस लिये हे शिव ! आपको उचित है कि वहां चलकर पार्वती को वरदान कृपा कीजिये यह कह सप्तऋषि चले गये ।

इकतालीसवां अध्याय।

इतना सुन नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि जब सप्तऋषि बिदा होकर अपने घर चलेगये तो फिर शिवजी ने क्या किया हमको सुना दीजिये ब्रह्माजी बोले कि सप्तऋषि के चलेजाने उपरान्त शिवजी ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और ब्रह्मचारियों के समान दण्ड लेकर माथे में त्रिपुण्ड्र लगाया और रुद्राक्ष की माला हृदय और हाथ में पहिनी और जहां पार्वती तप करती थीं वहां ऐसा स्वरूप बनाकर गये गिरिजा ने प्रणामकर कुशल पूछी और कहा कि तुम कौन हो कहां आये हो यह सुन ब्राह्मण ने ठंढी श्वास ले कहा कि हम ब्रह्मचारियों की रीति किये हुये सृष्टि के उपकार के निमित्त इधर उधर भ्रमण करते हैं तुमने हमको धर्मवान् जानकर प्रतिष्ठा और आदर किया इससे हमको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ है अब हम तुम से पूछते हैं तुम ठीक २ हम से बतावो कि तुम कौन हो और किसकी कन्या और क्यों यहां आई हो श्रीजगदम्बा ने विचारपूर्वक एक अपनी सखी से सैन की उसने आदि से अन्ततक सब वृत्तान्त कि जिस प्रकार नारदजी ने आकर भविष्यवाणी कही थी कि गिरिजा का विवाह शिव से होगा सब कह सुनाया तब तो ब्राह्मण ने पछिताकर कहा कि हे गिरिजे! हमसे यह क्या हँसी करती हो तुम क्यों आप हमको उत्तर नहीं देतीं गिरिजा बोली कि जो कुछ हमारी सखी ने आपसे कहा है वह सब ठीक है मैं यह चाहती हूं कि मेरा विवाह शिव के साथ हो और चाहे मेरा यह मनोरथ अतिकठिन किन्तु दुर्लभ है पर मुझको निश्चय है कि शिव हमारा मनोरथ पूरा करेंगे और मुझे नारदजी के वचन पर पूरा विश्वास है तब तो ब्राह्मण ने वाग्जालपूर्वक कहा कि हे गिरिजे! जो चाहो वह करो हमको क्या प्रयोजन है पर जो कि तुमने आदर से मेरा

सन्मान किया इसलिये बिन कहे मुझसे रहा नहीं जाता इसके सिवाय जान बूझकर कोई ठीक बात का छिपाना बड़ा पाप है हे गिरिजे ! तुम हिमाचल की कन्या होकर इतनी मूर्ख होगई हो अपने ऐसे शरीर को जो तपरूप हो रहा है क्यों राख किये डालती हो और अपनी सुन्दरता को मिटाती हो तुम राजा की कन्या होकर लौंड़ी बना चाहती हो पर भाग्य से क्या वश है तुम विष्णु और ब्रह्मा को छोड़कर शिव के लिये तप करती हो यह भाग्य की बात है क्या तुम्हारे लिये शिव जैसा अशुभ और अनुचित पति चाहिये शिव क्या विष्णु और इन्द्र की बराबरी करसके हैं शिव की चाल डौल संसार से न्यारी है देखो विष्णु आदि सब गुणवान् कुलवान् और प्रतिष्ठित हैं शिव में इन बातों में से कोई बात नहीं उनके माता पिता भी तो नहीं हैं हां सांप और भस्म शरीर में लगे रहते हैं वे तीनों लोक से जुदा और उनका कोई बान्धवादिभी नहीं वे बैल पर सवार हो नाना प्रकार के विष और भंग को खाते हैं और शृङ्गी और डमरू हाथ में लिये हुये भूतों के साथ लीला करते हैं वे केवल अकेले वन में उदास बैठे रहते हैं और उन्होंने कामदेव को जला दिया जो स्त्रियों को प्रिय है जो अच्छे गुण हैं वह उनमें कोई भी नहीं और नारद ने भी उनके अवगुण न जानकर तुमको ऐसा छला है सिवाय इसके नारद का तो यह स्वभाव है कि सर्वसृष्टि में इसी प्रकार के उत्पात करते हैं देखो उसने दक्षप्रजापति के सब लड़के नष्ट करडाले और कनककशिपु के लड़के को कितना छला फिर चित्रकेतु का तो राज्य छुड़ा दिया वह ऊपर से तो बड़ा स्वच्छ और सच्चा रहता है पर मन उसका महामलिन है प्रकट में साधु बनकर सबको दुःख दिया करता है अबभी कुछ नहीं हुआ तुम चैतन्य होकर अपना काम करो और सोने की जड़ाऊ

अँगूठी छोड़कर कांच को क्यों ग्रहण करती हो और हाथी छोड़कर भैंसे की सवारी की क्यों इच्छा करती हो और चन्दन छोड़ नींब क्यों चाहती हो और गङ्गाजल छोड़ कुवों के जल की क्यों अभिलाषा करती हो और सूर्य छोड़ खद्योत की क्यों लालसा रखती हो घर छोड़ वन क्यों चाहती हो ऐसी बातें कहकर शिव गिरिजा के स्वरूप की प्रशंसा करने लगे कि देखो तुम्हारे मुखकमल पर असंख्य चन्द्रमा की कान्ति छारही है तुम्हारा मुखचन्द्र कैसा सुन्दर मानों सुन्दरता का समूह है तुम्हारे नेत्रों की प्रशंसा नहीं हो सकी तुम्हारे ओष्ठ क्या उत्तम कुंदुरू फल से लाल हैं जिनसे मानों मधु टपकता है इसी प्रकार भिन्न २ हर एक अङ्ग की प्रशंसा की और कहा कि ऐसे सुन्दर शरीर को क्यों नष्ट करती हो तुम्हारे ब्याह के योग्य केवल विष्णु हैं उनसे विवाह करो कहां तो मृदङ्ग का शब्द और कहां शृङ्गी और डमरू का अप्रिय शब्द हम तुमसे कहते हैं कि यह बात बहुत ही अनुचित है तुम अब भी चेत करो इस प्रकार छल की बातें कहकर ब्राह्मण तो खेदयुक्त और रूखे हो अलग बैठ गये और गिरिजा ने शिवनिन्दा सुन मन में कोपित हो बार २ मन में खेद किया और कहा कि ब्राह्मण जान मैंने यह धोखा खाया जो मैं पहिले से इस ब्राह्मण को इतना दुष्ट और शिव के विरुद्ध जानती तो मैं चुप हो रहती इसने वेद के विरुद्ध शिव की इतनी निन्दा की जो इसको अब मैं उत्तर नहीं देती हूं तो शिव की निन्दा के सुनने का दोष मुझ पर होगा यह विचार गिरिजा ने उत्तर दिया कि हे ब्राह्मण ! तू हमको क्या धोखा देता है तूने तो वेद के विरुद्ध शिव की अतिनिन्दा की है तुझे ऐसा उचित न था तू ब्राह्मण है इसलिये वध दण्ड अनुचित है अब मैं वेद, पुराण, श्रुति, स्मृति के वचनों के अनुकूल वर्णन करती हूं कि

तूने शिवको नहीं जाना इसी से तेरा वचन वेद के विरुद्ध है कदाचित् तू शिवको जानता तो तेरा वचन विपरीत न होता शिवकी अशुभ सामग्री सब शुभ ही है कोई देवता शिव से श्रेष्ठ नहीं है वे माया से परे भगवान् हैं शिव का कोई कुल परिवार नहीं है वे भक्ति के वश में होकर सब बातें धारण करते हैं वे सब विद्यानिधि पूर्ण ब्रह्म अलख जगदीश हैं उन्होंने अपने श्वासमार्ग से ब्रह्मा को वेद कृपा किये वही शिव सबके आदि मध्य और अन्त हैं उनका तेज और प्रताप किसी ने नहीं जाना जिससे प्रकृति ने उत्तम शरीर पाया क्या उसको शक्ति की प्रीति से प्रयोजन नहीं है शिव स्वाधीन हैं और उनका मार्ग तीनों लोक से विरुद्ध है वही अपने भक्तों को तीनों लोक देते हैं उनकी सेवा से मनुष्य मृत्यु को जीतते हैं ऐसे शिव की निन्दा करने से मनुष्य बड़ा दुःख पाते हैं जो संसार में शिव की निन्दा करनेवाले हैं उनको स्वप्न में भी आनन्द नहीं मिलता जो दुष्ट और अनाचारी ब्राह्मण शिवके विरुद्ध हैं वह करोड़ों जन्म पर्यन्त दरिद्री रहा करते हैं तुमने शिव की निन्दा करके अपने लिये नरक का मार्ग खोला तुम्हारे आदर करने से मुझे कुछ फल न मिला बरन मेरे सर्व पुण्य क्षीण होगये अब वेग अपने घर सिधारो क्योंकि मेरा मन अब शिव में लग रहा है यह सुन ब्राह्मण हँसा और मन में गिरिजा की बड़ी प्रशंसा करके चाहा कि और कुछ कहें गिरिजा ने ब्राह्मण की बात समझ एक अपनी सहेली से कहा कि अब इस जगह को छोड़ और कहीं चलें क्योंकि यहां रहने से बड़ा दुःख होता है यह ब्राह्मण शिवनिन्दा करके हमको बड़ा दुःख देता है शिव की निन्दा करनेवाले को आंख से न देखना चाहिये बरन सुनने से महापाप होता है यद्यपि पापों का बदला नियत है पर शिवनिन्दा का पाप कभी

निवृत्त नहीं होता इस ब्राह्मण को देखकर हम और अधिक अपवित्र होंगी और हमारे सब पुण्य नष्ट हो जावेंगे जो शिव- निन्दा करनेवाले को आंख से देख ले तो तुरन्त स्नान करडाले और जो अपना वश चले तो उसकी जिह्वा को काट डाले नहीं तो दोनों कान बन्दकर वहां से उठ जाना चाहिये इस बातको वेद कहते हैं अब विलम्ब मत करो उठो कि वनमें चलकर रहें हमको एक क्षण भर भी वर्ष समान बीतता है हम शिवनिन्दा नहीं सहि सक्ती हैं वहां जाकर तप करेंगी यदि हमारा पूर्ण निश्चय है तो शिव अवश्य प्रसन्न होंगे किसी के धोखा देने से क्या होता है शिव तो केवल प्रेम से प्रसन्न होते हैं और मैंने गुरु से सुना है कि तप करने में इसी प्रकार के सैकड़ों विघ्न सामने आते हैं जो धोखा खाजाते हैं वे मूर्ख हैं और फल नहीं पाते जो दृढ़तापूर्वक धोखे से बचे रहते हैं वेही सिद्धि पाते हैं शिव अपने भक्तों के पालनकर्ता हैं वे अपने भक्तों को हर प्रकार आनन्द देते हैं वे पहिले तो अपने भक्तों की परीक्षा करते हैं फिर प्रसन्न हो जाते हैं यह कह गिरिजा अपनी सखियों समेत वहां से चली गईं।

बयालीसवां अध्याय।

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! इस प्रकार गिरिजा का हठ और प्रेम देख कर शिव प्रसन्न हुये और अपना मुख्य स्वरूप जैसा नारदजीने कहा था धारण किया कि शिर पर जटा और गङ्गा की धारा और चन्द्रमा विराजमान भालपर त्रिपुण्ड् लगाये हुये कानों में कुण्डल पहिने गोल गोल सुडौल कपोल तीनों नेत्र सूर्य चन्द्र अग्नि ललाई लिये पर एक आंख मूंदे हुये और कण्ठ में हलाहल विष की श्यामता सुशोभित नाक और ओष्ठ महासुन्दर हाथ पांव की उँगलियां लाल और इसी प्रकार हरएक अङ्ग प्रत्यङ्ग अतिसुन्दर और सुभग जैसा

कि गिरिजा ध्यान करती थी उसी प्रकार का स्वरूप धारण कर शिवने दर्शन दिये और कहा कि तुमने हमारा इतना तप किया है कि इतना आज तक किसीने नहीं किया हमारे चरणों की सेवा करके देवता मुनि आदि अति प्रसन्न हुये सो तुम वही आदिशक्ति हो तुमको ग्रहण करके हम भी लोक में शुभ होते हैं हमारा तप अति दृढ़ है वह भी तुम्हारे तप के कारण हिल गया मैंने पहिले भूतों को फिर सप्तऋषि को भेजा कि तुम्हारे तप की दृढ़ता की कीर्ति संसार भर में प्रसिद्ध हो तुम कुछ क्रोध मत करो क्योंकि यह सब बातें मैंने तुमसे प्रकट की अवस्था से की हैं जैसा कि कुलाल घटके सँवारने को ऊपर से कैसा मार खिलाता है तुमतो हमारी अनादि शक्ति हो हमने संसारी रीति के कारण तुम्हारी भक्ति को देखा तुम्हारे विना संसार में कोई वस्तु नहीं है तुम्हारी सेवा सृष्टि भर करता है तुम संसार भर की माता और सदा की देवी हो जिसके चरणकमलों की सेवा देवता आदि सब करते हैं तुम उत्पत्ति पालन और प्रलय के निमित्त तीन गुण धारण करती हो तुम तो तीनों लोककी आनन्द-दायी हो तुम्हारे रूप गुण प्रभाव असंख्य हैं तुम्हारे अंश से लक्ष्मी वाणी ब्रह्माणी और विष्णु की स्त्रियां हैं तुमने मुझे सगुण अवतार लेते हुये जान कर गिरिजा का अवतार लिया है तुम कभी जुदा नहीं हो हम तुम सदा संसार के निमित्त चरित्र रचते हैं जैसा कि शब्द और अर्थ में अन्तर है वैसाही हमारे और तुम्हारे बीच में अन्तर है केवल संसारी जीवों की दृष्टि में हम तुम दो शरीर रखते हैं पर वास्तव में एक हैं यह समझ कर क्रोध शान्त करो हमारे तुम्हारे चरित्र वेद भी नहीं जानते तुम्हारा तप पूरा हो गया है हम सच कहते हैं कि हम तुम्हारे सेवक हैं इस समय हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं जो

इच्छा हो वह मांगो यह कह शिव चुप हो गये गिरिजा ने एक वेर लज्जा से शिव का रूप देख उसको मन में रक्खा और हाथ जोड़ विनती की कि हम आपकी शरण में संसार भरके नाते तोड़ कर आई हैं जो आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझको मेरी इच्छा के अनुसार वर दीजिये और हमारे पति हूजिये और संसार की रीति के अनुसार हमारे साथ विवाह कीजिये और हमारे पापों को क्षमा कीजिये अब आप हमारे पिता से जाकर विनती करें और अपने संसारी चरित्र को दिखावें यह कह गिरिजा चुप हो गई शिव ने कहा कि जो वरदान तुमने मांगा वह हमको भाया और हम उसे अङ्गीकार करते हैं यह कह शिव अन्तर्धान हो गये तब देवताओं ने जय २ का शब्द किया और आकाश से फूलों की वर्षा हुई और विष्णु और हम आदि गिरिजा के चरणों पर आकर गिरपड़े और हर्ष के कारण गिरिजा की स्तुति करने लगे जो कोई इस स्तुति को पढ़ेगा वह सब मनोरथ पावेगा यह स्तुति सुन गिरिजाने सब देवताओं से कहा कि तुम सब अपने २ घर जाकर प्रसन्न रहो देवताओं के सब काम पूरे होंगे क्योंकि हमने बड़ा तप किया है शिवने हमको वरदान दिया है कि कोई काम तुम्हारा न रह जावेगा देवता तो यह सब आज्ञा लेकर चले गये और गिरिजा घर पहुँची तब जो हर्ष कि हिमाचल और मैना को प्राप्त हुआ उसको नहीं कहसक्ते निदान हिमाचल ने हर प्रकार से आनन्दमङ्गल मनाया और असंख्य द्रव्य दान दिया यद्यपि गिरिजा ने वरदान का वृत्तान्त किसीसे न कहा पर वह सब लोगों पर प्रसिद्ध हो गया और सखियों से सबने सुना और सबने मङ्गल मनाया ।

तेंतालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! कोई मनुष्य चाहे करोड़ वर्ष

पर्यन्त तप किया करे पर सदाशिव का जानना महा कठिन है वे शरीर धारण कर नाना प्रकार की लीला रचते हैं और अपने भक्तों के काम संसारी जीवों के समान प्रकट होकर पूरे करते हैं हे नारद ! चैतन्य होकर सुनो जब शिव गिरिजा को वरदान देकर चले गये तो वहां आपने भिक्षुक का रूप धारण किया और नाचने और गाने में पूर्ण अभ्यास करके एक सहस्र गति के ज्ञाता बन गये और अपनी बाईं ओर शृङ्गी और दाहिनी ओर डमरू लिया और शरीर भर में श्वेत भस्म लगाकर लाल वस्त्र पहिने और वृद्धावस्था धारण कर बुड्ढों के समान बदन कांपता था पर वाणी अति मधुर थी निदान ऐसे अनूप रूप और वस्त्राभरणों से अलंकृत होकर श्रीसदाशिवजी हिमाचल पर्वत पर गये और इस प्रकार के नृत्य गान नटकर्तब मधुर स्वर प्रिय शृङ्गी और डमरू नाद से नगर-निवासियों को रिझाया कि चारों ओर से ठट्ठ के ठट्ठ पर्वतनिवासी इकट्ठे हो गये यहां तक कि कोई बूढ़ा बालक स्त्री पुरुष घरों में न रहा जो वह मधुर शब्द सुन घर से न निकला और कोई भी शिव के उत्तमोत्तम ताल और प्रिय स्वर समेत राग से मोहित और विह्वल होकर अधीर होने से न बचा यहां तक कि मैना मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी और गिरिजा भी उस आनन्द स्वर में मग्न हो गई और शिव की मूर्ति मन में पाकर प्रसन्न और मन में शिव की स्तुति की तब तो शिव कृपालु होकर बैठ गये तब मैना चैतन्य हुई और योगी से अति प्रसन्न होकर हीरा, पन्ना, मोती, मणि आदि से थाल भरकर देने लगी पर उस योगी ने न लेकर गिरिजा को मांगा और फिर नाचने को खड़ा हो गया पर मैना ने अप्रसन्न होकर बहुत भय दिलाया और

इच्छा की कि उस योगी को निकाल दे इस इच्छा को दृढ़कर मैना ने उच्चस्वर से कहा कि क्या कोई यहां नहीं है कि जो इस योगी को मारकर बाहर निकाल दे यह मूर्ख हमारी कन्या की इच्छा रखता है यह कैसी ढिठाई है इतने में हिमाचल पहुँचा और सब वृत्तान्त सुन क्रोधित हुआ और आज्ञा दी कि इस योगी को यहां से निकाल दो हिमाचल के नौकर निकालने पर तत्पर हुये पर उस योगी के प्रताप से उसके निकट न जा सके हिमाचल ने विचारा कि यह कौन मनुष्य है जब विचारपूर्वक योगी को देखा तो उसको उनका चतुर्भुजी स्वरूप शिर पर मुकुट कानों में कुण्डल लटकते हुये पीले वस्त्र पहने और जो फूल कि विष्णु पर चढ़ाये जाते हैं उनसे भूषित देखा फिर उसी समय हिमाचल ने द्विभुजी मूर्ति इस तरह पर देखी कि अपने को गोपों के समान भूषित किये मुरली कर पङ्कज में लिये चन्द्रमा के समान उत्तम किशोर अवस्था को प्राप्त जिसको देख मन को प्रसन्नता होती थी फिर पहिले हमारे रूप को रक्तवर्ण वेद पढ़ते फिर सूर्य को फिर अग्नि को फिर गणपति को जो तुण्ड किये लम्बोदर हैं देखा कुछ समय में उसने अष्टभुजी भवानी के स्वरूप को अवलोकन किया फिर शिव ने अपना मुख्य स्वरूप इस तरह हिमाचल को दिखाया कि शीशपर जटा और गङ्गा की धारा और माथे पर चन्द्रमा और त्रिपुण्ड्र और चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख तीनों नेत्र ललाई लिये कीर समान नासिका रक्त ओष्ठ कण्ठमें तीन रेखा श्यामता लिये गले में हार पहिले चार भुजा जिनमें शूल कपाल अभयादि नाना प्रकारके वस्त्राभूषणों से अलंकृत उदर बहुत नरम जिसमें त्रिबली पड़ी हुई उत्तमोत्तम कटि और पगतली रक्त कमलवत् लाल नितम्ब गोल नख रक्त

ऐसा मनोहर विचित्र स्वरूप देख हिमाचल ने अति आश्चर्य में होकर जाना कि सदाशिव हैं जब सदाशिव ने जाना कि हिमाचलने हमको पहिचाना तो तुरन्त उसी योगी का स्वरूप धारण किया और फिर हिमाचल से गिरिजा की इच्छा की हिमाचलने तुरन्त प्रणामकर मानलिया योगी तो अन्तर्धान होगये और मैना और हिमाचल चैतन्य होकर शिव को सबसे श्रेष्ठ जाना और देवताओं ने अपने मनोंमें इस बातको ठहराया कि शिव गिरिजा का विवाह हमको व संसारभर को और उस के माता पिता को शुभ होगा इस इच्छा से उनसे सबोंने मिलकर हिमाचल के गुरुके घरमें जाकर प्रणाम किया और कहा कि इस समय शिवके चरित्रसे मैना और हिमाचलने शिवको सबसे बड़ा समझ लिया है तुम जाकर ऐसी युक्ति करो जिसमें शिव गिरिजा का विवाह होजावे गुरु बहुत क्रोधित होकर दोनों हाथ कानों में रखकर कहनेलगा कि हे देवतो ! तुम बड़े मतलबी हो तुमको अन्त का कुछ हाल मालूम नहीं है तुम शिष्य होकर गुरुको संथा देतेहो तुम हमारी अच्छी सेवाकरतेहो जिसमें हमको नरक प्राप्त हो जो मनुष्य विष्णु, महादेव, ब्रह्मादि देवता व ब्राह्मण व अपने गुरु पतिव्रता स्त्री योगी सेवक अपने पति गौ तुलसी पुराण गङ्गा वेदमाता गायत्री वेद और दान की निन्दा करता है वह निस्सन्देह नरक में जाकर असंख्य कल्प तक दुःख भोगता है जो तुमको यह कार्य आवश्यक है तो तुमको उचित है कि ब्रह्मा के पास जाकर उनसे सहायता मांगो और अपनी बुद्धि के अनुसार तुम उपाय करो पर मनमें शिव के चरणों का ध्यान रक्खो हमको निश्चय है कि ब्रह्मा अरुन्धती और सप्तऋषियों के समेत जाकर हिमाचल को समझावेंगे हम को अपने तपोबल से पूरा विश्वास है कि शिवके सिवाय और

कोई गिरिजा को नहीं पावेगा यह कह गुरु चुप हो रहे।

चवालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गुरु की आज्ञासे सब देवताओं ने हमारे पास जाकर अपने मनोरथ को अक्षर प्रतिअक्षर कहा हमने अति अप्रसन्नतासे देवताओं को धिक्कार देकर धर्म की बातें वर्णन कीं अर्थात् हमने कहा कि तुम मुझको शिव की निन्दा कराना सिखाते हो क्या अच्छे लड़कों का यही धर्म है मुझको नरक का मार्ग बतलाते हो यही सेवा करना लड़कों को उचित है शिव की निन्दा सब को दुःख देनेवाली और अर्थ, धर्म, काम को नष्ट करनेवाली आपदा की मूल और सर्वप्रकार के आनन्द मङ्गल को उखाड़नेवाली है हम इस विषय में कुछ भी सहायता न करेंगे तुम सब मिल शिव के समीप जाकर विनय करो क्योंकि दूसरे की निन्दा दोनों लोक में दुःख देती है और अपनी निन्दा बढ़ाती है यह बात हमसे सुन वे सब कैलास पर्वतमें जाकर शिव की अति प्रशंसा करनेलगे और बोले कि हिमाचल आपका वड़ा भक्त है उसने तुमको परब्रह्म जानकर इच्छा की है कि अपनी कन्या आपको देकर मुक्ति प्राप्त करें इस बातको आप स्वीकार करें शिवने यह बिनती देवताओं की सुनकर हँस दिया और उनको अति प्रसन्न कर बिदा किया और अति सुन्दर शरीर धारण कर हाथ में श्वेत रत्नों की माला पहनी और माथे पर तिलक लगाकर गले में शालग्राम की मूर्ति बांधी और उत्तमोत्तम वस्त्र पहने हुये वैष्णवी वस्त्रों से भूषित हुये और अति चतुरता से हिमाचल के घर चले हिमाचल अपने सब परिवार समेत आदर के लिये उठ खड़ा हुआ और गिरिजा ने बड़ी भक्ति से ऐसे ब्राह्मण की पूजा की और पहचाना कि यह शिव हैं ब्राह्मणने अशीष देकर कुशल पूछी

हिमाचलने कहा कि आप कौन हैं और किस कार्यके निमित्त आये हैं ब्राह्मणने कहाकि मैं ब्राह्मणहूं पृथ्वीभरका पर्यटन करताहूं अपने गुरु की कृपासे तीनों लोकों को पहचानकर सब बातों का ज्ञाता हूं जो मनुष्य तीनों लोक में कोई काम करता है वह मैं अपने मनही में जानलेता हूं सो इस बात की साक्षी देता हूं कि तुम्हारी इच्छा है कि गिरिजा का विवाह शिव के साथ करदें ऐसी तुम्हारी मूर्खता जानकर मैं तुम्हारी भलाई के लिये तुम्हारे घर आया हूं और मैं उससे कहताहूं कि तुम ऐसी अच्छी कन्याको ऐसे बुरे और निर्गुण मनुष्य को क्यों देते हो यह तुम्हारी इच्छाअशुभहै जिनकी सेवा सम्पूर्ण सृष्टि देवता, मुनि, दैत्य, सिद्धादि सब करते हैं उनके साथ गिरिजा का विवाह करना उचित है तुम्हारे अधीन एक लक्ष पर्वत हैं इसी प्रकार विष्णु भी बड़े महाराजाधिराज हैं और शिव के आगे पीछे भाई बन्धु आदि नहीं हैं यह बात तुम आपही भाई बन्धुओं से पूछलो और जो तुम यह कहोगे कि गिरिजा को शिव के सिवाय दूसरा पति स्वीकार नहीं तो यह बात प्रकट है कि रोगी को कुपथ्य बिन कोई गुणकारी औषध नहीं भाती यह कह ब्राह्मण चल दिये और हिमाचलके अति-खेद और चिन्ता से आंसू बह निकले और मैना ने हिमाचलसे कहा कि हमारी बात सुनो जो अन्तको अच्छा फल देगी तुमको उचित है कि सब पर्वतों को बुलाकर उस ब्राह्मणके वाक्योंके लिये मत पूछो क्योंकि उसकी बातें सुनकर मुझको बड़ा सन्देह हुआ है जब तक उस बात की सफ़ाई न होगी मुझे बहुतही भय बना रहेगा और तुम भी ब्राह्मण की बात को अच्छी तरह पर शोचो नहीं तो मैं या तो घर छोड़ बनमें जा रहूंगी या विष खाकर मरजाऊंगी या गिरिजा को साथ लेकर तुम्हारे घरसे निकलकर किसी निर्जनस्थल में जारहूंगी यह कह मैना अति

कोपित होय गिरिजा को साथ लेकर कोपभवन में जा बैठी और कुचैल वस्त्र पहिन सर्व प्रकार के वस्त्राभूषण उतार धरती पर लेटगई और अनुचित वचन कह पृथ्वी को खोदती थी, यह चरित्र देख हिमाचल बहुत दुःखी हुये और मैनाके पास जाकर ठहर ठहर कर समझानेलगे और कहा कि क्यों पृथ्वी पर पड़ी हो फिर हिमाचल बड़ा अचरज करने लगे यह चरित्र शिवने कुछ उत्तम किया।

पैंतालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह दशा देख हिमाचलके सब परिवार के लोग और सब नगरनिवासी अतिदुःखी हुये और देवताओंने परस्पर कहा कि क्या करते क्या होगया और सब स्त्री पुरुष शिव का ध्यान करने लगे और कहा कि जो आपने किया वह सब शुभ हो यह कह चुप होगये और गिरिजा बहुत मुरझाकर शिव का ध्यान करने लगी सो शिवने यह भी चिन्ता गिरिजा की जानकर सप्तऋषियों का स्मरण किया वे तुरन्त आये जो सूर्य की कान्तिके समान महाप्रकाशवान् गङ्गाजीसे भीगे हुये जटा धारण किये हाथ में माला शरीर में भस्म रमाये महाउज्ज्वल स्वरूप शिव शिव मुखसे कहते थे और उन्होंने शिवको प्रणाम किया और धन्वा के समान आठों अङ्ग बना कर दण्डवत् कर हाथ जोड़े हुये शिर झुकाया और बड़ी स्तुति की शिव बोले कि हमने तारक दैत्यके लिये गिरिजाके साथ विवाह करने की देवताओंसे प्रतिज्ञा की थी, वह समय निकट है इससे तुम हिमाचलके पास जाकर उससे और उसकी स्त्री से हमारे विवाह के निमित्त कहो और जिसतरह देवताओं का काज सुधरे वह सब तुमको करना उचित है हमारा सगुण स्वरूप केवल देवताओं के निमित्त है यह सुन सप्तऋषि

अतिप्रसन्न होकर परस्पर कहने लगे कि हम बड़े भाग्यवान् हैं जिसकी ब्रह्मा विष्णु प्रेम से रात्रि दिन सेवा किया करते हैं वह आज हमको सृष्टि के उपकार के लिये अपने विवाह के निमित्त भेजते हैं सो वहां से चलकर हिमाचल के समीप गये हिमाचल ने प्रणाम करके पूजन किया और आने का कारण पूछा सप्तऋषि बोले कि शिव सृष्टि के पिता और गिरिजा सृष्टि की माता हैं संसार की भलाई के लिये शिवने गिरिजा के साथ विवाह करने की इच्छा की है उसी कार्य के निमित्त आपके पास हमको भेजा है तुम गिरिजा को दो तुम्हारी संसार में बड़ी कीर्ति होगी ब्रह्माजी ने इस विषय में शिव की बड़ी इच्छा की और गिरिजा ने भी बड़ा कठिन तप किया इसलिये शिवने विवाह की इच्छा की है उसी समय में कुम्भजऋषि की स्त्री और अरुन्धती ने भी मैना के पास कोपभवन में जाकर देखा कि वह महामलिन वस्त्र पहने महाचिन्तासे युक्त धरती पर पड़ी हुई है उन्होंने यह दशा देख कर कहा कि हे मैना ! उठो उठो मैना मुनीश्वरों की स्त्रियों को पहचान कर उठ बैठी और कहा कि धन्य भाग्य हैं कि तुमने आकर मुझे कृतार्थ किया मैं आपकी चेली हूं जो आज्ञा दो तो मैं उसका पालन करूं अरुन्धती बोली कि हम तुमको विना कारण अप्रसन्न होते हुये जान कर मनाने को आई हैं देखो हिमाचल गिरिजा का शिवके साथ विवाह करता है तुम क्यों अप्रसन्न हुई हो क्या तुम शिव को नहीं जानती हो अब तुरन्त हिमाचल के पास चलो इसी प्रकार वसिष्ठ की स्त्री अरुन्धतीने शिवके बहुत गुण वर्णन किये फिर दोनों उठ कर हिमाचल की सभा में आईं और मैनाने सप्तऋषियों को प्रणाम किया और अपने पति के चरणों का ध्यान करती हुई अरुन्धती के साथ बैठ गई और सप्तऋषियों ने कहा ।

बियालीसवां अध्याय।

सप्तऋषि बोले कि हे हिमाचल! तुमने शिव के चरित्र को न जाना बड़े धोखे में पड़े तुमको कुछ धर्म का विचार नहीं तुम केवल एक ब्राह्मण के कहने पर अपने वाक्य से बदल गये तुमको उचित है कि दृढ़बुद्धि रक्खो और धोखा न खाकर गिरिजा के साथ शिव का विवाह कर दो और शिव के श्वशुर होकर संसार भर में श्रेष्ठ हो जावो और संसार में तारकनाम दैत्य बड़ा अन्याय कर रहा है उसके वध करने के लिये यह विवाह पहले ठहराया गयाहै हिमाचलने कहा कि मैं अतिनम्र होकर हाथ जोड़ विनय करता हूं कि मुझको आप इस बातकी आज्ञा दें कि मैं आपसे इस बात को पूछूं कि मैं तो एक लाख पहाड़ों का महाराजा हूं और शिव के पास राज्य की एक वस्तु भी नहीं है वह संसार से जुदा अशुभ वनवासी अवधूत है मैं क्यों कर ऐसे मनुष्य के साथ उसका विवाह करूं मैं इस विषय में तुमसे नीति चाहता हूं और प्रकट है कि वैर मैत्री विवाह बराबरवाले से करना चाहिये इस प्रकार के पति को कन्या देकर पिता नारकी होता है इसी प्रकार काम मोह भय लोभादि के कारण जो अपनी कन्या व्याह देता है उसको भी बहुत दुःख मिलता है इससे मैं गिरिजा का विवाह शिव से न करूंगा यह सुन अरुन्धती ने हिमाचल से कहा कि वेद के अनुसार तीन प्रकार के वचन होते हैं पहिले यह कि जिनका सुनना प्रकट में आनन्द उपजाता हो पर भीतर झूठ और आनन्द के नाश करनेवाले हों, दूसरे जो सुनने में अमृत के समान हों और दया धर्म से खाली न हों और उनका अन्त अच्छा हो, तीसरे जो पूरे सत्य धर्म से भूषित हों, सो हम बीचवाले वचन का आश्रय लेकर कहते हैं और बाकी दोनों छोड़कर वेद के अनुसार तुमको

समझाते हैं कि शिव संसार भर के राजा हैं और सबके स्वामी जिनको अगुण सगुणरूप दोनों कहते हैं जिनके कुबेर के समान सेवक हैं उनको दरिद्री कहना उचित नहीं वे तीनों गुणों के वश करनेवाले और तीनों लोक के शरीर हैं और हर ब्रह्मा विष्णु उन्हीं के तीनों गुणों से उपजे हैं और सर्व-वृत्तान्त सती के शरीर छोड़ने और फिर गिरिजा के उपजने का वर्णन किया और कहा कि यह गिरिजा तो सनातन से शिव की शक्ति है इसलिये तुमको उचित है कि इसका विवाह शिव के साथ कर दो इससें तुम्हारे लिये दोनों लोक में यश होकर तुम्हारा कुल पवित्र होगा और सब देवता तुम्हारे वश में हो जावेंगे नहीं तो गिरिजा तो अवश्य करके शिवको पावेगी और तुम पश्चात्ताप के सिवाय कुछ न पावोगे जो वरदान शिव ने गिरिजा को दिया है वह वृथा नहीं होगा शिव की इच्छा झूठी नहीं होती देखो शची के पति इन्द्र ने बहुत से पर्वतों के पङ्ख काटडाले और एक पवन ने बल करके कनकशैल के शृङ्ग को फोड़ा इसलिये उचित नहीं है कि शिव से हठ करो और तुमको सब कुल की रक्षा करना उचित है नहीं तो बड़ा उपद्रव होगा देवता आदि सब तुम्हारे शत्रु हो जावेंगे जैसा कि राजा अनरण्य अपनी कन्या ब्राह्मण को देकर अपने कुल को बचा लिया इसी प्रकार तुमको उचित है कि गिरिजा शिव को देकर कुल की रक्षा करो हिमाचल ने कहा कि अनरण्य राजा की कथा कहो वशिष्ठ बोले कि वेदचन्द्र जो चौदहवां मनु है उसकी सोलहवीं पीढ़ी में अनरण्यनाम राजा उपजे वह मङ्गलारण्य राजा के सदृश प्रजा का पालन करनेवाले राज-गद्दी पर बैठकर अपने न्यायपूर्वक राज्य करते रहे उनके सात पुत्र और एक कन्या उपजी जिसका नाम पद्मा था वह राजा

और रानी को प्राण के समान प्रिय थी जब वह विवाहने योग्य हुई तब उसके लिये पति ढूँढ़ने लगे इतने में पिप्पलाद मुनि अपने आश्रम को जाते थे वन में देखा कि एक गन्धर्व अपनी स्त्री से विहार कर रहा है यह देख मुनि भी काम के वशीभूत होकर स्त्री से भोग की इच्छा करने लगे सो पुष्पभद्रा के तटपर पद्मा को देख सबसे पूछा कि यह किसकी पुत्री है सबने उत्तर दिया कि अनरण्य राजा की लड़की है मुनि स्नान और विष्णु का पूजनकर राजा के समीप गये और कामी होकर उससे लड़की को मांगा राजा चुप हुये और मुनि ने बारम्बार उस लड़की को मांगा पर जब उत्तर न पाया तो क्रोधित होकर कहा कि तू हमको लड़की नहीं देता चुप मार बैठ रहा है मेरे पास वह विद्या है कि इसी समय तुझे जलाये देताहूँ मुनिके ऐसे कोपके वचन सुन राजा स्त्री पुत्र और भृत्योंसमेत आश्चर्य में होकर रोने लगा तब एक बुद्धिमान् पण्डित ने राजा को शिक्षा दी कि अब आपको उचित है कि मुनि को लड़की दे दो कुल को जलने से बचाओ राजा ने मानकर लड़की दे दी कि जिससे कुलपरिवार पर उष्ण पवन भी न आने दी हे हिमाचल ! इसी तरह पर तुमको करना उचित है अब केवल सात दिन शेष रहगये हैं कि शुभ मुहूर्त विवाह के लिये आवेगा अर्थात् मृगशिर नक्षत्र चन्द्रवार और योग करण केन्द्र के शुभग्रह उत्तम फल देंगे और लग्न का स्वामी अपने स्थान पर आवेगा यह अतिउत्तम मुहूर्त आवेगा उस दिन तुम गिरिजा को शिवके साथ ब्याह दो इसी तरहपर सप्तऋषि तीन दिनतक ठहरे रहे चौथे दिन हिमाचलने लग्न लिखाया जो सप्तऋषि लेकर शिवके पास गये और हिमाचल ने बड़ा मङ्गलाचार मनाया ।

सैंतालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सप्तऋषियों ने शिव के पास

जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया शिवजी बोले तुमने अच्छा काम किया है तुम बड़े निष्पाप ब्रह्मज्ञानी धर्मात्मा वेदज्ञ तीनों लोकों का हित चाहनेवाले हो तुम भी हमारे विवाह में अपने शिष्यों समेत निमन्त्रण में आना यह सुन सप्तऋषि तो विदा हुये और हे नारद! फिर शिवजी ने तुमको स्मरण किया तो तुम तुरन्त प्रसन्नतापूर्वक पहुँचे और तुमने हाथ जोड़कर शिवकी स्तुति की और विनती की कि हमारे बड़े भाग्य हैं कि आपने मुझे स्मरण किया अब मुझ सेवक को आज्ञा दीजिये शिवजीने संसार की रीति अनुसार कहा कि गिरिजा ने हमारा बड़ा तप किया हमने प्रेम के वश में होकर उसको वरदान दिया है कि उसके साथ विवाह करेंगे तुमको चाहिये कि हमारी ओर से सब देवताओं को निमन्त्रण दो और यह बात अच्छीतरह पर समझा देना कि जो हमारी बरात में संयुक्त न होगा वह हमारा प्यारा न होगा नारदजी तुरन्त चले और पहिले विष्णुजी के पास फिर मेरे पास और इसी तरहपर सनकादिक भृगु आदि के समीप पहुँचे और सबको शिवजी का संदेश सुनाया और इन्द्रलोक में फिर ध्रुवलोक में फिर सप्तऋषि और नन्दालोक आदि और सूर्य चन्द्र और भूलोक आदि सर्वस्थानों में संदेशा पाकर विवाह को निमन्त्रण दे आये सबने अति प्रसन्नता से अङ्गीकार किया फिर हे नारद! तुम देवता मुनीश्वरों के यहां गये और तीनों लोक में कोई जगह न रही जहां तुमने जाकर शिव की ओर से निमन्त्रण न पहुँचाया हो और निमन्त्रण देने के उपरान्त तुम शिवके समीप पहुँच स्तुति करने लगे और यह भी कहा कि हे महाराज! आपके निमन्त्रण को ब्रह्मा विष्णु और सर्वसृष्टि ने बड़ी प्रसन्नता से अङ्गीकार किया और फिर तुम शिव की आज्ञा से वहीं स्थित रहो सो ब्रह्मा, विष्णु,

सनकादिक, लोकपाल, इन्द्रादिक, गणपति, अग्नि, धर्मराज, वरुण, कुबेर, पवन, ईशान, दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा, हिंगुलाज, ज्वालामुखी, देवी, देवता, मुनि आदि धीरे २ समय २ पर कैलास में अपनी सर्वसामग्री परिवार स्त्रीगण सेना और सभासद् लेकर आये और अपने पदके अनुकूल बैठे और बरात अच्छीतरह इकट्ठी होनेलगी और नाना वर्ण के खेल तमाशे लीला होनेलगीं और विष्णुजी और हम शुभ लग्न पाकर शिवजी के समीप आये और प्रणाम के उपरान्त विनय की कि अबतो चलने का समय आगया।

अड़तालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिवजी ने आज्ञा देदी कि बरात तय्यार हो यह सुनतेही तुरन्त सबने अपने२ को भूषित किया और सोलहों शृङ्गार करनेलगे और विष्णु और हम और देवता आदि बरात के साजने में लगे और चारों ओर से शुभसामग्री जैसे कि ध्वजा पताका चँवरादि गाड़े गये देवपत्नियां शुभगीत गानेलगीं और रत्न और मोतियों से चौक ठीक कियेगये प्रतिद्वार में सोनेके कलश, कदलीखम्भ और इसी प्रकार की और सामग्रियां आनन्द देनेवाली जमाई गईं उस समय के शिव की सुन्दरता हम कह नहीं सक्ते वह कहनेसे बाहर है और विष्णु और हम और इन्द्र आदि अपने २ प्रसिद्ध वस्त्रों से भूषित हुये सवारों के रिसाले और हाथियों के समूह घोड़ों के छलबल प्रशंसा के योग्य देखने के लायक थे जब शुभमुहूर्त आया शिवजी महाराज बरात समेत चले और नन्दी वीरभैरव आदि भी अपने गणों सहित साथ हुये उस बरात में असंख्यसेना चली शिवजी ने पहिले संसारी रीति के अनुकूल ब्राह्मण के चरणों का ध्यानकर डमरू बजाया और चले आकाश से फूलों की वर्षा हुई

और दुन्दुभी बजीं और बहुत से बाजे गाजे वन्दीजन आदि बरात के साथ चले।

उन्नासवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल ने भी अपने भाई बान्धव और सब नदी नद और समुद्रों को स्त्रियोंसहित निमन्त्रण दिया और अपने नगरको हर प्रकारसे सजाया और बहुतसे मन्दिरों को रत्नादिकोंसे पूर्णकर भूषित किया और अच्छा मँडवा अच्छी चीज़ोंसे छाकर वन्दनवार और मोतियों के झालर लटका दिये और सब भाई बन्धु जिनको निमन्त्रण दिया था उनके घर इकट्ठे हुये वहां एक आश्चर्यदायक सामग्री तय्यार हुई और हिमाचल ने अपने दानसे सब मंगतों को अयाचक किया और हर स्त्री पुरुष ने अपने २ को सजाया नाना प्रकार के साज सजने लगे और स्त्रियों के समूह ने इकट्ठे होकर गिरिजा को नहलाया और जो जो कुलदेवता आदि की पूजा नियत है सब गिरिजा से कराई और शिव की ओर से तुमको देवताओं ने आगे हिमाचल के पास भेजा जहाँ तुम्हारी बहुतही सेवा हुई और सब रीतों के पूर्ण करने के उपरान्त हिमाचल ने पहिले अपने पुत्रको बरात की अगवानी के लिये भेजा और आपभी बरात आनेकी बाट देखने लगा और जब बरात निकट पहुँची तो हिमाचल अपने सर्व बान्धवों सहित आपही अगवानी को चले और ऐसी बरात की बहार और असंख्य सेना विचित्र सामग्री देखकर साथियों समेत बहुत आश्चर्य में हुये और झुककर हम सबको प्रणाम किया और कुछ भी स्तुति करने में न चूके और चारों ओर बड़ी प्रसन्नता छाई हुई थी हिमाचल ने एक बहुत अच्छा पहाड़ बरात के स्थित होने को दिया फिर हिमाचल बिदा होकर गया और तय्यारी करने के पीछे अपने

पुत्र को भेजा कि अब बरात हमारे द्वार पर आवे सो उस समय सब बरात बड़ी सामां सहित अपने २ बाहनों पर चढ़कर चली उस समय की सामां का वर्णन कोटिन जिह्वा से सैकड़ों वर्ष में भी नहीं हो सक्ता तब मैना के मन में आई कि पहिले मैं अपने जामाता को देखूं तब द्वारचार की रीति पूरी की जावे यह विचार हे नारद! मैना ने तुमको बुलाया और अपना मनोरथ वर्णन किया और कहा कि जिसको तुम परब्रह्म और सबसे श्रेष्ठ कहते थे उसे देख सब काम किये जावेंगे यह तुमसे कहकर मैना शीशमहल में बैठ गई।

पचासवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब मैना राज्य के अहंकार से यह अधर्मरूपी विचार अपने मन में लाई और शिवजी के स्वरूप की परीक्षा चाही तब शिवने यह सब जाना और अप्रसन्न हुये मनमें कहा कि इस बुद्धिहीन स्त्रीने मेरी कईबेर परीक्षा की यह तो तर्कणा की खानि है देखो मैं क्या चरित्र करताहूं जिसमें यह मूर्खा स्त्री ऐसी बातों को भूल जावे यह विचार विष्णु को बुलाया और कहा कि तुम और ब्रह्मा बड़े हित चाहनेवाले हो तुमसे अधिक हमको कोई प्रिय नहीं अब हम आज्ञा देते हैं कि तुम सब पहिले जुदा २ अपनी २ सेना सहित हिमाचल के द्वार पर चलो सबके पीछे हम आवेंगे यह सुन विष्णुने सबको आज्ञा सुनाई जिसके अनुकूल अलग २ सब चले और हिमाचल के द्वार में प्रवेश करने लगे मैना ऐसी धूमधाम के साथ बरात देख बड़ी प्रसन्नता से कहने लगी कि वाह २ क्या अच्छी बरात है और उसकी यह दशा हुई कि जिसको देखती तुमसे पूछती कि यही गिरिजा के पति हैं पहिले जब मैना ने गन्धर्वों के राजा वसुको देखा तो तुमसे कहा कि क्या यह शिव हैं

तुमने उत्तर दिया कि नहीं यह तो शिव की सभा के गानेवाले हैं मैना बोली कि जिसकी सभा के ऐसे गानेवाले और नाचनेवाले हैं वह कब मुझको देख पड़ेंगे फिर यक्षों के स्वामी मणिग्रीव को देखा और तुमसे कहा कि यह शिव हैं तुमने उत्तर दिया कि नहीं फिर मुंच नाम लोकपाल और चक्षुगणों सहित आ निकला मैना ने कहा कि यह शिव हैं तुमने कहा कि नहीं इसी प्रकार धर्मराज, निर्ऋति, सर्प, वरुण, पवन, कुबेर, ईशान, आठों दिक्पाति, रुद्र, इन्द्र, चन्द्र, ग्रहपाति, शुक्र, प्रजापति, सप्तऋषि, ब्रह्मा, विष्णु जो एक के पीछे एक आते थे उनको देख मैनाने तुमसे प्रसन्न होकर कहा कि यही शिव हैं और तुम उत्तर देते थे कि नहीं यह शिव नहीं यह शिव के भक्त हैं मैना अति प्रसन्न हुई और अपने को धन्य समझा और समझी कि हमारा कुल जीवन्मुक्त हो गया क्योंकि जिसको हमने देखा वही शिव का भक्त ठहरा और वही गिरिजा का पति है यह कह मैना के सब दुःख दूर होगये ।

इक्यावनवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! मैना ने तुम्हारी और गिरिजा की बहुत प्रशंसा करके तुमसे कहा कि हमने शिवको न देखा यह कहती थी कि शिव सम्मुख आये तुमने तुरन्त कहा कि यह शिव हैं गिरिजा के पति यही हैं अच्छी तरह देखो मैनाने देखा और शिव की माया से उसकी आंखें ऐसी होगईं कि उसकी दृष्टि में सन्देह उत्पन्न हुआ इसी समय में शिवका दल उसको ऐसा दिखाई दिया कि सबही भूत प्रेत हैं कइयों के तो हाथही नहीं और बाजों के बहुत हाथ हैं मैना ऐसा दल देख बहुत डरी उस सेना में शिवको बैल पर चढ़े त्रिनेत्र चन्द्रमा और मुकुट विराजमान व्याघ्राम्बर और गजचर्म धारण किये

शिवबरात ।



कञ्चन थार सोह वर पानी । परिछन चलीं हरहि हरखानी ॥
विकट वेष जब रुद्रहि देखा । अबलन उर भय भयउ विसेखा ॥ (तुलसीदास)

हाथों में डमरू कपाल त्रिशूल और सर्वशस्त्र लिये शीशपर जटाजूट कानों में सर्प पांचमुख मुण्डों की माला धारण किये कण्ठ में हलाहल की श्यामता शरीर में सर्प लिपटाये हुये देखा सो हे नारद! उस समय तुमने मैना से कहा कि इधर उधर क्या देखती है अब क्यों शिव का रूप नहीं देखती जब मैनाने ऐसा रूप और वैसी सेना देखी तो भयभीत होकर महादुःखी हुई और धरती पर गिर पड़ी और मूर्च्छित हुई तब बड़ा हाहाकार हुआ और सबको बड़ा खेद हुआ सब लोग औषधि आदि उपायकर मैना को चेतमें लाये और तुमसे कहा कि तुझपर धिक्कार है कि तू बड़ा झूठा बुद्धिहीन पापों की खानि नास्तिक और छली है तुझे लोग वृथा ही विष्णुका भक्त कहते हैं यहां से तू दूर हो अब तुझको आंखों से न देखूंगी तू बड़ा छली है तूने हमारी कन्या को खराब किया कि वह अवधूतों भूतों की सेना लेकर मेरी लड़की के साथ विवाह करने आया है हमारा और हिमाचल का जन्म वृथा हुआ मेरे साथ सबोंने छल किया सप्तऋषियों ने क्या कुछ कोताही की है और वह अरुन्धती कहां गई जिसने मुझको गुड़ देकर ईंट मारी यह कह गिरिजा को बुलाकर कहा कि तुमने वनमें जाकर यह क्या कर्म कियाहै तुमने रत्न छोड़ कांच मोल लिया और चन्दन छोड़ काठ को अपने शरीर में लगाया और हंस न लेकर कौवा लिया और गङ्गाजल छोड़ कुयें का पानी पियासूर्य से प्रयोजन न रखकर जुगुनू से मनोरथ चाहा घी न भाया कि रेंड़ी के तेल से रुचि हुई तुमने यज्ञ की भस्म को दूरकर चिता की भस्म लगाई अर्थात् विष्णु और अन्य देवताओं को छोड़ शिव के लिये तप किया तुम बड़ी भाग्यहीन हो तुझको धिक्कार है और तेरे कर्मों पर धिक्कार और तेरे उपचेष्टा पर धिक्कार और तेरी

सखियों और तुझको भी धिक्कार है अब मुझको आनन्द कहां है ऐसा संसार में कौन है जो मेरे इस दुःख को दूर करे और मुझको दुःखसमुद्र में डूबते हुये भुजा पकड़कर निकाले यह हमारे कर्मों का फल है हमने बड़े प्रेमसे पुत्री के लिये तप किया था जो ऐसा भयवान् स्वरूप दुःख देनेवाला और उसका फल हमको मिला और वारम्वार पृथ्वीपर गिरकर मूर्च्छित होगई और जब फिर चेतमें आई तो गिरिजा की ओर दृष्टिवन्द करके धिक् २ कहनेलगी और कहा कि खेद है तू न मर गई वन में भी तुझे किसीने न पूछा कि इस समय हमारे कुल में वट्टा लगाया मैं तेरा शिर काटडालूंगी पर शिवको तुझे न दूंगी तुझको अपने समेत कुयें में कूदकर मरूंगी चाहे कोई अधर्म मुझसे हो पर तुझे अवधूत के साथ नहीं व्याहूंगी हिमाचल ने भी बड़ी मूर्खता की जो नारद के वचन पर इतना विश्वास किया अब मैं क्या करूं जिससे मेरा दुःख दूर हो ऐसे २ वचन कहती हुई रो रो धरतीपर गिरपड़ी यह देख सब आनन्द दुःख से बदलगया और समझाने के पीछे सबलोगों ने आनन्द मनाया।

बावनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब यह दशा मैना की हुई तब नगर भरमें उदासी छागई और देवता आदि वहां पहुँचकर मैना को समझानेलगे कि तुम क्या करती हो कि सब शुभसामां का अशुभ किये देती हो मैनाने यह सुनकर जो कुछ मन में आया देवताओं को बुरा भला कहा और दिक्पति आदि को उठा दिया तब हे नारद! तुमने मैना से कहा कि तुम्हारी बुद्धि कहां गई है तुम उठकर सब अपना काम करो यह सब शिव की लीला है शिव परब्रह्म हैं तुम उनको अवधूतके स्वरूपसे देख कुछ संशय मत करो तुम्हारे इस वचन को सुनकर मैनाने दूर दूर

किया और सप्तऋषि अरुन्धती समेत आकर मैना को समझाने लगे उनको भी मैना ने क्रोधित होकर निकाल दिया तब तो हम आप गये जब अच्छीतरह से शिव की स्तुति की तब मैना ने महाकोप को प्राप्त होकर कहा चुप रहो ऐसी झूठी बातें मत कहो अन्त को हिमाचल ने मैना को आकर बहुत समझाया कि सबके स्वामी और पिता शिव मेरे द्वारपर आये हैं तुमको जो उचित है वह करो शिवके बराबर दूसरा कौन है इस बात को वेद कहते हैं देखो एक वेर पहिले शिव अवधूत स्वरूप बनाकर हमारे यहां आये थे और ऐसे नाचे गाये कि स्त्री पुरुष सब अधीर होगये थे उन्होंने कैसे २ रूप दिखलाये थे जिनको देखकर हम और तुम दोनों ने गिरिजा का देना मान लिया यद्यपि ऐसी २ बातें कहकर हिमाचल ने समझाया पर मैना के मन में कुछ न आया और कहा चाहे तुम गिरिजा को गर्दन बांधकर पहाड़ से डाल दो वा समुद्र में डुबा दो पर निश्चय जानो कि शिव गिरिजा को न पावेंगे तब गिरिजा ने मैना से कहा और अच्छी तरह पर समझाया कि मैं शिवके सिवाय और किसी के साथ विवाह न करूँगी यह बात क्योंकर होसक्ती है कि सिंह का भाग सियार को मिले यह शिव हैं मुझे इनके सिवाय और कोई भर्ता करना अङ्गीकार नहीं यह सुन मैना अतिक्रोध में आई और गिरिजा को पकड़कर भलीभांति तमाचों से मारा तब तुमने और देवताओं समेत गिरिजा को मैनासे छुड़ाकर भगा दिया जब मैना का कोप शान्त न हुआ वरन् और बढ़ा तब आप विष्णुजी समझानेके लिये गये।

तिरपनवां अध्याय।

विष्णुजीने कहा कि हे मैना! तुम शिवको नहीं जानती हो वह सबसे बड़े हैं और सबके स्वामी अनादि हैं उन्हींसे प्रकृति

पुरुष सनकादिक और हम और ब्रह्मा आदि सब उत्पन्न हुये वे हमारी विनती से सगुणरूप धारण करते हैं और सृष्टिके हित चाहनेवाले हैं उन्होंने हमको वेद कृपा किये हम उन्हींकी सेवा करते हैं और इसीप्रकार बहुत स्तुति की और फिर कहा कि सबको शिव और शिव को सब समझो हम तुम सब शिव हैं बरन् सर्वसृष्टि को शिव समझो जिस प्रकार कि एक शरीर नाना प्रकारके वस्त्र पहिनता है इसी प्रकार शिव को समझना चाहिये शिव की भक्ति बड़ा आनन्द देनेवाली है वही माता पिता और भाई है शिवधर्म बड़ी प्रसन्नता प्राप्त करनेवाला और दुःख मिटानेवाला है हम सम्पूर्ण कार्य उन्हीं की शक्ति से करते हैं उन्हींके तपसे हमको चक्र प्राप्त हुआ है शिवसेवासे सब देवता अमर होगये हैं शिवके लिये सम्पूर्ण मुनि संसार छोड़ देते हैं हे मैना ! तुमको सब धर्मरूप कहते हैं सो आज हम तुमको समझाते हैं तुम्हारे बड़े भाग्यहैं कि सदाशिव हम सब समेत तुम्हारे द्वारपर आयेहैं तुम इस बात को अच्छे प्रकार समझो कि शिव की भक्ति बिन संसार भर का बखेड़ा वृथा है शिव का तप बहुत सीधा है शिव की भक्ति और तप बिन अन्य तप व्रत वेदपठन विद्या धन द्रव्य दया दान सत्य मौन धारण योगादि सब वृथा और निष्फल हैं यह सब बातें कुछभी आनन्द नहीं देतीं उनके बहुत रूप और असंख्य लीला हैं जैसे कि तुमने तब अनेक रूप देखे थे और अब भयानक स्वरूप को भी देख लिया जो कोई मनुष्य किसीको कुछ देने को कहे और न देवे उसकी बराबर और कोई पापी नहीं हमने बहुत जीव देखे हैं पर ऐसा किसीको नहीं देखा जो देकर लेलेवे अब उठो और अपना काम करो शिव तुम्हारा बड़ा कल्याण करेंगे मैं सत्यही कहता हूं कि शिव गिरिजा का अब विवाह होगा ।

चौवनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! मैना को विष्णुजी के पवित्र वचन सुनकर कुछ ढाढ़स हुआ और उठकर लज्जापूर्वक विष्णु से बोली कि आपने मुझको समझाने से बड़ा भरोसा दिया पर मैं अपने मन से निरुपाय हूं कि वह बात को समझ लेता है पर उसमें समझने की समाई नहीं मेरा मन यह काम करने को नहीं चाहता यह सुनकर श्रीविष्णुजी ने हे नारद ! तुमसे कहा कि तुम शिवजीके पास जाकर विनती करो कि मैना के मन से अपनी माया को खींच लेवें कि मैना अपनी दशा पर आजावे जिसमें गिरिजा का विवाह हो और सब मनुष्य प्रसन्न होजावें जब तुम शिवजीके चरणोंमें विष्णुकी आज्ञा से पहुँचे तो शिव विष्णु की इच्छा समझ अतिसुन्दर होगये कि एक मुख दो नेत्र शरीर का रङ्ग चम्पा के फूल के समान सर्वप्रकार से मोहिनीरूप धारण किया और उत्तमोत्तम रत्न और जड़ाऊ कपड़ों से शरीर को सजाया खिला माथा जो अग्निसमान चमकता और चन्दन कस्तूरी अगर कुमकुम इतर आदि लगाये और मणियों से जड़ी हुई अँगूठियां हाथों में पहिने हुये और आंखों में काजल लगाये रत्नों से जड़ाहुआ मुकुट रक्खे जड़ाऊ कुण्डल कानों में विराजमान किशोर अवस्था को प्राप्त मानों संसार भर की सुन्दरताई इकट्ठी होकर शिव में स्थित हुई थी हे नारद ! जो परब्रह्म आदि मध्य अन्तरहित सृष्टि उपजानेवाला है उसने ऐसे रूप से प्रकट होकर कैसी २ लीला की सो हे नारद ! तुमने शिवजीका ऐसा स्वरूप देख अति आनन्द माना और स्तुति करने लगे और मैना से कहा कि शिवजी के रूप को देखो मैना ने शिवजी का रूप देखा तो जो आनन्द उसको प्राप्त हुआ वह लिखने और वर्णन करने में नहीं आता और

हस और विष्णु और इन्द्र आदि शिवकी सेवा करने लगे और फिर हर ओर से प्रसन्नता छागई और देवता जय शिव शम्भु ऊंचे २ स्वर से कहने लगे और अप्सरा नाचनेलगीं और शङ्ख मृदङ्ग आदि बाजे बजने लगे और मैना ने कहा कि हमारे वड़े भाग्य हैं और शिव सब बरात समेत हिमाचल के द्वार को चले।

पञ्चपनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वे लोग संसार में वड़े भाग्यवान् हैं जो शिवजीकी भक्ति रखते हैं वे लोग भी पूजने योग्य हैं क्योंकि वे मुक्त होकर औरों को भी मोक्ष देते हैं शिवजी की भक्ति तीनोंलोक को भाग्य से प्राप्त होती है चाहे करोड़ों जन्मोंतक तप किया करे पर शिव का पाना कठिन है वही सदाशिव देवताओं को साथ लिये हुये और संसारी मनुष्यों के समान हिमाचल के द्वारपर चले तब नगर की सब स्त्रियां देखने को चलीं और अति प्रसन्नता से जो जिस दशा में बैठी थीं इसी प्रकार से चलीं और शिवजी को देख परस्पर कहने लगीं कि गिरिजा को तप के कारण ऐसा पति मिला है और सब मिलकर परस्पर गाने लगीं और मैना ने अति प्रसन्नता-पूर्वक शिव की आरती उतारी और गिरिजा ने अपनी माता से छिपकर शिव को देखा जैसा स्वरूप गिरिजा को दिखाई दिया उसकी कहां तक प्रशंसा हो सक्ती है ऐसे रूप को गिरिजा ने मन में ध्यान किया फिर उनको दूसरा स्वरूप दिखाई दिया कि शिर में जटा पञ्चमुखी शीश में गङ्गाजी की धारा बहती हुई जैसा कि कई स्थान पर वर्णन हो चुका है और उसी प्रकार के गिरिजा को दिखाई दिये ऐसे स्वरूप को गिरिजा ने प्रणाम किया और हिमाचल ने कुल और संसार की रीति के समान बड़ी धूमधाम से सब रीतें पूरीं और द्वारचार पूरी हुई तब

गाना नाचना और फूलों की वर्षा और नाना प्रकार के आनन्द मङ्गल होने लगे और इस रीति के पूर्ण होने के उपरान्त बरात अपने वासस्थान को गई।

छप्पनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल ने सब प्रकार की सामग्री दास दासी सब कुछ बरात के लिये भेज दिये और गिरिजा ने ध्यान करके बरात में सिद्धि को प्रकट कर दिया जिससे किसी बात की न्यूनता न रही और विष्णु आदि सब हिमाचल की स्तुति करने लगे और यह न जाना कि यह सब सिद्धि गिरिजा की है पर शिव इस बात को जान गये और मन में अति प्रसन्न हुये फिर हमने हिमाचल के पास आकर कह दिया कि अब विलम्ब मत करो लग्न का मुहूर्त आन पहुँचा हिमाचल ने प्रसन्न होकर अपने पुरोहित को बुलाया, और पण्डित वेद पढ़ते हुये नाना प्रकार के बाजे बजवाते हुये चले और शिवजी से विनय की गई कि अब आप हमारे घर चलें सो हम शिव सहित हिमाचल के घरको गये और उचित स्थानों पर बैठे और गिरिजा को भीतर से बुलवाया जब सबने गिरिजा को आते हुये देखा तो प्रणाम किया और गिरिजा को उत्तम स्थान पर बैठाकर विवाह की सब रीतें होने लगीं और गिरिजा को सर्व प्रकार के भूषण पहिनाये गये और दोनों ओर से दानादि बहुत हुआ जो जिसको इच्छा थी वही उसको मिला उस समय बड़ा आनन्द और मङ्गलाचार हुआ सबकी जिह्वा से जय शिव गिरिजा निकलता था स्त्रियां मङ्गलगीत गाती थीं और फिर बरात चलकर अपने निवासस्थान में आई और हर प्रकार के भोजन परसे गये और हिमाचल ने छप्पन प्रकार के भोजन अपने घरमें बनवाये और सँदेशा भेजा कि भोजन

करने को बरात आवे सो सब बरात चली हिमाचल ने सबके पावँ धोये और जब शिव के चरण धोने लगे तो प्रसन्नता से विह्वल होगये क्योंकि उन्होंने यह विचारा कि ये वही चरण हैं जिनका विष्णु और ब्रह्मा ध्यान करते हैं और अच्छी सोने की चौकी पर बैठाया और रसोईदार भोजन लाने लगे और हर प्रकार के स्वादिष्ठ भोजन सामने रक्खे गये वह भोजन चारोंप्रकार के थे जिनमें छवोंरसों का स्वाद था और देवता और मुनि आदि पहिले पांच ग्रास खाकर फिर भोजन करने लगे स्त्रियों ने गालियां गाईं जिनमें वह सबके नाम लेती थीं और बराती प्रसन्न होकर बहुत धीरे २ भोजन करते थे जब भोजन कर चुके तब पान बांटे गये और हिमाचल ने सबके आगे बहुत विनय की और बरात विदा होकर अपने निवासस्थान में आई और जब हमने विवाह की शुभ लग्न पूर्व के विचार के अनुसार देखा तो हिमाचल से विवाह का विचार कह दिया हिमाचल ने एक अपना लड़का शिवजी के लाने को भेज दिया शिवजी देवता और मुनियों सहित तुरन्त चले और नाना प्रकार के बाजे बाजने लगे नाच होने लगा आकाश से फूलों की वर्षा हुई ऊंचे स्वर से वेद पढ़े गये उस समय का आनन्द करोड़ों जिह्वाओं से भी वर्णन नहीं हो सक्ता ।

सत्तावनवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय सबको प्रसन्नता थी कि शिवजी का विवाह अपने नयनों से देखेंगे और शिवजी की सुन्दरता ऐसी थी कि हम और विष्णुजी देखकर बहुत अचम्भे में हुये मैना ने शिवजी की आरती की और शिव भीतर गये और देवता और मुनि आदि भी जाकर भीतर बैठे और शिवजी के मुखचन्द्र को चकोर की भांति देखने लगे उस

समय मँड़वे के चारों ओर की धरती चार प्रकार से पवित्र की गई उसके नीचे सिंहासन के ऊपर शिवजी बैठे और गिरिजा आईं जो सोलहो शृङ्गार किये सखियों को साथ लिये थीं जिसको देख कर कौन स्तुति करने की शक्ति रखता है विष्णुजी और हम सब देवताओं ने हाथ जोड़ गिरिजा को प्रणाम किया और मुनि आदि ने शुभ आशीष दी और दोनों ओर के मुनियों ने पहिले गणपति और गौरी का पूजन किया और और रीतें पूरने लगे हे नारद ! पञ्च देवता अनादि हैं और पांचों को बराबर जानकर पांचों की पूजा करनी चाहिये सो जिस प्रकार कि वेद में विवाह की रीतें लिखी हैं उसी प्रकार हिमाचल ने कीं और मैना ने चीर कपड़े बहुत महीन और उत्तम शिवजी को दिये और दो उसी प्रकार के गिरिजा को दिये और दो आप पहिने और गिरिजा हिमाचल की दाहिनी ओर आकर बैठीं और शिव गिरिजा के सामने बैठे मुनीश्वरों ने वेद पढ़ा और मैना भी कन्यादान के समय आई और गोत्र नाम पूछने लगे और अपने कुल को कहने लगे और हिमाचल ने गर्ग विष्णु और हमसे कहा कि अब आप लोग कन्यादान कर दीजिये पर हम लोग शिवजी का गोत्रोच्चारण न कर सके लाचार होकर चुप हो रहे तब हिमाचल ने शिवजी से कहा कि अपना गोत्र और कुल वर्णन करो क्योंकि इसके बिना कन्यादान नहीं हो सक्ता शिवजी ने लीला करके कुल मुख से न कहा चुप हो गये तब सब लोग आश्चर्य करने लगे और सबको बड़ा दुःख हुआ क्योंकि आशा टूट गई और हिमाचल का यह वचन और हठ किसीको न भाया और परस्पर एक दूसरे को देखने लगे और शिवजी की लीला किसीने न जानी गिरिजा सबसे अधिक अपने पति के मुख को देख चिन्तित

हुई और शिव का ध्यान किया शिवजीने गिरिजा की ऐसी चिन्ता जानकर नारद पर अपनी इच्छा प्रकट की सो नारद तुरन्त हँसकर अपना बीणा बजाने लगे यह दशा देख और भी सबको अचम्भा हुआ और हिमाचल पर अति अप्रसन्न हुये और सब लोगों ने नारद को मना किया कि यह क्या करते हो दुःख में बीणा बजाने का कौन समय है सो नारद बोले कि तुमने जो शिवजी का गोत्र और कुल पूछा है सो हमने शिवजी की सैन के अनुसार उत्तर दिया अर्थात् शिवजी का कुल और गोत्र नाद है नादही से शिव स्थित हैं शिव नादरूपी शरीर हैं और नादपूर्ण शिव हैं शिवका कुल और गोत्र ब्रह्मा विष्णु और हमसब कोई नहीं जानते और कौन मनुष्यहै जो उससे वार्त्ता करे तुमतो मूर्खों के समान बातें करते हो जिस शिव के एक दिन में असंख्य विष्णु और ब्रह्मा बीत जाते हैं वह तुम्हारे पुत्र के समान गिरिजा के तप और ध्यान से हो गये शिव शरीर सहित शरीर रहित निष्कुल सकुल अगोत्र सुगोत्र सब कुछ हैं ऐसे शिवजी को भक्ति बिना कोई नहीं जान सका अब समय जाता है तुरन्त कन्यादान करदो और यही बात सबने हिमाचल से कही हिमाचलने कुश और जल लेकर कन्यादान कर दिया और गिरिजा का हाथ शिवजी के हाथ में पकड़ा दिया जिससे हिमाचल की तीनों लोक में कीर्ति हुई शिवने गिरिजा का हाथ पकड़ा सो यही विवाह की रीति लोक में प्रसिद्ध हुई ।

अट्ठावनवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय सब के मनों में आनन्द उपजा और लौंड़ी सेवक चाकर पारितोषिकसे भरपूरहुये और गिरिजाको शिवके वामभाग में बैठाकर होम करनेलगे और उत्तम रीति से भांवरी होनेलगीं जिनको देखकर कौन ऐसा था

जिसको अति आनन्द न प्राप्त हुआ हो तब शिवजी ने ऐसा चरित्र किया कि भाँवर फिरते हुये गिरिजा का एक अँगूठा कपड़े के हटाने से हमारी दृष्टि में पड़ा हमने तो उसको काम की दृष्टि से देखा और यद्यपि हमने सँभाला पर तौ भी कामदेव धरती पर गिरपड़ा उससे असंख्य वटुक और जटाधारी तेजपूर्वक उपजे वे हमारी स्तुति करके शिवके सामने खड़े हुये शिव ने उनको देखकर बड़े क्रोध से त्रिशूल उठा लिया उस समय सब देवता मुनि आदि कांप उठे और हाथ जोड़कर सब शिवजी की स्तुति पढ़ने लगे और इतनी सबने मिलकर बिनती की कि शिवजी प्रसन्न होकर कहने लगे कि अच्छा ब्रह्माजी तुम सुख-पूर्वक अपना कार्य करो हम अप्रसन्न नहीं हैं हमने सब वटुकों को सूर्य को सौंप कहा कि तुम सब इनकी सेवामें विद्यमान रहा करो वे सूर्य की सेवा में रहने लगे और ब्रह्मचर्य रहकर वेद के बड़े जाननेवाले हुये और सूर्य की सेवा में बहुत सुख से रहने लगे इसके उपरान्त जो विवाह का कार्य शेष रहगया था वह सब करा दिया फिर हिमाचल ने हम सबको जो उचित था कृपा किया और शिव को रत्नादि और हर प्रकार का धन द्रव्य दहेज में दिया और उदारता का ऐसा हाथ खोला कि कोई उस समय भिक्षुक और मंगन न रहा और बिनती पढ़ीगई फूलों की वर्षा हुई बाजे आदि बजे और नाच गान से संसार में प्रसन्नता छा गई हम सबतो बासस्थान को चले आये और स्त्रियां शिवको घरके भीतर लेजाकर सब रीतें पूरने लगीं और उन स्त्रियों ने शिवके साथ नाना प्रकारके हास्य किये और फिर शिव गिरिजा को अन्तःपुर में लेगईं और चारोंओर से जय २ का शब्द पूर्ण हुआ और सबने आयु और धन की वृद्धि के निमित्त आशीर्वाद दिये।

उनसठवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सब रीतों के पूरने के उपरान्त स्त्रियां शिव और गिरिजा को अन्तःपुर में लेगईं और उत्तम शय्या पर अच्छे अच्छे बिछौने बिछाकर दोनों को बैठाला और तिरछी दृष्टि और बांकी नज़र से सब स्त्रियां देखने लगीं उस समय शिव और गिरिजा का स्वरूप जो कपड़ों और भूषणों से सजा था वह वर्णन नहीं होसक्ता और सब देवपत्नियां शिव के निकट गईं जिनमें सावित्री हमारी स्त्री और जाह्नवी सती लक्ष्मी सरस्वती कुम्भज की स्त्री अहल्या गौतम की स्त्री तुलसी स्वाहा रोहिणी शतरूप संज्ञावर्त अदिति और सोलहों संसार की माता जो अपनी कृपा से संसार के दुःख का नाश कर देती हैं इसी प्रकार देवताओं की पुत्रियां इन सबने आकर चारों ओर से शिव को घेर लिया पहिले सरस्वती ने कहा कि हे देवताओं के देवता ! तुमने प्राण के समान स्त्री पाई अपनी प्यारी के मुखको देखो लक्ष्मी ने कहा कि हे देवताओं के देवता ! सब लज्जा दूर करके अपनी प्यारी को छाती से लगा लो जिसके बिना तुम्हारा जीवन दुःखदायक था अब उसके साथ भलीभांति विहार करो सावित्री ने फिर कहा कि तुम भोजन करके अपनी प्यारी को भोजन कराकर पान खिलाओ और अपनी स्त्री को पाकर प्रसन्न रहो तुम तो बड़े कामी हो जाह्नवी बोली कि हे कामी महापराक्रमी ! बाज़ार से अच्छी कंघी लाकर अपने हाथ से अपनी प्यारी के बालों को सुधारा करो इसमें बड़ा आनन्द मिलता है अदिति ने कहा कि हे कामके मद भरे हुये शिव ! गिरिजा को आनन्द से रक्खो और बहुत प्यार करो क्योंकि स्त्रियों को इससे अधिक आनन्द नहीं है और अति प्रीति से इनके दुःख दूर करो शची बोली हे शिवजी ! सर्व सुन्दरों के राजा कामदेव के

भरे हुये जिसके लिये उसके शरीर को लिये चारों ओर संसार में फिरे हो और लज्जा दूर करके भस्म को शरीर में लगाये घूमते रहे अब इससे अधिक तुमको कौन सिद्धि प्राप्त होगी अब गिरिजा से भली भांति विहार करो लोपामुद्रा ने कहा कि अच्छे २ भोजन खाकर उत्तमोत्तम अन्तःपुर में पान चाब २ कर सोने की अच्छी रीति अङ्गीकार करो यह बात स्त्रियों को अति प्रसन्नता देनेवाली है हमने तुमको गिरिजा से मिला दिया चाहे यह बात मैना मानती न थी अब भली भांति भेंटें कीजिये अहल्या बोली कि तुमने बुढ़ापा छोड़ किशोर अवस्था को धारण किया और स्त्री के निमित्त बहुत उपाय किये तुमने बहुत युक्तियां करके जाया पाई तुमको शुभ हो तुलसी बोली कि हां तुमने तो स्त्री को छोड़ कर कामदेव को भस्म करदिया था और बड़े संसार के त्यागी और कामरहित बन गये थे फिर तुमने क्यों अरुन्धती को सिखाकर भेजा स्वाहा ने कहा वाह वाह स्त्री के वचन सुनकर लज्जित मत होना जो वह कोई ढिठाई सैन लाड़ दुलार की बातें कहे तो उसको बुरा न जानना क्योंकि यही रीति है रोहिणी बोली तुम तो कामशास्त्र के बहुत ज्ञाता हो अपनी स्त्री के समीप रहकर अपना काम करो और स्त्रियों के कामरूपी समुद्र में पैरकर पार हो और वसुन्धराने कहा कि तुम सब जानते हो स्त्री के मनोरथ को समभकर उसकी इच्छा पूरी करो कि भेंटसे वियोग का दुःख दूर होजावे शतरूपा बोली कि भूखा खाने के विना तृप्त नहीं होता यह छिपी हुई बात जानकर प्यारी के साथ भोग करो शङ्खाने कहा कि अब गिरिजा को शिव के साथ भेज दो जहां अच्छा मन्दिर पुष्पों से सजा हो और वहां रत्नों का दीपक ज़लता हो इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव ऐसी

ऐसी हास्य की बातें सुनकर अति लज्जित हुये और कहा कि हम तुम सब स्त्रियों के हाथ जोड़ते हैं और विनय करते हैं कि हमारे समीप ऐसी बातें मत कहो तुम तो संसार की माता हो हम तुम्हारे पुत्र के तुल्य हैं ऐसी लाघवता तुमको उचित नहीं यह वचन सुनकर सब स्त्रियां लज्जित होगईं और चित्र समान चुप होकर रहगईं उस समय शिवको प्रसन्न पाकर रति बोली कि हे शिवजी ! तुमने तो अपनी स्त्री को पाया और प्रसन्न हुये पर तुमने मेरे पति को वृथा ही जला दिया अब आशा रखती हूं कि मेरे पति को जिला दीजिये इस समय सर्व संसार में मेरे विना सबको आनन्द है यह कह रति रोने लगी जिससे सबको बड़ा दुःख हुआ और रति ने जो अपने पति की जली हुई भस्म बांधे थी उसको खोलकर शिवजी के आगे खड़ी होगई रति का रोना सुनकर सब स्त्रियां रोने लगीं शिव ने रति का रोना और देवपत्नियों का शब्द सुनकर एकबेर अमृतदृष्टि से देख दिया कि तुरन्त कामदेव अपनी भस्म से उत्पन्न होगया रति अति प्रसन्न हुई और कामदेव शिवजी की स्तुति करने लगा शिवजी ने कहा कि तुम कुछ शोच मत करो और बाहर बरात में जा बैठो कामदेव ने निवासस्थान में जाकर हमको और विष्णुजी को प्रणाम किया हमने अशीष दी कि तुम शिव और गिरिजा के प्यारे हो अब तुमको कोई भय नहीं तथाच कामदेव स्थित हुआ और शिवजीने गिरिजा को अपने वामभाग में बैठाकर भोजन कराया और आप भी भोजन किया और फिर स्त्रियां अति प्रसन्नता से शिवजी और गिरिजा को मुख्य अन्तःपुर में लेगईं जो नाना प्रकार के विचित्रवस्तु और रत्नादि से भूषित था और उसको अपने हाथ से विश्वकर्मा ने बनाया था दोनों ने एकही जड़ाऊ सेज पर बैठकर पान खाया और शिवजी

इधर उधर मन्दिर को देखने लगे देखा कि वहां स्वर्ण का दीप-दान और सोने के कलश उत्तमोत्तम सोने के शीशे ठौर २ पर रक्खे थे और चारों ओर मोतियों की झालरें लगी हुई थीं और चन्दन कस्तूरी अगर आदि से मन्दिर सुगन्धित होरहा था और विष्णुलोक ब्रह्मलोक इन्द्रलोक और गोलोक कि जिसमें रास-मण्डल गोपियों का होरहा था उनके चित्र लिखे थे और कहीं पर कैलास पर्वत बना हुआ था जहां बुढ़ापे और मौत का भय नहीं ऐसी २ चीजें देख कर शिव अति प्रसन्न हुये वहां पर शिव और गिरिजा ने नाना प्रकार के विहार किये जब प्रभात हुआ तो चारों ओर से बाजे बाजनेलगे और देवता और मुनि आदि पूर्ववत् जयकार आनन्द करने लगे विष्णुजीने धर्मराज से कहा कि तुम जाकर उपायसे शिवजीको निद्रा से जगाकर उठावो धर्मराज ने जाकर कहा कि महाराज कृपा करके उठिये और वासस्थान में चलकर सबको आनन्द दीजिये शिवजी धर्म-राज की यह बात सुनकर हँसे और कहा तुम चलो और फिर बिछौनेपर से उठकर लज्जा से शिर नवाये चलनेकी इच्छा की और बड़ों की आज्ञा पाकर अपने वासस्थान में मन में हँसते हुये चले।

साठवां अध्याय

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब शिव निवासस्थान में गये तब हमने सब देवता आदि को बुला लिया और सबने मिलकर शिव को प्रणाम किया और फिर विष्णु और हमने उच्चस्वर से कहा कि हे नारद और सप्तऋषियो! तुमने बड़ी कृपा की केवल तुम्हारी कृपा से विवाह हुआ जिससे आज के दिन कितना आनन्द फैल रहा है फिर विष्णु और हमने बहुतसा दान दिया और हिमा-चल से विदा मांगी हिमाचल बहुत लोगों समेत आकर विनय

करने लगा कि हे देवतो! हमको मत छोड़ो यद्यपि मुझसे आप लोगों की कुछ सेवा न बनपड़ी सेवा तो क्या मैं तो आपके चरण भी न धोसका मैं अति लज्जित हूं और केवल झूठा नाम ज्यवनार का करके वृथा ही आपके आहार विहार का विघ्नकर्त्ता हुआ और केवल छिउल के पत्ते आप लोगों के आगे रखकर आपका समय वृथा गँवाया यहाँ तक कि पुष्प भी आपलोगों की भेंट न करसका मैं अति लज्जित हूं आशा रखता हूं कि आप मेरी छुटाई का विचार न रखकर फिर मेरे गृह को पवित्र कीजिये इसके उपरान्त हम और विष्णुजी और सब देवताओं ने कहा कि तुम को धन्य है हमने ऐसा आनन्द कहीं नहीं उठाया इस प्रकार का मनहरण ठौर और भोजन नहीं मिला तुम कल्पवृक्ष हो ऋद्धि सिद्धि तुम्हारी चेरी हैं तुम्हारे घर जगदम्बा उपजीं तुम्हारे समान संसार में और कौन है तुम धन्य हो और तुम्हारी सभा और नगर धन्य है जहां शिवजी आकर सुशोभित हुये इसी प्रकार दोनों ओर से बड़े नम्रता के वचन प्रकट हुये फिर हिमाचल बरात को अपने घर भोजन कराने को लेगये और बरात को भोजन कराने लगे स्त्रियां गालियां गानेलगीं जिनका आशय यह था कि हे शिवजी! यद्यपि तुम अपनी सम्पूर्ण सामग्री अशुभ रखते हो पर अपने भक्तों को सब कुछ देते हो शिव ने यह वचन सुन वरदान दिया कि जो इसको पढ़ेगा वह सर्वदा प्रसन्न रहेगा।

इकसठवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इस प्रकार तीन दिनतक हिमाचल ने बिनती करके बरात को जाने न दिया चौथे दिन हमने पश्चिम मुखसे शिव गिरिजा को बिठलाकर होम कराया और लखौर सेंदुर चोभी जुवे और गोली आदि की जो रीतें शेष थीं वह सब पूरी गईं फिर अभिषेक किया गया और सबने

अशीशेंदीं फिर सब बरात को भोजन दियागया और निवासस्थान में आकर रातभर सब देवता आदि ने हिमाचल की स्तुति में भोर करदिया जब प्रभात को हिमाचल से बिदा मांगी तो हिमाचल अति विनयपूर्वक आज्ञा न देकर कई दिनतक बरात को ठहराये रहे और हिमाचल के शील और प्रीति की अधिकता से किसीको यह इच्छा न हुई कि ऐसी संगति छोड़ दें सो सबने वहां के रहने को और संगति को उत्तम जाना और जब कुछ दिनों पीछे बिदा होने का वचन मुख पर लाये तो हिमाचल अपने को वियोग के दुःख को उठानेवाला न समझकर चुप होरहे देवताओं ने बहुत समझा कर हिमाचल की बहुत स्तुति की और कहा कि शिव परब्रह्म जिनके हम सेवक हैं तुम्हारे घर आये तुमसे अधिक संसार में कौन भाग्यवान् है यह कह सब देवता और मुनि आदि दुःख की अधिकता से लौट आये और कुछ कोई किसी से न कहसका निदान निरुपाय होकर हिमाचल ने लज्जा से एक सभा इकट्ठी कर सबसे कहा कि शिव बिदा होनेवाले हैं यह सुन सबके चेत जाते रहे और सब मुरझागये पर हिमाचल ने गुरु की आज्ञा से सर्वप्रकार की सामग्री विद्यमान कर बरात को घर के अन्दर बुला लिया सो बरात के लोग आये और हमने शिव गिरिजा को बीच में बैठा दिया और गौरी गणपति की पूजा करा कर सब काम जो करने के योग्य थे पूरे करा दिये और हिमाचल ने दहेज में पकवान, फल, हाथी, घोड़े, रथ, लौंडी, चाकर, गौ आदि इतना दिया जिसकी संख्या नहीं हो सकी इसके उपरान्त हिमाचल ने मैना और सब परिवार समेत खड़े होकर हाथ जोड़ विनय की कि हमारे बड़े भाग्य से गिरिजा ऐसी पुत्री हमारे घर उपजी जिससे हमारा कुल भर पवित्र हो गया मुझको आशा है कि जो ढिठाई

या अपराध मुझसे हुआ हो वह आप लोग क्षमा करें यह सुन कर सब देवता बोल उठे कि हे हिमाचल ! तुम मुक्त हो गये क्योंकि शिवजी ने तुम पर दया की है और क्योंकि तुमने गिरिजा को शिवजी के साथ विवाह दिया यह हम पर बड़ी कृपा हुई और इसी प्रकार देवताओं ने मैना से बड़ी स्तुति की फिर शिव और गिरिजा के गुणों का वर्णन होने लगा ।

बासठवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! फिर हिमाचल और मैना समेत सर्व कुल बार २ शिवजी की स्तुति करने लगा फिर सब बरात बास स्थान में आई और फिर हम सब बिदा होने के लिये हिमाचल के द्वार पर गये और शिवजी हिमाचल के घरके भीतर गये जहां सब स्त्रियां इकट्ठी होकर शिव को बिदा करने लगीं शिवजीने कहा कि बरात सब बिदा हो गई मुझे भी आज्ञा दो कि बिदा हो जाऊं यह सुन मैना ने बड़े प्रेम के साथ शिवजी को गिरिजा सौंपी और कहा कि यह गिरिजा मुझे प्राण से भी अधिक प्रिय है और अभी इसकी छोटी अवस्था है और अति कोमलाङ्गी इसको संसार की रीति अब तक मालूम नहीं और बहुत सीधी है आप इसको प्रीति और कृपा से रक्खें और इस के अपराध क्षमा करना मैं तुम्हारे निछावर होती हूं इसको अपनी लौंड़ी के समान प्रसन्न रखना यह कह शिवजी के चरण पकड़ मोहित हो गई शिवजी बोले कि तुम और हिमाचल धन्य हो जिनकी संसार में सब स्तुति करते हैं तुम अपने कुल परि-वार समेत मुक्ति पावोगे देखो हमको भक्तजन बैर भय प्रीति भक्ति और सम्बन्ध हर प्रकार से पाते हैं यह कह और मैना से बिदा हो शिवजी हिमाचल के समीप आये और हाथ जोड़ खड़े हो बिदा मांगी हिमाचल अति प्रेम और भक्ति से अश्रुपात कर

कहने लगे कि हमारे अपराध क्षमा करना और मुझे अपना चेरा समझ सब दुःख दूर करना यह कह शिवजी को बिदा किया और बरात बड़ी धूमधाम से चली और सर्व प्रकार के बाजे बजने लगे ।

तिरसठवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! शिवजी तो इस तरह बिदा होकर नगर के बाहर स्थित हुये और मुनियों ने हिमाचल से कहा कि अब गिरिजा को भी विदा कीजिये जब यह सन्देशा भीतर मैना के पास भेजा तो मैना प्रीतिसागर में डूब गई और नगर भर की स्त्रियों को बुलाया सो वह सब सज सजाकर गिरिजा को बिदा करने आईं मैना ने गिरिजा को स्नान कराय विचित्र वस्त्राभूषणों से अलंकृत किया और सब स्त्रियां गिरिजा के भाग्य का बखान करने लगीं और फिर ब्राह्मणों की स्त्रियों ने गिरिजा को पातिव्रत धर्म की शिक्षा की और कहा हे गिरिजे ! अपने पति की सेवा लोक में अति आनन्द देनेवाली है सो तुम रात दिन सेवा में लगी रहना इसके समान कोई तप स्त्री के लिये दूसरा नहीं है यद्यपि माता पिता अपनी संतान के बड़े हितैषी हैं पर वे अपनी संतान को मुक्ति नहीं दे सक्ते संसार में चार वस्तु अति सुखदायक हैं पहिले प्रियतम दूसरे धर्म तीसरे स्त्री चौथे सन्तोष पर इन चारों की परीक्षा आपत्तिकाल में हो सक्ती है वेद कहते हैं कि अपना पति चाहे मूर्ख, रोगी, दरिद्री, लँगड़ा व काना, दया न रखनेवाला, व्यभिचारी, छली, धूर्त, कठोर व नम्र अथवा उसमें किसी प्रकार का दोष हो पर तो भी स्त्री को उचित है कि उसको शिवजी और विष्णुजी के समान समझे यह स्त्रियों के लिये मुक्ति का बड़ा द्वारा है जो स्त्रियां अपने पति की प्रतिष्ठा नहीं करतीं वे निस्सन्देह सीधी नरक में जाती हैं और

उनको कोई भी करोड़ों कल्पतक नरक से नहीं निकाल सक्ता इसलिये स्त्री को सब छोड़ केवल अपने पति की सेवा करनी उचित है स्त्री को उचित है कि मन कर्म वचन इन तीनों से अपने पति की सेवा करे उसके लिये यही बड़ा धर्म, तप, व्रत, योग, जपादि है और वेदों में लिखा है कि चार प्रकार की पतिव्रता स्त्रियां होती हैं पहिली उत्तमा वह है जो स्वप्न में भी दूसरे पुरुष का मन में विचार न लावै, दूसरी मध्यमा जो दूसरे पुरुष को अपने पुत्र व पिता व भाई के समान समझै, तीसरी निकृष्टा जो अपने धर्म का विचार करके दूसरे पुरुष की संगति से बची रहै, चौथी अति अधमा जो अपने पति व कुलके भय से दूसरे की संगति से वच जावे और समय का भय न करना यह भी चौथे प्रकार की स्त्री में गिना गया है पतिव्रता स्त्रियों की बड़ीप्रतिष्ठा है और जो स्त्री अपने पति को छोड़ यारों के साथ भोग करें वह असंख्य कल्प पर्यन्त रौरव नरक में बास पाती हैं वह पुंश्चली स्त्रियां केवल एक क्षण भर के आनन्द के निमित्त बहुत युगों तक नरक दुःख उठा पछिताती हैं स्त्री से चाहे करोड़ों पाप हुये हों पर वह केवल अपने पतिव्रत धर्म से परम पद पाती हैं और शिवजी जितना स्त्रियों पर कृपा करते रहे हैं उतना दूसरों पर नहीं और यह भी प्रकट हो कि और सब धर्म प्रयास विना प्राप्त नहीं होते पर स्त्रियों का धर्म केवल परिश्रम रहित है क्योंकि वह अपने पति की सेवा से मोक्ष प्राप्त करती हैं जो स्त्रियां अपने पति के विरुद्ध होती हैं वे निस्सन्देह नारकी हैं उनकी पहिचान यह है कि वह दूसरा जन्म धारण कर युवावस्था में ही विधवा हो जाती हैं या पति सहित भी हैं पर उसी प्रकार के पापों को भोगती हैं यद्यपि स्त्री की जाति भ्रष्ट प्रसिद्ध है पर जो स्त्रियां अपने पति की सेवा करती हैं वे पवित्र हैं वेद भी

पतिव्रता स्त्रियों की बड़ाई करते हैं उसकी समानता संसार में किसी को प्राप्त नहीं है स्त्री को उचित है कि पहिले अपने पति को भोजन कराकर पीछे आप खावे और पति के सुलाने के पीछे आप सोवे उसको बिठला कर आप बैठे और अपने पति से किसी अवस्था में क्रोधित न होवे और न अपने पति का नाम मुख पर ले और जब पति उसको बुलावे अपने घर के सब काम छोड़ उसके पास जावे और हाथ जोड़ विनय करे कि क्यों आपने इस दासी को स्मरण किया है फिर जो पति आज्ञा दे उसको हठ बिना पूरा करे और द्वार पर देर तक खड़ी न रहे और अपने पति के सब धन द्रव्य की रक्षा करे और कोई वस्तु अपने पति की आज्ञा बिना अपने आप न दे और आप पति का जूठा खावे और कोई भी व्रत पति की आज्ञा बिना न रक्खे और किसी नाच गाने की सभा को न देखे और ऋतु के दिनों में अपना मुख तीन दिनतक पति को न दिखावे और जब तक स्नानकर पवित्र न होजावे तब तक कोई बात अपने पति को न सुनावे और स्नानकर पवित्र हो या तो अपने पति के कमलमुख को या जो पति न होवे तो पति का स्मरण कर सूर्य देखे इससे पति की आयु बढ़ती है और सदा अपने को अलंकृत रक्खे और नेत्रों में काजल लगाये रहे और बुरी स्त्रियों से प्रीति और संगति न रक्खे अपने मुख से पति के निन्दा की बात न निकाले और एकान्त में न रहे और दूसरे के घर जाकर नङ्गी न होवे और न ढिठाई करे जहां जहां अपने पति की प्रसन्नता और इच्छा देखे वहां अधिक आप भी प्रीति बढ़ावे और अपने पतिको किसी समय में न छोड़े आपत्ति-काल में भी पति को एकसा ही देखे जो घर में कोई वस्तु कम होजावे तो अपने पति से न कहे पर ऐसी युक्ति करे जिससे

उसका पति जान जावे ऐसी रीति पकड़े जिससे पति को परिश्रम न पड़े यदि किसी तीर्थयात्रा की इच्छा हो तो अपने पति के चरणों को धोकर जल पीजावे क्योंकि उसके लिये उसका पति विष्णुजी महादेवजी से भी श्रेष्ठ है जो स्त्री अपने पति की इच्छा बिना व्रतादि करती है वह अपने पति की आयु को न्यून करती है और आप नरक में जाती है और जो स्त्री अपने पति को क्रोधित होकर उत्तर देती है वह स्यारिन होकर वन में रहती है स्त्री को उचित है कि ऊंची जगह न बैठे और न किसी स्त्री की बात करे और झूठ और बुरे वचन मुख से न निकाले और लड़ाई बखेड़े को तो अपने सामने आने न दे जो किसी समय उसका पति मारपीट करे तो स्त्री को क्रोध न करना चाहिये और न भागना चाहिये कदाचित् स्त्री क्रोध में पति के मारेजाने का उद्योग करे तो दूसरे जन्म में शेरनी होती है और जो स्त्री अपने पति को छोड़ आप अकेले मिष्टान्न भोजन करे वह मेढ़कनी होती है और जो स्त्री अपने स्वामी की दृष्टि बचाकर दूसरे मनुष्य पर काम की दृष्टि डाले वह कानी व कुरूपिणी आदि का जन्म धारती है जो स्त्री अपने भर्ता को बाहर से आते देख आगे लेवे और नाना प्रकार की सेवा करे और अच्छे २ मीठे वचनों से प्रसन्न करे उसको हर जन्म में बहुत ही आनन्द मिलता है मानों उस स्त्री ने संसार-भर को अपने ऊपर प्रसन्न कर लिया देखो कुम्भज ब्राह्मण की स्त्री अनसूया ने इस धर्म से कितना आनन्द उठाया और वराह मुनि को अपने तेज से जलाकर दूसरे एक ब्राह्मण को जिलाया और एक कथा पतिव्रताधर्म की मुनि कहते हैं कि एक तपस्वी तप करते थे एक बगली ने उनके शिरपर विष्ठा करदी जब तपस्वी ने ऊपर देख दिया उसी समय बगली जलकर भस्म

होगई तपस्वी ने जाना कि हमारा तप पूर्ण होगया इसी विचार से तप को छोड़ चलते फिरते एक पतिव्रता स्त्री के द्वार पर आये उसने तपस्वी की बड़ी सेवा की और द्वारपर तपस्वी को ठहराकर आप घर में दान के लिये वस्तु लेने गई संयोग से उसके पति ने घरमें किसी काम को कहा वह उसी कार्य में लग गई और वह बात स्मरण से जातीरही जब वह पति की सेवा करचुकी तो दान लेकर द्वार पर आई उसको देख तपस्वी ने क्रोधित होकर शाप देने की इच्छा की स्त्री ने कहा कि मुझको भय नहीं है क्या मैं बगली हूं इतना क्रोध क्यों करते हो इतना सुन तपस्वी का अहंकार टूटा और बारम्बार प्रशंसा-कर इस बातको निश्चय जाना कि पतिव्रताधर्म सब धर्मों से बड़ा है इसलिये हे गिरिजे! तुम इस बातपर भली भांति निश्चय करो कि संसार में पति से बड़ा स्त्री के लिये कोई देवता नहीं है।

चौंसठवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मैनाने बहुतसी बातें इसी प्रकार की गिरिजा को सुनाकर फिर उसके बिदा करने की इच्छा की और गिरिजा के वियोग का दुःख स्मरणकर अतिदुःखी हुई और गिरिजा को बार बार लिपटाकर फिर छोड़ दे और फिर लिपटा ले इसी प्रकार शिवजी की सेवा के लिये बारम्बार कहती हुई धाय धाय रोने लगी और कहा कि दूसरे के फन्दे में पड़-कर कुछ आनन्द नहीं मिलता और गिरिजा भी प्रीति से चरणों पर गिरपड़ी और मूर्च्छित होगई मैना ने उसे अपनी छाती से लिपटालिया फिर गिरिजा की सखियां गिरिजा को मैना से छुड़ाकर लेचलीं और इसी प्रकार गिरिजा हर एकसे बिदा होकर आप रोती और दूसरों को रुलाती चली यद्यपि सब स्त्री

पुरुष प्रेम के वश में थे पर गिरिजा की सखियों को बहुत ही दुःख था उस समय मानों वियोग रूपही धारकर हिमाचल पर्वत पर स्थित हुआ ऐसी ऐसी बातें कहकर गिरिजा रोती थी कि जिसको सुनकर बड़े धैर्यवान् अधीर होते थे यहांतक कि पशु पक्षी भी रोने लगे और हिमाचलको भी वड़ा दुःख हुआ यद्यपि बहुत गम्भीरता की पर सह न सके वह भी धाय २ रोनेलगे और कोई परिडत ज्ञानी शेष न रहा जिसको उस समय सिवाय रोने पीटने के कुछ ज्ञान रहा हो तब ब्राह्मणोंने हिमाचल और उसके मित्रों से कहा कि शुभ समय जाता है वेग ही बिदा करो हिमाचल ने निरुपाय होकर गिरिजा को पालकी पर सवार कराकर स्त्रियों का धर्म सिखाया और मैना सब स्त्रियां और पुरुष एकमति होकर गिरिजा को आशिष देनेलगे और हिमाचल ने वह दासियां जिनको गिरिजा चाहती थी वह सब शिवरानी को देडालीं और जितने तोता, कोकिला, सारिका आदि मधुरवाणी के पक्षी गिरिजा के थे सब साथ कर दिये और सब गिरिजा को देकर बिदा किया गिरिजाके चलने के समय मार्ग में शुभ शकुन हुये तब बाजा बजने लगे और प्रसन्नता की सब बातें दिखाई देनेलगीं और धन द्रव्य बहुत लुटाया गया और हिमाचल और शिवजीकी ओर से जिन २ मनुष्योंको उचित था हाथी घोड़ा आदि धन समेत दियागया हिमाचल ने चलने के समय अपने पुत्र समेत बिनती की कि हम कुछ दूरतक आपके साथ चलेंगे जब कुछ दूरतक गये तो देवताओं ने हिमाचल को बिदा किया हिमाचल यह कहकर कि मुझे तीनों लोक में बड़ाई प्राप्त हुई और सबको प्रणामकर विदा हुये और शिवजी से विनय की कि मुझे आप अपनी भक्ति कृपा कीजिये और बड़ी स्तुति की शिवजीने प्रसन्न होकर हिमाचल को बिदा

किया और हिमाचल के यहां जितने कि बुलाये हुये लोग आये थे वह भी बिदा हुये और विन्ध्यपर्वत ने हिमाचल से कहा कि तुम शिवजी से सम्बन्ध करके हम सबसे श्रेष्ठ हुये जब शिव कैलास में बरात समेत पहुँचे तब हर प्रकार के आनन्द की सामग्री इकट्ठी हुई बाजा बजने लगे और शिवजी की आरती उतारी गई और शुभलग्न पाकर शिव गिरिजाने मन्दिर में प्रवेश किया।

पैंसठवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मन्दिर में प्रवेश करने के उपरान्त सर्व स्त्रियां इकट्ठी होकर दोनों शिव गिरिजा की आरती उतारने लगीं और नाच गाना और फूलों की वर्षा होने लगी और विष्णु और हम सबने दोनोंका पूजन किया और हम सबको ऐसा आनन्द प्राप्त हुआ जैसे गूंगे को वचन और दरिद्री को धन और अन्धे को नेत्र और योगी को योग और रोगी को अमृत प्राप्त होने से बरन इससे कोटि भाग अधिक प्रसन्नता हुई और हम सबने अलग २ एक स्तुति पढ़ी जिससे शिव अति प्रसन्न हुये और सबको उत्तम उत्तम भोजन दिया इसी प्रकार कई दिनतक हम सब कैलास पर्वत पर रहे फिर बिदा होने की आज्ञा मांगकर यह विनय की कि जो हम सबका मनोरथ है वह आप भले प्रकार जानते हैं सो क्रमपूर्वक सब बिदा हुये और शिवजी ने विष्णु और हमसे कहा हमको तुमसे अधिक कोई प्रिय नहीं है तुम्हारे कहने से मैंने गिरिजा के साथ विवाह किया अब तुम अपने लोकको जाओ तुम्हारे सब काम पूर्ण होंगे तारक दैत्य वेग ही यमलोक में जावेगा तुम सब देवताओं को निर्भय करदो और हमारी सेवा में कोई बात न भूलियो यह कह शिवजी हँसे और चुप हो रहे और विष्णु और

हसभी हँसकर बड़े आनन्द से जय जय शिव शम्भू कहते हुये बड़ी स्तुति करके चले बरात के चलेजाने के उपरान्त शिवगण उनकी सेवा करनेलगे शिवजी संसार के पिता और गिरिजा संसार की माता हैं हम उनका शृङ्गार क्या वर्णन करें शिव समान संसार में और कौन सहायक है उन्होंने परब्रह्म होकर संसार के दुःख दूरकरने को विवाह किया कि यह लीला हमारी संसारी जीव कहकर और सुनकर मोक्ष प्राप्तकरें यह शिव गिरिजा का बिवाह अति मङ्गलदायक है जो इसको न सुने वह पशु है इस संसार में मुक्ति मिलनेकी इससे अधिक और कोई युक्ति नहीं कि शिवजी का यश गावे यद्यपि उनका यश अनन्त है पर जितना सुने उसके लिये उसकी भलाई को उतना ही बहुत है जो इस कथा को प्रीतियुक्त सुनेगा वह प्रसन्न रहकर शिवजी के समान होजावेगा और जो इस कथा को दूसरों को सुनावेगा वह भी आनन्द में रहेगा जो थोड़े में भी थोड़ा पढ़ा करेगा वह भी धन्यता के योग्य होगा जो चारों वर्ण इस कथा को पढ़ेंगे वे मुक्ति पावेंगे और उनके सर्वरोग दूर होंगे और अन्त में मुक्ति मिलेगी ।

इति श्रीशिवपुराणे श्रीशिवविलासे तीर्थखण्डे ब्रह्मानारदसंवादे साङ्गापाङ्ग शिवगिरिजाविवाहवर्णनन्नामतृतीयखण्डस्समाप्तः ॥ ३ ॥

ॐ नमः शिवाय।

शिवपुराण भाषा



चतुर्थ खण्ड

पहिला अध्याय।

इतना सुन शौनक ने कहा कि हे सूतजी! शिवजी का विवाह सुन नारदजी ने ब्रह्मा से फिर क्या पूछा सूतजी बोले कि नारद ने ब्रह्माजी से यह प्रश्न किया कि मैंने बहुत कुछ वेदपुराणों में पढ़ा पर मेरे मन की तृष्णा न गई मैं संसार भर में फिरता रहा पर शिव का तत्त्वभेद न मिला फिर विष्णुजी के कहने के अनुसार मैंने आपकी सेवा में पहुँचकर थोड़ासा शिवजी का चरित्र सुना तो मन को उत्तम रीति से पूर्ण धैर्य प्राप्त हुआ और मुझको इस बात का पूरा विश्वास होगया कि शिवजी का चरित्र संसार के लिये बहुत ही आनन्द मङ्गल देनेवाला है और शिव के तप विना संसार में किसी को कुछ भी सुख नहीं मिलता और न किसी के दुःख और रोग नष्ट होते हैं सो अब मुझे यह इच्छा है कि आप मुझसे यह वर्णन करें कि जब शिवजी गिरिजा के साथ विवाह करके कैलास पर्वत पर सुशोभित हुये तो फिर उन्होंने कौन से भक्तों के सुखदायक चरित्र किये और हिमाचलने बिदा होकर कौन २ कार्य किये और तारकदैत्य का वध और कार्त्तवीर्य की उत्पत्ति और त्रिपुरासुर का प्राकट्य आदि सब सुना दीजिये क्योंकि आपसे अधिक तीनों लोक में कोई शैव नहीं है और न आपके बराबर कोई शिवजी के चरित्र का जाननेवाला है यह प्रश्न सुनकर

ब्रह्माजी अति प्रसन्न हुये और शिवजी के प्रेमानन्द में डूब गये थोड़ी देरके पीछे ब्रह्मा ने कहा कि हे पुत्र! तुमको धन्य है और तुम्हारी बुद्धि धन्य है मुझको इस बात का भली भांति विश्वास हुआ कि तुम्हारे मनमें शिवकी स्थिति होगई अब सुनो कि जब सदाशिव गिरिजा को विवाहकर घर लाये तब देवताओं का मनोरथ समझ तारकासुर के वध की इच्छा की अर्थात् हम विष्णु और सब देवता विदा होकर अपने घरों को गये और शिवजी की कृपा का भरोसा रक्खा पर कोई बात प्रकट न हुई तो एक समय सब देवता मुनि आदि एकस्थान पर इकट्ठे हुये और सम्मति करके कहने लगे कि बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी देर हुई और हमारा कार्य सिद्ध न हुआ फिर तेज अर्थात् अग्नि से कहा कि तुम चातुरता से शिवजी के समीप जाकर देखो कि वे क्या कररहे हैं और यद्यपि इतना समय व्यतीत होगया और हमारी सुधि शिवजी ने न ली यह आज्ञा पाकर अग्नि देवता बिदा होकर कपोत का स्वरूप धारणकर शिवजी के निवासस्थान में पहुँचे और विष्णुजी और हम सब देवताओं को साथ लेकर कैलास पर्वत पर गये जोकि सब लोग अति चिन्तित और दुःखी थे और जब शिवजी को वटवृक्ष के नीचे न देखा तो हम सबों ने गणों से पूछा कि महाराज सदाशिवजी कहां हैं गणों ने उत्तर दिया कि वे तो बहुत समय से घरके भीतर गिरिजा के पास हैं बाहर नहीं आये हम क्या जानें कि शिवजी घर के भीतर क्या करते हैं यह सुन विष्णुजी और हम और देवता आदि सदाशिवजी के द्वारपर गये और बहुत ऊंचे शब्द से पुकारे शिवजी शब्द सुन तुरन्त गिरिजा को छोड़ बाहर आये जब हमने उनका दर्शन किया तो स्तुति करने लगे उस समय हमको अनन्त प्रेम ने घेर लिया यहां तक

कि प्रसन्नता से हम सब रोने लगे और कहा कि हम सब आपकी शरण में आये हैं आशा रखते हैं कि आप कृपा करके हमारे दुःख को दूर करें आपको वेद ब्रह्म सगुण और निर्गुण करके कहते हैं आपकी कृपाकटाक्ष से हमारा कार्य सुधरता है हम आपकी महिमा कहां तक वर्णन करें आपकी महिमा नारद, शारद, शेष, वेद कहकर थक जाते हैं और अन्त को अपनी मूर्खता बताते हैं आपकी कृपा से एक मूर्ख मनुष्य भी आपके चरित्र और महिमा वर्णन करसक्ता है जैसे कि सन्त और वेद कहते हैं आप भक्ति और तपके अधीन हैं और दया के समुद्र व सर्वसंसार के स्वामी हैं आप तो निर्गुण और ब्रह्मा विष्णु हर से श्रेष्ठ हैं और गुणनिधि आदि ने आपकी सेवा से जो कुछ पाया वह उदय से अस्ततक प्रसिद्ध है कुछ वर्णन करने की आवश्यकता नहीं हमारी ओर क्यों दयादृष्टि नहीं करते हम आपकी शरण में आये हैं अब हमको बहुत सुख देना चाहिये आप सगुण स्वरूप केवल हम भक्तों के उपकार के लिये धारण करते हैं ऐसी स्तुति शिव की पढ़कर हम और विष्णु सब शिव के आगे शिर झुकाये खड़े रहे।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह देवताओं की बनाई हुई स्तुति शिवजी ने सुनकर प्रसन्नता और हर्ष से हँसकर कहा कि तुम सब जिस कार्य के निमित्त आये हो वह विस्तार से वर्णन करो यह सुन सब देवताओं ने हाथ जोड़ विनय की कि अपना सब विहारानन्द छोड़कर देवताओं का काम पूरा करो शिवजी ने कहा कि अच्छा हमारा वीर्य जाता है जिसको शक्ति हो वहधारण करले विष्णु ने अग्नि से सैन की और शिवजी ने विष्णुजी की इच्छा जानकर वह वीर्य पृथ्वीपर डालदिया

और अग्नि ने देवताओं की आज्ञा पाकर तुरन्त उसको धारण करलिया अग्नि कपोत का शरीर धारणकर अपनी चोंच से वीर्यको निगल गया और अपने घर की ओर उड़ गया हे नारद ! शिवजी की माया धन्य है कि जिसके वश में संसार भर है जब शिवजी के लौटजाने में विलम्ब हुआ तो गिरिजा चिन्तित होकर जहां सब देवता शिवजी के पास खड़े थे आई और इतना क्रोध प्रकट किया कि सब देवता भयभीत हुये और गिरिजा ने होंठ चाब कहा कि हे देवताओ ! तुम सब अपने मतलब के यार हो विन प्रयोजन तुम किसी के मित्र नहीं तुमने अपने प्रयोजन के लिये मुझको बांझ करदिया मुझको और शिवजी को अपने पास बैठाल रक्खा कदाचित् मुझेअप्रसन्न करके अपना मनोरथ पूरा हुआ जानते हो तो यह बात स्वप्नमें भी न होगी और जो कि तुम हमारे विहार के विघ्नकर्ता हुये इससे तुम्हारी सब स्त्रियां बांझ होंगी यह देवताओं को शाप देकर अग्निसे कहा कि हे भाग्यहीन वह्नि ! तू इतना दुष्ट है कि तूने भक्ष्याभक्ष्य का कुछ विचार न किया अब तुम सब चीजें खाया करोगे क्योंकि तुमने शिवजी का वीर्य खा लिया है तुमको बहुत दुःख मिलेगा तूने शिव-जी को नहीं जाना जब यह शाप गिरिजा ने अग्नि को दिया तब सब देवता आदि दुःखी हुये और शिव और पार्वती अन्तः पुर में गये और सब देवता आदि गर्भ धारण किया सो सब अपने उदर को गर्भ से पूरित देख बहुतही लज्जित और दुःखी हुये निदान सब देवता मिलकर शिवजी की शरण में गये और शिवजी की स्तुति करने लगे कि हे देवताओंके देवता दीनजनों के रक्षक ! हमारे ऊपर कृपा करो तुम्हीं तीनों देवता त्रिनेत्र तीनों भुवन के रखनेवाले तीनों वेद हो अब हमको मुक्त करो तुम त्रिमूर्ति तीनों पद तीनों धाम तीनों अग्नि तीनों गुण और

त्रिशूल धारण करनेवाले हो इसी प्रकार बहुतसी स्तुति सुनकर शिवजी प्रकट हुये जिनको देखकर देवता अति प्रसन्न हुये और फिर स्तुति करके बोले कि हमारी सहायता करो और हमारे दुःख मिटावो हम आपके सेवक हैं हमारे प्राण बचाइये अब हमारी लोक में निन्दा होती है कि जबसे हमने गर्भधारण किया है तब से महादुःखी हैं हमारे हृदय जलेजाते हैं यह सुन शिवजी हँसपड़े और कहा कि हे विष्णो और सब देवताओ! तुम तुरन्त वीर्य को मुख के मार्ग से बाहर निकाल दो कि हम प्रसन्न होजावें यह आज्ञा पाकर देवताओं ने तुरन्त वीर्य निकाल दिया जिसका वर्ण स्वर्णवत् मानों सोने का एक पर्वत आकाश तक होगया और देवता ऐसे दुःख से छूटे पर अनल को यह शिव ने आज्ञा न दी और उसको कुछ भी आनन्द न हुआ तब अनल बहुत दुःखी होकर शिवजी की स्तुति करने लगा और महादुःखी होकर कहने लगा कि हे देवताओं के देवता! अब आपको हमारी सहायता करनी चाहिये अब मैं क्या करूं मेरे इस कष्ट को दूर कीजिये और आज्ञा दीजिये कि अब मैं क्या करूं आपके चरण छोड़ कहां जाऊं अब वह उपाय बताइये जिससे यह मेरा दाह दूर हो शिवजीने कहा कि हमारे वीर्यको तुम स्त्रियों को देदो कि तुमको आनन्द मिले अग्नि ने धैर्य धारणकर विनय की कि आपके वीर्य की ज्योति को स्त्रियां क्योंकर धारण कर सकेंगी तब हे नारद! तुमने शिवजी की आज्ञा से उत्तर दिया कि हे वह्नि! जो स्त्रियां माघ मास में आग तापती हों उनके शरीर में तेज को बांट दो यह सुन अग्नि प्रसन्न होकर प्रभात को उठ नदी किनारे आग जलाकर बैठ गया उस समय बहुतसी स्त्रियां स्नान करनेको उस स्थान पर आईं क्योंकि सरदीने उनको बहुत

दुःख दिया और जलती हुई आग देखकर उनको आग तापने की इच्छा उपजी पर अरुन्धती ने समझ कर औरतों को आग तापने से निषेध किया सो अरुन्धती ने बहुतही मना किया पर किसीने न माना और आगके पास बैठकर तापने लगीं तब वह वीर्य धीरे २ निकलकर रोम के मार्गसे स्त्रियों के शरीर में प्रवेश करनेलगा जिससे अग्नि का बोझ हलका हुआ और वह अति प्रसन्न होकर दाह को दूर हुआ देख मग्न होगया और वह स्त्रियां तुरन्त गर्भवती हुईं और दुःखी होकर अपने घरों को गईं वहां ऋषीश्वरों ने यह दशा देखकर इतना क्रोध बढ़ाया कि वे स्त्रियां पक्षियों के समान उड़ने लगीं और अपनी यह अवस्था देख अति दुःखी हो हिमगिरि की पीठ में वीर्य को छोड़ दिया उसका तेज स्वर्णवत् झलकने लगा और फिर उठाकर गङ्गानदी में डाल दिया जब वह वीर्य देवनदी में पड़ा तो नदी कांप कर बहनेसे थम गई और शिवजी के वीर्य को न सह कर दुःखी हो बड़ा नाद करने लगी और उस वीर्य को अपनी लहर के अन्दर लाकर किनारे फेंक दिया उस जगह पर सरपत के बोझ पड़े हुये थे वहीं वीर्य जाकर रुक गया और लड़के के स्वरूप से प्रकट हुआ तब आकाश से जय २ शब्द हुआ उस लड़के का अति सुन्दर स्वरूप मुख नाक और हाथ बहुतही सुडौल और जलती हुई अग्नि के समानवर्ण नख अतिरक्त सुन्दर चरण जिसको देखकर करोड़ों कामदेव लज्जित हो जावें तो उसी समय गिरिजा की दोनों छातियों से दुग्ध की धारा बह निकली जिसको देख शिव और गिरिजा अति प्रसन्न हुये गिरिजा ने शिवजी से कहा कि क्यों यह दूध हमारी छाती से निकला है शिवजी ने मुसकराकर कुछ न कहा ।

तीसरा अध्याय

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उस समय सब देवता, सिद्ध, मुनि और गण आदि इकट्ठे होकर बड़ा आनन्द मनाते हुये फूलों की वर्षा करते कैलास पर पहुँचे अप्सरा नाचती किन्नर गाने बजाने में लगे और गन्धर्वों ने प्रसन्न होकर आनन्द के बाजे बजा दिये इसी प्रकार बड़ी धूमधाम से उत्सव हुआ और तीनों लोक में सबको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और सबके दुःख इकबारगी दूर हो गये यह सब प्रकार के मङ्गल उस लड़के के उत्पन्न होते ही चारों ओर हुये उसी समय गाधि के पुत्र विश्वामित्र जो प्रसिद्ध ब्राह्मण हैं तुरन्त वहां आये सो उन्होंने उस लड़के की स्तुति कर आदर किया वह बालक विश्वामित्र की बनाई हुई स्तुति सुन प्रसन्न हो कहने लगा कि हमारा संस्कार करो आज से तुम हमारे पुरोहित हुये तुम तीनों लोकों के मान के योग्य होगे विश्वामित्र ने विनयपूर्वक कुछ शोचकर कहा कि हम ब्राह्मण के घर नहीं उपजे जो आपका संस्कार करें मैं तो गाधि से जो क्षत्रिय है उपजा हूं और नाम मेरा विश्वामित्र है यह संस्कारादि कार्य करना ब्राह्मणों का धर्म है और उसी के योग्य है और को दुःख होता है अब आप अपना वृत्तान्त कहिये कि तुम बालक रूप धारण किये हुये कौन हो तुम्हारे माता पिता कौन हैं वे दोनों तुमको छोड़कर कहां चले गये क्योंकि हम तुमको अकेला देखते हैं तुम्हारा तेज अद्भुत है आप ब्रह्मचारी या गृहस्थ हैं या तीनों देवताओं में से कोई हैं या आपही ब्रह्मस्वरूप बालरूप से प्रकट हुये हैं हमने ऐसा बालक आजतक नहीं देखा तुम तो उपजतेही बातें करके आनन्द देते हो और अपने संस्कार के लिये मुझे आज्ञा देते हो मुझ पर कृपा करके सच २ कह दो यह सुन लड़के ने

हँसकर कहा कि हे विश्वामित्र ! हम अपना चरित्र तुमसे कहते हैं पर उसको अभी छिपा रखना और पूछने पर भी किसी से न कहना हम गिरिजा और शिव के पुत्र हैं और दैत्यों को मारकर तीनों लोकों को आनन्द देनेवाले हैं फिर अपना प्रताप विस्तार से कह सुनाया और कहा कि हे विश्वामित्र ! तुम ब्रह्मर्षि होकर सब ब्राह्मणों से प्रतिष्ठा पावोगे यहां तक कि ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ भी तुमको 'ब्रह्मर्षि' कहेंगे यह हमारा वर है और अब तुम शिव और गिरिजा की लीला को अप्रमेय समझ कर हमारे संस्कार में विचार और विलम्ब मत करो विश्वामित्र ने तुरन्त आज्ञा मानकर संस्कार किया तब शिवजी के पुत्र ने प्रसन्न होकर विश्वामित्र को वरदान देकर अपना पुरोहित किया उसी समय अग्नि ने भी तुरन्त वहां पहुँच और शिवजी के पुत्र को देख बड़ा आनन्द माना और लड़के को प्रणाम किया और विश्वामित्र ने जो बातें कहीं उनका उत्तर ठीक २ उस बालक से पाया और उस बालक ने अपनी सब कथा अनल से वर्णन की और अग्नि और विश्वामित्र उस लड़के में पूर्ण बल और प्रताप देखकर बहुत प्रसन्न हुये और अग्नि ने अपना लड़का समझकर उसको अपनी गोद में उठाकर छाती से लिपटा लिया और मुख चूमा और अति प्रीति से उस लड़के को अपना पुत्र माना और अति प्रसन्न होकर बहुत से अपने शस्त्र कृपा किये और शिवजी का पूर्णतेज उस बालक में स्थापन करके उसे असंख्य वरदान दिये और एक सांगि अर्थात् शक्ति कृपा की और अपना हाथ उसके शिर पर फेरा तब लड़के ने कहा कि अब आप दोनों जावें क्योंकि अभी हमको बहुत से चरित्र करने हैं यह कह दोनों को विदाकर आप अनल की दी हुई शक्ति हाथ में ले श्वेत गिरिपर चढ़ गये और अति

भयानक शब्द से नाद किया कि मानों प्रलय हुआ चाहती है और फिर देवताओं के मनोरथ पूर्ण होने के लिये अपनी शक्ति पर्वत के शृङ्गपर मारी कि तीनोंलोकों में हाहाकार होगया और पर्वत फटकर गिरपड़ा और उसके दो टूक होगये और बड़ाही शब्द हुआ उस समय महावीर दशपद्म राक्षस कालवश हुये जो पहिले वहां रहते थे और उतने उनके मारने को चले धरती कांप उठी तीनों लोक हिलगये और देवता और मुनि चिन्ताकर कहने लगे कि यह क्या होता है पर कुछ भेद न समझे और इन्द्रादि देवता देखने के लिये चले देखा कि गुह अर्थात् वही लड़का पर्वत पर खड़ा है और उस पर्वत ने मनुष्यों के समान अपना रूप बनाकर इन्द्र से भेंट की और हाथ जोड़ इन्द्र से विनय किया कि हे इन्द्र ! आप तीनोंलोक के राजा हैं सृष्टि की पालना आपका धर्म है इस समय मुझको बड़ा दुःख हुआ है इस बालक ने मुझको शक्ति मारकर ऐसा भयानक शब्द किया कि सर्वजीवों को दुःख पहुँचा धरती कांप उठी और सब पर्वत वन नदी भी कांप उठे असंख्य जीव मर गये यह सब इस बालक ने किया है जो खड़ा है नहीं मालूम यह कौन और किसका पुत्र है इसने इतना दुःख मुझे शत्रुता से वृथा दिया है हे इन्द्र ! आप इसको जल्दी से वध कर डालें नहीं तो यह प्रलय ही कर डालेगा यह सुन इन्द्रने उस लड़के पर बड़ा क्रोध किया और कुछ छिपा हुआ भेद न जानकर उस बालक के मार डालने की दृढ़ इच्छा की और शिवजी की लीला से इन्द्र भी चूका और इन्द्र ने धावा करके वज्र उसकी दाहिनी कांख में मारा कि तुरन्त उस स्थान से एक मनुष्य उपजा जो बल पराक्रम में बराबर था जिसका नाम साख्य रक्खा गया और वह सबका मनोरथ पूरा करता है और साख्य ने उपजते

ही एक बड़ा भयानक शब्द किया कि इन्द्र ने क्रोधित होकर अपना वज्र बाईं कांख में मार दिया कि एक दूसरा मनुष्य उपजा जिसको विसाष्य कहते हैं और उपजते ही वह भी नाद करने लगा इन्द्र ने क्रोधित होकर उस बालक के हृदय में अपना वज्र मारा पर कुछ फलदायक न हुआ और एक मनुष्य और प्रकट होकर खड़ा होगया उसका नाम नैगमेय कहते हैं वे तीनों पहिले बालक के सहायक होगये और चारो प्रलयकाल की अग्नि के समान प्रकट हुये और उस बालक ने अपने तीनों गणों समेत इन्द्र पर धावा किया इन्द्र उनका प्रलय करने-वाला तेज उनमें देख निर्बल हो कांप उठा और हाथ जोड़ उनकी शरण में आया और अपने सब शस्त्र फेंक दण्डवत् की और जो इन्द्र के साथ सेना थी उसने भी आदर और मान करने से कोई बात उठा न रक्खी उस बालक ने इन्द्र की यह दशा देख कुछ ढाढ़स पाया और इन्द्र को अभय किया इन्द्र निर्भय होकर प्रसन्न हुये और सब देवताओं ने हाथ जोड़ स्तुति की और कहा कि तुम बालक नहीं हो वरन् तुम तो ब्रह्म हो हमने तुम्हारा प्रताप नहीं जाना और अहंकार से यह दशा हुई अब तुमको न पहिंचान कर ग्लानिपूर्वक देखा कृपा करके हमारा सब अपराध क्षमा करदो हम आपकी शरण में हैं हमको अपनी शरण में लीजिये हमको इस बात का निश्चय है कि तुम ब्रह्मरूप हो किसी भक्त पर प्रसन्न होकर तुमने अवतार धारा है अब सच कहिये कि आप कौन और किसके पुत्र और क्यों उपजे तब बालक ने कहा कि हे इन्द्र ! वेगही सिधारो और प्रसन्नतापूर्वक अपना राज्य करो यह कह बिदा किया और कुछ भी भेद न बताया और इन्द्र अपने राज्य में जा पहुँचे।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वही स्त्रियां जिनका हम पहिले वर्णन कर चुके हैं उसी समय स्नान के निमित्त उस नदी के तट पर आ पहुँचीं और सुन्दर बालक देख उस बालक के निकट चली आईं और बालक को अति सुन्दर पाकर हर स्त्री का मन चाहा कि इसको लिया चाहिये और सबने उठा लेने की इच्छा की और कहने लगीं कि यह बालक मेरा है हम इसको लेवेंगी हमारे गर्भ से उपजा है और परस्पर झगड़ने लगीं सो बालक ने उनके झगड़े को इस प्रकार से दूर किया कि सबकी छातियों से दूध पिया इससे वह माता के समान हो गईं और उसके असंख्य नाम रक्खे गये पार्वतीनन्दन १ सेनानी २ पावकभू ३ स्कन्द ४ गङ्गासुत ५ शरजन्मा ६ षरामुख ७ गुह ८ आदि फिर उन स्त्रियों ने बालक को अपने घर ले जाकर बड़ा उत्सव मनाया और वेद के अनुसार कर्म किये वेद पढ़ाया और उनके जन्म का महीना कार्त्तिक की छठी थी और शुभ लग्न और मुहूर्त में उन्होंने जन्म लिया था और स्कन्द ने अपनी माताओं को विचित्र चरित्र दिखलाये एक दिन ब्रह्मा विष्णु और इन्द्र आदि सब इन्द्र की सभा में विराजमान थे कि हे नारद! तुमने उचित समय जान कर शिव के ध्यान के उपरान्त स्कन्द के जन्म का हाल वर्णन किया देवता बोले कि मालूम होता है कि शिव ने हम पर कृपा की कि अपने लड़के को उपजाया अब हमारे सब काम पूरे हो गये और हमारी प्रसन्नता का समय आया है यह बातें हो रही थीं कि स्कन्द अपने लड़कों के साथ खेलते २ उसी स्थान पर पहुँचे सो ऐसा तेजवान् बालक देख मुनि और देवताओं ने पूछा कि यह कौन और किसका लड़का है और कहने लगे कि इसको बुलाकर पूछना चाहिये इस सुन्दर स्वरूप

से तृप्त होना उचित है उन्होंने लड़के को बुलाकर कहा कि तुम कौन हो स्कन्द बोले कि हम लड़के के स्वरूप से शिवजी हैं शिवजी वही हैं जो लोक के हित चाहनेवाले हैं और जिनका तुम ध्यान करते हो वही शिवजी का रूप हम हैं जिनको योगी-जन ध्यान करके भी नहीं पाते हमको लोक में गुह कहते हैं विष्णुजी ने कुछ विचार कर कहा कि जो तुम शिवजी हो तो अपना स्वरूप दिखावो कि हमको इस बात का निश्चय होवे कि तुम वास्तव में शिवजी हो यह सुन कर स्कन्द ने अपने भयानक स्वरूप में विराट्रूप दिखाया कि जिसमें करोड़ों ब्रह्माण्ड इन्द्र उपेन्द्र वर्तमान थे सो सर्व सभा हर रोम में ब्रह्माण्ड देखकर कांप उठी और घबड़ा कर विष्णुजी और हमने शरण २ पुकारी और कहा कि वास्तव में आप शिवजी का रूप हैं अब आप अपना वही रूप धारण कर लीजिये सो स्कन्द ने मान लिया और वही रूप धारा फिर विष्णुजीने हाथ जोड़ स्तुति पढ़ी और कहा कि हे षण्मुख ! शिव गिरिजा के पुत्र तुम शिवजी का रूपही हो अब हम पर कृपा करो कि आज हमने अपना स्वामी पाया तुमतो अनादि निर्गुण और सगुण स्वरूप हो इस समय तुमने स्कन्द अवतार धारण किया इस प्रकार विष्णु ने बड़ी स्तुतिकर स्कन्द को विमान पर चढ़ाय हम और देवताओं समेत ले चले और शिवजी के मन्दिर की ओर हुये हर एक के मुखसे जय २ शब्द निकलता था और सब प्रकार के बाजे बजते थे कोई दान करता कोई गाना गाता इस प्रकार से आनन्द मनाते हुये कैलास में पहुँचे और स्कन्द को शिवजी के पास लेजाकर खड़ा किया तब शिवजी गिरिजा को बड़ा आनन्द मिला और गिरिजा के स्तनोंसे दूध निकलपड़ा और वही दशा हो गई जैसी कि पुत्र के उपजने में होती है शिवजीने पूछा कि

यह किसका पुत्र है तब हे नारदजी ! तुमने यह समझकर कि शिवजी यह चरित्र लीला के निमित्त करते हैं उत्तर देकर आरम्भ से अन्ततक सब समाचार कह सुनाया यह सुन शिवजी और पार्वतीजी ने बहुत प्यार करके लड़के को लिया और गोद में लेकर दूध पिलाया और दोनों शिवजी और पार्वतीजी बहुतही प्रसन्न हुये और सब शिवजीके गण लड़के को गोद में लिये हुये देखकर प्रसन्न होगये और स्कन्द को प्रणाम किया और वीरभद्र भैरव और नन्दी ने सेवकों के समान प्रणाम किया और विष्णु और हम और सब देवताओं ने माथा झुकाकर आदर दिया तब विष्णु और हम और मुख्य २ देवताओं ने शिवजी गिरिजा की सेवा की पहिले विष्णुजी ने स्कन्द का नीराजन किया फिर लक्ष्मी और फिर हमने अपनी स्त्री सहित फिर इन्द्र ने शची समेत फिर सब देवता बराबर नीराजन स्कन्दजी का करते गये तब बड़ा उत्सव हुआ मुनीश्वर अपना मनोरथ पाते हुये जय जय करने लगे बाजे बजे और सर्व प्रकार के आनन्द की सामग्री में कोई बात शेष न रही और स्कन्द शिवजी की गोद में खेलने लगे और वासुकि नाग का गला अपने दोनों हाथों से ज़ोर से पकड़ उसके साथ खेलने लगे और वासुकि नाग स्कन्द के चरणों पर लोटता था शिवजी ने स्कन्दजी का यह चरित्र देखकर बहुत हँसकर गिरिजा की ओर देख दिया गिरिजा ने भी हँस दिया तब विष्णु और सब देवताओं ने विनती की ।

पांचवां अध्याय ।

देवतालोग बोले कि सबके स्वामी सबके दुःख दूर करनेवाले तुम निर्भय करनेवाली युक्ति धारण करो कि देवताओं की सब भीति दूर होजावे आपकी केवल कृपा कटाक्षही

देवताओं के लिये बहुत है हम आपकी शरण में आये हैं हमपर कृपा कीजिये हमको अपना सेवक जान हमपर कृपा करते रहिये और संसार में जो आपका यश गाते हैं वह कुछ दुःख नहीं पाते और चाहे कोई मनुष्य करोड़ों युक्ति करे पर विना आपकी भक्ति के मुक्ति प्राप्त नहीं होती तुमने ब्रह्मरूप होकर हम सेवकों के उपकार के निमित्त अवतार धारण किया और विष्णु और ब्रह्मा और सनकादिक भी आपका बहुतही ध्यान करते हैं और आपको नहीं पाते सो हमारी भाग्य धन्य है कि हम आपको कैलास पर्वत में शरीर धारे आंखों से देख रहे हैं जो इस समय आपने अपना रूप शिशुवत् बनाया है उसको भी देखकर हमको कितनी प्रसन्नता प्राप्त होती है आपकी गति आपही जानते हैं इसी तरह देवताओं ने अति नम्रता से बहुतही स्तुति की फिर विष्णु से विनय की कि हे शिवजी हमारे आनन्द देने के लिये स्कन्द को आज्ञा दीजिये कि तारक दैत्य का वध करें क्योंकि इनका अवतार इसीलिये हुआ है शिवजी ने हँसकर कहा कि हमने तो इसीलिये विवाह किया था तुम सब जाकर अपना अपना काम करो फिर शिवजी और गिरिजा ने अच्छी तरह से स्कन्द का प्यार किया और अति प्रसन्न हुये फिर देवताओं ने स्कन्द के लिये शिवकी आज्ञा लेकर पर्वत के निकट त्वष्टापुर में एक उत्तमोत्तम मन्दिर बनाया जिसकी सुन्दरता वर्णन नहीं हो सक्ती उस मन्दिर में एक स्थान को अच्छी चीज़ों से सजाया उस मन्दिर के बहुत से खम्भे और झालर आदि रत्न और मोतियों से बनाये गये थे जब वह मन्दिर तैयार होगया तब विष्णु ने हमारे समेत सब मुनियों को बुलाकर उस मन्दिर में स्कन्द का अभिषेक किया और सिंहासन पर बैठाला और

विष्णु और हम सबोंने उनको संसारभर का और अपना स्वामी ठहराकर राजतिलक किया और भेंट दी और अच्छे प्रकार सेवा कर शस्त्र भी भेंट दिये तब शिव और गिरिजा भी आगये और ऐसी देवताओं की सभा देख प्रसन्न हुये और अपनी सब सेना स्कन्द को कृपा की और पार्वती ने एक वस्त्र सब अस्त्रों पर पहिननेवाला ऐसा कृपा किया जो शत्रुओं के युद्ध में सर्वप्रकार के दुःखों से बचा रक्खे और विष्णु ने वैजयन्तीमाला देकर एक फूलों की माला अपने हाथ से बनाकर स्कन्द के कण्ठ में डालदी और हमने भी विष्णु के समान स्तुति कर शरीर की रक्षा के निमित्त कई चीजें दीं और वरुण ने सवारी के लिये उनको कनकेता नाम बकरा दिया और मित्रावरुण ने चढ़ने को गरुड़ दिया और अरुण ने ताम्रचूड़ शस्त्र दिया उस समय चारों ओर से आनन्द दिखाई देता था हम और विष्णु और देवता आदि स्कन्द की स्तुति में लगे और सब स्कन्द के चरणों पर गिरपड़े।

छठवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसे समय में एक ब्राह्मण जिसका नाम नारद था यज्ञ करता था वह अजमेध यज्ञ था उसको एक बकरे की आवश्यकता थी कि वह यज्ञ में बलि दे तथाच कनकेता स्कन्द का बकरा जो वरुण ने दिया था वह स्कन्द की इच्छा जानकर नारद ब्राह्मण की ओर भाग गया और नारद ने उस बकरेको हर प्रकार से योग्य समझ पकड़ लिया और उसने यज्ञ की सब सामग्री इकट्ठी की संयोग से वह ब्राह्मण किसी दूसरे ग्राम में किसी कार्य के निमित्त गया बकरा ब्राह्मण के जानेके उपरान्त मंच उखाड़कर अपने घर भाग गया और सातों द्वीपों की पृथ्वी को जीतकर पृथ्वी के नीचे

चला और शेषलोक पर्यन्त पाताल को भी जीत लिया और फिर ऊपर के लोक को चला प्रथम गले में रस्सी बाँधे हुये स्वर्ग को गया और आकाश को भी जीत लिया और सर्व ब्रह्माण्ड पर विजय पाकर विष्णुपुरी में पहुँचा वहां खलबली पड़ गई और वह बकरा बहुत ही विवश हो गया जब नारद ब्राह्मण घर आया देखा कि रस्सी बँधी हुई है पर वहां बकरा नहीं है तो आश्चर्य में होकर पूछने लगा सबने उत्तर दिया कि हमने उसे जाते नहीं देखा न जानिये वह बकरा था या क्या था क्योंकि उसके शरीर में बड़ा तेज दिखाई देता था मानो वह अग्निरूप था नारद ब्राह्मण अति चिन्तित हुआ और अच्छे बुद्धिमान् पण्डितों को बुला कर सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि आप लोगों की क्या मति है क्योंकि मेरा सब परिश्रम नष्ट हो गया मैं अब क्या करूं सब ब्राह्मण यह चरित्र स्कन्द का समझ कर कहने लगे कि तारक दैत्य के वध के लिये स्कन्द का अवतार हुआ है और देवताओं ने अपने २ शस्त्र दिये हैं तुमको उचित है कि वहां जाकर स्कन्द से अपना वृत्तान्त वर्णन करो तथाच नारद चल कर स्कन्द के द्वारे पहुँचा और द्वारपालों से कहा कि तुम स्कन्द से कहो कि एक ब्राह्मण नारद नामी द्वार पर खड़ा है द्वारपाल बोला कि कहो तुम्हारा क्या मनोरथ है तब नारद ने सब वृत्तान्त वर्णन किया द्वारपाल ने समय पाकर स्कन्द से बिनती की कि नारद ब्राह्मण हठ से द्वार पर आपके दर्शन के लिये खड़ा हुआ है स्कन्द हँस कर बोले कि नारद हमारा भक्त है उसे भीतर लावो नारद ने आकर और प्रणामकर वेदके अनुसार स्तुति की और विनयकी कि जो बकरा मैं यज्ञके निमित्त लाया था वह भाग गया है तुम्हारे राज्य में रह-कर हमारा यज्ञ रह जावे तो आश्चर्य की बात है मेरे इस दुःखको

दूर कीजिये नारद ब्राह्मण के ये वचन सुनकर स्कन्द ने अपने वीरबाहु गण को बुलाया और कहा कि नारद के बकरे को ढूंढ़ दो जहां कहीं तुमको बकरा मिले पकड़कर तुरन्त लावो वीरबाहु यह आज्ञा पाकर अपनी सेना सहित वेगसे चला सो उसने उस बकरे को तीनों भुवन और नीचे के लोक में ढूंढ़ते हुये विष्णुलोक में उत्पात मचाते पाया सो वीरबाहु ने उसके सींगों को पकड़ कर घसीटते हुये स्कन्द को सौंपा स्कन्द हँसकर बकरे पर चढ़े और अपने वाहन के बलके दिखाने को उसको इतनी सामर्थ्य दी कि मन के समान बे परिश्रम तीनों भुवन में फिरा अर्थात् एक मुहूर्त्त भर में तीनों लोकों में घूमकर लौट आया जब घर पहुँचे तो स्कन्द प्रसन्न होकर वाहन से उतर भीतर गये तब नारद ब्राह्मण बोला कि महाराज ! हमारे बकरे को दे दीजिये हमारे यज्ञ का समय आगया है स्कन्द बोले कि यह बकरा बलि के योग्य नहीं है क्योंकि हमारे चढ़ने के लिये यही है जो फल तुम यज्ञ करने से चाहते हो वह फल हमने तुमको यज्ञ विना देदिया यह सुनकर नारद ब्राह्मण हाथ जोड़ स्तुति करने लगा और स्कन्दजी का यश गाता अपने घर चलागया और देवता और मुनि आदिने स्कन्दकी स्तुति करने के उपरान्त यह विनय की कि हमारे ऊपर जो दुःख है उसको दूर करो स्कन्द ने हँसकर कहा कि हे देवताओ ! तुम निश्चिन्त रहकर आनन्द करते रहो जिसने तुमको इतना दुःख दिया है उसको अपने गणोंसमेत जाकर वध करेंगे और एक निमेष में ही दैत्यों की सेना मारडालेंगे और हम तुमको हरप्रकार से आनन्द देंगे तुमने जो शिवजी की सेवा की है उसका फल हम देवेंगे और जो कुछ कि हुआ है वह सब शिवजी की लीला जानो वे सत्त्व रज तम तीनों

गुण धारण करके असंख्य लीला करते हैं जब रजोगुण उपजता है तब दैत्य अधिक होजाते हैं और राक्षस तमोगुण से बढ़ते हैं और देवता और मुनि सतोगुण से अधिक होजाते हैं वे अपने २ समय में अपनी २ शक्ति उपजाते हैं अब सतोगुण उदय होता है हर प्रकार से असुरों का नाश होगा यह जानकर तुम सब प्रसन्न रहो और शिवजी अपने भक्तों को बड़ा आनन्द देनेवाले हैं और दुष्टों के लिये वे बड़े भयानक हैं सुनकर सब देवता बहुत प्रसन्न होकर जय जय कहने लगे और स्कन्द की स्तुति की ।

सातवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! स्कन्द से यह वचन सुनकर विष्णुने देवताओं सहित कहा कि हे स्कन्द ! आप शिवजी के पुत्र बरन आप शिवजी ही हैं और असुरों के वन के लिये बड़वाग्नि के समान हो और तुममें और तुम्हारे पिता में कुछ अन्तर नहीं है तुम परब्रह्म हो इसी प्रकार बहुतसी स्तुति की उस समय गिरिजा गङ्गा वह्नि और मुनिपत्नियां आदि स्कन्द की माता आकर और अपने पुत्र का इतना प्रभाव देखकर परस्पर झगड़ने लगीं और सब उसको अपना २ पुत्र वर्णन करने लगीं तब हे नारद ! तुमने जाकर सबको समझाया और तुमने शिवजी की इच्छा से स्कन्द की उत्पत्ति का ठीक २ वृत्तान्त वर्णन करदिया और कहा कि यह शिवजी व गिरिजा के पुत्र हैं इन्होंने देवताओं के मनोरथ पूरे करने को अवतार लिया है यह सुन गिरिजा के सिवाय और सब दुःखी हुईं तब तो प्रसन्न होकर स्कन्द ने गङ्गा से कहा कि तुम तो संसार की माता हो और शिवजी की स्त्री और इसी प्रकार से सबको समझा दिया और फिर विष्णुजी और ब्रह्माजी से

कहा कि हम दैत्यों को एक क्षण भर में नाश कर देंगे कुछ संशय मत करो हम इसी कार्य के लिये उपजे हैं हमने आप दैत्यों को अपना बल देकर इतनी ऊँची पदवी पर पहुँचाया पर अब उनको अवश्य ही मार डालेंगे क्योंकि अब वे वेद के विरुद्ध कर्म करने लगे अब तुम तत्पर होजावो और शिवजी की सेवा करो जो काम या उत्सव करो उसमें शिवजी की जय प्रसन्न होकर बोलते रहो यह आज्ञा पाकर एकबारगी सम्पूर्ण देवता आदि शिवजी की जय बोल उठे और सब देवता आदि सेनासहित सजकर स्कन्द के साथ चले और शिवजी गिरिजा और गणों को साथ लेकर कैलास को गये उस समय तारक ने यह सुनकर और देवताओं के सब उपाय का परिणाम जान॰ कर बड़े क्रोध से देवताओं पर धावा किया और चतुरङ्गिणी सेना सजाकर करोड़ों फ़ौज साथ लिये हुये चला और युद्ध के बाजे बजने लगे तब हे नारद ! तुमने तारक के पास जाकर कहा कि अब तुम्हारे लिये बड़ी आपदा आ पहुँची है क्योंकि देवता आदि ने शिवजी की सेवा करके तुम्हारे मार डालने का उपाय किया है और सब वृत्तान्त आरम्भ से अन्ततक कहकर सुनाया कि शिवजी को कल्पवृक्षवत् समझो वे सबको एकही नेत्र से देखते हैं और भक्ति सेवा के आधीन रहते हैं इसलिये तुमको उचित है तुमभी उपाय करो और उसके पीछे देवताओं से युद्ध करो हमारा वचन झूठ नहीं होता जो तुम विजय चाहते हो तो हमारी मति मानो जो हमारी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा इसी समय अवश्य नाश हो जावेगा यह बात तारकासुर ने नारद की मृत्युवश न मानी और हँसकर नारद से कहा कि तुम विष्णुजी के पास जाकर कह दो कि अब तुम जहां तक वीरता करसक्के हो करो कुछ किसी प्रकार की कमी न

करना और इस दूध पीते बच्चे को अपना अगुवा करके लड़ाई किया चाहते हो जान पड़ता है कि तुम इस युक्ति से मरा चाहते हो क्योंकि ऐसी युक्ति से तुम्हारा कार्य न होगा तुम्हारी वीरता हमने कई बेर देखी है तुम पराया भरोसा करते हो सो और के बल से विजय नहीं मिलती क्योंकि एक मुचुकुन्द के बल से तुमने चाहा था कि हमपर प्रबल होजावें सो हमने भी उसकी वीरता देखली है और सब देवताओंको उसके समेत बन्दि में डाल दिया अब तुम एक छोटे लड़के को साथ लेकर बड़ा युद्ध किया चाहते हो सो ऐसी बुद्धि की हीनता के कारण तुम सब पुत्र सहित मारे जावोगे तुमको दिक्पतिसमेत वध करके त्रिभुवन का राज्य निष्कण्टक होकर करूँगा हे नारद! तुमने यह बात सुनकर तारक को क्रोधित होकर उत्तर दिया कि हे तारक! अहंकार बड़ाही दुःख देनेवाला है जिस मुचुकुन्द का तुमने वर्णन किया वह शिवजी का भक्त है और शिवजी उसके सहायक हैं और जिसके ऊपर शिवजी कृपा करते हैं वह देवताओं मुनीश्वरों और मनुष्यों से अधिक शक्ति रखता है और जिसको तुम दूध पीनेवाला बालक कहते हो वह तो प्रलय करनेवाला शिवरूप है तारक ने क्रोधित होकर फिर कहा कि तुमको वीरों का बल क्या मालूम है तुम वहां जावो जहां से यह बातें सीखकर आये हो हेनारद! तुम तुरन्त तारक की सभासे उठकर हमारे यहां आये और हम और विष्णुजी से यह सब समाचार कहा और यह भी कहा कि यह बालक तारकासुर को विजय करेगा हमारा यह वचन सत्य है कि यह शिवजी का लड़का तीनोंलोक में निर्भय है हे नारद! तुम्हारे इस वचन को हम सब सुनकर अति प्रसन्न हुये और युद्ध की इच्छा से शिवजी का ध्यानकर उठ खड़े हुये और स्कन्द को सेनापति

बनाकर इन्द्र के हाथी पर चढ़ाया और सब लोकपाल इकट्ठे हुये युद्ध के बाजे बजने लगे अर्थात् भेरी, दुन्दुभी, मृदङ्ग, वीणा, बीन और गाना नाच होने लगा और अति प्रसन्नता से बड़ा आनन्द छागया स्कन्द इन्द्र को हाथी देकर आप विमान पर आरूढ़ हुये और चारों ओर से शिवजी के सुत का जय यह शब्द ऊंचा हुआ और वरुण, इन्द्र, अनल, यमराज, कुबेर, ईशान आदि आठों दिक्पति अपनी सेनासहित युद्ध के आनन्द में तत्पर होगये और विष्णुजी शिवजी का ध्यान करके महा आनन्द को प्राप्त हुये उनकी सेना का हम वर्णन नहीं कर सक्ते वे तो तीनों भुवन के स्वामी हैं फिर स्कन्द को सबसे आगे करके यह सेना चली और स्कन्द पर्वत से उतरकर अन्तर्वेद में स्थित हुये और उसका मध्य भाग जो हरविनया के नाम से प्रसिद्ध है उसको युद्धस्थल ठहराकर तारकासुर को सन्देशा भेजा।

आठवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! तारकासुर अच्छे विमान में छत्र चमर होते हुये आरूढ़ हुआ और सेनासहित युद्धस्थल में पहुँचा और दोनों सेनाएँ भी अन्तर्वेद में पहुँचीं जिनको तृणवत् मृत्यु भासती थी दोनों ओर से गढ़ी बनाई गई एक हाथियों की पंक्ति दूसरी घोड़ोंकी तीसरी रथोंकी चौथी प्यादोंकी क्रमसे सजाई गई और दोनों ओर के वीर सांग, शूल, फरसा, पाश, कृपाण, भिन्दिपाल, तोमर, मुद्गर, चक्र, भुशुण्डी, नाराच, हथियार सजाकर युद्धस्थल में अपनी वीरता दिखाना चाहते थे नाना प्रकार के बाजे बजने लगे और प्रशंसा करने लगे निदान इसी समय में दोनों ओर के भटों ने युद्ध बड़े वेग से रचा और देवता और दैत्यों का घोर युद्ध हुआ और दोनों ओर की

चतुरङ्गिणी सेना नष्ट हुई यहां तक कि निमेष में यह युद्धस्थल भटों के सब शरीरों से भरकर भयानक होगया बहुतसे वीर पृथ्वी पर गिरकर मार मार का शब्द उच्चारण करते थे कोई तलवार से घायल और मुद्गर और गदा से मूर्च्छित और कइयों के हृदय में पाश ने शरीर भरके खण्ड २ करडाले कई कबन्धरूप बन शीशरहित युद्धस्थान में नाचते और खेलते लहू की नदी बह चली भूत, प्रेत, पिशाचादि ने तृप्त होकर लहू पिया और गीध, कौआ, चील आदि ने रुचिपूर्वक मांस खाया रक्त पिया और बेताल ने आकर हाथियों के शिर अपने शिरोंपर रक्खे इसी प्रकार पहिले धीरे २ देवता और दैत्य मरे पर कुछ समय के उपरान्त युद्धस्थल प्रलयरूप ही भासने लगा तारक आप इन्द्र से भिड़ा और अग्नि संह्लाद परस्पर लड़े यमराज के साथ जम्भ ने युद्ध रचा और निर्ऋति के साथ सम्बल पवन के साथ पवन और धनपति के साथ वृहत्सेन और वननाद उशना के साथ सुना सूर्य के साथ सुलभ चन्द्रमा के साथ लड़े और इन्होंने घोर युद्ध रचा और दोनों अपनी २ विजय चाहते थे पर कोई परास्त न हुआ और युद्धस्थल उन वृक्षों के समान जो अग्नि से जलजाते हैं देखने में भयानक भासता था तारकासुर ने इन्द्र के हृदय में सांगी मारी जिससे इन्द्र हाथी पर से धरती पर गिर पड़ा इसी प्रकार और दिक्पति भी दैत्यों से हारकर भाग चले और कोई भी युद्ध में दैत्यों के सम्मुख खड़ा न रहसका यह पराजय देवताओं की देख मुचुकुन्द ने विचार किया कि मुझे देवताओं की सहायता करना उचित है मैं शिवोपासक हूं और मेरे सहायक शिवजी हैं यह शोच तारक दैत्य के सम्मुख आया और दोनों युद्ध करते रहे कोई न हारा निदान मुचुकुन्द ने असि हाथ में

लेकर तारकदैत्य के हृदय में मारी तारक ने हँसकर कहा कि तुम मनुष्य हो हमको तुम्हारे साथ युद्ध करने में बहुत लज्जा आती है बड़ा खेद है कि जो शस्त्र तुमने चलाया उसने कुछ भी हमारे शरीर पर फल न किया मुचुकुन्द बोले कि मैं शिवजी की कृपासे अब तुझको जीता नहीं छोड़ता और सम्मुख खड़ा हुआ ऐसा कौन दैत्य है जो मेरे हथियारों को हँसे यह कह तारक के एक असि मारी तारक के अभी वह लगी न थी कि उसने तुरन्त सांगी मारकर मुचुकुन्द को घायल कर पृथ्वीपर लिटादिया मुचुकुन्द ने पृथ्वी से उठ अति क्रोधित हो तारक के वध का विचार कर अपने धनुष को उठा लिया और ब्रह्मास्त्र चढ़ाया उस समय हे नारद! तुमने मुचुकुन्द को मना किया कि यह तुम्हारे हाथ से नहीं मरेगा मनुष्य के हाथ से इसकी मृत्यु नहीं है तुम्हारा क्रोध वृथा है इसको केवल स्कन्द मारेंगे तुम सब चुप हो रहो स्कन्दजी का चरित्र देखो जिस जगह कुछ अपना वश न चले वहां चुप रहना उत्तम है यह कह तुम देवताओं समेत स्कन्दजी की सेवा में पहुँचे उनकी स्तुति और पूजा करने लगे और बाजे बजने लगे उत्सव की सब सामग्री तैयार हुई जब कि देवताओं को ऐसा आनन्द करते हुये दैत्यों ने देखा तो महा कोपित हुये और बड़ा नादकर बाणों की वर्षा करने लगे और वीरभद्र महा क्रोध कर युद्ध स्थान में आये।

नवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वीरभद्र अपने गणों को साथ लिये हुये युद्ध करने लगे और दोनों ओर से बड़ी चढ़ाई हुई और दोनों ओर के नाना प्रकार के शस्त्र चलाये गये और वीरभद्र ने क्रोध में त्रिशूल को हाथ में लिया और इकबारगी

झपट कर त्रिशूल को तारक के शरीर में मारकर धरती पर गिरा दिया तारक क्षणमात्र के उपरान्त चैतन्य हुआ और वीरभद्र को सांगी से मारा और वीरभद्र ने फिर तारक पर त्रिशूल चलाया इसी प्रकार बहुत बेर दोनों ओर से शस्त्र चलते रहे और दैत्य और देवता आदि सब पीछे खड़े रहे जब बहुत समय तक दोनों में कोई परास्त न हुआ तब हे नारद! तुमने जाकर वीरभद्र से कहा कि हमारी बात मानकर लड़ाई को छोड़ दो यह तुम्हारे हाथ से नहीं मरेगा तारक बड़ा पराक्रमी वीर है जब आप शिव इसके साथ युद्ध करेंगे तब यह मरेगा वीरभद्र ने तुमसे क्रोधित होकर कहा कि तुम युद्ध और वीरता की बातें क्या जानते हो तुम तो केवल तप करना जानते हो तुमको वीरों का वृत्तान्त सुनाते हैं उनके चार धर्म होते हैं पहिले जो स्वामी विना युद्ध करते हैं और अपने प्राण का लोभ न करके भलीभांति लड़ते हैं वह प्रथम प्रकार से वीरभद्र हैं दूसरे जो स्वामी के साथ युद्ध स्थान में संसार की लज्जा से मर जाते हैं वे दूसरे प्रकार के हैं उनको शूर कहते हैं तीसरे जो अपने स्वामी के साथ युद्ध में से भागकर चले जाते हैं वे क्रूर हैं उनको नरक मिलता है और चौथे वे जो निकम्मे होकर घर में बैठे हैं और उनका स्वामी युद्ध में मारा जावे वे कायर हैं उनको कहीं सुख नहीं मिलता लोक में तो निन्दा और परलोक में एक कल्प पर्यन्त नरक में पड़े रहते हैं इस समय मैं सत्य २ कहता हूं कि जो शिवजी मेरे पास आकर मुझको तारक के वध से रोकें तो लाचारी है नहीं तो आज मैं पृथ्वी को विना तारक के कर दूंगा यह कह वीरभद्र ने तारक के साथ युद्ध रच त्रिशूल चलाया और दोनों लड़ने लगे और दोनों ओर की सेना भी परस्पर लड़ने लगी और दैत्यों को देवताओं ने बड़ी

वीरता से परास्त किया दैत्य अपनी थोड़ी सेना मरी हुई देख भाग चले तब तारक महाक्रोधित हुआ मानों प्रलय कर देगा और एक करोड़ हाथ बनाकर हाथी पर सवार होकर देवताओं के पकड़ने को उनकी सेना के भीतर चला और असंख्य देवताओं को मार डाला और अपने हाथी को छोड़ दिया उसके भय से सब हाथी आदि डर गये और तारक ने देवताओं को जीत लिया उस समय तारक का तेज कोई सह न सका और सब लोग बड़े दुःखी हुये और उसके हाथी ने सब हाथी आदिकों को मार डाला यह दशा देख कर विष्णुजी से न रहा गया तो उन्होंने तुरन्त चक्र उठाकर तारक के साथ युद्ध कर देवताओं को आनन्द दिया देवताओं में दूना बल हो गया और विष्णुजी और तारक से घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों ओर से असंख्य देवता और दैत्य मारे गये तारक ने बाणों की वर्षा से देवताओं को फिर भयभीत किया विष्णुजी ने क्रोधित होकर अपने चक्र को तारकके ऊपर चलाया तब पृथ्वी कांप उठी पर चक्र को तारक के शरीर में जमने का कोई स्थान न मिला तारक ने अपने गुरु को प्रणाम कर सैकड़ों प्रकार की माया दिखाई कभी तो वृक्ष कभी बाण फिर हाथी घोड़े सर्प और नाना प्रकार के शस्त्र आकाश से गिरने लगे और राक्षस जिनका शब्द हाथियों के समान था उपजे यह तारक की माया किसी ने न जानी वरन् देवताओं ने भी जाना कि प्रलय हुआ चाहती है यह विचार वह युद्ध स्थान से भागकर स्कन्द के पास पहुँचे और अति भयभीत होकर स्कन्द से विनती की कि हम आपकी शरण में आये हैं आप कृपा करके जल्दी तारक का वध कीजिये बिना आपके और कोई तारक के वधयोग्य नहीं है आपका अवतार इसीलिये हुआ था स्कन्द ने हँसकर देवताओं से कहा कि हमको अपना

पराया कुछ नहीं भासता हमतो अभी लड़के हैं और मैं इस बात की परीक्षा करता रहा कि मैं किसी के साथ लड़ूं चाहे मैं धनुर्विद्या नहीं जानता तो हे नारद ! तुमने स्कन्द से यह सुनकर उत्तर दिया कि आप तो शिव से उपजे हैं और सृष्टि के रक्षक देवताओं को तुमहीं से सुख है तुम बालक युवा और वृद्ध नहीं हो तुम्हारा बल वेदों से प्रकट है तारक ने देवताओं को विजय कर बड़े २ दुःख दिये हैं इसलिये आपको तारक का वध कर डालना चाहिये यह सुन स्कन्द पहिले हँसे और फिर क्रोधित हुये और विमान छोड़ पैदल चले और अपनी शक्ति को लिये तारक की ओर पैदल जल्दी २ पग उठाते थे तब तारक ने हँसकर कहा कि इस बालक की आशा पर देवताओं ने अपने बलको नष्ट कर दिया है वे भी बड़े बुद्धिहीन हैं मुझको निश्चय है कि मैं सब देवताओं को मार डालूंगा यहांतक कि इन्द्र और विष्णु भी मुझसे जाने न पायेंगे यह सुन शक्ति हाथ में लिये हुये स्कन्द से लड़ने को चला देवताओं से कहा कि हे देवताओ ! तुमने युद्धस्थान में बालक को अगुआ बनाया है तुम बड़े निर्लज्ज हो इसका फल हम अब तुमको देते हैं जिसकी आशा पर तुम सब रहते हो वह हमारे भय से भाग जावेगा यह दोनों भाई विष्णु और इन्द्र बड़े छली हैं मुख्य करके छोटा भाई तो छल में अद्वितीय है और माया करने में विख्यात है इसने बलि के साथ क्या काम किया और मधुकैटभ का शीश छल करके कटवा डाला फिर अमृत के बांटने के समय कैसा छल किया है इसने वेद के विरुद्ध स्त्रियों को मार डाला और बालि के वध में धर्म का कुछ विचार न किया रावण जो ब्राह्मण जाति का था जिसका मारना वेद में मना है इसने मार डाला और अपनी स्त्री को बिना पाप छोड़ दिया और इसने अपनी माता का शिर काट डाला और

अपने कुलगुरु पर कुछ भी दया न की और इसने परस्त्रियों के साथ भोग करके वेद की रीति को छोड़ दिया और अनुचित रीति से विवाह कर कलियुग की चाल चलकर बड़ा ही अधर्म किया और इसी प्रकार सब वेदों की निन्दा करते हुये विष्णुने कुछ भी ध्यान न किया आश्चर्य है कि ऐसे मनुष्य के बल और आशा पर देवताओं ने युद्ध का उद्योग किया और उनका बड़ा भाई इन्द्र तो बहुत ही बुरा और अनाचारी है उसने अपने पिता के लड़के को दिति के गर्भ से गिरा दिया और केवल संसार के आनन्द के लिये ऐसे काम करते उसको धर्म का विचार न हुआ गौतम की स्त्री से भोग किया व्रत ब्राह्मण को मार डाला और विश्वरूप के सब पुत्र मार डाले उसने संसार के आनन्द के निमित्त कैसे कैसे अधर्म नहीं किये और वेद के धर्म त्याग दिये इससे इनका तेज हत हो गया इस समय भी लड़के को अगुआ बनाया है जो अभी मारा जावेगा यह पाप भी इन्हीं पर पड़ेगा नहीं तो लड़का भाग जावेगा तारक यह बात देवताओं से कहकर फिर स्कन्द से बोला कि तुम कुछ अहंकार मत करो यहां तुम्हारी कुछ न चलेगी जो मनुष्य ब्राह्मण का अपमान करता है उसके धन, प्राण, घर, बल आदि कुछ नहीं रह सक्ता अब वेद का वचन सत्य करके जो चाहूं कि सबका विनाश कर डालूं यह कह अपनी सांगी को उठाया हे नारद! यह कहते हुये तारक की शक्ति नष्ट होगई क्योंकि बड़ों की निन्दा और उनके कर्म कहने में तुरन्तही शक्ति क्षीण पड़ जाती है पर जो सदाशिवजी की इच्छा होती है वही होता है शिवजी की माया में फँसकर तारक ने भी यह वचन कहा संसार में कौन ऐसा है जिसकी बुद्धि शिवमाया से ठीक रह सक्ती है निदान तारक ने अच्छे अच्छे चुने हुये वीरों को सेनापति करके बाकी सेना को

पीछे रक्खा और आपही स्कन्द और इन्द्र के सामने गया।

दशवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! ऐसी शक्ति दिखाते हुये तारक को इन्द्र ने देखा और अपना वज्र मारकर उसको पृथ्वी पर गिरा दिया पर तारक ने तुरन्त धरती से उठकर इन्द्र को सांगी मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया तब देवताओं की सेना में बड़ा हाहाकार मचा क्योंकि उनके राजा की यह दशा हुई तारक ने इन्द्र को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देख अपनी लात से उसके पेटको दबाया और हाथ से वज्र छीन लिया और उसी से इन्द्र को मारा यह दशा देख स्कन्द ने बड़ा क्रोध किया और अपना त्रिशूल तारक के हना तारक त्रिशूल का ताड़न न सहकर धरती से उठ खड़ा हुआ जिससे स्कन्द घायल होकर धरती पर गिरपड़े और सब देवता आदि हाहाकार करने लगे पर क्षण-मात्र के पीछे स्कन्द उठकर पूर्ववत् नाद करने लगे और उन्होंने त्रिशूल उठा लिया तब त्रिशूल बिजली के समान चमक उठा और सर्व दिशा प्रकाश से पूर्ण होगईं और सूर्य चन्द्र और अग्नि के समान प्रकाश को देखकर स्कन्द ने त्रिशूल को मनाही की और ऊंचे शब्द से पुकारा तब तारक फिर सांगी लेकर सामने आ खड़ा हुआ देवताओं ने उत्सव के बाजे बजाये और तारक और स्कन्द लड़ने लगे उस समय अति घोर युद्ध हुआ दोनों शिर, गला, कटि, जांघ पीठ, और हृदय में शस्त्र मारते थे दोनों ओर की सेना ऐसा युद्ध देखकर अति आश्चर्य में हुई और देवताओं की आशा टूट गई कि तारक को स्कन्द नहीं मार सकेंगे उसी समय आकाशवाणी हुई कि अभी स्कन्द तारक का वध कर डालते हैं तुम कुछ सन्देह मत करो फिर स्कन्द ने अपनी सांगी तारक की भुजों में मारी पर तारक ने

भी उसका विचार न किया और अपनी सांगी से स्कन्द को घायल करके पृथ्वी पर लिटा दिया स्कन्द ने सचेत होकर फिर तारक के सांगी मारी और दोनों युद्ध करने लगे देवताओं को अति चिन्ता हुई सूर्य का प्रकाश हत हुआ पवन थम गई और नदी पर्वत और वनों से भय देनेवाला शब्द होने लगा और धरती कांपने लगी मानो भूकम्प हुआ है अग्निदेवता शान्त पड़ गये ऐसा संसार में कौन था जिसको दुःख न हुआ और हिमगिरि, मेरु, श्वेतकोट, उदयाचल, अस्ताचल, मलयागिरि, कैलास, गन्धमादन, मैनाक, विन्ध्याचल, महेन्द्र, मन्दर और हिमालय आदि पर्वत चिन्ता से दुःखी थे ऐसे दुःख की दशा देख स्कन्द बोले हे पर्वतो ! कुछ सन्देह मत करो तुम्हारे देखते देखते केवल सांगी से तारकासुर दैत्य को वध कर डालता हूं इसी प्रकार सब देवताओं आदि से कह शिवगिरिजा का ध्यान किया और तारक के वध करने को सांगी अपने हाथ में उठाई जिसमें श्रीगौरीशङ्कर ने असंख्य तेज और बल डाल दिया और क्रोधित होकर स्कन्द ने तारक के हृदय में सांगी को मारा सो तारक निर्जीव होकर धरती पर गिर पड़ा फिर स्कन्द ने अपना हाथ उस पर नहीं डाला और जो शिव का तेज तारक के शरीर में था वह स्कन्द के शरीर में प्रवेश कर गया और तारक की सब सेना भागकर पाताल को गई इसी प्रकार दैत्यों का अच्छे प्रकार वध हुआ जिससे देवताओं को अति प्रसन्नता प्राप्त हुई और सब देवता मुनि और गण अति प्रसन्न होकर स्कन्द की स्तुति करने लगे और गन्धर्व और किन्नर और अप्सरा आदि गाने बजाने लगे नाना प्रकार के बाजे बजे और सबने बहुत स्तुति करने के उपरान्त विनती की कि हम सबको आपके चरणों की

प्रीति दिन दिन बढ़े यही वरदान हम आपसे मांगते हैं ऐसी स्तुति देवता और पहाड़ों से सुनकर स्कन्द बोले कि हमने तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न होकर तारक का वध किया सो आगे के लिये भी तुमसे कहते हैं कि जब कोई तुम पर दुःख पड़ेगा तब हम तुम्हारे सहायक होंगे यह बात देवताओं से कह-कर पहाड़ों से बोले कि तुम सब प्रतिष्ठा के योग्य हो और तपस्वी और मुनि तुम्हारी सेवा करेंगे तुम्हारे देखने से मनुष्यों के दुःख दूर होंगे जो तीर्थ वा शिवालय वा तपभूमि तुम पर होगा वह सर्वानन्द और सुख देगा और जो पर्वत कि हमारे माता के बदले है वह तपस्वियों को उत्तम फल देकर सब पर्वतों का राजा हो और दूसरे पर्वत भी शिवलिङ्ग के समान पापों को नष्ट किया करें यह वरदान देकर चारों ओर से धन्य धन्य और जय जय का शब्द हुआ और देवताओं ने बड़ी स्तुति करके हर प्रकार से स्कन्द की पूजा की ।

ग्यारहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब उन देवताओं का वृत्तान्त जो भागकर पाताल में छिप गये थे सुनो उन दैत्यों में से एक बाण नाम दैत्यों का स्वामी लड़ाई से मुँह मोड़ भाग गया था वह क्रौञ्चद्वीप में जाकर नानाप्रकार के उपद्रव करने लगा। उसने कई पर्वत फोड़ डाले और कई सघन वन उजाड़ कर दिये और क्रौञ्च के शिर में एक अपना चरण इस वेग से मारा कि क्रौञ्च पर्वत घबड़ाकर स्कन्द के पास आकर कहने लगा कि इस समय आपने तारक के वध से संसार भर के दुःख छुड़ा दिये मैं हीं अकेला सृष्टि भर में दुःखी हूं फिर उसने अपना सर्व वृत्तान्त आदि से अन्त तक कह सुनाया और कहा कि जिसने मुझको दुःख दिया है उसके साथ आठ कोटि दैत्य हैं

मैं मनुष्य का स्वरूप धारणकर आपकी शरण में न आता तो न जानिये वह क्या करता अब आपकी शरण आया हूं क्योंकि आपको छोड़ किसके पास जाऊं स्कन्द ने यह दैत्यराज की कथा और उसका उत्पात सुन उनके मारडालनेकी चिन्तना की और सांग हाथ में लेकर शिव गिरिजा का ध्यान कर उस दैत्य की ओर क्रोध से चलाई उसके चलने से दशों दिशा में असंख्य प्रकाश फैल गया और क्षण भर में उन दैत्यों को उनके अधिपति समेत जला दिया और फिर वह सांग स्कन्द के पास यह कार्य करके लौट आई स्कन्द ने पर्वत से कहा कि अब तुम अपने घर को लौट जाओ हमने उस दैत्य को सेनासहित मार डाला यह सुनकर क्रौञ्च ने स्कन्द की बड़ी स्तुति की और अपने घर को गया और हर प्रकार से देवताओं ने उत्सव किये फिर स्कन्द ने उसी स्थानपर तीन शिवलिङ्ग स्थापित किये और उनके नाम यह रक्खे पहिला प्रतिज्ञेश्वर और कहा जो कोई इनकी पूजा करेगा वह तुरन्त अपना मनोरथ पावेगा दूसरे का नाम कपालेश्वर तीसरा कुमारेश्वर और इनके लिये यह वरदान दिया कि इनकी पूजासे दोनों लोकमें सुख प्राप्त होगा और इन तीनों के नाम लेने से करोड़ों दुःख मिट जावेंगे और उसी जगह के निकट एक जयस्तम्भ स्थापितकर एक और शिवलिङ्ग स्तम्भेश्वर भी स्थापन किया जिनकी पूजासे सब मनोरथ पूरे होते हैं इन चारों लिङ्गों में शिवजी और देवताओं का तेज स्थित हुआ और एक और शिवलिङ्ग सब देवताओं और मुनीश्वरोंने स्थापितकर उनका नाम रामेश्वर रक्खा जिनसे प्रजाकी सर्व कामना सिद्ध होती हैं इन लिङ्गों के स्थापित होने के उपरान्त बड़ा उत्सव हुआ चारों ओर से जय २ और बम् बम् का शब्द छा गया और देवताओं का सब दुःख मिटगया।

बारहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इसी समय में जब कि देवता और दैत्य लड़ाई में लगेथे और दैत्य स्कन्दजी का तेज न सहकर चारों ओर भागे उनमें से हम बाण दैत्य का वृत्तान्त तो कह चुके हैं और दूसरा प्रलम्बनाम दैत्य शेष के घर में जाकर दशकोटि सेनासहित बड़ा उपद्रव मचाने लगा बहुत से मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया और शेष के पुत्रों ने बाहर निकल प्रलम्ब से सामना किया निदान शेष के पुत्र हार मान गये उनका नाम कुमुद था उसने स्कन्द की शरण में आकर स्तुति की और प्रलम्ब के उपद्रव की सब कथा कह सुनाई और कहा कि इसको मारडालो तथाच हम और इन्द्र ने भी इस बातको कहा और फिर शेष ने बिनती की कि आप जल्दी इस दैत्य को नष्ट करें मैं आपकी शरण में आया हूं स्कन्द ने यह सुन अपनी शक्ति को उठालिया और शिवजी व गिरिजा का ध्यान करके दैत्य की ओर फेंक दी जिसके प्रकाश से संसार भर प्रकाशित हो गया उसनेसातों पाताल नांघकर वेग ही दशकरोड़ दैत्यों को प्रलम्ब समेत मारकर भस्म कर दिया और फिर उसी प्रकार से स्कन्द के हाथ में आगई तब स्कन्द ने कुमुद से कहा कि हमारी शक्ति ने प्रलम्ब का नाश कर दिया अब निर्भय होकर अपने घरको जाओ शेष आप तो स्कन्द की सेवा में तत्पर रहे और कुमुद लौट गये और हर प्रकार के उत्सव देवताओं ने किये और हम और सब देवताओं ने स्कन्द की स्तुति की और कहा कि अभी तो तुम केवल सात दिन के लड़के हो और उसे इस प्रकार से दैत्यों का नाश करते हो तो जिस स्थान पर स्कन्द ने देवताओं सहित यह विचार किया वह सत्तीर्थ के नाम से बड़ा तीर्थ प्रसिद्ध हुआ और जिस मार्ग से कि कुमुदनाग धरती को तोड़

कर पाताल में गया था वह सिद्धकूल के नाम से विख्यात हुआ उसकी बड़ी महिमा है जो वहां स्नान करते हैं उनके सब दुःख मिट जाते हैं और अन्त को कैलास पर्वत में स्थान मिलता है इस प्रकार की और बहुत सी लीला स्कन्दजी ने कीं जिससे सब दुःख मिट गये और बहुत आनन्द प्राप्त हुआ स्कन्दजी के चरित्र अति पवित्र हैं उनके सुनने सुनाने से मोक्ष प्राप्त होता है।

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! स्कन्द ने इसी प्रकार के बहुत से चरित्रों से संसार को सुख दिया और देवता स्कन्द से अति प्रसन्न रहकर अति आनन्द से परस्पर मिल रहने लगे फिर उन्होंने कहा कि आप कैलास पर्वत पर चलकर रहिये क्योंकि सबने अपना मनोरथ पा लिया है स्कन्दजी ने इस बात को मान लिया और विष्णु और हमको शुभ मुहूर्त देखने को आज्ञा दी सो हमने मुहूर्त कर देवताओं समेत स्कन्द से विनय की कि शुभ मुहूर्त आ गया है सो स्कन्द प्रसन्न होकर अपने माता पिता का ध्यान कर चले उस समय चारों ओर से जय शिव गिरिजा का शब्द सुनाई देता था और स्कन्द उत्तमोत्तम विमान पर आरूढ़ होकर स्तुति सुनते हुये चले और पीछे इन्द्र ऐरावत हाथी पर आरूढ़ छत्र लेकर तय्यार हुये और सब दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा समेत आगे २ जय जय शब्द करते हुये और शेष सर्व देवता आदि चारों ओर से स्कन्द के साथ हुये और शिव के पास पहुँच कर सबने दूर से नम्रतापूर्वक खड़े होकर प्रणाम किया और स्कन्द ने शिव के निकट जाकर दण्डवत् की शिव ने गोद में उठाकर उनको छाती से लगाया और मस्तक सूँघा और बार २ मुख की ओर देखा और शरीर भर में हाथ फेरा और गिरिजा अपने

पुत्र के आने का समाचार सुनकर सखियों समेत अपने मन्दिर से उतर आईं और तुरन्त लड़के को गोद में उठा लिया और शिव के बाईं ओर बैठकर बड़े लाड़ प्यार से स्कन्द को हृदय से लगाया ऐसी शिव पार्वती की लीला देख कर सब देवता आदि ने अपने अपने हाथ बांध कर शिर झुकाय शिव की बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिव! आपने शिशुरूप से प्रकट होकर तारक का वध किया तारक अपने परिवार समेत मारा गया और बाण प्रलम्ब भी अपनी सर्व सेना सहित मारे गये हमारे सुख देनेवाले तुम तीनों हो इसी प्रकार गिरिजा और स्कन्द की भी स्तुति की फिर प्रणाम कर चुप हो गये शिव गिरिजा और स्कन्द यह स्तुति सुन अति प्रसन्न हुये और शिव ने दया दृष्टि से सबको अवलोकन कर कहा कि मैंने केवल तुम्हारे लिये सगुण अवतार धर विवाह किया यह लड़का मुझे बहुत प्यारा है जिसने तारक को वध किया अब तुम अपने अपने घरों में जाकर प्रसन्न रहो इसी प्रकार तुम्हारे आनन्द के चाहनेवाले हैं क्योंकि हम भक्त के अधीन रहते हैं हमारे स्मरण को मत भूलना हम गिरिजा पुत्र और गणों सहित तुम्हारे सहायक हैं यह कह सबको विदा किया और स्कन्द के कुशलपूर्वक पलट आने के कारण ब्राह्मणों को बहुत दान दिया और बड़ा उत्सव किया और भैरव आदि गण बहुत प्रसन्न हुये इसी प्रकार से योगिनी और गणोंने बड़े २ आनन्द किये और हिमाचल ने स्कन्द को अपनी गोद में बैठा-कर बहुतही दान किया और शिव से विदा होकर अपने देश को गये और देवता आदि सब अपने २ घरों को पहुँच कर आनन्द के बाजे बजाने लगे और पूर्ववत् अपना २ राज्य करने लगे हे नारद! जहां तक हमको स्कन्द का वृत्तान्त मालूम है

हमने तुमको सब कह सुनाया है यह चरित्र सब दुःखों के दूर करनेवाला और आनन्द देनेवाला है जिसके सुनने से सब दुःख और आपदा नष्ट हो जाती हैं और मुक्ति मिलती है यश बढ़ता है इस चरित्र के सुनने और सुनानेवाले दोनों परलोक में परमगति पाते हैं इस चरित्र के सुनने से भाग्य बढ़ता है और शिव मिलते हैं और गिरिजा अपने भक्तों की सदा सहायक हैं हे नारद! और क्या सुना चाहते हो नारद बोले कि तारक के वध करने के उपरान्त स्कन्द ने क्या चरित्र किये वह वर्णन कीजिये।

चौदहवां अध्याय (श्रीगणेशजी की) लीला।

नारद बोले कि हे ब्रह्माजी! स्कन्द का चरित्र सुनकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई अब शिव गिरिजा के और चरित्र वर्णन करो मैं आपसे एक प्रश्न करता हूं आशा है कि आप प्रसन्नता से उत्तर देंगे अर्थात् आप गणपति का चरित्र सुनाइये कि वह किसके पुत्र हैं क्योंकि पञ्चदेवता के पूजने की आज्ञा है उसमें एक गणपति भी हैं वे किस समय से पूजे गये और तीनों लोकों को फिर क्योंकर जीता और क्योंकर प्रसिद्ध हुये हां हमने कई बार सुना है कि गणपतिजी गिरिजा के पुत्र हैं पर मुख्य वृत्तान्त नहीं जानता और जो कि शिव के विवाह में आपने कहा था कि गणपति की पूजा की गई और शिव ने नमस्कार किया मुझे इसमें बड़ा संशय है ब्रह्माजी बोले कि शिवकी माया को कोटि धन्य है तुमने क्या अच्छा प्रश्न किया जो सृष्टि का उपकारी है हम आपसे गणपति की उत्पत्ति और उनका पद आदि से अन्त तक सुनाते हैं सो गणपति प्राचीन देवता विष्णु आदि के समान हैं शिव परब्रह्म और स्वामी हैं वह अलग पाँचों देवताओं में बँटे हुये हैं उन्होंने बड़ी लीला और चरित्र किये

जिनको हम थोड़ा सा कहते हैं कि शिव गिरिजा के साथ विवाह करके अन्तःपुर में विहार करने लगे और शिव गिरिजा में ऐसा प्रेम बढ़ा कि रात दिन बीतते कुछ भी जान न पड़े यह दशा देख सब देवता हमारे पास आये और हम भी चिन्तित होकर उन सबको साथ लिये हुये विष्णु के पास पहुँचे और स्तुति करने के उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया कि शिव दिव्य एक सहस्र वर्ष से विहार कर रहे हैं नहीं जानते कि ऐसे विहार से कैसा पुत्र उपजेगा आप कहें यह सुनकर विष्णु बोले कि सब अच्छा और शुभ होगा कुछ भय मत करो और हे ब्रह्मन्! हमको यह युक्ति करना चाहिये कि किसी उपाय से शिवजी का वीर्य पृथ्वी पर गिरा लो कि गिरिजा से पुत्र उपजने न पावे नहीं तो ब्रह्माण्ड भर को जला देवेगा इस वचन के सुनने के उपरान्त हम तो अपने घर चले गये और देवता कैलास पर्वत को गये देवताओं ने शिवजी के द्वारपर जाकर बड़ा नाद किया तथाच शिवजी बाहर निकल आये देवताओं ने प्रणाम करके स्तुति किया और कहा कि संसार को पवित्र करो शिवजी देवताओं का मुख्य वृत्तान्त समझ कहने लगे कि हमने तुम्हारे मनोरथ को समझा है तुमने वृथा ही हमारे आनन्द में विघ्न डाला यह बहुत बुरा काम हुआ है हमारा वीर्य शिर से नीचे को आता है उसको तुममें से कौन लेता है यह कह अपना वीर्य पृथ्वी पर फेंक दिया जिसके तेज से उजियाला होगया सो अग्नि कपोत का रूप धारणकर वीर्य को चखगये और जब उड़कर आकाश को चले तब अपने में उस वीर्य के धारण की शक्ति न पाकर उसे पृथ्वी पर फेंक दिया पहाड़ भी कांप उठा और इस तरह स्कन्द उपजे जिनका वृत्तान्त हम पहले वर्णन कर चुके हैं पर अब हम गणपति का वृत्तान्त वर्णन करते हैं

अर्थात् उस समय शिवजी ने सब देवताओं से कहा कि तुम वेग ही हमारे पास से भाग जाओ ऐसा न हो कि गिरिजा इस बात को जानकर तुम पर क्रोध करें सो देवता भाग चले और शिवजी उनके भागने का चरित्र देखते रहे कि गिरिजा ने आकर महाक्रोध किया जिससे कि जाना जाता था कि प्रलय होवेगी और देवताओं को शाप दिया यद्यपि गिरिजा ने ऐसा शाप देवताओं को दे दिया पर तो भी क्रोध उनका न गया नेत्र लाल और उनसें आंसू भरे हुये और शरीर बहुत नरम और दुःख की अधिकता से भूमि खोदती थीं कि शिवजी ने गिरिजा को इतना दुःखी पाकर गोद में उठा लिया और बड़ी विनय की बातें कीं और कहा कि इतनी तुम मुझसे क्यों अप्रसन्न हुई हो मेरा कोई अपराध नहीं यदि अज्ञानता में कोई अपराध होगया हो तो क्षमा करो जो कोई तुम्हारा नाम मुख से लेता है उसके सब कार्य हम पूर्ण कर देते हैं तुम्हारे विना मानो हम अङ्गहीन हैं तुम तो सबकी माता हो अब तुम्हारे मधुर वचन सुने विना मुझे आनन्द नहीं तीनों लोक के कार्य तो तुम्हारे अधीन हैं तुम्हारे विना सब निर्बल हैं अब प्रसन्न होकर दुःख को दूर कीजिये।

पन्द्रहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह शिवका वचन सुन गिरिजा बोलीं कि क्या तुम नहीं जानते जो दुःख मुझको है संसार में सन्तान विन किसी स्त्री को सुख नहीं और न सन्तानहीन होने के बराबर कोई दुःख है कि आपकी बराबर पति को पाकर भी पुत्रहीन रही इसी से मुझको किसी समय आनन्द नहीं होता पहिला हमारा जन्म सन्तानरहित होकर बीत गया अब यह जन्म भी वैसा ही बीता चाहता है हमारे साथ देवताओं ने यह

कर्म करके इतना दुःख दिया है कि बांझ होने को पहुँच गई जो स्त्री संसार में सन्तानहीन है उसको ब्रह्मा ने वृथा ही उपजाया संसार के हज़ारों ऐश्वर्य पर धिक्कार है जो पुत्र न हो लोक में उसी समय शुभकर्मों का फल प्राप्त हुआ मालूम होता है जब शुभगुणयुक्त पुत्र उत्पन्न होता है यह कह गिरिजा बहुत रोई शिव ने गिरिजा को उठाकर हृदय से लगाया और कहा कि हम ऐसी युक्ति बताते हैं जिससे तीनों लोक में सब कार्य पूर्ण होंगे और हम और विष्णु और ब्रह्मा सब उसके वश में हैं हम उसको गुरु अर्थात् गणपति कहते हैं वह मुख्य हमारा रूप है जिनकी सेवा से दुःख दूर होकर सुख मिलता है तुम एक वर्ष पर्यन्त उनका व्रत करो तुम्हारा मनोरथ पूरा हो जावेगा उसका नाम आपदा का दूर करनेवाला और आनन्द देने-वाला है अँधेरे पक्ष की चौथ को यह व्रत किया जाता है सो गणेश चौथ व्रत के रखने की युक्ति यह है कि व्रतरख पवित्रता-पूर्वक चन्द्रमा के उदय होते ही पूजा करे यह व्रत सब व्रतों का राजा और हर कामना का देनेवाला है जिस तरह कि सब मन्त्रों में प्रणव हमारे भक्तों में विष्णु नदियों में गङ्गा देवियों में तुम वर्णों में ब्राह्मण इन्द्रियों में मन बड़ों में माता ऋतुओं में वसन्त पुरियों में काशी सहायकों में भाई और पुत्र और नक्षत्रों में चन्द्रमा दैत्यों में प्रह्लाद कवियों में शुक्र अक्षरों में मकार शस्त्रों में त्रिशूल मन्त्रगणों में पञ्चाक्षरी बीजमन्त्रों में प्रणव पुराणों में भारत आश्रमों में संन्यास है वैसेही सब सेवाओं में शिव की भक्ति बड़ी है इसी प्रकार यह गणेशचौथ का व्रत सब व्रतों में बहुत बड़ा है कलियुग में राजा शेषसेन ने इस व्रत को करके बड़ा आनन्द पाया और शतरूपा जो मनु की पत्नी थी उसने यही व्रत करके दो पुत्र उपजाये और कर्दम की स्त्री ने

भी यही व्रत करके कपिलनाम विष्णु अवतार को पाया और वशिष्ठजी की स्त्री ने इसी व्रत से शक्ति अपनी पुत्री को उपजाया और अदिति ने इसी व्रत के प्रताप से वामन अवतार को अपना पुत्र किया शची ने इसी व्रत से जयन्त को पाया और अनसूयाने चन्द्रमाको प्राप्त किया इसीप्रकार और बहुत मनुष्यों ने इसी व्रत से लड़के प्राप्त किये हैं हम कहां तक वर्णन करें हे गिरिजे ! तुम भी इसी व्रत के प्रभाव से अवश्य पुत्र पावोगी गिरिजा ने अति प्रसन्न होकर कहा कि बहुत अच्छा मैं अवश्य ही यह व्रत धारण करूंगी पर आप इस व्रत का नियम परिपूर्ण कहें शिवजी बोले कि हे देवि ! कृष्णपक्ष की चतुर्थी को शुद्धमन से बहुत सबेरे शयन से उठकर स्नान करे और जो कुछ करना उचित है वह सब करे फिर व्रत की दृढ़ इच्छा कर यह संकल्प करे कि हे गणेश ! हम तुम्हारा व्रत आज करते हैं हमारा मनोरथ पूरा करना हम तुम्हारे चरणों की शरण में आये हैं हे गणपति ! व्रत हमारा पूर्ण होजावे हमारे दुःख दूर होवें तुम सब कुछ जानते हो सब फलों के दाता हो तुमको वेदों ने विघ्नहर्ता कहा है इस प्रकार संकल्प करके दिन गणपति की वार्ता में व्यतीत करे जब दिनान्त हो स्नान कर अपने स्थान पर बैठे और सब पूजा की सामग्री इकट्ठी करे और गणपति की पूजा के निमित्त अच्छा स्थान तय्यार करे जिसके चारों ओर केले के खम्भ लगाये गये हों और बड़ी प्रसन्नता से नाना प्रकार के बाजे बजवावे जब कि आकाश में चन्द्रमा उदय हो तुरन्त अर्घ्य दे और गणेश की मूर्ति सोने या चांदी या तांबे या गोबर की जैसी सामर्थ्य हो बनवावे और उसको रखकर कलश स्थापित करे जिसके ऊपर दीपक रक्खा हो ध्यान लगाकर षोडशोपचार से पूजन करे और लाल फूल,

कपड़े, चन्दन, कुशा, पुवे, दूध आदि आगे रखकर फिर आचमन करा देवे और अच्छी स्तुति करके प्रेम में मग्न हो प्रणाम करे और बड़ाही प्रेम उपजावे और इसी प्रकार अपनी भक्ति से गणपति को प्रसन्न करलेवे फिर प्रणाम करके विसर्जन करे और निश्चय करे कि हमारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा और वही पुवा पूजा करानेवाले ब्राह्मण को खिलाकर दक्षिणा में चांदी दे नहीं तो जैसी अपनी सामर्थ्य रखता हो ब्राह्मणों को दक्षिणा दे और आप भी मीठा भोजन करे जो इस प्रकार से गणेश का व्रत करते हैं उनका मनोरथ पूरा होजाता है तुम भी इसी व्रत को करो ।

सोलहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह वचन सुनकर गिरिजा ने पूछा कि हे शिवजी ! जो आपने गणपति के व्रत में चन्द्रमा को अर्घ्य देना कहा उसका मुख्य कारण नहीं जाना जाता शिवजी बोले कि गणेश ने पहिले चन्द्रमा को शाप देकर फिर आप कहा कि तुमको प्रथम अर्घ्य दिया जावेगा गिरिजा बोलीं कि इस कथा को विस्तार से कहिये शिवजी बोले कि हमारी आज्ञा को जिससे ब्रह्मा सृष्टि रचते हैं मानकर स्वर्ग जाने की इच्छा की और गणपति का एकाग्रचित्त हो पूजन किया गणपति ने प्रसन्न होकर कहा कि वरदान मांगो ब्रह्माजी बोले कि हम सृष्टि उपजाया चाहते हैं और उसकी वृद्धि निर्विघ्न चाहते हैं गणपति ने कहा कि यही होगा फिर गणपति धीरे २ आकाश की ओर चले जब कि गणपति चन्द्रमा के मन्दिर में पहुँचे तो पांव के फिसलने से गिर पड़े उनका उदर बहुत बड़ा और शरीर स्थूल था चन्द्रमा देखकर हँस पड़े गणपतिजी चन्द्रमा को हँसते हुये देख क्रोध में भर

गये और उनके नेत्र लाल पड़ गये और चन्द्रमा को यह शाप दिया कि चन्द्रमा कलङ्की तू अपनी सुन्दरता पर गर्व करता है तू महा मतिहीन है यही मनमें विचारता है कि मैं अति सुन्दर देखने के योग्य हूं उसके अहंकार से तू मुझे हँसा इसका फल तुरन्त मिलेगा जिससे संसार में बड़े दुर्भागी होकर आज से जो कोई तुमको देखेगा उसको अवश्य करके कुछ कलङ्क लग जावेगा यह शाप देकर गणपति गुप्त हो गये और चन्द्रमा क्षीणाङ्ग होकर हततेज होगया और सब देवता और इन्द्र ने दुःखी होकर ब्रह्माजी के पास जाकर सर्व वृत्तान्त वर्णन किया ब्रह्माजी बोले कि इसमें कुछ बुराई नहीं चन्द्रमा ने अपना किया हुआ पाया है गणपति का शाप झूठ नहीं हो सक्ता इसलिये तुम सब गणपति की शरणागत जाओ निश्चय है कि वह अपने शाप को शान्त करेंगे तब देवताओं ने विनय की कि आप यह उपाय बतावें जिससे गणपति प्रसन्न होकर शाप को शान्त करें ब्रह्मा-जी ने कहा कि गणपति का व्रत कृष्णपक्ष की चतुर्थी को है उसको जब करे तब गणपति प्रसन्न होते हैं सो यह वचन ब्रह्माजी का सुनकर बृहस्पति को चन्द्रमा के पास भेज दिया और बृहस्पति ने जिस रीति से बताया उस तरह से चन्द्रमा ने गणपति के व्रत का आरम्भ किया और गणपति खेलते हुये शिशुरूप से चन्द्रमा को दिखाई दिये चन्द्रमा ने प्रणाम करके बहुत बड़ी स्तुति की गणपति ने कहा कि हम प्रसन्न हैं जो वरदान तुमको चाहिये वह देवें चन्द्रमा ने विनय की कि आप के शाप से छूटकर सबके दर्शन के योग्य हो जाऊं गणपति बोले कि उपाय से तुम्हारा शापोद्धार होगा जैसा हम तुमको बताते हैं कि हर मास के शुक्लपक्ष की चौथ को हमारा शाप तुम पर बना रहेगा और तिथियों में कुछ किसीको तुम्हारे देखने

से कलङ्क न लगेगा पर जो मनुष्य कि पहले दूज और तीज में तुमको देखेगा उस पर कुछ चतुर्थी के देखने का फल न होगा पर जिससे कि हमारा पहिला वचन झूठ न हो इसलिये हम तुमसे कहते हैं कि जो मनुष्य भादों की शुक्लपक्ष की चौथ को तुम्हारे दर्शन करेगा उसको बराबर वर्ष भर कलङ्क लगा करेंगे और वह वर्ष भर दुःखी रहेगा चन्द्रमा बोले कि इसके दूर होने की युक्ति कहिये गणपति बोले कि प्रतिमास की कृष्णपक्ष की चौथ को जो कोई मनुष्य चन्द्रमा के उदय होने के समय मेरा पूजन करे और रोहिणी समेत तुम्हारी पूजा करेगा और तुमको अर्घ्य देगा और हमारी कथा को सुनकर ब्रह्मभोज करेगा और आप सिवाय मीठे भोजन के नोन आदि न खावेगा तब उस चौथ का फल जो वर्णन किया गया उसपर न हो सकेगा और जब भादोंमास का आरम्भ हो तो उजियाले पक्ष की चौथ में हमारी पूजा स्त्री सहित करे इस व्रत से सब प्रकार के क्लेश और कष्ट दूर हो जाते हैं और उस मनुष्य को चौथ का कुछ दुःख नहीं लग सक्ता यह कह गणपति अन्तर्धान हो गये और चन्द्रमा फिर तेज धारकर प्रसन्न हुआ इस कथा के सुनने से पाप नष्ट हो जाते हैं हे गिरिजे! जो तुमने हमसे पूछा था वह हमने तुमको सुनाया इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि इस व्रतके करने से पुत्र न उपजता हो वरन् जो मनोरथ हो वही प्राप्त होता है शिवजी तो यह कहकर चुप हो गये और गिरिजा के मन का दुःख नष्ट हो गया।

सत्रहवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! यह सुन गिरिजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर शौचपूर्वक व्रत का आरम्भ किया और नाना प्रकार की वस्तु चढ़ाकर पुवे भी गणपति को भेंट किये और उत्तम

रीति से ब्रह्मभोज कर आप भी भोजन किया इसी प्रकार प्रति-मास व्रत कर अच्छी तरह दान दक्षिणा देती रहीं जब एक वर्ष पूरा हो गया तो दक्षिणा आदि देकर बड़ा उत्सव किया और बड़ा गाना बजाना हुआ और गिरिजा ने अपने पति अर्थात् शिवजी की भी पूजा की और व्रत के पूर्ण होने के अनन्तर गिरिजा अति प्रसन्न हुईं और शिव की ओर बार २ देखा शिवने अपनी माया जानकर अपने हृदय से लगा लिया और गिरिजा का मनोरथ पाकर एक चन्दन के वन में जो पर्वत पर था और जहां सब सुख के पदार्थ थे जाकर गिरिजा के साथ मैथुन किया सो गणपति उस स्थान पर आये उस स्वरूप से कि बहुत भूखे प्यासे नङ्गे दरिद्री सफ़ेद केश किये भाल पर श्वेत तिलक लगाये महा दीन कौवे का शब्द बोलते दांत कुचैल डण्डा लिये कपड़े पहिने हुये बहुत ही दुर्बल दुखियारों के समान शिव के द्वार पर आकर कहने लगे कि हे शिव! क्या करते हो हम तुम्हारी शरण आये हैं हम सात दिन के भूखे हैं भोजन चाहते हैं हमको भोजन करा कर जल पिलाओ ऐसा शब्द सुनकर शिव तुरन्त उठ खड़े हुये और शिव का वीर्य उस स्थान में पात हो गया और गिरिजा भी उठकर अपने वस्त्र पहिन तुरन्त शिव के साथ द्वार पर आईं सो उस दुर्बल ब्राह्मण ने प्रणाम किया और बड़ी स्तुति की शिव बोले कि हे ब्राह्मण! तुम कहां से आये हो और हमारे मन्दिर में क्यों पधारे तुम्हारा क्या नाम है हमारे बड़े भाग्य जो आप आये तुम हमारे यहां अतिथि के समान आये हो और प्रकट है कि अतिथि की सेवा के बराबर कोई धर्म नहीं और गिरिजा ने भी कहा कि हे ब्राह्मण! ऐसी धूप में कहां से आये हो जो गृहस्थ अतिथि के चरणों को जल से धोकर पीजावे तो सर्वतीर्थों का फल उसे प्राप्त होता है

कदाचित् वह अतिथि निराश हो लौट जावे तो उसके सब शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं ब्राह्मण बोले कि हे गिरिजे ! तुम संसार में धन्य हो मैं बहुत ही भूखा प्यासा हूं कृपा करके मुझको भोजन दो गिरिजा ने उत्तमोत्तम भोजन ब्राह्मण को कराया ब्राह्मण ने तृप्त होकर प्रसन्नतापूर्वक कहा कि हे गिरिजे ! तुम्हारी कामना पूरी हो तुमको संसारी रीति के विरुद्ध ऐसा पुत्र मिले जो गर्भ से उपजा न हो यह कह वह ब्राह्मण गुप्त हो गया और शिव गिरिजा की शय्या में जहां वीर्य पड़ा हुआ था मुख्यरूप से प्रकट हुआ जो बालकों के समान करोड़ों सूर्यों की ज्योति धारण किये और कोटि कामदेव के समान शरीर सुन्दर धारण किये अच्छे चम्पा के समान हाथ पांव कमलवत् कोमल अङ्ग से इधर उधर शय्यास्थान में फिर रहे थे जब कि शिव और गिरिजा ने देखा कि इकबारगी वह ब्राह्मण अन्तर्धान हो गया तो चारों ओर ढूंढ़ने लगे और मन में उन्होंने बहुत दुःख और कष्ट माना इतने में आकाशवाणी हुई कि तुम प्रसन्न रहो हे गिरिजे ! तुम संसार की माता हो वह ब्राह्मण आप गणपति थे तुम्हारे व्रत से प्रसन्न हुये और शिशु के समान होकर तुम्हारे बिछौने पर पड़े हैं जाकर देखो जिसको योगी ध्यान करते हैं वह तुम्हारा पुत्र हुआ है तुम अतिथि के चले जाने का पश्चात्ताप मत करो घर में जाकर आनन्द करो गिरिजा प्रसन्न होकर मन्दिर में गईं कि एक अति सुन्दर बालक देखा जो हँस २ कर शय्या पर पड़ा खेल रहा है और घर की ऊँचाई देखकर प्रसन्न होता है और दूध के लिये रोता है गिरिजा ने तुरन्त जाकर यह सब वृत्तान्त शिव को कह सुनाया और कहा कि जल्दी आवो व्रत का फल मिल गया शिव ने आकर बालक को देखा ।



गौरी की गोद में गणेश

अठारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गिरिजाने तुरन्त बालक को उठा लिया और चूमचाटकर अपने स्तनों से दूध पिलाया और शिवको जो आनन्द प्राप्त हुआ उसका वर्णन हमसे नहीं हो सक्ता केवल इतना वर्णन करता हूं कि जिस तरह दरिद्री धन पाकर प्रसन्न होता है उससे लाख भाग अधिक गिरिजा को आनन्द हुआ वरन् उस स्त्री के समान जो अपने पतिके वियोग में बहुत समयतक दुःखी रहे और फिर अपने भर्त्ता को पाकर प्रसन्न होजावे उससे भी अधिक गिरिजा को आनन्द मिला या कि किसी स्त्रीने जिसके अकेला लड़का हो और अपने ऐसे दूर हुये बालक को पाकर प्रसन्नता उठाये उससे करोड़ों भाग अधिक गिरिजा को आनन्द मिला या उस खेती करनेवाले के समान जो काल या वर्षा न होने के कारण चिन्तित हो और जल की वर्षा देखे उससे भी करोड़ों हिस्से अधिक गिरिजा को हर्ष हुआ या बहुत दिनों के अन्धे ने आंखें पाई हों या किसीने डूबने के समय नाव पाई हो या किसीने अग्नि लगने के समय भयभीत होकर फिर अपने बचाव का स्थान पाया हो या बहुत दिनों के भूखे ने छत्तीस व्यञ्जन पाये या प्यासे ने ठण्ढा पानी पाया या किसी कृपण मनुष्य ने व्यापार में बड़ा धन पाया या किसी योगी ने बहुत परिश्रम करने के उपरान्त अपने इष्टदेव को देखा हो या किसी भक्तने बहुत समय के अनन्तर भजनकर भक्ति पाई हो इन सबसे करोड़ों भाग अधिक गिरिजा को आनन्द प्राप्त हुआ जब गणपति दूध पी चुके तो शिवने फिर अपनी गोदमें उठाकर शिर और हाथ चूमे और नाना प्रकार के आशीर्वाद दिये और सब ब्राह्मण आदिकों को बुलाकर रत्न मोती पारितोषिक दिये और बहुत सी सवत्सा गौवें दीं और अन्नादि

बहुतही दान किया और विष्णु और हम और देवता मुनि आदि सब शिवके ऐसे पुत्र के देखने को गये और हिमाचल अति प्रसन्नतापूर्वक रत्न साथ लिये हुये वहां पहुँचे और सब ब्राह्मण और मङ्गनों को दान मान से परिपूर्ण कर दिया एक लाख बहुमूल्य रत्न पांचलाख भार सोना तीनलाख घोड़े एक हज़ार हाथी जिनपर सोने की अम्बारियां थीं और दशलाख गौ और असंख्य भूषण और वस्त्र ब्राह्मणों को दान दिये इसी प्रकार हम और विष्णु ने भी बड़ा दान ब्राह्मणों को दिया और देवता शेषनाग गन्धर्वादि ने एक हज़ार अच्छे बरतन और एक सहस्र मणि और एक सहस्र माणिक्य और रत्न और असंख्य चन्द्रकान्तमणि एक सौ वैडूर्यमणि और इन्द्रनीलमणि और पांचलाख नागरत्न और असंख्य अग्नि से शुद्ध किये वस्त्र इसीप्रकार बहुत कुछ दानकिया और लक्ष्मीने कौस्तुभमणि और सरस्वती ने हार ब्राह्मणों को दान दिया और वरुण और कुवेर ने भी हीरे पन्ने कपड़े बहुत ही मंगनों को देडाले यहांतक कि कोई मंगन भिक्षुक और बन्दी जन न रहा और विष्णु और हम सबने आकर लड़के को देख बहुत आशीर्वाद दिये विष्णु ने कहा कि हे बालक ! तुमने शिव को बहुत प्रसन्न किया तुम्हारा बल पवन के समान होगा और सब सिद्ध तुम्हारे आश्रय रहेंगे मैंने यह आशिष दी कि तुमको सब पूजेंगे और तुम्हारा तेज और कीर्ति किसी समय में कम न हो और तुम्हारी बुद्धि तीव्र हो तुम बड़े विद्वान् होगे तुम हमारे समान सबको उपकार करोगे तुम्हारे स्मरण करने से तीनों भुवन के विघ्न दूर होजावेंगे लक्ष्मी ने कहा कि जहां तुम होगे हम अवश्य होंगी वहां ऋद्धि सिद्धि प्रीतिपूर्वक स्थित रहेंगी सरस्वती बोली कि तुमको कविता में बड़ी शक्ति होगी तुम्हारे स्मरण से कविताशक्ति शीघ्र प्राप्त

होगी तुम्हारी काव्य हमारे समान होगी तुम सदा रहोगे सावित्री ने कहा कि हम सब वेदों की माता हैं हमारी कृपासे तुम वेदों के ज्ञाता होगे हिमाचल ने कहा कि तुमको शिवके चरणों में बड़ी भक्ति प्राप्ति हो तुममें विष्णु के समान बल हो मैनाक बोले तुम कामदेव के समान सुन्दर और समुद्र के बराबर गम्भीर होकर विष्णु और शिव के समान धर्मवान् होगे वसुन्धरा ने कहा कि तुम्हारे अधीन पृथ्वी भर के सब रत्न और मणि रहेंगे और तुम्हारी कृपासे सर्वप्रकार का विघ्न विनाश को प्राप्त होकर तुम हरप्रकार का आनन्द देनेवाले होगे और तुममें हमारे समान दया धर्म शील होगा पार्वती ने कहा कि तुम सिद्धि के देनेवाले और सिद्धयोगी के समान होकर मृत्यु के जीतनेवाले सबसे अलग अपने पिता के समान होगे शिव ने कहा कि तुम सर्वानन्द देनेवाले और सबके सेवने योग्य और पूजने योग्य मुझे बहुत प्यारे होगे इस तरह से सबने मिलकर गणपति को अशीषें दीं यह गणपति की उत्पत्ति जो मनुष्य सुने सुनावेगा वह अपने सब मनोरथ पावेगा ।

उन्नीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! फिर शिवने बड़ा भारी उत्सव रचा आप उत्तमोत्तम स्थान पर जो रत्नोंआदि से जटित था बैठे दाहिनी ओर विष्णु और बाईं ओर पर हम बैठे और विष्णु के पार्षद और चन्द्रमा दिक्पति और धर्मराज आदि अपने स्थान पर बैठगये नाच गाने की समाज हुई तब वेद पुराण आगम निगम ने शिव की स्तुति की बाजे बजनेलगे इसी समय में सूर्य के पुत्र शनैश्चर गणपति के देखने को आये और शिव और विष्णु और ब्रह्मा और धर्मराज और चन्द्रमा की स्तुतिकर आज्ञा ले मन्दिर के भीतर गये और

पहिले द्वार पर पहुँचे जहां द्वारपालों ने जाने से रोंकलिया शनैश्चर ने कहा कि हम लड़के को देखने के लिये जाते हैं हमको मत रोंको द्वारपालों ने कहा कि गिरिजा की आज्ञा विन हम नहीं जानेदेते हमको शिवकी शपथ है तुम यहीं खड़ेरहो हम गिरिजा से आज्ञा लिये आते हैं यह कह द्वारपाल भीतर गया और गिरिजा से शनैश्चरके आने का हाल कह सुनाया सो गिरिजा की आज्ञा से शनैश्चर भीतर गये देखा कि गिरिजा स्वर्ण की चौकी पर बैठी हुई अति प्रसन्न हैं और पांच बांदियां सेवा कर रही हैं शनैश्चर ने स्तुति की गिरिजा ने आशिष दी और कहा कि क्या कारण है कि तुम आधा शिर झुकाकर देखते हो तुम क्यों अच्छी तरह लड़के को नहीं देखते क्या तुमको हमारा यह आनन्द भला मालूम नहीं हुआ शनैश्चर बोले कि तुमसे कुछ छिपा नहीं है मैं तुम्हारी आज्ञा से कहता हूं कि भाग्य बलवान् है सर्व मनुष्य संस्कार के अधीन हैं और शुभाशुभ कर्म दोनों लोकमें दूर नहीं किये जासक्के और स्वर्ग, नरक, जन्म, मरण, आकाश, पाताल, देवता, मनुष्य, आवागमन, धन की पूर्णता, दरिद्रता, कुल, अकुल, पुत्रहीन, सपुत्र आदि सब भाग्य के व्यवहार हैं इसी प्रकार हम भी अपने भाग्यों से आधे देखनेवाले होगये हैं और जिस कारण कि हम ऊपरको दृष्टि नहीं कर सक्के उसकी कथा वर्णन करता हूं यद्यपि यह कथा इस योग्य नहीं कि ढिठाई से विनय की जावे पर जो कि तुम मेरी माता और हम तुम्हारे पुत्र के समान हैं तो इस समय में लज्जा क्या है अर्थात् हम बाल्यावस्था से शिव के भक्त होकर और उन्हींके ध्यान और तप में प्रवृत्त रहकर उन्हींका नाम जपते थे जब युवा हुये तो हमारे पिता ने हमारा विवाह करदिया और चित्ररथ की कन्या जो हमको

ब्याही गई उसने मेरी बड़ी सेवा की संयोग से एक दिन ऋतु के दिनों से निश्चिंत होकर स्नान और शृङ्गार किया और ऐसी सुन्दर बनी कि जो उसको मुनिलोग भी देखलें तो मोहित होजावें वह काम की भरी तिरछी चितवन किये हुये हँसती हमारे पास आई और कहा कि मुझको देखो और हमारे साथ भोगकर हमारी इच्छा पूरी करो मैंने कुछ भी उसकी ओर ध्यान न किया और उसी तरह शिव के ध्यान में लगा रहा उस समय मैं बहुत ही बुद्धिहीन था उसके महीन शब्द को न सुना जब उसने अपने मनोरथ का पूर्ण होना कठिन जाना तो कोपित होकर मेरी ओर क्रूरदृष्टि से देख यह शाप दिया कि तुमने बुद्धिमान् होने पर यह कैसा भारी पाप किया कि अपना धर्म न जाना हमारा समय जाता रहा जो अपराध तुमसे हुआ है उसका तुमने विचार न किया इसीसे तुमको शाप देती हूं कि तुम शुभ न होगे और नरक में पड़ोगे और जिसको तुम आँखों से भलीभांति देखो वह जड़पेड़ से जल जावे यह कहकर वह बराबर मेरे पास खड़ी रही तब मैंने ध्यान करना छोड़ उत्तर दिया और प्रसन्न होकर कहा कि मैं ऐसे शाप को नहीं सहसक्ता यह वचन सुन हमारी स्त्री खेदकर नम्रताकर अति लज्जित हुई और मेरा मन कुछ भी खेद को प्राप्त न हुआ मैंने वह शाप धारण कर लिया हे गिरिजे! उस रोज से मैं किसी वस्तु को आंख भरके नहीं देखता क्योंकि मुझको जीवके निर्जीव होने का भय हर समय बना रहता है यह वचन सुन गिरिजा अपनी सखियों समेत बहुत ही हँसी और कहा कि हे शनैश्चर! तुम हमारे पुत्र को देखो शनैश्चरने विचार किया कि गिरिजा के पुत्र को देखूं या न देखूं क्योंकि जिसको मैं देखता हूं उसको दुःख अवश्य होता है यह विचार

वृष को साक्षी कर चाहा कि लड़के को देखूं और बहुत धीरे चुप रहकर एक दाहिने नेत्र के कोने से बालक की ओर देखा कि तुरन्त गिरिजानन्दन का शिर उड़ गया शनैश्चर तुरन्त नेत्र हटाकर चिन्तित हुये पार्वती यह दशा देख रोने पीटने लगी और शनैश्चर को बुरा भला कहा और लड़के का सब शरीर हृदय से लगाकर महादुःख किया यहांतक कि पृथ्वी में गिर-कर मूर्च्छित हुई जिस तरह कि वायु के कारण केले के वृक्ष जड़ से उखड़ पड़ते हैं यह दशा देखकर सब स्त्रियां रोने लगीं ऐसे रोने पीटने का शब्द मन्दिर के भीतर सुनकर विष्णु आदि आश्चर्यकर अन्दर गये और सब कुछ देखा और शिव भी संसारी मनुष्यों के समान रोने लगे और देवता आदि सबके सब रोये सो विष्णु और हम देवताओं समेत आकर उपाय से गिरिजा को चेत में लाये ।

बीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गिरिजा चैतन्य होकर फिर खेद और दुःख से मूर्च्छित होगई और फिर हम सबने किसी उपाय से जगाया तब विष्णु और हम सबने गिरिजा को हर भांति से समझाया कि संसार का सम्बन्ध क्या है ये सब सम्बन्ध आदि केवल मोह के कारण हैं गिरिजा ने उत्तर दिया कि हमारा जीना अब कठिन है देवताओं की युक्ति को मैंने कुछ भी न जाना मेरा बालक निर्जीव होगया हम अभी तीनों लोक को जलादेंगी क्योंकि मेरे दुःखी रहने में और सब सुखी नहीं रहसक्के कदाचित् हमारा पुत्र शीश समेत जो न उठेगा तो संसारभर को आनन्द न मिलेगा यह कहकर मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ी और फिर सचेत न हुई उस समय सब चित्रवत् चुप होगये और शिव के पास आकर बहुत ही लज्जा से कहने लगे

कि हे शिव! यह क्या चरित्र हुआ जिससे सबको दुःख मिलता है हम सबको इस बात का निश्चय है कि आपकी माया सब पर प्रबल है अब वह उपाय बतलाइये जिससे बालक फिर जी उठे और तीनों लोक को आनन्द मिले शिवजी बोले कि जो बात होनेवाली है वह रुक नहीं सक्ती चाहे कोई कोटि उपाय करे जो ईश्वर ने भाल पर अक्षर लिख दिये वे अवश्य होते हैं फिर विष्णु से कहा कि तुम मुख्य हमारे रूप हो हममें और तुममें कुछ अन्तर नहीं है वेदों ने हमारी तुम्हारी बराबरी कही है अब तुम और किसीका शीश काटकर बालक पर लगा दो तुम्हारी कृपा से बालक जी उठेगा विष्णुजी तुरन्त गरुड़ पर चढ़कर चले और वेगही शिवकी आज्ञानुसार उत्तर की ओर चक्र लिये हुये पहुँचे और पुष्पभद्रा नदी के तीर पर जाकर वन में एक हस्ती को हथिनी और बच्चों समेत देखा कि वह अपने सबों समेत उत्तर की ओर शिर किये सो रहा है विष्णु ने तुरन्तही उस हस्ती का शीश चक्र से काटकर लोहू टपकता हुआ गरुड़ पर रख लिया और चाहा कि चलूं इतने में हथिनी जगी और बहुत चिल्लाकर अपने बच्चे को जगाया और फिर बहुत रोई और फिर विष्णु को चारों ओर से घेर लिया और उत्तम रीति से स्तुति की और कहा कि हे विष्णो! यह आपने कैसा कर्म किया आप तो धर्मरूप हैं जो हमारे नर को जिलाते नहीं तो हम सबके मारने का पाप आप पर होगा विष्णुजी ने प्रसन्न होकर उसके शिर से एक और शिर लगाकर उसको ज़िन्दा कर दिया और कहा कि एक कल्प तक तुम जीते रहोगे और तुरन्त विष्णुजी चले और हम सबके और गिरिजा के पास जाकर शिर दे दिया गिरिजा ने उस शीश को युक्ति से जोड़ दिया और शिवजी ने अपनी दयादृष्टि से जिला दिया जिसके देखने से गिरिजा इतनी

प्रसन्न हुईं कि हमसे वर्णन नहीं हो सक्ता और तुरन्त दूध पिला-कर लाड़ प्यार किया और विष्णु की बड़ी प्रशंसा हुई और कहा कि तुम शिवरूप हो और तीनों लोक को आनन्द देनेवाले हो हमने यह शिव का चरित्र जान लिया है विष्णुजी ने प्रसन्न होकर अपने गले की कौस्तुभमणि निकालकर लड़के को पहिना दी और विष्णु और हमने बालक को आशीर्वाद देकर हमने अपना भूषण भी लड़के को पहिना दिया इसी प्रकार हिमाचल देवता मुनि आदि सबोंने बहुतसी आशिषें दीं और दान मान से सब ब्राह्मण भङ्गन अयाचक होगये और ऐसा बड़ा उत्सव हुआ कि सृष्टि भर प्रसन्न होगई देवताओं ने दुन्दुभी बजाई गिरिजा लड़के को खिलाने और प्यार करने में प्रवृत्त रहकर आनन्दसागर में डूब गई ।

इक्कीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शनैश्चर लज्जा के कारण एक कोने में चिन्तायुक्त बैठा था संयोग से गिरिजा ने देख लिया सो शनैश्चर से कहा कि तुमने अपनी दृष्टि से हमारे पुत्र का शिर उड़ा दिया इससे मैं भी तुमको शाप देती हूं कि तुम भी अङ्ग-हीन हो जावोगे यह सुन सूर्य कश्यप और यमराज क्रोध से पूर्ण हो गये और तुरन्त उठकर चाहा कि विष्णु को शाप देवें विष्णु ने हमसे और देवताओं से कहा कि इनकी सेवा करके उनको दूर करो सो हम और देवताओं समेत उनको समझाने लगे कश्यप ने कहा कि यह शनैश्चर हमारा पोता निष्पाप है गिरिजा ने मना करने पर भी आप अपने लड़के को दिखलाया था शनैश्चर का क्या अपराध है हम भी अपना ब्रह्मतेज गिरिजा को दिखाते हैं जिससे गिरिजा के पुत्र का अङ्गभङ्ग होता है यमराज बोले कि गिरिजा ने किस पाप पर शनैश्चर को शाप

दिया हम भी गिरिजा को शाप देते हैं क्योंकि शत्रु के मारने में कुछ दोष नहीं हमने यमराज को मना किया कि आप क्या स्त्रियों की बानि को नहीं जानते यह वचन सुन उसने क्रोध दूर किया और गिरिजा ने भी शान्त हो शनैश्चर से कहा कि तुम सब ग्रहों के राजा होकर शिव के प्यारे अमर हो जावोगे और हमारे वर से तुम शिव के बड़े भक्त होगे हमारे शाप से कुछ खण्डित हो जाओ पर तुमको कुछ दुःख न होगा यह कह गिरिजा भीतर चली गई और शनैश्चर ने सभा में विष्णु और हम सबको प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम किया और नये शिर से आनन्द मङ्गल गाना नाच होने लगा शिवजी ने पहले सब सामग्री इकट्ठी कर गणपति की पूजा की फिर विष्णुजी हम देवता मुनि आदि सबने गणेशजी को पूजा और अपने भूषण सबने गणपति को दिये और तीनों देवता एक ही बेर कहने लगे कि हे पुत्र! तुम्हारी सबसे पहिले पूजा हुआ करेगी कि वहकार्य निर्विघ्न पूर्णहो तुमको ब्रह्मज्ञान प्राप्त होगा तुम परम सिद्धि देनेवाले होगे और अति कृपा से अपने समान कर लिया फिर सब देवताओं की सम्मति से गणपति के यह नाम रक्खे गये लम्बोदर, एकदन्त, विघ्नेश, शूर्पकर्ण, हेरम्ब, गणेश, गजवदन, विनायक आदि अनेक जो विस्तारभय से नहीं लिखे फिर सबने बहुत सी चीज़ें गणेश को दीं अर्थात् शिवने योग और ब्रह्मज्ञान विष्णुजी ने अपनी माला और विद्या जो हर समय प्रसन्नता देती है और हमने कमण्डलु और धर्मराज ने सिंहासन और इन्द्र ने दूसरा सिंहासन रत्नों का जड़ा हुआ और सूर्य ने वस्त्र और दो मणि और कुण्डल और छत्र चन्द्रमा ने मणि का माला कुबेर ने मुकुट और असंख्य धन और अग्नि ने वह्निशुद्धांशुक पवन ने जड़ी हुई अँगूठी पार्वतीजी ने हार और सावित्री ने कण्ठ का भूषण और

पृथ्वी ने चढ़ने के लिये मूषक और देवताओं ने शीतगिरि देकर पूजन किया इस प्रकार हर एक ने अपनी २ वस्तु देकर जय जय शब्द किया और विष्णु ने देवताओं समेत एक बड़ी स्तुति गणपति की की कि जिसको जो मनुष्य तीनों काल पढ़े तो कभी उस पर किसी प्रकार की आपत्ति न पड़े और न उसको किसी समय पर भय प्राप्त हो यदि विदेश जाने के समय पढ़े तो उसका उद्योग सुफल हो और उसके सब कष्ट नष्ट हो जावें इसी प्रकार वह स्तोत्र बड़ा फल देनेवाला है फिर शनैश्चर ने विष्णुजी से विनती की कि आप गणपति के तेज का बखान करें सो विष्णुजी ने इस शनैश्चर की विनती मान गणपति का कवच कह सुनाया हे नारद ! वह कवच अति गुप्त है और सिद्ध है फिर विष्णुजी और हम बिदा होकर अपने घरको गये इतना कह सूतजी बोले कि हे शौनको ! यह कथा सुन नारद ने संदेह किया कि हमने गणपति का चरित्र और प्रकार से सुना है और तुमने और ही रीति से वर्णन किया अर्थात् हमने सुना था कि गणेश को गिरिजा ने अपने शरीर के मैल से उपजाया शिव ने शीश काट डाला आप विस्तार से वर्णन करें ।

बाईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हां कल्पभेद से दूसरी रीति से गणपति के उत्पन्न होने की जो कथा है उसको हम वर्णन करते हैं कि जब शिव ने गिरिजा से विवाह किया और उसको घर लाये और दैत्यों का वध करके विहार में प्रवृत्त हुये तो संयोग से एक दिन गिरिजा की सहेलियों ने कहा कि देखो शिव के असंख्यगण हैं और तुम्हारे एक भी नहीं है यद्यपि शिव के गण तुम्हारे अधीन हैं पर तुम भी कोई गण उपजाकर उसको अपने द्वार का द्वारपाल बनाओ कि उस गण की रक्षा से किसी

गण के आने जाने का कुछ भय न रहे गिरिजा ने प्रसन्न होकर कहा कि अच्छा समय पर ऐसाही होजावेगा तथा च एक समय गिरिजा नन्दी को द्वार पर रक्षाके निमित्त बिठा आप स्नान करने लगीं शिव लीला करके द्वार पर आये और चाहा कि भीतर जावें पर नन्दी ने मना किया शिव नन्दी को डरवा कर भीतर चले गये गिरिजा अन्य स्त्रियों के समान ऐसी दशा में शिवको देख अति लज्जित हुईं और लज्जा से अपने शरीर को छिपाते हुये भाग चलीं और अपनी सहेलियों के वचन को स्मरण किया फिर कई दिनों के अनन्तर गिरिजा ने इच्छा की कि ऐसा गण उपजाना चाहिये जो हमारे अधीन अति बलवान् पराक्रमी शिव के गणों से अधिक और तेजस्वी हो यह विचार अपने शरीर से मैल निकाल एक मूर्ति बनाई और गणपति नाम लेकर जीवदान दिया वह अति सुन्दर मानो रूप का सागर उपजा गिरिजा अति प्रसन्न हुईं और कहा कि तुम हमारे पुत्र और श्रेष्ठ गण हो फिर लाड़ प्यार किया और अति प्रसन्न होकर भूषण और पट्टवस्त्र दिया और गणपति ने प्रणाम किया और कहा जो काम मुझे सौंपो वह पूरा करूं गिरिजा बोलीं कि तुम हमारे द्वारपाल होजावो और किसी के टालने से कभी द्वारसे न हटना और न कोई हमारी आज्ञा बिन भीतर आनेपावे तुमको कुछ किसी से भय न होगा फिर गणपति को हृदय से लगाकर द्वार पर बैठाया सो गणेशजी हाथ में दण्डा लेकर द्वारपर बैठे और गिरिजाने स्नान की इच्छा कर सब सेवकों पर सामग्री जोड़ने को कहा और स्नान के निमित्त बैठीं कि शिव गणों समेत आपहुँचे और गणोंको बाहर छोड़ चाहा कि आप भीतर जावें पर गणपतिने रोका और कहा कि अभी भीतर जानेका समय नहीं है क्योंकि

हमारी माता स्नान कर रही है यह कह अपने डण्डे को आगे कर शिवको वहींपर रोक लिया शिवने कहा कि तुम कौन हो जो मुझे नहीं जानते न भीतर जाने देते हो हम शिव गिरिजा-पति इस मन्दिर के स्वामी हैं तुम बड़े बुद्धिहीन मालूम होते हो तुम किसके पुत्र हो किसने तुमको उपजाया क्या बकते हो यह कह जब शिव भीतर चले तो गणपतिने तुरन्त ही अपना डण्डा शिवपर मारा और कहा कि कौन शिव और कहां रहते हो किस कार्य के निमित्त हमारी माता के पास जाते हो हम गिरिजा की आज्ञा बिन किसी को चाहे कैसाही बड़ा हो भीतर नहीं जाने देंगे जब शिव फिर प्रश्नोत्तर के उपरान्त भीतर जानेलगे तो फिर गणपति ने डण्डा मारा तबतो शिव ने क्रोधित होकर अपने गणों को बुलाया कि तुम सब जाकर इससे पूछो कि कौन है गणों ने आकर पूछा गणपति ने कहा कि हम गिरिजासुत हैं तुम कौन हो जो हमसे पूछने आये हो और फिर बड़ी वार्ता हुई सो गणों ने जाकर उनसे कहा कि वह नहीं उठता शिव ने कहा कि उसको द्वारसे उठादो गणों ने बहुतेरा चाहा कि गणाधिप को उठा लेवें और फिर भी परस्पर बड़ा झगड़ा होने लगा इसी समय में शिव भी निकट गये और भीतर से गिरिजा ने यह शब्द सुनकर अपनी सहेलियों से कहा कि बाहर जाकर देखो कि क्या हो रहा है।

तेईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! गिरिजा की सहेलियों ने सब हाल आंख से देखकर गिरिजा से कह दिया और कहा कि न जानिये शिव की क्या बानि है कि वे बेसमय आया करते हैं अभी केवल मुँह ही से तकरार होती है पर जाना जाता है कि तुम्हारा पुत्र विजय पाकर आवेगा इस समय तुमको उसकी

सहायता करना उचित है गिरिजा ने कहा कि तुम गणपति से कह दो कि शिव किसी प्रकार न आने पावे सो सहेली ने यही आज्ञा गणपति को सुना दी तब गणपति ने शिव के गणों से कहा कि तुम्हारे मनमें जो हो वह करो हम सब तरह से तय्यार हैं हमारी आज्ञा बिना बलात्कार तुम्हारा जाना कठिन है शिव के गण फिर दुःखी होकर शिव के पास गये और सब वृत्तान्त वर्णन किया शिव ने कहा वह तो अकेला है तुम इतने इकट्ठे होकर क्यों युद्ध नहीं करते यह कहकर चुप हो रहे इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! देखो शिवकी लीला कैसी अचरज देनेवाली है जो शिव एक बाण से सृष्टि भर को नष्ट करसक्ते हैं वह अपने पुत्र के साथ लीला करके युद्ध की इच्छा रखते हैं निदान शिवकी आज्ञा पाय गण हथियार बन्द होकर गणपति के समीप पहुँचे और कहा कि हे बालक ! क्या तू चाहता है कि हम जलकर भस्म हो जावें तुम यहां से तुरन्त भाग जाओ नहीं तो इसबेर तुमको मारही डालेंगे तेरी ढिठाई हमने अबतक सही है तब गणपति ने सहनशीलतापूर्वक उत्तर दिया कि ऐसी लम्बी क्यों लेते हो सामने आवो तुम तो बड़े वीर हो युद्ध किये हुये हो हम तो केवल अज्ञान बालक हैं और कभी युद्ध को आंख से भी नहीं देखा पर तो भी हम युद्ध से मुख न मोड़ेंगे शिवजी गिरिजा के पुत्रके बलको देखकर धन्य २ कहेंगे यह सुनकर शिवके गणोंने गणपति के ऊपर धावा किया और दोनों ओरसे युद्ध होने लगा शिव के गणों ने शूल बाणादि सब शस्त्र गणपति के ऊपर चलाये पर गणपति ने उनके सब हथियार दण्ड से काटडाले और सबको युद्धस्थल से भगा दिया कुछ दूर भागकर फिर वे अपने को धिक्कार देते हुये लौट आये इस विचार से कि शिव को क्या मुँह दिखावेंगे कि एक

लड़के से परास्त होकर भाग आये न जानिये इस छोटे से बालक ने यह बल और वीरता कहां से पाई और फिर गणपति को पुकार कर कहा कि अब तक तो शिशु जानकर हमने तुमको छोड़ दिया है पर अब नहीं छोड़ेंगे यह कहकर बहुत से हथियार गणपति की ओर चलाये गणपति ने भी सबको मारा तब बड़ाभारी युद्ध हुआ निदान फिर भी शिवके गण परास्त होकर भागे और गणपति उसी तरह द्वार पर स्थित हुये ।

चौबीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवने ऐसा चित्र विचित्र करके केवल अपने गणों का गर्व दूर कर दिया और अपनी शक्ति प्रकट करके दिखाई कि तीनों भुवन शक्ति के अधीन हैं वही शक्ति शिवकी स्त्री है हे नारद ! ऐसे समय में तुमने आकर हमसे यह हाल सब कह सुनाया और जब कि तुमने विष्णुलोक में जाकर विष्णु से यह सब समाचार कहा तो विष्णुजी बड़ा आश्चर्य करने लगे सो हम विष्णुजी देवता आदि ने शिवजी के समीप जाकर प्रणाम किया और स्तुति करने लगे और विनय की कि इस समय कौन लीला आपने कर रक्खी है कहिये शिवने कहा कि हमारे द्वार पर एक बालक खड़ा है विकट है कि वह प्रलय करदेगा इससे तुम सब जाकर युक्ति से उसको प्रसन्न करो और ऐसा उपाय करो कि जिसमें प्रलय न हो सबोंने कहा कि हे शिव ! यह सब तुम्हारी लीला है कि एक बालक ऐसा युद्ध कर रहा है यह कह सब गणपति के पास गये हमको आते हुये देख गणपतिने एक बाल उखाड़ लिया हम सबने कहा कि क्षमा करो आपसे कोई युद्धकी कांक्षा नहीं रखता यह हमने कहा था कि गणपतिने तुरन्त अपने परिघ को सँभाला कि हम सब लौटकर शिवके पास गये तब शिवने क्रोध करके

इन्द्र आदि से कहा कि तुम जाकर उस बालक को वध करो तुम्हारा बड़ा यश होगा सो इन्द्रादि युद्ध के निमित्त तत्पर होकर गणपति के ऊपर बाण और अन्य शस्त्र वर्षाने लगे उसी समय में शिव और गिरिजा ने दो शक्तियां उपजाईं जो तुरन्त युद्धस्थल में पहुँचकर दोनों ओर के शस्त्र अपने ओष्ठ खोल-कर निगलजाती थीं और जिस प्रकार कि पर्वत समुद्र के बीच में स्थिर है उसी प्रकार गणपति ने अकेले सेना को दुःखी कर दिया और वे सब वे हथियार खाली हाथ युद्धस्थल में खड़े रहे और कहा कि अब हम क्या करें ? कोई शस्त्र बाकी नहीं रहा जिससे युद्ध करें और केवल वीरभद्र देखते थे कि दोनों शक्तियों ने प्रकट होकर सबों को दुःखी कर दिया है निदान हे नारद ! तुमने देवताओं समेत शिव के निकट जाकर कहा कि हमको जान पड़ता है कि यह सब तुम्हारी लीला है अब जो आप शीघ्र ही सुधि नहीं लेते तो प्रलय हो जावेगी फिर शिव की आज्ञानुसार इन्द्र विश्वामित्र यमराज आदि ने पहुँचकर गणपति के ऊपर अपने २ शस्त्र चलाये पर वृथा ही गये गणपति ने अपने दण्डे से सबको मारा जिससे हाहाकार मच गया और सब देवताओं ने शिव की शरण में रक्षा पाई हे नारद ! उस समय तुमने शिव से कहा कि हे शिवशङ्कर, संसार के उपजाने-वाले ! अपनी लीला को जो फैला दी है समेट लीजिये और संसार की रक्षा कीजिये कदाचित् यह गिरिजा का गण जीता रहा तो यह प्रलय कर देगा इसलिये इस गण का शिर काट लीजिये आपके सिवा और कोई मारनेवाला प्रकट नहीं जाना जाता यह कह तुम चुप हुये और शिव हँसे ।

पचीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह वचन तुम्हारा सुनकर

शिव लड़ाई के लिये अपने उत्तम २ शस्त्रों समेत तत्पर हुये और अतिक्रोधित होकर विष्णु और प्रसिद्धगणों को साथ लिया और डमरू बजा दिया तब सब देवता जो कई वेर युद्धस्थल से भाग चुके थे वीरता से गरजने लगे और विष्णु ने भी आप गणेश से युद्ध किया जो शस्त्र कि विष्णु ने गणपति के ऊपर प्रलय की अग्नि के समान चलाया वह गणेशजी ने अपने दण्ड से दो खण्ड कर डाला निदान बहुत युद्ध करने के उपरान्त विष्णु ने शिव से कहा कि हम इस गण का वध करे डालते हैं शिव बोले कि बहुत अच्छा और गणपति ने अपनी इतनी वीरता प्रकट की कि सब देवता युद्धस्थान से पीठ दिखाकर भाग गये तब विष्णु ने अपने मुख से गणेशजी की प्रशंसा की और कहा कि आज तक कोई इतना नहीं लड़ा विष्णु यह कह रहे थे कि गणपति ने अपना परिघ उठाकर मारा पर विष्णु ने अपने परिघ से उसको काट डाला गणपति ने एक का प्रहार विष्णु की छाती में मारा जिसको विष्णु न सहकर धरती पर गिर पड़े तब हाहाकार मच गया फिर विष्णुजी शिव की कृपा से उठ खड़े हुये इसी प्रकार बड़ी देर तक दोनों में युद्ध रहा कोई परास्त न हुआ निदान विष्णु ने एक ही वेर असंख्य बाण गणपति पर चलाये और इस विचार से कि विजय होगी अपना शङ्ख बजा दिया यह शङ्ख का शब्द सुनकर सब देवता लौट आये और फिर युद्ध करने लगे और एक ही वेर सब देवता गणपति पर चढ़ धाये गणपति ने गिरिजा को स्मरण कर अपनी मुष्टिका चलाकर सब देवताओं के शस्त्र निष्फल कर डाले और इतने वेग से शस्त्र चलाये कि कोई नहीं देखता था कि कब बाण लिया और कब मारा उस समय सब देवता आदि अति आश्चर्य में हुये पृथ्वी कांप गई पर्वत हिल गये और यह जान पड़ा कि

प्रलय होती है विष्णु ने सबको दुःखी जान और प्रलय के चिह्न देख दया की राह से तुरन्त गणपति पर कूद पड़े और वेग ही दौड़कर गणपति का शूल से शिर काट डाला तब हम और देवता आदि निर्भय होकर अति प्रसन्न हुये और शिवजी की स्तुति करने लगे।

छब्बीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! तब तुमने शिवकी आज्ञा-नुसार गिरिजा के पास जाकर युद्ध का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त कह सुनाया और तुमने अपने वचन की वाचालता को इस प्रकार से कहकर बताया कि हे गिरिजा! देवताओं की दुष्टता को देखो कि आपके पुत्र का वध कर डाला उन्होंने क्या यह अच्छा किया है तुम्हारे प्रताप और तेज का कुछ विचार न किया उचित है कि तुम अपना तेज देवताओं को दिखा दो कि वे अपने कर्मों का दण्ड पावें और तुम्हारी बड़ाई बनी रहे यह कहकर हे नारद! तुम तो चले गये और फिर तुम्हारी इच्छा युद्ध देखने की थी गिरिजा अपने गण की दुर्दशा सुन इकबारगी रो उठी और बहुत ही शोककर मूर्छित हो गई अपने शरीर से सौ शक्तियां उपजाईं और चाहा कि उनके द्वारा सेना भर को नष्ट कर डालूं उन शक्तियों का यह स्वरूप था कि शरीर महाविकराल और तन बदन बहुत ही भयानक हाथ पांव ताड़के वृक्ष के समान उदर बहुत बड़ा उँगलियां नाना प्रकार की छोटी बड़ी रङ्गीन उन्होंने हाथ जोड़कर गिरिजा से विनती की कि जो आज्ञा हमको मिले वह हम पूर्ण करें गिरिजा ने अति क्रोध से कहा कि जितने देवता सेना में हैं सबको खा जाओ कोई बचने न पावे क्योंकि उन्होंने हमारा पुत्र मारा है सो वे सब वहां पहुँच-कर देवताओं को भक्षण करने लगीं और विष्णु और हम सब

देवता दुःखी होकर कहने लगे कि क्या प्रलय आ गई है या शिव ने अपनी शक्ति का बल दिखाया है यह कहकर हम सबने शिव की ओर देखा और हे नारद! तुमने शिव की आज्ञा से कहा कि जब तक गिरिजा प्रसन्न न होंगी यह प्रलयरूप कष्ट नष्ट न होगा यह सुन तुम और सब देवता गिरिजा के समीप जाकर हाथ जोड़ शिर झुका स्तुति करने लगे और विनय की कि वास्तव में हम अपराधी हैं तुम क्षमा करो क्षमा करो प्रलय होती है हम आपके सामने काला मुँह किये खड़े हैं गिरिजा ने कहा कि जो हमारा पुत्र जी उठे और सब देवता पहिले उसकी पूजा करें तो हम प्रलय न होने देवें सो देवताओं ने यह हाल शिव से वर्णन किया तथाच शिव ने गणपति के शरीर को अच्छे प्रकार धोया और कहा कि उत्तर की ओर जाकर ढूंढ़ो जो जीव पहिले मिले उसका शिर काटकर इसके शरीर में जोड़ दो यह जी उठेगा सो विष्णु ने जाकर प्रसून भद्रानदी के वन में एक हाथी को अपनी मादा और एक अपने बच्चे समेत सोते हुये देखा और तुरन्त हाथी का शिर काट अपने गरुड़ पर रख चाहा कि चलूं पर हथिनी जग उठी और उसने इनकी ऐसी स्तुति की कि विष्णु ने प्रसन्न हो दूसरा शिर उपजाय धर से जोड़ दिया और वह हाथी फिर जी उठा और उसको आशिष दी कि तुम एक कल्प तक फिर जीते रहोगे और फिर शिव के पास पहुँच कर शिर गणपति के धर से जोड़ दिया और शिवने प्रसन्न होकर जीवदान दिया और सबके दुःख दूर हो गये और सबको आनन्द हुआ ।

सत्ताईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गिरिजा ने अपने पुत्र को जीता देख आनन्द मनाया और बहुत प्रकार के वस्त्र देकर कहा कि

इस समय हम तुम्हारे भाल में सिन्दूर देखती हैं सो तुम्हारी पूजा सिन्दूर से हुआ करेगी जो कोई तुम्हारी पूजा करेगा उसके पास सिद्धियाँ बनी रहेंगी यह हमारी आज्ञा है और शिव ने भी अति प्रसन्नता से कहा कि हे देवताओ! यह हमारा पुत्र है और गणपति इसका नाम है सो गणपति ने भी उठकर सबको प्रणाम किया और कहा कि हमारा अपराध क्षमा करो सो तीनों देवताओं ने कहा कि तुम्हारी पूजा हम तीनों देवताओं के समान होगी और पहिले तुम्हारी पूजा हुये विना पूजा का कुछ फल न मिलेगा यह कह सबने पहिले गणपति की पूजा की और प्रणाम कर यह वरदान दिया कि जो कि तुम भाद्रकृष्णचतुर्थी को उपजे हो इससे तुम्हारा चौथ को व्रत होगा जो बहुत ही सुखदायी होगा और सबको तुम्हारी सेवा से आनन्द मिलेगा सबको तुम्हारी पूजा आदि करनी चाहिये फिर विष्णु और सब देवताओंने गणपति की एक अति उत्तम और पवित्र स्तुति की इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनियो! जब ब्रह्माजी इतना कह चुके तो आनन्द में मग्न हो गये उसी आनन्द में एक स्तुति गणेश की निर्माण कर नारद को सुनाई फिर कहा कि देवता शिव से बिदा होकर चले गये।

अट्ठाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! गिरिजा के दोनों पुत्र अर्थात् स्कन्द और गणपति सुबह को उठकर शिव गिरिजा को प्रणाम करते और दिन २ उनमें प्रेम बढ़ाते एक दिन शिव ने गिरिजा से कहा कि अब हमारी इच्छा है कि हमारे पुत्रों के विवाह हो जावें हमको स्कन्द और गणपति बराबर प्यारे हैं पहिले हम किसका विवाह करें यह बात माता पिता से सुनकर दोनों ने परस्पर बड़ी तकरार की स्कन्द कहते थे कि पहिले हमारा

विवाह होना चाहिये और गणपति भी यही कहते थे तथाच शिव गिरिजा ने दोनों को बुलाकर कहा कि तुम दोनों बराबर हो हम इस बातकी प्रतिज्ञा करते हैं कि तुममें जो पृथ्वी भरकी परिक्रमा करके पहिले लौट आवे उसका पहिले विवाह कर देवेंगे सो दोनों पृथ्वी की परिक्रमा को चले पर गणपति ने यह विचारा कि हमको सृष्टि भरके परिक्रमा की शक्ति नहीं है हम क्याकरें इसी चिन्ता में कुछ विचार किया और स्नानकर माता पिता के सामने खड़े होकर बिनती की कि हम आपकी पूजा करेंगे पूजन के स्थान पर बैठिये यह सुन शिव और गिरिजा आसन पर बैठे और गणपति ने बार २ परिक्रमा कर दोनों की पूजा की फिर माता पिताने कहा कि स्कन्द तो जाचुके तुम भी पृथ्वी की परिक्रमा को जाओ गणपति ने विनय की कि क्या हमने पृथ्वी की परिक्रमा नहीं की तुम धर्म की मूर्ति होकर ऐसा कहते हो तब शिव गिरिजा ने कहा कि कब तुम सृष्टि की परिक्रमा कर आये गणपति बोले कि तुमको वेद त्रिभुवन का रूप कहते हैं सो हमने तुम्हारी परिक्रमा में तीनों लोक की परिक्रमा क्या नहीं की इसके सिवाय वेद लिखता है कि जो मनुष्य माता या पिता की परिक्रमा करता है उसको संसार भर की परिक्रमा का फल मिलता है जो मनुष्य कि माता पिता को घर में छोड़कर आप तीर्थ को जाता है उसको पितरों के मारने का पाप लगता है लड़के को माता पिता के चरण ही बड़े तीर्थ हैं माता पिता ब्रह्मा विष्णु और शिव हैं इनसे बढ़कर और कोई नहीं इसी प्रकार स्त्रियों को अपने पति की सेवा से अधिक और कोई धर्म नहीं कहागया अब आप या तो वेद के मार्ग को छोड़ दें नहीं तो हमारा विवाह करदें शिव गिरिजा गणेश का यह वचन सुनकर दुःखी हुये और गणपति की ऐसी चतुराई देखकर अति प्रसन्न हुये

और कहा तुमको शुभमति उपजी है जिससे तुमने ऐसे धर्म के वाक्य कहे और हम तुमको यह कहते हैं कि तुम्हारा वचन वेद पुराण और शास्त्र के समान विश्वासयोग्य समझा जावेगा हम तुम्हारा विवाह कर देवेंगे इतने में शिवजी की इच्छा जान विश्वरूपने अपनी दो कन्याओं के साथ जिनका सिद्धि और बुद्धि नाम था गणपति के साथ विवाह कर दिया और विवाह में बड़ी धूमधाम हुई जैसा कि शिवजी के विवाह में हिमाचल की ओर से सब बातें हुई थीं ऐसी स्त्रियां पाकर गणपति अति प्रसन्न हुये और कितने समय के उपरान्त गणपति के दो पुत्र उपजे अर्थात् सिद्धि से तो क्षेम और बुद्धि से लाभ उनके समान संसार में कोई पण्डित और कलावान् न हुआ इतने में स्कन्द संसारभर की परिक्रमा करके लौट आये तो हे नारद! तुमने पहिले स्कन्द के मनको बहुत बहकाया और स्कन्द से कहा कि देखो माता पिता ने तुमको बहकाकर गणपति का पहिले विवाह कर दिया और गणपति ने दो स्त्रियों से दो पुत्र उपजाये हैं जब कि माता पिता ऐसा छल करते हैं तो और क्यों न करें हमारी समझ में यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया जो तुम्हारे मन में आवे अब तुम वही बात करो जो आपही माता पिता अपनी सन्तान को बेंचे या विष दे देवे या राज्य धन द्रव्य आदि लूट लेवे तो मनुष्य किसके पास जाकर अपना दुःख कहे इसमें यही उत्तम है कि फिर उनका मुख न देखे हे नारद! ऐसी बातों के करने से तुम्हारा तेज घट गया और स्कन्द अपने माता पिता के घर गये और अपने माता पिता की स्तुति करने के अनन्तर अति दुःखी होकर स्कन्दजी क्रौञ्चपर्वत पर चले गये यद्यपि माता पिता ने जाने से वर्जित किया पर स्कन्दजी न लौटे हे नारद! शिवजी के चरित्र ऐसे

आश्चर्य देनेवाले हैं कि कोई उनको नहीं जानता जो चाहते हैं वही करते हैं जैसा कि वेद कहते हैं वह नाना प्रकार के अवतार धारणकर और अद्भुतचरित्र रच अपने भक्तोंको प्रसन्न करते हैं हे नारद ! जब से स्कन्दजी क्रौञ्चपर्वत में स्थित हुये तब से क्रौञ्चपर्वत की और ही दशा होगई वह पर्वत यश बढ़ानेवाला पाप घटानेवाला और अति आनन्द देनेवाला होगया सो तब से स्कन्दजी उसी पर्वत पर स्थित हैं जिनके दर्शन से सब पाप छूटजाते हैं और हर मास की पूर्णमासी को सब देवता और मुनि एकही साथ जाकर स्कन्द के दर्शन करके कृतार्थ होजाते हैं और जो कोई उस दिन मल्लिकार्जुन के दर्शन करे उसके सब पाप जल जावें और यद्यपि शिवजी और गिरिजा ने क्रौञ्च में जाकर स्कन्द को मनाया पर फिर स्कन्दजी लौट न आये वरन शिवजी के आने का हाल जानकर इच्छा की कि कहीं और जगह जाकर स्थित होवें सो वहां से तीन योजन दूर जाकर स्थित हुये शिवजी हर पूर्णमासी को वहां जाया करते हैं हे नारद ! यह चरित्र हमने तुमको सुनाया जिसके सुनने से सब पाप नष्ट होजाते हैं और मल्लिकार्जुन की बड़ाई वेद गाते हैं और उनके दर्शन से अन्त में कैलास मिलता है और इस गणपति के चरित्र को जैसा कि हमने वर्णन किया कोई सुनेगा तो वह संसार में आनन्द और अन्त में शिव का धाम पावेगा ।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसंवादे चतुर्थः खण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

शिवपुराण भाषा



पञ्चम खण्ड (युद्धखण्ड)

पहिला अध्याय।

सूत पौराणिक बोले कि हे शौनको! नारद ने फिर ब्रह्माजी से कहा कि आप वर्णन करें कि सदाशिवजी ने क्योंकर दैत्यों का वध किया ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब कि स्कन्द ने तारक का नाशकर देवताओं को आनन्द दिया तब तारक के तीनों पुत्र अर्थात् तडिन्माली तारकाक्ष और कमलाक्ष तप का उद्योग कर महाकठिन तप में प्रवृत्त हुये पहिले केवल हमारे ध्यान में एक पांव से खड़े रहे और सौ वर्ष पर्यन्त केवल जल पीकर और सहस्र वर्ष तक केवल पवन भक्षण कर तप किया किये और फिर एक हजार वर्ष तक केवल अंगुष्ठ के बल खड़े रहे फिर दोनों हाथ ऊपर को उठाये हुये हज़ार वर्ष तक स्थित रहे तो उनके पास जाकर हमने कहा कि तुम्हारे तप से हम अति प्रसन्न हुये जो वर तुमको चाहिये वह मांगो तीनों दैत्यों ने कहा कि जो आप प्रसन्न हैं तो हमको यह वरदान दीजिये कि हम किसी के हाथ से मारे न जावें हमने कहा कि तुम तीनों यह वरदान मत मांगो बरन जो जिसको इच्छा हो तुममें से वह उस वस्तु को मांगे यह सुन तीनों दैत्यों ने विचारकर कहा कि इसी स्थान पर एक पुर बस जावे जहां आपकी मूर्ति स्थित हो और हम तीनों के लिये एक २ नगर अलग २

जिनका अन्तर हज़ार २ कोस का हो तय्यार हो जावें और यह तीनों पुर एक ही रीति के हों और जो मनुष्य केवल एक ही बाण से तीनों पुरों को नष्ट करे वही मनुष्य हमारा भी वध करे यह सुनकर हमने कह दिया कि यही होगा सो हमने तुरन्त मयदानव को बुलाकर आज्ञा दी कि तीन नगर बनावो और हम यह कहकर चले गये और मय ने हमारी आज्ञा से तीनों नगर तय्यार कर दिये हर एक नगर सौं २ योजन बड़ा था और उसमें स्वर्ग से भी अधिक आनन्द था और हमने क्रम से तीनों को तीनों पुर बांट दिये जिन्होंने उन नगरों में स्थित होकर अति आनन्द पाया कोई तीनों भुवन में वस्तु न थी जो उनके यहां न हो और असंख्य सेना भी थी और हर एक के घर में शिवालय बने थे जिसमें सब लोग शिवजी की पूजा करते और दिन दिन हवन और यज्ञ हुआ करते जो सामग्री कि तीनों लोक में किसी के घर न निकले वह छोटी २ जातियों के यहां भी वर्तमान थी स्त्रियां पातिव्रतधर्म में स्थित थीं और तीनों दैत्य शिव के भक्त थे और शिवजी की पूजा के निमित्त उन्होंने नानाप्रकार के मन्दिर बनवाये वहां यह रीति थी कि शिवजी की पूजा विना कोई भोजन न करता क्योंकि तीनों दैत्यों ने इस बात की मनाही की थी कि सब लोग शिवजी का पूजन करें अर्थात् शिवजी को पार्थिव रूप मन में समझकर पूजा किया करें और जो कोई आज्ञा न मानेगा तो दण्ड पावेगा अर्थात् वध किया जावेगा और वेद पुराण के मत के सिवाय और कोई बात धर्म के विरुद्ध उन नगरों में नहीं होने पाती थी ब्राह्मण रातदिन शिव २ कहा करते थे यहां तक कि जितने पृथ्वी पर धर्म हैं वे सब उन नगरों में होते थे जब इनका तेज बढ़ा तो देवताओं ने घबड़ाकर बड़े २ दुःख उठाये उनके शरीर में अग्नि के सदृश जलन

उपजी और सब मिलकर हमारे शरण हुये और मेरी स्तुति कर कहा कि अब सब देवता त्रिपुर के तेज से जले जाते हैं और अपने २ पदों से गिरे जाते हैं आपके सिवाय और कौन रखनेवाला है यह सुनकर हमने कहा कि उन्होंने हमारा बहुत तप करके इस प्रकार का वरदान प्राप्त किया है हम उनको जाकर वेद के विरुद्ध क्योंकर मार सक्के हैं और जो कि वे शिवजी के सेवक हैं और उन्हीं की कृपा से नाना प्रकारके आनन्द उठाते हैं देखो शिवजी के भक्त पर कोई शस्त्र नहीं चल सक्का उनकी भक्ति से हज़ारों करोड़ों आपदायें नष्ट हो जाती हैं और हर एक मनुष्य उनके तप के छोड़ने से तुरन्त नष्ट हो जाते हैं सो इस वर्णन के अनुसार हम एक इतिहास कहते हैं कि रावण जो शिवजी का भक्त हुआ है उसका कोई वध न कर सका वरन विष्णु का चक्र भी कुण्ठित होकर रावण का शिर जुदा न कर सका तब आकाशवाणी हुई कि हे विष्णो! जो किसी कारण रावण शिवजीकी सेवा छोड़ देवे और शिवजी के विरुद्ध हो जावे तो निस्सन्देह शिवजी उसकी सहायता न करेंगे इसलिये तुमको उचित है कि अवतार लेकर शिवजी का नाम जपो जब शिवजी प्रसन्न होकर तुमको अपना बाण कृपा करेंगे तब रावण तुम्हारे हाथ से मारा जावेगा यह सुनकर विष्णुजी ने शिवजी की बड़ी पूजा की और शिवजी ने रावण की उत्तम बुद्धि को नष्ट कर दिया जिससे रावण ब्राह्मणों को दुःख देने लगा और विष्णुजी ने भी रामचन्द्र का अवतार लेकर शिवजी का तप कर शिवजी से वह बाण प्राप्त किया जो प्रलय करनेवाला है और उसी बाण से रावण का वध करके सीता को प्राप्त किया सो इसका तात्पर्य यह है कि अब हम तुम सब शिवजी की शरण में चलें और उनके चरण पकड़कर उनको प्रसन्न करें और शिवजी

की महिमा बखानें सो हम सब देवताओं समेत शिवजी के पास पहुँचे और हर एक पद में जय २ का शब्द मिलाकर एक बड़ीभारी स्तुति की और कहा कि जब २ देवताओं को कोई संकट पड़ा है तब २ तुम्हींने दुःख दूर किया है अब एक दया की दृष्टि हम पर कीजिये ।

दूसरा अध्याय ।

देवतालोग बोले कि हे शिवजी ! हमारे दुःख को दूर कीजिये क्योंकि तुम भक्तों के बचानेवाले और भक्तों के दुःख दूर करने वाले हो दैत्यों ने अति बल और तेज प्राप्त करके हम सबको दुःखी कर रक्खा है अब हम से अपने शरीर का दाह भी सहा नहीं जाता आपकी शरण में आये हैं हम सब आपको छोड़कर कहां जावें क्योंकि कोई देवता सिवाय तुम्हारे हमारी रक्षा नहीं कर सक्ता शिवजी बोले कि हमको तुम्हारा सब दुःख मालूम होगया पर त्रिपुर बड़े धर्मवान् और दाता हैं उन्हीं के बलसे इतने आनन्द से रहते हैं संसार में पुण्य के बराबर दूसरी वस्तु आनन्द देनेवाली नहीं जब तक उनकी पुण्य वृद्धि पर है तब तक वे मारे नहीं जा सक्के और इस कार्य के लिये तुमको अवश्य यत्न करना चाहिये वे हमारे भक्त सब अपने सेवकों समेत हैं हमको उचित नहीं है कि हम अपने भक्तों को बिगाड़ दें और न हमसे तुम्हारे दुःख देखे जा सक्के हैं क्योंकि जो हमारी शरण में आता है उसकी हम अवश्य ही रक्षा करते हैं इससे तुमको उचित है कि विष्णु के पास जाकर अपना सब दुःख कहो वे हमारे मुख्य स्वरूप सृष्टि के पालनेवाले हैं यह सुन सब देवता विष्णुजी के समीप गये और स्तुति करने के उपरान्त अपना सब दुःख कहा और हर प्रकार विष्णुजी की पूजा में प्रवृत्त हुये विष्णुने देवताओं की विनती सुनकर वेद और शास्त्र के

अनुकूल उत्तर दिया कि सनातन से शिवजी की पूजा ही और भक्ति पुण्यदायक है सो उस स्थान पर जहां शिवजी की पूजा हो कोई दुःख वा कष्ट नहीं रह सक्ता सूर्य के उदय होने से अँधेरा दूर हो जाता है उसी तरह शिवजी के तेज को भी समझना चाहिये यह सुन देवताओं ने दुःखी हो लज्जा से विनय की कि हे देवताओं के स्वामी! हम सब दुःखी और अधीर हैं हम क्या करें क्योंकि यह बात स्पष्ट है कि जब तक त्रिपुर जीते रहेंगे हमको कुछ भी आनन्द न मिलेगा सो आप कहिये कि हम कहां चलेजावें या हम सबको आप विना मृत्यु मार डालिये या त्रिपुर का नाश कीजिये दो कामों में से एक काम करके तुम प्रसन्न हो और हमारा भी कष्ट छुड़ा दीजिये शिवजी की आज्ञा पाय प्रसन्न वदन आपके पास आये थे अब हमारे धर्म जाने में क्या विलम्ब है यह कह सब देवता गूँगों के समान चुप हो गये और विष्णुने शिवजी की आज्ञा का विचारकर सोचा कि किसी उपाय से देवताओंका दुःख दूरकरना उचित है और फिर शिवका ध्यानकर यज्ञगण को स्मरण किया सो यज्ञ के अन्दर से मख-पति उपजे और विष्णु की स्तुति करने लगे विष्णुने देवताओं से कहा कि इनकी पूजा करो सो देवताओं ने तुरन्त प्रसन्न होकर शङ्खनाद किया और मख अर्थात् यज्ञ करके मखपतिके ध्यान में लगे और अति पवित्र स्तुति की कि मखपति प्रकट हुये और विष्णु की स्तुति करनेलगे और विष्णुने देवताओं से कहा कि त्रिपुर तुम्हारे ऐसे उपायों से मारे नहीं जासक्के जिनके देखने से पाप नष्ट होजाते हैं उनका मखपति क्या कर सक्ता है वे शिवजी के वरदान से इतना आनन्द कर रहे हैं कि संसार में कोई उनके बराबर नहीं हे देवताओ! संसार में कौन है जो शिव के भक्त का विनाश करे वे शिवकी आज्ञा बिन नहीं मारे

जावेंगे शिवजी की आज्ञा बिन ब्रह्मा हम देवता यज्ञ मुनीश्वर आदि उनका कोई कुछ भी नहीं कर सक्के शिवजी ने केवल संसार की भलाई के लिये अवतार लिया है एक अंश की देवताओं ने पूजा करके कैसा पद पाया है ब्रह्माने भी उनकी सेवा कर यह पद पाया और हमको भी यह पालन करने की बड़ाई उन्हींने सेवा करने से कृपा की है शिवपूजा बिना किसीको कुछ सिद्धि नहीं मिली इससे हम कहते हैं कि त्रिपुर केवल शिवकी सेवा करनेसे मरसक्के हैं हमको निश्चय है कि हम सब शिवजी की पूजा करके त्रिपुरविजय पावेंगे यह कह विष्णुने सब देवताओं समेत शिवपूजन का आरम्भ किया और एक करोड़ पार्थिवलिङ्ग मट्टी से बनाकर पहिले आवाहन करके अक्षत और सुगन्धमयी पुष्प और बिल्वपत्र से पूजा की और विष्णुजी शिवजीके ध्यान में मग्न हुये और शिवजीके प्रसन्न होने से असंख्य भूतों की सेना त्रिशूल, शक्ति, गदा आदि लिये हुये प्रकट हुई विष्णुने उनको देखकर कहा कि तुम तुरन्त पुर का नाश कर दो अर्थात् तीनों पुरको जलाकर अपने मकान को लौट आवो संसार में तुम्हारा यश फैलेगा यह सुन वह भूतों की सेना पवन के समान चली और त्रिपुर में पहुँचकर फैल गई पर शिवके चरित्र से जब वह नगर के भीतर पहुँची तुरन्त जलकर भस्म होगई क्योंकि जिनको शिव की भक्ति दृढ़ है उनके समीप संकट आकर आपही नष्ट होजाता है सो देवताओं ने फिर विष्णु के समीप जाकर यह हाल सुना दिया और विचार करने लगे कि किस उपाय से त्रिपुर विनाश को प्राप्त होंगे बरन अभिचार अर्थात् हठधर्मी से भी शिव के भक्तों पर कुछ कष्ट नहीं पड़ सक्का वास्तव में शिव की भक्ति के कारण यह दैत्य बच गये हैं शिवजी के कारण दैत्य पुरुष स्त्री क्या २ पाप नहीं करते पर उनको कुछ पाप नहीं

लगता इससे जो शिव आपही हमारी सहायता करें तो हमको आनन्द मिल सक्ता है हम ऐसी कोई युक्ति करें जिससे उनका धर्म नष्ट होजावे तब निस्सन्देह कुछ कठिन नहीं कि आप शिव उनको नाश कर देंगे उसी विचार में विष्णु ने देवताओं से कहा कि तुम सब अपने २ घरों में जाकर शिवजी के नाम का स्मरण रक्खो और अहर्निश शिव का पार्थिवपूजन किया करो और उनकी स्तुति करो यह सुनकर देवता अति प्रसन्नता से अपने अपने घरों को चले ।

तीसरा अध्याय

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! देवताओं के बिदा होने के उपरान्त विष्णु ने माया करके शिवपूजन के उपरान्त अपने शरीर से एक मनुष्य उपजाया जो सारा शिर मुड़ाये हुये मैले और अशुद्ध वस्त्र पहिने पंगुल वस्त्र से मुख को ढांपे धर्म कहते विष्णु के सामने आखड़ा हुआ और हाथ जोड़ अहंश वचन बोला और कहा कि मुझको क्या आज्ञा होती है विष्णुजी बोले कि तुम हमारे शरीर से उपजे हो इससे हमारा काम अच्छी तरह से पूरा करो तुम हमारे रूप हो यह कहकर विष्णुने एक ग्रन्थ बहुत बड़ा जिसमें सोलह सहस्र श्लोक थे बनाया उसमें नीचे लिखी बातें थीं और वह पुस्तक छल और झूठ की भरी हुई थी उसमें कोई ठीक धर्म नहीं लिखा हुआ था और वह वेदशास्त्र और पुराण से विपरीत था जिसको पढ़कर कुछ भी आनन्द न मिलता था और उसमें वेद पुराण और शास्त्र की बहुत ही निन्दा लिखी थी और वर्णाश्रम के लिये बहुत मनाही थी जिससे नरक मिलने में कुछ भी देर न लगे और केवल नरक ही को नरक और स्वर्ग ठहराया था और प्रत्यक्ष आंखों से देखी हुई चीज़ के सिवाय परोक्ष आनुमानिक

वस्तु का विश्वास नहीं लिखा था उसमें सब बातें कुमति और संशय की थीं और नाना प्रकार के वितण्डावाद लिखे हुये थे उसमें पातिव्रत धर्म और देवता वरन् शिवजी की पूजा के लिये भी मनाही थी और दशकर्म का कुछ भी विचार न था और सिवाय चेटक नाटक के कुछ भी बात सच न थी उसके मानने से शौच तप सब नष्ट हो जाते और वह पुस्तक इन्द्रफल के समान थी उस पुस्तक को देखकर कहा कि तुम त्रिपुर में जाकर सबको यह पुस्तक पढ़ा दो वहां के निवासी सब वेद और पुराण के अनुकूल सब कार्य करते हैं तुम वहां जाकर अपना धर्म-उपदेश करो कि उनका धर्म नष्ट हो जावे और वह शिवजी की पूजा छोड़ देवें और जब तुम अपना कार्य पूर्ण कर लो तब अपने नौकरों और चेलों समेत मरुस्थल में स्थित हो जावो तबतक कि जबतक कलियुग न आवे वहां गुप्त रहा करना जब कलियुग का आरम्भ हो जावे तब तुम मेरे उपदेश को भली भांति प्रसिद्ध करना तुम कुछ सन्देह मत करो तुम्हारी बड़ी पदवी हो जावेगी यह आज्ञा मुण्डी ने सुनकर और बहुत चेले किये विष्णु ने कहा कि तुम बिदा हो जावो और हमारा जो अर्हण एक नाम है उसका स्मरण करते रहना तुमको कभी कुछ भय न होगा सो मुण्डी चेलों समेत चलकर त्रिपुर में पहुँचे और बहुत से खेल करके उन्होंने बहुत मनुष्यों को अपना चेला किया ऐसा कोई न था जो मुण्डी के पास जाकर चेला होने विना अपना धर्म लेकर घर चला आवे हे नारदजी ! शिवजी की लीला से तुम भी मुण्डी के शिष्य हुये क्योंकि उसमें देवताओं का कार्य था और फिर तुमने त्रिपुर के पास जाकर इस प्रकार मुण्डी की प्रशंसा की कि त्रिपुर भी मुण्डी के शिष्य हो गये और मुण्डी ने त्रिपुर से यह प्रण करा लिया कि हमारी

आज्ञा किसी दशा में भङ्ग न की जावे इस बात के मानने के पीछे मुण्डी ने मुखसे वस्त्र उठाकर त्रिपुरको चेला बनाया और मन्त्र दिया और फिर नाना प्रकार के करने और न करने के काम सुना दिये जब त्रिपुर चेले होगये तो फिर कोई मनुष्य रह न गया जो मुण्डी का चेला न हुआ हो।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! त्रिपुरके चेला करने के उपरान्त मुण्डीने कई आज्ञायें त्रिपुर को सुना दीं और कहा कि हमारा मत सब मतोंसे बड़ा है जिसको नारदने भी माना है इस मतके मार्ग ये हैं कि यह संसार अनादि है इसका आदि अन्त कुछ नहीं और न इसका कोई कर्ता और न बनानेवाला है यह सनातन से इसी प्रकार चला आया है समय पर आपही प्रकट होता है और इसी तरह समय पाकर अन्तर्धान होजाता है समय पाकर अच्छा बुरा होजाता है ब्रह्मा से लेकर घास मिट्टी तक जितने प्राणीमात्र हैं मरने के समय सब बराबर हैं और जीव ईश्वर है जो अपने शरीर में वर्तमान है इसके सिवाय कोई संसारका स्वामी नहीं है और ब्रह्मा आदि जो देवता बहुत पुराने हैं वेभी अमर नहीं हैं वरन् यह सब मृत्युके वशमें हैं हां यह बात है कि कोई तो विलम्ब में और कोई वेग ही मरता है मृत्युसे कोई नहीं बचता और निश्चय करके जो शरीरधारी हैं वे नष्ट होजावेंगे और दुःख सुख भोग फिर शरीर धारण करेंगे और सब जीव एक ही से बराबरी का पद रखते हैं इनमें कोई बड़ा छोटा नहीं है और भोग और भोजन में सब बातों में बराबर हैं कुछ बड़ाई छुटाई की बात नहीं है क्योंकि एक स्त्री सुन्दर और दूसरी कुरूप मालूम होती है सो वह दोनों मैथुन में एकहीसी हैं और सवारी चाहे किसी तरह की हो बराबर है

और बिछौना चाहे सजा हुआ चाहे न हो सोने में बराबर है जो कि हमको भी मृत्यु का भय है और इसी तरह ब्रह्माजी और विष्णुजी और महेशजीको भी मौत का डरहै और कोई काल से न बचेगा तो जानो कि हममें और उनमें कुछ बड़ाई छुटाई नहीं है जैसे वह वैसे हम इसी प्रकार जाति का झगड़ा है और वेद और शास्त्रआदि सब झूंठे और फलरहित हैं केवल सब धर्मों से उत्तम धर्म हिंसा का त्याग करना है उससे बढ़कर और कोई धर्म नहीं है और कोई पाप औरों के दुःख देने से बड़ा नहीं है और चार प्रकार के दान सब दानों से बड़े हैं पहिले रोगी के लिये औषध देना दूसरे भयभीत को शरण में लेकर निर्भय करना तीसरे भूखों को खिलाना चौथे विद्यार्थी को विद्या पढ़ाना और अच्छी २ चिकित्सा और औषधों से शरीर को आरोग्य रखना चाहिये और धन द्रव्य इकट्ठाकर अपने शरीर की पालना उत्तम है और नरक स्वर्ग इसी संसार में है जो आनन्द है वह स्वर्ग है और दुःख नरक है दूसरे के वश में रहना बन्धन है इससे छूट जाना ही मुक्ति और मोक्ष है और दुःख से वासना समेत छूट जाना ही यही परममोक्ष है और वेदों ने जो दो मार्ग प्रवृत्ति और निवृत्ति कहे हैं उनका तात्पर्य यह है कि जीवों का दुःख देना यही प्रवृत्तिधर्म है और दया और कृपा रखना जीवों का निवृत्तिधर्म है देखो जीवों का वध करके और तिल और यव और घृत अग्नि में डाल-कर स्वर्ग की इच्छा करते हैं इससे कोई मूर्खता अधिक नहीं है और इसी प्रकार अपना बड़ा धर्म वर्णन किया जिसको त्रिपुरने ठीक समझा और अपने गुरु की आज्ञा से पुराने मत को छोड़ फिर नये मत में स्थित हुआ फिर मुण्डीने अपने मतकी आज्ञा सुनाई और कहा जबतक मृत्यु न आवे सदा आनन्द और

बिहार करना चाहिये और जो कोई दान मांगे तो अपना शरीर भी दे देना उचित है ऐसे मनुष्य के बराबर संसार में दूसरा नहीं यदि कोई मनुष्य भिक्षुक या याचक कोई वस्तु मांगे और उसको वह वस्तु न दीजावे और कोई मङ्गन अपना मनोरथ पाये विना चलाजावे तो उसका सब धन द्रव्य नष्ट होजाता है और अपने शरीर का जो गीदर और सियार और कुत्ते आदि के ग्राससे अधिक नहीं उसका कुछ लोभ न करना चाहिये और अन्त को मरने पर जिसको कृमि आदि खाडालेंगे इसके लिये इतनी सामग्री इकट्ठी करनी क्या आवश्यक है और देखो जब कि ब्रह्मा आदिने परस्पर एक दूसरे से विवाह कर लिया तब तो उनका धर्म बनारहा और गोत्र के छोड़ने में बड़ा पाप ठहराया और चार वर्ण को वर्णन करके चार भाइयों के जुदे २ वर्ण कहते हैं यह बहुत ही विरुद्ध है सो तुमको उचित है कि सबका नाता बराबर समझो कुछ किसी तरह का अन्तर और भेद मनुष्यों में बड़ाई और छुटाई का न जानना चाहिये क्योंकि यह बातें केवल वाचालता और चतुरता की हैं इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! इसी प्रकार की बहुत बातें सुनकर वेद के विपरीत सब मनुष्य हुये और सब स्त्रियां पातिव्रतधर्म छोड़ स्वतन्त्र और कुमार्गी हुईं और जिसने जिसके साथ चाहा भोगविलास किया और सब कर्मों से अधिक चेटकने प्रचार पाया किसी स्त्रीको बांझ से सन्तानयुत कर दिया किसी स्त्रीके पुरुष को जिलादिया और सिद्ध अञ्जन आंखों में दिलवा कर सब चीजें दिखाईं और सिद्धों के देश को प्रकटकर दिखाया इसी प्रकार हर प्रकार की माया और छल फैलाकर सब स्त्री और पुरुषों को अपने वश में करलिया यहां तक कि त्रिपुर से ले छोटे मनुष्यतक प्राचीनधर्म छोड़ अर्हण के धर्म पर स्थिर

होगये और देवयजन पितृकर्म भूल ही गये और सब धर्म, तीर्थ, व्रत, यज्ञ और इसी प्रकार जो वेद के कर्म वे सब छूट गये केवल यह धर्म रहगया कि सबने रात को भोजन करना बन्द कर दिया ।

पांचवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! वेद, पुराण, धर्मशास्त्र और स्त्रियों का धर्म और शिव और विष्णु की पूजा और यज्ञ और हवन स्नान और दान व्रत और शुभ कार्यादि सब छूटगये और वेद के विरुद्ध नास्तिक मत त्रिपुरपुर में छागया और धन ने वहां के वासियों से मुख छिपाया और चारों ओर से दरिद्र ही दरिद्र दिखाई दिया हे नारद ! यह सब बातें तुम्हारे सबब से हुई हैं तीनों भाइयों ने शिवजी की पूजा को छोड़ दिया और देश में उपद्रव होनेलगा देवताओं ने यह दशा देख आनन्द में मग्न हो इन्द्र को साथ लिये हुये मेरे पास जाकर सब हाल कहा सो हम सबको साथ लिये हुये विष्णु के निकट गये और उनकी स्तुतिकर कहा कि आपके उपाय से बड़ा काम हुआ अर्थात् आपके रूप अर्हण ने शिष्यों समेत त्रिपुर में जाकर नारद के चेला करने के उपरान्त सबको अपने मत में ले आये अब निश्चय है कि आप त्रिपुर को जलादेंगे विष्णु बोले कि शिव देवताओंके कार्य को पूर्ण करेंगे यह कह और हम सबको साथ लिये हुये शिवके समीपगये और देवताओंसमेत स्तुति करनेलगे और विनयकी कि देवताओं को आनन्द देकर दैत्यों का विनाश करो सो शिवजी ने कहा कि हम देवताओं के कार्य को जानगये अब तुरन्त त्रिपुर नष्ट होजावेंगे यह शिवजी से वचन सुन देवता अति प्रसन्न हुये और शिवजी की बहुत स्तुति की जो इस चरित्रको सुने सुनावेगा वह अपने सब मनोरथ पावेगा ।

छठवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! तब गिरिजा अपने लड़के को दिखलाती हुई और जय शम्भु जय शिवनाथ स्तुति गाती हुई शिव के पास आई और कहा कि षडानन अपने पुत्र का खेल देखो सो शिवने लड़के को गोद में बिठाया और प्रसन्नता के कारण लड़के को गोद में लेकर नाचने लगे यहांतक कि सब विद्यमान देवता शिवजी के साथ नाचनेलगे तब बड़ा उत्सव हुआ निदान गिरिजा षडानन को साथ लिये हुई भीतर घर में चलीगई और यह न जाना कि दैत्यों के हाथ से देवताओं को कितना दुःख मिला है यद्यपि देवताओं ने बहुतसी स्तुति की और अपना कष्ट सुनाया पर शिवने कुछ न सुना तब विष्णु और हम सब शिव के द्वार पर बैठकर परस्पर कहने लगे कि अब कहां जावें किससे कहें क्या करें हमारी नाव को कौन पार लगावेगा तो कुछ थोड़े २ शिव प्रसन्न हुये थे सो वह भी घर में चलेगये प्रायः हमसे कुछ सेवा में अपराध हुआ देवताओं के बड़े भाग्य हैं कि इन अपकर्मों के करनेपर भी शिव अबभी उन पर कृपा करते हैं फिर देवताओं ने सम्मति की कि चलो स्त्रियों समेत शिवजी के भीतर जावें यह अनुमति देवताओं की शिवजी जानगये और गणपति को भेजा जिन्होंने दण्डों से मारकर सबको निकाल दिया यहां तक कि इन्द्र भी दुःखी होकर गिर पड़े तब कश्यपमुनि ने धैर्य धर कहा कि शिव ने यह क्या चरित्र किया कि दया छोड़ ऐसा दण्ड देते हैं और फिर जाकर विष्णु से यह सब हाल कह सुनाया कि कुछ हमारा मनोरथ पूरा नहीं हुआ सब परिश्रम वृथा गया विष्णुजी ने कहा कि धैर्य रक्खो शिवजी अवश्य ही सब दुःख दूर कर देवेंगे और सबको शिवजी का एक मन्त्र जिसमें दशहज़ार अक्षर हैं बता-

कर कहा कि इसका चौदह करोड़ जप करो शिवजी प्रसन्न होकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे तथाच सब देवता जपकर सिद्धि की बाट देखते थे कि शिव प्रकट हुये और कहा कि हे विष्णु और ब्रह्मा आदि ! तुम्हारी दृढ़ता धन्य है हम प्रसन्न हैं अपनी इच्छा के अनुसार वर मांगो सो शिवको प्रसन्न पाकर सबने स्तुति की और कहा कि तीनों पुर का नाश करो यह कह फिर देवता स्तुति करने लगे शिव प्रसन्न होकर 'भविष्यति' ऐसा कहने लगे और दैत्यों पर कोपित होकर अपने बाण को छोड़ दिया जिसने सूर्य के समान प्रकाशवान् होकर सब दैत्यों को नष्ट करडाला पर जो शेष बचे उन्होंने उन सबको अमृत के कुण्ड में जो वहां था छोड़ दिया जिससे वह फिर लोहतन होकर बादल के समान गर्जे और बिजली के समान चमके और अग्नि के समान भड़ककर देवताओं को धमकाने लगे शिवजी ने विष्णु और हमसे कहा कि तुम दोनों बछड़े बनकर वहां जाकर अमृत को पी लो तुमको नहीं जानेंगे सो हम और विष्णु बछड़े बन दो पहर दिन चढ़े वहां पहुँचे और हमको किसी ने न देखा और विष्णु और हम लौटकर शिवजी की स्तुति करने लगे और शिवजी की लीला से वह अन्धे हो गये और शिवजी की स्तुति में हमने शिवका विराट्रूप वर्णन किया यह सुन शिवजी ने कहा कि हे देवताओ ! तुम चिन्ता मत करो अब तुम वेग ही सिद्धि पावोगे त्रिपुर नष्ट होंगे इस बात का निश्चय मानना यह कहकर शिवजी तो चुप हो गये और हम सब वहां स्थित रहे इतने में नन्दी गणों के राजा और बहुत गणों समेत आये उनको देखकर देवताओं ने अतिआनन्द माना और विनय की कि हे शिलादि मुनि के पुत्र, नन्दी ! कोई ऐसा उपाय करो जिसमें तीनों पुर

मिलजावें नन्दी बोले कि शिवजी ने तुमको आज्ञा दी है कि तुरन्त एक रथ बनावो और सारथि और बाण धनुष् आदि सब नवीन ठीक करके रक्खो हमको निश्चय है कि शिवजी अवश्य ही त्रिपुर का नाश करेंगे यह कहकर नन्दी तो अपने घर चले गये और देवताओं ने अति प्रसन्नता के साथ जय २ शिव कहा और इन्द्र ने विश्वकर्मा को बुलाकर शिवजी की आज्ञा सुनाई और विष्णु और हमने विश्वकर्मा का आदर करके कहा कि तुम शिव के सारथि होना और बाण और धनुष् भी तय्यार कर दो तुमको इन्द्र की अवश्य ही सहायता करनी चाहिये क्योंकि तुम्हारे समान देवताओं का और कोई सहायक नहीं है तुम सब कारीगरों के राजा हो विश्वकर्मा ने सदाशिव का ध्यान किया तो उसके मन में रथके बनाने की युक्ति बैठ गई और उसने सब कुछ तय्यार कर दिया।

सातवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! विश्वकर्मा ने रथ तय्यार किया वह रथ मानो सृष्टि भर के बाज़ार के समान था उसमें सूर्य दहिना चक्र अर्थात् पहिया चन्द्रमा बायां पहिया इसी प्रकार बारहों सूर्य सोलहों कला वर्तमान थीं और उस रथ को नाना भांति के वस्त्रों से भूषित किया और मन्दरगिरि उदयाचल अस्ताचल मेरु आदि पर्वत और वर्ष, मास, तिथि, मुहूर्त, कला, पल, विपल, मेघ, आकाश, दशों इन्द्रियां इसी प्रकार और भी सब रथ के खण्ड हुये और चारों वेद उस रथ के घोड़े और व्यास आदि घोड़ों के चरानेवाले हुये और कर्म धर्म के शास्त्र और पुराण और न्यायशास्त्र ये सब मुख हुये और आश्रम वर्ण आदि भी अङ्ग के अवयव हुये और गङ्गा आदि चार सागर चमर लेकर चारों ओर रथ के खड़े हुये और लोकालोक

पर्वत आदि उसकी सीढ़ियां हुईं और प्रणव चाबुक विष्णुजी बाण हिमाचल धनुष् हुआ निदान जो ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त है वह सब इस रथ में था जब यह सामग्री तय्यार हो गई और वह रथ शिवजी के द्वार पर खड़ा किया गया तो शिवजी आये तब सबोंने विनती की कि महाराज ! आप रथ पर सवार होवें और त्रिपुर का नाश करके तीनों लोक को आनन्द देवें शिवजी ने गणपति को बुलाकर उनकी पूजा की फिर रथ पर चढ़कर आकाश और पृथ्वी को कँपाते हुये चले और सबने जय २ शब्द पढ़ा पृथ्वी इस रथ का भार न सहकर कांप उठी और जिस प्रकार रथ चलता था उसी प्रकार वह टेढ़ी होती थी निदान शिवजी अपनी सेना समेत देवताओं को प्रसन्न करते हुये चले उस समय शिवजी के आश्चर्यदायक चरित्र से तीनों पुर इकट्ठे हुये और शिवजी ने उत्तम समय पाकर अपने धनुष् में विष्णुपति अस्त्र को लगाय और अपने तेज को उसी अस्त्र में स्थिर कर दिया सो धनुष् और बाण दोनों प्रकाशमान हुये और घास और फूस भी जो हरे भरे थे जलने लगे और सृष्टि भर में वह प्रकाश उदय हुआ और शिवजी ने उस समय मनमें यह विचार किया कि अब तीनों पुर को जला दूं जब विलम्ब हुआ तब विष्णु हंस और इन्द्र ने विनती की ।

आठवां अध्याय ।

देवताओं ने कहा कि हे शिव ! तुम्हीं देवताओं के रक्षक हो और इसी प्रकार बहुत स्तुति की और विनती की कि अब विलम्ब मत कीजिये तीनों लोक जले जाते हैं त्रिपुर को नष्ट कीजिये क्योंकि देवताओं का मन दुःखी है शिवजी ने वही अस्त्र त्रिपुर को छोड़ दिया जिसके छोड़ने से बड़ा शब्द हुआ कि जैसे प्रलयकाल के बादल गर्जते हैं और इतनी अग्नि उठी

कि तीनों लोक जलने लगे और धरती कांप गई पर्वत जल गये शेष पृथ्वी को शिर पर न रख सके नदियां सूख गईं और दिग्गज और कूर्म जो पृथ्वी को सँभाले हुये हैं सब बलहीन हो गये और सब मुनि और सिद्ध ध्यान छोड़ अचम्भे में हुये सो तुरन्त बाण के पहुँचते ही तीनों पुर जलकर भस्म हो गये और बाण सबको जलाकर शिवजी के पास लौट आया और त्रिपुर में कोई मनुष्य जीता न बचा और सब दैत्य शिवजी के हाथ से मर कर मुक्ति पा गये और सब शिवजी के गण हुये क्योंकि भक्ति का बीज नष्ट नहीं होता उस समय शिवजी का स्वरूप ऐसा भयानक था और जाना जाता था कि अब प्रलय में कुछ विलम्ब नहीं है और महातेज के कारण हम और विष्णु आदि कोई उनको आंखभर नहीं देख सके थे और सब अपने आप कांपते थे कोई मनुष्य शिवजी के समीप तक न जा सका सो विष्णु और हमने दूर से स्तुति की और इसी प्रकार सब देवताओं ने दूर ही से एक एक स्तुति शिवजी की धीरे धीरे मधुरस्वर से गाई सबसे पहिले विष्णु ने स्तुति की और कहा कि क्रोध को दूर करो फिर हमने स्तुति की फिर लोकपाल, देवता, सिद्ध, नाग, मुनि और वेदों ने अपनी २ स्तुति को काव्य में युक्तिपूर्वक गाया सो ऐसी बहुत सी स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और सबको दया और कृपा की दृष्टि से देख दिया सो हम सब शिवजी को प्रसन्न पाकर उनकी सेवा करने लगे और चारों ओर से जय का शब्द हुआ।

नवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिवजी अति प्रसन्न होकर कहने लगे कि तुम सब हमसे अपनी इच्छा का वरदान मांग लो देवताओं ने कहा कि आपने त्रिपुर को नष्ट करके हमको

बड़ा आनन्द दिया आपकी कृपा से हम सब कृतार्थ हो गये जब २ कोई हम पर कष्ट पड़े तब उसको दूर किया कीजिये और अपनी भक्ति हमको दीजिये हमको अपना सेवक समझिये जो कोई अपराध हमसे होता रहे उसको क्षमा करते रहिये आप हम सबके पिता और राजा हैं शिवजी ने ॐकहकर हम सबको प्रसन्न किया तब नृत्य और गान का बड़ा उत्सव हुआ ऐसे आनन्द के समय में अर्हण ने अपने चारों शिष्यों समेत आकर शिवजी को प्रणाम किया और सब देवताओं को भी दण्डवत् की फिर नम्र होकर शिवजी से कहा कि आपकी आज्ञा से मैंने यह मत सोचे विचारे विना वर्णन किया मुझ पर ऐसी कृपा हो कि मुझे ऐसे नष्ट कर्म का कोई पाप न लगे और मुझे आज्ञा दीजिये कि अब मैं क्या करूं और कहां और किस स्थान पर स्थित रहूं और अपनी पुस्तक को जो सोलह सहस्र है क्या करूं और मेरे शिष्यों के लिये क्या आज्ञा होती है सो विष्णु ने शिवजी की आज्ञानुसार कहा कि हे अर्हण ! तुम मरुस्थल में शिष्यों समेत जाकर स्थित रहो और शिवजी के स्मरण को मत भूलना और कलियुग के आने तक अपना मत प्रकट न करना यह जो हुआ है वह सब शिवजी की आज्ञानुसार हुआ है तुमको कुछ पाप नहीं है और जब कलियुग का आरम्भ हो तो इधर उधर अपने मत को फैलाना और सब स्त्री पुरुषों का मन अपने अधीन करना जिससे सब लोग महापापी होजावेंगे कलियुग पापों का बीज है तुम्हारा मत कलियुग में भलीभांति चलेगा सब लोग सन्मार्ग से बदल जावेंगे यह कहकर विष्णु ने शिष्यों समेत अर्हण को विदा किया हे नारद ! जब कलियुग आवेगा अर्हण मरुस्थल से निकलकर अपने मत को प्रकट करेगा और हे नारद ! यद्यपि

मयदानव त्रिपुर में था पर शिवजी की कृपा से बचा रहा और शिवजी की स्तुतिकर हम सबको भी प्रणाम किया शिवजी ने मयदानव की स्तुति सुनकर प्रसन्नता से कहा कि हे मयदानव! तुम निर्भय रहकर तलातल में स्थित हो सो मयदानव वहां जाकर रहने लगा और यह शिवजी की कृपा मयदानव पर देखकर सब प्रसन्न हुये और शिवजी की बड़ी स्तुति करके हम सब अपने २ स्थानों को चले गये और शिव गिरिजा और पुत्रसहित कैलास पर्वत पर स्थित हुये सब योगिनियों ने मङ्गल गीत गाये जो मनुष्य इस चरित्र को सुनेगा या सुनावेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा।

दशवां अध्याय।

इतना सुन नारद ने कहा कि हे ब्रह्माजी! मुझे त्रिपुरके दग्धकी कथा सुनने से अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई है पर आप वर्णन करें कि मयदानव क्योंकर त्रिपुर के साथ न जला ब्रह्माजी बोले कि मयदानव शिवजी का भक्त था इससे वह इस अग्नि से बचारहा सो प्रकट हो कि कश्यप की स्त्रियों में एक स्त्री का नाम दनु था उसके साठ लड़के बड़े वीर धीर उपजे वे तीनों लोकमें प्रसिद्ध बुद्धिमान् थे उनमेंसे यह एक मय भी था उसने भक्तिपूर्वक शिवजी का बड़ा तप किया और काशी में भी बड़ा तप किया और अपनी इन्द्रियों को जीतकर ध्यानपूर्वक पञ्चाक्षरीमन्त्र भलीभांति जपा और गर्मियों में अग्नि और वर्षा में वनमें और शीतकाल में जल के भीतर बैठकर कठिन तप करता रहा और शिवजी की मृत्तिका की मूर्ति बनाकर शिवको पूजा और उसीके प्रमाण चावल बिल्वपत्र और हररङ्ग के सुगन्धित पुष्प चढ़ाये और स्थिर होकर दृढ़ आसन और ध्यान से श्वास रोक बैठ रहा शिवजी ने बहुत प्रसन्न होकर वरम्ब्रूहि २ कहा पर

मय ने इस वचन को न सुना तब शिवजी ने अपनी मूर्ति को मयके ध्यान से खींच लिया मयने आश्चर्यकर नेत्र खोल दिये तो देखा कि शिवजी खड़े हुये हैं जिनका महागौर शरीर भस्म लगाये हुये भाल पर चन्द्रमा विराजमान और अपने मुख्य स्वरूप और मुख्य लक्षणों से सुशोभित हैं तो ऐसा सुन्दर स्वरूप देख मय उठ खड़ा हुआ और शिर झुका प्रणामकर स्तुति की और कहा क्या वरदान मांगूं आप तो सब कुछ जानते हैं और चुप होगया शिवजी ने कहा बहुत अच्छा हम तुमको तुम्हारे हृदय की मनसा के अनुसार यह वरदान देते हैं कि तुम सब दैत्यों के आचार्य होकर सदा निर्दोष रहोगे जिस तरह कि देवताओं में विश्वकर्मा हैं उसी तरह तुम दैत्यों में हो तुमको जरा मृत्यु प्राप्त न होगी और हमारे ध्यान में लगे रहकर नाना प्रकार की कारीगरी कर सकोगे हम तुमको कभी नष्ट नहीं करेंगे व तुम्हारे मनमें कभी पाप न आवेगा यह कह शिवजीने मयके शरीर को स्पर्श कर दिया जिससे मय को अति आनन्द प्राप्त हुआ और शिव अन्तर्धान होगये मय उस ओर को प्रणाम कर अपने घर गया दैत्यों ने शिवजी के वरदान के कारण उसको अपना आचार्य बनाया यह मयदानव का चरित्र अति पवित्र सुनने और सुनानेवाले को मयके समान करदेता है और कभी भ्रष्टबुद्धि के कारण उससे कोई पाप नहीं होता अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है ।

ग्यारहवां अध्याय ।

इतना कहकर सूत पौराणिक बोले कि हे शौनको ! इस चरित्र के सुनने के उपरान्त नारदने ब्रह्माजी से कहा कि हे पिता! अब शिवजी का और चरित्र वर्णन कीजिये ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! तुमको और तुम्हारी बुद्धि को धन्य है कि शिवजी

की ऐसी भक्ति है और तुमने विष्णु की सेवा करके शिवजी की इतनी भक्ति पाई है हमने वेदों को बहुतही छाना है और जो कुछ कि वेदों से हमको निश्चय प्राप्त हुआ है उसका मूल हम वर्णन करते हैं अर्थात् पहिले हर मनुष्य असंख्य जन्म पर्यन्त हमारी पूजा करके विष्णु की भक्ति पाता है और फिर बहुत जन्म तक विष्णुजी के तप से शिवजीकी प्रीति उपजती है तुम निस्सन्देह शिवजी के बड़े भक्त हो अब शिवजी का चरित्र वर्णन करते हैं जिस तरह कि शिवजी ने जलन्धर दानवको मारा और बहुतही पवित्र इतिहास जिसको सुनकर सब मनोरथ प्राप्त होते हैं कहता हूं कि किसी समय एकबेर इन्द्र और सब देवताओं ने शिवजी के दर्शन के लिये एक सभा की जिसमें ग्यारहों रुद्र और बारहों सूर्य आठों वसु विश्वे-देव जो तेरह हैं और उञ्चास पवन और सब दिक्पाल और उपदेव आदि वर्तमान थे सो इन्द्र ऐसी सभा को अपने साथ ले बड़े उत्सव के साथ रजोगुण धारण किये हुये शिवजी के दर्शन को चले और केवल शिवजीके दर्शन से उनको संसार में यश पाना स्वीकार था शिवजीने लीला करके अपना स्वरूप भयानक बनाया और अवधूत के समान हो इन्द्र के नगर में प्रकट हुये इन्द्र ने पूछा कि तुम कौन हो जाना जाता है कि तुम शिवजी के सेवकों में से कोई हो हमको बताओ कि शिवजी अपने स्थान पर रहते हैं इस तरह से कई बेर इन्द्र ने पूछा पर कुछ उत्तर न पाया इन्द्र ने बहुत क्रोध किया और भय देकर कहने लगे क्या तू भूत तो नहीं है जो उत्तर नहीं देता अब वज्र से तुझको मारडालता हूं यह कह अपना वज्र शिवजी पर छोड़ा कि शिवजी की गर्दन में लगा और शिवजी वज्र की शक्ति के स्थिर रखने के लिये नीलकण्ठ होगये अर्थात् श्याम-

चिह्न कण्ठमें धारण किया और वज्र भी जलकर भस्म होगया और शिवजी का तेज इतना भभक उठा कि चारों ओर दाह फैल गया और सब देवता स्त्रियों समेत जलने लगे यह दशा देखकर सब कम्पित हुये बृहस्पतिने सदाशिवका ध्यान किया और पहिंचाना कि येही शिवजी हैं सो स्तुति करके इन्द्रसे कहा कि यह जो खड़े हैं सदाशिव हैं तुरन्त दण्डवत् करके स्तुति करो सो इन्द्र और बृहस्पति और सब देवता स्तुति करने लगे और कहा कि यह पाप हमारा क्षमा करो हम आपके दर्शनों के लिए तत्पर थे पर आपने आपही कृपा करके गुप्तरीति से वेपरिश्रम हम सबको दर्शन दिये ऐसी उत्तम और बृहत् स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और कहा कि वरदान मांगो यह तुम्हारी स्तुति सुनकर हम बहुत प्रसन्न हैं देवगुरुने कहा कि क्रोध दूर करके इन्द्र की रक्षा कीजिये जो आपका नेत्र भालपर तेजरूप है उसकी तीक्ष्णता दूर होजावे यह वचन सुन शिवजी बोले कि वह अग्नि जो हमारे नेत्र से निकलगई है उसको किसी प्रकार से अपने भाल में स्थान नहीं दे सक्ते जैसा कि सर्प अपनी केंचुल को जुदा करके फिर उसको आप नहीं पहिनता पर तोभी हम कृपा करेंगे इस तेज को हम बहुत दूर फेंकदेंगे कि इन्द्र पर कष्ट न पड़े और जो कि तुमने इन्द्र को जीवदान दिया इसलिये तुम्हारा नाम जीव प्रसिद्ध होगा यह सुनकर बृहस्पति और इन्द्र आदि अति प्रसन्न हुये और शिवजीने उस तेज को हाथ से समुद्र में फेंक दिया और शिवजी अन्तर्धान होगये और सब देवता जय २ कहते हुये अपने २ घरों को चलेगये ।

बारहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब कि शिवजीने अपने नेत्रके

तेज को दूर फेंक दिया तो वह सुरनदी सागर में गिरपड़ा और तुरन्तही बालकके स्वरूपसे प्रकट होकर अतिभयानक रोदन करने लगा पृथ्वी उसके शब्द से कांप उठी और वह शब्द चारों ओर पूरित हुआ सब आश्चर्य करने लगे और पर्वत चलायमान और समुद्र सूख गये और देवता और मुनि सब आश्चर्य में होकर हमारे पास आकर कहने लगे कि हे ब्रह्मन् ! यह क्या शब्द है कहां से आता है इसको दूर करो कि देवताओं को आनन्द प्राप्त हो हमने कहा कि यह शब्द सुनकर हमभी आश्चर्यमें हैं तुम सब अपने घरोंको चलेजाओ हम जहां से यह शब्द आता है वहां जावेंगे फिर हमने सबको बिदा कर दिया और आप ढूंढ़तेहुये पहिले समुद्रके तटपर आये और देखा कि एक अतिसुन्दर बालक पड़ा हुआ है हमको निश्चय हुआ कि वह शब्द इसी का था हमको आते देखकर समुद्र अपने पुत्र समेत हमारी ओर आया और प्रणाम के उपरान्त उस लड़के को हमारी गोद में डालकर आप खड़ा रहा हमने पूछा कि यह किसका पुत्र है समुद्र ने कहा कि यह बालक समुद्र में उपजा हमारा है आप इसका नाम रख दीजिये और आपही संस्कार भी कीजिये निदान यह वार्त्ता हो ही रही थी कि लड़के ने हमारी दाढ़ी पकड़ी और इतनी खींची कि हमारी आंख से आंसू निकल पड़े और हमने बहुत दुःखी होकर बड़ी युक्ति से अपनी दाढ़ी को छुड़ाया और समुद्र से कहा कि तेरा पुत्र अतिबलिष्ठ होकर तेरी कीर्ति को सब देशों में बढ़ावेगा और जो कि हमारी दाढ़ी को इसने इतना पकड़ा कि आंसू बहे इससे इसका नाम जलन्धर होगा और तुरन्त ही युवा होकर वेदों को जानेगा अब जहां से उपजा है वहां जावे यह कहकर हमने शुक्र को बुलाया और बड़ा उत्सव किया और राज्याभिषेक

करके ब्राह्मणों को बहुत दान दिया और जालन्धरी नगर उसकी राजधानी हुई जिससे देवताओं की सब बात बनी हुई बिगड़ गई समुद्र ने बड़ी धूमधाम से उत्सव की रीतें पूरीं और हमने जलन्धर से कहा कि तुम्हारे कुल के गुरु शुक्र होंगे यह कहकर हम तो अन्तर्धान होगये और जलन्धर जालन्धरी को बसाकर रहने लगा और समुद्र प्रसन्नता से कपड़ों में न समाता था उसने कालनेमि दैत्यों के राजा को बुलाकर अपने पुत्र की शक्ति का वर्णन किया कालनेमि कुल समेत अति प्रसन्न हुआ और इच्छा की कि अपनी पुत्री जलन्धर को विवाह दूं फिर शुक्रजी की सम्मति लेकर बड़ी धूमधाम से विवाह होगया और इन दोनों कुलों में सम्बन्ध के कारण अति प्रीति और मित्रता उपजी जलन्धर पहिले वह आपही बड़ा बलवान् था दूसरे जब शुक्र से सहायता मिली तो उसने तीनों लोक को अपने अधीन कर लिया और पुत्र समान प्रजा का पालन किया और जो दैत्य कि पाताल में भागकर स्थित हुये थे वह भी जलन्धर की आज्ञा से निर्भय होकर जलन्धर के समीप आपहुँचे और परस्पर मिल प्रसन्न हो रहने लगे जलन्धर ऐसा राजा हुआ कि जिसके राज्य में कोई पाप नहीं होता था उसकी आज्ञा से तीनों लोक में किसी ने अवज्ञा न की और वह ऐसा प्रतापवान् था कि भलों को सुख और बुरों को दुःख देता और उसने सबों से अपने २ वर्ण के अनुकूल धर्म कराया कोई कुमार्गी न होने पाया उसका प्रताप और तेज तीनों भुवन में फैल गया।

तेरहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! एक समय जलन्धर अपनी सभा में बैठा था और सब वीर और दैत्यों के अधिप और सब दैत्य और शुक्र आदि चारों ओर से अपने २ स्थान पर घेरा

किये हुये थे कि इतने में राहु शीश रहित सभा में आये जिनको देख अति आश्चर्यकर जलन्धर ने शुक्र से पूछा कि हे शुक्र! इनका शिर किसने काट डाला है शुक्र बोले हम पुरातन कथा कहते हैं जब देवता और दैत्य परस्पर लड़े थे और देवता परास्त हुये तब दैत्यों में राजा बलि थे और शिवजी के दृढ़-भक्त थे सब देवता दैत्यों से हारकर विष्णु की शरण में गये विष्णु ने देवताओं पर दयाकर कहा कि तुम सब जाकर दैत्यों से सलाह कर लो और समुद्र को दोनों समूह भलीभांति मथो तब समुद्र से अमृत निकलेगा उसको तुम सबोंको पिलाकर दैत्यों के साथ छल करोगे और जब कि तुम अमृत पी लोगे तब दैत्यों पर प्रबल हो जाओगे सो दैत्यों के राजा बलि के पास आकर इतनी मित्रता उपजाई कि दैत्य और देवता दोनों मन्दरगिरि को उखाड़कर समुद्र के तट पर गये और वासुकि-नाग को मन्दरगिरि में डालकर मन्दरगिरि को मथानी बनाया और समुद्र को मथने लगे वे सब बल में समान थे तब विष्णुजी इन्द्र के हितैषी ने बड़ा छल किया और पहिले देवताओं को वासुकिनाग के शिर की ओर खींचने को कहा सो दैत्यों ने विष्णुजी के छल को न जाकर आप इच्छा की कि नहीं हम शिर की ओर खींचेंगे हम क्यों पूंछ की ओर लगें सो सब दैत्य शिर की ओर और देवता पूंछ की ओर वासुकिनाग को मन्दरगिरि में लपेटकर समुद्र मथने लगे और आप विष्णुजी भी देवताओं के साथ मथने लगे और दोनों गणपति की पूजा को पहिले भूल गये इसी से पहिले हलाहल विष उपजा जिसके निकलने से सब जलने लगे और देवता और दैत्य दुःखी होकर भाग चले और इन्द्र और विष्णुजी ने देव-ताओं समेत शिवजी की शरण में जाकर स्तुतिकर शिवजी को

प्रसन्न किया और शिवजी उस हालाहल विष को आप पीगये जिससे चारों ओर आनन्द फैला और फिर समुद्र मथने लगे और धीरे २ सब रत्न निकाल लिये पर विष्णुजी ने छल करके उत्तम २ रत्न तो देवताओं को दिये और मद्य दैत्यों को देकर अमृत देवताओं को पिलाया उस समय राहु देवताओं के साथ बैठा था कि विष्णुजी ने उसका शिर काट डाला सो उस जगह पर देवताओं और दैत्यों से बड़ा युद्ध हुआ जिसमें करोड़ों दैत्यों के स्वामी मारे गये और जो शेष रहे वह पाताल में जाकर बचे उस समय वे भयभीत थे पर जब से आपका अवतार हुआ है और आप राजा हुये हैं तब से दैत्यों को पाताल से प्रकट होने का समय मिला है यह दशा सुनकर जलन्धर इस कारण कि उसके पिता समुद्र को देवताओं और दैत्यों ने मथन किया था अति कुपित हुआ और अग्निके समान प्रज्वलित होकर नेत्र लालकर दांतों से अपने ओष्ठ चबाने लगा और घस्मरदूत को बुलाकर कहा कि तुम इन्द्र के पास निर्भय होकर जाके कहो कि तुमने हमारे पिता समुद्र को क्यों मथा था और सब रत्न उसके निकाल लिये और आप देवताओं समेत अमृत पीकर दैत्यों को मद्य पिलाई और ऐसे छल से दैत्यों को परास्त किया क्या तुमने यह बात अच्छी की है वरन् इसका फल तुमको मिल जावेगा सो वह दूत चलकर इन्द्र की सभा में गया और अहंकार से अपना मस्तक इन्द्र के सामने न झुकाया और कहा कि जलन्धर ने जो समुद्र का पुत्र है तुमको यह संदेशा भेजा है कि जो रत्न तुमने समुद्र से निकाल लिये हैं वह सब हमको सौंपो तो अभी सब बात बन जावेगी क्योंकि जो दिन का भूला हुआ रात को आवे तो वह भूला नहीं कहा जाता और तुम हमारी शरण में आवो नहीं तो तुमको इसका फल दिया जावेगा इन्द्र यह

सब सुनकर जलन्धर को बड़ा बलवान् और पराक्रमी समझ कुछ तो भयभीत हुआ और कुछ क्रोधित होकर कहने लगा कि तुम हमारी ओर से जलन्धर को यह उत्तर दे दो कि पहिले किसी समय में पहाड़ों ने हमारे लोक में उड़कर उसको नष्ट कर दिया था और बहुत से यहां के वासियों को मार डाला था हमने पर्वतों के पंख काट डाले और जो शेष रह गये वह डूब-कर समुद्र में छिप गये और समुद्र ने उनको रक्षापूर्वक रक्खा सिवाय उनके और भी बहुत वेर हमारे शत्रुओं को समुद्र ने स्थान दिया है और दैत्यों को भी समुद्र ने छिपाया था उसी वास्ते हमने समुद्र को मथा है और उसके रत्न निकाल लिये हमारा प्रताप और भाग्य इसी प्रकार का है पूर्व में एक और शत्रु देवताओं का उपजा था जिसको शंखासुर कहते हैं हमने उसे भी तुम्हारे समान अपना प्रताप दिखाया था और हमारे भाई ने उसको वध कर डाला जिसको समुद्र ने भी न बचाया इस लिये हे दूत ! जलन्धर से कह देना कि क्यों बुद्धिहीन होकर ऐसे दुर्विचारों में पड़ता है ऐसा संसार में कौन देवता और दैत्य है जो मुझे दुःख दे क्या वह हमारे बल और प्रताप को किसी से नहीं सुनता हमने बड़े २ दैत्यों को अपने छोटे भाई की सहायता से मार डाला है जो जलन्धर अपनी भलाई चाहता हो तो इतने हाथ पांव न फैलावे जो इस बात को न मानेगा तो सिवाय दुःख और लज्जा के और कुछ न पावेगा यह सुनकर दूत ने कहा कि हे इन्द्र ! आज के दिन तुम अहंकार मत करो क्योंकि जलन्धर ने संसार भर का राज्य पाया है उसी के अधीन संसार भर है तुमको उचित है कि गर्व छोड़कर सब रत्न जलन्धर को सौंपो और आप चलकर जलन्धर की छाया में रहकर सदा आनन्द में रहो नहीं तो तुमको बहुत ही कष्ट होगा

इन्द्र ने क्रोध करके कहा कि जो हमने पहिले कहा है वही तुम जाकर जलन्धर से कह दो जो ईश्वर की इच्छा होगी वह होगा तुम इतनी वार्त्ता और तकरार क्यों करते हो यह कह इन्द्र ने दूत को बिदा किया और आप क्रोध और भय की दशा में चिन्तारूपी सागर में डूब गया और दूत ने जलन्धर के पास पहुँच इन्द्र के प्रश्न उत्तर की वार्त्ता सब विस्तार से कह सुनाई यह सुन जलन्धर क्रोधरूपी अग्नि से जल उठा और उसके ओष्ठ फड़कने लगे ।

चौदहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि जलन्धर ने अति क्रोधित होकर सब देवताओं के परास्त करने का उद्योग किया और एक बड़ी भारी सेना दैत्यों की इकट्ठा की और राक्षस और दैत्य और दानव करोड़ों इकट्ठे हो गये और शुम्भ निशुम्भ के समान उस वीरसेना में यूथप थे और कालनेमि भी और यूथपों समेत आया सो ऐसी उत्तम सेना लेकर जलन्धर देवलोक को चला उस समय पृथ्वी कांप उठी और दैत्य मार्ग में गर्जते हुये चले और देवलोक में पहुँचकर उसको चारों ओर से घेर लिया और जलन्धर नन्दन वन में स्थित हुआ यह दशा देख इन्द्र क्रोधित हुये और बृहस्पति अपने गुरु की आज्ञा लेकर देवताओं की सेना लिये हुये इन्द्र अपने पुर से बाहर आये और दोनों सेना परस्पर लड़ने लगीं और नाना प्रकार के शस्त्र चलने लगे और देवता और दैत्य बड़ी प्रसन्नता से परस्पर एक दूसरे पर वार करने लगे लहू की नदी बह निकली दोनों ओर से बड़े २ भारी भट मरे उनके सब युद्धस्थल में ढेर के ढेर होगये और हाथी और घोड़े रथ प्यादे आदि और देवता और दैत्य मृत्युवश हुये पर दैत्य देवताओं से जो मारे जाते थे उनको शुक्र मृतजीवनविद्या

की शक्ति से जिला देते थे अर्थात् शुक्र मन्त्र को जल पर पढ़ मरे हुये दैत्य के भाल पर छिड़कते थे और वह जी उठते थे और इसी प्रकार द्रोणागिरि से बृहस्पति जिलानेवाली ओषधि ले जाकर देवताओं को जिलाया करते थे जहां इस तरह का गुरु हो वहां क्या भय होसक्ता है निदान देवता और दैत्य फिर लड़ने लगे और किसी ने विजय न पाई जब जलन्धर ने देखा कि देवता मरकर फिर जीते होगये तो बड़ा क्रोधित हुआ और शुक्र से बहुत विनतीकर पूछा कि हमने बहुत देवताओं को मारा पर वे सब जी उठे हम केवल यह बात जानते थे कि संजीवनी विद्या केवल आपही जानते हैं दूसरा कोई नहीं जानता शुक्र ने कहा कि एक पवित्र ओषधि जिलानेवाली द्रोणागिरि पर्वत पर है उसको बृहस्पति लाकर देवताओं को जिला देता है जो तुमको विजय की इच्छा है तो द्रोणागिरि को जड़ से उखाड़-कर समुद्र में डलवा दो जलन्धर ने प्रसन्न होकर द्रोणागिरि को मूल से उखाड़ा और समुद्र में डाल दिया और फिर युद्धस्थल में जाकर बड़ी लड़ाई की और हस्तलाघवता और वीरता से सामना किया जो दैत्य कि मारे जाते थे शुक्र उनको तुरन्त जिला देते थे पर जब कि बृहस्पति देवताओं को मरा हुआ देख-कर फिर द्रोणागिरि पर ओषधि लेने गये तो वहां पर्वत ही को न देखा ओषधि कहां हो सक्ती है बृहस्पति ने अति चिन्तित होकर समझा कि जलन्धर ने उसको नष्ट कर दिया है और अति भय से लौटकर दूर से कहा कि हे देवताओ! युद्ध करना छोड़ दो जलन्धर बड़ा बलवान् है यह रुद्र के अग्नि से उपजा है यह परास्त न होगा देखो इसने तो पहाड़ को मूल से खोद डाला है यह सृष्टि भर का राजा होगा अब तुम समयको देखते रहो यह गुरु का वचन सुन देवता युद्धस्थान से भाग चले

और जिसको जहां जगह मिली वह वहीं जा टिका और दैत्यों ने यह दशा देखकर भयानक नाद किया और विजय के बाजे बजने लगे और जलन्धर देवताओं के पुर में चला गया और इन्द्र और बड़े बड़े देवता आदि सब सिमिट के एक कुन्तल में जा छिपे और वहां भी उनका भय न गया इसी प्रकार उन्होंने बड़े बड़े कष्ट उठाये और जलन्धर देवताओं के वश करने के अनन्तर राज्य करने लगा जहां पर कोई देवताओं की राजधानी थी वहां दैत्यों ने अपनी राजधानी ठहराई और चन्द्र, अनल, यम, कुबेर, सोम, सूर्य, पवन आदि सब देवताओं के जुदा पद पर दैत्यों को नियत किया वह ऐसा प्रतापी और शक्तिमान् हुआ कि जिसको हम कह नहीं सके उसने संसार भर का राज्य करके पुत्रों के समान प्रजा पाली और फिर शुम्भादि को राज्य दे आप सेनासमेत देवताओं के ढूँढ़ने को सुमेरु पर्वत पर चला ।

पन्द्रहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! देवताओं ने जलन्धर को आते हुये देखा और बहुत घबड़ाकर विष्णु का स्मरण किया और हाथ जोड़ शिर झुकाते स्तुति कहते जयविष्णु जयविष्णु ऐसा बारम्बार कहने लगे और विनती की कि आप तो सदा से देवताओं के सहायक हैं हम पर इस समय बड़ा कष्ट है आप प्रकट होकर दैत्यों को नष्ट करें अब हमारे सम्मुख जलन्धर चला आता है जो उचित हो वह कीजिये आपने देवताओं को दुःखी देख मत्स्य अवतार लिया और मुनि के सब दुःख दूर करके आप प्रलय में विराजमान हुये फिर देवताओं के निमित्त कूर्मावतार लेकर पर्वत को पीठ पर रक्खा जब हिरण्यलोचन बड़ा बलवान् होकर देवताओं को दुःख देने लगा तब तुमने

युद्धकर उसको नष्ट कर दिया और उसके भाई ने जब कि प्रह्लाद के साथ बड़ी हठ की तो तुमने नृसिंह अवतार धारण कर उसका उदर विदीर्ण कर दिया और केवल देवताओं के कार्य सुधारने को तुमने वामन होकर बलि के साथ छल किया और सब पृथ्वी उससे निकालकर हम सबको दे दी और परशुराम का अवतार लेकर सहस्राबाहु के गर्व को नष्ट किया और राजा विना पृथ्वी को कर दिया और शिवकी भक्ति में स्थित होकर सर्व संसार का उपकार करते रहे और जब कि रावण ने शिव के वरदान से बड़ी पदवी पर पहुँचकर सबको दुःख दिया तो तुमने रामचन्द्र होकर शिवसे बाण लिया और उसी बाण से रावण को मार डाला फिर तुमने कृष्ण अवतार ले पृथ्वी भर के भार को उतारा और जब कि दैत्यों ने वेदों को छीन लिया और पृथ्वी भर म्लेच्छों से पूर्ण होगई तब तुमने बौद्धरूप हो वेदों को उनसे छीनलिया और वेदोंकी निन्दाकर दैत्योंकी बुद्धि भ्रष्ट करदी और तुम कलियुग में कल्की अवतार धारण कर सब म्लेच्छों को नष्ट करोगे इसी प्रकार तुम भक्तों के लिये असंख्य अवतार ले उनके दुःख दूर किया करते हो और आप कष्ट सह भक्तों को आनन्द देते हो अब हमारे दुःख को दूर कीजिये इस समय हमारा रक्षक तुम्हारे सिवाय कोई नहीं इस समय अपने पीतवसन की झलक क्यों नहीं दिखाते इसी प्रकार देवताओं ने बड़ी स्तुति की यह स्तुति जो कोई सुने सुनावेगा वह कभी कष्ट न पावेगा निदान ऐसी स्तुति पढ़ते विष्णु ने जाना कि देवताओं पर कुछ दुःख पड़ा है सो तुरन्त उठकर गरुड़पर चढ़े इतनी शीघ्रता विष्णु की लक्ष्मी ने देखकर कहा इतनी जल्दी कहां जाते हो विष्णु ने कहा कि तुम्हारे भाई जलन्धर ने देवताओं पर चढ़ाई की है और वह हमारी स्तुति कर रहे

हैं सो हम उनकी रक्षा को और दैत्यों के साथ युद्ध करने को जाते हैं लक्ष्मी ने जलन्धर के प्रेम के कारण कहा कि तुम जलन्धर हमारे भाई को किस तरह मारोगे विष्णु ने कहा कि जलन्धर बड़ा बलिष्ठ और पराक्रमी है हमारे मारे से नहीं मरेगा वह रुद्र का अंश है और ब्रह्मा के वरदान से ऐसे कष्ट देवताओं को देरहा है पर जो मैं नहीं जाता तो हमारा नाम मिटजावेगा और वेद के मार्ग भ्रष्ट होजावेंगे यह कहकर विष्णु चले और शङ्ख, चक्र, गदा, असि और बाण लिये हुये गरुड़ को तत्ता किया और जहांपर जलन्धर था जा पहुँचे उस समय गरुड़ने शीघ्र ही अपने परों को डुलाया और वायु के समान जो मेघों को उड़ादेती है दैत्यों को उड़ादिया जलन्धर ने पवन से दैत्यों को दुःखी देखकर बड़ा क्रोध किया और सिंह के समान विष्णु पर जा पहुँचा और विष्णु और जलन्धर से बड़ा युद्ध हुआ और दोनों ओर से बहुत ही बाण चले और बाणों के छा रहने से आकाश दिखाई नहीं देता था विष्णुने जलन्धर के रथवाले घोड़े छत्र ध्वजा धनुष् काट शङ्खध्वनि की और एक बाण जलन्धर के हृदय में क्रोध से मारा और जलन्धर ने भारी गदा गरुड़ के शिरपर मारी कि गरुड़ न सहकर धरती पर गिरपड़े विष्णु ने निर्भय होकर असि लेकर गदा काटदी जलन्धर ने क्रोधकर विष्णु के हृदय पर एक तमाचा मारा और फिर दोनों लिपटकर भलीभांति मल्लयुद्ध करनेलगे और नाना प्रकार के दांव पेंच हुये जब दोनों में से कोई न हारा तब विष्णु ने बादल के समान गर्जकर कहा कि हे जलन्धर! तेरे समान हमने तीनोंलोक में कोई वीर नहीं देखा तुम्हारे सिवाय और कोई हमारा तेज नहीं सहसक्ता हमने कुछ अपने बल को नहीं रख छोड़ा और तुम्हारे पराक्रम से हम प्रसन्न हैं हमसे वरदान

मांगलो इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! राजनीति का मुख्य तात्पर्य यही है कि उपाय से अपना मनोरथ पूरा करे जलन्धर ने यह सुनकर विष्णु से कहा कि हम आपसे यही वरदान मांगते हैं कि आप लक्ष्मी हमारी बहन समेत हमारे घर में आकर स्थित होवैं इसी प्रकार जितने देवता हैं वह सब हमारे वश में होकर हमारे घर में रहें विष्णुजी जलन्धर का यह वर मांगना सुनकर अति दुःखी हुये और मानकर जलन्धर के घर में स्थित हुये और जलन्धर तीनों लोक को जीतकर बड़े आनन्द से रहने लगा ।

सोलहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारदजी ! जलन्धर ने तीनों लोक जीतकर देवताओं के बदले दैत्यों को नियत कर दिया और संसारभर के राजों को जीतलिया और सब देवता गन्धर्व सिद्धादिकों को अपने अधीन करलिया और जितने संसार में बहुमूल्य रत्न और विचित्र और अद्भुत वस्तु हैं उनको लेलिया और सब दिक्पालों को बुलाकर अपने नगर में प्रजा के समान बसादिया और उनके बदले दैत्यों को नियत कर दिया और इन्द्र से ऐरावत हस्ती छीन लिया और कल्पवृक्ष भी उसके वश में आया और उच्चैःश्रवा घोड़ा भी उसके हयशाला में बँध गया और जो मुख्य २ वस्तु जैसे छत्र वरुण का और रथ प्रजापति का और अंशुक अनल के थे वह सबसे छीनकर उसने अपने अधीन करलिये फिर उसने बड़े दया धर्म से आज्ञा चलाई और वह पुत्र के समान प्रजा का पालनकर दैत्यों में अद्वितीय गिनागया उसके राज्य में किसी को कुछ दुःख न था और न देश में कहीं कुछ किसी प्रकार का कष्ट था और न चोरी होती चारों वर्ण अपने अपने धर्म और आश्रम में स्थित

और कोई मनुष्य अधर्मी न था तीनों प्रकार के दुःख में किसी को एक भी न था और वेद के विरुद्ध कोई कर्म नहीं होता था कोई मनुष्य अकालमृत्यु न पाता था किसी मनुष्य के मन में पाप न उपजता और सब जीव स्वाभाविक द्वेष उचित न जानकर मित्रता और प्रीति से बसेरा करते थे और छल-छिद्र तो थाही नहीं स्त्रियां सब अपने पतिव्रत धर्म में स्थित थीं ब्राह्मण धर्म की कथायें कहा करते थे कोई मनुष्य दरिद्री न था हे नारद! यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि शिवजी की लीला ऐसी बलवान् है उस समय में अर्थात् जलन्धर के राज्य में सिवाय देवताओं के और किसी के मन में कुछ कष्ट न था एक दिन सब देवता इकट्ठे होकर शिवजी का स्मरण और ध्यानकर स्तुति करने लगे और देवताओं ने कहा कि हे शिवजी! अब कोई उपाय और मति रह नहीं गई अब तो आपही की कृपा होनी चाहिये क्योंकि हमको विष्णुजी का बड़ा भरोसा था सो उन्होंने अपनी स्त्री लक्ष्मी समेत जलन्धर के घर में डेरा किया जबतक कि हमारा काम विष्णु से निकलता था हम आपको श्रम न देते थे यह सुन शिवजी ने आकाशवाणी से कहा कि हे देवताओ! कुछ भय मत करो हम तुम्हारी आशा पूर्ण करेंगे देवताओं ने यह सुनकर बड़ा आनन्द मनाया और हे नारद! शिवजी ने तुम्हारे मन में युक्ति सुझाई जिससे तुमने जलन्धर के राज्य में जाकर विष्णु आदि को देखा जलन्धर ने तुमको देखकर अगवानी की और तुम्हारी पूर्ण पूजा की और कुशलप्रश्न के उपरान्त आगमन का कारण पूछा और कहा कि जो कुछ आपने संसार में आश्चर्यदायक चरित्र देखा हो तो वर्णन करो तब तुमने उत्तर दिया कि एक दिन हम कैलास में गये जो सृष्टि भर में श्रेष्ठ है और शिवजी की स्तुति

और प्रणाम के उपरान्त इतनी सामग्री देखकर मैं आश्चर्य में रहा और विचार किया कि इतनी सामां किसी के यहां न होगी सो मैं तुम्हारी सामां देखने आया हूं यह सुनकर जलन्धर ने अपनी सामग्री तुमको दिखाई और पूछा कि हे नारद! सच कहना दोनों जगह से कहां सामग्री अधिक है नारद ने कहा कि वास्तव में तुम्हारे घर सब रत्न वर्त्तमान हैं पर दारारत्न नहीं है शिवजी के घर ऐसी स्त्री है जिसके समान संसार में और कोई स्त्री नहीं जिसकी सुन्दरता पर ब्रह्मा भी मोहित हुये थे उसकी उपमा हम किससे देवें उसने शिवजी को जो कामदेव के शत्रु कहलाते हैं वश कर लिया है ब्रह्मा ने बहुत चाहा कि दूसरी स्त्री शिवरानी के समान बनावें पर न बना सके इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह कहकर तुम चले गये और जलन्धर कामज्वर से रोगियों के समान दुःखसागर में डूब गया और काम के वश हो शिवजी को देवताओं के समान समझ राहु को शिवजी के पास भेजा हे नारद! शिवजी के असंख्य चरित्र हैं उन्होंने जलन्धर का ज्ञान खींच लिया शिवजी की लीला बड़ी आश्चर्य देनेवाली है सो राहु अपने स्वामी की आज्ञा मानकर शिव के पास जा छः डेवढ़ी तक चला गया जब कि सातवें द्वार में जहां नन्दी गणों के राजा द्वारपाल बनकर बैठे थे गया तो नन्दी ने रोका और शिवजी की आज्ञा लेकर और आप साथ होकर सदाशिव के पास ले गया शिवजी ने भौंह की सैन से आज्ञा दी कि कहो राहु ने कहा कि हे शिवजी! जलन्धर जो सबसे श्रेष्ठ है और जिसके आधीन देवता और विष्णु भी हैं उसकी आज्ञा सुनिये उसने कहा है कि तुम तो तपस्वी योगी नग्न शरीर मरघटों में पड़े रहते हो तुम भोगविलास से प्रयोजन नहीं रखते हड्डियों की माला पहनकर अवधूतों के समान

रहते हो तुमको ऐसी कोमलाङ्गी स्त्री से क्या प्रयोजन है ? तुम तो वनके रहनेवाले हो ऐसी स्त्री तो हमको चाहिये इससे तुमको उचित है कि ऐसी रत्नदारा हमको दो यह सुनकर शिवजी कुपित हुये और तुरन्त शिव के भवों में से एक मनुष्य उपजकर आगे खड़ा हुआ जिसका अति भयानक शरीर वज्रके समान दृढ़ सिंह का सा स्वरूप तीक्ष्ण जिह्वा किये जलती हुई अग्नि के समान सब बाल खड़े हुये इसी प्रकार महाभयानक डील डौल से विष्णु का चौथा अवतार जाना जाता था और शिवजी की इच्छा समझकर राहु के खालेने के उद्योग से चला यद्यपि राहु भागा पर उस नये उपजे हुये गणने जाने न दिया और पकड़लिया राहु अति कम्पित हो शिवजी से कहनेलगा कि मुझको ब्राह्मण जानकर छुड़ा दो यह मुझको खाये डालता है मैं तो आपका ब्राह्मण हूं यह विनय के वचन राहु से सुनकर शिवशंकर ने कहा कि छोड़दे २ सो गण ने राहुको छोड़ शिवजीके पास आकर विनय की कि मैं बहुत भूखा हूं मेरे लिये कुछ भोजन बतला दीजिये भूख की आग से मैं जला जाता हूं शिवजी ने कहा कि जो तुम ऐसे भूखे हो तो अपने हाथ और पांव को खाडालो गण ने वही किया कि सिवाय शिर के अपने सब अङ्ग खाडाले यह दशा देख शिव अति आश्चर्य में हुये और अति प्रसन्न होकर कहा कि हम तेरी आज्ञाके पालन से अति प्रसन्न होकर तेरा नाम कीर्तिमुख रखते हैं तुम हमारे द्वारपाल होगे जो कोई पहिले तेरी पूजा न करलेवेगा उसको हम स्वप्न में दर्शन न देंगे हे नारद ! उस दिनसे कीर्तिमुखगण शिवजी के द्वारपर रहते हैं कीर्तिमुख के पूजे विना शिवजी की सब पूजा नष्ट और भ्रष्ट होजाती है निदान जब कीर्तिमुख के हाथ से छूटकर भागे तो कैलासपर्वत के एक गढ़े में ऐसे गिरे

कि राहु के अङ्ग भङ्ग होगये सो राहु ने जलन्धर के समीप आनकर सब हाल कह सुनाया।

सत्रहवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! दूत के वचन सुनकर जलन्धर अति कुपित हुआ और सब दैत्यों को आज्ञादी कि सब इसी दिन शिव के कैलास पर्वत पर चढ़ाई करें और सब सरदार और सेनाधिप अपने २ शस्त्र लिये हुये चतुरङ्गिणी सेनासे तैयार हों और एक कोटि असुर और पांचसौ कबन्ध और सौ कुलधूम्र सब चलें और कालक और ध्रुव और मुरज कालनेमि भी जो दैत्यों में प्रसिद्ध हैं साथ रहें यह आज्ञा देकर आपभी घर से जलता भुनता हुआ निकला उस समय जलन्धर की स्त्री ने वहुत समझाया और हाथ जोड़कर मनाकिया और कहा कि शिव से कोई युद्ध करके न जीता आप देवताओं के बड़े सहायक विष्णुजी वह तो तुम्हारे घर हैं पर जलन्धर ने मृत्यु के वश होने से कुछ न माना हे नारद! जब मृत्यु आती है तो बुद्धि भ्रष्ट होजाती है और जो मनुष्य चलने के समय स्त्री ब्राह्मण का आदर नहीं करता वह फिर नहीं लौटता बरन वह काल के मुखमें पड़जाता है सो सब सेना के आगे शुक्र फिर जलन्धर और फिर उनके पीछे सब सेना चली पहिले तो जलन्धर को राहु दिखाई दिया और फिर मुकुट शिर से गिर पड़ा यह बुरे शकुन साम्हने हुये और शुम्भ निशुम्भ दोनों सेनानी नियत किये गये और कालनेमि भी आज्ञा पाकर सेना सहित चला इसी प्रकार और बहुत दैत्यवंशी राजा कैलास पर्वत को चले जब कि जलन्धर सेना सहित कुछ दूर नगर से बाहर गया तब विष्णुने देवताओं को बुलाकर कहा कि अब कष्टके दूर होने का समय है तुम गुप्त शिवजी के समीप जाकर

जलन्धर की चढ़ाई के समाचार कहो सो देवता छिपे २ शिवजी के पास पहुँचकर स्तुति कर जैसा विष्णुजी ने कहा था सब विनय करनेलगे और जलन्धर के वध की इच्छा विनयपूर्वक प्रकट की शिवजी ने हँसकर कहा कि अब धैर्य रक्खो तुमको कुछ कष्ट न होगा यह कह फिर विष्णुजीको बुलाकर कहा कि तुमने जलन्धर को क्यों नहीं मारा और वैकुण्ठ छोड़ उसके घर में क्यों जारहे विष्णु ने कहा कि जलन्धर बड़ा बलवान् है कोटि यत्न से भी वह नहीं मरसक्ता और जो कि तुम्हारा अंश है इससे उस पर कोई शस्त्र नहीं चलता मैंने उसके साथ बहुत युद्ध किया पर वह न मरा वह आपही के मारे मरेगा आप कृपा करके उसको मारें तुम तो पृथ्वी से लेकर आकाशतक के स्वामी और तीनों गुणों से परे हो शिवजी ने कहा कि जलन्धर हमारे अंश से उपजा है इससे उस पर हम त्रिशूल नहीं चलासक्ते और हथियार जो त्रिशूल के सिवाय हैं वह जलन्धर पर काम न करेंगे इससे हमने एक उपाय सोचा है अर्थात् तुम सब अपना २ तेज देते जाओ हम उसका एक शस्त्र बनावेंगे और उसी शस्त्र से जलन्धर को जलावेंगे यह सुन हम विष्णु इन्द्र और सब देवताओं ने अपना २ तेज देदिया सो हम सबका तेज इकट्ठा होकर प्रज्वलित हुआ और शिवजी ने उसमें से एक शस्त्र बनाया जिसका नाम सुदर्शनचक्र रक्खा गया वह कोटि सूर्यवत् प्रकाशमान और अग्नि समान प्रज्वलित था और जो तेज कि सुदर्शनचक्र के बनाने से शेष रह गया था उससे वज्र बनाया जिससे देवताओं को अति आनन्द प्राप्त हुआ सुदर्शनचक्र को देखकर विष्णु और वज्र को देख कर इन्द्र अति प्रसन्न हुये और दैत्यों के वध का पूर्ण विश्वास हुआ इतने में जलन्धर कैलासपर्वत

के समीप पहुँच गया और उस पर्वत की एक कन्दरा में सेना सहित डेरा किया उसको देखकर सब देवता छिपे छिपे अपने २ स्थानों को जहां पहिले रहते थे चले और शिवजी के गणों ने दैत्यों की सेना के आने के पहिले शिवजी को समाचार दिया और कहा कि दैत्यसेना आने ही चाहती है जो आप उचित जानें वह करें शिवजी ने नन्दी गणपति और वीरभद्र को आज्ञा दी कि तुम और गणोंसमेत जाकर दैत्यों से भलीभांति लड़ो यह आज्ञा पाकर शिवजी के गण चले और पर्वत के नीचे उतर आये।

अठारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! शिवजी के गण जय शिव जय मृत्युञ्जय जय ईश कहते हुये प्रसन्नतापूर्वक गाते बजाते हुये दैत्यसेना से लड़ने लगे और ऐसी मारपीट दोनों ओर से युद्धस्थान में हुई कि पृथ्वी कांप उठी और हर प्रकार के शस्त्र दोनों ओर से चले और युद्धस्थल अस्थि, मांस, रुधिर से पूर्ण होगया वरन् रुधिर की नदी बह निकली वह स्थान चलने के योग्य न रहा जो दैत्य कि गणों के हाथ से मारे गये उनको शुक्र ने जिला दिया और जब कि फिर गणों ने दैत्यों की सेना का वध किया तो फिर भी शुक्रजी ने उनको जिला लिया इसी प्रकार बारम्बार गणों ने दैत्यों का वध किया और शुक्र ने फिर २ उनको प्राणसहित किया निदान गणों ने कोई उपाय न देख दुःखी हो शिव के समीप जा सब हाल कहा और कहा कि हमसे दैत्य न मरेंगे यह सब काम आप करें शिवजी क्रोधकर कहने लगे कि यह शुक्र मृत्युञ्जयमन्त्र पाकर ऐसे कार्य कर रहा है तब शिवजी के मुख से एक कृत्या नाम्नी स्त्री जिसका स्वरूप अति भयानक था उपजी उसकी दाढ़ें बड़ी भयंकर पर्वत के समान नासिका

और बड़ा भारी मुख अति ही भय देनेवाली आंखें अन्धे कुवें के समान स्तन पर्वत के शिखर सदृश लाल २ बाल खड़े हुये ऐसे स्वरूप से प्रकट होकर शिवजी की सेना से युद्धस्थान में आई और पहिले अति भयंकर नादकर दैत्यों को खाने लगी दैत्य दुःखी होकर भागने लगे उनकी कोई युक्ति न चली और फिर कृत्या शुक्र को अपनी योनि में दबाकर उड़ गई और सबके देखते २ दृष्टि के ओट होगई जब कृत्या शुक्र को उड़ा लेगई तब दैत्यों को बड़ा भय उपजा मानों सारे बिन मर गये और उनकी सेना में हाहाकार मच गया और शिवजी के गण प्रसन्न होकर दैत्यों को चारों ओर से घेरकर शेर के समान गर्जने लगे दैत्यों ने भागजाने के सिवाय और उपाय न देखा और चारों ओर भागकर फैलगये जिस तरह से कि घास फूस पवन के वेग से उड़जाती है उसी प्रकार दैत्य उड़गये यह दशा दैत्यों की देखकर शुम्भ, निशुम्भ और कालनेमि यह तीनों सेनप अति दृढ़ता से गणों के साथ सामना करने लगे और अन्त में शिवजी के गणों को बहुत मारकर दुःखी कर दिया सो वह हारमान भाग चले कि इतने में गणपति नन्दी वीरभद्र आदि ने दैत्यों को रोककर सब गणों को फिर धैर्य दे बुलालिया और फिर दोनों सेना ऐसी लड़ीं कि कालनेमि और नन्दी गणपति और शुम्भ वीरभद्र और निशुम्भ एक साथ लड़े और युद्धस्थान में अपनी २ वीरता दिखाने लगे वीरभद्र ने निशुम्भ के हृदय में बाण मारा निशुम्भ धरती पर गिरपड़ा वीरभद्र ने चाहा कि सांगी से उसे मारही डालूं इतने में शुम्भ ने उठकर वीरभद्र को बड़े क्रोध से अपनी सांगी मारदी सो वीरभद्र दुःख पाय धरती पर गिरपड़े और कालनेमि के शरीर में नन्दी ने सात बाण मारे जिसके लगने से रथ के घोड़े सारथी निर्जीव होगये और कालनेमि ने

क्रोधित होकर नन्दी के धनुष् को काटडाला नन्दी ने धनुष् को फेंककर त्रिशूल चलाया जिसके लगने से कालनेमि मूर्च्छित होकर धरती में गिरपड़ा और जब सचेत हुआ तो नन्दी को उठाकर पर्वत के ऊपर फेंकदिया और गणपति और शुम्भ लड़नेलगे गणपति तो मूषक पर चढ़े और शुम्भ रथ पर चढ़ा हुआ था इतना लड़े कि कोई युद्ध से मुख नहीं मोड़ता था निदान गणपति ने एक बाण शुम्भ के हृदय में मारा और तीन बाण से सारथी को पृथ्वी पर गिरा दिया शुम्भ ने क्रोधकर गणपति को साठ बाण मारे और गणपति के मूषक वाहन को तीन बाण मारकर शिर धर से जुदा करदिया मूषक धरती पर गिरपड़ा और गणपति भी मूषक के ऊपर से पृथ्वी पर गिरपड़े और पैदल होगये और फिर अपनी सांगी का शुम्भ के ऊपर वार किया कि शुम्भ सांगी के लगने से पृथ्वी पर गिरपड़ा और गणपति फिर मूषक पर सवार हुये विजय गणेशजी की हुई बाजे बजनेलगे सब गण अतिप्रसन्न हुये और जय जय शब्दकर विजय के बाजे बजानेलगे इतने में वृन्दानामक शुम्भ का पितामह कोपित होकर गणपति के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगा सो गणेशजी दौड़कर वृन्दा के पास पहुँचे उनके साथ असंख्य भूत, प्रेत, कूष्माण्ड, पिशाच, भैरव, गण, वेताल, शाकिनी, डाकिनी, योगिनी, किलकिल शब्द करते अर्थात् सिंह और हाथियों का नाद करते थे उन्होंने सेना समेत शुम्भ को विकल करदिया और वीरभद्र की सेना ने दैत्यों को अति दुःखी किया उन्होंने बहुत दैत्यों को खाकर लहूतक पीलिया इतने में नन्दी भी आगये और ऐसे बाण छोड़े जो दैत्यों की ओर सर्पवत् चले और दैत्यों की सेना नष्ट करदी कुछ तो दैत्यगण खाये गये कुछ दैत्य मारेगये कुछ मूर्च्छित हुये कुछ भाग गये कुछ

गिरपड़े इसी प्रकार सब दैत्यों की सेना नष्ट हुई जो शेष बचे वह महालज्जा को प्राप्त हुये।

उन्नीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जलन्धर अपनी वीर सेना की ऐसी दुर्दशा देख बड़े क्रोध से रथ पर चढ़ कटक सहित गणों की ओर चले और दैत्यों की सेना फिर सँभलकर लड़ने पर तय्यार हुई युद्ध के बाजे बजनेलगे और दोनों सेना फिर लड़ने लगीं और जलन्धर ने बाणों की वर्षा की और पांच २ बाण गणपति और नन्दी को और बीस बाण वीरभद्र को मार और बड़ा नाद किया सो वीरभद्र ने एक सांगी जलन्धर पर ऐसी चलाई कि जलन्धर मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और उठकर बड़े क्रोध से गदा वीरभद्र के ऐसी मारी कि वीरभद्र विकल होकर धरती पर गिरपड़े और इसी प्रकार जलन्धर ने नन्दी को भी पृथ्वी से वार करके गिरादिया तब गणपति ने क्रोधित होकर तुरन्त अपनी सांगी से जलन्धर की गदा को काटडाला और तीन बाण जलन्धर के हृदय में मारे और सात बाण चलाकर रथ के घोड़े और पताका ध्वजा और छत्र काट दिया जलन्धर ने अपनी सांगी चलाकर गणपति को घायल किया और दूसरे रथ पर चढ़कर वीरभद्र के पास पहुँच लड़ने लगा सो वीरभद्र ने धनुष काटकर जलन्धर के भाल में परिघ मारी जलन्धर धरती पर गिरपड़ा और फिर चेतकर एक ऐसी परिघ वीरभद्र के मारी कि वीरभद्र मूर्च्छित होकर धरती पर गिरपड़े उससमय ऐसी दशा वीरभद्रकी देखकर सब गण भागने लगे और शिवजी के समीप जाकर सर्व वृत्तान्त वर्णन किया और कहा कि दैत्यों ने हम सबको विकल कर दिया अब जो उचित हो वह आप करें शिवजी यह हाल सुन बैल पर चढ़े और

त्रिशूल लेकर दैत्यों की सेना पर चढ़ाई की युद्ध के बाजे बजने लगे और शिवजी ने अपनी डमरू बजादी जब कि गणों ने शिवजी को आते देखा तो प्रसन्नमुख हो गये और फिर लौट-कर लड़ने पर तय्यार हुये और फिर उन्होंने दैत्यों से घोर युद्ध किया और शिवजी ने अपना ऐसा भयंकर रूप धरा जिसको देखकर बहुत भय पाया और दैत्यों की सेना महाभय खा भाग चली सो दैत्यपति ने सेना की यह दशा देख शिवजी पर बहुत से बाण छोड़े और शुम्भ, निशुम्भ, कालनेमि, हयमुख, असिलोमा, बलाहक, प्रचण्ड एक ही साथ शिवजी पर चढ़ाई करके बाण चलाने लगे यहां तक कि आकाश दिखाई न देता था पर शिवजी ने सब बाणों का जाल काट डाला और अपने बाणों से आकाश पूरित कर दिया और फरसा लेकर असिलोमा का शिर काटडाला और बलाहक को भी वध कर डाला और घस्मर को पाश से बांध लिया हे नारद! शिवजी की लीला देखो कि जो सृष्टि उपजाकर प्रलय करनेवाला है वह संसारी रीति के समान कैसी २ लीला करता है फिर शिवजी ने अपना बैल दैत्यों की सेना में छोड़ दिया जिसने अपने सींगों से असंख्य दैत्यों को मारडाला जो शेष रहे वह भयभीत हो भाग गये जैसे शेर के हाथों से हाथी विकल होकर भाग जाता है वही दशा दैत्यों की हुई निदान जलन्धर ने शुम्भ निशुम्भ और कालनेमि से कहा कि देखो जो संसार में उपजते हैं वे अवश्य ही एक दिन मरते हैं उसका कोई उपाय नहीं ऐसी मृत्यु कौन चाहेगा जो दोनों लोक में यश और कीर्ति बढ़ाये लोक में दो प्रकार की मृत्यु-वाले सूर्यमण्डल को भेदनकर स्वर्ग को जाते हैं अर्थात् एक योगी दूसरा जो युद्ध में सम्मुख होकर निर्भय प्रसन्नतापूर्वक मरजावे इससे अब तुम मृत्यु का भय दूरकर भलीभांति सामने

होकर युद्ध करो यद्यपि ऐसी २ बातों से जलन्धर ने बहुत कुछ प्रबोध किया पर उनके मनों में कुछ न आया तब जलन्धर ने उनको बहुत धिक्कारदे कहा कि तुमने उपजकर वृथाही माता को दुःख दिया क्या तुमको युद्ध से भागना योग्य है क्या एक दिन तुम में कोई भी मृत्यु के पंजे से बचा रहेगा यह कहकर सिंह के समान गरजा और आप लड़ाई पर तय्यार हुआ ।

बीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जलन्धर के शब्द से धरती कांप उठी और समुद्र पर्वत सब थर २ कांपने लगे और दैत्य जो पहिले भाग गये थे सब लौट आये जलन्धर ने कहा कि हे शिवजी ! मालूम हुआ कि तुम कुछ बल रखते हो क्योंकि तुमने हमारे साथ युद्ध की इच्छा की अब अपनी वीरता दिखाओ कि तुमको हम वीर समझें यह कह शिवजी के ऊपर उसने शत्रुबाण चलाया जिसको शिवजी ने बीच ही से काटडाला और शिवजी ने सुगमतापूर्वक एक बाण चलाकर जलन्धर के रथ सारथि और घोड़ोंसमेत रथ धनुष् आदि सबकोनष्टकर डाला तब जलन्धर ने शिवजी के मारने को अपना तमाचा उठाया और छिपकर एक बाण शिवजी को मारा शिवजी ने उसको अपने बाण से एककोस पीछे फेंक दिया तब जलन्धर ने विचार किया कि शिवजी बड़े बली हैं ऐसे युद्ध करने से मैं इनसे न जीतूंगा कोई ऐसीमायाकरूं जिससे शिवजी मोहित हो जावें और शिवजी नाद को बहुत प्रिय जानते हैं यह शोच ऐसी माया फैलाई कि गन्धर्व अप्सरा और किन्नरादि उपजकर मनुष्यों के समान नाना प्रकार का नाचगान करने लगे और मृदङ्ग, मुरली, वीणा आदि नाना प्रकार के बाजन बजने लगे सो शिवजी के मन में सुनने की इच्छा उपजी और उस आनन्दरूपी

नाद में मग्न होगये और जो कि इस बात का नियम है कि राग सुनने से बुद्धि जाती रहती है जैसा कि शिवजी ने आप राग की बड़ाई को दिखाया और नाद तो आप शिवजी का रूप है इससे शिवजी उसमें मग्न होगये शिवजी सिवाय नाद के और किसी से मोहे नहीं जाते यह बात वेद कहते हैं इसी से शिवजी ने वेद के वचनों को स्थिर रखकर नाद में अपना मन लगाया उस समय शिवजी के हाथों से सब शस्त्र गिरपड़े और शिवजी ने उस तुरीयावस्था में कुछ न जाना और जलन्धर ने कामवश शिवजी के समान अपना स्वरूप बनाया जिसके दश भुजा पांचमुख तीननेत्र थे और एक बैल माया से बनाकर उसके ऊपर चढ़ा और जो मुख्य लक्षण शिवजी के हैं वह भी सब धारणकर शुम्भ निशुम्भ को युद्धस्थल में ठहराकर आप गिरिजा के समीप गया और गिरिजाने लोकरीति से उसको शिवजी जाना और जबकि गिरिजा सखियों के बीच में से उठीं और जाना कि यह छल से ऐसा स्वरूप बनाकर आया है तो तुरन्त वेद की रीति के अनुसार अन्तर्धान होगईं और जलन्धर लज्जित होकर युद्धस्थान को लौट आया और गिरिजाने विष्णुजी का ध्यान किया तो विष्णुजी तुरन्त आये गिरिजाने सब वृत्तान्त जलन्धर का वर्णन किया और पतिव्रतधर्म की बहुत कुछ प्रशंसा की और कहा कि जलन्धर की स्त्री बड़ी पतिव्रता है उसीके धर्म से जलन्धर नहीं मरता क्योंकि पतिव्रता स्त्री विधवा नहीं होसक्ती इससे तुमको उचित है कि जलन्धरपुरी में जाकर उसकी स्त्री के पतिव्रतधर्म का नाश करो और वृन्दा जो जलन्धर की स्त्री है उसके साथ छल करो कुछ धर्म विचार न करना क्योंकि धर्मशास्त्र लिखता है कि जो बुरे के साथ बुराई करे तो कुछ पाप नहीं होता यह सुन विष्णुजी तुरन्त जलन्धरपुरी को गये

और जब जलन्धर युद्धस्थल में आया और अपनी माया को दूर किया तो शिवजी ने चैतन्य होकर युद्ध का स्मरण किया यह भी शिवजी की माया थी क्योंकि संसार में जो शिवजी के भक्त हैं उनके ऊपर तो माया कुछ अपना फल करही नहीं सक्ती तो शिवजी पर क्या फल होसक्ता था निदान शिवजी अति क्रोधित होकर जलन्धर के ऊपर दौड़े जलन्धर ने अपने बाणों से शिवजी को छिपादिया शिवजी ने अपने बाणों से उसके बाणों को काटकर उसको दुःखी किया यद्यपि बड़ा ही युद्ध शिवजी और जलन्धर से हुआ पर कोई उनमें न हारा और जो दैत्य कि शिवजी के हाथ से मारेगये वह मुक्त होगये उन दैत्यों की क्या अच्छी भाग्य थी जो शिवजी को सन्मुख देखते हुये अपने प्राण देते थे हे नारद ! यह लीला जिस तरह कि विष्णुजी से हमने सुनी थी तुमसे कहदी ।

इक्कीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! गिरिजा की आज्ञा से विष्णु जलन्धरपुरी में पहुँचे और विचार किया कि किसी प्रकार वृन्दा जलन्धर की स्त्री का पतिव्रतधर्म बिगाड़ूं इसी शोच में शिवजी का ध्यान किया तथाच शिवजी के ध्यान करते ही विष्णुजी को यह ज्ञान हुआ कि वह तपस्वीरूप से एक शिष्य को साथ लिये हुये वृन्दा के उपवन में गये वृन्दा ने उसी रात को स्वप्न में देखा था कि मेरा पति जलन्धर मारा गया और यह भी देखा कि मेरा पति जलन्धर भैंसे पर तेल लगाये हुये सवार नंगा और शिर के अशुभबाल बनवाये हुये काले फूलों की माला पहने चारों ओर राक्षसों से घिरे यमदिशा को चला जाता है और फिर देखा कि नगरभर समुद्र में डूबा चाहता है और चारोंओर अंधेरा छारहा है यह

दुस्स्वप्न देखकर उठी और सूर्य को उदय होते राहु समेत प्रकाश-हीन देखा ऐसे अशकुनों को देखने से वह एकाएक रोने पीटने लगी और घबराहट से इधर उधर फिरने लगी यद्यपि उसने अपने उद्यान की बहार और इधर उधर घूमने से मन के दुःख को भुलाया पर मन ने कुछ भी आनन्द न पाया निदान अपनी दो सखियों को साथ लेकर जलन्धर के उद्यान को गई पर वहां भी फूल फल देख कुछ हर्ष न उठाया घूमने में दो राक्षस उसके दृष्टिगोचर हुये जो अति भयानक थे उनको देखकर रानी भाग गई और आगे जाकर एक तपस्वी को शिष्यों समेत देखा कि मौन साधे बैठा है वृन्दा दौड़कर दोनों अपने हाथ उसकी गर्दन में डालकर लिपट गई और कहा कि हमारी रक्षा करो सो तपस्वी ने दोनों नेत्र खोलकर बड़ा क्रोध किया और हुंकार दी कि वे दोनों राक्षस भाग गये और जलन्धर की स्त्री अति प्रसन्न हुई और प्रणामकर उनके तपकी प्रशंसा करनेलगी और कहा कि आप मेरे पति का वृत्तान्त जो शिवजी से युद्ध करने के निमित्त गया है कहिये विष्णुजी ने हँसकर ऊपर की ओर देखा कि तुरन्त ही दो वन्दर आ पहुँचे और प्रणाम करके बैठे और फिर तपस्वी की सैन से गुप्त हो गये और एक क्षणभी न बीता कि दोनों वन्दर फिर पहिले की तरह आकर बैठ गये उनके हाथ में जलन्धर का शीश और धड़ था उन्होंने योगी के आगे रख दिया और आप दुःखी होकर बैठ रहे वृन्दा अपने पति का शिर देखकर धरती में गिर पड़ी तब मुनि ने पानी आदि छिड़क वृन्दा को जगाया और वृन्दा फिर रोकर अपने पति का शिर अपने शीश से लगा रोने लगी और कहा मैं तो तुमको शिव के साथ युद्ध करने में मना करती थी पर तुमने न माना और इसी प्रकार वह बातें कह २ कर रोती थी फिर मुनि

से कहा कि आप हमारे ऊपर कृपा करके हमारे पति को क्यों नहीं जिलाते तुम इस योग्य हो कि मेरे पति को जिला दो क्योंकि मैं तुमको देख चुकी हूं मुनि बोले कि जो मनुष्य शिवजी की क्रोधाग्नि से मारा गया उसको हम जिला नहीं सके पर तुम्हारे दुःख को देखकर हम जिला देवेंगे यह कह शिर को शरीर से जोड़ दिया और आप अन्तर्धान होगये और उस शरीर में आप प्रवेश कर गये और जलन्धर के समान उठकर बैठ गये और अपनी स्त्री को गले लगाया और वृन्दा ने कुछ न जाना और बड़ी प्रसन्नता से मैथुनकर अपना धर्म खो दिया और उत्तम रीति से विहार किया और कई वेर भोग विलास किया एक समय विष्णुजी ने अपना शरीर धारण किया जिसको देख वृन्दा ने पहिंचान लिया और बहुत दुःखी हुई और ऐसा छल विष्णुजी का जानकर वृन्दा ने विष्णुजी को बहुत भय दिया और क्रोधित हो कहने लगी कि तुमने वेद के विरुद्ध परस्त्री के साथ मैथुन करके मेरे धर्म को नाश किया तुम ऐसा स्वरूप मुनीश्वरों का बनाये हुये बड़े धर्मवान् हो यह कहकर फिर शाप दिया कि जो दोनों राक्षस तुमने दिखाये वह दोनों बड़े बली होकर तुम्हारी स्त्री को भगा ले जावेंगे जिससे तुम बहुत दुःख पाकर वन २ फिरा करोगे जहां तुमको हर प्रकार के कष्ट मिलेंगे और जो बन्दर तुमने हमको दिखाये वही तुम्हारे सहायक होंगे यह कहकर वह बहुत रोई और चिता बनाकर अपने पति के साथ जलने की इच्छा की और यद्यपि विष्णुजी ने बहुत मनाया पर पतिव्रतधर्म को दृढ़-कर उसने कुछ न माना और तुरन्त शिव गिरिजा का ध्यान करके सती होगई और उसका तेज सबके देखते हुये गिरिजा के शरीर में प्रवेश कर गया यह दशा देख विष्णुजी बार २

पछताते उसकी सुन्दरता के स्मरण में दुःखी हुये और चिता की भस्म अपने शरीर से मल उसी स्थान पर स्थित हुये और अपने मुख्य स्थान और लक्ष्मी को छोड़ दिया यह दशा देख देवता सिद्ध उसी के निकट आगये वे सब विष्णुजी को बड़े २ इतिहास सुना २ कर समझाने लगे कि तुम तो आप धर्म के पालनेवाले प्रति समय में रहे हो तुमको परस्त्रीगमन करना उचित न था चलो अपने वैकुण्ठ में विहार करो परस्त्री की प्रीति छोड़ दो जो पाप कि भाग्यवश हुआ है वह शिवजी की कृपा से नष्ट हो जावेगा अब कुछ खेद मत करो और अपने स्थान को चलो हम आपको समझाते हैं यह हमारी बड़ी ढिठाई है आप क्षमा करेंगे तुम्हारी लीला का जाननेवाला कोई नहीं है सो इतने समझाने पर भी विष्णुजी ने किसी को उत्तर तक न दिया और उसी प्रकार शोक में बैठे रहे हे नारद! शिवजी की बड़ी माया है उसीके अधीन सब हैं जैसा शिवजी के मन में आता है वैसा ही सब कुछ होता है।

बाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जब शिवजी सचेत हुये तो उन्होंने देवताओं को दुःखी कर दिया अन्त को जलन्धर ने शिवजी की वीरता और पराक्रम देख विचार किया कि अब मुझे माया करनी चाहिये कि शिवरानी को प्राप्त करूं यह शोच उसने माया से एक गिरिजा बनाई और उस अनुकरण गिरिजा को विठलाकर शिवजी के सम्मुख लाये इस तरह पर कि शुम्भ निशुम्भ दोनों भाई मारते जाते थे और वह गिरिजा रोती हुई कहतीथी कि हमारी रक्षा करो इतने में जलन्धर ने ऊंचे शब्द से कहा कि हे सदाशिवजी! अपनी स्त्री को देखो जो यह स्त्री तुमको अति प्रिय है उसको हम पकड़ लाये हैं और उसकी ऐसी दुर्दशा

करहे हैं क्या तुम नहीं देखते तुमको धिक्कार है तुम अपनेको बड़ा समझते हो यह वचन सुन और माया की गिरिजा देख शिवजी अति दुःखी हुये और मौन साधि बुद्धि विस्मृत की और जब कि शिवजी ने लीला करके अपने को ऐसा शोकवान् दिखाया तब जलन्धर ने धनुष् को कानतक खींचकर तीन बाण शिवजी के ऊपर चलाये एक शिर में दूसरा छाती में तीसरा उदर में शिवजी जलन्धर की सब माया जान महा भयंकर रूप धारण कर अग्नि के प्रकाशवत् प्रकटे ऐसा भयानक स्वरूप देख सब दैत्य भय खा युद्धस्थान छोड़ भाग चले यहां तक कि शुम्भ और निशुम्भ भी पीठ दिखाकर भागे और जलन्धर की सब माया नष्ट होगई और शिव ने अति तेजरूप से शुम्भ निशुम्भ को यह शाप दिया कि तुमने जो छल करके गिरिजा को दुःख दिया यह बड़ा पाप तुमसे हुआ है और हमारे युद्ध से मुख मोड़कर भागे तुम्हारा धर्म जाता रहा इससे तुम गिरिजा के हाथों से मारे जावोगे इतने में जलन्धर ने क्रोधित होकर बाणों से शिवजी को छिपा दिया तब शिवजी कोपित हुये और जलन्धर के बाणों को काट डाला इतने में जलन्धर ने एक परिघ बैल पर मारा कि बैल धर्म भूलकर लड़ाई से भागा यद्यपि शिवजी ने उसको बहुत खींचा पर वह युद्धस्थल में न ठहर सका तब तो शिवजी अति कोपित होकर महाभयंकर होगये और सुदर्शनचक्र को हाथ में उठा लिया जो कोटि सूर्य के समान चमकता था और जलन्धर के सामने छोड़ दिया उस चक्र का दशों दिशाओं में तेज पूर्ण होगया और सर्व पृथ्वी और आकाश दग्ध होने लगा सो उसने जाकर जलन्धर का शिर शरीर से भिन्न कर दिया और बड़ा शब्द हुआ उस समय पृथ्वी थरथर कांपने लगी और पर्वत जल गये और जलन्धर का तेज शिवजी के शरीर

में प्रवेश कर गया और जय २ शब्द हुआ हे नारदजी! उनके बड़े भाग्य हैं जिनकी यह दशा होवे क्योंकि देवता मुनि बड़े २ उपाय से इतना शिवजी को प्रसन्न नहीं कर सके उस समय हम और इन्द्र और देवता आदि बड़ी २ स्तुति करने लगे।

देवताओं की की हुई स्तुति।

हे शिवजी! तुम हर प्रकार से भक्तों के दुःख दूर करनेवाले हो तुमको मन वाणी और वेद आदि किसी ने नहीं पाया वे भी नेति नेति कह अपनी अज्ञानता जनाते हैं तुम्हारी महिमा अपार है जिसको नारद, शारद, शेष, महेश भी नहीं पाते केवल अपनी बुद्धि के अनुसार कहते हैं तुम्हारे एक निमेष में करोड़ों इन्द्र विष्णु बीत जाते हैं तुम किसी से बनाये नहीं गये बरन् परब्रह्म हो तुम दीनदयालु और घट घट व्यापक हो तुमने यदुवंशी को मुक्ति दी और उसी की स्त्री कलावती तुम्हारी भक्ति से मुक्त हुई तुमने मदयन्ती स्त्री को मोक्ष दी और सौमुनि के पुत्र को क्या अच्छी गति दी और राजा तिमिरघ्न को तुमने अपना करके सात जन्म तक बराबर आनन्द कृपा किया और तुमने चन्द्रसेन का मान रख लिया और श्रीकर गोप को अपना भक्त बनाकर वह द्रव्य दिया जो देवताओं को भी नहीं मिलता तुम्हीं ने सत्यरथ की आपदा दूर की और धर्मगुप्त तुम्हारे व्रत करने से दरिद्रता से छूट गये तुमने चित्रधर्म के दुःख को दूर कर दिया और उसमें उसकी लड़की को कितना सुख नहीं दिया अर्थात् उसका पति राजा चन्द्राङ्गद यमुना के भीतर डूब गया था और तुमने मरने न दिया तुम्हारे बल से तक्षक को कुछ हानि और भय न होने पाई और एक स्त्री पुरुष हो गई अमद्रदेश के ब्राह्मण को आपने मोक्ष दिया और उसकी स्त्री चञ्चला को उबार लिया भद्रामुखगिरि के कष्ट को दूर कर दिया और पिङ्गला की

इच्छा के अनुसार उसको धन आनन्द और सुख दिया और भद्रासुख अपने भक्त की इच्छा पूरी की ऋषभ को तुमने हर प्रकार आपमें मिला लिया आपकी सेवा वामदेव करके कैसी गति को पहुँचा तुमने राजा दुर्जन को तार दिया जिसने असंख्य स्त्रियों के साथ व्यभिचार किया था और तुमने शवरी और शूकर को कैसी अच्छी गति देकर भस्म का माहात्म्य प्रकट किया और भद्रसेन का पुत्र सुधर्मा और तारक मित्र के पुत्र को उत्तम गति देकर रुद्राक्ष की वड़ाई दिखाई तुमने गङ्गा को जिसका नाम महानन्दा था तार दिया और सुश्रुमान् तुम्हारी भक्ति से बहुत दिनों तक जिया तुमने शारदा के पति को जिलाकर उसके सौभाग्य को स्थिर रक्खा और वन्दिक नाम पापी ब्राह्मण को बहुत अच्छी गति दी और उसकी स्त्री वीचुका जो पुंश्चली थी उसे मुक्ति देदी और तुमने दक्ष के यज्ञ को विध्वंसकर उसके गर्व का नाश कर दिया और काम को दग्धकर शिवरानी का गर्व हरा और बालक का रूप धारणकर तारक दैत्य को मारडाला तुमने गणपति को अपना बल देकर सब गणों से प्रबल कर दिया और फिर त्रिशूल से उनका शिर काट फिर भी जिला दिया और दैत्यों को देवताओं समेत जलते हुये देखकर हलाहल विष को आप पीलिया तुमने पहिले त्रिशूल लेकर अन्धक के शिर को काटडाला फिर कृपाकर उसको अपने गणों में कर लिया तुमने त्रिपुर को जलाकर भस्म कर दिया और काल को तुम्हींने जलाया और धर्म को पालना के साथ रक्खा तुमने विष्णु ब्रह्मा के मोह को दूर करके मन्त्रशास्त्र को कील डाला तुमने नरहरि अवतार के गर्व को नाश कर दिया और शरभ का अवतार धारण किया और अत्रि के पुत्र होकर कामरूप का वध किया तुमने कपि का स्वरूप धारणकर राम

लक्ष्मण के दुःख को दूर कर दिया और सूर्य और चन्द्रमा आदि सातों ग्रहों ने तुम्हारी कृपा से यह नाम पाया और राहु केतु भी तुम्हारी कृपा से उसी पद पर पहुँचकर ग्रह हो गये तुम्हारी सेवा से ब्रह्मा विष्णु सृष्टि का पालन पोषण करते हैं तुम तीनों गुणों से परे हो और सगुण हो वे हाथों के बड़े २ कार्य करते हो हे नारद ! हम तीनों ने ऐसी स्तुति शिवजी की की जो कोई इस स्तुति को सुनेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा और शिवजी का लोक पावेगा ।

तेईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! देवताओं ने यह स्तुतिकर फिर शिव से विनती की कि आपने जलन्धर को नष्ट करके हम लोगों को निर्भय कर दिया अब और कोई कण्टक नहीं है पर अकस्मात् एक और दुःख हम लोगों को उपजा है अर्थात् विष्णुजी उस स्थान पर जहां जलन्धर की स्त्री सती हो गई है भस्म लगाये हुये लोट रहे हैं वे किसी का कहना सुनना नहीं सुनते अब कोई उपाय कीजिये कि जिसमें विष्णुजी फिर हठ को छोड़ अपना पुराना मार्ग धारण करें शिवजी ने हँसकर कहा कि हे देवताओ ! यह सब हमारी माया की लीला है हमारी माया तीनों लोक को नचाया करती है विष्णुजी की बुद्धि को हमने भ्रष्टकर यह लीला कराई है विष्णुजी मुझको बहुत प्रिय हैं इससे हमने यह लीलाकर उनके अहंकार को दूर कर दिया अब जो उपाय हम बतलाते हैं वह तुम सब करो कि विष्णुजी का मोह दूर होजावे अर्थात् अब तुम सब देवी की शरण में जाकर अपना दुःख वर्णन कर दो वह तुम्हारे सब कार्य करेंगी और विष्णुजी मुख्य स्वरूप पर आ जावेंगे यह कह शिवजी अपने गणों समेत अन्तर्धान हो गये और देवता गिरिजा की स्तुति करने लगे

और कहा कि हम तुम्हारी शरण में आये हैं हमको दुःख से छुड़ा दो यह स्तुति जो पढ़ेगा वह कभी मोह और दरिद्रता में न पड़ेगा यह स्तुति देवता कर रहे थे कि आकाश में एक अग्नि का कुण्ड दृष्टि पड़ा और उस कुण्ड में से शब्द हुआ कि हमने तीन रूप से अलग २ तीनों गुण से अलंकृत होकर संसार में अवतार लिया है एक गिरिजा दूसरी लक्ष्मी तीसरी सरस्वती सो हे देवताओ ! तुम उनकी शरण में जाओ तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा इतना सुन देवता स्तुति करने लगे जिसके हर श्लोक में जय २ शब्द था सो तीनों देवियों ने तीन बीज देकर कहा कि जहां विष्णुजी बैठे हैं वहां इनको बो दो तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी ऐसे वचन देवियों के सुनकर जहां विष्णुजी बैठे थे देवताओं ने जाकर वह तीनों बो दिये जिससे तीन प्रकार की वनस्पति उपजी उनका नाम धात्री, मालती और तुलसी हुआ धात्री जो हमारी स्त्री है उसी से धात्री और लक्ष्मी से मालती और गिरिजा से तुलसी उपजी और यह तीनों देवियां रज सत् तम तीनों गुणों को धारण किये हुई स्त्रियों के समान प्रकट होकर वृन्दा से भी अति सुन्दर विष्णु के आगे खड़ी हुई उनको देख विष्णु आश्चर्य में हुये और तुरन्त कामवश हो उठ खड़े हुये सो धात्री और तुलसी ने तिरछी चितवन से विष्णु की ओर देखा और मालती यह दृष्टि उनकी सवतियाडाह से न सहकर दुःखी हुई और मन में क्रोध किया इससे वह शिव पर नहीं चढ़ाई जाती और विष्णुजी धात्री और तुलसी पर मोहित होकर उनको साथ लिये हुये वैकुण्ठ में आये और उनका मोह जाता रहा जो मनुष्य इस जलन्धर के वध को पढ़ेगा वह शिवलोक में स्थान पावेगा ।

चौबीसवां अध्याय।

सूतजी बोले कि इस कथा के सुनने के उपरान्त नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि सुदर्शन चक्र विष्णुजी का शस्त्र प्रसिद्ध है नहीं जानते कि वह यही सुदर्शनचक्र है जो शिवजी ने सब देवताओं से तेज लेकर जलन्धर के वध निमित्त बनाया या वह कोई दूसरा है मुझको बता दीजिये यह सुनकर ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! सुदर्शनचक्र एक ही है दूसरा नहीं जब दैत्य अतिबल और द्रव्य प्राप्तकर देवताओं को दुःख देने लगे तो विष्णु ने शिवजी की बड़ी सेवाकर सुदर्शनचक्र पाया और उसी से सब दैत्यों का वध करते हैं कल्पभेद से हर चरित्र लीला वर्णन व्याख्यान कथा और इतिहास में बहुत अन्तर है पर बुद्धिमान् को चाहिये कि जो उसे सन्देह उपजे पूछे पर सत्यमार्ग से भटक न जावे सो जब जलन्धर के वध को बहुत समय बीता तब दैत्य दानव के लड़के बड़े बली होकर उपद्रव मचाने लगे जिनसे संसार में मनुष्यों को बड़ा दुःख प्राप्त हुआ और तप योग यज्ञ देवताओं की पूजा ध्यान वर्णाश्रम और सब धर्म में विघ्न पड़ने लगा और गोवध बहुत होने लगा और सब अच्छे पहिलेमार्ग जातेरहे सो देवता और मुनि सब दुःखी होकर हमारे पास गये और शरण २ कहकर हमारी स्तुति की और अपने कष्ट को वर्णन किया हम सबको साथ लेकर विष्णुजी के पास गये और बड़ी स्तुतिकर विनय की कि अब दानव और दैत्य बड़ा दुःख देते हैं इन सबको नष्ट करो हम सब आपकी शरण में आये हैं विष्णुजी प्रसन्न होकर कहने लगे कि तुम सब अपने २ घरों को चलेजावो हम दैत्यों से युद्ध करेंगे यह कह और दैत्यों के साथ युद्ध करनेलगे पर दैत्यों को न जीतसके क्योंकि वे बड़े बली थे विष्णु ने विचारा कि हम बिन सहायता

विजय न पावेंगे और शिवजी की रक्षा बहुत दुर्लभ है यह विचारकर तुरन्त ही अन्तर्धान हुये और कैलास पर्वत के निकट योग के निमित्त बैठ गये और एक कुण्ड खोदकर उसमें अग्नि भरदी और बहुत ही कठिन पूजन करने लगे यद्यपि पार्थिव-पूजन मन्त्र और ध्यान आदि बहुत से योग किये परन्तु शिवजी प्रसन्न न हुये तब विष्णुजी ने विचारा कि किस प्रकार शिवजी प्रसन्न होंगे अन्त में विश्वास हुआ कि शिवजी सहस्रनाम के जपने से अति प्रसन्न होंगे इस कारण सहस्रनाम जपने लगे और हरएक नाम के पीछे एक कमल का फूल चढ़ाकर प्रणाम करते थे इसी प्रकार बहुत दिन पर्यन्त पूजन करते रहे शिवजी ने प्रसन्न होकर चाहा कि अपनी प्रसन्नता प्रकट करें परन्तु उन्होंने परीक्षा के निमित्त सहस्रपुष्प में से एक पुष्प कमल का उड़ा लिया विष्णुजी को कुछ न भासा अन्त में पूजा करते २ एक फूल कम होने से उनको खेद हुआ इस कारण कि और कमलपुष्प के प्राप्त होने की उनको कुछ भी आशा न थी और पूजन में भी अन्तर पड़ता था इस विचार से उन्होंने शिवजी का ध्यान किया जिससे उनको यह भासा कि हमारे नेत्र तो कमलपुष्प से कम नहीं तुरन्त ही नेत्र को निकाल बहुत ही प्रसन्न होकर शिव के अर्पण किया शिवजी ने दर्शन दिया और आम्रेडितम् मन्त्र को पढ़ा और कृपादृष्टि से देखा विष्णुजी ने शिवजी को प्रणाम किया शिवजी मुसुकराये और कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो वह मांगो विष्णुजी ने अति पवित्र स्तुति पढ़ी फिर प्रार्थना की कि हम दैत्यों से हार गये हैं उनको हम किसी प्रकार नहीं जीत सके ऐसा यत्न कीजिये जिससे वे मारे जायँ शिवजी ने कृपा की और सुदर्शनचक्र दिया और कहा कि हमारे इस समय के रूप का ध्यान और सहस्रनाम जिसको तुमने जपा और सुदर्शनचक्र

जो हम तुमको देते हैं इन तीनों से तुम शत्रुओं और दैत्यों को मारकर जीतलोगे त्रैलोक्य में कोई तुमको न जीतसकेगा सुदर्शनचक्र को लघुकार्य पर न छोड़ना यह सम्पूर्ण कार्य का सिद्ध करनेवाला है वह सबको सिवाय ब्राह्मणों के जलावेगा यह कहकर शिवजी तो अन्तर्धान हुये और विष्णुजी सुदर्शनचक्र को लेकर हँसी खुशी रात्रि दिन सहस्रनाम का जप करते और अपने भक्तों को उसी की शिक्षा देतेरहे अब भी जो कोई सहस्रनाम और विष्णुस्तुति पढ़ेगा उसके सर्वकार्य सिद्ध होंगे उसके शत्रुओं का नाश होगा त्रैलोक्य में सुखी रहेगा विद्या की वृद्धि होगी रोगों को दूर करेगा वह सर्व प्रकार से लाभदायक है।

पच्चीसवां अध्याय।

नारदजी बोले हे ब्रह्माजी! और भी शिवजी के चरित्र वर्णन करो जिस प्रकार दैत्यों को नष्ट किया ब्रह्माजी बोले कि अब हम शङ्खचूड़ के मारने का वृत्तान्त वर्णन करते हैं सुनो कि जिस प्रकार शिवजी ने शङ्खचूड़ को मारा इसके श्रवण करने से शिवभक्ति अधिक उत्पन्न होती है पहिले यह विचार लो कि हमारे पुत्र मरीचि से कश्यप उत्पन्न हुआ जिसको हमारे लड़के दक्षप्रजापति ने तेरह पुत्रियां व्याहि दीं जिससे बहुत सन्तान उत्पन्न हुईं और देवताआदि सब उसी प्रकार से हैं ऐसा कोई नहीं जो उस कुल का वर्णन विस्तारसंयुक्त करे हम केवल एक मनुष्य का इतिहास वर्णन करते हैं जो भक्ति की वृद्धि करता है और इच्छा का देनेहारा है अर्थात् कश्यप की स्त्री पतिव्रता और सुन्दर थी उसके चार पुत्र हुये वह दैत्य और बड़े वीर थे उनमें से एक पुत्र विप्रचित्ति बड़ा ही वीर और बलवान् था उसका एक पुत्र दम्भानामी विष्णुजी का बड़ा सेवक और भक्त था परन्तु कोई पुत्र न उत्पन्न होने से अपने

बड़ों की इच्छा और विष्णुजी की आज्ञानुसार पुष्कर में योग करने गया और एक लक्ष वर्ष पर्यन्त कठिन योग करता रहा कि कोई पुत्र उपजे विष्णुजी ने ऐसा पूजन देखकर दर्शन दिया और प्रसन्नता से कहा कि वरदान मांग उसने उत्तर दिया कि मैं ऐसा पुत्र चाहता हूं जो बड़ा वीर हो मेरे अधीन हो सर्व संसार को जीते और बड़ा बुद्धिमान् हो विष्णुजी ने अङ्गीकार किया और जब विष्णुजी अन्तर्धान होगये तब दम्भासुर घर में आये और अपनी स्त्री से सब कहा वह बहुत प्रसन्न हुई और भक्नों को बहुत भिक्षा दी थोड़े दिन के पीछे वह गर्भिणी हुई और सुदामा नाम एक कृष्णजी का भक्त जो राधाजी के शाप से वैकुण्ठ या गोलोक में था उसके गर्भ में आया जब नव दश महीने हुये तो शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में उसका जन्म हुआ दम्भासुर ने जातकर्म करके बड़ी धूमधाम से भाई बन्धुओं की अनेक प्रकार से सेवा की और अधिक प्रसन्न हुआ और लड़के का नाम शङ्खचूड़ रक्खा शङ्खचूड़ सर्वविद्यानिधान हुआ और उसने अपना आचरण भी बहुत अच्छा रक्खा मा बाप को सुखी रखने लगा और जैगीषव्य से उपदेश लेकर योग करने गया और हमारे पाठपूजन में ऐसा लीन रहा कि हमको बहुत प्रसन्न किया और इसी हेतु से हम वरदान तत्काल देने आये शङ्खचूड़ ने हमसे यह वरदान मांगा कि हम देवताओं से न हारें और तीनों लोक में हमारी जीत हो और हम बड़े वीर हों हमने अङ्गीकार किया और कृष्णकवच उनको दिया और आज्ञा दी कि तुम बदरिकाश्रम में जाकर धर्मध्वज की पुत्री तुलसी से जो योग करती है अपना विवाह करो यह वरदान देकर हम अन्तर्धान हुये और शङ्खचूड़ ने कृष्णकवच को सिद्ध किया और अपने कण्ठ में बांधलिया और उस स्थान पर अर्थात् बदरिकाश्रम में

जाकर जहां तुलसी योग करती थी वहां पहुँचा और तुलसी की सुन्दरता देखकर मोहित हुआ और कहा कि तुम कौन हो किसकी पुत्री हो और किस कारण ऐसा योग करती हो मैं तुम्हारा सेवक हूं मुझसे सब वर्णन करो यह सुनकर तुलसी ने कहा कि धर्मध्वज की पुत्री हूं योग के निमित्त यहां बैठी हूं तुम कौन हो जो हमारी परीक्षा लेते हो तुम यहां से चले जावो क्योंकि स्त्री मोहनीरूप होती है वह अपवित्र है और योगीश्वरों के पूजनआदि को नष्ट करती है शङ्खचूड़ ने कहा कि संसार में दो प्रकार के स्त्री पुरुष होते हैं अर्थात् बुरे भले कामी और तपस्वी परन्तु मैं कामी और पापी नहीं उसी प्रकार तुम भी इनसे रहित हो मुझको ब्रह्मा ने भेजा है मैं तुम्हारे साथ गन्धर्व विवाह करूंगा मैं शङ्खचूड़ हूं तीनों लोक का जीतनेवाला और दम्भासुर का पुत्र हूं प्रथम जन्म में गोप सुदामा था और कृष्णजी की पूजा करता था पर राधाजी ने क्रोध किया और शाप दिया जिस कारण मुझको दानव होना पड़ा मुझको कृष्णजी की कृपा से प्रथम जन्म की स्मृति है तुलसीजी ने कहा कि तुम बहुत भले और लोभ और काम आदि से रहित हो जो मनुष्य स्त्री के अधीन नहीं है वह बड़ा भाग्यवान् है पर जो मनुष्य स्त्री के वश है उससे बढ़कर संसार में कोई बुरा नहीं स्त्री चाहे जैसी पवित्र और पतिव्रता हो परन्तु वह मरे हुये पुरुष के समान अपवित्र है ब्राह्मण दशदिन में क्षत्रिय द्वादश दिन में वैश्य पञ्चदश में और शूद्र पूर्णमास में पवित्र होजाते हैं परन्तु स्त्री किंचित् किसी समय में पवित्र नहीं होती यह वार्त्ता वेद में लिखी है सब देवता मुनीश्वर और पितर आदि स्त्री से ग्लानि करते हैं स्त्री के दिये हुये पिण्ड पितरों को नहीं पहुँचते और न देवता आदि उसके पुष्प चढ़ाये हुये अङ्गीकार करते हैं जिसका हृदय स्त्री के अधीन है उसका पाठ

पूजन सब मिथ्या है उसका जन्म मिथ्या है पुरुष का जन्म फल-दायक है हे नारद ! यह वार्त्ता उन दोनों में हो रही थी कि हम उस स्थान पर गये और शङ्खचूड़ से कहा कि तुम क्यों इस प्रकार वार्त्तालाप करते हो और क्यों गन्धर्व विवाह नहीं करते तुम दोनों एक ही वर्ण के हो फिर हमने तुलसी से उसके कुल और जप तप का हाल कह सुनाया और आज्ञा दी कि तुम विवाह करो और कहा कि शङ्खचूड़ विष्णुजी का बड़ा भक्त है इसके सङ्ग विवाह करने से कृष्णजी तुमको बहुत चाहेंगे और बैकुण्ठ देंगे यह कहकर हम चले गये और उन्होंने प्रसन्नता-पूर्वक गन्धर्व विवाह कर लिया शङ्खचूड़ तुलसी को लेकर घर सिधारा और माता और पिता को प्रणाम किया और सब समाचार सुनाया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुये उसके पीछे दम्भासुर ने शङ्खचूड़ को राजतिलक दे दिया और आप तप करने गया शङ्खचूड़ अच्छे प्रकार राज्य करने लगा ।

छब्बीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! ऐसा सुनकर उनके गुरु शुक्र बहुत से दैत्यों समेत शङ्खचूड़ के निकट आया शङ्खचूड़ ने नाना प्रकार से सेवा की शुक्रजी ने आशिष और प्रशंसा के उपरान्त देवता और दैत्यों की कथा वर्णन की अर्थात् वह शत्रुता जो दोनों में बड़े समय से चली आती थी और देवताओं की जीत दैत्यों की हार बृहस्पति की सहायता और देवताओं के चरित्र कहकर शङ्खचूड़ को सब दैत्यों का राजा बनाया सो दैत्यों ने बहुत प्रसन्न होकर भेंटें दीं शङ्खचूड़ ने बहुत प्रसन्न होकर एक बड़ी भारी सेना दैत्यों और वीरों की इकट्ठी कर इन्द्र-लोक पर चढ़ाई की और नगर को घेर लिया इन्द्र ऐसा देखकर देवताओं की सेना लेकर लड़ने को गया दोनों सेना बहुत लड़ीं

अन्त में देवताओं ने बड़ी वीरता से दैत्यों को हरादिया शङ्ख-चूड़ ने ऐसी हार देखकर अपने बड़े वीरों को लड़ाई के निमित्त भेजा वे देवताओं से लड़े अन्त समय में देवता ऐसी लड़ाई देखकर बिखरगये और भाग गये तब दशों दिक्पति दैत्यों के सम्मुख हुये और महायुद्ध हुआ इन्द्र, वृषपर्वा, अनल, गौ, श्रुति, संहार, यम, कालिम्बिका, वरुण, चञ्चल, पवन, कालिकेय कुवेर, दम्भ, ईश, विप्रचित्ति, ऋभु, राहु, चन्द्रमा, कनकाक्ष, मङ्गल, शुक्र, ब्रह्मपति, कालासुर, काल, यम, विश्वकर्मा, शनैश्चर, रक्ताक्ष, वसुगण, प्रजेशगण, धूम्रलोचन, नलकूबर, रत्नसार, इन्द्र का पुत्र, किविट, मन्मथ, दीप्तिमान्, अश्विनी-कुमार, सब दिक्पति, ग्रह, देवताओं और अच्छे २ वीरों से दो २ मनुष्यों ने अलग २ लड़ना चाहा और बहुत दिनोंतक लड़ाईरही परन्तु कोई न जीता अन्तसमय में दैत्यों ने शुक्रजी का ध्यान किया और एक ही बेर देवताओं के सन्मुख होकर चढ़ाई की देवता भागे उस समय ग्यारहों रुद्र दैत्यों के सम्मुख हुये और इतना त्रिशूल से मारा कि सब दैत्य भाग गये ऐसी दुर्गति देखकर शङ्खचूड़ आया और इतने बाण चलाये कि देवता भाग गये ग्यारह रुद्र खड़े रहे उस समय आकाशवाणी हुई कि यह ग्यारह रुद्रों से शङ्खचूड़ न हारेगा और न मारा जायगा क्योंकि ब्रह्माजी के वरदान से यह पृथ्वी का राजा होगा तुम चलेजावो और समय देखो यह आकाशवाणी सुनकर देवताओं ने लड़ाई त्यागी दैत्य जीते और आनन्दपूर्वक घर गये शङ्ख-चूड़ पृथ्वी का राजा हुआ उसने देवताओं की द्रव्य दैत्यों को देदी और यज्ञ का भाग भी लिया और इन्द्रपदवी को धारण किया प्रजाओं को पुत्र सदृश पालने लगा उसके राज्य से किसी को किञ्चिन्मात्र खेद न हुआ और सब मनुष्य अपने २ धर्म कर्म

वर्ण और आश्रम में स्थित रहे उसके समय में काल नहीं पड़ा अन्न अनन्त उपजा औषधि भी बहुत गुणकारक उत्पन्न हुई पर्वतों में भांति भांति के रत्न और मणि निकले यहांतक कि सिवाय देवताओं के और किसीको भी किञ्चिन्मात्र खेद न हुआ शङ्खचूड़ कृष्णजी का बड़ा भक्त था यद्यपि राधाजी के शाप से दानवरूप से उत्पन्न हुआ पर दैत्यों के सदृश न था ।

सत्ताईसवां अध्याय ।

नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी ! शङ्खचूड़ को राधिकाजी ने क्यों शाप दिया ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जो गोलोक कहलाता है वहां श्रीकृष्णजी रहते हैं वहां कृष्णजी के मित्र सुदामा रहते थे राधाजी ने उसका अनाचार देखकर उसे शाप दिया जिससे उसने दैत्य होकर शरीर धारण किया नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी! गोलोक कहां है जहां श्रीकृष्णजी विराजमान हैं और कौनसी बुरीबात देखकर राधाजी ने शाप दिया ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र ! प्रथम हमारा लोक है जहां हम शिवजी के ध्यान में मग्न रहते हैं उसके ऊपर वैकुण्ठ है जहां विष्णु भगवान् विराजमान हैं उसके ऊपर शिवशासन है जहां शिवजी के भजने से किसी को खेद और शोक नहीं होता उसके ऊपर वीरभद्र का लोक है जहां स्कन्द अर्थात् स्वामिकार्त्तिक रहते हैं उसके ऊपर उमालोक है जहां शिवरानी विराजमान हैं उसके ऊपर शिवलोक है जहां शिवजी परब्रह्म जगत् के स्वामी अन्तर्यामी विराजमान हैं उसको आनन्दवन और काशी भी कहते हैं वहां के राजा शिव हैं जो तीनों देवताओं के उत्पन्न करने वाले हैं वे निर्गुण और सगुणरूप हैं उनको आदिशक्ति ब्याही हैं उन्हीं के बायें अङ्ग से विष्णुजी और दाहने अङ्ग से हम और हृदय से रुद्र उत्पन्न हुये हैं हम और विष्णुजी शक्ति की अग्नि

से उत्पन्न हुये हैं और रुद्र शिव हैं और शिव तीनों गणों से उत्तमोत्तम हैं उमापति और सृष्टि के स्वामी हैं इस प्रकार का जो शिवलोक हमने वर्णन किया उसी के निकट गौलोक है वहां श्रीकृष्णजी विराजमान हैं अर्थात् जहां शिवजी की गौवें रहती हैं वहां शिवजी ने कृष्णजी का स्थान बनाया है कि वह उनकी पालना करें तब से वह गोलोक और कृष्णलोक कहलाता है प्रथम शिवजी ने विष्णु को दिया था पर विष्णुजी ने कृष्णजी का अवतार धारा और लक्ष्मीजी ने राधाजी का अवतार धारा उनका शिवजी ने अभिषेक करके ब्रह्माण्ड का राज्य दिया और बड़ाभारी वरदान देकर सबसे उत्तम पदवी दी और कहा कि हे कृष्णजी ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा ही करना तुम्हारी महिमा और बड़ाई विष्णुजी से भी अधिक होगी तुम गोपियों के संग विहार करना इस कारण श्रीकृष्णजी श्रीराधाजी को लेकर गोपियों के नगर में आये और गौवों की पालना करने लगे एक दिन श्रीकृष्णजी ने राधाजी को कहीं भेज दिया और आप विरजा के संग विहार करने लगे यह किसी सखी ने राधा से कह दिया राधाजी क्रोधवती होकर इस चरित्र को देखने आईं और विरजा के घर जाकर रथ से उतरीं और चाहा कि अन्दर जावें पर सुदामा जो एक लक्ष गोपों के साथ द्वार पर बैठा था उसने राधाजी को अन्दर जाने न दिया बहुत चिल्लाहट हुई कृष्णजी ने जाना कि राधा आई हैं इस हेतु से भयवान् होकर आप तो अन्तर्धान हुये और विरजा ने अपने शरीर को नदी बनालिया जो चारों ओर मीठे जल से वह निकली जब राधिकाजी ने अन्दर जाकर दोनों में से किसी को न पाया तब विष्णुजी पर बड़ा क्रोध किया और विरजा को नदी देखकर बहुत रोईं पर विरजा श्रीसदा-शिवजी की आज्ञानुसार कृष्णजी के वियोग के दुःख को देख प्रकट

हुई और कृष्णजी ने फिर राधाजी को विस्मरण कर दिया और विरजा के सङ्ग विहार करने लगे जब फिर राधाजीने सुना तो कोप-भवन गईं और वस्त्र और गहने आदि शरीर से उतार भूमि पर लोटने लगीं ऐसीगति सुनकर श्रीकृष्णजी कोपभवन में राधाजीके निकट आये और सुदामा उसी प्रकार एक लाख गोपों की सेना लेकर द्वारे खड़ा रहा राधाजी ने कृष्णजी को देखकर कहा कि कहां आता है पराई स्त्री से संभोग करता है और इसी में मग्न रहता है यहां से चला जा अपनी इच्छानुसार जहां जी में आवे तहां जा तेरे पास बहुत स्त्रियां हैं हमारे निकट आने का क्या प्रयोजन है हमारे जाने से विरजा तो नदी हो गई तुमको भी उचित है कि नद होकर परस्पर मिलो और भोगविलास करो तुम यहां से निकल जावो तुम्हारे सर्वकार्य मनुष्यों के सदृश हैं इससे हमारा यह शाप है कि तुम भी मनुष्य का शरीर धारो और यहां से जाकर भरतखण्ड में विराजमान हो ऐसा शाप देकर राधाजी ने अपनी सखियों को आज्ञा दी कि इसको इस स्थान से निकाल दो कृष्णजी वहां से निकाले गये पर गुप्त रहे जब सुदामा ने अपने स्वामी की ऐसी गति देखी तो राधाजी से कहा कि तुमने क्यों ऐसा शाप दिया तुम सब गोपियां कृष्णजी के अधीन हो राधाजी ने कहा हे मूर्ख ! तू नहीं जानता कृष्णजी हमारे सेवक हैं कृष्णजी और सब हमारे वश में हैं हमारे विना तीनों लोक के काम नहीं होते इस हेतु से तुमको भी शाप देती हूं कि तुम दानव का जन्म लो क्योंकि तुमने दैत्यों के समान कृष्णजी का मान किया और हमसे ग्लानि करते हो हमारे विना तुम्हारी कोई रक्षा न करेगा हमारे शाप से तुम यहां न रह सकोगे सुदामा ने उत्तर दिया कि अब तुम्हारी बुद्धि मनुष्यों के सदृश है इस कारण तुम भी मनुष्यों का शरीर धारो और

कलङ्कित हो कोई गोप तुम्हारे सङ्ग विवाह न करे और कृष्ण-जी को फिर पाकर सौ वर्ष पर्य्यन्त दुःख भोगो हे नारद! शिवजी ने ऐसे ऐसे चरित्र किये और फिर अपनी माया को खींच लिया उस समय विष्णु भगवान् वहां आये और देखा कि दोनों रुदन करते हैं विष्णुजी ने कहा कि तुम कुछ भी खेद न करो और दानव होकर संसार का राज्य करो शिवजी के सिवाय तुमको कोई न जीतेगा उनके हाथ से मरोगे और फिर यहां चले आवोगे और हम और राधा भी अवतार धारकर मनुष्यों के सदृश लीला करेंगे यह कहकर कृष्णजी राधाजी को लेकर गोलोक में रहे और सुदामा दानव हुये और समय पर राधिकाजी और श्रीकृष्णजी ने अवतार लिया और भक्तों के सुख देने को बड़े बड़े अच्छे चरित्र किये यह हमने पुरातन कथा कही है अब और क्या श्रवण करने की अभिलाषा है।

अट्ठाईसवां अध्याय।

नारदजी बोले हे हमारे पिता! शिवजी ने किस प्रकार शङ्ख-चूड़ को मारा यह भेद हमसे कहो ब्रह्माजी ने कहा कि शङ्ख-चूड़ ने सब देवताओं को निकाल दिया और फिर अच्छा राज्य किया देवता आदि सब चिन्तावान् होकर इन्द्र के निकट गये और उनको आगे करके मुनीश्वरों सहित हमारे पास आये और हाय २ करके शङ्खचूड़ का सारा वृत्तान्त कहा और कहा कि हम गुप्त होकर इधर उधर मारे २ फिरते हैं यह कहकर सब रोये इस कारण हम सबको लेकर विष्णु भगवान् के निकट गये और स्तुति पढ़कर शङ्खचूड़ का वृत्तान्त कहा और रुदन करके विष्णुजी की सेवा करनेलगे विष्णुजी ने कहा कि शङ्खचूड़ हमारा बड़ा भक्त है इस हेतु से वह सिवाय त्रिशूल के और किसी से न मरेगा यह कहकर विष्णुजी हम सबको लेकर शिवलोक में गये यह लोक

विष्णुलोक से ऊपर है उसकी महिमा बखाननी अति कठिन है ड्योढ़ी पर पहुँचकर शिवजी की आज्ञानुसार अन्दर गये और बड़ी स्तुति पढ़ी और कहा कि हमारी दुर्गति को देखिये और कृपादृष्टि कीजिये हम दैत्यों के हाथ से मारे जाते हैं यह कहकर हम सब रोनेलगे परन्तु शिवजी ने यह दशा देख हमपर दया की।

उन्तीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! शिवजी प्रसन्न हुये और कहा कि हे देवताओ ! अभय रहो तुम्हारा कल्याण होगा शङ्खचूड़ ने प्रथम जन्म में कृष्णजी की पूजा की थी परन्तु शाप राधाजी से पाया था और आदि से अन्त पर्यन्त सब वृत्तान्त कहते ही थे कि श्रीकृष्णजी राधिकाजी सहित तहां आये और स्तुति करने लगे और कहने लगे कि आपकी माया में फँसकर और अपने तईं भूलकर हमने ऐसा शाप पाया आप अब क्षमा करें शिवजी ने कहा कि हमारी ऐसी ही इच्छा थी तुम्हारा अभिमान और अहंकार तोड़ने के निमित्त हमने यह चरित्र किया, अब अपने धाम को जावो और आनन्द से रहो परन्तु ऐसा अपराध फिर न करना और जब क्रीड़ाकल्प में तुम दोनों मनुष्य का शरीर धारकर अवतार लोगे तो तुम्हारा शाप नष्ट होजायगा और फिर गोलोक में आनन्द करोगे तुम्हारा मित्र सुदामा दानव होकर शङ्खचूड़ कहलाताहै उसने देवताओंको बहुत दुःखी किया है जिससे वह चारों ओर मारे मारे फिरते हैं यह सब रोते पीटते हमारे निकट आये हैं हम उनका दुःख दूर करेंगे यह श्रीकृष्णजी से कहकर देवताओं की ओर देखा और कहा कि तुम कैलास पर्वत पर जावो और रुद्र जो हमारा अवतार है उनसे सब वृत्तान्त कहो वह तुम्हारे दुःख को दूर करेंगे और हममें और रुद्र में कुछ भेद न जानना वह केवल देवताओं के निमित्त अलग रूप धारण

किये हैं हमारा वहां सगुणरूप है जो कोई हममें और रुद्र में भेद समझता है वह कष्ट भोगता है यह सुनकर हम प्रसन्न हुये और राधाजी और श्रीकृष्णजी गोपसहित चले गये हम भी इन्द्र और और देवताओं संयुक्त कैलास पर्वत पर गये और प्रणाम के पीछे प्रार्थना की कि हे गिरिजापति! हम सब तुम्हारे शरण हैं हमारे दुःखों को नाश करो शङ्खचूड़ का सब वृत्तान्त सुनाया रुद्र ने उत्तर दिया कि तुम अपना कार्य सिद्ध समझो और अपने अपने घर सिधारो हम शङ्खचूड़ को दैत्यों सहित मारेंगे और नानाप्रकार से तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करेंगे यह अमृत तुल्य वाणी शिवजी की सुनकर सब देवता प्रणाम करके अपने अपने घर सिधारे।

तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिवजी ने शङ्खचूड़ के मारने की युक्ति विचारकर अपने भक्त पुष्पदन्त को बुलाया और कहा कि हे पुष्पदन्त! तुम गन्धर्वराज हो सो शङ्खचूड़ के निकट जावो और कहो कि जो तुमने देवताओं का राज्य छीन लिया सो भला नहीं किया तुम ऐसी माया से अभिमानी और अहङ्कारी होगये हो अभी कुछ नहीं गया तुमको उचित है कि देवताओं का राज्य दे दो और कुछ भी झगड़ा न करो अगर अपनी मृत्यु नहीं चाहते तो पाताल में जावो और राज्य करो वरन् हमसे युद्ध करो तुमको हम तुरन्त ही मार डालेंगे और फिर देवता अपना राज्य छीन लेंगे यह सुनकर पुष्पदन्त शङ्खचूड़ के निकट गया वह ऊंची अटारी पर बैठा हुआ था और तीन करोड़ दैत्य उस के निकट थे और सेवा करते थे वह ऐसी सेना देखकर आश्चर्यवान् हुआ अन्त में शङ्खचूड़ के निकट बैठगया शङ्खचूड़ ने पूछा तुम किसके दूत हो और क्यों ऐसे बेखटके बैठे हो तुम्हारे कर्म

सेवकों के ऐसे नहीं जिस काम को आये हो वह कहो पुष्पदन्त ने सब वृत्तान्त जो शिवजी ने कहा था कह सुनाया और अपनी ओर से यह कहा कि चाहे देवताओंको राज्य दो या युद्ध के निमित्त चलो शङ्खचूड़ ने कहा कि हम शिवजी के भय से देवताओं को राज्य न देंगे हम भले प्रकार जानते हैं कि यह राज्य पृथ्वी का वीरों और दैत्यों के निमित्त है हम युद्ध करेंगे जिससे दोनों लोक में सुख मिलता है मुझको यह आश्चर्य है कि महादेवजी ऐसे महात्मा होकर देवताओं की रक्षा करते हैं हम प्रातःकाल कैलास पर्वत पर आयेंगे शिवजी को जो उचित हो वह करें पुष्पदन्त ने मुसकराके कहा कि शिवजी सबसे उत्तम हैं तुम ऐसे अहंकारी न हो उनको और देवताओं के सदृश न समझो वह परब्रह्म भगवान् हैं उनके अधीन ब्रह्मा और विष्णुजी हैं उनसे युद्ध करके तुम मृत्यु को प्राप्त होगे उनके गणों के तो सम्मुख हो लो उनसे लड़ना तो बहुत ही कठिन है ऐसे ऐसे वचन कहकर पुष्पदन्त चुप होरहा तब शङ्खचूड़ ने कहा कि मैं विना शिवजी के लड़े अप्रसन्न रहूंगा सारी सृष्टि काल से उत्पन्न होती है और कालही से नष्ट होजाती है हार अथवा जीत दोनों में मैं प्रसन्न हूं और कृष्णजी हमारे बड़े काल हैं और दयालु भी हैं हे पुष्पदन्त ! यह सारा वृत्तान्त जैसा मैंने कहा शिवजी से कह देना पुष्पदन्त वहां से उठकर शिवजी के निकट आये और सारा समाचार कह सुनाया ।

इकतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! पुष्पदन्त से ऐसे कठिन वचन सुनकर शिवजी को क्रोध हुआ और आज्ञा दी कि सब तय्यार होवें और वीरभद्र, नन्दीगण, शृङ्गि, क्षेत्रपाल, भैरव और मुनिभद्र इन सबके नाम पुकार २ कर बोले कि तुम सब शस्त्रा-

दिक लेकर चलो यह सब प्रसन्न होकर बाजे बजाने लगे और सेना को लेकर बाहर आये शिवजी ने कहा कि सब सेना और सेनापति हमारे सङ्ग चलें पर गजानन अर्थात् गणपति अपनी सेनासहित यहां रह जायँ शिवजी शस्त्रादिक लेकर बैल पर चढ़े हुये चले और कैलासपर्वत के बाहर ठहरे और बड़े २ सेनापति गण वीरभद्र, नन्दी, महाकाल, बाण, सुभद्रक, विकृत, पिङ्गलाक्ष, मणिभद्र, विरूपाक्ष, विशालाक्ष, वाष्कल, गतिहूत, वृष, दृष्टदंष्ट्र, कालञ्जर, दुर्गम, विद्रुम, बलभद्र, कपिल, कुटाम्बर, ताम्रनयन, विकर्ण, कीचर, बिल्वल, शतघ्न, अभिलाषी, भृङ्गी, द्रव्यवल और आठों भैरव, ग्यारहों रुद्र और क्षेत्रपाल आदि गणों के स्वामी और राजा भी शिवजी की सेना के सङ्ग हुये इस सब सेना के स्वामी वीरभद्र हुये वीरभद्र की रक्षा के निमित्त भवानी सहस्रभुजा किये विमान पर चढ़कर आईं उनके वस्त्र लाल थे और मुण्डों की माला पहिने थीं हाथ में खप्पर था और हाथों में अनेक प्रकार के शस्त्र थे गाती और नाचती एक योजन की लम्बी जिह्वा किये भयंकररूप धारणकर तेंतीस कोटि डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, कूष्माण्ड, ब्रह्मराक्षस, वेताल और पिशाच आदि को लिये आईं उसके पीछे देवता आदि की सेना थी जिसमें इन्द्र, वरुण, कुबेर, पवन, सूर्य, चन्द्रमा और नवग्रह, वसुकर्मा, अश्विनीकुमार, बृहस्पति, धर्म और आठों वसुआदि सब देवता थे यह सब शिवजी की सेना के सङ्ग हुये शिवजी ने सबको अलग २ बिठाया और एक बेर कृपादृष्टि से देखा जिससे उनको बड़ी शक्ति प्राप्त हुई शिवजी चिन्धुभागा नदी के किनारे विराजमान हुये और बड़ के वृक्ष के नीचे बैठ गये।

बत्तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब पुष्पदन्त शङ्खचूड़

के पास से चले आये तब शङ्खचूड़ अपनी रानी के निकट आया और सब वृत्तान्त कहा कि मैं प्रातःकाल शिवजी से युद्ध करूंगा उसकी रानी ने सुनकर शोक किया और रोने लगी और कहा कि शिवजी के सब अधीन हैं तुम उनसे न लड़ो वह अन्तकाल के स्वामी हैं तुमको ऐसी बात अयोग्य है इस प्रकार शिवजी की महिमा बखानी और कहा कि कल रात्रि को मैंने बुरा स्वप्न देखा अर्थात् मेरा बायां अङ्ग फरका ऐसा देखकर तुमको उचित है कि शिवजी से युद्ध न करो परन्तु शङ्खचूड़ ने कुछ न सुना और कहा कि मुझको कुछ खेद नहीं क्योंकि तीनों लोक में सर्वकार्य समय पर होते हैं समय पर अच्छी और बुरी बातें सुख दुःख वृक्षों का फलना फूलना देवताओं और सृष्टि की उत्पत्ति और संसार का जीना मरना और अन्तकाल आदि सब ही होते हैं इस कारण समय सबसे उत्तम है ऐसे २ वचन अपनी स्त्री को समझाकर संभोग किया और धर्म को भूल गया परन्तु उसकी स्त्री को भोग करना अच्छा न भासा क्योंकि वह श्रीसदाशिवजी के साथ लड़ने जाता था. पर शङ्खचूड़ बहुत समझाकर भोगविलास करता रहा और प्रातःकाल उठकर अपने पुत्र को तिलक दिया और अपनी रानी को रोदन करते देखकर अपने पुत्र को उपदेश कर और स्त्री को सौंपकर लड़ने को चला और सेनापति को बुलाकर कहा कि आज ही परीक्षा का दिवस है इस कारण सब सेना ले चलो क्योंकि शिवजी देवताओं को राज्य देने और मुझको अपना अधीन बनाने की इच्छा रखते हैं इसलिये चलकर भलीभांति युद्ध कीजिये षडशीति कम्बूदैत्य पचास कुल असुर बन्दर एक कोटि वीर्य और सात कुल दानव धूम्र यह सब शस्त्रादिक लेकर निकल चलें और कार्त्तिकेय अपनी सेना को

सङ्ग लिये चलें यह आज्ञा देकर वह घर से निकला और सोने चांदी के विमान पर चढ़कर शिवजी के संग लड़ने चला उस समय बाजे बजने लगे बाजे बजानेवाले एक अक्षौहिणी और तीन लाख थे सब सेना और सेनापति निश्शङ्क और प्रसन्नतापूर्वक चलेजाते थे शङ्खचूड़ वहां पर गया जहां शिवजी विराजमान थे और राजनीति को स्मरणकर शिवजी की सेनाके निकट ठहरा।

तैंतीसवां अध्याय।

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! शङ्खचूड़ ने एक दूत भेजा और सब वृत्तान्त कहकर उसको उपदेश दिया वह शिवजी की शरण हुआ और दीक्षप नदी के निकट जहां शिवजी विराजमान थे वहां पहुँचकर शिवजी को प्रणाम किया और कहा कि शङ्खचूड़ ने यह कहा है कि तुम्हारी क्या अभिलाषा है शिवजी ने कहा कि तुम हमारी ओर से यह कह देना कि तुम सुरज के वंश में हो और सुदामा तुम्हारा नाम था श्रीकृष्णजी के मित्र थे परन्तु राधाजी के शाप से दैत्य हुये परन्तु मूल से दैत्य नहीं हो इस कारण तुमको उचित है कि प्रथम जन्म और धर्म का स्मरण करके देवताओं के सङ्ग शत्रुता न रक्खो और यथायोग्य राज्य करो और देवताओं को यथाशक्ति सुख दो जो इसके विरुद्ध करोगे तो दुःख प्राप्त होगा जो राज्य तुमने देवताओं से छीन लिया है उसे फेर दो तुम और सब देवता कश्यप मुनि से उत्पन्न हो तुम में किसी प्रकार का अन्तर नहीं तुम दोनों परस्पर मिलो और आनन्द करो इससे हम प्रसन्न हैं जो इसके विपरीत करोगे तो तुमको दुःख प्राप्त होगा संसार में सबसे बड़ा पाप अपने भाई बान्धवों से शत्रुता रखना है हम किसी की ओर नहीं पर सेवा से प्रसन्न हैं और अपने सेवक की बड़ी रक्षा करते हैं और सुखी रखते हैं इसी प्रकार शिवजी ने

बहुत से उपदेश वेद और धर्मशास्त्र की रीति के दिये दूत ने कहा आपने जो कहा कि परस्पर की शत्रुता बुरी होती है वह सत्य पर विष्णुजी ने जो राजा बलि से छल करके उनका नगर और राज्य छीन लिया और उनको पाताल भेज दिया यह क्या उनको उचित था कि उनके पिता को मारडाला फिर देवताओं और दैत्योंने सागर को मथा देवताओं को क्यों अमृत मिला और क्यों महिषासुर को देवीजी ने विना किसी दोष के मार डाला फिर तारक और त्रिपुर मारे गये इसी प्रकार उन्होंने अन्धक गज और जलन्धर आदि को मारा तब उनके यह बुद्धि नहीं थी कि अपने भाइयों के सङ्ग शत्रुता करना पाप है क्या इसको ज्ञातिद्रोह नहीं कहोगे यह शत्रुता देवताओं और दैत्यों की बहुत प्राचीन है समय पर सुख दुःख सब होते हैं क्योंकि सब काम समय पर होते हैं पाना और न पाना जीत और हार जीना और मरना सब समय पर होता है यह तुमको उचित नहीं कि देवताओं अथवा दैत्यों के युद्ध में तुम ईश्वर होकर पक्षपात करते हो क्योंकि शत्रुता और मित्रता तुल्य मनुष्यों से होती है परन्तु तुम ऐसे ईश्वर और स्वामी को यह अयोग्य है कि हमारे सङ्ग युद्ध करो तुमको क्या लज्जा भी नहीं आती ऐसी २ बातें दूत की सुनकर शिवजी हँसे शिवजी ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि प्रथम ही से हम अपने सेवक के अधीन हैं वेद की आज्ञानुसार चलते हैं उसी की आज्ञा से हमने दैत्यों को मारा है हम किसी की रक्षा नहीं करते अब हमारे आने का कारण यह है कि इन्द्रआदि देवता हमारे शरणागत हुये जितने दैत्य होगये हैं उन सबसे तुम बड़े हो और कृष्णरूप विष्णुजी के भक्त हो इससे तुम भी उनके समान हो और उत्तमोत्तम हो इस हेतु से हम लज्जावान् नहीं अधिक कहना निष्फल है तुम

देवताओं का राज्य दे दो और पाताल में जाकर राज्य करो देवताओं से शत्रुता रखनी बुरी है यद्यपि कैसा ही धर्मवान् हो तो भी देवताओं की शत्रुता से कोई नहीं बचा जो इस वचन से अप्रसन्न हो तो युद्धस्थान में चलो और लड़ाई करो हे दूत! तुम यह सब बातें शङ्खचूड़ से कह देना जो उसकी इच्छा हो वह करे हम अवश्य देवताओं का मनोरथ पूर्ण करेंगे यह कह कर शिवजी चुप हो रहे और दूत भी उठकर चला गया और शङ्खचूड़ से सब वृत्तान्त कहा।

चौंतीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शङ्खचूड़ ने लड़ने को अच्छा समझ कर सुलह न की और सेना को तय्यार किया बाजे जो लड़ाई में बजवाये जाते हैं वह बजवा दिये और युद्धस्थान में खड़ा हुआ शिवजी भी आये और देवता और दैत्य लड़ने लगे इन्द्रजी पुरुष प्रिया के सङ्ग शुक्र और बृहस्पति मृत्यु और पुष्कर के साथ और इसी प्रकार दोनों ओर के बड़े २ नामी सेनापति परस्पर युद्ध करने लगे नाना प्रकार के शस्त्रादिक चलाये गये जिससे बहुत से देवता और दैत्य हाथी और घोड़े मारे गये इसी प्रकार बहुत दिनों तक युद्ध होता रहा परन्तु न किसी की जीत हुई न हार अन्तविषे दैत्यों ने चढ़ाई की और देवता भाग गये तितर बितर हो गये उस समय में वीरभद्र और नन्दी आदि शिवजी के गण सम्मुख हुये वीरभद्र ने अपने त्रिशूल से सब दैत्यों को कुरूप बनादिया इस हेतु से दैत्यों को युद्ध त्यागना पड़ा यह दुर्गति देखकर शङ्खचूड़ ने भागती हुई सेना को प्रसन्न किया और आप लड़ने चला और इतने बाण बरसाये कि सब शिवगण भाग गये केवल नन्दी और वीरभद्र जो शिवजी के अंश से उत्पन्न हुये हैं युद्धस्थान में खड़े रहे शङ्खचूड़ ने नन्दी

के बाण मारा कि वह धरती पर गिर पड़ा और उठकर फिर लड़ने लगा वीरभद्र ने अपना त्रिशूल शङ्खचूड़ के मारा पर शङ्खचूड़ ने उसे काट डाला और वीरभद्र को अपने शस्त्र से मारा कि वह पृथ्वी पर गिर पड़ा वीरभद्र तुरन्त उठा और क्षेत्रपाल दैत्य से लड़ने लगा भैरव ने शङ्खचूड़ को अपने त्रिशूल से मारा कि वह अचेतता को प्राप्त हुआ उस समय बड़ा युद्ध हुआ भैरव को आकाशवाणी हुई कि शङ्खचूड़ विना शिवजी के और किसीसे न मरेगा तुम शिवजी के निकट जावो वे मार डालेंगे शिवगण उनके पास गये और सब वृत्तान्त कह सुनाया ।

पैंतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! शिवजी ने देवताओं की हार सुनकर और अपने गणों की दुर्गति देखकर वीरभद्र को आज्ञा दी कि तुम जाकर लड़ो यह श्रवणकर वीरभद्र सेनासहित गया और युद्धस्थान में जाकर शिवजी के समान शङ्ख बजाया और क्रोध किया कि दैत्य कांप गये और एक अक्षौहिणी दैत्यों की सेना नाश कर दिया महाकाली ने सबका रुधिर पिया और दैत्यों को तोड़ २ कर निगलने लगीं और बार बार युद्धस्थल में लड़ने लगीं और एक ही हाथ में साल लाख करोड़ घोड़े और एक लाख करोड़ हाथी रखकर खागईं और सहस्रों कबन्ध इधर उधर फिरने लगे और वीरभद्र ने क्रोधवान् होकर एक करोड़ दैत्यों को मारडाला अन्त में विप्रचित्ति १ वृषपर्वा २ जम्भासुर ३ वीरविकम्पन ४ यह चारों वीरभद्र के सम्मुख हुये और भिन्न २ होकर लड़े महामारी ने जाकर दैत्यों को नष्ट किया फिर भैरव ने दैत्यों को खाया उस समय सब दैत्य हारे और वीरभद्र जीते देवता बहुत प्रसन्न हुये और अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई उस समय शङ्खचूड़ अपने

कवच को कण्ठ में पहने विमान पर चढ़कर बहुतसी सेना लेकर मारूबाजा बजवाते युद्धस्थान में आया और अपनी भागी हुई सेना को इकट्ठा किया और अपने कमठे को तान २ कर बाण मारने लगा उस समय अँधेरा हो गया बहुत से देवता हार मानकर भाग गये वीरभद्र ही खड़ा रहा शङ्खचूड़ ने अपनी माया से पर्वत सर्प अग्नि आदि को उपजाया और इन्हीं की वर्षा की जिसमें वीरभद्र गुप्त होगये मानों बदली में सूर्य छिप गये और अति आश्चर्य में होकर शिवजी का ध्यान किया और महाशक्ति को छोड़ा दैत्यों की माया का नाश हुआ तब शङ्खचूड़ ने क्रोध करके वीरभद्र के रथ और धनुष् को अति पवित्र बाण से काट डाला घोड़े मरकर पृथ्वी पर गिरपड़े दूसरे बाण से वीरभद्र को मारा जिससे वह पृथ्वी पर गिरपड़ा जब वीरभद्र सचेत होकर उठा तो दूसरे रथ पर चढ़कर शङ्खचूड़ के रथ सन्नाह और घोड़े और शक्ति आदि को काटडाला और धरती पर गिरा दिया उसके सारथी को मारडाला और अपनी शक्ति से शङ्खचूड़ को अचेत कर दिया शङ्खचूड़ थोड़े समय के पीछे उठा और गर्जने लगा फिर वीरभद्र ने अपनी शक्ति से गिरा दिया इसी प्रकार कई बेर गिराया परन्तु शङ्खचूड़ ने उठकर अन्त विषे अपनी सांगी से वीरभद्र को पृथ्वी पर गिरा दिया और मारडाला यह शिवजी का वरदान था महाकाली ने वीरभद्र को उठाकर शिव-जी के सम्मुख रख दिया और सब वृत्तान्त कह सुनाया शिवजी ने वीरभद्र को छुआ और वह जीता होगया वीरभद्र फिर उठ-कर चिल्लाने लगा और युद्धस्थान में गया और अपने त्रिशूल को चलाया कि शङ्खचूड़ पृथ्वी पर गिरपड़ा जब चेत हुआ तब जितने बाण वीरभद्र को मारे वह सब व्यर्थ हुये अन्त विषे अपनी सांगी को वीरभद्र के हृदय पर मारा कि वह पृथ्वी पर

गिरपड़ा पर फिर वीरभद्र उठे और शङ्खचूड़ ने अपने त्रिशूल से चाहा कि फिर उसे मारूं परन्तु महाकाली ने उसकी रक्षा की और सब गण भी आगये देवता अति प्रसन्न हुये दैत्योंने भी अपनी भागी और थकी सेना को इकट्ठा किया दोनों सेना युद्धस्थान में खड़ी रहीं दोनों ओरसे बाजे बजे और वीर परस्पर लड़ने लगे ।

छत्तीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! फिर बड़ा युद्ध हुआ और दिन रात के सदृश हो गया कालीजी ने भयंकर शब्द निकाले जिससे सब दैत्य अचेत होगये और पृथ्वी पर गिरपड़े कालीजी ने महामद को पिया और नाचने लगीं और कालीजी के सिवाय और बहुतसी देवियों ने कालीरूप धारण किया और मद को पीकर नाचने लगीं उस समय दैत्यों को बड़ा दुःख और शोक उत्पन्न हुआ पर देवता प्रसन्न थे शङ्खचूड़ सब दैत्यों को इकट्ठा कर युद्धस्थान में खड़ा होकर वीरभद्र से लड़ने लगा दोनों वीरों के शरीर इस प्रकार घायल हुये मानों ढाकके वृक्ष खड़े थे शङ्खचूड़ ने अग्निबाण चलाया जिससे चारों ओर आग फैल गई वीरभद्र ने वरुणास्त्र छोड़ा जिससे सब अग्निनाश होगई इसी प्रकार शङ्खचूड़ ने नाना प्रकार के बाण छोड़े पर वीरभद्र ने सबको नष्ट कर दिया अन्तमें शङ्खचूड़ ने नारायणबाण छोड़ा उसको भी वीरभद्रने पाशुपत अस्त्र से दूर कर दिया फिर शङ्खचूड़ ने चक्र छोड़ा महाकाली ने तुरन्त ही निगल लिया और शङ्खचूड़ को किसी प्रकार जीतने न दिया कालीजी ने अपने धनुष् को जिसका शब्द अन्तकाल से कम न था खैंचकर अग्निबाण छोड़ा पर शङ्खचूड़ ने वैष्णवास्त्र से दूर करदिया फिर कालीजी ने नारायणास्त्र छोड़ा पर शङ्खचूड़ ने रथ से उतर दण्डवत् की जिससे वह निष्फल होकर दूर गया इसी प्रकार कालीजी ने ब्रह्म-

अस्त्रादि सब छोड़े परन्तु शङ्खचूड़ ने सबका नाश किया शङ्खचूड़ ने भी दिव्यास्त्र व शक्ति आदि कालीजी को मारे पर सब निष्फल हुये वहुत दिनों तक लड़ते रहे अन्तबिषे कालीजी ने पाशुपत अस्त्र के छोड़ने की इच्छा की पर आकाशवाणी हुई कि यह किस निमित्त छोड़ती हो यह तुमसे न मरेगा क्योंकि कृष्णजी का भक्त है महाकालीजी ने उसको तो न छोड़ा पर अधिक क्रोधवान् होकर सात लाख दानवों को खा लिया और अपने शरीर को भयङ्कर वनाया शङ्खचूड़ ने रुद्रशिली को मुख में रखलिया जिससे कालीजी हट गईं शङ्खचूड़ ने अपने खड्ग को छोड़ा कालीजी ने उसे भी खा लिया और मुख खोलकर शङ्खचूड़ का ग्रास करने चलीं परन्तु वह माया से गुप्त हो गया कालीजी ने उसके रथ और सारथि को तोड़ फोड़ डाला शङ्खचूड़ फिर प्रकट हुआ और अपना चक्र चलाया पर कालीजी ने उसे ग्रास किया और एक ऐसा घूंसा मारा कि वह अचेत होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा कालीजी ने घुमाकर आकाश की ओर फेंकदिया और एक करोड़ दैत्यों को मारकर रुधिर पीलिया और अपने केशों को बिखराकर युद्धस्थान में नाचीं शङ्खचूड़ ने उठकर कालीजी को प्रणाम किया और विमान पर चढ़कर निर्भय लड़ने लगा ऐसा धैर्य शङ्खचूड़ में देखकर देवीजी ने महाभयङ्कर शरीर वनाया और रुद्र महाधनुष् को हाथ में लिया और चाहा कि उसी समय प्रलय करें पर आकाशवाणी हुई कि इसकी मृत्यु तुम्हारे हाथ से नहीं तुम मिथ्या युद्ध करती हो तुम शिवजी के निकट जावो वह तुरन्त ही मारेंगे यह वाणी श्रवण कर महाकाली शिवजी के निकट गईं।

सैंतीसवां अध्याय।

इतना सुन ब्रह्माजी बोले कि हे हमारे पुत्र! महाकालीजी

शिवजी के निकट गईं और सेना को लेजाकर सब वृत्तान्त कहा जिसको सुनकर शिवजी चिन्तावान् हुये और फिर हँसकर अपनी माया को विचारा और शङ्खचूड़ के पहिले जन्म का वृत्तान्त वर्णन किया फिर श्रीसदाशिव अपने गणों को साथ लेकर बैल पर चढ़ कर चले और क्षेत्रपाल, वीरभद्र, भैरव और नन्दीश्वर की ओर एक बेर देखा जिससे उनको महाशक्ति प्राप्त हुई सर्व शस्त्रादिक लिये भयंकर रूप धारण किये युद्धस्थान में आये दैत्यों ने उनको रुद्र कालान्तक करके देखा और सब डर गये शङ्खचूड़ ने शिवजी को देख रथ से उतर प्रणाम किया और शिवजी की आज्ञानुसार धनुष् और बाण लेकर शिवजी से लड़ने लगा शिवजी और शङ्खचूड़ सौ वर्षपर्यन्त लड़ते रहे और देवता और दैत्य चुपचाप बैठे रहे उस समय हम अपने कुल सहित और वैकुण्ठवासी आकाश पर युद्ध कौतुक देखते रहे और जो बाण शङ्खचूड़ ने छोड़े वह शिवजी ने काट डाले और जो २ शस्त्र शिवजी ने मारे वह शङ्खचूड़ ने तुरन्त ही काट डाले अन्त विषे शङ्खचूड़ ने क्रोध करके शिवजी को चक्र मारा शिवजी ने अपने घूंसे से उसको चूर २ करके धरती पर फेंक दिया शिवजी ने शङ्खचूड़ को घायल करके पृथ्वी पर गिरा दिया जब चेता तब फिर रथ पर चढ़कर शिवजी के सम्मुख हुआ शिवजी ने शङ्खचूड़ को आते देखकर डमरू बजाया और शृङ्गीनाद करके अपना धनुष् टङ्कोरा जिससे यह जानाजाता था कि अन्तकाल आगया चारों दिशा से शिवगण गर्जने लगे जब शिवजी ने शङ्खचूड़ से तिष्ठ तिष्ठ शब्द कहा तो देवता बहुत प्रसन्न हुये और जय जय करने लगे उस समय शङ्खचूड़ ने अपनी शक्ति चलाई क्षेत्रपाल ने तुरन्त ही ग्रास किया शिवजी और शङ्खचूड़ परस्पर इतना लड़े कि सब डर गये शिवजी ने पाशुपत अस्त्र

चलाया जिससे वह पृथ्वी पर गिरपड़ा और फिर उठकर लड़ने लगा और रुद्रबाण से शिवजी को और अन्यबाणों से भैरव को मारा और बहुत भुजायें अपने शरीर में माया से उत्पन्न कीं और हरएक से इतने बाण चलाये कि सब देवता दुःखी हुये अन्त बिषे शिवजी ने सब भुजा काट डालीं फिर शङ्खचूड़ अपनी गदा लेकर शिवजी की ओर झपटा शिवजी ने उसे काटडाला और अपने त्रिशूल से शङ्खचूड़ के हृदय को फाड़ डाला उसके उदर से एक मनुष्य तिष्ठ तिष्ठ कहते उपजा शिवजी ने अपने शस्त्र से उसका भी शिर काट डाला वह शिर कांपने लगा और उसने भयंकररूप धरकर देवताओं को बहुत दुःख दिया तब सदाशिवजी की आज्ञानुसार कालीजी दैत्यों की सेना में घुसगईं और दैत्यों को खाने लगीं इसी प्रकार बहुत पक्षी आदि को खाया महामारी ने भी सेना का ग्रास किया और क्षेत्रपाल भैरव नन्दी और वीरभद्र ने बहुत दैत्यों को खाया और बहुतों का नाश किया और सारे सेनापति दैत्यों को नष्ट करने लगे और योगिनीगण दैत्यों को खाने लगीं ज्वर ने भी शरीर धारणकर दैत्यों को मारडाला ऐसी दुर्गति देखकर सब दैत्य भाग गये और सान्निपात ने भी सबको दुःखी किया नन्दी ने भी दैत्यों को मारडाला उस समय सब देवता ऐसे प्रसन्न हुये कि वर्णन नहीं होसक्ता और शिवजी भी आनन्द को प्राप्त हुये।

अड़तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शङ्खचूड़ ने इस प्रकार अपनी सेना की दुर्गति देखकर क्रोध किया और शिवगणों को डाट डपटकर शिवजी से कहा कि तुम मेरे सम्मुख होकर लड़ो दैत्यों के मारने से क्या फल मिलता है? वीर निर्बल मनुष्यों से नहीं लड़ते मैं वह हूं जो तुम्हारे मद को नष्ट करूंगा यह

कहकर शिवजी पर बड़े २ बाण मारे शिवजी ने सब काटडाले शङ्खचूड़ ने एक माया को उपजाया जिसको शिवजी ने महादिव्य बाणों से उसे दूर कर दिया शङ्खचूड़ पृथ्वी में गुप्त होगया उस समय हम और विष्णुजी ने जय जय की शिवजी ने क्रोध करके चाहा कि शङ्खचूड़ को मारडालें और अपना त्रिशूल उठाकर चाहा कि मारें पर आकाशवाणी हुई कि हे शिवजी ! जब तक यह कृष्णकवच पहिने रहेगा और तुलसी इसकी स्त्री पतिव्रता रहेगी तब तक यह तुलसी समेत न मरेगा क्योंकि ब्रह्माजी का यही वरदान है यह सुनकर शिवजी ने त्रिशूल न छोड़ा विष्णुजी शिवजी की अभिलाषा जानकर आये और कहा कि जो आज्ञा हो सो करूं शिवजी ने कहा कि तुम किसी प्रकार से कृष्णकवच उसके कण्ठ से उतार लो और उसकी स्त्री का पातिव्रतधर्म नष्ट करडालो यह सुनकर विष्णुजी ब्राह्मण होगये और शङ्खचूड़ के पास गये ब्राह्मण को शङ्खचूड़ ने प्रणाम किया ब्राह्मण ने आशीर्वाद देकर कहा कि पानी पिलावो शङ्खचूड़ ने पानी पिलवाया फिर ब्राह्मण ने कहा कि हमको कृष्णकवच देदो शङ्खचूड़ ने निश्शङ्क उसको दे दिया यद्यपि वह अतिप्रिय था हे नारद ! उदारता इसी को कहते हैं जो शत्रु भी ब्राह्मण बनकर कोई वस्तु मांगे तो निश्शङ्क देदे यद्यपि प्राण जावे पर ब्राह्मण विमुख न जावे जिसके निकट विष्णुजी भिखारी ब्राह्मण बनकर जावें उसके धन्य भाग्य हैं जिसके यहां से भिखारी विमुख होकर न जावें उसके भी धन्यभाग्य हैं उसके समान संसार में अन्य नहीं इसी उदारता पर राजा बलि, दधीचि, जरासंध, सांख्य आदि अति कीर्तियुक्त होगये हैं फिर विष्णुजी शङ्खचूड़ का वेष धारकर उसके घर गये और बड़े चरित्रों से उसकी स्त्री का जो पतिव्रता थी धर्म नाश किया और लौटकर शिवजी से सब

वृत्तान्त कहा शिवजी ने सुनकर अपने विजय के त्रिशूल को उठा लिया जिसमें पृथ्वी और आकाश दिखाई देते थे वह मध्याह्न के सूर्य समान था और उसके सब शस्त्र थे शिवजी ने त्रिशूल को छोड़ा जिससे शङ्खचूड़ जलकर भस्म होगया और फिर शिवजी के हाथ में आगया और बहुतेरे दैत्य जल गये इस हेतु सब दैत्य भाग गये जो कुछ बचे वह भागकर पाताल में छिप रहे देवताओं ने बड़ा आनन्द किया और सभा रची जिसमें देवताओं की स्त्रियों ने नाचा शङ्खचूड़ गोलोक में गये और शाप से छूटकर वैसे ही हो गये उसकी हड्डियों के शङ्ख बने वह विष्णुजी को अति प्रिय हैं और देवता और मुनि जो विष्णुजी के परिवार में हैं उन सबको भी प्यारे लगते हैं पर शिवजी को प्रिय नहीं उस समय हम और इन्द्र सब देवता शिवजी के पास गये और बहुत स्तुति की और बेर बेर प्रणाम और दण्डवत् किया फिर सब देवता शिवजी की आज्ञानुसार अपने २ घर सिधारे उस समय संसार भर आनन्दपूर्वक था सबके दुःख दूर हुये शिवजी भी अपने गणों को लेकर कैलास पर्वत पर गये शिवजी जो परब्रह्म हैं वह दीनजनों के रक्षक हैं जो इस चरित्र को सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसको किञ्चित् भी दुःख प्राप्त न होगा उसको शिवजी की भक्ति अधिक होती है वह भुक्ति मुक्ति दोनों को प्राप्त करेगा चारों वर्णों के दुःख भस्म हो जायेंगे यह शिवचरित्र दोनों लोकों का फलदायक है।

उन्तालीसवां अध्याय।

नारदजी बोले हे ब्रह्माजी! विष्णुजी ने किस प्रकार तुलसी का पातिव्रतधर्म नष्ट कर डाला ब्रह्माजी बोले कि यह चरित्र शिवजी और विष्णुजी की भक्ति को अधिक करता है मन लगाकर सुनो विष्णुजी शङ्खचूड़ का वेष धारणकर तुलसी के

घर गये और तुलसी के द्वार पर जाकर जीतने के बाजे बजवा दिये यह देखकर तुलसी अति प्रसन्न हुई और बहुत धन आदि भिक्षुकों और ब्राह्मणों को दिया फिर अपने रूप को बनाकर अनेक प्रकार से शृङ्गारकर बैठी विष्णुजी उसके घर गये तुलसी ने चरण धोये और स्तुति करके चांदी की चौकी पर बिठलाकर ताम्बूल दिये और कहा कि धन्यभाग्य हैं जो आप जीतकर आये और शिवजी की बहुत स्तुति करके पूछा कि किस प्रकार तुमने उनको जीता मुझको प्रतीत नहीं विष्णुजी ने कहा कि हमने युद्धस्थान में जाकर बहुत लड़ाई की देवता भागगये फिर शिवजी और वीरभद्र लड़ते रहे देवता और दैत्य मारे गये उस समय ब्रह्माजी ने सुलह करवा दी हमने ब्रह्माजी की आज्ञानुसार देवताओं को कुछ दे दिया शिवजी अपने घर गये और देवता आदि भी अपने २ लोकों को सिधारे यह कहकर विष्णुजी अपनी सेज को सजा हुआ पाय तुलसी के साथ भोगविलास करने लगे पर तुलसी को मैथुन करती समय सन्देह उपजा कि यह कोई दूसरा मनुष्य है सो तुलसी ने कहा कि तुम शङ्खचूड़ नहीं तुमने हमसे छल किया है और हमारे पातिव्रतधर्म का नाश किया है अब सत्य २ वर्णन करो के तुम कौन हो विष्णुजी ने डरके कहा कि हम विष्णुजी हैं देवताओं के निमित्त यह कार्य किया विष्णुजी ने अपने दर्शन दिये जब तुलसी ने विष्णुजी को देखा तो क्रोध करके कहा कि तुमने हमारे पातिव्रत धर्म को नष्ट किया तुमने यह छल करके हमारे स्वामी को मरवाडाला इस हेतु से हमारा यह शाप है कि तुम पत्थर हो जावो जो तुमको दयासिन्धु कहते हैं वह मूर्ख हैं हमारा स्वामी जो तुम्हारा भक्त था उसको तुमने देवताओं के मनोरथ सिद्ध करने के लिये मरवाडाला यह कहकर तुलसी

रोने लगी यह देखकर विष्णुजी डरे और शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने तुलसी को दर्शन दिया और कहा कि तुम रुदन मत करो अपने २ कर्म सब भोगते हैं दुःख और सुख कोई वस्तु नहीं वह समुद्र के समान है जिसमें दोनों प्रकार का जल है तृष्णा उसकी लहर है धर्म विना कोई पार नहीं हो सक्ता तुम दोनों से हम कहते हैं कि जो तुमने प्रथम योग और तप किया था वह निष्फल न हो तुम दोनों हमारे पास हो तुम्हारा पति कृष्णजी का मित्र सुदामा नामी था उसे राधिकाजी ने शाप दिया इससे वह यहां उत्पन्न हुआ अब वह मारा गया और इस शरीर को त्यागकर वह फिर वैसा ही होगया तुम भी इस शरीर को छोड़ो और विष्णुजी के साथ विहार करो तुम्हारा पातिव्रत-धर्म नष्ट नहीं हुआ देवताओं की भलाई के लिये जो हमने तुम्हारे पति का वध किया था उस पर क्रोध न करना तुम नदी के समान होकर गण्डकी नदी के नाम से प्रसिद्ध होगी और विष्णुजी के अंश से जो समुद्र है उसकी स्त्री होकर विहार किया करोगी सिवाय इसके तुम दोनों एक और रीति से इकट्ठे रहोगी अर्थात् तुम पृथ्वी में इसी नाम अर्थात् तुलसी के नाम से प्रसिद्ध होकर उपजोगी और विष्णु के शरीर में चढ़ा करोगी कि विष्णु अपने कर्म का फल पावें और विष्णु तुम्हारे शाप से पत्थर बनकर गण्डकी नदी के तीर स्थित रहैं और उस जगह बड़े तीक्ष्ण दंष्ट्रावाले भयदायक जीव उपजकर पत्थर को काट २ कर बहुत टेढ़े सीधे टुकड़े बनाया करेंगे वे टुकड़े शालग्राम के नाम से प्रसिद्ध होंगे और टूटे फूटे टुकड़े केवल पत्थर कहलावेंगे और चक्र के भेद से वेद ने शालग्राम शिला बहुत विस्तार से वर्णन किया है उन शालग्राम के साथ तुम्हारी भेंट सदा हुआ करेगी जो पुण्य बढ़ानेवाला और पापों का नाश करनेवाला है

और जो कि तुम शङ्खचूड़ की स्त्री हो और बहुत युगों तक उससे विहार किया इससे तुम्हारा संयोग शङ्ख के साथ हुआ करेगा इस बात में भेद करनेवाला दुःख पावेगा यह बातें तुलसी से कहकर शिव अन्तर्धान हो गये और तुलसी अति प्रसन्न होकर अपना शरीर छोड़ वैकुण्ठ चली गई और उत्तम स्वरूप धारणकर विष्णुजी के साथ विमान पर चढ़ी और उसको हर प्रकार का आनन्द प्राप्त हुआ और उसके प्रथम शरीर से गण्डकी नदी उपजकर ऐसी तेजोवती हुई कि जो मनुष्य उसके जलको देखे या स्पर्श करे उसके सब पाप दग्ध हो जावें और उस के तट पर विष्णुजी पर्वत के आकार से स्थित हुये जिनके दूरही के दर्शन से पाप क्षीण हो जाते हैं और बड़े २ कठोर दांतवाले कीड़े उपजकर बड़े २ छिद्र किया करते हैं उनसे जो टुकड़े होकर गण्डकी नदी में गिरते हैं वही शालग्राम की मूर्तियां हैं जो अति पवित्र और दुःख दूर करनेवाली हैं उनमें जो चक्रसहित हों वह पूजने के योग्य हैं उनके बहुत प्रकार हैं लक्ष्मीनारायण आदि परन्तु हमने विस्तार के भय से नहीं लिखा जो नदी से बाहर मिलती हैं वे पिङ्गलादि नाम से प्रसिद्ध हैं और गृहस्थ के पूजने योग्य नहीं हैं चारवर्ण के विशेष जो मनुष्य हैं उनके पूजने योग्य हैं वह मूर्तियां दो भांति की हैं एक प्रकार आनन्द और दूसरी प्रकार दुःख देती हैं यह शालग्राम शिला तीन वर्ण के विशेष शूद्र वर्ण के पूजने योग्य नहीं हैं शालग्राम शिला की बहुत बड़ी बड़ाई है जैसे कि नर्मदा के पत्थरों की महिमा है शालग्राम और नर्मदा की मूर्तियां स्वयं स्वरूप विष्णु और शिव हैं और शालग्राम शिला को तुलसीपत्र अति प्रिय है कदाचित् तुलसी-पत्र से अलग शालग्राम की मूर्ति रक्खी जावे तो बहुत ही दुःख प्राप्त होगा और कष्ट और दुःख के विशेष स्त्री का वियोग होगा

चाहे मरजाने से या और किसी प्रकार से इसी प्रकार शङ्ख का वियोग भी शालग्राम को बहुत दुःखदायी है जब तुलसी शङ्ख शालग्राम इकट्ठा करे और एक ही स्थान पर रक्खे तब दोनों लोक का सुख प्राप्त होता है यह विष्णु का इतिहास मुक्ति देने वाला सुनने सुनाने से आनन्द देता है शङ्खचूड़ वध और शिव का चरित्र सब मनोरथ पूरे करनेवाला है दुःख को दूर करता है और अति पवित्र है और जो कि इस इतिहास में विष्णु का भी यश कहा गया है इससे और भी अधिक आनन्ददायक हुआ शिव और शिव की लीला अति आश्चर्यदायक है वे भक्तों के अधीन होकर कैसी २ लीला करते हैं हे नारद! अब क्या सुनना चाहते हो।

चालीसवां अध्याय।

नारदजी बोले हे ब्रह्मन्! जिस तरह शिव ने अन्धकासुर को वध किया वह कथा सुनने की मुझे अभिलाषा है कृपा करके वर्णन कीजिये ब्रह्मा ने कहा कि जब विष्णु ने नरहरि और शूकर का अवतार लेकर दिति के पुत्रों को मारा तब दिति ने बड़ा विलाप किया और कश्यप की शरण में जाकर सेवा करने लगी और हर प्रकार अपने पति कश्यप के प्रसन्न होने के उपाय में सब शृंगार आदि को छोड़ ब्रह्मचर्य स्वरूप धारणकर रहने लगी वह केवल कश्यप की इच्छा के अनुकूल मीठे वचन कह बहुत बकने से बची रहती कश्यप ने प्रसन्न होकर कहा कि हम तुम्हारी सेवा से अति प्रसन्न हुये वरदान मांगो और पातिव्रत-धर्म वर्णन किया और कहा कि कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसको हम शिवजी की कृपा से नहीं दे सक्के दिति ने कहा कि देवताओं ने हमारे साथ शत्रुता करके विष्णु के द्वारा मेरे दोनों पुत्र और बहुत दैत्यों को वध कराया इस बात का मुझे बड़ा दुःख है

इसीसे मैं आपकी शरण में आई हूं मुझे ऐसा पुत्र कृपा कीजिये जो देवताओं से वध न हो सके कश्यप बोले कि अच्छा हमने दिया पर मृत्युञ्जय जो रुद्र है जिसके समान कोई देवता और दैत्य नहीं उसके सामने विष्णु और ब्रह्मा की कुछ नहीं चलती उसके समान और दूसरा कोई नहीं उसके समान वही है जब तुम्हारे लड़का उपजे तब उसको भली भांति समझा देना कि वह किसी प्रकार मृत्युञ्जय को क्रोधित न होने दे क्योंकि शिव के कोपित होने पर फिर और कोई बचानेवाला नहीं है यह बात वेद कहते हैं इतना कह कश्यप चुप होगये और दिति कश्यप के तेज से गर्भवती हुई और इतना दिति का तेज बढ़ा कि कोई मनुष्य बहुत तेज से उसकी ओर नहीं देख सक्ता था दशवें मास दिति के पुत्र उपजा जिसका विचित्र स्वरूप था अर्थात् उसके हज़ार शिर और दो हज़ार आंखें, हाथ, पांव और भुजा थीं और बहुतही सुन्दर तेजस्वी हृष्ट पुष्ट ऐसा कि जो सब देवता और मुनि उसको उठावें तो भी न उठसके और वह अन्धों के समान इधर उधर झुका हुआ चलता था इससे उसका नाम अन्धक रक्खा गया और जैसा उसका अन्धक नाम था उसी प्रकार उसने सब कार्य भी किये वह मतवालों के समान चलता और अपने समान दूसरों को नहीं समझता इसी प्रकार अन्धकासुर ने संसार में बहुत उपद्रव मचाये और सब रत्न देवताओं से लात मारकर छीनलिये उसने संसार भर को अपना सेवक जानकर अप्सरा गन्धर्व और देवताओं को अपने घर डाल लिया और पर-स्त्रियों को और धन द्रव्य कोष को छीन लिया इसी प्रकार अन्धक दैत्यों को साथ लिये हुये तीनों लोक में नाना प्रकार के उपद्रव करता रहा और देवता और मुनीश्वरों को महादुःख देता था वह इन्द्र की सभा में जा इन्द्रासन पर बैठ केवल देवताओं को

ही नहीं बरन् इन्द्र को भी अपनी आज्ञा सुनाता और देवताओं को तो अपना चाकरही जानता था और इन्द्र को कुछ भी बड़ा न समझता था वह अंकुशरहित हस्ती के समान था जिसको दैत्य और देवता कोई रोंक नहीं सक्के थे एक दिन सब दैत्यों के अधिपति ने आकर प्रणाम के उपरान्त कहा कि हे अन्धक! जितने देवता और मुनि हैं वह सब तुम्हारे शत्रु हैं उन्होंने बड़े छल से दैत्यों का वध किया है इसी प्रकार इन्द्र दैत्यों का बड़ा शत्रु है उसने पहिले दैत्य को जो सबसे प्रथम उपजा था मारा और देवताओं ने मुनीश्वरों की सम्मति से हम दैत्यों का बड़ा भारी वन जलाया है इससे आप पुरानी शत्रुता का विचार कर तीनों लोक की विजय कीजिये सो अन्धक तीनों लोक के विजय करने के निमित्त तय्यार हो गया और उसने बड़ी सेना इकट्ठी की यह दशा देख देवता और मुनि सब दुःखी हुये और इन्द्र ने आप कश्यप के पास जाकर अति विनय से वर्णन किया कि हे पिता! तुमने देवताओं को बड़े आनन्द से रक्खा अब अन्धक सबको निकाले देता है आप देवता और मुनीश्वरों के ऐसे दुःख को किस निमित्त नहीं देखते हो वह क्षण क्षण पर हमको आज्ञा दिया करता है और चाहे वह हम से छोटा है पर हमको बड़ा नहीं समझता हम भाई होने के कारण सब कुछ सहते हैं अब वह दैत्यों को लेकर लोक के विजय पाने की इच्छा रखता है अब बड़ा उपद्रव होगा तीनों लोक का कार्य बिगड़ जावेगा।

इकतालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! ऐसी बातें इन्द्रसे सुनकर कश्यप अति आश्चर्य में होकर कहने लगे कि हे इन्द्र! जो दुःख कि तुमको अन्धक ने दिया है उससे कुछ भय मत करो हम उसको

दूर कर देंगे यह कहकर इन्द्र को विदा कर अन्धक को बुलाया और कहा कि जो हम कहते हैं उसको छल छोड़ मानो कि अदिति और दिति दोनों हमारी स्त्रियों से दैत्य और देवता उपजे वह बराबर हमारी सेवा करते हैं हमको दोनों प्यारे हैं हम तुम दोनों को बराबर सिखलाते हैं तुम तीनों लोक की विजय-का विचार छोड़ दो क्योंकि बड़ा दुःख है तुम और इन्द्र राज्य को आधी आधी करके शत्रुता छोड़ दो और एक ही मत से दोनों काम किया करो मुझे तङ्ग न करो नहीं तो बड़ा दुःख पाओगे यह कहकर अन्धक को विदा किया अन्धक कुछ दिन तो चुपका बैठ रहा पर थोड़े ही दिनों में फिर दैत्यों की संगति से उपद्रव मचाने लगा और फिर वही बातें करने लगा जिससे देवता आदि को दुःख पहुँचे वास्तव में संगति से बड़ा फल है यह दशा अपने पुत्र की देखकर दिति अति प्रसन्न हुई और एक दिन उसको बुलाकर समझाने लगी और जैसा कि पहिले कश्यप ने कहा था वही बात विचार कर कहा कि हे अन्धक ! तेरे कर्म देखकर मुझे दुःख प्राप्त होता है मैं तुम से एक बात कहती हूं उसको करो फिर जैसा तुम्हारे मन में आवे वैसा ही करना अर्थात् तुम शिवजी की सेवा करो उनसे शत्रुता मत रक्खो क्योंकि उनसे शत्रुता करके आनन्द नहीं मिलता और शिवकी बड़ी स्तुति करके कहा कि शिव का तप किया करो अन्धक ने यह माता की आज्ञा मान सबों की संगति छोड़ी और इन्द्रियों को जीत कठिन तप करने लगा अर्थात् पहिले तीनों ऋतुओं में वन और जल में बैठकर परिश्रम करता रहा फिर इन्द्रियों को जीत के केवल वनफल खाने लगा कुछ दिन तक ऊर्ध्वबाहु हो एक पांव से सूर्य के सामने खड़ा रहा फिर केवल अंगुष्ठ के बल पर खड़ा रहकर शिव का ध्यान करता रहा जब इस तप से

भी शिव प्रसन्न न हुये तो श्वास रोंक तीनों प्रकार का प्राणायाम किया तब अन्धक का तेज बहुत बढ़ा कि उसकी ओर देखा नहीं जाता था ऐसा कठिन तप करते हुये देख देवता भयभीत होकर हमारी शरण में आये हम सबको लेकर विष्णुजी के निकट गये विष्णु सब हाल सुनकर हम सबको साथ लिये शिव के समीप पहुँचे और स्तुति की जो अति पवित्र है।

बयालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसी स्तुति कर सब चुप हो खड़े रहे शिव बोले कि हे विष्णुजी और ब्रह्माजी और सब देवताओ! हम प्रसन्न हुये जो कार्य हो वह कहो हम वरदान देने को उद्यत हैं देवताओं ने कहा कि अन्धक के कठिन तप से हम अति भयभीत हैं इसलिये आप जाकर अन्धक को वरदान देवें कि हमारा दुःख दूर हो जावे यद्यपि वह वरदान पाने से देवताओं का पूरा शत्रु हो जावेगा। कि जिस तरह कोई मनुष्य अग्नि से जलकर पानी में कूद पड़ता है पर पानी के कूदने से भी उसे चैन नहीं पड़ता वरन् उसके फफोले पड़ जाते हैं ऐसे मनुष्यों के लिये बुद्धिमान् वैद्य दरकार होता है इससे हम सबकी इच्छा है कि आप कृपा करके अन्धक के कठिन तप की अग्नि को बुझा देवें और फिर हमारे लिये भिषक् के समान होकर चिकित्सा करें यह सुनकर शिव वरदान देने को चले और वाहन और गिरिजा और गणों समेत पहुँचकर वरम्ब्रूहि २ बोले अन्धक ने प्रणाम स्तुति की और कहा कि मैं केवल यह वरदान मांगता हूं कि अपने पिता के वरदान के अनुसार मैं सिवाय आपके और किसी के हाथ से न मारा जाऊं ऐसा कीजिये कि मेरे पिता का वचन ठीक हो शिवजी बोले कि अच्छा हम यही वरदान देते हैं पर जो तुम तीनों लोक के राजा होकर अपना धर्म

बिगाड़ कुकर्मी हो जावोगे तो हम निस्सन्देह बड़ा क्रोध करेंगे जिससे तुम्हारा सब पाप नष्ट हो जावेगा ऐसी दशा में भी हम बड़ी दया करेंगे जिसमें तुम्हारा श्रम निष्फल न जावेगा यह कह शिवजी अन्तर्धान होगये और अन्धक ने प्रसन्नतापूर्वक घर आकर अपने माता पिता से वर पाने का हाल कह सुनाया जब कि देवताओं ने सुना कि शिवजी ने अन्धक को ऐसा वरदान दिया तो वे बहुत घबड़ाये और इन्द्र से जा-जाकर सब हाल वरदान पाने का कह सुनाया अभी सब देवता इन्द्र के पास जाकर सब हाल कह रहे थे कि चारों ओर से दैत्यों ने अन्धक के पास आकर देवता और दैत्यों की पुरानी शत्रुता की गाथा कह सुनाई पर अन्धक ने कुछ न कहा केवल इन्द्रपुरी के देखने को रथ पर चढ़ चला और अपने घर के समान इन्द्रपुरी में पहुँच गया अन्धक को इसी तरह करते हुये देखकर इन्द्र और देवताओं समेत बहुत भय-भीत हुये सो इन्द्र ने तुरन्त उठकर अन्धक को बराबर एक ही गद्दी पर बैठा लिया उस समय अन्धक के तेज से देवता प्रभात के तारों के समान तेजहीन हो गये इन्द्र ने मन में दुःखी होकर अन्धक से आने का कारण पूछा और कहा कि आपने बड़ी कृपा की जो यहां आये जो आज्ञा हो उसे पालन करें जो हमारे घर में रत्न, धन, द्रव्य आदि हैं उसे आप सब अपना समझकर ले लीजिये अन्धक ने अहंकार से उत्तर दिया कि तुम केवल मुझे अपनी सब सामग्री दिखा दो और मुझे किसी वस्तु के लेने की इच्छा नहीं है और तुम्हारे पास जो ऐरावत हाथी और उच्चैःश्रवा घोड़ा आदि उत्तम २ रत्न हैं और उर्वशी अप्सरा आदि महास्वरूपवती स्त्रियां वह सब मुझको दिखला दो उनके देखने से केवल मैं प्रसन्न हूंगा निदान निरुपाय होकर

इन्द्र ने अपनी सब सामग्री दिखा दी और अन्धक ने सब सामग्री देखी और आश्चर्यकर फिर इन्द्र की जगह पर बैठ गया और बड़ा उत्सव हुआ और अन्धक ने आज्ञा दी कि नृत्य की सभा हो इन्द्र ने भयभीत हो सब चेलियों और गन्धर्व और अप्सरादि से कहा कि भलीभांति नाच गाकर अन्धक को प्रसन्न करो सो ऐसा ही हुआ और सब तरह के बाजे ताल स्वरसमेत बजने लगे और सातोंस्वर इक्कीस मूर्च्छना और तीन ग्राम के साथ गान होने लगा ऐसे नृत्य गान से अन्धक ने मोहित होकर चाहा कि अप्सरागणों को अपने वश में करूं पर देवताओं ने न माना जब अन्धक ने देवताओं की ऐसी अवज्ञा देखी तो अति क्रोधित होकर बड़ा नाद किया और देवता भी बदल गये इन्द्र ने देवताओं से कहा उठो ईश्वर का स्मरण करो भले प्रकार लड़ो क्योंकि स्त्रियों के दे देने से मरजाना उत्तम है सो देवता तुरन्त लड़ने पर तैयार हुये और अन्धक ने पांच सौ धनुष् अपने हज़ार हाथों से लेकर हर एक धनुष् में बहुत २ बाण लगाये और बड़ी लड़ाई हुई इन्द्र ने अन्धक के सामने आकर वज्र से अन्धक को बहुत मारा अन्धक ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल गदा आदि नाना प्रकार के शस्त्र छोड़े सो इन्द्र देवताओं समेत युद्धस्थल छोड़ भाग गये और दैत्यों ने जो कुछ देवताओं की सामग्री थी सब लूट ली और इन्द्र को भी अपने वश कर लिया और अन्धक अपनी माता दिति को भी वहीं बुला राज्य करने लगा और डौंड़ी पिटाई कि सब प्रजा आनन्दपूर्वक रहे कुछ कोई सन्देह मत करे इन्द्र का राज्य बीत गया मेरे राज्य करने का समय है सब वर्ण अपने २ धर्म में स्थित रहकर हमारी आज्ञा पालन करें जो आज्ञा के विरुद्ध करेगा वह हमारे हाथ से मारा जावेगा यह आज्ञा देकर आप इन्द्रपुरी का राज्य करने लगा।

तैंतालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उसके राज्य में कोई मनुष्य या जीव सिवाय देवताओं के दुःखी न था न किसी को कुछ दुःख मिलता निदान देवता अति दुःखी हो हमारे पास पहुँचे और सब वृत्तान्त कह दिया और यह भी कहा कि देवता यज्ञभाग नहीं पाते पवन, सूर्य, चन्द्रमा तक उसके अधीन होकर उसकी आज्ञा पर चलते हैं हम सब देवता छिपे रहते हैं यह कह देवताओं ने हमारी बड़ी स्तुति की हमने कहा कि तुम कुछ खेद मत करो तुम्हारे सब दुःख दूर होजावेंगे और बहुत से पुरातन इतिहास कहकर सबों को साथ लिये हुये विष्णुजी के पास जा बहुत स्तुतिकर अन्धक के अन्याय का हाल वर्णन किया विष्णुजी बोले कि तुम सब अपने २ घरों को जावो हम वेग ही जहां दैत्य होंगे पहुँचकर उनको नष्ट कर देंगे यह सुन-कर देवता अपने २ स्थानों को पलट गये और विष्णुजी ने तुरन्त गरुड़ पर आरूढ़ हो अपने शस्त्रों समेत अन्धक के पास पहुँच बड़े शब्द से तिष्ठ तिष्ठ कहकर बाण चलाये जिनके चलने से तीनों लोक जल उठे पर अन्धक ने वारुणास्त्र चला-कर दूर कर दिया इसी प्रकार विष्णुजी बड़े २ अस्त्र अन्धक पर चलाते रहे और अन्धक निवारण करता रहा और जब कि अन्धक ने विष्णु को अपने शस्त्रों से दुःखी कर दिया तो विष्णुजी ने कोपित होकर सुदर्शनचक्र को अपने हाथ में लेकर छोड़ दिया जिससे संसार जलने लगा जाना गया कि प्रलय होरहा है और अन्धक भी दैत्यों समेत भयभीत होगया और शिव का ध्यानकर अपने त्रिशूल को चला सुदर्शन को अपना काम न करने दिया इसी प्रकार लड़ते २ विष्णुजी ने शिव का ध्यान करके मन में बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिव ! मैं देवताओं

के मनोरथ क्योंकर पूर्ण करूं आप आज्ञा दें शिवजी बोले कि मुझे तुम्हारे बराबर कोई वस्तु वरन् प्राण भी प्रिय नहीं है जो तुम्हारा शत्रु है वह मुख्य करके हमारा भी शत्रु है तुम्हारी सेवा बिन हमको किसी ने नहीं जाना हर मनुष्य हमारी भक्ति चाहता है तो तुम्हारी भक्ति पहिले कर ले तुम आप ही कुरीति से देवताओं के पक्ष में उद्यत हुये हो जब तक अन्धक ब्राह्मणों से शत्रुता न करेगा तब तक हम उसके ऊपर क्रोध न करेंगे क्योंकि ब्राह्मण हमको गौरी से भी अधिक प्रिय हैं इससे तुम कोई युक्ति करो जिससे अन्धक हमारे तप और भक्ति को छोड़कर ब्राह्मणों से शत्रुता उपजावे यह आज्ञा पाकर विष्णुजी ने अन्धक से कहा कि तुम्हारी वीरता और बल देखकर हम अति प्रसन्न हुये वरदान मांगो अन्धक ने गर्व से कहा कि वरदान लेना छोटे मनुष्यों का काम है हमको किस बात की इच्छा है जो हम तुमसे मांगें तुमको जो इच्छा हो वह मांगो वह तुमको देदें विष्णुजी ने अति प्रसन्न होकर कहा कि हम तुमसे वर मांगते हैं कि तुम शिवजी की भक्ति छोड़कर आप शिव बनकर विहार किया करो अन्धक ने विष्णुजी की माया में भूलकर कहा कि 'तथास्तु' ऐसा ही होगा फिर विष्णुजी और अन्धक अपने २ घरों को चलेगये और अन्धक ने आप अपने को शिव ठहराकर तीनों लोक को वश कर लिया और सबको दुःख देने लगा ब्राह्मणों के मान को स्थिर न रक्खा और आप अपने को परब्रह्म प्रसिद्ध किया और जप, तप, यज्ञ, होम आदि सब बन्द कर दिया और दैत्यों को दिक्पाल के स्थान पर नियत कर दिया तब दैत्यों की सब रीतियों का प्रचार होगया जिनसे धरती पर बड़े २ पाप होने लगे देवताओं का मान हीन होगया वर्णाश्रम धर्म कुछ शेष न रहा स्त्रियां अनाचार से मैथुन कराने लगीं

पातिव्रतधर्म नष्ट होगया इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मृत्यु के समय इसी प्रकार बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

चवालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! उस समय देवता और मुनीश्वरों की दशा बहुत बुरी थी वह दैत्यों के भय से इधर उधर भागे फिरते थे जैसे कोई विक्षिप्त मारा २ फिरे और जब देवता और ब्राह्मण बहुत दुःख पाकर शाप देने लगे तब से अन्धक का तेज कम होगया एक दिन सब देवताओं ने इकट्ठे होकर कहा कि अब तो अन्धक हमको कुछ धर्म कर्म करने नहीं देता न हम विष्णु और शिवजी की पूजा करने पावें सब तरह से आपदा और दुःख है कौन उपाय से यह मर सक्ता है बृहस्पति बोले कि अन्धक शिवजी के सिवाय संसार भर से अवध्य है जब कि शिव ने प्रसन्न होकर वर दिया था तो उसके साथ यह भी प्रण था कि जब तुम पाप करने लगोगे तब हम ऐसा क्रोध करेंगे जिससे तुम्हारा तेज घट जावेगा सो शिवजी ने पहिले ब्राह्मणों के दुःख देने का निषेध किया था सो अब वह समय आ गया है उत्तम है कि हम सब चलकर शिवजी की शरण होवें वे सब दुःख दूर कर देवेंगे सो हे नारदजी! फिर तुमको सब देवताओं ने इस वृत्तान्त के कहने के लिये शिवजी के पास भेजा और तुम वहां से चलकर शिवजी को मन्दार के वन में देखकर स्तुति करने लगे तुम्हारी स्तुति सुनकर शिवजी बहुत प्रसन्न हो कहने लगे कि हे नारदजी! किस कार्य को आये हो तुमने अन्धक के अन्याय का सब हाल उनसे कह सुनाया शिवजी ने कहा कि तुम मन्दार के पुष्पों की माला पहनकर अन्धक के पास जाकर हर प्रकार हमारी प्रशंसा करना और ऐसी युक्ति करना जिसमें वह क्रोधित होकर हमारे पास आवे सो तुम विदा

होकर मन्दारपुष्प वन से तोड़ उसकी माला कण्ठ में लटकाये हुये अन्धक के समीप गये अन्धक सब दैत्यों समेत तुम्हारी माला को जिसमें उत्तम सुगन्ध थी देखकर आश्चर्य में हुआ और कहा कि ये पुष्प कहां उपजते हैं उस उद्यान का कौन रक्षक है ये पुष्प मैं अपने भुजबल से लिया चाहता हूं तुमने उत्तर दिया कि मन्दराचल में जो वीरकानिक वन है उसमें यह पुष्प उपजते हैं वहां शिवजी के गण रक्षक हैं वे गण बड़े बलिष्ठ हैं और शिव जिनके बराबर दूसरा नहीं है अपनी स्त्री सहित उसी वन में विहार करते हैं उनको जीतनेवाला सृष्टि में कौन है पर हां उनकी सेवा करने से यह पुष्प मिल सक्ते हैं उसके विशेष उस वन में और भी सैकड़ों प्रकार के पुष्प हैं कइयों से अच्छी सुगन्ध टपकती है और कई वृक्षों से रत्न और कइयों से वस्त्र और कई तरुओं से चारों प्रकार का अन्न वहां कुछ किसी को दुःख नहीं होता न किसीको कुछ भूख, प्यास, चिन्ता, लज्जा, खेद व्याप्त होता है शिवजी की सेवा से मनुष्य इन्द्र को जीत लेता है ऐसे २ उपदेश के वचन कहकर तुम तो बिदा हुये और अन्धक ने दैत्यों की सभा रच मन्दार के फूलों की प्रशंसा की और कहा कि तुम सब उद्यत होकर हमारे साथ फूलों के लाने को चलो कोई यहां रह न जावे यह कह अन्धक सेना सहित चला और शिव की महिमा भूल गया।

पैंतालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अन्धक ने जाकर मन्दराचल को देखा कि वह नाना प्रकार की औषध और जड़ीबूटी से सुशोभित है और सिद्ध मुनीश्वर देवतागण उसकी रक्षा करते हैं और चंदन, अगर, साल, चम्पा, बेल और रुद्राक्षादि हज़ारों प्रकार के वृक्ष वर्तमान हैं और गन्धर्व, किन्नर, अप्सरादि नाचते गाते

हैं और हंस, चकोर, अरना, सिंह, बघेला आदि जीवों से भरा हुआ है ऐसी बहार देखकर देवताओं को देखा और बड़े क्रोध से कहा कि हे मन्दराचल ! तू हमको भली विधि जानता है मैं अपने बराबर संसार में दूसरे को नहीं समझता और किसी के हाथ से मरने के योग्य नहीं संसार भर मेरे वश्य में है देवता, मुनि, दैत्यादि सब मेरे चेले हैं इसी प्रकार तुम भी हमारी प्रजा और अधीन हो हमारी आज्ञा सुनो कि आज से हम तेरे निकट के वन को अपने विहार और भोग के लिये नियत करते हैं जो तू हमारी आज्ञा न मानेगा तो तेरे लिये अच्छा न होगा हे नारदजी ! इसी प्रकार अन्धक ने चारों प्रकार की राजनीति के वचन कहे पर शिवजी का पर्वत कुछ भी न डरा और अन्तर्धान हुआ जब कि अन्धक ने पर्वत को अन्तर्धान होते हुये देखा तो क्रोध करके कहा कि देख मैं आज तुझे भस्म के समान किये डालता हूं यह कहकर पर्वत को जड़ से उखाड़कर मट्टी के समान पीस डाला और बहुत योजन की दूरी पर फेंक दिया तब उस वन के रहनेवाले सब थर २ कांपने लगे और पर्वत उठते, बैठते, कांपते, भागते शिवजी के समीप गया उस समय शिवजी गौरी के साथ विहार कर रहे थे गौरी ने पर्वत को कांपते हुये देखकर कहा कि तू आज क्यों कांप रहा है और धरती आकाश और पाताल भी कांपता है किसने इतना क्रोध किया है शिवजी ने कहा कि नहीं जानते कि किसने इतना उपद्रव उठाया है देखिये आज कौन यमलोक को जाता है जिसने यह काम किया होगा उसको अवश्य दंड दिया जावेगा चाहे वह हमारा पुत्र भी होगा यह कहा और पर्वत को प्रसन्न करके जो टुकड़े पहाड़ के टूट टूटकर गिर पड़े थे वे शिवजी की कृपा से दैत्यों की सेना में गिरने लगे और दैत्यों को बड़ा दुःख प्राप्त

हुआ तब तो अन्धक क्रोधित होकर कहने लगा कि हे पर्वत! मुझको नहीं जानता कि मैं परब्रह्म हूं तू ऐसा छल क्यों करता है प्रकट होकर क्यों नहीं लड़ता यह सुनकर शिवजी ने बड़ा क्रोध किया इतने में हम और इन्द्र और देवता आदि सब शिवजी की सेवा में पहुँचकर स्तुति करने लगे वह ऐसी स्तुति है कि जिसके सुनने सुनाने से दोनों लोक में मुक्ति मिलती है।

छियालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! जब शिव ने ऐसी स्तुति सुनी तो अन्धक पर अति क्रोधित होकर अपने गणों से कहा कि तुम जाकर दैत्यों को नष्ट करो सो गण चले और नन्दी सब गणों के सेनानी होकर युद्धस्थान में पहुँच बड़ा भारी युद्ध करने लगे और गणों ने बहुत दैत्यों को नाना प्रकार के शस्त्रों से वध कर डाला और नन्दी के तेज को कोई न सह सका नन्दी ने हुण्ड, थुण्ड, जृम्भासुर, कुञ्जासुर, कार्तस्वन, पाकहारीत, मदनमर्दन आदि दैत्यों के अधिपों को मारा जिससे सब दैत्यों को बड़ा दुःख पहुँचा और अन्धक अति शोकवान् होकर भयभीत हुआ और शुक्र अपने गुरु के समीप जा स्तुति करने के उपरान्त कहने लगा कि तुमने बहुत वेर दैत्यों का दुःख मिटाया है हम तुम्हारी शरण में आये हैं और तुम्हारी सेवा से देवताओं को ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु और शिव समेत तृणवत् जानते हैं तुम्हारे बल पर दैत्य देवताओं पर ऐसे प्रबल हैं जैसे सिंह हाथी पर और मोर सर्प पर तुम्हारी कृपा से विष्णु दैत्यों से भयभीत रहते हैं और वज्रव्यूह जिसको देवता वज्र के समान तय्यार करते हैं उसके भीतर दैत्य सन्देहरहित होकर प्रवेश करजाते हैं तुम्हारी सेवा के बल से दैत्य पर्वत के समान युद्धस्थान में स्थिर रहते हैं इस समय हे भृगो! शिलाद के पुत्र नन्दीगण ने असंख्य

दैत्यों को युद्धस्थान में वध करडाला है और हुएड और थुएड आदि अच्छे २ दैत्यों को मारकर धरती पर लिटा दिया अब जैसा उचित हो वैसा कीजिये हम आपकी शरण में आये हैं तुमने जो विद्या प्राप्त की है उसके वर्तने का समय यही है दैत्यों को जिलाओ कि संसार में तुम्हारा नाम हो भृगु ने हँसकर कहा कि सहस्र वर्ष पर्यन्त जो विद्या हमने केवल धान की तुष का धुआं पीकर प्राप्त की है उसकी सिद्धि देखो विद्या दैत्यों को आनन्द देने-वाली है हम मरे हुये दैत्यों को मृत्यु निद्रा से जगाते हैं और जिस तरह कि सूखे धानों को पानी हराकर देता है उसी प्रकार हम दैत्यों को जिलाये लेते हैं यह कहकर हर एक दैत्य पर अपना मन्त्र पढ़ा वे तुरन्त जीकर यह समझे कि निद्रा से जागे हैं अन्धक अपने वीरों को जीता देखकर अति प्रसन्न हुआ और शिवजी के गणों ने भृगुनन्दन की यह सिद्धि नन्दी से वर्णन की नन्दी ने तुरन्त शिवजी के पास जा विनय की कि जो दैत्य हमारे हाथ से मारे जाते हैं उनको शुक्र बार २ जिला देता है हमारी विजय क्योंकर होगी यह सुनकर शिव का रूप अति भयंकर होगया नन्दी से कहा कि ब्राह्मणों में जो अति नीच शुक्र है उसको हमारे पास पकड़ लावो यह सुनकर नन्दी सन्देह छोड़ दैत्यों की सेना में प्रवेश कर गये देखा कि शुक्र की रक्षा बहुत दैत्य करते हैं निदान नन्दी ने सबको मोहितकर शुक्र को पकड़ लिया कि जैसे बाज लवा को पकड़ता है और घसीटते हुये ले चले यद्यपि शस्त्र चलाकर शुक्र ने अपना छुटकारा चाहा पर नन्दी ने अपने शरीर से अग्नि उपजाकर सब भटों को जला दिया और शिवजी के पास शुक्र को पकड़ ले चले और शुक्र को शिवजी के आगे खड़ा करके कहा कि जो उचित हो वह आप करें शिव ने कुछ न कहा और शुक्र को अपने उदर में डाल

लिया कि जैसे कोई फल खा लेवे दैत्यों को अति दुःख प्राप्त हुआ और विजय की आशा न रही जब कि अन्धक ने यह दशा सुनी तो दैत्यों को धिक्कार देने लगा और कहा कि आज के दिन मैं नन्दी का वध ही कर डालूंगा और शुक्र को छुड़ाकर इन्द्र को विष्णु और देवताओं समेत वध कर डालूंगा और जो कि शुक्र योगशास्त्र में निपुण हैं इससे उनके मरने का कुछ भय नहीं यह कह फिर गणों और दैत्यों से युद्ध होने लगा और नन्दी ने गणों समेत इतना युद्ध किया कि दैत्यों की सेना बिखर-कर बहुत भागी ।

सैंतालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अपनी सेना को भागते हुये देखकर अन्धक आप रथ पर चढ़ युद्धस्थल में पहुँचा और कई एक वीर लड़ने लगे तब बलभद्र, साख्य, विसाख्य, गणेश, सोम, नन्दी और नन्दीश्वर आदि शिव के गणराजों ने अन्धक के ऊपर एक ही बेर चढ़ाई की तब बड़ा भारी युद्ध हुआ और शुक्र ने शिव के उदर में ब्रह्माण्ड भर देखा इसी प्रकार वह सौ वर्ष पर्यन्त उदर में घूमा किया पर छिद्र न पाया तब शिव के योग को करके लिङ्ग के छिद्र के द्वारा कि जिस मार्ग से वीर्य आता है प्रकट होकर शिवजी की स्तुति करने लगा ऐसी सावधानता शुक्र की देख शिव प्रसन्न हुये और कहा जो कि तुम शुक्र के मार्ग से प्रकट हुये इससे तुम्हारा शुक्र नाम होगा तुम हमारे पुत्र हो अब अपने घर को सुखपूर्वक चले जावो शुक्र दैत्यों की सेना में आये जिनको देखकर दैत्यों ने बड़ा आनन्द मनाया और अन्धक शुक्र को रक्षापूर्वक किसी स्थान में बिठाकर आप लड़ाई करने लगा और गणों को दुःखी कर दिया यहां तक कि गण युद्धस्थान से भागकर खड़े हुये और लज्जा

से शिव के पास जाकर कहा कि हमको दैत्यगणों की सेना मारे डालती है शिवजी बोले कि हमारा रथ साजो सो जिस प्रकार से कि त्रिपुर के वध करने के निमित्त रथ तय्यार किया गया था उसी तरह से रथ बनाया गया शिव अपने गणों के दुःख को स्मरणकर क्रोध के साथ रथ पर चढ़े और युद्धस्थान में पहुँचकर अन्धक से लड़ने लगे जो बाण और हथियार अन्धक चलाता था उसको शिव अपने बाणों और अन्य उत्तम शस्त्रों से निवारण करते थे और जो शिव शस्त्र छोड़ते थे उसको अन्धक दूर करता था निदान अन्धक ने एक मुष्टिका शिव को मारी शिव ने भी उसको मारकर पृथ्वी पर मूर्च्छित करके गिरा दिया उस समय शिव की इच्छा से चामुण्डा देवी जो दुर्गा का रूप है प्रकट हुई जो नाना प्रकार के शस्त्र धारण किये जिनका घनवत् शब्द महाभयंकर दंष्ट्रा विकराल स्वरूप महाकठोर आँखें लाल २ किये लाल ही कान बहुत ही लम्बे काली आँखें ऐसे स्वरूप से चामुण्डा देवी सेना में प्रवेशकर दैत्यों को विदीर्ण करने लगी और अपने केशों को बिखराकर नृत्य करने लगी अन्धकने क्रोधित होकर अपना शूल चण्डी के सम्मुख कर दिया ऐसी ढिठाई अन्धक की देख शिवजी ने बड़ा क्रोध किया और अपने त्रिशूल से अन्धक को छेद लिया जिससे लहू की नदी बह निकली केवल अन्धक के अस्थि और चर्म त्रिशूल पर रह गये बाकी लहू सब निकल गया और वह कलश के समान त्रिशूल पर रक्खा रहा शिवजी ने शत्रुता भुलाकर अन्धक को उत्तम बुद्धि दी जिससे वह सतोगुण धारण करके दैत्यभाव से छूटा और शिवजी की स्तुति करने लगा।

अड़तालीसवां अध्याय।

अन्धक ने बहुत स्तुति करने के उपरान्त कहा कि हे शिवजी !

मैं तुम्हारी शरणागत हूं मेरी ओर दया की दृष्टि कीजिये यह स्तुति सुनकर शिवजी ने दया की दृष्टि से अन्धकासुर की ओर देख दिया और उसकी बहुतसी प्रशंसाकर कहा कि धन्य २ हम तुमसे अति प्रसन्न हुये जो इच्छा हो वह वरदान मांग लो अन्धक ने कहा कि मुझको अपना गण करके अपने निकट रक्खो और वीरभद्र के समान मुझको भी समझो और मुझको सारूप्यमुक्ति दो कि तुम्हारे चरणों की सेवा किया करूं शिवजी ने कहा कि अच्छा सो अपना गण बनाकर उसको मुक्त किया और उसको अपने साथ ले जाकर कैलास पर्वत पर स्थित हुये इतना कह ब्रह्माजी बोले कि उस समय विष्णु व हम और देवताओं ने पहुँचकर शिवशंकर को प्रणाम किया और हम सबों ने अलग २ शिवजी की स्तुति की इस स्तुति और चरित्र को जो कोई सुने सुनावेगा वह अपने कुलसमेत प्रसन्न रहेगा उसके सामने कोई दुःख न आवेगा परलोक में उसको शिवजी की समीपता प्राप्त होगी यह स्तुति सब देवताओं की बनाई हुई शिवजी ने सुनकर प्रसन्नतापूर्वक सबको बिदा किया और शिव सब गणों समेत कैलासपर्वत में विराजमान रहे।

उनचासवां अध्याय।

इतना सुन नारद ने कहा कि हे ब्रह्मन्! इस चरित्र के सुनने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई अब आप और सदाशिवजी का चरित्र सुनावें आपके बराबर शिवजी का भक्त कौन है ब्रह्मा बोले कि विष्णु के साथ जिस तरह से शिवजी का युद्ध हुआ वह हम वर्णन करते हैं मन लगाकर सुनो कि मरीचि हमारा पुत्र जो शिवजी का भक्त था उससे कश्यप उपजे जो सदाशिवजी के भक्त हैं उनके तेरह स्त्रियां थीं जिनसे बड़ी सन्तति हुई उसकी बड़ी स्त्री दिति थी उससे बयासी दैत्य बड़े वीर

धीर उपजे जिनका नाम कनकशिपु और कनकाक्ष था जो बहुत समय पर्यन्त तप करते रहे और कनककशिपु के चार पुत्र उपजे जिनमें प्रह्लाद सबसे छोटा था प्रह्लाद से विरोचन शिव का बड़ा भक्त उपजा और विरोचन से वलि शिवजी का भक्त बड़ा उदार और देवताओं के साथ युद्ध करने में अति बलवान् उपजा उसके एक लड़का बाण के नाम से प्रकट हुआ जो बड़ा शिवजी का भक्त था वह सत्संगति का मित्र और अपने व्रत नियम में अतिदृढ़ और निरहंकार सहस्रबाहु धारण किये था उसने अति उदारता से सर्व ब्रह्माण्ड का राज्य किया और इन्द्र के समान उसके नौकर थे उसने अपनी राजधानी शोणितपुर में स्थापनकर बड़ी धूमधाम से राज्य किया उसके राज्य में किसी को भी दुःख न था एक दिन वह शिवजी की भक्ति और प्रेम में आनन्दित होकर अपनी सहस्रबाहु से बाजा बजाकर शिवजी के आगे ताण्डवगति से नृत्य करने लगा। शिवजी अति प्रसन्न हुये कहा वरदान मांगो बाणासुर ने विनती की कि आप हमारे सदा सहायक रहा करें और मेरे दुःख दूर किया करें सो शिवजी मानकर अपने कुल समेत बाणासुर के घर में स्थित हुये और अपनी शक्ति समेत बाणपुर की रक्षा करने लगे एक दिन सब देवताओं के राजा शिवजी देवगणों समेत नर्मदा नदी के तट पर बड़ा उत्सव रच विहार करने लगे तो सब देवता सिद्ध आदि सब शिवजी का विहार देखने आये उस समय नाच गाना बजाना और नाना प्रकार की आनन्द की बातें होने लगीं तो शत्रुओं को दुःख और भक्तों को सुख प्राप्त हुआ तीनों प्रकार की वायु बहनेलगीं नाना प्रकार के फूल खिल उठे पक्षी मधुरवाणी से बोलने लगे मानों वे भी गायक बनकर गाते हैं वन फूल उठा ऐसे समय में शिवजी ने रुचि-

पूर्वक विहार किया और फिरते २ काम के वश हो नन्दीगण को बुलाकर कहा कि तुम तुरन्त कैलास में जाकर गिरिजा को अपने साथ ले आवो वे अपना सब शृङ्गार किये हुये आवें हम उनके साथ विहार करेंगे सो नन्दी ने तुरन्त गिरिजा की सेवा में जाकर सर्व हाल कह सुनाया गिरिजा ने कहा कि तुम चलो हम शृङ्गार करके तुम्हारे पीछे आती हैं नन्दी चला और गिरिजा शृङ्गार करने लगीं इतने में नन्दी ने शिवजी के निकट पहुँचकर कहा कि गिरिजा पीछे आती हैं शिवजी ने कहा कि तुम शीघ्र ही जाकर अपने साथ ले आवो नन्दी फिर गये और गिरिजा से चलने को कहा गिरिजा ने कहा अच्छा चलती हैं तुम बैठो यह कहकर उन्होंने शृङ्गार करने में अपना बहुत समय लगाया और शिवजी अप्सराओं के नाच और रङ्ग को देख-कर बहुत ही कामवश हुये और गिरिजा ने जब कि आने में बहुत विलम्ब किया तो सब सभा की स्त्रियों ने सम्मति की कि हम सब अपना २ रूप और ही प्रकार का पवित्र धारण करें यह सोच सब स्त्रियां अपना २ स्वरूप धारण करने लगीं कि शिवजी को सन्देह उपजे सो नन्दी ने उर्वशी के रूप को और केशवी ने लक्ष्मी के स्वरूप को और घृताची ने काली के स्वरूप को विश्वाची ने चण्डी के रूप को और प्रेमगोजा ने सावित्री के रूप को और मैना ने गायत्री के रूप को और पद्मावती ने विजयस्थला के रूप को और जया ने सहजन्या के रूप को धारण किया और जितनी कि अप्सरा थीं उन सबोंने इसी तरह सब देवपत्नियों के स्वरूप को धारण किया और ऊषा ने जो बाणा-सुर की कन्या थी गिरिजा का स्वरूप धारण कर लिया और कहा कि इस समय शिवजी को अपने वश कर लेवें और भली भांति शिवजी के साथ भोग विलास करें यह सब सम्मति और

स्वरूप का धारण करना गिरिजा जान गईं और ऊषा को बुलाया और हँसकर कहा कि तुमने कामवश हो हमारे स्वरूप को धारण किया इसलिये हमारा वचन सुनो कि मधुमास की शुक्लद्वादशी को सोते हुये कोई मनुष्य तुमको मिलेगा उसके साथ मन भरके भोगविलास करना वही तुम्हारा पति है हमारा वचन सत्य है यह कहकर गिरिजा अति प्रसन्नता से शिवजी के समीप गईं यह लीलाकर शिवजी अपनी सर्व सभा समेत अन्तर्धान होगये और सब अप्सरा अति लज्जित होकर गिरिजा की स्तुति करने लगीं हे नारद ! अब और चरित्र सुनिये ।

पचासवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! एक दिन बाणासुर ने अपने ताण्डव-नृत्य से शिवजी को अति प्रसन्नकर विनती की कि आपकी कृपा से मैं बड़ा बलिष्ठ हुआ हूं पर जो आपने मुझको सहस्र-भुजा कृपा की हैं वह मेरे शरीर पर भाररूप हैं क्योंकि उनके बल से कोई कार्य आजतक नहीं किया न कोई युद्ध तीनों लोक में मुझसे हुआ आपकी बराबर मेरे सामने कोई बलवान् नहीं है मैं तीनोंलोक में केवल युद्धनिमित्त फिरता हूं और मैं दिक्पालों के पास युद्ध की इच्छा से गया सो मुझे आते हुये देखकर दिग्गज भाग गये हे शिवजी ! मेरी भुजायें बल की अधिकता से खुजलाया करती हैं आप उनको दूर करें मैंने इन्द्र को जीत अपने अधीन किया है वह मुझसे सदा ही अपने मन में डरा करता है मैंने अग्नि को आग के बदले और पितृ को पाककर्ता और वरुण को द्वारपाल और पवन को बाजा बजानेवाला और कुबेर को हाथियों का रक्षक और सूर्य चन्द्रमा को मशालची अपना बनाकर बाकी देवताओं को अपने नगर का रक्षक कर दिया है इसी प्रकार मैंने सब ब्रह्माण्ड को जीतकर सबको अपने

अधीन कर लिया है पर मुझको युद्ध की बहुत बड़ी इच्छा है आप कृपा करके मेरा मनोरथ पूरा करें या तो और कोई मेरे हज़ारों भुजा काट डाले या मैं उसकी भुजा छांट दूं यह सुनकर शिवजी ने बड़ा क्रोध किया और प्रकट में क्रोध और भीतर से प्रसन्न हो बाणासुर से कहा कि तुझे धिक्कार है २ कि तुझे इतना गर्व है तू दैत्यों के कुल में महाअधम है तू बलि का पुत्र और मेरा भक्त होकर ऐसी ख़राब बातें बकता है यह तेरा अहंकार वेगही मिट जावेगा हमारे समान कोई मनुष्य तेरे निकट आवेगा उसके साथ तू लड़के अपना अहंकार भूल जावेगा वह आकर तेरी भुजा काट डालेगा केवल हमारी इच्छा से तेरे प्राण बच जावेंगे मैं तुझको वह समय भी बताता हूं जब कि यह सब बातें प्रकट होंगी कि जब तुम्हारा केतु जिसका शिर मनुष्य के शीश के समान और मोर का स्वरूप है पवन बिन गिरपड़ेगा और नाना प्रकार के अशकुन प्रकट होंगे तब तुम निश्चय जानना कि अब वही समय आया है और युद्ध के निमित्त तत्पर होना यह कह शिवजी चुप हो गये और बाणासुर बहुत ही प्रसन्न हुआ और शिवकी बड़ी पूजा की फिर घर में जाकर अपनी स्त्री से सब हाल कह सुनाया उसकी स्त्री का नाम कन्दला था वह भी शिवजी की बड़ी भक्ता थी जब कि उसने सुना तो अति चिन्तित हुई और कहा कि यह क्या आनन्द का समय है बरन् बहुत बुरी बात हुई क्या तुम इस बात को नहीं समझे तुम तो सब तरह से नष्ट होगये क्या तुमको शिवजी से यही वर लेना उचित था तुम्हारी बुद्धि अधिक अहंकार से नष्ट होगई शिव सदा अहंकार को नष्ट करते हैं तुम्हारी सब भुजा कट जावेंगी तुम कभी हारे न थे पर अब अवश्य ही हारोगे यह शिवजी ने तुमको शाप दिया है वर नहीं दिया इससे उत्तम है

कि अब भी शिवजी को प्रसन्न करके उनकी इतनी सेवा करो कि तुम्हारा भला हो यह कहा और महादुःख से शिवजी को ध्यान में लाकर बाणासुर के चरणों पर गिर पड़ी तब आकाशवाणी हुई कि हे कन्दला ! तुम कुछ मन में खेद न करो उस समय शिवजी तुम्हारे सहायक होंगे और बाणासुर के गर्व को नष्ट करके उस पर कृपा करेंगे यह सुनकर कन्दला कुछ प्रसन्न हुई पर इस बात को बाणासुर ने कुछ न जाना वह घर से निकलकर बाहर आया और फिर अपने सभ्यों को इकट्ठाकर युद्ध के निमित्त सम्मति की और सब मिलकर बाट देखने लगे कि देखिये कब समय आता है कि जब युद्ध होगा ।

इक्यावनवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारदजी ! अब तुमको हम बाणासुर की कन्या अर्थात् ऊषा का चरित्र सुनाते हैं जो युद्ध का मूल है और जिसमें बाणासुर की भुजायें कटगईं यह सब लीला शिवजी की समझो जो शिवजी की इच्छा है वही होता है सो बाणासुर की कन्या जिसको गिरिजा ने वर दिया था कि तुमको पति मिलेगा वह एक दिन ऊषा तिथि अर्थात् वैशाखसुदी द्वादशी को शिवजी की पूजाकर अर्धरात्र को सोने लगी तब गिरिजा की इच्छा से अनिरुद्ध कृष्णचन्द्र के पोते ने पहुँचकर ऊषा के साथ भोग किया ऊषा रोने पीटने लगी और अनिरुद्ध गिरिजा के प्रभाव से तुरन्त मतलब करके अपने घर चला आया ऊषा मुरदे के समान होकर बहुत रोई और अपनी सखियों से यह सब हाल कह सुनाया और उसके मिलने की इच्छा करके अपनी सखियों से बड़ी प्रशंसा की और गिरिजा का ध्यान किया उस समय कुम्भाण्ड की पुत्री चित्ररेखा जो ऊषा की सखी थी उसने ऊषा को समझाया और पहिले जन्म का सब हाल कह सुनाया.

जिसको सुनकर ऊषा अति प्रसन्न हुई और अति विनय कर कहा कि जिस पति को गिरिजा ने कृपापूर्वक हमको रात्रि के समय दिखाया है उसको तुम छिपाकर मेरे पास लावो और मुझसे मिला दो यह बात तुमको कुछ कठिन नहीं है जिसने हमारे मन को छीन लिया है जो तुम उससे हमको न मिलावोगी तो मैं अवश्य ही मरजाऊँगी इसमें कुछ सन्देह न होगा और कहा कि तुम सब हमारी सखी इस बात को समझ लो कि जिस मनुष्य के मिलने से रात्रि के समय मुझको बहुत दुःख और सुख प्राप्त हुआ है जो वह मनुष्य न मिला तो मेरे मरने में कुछ संशय न जानना यह सत्य ही कहती हूं चित्ररेखा ने हँस कर कहा कि हम तुम्हारे सब दुःख दूर कर देंगी जिससे तुमको बड़ा आनन्द प्राप्त होगा जो वह तीनों भुवन में है तो तुमसे तुरन्त मिला दूंगी यह कहकर वह चित्ररेखा कपड़े पर सबके स्वरूप लिखती गई और आदि से अन्त तक जितने देवता आदि आकाश के निवासी थे सबका रूप देखा जब ऊषा ने उनमें से किसी को न पहिंचाना तो फिर वह मनुष्यों के रूप बना २ कर दिखलाने लगी जब चित्ररेखा यदुवंश के घराने को लिखने लगी और शूरसेन, वसुदेव, राम, कृष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध का चित्र लिखकर दिखाया तो ऊषा ने तुरन्त अनिरुद्ध का स्वरूप देख करके कहा कि यही है जिसने हमारा चित्त चुराया उसको युक्ति से लावो कि हमारा दुःख दूर होजावे चित्ररेखा ने यह जानकर कि यह कृष्ण के पोते अनिरुद्ध पर मोहित है शिवजी का ध्यान कर योगमाया की और ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी को कृष्ण के द्वार पर गई और योगमाया कर कृष्ण के मन्दिर में गई देखा कि अनिरुद्ध अपनी स्त्री के साथ मद्य पी रहे हैं और जिनकी किशोर अवस्था श्यामरूप महासुन्दर स्वरूप को

देखकर अपने तामसयोग को प्रकट करके अँधेरा कर दिया और अपने शिर पर शय्या को जिस पर अनिरुद्ध बैठे थे लेकर योग के कारण उड़ी और लाकर ऊषा के पास रख दिया और आश्चर्य कर ऊषा ने उसको अति गुप्त रीति से भीतर ले जाकर चाहा कि भोग विलास करूं उस समय यह वृत्तान्त द्वारपालों और रक्षकों ने जान लिया और अति आश्चर्य कर ऊषाके अपकर्म और छल पर पश्चात्ताप किया और ऊषा के घर के भीतर जाकर अनिरुद्ध को देखा कि वह तुरन्त भोग करना चाहता था यह देखा और तुरन्त बाणासुर के पास जा उनकी स्तुति कर कहा कि तुम ऐसे राजा तीनों लोक के हो जिससे ब्रह्मा भी डरते हैं हे स्वामी ! इस समय तेरी लड़की के घर में एक अकेला आदमी बैठा है तुम चलकर आप ही उसे देख लो जो उचित हो उसके लिये आज्ञा दो यह सुनकर बाणासुर अति दुःखी होकर क्रोधित हुआ और जाकर अनिरुद्ध को देखा और विचार किया कि यह मनुष्य कोई बड़ा वीर और हठयुद्ध करनेवाला दृढ़प्रण है और व्यभिचारी है यह महाकामी मूर्ख पापी किस युक्ति से यहां पहुँचा है इसने मेरे कुलधर्म को नष्ट कर दिया यह विचारकर अपने वीरों को आज्ञा दी कि तुम दया छोड़ इसको प्राण से मारडालो यह आज्ञा देकर उसने अनिरुद्ध को देखा और अनिरुद्ध का शरीर तेज से भरा हुआ देख बहुत सन्देह किया सो दश सहस्र सेना अनिरुद्ध के मारने को खड़ी हुई और छिंधि भिंदि नाद कर कर अनिरुद्ध को चारों ओर से घेर लिया अनिरुद्ध भी निर्भय होकर युद्ध के निमित्त खड़े हुये और एक परिघ हाथ में उठाकर तुरन्त द्वार की ओर चले और इतना उस सेना को मारा कि एक भी न बचा फिर और सेना जो आई उसको मारा फिर एक लाख वीर आकर और लड़ने

लगे उनको भी अनिरुद्ध ने भगा दिया यह दशा बाणासुर देख अपने रथ पर आरूढ़ हो आप ही युद्ध करने को तत्पर हुआ उसके रथ पर कुम्भाण्ड मन्त्री सारथी के बदले बैठा था अनिरुद्ध ने असि से सारथी समेत बाणासुर को दुःखी कर दिया तब बाणासुर ने अनिरुद्ध पर सांगी चलाई अनिरुद्ध सांगी को हाथ से पकड़कर उसी सांगी को बाणासुर के ऊपर चलाया ऐसा युद्ध देखकर दैत्य और देवता आश्चर्य में हुये निदान बाणासुर अनिरुद्ध को बड़ा बली समझ अन्तर्धान होगया और छललक्षिणी युद्ध करके अनिरुद्ध को बड़ा दुःख दिया और नागफाँस से अनिरुद्ध को बांधकर बहुत से दुर्वचन कहे फिर कुम्भाण्ड को आज्ञा दी कि तुरन्त इसका शिर काटडालो क्योंकि राजनीति की यही आज्ञा है कि इसने हमारे कुल में लाञ्छन लगाया जो अति पवित्र था इसके शरीर के खण्ड २ कर राक्षसों को खाने के लिये बांट दो याकि भरे हुये पानी के कुवें में डाल दो कि यह जीता न बचे इसका मार डालना ठीक है कुम्भाण्ड ने शिवजी का ध्यान करके बाणासुर से कहा कि यह बात ठीक नहीं है क्योंकि इसके वध करने से आत्मघात का पाप होगा तुम भली भांति समझो कि यह दशा तुम्हारी शिवजी की अप्रसन्नता से हुई है यह अनिरुद्ध कृष्ण का नाती शिवजी की कृपा से बड़ा बल रखता है इसी प्रकार कुम्भाण्ड ने बाणासुर को बहुत प्रकार से समझाकर क्रोध दूर किया फिर अनिरुद्ध को अच्छे उपदेश देकर भले प्रकार समझाया और कहा कि अब तुम बाणासुर का हाथ छोड़कर गुप्त कथन करो और कहो कि हम तुम से हार गये हमको प्राणदान दो अनिरुद्ध ने कहा कि हे मूर्ख! तू क्षात्रधर्म नहीं जानता क्षत्रियों को लड़ाई में सम्मुख होकर मरना आनन्द और मोक्ष देनेवाला है जो धर्म ही न रहा तो जीना किस

काम का है वह मनुष्य दोनों लोक में आनन्द नहीं उठा सक्ता ऐसे २ वचन सुनकर बाणासुर अतिक्रोधित हुआ और चाहा कि अनिरुद्ध का वध कर डालूं इस इच्छा से त्रिशूल उठाया तब आकाशवाणी हुई जिसको सबने अनिरुद्ध समेत सुना कि हे बाणासुर ! तू यह क्या करता है तू बलिका पुत्र शिवभक्त है यह बात अच्छी नहीं करता यह बालक मार डालने के योग्य नहीं इसके शिवजी रक्षक हैं शिवजी सबके स्वामी हैं जिनके अधीन तीनों लोक हैं वही शिवजी पालनेवाले और प्रलय करनेवाले हैं वही तीनों गुण अर्थात् ब्रह्मा विष्णु और हर हैं तुमको चाहिये कि ऐसे शिवजी की शक्तिसहित सर्वदा पूजन किया करो तब जो शिवजी कृपा करेंगे तो तुम्हारा गर्व नष्ट होगा यह आकाशवाणी सुनकर बाणासुर उस जगह से उठकर घर में गया और भोगविलास में कालक्षेप करने लगा अनिरुद्धने भी देवी का स्मरण किया और मनमें बड़ी स्तुति की सो श्रीमहाकालीजी प्रसन्न हुईं वह गिरिजा के समान एक शक्ति हैं और अनिरुद्ध को जो नागफाँस में बँधा हुआ था नागफाँस को जला डाला और पहिले के समान अनिरुद्ध को आनन्द देकर आप अन्तर्धान होगई अनिरुद्ध फिर भी ऊषा के समीप गये और जो मन में आया वह किया यह हम ने ऊषा चरित्र सुनाया ।

बावनवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि जब चित्ररेखा अनिरुद्ध को लेकर आकाश को चली तब अनिरुद्ध की स्त्री बड़े जोर से रोने लगी जिसको सब यदुवंशी और कृष्ण बलराम ने सुना और अनिरुद्ध को न देखकर अति चिन्तित हुये चार महीने तक उनको अनिरुद्ध का हाल कुछ मालूम न हुआ कि कहां गये कौन ले गया निदान शिवजी की आज्ञा से तुम हे नारदजी ! कृष्णजी के पास गये

और अनिरुद्ध का वृत्तान्त आदि से अन्त तक कहा कृष्ण और बलराम अति दुःखी हुये निदान राम और कृष्ण असंख्य वीरों की सेना साथ लेकर शोणितपुर को गये और गरुड़ भी श्रीकृष्णजी की सहायता के निमित्त आये और शोणितपुर को चारों ओर से घेर लिया और नाना प्रकार के उपद्रव मचाने लगे बाणासुर ऐसे उत्पात को न सहकर युद्ध की इच्छा से आया और रुद्र भी जिनकी रक्षा में शोणितपुर था बाणासुर के संयुक्त हुये हे नारद! उस समय बड़ाभारी प्रलय के समान युद्ध हुआ कि कृष्ण और रुद्र यह दोनों लड़ने लगे वीरभद्र प्रद्युम्न के साथ कोपकर्ण और कूष्माण्ड दोनों बलराम के साथ लड़नेलगे और आप बाणासुर सांगी लिये हुये लड़ने लगा और बाणासुर के पुत्र ने साम्ब के साथ युद्ध रचा नन्दीश्वर जो शिवजी के वाहन हैं गरुड़ के साथ लड़ने लगे इसी प्रकार सम्पूर्ण भट एक २ होकर युद्ध करने लगे ऐसा युद्ध देखने के लिये हम और सब देवता आदि आये शिवजी के गणों के साथ यदुवंशी पूर्णता से लड़े सब तरह से राम और कृष्ण और प्रद्युम्न दृढ़तापूर्वक युद्ध में स्थिर रहे कोई एक भी न हटा जहाँ एक ओर शिव और दूसरी ओर कृष्ण हैं वहां भागना किस तरह हो सक्ता है पर जब राम और कृष्ण ने बहुत बड़ी चढ़ाई करके शिवजी के गणों को दैत्यों समेत युद्धस्थान से मुँह फेर दिया और पीछे हटाकर गर्जने लगे तब शिवजी ने अति कोपित होकर केवल अपने नाद से परसेना को बहुत दुःख दिया शिवगण भी लौटकर लड़ने लगे कि कृष्ण अति कुपित होकर अति क्रोध से शिवजी के ऊपर अच्छे बाण छोड़नेलगे शिवजी ने सब बाण काटे कृष्ण ने ब्रह्मास्त्र शिवजी के ऊपर छोड़ा शिवजी ने ब्रह्मशर छोड़कर उसको व्यर्थ कर डाला इसी प्रकार जो बाण और शस्त्र कृष्ण ने

शिवजी के ऊपर चलाये वह कोई फलदायक न हुये शिवजी ने काट दिये और कृष्ण की सेना को डाट दिया किसी शस्त्र को न छोड़ा केवल शस्त्ररहित होकर कृष्ण की सब सेना को भगा दिया जिससे कृष्ण अति कोपित हुये और उन्होंने शीतज्वर को शिवजी के ऊपर छोड़ा जिससे सबके शरीर थरथराने लगे और बहुत विकल हुये शिवजी ने पित्तज्वर छोड़ा जिसने शीतज्वर का मुख मोड़ दिया शीतज्वर शिवजी के पास पहुँचा स्तुति की शरण में आया शिवजी ने दोनों ज्वरों से कहा कि जो तुम को स्मरण करे उसको न सताओ प्रसन्न रहो जाओ हमने तुम दोनों को अपना सेवक बना लिया जब कि कृष्ण ने शिवजी का यह चरित्र देखा तब दुःखी हुये आनन्द जाता रहा प्रद्युम्न और वीरभद्र ने बहुत समय तक युद्ध किया निदान वीरभद्र ने वही शक्ति प्रद्युम्न पर छोड़ दी जिसने तारक को मारा था प्रद्युम्न अति विकल हो युद्धस्थलको छोड़ भाग गये इसी प्रकार बलभद्र आदि सम्पूर्ण यादववंशी वीर युद्धस्थान से भाग गये तब गरुड़ ने अपने पंखों को फैलाकर बड़ा उपद्रव किया नन्दीश्वर बैल ने अपने सींगों से पंखों को छेद उठालिया सो बड़ी कठिनता से गरुड़ नन्दी से छूट भाग गये और युद्धस्थान छोड़ दिया कृष्ण अपनी सेना की यह दुर्दशा और उनका भागना देख चिन्तावान् हुये और दारुक अपने सारथी से कहा कि देखो हम बाणासुर की भुजा काटने आये थे क्योंकि आप शिवजी ने उनको यह शाप दिया था कि कृष्ण तेरी भुजा काटडालेंगे हमको अपनी भाग्य का बड़ा पश्चात्ताप है कि इस समय आप जिन्होंने शाप दिया था हमसे विरुद्ध हैं युद्ध करने पर खड़े हैं अपने वचन को झूठा करते हैं हमारी हीनता करते हैं न जानिये इनके मन में कैसी आई मुझे कई वचन शिवजी से कहने हैं तुम उनके निकट हमारा

रथ ले चलो हम उनको बाणासुर के शाप की बात स्मरण करा-देंगे कि शिवजी बाणासुर की सहायता न करें सो दारुक ने ऐसा ही किया कृष्ण ने पहुँचकर हाथ जोड़ शिवजी की स्तुति की शिर झुकाया अहंकार दूर किया शिवजी के शरणागत हुये और यह वचन कहे कि हे शिवजी ! तुम सबके स्वामी सबसे श्रेष्ठ हमको प्रसन्न करनेवाले हमारे कष्ट हरनेवाले सदा से रहे हम तुम्हारी आज्ञा से बाणासुर की भुजा काटने आये थे क्योंकि तुमने बाणासुर को यही शाप दिया था उस वचन का स्मरण कीजिये मुझे प्रसन्न कीजिये बाणासुर की रक्षा छोड़ दीजिये कि हमको हर प्रकार की सिद्धि और विजय का अवकाश मिले तुम्हारा वचन भी न टले शिवजी ने कहा हे कृष्ण ! तुम हमारे बड़े और श्रेष्ठ और राम के भक्त हो हमने तुमको अपने बराबर का पद दिया है तुम तो पूर्ण विष्णु के अवतार हो तुम्हारे काम हमको बहुत प्यारे हैं तुमने जो कुछ कि कहा सत्य है और हम भी भक्ति के आधीन हैं उस भक्ति के करनेवाले भक्त के आधीन होकर यह लीला करते हैं हमारे देखते २ बाणासुर की भुजा क्योंकर कटसक्ती हैं अब तुम जाकर हम पर जृम्भणास्त्र छोड़ना हम निद्रावश सो जावेंगे तब तुम अपना कार्य करना संसार में यश पाना यह सुन कृष्ण अपने स्थान पर आये और शिवजी पर उन्होंने जृम्भणास्त्र छोड़कर सुला दिया फिर बाणासुर की सेना को हिला दिया ।

तिरपनवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि जब बाणासुर ने अपनी सेना के बल की न्यूनता देखी तो क्रोधित हुआ और महानाद करते हुये श्रीकृष्ण महाराज के समीप आकर सामने हुआ और बहुत ही युद्ध किया सब शस्त्र चलाये कृष्ण ने उसके सब शस्त्र निष्फल कर

डाले और अपने शार्ङ्गधनुष् को चढ़ाया और बहुत ही बाण चलाये सो बाणासुर भी इनकी वीरता को मान गया और सब को निवारण किया कृष्ण को बाणों से छा लिया दोनों सेना युद्ध करनेलगीं जब कुम्भाण्ड यदुवंशी सेना को मारने लगा और उनको अपनी वाणों से दुःखी किया तब श्रीबलरामजी ने अपना हल मुशल हाथ में ले लिया और कुम्भाण्ड के भाल को हल से हिलाया कुम्भाण्ड ने बलराम को त्रिशूल मार धरती पर गिरा दिया फिर दोनों युद्ध करने लगे गरुड़ ने कृष्ण की इच्छा पाकर दोनों पङ्ख फैला दिये और असंख्य दैत्यों को गिरादिया यहांतक कि दैत्यों की सेना युद्धस्थान में रुक न सकी बाणासुर ने अपना त्रिशूल गरुड़ पर चलाया और धरती पर गिरा दिया जब गरुड़ सचेत हुआ युद्ध से भागगया फिर बाणासुर और कृष्ण इतना लड़े कि संसारभर में हाहाकार होगया बाणों की वर्षा से आकाश दिखाई न देता था देवता भयभीत और निराश हुये कहने लगे कि न जानिये यह क्या होता है शिवजी के चरित को न जाना उनकी लीला न पहिचानी कृष्ण ने बाणासुर के रथ के घोड़े मारडाले और वीरों के समान गर्जने लगे फिर एक बाण बाणासुर के हृदय में मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया जब बाणासुर चेत में आया तो कृष्ण पर त्रिशूल चलाया कृष्ण ने त्रिशूल और गदा काट डाली और उसको अपने बाणों से पाट दिया बाणासुर ने कृष्ण के धनुष् को निष्फल कर दिया और कृष्ण ने भी बाणासुर के सब शस्त्र व्यर्थ करडाले सेना मारडाली और बड़ाभारी युद्ध किया और शिवजी का शाप स्मरण किया और शिवजी से बहुत बल पाकर बाणासुर को पकड़ लिया और आरी से उसकी सब भुजा काटडालीं केवल चार भुजा रहने दीं बाणासुर को शिवजी

की कृपा से कुछ कष्ट न पहुँचा तुरन्त ही घाव भर गये उस समय कृष्ण को इतना कोप हुआ कि वीर भाव से चाहा कि बाणासुर का शिर धड़ से जुदा कर डालूं तो तुरन्त शिवजी ने जो सो रहे थे कृष्ण की ओर देख दिया और कुछ तिरछी दृष्टि से अपनी भुजा ऊंचीकर क्रोधपूर्वक कहा कि हे कृष्ण! जो तुमको हमने आज्ञा दी थी वह तुम सब कर चुके अब चक्र न चलाना और बाणासुर का शीश न काटना यह सुदर्शन चक्र हमने तुमको दिया था हमारे भक्तों पर यह चक्र नहीं चल सक्ता देखो तारक और रावण पर यह तुम्हारा चक्र न चला अब मत लड़ो हमारे भक्त पर इतना क्रोध मत दिखाओ अब इसके साथ प्रीतिकर अनिरुद्ध को ऊषा सहित अपने घर लेजाओ कृष्ण ने स्वीकार किया शिवजी ने बाणासुर को बुलवाकर कृष्ण से प्रीति करा दी बाणासुर ने ऊषा और अनिरुद्ध को दान मान आदि से संतुष्टकर कृष्ण को दे दिया और सब रीतों के पूरने के उपरान्त कृष्ण विदा हुये और अपने नगर में पहुँचे बाणासुर भी गण बनकर दैत्यों से देवता हुआ बाणासुर ने देवताओं की बड़ी सेवा की जिससे शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे ऐसी गति दी।

चौवनवां अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि जब श्रीकृष्ण अपने कुल समेत अनिरुद्ध को साथ लिये हुये द्वारका चले गये तो बाणासुर ने क्या किया और शिवजी ने क्योंकर बाणासुर को अपना गण बनाया ब्रह्माजी बोले कि श्रीकृष्णचन्द्र के चले जाने के उपरान्त बाणासुर अपनी मूर्खता पर बहुत पछताया और अपने अहंकार पर धिक्कार किया तब नन्दीश्वर ने उसको बहुत समझाया और कहा कि जो तुमने अपना अहंकार शिवजी को दिखाया

उसीका यह फल है शिवजी तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे वे भक्तवत्सल हैं तुम इतनी चिन्ता मत करो शिवजी की इच्छा से जो कार्य हो उसी में प्रसन्न हो गर्व छोड़ शिवजी की सेवा और ध्यान में लगे रहो ताण्डव नृत्य करके शिवजी को रिझाओ यह वचन नन्दीश्वर के सुनकर बाणासुर अति प्रसन्न हुआ और शिवजी के समीप जा रोने लगा और अहंकार दूरकर स्तुति करने लगा सैकड़ों प्रकार से प्रणामकर ताण्डवनृत्य करने लगा और उसने पूर्ण रीति से पदगत प्रत्यालीढ़ प्रमुखगत मदनबाणगत सरकम्पा आदि सब प्रकार की गतें और भाव दिखाये जिससे शिवजी प्रसन्न हुये जो कि शिवजी को राग और नाच प्यारा है तो कृपाकर बाणासुर से कहा कि तेरे नाच राग और प्रेम से हम प्रसन्न हुये वरदान मांग तू हमको बहुत प्रिय है इससे हमने इस प्रकार की लीला करके तेरे गर्व को नष्ट कर दिया है बाणासुर ने प्रसन्नतापूर्वक शिवजी का वचन सुन हाथ जोड़ विनती की कि हे शिवजी ! मेरा शरीर दैत्यभाव से छूटकर मैं निर्भय आपके गणों में गिना जाऊं और जो मेरी पुत्री ऊषा से लड़का उपजे उसको हमारा राज्य शोणितपुर कृपा करो वह किसी समय देवताओं से शत्रुता न करे और मेरे कुल से दैत्यपन उठ जावे और यह भी मैं आपसे मांगता हूं कि मुझको आपकी नवधाभक्ति प्राप्त हो तुम्हारे भक्तों में से मैं विशेष प्रीति करूं सब जीवों पर कृपा रक्खूं तुम्हारी माया मुझ पर कुछ फल न करे इसके सिवाय और जो कुछ उचित हो मुझको वरदान दीजिये आप हर प्रकार से मुझे अपनी शरण में लीजिये इतना वर मांग बाणासुर शिवजी के चरणों पर गिर पड़ा और प्रेम की अधिकता से आंखों से अश्रु की धारा बह चली और मारे प्रीति के जिह्वा कुछ कह न सकी यह दशा बाणासुर की

देखकर शिवजी ने अतिप्रसन्न होकर बाणासुर को धरती से उठालिया और हँसकर कहने लगे कि हे बाणासुर! तुम हमारे बड़े भक्त हो हमने तुमको अपना कर लिया जो वर कि तुमने मांगा वह सब हम तुमको देते हैं और तुम हमारे गणों के राजा होकर महाकाल के नाम से प्रसिद्ध हो किसी से परास्त न होगे हमारी कृपा से सब देवता तुम्हारे सेवक होंगे तुम पर माया अपना फल न करेगी और जो मुझको बहुत प्रिय हैं वह तुमसे बहुत प्यार रक्खेंगे यह कह बाणासुर को दया की दृष्टि से देखा फिर अपने दोनों हाथ बाणासुर के ऊपर फेर दिये तब बाणासुर ने शिवजी की बड़ी स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी तो अन्तर्धान हुये और बाणासुर महाकाल गणपति होकर शिवजी की सेवा में पहुँचा।

पचपनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम नागासुर अर्थात् गज के वध का वर्णन करते हैं कि जिस तरह शिवजी ने उसको अपने त्रिशूल से वधकर अपना गण बनाया कि जब शिवजी की आज्ञा से जगदम्बा ने विष्णु और हम पर कृपा करके देवताओं और मुनीश्वरों आदि के उपकार के निमित्त महिषासुर का नाश किया तब उसके पुत्र गजासुर नामी ने बहुत दुःखी होकर अपने पिता के वध को स्मरणकर चाहा कि देवताओं से बदला लेवें इसी इच्छा से वह तप के निमित्त वन में चला गया और हमारे प्रसन्न होने के लिये उसने अति परिश्रम के साथ तप किया उसके तप करने की यह इच्छा थी कि जो स्त्री या पुरुष काम-जित् नहीं वे मुझे न मार सकें सो वह गजासुर हिमनग द्रोणी में स्थित होकर ऊर्ध्वबाहु किये आकाश में दृष्टि लगाये अँगूठे के बल खड़ा हुआ इसी प्रकार वह बहुत वर्षोंतक खड़ा रहा जिस

से उसमें तप का ऐसा तेज झलकने लगा कि सूर्य भी उसके सामने कान्तिहीन होगया जब गजासुर का तप पूर्ण होगया तो उसके शरीर से अग्नि की ज्वाला उठी जो अपने तेज से संसार भर को जलाने लगी धरती पर दिक्पालों समेत जलने लगी समुद्र नदी सहित घबड़ाये ग्रह नक्षत्र आदि गिरने लगे महाउल्कापात हुआ दशों दिशा जलने लगीं सो देवता मुनि आदि महादुःखी हो मेरे समीप पहुँच गजासुर के तप का हाल कहने लगे कि तुम कृपा करके गजासुर के पास जाकर वरदान दो कि हम ऐसे दुःख से छूटें हम आपकी शरण में आये हैं सो हम भृगु और दक्ष आदि अपने पुत्रों को साथ लिये हुये गजासुर के तप के स्थानपर गये और उसके ऐसे तपको देखकर सब आश्चर्य में हुये हमने कहा कि हे गजासुर ! हम प्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह वर लो तो गजासुर ने नेत्र खोल प्रणाम किया फिर स्तुतिकर कहा कि जो पुरुष अथवा स्त्री कामदेव के आधीन हैं वह मुझको किसी दशा में न मारसकें तीनों लोक में मुझको कोई न जीत सके न मुझपर कोई शस्त्र चलाने के योग्य हो मैं तीनों लोक से अधिक बलवान् तीनों भवन को अपने आधीन करूं हमको तीनों लोक का सुख प्राप्त रहे यह सुन हमने कहा कि अच्छा यह वर हमने तुमको दिया यह कहकर हम चले गये और गजासुर ने अपने घर पहुँच बहुत सेना इकट्ठी कर तीनों भुवन को जीतलिया और निष्कण्टक राज्य करता रहा और देवताआदि को अपने आधीनकर उनके सब रत्न छीन लिये प्रजा का पालन भली भांति करता था इसी प्रकार वह बहुत दिनों तक राज्य करता रहा निदान वह धर्म के विरुद्ध पाप करने लगा और ब्राह्मणों को नाना प्रकार के दुःख देने लगा और मनुष्यों किन्तु देवताओं से भी सेवा कराने लगा और तपस्वियों,

योगियों और धर्मवानों को बहुत सताने लगा क्योंकि उसको अपने पिता के वध का स्मरण सदा बना रहता था अकस्मात् एक दिन गजासुर आनन्दवन में जो शिवजी की राजधानी है बड़े अहंकारपूर्वक पहुँचा उसके जाने से काशीवासी अति भयवान् हो शिवलोक में जाकर शिवजी की स्तुति करने लगे और जो २ उत्पात गजासुर ने काशी में किये थे वह सब विस्तार से वर्णन किये और कहा कि गजासुर तीनोंलोक को जीतकर काशी में अपना चरण रक्खा है उसने सबको अपने अन्याय से दुःखी किया है तुम्हारे सिवाय उसको और कोई विजय करनेवाला नहीं वह बड़ा बलवान् हृष्ट पुष्ट और शरीरधारी है हाथी की गति चलता है जिसके चलने से पर्वत चलते हैं और वृक्ष टूटकर गिर पड़ते हैं और जिसकी आज्ञा से बादल आकाश से उड़जाते हैं उसके भय से समुद्र सूख जाते हैं उसके शरीर की लम्बाई सौ हजार योजन है और उतना ही चौड़ान है और वह चौकोण बना हुआ है और नाना प्रकार की माया करता है वह इस समय वाराणसी क्षेत्र में सबको कष्ट दे रहा है जोकि तुम्हारे भक्तों ने उसके हाथ से बड़ा कष्ट पाया है इसलिये तुम दैत्य का वधकर सबको प्रसन्न करो काशी सदा आपसे रक्षित रही है यह सुन शिवजी तुरन्त त्रिशूल लेकर गजासुर के वध के लिये काशीजी में पहुँचे शिवजी ने ऐसा भयंकर नाद किया कि दैत्यसेना में बड़ा हाहाकार मचा तब काशीवासी जय २ शब्द कह प्रसन्न हुये जब गजासुर ने शिवजी को त्रिशूल लिये हुये देखा तो शिवजी को धमकाकर बहुत गर्जा शिवजी और गजासुर लड़ने लगे उस समय विचित्र युद्ध हुआ कि गजासुर ने जो २ शस्त्र शिवजी पर चलाये शिवजी ने सबको काटकर ऐसा भयंकररूप धारा

जिसको देखकर सब दैत्य युद्धस्थान छोड़ भाग गये यह दशा देखकर गजासुर बड़ी तलवार अपने हाथ में लेकर शिवजी के मारने को चला और कहा कि अब तुमको जाने नहीं देता शिवजी के गण भागकर शिवजी के शरणागत हुये शिवजी ने गणों को अभयकर इच्छा की कि अब गजासुर का वध करना चाहिये और इस विचार से कि यह किसी और के हाथ से न मारा जावेगा इसलिये तुरन्त अपने त्रिशूल से तृण के समान गजासुर के शिर को छेद लिया त्रिशूल के लगने से गजासुर पवित्र होगया और दैत्यों के मार्ग से च्युत हुआ और अपने को छत्र के समान शिव के शीश पर देख बड़ी प्रसन्नतापूर्वक शिवजी से विनती की कि हे शिवजी! तुम परब्रह्म हो मेरे बड़े भाग्य हैं जो आपके हाथ से मेरी मृत्यु हुई और सब पापों से शुद्ध होगया मेरी यह विनय है कि आप कृपा करके मुझे परमपद कृपा करें आप सबसे श्रेष्ठ मृत्युञ्जय हैं संसार में एक न एक दिन सब मरेंगे ऐसी मृत्यु जो मुझको मिली है उसको वेदों ने बहुत कठिन कहा है मुझे अब जीने की इच्छा नहीं है इसलिये आप मुझको मारडालें ऐसे सात्त्विकी वचन सुनकर शिवजी ने कहा कि हम तुम्हारे ऐसे वचनों से प्रसन्न हुये वर मांगो गजासुर ने कहा कि जो आप इतने प्रसन्न हैं तो मेरी यह इच्छा है कि आप मेरे शरीर के चर्म का प्रतिदिन धारण किया करो और तुम्हारे त्रिशूल से हरदिन मेरे शरीर को स्पर्शन हुआ करे और कृत्तिवासा के नाम से प्रसिद्ध हो जिसको मनुष्य मुख पर लाते ही अपना मनोरथ पावें यह वचन गजासुर का सुनकर शिवजी ने कहा कि 'तथास्तु' फिर शिवजी बोले कि तेरा यह शरीर हमारा लिङ्ग होकर कृत्तिवासेश्वर के नाम से ख्यात हो जिसके केवल दर्शन ही से मोक्ष प्राप्त हो और दर्शन करनेवाले के

सर्व पाप तुरन्त नष्ट होजावें जितने हमारे लिङ्ग काशी में हैं उन सबमें यह लिङ्ग सबसे बड़ा मणि के समान हो यह कहकर शिवजी ने गजासुर को परमगति दी उस स्थान पर बड़ा उत्सव हुआ फिर हम सब विदा होकर अपने अपने लोक को गये यह शिवजी का चरित्र गजनाशन दोनों लोक में आवागमन से छुड़ा देता है जो इसको सुने सुनावे उसको शिवजी अपना करलेते हैं।

छप्पनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम नृसिंहावतार का वर्णन सुनाते हैं कि जिस तरह पर विष्णुजी ने नृसिंहावतार धारण किया और दिति के दोनों पुत्रों को देवताओं के आनन्द देने के लिये वध किया शिवजी का कैसा अद्भुत चरित्र है कि जब विष्णुजी ने नृसिंहरूप धारणकर दिति के दोनों पुत्रों को नष्ट किया तब दिति ने बड़ा दुःख किया और महाशोकवती हुई तब दुन्दुभि ने जो दिति का भाई था उसे बहुत समझाया पर दिति के शान्त न होने से वह ऐसा कष्ट न सह सका इससे उसने विचार किया कि किसी प्रकार देवताओं को कष्ट देना उचित है क्योंकि उन्होंने विष्णुजी से हमारे बहनोई को मरवा डाला है वे किसके बल पर भरोसा रखते हैं किसके कारण अमर हैं मुझको कौन उपाय करना चाहिये जिससे वे दुःख पावें निदान बहुत शोच विचार कर उसने इस बात पर निश्चय किया कि ब्राह्मण वेद से अपनी रक्षा करते हैं और देवता ब्राह्मणों से जब ब्राह्मण नष्ट होजावें तब वेद भी विनाश को प्राप्त होंगे जब वेद नष्ट हों तो आप ही देवता भी निर्बल होंगे तब सबको जीतकर देवताओं का राज्य हम भोगेंगे और जिस प्रकार से ब्राह्मण संसार में बड़े हैं कि वह वेद के मार्ग पर चलते हैं उसी प्रकार काशी में ब्राह्मणों का अच्छा घर है इसलिये पहिले काशी में जाकर ब्राह्मणों को

मारना चाहिये फिर और स्थानों पर पहुँचकर सबको खाजाऊंगा यह विचार दुन्दुभि काशी में गया और हजारों ब्राह्मणों का वध कर डाला कि जब ब्राह्मण कुश लेने के निमित्त वन में जाते थे वह तुरन्त उसी स्थान पर पहुँचकर ब्राह्मणों को खाजाता था यहां तक कि कोई हड्डी भी न छोड़ता था वह बड़ी माया करता जाता था वन में पशु नदी में मगर और पृथ्वी में मनुष्य बनकर ब्राह्मणों को खा डालता था जब कि दोपहर के समय मुनीश्वर योग और ध्यान में लगते थे और रात्रि को भी उन्हींके समान अपना स्वरूप रच चख जाता उसने अपना स्वरूप बना बनाकर असंख्य मुनीश्वरों को खाया और किसी ने इस बात को न जाना यहां तक कि वह हड्डी भी नहीं रखता था एक दिन रात्रि के समय एक शिवभक्त शिवजी की पूजा करता था जब वह ध्यान लगाकर शिवजी का स्वरूप देखने लगा तब दुन्दुभि ने सिंह का स्वरूप बनाकर चाहा कि उसको खाजाऊं पर अपने में इतना बल न देखा कि पर्वत के समान बड़ा होकर उसको खाना तो क्या वरन् उसको पकड़ न सका तब श्रीशिवजी प्रकट हुये उसने चाहा कि शिवजी को भी ग्रास कर जाऊँ और शिवजी की ओर चला शिवजी महाकोपित हुये उसको शिवजी ने पकड़ लिया और हाथों से मार मारकर मार डाला उस शिवभक्त के प्राण बच गये नेत्र खोल शिवजी के दर्शन पाये उस समय सब काशीवासी इकट्ठा हुये और दुन्दुभि को जो भयङ्कर रूप से पड़ा था देखकर प्रसन्न हुये क्योंकि उस समय तक ब्राह्मणों के गुप्त होजाने से काशी के लोग आश्चर्य में थे ब्राह्मणों ने मिलकर शिवजी की स्तुति की और विनय की कि इसी स्वरूप में आप यहीं स्थित रहकर हर व्याघ्र के नाम से प्रसिद्ध होवें अपनी नगरी काशी की रक्षा करें यह सबसे श्रेष्ठ स्थान होगया क्योंकि यहां आप प्रकट हुये हैं

तुम्हारे दर्शन से हम अतिप्रसन्न हुये यहां आकर हमारी रक्षा करो शत्रुओं का विनाश करो यह सुनकर शिवजी 'तथास्तु' कहकर बोले कि जो निश्चयपूर्वक हमारे रूप को देखेगा उसके सब दुःख दूर करूंगा और उसको दोनों लोक में बड़ा सुख कृपा किया जावेगा इस हमारे चरित्र का स्मरणकर जो युद्ध के निमित्त जावेगा उसको निस्सन्देह विजय प्राप्त होगी तब हम और विष्णुजी सब देवताओं समेत आकर शिवजी की स्तुति करने लगे फिर विनय की कि आपने दुन्दुभि को मारकर हम सबको तीनों भुवन समेत रख लिया हम पर कृपा किया करो हम आपके सेवक और आप हमारे स्वामी हैं यह सुनकर शिवजी तुरन्त उसी लिङ्ग में प्रवेशकर अन्तर्धान हुये और विष्णु और हम सब देवताओं और ब्राह्मणों समेत अपने अपने स्थान को गये।

सत्तावनवां अध्याय।

इतना कह फिर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! किसी समय में उत्पल और विदल दो दैत्य बड़े बलवान् उपजे वे दोनों वन में जाकर बहुत वर्षों तक कठिन तप करते रहे और हमारी भक्ति में उन्होंने एक ही पाँव से खड़े होकर बड़ा कालक्षेप किया सो हम प्रसन्न होकर उनके वर देने को गये और कहा कि वर मांगो तब दोनों भाई कहने लगे कि हम किसी मनुष्य के हाथ से न मारे जावें और सबसे अधिक बलवान् रहैं हमने शिवजी का स्मरणकर कहा कि ऐसा ही होगा सो वह अपने २ स्थानों को चले गये उन्होंने तीनों लोक को जीत लिया वे हर प्रकार देवताओं को दुःख देने लगे उनके अधिकार धन और हर प्रकार की वस्तु बढ़ गई देवता और मुनि दुःखी होकर हमारी शरण में आये और सर्व वृत्तान्त कहा हमने कहा कि वे तो हमारे वरदान से मारे जाने के योग्य नहीं केवल शिवजी के हाथ से मरेंगे इस

से तुम शिवजी का ध्यान करो उनकी कृपा से तुम्हारा दुःख दूर होगा सो देवता आदि बिदा हुये कुछ दिनों के पीछे तुम उन्हीं दैत्यों के समीप गये और तुमने उनकी बहुत प्रशंसाकर उनकी सामग्री को भी बहुत सराहा और फिर तुम गिरिजा की प्रशंसा करने लगे और तुम बहुत गिरिजा की सुन्दरता की प्रशंसा कर बिदा हो चले आये दोनों दैत्यों ने गिरिजा की इतनी प्रशंसा सुनकर चाहा कि किसी ढब से गिरिजा को छीन लावें और बहुत समय तक इसी विचार में रहे कि कब गिरिजा हमारे हाथ में आवेगी यह सब वृत्तान्त शिवजी जान गये एक दिन शिवजी ने एक विचित्र लीला रच आप तो गणों के साथ बाजी खेलने लगे और गिरिजाजी ने अपनी सखियों के साथ इतना खेल किया कि जो सबके मन भाया अकस्मात् मृत्यु के पञ्जे में फँसे हुये दोनों दैत्यों ने आकाशमार्ग से आकर गिरिजाजी को खेल करते देखा और तुरन्त विमान उतार गणों के स्वरूप से गिरिजाजी के सामने गये और इच्छा की कि शिवा को ले भागें यह दशा देख शिवजी ने गिरिजा से युक्तिपूर्वक कहा कि यह तुम्हारे गण नहीं वरन् दैत्य हैं यह किसी और पुरुष के हाथ से मारे नहीं जासक्के इनको तुम्हीं वध करो यह शिवजी की सैन समझकर गिरिजा ने चाहा कि दोनों का बिनाश करूं सो गिरिजा ने युक्ति से अपने गेंद को उन दोनों के ऊपर फेंक दिया वे देर तक घूमते रहे अन्त में पृथ्वी पर गिरकर मर गये उस समय विष्णु और हम और सब देवताओं ने आकर उस स्थान पर जहां ज्येष्ठेश्वर उपलिङ्ग है शिवजी की और गिरिजा की स्तुति की और विनय की कि आप भक्तों के निमित्त अवतार धारण किया करते हैं जैसा कि इस समय भी गयन्दकेशलिङ्ग आपका प्रकट हुआ निदान शिवजी से बिदा हो सब अपने २ स्थानों को चले गये

और काशीवासी भी बिदा हुये और वह शिवजी का लिङ्ग उसी स्थान पर स्थित रहा जिसकी सेवा से दोनों लोक में असंख्य आनन्द मिलता है वह लिङ्ग कुण्डलेश के नाम से प्रसिद्ध है हे नारद ! यह चरित्र शिवजी का जो हमने तुमको सुनाया बड़ा सुखदायक है जो कोई इसको सुने सुनावेगा वह दोनों लोक में बड़ा ही आनन्द पावेगा यह युद्धखण्ड जो हमने तुमको सुनाया उसके सुनने और पढ़ने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं कभी भी तीनों व्याधि सामने न आवें और असंख्य द्रव्य धन प्राप्त हो शत्रु भी कभी बलवान् न हो और मोक्ष पाकर आवागमन से छूटे।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसंवादे पञ्चमखण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥



ॐ नमः शिवाय।

शिवपुराण भाषा

—⊰:०:⊱—

छठा खण्ड

पहिला अध्याय।

इतनी कथा सुनाकर श्रीसूतजी शौनकादि मुनियों से बोले कि हे तापसो! जब ब्रह्माजी कहचुके तो नारद मुनि ने सन्देह-युक्त होकर फिर पूछा कि हे पिता! आपने अन्धकासुर की कथा कही पर मुझे उसमें कुछ संशय उपजा है कृपा करके आप उसको निवृत्त करें कि शिवजी मन्दराचल को कैलास छोड़कर कब गये कृपा करके आप इस कथा को विस्तार से वर्णन करें ब्रह्माजी ने नारद की बहुत सराहना कर कहा कि पूर्व समय में एक दिन शिव जो कैलास के महाराजा हैं विश्वेश्वरपुरी को गये साथ में श्रीजगदम्बा गिरिजाजी महाराणी और बहुत गण भी थे सो विष्णु और हम भी देवता और अपने कुल-परिवार और गणों समेत मुक्तिपुरी में शिवजी के समीप गये और इन्द्र, देवता, मुनि, सिद्ध, अहीश आदि भी सब विद्यमान हुये उस स्थान पर शिवजी के तेज और सभा के शृङ्गार को हम कहां तक वर्णन करें अकथ्य है निदान शिवजी हम सबों को साथ लिये हुये विश्वनाथ के समीप पहुँचे पहिले मणि-कर्णिका में स्नानकर फिर विश्वनाथजी के दर्शन किये और अतिप्रेम से विश्वनाथजी की पूजाकर शिवजी अति प्रसन्न हुये फिर गिरिजा ने भी विश्वनाथ की पूजा की फिर गणों

ने विश्वनाथ के पूजन में अपना प्रेम दिखाया और बड़ी स्तुति की फिर विष्णु हम फिर सब देवता, मुनि, सिद्ध आदि विश्वनाथजी की पूजाकर स्तुति करते रहे जब कि कैलास-वासी शिवजी को ऐसी लीला करते विश्वनाथजी ने देखा तो विश्वनाथ प्रसन्न होकर दोनों भुजा फैलाकर गिरिजापति से मिले और प्रेम की अधिकता से आंसू बहे कुशल प्रश्न और अन्य संसारी रीतों के पूछने के उपरान्त विश्वनाथजी ने कहा कि हे गिरिजापति, चन्द्रभाल ! हम तुम एक ही रूप हैं कुछ किसी प्रकार का अन्तर नहीं है संसार के उपकार निमित्त तुमने सगुण रूप धारण किया है हम पर तुम्हारी बड़ी अनुग्रह हुई जो आप यहां आये अब जो आज्ञा हो कहिये यह सुन गिरिजा-पति शिवजी ने कहा कि हे विश्वनाथ ! हम और तुम किसी प्रकार से दो और जुदा नहीं हैं तुम तो तीनोंलोक के स्वामी हो मुझको आज्ञा दो और आप इसी स्थान पर स्थित रहकर संसार का राज्यकर तीनों लोक का पालन कीजिये यह सुन विश्वनाथजी हँसकर बोले कि तुम तो पूर्णरूप से शिव ब्रह्म अनादि और आदि अन्त से रहित हो इसी स्थान पर अपनी राजधानी नियत कर अपने गणों और गिरिजा समेत रहो और कुछ दिनोंतक कैलास के समान देवताओं और मुनीश्वरों को लिये हुये यहां स्थित रहकर भरतखण्ड को कृतार्थ करदो और संसारी मनुष्यों के समान अनुग्रहकर शत्रुओं का नाश करो जितना कि तुम कैलास को प्रिय जानते हो उसी प्रकार इस स्थान को भी प्रिय जानकर स्थित रहो जो कोई इस पुरी में रहे उसको मोक्ष दो आपकी आज्ञा में तीनों लोक हैं आप से विरुद्ध होकर कहीं किसी का ठिकाना नहीं आप सबसे श्रेष्ठ और स्वामी हैं आपके सेवक तीनों लोक हैं विष्णु और ब्रह्मा

भी तुम्हारे अधीन हैं उन्होंने तुम्हारी ही सेवा से ऐसे २ अधिकार पाये हैं और विष्णु और ब्रह्मा की रक्षा तुम्हारे अधीन है जब कि इनको कोई दुःख पड़े तब आपको उनकी सहायता करनी उचित है ब्रह्मा सब सृष्टि उपजाते हैं विष्णु पालते हैं इन्द्र इन्हीं दोनों की आज्ञा से राज्य करते हैं इसलिये संसार के उपकार के निमित्त इनके कार्य किया करना जो कोई काम इनसे न बन पड़े उसके पूरे करने में अपना साहस अवश्य करना ऐसे वचन विश्वनाथजी के सुनकर गिरिजापति बोले कि हे देवताओं के देवता, महादेव! तुम परब्रह्म हो काल हो जैसी आज्ञा आपने मुझे दी है उसका पालन करूंगा यद्यपि कैलास पर्वत जहां हमारे नौकर चाकर हैं हमको प्रिय है पर हमको काशी कैलास से भी अधिक प्यारी है हम काशी में रहेंगे यह सुन विश्वनाथजी अन्तर्धान होगये और सदाशिव के पूर्णांश से गुप्त होकर विश्वनाथ उसी स्थान पर रहे जो मनुष्य वहां मरता है उसको तारकमन्त्र देकर मुक्ति कृपा करते हैं और कैलासनाथ गिरिजापति भी गिरिजा समेत उसी स्थान पर स्थित हुये इसी से काशी बड़ी सिद्धिपीठ हुई जहां जीव जप, तप, संयम और भक्ति बिना मुक्ति पाते हैं वह काशी तीनोंलोक से श्रेष्ठ और ब्रह्मज्ञानक्षेत्र के नाम से तीनों लोक में प्रसिद्ध है वहां शिवजी की सगुण निर्गुण दोनों मूर्ति दयाभाव से अपनी सभा समेत विराजमान हैं सो हम विष्णु, देवता, मुनि, सिद्ध, नाग, देवताओं समेत उन्हीं दोनों मूर्तियों की सेवा करते हैं और स्तुतिकर शीश झुकाते हैं जिस तरह से कि काशी में गिरिजापति शिवजी ने राज्य किया उस कथा को हम वर्णन करते हैं कि विश्वनाथ की आज्ञा पाकर गिरिजापति शिवजी काशी में स्थित हुये और हर प्रकार से मनुष्यों के कष्ट हरे और काशी को अपनी राजधानी बनाया जो बड़ी मुक्ति

देनेवाली है गिरिजा भी उसी काशीस्थान में रहीं जो अन्नपूर्णेश्वरी देवी के नाम से प्रसिद्ध हुईं इसी से काशी में कोई भूखा नहीं रहता वे अपनी प्रजा के सब मनोरथ पूरे करती हैं और जो शिवजी ने अपनी एक मूर्ति उपजाई थी जिसका भैरव नाम है उसने हमारा पांचवां शिर काट डाला और त्रिशूल को हाथ से लेकर बड़ा नाद किया मैंने उस मुख से शिवजी की निन्दा की थी इसी से भैरव ने शिवजी की आज्ञा से प्रकट होकर हमारा शीश काटडाला था सो भैरव को हमारे शिर काटने से चाण्डाली हत्या लगी थी इससे वे संसार भर में फिरते रहे जब कि वे काशीजी में आये तो तुरन्त उनकी हत्या जाती रही जहां पर कि वह हमारा शीश गिराया उस स्थान पर शिवजी ने बड़ा नृत्य किया वह बड़ा तीर्थस्थल होगया और कपालमोचन के नाम से ख्यात हुआ वह तीर्थ सर्वपापों को नष्ट करता है सो भैरव जो शिवजी ही हैं जिनका ऊपर वर्णन किया गया तो शिवजी ने इन्हीं भैरव को कोतवाली का पद दिया और कहा कि तुम्हारा पाप नाश होगया यह लीला हमने इसलिये कही कि संसार में फिर ऐसा कोई कर्म न करे तुम काशीजी की रक्षा करते रहो पापियों को दण्ड दिया करो और सब प्रजा को कृतार्थ करो यद्यपि भैरव का चरित्र बहुत बड़ा है पर विस्तारभय से कहा नहीं गया पर जब भैरव की उत्पत्ति और अवतार का वर्णन करेंगे वहां उनका वर्णन विस्तार से किया जावेगा।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि एक दिन गिरिजापति गणों को साथ लेकर नन्दीश्वर पर आरूढ़ और गिरिजा को भी बैल पर साथ लिये आनन्दवन के देखने को चले और आनन्दवन में पहुँचकर गिरिजा से उस क्षेत्र की लीला कह उसकी स्तुति करते विचरने

लगे उस क्षेत्र की प्रशंसा कौन जिह्वा से होसक्री है उसमें नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प जैसे मन्दार, कनैर, चम्पा, केतकी, अनार, चमेली, मालती, कुन्द, मौलसिरी, जाही, जुही, कमल जिनमें भौंरे अन्धे होकर लिपटते थे खिले हुये थे और उत्तमोत्तम ताल तमाल आदि वृक्षों पर पक्षी मधुर स्वर से गान करते तीनों प्रकार की पवन चलती मुनीश्वर नदी किनारे अपना नियम करते सिंह आदि वैरभाव छोड़ अन्य जीवों को कुछ दुःख नहीं देते थे ऐसा उत्तम वन देखकर गिरिजापति अति प्रसन्न हुये और माली को बुलाया और उसको पारितोषिकादि दे कृतार्थ कर दिया फिर वन के भीतर पैठे और गिरिजा से कहा कि जिस तरह हम तुमको चाहते हैं उसी तरह यह काशी हमको प्रिय है उसी प्रकार यह आनन्द-वन हमको प्यारा है जिसमें मरने से मोक्ष प्राप्त होती है वरन् यह ब्रह्मज्ञान का क्षेत्र है यहां मरकर तुरन्त भक्तजन आप शिवजी होजाते हैं यह आनन्दवन हमको प्राण के समान प्रिय है इसके रहनेवाले सदा प्रसन्न हैं यह गिरिजा से कह शिव आगे चले देखा कि आनन्दवन में हरिकेश अतिप्रेम से तप कर रहे हैं और अशोकवृक्ष के नीचे बैठे हुये शिवशिव कह रहे हैं उनमें केवल त्वचा और नाड़ियां दिखाई देती हैं मांस का नाम नहीं मानों तप आप ही रूप धार तप कर रहा है जिसके चारों ओर वन के जीव सेवा कर रहे हैं बड़े २ भयंकर जीव जैसे सिंह सर्प आदि अपने स्वाभाविक वैरभाव को छोड़ रक्षा के लिये खड़े हैं और उन हरिकेश पर नाना प्रकार की वन-स्पति उगी हुई हैं यह हरिकेश की दशा गिरिजा ने देखकर शिवजी से कहा कि इसको वर दीजिये जो यह मांगे यह तो आपका भक्त है तुम्हारे भरोसे पर जीता है इसके भाल पर

हस्तकमल रक्खो यह सुन शिव ने बैल से उतर उसके शरीर को छूकर कृतार्थ कर दिया हरिकेश ने नेत्र खोल दिये शिव को देखा कि कोटि सूर्य की प्रभा समान महातेजवान् और कोटि- चन्द्र के सदृश भस्म रमाये पञ्चमुख त्रिनेत्र लाली लिये दश भुजा गौरशरीर गिरिजा वामभाग में भाल में चन्द्रमा विराज- मान आगे खड़े हैं ऐसा स्वरूप देखकर यक्षपति अर्थात् हरि- केश अपने मन में फूला न समाया शरीर के रोम खड़े होगये मुख से वात नहीं निकलती थी फिर उसने शिवजी को प्रणाम किया और स्तुति करने लगा और कहा आपने जो मेरा शरीर छुआ मुझे अमृत से भी अधिक स्वाद मिला मैं आपकी शरण हूं आप हमारे स्वामी हैं यह सुन शिवजी हरिकेश के मांगे बिन वर देने लगे कि हरिकेश! तुम बड़े भक्त हो तुमको हर प्रकार का आनन्द प्राप्त हो यह काशीपुरी मुझे अति प्रिय है इसकी तुम रक्षा किया करो और शत्रुओं को क्रोधित होकर दण्ड दो भक्तों का पालन करो तुम दण्डधर और दण्डकर होकर दण्डपाणि के नाम से प्रसिद्ध होगे और हमारे गणों के भी स्वामी होकर जिसको अनाचार करते देखो उसको शिक्षा करो और तुमको दो गण सम्भ्रम और उद्भ्रम अपनी आज्ञा के प्रतिपाल के निमित्त कृपा होते हैं वे पापियों को भली भांति दण्ड देंगे और तुमको हम आज्ञा देते हैं कि काशी में हमारे भक्तों के सिवाय और कोई बसने न पावे व अभक्तों को यहां से दुःख दे निकाल दो तुम यहां अन्न देनेवाले और प्राण के दाता और ज्ञानदाता होकर हमारी आज्ञा से मुक्ति देनेवाले भी होगे जो मनुष्य तुम्हारी सेवा करके हमारी पूजा करेगा वह मुक्ति पावेगा जो मनुष्य मोक्ष की कांक्षा करता है उसको उचित है कि वह पहिले हमारी सेवा करके हमारी पूजा इस स्थान पर

करे तुम हमारे गणों के आगे चलनेवाले होकर दण्ड का देना अपने आधीन समझो यह कहा और अपने बैल पर चढ़कर चले और पार्वती समेत अपने स्थान पर पहुँचे उस दिन से दण्डपाणि और दण्डविनायक काशी के निवासियों को आनन्द देकर वहां स्थित रहते हैं वे दुष्टों के लिये बड़े भयंकर शिवजी के भक्तों के दुःख दूर करनेवाले रहा करते हैं दोनों गण सम्भ्रम और उद्भ्रम शिवजी के शत्रुओं को उपदेश करते हैं और दण्डपाणि शिवजी की इच्छानुसार सर्वकार्य करते हैं वीरभद्र ने दण्डपाणि का अनादर किया और अप्रसन्न होकर दूसरे स्थान पर जा रहे अर्थात् जब उन्होंने दण्डपाणि की सेवा न की इससे वीरभद्र को काशी का वास प्राप्त न हुआ और इसी से अगस्त्यमुनि भी काशी में न रहसके उनको दण्डपाणि की सेवा न करने से काशी छोड़ देनी पड़ी और एक मनुष्य धनंजय-नामी वैश्य वर्ण बड़ा धनवान् शिवजी की भक्ति में मन न देता था इसी प्रकार उसकी माता भी कुछ प्रेम शिवजी से न करती थी जब धनंजय की माता मर गई तो धनंजय उनके अस्थि काशी में लाया पर उसको कुछ भी शिव का प्रेम न था दण्ड-पाणि ने शिवजी की इच्छा से यह चरित्र किया कि उनके गण ने धनंजय की माता की हड्डियों को देखा गण का देखना ही था कि वे हड्डियां वहीं गुप्त होगईं धनंजय निरुपाय हो घर लौट आया इसी प्रकार काशी में रहकर जो दण्डपाणि को सेवा से प्रसन्न न रक्खे तो वह काशी में रहने नहीं पाता और उस पर बड़े बड़े कष्ट पड़ते हैं सो जिसको काशी में रहने की इच्छा हो वह दण्डपाणि की अवश्य पूजा करे और शिव की भक्तिकर मुक्तिपावे।

तीसरा अध्याय ।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता ! हमारी इच्छा है कि

आप हरिकेश के सम्पूर्ण वृत्तान्त आदि से अन्त तक वर्णन करें ब्रह्माजी बोले कि किसी समय में रत्नभद्र मुनि यक्षपति गन्धमादन पर्वत में रहा करते थे उनके घर में संसार की सर्व वस्तु थी और वह बड़ा कुल परिवार और सन्तानवान् था जितने यक्ष थे उन सबका यही राजा था हाथी, घोड़ा, पालकी आदि सब सामग्री वस्त्र और रत्नों समेत सब कुछ थी और वे महासुन्दर शिवजी की भक्ति में दृढ़ और स्त्रियों की संगति से भिन्न रहा करते थे उनकी स्त्री पतिव्रता थी वह रत्नभद्र की इच्छा बिन कोई कार्य न करती रत्नभद्र उसको बहुत चाहता था उसके समान पति की प्रिया स्त्रियां लोक में कम हैं वह रत्नभद्र को शिव जानती थी सो यह दोनों स्त्री पुरुष संसार की भलाई के कार्य करते और इसमें शिवजी की प्रसन्नता जानते साधु को प्रिय जानते और शिवजी के समान साधु को समझ उसकी सेवा करते और शिवजी के पूजन पाठ में लगे रहकर सदा परिश्रम और प्रयत्न करते उनके मन शिवमन्दिर थे और उदारता में विख्यात थे और नित्य उठ पार्थिव पूजन करते और रुद्राक्ष हाथ में लिये भस्म तन में लगाये जिसका नाम पूर्णभद्र था माता पिता अति प्रसन्न हुये जब उनको जरावस्था प्राप्त हुई और दोनों मरे तो शिवपुरी में पहुँचे उनकी मुक्ति हो गई पूर्णभद्र ने उनका क्रियाकर्म किया फिर आप राजा होकर चतुरङ्गिणी सेना से सदा आनन्द करता रहा पर जब कोई उसके सन्तान न हुई इससे वह इस विचार से कि पुत्र दोनों लोक में आनन्द देता है और स्वर्ग में पहुँचाता है और गृहस्थाश्रम का अलंकार उसी से है और अपने कुल के लिये सूर्य के सदृश है और जो संसार की अग्नि में जल गये हैं उनके लिये अमृतवत् है और जो दुःखसागर में डूब गये हैं उनके लिये नाव है जिसके विना और किसी

उपाय से गोत्र नहीं चलता अतिदुःखी हुआ उसको संसारी सुख दुःख से बदल गया इस दुःख से उसको सर्व पदार्थ अशुभ और व्यर्थ भासने लगे उसकी स्त्री कनककन्दलानामी और पतिव्रता भर्ता की प्यारी शिवभक्ता दृढ़ बुद्धि धर्म में अतिदृढ़ थी उसको पूर्णभद्र ने अपने समीप बुलाया और उससे कहा कि मुझे बड़ा दुःख उपजा है संसार की सामग्री सब मेरे घर में उपस्थित है पर मुझको कुछ भला नहीं भासता मैं क्या करूं कहां जाऊं मेरे दुःख का दूर करनेवाला कौन है सन्तान बिन प्राण जीवन धन पद पर धिक्कार है वरन् सहस्रों धिक्कार है यह कहकर रोने लगा स्त्री ने ठंढी श्वास खींचकर कहा कि तुम ऐसे बुद्धिमान् होकर क्या व्यर्थ दुःख करते हो इसका उपाय मैं बताती हूं उपाय करनेवाले को लोक में कोई वस्तु अप्राप्त नहीं जिनका मन शिवजी के प्रेम में मग्न है उनके सब मनोरथ पूरे होते हैं तुम शिवजी के शरण में जाओ क्योंकि उनकी सेवा से सब कुछ मिलता है वे सन्तान धन घर घोड़े हाथी स्त्री सुख आनन्द कुल भुक्ति मुक्ति सब दे सक्ते हैं जो शिवजी के भक्त हैं उनको सब कुछ मिल सक्ता है विष्णु ने भी शिवजी की भक्ति करके पालना करने की पदवी प्राप्त की है और शिवजी की कृपा से इन्द्रादि दिक्पति और शिलाद मुनि अपने पुत्रों सहित जिनका नाम मृत्युञ्जय और नन्दीश्वर प्रसिद्ध है और श्वेतकेतु उपमुनि अन्धक दैत्य जो भृङ्गी करके विख्यात हैं और दधीचि मुनि, ब्रह्मा, शुक्र, विश्वामित्र अर्थात् कौशिक, बाणासुर, गौतम, बृहस्पति आदि सब शिवजी की भक्ति करके कैसे २ पद पर पहुँचे हैं अर्थात् शिलाद मुनि के पुत्र मृत्युञ्जय भृङ्गी के नाम से प्रसिद्ध होकर शिवजी के गणों में गिने गये श्वेतकेतु काल-फांस में पड़कर भी प्राण से बचा उपमुनि ने शिवजी की सेवा

से क्षीरसमुद्र पाया दधीचि मुनि ने सब देवताओं को परास्त किया ब्रह्माजी ने सदाशिवजी की सेवा से यह पद पाया है शुक्र ने संजीवनी मन्त्र शिवजी से पाया विश्वामित्र ने शिवजी की सेवा से दूसरी सृष्टि बनाई गौतम ने शिवजी की सेवाकर अपने पाप छुड़ाये बृहस्पति ने काशी में शिवजी को पूजा सब देवताओं के गुरु होगये शिवजी तो वेग ही प्रसन्न होकर वर देनेवाले हैं यह बात वेद पुराण कहते हैं तुम निश्चय करके शिवजी की शरण जाओ यह सुन पूर्णभद्र आनन्द में मग्न हो काशी में गये और शिवजी के समीप पहुँच उनको भलीभांति गाना सुनाया क्योंकि नादविद्या में अतिचतुर थे उसने इक्कीस मूर्च्छना और पांचसौ इक्यावन तान और बारह श्रुतिभेद जिनकी बहुत सी शाखा हैं शिवजी को सब सुनाईं ऐसा अच्छा गाना यक्षपति का सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये कहा वरदान मांगो पूर्णभद्र ने स्तुति की और चरणों पर ध्यान लगा चुप रहे।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! पूर्णभद्र की स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये फिर कहा कि वर मांगो पूर्णभद्र ने विनय की कि मुझे सन्तान कृपा करो शिवजी अङ्गीकार कर अन्तर्धान हो गये पूर्णभद्र फिर प्रसन्न होकर घर आया और अपनी स्त्री से वर पाने का हाल कह सुनाया कुछ दिनों के उपरान्त पूर्णभद्र की स्त्री गर्भवती हुई समय पाकर पुत्र उपजा जिससे उनको अति प्रसन्नता हुई उसका नाम हरिकेश हुआ जब वह बालक आठ वर्ष का हुआ तो उसने शिवजी में बहुत प्रेम बढ़ाया जब वह बालक लड़कों में खेलता तो मिट्टी का शिवलिङ्ग बनाकर उत्तमोत्तम पुष्प मँगाकर पूजन करता और लड़कों से उस शिवलिङ्ग की पूजा कराता और शिव २ आप कहता और दूसरों से

भी कहलाता निदान शिवचरित्र के सिवाय उसके कान और बातों में ध्यान न देते यही चर्चा रखता उसकी आँखों ने सिवाय शिवजी के और कुछ न देखा और सिवाय शिवजी के चरणों के जो कमलवत् हैं किसी का ध्यान न किया और उनकी नाक ने और कोई सुगन्ध न सूंघी उसकी जिह्वा ने शिवनाम के स्वाद के सिवाय और कोई स्वाद न चक्खा उसकी त्वचा ने सिवाय सदाशिव को और किसी से स्पर्श न किया न उसके वाक्य ने शिवजी के विशेष कोई वचन स्वप्न में भी वर्णन किया हाथ शिवजी की पूजा में और पांव कैलासपति के क्षेत्रों में प्रवृत्त रहे निदान रात्रि दिवस उसको हर बात में शिवजी से काम था वह हर अवस्था में शिवजी को देखता और सदा भस्म रमाये रुद्राक्ष के सर्वाङ्ग वस्त्र बनाये शिव २ कहते हुये अहर्निश बिताता पूर्णभद्र ने यह दशा अपने पुत्र की देख कहा कि हे पुत्र ! तुम हमारे बड़े शिवजी के कठिन तप से उपजे हो तुमको उचित है कि गृहस्थधर्म धारण करो तपस्वियों के मार्ग को छोड़ो हमारे घर में सब प्रकार का धन द्रव्य उपस्थित है तुम राजनीति को देखो यह मार्ग जो तुमने अङ्गीकार किया है दरिद्रियों का है बाल्यावस्था में विद्याध्ययन और युवावस्था को भोगविलास में बिताकर तीसरी अवस्था तप में व्यय करो हमारे कुल का यही प्रचार है निदान हरिकेश अपने पिता से विकल्पित होकर घर से भागगया जब नगर के बाहर गया तो उसे दिशा-भ्रम होगया और अतिचिन्ता से पश्चात्ताप करने लगा और कहा कि मैं तो बालकपन से घर में रहा अब कहां मारा मारा फिरूं मुझको कुछ नहीं सूझता यह दुःख मुझे पिछले जन्म के पापों से मिला हां एक समय मैंने अपने पिता के पास शैव-लोगों से सुना था कि जिनको माता पिता छोड़ दें या कुल के

लोग त्याग दें और जिसका कोई सहायक न हो और पापी, अधर्मी, दरिद्री, चिन्तित, भयभीत और जिनको कहीं शरण न मिले जिनके पास कुछ नहीं है जिनको यह कुछ न सूझपड़े जो संसार में सब तरह से अनाथ हो ऐसे मनुष्य के सहायक शिव और काशी हैं इस बात को मन में विचारकर प्रसन्न हुआ और विदेशियों से काशीमार्ग पूछकर वहां पहुँच गया और बड़ा आनन्द पाया और मणिकर्णिका में जाकर स्नान किया फिर विश्वेश्वर महादेव की पूजा की फिर आनन्दवन को गया और दृढ़तापूर्वक कठिनतप करने लगा निदान जो वर शिवजी ने उसको दिया वह हम पहले कहचुके हैं हरिकेश ने अपने कुल को तार दिया वास्तव में शिवके भक्तों की ऐसे ही महिमा है उस के माता पिता काशीवासी होगये शिव के भक्त अकेले मुक्त नहीं होते वरन् कुलभर को मुक्त करते हैं यह चरित्र दोनों लोक में आनन्द देनेवाला है।

पांचवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इसीतरह शिव काशी में राज्य करते थे कि एक महाबलवान् दुर्गनामी दैत्य देवताओं को दुःख देनेलगा जिससे धर्म नष्ट होगया उसको वर था कि तीनोंलोक में पुरुष के हाथ से न मरेगा इस वर के बल से उसने तीनों लोक को जीतलिया और पृथ्वी पर आकर ठहरा उस समय विष्णु और हम सब देवता मुनियों समेत शिवजी की शरण गये यह सम्पूर्ण वृत्तान्त सुन शिवजी ने गिरिजा से कहा कि तुम इस शत्रु को वध करो यह आज्ञा पाकर गिरिजा ने विन्ध्यवासिनी होकर सदाशिवजी के ध्यान के उपरान्त दुर्ग दैत्य को मारडाला तब से गिरिजा का नाम दुर्गा प्रकट हुआ और देवता आदि को बड़ा आनन्द मिला फिर देवता दुर्गा की स्तुति करने उप-

रान्त अपने अपने लोक को चले गये इसी प्रकार बहुत दिनों तक शिवजी ने काशी में राज्य किया जब कि राजा दिवोदास ने कष्ट दिया तो शिवजी ने काशी को छोड़ा और मन्दराचल में जाकर बड़े उपाय से राजधानी पाई इतना सुन नारदजी आश्चर्यकर ब्रह्माजी से कहने लगे कि वह दिवोदास कौन है जिसने शिवजी से काशी छुड़ाई फिर शिवजी ने किस उपाय से काशी को पाया ब्रह्माजीने विस्तारसे यह कथा इस प्रकार सुनाई कि इससे पहिले पद्मकल्प स्वायम्भुव मन्वन्तर में मनु के कुल में एक राजा रिपुंजय उपजा जो अपने नाम के समान क्षात्रधर्म में अति दृढ़ था और ब्रह्मभक्त और शिवपूजक था उसने राज्य छोड़ काशी में बड़ा तप किया इससे संसार में बड़ा काल उठा जिससे मनुष्यों को बड़ा दुःख मिला कितने मरगये कितने महा दुःख में पड़े इसी से लोग अपना घर छोड़ पर्वतों की कन्दराओं में चले गये जब देश राजाहीन हो गया तब चोरी होने लगी मांसविक्रय मानों एक व्यवहार होगया धर्म भ्रष्ट हुआ सब बातें धर्म के विरुद्ध हुईं यज्ञादि कर्म नष्ट होगये कोई प्रसन्न न रहा देवता आदि ने जाकर हमसे रोकर कहा कि आप कुछ उपाय करें हमने शिवजी का ध्यान करके दुःख का हाल जान लिया और काशी में जाकर जयशब्द किया और जहां वह तप करता था वहां गये और उससे बहुत समझाकर कहा कि तुम फिर राज्य करो तुम्हारे राज्य करने से वर्षा होगी जिससे प्रजा इस दुःखसे मुक्त होगी तुमको वासुकि अपनी कन्या देंगे उसका नाम अनङ्गमोहिनी है वह पातिव्रतधर्म में अतिदृढ़ है उससे तुम को बड़ा आनन्द मिलेगा राजा ने उत्तर दिया कि तुम्हारी आज्ञा मैं भङ्ग नहीं करसक्ता पर मैं इस बात पर राज्य करता हूं कि देवता आकाश में स्थित हों और नागादि पाताल में रहकर फिर

पृथ्वी पर न आवें हे नारद! हमने अहंकारपूर्वक इसको मान लिया मुझको शिवमाया ने मोह लिया जिससे तीनों देवता और इन्द्रादि सबने पृथ्वी छोड़ी इतने में हम शिवजी के समीप गये शिवजी ने कहा कि किस देश का राजा मन्दरगिरि पर तप कर रहा है हम उसको वर देने जाते हैं तुम भी साथ चलो निदान उसके पास पहुँचकर शिवजी ने कहा कि वर मांगो मन्दरगिरि ने कहा कि मैं काशी के बराबर हुआ चाहता हूं आप मेरे ऊपर स्थित हों मेरी यही इच्छा है कि आप गिरिजा और गणों समेत कुशद्वीप को चलें यह सुनकर शिवजी आश्चर्य में हो चिन्तित हुये हमने कहा कि हे शिवजी! हमने आपकी माया में भूलकर रिपुंजय को वरदान देदिया है कि देवता धरती पर न रहेंगे आप मन्दरगिरि की विनय को मानें मेरे वचन को सुन शिवजी अपना लिङ्ग काशी में स्थित करके गणों समेत मन्दरगिरि को गये इस बात को किसी ने न जाना हे नारद! उस समय भी शिवजी लिङ्गरूप होकर काशी में स्थित रहे काशी को न छोड़ा उस लिङ्ग का नाम अविमुक्त हुआ जो आनन्दवन अर्थात् काशी में वर्तमान है उस लिङ्ग के नाम लेने से सर्वकार्य पूर्ण होते हैं पहिले हमने भी उस लिङ्ग का हाल नहीं जाना जब शिवजी अपने अविमुक्तस्थान को छोड़कर मन्दरगिरि को गये और विष्णुजी भी अपना धाम त्यागकर मन्दरगिरि पर सुशोभित हुये तो सूर्य, गिरिजा, गणपति, देवता, मुनि आदि सब अपने २ तीर्थ छोड़ वहीं जारहे और शेष पाताललोक को चले गये सबके मनों में बड़ा दुःख उपजा जब हम सब चले गये तो रिपुंजय राज्य करने लगा उसने अपनी राजधानी काशी नियत की और अपनी विद्या और बल से देवताओं की ऐसी रीतें प्रचलित कीं कि कोई मनुष्य उसके राज्य में

कुकर्म नहीं करता था देवताओं ने यथाशक्ति रिपुंजय के राज्य में कुकर्म देखने के बहुत उपाय किये पर कोई कुकर्म न देखा तब तो देवताओं ने अपने गुरु बृहस्पति के समीप जाकर स्तुति करने के अनन्तर कहा कि आप ऐसी युक्ति बतावें जिससे रिपुंजय को कोई पाप लग जावे और वह राज्य से निराश रहकर प्रतापहीन होजावे हमलोग अपने २ पुराने घरों को पावें पहिले तो वेद कहते हैं कि पृथ्वी पर रहना दुर्लभ है जो वहां का बास भी मिला तो परमपद मिलने में क्या सन्देह है मुख्य करके काशी में जहां आप सदाशिवजी विराजमान हैं कि मरने में मुक्ति प्राप्त होती है जिसने काशी को छोड़ा वह मानो सर्व प्रकार से बिगड़ा मुक्ति उससे निरास होगई काशीजी के चाण्डाल भी अन्य स्थान के राजाओं से भले हैं क्योंकि अन्य स्थान में आवागमन और मृत्यु का भय रहता है काशीजी में यह भय कहां है ऐसे वचन देवताओं के सुनकर बृहस्पति बोले कि धर्म छोड़ने विना राज्य नहीं मिलता और धर्मत्याग विन वहां का पाना कठिन है सो राजा रिपुंजय धर्मवान् है पर तुम कुछ संशय मत करो उपाय करो जिससे रिपुंजय का धर्म नष्ट होजावे जाना जाता है कि राजा रिपुंजय अज्ञानी होगया है कि तुम सबको दुःख देता है वह अवश्य ही नाश को प्राप्त होगा क्योंकि देवताओं से शत्रुता करके कौन प्रसन्न रहा है जब कि नल, दधीचि, शंख, ययाति, रावण, बाणासुर आदि बहुत से देवता अपने धर्म को छोड़कर सुखी नहीं हुये हैं तो मनुष्य क्या वस्तु है तुम तेज को बुलाकर कहो कि वह पृथ्वी से अपना अंश खींचले अग्नि बिन पृथ्वी पर कोई कार्य न होगा।रिपुंजय का राज्य अपने आप नष्ट होजावेगा यह उपाय बृहस्पति से सुनकर सब देवता हँस पड़े और इन्द्र ने तुरन्त अग्नि को

बुलाकर सब हाल कहा अग्नि ने तुरन्त आज्ञा पालन की अर्थात् उसने इन्द्र की आज्ञा से तीनों प्रकार की अग्नि अर्थात् प्रत्यक्ष, जलगत, जठरगत को पृथ्वी से अन्तर्धान कर लिया जिसके गुप्त होने से धरती के रहनेवाले महादुःखी होगये और सब इकट्ठे होकर रिपुंजय के समीप गये जब रिपुंजय ने इस बात को सुना तो उसको निश्चय हुआ कि यह देवताओं ने मेरे साथ शत्रुता की है वह कुछ चिन्तित न हुआ और अपनी प्रजा से कहा कि तुम कुछ शङ्का न करो मैं अपने बल से तुम पर कोई दुःख न आनेदूंगा यह कहकर प्रजा को बिदा किया फिर अपने मन में विचारने लगा कि देवताओं ने आज अग्नि को बुला लिया है कल के दिन और किसी को बुलावेंगे इससे मुझको उचित है कि मैं देवताओं की सहायता न लेकर अपने ही प्रताप से राज्य करूं यह सोचकर उसने सब देवताओं को जो उसके यहां रहा करते थे बिदा कर दिया और फिर उसने तीनों प्रकार की अग्नि आप होकर सब प्रजा का भय दूर किया और आप ही पवन और जल और आप ही चन्द्रमा होकर प्रकाश करनेलगा निदान जिस वस्तु से प्रजा का उपकार होता था उसने वही शरीर धारण किया यह देखकर सब देवता लज्जा में डूब गये उनके उपाय ने कुछ काम न किया।

छठवां अध्याय।

इतना सुन नारद बोले कि हे पिता! पूर्व में कोई ऐसा राजा दिवोदास अर्थात् रिपुंजय के समान नहीं हुआ जिस पर देवताओं की युक्ति ने भी फल न किया हो सो हे ब्रह्मन्! मुझे इच्छा है कि ऐसे प्रतापी राजा का वृत्तान्त विस्तार से सुनूं कि जिसने अपनी प्रजा को दुःखी न होने दिया और फिर देवताओं ने लज्जित होकर और कोई युक्ति सोची या बैठ रहे और शिवजी

काशी छोड़ मन्दराचल पर्वत पर स्थित हुये वहां उन्होंने क्या क्या चरित्र किये फिर उन्होंने क्योंकर काशी को पाया ब्रह्माजी बोले धन्य हो हे नारद ! कि तुम सदैव शिवकथामृत पीने के प्यासे रहते हो तुम सब बातें केवल शिवजी का चरित्र और लीला जानो जिसके अधीन संसार भर है ऐसा संसार में कौन है जो शिवजी को कुछ दुःख देसके अब हम सम्पूर्ण कथा कहते हैं दिवोदास शिवजी का बड़ा भक्त था उसने जब देखा कि काशी को शिवजी प्राण के समान समझते हैं तो उसने भी काशी की बड़ाई जानकर काशी में रहना अङ्गीकार किया उससे देवताओं की कुछ न चली क्योंकि यह काशी में अतिनम्रता से रहा करता था उसने राज्य उत्पातरहित किया किसी को कुछ दुःख न होता था युद्ध में सिंहवत् था यद्यपि उसको राज्य की सर्व सामग्री प्राप्त थी और देवता भी उसकी आज्ञापालन करते थे और गन्धर्व विद्याधरों से उसकी सभा भरी रहती थी और धन द्रव्य की कुछ गिनती न थी पर तो भी वह धर्म के मार्ग बिन अन्य कुकर्म में न चला सर्व प्रकार की कुचाल छोड़ अपना राज्य करता रहा उस दिवोदास ने सूर्य होकर शत्रुओं को जलाया चन्द्रमा होकर मित्रों को आनन्द दिया और जो कि धनुष् को युद्धस्थान में उठाकर विजय पाता रहा इससे उसको लोग इन्द्र कहने लगे वह अग्निरूप था क्योंकि उसने अपने शत्रुओं के नगर को अपने तेज से जला दिया और धर्म अधर्म में विवेक करके दण्ड देने के कारण धर्मराजा जाना गया और वह अपराधियों को दण्ड देता धर्मात्माओं और भले मनुष्यों को आनन्द कृपा करता और उसने अपने शत्रुओं के जीतने से वरुण की और वायु के समान चलने से पवन की और दरिद्रियों को धन देने से कुबेर की समानता प्राप्त की और सबके पालन

और शत्रुओं के जीतने से शिवजी का पद पाया और तप और योग के कारण विष्णु के समान था और सबको भाग्यफल देने से ग्रह उपग्रह से अधिक था उसके समान कौन कलावान् था जिसने सर्व कलावानों को अपनी कला सिखाने से तृप्त कर दिया रूप में अश्विनीकुमारसे भी अधिक अनूप था गानविद्या में विद्याधरों को भी जीत लिया गन्धर्वों को शिवजी के प्रसन्न करने के समय अपने गाने से अहंकार रहित कर दिया इसी प्रकार उसने अपने गुणों और कलाओं से परिपूर्ण देवताओं के समान होकर राज्य किया और यक्षों को नाना प्रकार के अधिकार सौंपे नागों को भी नाना प्रकार के पद प्राप्त हुये गुह्यक छिप रहे और उन्होंने दिवोदास की सेवा में दृढ़ रहकर दैत्यों के स्वभाव का त्याग किया उसके प्रताप से इन्द्र ने ऐरावत हस्ती और सूर्य ने उच्चैःश्रवा घोड़ा दे दिया उसके वीर सब से अजित हुये जिनके सम्मुख देवताओं का धैर्य भी जाता रहा उसने बड़े धर्म से राज्य किया बरन आकाश के राज्य से पृथ्वी के राज्य की इतनी बड़ाई थी कि आकाश में तो केवल एक ही चन्द्रमा है उसके यहां धरती पर असंख्य चन्द्रमाओं का घर था आकाश पर केवल एक कामदेव अनङ्ग था धरती पर सर्व मनुष्य पूर्णकाम के भरे थे आकाश पर इन्द्र पर्वतों के पङ्ख काटनेवाले हैं पर धरती पर एक यही गोत्र अर्थात् अपने कुल का मारनेवाला हुआ आकाश पर चन्द्रमा पन्द्रह २ दिन के पीछे घटता है पर धरती पर कोई ऐसा क्षीण होनेवाला न था आकाश पर तो केवल एक प्रकार के नवग्रह प्रसिद्ध हैं पर पृथ्वी पर सब गृह नवग्रहों से सुशोभित थे आकाश पर केवल एक सुवर्णगर्भ अर्थात् ब्रह्मा हैं धरती पर सर्वमन्दिर सुवर्ण के अलंकृत थे आकाश पर हंसादि केवल सात घोड़े प्रसिद्ध हैं पर धरती पर असंख्य जाति के घोड़े थे जिस

तरह आकाश अप्सराओं से अलंकृत है उसी तरह रिपुञ्जय का नगर अर्थात् काशी भी अप्सराओं से खाली न था स्वर्ग में केवल पद्मा अर्थात् लक्ष्मीजी अकेली हैं पृथ्वी में पद्माकर अर्थात् सम्पूर्ण कमल की खानि वर्तमान थी आकाश पर धनदायक केवल एक ही कुबेर है धरती में घर २ असंख्य धनद उपस्थित हैं इसी प्रकार राजा प्रजा और नगर कोई धर्मशास्त्र के विरुद्ध न चलता उसके राज्य में कोई मनुष्य अपनी स्त्री के सिवाय दूसरी स्त्री से भोगविलास में प्रवृत्त न हुआ स्त्रियां भी पातिव्रत धर्म में लगी थीं और कोई मनुष्य उसके नगर में धनहीन, हिंसक, अधर्मी और निर्लज्ज, चुगुली खानेवाला, दुश्शील, असत्यवादी न था और उसके नगर में मूर्ख ब्राह्मण, क्षत्रिय वीरता रहित, वैश्य व्यापार रहित और शूद्र सेवाहीन न था चारों आश्रम अपने २ धर्म में दृढ़ थे और शेष अन्य जातें अपनी पुरानी चालों में प्रवृत्त थीं और न कोई अनाचारी, दुष्ट शत्रु, कृपण, छली, पतिहीन स्त्री उसके राज्य में थी चारों ओर वेदाध्ययन शास्त्र अभ्यास होते थे उपाय बिन मद्यपान और यज्ञ बिन मांसभक्षण का प्रचार न था बालक माता पिता की सेवा करते छोटे भाई अपने बड़े भाइयों की सेवा छल रहित करते नौकर चाकर अपने स्वामी की सेवा धर्मपूर्वक करते चाहे स्वामी पर आपदा भी पड़े दण्ड के शब्द को संन्यासी के सिवाय और किसी के पास न सुना वहां धनवानों से तपस्वी का पद बड़ा था उससे योगी की बरन मुख्य करके ब्रह्मज्ञानी की पदवी श्रेष्ठ थी और उससे भी बढ़कर शिव के योगी को मानते थे स्थान २ पर ब्रह्मभोज होते ब्राह्मणों की सेवा को राजा से लेकर प्रजा तक प्रिय जानते चारों ओर कुवाँ, बावली, तालाब, पग २ पर फुलवाड़ियां और उद्यान उपस्थित थे जिनके बनवानेवाले मन का

मनोरथ पाते, सब मनुष्य तीर्थ, व्रत, दान, देवाराधन में प्रवृत्त रहते किसी को किसी से कुछ दुःख न था और ब्रह्मभक्ति के सिवाय और कोई कार्य न था सर्व स्त्री पुरुष केवल वेद की आज्ञा पर चलते और अपनी प्राचीन रीति को कुछ भी न छोड़ते वे सब धनवान् और हृष्ट पुष्ट होने पर भी कुकर्मों से बचे रहते और प्रतिदिन शिव की भक्ति में मग्न रहते किसी को द्रव्य, पुत्र, वस्त्र, भूषण आदि का दुःख न था वरन् सर्व स्त्री पुरुष मानो रत्न और भूषणों की खानि थे सबसे अधिक द्रव्यवान् दिवोदास राजा था क्योंकि जिसके राज्य में किसी को कुछ दुःख न हुआ उससे अधिक कौन धनवान् है क्योंकि उसने अपनी प्रजा को अपने पुत्र के समान पाला उसके रक्षक शिवजी थे उसको कोई वस्तु दुर्लभ न थी हे नारद! सत्य है जिसके सहायक शिवजी हों उसको किस तरह दुःख पहुँचे जिसके मनमें रात दिन सदाशिव रहते हैं उसको आनन्द के सिवाय दुःख नहीं होसक्ता उसके राज्य में देवताओं ने ढूँढ़ने पर भी कोई दोष न पाया और देवताओं ने युक्तियों के करने पर भी सिद्धि न पाई दिवोदास राजनीति और धर्म में बड़ा ज्ञानी और मित्र था वह तीनों शक्ति और षट्गुणों को धारण करके चारों उपायों को अच्छी तरह से जानता जिनके कारण उसकी दुर्दशा नहीं होती थी निदान जब देवता सब उपाय करके थक गये और राजा की हानि न हुई तब इन्द्र ने देवताओं समेत हमारी शरण में आकर स्तुति कर अपना दुःख वर्णन किया और कहा कि जिस तरह से राजा दिवोदास को कोई पाप लगजावे वह पृथ्वी के राज्य से हीन होजावे और हमको फिर पृथ्वी मिले वह उपाय कीजिये जब तक यह न होगा हमारे दुःख दूर न होंगे स्वर्ग से अधिक पृथ्वी का पद है उससे अधिक तीर्थ का पद पृथ्वी में सर्वोपरि

काशीक्षेत्र है हमने सोचकर उत्तर दिया कि दिवोदास बड़ा धर्मात्मा है हमने अपने प्रयोजन से उसको राजा बनाया था वह देवताओं को दुःख देकर तप के कारण बचा रहता है उसको दुःख नहीं होता पर जो दुःख तुमको है वही कष्ट मुझे भी है क्योंकि हमको प्रयाग बहुत प्रिय था पर अब मुझको प्रयाग में रहना कठिन होगया प्रयाग बिन मुझे क्या आनन्द है कुछ सुख नहीं यह कह देवताओं को अपने साथ ले विष्णु के समीप गये और स्तुति करने के उपरांत विनय की कि ऐसा कुछ उपाय कीजिये जिसमें हमारे देवताओं को आनन्द प्राप्त हो दिवोदास राज्यहीन होजावे विष्णु ने अति खेद से कहा कि हे ब्रह्मा! मुझ को बड़ा दुःख है मैं चाहता हूं कि दिवोदास धरती से निकाला जावे पर वह बड़ा धर्मवान् है काशी के पालन करने के कारण शिवजी भी उसको चाहते हैं मुझे वृन्दावन प्राणवत् प्रिय था वह मुझ से छूट गया हमारा कुछ बल नहीं है यद्यपि हमारी इच्छा है और शिवजी भी काशी के न मिलने से बहुत दुःखी हैं अपना दुःख सदा कहा करते हैं बिन अपराध शिवजी भी उसके राज्य में कोई विघ्न नहीं डाल सक्के जो कि देवता आदि की कुछ युक्ति नहीं चलती इसका यह कारण है कि काशी मुख्य शिवजी का स्वरूप है जैसा कि परमशैव अर्थात् विश्वनाथ ने भी इस बात को कहा था ऐसे काशी में दिवोदास धर्म के साथ रहता है उसके राज्य के नाश होने का क्या कारण है पर हां जो सदाशिवजी कृपा करें तो सम्भव है कि हम सबके कार्य पूर्ण होवें हम सब उनके समीप चलें अपना दुःख वर्णन कर दें उनकी सेवा करें निश्चय है कि शिवजी प्रसन्न हों क्योंकि काशी उनको अतिप्रिय है यह सम्मति कर विष्णु और हम देवताओं समेत शिवजी के पास गये और प्रणाम कर हाथ जोड़ स्तुति की।

सातवां अध्याय।

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि शिवजी ने स्तुति सुनकर कहा कि तुम सब मिलकर कहां आये हो हे विष्णु, ब्रह्मा और देवताओ! अपना दुःख वर्णन करो तुमने क्या दुःख पाया सबने शोच विचार उत्तर दिया कि हे महाराज ! दिवोदास दृढ़ धर्म धारणकर पाप छोड़ पृथ्वी का राज्य कर रहा है जहां नाना प्रकार का आनन्द प्राप्त है यद्यपि वह ब्रह्मभक्त है पर हठ से उसने किसी देवता और नाग आदि को पृथ्वी में नहीं रहने दिया यद्यपि दिवोदास देवताओं की सेवा में लगा रहता है पर तीर्थ विन हमको आनन्द नहीं इसके सिवाय सबको काशी अतिप्रिय है आपको भी प्राण के समान प्यारी है वह काशी निर्वाणपद सबको देती है इससे उचित है कि आप कोई उपाय इसके निकालने का करें दिवोदास के राज्य छोड़ने पर हम सब राज्य पावें काशी को देखकर मन प्रसन्न करें शिवजी ने कहा कि दिवोदास ने हमारी बड़ी सेवा की है काशी जो हमारे दूसरे शरीर के समान है उसके रक्षक को दुःख नहीं मिलसक्ता यह कहकर शिवजी चुप होगये और काशी के प्रेम में मग्न होकर अपने शरीर को न सम्हाल सके आंखों से आंसू बहने लगे कुछ देर के पीछे चेत में आये और काशी की स्तुति करने लगे कि हे आनन्द देनेवाली काशी! अपनी अप्रसन्नता दूर करके मुझको कब मिलेगी तेरे वियोग की अग्नि मुझको जलाती रहती है अमृत भी दुःख देता है जो तू हमको न मिली तो निश्चय जानना कि हमारा जीना कठिन है ऐसे २ अधीन वचन कहकर शिवजी मूर्च्छित होगये गिरिजा ने कहा कि हे शिव! तुम तो सबके स्वामी हो संयोग वियोग सब तुम्हारे हाथ है तुम तो तीनों लोक के राजा हो तुम्हारी कोप की दृष्टि से प्रलय होती

है इसी प्रकार बहुत स्तुतिकर कहा कि वेग ही काशी को सिधारो तुमको कौन देवता मुनि और मनुष्य रोक सकता है तुम तो स्वाधीन हो काशी क्यों छोड़ दी है काशी तो सर्वोपरि है जिसके निवासी यमराज से नहीं डरते मुझको काशी अतिप्रिय है पापियों के लिये मोक्ष की जगह है इससे आप वह उपाय करें कि फिर काशी मिले मन को शीतलता प्राप्त हो ऐसी बातें गिरिजा की सुनकर शिवजी प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे गिरिजा! तुम मुझे बहुत प्यारी हो पर काशी मुझको दूनी तुमसे प्यारी है अब तुम्हारे अमृत के समान वचन पानकर मुझे कुछ २ आनन्द मिलता है पर तुमको मालूम है कि हम दिवोदास का आदर और मान करते रहते हैं सिवाय इसके उसने ब्रह्मा से आज्ञा पाकर काशी का राज्य लिया है क्योंकि उसने कहा था कि जो पृथ्वी में देवता आदि न रहें तो हम राज्य अङ्गीकार करते हैं इसी से हमको काशी छोड़नी पड़ी दिवोदास मुझको बहुत प्रिय है क्योंकि वह हमारी पुरी की रक्षा करता है वह बहुत ही धर्म में दृढ़ प्रजा के पालन में चतुर और हमारी सेवा में प्रवृत्त है उसके राज्य को हम क्यों छीन लेवें अपनी इच्छा को क्यों छोड़ें क्योंकि संसार में जो धर्मवान् हैं मैं उनका रक्षक हूं इसमें कुछ सन्देह नहीं उनकी कुछभी हानि नहीं होती इस बातको तुम भलीभांति जानलो जो कोई हानि पहुँचाने की इच्छा रखता है तो उसको आपही दुःख पहुँचता है हम निर्दोष किसी के हानि पहुँचाने में उद्योग नहीं करते हमको कोई बात नहीं मिलती जिससे काशी को पावें शिवजी इसी चिन्ता में थे कि काशी क्योंकर पावें कि अकस्मात् योगिनियों को अपने सम्मुख में देखीं उनको बुलवाकर बिठाया और बहुत आदर करके कहा कि तुम सब काशी को जावो दिवोदास जो धर्मपूर्वक राज्य

करता है उसके धर्म में विघ्न करो कि वह काशी को छोड़ दे वही उपाय करो कि हम फिर काशी में सुशोभित होकर आनन्द उठावें इसी प्रकार बहुत कुछ सिखा पढ़ाकर भेजा आप समय को देखते रहे योगिनीगणों ने तुरन्त काशी में पहुँच अपना देवस्वरूप बदला और वहां स्थित हुईं और काशी को देखकर अतिप्रसन्न हुईं फिर कई योगिनियां तपस्विनियों के समान हुईं और कई रोगिनियों का स्वरूप धार बहुत रोने लगीं कोई मालिनि कोई नाइन कोई दाई कोई रोटी पकानेवाली कोई बजानेवाली कोई गानेवाली कोई सामुद्रिकविद्या की जाननेवाली और पुत्र देनेवाली कोई चित्रादि लिखनेवाली कोई मूर्ति लिखने-वाली इसी प्रकार से बहुत रूप धारणकर घरों में आने जाने लगीं यद्यपि उन्होंने सर्व प्रकार की उत्तम युक्तियां कीं पर दिवोदास के नगर में कोई पापी न हुआ तब इकट्ठी होकर परस्पर कहने लगीं कि हम मन्दराचल पर्वत में जाकर क्योंकर अपना मुख शिवजी को दिखलावें सो चौंसठ योगिनियां मणिकर्णिका के आगे स्थित हुईं और शिवजी के समीप लज्जा से न जासकीं जो उनको प्रणाम करता है उसको कोई दुःख नहीं पहुँचता।

आठवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! योगिनीगणों के न लौट जाने से शिवजी को चिन्ता उपजी तो रवि से कहा कि तुम काशी में जाकर तुरन्त समाचार लावो कि योगिनीगणों के अधिक विलम्ब करने का क्या कारण है हमको बड़ी चिन्ता है तुम अपने उपाय से राजा दिवोदास का धर्म भ्रष्ट करो कि वह राज्य से हीन होजावे पर ध्यान रहे कि दिवोदास की कुछ प्रतिष्ठा जाने न पावे क्योंकि वह धर्मवान् है अपनी बुद्धिमानी से उसके धर्म को छुड़ा दो फिर यहां चले आवो तुम तीनों लोक में श्रेष्ठ

हो तुम्हारा नाम जगच्चक्षु है तथाच सूर्य देवताओं का स्वरूप बदलकर काशी में पहुँचे और बहुत प्रकार के स्वरूप उन्होंने रचे पर उनकी भी कोई युक्ति न चली कहीं वह भिखारी कहीं उदार कहीं ज्योतिषी कहीं पर दीन मतिहीन कहीं योगी जटाधारी कहीं नग्न कहीं वेद के विरुद्ध धर्म करनेवाले कहीं छली हुये किसी स्थान पर उन्होंने इन्द्रजाल फैलाया कहीं उन्होंने ब्रह्म-ज्ञान प्रकटाया कहीं वह मीमांसक कहीं विद्वान् कहीं सर्वज्ञ किसी स्थान पर ब्राह्मण कहीं राजकुमार कहीं नीच कहीं उच्च इसी प्रकार उन्होंने असंख्य उपाय किये पर कुछ न चला एक वर्ष बीत गया निरुपाय हो उन्होंने अपनी निन्दा की और कहा कि मुझको धिक्कार है कि मैं कुछ न कर सका मैं क्या करूं कुछ नहीं चलती जो शिवजी के पास जाता हूं तो डरता हूं कि जल न जाऊं तब ब्रह्मा और विष्णुजी की भी कुछ न चलेगी इससे काशी में रहना ठीक है क्योंकि शिवजी की आज्ञा न मानने का पाप जो होगा वह सब काशी में रहने से नष्ट हो जावेगा काशी शिवजी का रूप है उसका सेवन बड़ा धर्म है बाकी सब अन्धे कुवें हैं यद्यपि त्रिवर्ग अर्थात् अर्थ धर्म काम अङ्गीकार करना बहुत उत्तम है पर धर्म का स्वीकार करना बहुत ही अच्छी बात है यह तनु अवश्य ही नष्ट हो जावेगा उचित है कि ऐसे शरीर को पाकर धर्म को प्रीति के साथ बचावे अर्थ और काम बचाने के योग्य नहीं क्योंकि विरुद्ध धर्मवालों को वैकुण्ठ नहीं मिल सक्ता जो यह दोनों इस योग्य होते तो शिवजी इनको किस लिये जाकर भस्म कर डालते कइयों का यह वचन है कि अर्थ रक्षा के योग्य है पर हम इस वचन को झूठ जानते हैं क्योंकि हरिश्चन्द्र कुश ययाति ने धर्म के लिये अर्थ छोड़ दिया दधीचि ब्राह्मण और मुख्य शिबि राजा ने अपने शरीर को नष्ट

कर धर्म पकड़ मोक्ष प्राप्त किया इसके सिवाय राजा बलि और विरोचन प्रह्लाद ने धर्म के लिये दुःख उठाये सो काशी सेवन से कोई अधिक धर्म नहीं है वह हमारी रक्षा करेगी और शिवजी भी क्रोध न करेंगे जो मनुष्य काशी पाकर फिर उसको प्रसन्नता से छोड़ते हैं वे मानो रत्नों के बदले कांच लेते हैं जो शिवजी को छोड़कर कोई काशी सेवन करता है तो भी शिवजी प्रसन्न होते हैं क्रोध नहीं करते सूर्य ने यही विचार कर अपने बारह शरीर धारे और अति प्रेम से काशी में स्थित हुये उनके यह बारह नाम हुये जो आगे लिखे जाते हैं वे सबकी कामना पूर्ण करते हैं प्रथम सूर्य लोलार्कनामी असिसंगम पर स्थित हैं वह सब तीर्थों का शिरोमणि है दूसरा उत्तरार्क जो भक्ति करने पर बहुत बड़ा फल देता है वह उस स्थान पर है जहां पहिले प्रिय-व्रत ने जा सबसे पहिले स्त्री हुई तप किया था और शिव और शिवरानी से वर पाकर गिरिजा की सखी हो गई उस स्थान पर एक बकरी ने राजा की लड़की होकर मुक्ति पाई तीसरा सूर्य आदित्यनामी शाम्बपुर में उपस्थित है वहां शाम्ब का कुष्ठ दूर हुआ था पांचवां सूर्य मयूषादित्य जो शिव गिरिजा की सेवा से शिव के दाहने नेत्र हुये और वह आठों वसुओं में भी एक वसु है छठवां खखोलादित्य है जब कद्रू विनता से विवाद हुआ और विनता हार गई और कद्रू की लौंड़ी हुई यह हाल सुनकर गरुड़ को बड़ा कष्ट हुआ इसी से गरुड़जी अमृत लेने के निमित्त सुरपुर गये और देवताओं के जीतने के उपरान्त अमृत लेकर अपनी माता विनता के पास चले गरुड़ कश्यप के पुत्र थे मार्ग में विष्णु ने रोका जिससे बड़ा युद्ध हुआ जब विष्णु गरुड़ को न जीत सके तो उन्होंने छल करके वर मांगा कि हमको भी अमृत दो और हमारे वाहन भी तुम्हीं हो जावो गरुड़ ने मान

कर अमृत दिया और विष्णु के वाहन हुये और विनता ने कनिकस्थान पर खखोलादित्य रवि नियत किया उसी के तप से विनता की लज्जा दूर हुई सातवां सूर्य अरुण आदित्यनाम है जिनको अरुण विनता के लड़के के नाम से प्रसिद्ध किया वे महादेव के उत्तर ओर विराजमान हैं जिनकी सेवा से सर्वकष्ट दूर होते हैं आठवां सूर्य बृहदादित्य जिनकी अतिपवित्र महिमा है और जिनकी सेवा से हारीत मुनीश्वर जो अल्पायु थे युवा हो गये वे रोगों को दूर करते हैं और आनन्द और आरोग्यता देते हैं बड़े बुद्धिमान् हैं उनका स्थान विशालाक्षी देवी के दक्षिण ओर है शिवजी को बृहदादित्य बहुत प्यारे हैं नवां सूर्य केशवादित्य नामक हैं जिन्होंने विष्णु से उपदेश पाया अर्थात् एक दिन सूर्य ने देखा कि विष्णुजी पादोदक तीर्थ पर शिवजी के लिङ्गकी पूजा कर रहे हैं उसने तुरन्त उसी स्थान पर आकर विष्णुजी से पूछा कि तुम सबसे श्रेष्ठ हो तुम किसकी पूजा करते हो विष्णुजी बोले कि शिवजी सबसे बड़े हैं हम उन्हीं की पूजा करते हैं तुमभी शिवजी के लिङ्गकी पूजा करो यह सुनकर सूर्य हर दिन शिवलिङ्ग को पूजते हैं और उनको गुरु जानकर उसके ऊपर स्थित हुये दशवां सूर्य विमलादित्य नामी जिनको हरिकेश ने वनमें स्थापित किया था प्रबाहु का पुत्र जो उच्चदेश में रहता था भाग्यवश कुष्ठी हो गया सो सब लड़के और घर छोड़कर काशी में आया और सूर्य की पूजाकर अच्छा हो गया तब से वह मुख्य करके सुकुष्ठ के निवृत्त करने में प्रसिद्ध है ग्यारहवां सूर्य कनकादित्य नाम विश्वेश्वर के दक्षिण की ओर स्थित है हर दिन गङ्गा की स्तुति करते हैं इसी से उनका मुख गङ्गा की ओर है बारहवां सूर्य यम आदित्य नामी उस स्थान पर है जहां यमराज ने कठिन तप किया था उनके देखने से यमपुरी जाना

नहीं पड़ता वे यमराज के स्थान से पश्चिम की ओर और वीरेश्वर से पूर्व हैं यमराज ने उनको स्थापित करके बड़ा तप किया था उस स्थान पर आकर जो कोई मनुष्य चतुर्दशी के दिन भरणी नक्षत्र में श्राद्ध करते हैं उनको गया के समान फल होता है हे नारद ! यह बारहों सूर्य जो काशी में स्थित हैं हमने वर्णन किये इनकी कथा के सुनने से रोग दोष दूर हो जाते हैं इनकी सेवा से शिवजी अति प्रसन्न होते हैं इनसे मनुष्य अखण्ड आनन्द पाता है शिवजी अष्टमूर्ति करके संसार में प्रसिद्ध हैं इससे बारहों सूर्य शिवजी के भक्त हैं बारहों सूर्य के शिवजी वर देनेवाले हैं वे मुख्य शिवजी के सेवक हैं सिवाय इसके पांचों देवता शिवजी के सेवक हैं जिस तरह सब नदियां समुद्र में गिरती हैं उसी प्रकार सब देवता शिवजी में लीन होते हैं शिवजी सर्वरूप होकर काशी में अपनी पूजा कराते हैं जो कोई शिवभाव छोड़ कर और की पूजा करे अर्थात् और देवता को भी शिवरूप न जानकर उस देवता के भाव से पूजन करे वह महामूर्ख जड़ पशुवत् है यह वेद कहते हैं शिवजी सबमें प्रकट हैं और वे निर्गुण ब्रह्म आनन्द देनेवाले हैं यह सुनकर नारद अति प्रसन्न हुये फिर ब्रह्मा से पूछा कि यह बारहों प्रकार के सूर्य काशी में अपना रूप धारण करके स्थित हुये फिर उन्होंने क्या किया वह सब वर्णन कीजिये ।

नवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! जब कि सूर्य काशी में स्थित रहकर शिव के पास लौट न गये तब शिवजी अति विकल हुये और खेद से आंसू बहाने लगे और बोले कि काशी पाकर कब हमारा दाह मिटेगा हाय सूर्य भी लौटकर न आये इसी प्रकार बहुत धीरे २ रो रोकर काशी को बहुत स्मरण किया और कहा

जो काशी का समाचार लावे उसको सब कुछ देने को उपस्थित हूं पर हां वेदज्ञ ब्रह्मा निस्संदेह वहां का वृत्तान्त लासक्के हैं यह समझ मुझे बुलाया और अति आदरकर बैठाया और यह कहा कि हमारे भाग्य फिर गये हैं आगे जो हमने योगिनी-गणों और सूर्य को भेजा था वह लौट नहीं आये नहीं जानते कि क्या कारण है काशी का प्रेम मेरे मनमें प्रिया के समान है जिसका स्मरण बना रहता है हमको मन्दरगिरि पर प्रेम नहीं जैसा कि मछलियों को ताल नहीं भाता इस तरह विष भी दुःख नहीं देता जिसतरह कि काशी का वियोग दुःख दे रहा है यद्यपि चन्द्र भाल पर है पर काशी के वियोग का दाह नहीं मिटता इसलिये हे ब्रह्मन्! हम तुम से एक इच्छा करते हैं कि तुम हमको प्राण के समान हो तुम काशी में जाकर हमारा कार्य पूरा करो कुछ विलम्ब मत करो मेरे दुःख का विचार करो तुमको काशी की यात्रा का पुण्य प्राप्त होगा हमारा दुःख दूर होगा यह सुन हम हंस पर आरूढ़ हो काशी की ओर गये और अपने भाग्य की बड़ाई की हमने दुर्बल ब्राह्मण बन काशी में प्रवेश किया और राजा दिवोदास को देखा सो राजा तुरन्त उठ खड़ा हुआ और उसने हमको आदर सन्मानकर बैठाया फिर आगमन का कारण पूछा मैंने कहा कि मैं तो बहुत समय से यहां रहता हूं और तुमको भलीभांति जानता हूं पर तुम मुझको नहीं जानते तुम्हारे बराबर संसार भर में कोई राजा नहीं है तुम तो महीसुर देशपाल हो और तुम्हारी प्रजा, सन्तान, भाई, बन्धु आरोग्य और अच्छे हैं तुम्हारे भय से देवताओं को शक्ति नहीं कि शुद्धमार्ग छोड़ अशुद्ध को स्वीकार करें मनुष्य किस गणना में है हम जिस कार्य को आये हैं वह यह है कि मैं यज्ञ किया चाहता हूं मेरे पास शुद्ध धन देवता आदि उपस्थित हैं और

तुम्हारी राजधानी श्रीकाशी कर्मभूमि है और सर्वोपरि है सिवाय शिवजी के और कोई संसार भर में काशी से उत्तम नहीं जैसा कि वेद कहते हैं धर्म छोड़ने से सब जगह बड़ा पाप होता है पर काशी में शिवजी की कृपा से कुछ पाप का भय नहीं काशी शिवजी का दूसरा शरीर है वह मानो मोक्ष देने को मुक्तिरूप है तुम जो शिव के प्रसन्न करने को काशी का पालन करते हो यही कारण है कि किसी की युक्ति तुम पर नहीं चलती सिवाय इसके एक और बात मैं तुमको बताता हूं कि सिवाय विश्वनाथ शिवजी के और कोई प्रणाम के योग्य नहीं जिनके प्रणाम करने से सब॰ का मनोगत मिलता है तुम और देवताओं के समान शिव को न जानना वे सबसे श्रेष्ठ हैं जैसा कि वेद कहते हैं विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, अग्नि, पवन आदि सब शिव की प्रसन्नता के निमित्त उपजे हैं जो ब्राह्मण कि कुछ प्रतिफल राजाओं को दिया चाहते हैं वे इसी प्रकार का उपदेश देते हैं इससे हमने भी तुमको यह उपदेश दिया कि तुम्हारी इच्छा पूरी हो जावे आप हमारे यज्ञ में सहायता दें यह कह ब्राह्मण चुप हो गया राजा ने उत्तर दिया कि तुम आनन्दपूर्वक यज्ञ करो जो इच्छा हो वह आप लेवें मैं सर्व प्रकार से आपका सेवक हूं जो मेरे घर में है वह निस्सन्देह आपका है मेरी सब सामग्री और प्रताप सब औरों के निमित्त है क्योंकि वेद में प्रजा का पालन बड़ा धर्म कहा गया है और प्रजा के दुःखी होने से जो अग्नि उपजती है वह बहुत ही तीक्ष्ण वज्र की अग्नि से भी अधिक फल रखती है क्योंकि वज्र की अग्नि तो केवल थोड़े मनुष्यों को जलाती है और प्रजा के दुःख की अग्नि तो सबको भस्म कर डालती है हे ब्राह्मण ! हमारी यही रीति है कि मैं सर्व ब्राह्मणों का दास हूं जिनसे मेरे दुःख नष्ट होजाते हैं जब

मुझको स्नान की इच्छा होती है तो मैं ब्राह्मणों का चरण धोकर उसी से अभिषेक करता हूं और जो ब्रह्मभोज करता हूं उसको सौ यज्ञसे कम नहीं समझता मेरी इच्छा अहर्निश यह रहा करती है कि मेरे घर कोई अतिथि आवे मुझको अपने धर्म की सौगन्द है कि मेरी इच्छा पूरी हुई कि आप मेरे घर पधारे आप यज्ञ करें मैं सहायता दूंगा यह बात सुनकर ब्राह्मण प्रसन्न होकर हरिसर में यज्ञ करने को गया और राजा की सहायता से दश अश्वमेध यज्ञ किये वह स्थान दशाश्वमेध यज्ञ के नाम से प्रसिद्ध होकर तीर्थ होगया और गङ्गा के निकट होने से वह स्थान और भी मुक्तिदायक होगया हम उसी स्थान पर शिवलिङ्ग स्थापित कर स्थित हो गये और राजा में कोई दोष न पाया यद्यपि हमने बड़ी युक्ति की और काशी को सर्वगुणसम्पन्न पाकर हम भी शिवजी के पास लौटकर न गये चाहे हमने शिवकी अवज्ञा की पर हमको कुछ संशय न उपजा क्योंकि जो कोई काशीजी का सेवन करता है उस पर शिव क्रोध नहीं करते काशी निर्भयता और निष्कण्टकता का स्थान है वहां शिवजी के भक्त निर्भय रहते हैं बड़े २ पापी काशी में रहकर अपने पापों का कुछ भी विचार नहीं करते देखो सूर्य ने क्या पाप करके काशी में शरणली शिवजी को काशी गिरिजा से अधिक प्रिय है काशी मुख्य शिवजी की देहहै हरएक मनुष्य वहां जाकर दोषोंसे पवित्र होजाता है वहां यमराज से भी पापी नहीं डरते और वहां किसी देवता की आज्ञा नहीं चलती जो आनन्द पापियों को काशीजी में है वह वैकुण्ठ में भी नहीं जो मनुष्य काशी में शिवलिङ्ग की स्थापना करे वह अपने मन में किसी बड़े पापको न डरे यही जानकर हमने शिवजी का लिङ्ग अपने स्थान में स्थापित किया उसका नाम ब्रह्मेश्वर महादेव है वे सर्व मनोरथों के पूर्ण करनेवाले

हैं जो इस कथा को सुनता है उसके सब दुःख दूर होते हैं।

दशवां अध्याय।

इतना सुनकर नारदजी ने पूछा कि हे ब्रह्मन्! जब आप काशीजी में स्थित होगये तो फिर सदाशिवजी ने क्या किया ब्रह्माजी प्रेमसागर में डूबकर और शोचकर बोले कि हे नारद! अपने भक्तों के निमित्त शिवजी निर्गुण ब्रह्म मनुष्य के समान होकर लीला और चरित्र करते हैं जब हमको आने में विलम्ब हुआ तो शिवजी वारम्बार चिन्तित होकर रोने लगे जिह्वा से अक्षर नहीं निकलता था नेत्रों से आंसू चलते थे काशी के स्मरण में कहने लगे कि जिस तरह काशी मुक्ति देनेवाली है ऐसा कोई क्षेत्र संसार में नहीं जिसको हम भेजते हैं वही वहां रहजाता है योगिनी जाकर वहां भोगिनी होगईं और ब्रह्माजी ऐसे बुद्धिमान् होकर निरुपाय हो वहीं रहगये इसी प्रकार बहुत शोच कर जो बातें मनुष्यों की हैं वह उन्होंने कीं अर्थात् शिव-जीने अपने गणों को बुलाया सो ३५ गण शिवजी के समीप आये उनके यह नाम हैं शंकुकरण, महाकाल, घण्टाकरण, महोदर, सोमनन्द, नन्दसेन, कालपिङ्गल, कुकुट, कुकूट, मयूर-वाण, गोकरण, तारक, तिलप्रण, सुरतदर्भ, चण्डकेश, विन्द-कल्लाग, कपर्दी, संगलाक्ष, वीरभद्र, किरात, चतुरस्ल, निकुम्भ, तेजाक्ष, भारभूत, अक्षक्षेमक, लाङ्गल, सुखादि, दुःखादि इत्यादि ३५ गण शिवजी को बहुत प्रिय हैं शिवजीने कहा कि तुम सब काशी में जाकर हमारा दुःख दूर करो तुम सब बड़े कार्य करने में कुशल हो सो जिस तरह से कि हमको स्कन्द, गणपति, साख्य, विसाख्य, नैगमेयी, नन्दी, भृङ्गी प्रिय हैं उसीप्रकार तुमभी मुझको प्रिय हो तुमसे काल भी भयभीत रहता है देखो योगिनी, सूर्य और ब्रह्मा जो काशी में हमारी आज्ञा से गये उनकी कुछ

ख़बर नहीं मिली हमको बड़ा दुःख है शंकुकरण ! तुम तुरन्त काशी में जाकर और वहां से लौटकर हमको प्रसन्न करो सो दोनों गण तुरन्त चले जैसे कोई मनुष्य इन्द्रजाल की माया से गुप्त होजावे वे दोनों तुरन्त अन्तर्धान होगये जब कि काशी में पहुँचे तो उनके मन प्रफुल्लित होगये जो चिन्ता मनमें थी दूर होगई वह भी शिवका लिङ्ग स्थापन कर स्थित होगये और शिवके पास न लौटजाने से उनके ऊपर कुछ पाप न हुआ हे नारद ! वास्तव में काशी को जो किसी तरह से पाकर फिर छोड़ते हैं उन्होंने वेद का अर्थ नहीं समझा मानो मिली हुई मुक्ति उनके हाथ से जाती रही है वे बड़े मूर्ख और शिवके विरुद्ध हैं शिवने दोनों की ढील को समझ कर दो गण और भेजे वह भी काशी में शिवलिङ्ग स्थापित कर स्थित होगये शिवके समीप लौट न गये तब तो शिव को बड़ी चिन्ता हुई अपने शिर को हिलाया मन में काशी की बड़ाई की और प्रशंसा करके कहा कि हे काशी ! तुमको महामोहहारिणी कहते हैं परन्तु मेरे लिये मोहनविद्या होगई हमने बहुत गण भेजे तुमने सबको मोह लिया यद्यपि इस बात का निश्चय है पर हम फिर भी और गणों के भेजने में सन्देह न करेंगे क्योंकि बुद्धिमान् उपाय से भूल नहीं करते अपनी सिद्धि के लिये उपाय नहीं छोड़ते क्योंकि भाग्य के लौट जाने पर कार्य करनेवाला आनन्द नहीं पाता देखो चन्द्रमा सूर्यग्रहण के होने पर भी अपनी गति नहीं छोड़ते पूर्व जन्म के कार्यों का नाम संस्कार है ऐसे संस्कार के दूर करने के लिये उपाय करना उचित है विचार करो कि संस्कार के बल से भोजन पकाने के लिये बरतन आदि सब उपस्थित हैं भोजन भी रक्खा हुआ है पर जब तक हाथ से मुख में न डाला जावे वह अपने आप मुख के भीतर नहीं जासक्ता निदान भाग्य पर

उपाय को प्रबल करके पांच गणों को भेजा पर वह भी काशी में जाकर मृतक पुरुषों के समान फिर न लौट आये उन्होंने भी शिव का लिङ्ग स्थापन कर काशी में रहना अङ्गीकार किया शिवने उनको भी स्थित होते हुये जानकर कहा बहुत अच्छा हुआ और गण भी जाकर इसी तरह स्थित होते जावें क्योंकि हमारे गणों का काशी में रहना हमारे रहने के समान है पीछे हम भी काशी में जाकर रहेंगे यह विचार कर शिवने कराडूर आदि चार गण और भेजे वह भी उपाय करके अधीर होगये और स्वाभिद आदि चार शिव के लिङ्ग स्थापित कर काशी में ठहरे इन चार लिङ्गों की बड़ी महिमा है जिनकी पूजा से फिर पाप सामने नहीं आते शिवने फिर तारकादि २२ गणों को भेजा वे काशी में जाकर सब युक्ति करके थक गये निदान इकट्ठे होकर कहने लगे कि हमको सहस्रों धिक्कार हैं कि शिवके गण होकर उनका काम पूरा न कर सके एक मनुष्य भी हमारे जाल में न आया हम मानो सदाशिव के शत्रु हैं इससे हम सबको नरक प्राप्त होगा क्योंकि जो शिवजी का कार्य नहीं करते वे मानो इन्द्रियों से रहित आयु बिताते हैं उनको पग २ पर नरक है वे करोड़ों शुभ कार्य कर आनन्द नहीं पाते जो सदा-शिव का काम न करके अपना मुख दिखाते हैं उनको अवश्य ही नरक प्राप्त होता है वह मानो दुःख के रूप हैं ऐसी दशा में गणों ने शिवजी का ध्यान किया तब उनको शुभ मति प्राप्त हुई कहने लगे कि जो मनुष्य विश्वासघाती और स्वामी की आज्ञा भङ्ग करनेवाले हैं उनका तीनों लोक में कहीं ठिकाना नहीं लगता केवल उनके लिये संसार भर में एक ही काशीजी का स्थान है उसी के रहने से वह पापों से शुद्ध होजाते हैं ऐसे वेद के वचनों को स्मरण कर निश्चयपूर्वक राजा से छिपकर

काशी में स्थित होगये और पिछली चिन्ता को भुला दिया और राजा ने भी उनको नहीं जाना उन्होंने शिवलिङ्ग अपने अपने नाम से स्थापित किये उन लिङ्गों की सेवा से किसने क्या नहीं पाया कपर्देश्वरलिङ्ग की बड़ाई कौन बखान सक्ता है उसी स्थानपर विमलोदक जिसके जल के स्पर्श करने से मनुष्य शिव के समान होजाता है उसका इतिहास आनन्द देता है वह इस तरह पर है कि त्रेतायुग में एक वाल्मीकि ऋषीश्वर शैव काम और इच्छाजित हुये वह उसी कुण्डपर स्नान कर तप करते थे एक दिन उन्होंने एक बड़े भयानक पिशाच को देखा सो ऋषीश्वर ने उसको मलिन स्वरूप से देख दुःख का कारण पूछा और उस पर प्रसन्न हुये और उसको कुण्ड के भीतर शिवलिङ्ग दिखाकर स्नान कराया और उसके सर्वाङ्गमें भस्म लगा दी जिससे वह पिशाच मुक्ति पाकर सुन्दर स्वरूप धार शिवपुरी को चला गया उसी समय से यह कुण्ड संसार में प्रसिद्ध हुआ उसका नाम पिशाचमोचन है एक शिव के योगी को वहां भोजन कराने से कोटि ब्रह्मभोज का फल मिलता है जो इस इतिहास को सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द पावेगा इस कपर्देश्वर लिङ्ग के सिवाय और गणों के स्थापित किये हुये लिङ्ग भी वहां अतिप्रतिष्ठित हैं उनकी पूजा-कर सब गण आनन्द में रहे और अन्य जीव भी जो उनकी सेवा करते हैं वे निस्संदेह शिवरूप हैं यह कथा अतिआनन्द देनेवाली है जो इसको पढ़कर कोई यात्रा को जावे वह सदा आनन्द में रहेगा कभी उसको दुःख प्राप्त न होगा और उसको भूत पिशाच कभी दुःख न दे सकेंगे।

ग्यारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शिवजी अपने गणों के न

लौटने से अतिचिन्तित हुये कहा कि अब कौन जावे राजा ने मुझको बड़ा दुःख दिया हमारी भाग्य विपरीत है क्योंकि हम को कोई मित्र दिखाई नहीं देता यह विचार फिर कुछ शोचकर हँसे और काशी का स्मरण कर कहा कि जो काशी में रहते हैं वह मानों मेरे उदर में समाये हुये हैं उनको कुछ भय नहीं है जैसे हव्य को यज्ञ में जलते हुये कुछ भय नहीं जो काशी में लिङ्ग के स्थित करनेवाले हैं वह हमारे जङ्गम लिङ्गवत् हैं जो शिव की कथा सुनकर शिव काशी मुख पर लाते हैं वे उच्चगति पाते हैं पांच कोसतक काशी हमारा शरीर है वहां जो रहते हैं उनको अति आनन्द मिलता है जो काशी सेवन करते हैं वे हमारे शत्रु और पापी नहीं हैं हम ऐसी काशी की बड़ाई भली भांति जानते हैं मुक्ति तो काशी की लौंड़ी है जो हमारे शुद्धमन के भक्त हैं उनको भी यह काशी की बड़ाई विदित है इसी से हमारे गणों ने काशी की बड़ाई समझ कर दृढ़तापूर्वक काशी में अपना स्थान बनाया है नहीं तो वह और किसी तरह से मुझको छोड़ वहां न रह सक्ते अच्छा हुआ उनके भाग्य उत्तम हैं अब औरोंको भी भेजना उत्तम है यह दृढ़ विचारकर गणपति को बुलाकर आदर और प्यारकर गोद में बैठाल लिया और कहा कि दिवोदास जो काशी में राज्य करता है वह हमको बड़ा दुःख देरहा है क्योंकि उसी के कारण काशी मुझ से छूट गई सब देवताओंको बड़ा दुःख है जबतक कि वह राज्य करता है हम काशी में नहीं जासक्ते आगे जो अच्छे लोग हम ने काशी में भेजे वह सब वहां रह गये मुझे काशी के देखे हुये विना चैन नहीं आता ऐसा कौन है जो वहां जाकर हमारा काम करे हमारे गणों में कोई ऐसा दिखाई नहीं देता जितने हमारे गण हैं वह सब युद्ध के कामों में प्रवीण हैं पर उनमें कोई

ऐसा बुद्धिमान् नहीं हमको कोई ऐसा देख नहीं पड़ता तुम्हारे भाई स्कन्दने भी बड़ा काम किया है केवल तुम्हीं हमको बुद्धि-मान् भासते हो तुम सब काम बुद्धि के बल से करते हो जिसको जैसा चाहो तुरन्त वैसा ही करोगे इससे तुमको उचित है कि तुम आपही हमारा काम पूरा करो और काशी में जाकर स्थित होजावो और सब गणों समेत छिपे छिपे रहकर राजाको दुःख पहुँचावो जिससे हमारा काम निकले और जो पिता पुत्र में प्रीति होती है उसी को प्रकट करके हमारा कार्य सिद्ध करो यह कह शिव और गिरिजा दोनों ने आशिष और स्तुति के उपरान्त गणपति को भेज दिया गणपति चलकर मार्ग में नाना प्रकार के उपाय शोच आनन्दपूर्वक काशी में पहुँचे और ब्राह्मण का स्वरूप धार काशी में प्रवेश किया चलने में अच्छे शकुन हुये तो गणेशजी ज्योतिर्विद् ब्राह्मण होकर काशी में घूमने लगे सब काशीवासी बड़ी प्रीति से उनका आदर सन्मान करने लगे जब गणेशजी का आदर पूर्णरूप से काशी-वासी करने लगे तो उन्होंने एक यह नई बात रची कि रात्रि के समय आप मनुष्यों के अन्तःकरण होकर उनको दुस्स्वप्न दिखाने लगे और फिर प्रभात को उसी स्वरूप से उनके घरों में जाकर स्वप्नफल कहते थे उनको जहां तक कि दुस्स्वप्न थे कि जिनका फल भी बहुत बुरा होता है सब दिखा दिये जिनके सुनने से बहुतेरे मनुष्य काशी छोड़ इधर उधर भाग गये और गणेशजी ने किसी के ग्रहों को बुरा बताया जिनके सुनने से लोगों को बड़ी चिन्ता उपजी इसी प्रकार ऐसे बहुत उपायों से काशीवासियों को दुःखी किया और माया करके घरों के भीतर जाकर स्त्रियों के मनों में बड़ा सन्देह उपजाया जिसके सुनने से स्त्रियों को आश्चर्य हुआ ऐसी ऐसी बातों से गणेशजी से

सब स्त्री पुरुष प्यार करने लगे यहां तक कि दिवोदास की स्त्री भी गणेशजी को प्रिय जानने लगी स्त्रियां परस्पर गणेशजी की अतिप्रशंसा करती थीं कि जैसा हमने यह ब्राह्मण देखा है ऐसा कोई आज तक नहीं देखा न सुना इसकी बात असत्य नहीं होती यह ब्राह्मण महाशीलवान् बुद्धिमान् है यह तो थोड़े ही जलमात्र से प्रसन्न हो जाता है और यह अति सुन्दर, निष्क्रोध, शान्त, बड़े आनन्द के साथ दूसरों के उपकार के लिये तत्पर रहता है किसी की निन्दा नहीं करता यह बड़ा बुद्धिमान् है अहंकारी व्यभिचारी कृपण नहीं इसके सब काम अच्छे हैं और यह बुद्धिमान्, पवित्र, दृढ़ स्वभाव, बड़ा उदार, प्रतिष्ठित, शौचयुक्त, दयाभाव सहित है किसी से दान नहीं लेता दूसरों की पीड़ा जानता है इसी प्रकार जो शुभ गुण हैं वह सब इसमें पाये जाते हैं यह उत्तम गुणों की खानि है और ज्योतिष विद्या भलीभांति जानता है इसके बराबर कोई देखा सुना नहीं गया निदान रानी गणेश को राजमन्दिर में ठहरा कर उनका आदर करती एक दिन दिवोदास की स्त्री लीलावती ने अवकाश पा राजा से बिनती की कि हे राजन्! एक ब्राह्मण यहां आया है वह मानो सर्वविद्याओं की खानि है जाना जाता है कि वह ब्रह्म है जो शरीर धारण किये आया है हे राजन्! वह दर्शन करने के योग्य है राजा प्रसन्न होकर कहने लगा कि उसको हमारी आज्ञा से बुलावो सो लीलावती रानी ने अपनी सखी भेजकर उसको बुला लिया जब गणेशजी निकट पहुँचे तो राजा ने देखा कि मानो ब्रह्मतेज आप स्वरूप धारण किये चला आता है राजा ने अगवानी कर बड़ी प्रसन्नता से प्रणाम किया गणपति ने वेद के मन्त्र से आशीर्वाद दिया फिर राजा ने बिठाया दोनों ओर से कुशल प्रश्न और आदर के उपरान्त वार्त्तालाप

हुआ जोकि वह दोनों धर्मवान् और बुद्धिमान् थे इसलिये ऐसी संगति से राजा ने अति प्रसन्न होकर गणेशजी को तो विदा कर दिया और अपनी रानी की प्रशंसा करने लगा और उससे कहा कि जो प्रशंसा तुमने ब्राह्मणकी की वास्तव में यह ब्राह्मण उसके योग्य है यह त्रिकालज्ञ है अब हम कल प्रभात को ब्राह्मण को बुलाकर भविष्य के लिये कई प्रश्न करेंगे सो प्रभात होते ही राजा ने गणेशजी को बुलाया और बहुत प्रकार के बहुमूल्य रत्नादि उन्हें भेंट दिये और अलग ले जाकर ब्राह्मण से यह पूछा कि मैंने देश का राज्य किया और प्रजा को पुत्र के समान पाला मैंने धर्मपूर्वक भोग भी बहुत किये और हर प्रकार के दान भी दिये और ब्राह्मणों के चरण पूजने के उपरान्त मैंने कोई दूसरी बात नहीं जानी इससे बढ़कर कोई बात नहीं समझी मैं ब्राह्मणों से श्रेष्ठ देवताओं को नहीं जानता देवताओं ने मेरे ऊपर क्या २ उपद्रव नहीं किये पर ब्राह्मणों के चरण पूजने के कारण मेरा कुछ न होसका मैंने अपने धर्म को किसी समय नहीं छोड़ा और न मेरी कुछ निन्दा हुई पर ऐसी बातों के कहने से कुछ लाभ नहीं अब मेरी इस बात को सुनिये कि मेरे मनमें अब कोई अभिलाषा नहीं रही न किसी वस्तु की इच्छा होती है मेरे मन में त्याग बसा है न जानूं मुझे क्या होगया आप भलीभांति विचार कर मुझे इसका उत्तर देवें ब्राह्मण ने कहा कि जो आपने मुझसे पूछा है तो मैं अवश्य ही इसका उत्तर दूंगा क्योंकि बिन पूछे राजाओं के सामने कोई उत्तर देना योग्य नहीं यह बात राजनीति और वेदके विरुद्ध है, जिससे आपका मन नहीं लगता उसको हम कहते हैं निश्चय जानना कि तुम बड़े भाग्यवान् हो क्योंकि तुमको ब्राह्मणों से इतना प्रेम है तुम्हारा शरीर यश कीर्ति से

अलंकृत हो विद्या में सबसे श्रेष्ठ हो तुम्हारे बराबर इन्द्र भी नहीं है क्योंकि सृष्टिभर की कला सब तुम में हैं तुम बड़ाई में विष्णु के समान हो तुम्हारा तेज अग्नि के समान है सत्यता में धर्मराज के समान हो युद्ध में निर्ऋतिके समान धन में कुबेर के सदृश हो आज्ञा देने में रुद्र की बराबरी रखते हो भार उठाने में शेष के समान क्रोध में सूर्य प्रसन्नता में चन्द्रमा हो बुद्धिमानी और निपुणता में बृहस्पति और गम्भीरता में समुद्र हो नीति में तुमको भृगु के समान कहना उचित है ऊँचाई में हिमाचल पर्वत और राज्य के कारण तुमको राजा मनु कहना उचित है पवित्रता में गङ्गा नाम के समान मुक्ति देने में काशी हो और दाह के दूर करने में मेघ नाश करने में शिव पालन करने में विष्णु और यश करने में ब्रह्मा और वाचालता में सरस्वती और सुन्दरता में कामदेव हो और पद्मा अर्थात् लक्ष्मी आप तुम्हारे हाथ में हैं क्रोध में हलाहल विष और वचन में अमृत यह लक्षण मुख्य तुम्हारे मुख से प्रतीत है जैसा कि हमने वर्णन किया अब और सुनिये कि अठारह दिन के पीछे उत्तरसे एक ब्राह्मण तुम्हारे पास आवेगा वह जो तुमको उपदेश करे उसे सत्य समझना उसके कहने को मानना तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा यह कह ब्राह्मण राजा से आज्ञा लेकर अपने डेरेको लौटगया और राजा यह वचन ब्राह्मण का सुन प्रसन्न हुआ और इस भेद को गुप्त रक्खा और समय को देखता रहा और गणपति भी अपने पिता की आज्ञा पूर्ण करने से अतिप्रसन्न हुये और अपने बहुत स्वरूप कर काशी में स्थित रहे जब कि काशी दिवोदास के अधीन न थी उस समय में भी गणेशजी काशी के बहुत से स्थानों में वर्तमान थे सो वही स्थान गणेशजी ने भलीभांति सजाये एक सिद्धस्थान है जब कि विष्णु ने

आकर राजा को भगाया तब शिवजी ने फिर काशी को सिरे से बसाया अर्थात् शिवजी ने मन्दरगिरि से आकर सबसे पहिले गणेशजी की बहुत प्रशंसा की फिर अपने मन्दिर में जाकर बड़े आनन्द से रहे हर प्रकार से अपनी पुरी काशी की रक्षा करने में लगे रहे चारोंओर योगिनीगणों को रक्षा के लिये स्थापित किया और सात और गणों को स्थापित किया आठवीं ओर ब्रह्मा और विष्णु को रक्षा के निमित्त रक्खा जो भक्तों को बड़ा आनन्द देते हैं यह शिवचरित्र दोनों लोक में अति आनन्द-दायक और सबकी कामना देनेवाला है ।

बारहवां अध्याय ।

इतना सुन नारदजी बोले कि दिवोदास ने क्योंकर राज्य छोड़ा और शिवजी क्योंकर पर्वत से उतरकर काशी में पहुँचे क्या २ चरित्र किये विस्तारसे वर्णन कीजिये ब्रह्माजीने कहा कि शिवजीने जबकि गणेशको भी देखा कि काशीसे लौट न आये तो अति चिन्तित हुये और महाखेद की दृष्टिसे विष्णु की ओर देख कर कहा कि तुम संसार भर का आनन्द देनेवाले और विश्वम्भर हो हमको तुम प्राण से भी अधिक प्रिय हो तुमसे कौन अधिक आनन्द देनेवाला है हमने बहुत मनुष्यों को काशी भेजा पर वे सब वहां स्थित होगये न तो वे लौट आये न हमारा काम पूरा किया न जानिये कि उनपर क्या दुःख पड़ा हमको काशी के देखे विना चैन नहीं हमको काशी प्राण से भी अधिक प्यारी है यह बात हम सत्य कहते हैं जोकि तुम हमारे मन का सब सुख दुःख जानते हो इससे मैं इच्छापूर्वक तुमसे कहता हूं कि तुम आप जाकर हमारा काम पूरा करो पर तुम भी औरों के समान कि जैसा उन्होंने किया है वैसा न करना तुम तो सब योग्य हो हमारी प्रेरणा से तुमने बहुत अवतार लिये हैं जिस तरह

हमारा काम हो करना तुमको कुछ पाप न होगा अधिक क्या समझावें तुम हर प्रकार से सब कार्य करने के योग्य हो विष्णु ने कहा कि आप तो परब्रह्म हैं जब जो इच्छा आपकी होती है वही करते हैं हमारा निश्चय इसी पर है यश अपयश के दिल-वानेवाले आप ही हैं डूबी हुई नाव के आप ही केवट हैं जिसको आप अपनी आज्ञा दें उसके बड़े भाग्य हैं वेद ने इस बातको भलीभांति वर्णन किया है अर्थात् जिसको आप अपना सेवक समझ लें वह भाग्य से भरपूर है अपनी बुद्धि के अनु-सार सब कोई उपाय करते हैं परन्तु सिद्धि आपके अधीन है संसार में सब कार्य मुरदे के समान हैं और यह जीव भी स्वाधीन नहीं पर आप सब कर्मों के साक्षी और जीवदान देने-वाले हैं और मन्त्र भी तुम्हारे अधीन है तुम्हारी सेवा से शुभ मति उपजती है उसी से सर्वकार्य पूर्ण होते हैं आपकी सेवा किये हुये विना न तो शुभकार्य और न सिद्ध कर्म पूर्ण होते और न कोई कार्य पूरा होता इस जीव को केवल तुम्हारी ही शुभदृष्टि से आनन्द मिलता जो कार्य कि होने के योग्य नहीं जो वे भी बुद्धिमानी और युक्ति के साथ तुम्हारे स्मरणपूर्वक किये जावें तो ऐसे कार्य भी सिद्ध हों उनमें कुछ विघ्न न हो तुम्हारी प्रदक्षिणा करके किसी मनोरथ को जावे तो सब काम निकलसक्ते हैं आप कृपा करके जो मुझको भेजते हैं मैं अवश्य माया के बल से काम पूरा करूंगा मुझको कुछ मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरे लिये केवल वही मुहूर्त शुभ है जब कि आपने आज्ञा दी मैं जाता हूं प्राणों के जाने पर भी मैं कार्य करने से न हटूंगा आप कृपा की दृष्टि रक्खें यह कह विष्णुने शिवजी को बार२प्रणाम किया और उनकी स्तुति और भजन कर काशी को चले दूरही से काशी को देखकर प्रसन्न होगये और

शिर झुका काशी को प्रणाम किया और काशी के भीतर शुभ शकुन होते हुये गये जहां पर गङ्गा और वरुणा परस्पर मिली हैं सबसे पहले विष्णु उसी स्थान पर गये और हाथ पांव धोकर सचैल स्नान किया और जो दुःख उनको काशी के वियोग से था वह दूर होकर मन निर्मल होगया उसी दिन से वह स्थान पादोदक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ और अपने स्वरूप को विष्णु ने उस स्थान पर पूजा जिसकी पूजा से पापियों को पाप से मुक्ति मिलती है वही मूर्ति आदिकेशव के नाम से प्रसिद्ध है उस स्थान को श्वेतद्वीप कहते हैं सिवाय इसके उस स्थान पर और वहुत तीर्थ जैसे क्षीरदधि है जिसके स्नान से दुःख दूर होजाते हैं और शङ्खतीर्थ जो उससे दक्षिण है और उससे दक्षिण चक्रतीर्थ और गदातीर्थ और पद्मतीर्थ और रमातीर्थ और गरुड़तीर्थ और नारदतीर्थ और प्रह्लादतीर्थ आदि हैं उनमें स्नान करने से सर्व पाप छूट जाते हैं और दुःख और शोक का नाम भी नहीं रहता अन्य तीर्थ विस्तारभय से वर्णन नहीं किये।

तेरहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि विष्णु अपनी केशवीनामक मूर्ति में प्रवेश कर कुछ २ अंशों से निकल शिवके कार्य में प्रवृत्त हुये इस बातको सुन नारदजी ने पूछा क्यों विष्णुजी अंशांशी होकर निकले और कहां गये ब्रह्माजी बोले कि जिस कारण पूरा रूप विष्णु का केशवी मूर्ति से बाहर न निकला वह यह है कि जब अगले जन्म के पुण्य प्रकट होते हैं तब काशी मिलती है फिर वेद ने कहा है कि कदाचित् काशी अपने भाग्य से मिल जावे तो फिर उसे छोड़ना न चाहिये त्याग करनेवाला अतिपापी भाग्यहीन और मूर्ख है और जिस पर शिवजी की कृपा नहीं होती वह काशी में नहीं रह सक्ता जिस पर शिवजी वहुत ही

प्रसन्न होते हैं वह सदा काशी में रहता है जो मनुष्य काशी में स्थित नहीं होते उनका जन्म वृथा है संसार के सर्वतीर्थ सेवकों के समान काशी की सेवा करते हैं काशी महाश्रेष्ठ और तीनों लोक से निराली है जिसके रहनेवाले पापी नहीं हो सक्के काशी के बराबर और वस्तु नहीं है उसका सेवन तप, यज्ञ, पूजा आदि के समान है वहां का चाण्डाल भी और देशों के राजा से श्रेष्ठ है तीनों लोक में सब स्थानों पर पाप का भय है पर काशीवासी जीवों को नहीं देवताओं को इच्छा रहा करती है कि हम काशी में मरें क्योंकि वहां मरने से स्वर्ग से भी अधिक आनन्द मिलता है हे नारद! इसी से विष्णु अपने पूर्ण स्वरूप से केशवीरूप धार काशी में स्थित हुये और अपने एक छोटे अंश से जो उसी मूर्ति से निकाला काशी के भीतर गये और गरुड़ और लक्ष्मी भी उस स्थान से कुछ दूर उत्तर की ओर स्थित हुये उस स्थान को जहां गरुड़ और लक्ष्मी स्थित हुये धर्मक्षेत्र बोलते हैं जिसके दर्शन से आनन्द प्राप्त होता है विष्णुने अपना स्वरूप इस प्रकार का धारण किया जो तीनों लोक को अधीर कर देवे कि अपने को उत्तमोत्तम वस्त्रों से भूषित किया और मधुरवाणी और ज्ञान ध्यान से सम्पन्न होकर आपको पुण्यकीर्ति नाम से प्रसिद्ध किया और गरुड़ भी पुण्यकीर्ति अर्थात् विष्णु के शिष्य होकर विनयकीर्ति के नाम से विख्यात हुये जो पोथी हाथ में लिये गुरु की सेवा में लगे और लक्ष्मी भी मनुष्यों के समान उत्तम स्वरूप धारण किये गोमोक्ष नाम से प्रसिद्ध हुईं और हाथ में पुस्तक लिये हुये मानो मूर्तिकार ने चित्र खींच लिया है जीवों का धैर्य उस रूप अनूप के देखने से जाता है सो विष्णु अपना स्वरूप बदल यह चरित्र करने लगे कि जब उनके देखने के लिये काशीवासी समूह के समूह आये तो विष्णु और गरुड़

गुरु चेले की तरह परस्पर संवाद करने लगे शिष्य गुरु की स्तुति कर कहता कि हे गुरो! वह धर्म वर्णन कीजिये जिससे संसार को आनन्द मिले तब गुरु अपने मनमें मुसकरा ऊंचे शब्द से सबको सुनाकर कहने लगे कि हे शिष्य! यह सृष्टि अनादि है इसका कर्ता कोई नहीं यह पुरानी है इसी प्रकार चली आती है अपने आप उपज कर फिर आप ही नष्ट हो जाती है यही बात अच्छे लोग और वेद कहते हैं ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त बराबर जन्म और मृत्यु में हैं आत्मा ही ईश्वर है सिवाय आत्मा के और कोई स्वामी नहीं ब्रह्मा आदि जो देवता कहे जाते हैं काल ने उनको भी खाने से नहीं छोड़ा हां कोई शीघ्र उपजता है कोई विलम्ब में मरता है पर शरीर धारण करके सब मरजावेंगे जो इस बात पर निश्चय करता है वही चतुर है जो मन में विचार करो तो प्रकट होगा कि संसार में न कोई बड़ा है न छोटा है न कोई दुःखी है न सुखी है आहार विहार में सब समान हैं न कोई बुरा है न अच्छा है न कोई पापी है न पापरहित क्योंकि भोजन सबको तृप्त करता है पानी सबकी प्यास बुझाता है स्त्री चाहे किसी प्रकार की हो भोग करने में समान है सवारी चाहे किसी प्रकार हो उससे प्रयोजन केवल चढ़ने का है बिछौना चाहे कैसा ही हो सोने में जो आनन्द प्राप्त है वैसा सबमें सुख है और सबको देवताओं समेत मृत्यु का भय लगा हुआ है और ब्रह्मा विष्णु भी मृत्यु से डरते हैं जो शरीरधारी हैं वे बुद्धि विद्या और मन में एक से हैं यह सब झगड़ा मिथ्या है केवल एक बात अवश्य ध्यान रखने के योग्य है कि किसी जीव को दुःख देना बड़ा पाप है और जीवों पर दया करने के समान कोई धर्म नहीं चार वेद अठारह पुराण छःशास्त्र इस बात पर एकमति हैं और दान चार बड़े हैं रोगी को औषध देना

भयभीत को निर्भय करना, भूखे को भोजन कराना, विद्यार्थी को विद्या पढ़ाना और औषध और मन्त्र के प्रभाव से धन सञ्चित कर अपने शरीर को पालना यहां नरक स्वर्ग दोनों हैं और किसी जगह विचार न करो सुख को स्वर्ग और दुःख को नरक जानो आनन्द से मरना भी मुक्ति है और वासना सहित क्लेश के दूर होने को प्रमोक्ष अर्थात् मुक्ति समझना चाहिये वेद में जो दो प्रकार की आज्ञा है एक प्रवृत्ति दूसरी निवृत्ति उनका आशय यह है कि जो जीवहिंसा है वह प्रवृत्ति है और जिस स्थान में जीवों पर दया है उसको निवृत्ति समझना चाहिये और वेदान्तों का यह वचन है कि अगले प्रमाणों से अधिक और कोई विश्वास योग्य प्रमाण नहीं सो विचार करो कि यह लोग तृण काष्ठ को काटकर जीवों को मारडालते हैं और तिल घी आदि आग में जलाते हैं कि स्वर्ग मिले इससे और कौन आश्चर्य की बात है इसी प्रकार के और भी बहुत धर्म कहे और सब काशी के निवासी मोहित होगये और पुराने धर्म से विमन होने लगे और इसी प्रकार लक्ष्मीजी ने भी काशीकी स्त्रियों को धर्म सिखाकर अपने अधीन करलिया और बौद्धधर्म को उन्हें सुनाकर उनकी इच्छा पूरी की और शरीर के पालने की शिक्षा दी और पातिव्रत धर्म को दूर करा दिया अपने उपदेश से वर्णाश्रम को मिटा दिया उनके उपदेश का संक्षेप यह है जो स्त्रियों को सुनाया कि वेद जो आनन्दब्रह्म स्वरूप कहते हैं सो वह बहुत जन्म का नहीं है यह बात अशुद्ध है बरन उसका आशय यह है कि यह तन जब तक इन्द्रियों समेत परिपूर्ण है तब तक आनन्द करना चाहिये और जो कोई मनुष्य मांगे तो शरीर भी दे देना चाहिये जिससे कि केवल पृथ्वी का भार है इसकी उत्पत्ति पर धिक्कार है जिस शरीर को कौवे, कुत्ते, स्यार,

कृमि, कीट अपना भक्ष्य समझते हैं उसका नाश अवश्य है एकदिन जल जावेगा उसके रखने से क्या लाभ है ? इससे उत्तम है कि इससे और जीवों को लाभ पहुँचे और जो कि सर्वसृष्टि के उपजानेवाले अकेले ब्रह्मा हैं तो सब लोग परस्पर भाई के समान हैं फिर उन्होंने परस्पर विवाहादि करके कुछ धर्म पर विचार न किया इस समय के मनुष्य बड़े बुरे मन के हैं व्यर्थही वेद पर चलते हैं जो मनुष्य चारवर्ण वर्णन करते हैं सो विचार करने से चारोंवर्ण का होना सूचित नहीं होता क्योंकि शरीर पृथ्वी है जहां से चार पुत्र उपजे सो चारोंवर्ण अलग २ क्योंकर होसक्के हैं यह जाति का विचार करना मिथ्या है और भी ऐसी बातें झूठ हैं जाति कुछ नहीं यह बातें केवल वाग्जालही हैं बरन यह समझना चाहिये कि मनुष्य सब बराबर हैं इसी तरह और बहुत बातें सिखलाकर स्त्रियों के पातिव्रत धर्म को छुड़ाया सो स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी होकर अपनी २ इच्छा के अनुसार परपुरुषों और परस्त्रियों के साथ भोग करने लगे और राजा के पुत्र अपनी दासियों के साथ बिगड़ गये पुरुष स्त्रियों के कहे पर चलने लगे जो स्त्री ने कहा वही किया इसी प्रकार सब मनुष्य धर्म के विरुद्ध कार्य्य करने लगे जिससे चारों ओर पापरूपी सेना फैल गई सिद्धभी ऐसे अधर्म के कारण राजा समेत प्रतापहीन हुये और राजा दिवोदास ने ब्राह्मण का वचन स्मरण कर राज्य से हाथ खींच लिया और मनुष्यों की यह दशा देखकर ब्राह्मण की बात को सत्य जाना वह मार्ग देखता था कि कब ब्राह्मण आवे और मेरा दुःख दूरहो इसी विचार में रात दिन डूबा रहता किसी से कुछ मनकी बात न कहता ।

चौदहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि जब अठारहवां दिन आया जैसा कि ब्राह्मण

अर्थात् गणपति ने कहा था तो राजा अति प्रसन्न हुआ और भोर की निद्रा से उठकर नित्यकर्म से छुट्टी की और ब्राह्मण के आने की बाट देखने लगा सो दोपहर के समय विष्णुजी ब्राह्मण के स्वरूप से कई विप्रों को साथ लिये हुये अग्नि समान तेज धारे आये राजा ने दूर से देखा समझा कि वही उपदेश करनेवाले ब्राह्मण आते हैं तो बहुत प्रसन्न हुआ और अगवानी कर प्रणाम किया और आशीष पाने के अनन्तर ब्राह्मण को अन्तः-पुर में ले गया पूजन, यजन और सेवन के उपरान्त उनका बहुत आदर और सम्मान किया और उत्तमोत्तम भेंट दी और अपने भाग्य की सराहना करने लगा जब देखा कि उनका परि-श्रम दूर होगया तब राजा ने विनती की कि हे महाराज! मैं सदा दुःखी रहा करता हूं इसका कारण जाना नहीं जाता राज्य का भार तो कुछ जाना नहीं जाता मैं क्या करूं कहां जाऊं जिससे मेरा कष्ट मिटै और मुझे आनन्द प्राप्त हो इसी चिन्ता में एक मास बीत गया है पर मेरा कष्ट नष्ट नहीं होता फिर अपने राज्य पालन प्रताप विजय और ब्राह्मण के मान करने का वर्णन करके कहा कि मुझको दुःख के उपजने का यह कारण जाना जाता है कि मैंने अपने तपोबल से गर्ववान् होकर देवताओं को तृणवत् समझा है मेरी यह दशा है कि मैंने सब भोगों को भोगा पर अब मुझको रोगरूप भासित होते हैं रीति है कि जो कोई मनुष्य बराबर एक कल्पपर्यन्त जीता रहे तो भी वह मरने से नहीं बचता और मुझको राज्य करना चक्की के चलाने के समान हो गया है इससे आप ऐसा उपदेश करें जिससे हम आवागमन से छूटें मैं आपकी शरण में आया हूँ जो आप मुझसे कहें उसको आधीनतापूर्वक स्वीकार करूंगा मुझको तो आपके दर्शन से अति आनन्द मिला है मुझको

इस बात का भी विचार आता है कि देवताओं की शत्रुता से किसी ने भी आनन्द नहीं पाया जैसा कि त्रिपुर, राजा बलि, वृत्रासुर, उपव्रत, दधीचिमुनि, सहस्रबाहु आदि की कथायें साक्षी हैं इन सबको इन्हीं देवताओं ने नष्ट कर दिया वरन उन्होंने शिवको बहकाया और छल किया यद्यपि उनमें बहुत से शिव के पूजक थे तौ भी शिव के हाथों से नष्ट होगये देवताओं के भी बड़े २ छल हैं इसलिये बहुत से मनुष्यों का वचन है कि देवताओं की शत्रुता आनन्द नहीं देती पर मुझको इस बात का कुछ भय नहीं है कि देवता मुझसे विरुद्ध हैं क्योंकि मैं ब्राह्मणों का सेवक हूं जो बड़ाई देवताओं ने यज्ञ, जप, तप से प्राप्त की है वह मैंने ब्राह्मणों की सेवा से पाई है हम उनके समान हैं कुछ भी कम नहीं मुझे आपसे यह इच्छा है कि आप मेरे उपदेश करनेवाले होकर मुझे आवागमन से छुड़ा देवें यह सुनकर विष्णुजी ब्राह्मण का रूप धारे थे उन्होंने दिवोदास की बड़ी प्रशंसा की और कहा हे राजन्! जो कुछ कि हमको कहना था वह तो तुमहीं कहचुके हो तुमने जो कहा वह सत्य है तुम्हारे प्रताप को हम जानते हैं तुम्हारे समान न कोई राजा हुआ है न होगा तुमने देवताओं के साथ कुछ शत्रुता नहीं की क्योंकि तुम बुद्धिमान् हो तुम धर्मात्मा और वेदज्ञ हो तुम्हारे राज्य में कोई कार्य वेद के विरुद्ध नहीं होता तुमने प्रजा अच्छी तरह पाली जिससे देवताओं को भी आनन्द प्राप्त हुआ है पर हां मुझे एक बड़ा पाप मालूम होता है अर्थात् तुमने जो शिवजी को काशी से दूर कर दिया यह बड़ा भारी पाप हुआ जो यह पाप किसी ढब से दूर होजावे तो अति प्रसन्नता के साथ तुम्हारे तीनों प्रकार के रोग दूर होजावें अब इसके दूर करने का केवल उपाय यह है अर्थात् वेद का वाक्य यह है कि

जो कोई मनुष्य शिव का लिङ्ग स्थापित करता है उसके सर्व पाप नष्ट होजाते हैं वह हर प्रकार से निर्मल होजाता है मनुष्य के शरीर में जितने रोम वर्त्तमान हैं उतने पाप शिवलिङ्ग स्थापन करनेवाले के विनाश को प्राप्त होते हैं मुख्य करके काशी में शिवलिङ्ग स्थापन करके किसी पाप से स्वप्न में भी डरना न चाहिये जो काशी में एक लिङ्ग भी शिवजी का स्थापित कर दे तो मानों बहुत देशों में शिवलिङ्ग स्थापित कर चुका समुद्र के रत्नों की संख्या है जो उसमें उपजते हैं पर शिवलिङ्ग के स्थापित करने की बड़ाई असंख्य है इससे उचित है कि आप शिवलिङ्ग की स्थापना करें इससे तुम बड़े यशवान् होगे और अपना मनोरथ पाओगे विष्णु ने यह कहा और चुप होकर कुछ देर तक पढ़ पढ़ाकर राजा के शरीर को अपने हाथ से स्पर्शकर कहा कि हमने ज्ञानदृष्टि से देखा है वह तुमसे कहता हूं धन्य है तुमको तुम बड़े ज्ञानी शुभ गुणयुक्त हो तुम्हारे समान पृथ्वी पर दूसरा राजा नहीं जिस मनुष्य को कुछ धन अथवा देश की इच्छा हो वह प्रभात के समय प्रतिदिवस तुम्हारे नाम को जपे हम तुम्हारे समीप आने से अति लाभयुक्त हुये यह कहकर ब्राह्मण हँसते हुये बार २ शिर को हिलाने लगे और फिर कहा कि इस राजा के बड़े भाग्य हैं जो अब मुक्ति पावेगा जिस किसी को हम, ब्रह्मा, इन्द्र, देवता, मुनि आदि और शेष ध्यान करते हैं वे शिवजी उस राजा को प्रति दिन स्मरण करते हैं जैसे इसके भाग्य हैं वैसे तीनों लोक में किसी के नहीं उसको संसार के अलभ्य पदार्थ प्राप्त हैं इस तरह बहुत बातें अपने मन में समझ फिर ध्यान छोड़ राजा से कहने लगे कि हमारी इच्छा पूर्ण हुई तुम इसी शरीर से परमपद चले जाओगे सर्व प्रकार से परम आनन्द पाओगे जब तुम शिवजी का लिङ्ग

स्थापित करोगे तब तुम शिवपुर में जाकर मृत्यु से छूटोगे आज के सातवें दिन शिवजी के गण तुम्हारे लेने को आवेंगे तुम किस धर्म का फल इसको जानते हो हम केवल काशीसेवन से सम- झते हैं कि तुमने वही पद पाया जिसने काशी की भक्ति भले प्रकार की वह तुम्हारे समान कृतार्थ हो जाता है क्योंकि काशी- सेवन करनेवाला शिव को बहुत प्रिय है यह कहकर ब्राह्मण अर्थात् विष्णु चुप हो गये राजा अति प्रसन्न हुआ और शिष्य समेत राजा ने विष्णुरूपी ब्राह्मण को उनकी आज्ञानुसार सब कुछ दिया और कहा कि तुमने मुझको भवसागर से पार उतारा जो कुछ कि मैं आपको दूं वह सब तुच्छ है सो विष्णु विदा होकर अपने स्थान को गये और काशी सर में अमणाकर वहीं स्थित हुये और स्नान के उपरान्त शिवपूजा की और गरुड़ को शिव के समीप भेजा और शिव के आगमन की बाट देखते रहे और अग्निविन्दु ब्राह्मण को देख कृपा किया और पञ्चनद के ऊपर बैठकर प्रीति से शिव का स्मरण करने लगे ।

पन्द्रहवां अध्याय ।

नारद के प्रश्न करने के उपरान्त ब्रह्माजी बोले कि राजा ने ब्राह्मणरूपी विष्णु से उपदेश पाकर अपने प्रभृति जनों को बुलाया सो सब राजा, प्रजा, मन्त्री, मण्डलेश्वर अपने परिवार, पुरोहित, यज्ञ करानेवालों, सेनापतियों, सेना, राजकुमारों और वेदपाठियों आदि सहित आये फिर राजा ने रिपुंजय अपने बड़े पुत्र को बुलाया फिर अपनी सर्व स्त्रियों को बुलाया जब सब आ चुके तो जो ब्राह्मण ने कहा था वह सब हाथ जोड़कर प्रसन्नता के साथ सबको सुना दिया और कहा कि अब हम सात दिन और पृथ्वी पर हैं फिर अवश्य ही शिवपुरी को जावेंगे यह सुन- कर सब लोगों को आश्चर्य उपजा पर किसी ने राजा के भय

से कुछ न कहा फिर राजा तुरन्त उठकर घर के भीतर गये और सामग्री इकट्ठीकर शुभ लग्न पा रिपुंजय को युवराज का अभिषेक किया फिर काशी में आकर बड़ी सामग्री इकट्ठी की और गङ्गा के पश्चिम की ओर शिव की पूजा की और जितना धन देशों के जीतने से इकट्ठा किया था और जो द्रव्य कि शुभ रीति से संग्रह हुआ था वह सब शिवालय के बनाने में व्यय कर दिया काशी में वह स्थान प्रसिद्ध है उसकी बड़ाई तीनों लोक में विख्यात है जिसके केवल स्मरण करने से कुछ दुःख नहीं उपजता उस शिवालय में शिवलिङ्ग नरेश्वर के नाम से स्थापित किया फिर राजा के मन में अति प्रसन्नता उपजी और उसका मुख सूर्य के समान चमकने लगा कारीगरों को बड़ा पारितोषिक दिया सब बाजे बजने लगे और सब काशी के देवताओं अर्थात् वासियों को बहुत कुछ दिया और अन्य मनुष्यों को भी भरपूर कर दिया और सब सामग्री इकट्ठी करके षोडशोपचार से पूजा की राजा के मन में दुःख था वह दूर होगया राजा ने शिव को सबसे श्रेष्ठ समझा और काशी के रहनेवालों को जो मनुष्यरूप में शिव हैं बहुत आदर किया और जितने लिङ्ग काशी में सुनने देखने या विचार से विदित होते हैं उन सबकी पूजा कराई और जितनी काशी में देवताओं की मूर्तियां थीं उनको भी पूजा फिर शिव के ध्यान में डूबा और सिवाय शिवलिङ्ग के और किसी देवता की राजा ने आप पूजा न की और पूजन और प्रणाम के अनन्तर ध्यान में मग्न हुआ जब विष्णु के बताने के अनुसार सातवां दिन आया उस दिन राजा ने शिवलिङ्ग की बड़ी पूजा की और पूजन और प्रणाम के उपरान्त स्तुति करने लगा तब आकाश से उत्तम विमान पृथ्वी पर उतरा उसके ऊपर शिव के गण चारों ओर बैठे थे उन सबके चार २ भुजा थीं जिनका

तेज दूर तक फैल गया सूर्यवत् दीप्ति थी वे सब हाथों में त्रिशूल लिये हुये थे उनके पांच २ मुख और तीन २ आंखें उत्तम सुन्दर शरीर जटाजूट धारे सर्पों से अलंकृत सत्र नीलकण्ठ शशि भाल पर शरीर में भस्म रमाये शरीर भर में सर्प लिपटे निदान हर बात में शिव के समान थे और बहुत स्त्रियां भी विमान पर विराजमान थीं जो अपने हाथ में चँवर लिये हुए थीं मानों संसार भर की सुन्दरता केवल विमान में आ बैठी थी शिवगण विमान से उतरे और उनसे अपनी पूजा ली और गणों ने राजा की आज्ञानुसार राजा के शरीर को स्पर्श किया सो राजा तुरन्त ही देवताओं के समान दिव्यदेह होगया उसके शरीर में सम्पूर्ण लक्षण शिव और गणों के समान प्रतीत हुये और तुरन्त विमान पर आरूढ़ हो अपनी समाज सहित गणों के साथ शिवपुर में गया और गणों में गिना गया मुक्ति प्राप्त हुई और वह स्थान जहां से राजा शिवपुर को गया था भूपाल श्री के नाम से बड़ा तीर्थ हुआ जो लिङ्ग दिवोदासेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है उसकी पूजा से फिर मनुष्य को आवागमन का भय नहीं रहता यह बड़ा पवित्र इतिहास है जिसके पढ़ने सुनने से मन के मनोरथ पूरे होते हैं कुछ कष्ट नहीं रहता तीनों लोक में सिद्धि प्राप्त होती है ।

सोलहवां अध्याय ।

नारद के प्रश्न के उपरान्त ब्रह्मा बोले कि हे नारद ! विष्णु की आज्ञानुकूल गरुड़ शिव के समीप आये और आदर सम्मान कर खड़े हो स्तुति की शिव ने पूछा कि तुम कहां से आये गरुड़ ने कहा कि सब वेद पुराण और सब गण इस बात पर एक मति हैं कि संसार में वह सबसे अधिक चतुर है जो आपकी सेवा और आज्ञा पालन करे यद्यपि आप सब कुछ जानते हैं पर आप संसारी रीति से पूछते हैं पर मुझको इन बातों से क्या प्रयोजन

है मैं हर प्रकार से सेवक हूं यह कहा और सब योगिनीगणों, गणेश और विष्णु के चरित्र की सब कथा वर्णन की और कहा कि विष्णु ने मुझको आपके पास भेजा है यह सुनकर शिवजी हँसे और गिरिजा अतिप्रसन्न हुई और वीरभद्र के आनन्द का वर्णन नहीं हो सक्ता इसी प्रकार और सब गण भी महाप्रसन्न हुये शिवजी ने गरुड़ से कहा कि तुम हमारे बड़े हितकारी हो तुमसे अधिक और कोई मुझको प्रिय नहीं जो इच्छा हो वह मुझसे वरदान ले लो तुम हमारे उत्तम भक्त और प्राण से प्यारे हो हमारी आज्ञा से विष्णु के वाहन हुये गरुड़ ने प्रीति-सागर में डूबकर विनय की कि मुझको और वर क्या चाहिये इससे अधिक और क्या है कि हमने आपके चरणों को देखा इन्हीं चरणों के प्राप्त होने को ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि आदि कैसा २ तप करते हैं जब कि आप मुझ पर प्रसन्न हुये तो मैं माया के बन्धन से मुक्ति पा चुका मुझको यही बड़ा वरदान है हां जो आपने प्रसन्न होकर वर के लिये कहा है तो मेरी यह इच्छा है कि मुझको भक्ति प्राप्त हो आपके चरणारविन्द की प्रीति कदापि कम न हो आपके भक्तों की सेवा करूं किसी से शत्रुता न हो शिवजी ने कहा कि यही होगा फिर शिवजी ने सबको बुलाकर चलने की तय्यारी की उस समय मन्दरगिरि महा-दुःखी हो शिवजी के चरणों पर गिरपड़ा और कहा कि महाराज मुझे मत छोड़ो शिवजी बोले तुम खेद न मानो तुमको मैं बहुत प्यारा जानता हूं हम तुम पर लिङ्गरूप होकर स्थित रहेंगे और मन से तुमको कभी न भुलावेंगे इसी प्रकार बहुत समझाकर उसका कष्ट दूर किया और लिङ्गरूप होकर मन्दरगिरि पर स्थित हुये फिर काशी जाने लगे और शुभ लग्न पाकर चले चलने के समय सबको बड़ा आनन्द हुआ जिस तरह शिवजी

गिरिजा और पुरीसहित चले और जो प्रसन्नता चलने के समय हुई उसको कोई कोटि मुख से भी वर्णन नहीं कर सक्ता शिवजी ने गरुड़ से कहा कि तुम आगे जाकर विष्णु को हमारे आने का समाचार दो सो गरुड़ उसी समय विष्णु के समीप आये जब कि विष्णु अग्निबिन्दु नामी एक मनुष्य को उपदेश दे रहे थे कि गरुड़ ने पहुँच कर विष्णु को प्रणाम किया।

सत्रहवां अध्याय।

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! प्रणाम के उपरान्त गरुड़ ने विष्णु से कहा कि महाराज! शिवजी आते हैं यह सुनकर विष्णु अतिप्रसन्न हुये और ध्वजा देखी जो असंख्य सूर्यों के समान झलकती और जिसके प्रकाश से चारों ओर उजियाला होगया नानाप्रकार के बाजों का शब्द सुना जय २ हुआ यह सामान देख विष्णु ने भी कहा कि जय शिव फिर अग्निबिन्दु से कहा कि हमारा चक्र छूले कि तुझको मुक्ति प्राप्त हो सो अग्निबिन्दु ने ऐसाही किया और मुक्त हुआ और गरुड़ को सब कुछ देकर ब्रह्मा को बुलाया और योगिनीगण और सब सूर्यों को साथ लेकर गणेश के समीप आये और ब्रह्मा को सबके आगे करके प्रसन्नतापूर्वक चले और काशी के भीतर शिव को देखकर प्रणाम किया हमने चावल, फल, फूल हाथ में लेकर रुद्रसूक्त पढ़ आशिष दी क्योंकि हमको शिवने संसारी रीति से प्रणाम करने को निषेध किया उन्होंने संसारी जीवों के समान आप मुझे प्रणाम किया और विष्णु ने शिव को प्रणाम किया गणपति की ओर जब शिवने देखा तो गणपति चरणों पर गिरपड़े शिवने गणपति को उठाकर शिर सूंघने के उपरान्त अपने आसन पर बैठाया और बहुत प्रकार से गणेश की प्रशंसा की योगिनीगण शिवकी इच्छा पाकर प्रणाम के उपरान्त

मङ्गल गाने लगीं और बारहों सूर्यने भी प्रणाम किया शिवने विष्णु को अपने आसनपर बाईं ओर बैठा लिया और इसको दाहिनी ओर बैठाया और गणों की ओर देखकर केवल देखने ही से उनका सत्कार किया और योगिनियों का शिर हिलाकर आदर किया और बारहों सूर्य से यह कहकर कि बैठ जाओ आनन्द दिया तब जब कि शिव काशी से बाहर बैठे थे उत्तमोत्तम सभा अलंकृत थी कौन ऐसा था जो उससमय आनन्द से फूला न समाता और काशी के मनुष्य तालाब के कमल के समान विराजमान थे और जोकि चन्द्रमा शिवके वियोग से मुख मूंदे थे शिवके आने से फूल उठे उस समय हमने शिवको प्रसन्न देखकर बिनती की कि हे सदाशिव! मुझसे कुछ आपकी सेवा हो नहीं सकी इसको क्षमा करना फिर काशी की बड़ाई वर्णन की शिवने कहा कि हम तुमसे प्रसन्न हैं तुम कुछ भय मत करो तुम किसी प्रकार दण्ड के योग्य नहीं क्योंकि पहिले तो ब्राह्मण हो जिसकी बड़ाई बहुत है दूसरे अश्वमेधयज्ञ करने से कोई पाप नहीं रहता तीसरे तुमने हमारे लिङ्ग काशी में स्थापित किये इससे तुम्हारे सब पाप नष्ट होगये जो मनुष्य काशी में एक लिङ्ग भी स्थापित करे उसके असंख्य पाप नष्ट होजाते हैं सिवाय इसके ब्राह्मण से चाहे हजारों पाप हों पर वह दण्ड के योग्य नहीं जैसा कि वेद कहते हैं जो ब्राह्मण को दण्ड देते हैं उनका आनन्द थोड़े ही दिनों में जाता रहता है इसी प्रकार शिवने योगिनी सूर्य और गणों को भरोसा देकर उनकी लज्जा दूर की फिर शिवने विष्णु को देखा पर जिह्वा से कुछ नहीं कहा और मन में शिव और विष्णु दोनों अति प्रसन्न हुये उस समय सबों ने शिवकी बार २ स्तुति की सो शिव और गिरिजा बहुत प्रसन्न हो शुभदृष्टि से

सबकी ओर देखने लगे उस समय गोलोक में पांच गौ आकर शिवके सम्मुख खड़ी हुईं जो शिवको अतिप्रिय हैं और जिनकी सेवा के लिये विष्णु को गोलोक में बसाया उनके नाम सुनने से सर्वपाप नष्ट होजाते हैं देवता और पितरों को आनन्द प्राप्त होता है उनके नाम यह हैं सनन्दा १ सुमना २ शिवा ३ सुरभि ४ कपिला ५ शिवने प्रसन्नता से उनकी ओर देख दिया सो उनके थनों से दूध टपक कर कुण्डरूप होगया जो कपिला-ह्रद के नाम से प्रसिद्ध हुआ उसमें स्नान से कोई पाप नहीं रहता शिवकी आज्ञा से सब देवताओं ने उसमें स्नान करके तर्पण किया और शिवसे कहा कि यहां स्नान करने से हम अति प्रसन्न हुये हैं तुम्हारे धर्म से हमने अतिप्रसन्नता प्राप्त की हमारी इच्छा है कि इस स्थान की बड़ाई बहुत हो शिवने कहा कि हे विष्णु और सब देवता ! हम कहते हैं कि यह सब से बड़ा तीर्थ है जो मनुष्य इसमें तर्पण श्राद्ध आदि करेगा उसको गया से भी अधिक फल प्राप्त होगा इसको शिव-गयाख्य तीर्थ कहेंगे और हमारे नाम वृषभध्वजादि कहकर एक पाप भी किसी को न रहेगा और दूध, शहद, घी, जल के समान चारोंयुग में काशी के भीतर वर्त्तमान रहेंगे इससे हम सब अंशस्वरूप से स्थित होंगे और सबको वर देंगे और यहां चाहे कोई किसी दशा में मरेगा उसको मुक्ति दी जावेगी शिव काशी को यह वर दे रहे थे कि नन्दीश्वरगण आये दोनों हाथ जोड़ प्रीति से शिव की स्तुति करने लगे ।

अठारहवां अध्याय ।

नन्दीश्वर ने कहा कि हे महाराज शिवशंकर दीनबन्धु ! एक कृपा की दृष्टि इधर भी करदीजिये मैंने आपकी आज्ञा से आठ बैल का रथ सजाया है जिनके गले में घण्टे पड़े हुये हैं और

आठ घोड़े जिनकी गर्दन में भूषण पहिनाया गया है रथ में लगे हैं और सूर्य, चन्द्रमा, पवन, गंगा, सरस्वती, ब्रह्मा, व्याहृति आदि सब अपने २ उचित स्थानों पर अलंकृत हैं अर्थात् यह सब रथ की सामग्री हैं ऐसा जो रथ बना हुआ है उस पर आप सवारी कीजिये यह कह नन्दीश्वर चुप हो गये और विष्णु हम और देवता आदि अति प्रसन्न हुये और शिवने भी प्रसन्न होकर दया की दृष्टि से देख पूर्ण भक्ति कृपा की फिर शिवजी ने चलने का उद्योग किया सब लोग इस इच्छा को जान गये फिर सुरभाताओं ने नीराजन करके शिवजी की स्तुति की उस समय बड़ा उत्सव हुआ सब मनुष्यों की जिह्वा से जय २ शब्द प्रकट हुआ नाना प्रकार के बाजे बजने लगे शिवजी को उठते हुये जानकर विष्णु ने अपना हाथ दिया शिवजी उठ खड़े हुये गणों ने अपने २ डमरू बजा दिये जिससे चारों ओर शब्द पूरित हो गया और तीनों लोक के निवासी आये जिनका व्योरा संक्षेप से वर्णन करते हैं अर्थात् तेंतीस करोड़ इन्द्रादि देवता दो कोटि तुरङ्गगण एक कोटि भैरवीदल नवकोटि चामुण्डीसमाज और वीरभद्र की सेना और दूसरे गण अष्टकोटि जो बालक समान हैं और छियासी हजार मुनि ब्रह्मज्ञानी और सप्तकोटि गणेशजी के गण श्रीगणाधिप के साथ जिनका स्वरूप श्रीगणेश के समान था हाथोंमें फरसा लिये और घरों के रहनेवाले अन्य ब्राह्मण और आठ कोटि पाताल के निवासी नाग अर्थात् तक्षक आदि तीन कोटि गये और शिवजी के नौकर दनु और दिति की सन्तान अर्थात् दैत्य और दानव दो दो कोटि आये आठकोटि गन्धर्व और आधा करोड़ राक्षस और यक्ष और पङ्खवाले पर्वत और बे पर के आठहज़ार और गरुड़ छः अयुत और एक अयुत विद्याधर और साठहज़ार

ईश्वर और तीनसौ वंशपती और वनकी ओषधि आदि शरीर धारण किये और आठलाख सात समुद्र उत्तमोत्तम रत्न भेंट लिये और तीनहज़ार और पांचअयुत नदियां और आठों दिग्गज सब उस स्थानपर आये जहां शिव थे और शिव को देखकर अतिप्रसन्न हुये सब मिलकर शिवजी की सेवा करने लगे और हर्ष से खिलखिलाते थे कोई नाचता था कोई गाता था कोई जय २ का शब्द उच्चारण करता था कोई ध्यान में लगा था कोई शिर से पांव तक शिव के स्वरूप को देखता था कोई शिवजी पर चँवर डुलाता था कोई हाथ जोड़ स्तुति करता इस प्रकार सबको सेवा करते देख शिवजी ने सबकी ओर कृपा की दृष्टि से देख दिया और सबका आदर करके शिवजी रथ पर चढ़े और गिरिजा को बाईं ओर वैठाया जब शिवको गिरिजा समेत रथ पर विराजमान देखा तो इन्द्रादिकों ने बड़ी स्तुति की इसी प्रकार विष्णु और हम सबोंने अपनी २ स्तुति पढ़कर सुनाई सो शिवजी सबकी ओर कृपा से देखकर काशी के भीतर गये और अपने शरीर काशी को देखकर वहुत ही प्रसन्न हुये और जय काशी और जय आनन्दवन इसी प्रकार बहुत से वचन शिव मुखपर लाये और प्रेम की अधिकता से शरीरभर गद्गद हुआ जिह्वा रुकने लगी उस समय जैगीषव्य शिवजी के भक्त ने गुफा से निकल कर शिवजी के दर्शन किये शिवजी ने भी उनको निकट बुलाकर दर्शन दे प्रसन्न किया फिर काशी के निवासी सर्व ब्राह्मण आये शिवजी उनका भी आदर करके वरुणा के निकट पहुँचे और दो मन्दिर हिमाचल के बनाये हुये देखकर प्रसन्न हुये आगे जाकर अपने भवन की तय्यारी के लिये विश्वकर्मा को आज्ञा दी सो विश्वकर्मा ने शिवजी की आज्ञा से तुरन्त राजगृह निर्मित किया जिससे तीनों लोक से अधिक

सामग्री लगाई शिवजी का मन्दिर अति आश्चर्यदायक तय्यार हुआ सो शिवजी गिरिजा पुत्रों गणों और देवताओं आदि समेत अति प्रसन्न हो उसमें प्रवेश कर गये सर्वदुःख नष्ट होगये और संसारी रीति के अनुसार सबको प्रतिष्ठित करके बिदा करा दिया और आप गिरिजा और परिवार समेत वहां जाकर प्रसन्न रहे जो इस चरित्र को सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसको बहुत ही आनन्द प्राप्त होगा यह शिवजी और काशी का आ-ख्यान किसी पाप को जलाये विना नहीं रहता सब पाप नष्ट हो जाते हैं और दोनों लोक के सुख प्राप्त होते हैं और शिवजी गिरिजा और गणों समेत प्रसन्न होते हैं और उसको तीनों लोक में कोई वस्तु अलभ्य नहीं।

उन्नीसवां अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि हे पिता ! जब शिवजी चले तो वह तुरन्त अपने भवन में स्थित हुये वा मार्ग में कहीं ठहरे और जो मनुष्य योगी, ब्राह्मण आदि दर्शनों के निमित्त आये उनका चरित्र विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी ने कहा कि पहिले शिवजी जब काशी में आये तो सबसे पहिले जैगी-षव्य अपने भक्त के घर में गये वह राति दिन एकान्त में रहा करते थे और शिवजी के ध्यान में डूबे रहते उनके प्रेम से शिवजी और गिरिजा और सब गण उनके अधीन थे जब कि शिव काशी को छोड़ मन्दराचल पर्वत पर जा रहे थे तबसे जैगीषव्यमुनि ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं उसी समय अन्न और जल करूंगा जब फिर शिवजी के चरणकमल देखूंगा सो यही उद्योग कर वह एकान्त में जा छिपे और शिवजी के ध्यान में रात दिन रहे सो उन्होंने अठासी हजार वर्षतक न तो पानी पिया न भोजन किया यह बात था तो मुनि ने योगबल

की शक्ति से की वा उनपर शिवजी की पूर्ण कृपा थी मुनि की बड़ाई सिवाय शिव के और कौन जानसक्ता है इसी कारण शिव ने सैकड़ों उपाय अपनी काशी के लिये किये क्योंकि शिव भक्त-वत्सल हैं धर्मात्मा राजा की हानि अपने भक्त के लिये उचित समझी जैगीषव्य की कुटी में शिवजी के जाने की कथा इस भांति है कि शिवजी ने नन्दीश्वर गण को आज्ञा दी कि यहां एक गर्त है जिसके भीतर एक हमारा भक्त जैगीषव्य रहता है उसके शरीर में केवल चर्म और अस्थि रह गई हैं उन्होंने हमारे दर्शन के निमित्त बड़े २ दुःख सहे अर्थात् जब से हमने काशी छोड़ी तबसे वह अन्न जल रहित रहे हैं हमको उन्हें दर्शन दिये बिन आनन्द नहीं इसलिये तुम हमारा कमल गुफा के भीतर लेजाकर इसी कमल से मुनिके शरीर को स्पर्श करना वह भलेचंगे होजावेंगे उस समय तुम तुरन्त उन्हें साथ लेकर आना सो नन्दी ने ऐसाही किया मुनि ने शिव के दर्शन किये और अति प्रेम से मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े जब चैतन्य हुये तो तुरन्त स्तुति करने लगे जो आप उन्होंने बनाई थी और कहा कि मैं तीनों लोक में आपको सर्वोपरि समझ कर आपकी शरण में आया हूं ऐसी स्तुति सुन शिव अति प्रसन्न हुये कहा कि वर मांगो जो हमारा है वह सब तुम्हारा है मुनिने विनय की कि जो आप प्रसन्न हैं तो हमारे शिर पर अपना हस्तकमल रखिये मेरी इच्छा है कि आपके चरणों से कभी दूर न रहूं आपके निकट और आपके प्रेम में डूबा रहूं दूसरी यह इच्छा है कि जो लिङ्ग कि मैंने आपका स्थापित किया है उसमें आप गणपति और स्कन्द सहित स्थित होवें शिवजी बोले बहुत अच्छा ऐसाही होगा और बिन तुम्हारे मांगे हम यह वर तुमको देते हैं कि तुमको योग प्राप्त हो जिससे निर्वाणपद

मिलेगा तुमहीं योगशास्त्र के आचार्य होगे तुमहीं सबको उप-देश करोगे और सब संदेहों को दूर करोगे और जैसे हमारे गण भृङ्गी और सोम और नन्दीश्वर हैं वैसेही तुम भी हमारे एक गण होगे हमारे भक्त जरा और मृत्यु से वर्जित हैं तुम मुझे बहुत प्यारे हो यद्यपि संसार में बड़े २ संयम नियम और भी हैं पर तुम्हारे नियम के समान एक भी नहीं है अर्थात् तुम्हारा नियम है कि बिन हमारे देखे भोजन नहीं करते पानी नहीं पीते वास्तव में जो मनुष्य हमारे दर्शन बिन भोजन करता है उसके समान दूसरा पापी नहीं है और जो हमारी पूजा बिन जल पीता है वह तो मानो नरक में प्रवेश करता है मानो वह बुरी वस्तु का खानेवाला है उसके समान पापी संसार में दूसरा नहीं हम तुम्हारे ऐसे नियम से अतिप्रसन्न हैं तुम हर समय हमारे निकट रहोगे तुमको जीवन्मुक्ति प्राप्त रहेगी तुम्हारी समानता किसी भक्त के साथ तीनों लोक में न की जावेगी तुमको कभी कुछ दुःख न होगा जो लिङ्ग तुमने हमारा स्थापित किया है वह जैगीषव्यकेश्वर के नाम से प्रसिद्ध होगा जो मनुष्य उसकी तीन वर्षतक सेवा करेगा वह पूर्णयोग पावेगा उसके दर्शन से सिद्धि और आनन्द प्राप्त होगा और निन्दा और पाप नष्ट होजावेंगे और जो मनुष्य तुम्हारी गुफा में तुमको प्रणाम और दण्डवत् और स्मरण कर जावेगा वह छः महीने में सुगमता-पूर्वक योग पाकर सिद्ध होजावेगा उसके सब पाप नष्ट होजावेंगे यह हमारी आज्ञा है इसका नाम ज्येष्ठेश्वर क्षेत्र होगा इस स्थान पर आने से सर्व प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त होगी यहां पर एक शिवयोगी के भोजन कराने से करोड़ योगियों के खिलाने का फल होगा और जो तुम्हारा लिङ्ग स्थापित किया हुआ है उसमें हम पूर्णरूप से सदा स्थित रहेंगे पर कलियुग में यह लिङ्ग

सबकी दृष्टि से छिपा रहेगा जो योगी योग के साधनेवाले हैं उनको योग दिया जावेगा उसके दर्शन से सर्व पाप नष्ट करूंगा जो स्तुति तुमने बनाकर पढ़ी वह सब स्तुतियों की शिरोमणि होगी इसके पढ़ने से सब मनोरथ पूरे होंगे बड़े २ पाप जाते रहेंगे पुण्य बढ़ेगा भय दूर होगा सर्वयोग साधने के लिये अति लाभदायक होगा हमारी भक्ति बढ़ेगी हानि न होने पावेगी इसके पढ़ने सुनने से लोक में कोई ऐसा कार्य नहीं जो न हो सकेगा इससे यह तुम्हारी स्तुति युक्ति से पढ़ने के योग्य है और प्रतिदिन सुननी चाहिये यह सुनकर मुनि शिवजी के चरणों पर गिर पड़े और स्तुति करने लगे शिवजी ने उनको पृथ्वीपर से उठा कर अपने हृदय से लगा लिया और विष्णु और हमने भी मुनि को लिपटा लिया ऐसी दयालुता शिवजी की देख सबको आनन्द प्राप्त हुआ सबके मन में शिवजी के प्रेमने बल किया और सबने शिवजी की स्तुति की और शिवजी की सेवा में प्रवृत्त हो जय २ करने लगे जब शिवजी ने आगे जाना चाहा तब सब ब्राह्मण अगवानी को आये ।

बीसवां अध्याय ।

नारदजी ने पूछा कि जो वार्त्ता ब्राह्मणों और शिवजी में हुई वह वर्णन कीजिये वे ब्राह्मण कितने थे ब्रह्माजी बोले कि जब सदाशिवजी काशी को छोड़ मन्दर गिरि पर चले गये थे तब काशी के ब्राह्मणों ने अतिदुःखी हो सम्मति की और अपने घरों का प्रेम छोड़ केवल काशी की प्रीति को दृढ़कर क्षेत्रसंन्यास लिया और शिवजी की प्रीति में अटल हो काशी में स्थित हुये और अपने दण्ड से पृथ्वी खोद वृक्षों के मूलादि निकाल खाते थे उस स्थान का नाम पुष्करिणी हुआ जिसके दर्शन से सब अर्थ पूरे होते हैं उसी स्थान पर उन्होंने शिवलिङ्ग स्थापित किया और सदा

शिव का तप करते रहे और उन्होंने युक्तिपूर्वक रुद्राक्ष की माला पहिन कर शरीर में भस्म लगाई और प्रतिदिन शतरुद्री का जपकर शिवलिङ्ग की पूजा किया करते थे और शिवजी के ध्यान में प्रवृत्त रहकर शिवजी के स्मरण के सिवाय और कुछ नहीं जानते थे और शिवजी के उत्तमोत्तम व्रत रखकर पापों के करने से बचते थे और उन्होंने अपने २ स्थानों में शिवलिङ्ग स्थापित किये थे जब कि ऐसे ब्राह्मणों ने शिवजी का आगमन सुना तो अतिप्रसन्न हो शिवजी के दर्शन को चले उनकी संख्या नीचे लिखे के अनुसार थी।

उस स्थान का नाम जहां से ब्राह्मण आये	संख्या	उस स्थान का नाम जहां से ब्राह्मण आये	संख्या
दण्डाघाट	५०००	ध्रुवतीर्थ	६००
मन्दाकिनीतीर्थ	१००००	पितृकुण्ड	१००
हंसक्षेत्र	३००	उर्वशीह्रद	१००
ऋणमोचनतीर्थ	१२०००	प्रथोदकतीर्थ	१३००
दुर्वासातीर्थ	१२०००	यक्षिणीह्रद	३१००
कपालमोचन	१६०००	पिशाचमोचनकुण्ड	१६००
ऐरावतह्रद	३००	मानसर	३००
मैनकुण्ड	२००	वासुकिह्रद	१ अयुत
गन्धर्वाप्सरसाख्य	६००	सीताह्रद	८००
वृषपतितीर्थ	३६०	गौतमह्रद	६००
वैतरणी	१५०	दुर्गतिहर	११००
गङ्गा के	निकटवर्ति	ब्राह्मण	५५५

यह सब पूर्वोक्त ब्राह्मण शुभ वस्तु हाथ में लिये हुये जय २ कहते शिवजी के समीप आये और शिवजी का एक

दृष्टि से दर्शन कर कृतार्थ हो गये उन ब्राह्मणों ने शंकर-सूक्त पढ़कर स्तुति की शिवजी ने प्रसन्न होकर कुशल पूछी ब्राह्मणों ने कहा जब आप कृपा करते हैं तो कुशल ही है दुःख कोई नहीं और कहा हे महाराज! जब आपने काशी को छोड़ दिया तो हमारे मनों में दुःख ने अपना स्थान किया और हम सबने सम्मति की कि सब छोड़ काशी में पड़े रहैं क्योंकि काशी को शिवरूप करके बखाना गया है यहां के रहने से कुछ हानि न होगी सो हम सब यहां स्थित रहे और आपके ध्यान में लग आपको देख बड़ा फल पाया इससे अधिक और कोई फल वेद ने भी नहीं कहा धन्य है आपकी काशी जो तीनों लोक से निराली है जहां रहने से कोई पाप नहीं रहता यहां रहकर जो आपका ध्यान करे वह सबसे श्रेष्ठ है और वह धन्य है फिर ब्राह्मणों ने काशी की बहुत स्तुति कर कहा कि काशी और शिवजी एकही रूप हैं इतना कह ब्रह्मा-जी बोले हे नारद! वास्तव में काशी शिवका स्वरूप और शिव काशी का अङ्ग हैं यह बात निश्चय करके वेद कहते हैं जैसे कि गौरीशंकर एकही तनु हैं वैसेही काशी और विश्वनाथ एकही हैं इनमें कुछ भी अन्तर नहीं है जैसे कि शब्द और अर्थ में कुछ भिन्न भावना नहीं वैसेही इनमें भी भिन्नता नहीं जो मनुष्य काशी में बसकर शिवका भजन करे उसके समान कोई भाग्यवान् मनुष्य नहीं निदान काशी की प्रशंसा के वचन सुन शिवशंकर अतिप्रसन्न हुये और श्रीमुख से बोले कि तुम सब धन्य हो कि तुम सबने मुझको अपने अधीन कर लिया तुम्हारी जो काशी पर इतनी भक्ति है तो तुम सब मुक्त हो जो काशी के भक्त हैं वे अवश्य मेरे भक्त हैं जो दोनों के भक्त हैं उनकी बराबरी कौन कर सक्ता है जब तुम दोनों प्रकार से मेरे

भक्त हो तुम्हारी बराबर और कोई हमारा भक्त नहीं है तो हर प्रकार से तुम निर्भय होगये हो यह काशी हमको अतिप्रिय है इसके सेवन करनेवाले पापी नहीं होसक्ते यह काशी हमारे सिवाय तीनोंलोक से भिन्न है यहां किसी दूसरे की आज्ञा न यमराज की कुछ चलसक्ती है तुम काशीवासियों से न हम और न काशी दूर है तुमको जो वर चाहिये मांग लो हम प्रसन्नता से देवेंगे काशी में क्षेत्रसंन्यास करनेवाले मुझे अतिप्रिय हैं वे इस भव-सागर से पार उतर जावेंगे ऐसे अमृत वचन शिवजी के सुन वे ब्राह्मण मानों अमृत पीकर जीगये वे सब बार २ प्रणाम करके प्रसन्न हुये और दोनों अपने हाथ बांध सब ब्राह्मणों ने यह वर मांगा कि आप काशी को कभी न छोड़ें हमको केवल यही वर दीजिये और काशी में ब्राह्मणों का शाप किसी पर फल न करे यहां के मरने से सायुज्यमुक्ति मिले और आपके चरणों का प्रेम अधिक हो माया की वन्धि में कोई न फँसे और जो लिङ्ग कि हम सबने यहां स्थापित किये आप उनमें सदा शक्तिसहित स्थित रहें शिवजी बोले कि यही होगा और फिर सबकी ओर दया की दृष्टि से देख सबके दुःख दूर कर दिये और फिर श्रीमुख से काशी की वड़ाई बखान सबको बिदा कर दिया सो सब ब्राह्मण बिदा होकर शिवजी की पूजा में प्रवृत्त हुये और शिवजी वहां स्थित रहकर अपने भक्तों समेत नाना प्रकार की लीला करते रहे।

इक्कीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिवजीने काशी में स्थित होकर विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञा दी कि पूर्वकाल के समान शिव-नगरी तुरन्त रचो और सब उत्तमोत्तम शिवालय बनाओ और गणों के रहने के लिये उत्तमोत्तम मन्दिर सजाओ और देवताओं

के लिये भी उसीके अनुसार भवन रचो और गिरिजा और उनके पुत्रों के लिये मन्दिर अतिसुन्दर निर्माण करो फिर विश्वेश्वरजी महाराज का भवन बनाओ निदान हरप्रकार से हमारा मन्दिर अति सुन्दर बना दो जैसा कि तुमको वर दिया था यह सुन विश्वकर्मा ने अतिकृतकृत्य हो दण्डप्रणाम के अनन्तर सब मन्दिर बनाये जहां जिसका स्थान था वहां नये शिरसे भवनबनाये और उनको मणि और बहुमूल्य वस्तु और नाना प्रकार के रङ्गों से अलंकृत किया गणपति का मन्दिर बड़ी कारीगरी से बनाया जिसे देख आश्चर्य होता है और विश्वनाथ का मन्दिर ऐसा निर्मित किया जिसकी प्रशंसा हम वर्णन नहीं कर सके जो असंख्य रत्नों से अलंकृत और नाना प्रकार की शिलाओं से सुशोभित जिसमें तीनों लोक की सम्पदा लगाई वह सर्वोपरि मन्दिर बना इतना सुन नारद ने प्रश्न किया कि आप विश्वनाथ-जी के मन्दिर का विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! उस सुन्दर मन्दिर की भीतें सुवर्ण की रत्नों से जड़ी हुई जिनके स्पर्श से शब्द होता और वे जलती हुई अग्नि और सूर्य के समान प्रतीत होती थीं उनमें बारह सहस्र खम्भे और इक्यासी २ भूधर थे जिनको देख चौदह भुवन की सुन्दरता लज्जित होती और जो शिलायें कि खम्भों की दृढ़ता के निमित्त लगी हुई थीं केवल चन्द्रकान्तिमणि की थीं और उनमें पद्मराग और मरकतमणि की पुतलियां बनी हुई थीं जिनके हाथों में रत्नों के दीपक बने हुये थे जो रातदिन जला करते थे और उत्तम सफ़ेद पत्थर पर रत्नों की बेलें और बूँटें और सब देव-ताओं की मूर्तियां सुशोभित थीं और जितने रत्नाकर समुद्र में रत्न थे वह सब गणों ने इकट्ठे किये थे और जितनी उत्तमोत्तम मणि नागों के कोषों में थीं वह भी सब गणों ने तुरन्त ला दीं

और रावण ने असंख्य सुवर्ण अपने पास से भेजा था इसी प्रकार और दैत्यों में जो शिवभक्त थे उन्होंने नाना प्रकार के रत्न प्रेषित किये यह जो हमने वर्णन किया इसको केवल संसार की रीति समझना नहीं तो शिव को क्या इच्छा है क्योंकि जो वह चाहें तो असंख्य रत्नों के वृक्ष उत्पन्न कर दें न कि दूसरों का धन लेवें निदान विश्वनाथ के समान दूसरा मन्दिर न था जिसकी शोभा एक मनुष्य से सुन हिमाचल मोहित होगया इतना सुन नारद ने आश्चर्यपूर्वक ब्रह्मा से पूछा कि आप इस कथा को विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि जिस समय में शिव काशी में पहुँच मन्दिर की तय्यारी करने लगे थे उन्हीं दिनों गिरिजा की माता मैना ने अति खेद से ठंढी स्वास भरकर कहा कि बहुत सा समय बीता कि गिरिजा का हाल मैं नहीं जानती मैं निश्चयपूर्वक जानती हूं कि जो गिरिजा को यहां आनन्द था वह वहां क्यों होगा क्योंकि गिरिजा के पति के पास भस्म और बुड्ढे बैल के सिवाय और क्या होगा यह सुनकर हिमाचल अतिचिन्तित हुये कहा कि जब से गिरिजा गई मानों हमारे घर से धन चला गया यह कहकर हिमाचल ने गिरिजा के देखने और उसके धन देने के लिये तय्यारी की और अपने साथ दो कोटि तुला मुक्ता और सौ तुला हीरा और ग्यारह लाख तुला विद्रुनाद और षोडश सहस्र तुला इन्द्रनीलमणि और नव कोटि तुला पद्मरत्न और विद्रुम रत्नादि साथ लिये और उत्तमोत्तम वस्त्र भूषण और छत्र और सोने की कुछ गणना नहीं इसी प्रकार हिमाचल यह सब सामग्री गिरिजा के देने को लदाकर अति अहंकार से मन्दराचल में पहुँचे जब सुना कि शिव काशी को पधारे तो चलकर काशी में आये देखा कि असंख्य रत्नों से मन्दिर अलंकृत है कलश सोने के और पताका उत्तमोत्तम

मणियों की बनी हुई हैं और विश्वनाथजी का मन्दिर जो बहुत ऊंचा और आश्चर्यदायक है देखकर मन में हिमाचल अति लज्जित हो अहंकार हीन हुआ और कहा इससे बढ़कर कोई मन्दिर तीनों लोक में नहीं जो धन इसमें दिखाई देता है वह कुबेर के घर और वैकुण्ठ में भी नहीं है इसी विचार में था कि उसको एक काशी का मनुष्य दिखाई दिया हिमाचल ने पूछा कि वह किसका नगर है उस शिवभक्त को शिवजी ने विदेशियों की सेवा का काम सौंपा हुआ था बोला कि यह शिवपुरी है अभी उनको मन्दरगिरि से आये छःदिन बीते हैं वे अभी ज्येष्ठेश्वर में गिरिजादि सहित रहते हैं तुम तो कुछ मूर्ख जान पड़ते हो कि गिरिजापति को नहीं जानते जिनकी सेवा तीनों लोक करते हैं यह कह उसने काशी का सब वृत्तान्त कह सुनाया फिर जो मन्दिर शिवका काशी में बनता था उसका हाल कहा हिमाचल इस प्रकार से शिवजी को धन में पूर्ण देख अति प्रसन्न हुये और उस पुरुष को बहुत धन दे विदा किया और फिर अपने मनमें शोचने लगे कि शिवजी और गिरिजा महाधनी हैं मैं उनके सामने तृण के समान भी नहीं मैं आजतक सत्यमार्ग भूले हुये था कि शिवजी को दरिद्री जानता था अब मुझे पूर्ण विश्वास हुआ कि शिवजी से बड़ा कोई नहीं है मैं भेंट नहीं करूंगा क्योंकि मेरे पास भेंट करने के योग्य सामग्री नहीं है बहुतही न्यून सामग्री है फिर उसने अपने सेवकों को बुलाकर आज्ञा दी कि रातभर में एक शिवालय बनवाओ शोर न होने पावे क्योंकि जो काशी में शिवालय बनाता है उसके दोनों लोक का दुःख निवृत्त होजाता है सो रात भर में शिवालय बन गया हिमाचल ने चन्द्रकान्तिमणि का शिवलिङ्ग बनाकर शिवालय में स्थापित किया और उसकी स्थापना में असंख्य धन व्यय

किया और एक पाटी जिसमें अपना नाम और गोत्र आदि सब लिखा था शिवालय में लगा दी और तुरन्त पञ्चनद में स्नानकर कामराज शिवजी की पूजा में प्रवृत्त हुये और जो कुछ धन द्रव्य शेष रहगया था वह सब इधर उधर फेंक दिया और आप साथियों समेत घर पहुँचा और हिमाचल ने जो रत्न फेंक दिये थे वह अपने आप इकट्ठे होकर शिवलिङ्ग बन गया यह दोनों लिङ्ग अर्थात् एक जो हिमाचल ने स्थापित किया और दूसरा जो शेष रत्नों से बन गया पञ्चनदह्रद और हरव्रता के तटपर प्रकट हुये यह आख्यान पढ़ने और सुननेवालों के लिये आनन्ददायक और भक्ति का बढ़ानेवाला है।

बाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी! जब प्रभात के समय हरडन और मुण्डन नामी दो गणों ने उठकर दो नये शिवालय देखे तो अतिप्रसन्न हो दौड़ दौड़कर जाके शिवजी से यह सब वृत्तान्त कहा कि महाराज किसी बड़े धनवान् भक्त ने आपका शिवालय वरुणानदी के तट पर बनाया है कल सन्ध्यातक उस स्थान पर हमने कोई मन्दिर नहीं देखा था इस समय हमने देखा है शिवजी ने गिरिजा को रथ पर चढ़ा वरुणानदी के निकट पहुँच शिवालय देखा यद्यपि वह एक रात्रि में बना था पर ऐसा उत्तम था कि उसके समान दूसरा न था शिवजी गिरिजा सहित भीतर गये और चन्द्रकान्तिमणि का शिवलिङ्ग देख उनको यह इच्छा हुई कि इसके बनानेवाले को जानें इतने में उनकी दृष्टि पाटीपर पड़ी उसको पढ़ शिवने गिरिजा से कहा कि अपने पिता के बनाये हुये शिवालय को देखो वह तुम्हारे देखने को यहां आया था पर उत्तम अवकाश भेंट का न पाकरलौट गया और हमारा लिङ्ग स्थापित कर गया तुम्हारा पिता धन्य है अब मुझे वह

बहुत प्रिय जान पड़ता है गिरिजा ने यह बात सुनकर अति प्रसन्नता और प्रेम से कहा कि यह शिवलिङ्ग हमारे पिता ने वरुणा के तटपर स्थापित किया है इससें आप पूर्णांश से रातदिन स्थित रहें और यह लिङ्ग गिरीश्वर के नाम से प्रसिद्ध होकर इस के पूजनेवाले दोनों लोक में आनन्द पावें शिवने कहा यही होगा फिर शिव और गिरिजा ने इस लिङ्ग को और भी बहुत प्रकार के वर दिये और सबसे उस लिङ्ग की पूजा कराई फिर वहां से निकलकर शिव और गिरिजा बाहर आये इधर उधर भ्रमण करते थे जब धीरे २ कालराज के समीप पहुँचे तो कालराज के उत्तर एक उत्तम शिवलिङ्ग देखा गिरिजा बोलीं कि यह लिङ्ग तो इस समय नवीन दिखाई दिया है जिसके तेजका प्रकाश आकाश तक फैला हुआ है इसकी उत्पत्ति, स्वरूप और प्रभा वर्णन कीजिये शिवजी ने उत्तर दिया कि तुम्हारा पिता हिमाचल बहुत रत्नादि लदवाकर लाया था सो हमारा लिङ्ग स्थापित कर जो धन कि उसके पास शेष रहगया था वह यहां फेंक गया उसके पुण्य से सब इकट्ठा होकर यह लिङ्ग बन गया इसका नाम रत्नेश्वर होगा हे गिरिजा! हमारे लिये या तुम्हारे लिये जो कोई मनुष्य भक्तिपूर्वक धन संकल्प करता है उसका फल इसी प्रकार का होता है और दोनों लोक में आनन्द मिलता है और जोकि काशी के शिवभक्तों में यह लिङ्ग रत्नों का है इससे हम इसका नाम रत्नेश्वर रखते हैं और जो सुवर्ण कि तुम्हारा पिता डालगया है उससे तुम इस लिङ्गका शिवालय बनाओ क्योंकि शिवालय बनवाने में सर्व कर्म जो अपूर्ण रहजाते हैं वह पूर्ण होते हैं और लिङ्ग स्थापित करने से हर वस्तु प्राप्त होती है इसी प्रकार कलश चढ़ाने से भी वही फल होता है ध्वजा के स्थापित करने से जितने पर्व ध्वजा के हों उतने कल्पपर्यन्त

वह मनुष्य कैलास में रहता है और वायु के चलने से जितनी बेर वह वस्त्र हिले उतने समय तक वह मनुष्य शिवपुर में स्थिति पाता है यह सुन गिरिजाने गणों को शिवालय बनाने की आज्ञा दी सो सोम और नन्दी आदि गणों ने हिमाचल के फेंके हुये सुवर्ण से शिवालय बना दिया जिसको देख गिरिजाने बहुत प्रसन्न हो सब गणों को बहुत वर दिये फिर शिव ने गिरिजा के कहने के अनुसार रत्नेश्वर शिवलिङ्ग को यह वर दिया कि जो कोई इस लिङ्ग की पूजा करेगा वह मानों सब लिङ्गों की पूजा करचुका यह लिङ्ग अनादि सिद्ध होगा सो एक नाचनेवाली स्त्री केवल रत्नेश्वर शिवलिङ्ग में नृत्यकर मुक्त होगई यह कथा विस्तारभय से वर्णन नहीं की फिर शिव और गिरिजा अपने स्थान पर आये और हर प्रकार के आनन्द में लगे रहे इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव और गिरिजा परब्रह्म हैं केवल संसार की भलाई के लिये ऐसे ऐसे चरित्र और लीला शरीर धारण करते हैं इस चरित्र के पढ़ने सुनने से दोनों लोक में सुख प्राप्त होता है।

तेईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब तक भवन तय्यार नहीं हो चुका तबतक शिव काशी में भ्रमण करते रहे और बहुत से शिवालयों में पहुँच बड़ी लीला और उत्सव किया किये और विराजेशपीठ जो प्रसिद्ध स्थल है वहां पर शिवजी और स्थानों से अधिक ठहरे और त्रिलोचन शिवलिङ्ग जो वहां पर है उसकी बड़ाई वर्णन की और विष्णु से काशी की महिमा और सब शिवलिङ्गों की स्तुति जो काशी में हैं और तीर्थादिकों की बड़ाई वर्णन कर रहे थे कि इतने में नन्दीश्वर ने आकर विनय की कि महाराज भवन बन चुका है मैं रथ साजकर लाया हूं

आप कृपा करके चलिये क्योंकि इन्द्र और ब्रह्मा आदि सब द्वारपर स्थित हैं अब सब की यह इच्छा है कि आप वहां चल-कर सुशोभित होवें शिवजी अति प्रसन्न हो गिरिजा सहित भवन में गये उस समय बड़ी धूमधाम हुई बाजे बजने लगे वेद-ध्वनि ने चारों दिशा पूरित कीं और दान बहुत हुआ उस समय सब लोक भर में आनन्द छागया हम सब प्रसन्न हुये गन्धर्व गानेलगे अप्सरा नाचने लगीं उत्तम पवन बही आकाश से पुष्पों की वृष्टि हुई निदान सर्व सामग्री आनन्द की इकट्ठी हुई उस समय कोई ऐसा मनुष्य न था जिसके मन में कुछ दुःख रहा हो सर्व मनुष्य आनन्दसागर में डूब गये फिर हम, विष्णु और देवताओं ने शिवजी का अभिषेक किया और सब तीर्थों का जल छोड़ा और उत्तमोत्तम वस्त्र और भूषण शिवजी और गिरिजा ने पहिले विष्णु और हम सबने भेंट दी आरती उतारी विष्णु ने एक बेर मुख की चार बेर चरणों की दो बेर नाभि की सातबेर सर्वाङ्ग की आरती उतारी इस तरह चौदह बेर आरती उतारी जाती हैं फिर हम और विष्णु और सब देवतादि ने एक एक स्तुति बनाकर पढ़ी और विनय की कि हमारी पालना प्रसन्न होकर करो यह कह हम सब चुप होगये ।

चौबीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! ऐसी स्तुति सुन शिवजी प्रसन्न हुये और जिसने जो मांगा उसको वही वर कृपा किया फिर विष्णु को हमारे सहित निकट बैठाकर उनसे कहा कि आपके समान हमारा कार्य करनेवाला दूसरा नहीं है तुम्हारी बड़ाई से हमने काशी पाई जो तुम्हारी इच्छा हो वह वर माँगो विष्णुने प्रणाम कर कहा कि हमको अपनी भक्ति कृपा करो शिवजी बोले यही होगा फिर शिवजी ने काशी की बड़ाई वर्णन की फिर मुक्तमण्डप

की गाथा कह सुनाई जहां पर कि महानन्द ब्राह्मण ने मुक्ति पाई थी उसका दूसरा नाम कुकुटमण्डप है यह बात सुनकर नारदजी ने पूछा कि कब से उस स्थान का नाम कुकुटमण्डप हुआ और कृपा करके महानन्द की कथा सुनावो ब्रह्माजी बोले कि विष्णु ने शिवजी से विनय की कि आप मुझको यह भविष्यत् कथा सुनावें मुख्य करके कुकुटमण्डप की कथा कहें कि क्योंकर वह तीनों लोक को सुखदायक होगा यह सुनकर शिवजी बोले कि हम भविष्यत् कथा कहते हैं कि अब जो द्वापर युग आवेगा उस युग में यहां एक मनुष्य महानन्दनामी ब्राह्मण उपजेगा वह ऋग्वेद में बड़ा पण्डित होकर दानादि न लेगा और वह महाशीलवान् शुभ कार्यकर्ता और छलादि से रहित रहकर हर प्रकार से शुभकार्य करेगा कुछ दिन के उपरान्त उसका पिता मरजावेगा और जब वह तरुण होगा तब कामदेव के वेग से एक अन्त्यजाति की स्त्री को बिठाकर अपने प्राचीन मार्ग को छोड़ उसके साथ भोग विलास करेगा और उसके आधीन होकर मद्यादि पियेगा जो वस्तु अभक्ष्य हैं उनको खावेगा और धनवान् विष्णुभक्तों को देख आप भी वैष्णव बनकर शिवभक्तों की निन्दा करेगा इसी प्रकार शैव बनकर वैष्णवों की निन्दा करेगा निदान इसी प्रकार वही छली होकर अपने सब धर्म नष्ट कर देगा और मस्तक में तिलक लगाकर श्वेत वस्त्र पहनकर बड़ी माला पहने हुये बड़ी धूर्तता करेगा झूठ बोलने के लिये बड़े २ उपाय करेगा वह अपने छल से सबको धोखा देगा प्रकट में निर्मल पर हृदय में महामलिन और उस पर यह कि एक पर्वत का निवासी तीर्थस्नान के निमित्त आवेगा जो बहुत धन देने को साथ लावेगा वह चक्रतीर्थ में स्नान कर यह बात कहेगा कि मैं जाति का चाण्डाल हूं पर धनवान् हूं दान देना चाहता

हूं, पर यहां कोई दान लेना अङ्गीकार न करेगा और अंगुली उठा उसकी ओर सैनकर सब कहेंगे कि यह जो बैठा है तुम्हारा दान लेगा यह सुनकर वह चाण्डाल उसके पास जाकर दान लेने के लिये विनती करेगा तब महानन्द कहेगा कि जितना धन तुम लाये हो वह सब मुझको दो और किसी को न दो तो मैं लेता हूं चाण्डाल कहेगा कि जो द्रव्य मैं लाया हूं वह सब शिवजीकी प्रसन्नता के निमित्त है मैं तुमको शिव के समान जान सब तुमको देकर प्रसन्न करूंगा। काशी में जो अति नीच हैं वे भी शिव के अंश हैं उनके समान और कोई नहीं निदान वह चाण्डाल महानन्द को दान देकर चला जावेगा और महानन्द को उसी दिन से सब चाण्डाल मानने लगेंगे सो महानन्द घर में गुप्त रहा करेगा और लज्जा और संकोच के कारण अपनी स्त्री सहित नगर से निकल जावेगा और काशी छोड़ कीलक देश को जावेगा मार्ग में ठगों का समूह आकर उसको पकड़ वन में ले जावेगा। और धन द्रव्य लेने के अनन्तर वे कहेंगे कि अब हम तुझे मारे डालते हैं जिसको स्मरण करना हो करले तब महानन्द को बुद्धि उपजेगी कि जिसके लिये हमने यह धन लेकर धर्म खो दिया वह भी खो दिया और मरने के समय हमने काशी भी छोड़ी इसी प्रकार वह अपने कुल का स्मरण करेगा। निदान ठग उसको मार डालेंगे फिर चारों ठग काशीमाहात्म्य सुनकर काशी में आवेंगे और मुक्तमण्डप के समीप स्थित होकर प्रति दिन गङ्गा स्नान कर शिवकथा सुन निर्मल होजावेंगे फिर वे हमारी कृपा से मोक्ष पावेंगे उस समय से इसका नाम मुक्तमण्डप होजावेगा।

पचीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह कथा शिव से सुनकर विष्णु अति प्रसन्न हुये इतने में बड़े शब्द से घण्टा सुनाई दिया शिव

ने नन्दी से कहा कि देखो यह शब्द कहां होता है मुझे वे मनुष्य अतिप्रिय हैं जो घण्टा कि मुझको बहुत प्रिय है बजाते हैं सो नन्दी ने देख आने के पीछे विनय की कि महाराज शृङ्गारमण्डप जो आपका घर है वहां यह उत्सव होरहा है आपकी पूजा आपके भक्त कर रहे हैं यह सुन शिव अतिप्रसन्नता से उठ सर्वसभा सहित उस स्थान पर गये उस स्थान का नाम रङ्गमण्डप था जो शृङ्गारमण्डप के नाम से प्रसिद्ध है सो शिव गिरिजा सहित पूर्वमुख बैठ गये और हम दाहनी ओर और विष्णु बाईं ओर बैठे इन्द्र पंखा डुलाने लगे अन्य देवता चारों ओर स्थित हुये और सर्वगण पीछे खड़े होकर सेवा में प्रवृत्त हुये उस समय शिव ने अपना दाहना हाथ उठाकर विष्णु के द्वारा सबसे कहा कि यह लिङ्ग हमारा जिसका नाम विश्वनाथ है देखो यह परम ज्योतिःस्वरूप है और सबको आनन्द देता है और इसका नाम अविमुक्त और मुक्तिद भी है इसकी सेवा से कोई पाप रह नहीं जाता तीनों लोक में विश्वेश्वर के समान और कोई हमारा दूसरा लिङ्ग नहीं है यह पूर्ण सदाशिव है और हमारी परमज्योति और सर्वलिङ्गों से श्रेष्ठ है तीनों लोक के सार यह तीन हैं अर्थात् विश्वेश्वर हमारा लिङ्ग १ मणिकर्णिका २ और काशीपुरी ३ यह कहकर शिव और गिरिजा ने विश्वनाथ का पूजन किया और बड़े उत्सव और आनन्द के उपरान्त स्तुति की फिर वीरभद्र और गणपति ने पूजन किया फिर विष्णुने लक्ष्मी सहित उनको पूजा फिर हमने सावित्री सहित पूजा की निदान सबने क्रमपूर्वक उनको पूजा और बड़ा उत्सव हुआ नाना प्रकार के बाजन बाजे और नाच गान सब कुछ हुआ देवताओं की पत्नियां भलीविधि नृत्य करने लगीं और किन्नर और गन्धर्व उत्तम रीति से गाये आकाश से फूलों की वर्षा

हुई मुनीश्वरों ने स्तुति की उस समय वेद और पुराण सब शरीर धारकर आये और उन्होंने शिव और गिरिजा की स्तुति की जो अति पवित्र और रोचक है फिर विष्णु और हम सब देवताओं ने स्तुति की उस समय शिवने गिरिजा सहित अति प्रसन्न हो कृपा की दृष्टि से सबकी ओर देख दिया जिससे हम सबके मनोरथ पूरे होगये फिर शिव सबके देखते २ गिरिजा और पुत्रों सहित अन्तर्धान होगये और विश्वनाथ के लिङ्ग में समा गये इस बात को कोई मनुष्य न जानसका शिव का प्रभाव आश्चर्यदायक है फिर अपने लोक में जाकर कैलासवासी हो गये और लिङ्गरूप करके काशी में स्थित रहे यह देख सब अचम्भे में रहगये और स्तुति करके मनमानी मुक्ति पाई और अपने २ अंशों को काशी में स्थापित करके चले गये और शिवका नाम जपकर उनका ध्यान करके प्रसन्न रहे और सदाशिव और गिरिजा के चरित्र वर्णन करते रहे जिनके वर्णन से मन में शिव की प्रीति उत्पन्न होती है यह शिवचरित्र अति आनन्द का देनेवाला है इसके पढ़ने से शिव अतिप्रसन्न होते हैं ।

इति श्रीशिवपुराणे षष्ठखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे
काश्युपाख्यानवर्णनं नाम पञ्च-
विंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

ॐ नमः शिवाय ।

शिवपुराण भाषा

उत्तरार्द्ध ।

सातवां खण्ड

पहिला अध्याय ।

नारदने पूछा कि हे ब्रह्माजी ! आप शिवजी के सब अवतार वर्णन कीजिये जिस प्रकार शिवजी ने अवतार धार कर अच्छे अच्छे चरित्र और लीलायें कीं जो शिवजी के सेवक हैं उनको धन्य है वह मुक्ति को प्राप्त होते हैं और अन्य मनुष्यों को भी पार लगाते हैं उनके समान तीनों लोक में कोई नहीं श्रीब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! शिवजी परब्रह्म निर्गुण और सगुण स्वरूप वपुधारी सत् चित् आनन्द सर्वव्यापक निरुपाधि अलख निरञ्जन ज्योतिस्स्वरूप हैं जिनको वेद भी नेति २ वर्णन करके उनका आदि और अन्त नहीं विचारसके सब अपनी बुद्धि से उनकी स्तुति वर्णन करते हैं और मुनीश्वर भी उसी प्रकार स्मरण करके ध्यान धरते हैं वे विना पांवों के चलते विना नेत्रों के देखते विना कान सुनते विना मुख के खाते जिह्वा विना पढ़ते विना हाथके सब काम करते विना नाक के सूँघते विना गुदाके मल का त्याग करते हैं जिनके ऐसे २ कार्य हैं उनका हम वर्णन नहीं करसक्ते हैं वेद कहते हैं कि ऐसे निर्गुणरूप जो शिवजी हैं उन्होंने सगुणरूप धार सब चरित्र किये और परमशक्ति और शिवजी

ने अवतार धारण करके अपने भक्तों के मनोरथ पूर्ण किये जिस समय कि विष्णुजी ने ब्रह्माजी को प्रकट किया तब शिवजी वरदान देने को आये तब शिवजी से विष्णुजी ने यह वरदान मांगा कि आप भी अवतार धारण कीजिये शिवजी ने 'तथास्तु' कहकर कहा कि युक्तिपूर्वक हम भी अवतार लेंगे और हमारा नाम रुद्र होगा जो देवताओं के दुःख दरिद्र दूर करेगा और तुम्हारे और तुम्हारी शक्ति के कष्ट मिटावेगा यह कहकर शिवजी अन्तर्धान होगये और रुद्रअवतार हमसे उत्पन्न हुये वही कैलास पर्वत पर स्थित हैं और अनेक प्रकार की लीला करके अपने भक्तों को सुख देते हैं और अपनी शक्ति के संग विहार करके सर्व उपाधियों से रहित हैं उस अवतार ने अपने सन्तों की रक्षा की और सती के संग विवाहकर सब दुखों का नाश किया गिरिजा को हिमाचल के यहां से ब्याह लाये और संसार में बहुत लीलायें कीं और स्कन्द का अवतार लेकर तारकासुर को मारडाला और अन्धक, त्रिपुर और जलन्धर को नष्ट किया जिससे उनके भक्त सुखी हुये इसी प्रकार नाना प्रकार के चरित्र किये जिससे उनके भक्तों के कष्ट दूर हुये और अन्य देवताओं का अहंकार जाता रहा उनके सेवक हम, विष्णुजी और देवता, मुनि, सिद्ध आदि सब हैं हम सब रात्रि दिन उन्हीं का पूजन करते हैं और अपने मनोरथ सिद्ध करा लेते हैं यह शिवजी का पहला अवतार है क्योंकि वेद भी कहते हैं कि इस अवतार के स्वरूप चरित्र और नाम सब परमशिव के ऐसे हैं यही शिवजी अपने भक्तों के निमित्त अवतार धारण करते हैं अब हम शिवजी के सब अवतार वर्णन करते हैं हे नारद ! तुम चित्त लगाकर सुनो ।

अवतारों का वर्णन।

प्रथम पांच अवतारों का वर्णन—जिस समय हमारी यह अभिलाषा हुई कि सृष्टि उत्पन्न करें तो पहिले हमने श्रीसदाशिवजी का ध्यान किया शिवजी ने दर्शन दिये उनका नाम सद्योजात था उनके शरीर का रूप श्वेत और ललाई लिये था उनके साथ चार शिष्य थे हमने उनको पहिचाना और प्रणाम करके स्तुति की शिवजी ने दयालु होकर हमको शक्ति दी और कहा कि सृष्टि उपजावो फिर वामदेव का अवतार धारण करके अपने चार शिष्यों को साथ लिये दर्शन दिया उनका शरीर लाल था फिर तत्पुरुष का अवतार धारण कर पीतवर्ण से सुशोभित चार शिष्यों समेत प्रकट हुये और मुझको सुलभ ज्ञान दिया फिर श्यामरूप अवतार धारण करके मुझको दर्शन दिये अन्त में ईशान अवतार हुआ इस अवतार का श्वेतवर्ण था और चार शिष्यों को संग लिये थे उन्होंने मुझे योग और ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी यह पांचों अवतार अति पवित्र हैं और केवल हमारी ही इच्छानुसार प्रकट हुये थे दूसरे आठ अवतारों का वर्णन—यह आठों अवतार शर्व १ भव २ रुद्र ३ उग्र ४ भीम ५ पशुपति ६ ईशान ७ महादेव ८ हैं और यह जल १ पृथ्वी २ अग्नि ३ आकाश ४ यज्ञ ५ वायु ६ चन्द्रमा ७ सूर्य ८ में रहते हैं सो यह आठों भी मुख्य श्रीसदाशिवजी के रूप हैं—तीसरे एक अवतार—वाराह कल्प में जो वैवस्वतमन्वन्तर होता है और जो सातवां मनु प्रसिद्ध है वह भी शिवजी का अवतार है और चौथे अवतार नारीश्वर है जो हमारी रक्षा के निमित्त होता है चौथे अट्ठाईस अवतार—जो व्यास कि द्वापर और कलियुग में अवतार लेते हैं वह मुख्य हमारे अवतार हैं और वह अट्ठाईस हैं अर्थात् वह सदाशिवजी व्यास का अवतार लेकर योगशास्त्र

और पुराणों को बनाकर अपने शिष्यों को पढ़ाते हैं और वेद और पुराण के धर्म को स्थित करते हैं उन अवतारों के यह नाम हैं श्वेत १ सुतार २ सुहोत्र ३ कङ्कण ४ सारव्य ५ जगाक्ष ६ जैगीषव्य ७ दधिवाहन ८ ऋषभाख्य ९ भृङ्ग १० तप ११ अत्रि १२ बाल १३ गोतम १४ वेदशिर १५ धेनुकर्ण १६ गुहवाल १७ शिखण्डी १८ जटामाली १९ अट्टहास २० दाहक २१ लाङ्गली २२ श्वेतत्रिशूल २३ दण्डी २४ मुण्डेश्वर २५ सोमसुरमा २६ लङ्क-केश २७ सहिष्णु २८ ॥ नन्दीश्वर अवतार–जब शिलाद मुनि ने बड़ा तप किया तब शिवजी ने उनको दर्शन देकर कहा कि वरदान मांगो शिलाद ने कहा कि मुझको ऐसा पुत्र दीजिये जो कभी मृत्यु को न प्राप्त हो शिवजी ने 'एवमस्तु' कह नन्दी अवतार धारणकर शिलाद की अभिलाषा पूर्ण की और जब हमसे और विष्णुजीसे झगड़ा हुआ तो सदाशिवजी भैरव अवतार ज्यो-तिस्स्वरूप होकर शरीर धारण करके आये और हमारा झगड़ा दूर कर दिया था उस समय हम श्रीसदाशिवजी को अपना पुत्र विचार कर निन्दा करने लगे इसलिये मुझको अहंकारी समझ कर शिवजी ने क्रोध किया और भैरवरूप धारणकर मेरा पांचवां शिर काटडाला और वीरभद्र का अवतार लेकर इस बातको प्रसिद्ध किया कि जो शिवजी के विरुद्ध हैं उनको स्वप्न में भी सुख नहीं सो जो २ शिवजी के विरुद्ध थे उनको दण्ड दिया और सहस्र भुजा से नाना प्रकार की लीला कीं और जब कि विष्णुजी ने नरसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपु को मारा तब नरसिंह अवतार ने इतना क्रोध किया कि पहिले से भी अधिक उन पर दुःख पड़ा वह सब शिवजी के शरण हुये शिवजी ने शरभ रूप धारण करके नरसिंह के मद को नष्ट किया और देवताओं को सुख दिया उस समय से शिवजी का नाम

हर हुआ क्योंकि शिवजी ने नरसिंह के मद को हर लिया था और जब देवासुर संग्राम हुआ तो देवता जीतकर बहुत अहंकारी हुये सो शिवजी ने यक्षरूप धारण करके अवतार लिया और उनके मद को नष्ट किया अर्थात् शिवजी ने देवताओं को एक घास काटने को कहा सो सब देवताओं से वह न कट सकी इससे देवता बहुत लज्जित हुये और शिवजी ने दशरूप महाकाल के धारण किये और दशों देवियों के पति हुये और तन्त्रविद्या को प्रकट करके अनेक भक्तों को मुक्ति दी और फिर ग्यारह रुद्र का रूप धारणकर कश्यप के गृह उत्पन्न हुये और दिति के पुत्रों को मारकर देवताओं को मुक्ति दी और बड़ी २ लीला कीं और अत्रि के पुत्र होकर संसार की सीमा स्थित की और ब्रह्मतेज प्रसिद्ध किया और विश्वानर के तप को देखकर उसके यहां जन्म लिया और कालविहार को जीता और अह्लाद मुनि का अवतार धारकर विष्णुजी के मद को तोड़ा और अवधूत बनकर इन्द्र को अहंकार से रहित किया और रामचन्द्रजी के मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त कपीश अवतार धारकर हनुमान् के नाम से विख्यात हुये और बहुत लीला करके रामचन्द्रजी के सब कार्य सिद्ध किये और बहुत राक्षसों को मारा और लक्ष्मणजी के प्राण की रक्षा की और जब गिरिजा ने भैरव की कुदृष्टि देख भैरवको शाप दिया और कहा हे पुत्र! जो तुम मुझको मनुष्य की सी दृष्टि से देखते हो इस हेतु तुम मनुष्य बनो तब भैरवजी ने भी शाप दिया कि तुम भी हमारे प्रकार होजाओ और वहां हम तुम्हारे पुत्र हों इस कारण शिवजी ने पृथ्वी पर अवतार लिया गिरिजा का तो नाम शारदा हुआ और शिवजी का नाम महेश हुआ और महानन्दा वेश्या ने शिवजी की बहुत भक्ति की शिवजीने वैश्यरूप धार कर उसके दुःखों का नाश किया और एक

राजा भद्रायुष नामी ऋषभमुनि का शिष्य और शिवजी का बड़ा भक्त था शिवजी ब्राह्मण बनकर गये और उसको कष्टों से रहित किया और आहुक नामी भील जिसकी स्त्री को आहुकी कहते थे शिवजी ने रूप धार उनको कृतार्थ कर दिया वह दोनों दूसरे जन्म में नल और दमयन्ती हुये शिवजी ने हंस बनकर दोनों को मिला दिया और राजा मुनि के छोटे लड़के नभगाक्रय ने अपने भाइयों से भाग न पाया शिवजी ने कृष्णदर्शन नाम अवतार लेकर उसको भाग दिलवाया और जब राजा सत्यरथ लड़ाई में मारा गया तो उसकी रानी जो गर्भवती थी वनमें भाग गई वहां उसके एक लड़का उपजा रानी तो मरगई पर लड़का रोता रहगया सो शिवजी उस पर दयालु हुये और भिक्षुक बनकर एक स्त्री को उपदेश दिया कि इसका पालन करो और फिर शिवजी ने उसी लड़के को बाप की जगह राजा बना दिया और इन्द्र का अवतार धारकर उपमुनि ब्राह्मण की परीक्षा ली जब उसको पापों से शुद्ध पाया तब दोनों लोक का सुख दिया और जब गिरिजा ने बड़ा तप वन में किया और सब देवता शिवजी की शरण में गये तब देवताओं को विदाकर जटिलरूप धारण करके गिरिजा की परीक्षा ली और फिर वरदान देकर उसके साथ अपना विवाह किया और नटका रूप धारकर हिमाचल के गृह बड़ी २ लीला की और ब्राह्मण बनकर मैना को बहुत भटकाया और शिवजी अश्वत्थामा द्रोणाचार्य के पुत्र हुये और फिर किरात होकर अर्जुन का दुःख दूर कर दिया और उसको वरदान देकर कौरवों को नष्ट किया और गोरख होकर योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया और यथायुक्ति योगियों के धर्म को स्थित किया उनके दो बड़े शिष्य थे जिनमें से एक गोपीचन्द्र था और जिस समय कि अधर्मियों ने अपना शौच त्याग करके

भ्रष्ट होना चाहा कि भक्तों आदि को दुःख प्राप्त हो तब शिवजीने ब्राह्मण के घर अवतार धारा और शंकरजी कहलाये और अधर्म का नाश किया और शंकरजी ने अद्वैत और संन्यास मत उपजाया और ज्योतिर्लिङ्ग जो सूर्य देवता के स्थित किये हुये हैं वह भी शिवजी के अवतार हैं यह सब भक्तों के फलदायक और सुखी रखनेवाले हैं इसी प्रकार शिवजी ने बहुत अवतार लिये जो अपने भक्तों के सम्मुख बड़े २ चरित्र करते हैं यह चरित्र तीनों लोक के सुखदायक हैं जिनके कहने और सुनने से बहुत सुख मिलता है यह अवतार संक्षेप में तुम से कहे अब जो सुना चाहते हो सो कहो।

दूसरा अध्याय।

कैलासवासी शिवजी का वर्णन।

नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी! तुम संसार में परमशैव हो मेरी इच्छा है कि शिवजी के अवतारों का वर्णन विस्तार से सुनूं यह सुनकर ब्रह्माजी प्रेम में डूब गये जब चेते तो कहने लगे कि हम तुमको शिवजी की लीला सुनाते हैं उन मनुष्यों के धन्य भाग्य हैं जो इस लोक में शिवजी की भक्ति रखते और उस लोक में कैलासवासी होते हैं शिवजी निर्गुण सबसे श्रेष्ठ निष्पाप हैं और ब्रह्मा और विष्णुजी के उत्पन्न करनेवाले हैं उन्होंने हमको और विष्णुजी को प्रकृति से उपजाया और कहा जाओ संसार को उत्पन्न करके उसका पालन करो तब हमने और विष्णुजी ने प्रार्थना की कि तुम भी अवतार लेकर प्रलय किया करो तो उन्होंने समय पाकर हमारे भवों के बीच से अपने अंश से अवतार लिया और महेश कहलाये और कैलास पर्वत पर वास करने लगे शिवजी और महेश में कोई भेद नहीं जो उनको भिन्न २ समझते हैं वे कष्ट भोगते हैं महेशजी दुःख

दरिद्र हरते और पापों से रहित हैं और बड़े दयावान् हैं और शरीर धारकर भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हैं उन्होंने शबरी शबर और मद्र को मुक्त किया और भद्राक्ष राजा के कष्ट दूर किये गङ्गाजी को जलने से बचाया और काल को जलाकर भस्मासुर को उसी के हाथ से मरवा डाला और करोड़ों पापी भक्तों को मुक्ति दी और अपने भक्तों के निमित्त करोड़ों अवतार धारे ऐसे अवतारों को शिवजी का दूसरा रूप विचारो उन्होंने हलाहल विष को पीकर देवताओं के प्राण बचाये एक बड़ा पापी इन्द्रद्युम्न राजा अज्ञानता में नाम लेने से मुक्ति को प्राप्त हुआ और उन्होंने नन्दवैश्य और किरात को मुक्त करके अपना द्वारपाल बनाया और शिवजी ने भिक्षुक का रूप बनाकर दारुकवन में जाकर चरित्र किये और फिर मुनीश्वरों से अपने आप शाप लिया उसी समय से शिवलिङ्ग पूजा लोक में प्रचलित हुई और काशी के राजा की लड़की जिसका नाम सुन्दर था वह शिवालय में झाड़ू देती थी इससे वह मुक्त हुई और एक बड़े भारी चोर को तार दिया और रावण को राज्य दिया जब उसने ब्राह्मणों को दुःख दिया तो शिवजी ने अधर्म विचार कर अपने तेजको रावण से ले लिया और अपना बाण रामचन्द्रजी को देकर रावण को मार डाला और राजा श्वेत के निमित्त कालका नाश किया राजा दाशार्ह को उसकी स्त्री सहित तार दिया और पञ्चाक्षरी मन्त्र की तीनों लोक में बड़ाई प्रसिद्ध की और मित्रशठ पर दयालु हुये जो अपने राज्य को छोड़ बैठा और फिर स्त्री सहित मुक्त हुआ और चन्द्रसेन और श्रीगर्भ दोनों ने तेरस का व्रत करके मुक्ति प्राप्त की और धर्मगुप्त ने भी इसी व्रत से मुक्ति पाई और शिवजी ने राजा चन्द्राङ्गद को तक्षक के भय से रहित किया

और सीमन्तिनी स्त्री सोमवार के व्रत रखने से मुक्त हुई और शिव ने इन्द्र ब्राह्मण को तार दिया और पिङ्गल को अपनासा बना लिया वह सीमन्तिनी की पुत्री थी और पद्मा और पशुपति को भी मुक्त किया और दुर्जन नामी यवनदेश का राजा भस्म लगाने से मुक्ति को प्राप्त हुआ और सुधर्मा भद्रसेन का पुत्र और मन्त्री का पुत्र तारक रुद्राक्ष धारण करके शिवजी की कृपा से पार लग गया महानन्दा को और उसके कुलको भी जलने से बचाया देवरथ ब्राह्मण की पुत्री शारदा को कृतार्थ कर दिया और विडम्ब और उसकी स्त्री वीचिका जो व्यभिचार के कारण दोनों भ्रष्ट होगये थे उनको अपना यश सुनाकर कृतार्थ कर दिया और इन्द्रके मद को विचित्र चरित्र करके हरा और जब बृहस्पति की बनाई हुई स्तुति सुनी तो प्राण छोड़ दिये और जब चन्द्रमा अपनी गुरुकी स्त्री को भगा ले गया तब शिवजी ने उसका अहंकार तोड़कर बृहस्पति को उनकी स्त्री दिला दी इसी प्रकार शिवजी ने अनन्त चरित्र किये जो भक्तों को सुख देते हैं यह शिवजी का पहला अवतार है जो कैलास पर्वत पर विराजमान हैं वे अपने गणों को सङ्ग लिये संसार की भलाई के निमित्त नाना प्रकार की कथा वर्णन करते हैं और सनक सनन्दन शिवजी की बड़ी सेवा करते हैं कभी तो शिवजी कैलास पर्वत में वड़ वृक्ष के नीचे बैठते हैं और गूढ़ ध्यान लगाकर अपने को देखते हैं और समाधि करके अहंब्रह्म को प्रकट करते हैं और कभी महाराजा बनकर आनन्दपूर्वक अपने भवन में बैठकर विहार करते हैं कभी धर्म की वार्त्ता करते हैं और कभी लड़कों को खिलाते हैं कभी तपरूप धारण करके नग्न होजाते हैं और कभी मुण्डों की माला पहन कर सांपों की सेली बनाये भस्म धारण करते हैं कभी संसार त्याग कर भूत प्रेत

उत्पन्न करते हैं और कभी छोटे लड़के की सदृश खेलते हैं कभी परमहंस होकर एकान्त में बैठते हैं और कभी सगुण रूप धारण कर गिरिजा के संग विहार करते हैं कभी हम और विष्णुजी उनकी सेवा करते हैं कभी उनके सामने अप्सरा आदि नाचती हैं और रात्रि दिन स्तुति करती हैं कभी वे प्रदोषकाल में भस्म धारण करते हैं और गिरिजा सहित बैठकर विष्णुजी को बिठालेते हैं उस समय सब देवता आरती करते हैं विष्णुजी मृदङ्ग बजाते हैं सरस्वती वीणा अलापती हैं लक्ष्मीजी राग छोड़ती हैं हम ताल बजाते हैं इन्द्र भी बांसुरी लेते हैं इसी प्रकार अपने २ भजन स्वर सहित कहकर शिवजी को प्रसन्न करते हैं और शिवजी भी अपनी शक्ति को लिये सगुण रूप धारण करके नाना प्रकार की लीला और चरित्र करके भक्तों को सुख देते हैं यह दूसरा रूप शिवजी और गिरिजा का भक्तों को प्रसन्न करनेवाला है हे नारद! शिवजी अनन्त अवतार धारकर भक्तों की प्रसन्नता के निमित्त अनन्त लीला करते हैं चाहे जैसा बुद्धिमान् हो और वह पृथ्वी के कण और आकाश के तारे गिनलेवे पर शिव के चरित्रों का अन्त पाना दुर्लभ है करोड़ों नाम रूप लीला और चरित्र शिवजी के हैं करोड़ों युग मुनीश्वरों को शिवजी के वर्णन करने में व्यतीत हुये परन्तु उनने भी आदि और अन्त न पाया हे नारद! तुमने शारदा शेष और २ देवताओं ने शिवजी का यश गाया पर कुछ भी अन्त न पाया शिवजी के समान सुख देनेवाला कौन है जो वे अपने कठिन मार्ग को प्रसिद्ध करें तो कोई मुनि अथवा देवता न समझे देखो वे अपने शरीर में तो भस्म धारण करते हैं पर भक्तों को राग रङ्ग देते हैं आप तो दिगम्बर हैं पर औरों को दुशाला देते हैं आप हलाहल विष पीते हैं औरों को अमृत

देते हैं आप तो मुण्डों और सांपों की सेली पहनते हैं पर भक्तों को रत्न देते हैं आप प्रेतों की सभा में विराजमान हैं पर औरों को अनेक प्रकार की सेना देते हैं आप तो श्मशान भूमि में रहते हैं पर सेवकों को बड़े २ घर देते हैं आप बैलपर चढ़ते हैं पर भक्तों को हाथी घोड़े की सवारी देते हैं सर्वदेवता सेवा करने से प्रसन्न होते हैं पर शिवजी विना सेवा के प्रसन्न होजाते हैं हे नारद! ऐसे महाराज और स्वामी को त्याग कर मूर्ख मनुष्य इधर उधर भटकते हैं यह प्रथम अवतार जो शिवजी का हमने वर्णन किया परिपूर्ण अवतार शिवजी का है वेद में लिखा है कि इस अवतार के स्वरूप चरित्र लीला और नाम आदि सब शिवजी के समान हैं वही शिवजी अपने भक्तों के निमित्त सगुण रूप धारण करते हैं और नाना प्रकार की लीला और चरित्र दिखाते हैं अब हम इन अवतारों का वर्णन जो शिवजी ने धारण किये करते हैं।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम अब शिवजी के पांच अवतारों का वर्णन करते हैं जो ब्रह्मरूप होकर वेद में वर्णन किये गये हैं उन्होंने प्रथम मुझको सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी और फिर ज्ञान दिया हर कल्प के आदि में उपदेश देते रहे जिससे मैंने सृष्टि उत्पन्न की—पहिला अवतार—जब कि श्वेतलोहित उन्नीसवां कल्प आया तो मैंने विचारा कि सृष्टि उत्पन्न करनी चाहिये यह विचार शिवजी का ध्यान किया शिवजी बालकरूप धार शिष्यों को संग लिये श्वेतलोहित वर्ण से प्रकट हुये जो बड़ी कृपादृष्टि से देखते थे ऐसा बालक देखकर मुझको प्रीति उपजी और मैंने यह विचार कर कि कौन है शिवजी का ध्यान किया तो मुझको यह भासित हुआ कि यही तो स्वामी

परब्रह्म हैं फिर मैंने स्तुति की और कहा कि आपके समान कौन है जो मेरे लिये प्रकट हुये मुझको ऐसी शक्ति दीजिये कि मैं सृष्टि उपजाऊं और आपकी भक्ति मेरे हृदय से न जावे और सृष्टि के उत्पन्न करने में दोषी न होऊं शिवजी ने 'तथास्तु' कहा और बोले कि तुमको हृदय से हमारी प्रीति है इससे हम प्रकट हुये क्योंकि हम भक्तों के अधीन हैं हमारा नाम सद्योजात है हम योगाभ्यास को प्रसिद्ध करके अपने शिष्यों को मुक्त करेंगे फिर शिवजीके अङ्ग से चार लड़के उपजे उनका श्वेत वर्ण था और शिष्य के नाम से प्रसिद्ध होकर योगशास्त्र की रीतों के प्रकट करने को शास्त्रपाठी हुये उनके यह नाम हैं सनन्दन १ नन्दन २ विश्वनन्द ३ उपनन्दन ४ इन चारों शिष्यों को लेकर शिवजीने योगशास्त्र को सब संसार में प्रकट किया जिससे मनुष्य आवागमन से निर्भय होजाते हैं वे कल्पभर हमको सुख देते रहे कुछ हमको सृष्टिकर्म में दुःख नहीं हुआ अपने भक्तों को मुक्ति दी और योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया—दूसरा अवतार—जब बीसवां रक्तकल्प आया तो उसमें हमारा रक्तवर्ण था हमने लालवस्त्र और लालही माला पहिनी और सृष्टि के उत्पन्न करने की अभिलाषा करके श्रीसदाशिवजी का ध्यान किया वह बालक का रूप धार लालवस्त्र लाल नेत्र किये लालही गहने पहिन कर प्रकट हुये मैंने उनका नाम वामदेव जानकर प्रणाम किया और स्तुति की और प्रार्थना की कि आप ऐसी कृपा करें जिससे मैं सृष्टि बनाऊं शिवने एवमस्तु कहा और चार लड़के उपजाये जिनका वर्ण, रूप, वस्त्र आदि सब लाल थे उनके नाम यह हैं विरज १ विवाह २ विशोक ३ विश्वभावन ४ शिवजी ने चारों शिष्यों समेत योगको स्थापित करके हमको शिक्षा दी और सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी—तीसरा अवतार—जब कि पीतवास इक्कीसवां कल्प

आया तो मैंने सृष्टि उपजाने की शक्ति प्राप्त करने के निमित्त शिवजी का ध्यान किया शिवजी का रङ्ग और रूप पीत था भुजा सुडौल और सर्व अलंकार पीत ही धारण किये मेरे सम्मुख हुये मैंने ध्यान करके पहिंचाना और स्तुति की और शिवगायत्री का जप किया उनका नाम तत्पुरुष हुआ मैंने प्रार्थना की कि मुझको सृष्टि के उत्पन्न करने की शक्ति और अपनी प्रीति दीजिये शिवजी ने सुनकर चार लड़के जो पीतवर्ण पीत ही वस्त्र आदि धारण किये थे उपजाये उन्होंने और शिवजी ने संसार भर में योग-शास्त्र प्रकट किया—चौथा अवतार—जब एक दिव्यसहस्र वर्ष पीतवास कल्प का व्यतीत हुआ और परिव्रत कल्प आया तो मैंने सृष्टि उपजाने के निमित्त शिवजी का ध्यान किया शिवजी बालक बनकर काले वस्त्र, काला यज्ञोपवीत, मुकुट और काली भस्म धारण किये प्रकट हुये मैंने शिवजी का अघोररूप पहिं-चाना और स्तुति करके शिवजी को दण्डवत् की और कहा कि मुझको सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दीजिये शिवजी ने 'तथास्तु' कहा फिर अघोर अवतार ने कहा कि यह हमारा रूप कष्टों को दूर करेगा और हमारा मन्त्र सर्व कार्यों को सिद्ध करेगा यह कहकर अपनी भुजा से चार बालक उत्पन्न किये जो शिवजी के रूप के समान थे उन्होंने अघोर योग को प्रसिद्ध किया जिसमें सब जीव तुल्य वर्णन किये गये हैं इसके समान कोई वस्तु संसार भर में नहीं—पांचवां अवतार—ईशान इस प्रकार प्रकट हुआ जब विश्वरूप तेईसवां कल्प आया तब हमने पुत्र के निमित्त शिवजी का ध्यान किया कि सृष्टि अतिबुद्धिमान् और विद्यावान् हो और शिवजी सर्वदा प्रसन्न रहें प्रथम विश्वरूपा भवानी प्रकट हुईं उनकी सर्वसामग्री, रूप, वस्त्र और भूषण आदि सब श्वेत थे फिर वैसे ही वस्त्र आदि से ईशान शिवजी प्रकट हुये मैंने ध्यान

करके पहिंचाना कि ईशानरूप हैं और स्तुति करके प्रणाम और दण्डवत् की और प्रार्थना की कि ऐसा यत्न कीजिये जिससे सृष्टि की वृद्धि तुरन्त हो और मैं आपका प्यारा बना रहूं शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा और मुझको अच्छी रीति की शिक्षा दी मैंने सृष्टि उपजाई और ईशान शिवजी ने शक्ति विश्वरूपा सहित चार पुत्र उत्पन्न किये जिनका वस्त्र आदि श्वेत था उनके नाम यह हैं जटी १ मुण्डी २ शिखण्डी ३ और अर्धमुण्डी ४ ईशान शिवजी ने अपने लड़कों सहित योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया जिस से देवता मुनीश्वर और गुरु सब प्रसन्न हुये और ऐसा धर्म प्रकट किया जिससे मनुष्य आवागमन से निर्भय हुये हे नारद जी ! इसी प्रकार पांचों कल्पों में शिवजी ने पांच अवतार धारण किये ये अवतार संसार के मनुष्यों को आनन्द देते हैं और इनकी कथा के श्रवण करने से आनन्द प्राप्त होता है ।

चौथा अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम अष्टमूर्ति अर्थात् आठ अवतारों का वर्णन करते हैं जिनके भीतर सर्व संसार भासता है जैसा सूत में रत्न और मणि आदिक पिरोये हों वैसे ही उन अवतारों में संसार है उन आठों अवतारों के यह नाम हैं शर्व १ भव २ रुद्र ३ उग्र ४ भीम ५ पशुपति ६ ईशान ७ महादेव ८ यह आठों अवतार पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ यज्ञभूमि ६ सूर्य ७ चन्द्रमा ८ में रहते हैं अर्थात् शर्वरूप होकर पृथ्वी का भार अपने ऊपर लिये हैं और संसार भर को प्रसन्न रखते हैं और जब भवरूप धारण करके जल में रहते हैं तब सब जीवों के क्लेश नष्ट करते हैं और रुद्ररूप होकर अग्नि से प्रकाश करते हैं और उग्ररूप धारकर सब जीवों को जीता रखते हैं और पशुपति रूप धारकर क्षेत्रज्ञ हैं जिससे

संसार भर को सुख मिलता है और ईशानरूप धारण करके सूर्य में हैं जिससे पृथ्वी और आकाश प्रकाशित है और महादेवरूप होकर चन्द्रमा में हैं जो सब जीवों की पालना करते हैं यह आठों रूप शिवजी के हैं शिवजी से भिन्न कुछ नहीं शिवजी सब में प्रकट हैं जिस प्रकार कि पृथ्वी पर जल डालने से वृक्ष की वृद्धि होती है अर्थात् उसके सींचने से जड़, टहनी, फल और फूल आदि दृढ़ होते हैं उसी प्रकार शिवपूजन से सब दृढ़ हो जाते हैं और जिस प्रकार कि लड़के की प्रीति पिता को होती है उसी प्रकार संसार भर से प्रीति रक्खे—तब श्रीसदाशिवजी उस पर दयालु होते हैं जो मनुष्य किसीसे बुराई रखता है वह शिवजी से वैर बिसाहता है और कभी मुक्ति पाता ही नहीं यह समझकर शिवजी का भजन करना उचित है किसी से शत्रुता न रक्खे यह आठों स्वरूप जीव को सुख देते हैं जो मनुष्य अपनी भलाई चाहे वह इनकी सेवा करे उनके चरित्रों के श्रवण और कथन से लाभ प्राप्त होता है यह कथा अति पवित्र है और शिवजी की भक्ति की वृद्धि करती है और मुक्ति देती है इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि अब हम अर्धनारीनर के अवतार का वर्णन करते हैं कि जब हम सृष्टि उपजाने लगे तो यद्यपि हमने माता के सदृश सन्तानों की वृद्धि चाही परन्तु किसी प्रकार सृष्टि की वृद्धि न हुई इससे हमको चिन्ता हुई तब आकाशवाणी हुई कि तुम मैथुनी सृष्टि उत्पन्न करो—यद्यपि हमारी भी अभिलाषा हुई कि ऐसी सृष्टि उपजावें पर हमारी युक्ति निष्फल हुई यह देखकर हमने यह विचारा कि बिना शिवजी की सहायता के हमारा मनोरथ सिद्ध न होगा इस कारण तप करने लगे शिवजी प्रसन्न हुये और अर्धांगीरूप धारण करके आये हमने स्तुति की शिवजी ने कहा कि हम तुम पर अतिप्रसन्न हैं और तुमको वही वरदान

देते हैं जिसकी तुमको इच्छा है यह कह फिर शक्ति को अपने शरीर से अलग किया जिससे दो स्वरूप अलग २ दीखे यह चरित्र देख मैं बहुत प्रसन्न हुआ और आकाशवाणी और सृष्टि की वृद्धि न होने का वृत्तान्त सब वर्णन किया और हमने शक्ति से कहा कि आप दक्ष हमारे पुत्र के घर अवतार धारें और शिवजी भी अवतार धारण करके तुम्हारे साथ विवाह करें यह सुनकर शक्ति ने 'एवमस्तु' कहा और अपनी भवों के बीच से अन्य शक्तियां उत्पन्न कीं वह शिवजी को देखने लगीं—शिवजी ने मुसकराकर कहा कि ब्रह्माजी ने बड़ा तप जप किया है इसलिये उसके मनोरथ पूरे करो शक्ति ने प्रसन्नतापूर्वक हमारे कार्य पूर्ण किये और फिर शिवजी के शरीर में समा गईं—शिवजी भी वरदान देकर अन्तर्धान हुये—मैंने यह वरदान पाकर मैथुनी सृष्टि उत्पन्न की—यह अवतार अभिलाषा को पूर्ण करता है और कहने और सुननेवाले को सुख और लाभ देता है।

पाँचवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जो वाराहकल्प इस समय में बीत रहा है इसमें वैवस्वत नाम मनु हैं जो हमारे प्रपौत्र हैं इस कल्प के हर द्वापर युग में व्यास अवतार प्रकट होता है—जो श्रुति शाखा का विस्तार करता है फिर व्यासजी संसारी जीवों की कुबुद्धि देखकर पुराण बनाते हैं कि उनको लाभ प्राप्त हो परंतु संसारी जीव ऐसी २ युक्तियों से भी मूर्ख रहते हैं यद्यपि व्यास जी का मत अतिसुगम है कुछ कठिन नहीं और उनसे वेद का सार प्राप्त होता है और वे वचन अतिमनोहर हैं परन्तु तो भी उन मूर्खों को वे वचन समझ में नहीं आते उस समय शिवजी संसार को ऐसी मूर्खता में देखकर कलियुग में व्यासजी के कहने से अवतार धारते हैं व्यासजी के मत को प्रसिद्ध करते हैं

वही चरित्र शिवजी का हम विस्तार से वर्णन करते हैं—पहिला अवतार—प्रथम द्वापर के पहिले मन्वन्तर में हम व्यास हुये वेद को चारभाग अर्थात् ऋक् १ यजुः २ साम ३ अथर्वण ४ में बांटा और उनकी शाखाओं को बढ़ाया फिर पुराण बनाये क्योंकि संसारी जीवों की बुद्धि युग के प्रवेश से नष्ट हो गई थी हमने युक्तिपूर्वक वेद की रीतियां पुराणों में इस प्रकार मिलादीं कि लोग प्रसन्न हों जैसे कोई किसी रोगी को तीखी कड़ुई औषध न दे पर मीठी औषध देकर प्रसन्न करे यद्यपि मैंने और व्यासजी ने अनेक प्रकार से यत्न किये कि व्यासमत प्रसिद्ध हो परन्तु यत्न निष्फल हुआ और किसी ने भी पुराणों को न पढ़ा तब मैंने चिन्तित होकर शिवजी का ध्यान किया और स्तुति की कि हे महाराजाधिराज! द्वापर व्यतीत हुआ और कलियुग आ-ग[illegible] पर किसी ने भी पुराणों को नहीं छुआ हमारा मत प्रसिद्ध नहीं होता इससे उचित है कि आप दयालु होकर सहायता करें हमारे धर्म को दृढ़ कीजिये ऐसी २ प्रार्थना मेरी सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और शरीर धारण किया और द्वापर के अन्त और कलियुग के आदि में एक ब्राह्मण के गृह छागलागिरि में जो हिमालय पर्वत का एक भाग है जन्म लिया उनका नाम श्वेत हुआ उत्पन्न होने के समय जय २ कार हुआ नाना प्रकार के बाजे बजे आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई तीनों लोक में सब मनुष्य और जीवआदिक प्रसन्न होकर वहां आये और शिवजी की स्तुति की शिवजी ने प्रकट होकर अगमयोग प्रकट किया शिवजी के चार बड़े शिष्य हुये वह आश्रम जाननेवाले बड़े योगाभ्यासी निष्पाप थे उनके नाम यह थे श्वेत १ श्वेतशिष्य २ श्वेताश्व ३ श्वेतलो-हित ४ शिवजी ने उनको योग का ध्यान सिखाया और योग को संसारभरमें प्रकट किया इससे सर्वसंसारी जीवोंने योगको बड़े २

यत्नों से सीखा और वेद और पुराण से अच्छे २ धर्म और मत प्रकट किये शिवजी ने श्वेतरूप धारण करके व्यासजी को प्रसन्न किया—दूसरा अवतार—दूसरे सत्यनाम द्वापर में व्यासजी ने प्रजापति का अवतार लिया और वेद के भाग किये और संसार के लाभनिमित्त पुराण बनाये परन्तु यह सब निष्फल हुआ और किसी ने भी वह मत अङ्गीकार न किया व्यासजी ने दुःखी होकर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रसन्न होकर पृथ्वी पर अवतार लिया उनका नाम सुतार हुआ उन्होंने व्यासजी के मत को प्रसिद्ध किया और योगशास्त्र का प्रकाश किया उनके चार शिष्य थे दुंदुभि १ सत्यरूप २ ऋचीक ३ केतुमान् ४ उन्होंने शिष्यों सहित व्यासजी का धर्म प्रकट करके संसारी जीवों को बहुत प्रसन्न किया—तीसरा अवतार—तीसरे द्वापर में शुक्रजी ने व्यासजी का जन्म लिया और वेदों के भाग करके पुराणों को बनाया सिद्धता न होने के कारण शिवजी का ध्यान किया तब कलियुग के आदि में शिवजी ने अवतार धारा उनका नाम दमन था उनके चार शिष्य थे विशोक १ विकेश २ व्यास ३ सुप्रकाश ४ दमन शिव अवतार ने योगाभ्यास की रीतियां निकालीं और अपने चेलों सहित संसार में उनका प्रकाश किया और पुराणों के मत को स्थित करके मनुष्यों को मुक्ति का मार्ग दिखा दिया—चौथा अवतार—चौथे द्वापर में बृहस्पति ने व्यासजी का अवतार लिया और वेद के भाग करके पुराणों को प्रसिद्ध किया पर कलियुग के कारण उनकी अभिलाषा पूर्ण न हुई इसलिये उन्होंने शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रसन्न होकर सुहोत्र अवतार पृथ्वी पर धारण किया और व्यासजी के मनोरथ पूर्ण किये उस समय भी शिवजी के चार शिष्य हुये जिन्होंने व्यासजी के मत को प्रकट करके योगाभ्यास की शिक्षा दी उनके

यह नाम हैं सुमुख १ दुर्मुख २ दुर्मद ३ दुरतिक्रम ४—पांचवां अवतार—पांचवें द्वापर में सविता देवता ने व्यासजी का अवतार लेकर वेदों के भाग किये और पुराण बनाये तब भी शिवजी ने सूर्यदेवता की प्रार्थना से पृथ्वी पर अवतार लिया उनका नाम कनक था उनके चार शिष्य थे उन्होंने व्यासजी के मत को प्रकाश किया उनके नाम यह हैं सनक १ सनातन २ सनन्दन ३ सनत्कुमार ४ उनके नाम यह हैं प्रभु १ विभु २ निर्मल ३ निरहंकृत ४—छठा अवतार—छठे द्वापर में मनुजी ने व्यास जन्म धारा और अपना नाम महत् रक्खा उन्होंने अन्य व्यासों से जो व्यतीत हुये अच्छे २ पुराण बनाये और उनकी वृद्धि के निमित्त शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रसन्न होकर पृथ्वी पर अवतार लिया उनका नाम लोकाक्ष था उन्होंने योग पुराणों को अपने चार शिष्यों सहित प्रकट किया उनके नाम यह हैं सुधामा १ विरुज २ शङ्ख ३ अम्बुज ४—सातवां अवतार—सातवें द्वापर में शतक्रतु ने व्यासजी का जन्म लिया और वेद के भाग करके पुराणों को बनाया जिससे मनुष्य नाना प्रकार के मत और धर्म देखकर आश्चर्यवान् हुये पर उनको किसीने अङ्गीकार न किया तब व्यासजी ने श्रीसदाशिवजी का स्मरण किया शिवजी ने जैगीषव्य का अवतार धारणकर चार शिष्य उपजाये उनके यह नाम हैं सारस्वत १ पराहन २ मेघनाद ३ सुवाहन ४ शिवजी ने चार शिष्यों संयुक्त उस मत को फैला दिया फिर जैगीषव्य ने योग को प्रकट किया यद्यपि वह शिवजी के अवतार थे पर उन्होंने शिवजी की ऐसी भक्ति की जिससे दासत्वभाव प्रकट हुआ जैगीषव्य के समान और कोई व्रत करनेवाला नहीं हुआ अर्थात् जब से शिवजी काशीपुरी को त्याग करके मन्दरगिरि पर गये तब से न तो उन्होंने जल पिया और

न कुछ खाया उन्होंने यही प्रण किया था कि जब तक शिवजी के दर्शन न होंगे तब तक पानी पीना अयोग्य है जैगीषव्य की कथा सुनने और पढ़ने से आनन्द प्राप्त होता है।

छठा और सातवां अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि हे पिता! यह बताइये कि क्या कारण था कि शिवजी ने काशी छोड़ी तो ब्रह्माजी ने सम्पूर्ण कथा आदि से अन्ततक वर्णन की कि जिसतरह काल पड़ा और राजा दिवोदास के वर पाने से काशी देवताओं से रहित हुई और शिवजी भी विन्ध्याचल पर जाय रहे और फिर शिवजी ने काशी के वियोग से दुःखी होकर क्रमपूर्वक योगिनीगण और सूर्य और ब्रह्मा और अपने ३५ गणों को दिवोदास के धर्म छुड़ाने के निमित्त काशी में भेजा और वे फिर काशी में रहकर न लौटे फिर गणपति वहां गये फिर जो २ चरित्र विष्णु और गणेश ने वहां किये और फिर विष्णु ने ज्यों बौद्धमत के देवता का स्वरूप धारण करके सबका धर्म भ्रष्ट करडाला और फिर राजा दिवोदास ने कि विष्णु का आदर करके उनसे अपना वृत्तान्त कहा और उसने शिक्षा पाई और फिर वह वहां सबसे विष्णुरूपी ब्राह्मण का उपदेश कह काशी छोड़ गोमती नदी के तट पर गया और फिर काशी में आकर उसने शिवलिङ्ग स्थापित किया और जिसतरह शिवजी के गण आकर उसको विमान पर चढ़ा काशी लेगये और गरुड़ से यह वृत्तान्त सुन शिवजी काशी में आये और जिसतरह से कि शिवजी ने गणपति का आदर कर विष्णु को दूसरे सिंहासन पर बिठाया और ब्रह्माजी को दाहनी ओर स्थान दिया फिर नन्दी के कहने से सजे हुये रथ पर शिवजी का आरूढ़ हो काशी में जाना और तुरन्त जैगीषव्य की गुफा में जाकर दर्शन देना और ज्येष्ठ शुक्ल

पक्ष की चतुर्दशी को वहीं पर स्थित रहकर ज्येष्ठेश्वर लिङ्गका स्थापित होना और ज्येष्ठा नाम देवी का प्रकट होना और फिर वहीं पर नन्दीश्वर को भेजकर जैगीषव्य को गुफा में से बुलाना और यह वर देना कि हम काशी में रहेंगे इसी प्रकार सम्पूर्ण कथा आदि से अन्त तक कह सुनाई।

आठवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि अब हम शिवजी के अट्ठाइसों अवतार का वर्णन करते हैं चित्त देकर सुनो जब कि आठवें द्वापर में वशिष्ठमुनि ने व्यासजी का अवतार लेकर वेद के चार भाग किये और पुराण बनाये तो उनका प्रचार न होने से उन्होंने शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने दधिवाहन नाम अवतार लिया और कृपादृष्टि से व्यासजी के मत को प्रकट किया शिवजी के चार लड़कों के यह नाम हैं कपिल १ आसुरि २ पञ्चशिख ३ शालवल ४—नवां अवतार — नवें द्वापर में सारस्वत ने व्यासजी का जन्म लेकर वेद के भागकर पुराणों को बनाया पर सिद्धि न हुई इसहेतु शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रसन्न होकर ऋषभ का अवतार लिया उनके चार शिष्य यह थे पराशर १ गर्ग २ भार्गव ३ आंगिरस ४ जिन्होंने योगाभ्यास करके व्यासजी को सहायता दी और उनके मत को प्रकाशित किया और निवृत्तिधर्म को प्रसिद्ध किया हे नारद! ऋषभजी के चरित्र अति प्रसिद्ध हैं जो मनुष्य उनको पढ़ता अथवा सुनता है वह आपही शिवरूप होजाता है उन्होंने भद्रायुष को कैसा सुख दिया और उसके क्लेश सब दूर किये और केवल एक दिन की सेवा से मुद्र ब्राह्मण और कङ्काली को मुक्त किया—दशवां अवतार—दशवें द्वापर में त्रिधारा नाम व्यासजी ने वेद को चार भागों में किया और पुराणों को बनाया फिर शिवजी को स्मरण

करके उनकी स्तुति की शिवजी ने भृगुशृङ्ग जो हिमालय पर्वत का एक भाग है उसमें अवतार धारण किया और उनका नाम भृगु था उनके चार लड़के थे निरमित्र १ जगद्बोधन २ गुप्तशृङ्ग ३ तपोधन ४ सो शिवजी ने इन्हीं के द्वारा व्यासजी की अभिलाषा पूर्ण की—ग्यारहवां अवतार—ग्यारहवें द्वापर में त्रिवृत्त ने व्यासजी का जन्म लेकर वेदों के भाग किये और पुराणों को बनाया और फिर शिवजी का ध्यान करके वरदान मांगा शिवजी ने कलियुग में गङ्गाजी के द्वारा अवतार लिया उनका नाम तप था तप के चार पुत्र उत्पन्न हुये लम्बोदर १ लम्बाक्ष २ लम्बकेश ३ प्रलम्ब ४ जिन्होंने व्यास के मनोरथ को पूर्ण किया—बारहवां अवतार—बारहवें द्वापर में भरद्वाज ने व्यास का जन्म लेकर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने पृथिवी पर अवतार लिया और हेमकिञ्चक में विराजमान हुये उनका नाम अत्रि था उनके चार पुत्र सरोज १ समबुद्धि २ साधु ३ शर्व ४ थे जिन्होंने व्यासजी के मनोरथ सिद्ध किये—तेरहवां अवतार—तेरहवां द्वापर में धर्मनारायण ने व्यास का अवतार धारकर वेदों के भाग किये और पुराणों को प्रकट किया परन्तु सर्व यत्न निष्फल हुये शिवजी गन्धमादन पर्वत पर बालखिल्य ऋषि के आश्रम में उत्पन्न हुये उनका नाम बालि था उनके चार पुत्र हुये जिनके नाम यह हैं सुधामा १ कश्यप २ वशिष्ठ ३ वर्जा ४ उत्पन्न हुये और व्यासजी के मनोरथ पूर्ण किये—चौदहवां अवतार—चौदहवें द्वापर में रक्ष जिनका नाम त्रिश्री भी है उन्होंने व्यासजी का अवतार धारकर वेद और पुराण के मत को प्रसिद्ध करके शिवजी का ध्यान किया शिवजी अङ्गिरस के कुल में उत्पन्न हुये उनका नाम गौतम था उन्होंने व्यास के सर्वकार्य सिद्ध किये उनके चार पुत्र उत्पन्न हुये अत्रि १ देवसत् २ अबल ३ सहिष्णु ४—पन्द्रहवां अवतार—पन्द्रहवें

द्वापर में त्र्यारुणिने वेद के चार भाग किये और पुराणों को प्रकट किया और फिर शिवजी का ध्यान किया सो शिवशंकर गङ्गातट पर हिमालय पर्वत के पीछे जन्मे उनका नाम वेदस्वर था उनके चार पुत्र हुये गुण १ गुणवाह २ कुशरीर ३ कुनेत्र ४ जिन्होंने व्यासजी की सहायता की और निवृत्त मत को दृढ़ किया—सोलहवां अवतार— सोलहवें द्वापर में धनञ्जय ने व्यास का जन्म लिया और यथाविधि वेद के भाग किये और पुराणों को वनाया और अपने मत की वृद्धि न देखकर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने पृथ्वी पर जन्म लिया उनका नाम गोकरण था गोकरण उस वन का भी नाम था जहां शिवजी ने अवतार लिया फिर वह वन अघहर क्षेत्र कहलाने लगा जिसकी सेवा करने और जिसमें रहने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं शिवजी ने अपने चार पुत्रों कश्यप १ उशना २ च्यवन ३ ब्रह्मपति ४ सहित व्यासजी को सिद्धि दी—सत्रहवां अवतार—सत्रहवें द्वापर में कृतञ्जय ने व्यासजी का जन्म लेकर वेदों के चार भाग किये और पुराणों को प्रकट किया पर निष्फलता के कारण शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने हिमालय पर्वत की चोटी पर महालय अवतार लिया उनका नाम गुफावासी भी था उन्होंने व्यासजी के मनोरथ पूर्ण किये उनके चार पुत्र थे उतथ्य १ वामदेव २ महायोग ३ महाबल ४।

नवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि जब अठारहवें द्वापर में ऋतञ्जय ने व्यास का रूप धारण कर वेदों के भाग किये और पुराणों को प्रकट करके मनोरथ सिद्ध न देखा तो शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने हिमालय पहाड़ के एक शिखर में जिसको सिद्धक्षेत्र भी कहते हैं उसके शिखण्डनामी पर्वत पर वन में अवतार लिया उनका

नाम शिखण्डी था शिखण्डी के चार पुत्र थे वाचश्रव १ ऋचीक२ शावाश्य ३ सजनीश्वर ४ इन सबने व्यास के कार्य सिद्ध किये-उन्नीसवां अवतार-उन्नीसवें द्वापर में भरद्वाज ने व्यास का जन्म लेकर वेदों के भाग किये और पुराणों को प्रकट किया पर सिद्धि प्राप्त न हुई इसलिये उन्होंने शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने हिमालय पर्वत पर जटामाली का अवतार लिया और चार पुत्र उत्पन्न करके व्यासजी के मनोरथ सिद्ध किये उनके यह नाम हैं रण्य १ कौशल्य २ लोकाक्षी ३ जुध्म ४-बीसवां अवतार-बीसवें द्वापर में गौतम ने व्यासजी का जन्म लिया और वेदों के भाग किये और पुराणों को निर्मितकर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने हिमालय पर्वत के पीछे अट्टहास का अवतार धारा उसका नाम भी अट्टहास था उन्होंने अपने शिष्यों सहित व्यास की कामना पूरी की शिष्यों के नाम यह हैं सीमन्त १ बरबरी बुद्ध २ अरबन्धु ३ किष्किन्धरा ४-इक्कीसवां अवतार-इक्कीसवें द्वापर में व्यास ने अवतार धार पूर्वोक्त सर्वकार्य कर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने दारुक अवतार लिया इसी कारण वह वन दारुक कहलाता है उनके चार पुत्र थे प्लक्ष १ दललायन २ केतुमानु ३ गौतम ४-बाईसवां अवतार-बाईसवें द्वापर में सूष्मायन मुनि ने व्यासजी का जन्म लेकर शिवजी का ध्यान किया और शिवजी ने काशी में अवतार लिया उनका नाम लाङ्गली था उनके चार पुत्र उत्पन्न हुये जिनका भल्लवि १ मधु-पुङ्ग २ श्वेत ३ गुप्तकान्त ४ नाम था-तेईसवां अवतार-तेई-सवें द्वापर में तृणबिन्दु ने व्यास का जन्म लेकर पुराणादि रच शिव का ध्यान किया शिवजी ने कालिञ्जर पर्वत पर महाकाय सुतश्वेत नाम अवतार लिया वहां भी शिवजी ने चार पुत्र उत्पन्न किये-ओषधि १ बृहदक्ष २ देवल ३ कव्य ४-चौबीसवां अव-

तार—चौबीसवें द्वापर में कुक्षि जिनको वाल्मीकि भी कहते हैं उन्होंने व्यासजी का जन्म धारणकर रामचन्द्रजी की लीला और चरित्रों का बखान किया फिर वेद के चार भागकर पुराणों को प्रकट करके शिवजी का ध्यान किया सो नैमिष वन में शिवजी ने शूलीनाम अवतार लिया और व्यासजी की कामना पूरी की उनके चार पुत्र यह थे शालिहोत्र १ सहजहोत्र २ युवनाश्व ३ अहिर्बुध्न ४—पच्चीसवां अवतार—पच्चीसवें द्वापर में ब्रह्मसत्त ने शिवजी का बड़ा तप किया और शिवजी की आज्ञानुसार वेद और पुराणों को बनाया उनके पुत्र उपमन्यु ने बालअवस्था से शिवजी की बड़ी भक्ति की जब उनका मत न फैला तब व्यास ने निराश होकर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने दण्डी मुण्डी का अवतार लिया उनके यह चार पुत्र हुये बहुल १ कुण्डकर्ण २ कुम्भाण्ड ३ प्रवाहक ४—छब्बीसवां अवतार—छब्बीसवें द्वापर में पराशरव्यास हुये जो हमारे पौत्र और शक्ति से उपजे थे और वैशम्पायन के पिता थे वह संसार में सबसे उत्तमोत्तम धर्म के प्रकट करनेवाले हुये उनके समान शिवजी का भक्त कोई नहीं हुआ उन्होंने वेद के चार भाग किये और अठारह पुराण बनाये शिवजी ने दयालु होकर उनके प्रकट करने को अवतार धारा उनका नाम सहिष्णु था वह भद्रनाट नगर में विराजमान हुये वहां शिवजी के चार शिष्य हुये उलूक १ विद्युत् २ संबल ३ अश्वलायन ४ यह सब व्यासजी के सहायक हुये—सत्ताईसवां अवतार—सत्ताईसवें द्वापर में ज्ञानकर्ण ने व्यासावतार ले कार्य सिद्ध करके शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रभासक्षेत्र में अवतार लिया उनका नाम सौम्यकर्म था उनके चार शिष्यों के यह नाम हैं अक्षपाद १ सुमुनिकुमार २ उलूक ३ वत्स ४ सौम्यकर्म अवतार ने योगशास्त्र को प्रकट किया और पुराण के

मत को स्थित करके अद्वैत धर्म को दृढ़ किया और मुनीश्वरों को पढ़ाकर उनके द्वारा मत को प्रसिद्ध कर दिया जो मनुष्य इस मत के विरुद्ध थे उनको जीत लिया फिर व्यासजी ऐसी अवस्था देखकर कि हमारे मत के कोई विरुद्ध नहीं बहुत प्रसन्न हुये और शिवजी की बड़ी स्तुति की और उनके शिष्यों की प्रशंसा संसार भर करने लगा यह द्वापर के २७ अवतार हमने कहे अब वह अवतार अर्थात् जो शिवजी ने कलियुग के आदि में लिया कहते हैं मन देकर सुनो ।

दशवां अध्याय ।

अट्ठाईसवां अवतार—ब्रह्माजी बोले कि अट्ठाईसवें द्वापर में विष्णुजी ने देवताओं की स्तुति सुन कर व्यासजी का अवतार लिया और वेदके भाग करके पुराणों को प्रकट किया पर उनके प्रसिद्ध न होनेसे शिवजी की स्तुति करके उनका ध्यान किया शिवजी ने व्यास की प्रार्थना सुनकर अवतार लिया और उनके सहायक हुये यह सुनकर नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी ! मेरी अभिलाषा है कि आप इस कथा को विस्तार से कहैं ब्रह्माजी ने कहा अच्छा हम इसको विस्तार से कहते हैं तुम ध्यान धर कर सुनो जिससे अति सुख प्राप्त हो और अनेक प्रकार के कष्ट निवृत्त होजावें क्योंकि इस कथा में दोनों ईश्वरों अर्थात् शिवजी और विष्णुजी की लीला और चरित्र हैं इन दोनों ने मनुष्य जन्म लेकर बड़े २ चरित्र किये और बड़े दीनदयालु और भक्तों के सुखदायक हैं—पूर्वकाल में देवासुरसंग्राम हुआ था उसमें बहुत दैत्य मारे गये समय पाकर वह सब दैत्य फिर पृथ्वी पर उत्पन्न हुये और कुसंगति में रहकर कुमार्ग में चलने लगे और युग के प्रभाव से उनकी बुद्धि नष्ट होगई सब विपरीत बातें करने लगे और अभिमानी होकर आपको भूल गये और इन्द्रियों के वश

हुये सबमें शत्रुता फैल गई और पांचों देवताओं का पूजन त्यागकर वेदके विरुद्ध बिचरने लगे इसी प्रकार देवताओं ने संसार को सत्यमार्ग पर न चलते देखकर विष्णुजी की सेवा में पहुँच रोते हुये अपना दुःख वर्णन किया और उनसे दुःख के निवृत्त की इच्छा की सो विष्णु भगवान् ने अङ्गीकार करके पराशर के पुत्र होकर जन्म लिया उनका नाम द्वैपायन था और उनकी माताका नाम सत्यवती था उन्होंने वेदके चार भाग करके उनकी शाखाओं को फैलाया और फिर पुराण बनाये यद्यपि बड़े २ यत्न किये कि वह प्रसिद्ध हों पर कुछ फल न हुआ तब द्वैपा-यनजी देवताओं और मुनीश्वरों सहित विष्णुजी की शरणमें गये विष्णुजीने कहा कि तुम जाओ कुछ चिन्ता न करो हम अवतार लेंगे यह सुनकर सब आनन्दपूर्वक अपने २ घर आये विष्णुजी ने वसुदेव यदुवंशी के यहां अवतार लिया जिनके समान दूसरा राजा न हुआ और उनकी स्त्री देवकी के समान कोई स्त्री पति-व्रता नहीं हुई विष्णुजी का नाम कृष्णजी हुआ जिनके नाम जपने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं और उनको स्मरण करनेवाला मनुष्य तरजाता है और वसुदेव की दूसरी स्त्री रोहिणी नाम से शेषजीने अवतार लिया उनका नाम बलदेव था जिनके सेवक देवता और मुनि आदि हैं कृष्णजीने व्रज में आकर यशोमति और व्रज के पति नन्द को अपनी लीला विलास से अति प्रसन्न किया और सब गोपियों को कुमारलीला से मोहित किया और पूतना आदि को जिनको राजा कंस ने भेजा था मारडाला और गोपियों के संग लीला और खेल किये जो सुख कि बड़े २ योगियों को बड़े तप से प्राप्त नहीं होता वह व्रजवासियों ने सहजही पाया और शत्रुओं को मारकर सेवकों को और भक्तों को सुख दिया उन्होंने सबसे उत्तम अपना आचरण सबको

दिखाया और अहंकारियों का मद नष्ट किया और ग्यारह वर्ष पर्यन्त व्रजमें विराजमान रहकर बलदेव सहित मथुरा में गये वहां उन्होंने बड़े बड़े चरित्र किये और कंस का उसके कुल-संयुक्त नाश किया और यदुवंशियों को बहुतही सुख दिया और बहुत से शत्रुओं को मारकर असंख्य भक्तों के प्राण बचाये और जरासन्ध के बलके अभिमान का नाश किया और कालयवन को नष्ट करके भक्तों को आनन्दपूर्वक रक्खा फिर बहुतसी राज-कन्याओं के साथ अपना विवाह किया और रुक्मिणी आदि जो बड़े २ महाराजों की कन्या थीं उनसे विहार किया और बड़े २ चमत्कार दिखाये जिससे श्रीकृष्णजी का वंश उत्पन्न हुआ उसकी हम संख्या नहीं कर सके कृष्णजी की रानियां १६१०८ थीं जिनसे दश २ पुत्र उत्पन्न हुये जो बड़े वीर थे यह चरित्र श्री-कृष्णजीने करके गृहस्थधर्म को दिखलाया और उसकी बड़ाई की और गिरिवर पर्वत को अपनी कनिष्ठिका से उठाकर भक्तों को सुख दिया और पाण्डवों पर दयालु होके उनको कौरवों से ब-बचाया और सुदामा को गुरु के घर की वार्त्ता स्मरण कराके उसको धन और मान से भरपूर किया और द्रौपदी की लाज रख ली और विदुर को अपना भक्त बना लिया और पाण्डवों से राजसूययज्ञ पूर्ण करा दिया महाभारत में एक पक्षी के अण्डों को बचा दिया फिर पृथ्वी का भार नाना प्रकार से उतारा तद-नन्तर यदुवंशियों के कुल को अभिमानी देखकर ब्राह्मणों से शाप दिलवाकर उनको नष्ट कर दिया और जब अपने लोक को सिधारे तो प्रथम अपने कुल का नाश कर दिया और उद्धव अपने मित्र को अद्वैत ज्ञान सिखाया और फिर उनको बदरीवन में भेज दिया और व्याधा को निर्वाणपद दिया और जो उसने किया था उसका बुरा न माना और फिर श्रीकृष्णजी दारुक-

सारथी को मुक्ति देकर अपने लोक को गये यह हमने कृष्णचरित्र संक्षेप में कहा है जिसके सुनने से मुक्ति प्राप्त होती है और पाप दूर होजाते हैं कृष्णजी ने धर्म को फिर स्थित किया पर व्यासजी को कुछ प्रसन्नता न हुई क्योंकि उनका निवृत्ति मार्ग प्रसिद्ध न हुआ उनको रात्रि दिवस यह शोच था कि किसी प्रकार हमारा मत फैले तब व्यासजी ने शिव का ध्यान किया और कहा कि हे कृपासिन्धो ! मैंने यद्यपि वेद के आशय पुराणों में प्रकट किये परन्तु कलियुग के प्रभाव से इनको कोई नहीं समझता प्रवृत्ति मत की तो बढ़ती होजाती है पर निवृत्ति की हानि होती है इससे आप अवतार लें और हमारे मत की वृद्धि करें और निवृत्ति मार्ग को दृढ़ करें शिवजी ने दयालु होकर ब्रह्मचारी का शरीर धारण किया और बड़ी २ लीलायें कीं और योगमाया से सब संसार को मोहित कर लिया कि उस शरीर से एक श्मशान में पहुँचकर देखा कि एक मुरदा पड़ा हुआ है सो योगमाया से उस शव में प्रवेश कर गये और एक पर्वत की कन्दरा में स्थित हुये सो हम और विष्णु दोनों यह हाल जानकर उनकी सेवा में गये उनका नाम लाकुलीश था जहां शिवजी विराजमान हुये उसे सिद्धक्षेत्र अथवा कायाचत्वार कहते हैं शिवजी ने चार शिष्य किये और व्यासजी के धर्म को प्रकट किया उनके नाम यह हैं उशिक १ गर्ग २ मित्र ३ रुन्ध ४ इससे तीनों लोक में आनन्द हुआ और सबका दुःख नष्ट होगया ऐसे २ चरित्र लाकुलीश शिवजी ने किये हे नारद ! हम तुमको सबका सार सुनाते हैं जिससे तुमको पूरा विश्वास प्राप्त हो कि हर द्वापर के अन्त में विष्णुजी आप अवतार लेकर वेद के भाग करते हैं और हर कलियुग के आदि में शिवजी अवतार धारते हैं और विष्णुजी हर बेर चार शिष्य करके वेद, योग और आश्रमों को

प्रकट करते हैं और वह लिङ्ग का पूजन करके भस्म धारण करते हैं हे नारद! हमने यह कथा विष्णुजी से सुनी है जो इस कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा वह मुक्त होगा दधिवाहन अवतार से लाकुलीश अवतार पर्यन्त २८ अवतार हैं और सब ४२ हैं।

ग्यारहवां अध्याय ।

नन्दिकेश्वर अवतार का वर्णन ।

श्रीब्रह्माजी बोले हे नारद! अब हम नन्दिकेश्वर अवतार का वर्णन करते हैं कि शिलादमुनि शिव के बड़े भक्त हुये वे शिव की भक्ति करने से महाधनपात्र और ऐश्वर्यवान् थे पर उनके कोई पुत्र न होता था इसलिये शिलाद ने इन्द्र का अति कठिन तप किया सो इन्द्र प्रसन्न होकर वर देने को गये और कहा कि वर मांगो शिलादमुनि ने प्रणाम कर हाथ जोड़ विनय की कि मुझको एक पुत्र कृपा कीजिये कि जो माता के गर्भ से न उपज कर अमर रहे इन्द्र ने कहा कि तुम ऐसा हठ मत करो हम ऐसा पुत्र नहीं दे सक्ते वरन हम केवल ऐसा पुत्र दे सक्ते हैं जो माता के गर्भ से उपज कर मरे तुम भली भांति विचारो कि संसार में कौन है जिसको मृत्यु नहीं ऐसा पुत्र तो विष्णु और ब्रह्मा भी नहीं देसक्ते देखो ब्रह्मा और विष्णु के लिये भी वेद कहते हैं कि वे शिव से उपजे और वह भी समय पर मरते हैं यह बात सुनकर शिलादमुनि ने इन्द्र से कहा कि हम तो केवल उसी भाँति का पुत्र चाहते हैं जैसा कि हमने कहा तब इन्द्र ने शिलादमुनि के हठ को दृढ़ समझकर कहा कि ऐसा पुत्र मृत्युंजय शिवजी देसक्ते हैं क्योंकि शिवजी मृत्यु के वश में नहीं हैं वरन वे काल को जीते हुये हैं यह कहकर इन्द्र तो चले गये और शिलाद शिवजी का तप करने लगे इसी प्रकार दिव्य सहस्र वर्ष तप करते शिलादमुनि को बीत गये और शिलाद

का शरीर च्यूंटी, सर्प, बिच्छू आदि कृमिकीटों का घर बन गया और शरीर में केवल अस्थि और चर्म शेष रह गया रक्त और मांस का चिह्न भी न रहा सो शिवजी ने प्रसन्न हो सुन्दर स्वरूप धार शिलाद मुनि के समीप आ उसको अपने हाथ से स्पर्श किया जिससे शिलादमुनि हृष्ट पुष्ट हो आरोग्य हो गये शिव बोले कि तुम क्या चाहते हो सो शिलादमुनि ने बहुत स्तुति के अनन्तर एक पुत्र मांगा कि जिसको काल न व्यापे और वह अमर होकर माता के गर्भ विना उत्पन्न हो शिवजी बोले कि संसार में कोई है कि जो उपज कर मृत्यु से बचे हां हम मृत्युंजय अर्थात् काल के जीतनेवाले और माता के गर्भ विना उपजे हैं इससे हम आप तुम्हारे पुत्र होंगे हमारा नाम नन्दी होगा और आगे ब्रह्मा ने भी पृथ्वी में हमारे अवतार लेने के लिये तप किया था हमने उनको वर दिया था कि समय पाकर हम पृथ्वी में अवतार लेंगे सो ब्रह्मा को हमने आप वर दिया था वह भी पूरा होगा और तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने से मानो एक पन्थ दो कार्य होंगे मैं संसार का पिता और तुम मेरे पिता हुये यह कह शिव अन्तर्धान होगये और शिलादमुनि ने अति प्रसन्न हो यज्ञ करने की इच्छा की और सर्वसामग्री इकट्ठी करने के अनन्तर यज्ञ करने लगे सो शिव उसी यज्ञ के बीच में से उपजे जो प्रलयकाल की अग्नि के समान देदीप्यमान महासुन्दर त्रिनेत्र चार भुजा धारण किये जिनमें शूल, टङ्क, गदा और असि लिये हुये और जटाओं का मुकुट शिर पर धारे दोनों कानों में कुण्डल पहने मेघवत् गम्भीर शब्द से शोभित और उनके सर्वाङ्ग बालकों के समान थे उस समय आकाश से मेघ वर्षा करने लगे और किन्नरादि आकाशचारी गाने बजाने लगे देवताओं ने पुष्पवृष्टि की और सबने शिव का अवतार पहिंचाना उस समय बड़ा

उत्सव हुआ और चारों ओर से जय २ का शब्द पूरित हुआ।

बारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! शिलादमुनि ने उस बालक से कहा कि तुमने उपजकर हमको अति आनन्दित किया इससे तुम्हारा नाम नन्दी है तुम तो शिव हो मुझको अपनी शक्ति कृपा करो यह कह शिलादमुनि स्तुति करने लगे सो सब देवताओं के विदा होने के अनन्तर शिलादमुनि नन्दी को साथ ले अपने स्थान को गये नन्दी ने मार्ग में यह लीला की कि पहला तन छोड़ मनुष्यों का शरीर धरा इससे शिलादमुनि ने बड़ा दुःख माना पर अन्त में निरुपाय हो संसारी रीतों को पूरा किया और नन्दी मनुष्यों के बालकों के समान खेल किया करते जब नन्दी की दश वर्ष की अवस्था हुई तो शिव की आज्ञा से मित्रा और वरुण दो मुनीश्वर शिलादमुनि के समीप आकर कहने लगे कि यह बालक सर्व-विद्यानिधान होगा पर इसकी आयु अति न्यून होगी यह कहकर दोनों मुनि तो चले गये और शिलादमुनि को महादुःख उपजा और इस महाचिन्ता से वह नन्दी को लिपट कर रोने लगा और मूर्च्छित हो धरती पर गिर पड़ा तब तो नन्दीश्वर मनुष्यों की तरह समझाने लगे कि आप इतना दुःख न मानें हम कोई इसका उपाय करेंगे कि हम शिवकी सेवा करके काल को जीत लेवेंगे यह समझाकर नन्दीश्वर रुद्रजप करने लगे तो शिव गिरिजा-सहित तुरन्त नन्दी के समीप आये और कहा कि तुमको कुछ मृत्यु का भय नहीं तुम हमारे समान शिव हो हमने दोनों मुनी-श्वरों को केवल तुम्हारी परीक्षा के निमित्त भेजा था तुम तो मृत्युञ्जय हो तुमको कुछ भय नहीं यह कह शिवने अपने शरीर को नन्दी के शरीर से लगा दिया और गिरिजा और सब गणों की ओर देखकर कहा कि यह नन्दीश्वर जरा और मृत्यु से

रहित हमारे समान बलिष्ठ होकर मुझे बहुत प्रिय होगा और हमारे पास स्थित रहेगा यह कह शिव ने अपनी माला नन्दीश्वर के गले में पहना दी कि तुरन्त ही नन्दी भी त्रिनेत्र और दशभुजा धारी होकर शिवके तुल्य होगये उस समय शिव ने नन्दी का हाथ पकड़ कहा कि तुमको क्या करदूं यह कहा और अपनी जटा के ऊपर से पानी छोड़ा जिससे नदियां बहने लगीं उनके यह नाम हैं जटोदक १ त्रिस्रोता २ वृषध्वनि ३ स्वर्णोदक ४ जटक ५ और जो शिव का लिङ्ग नन्दीश्वर ने स्थापित किया था उसका नाम भुवनेश्वर हुआ उसके निकट सरमद नाम बड़ा तीर्थ हो गया जो मनुष्य उन नदियों में स्नान कर भुवनेश्वर की पूजा करे वह तीनों लोक में बड़ा सुख पावे और शिव की सायुज्य मुक्ति प्राप्त करे फिर शिव ने गिरिजा से कहा कि हम नन्दीश्वर का अभिषेक करेंगे और वह सब गणों का एकही स्वामी बनाया जावेगा गिरिजा ने इस बात को अति प्रसन्नता से मान लिया फिर शिव ने सब गणों का स्मरण किया सो वे सब आये और विनय की कि क्या आज्ञा है क्या समुद्र को सुखावें वा मृत्यु को नष्ट करदें अथवा यमराज को उनके दूतों समेत बांध लावें अथवा ब्रह्मा को पकड़ लावें वा इन्द्र को देवताओं सहित पकड़ें अथवा दानव और दैत्यों को जला देवें वा अग्नि ही को पकड़ लावें अथवा इनके सिवाय और कोई आपका वैरी हो उसका वध करें वा आप किसी पर प्रसन्न हुये हैं, शिव बोले कि यह नन्दीश्वर हमारा पुत्र है और सबका स्वामी और मुझको प्यारा है यह तुम सबका अधिपति और स्वामी है तुम सब मिलकर इसका अभिषेक करो सो सबने मानकर जय २ शब्द पूरित किया और ब्रह्मा और विष्णु और सब देवतादि ने इकट्ठे होकर नन्दीश्वर का अभिषेक किया और ब्रह्मा ने शिव की इच्छा जान

कर मरुत की कन्या सुयशा के साथ नन्दी का विवाह करा दिया उस समय बड़ा उत्सव हुआ और नन्दीश्वर स्त्री सहित सिंहासन पर बैठे लक्ष्मी ने मुकुट आदि भूषण नन्दी को दिये और गिरिजा ने गले का हार कृपा किया और विष्णु ने अपने रथ की ध्वजा कृपा की और हमने कनकहार दिया फिर शिव नन्दी को नाना प्रकार की वस्तु दे उनको सर्व कुल परिवार सहित अपनी पुरी को ले गये जहां नन्दी शिव का गिरिजा सहित ध्यान किया करते हैं और कैलास में पहुँचकर शिव की नाना प्रकार की सेवा में लगे रहे हे नारद ! शिव की महिमा देखो कि उन्होंने एक भक्त के लिये आप बालक का अवतार धारा जो इस चरित्र को पढ़ेगा वा मन लगाकर सुनेगा वह धन, स्त्री, पुत्र और आनन्द से इस लोक में भरपूर रहकर परलोक में मुक्ति पावेगा तेंतालीसवां अवतार पूर्ण हुआ ।

तेरहवां अध्याय ।

भैरव अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम भैरव अवतार का वर्णन करते हैं कि एक दिन स्कन्दजी के पास कुम्भज जाकर कहने लगे कि आप मुझे भैरव चरित्र सुनाइये मैंने बहुत मनुष्यों से भैरवजी के अनेक चरित्र सुने हैं यह भी श्रवण किया है कि वे काशी के कोतवाल हैं उनसे सब संसार वरन काल तक डरता है एक तो भैरव भूतों में भी हैं जिनके अधीन सर्व योगिनीगण हैं और जो सर्व संसार को भयानक दृष्टि आवे उसका नाम भी भैरव है इन्हीं भैरव में वे भी हैं या और कोई भैरव कब और किस कार्य के निमित्त उपजे थे यह सब वृत्तान्त आप मुझे सुनावें यह बात कुम्भज मुनि से सुनकर स्कन्द मुनि बोले कि भैरव सदाशिवजी के पूर्णरूप हैं न

तो वे भूतों में हैं और न भयानक वे तो आपही सदाशिव हैं जिनको मूर्ख लोग नहीं जानते किन्तु ब्रह्मा और विष्णु भी इन-की महिमा नहीं जान सक्के और न नारद और शारद और देवता मुनि आदि उनका पार पा सक्के हैं यह कुछ अचरज की बात नहीं है वरन शिवजी की माया को कोई नहीं जान सक्का पर हां जिनके ऊपर शिव कृपा करें उनके सामने माया नहीं आ सक्की एक समय सब देवता मुनि आदि इकट्ठे बैठकर विचार करने लगे कि सृष्टि में कौन प्रभु है यद्यपि बहुत विचार किया पर कुछ न जाना तब तो सब चिन्तित होकर कहने लगे कि चलो मेरुपर्वत पर चलकर ब्रह्मा से पूछें वे मूल बात बतावेंगे निदान ऐसा ही किया और मुझसे स्तुति के अनन्तर पूछा कि महाराज आप बतावें कि ब्रह्म कौन है और कौन दोषों से रहित अविनाशी, सबके मनके जाननेवाला, निर्गुण, सगुण, सर्वसंसार का स्वामी, विश्वम्भर, प्रलयकाल जिनकी आज्ञा से तुम भी प्रजा को रचते हो और विष्णु उन्हीं की आज्ञा से पालन करके हर प्रलय करते हैं और जिनके भय से शेष पृथ्वी को धरे हुये हैं और जिनके अनुशासन से सूर्य प्रकाश किये रहते हैं और जिनकी आज्ञा से चन्द्रमा तारागणों समेत आकाश में प्रकट होते उनको बताइये इतना सुन हमने कहा कि हे देवताओ! वह हम हीं हैं हमारे नामों को सुनकर तुम आपही समझ लो कि परब्रह्म हमहीं हैं और कोई हमारे नाम ब्रह्मा, स्वयम्भू, धाता, अज, परमेष्ठि आदि बोलते हैं यह कह स्कन्दजी बोले देखो ब्रह्माजी शिव की माया से क्योंकर मोह कर अपने को परब्रह्म वर्णन करने लगे शंकरजी की माया अति बलवती है यह वार्त्ता हो रही थी कि विष्णुजी उत्तमोत्तम चतुर्भुजी स्वरूप धारण किये पीताम्बर ओढ़े क्रोध से नेत्र रक्त किये थे प्रकट हुये उन्होंने देवताओं से

कहा कि देखो ब्रह्मा की मूर्खता यह ऐसे मूर्ख वचन क्यों कहता है हे ब्रह्मा ! तुम वेद पुराण के विरुद्ध ऐसी बात क्यों कहते हो हमारी नाभिकमल से उपजे हो तुम्हारी बड़ाई हमारे अधीन है और तुम हमारी आज्ञा से सृष्टि रचते हो हम सब तुम्हारे सब कर्मों में सहायता करते हैं और तुम सर्व सृष्टि को उपजाकर उनकी रक्षा में प्रवृत्त रहते हो हम पृथ्वी का भार उतारते हैं हम परम ज्योति और परब्रह्म हैं हम परमात्मा निर्गुण और निर्दोष हैं और हर प्राणी में प्रकट हो रहे हैं मेरे विरुद्ध होना मानो अपने जीव से हाथ धोना है हम महापुरुष हैं हमसे बड़ा कोई संसार में नहीं वेद ने आप हमको ब्रह्म करके बखाना है तुम अपने नाम पर गर्व मत करो सत्य २ कहो निदान इसी प्रकार ब्रह्मा और विष्णु ने बहुत विवाद किये और शिवजी को किसी ने कुछ न जानकर आपही आपको ब्रह्म ठहराया ।

चौदहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अन्त को यह बात ठहरी कि वेद जिसको परब्रह्म कह देवें वही परब्रह्म माना जावे और वेदों का पूरा निर्णय समझा जावे सो इसी प्रयोजन से ब्रह्मा और विष्णु ने वेदों को बुलाकर अति नम्रता से कहा कि हे वेदो ! संसार में तुम्हारे वचन पर सबका पूर्ण विश्वास है तुम यह बतला दो कि परब्रह्म कौन है यह सुन वेद बोले जोकि तुमने हम पर इस बात को रक्खा तो हम सत्य ही सत्य कहेंगे जिससे तुम्हारे मनों का संशय दूर हो जावेगा पहिले ऋग्वेद ने कहा कि जहां सर्व जीवधारी स्थित रहते हैं और करोड़ों ब्रह्माण्ड दिखाई पड़ते हैं जिनको वेद परम तत्त्व करके वर्णन करता है और जिनको सन्तों ने सबसे श्रेष्ठ ठहराया है वे सदाशिव ही हैं जो प्रलय में भी नष्ट नहीं होते यह कह ऋग्वेद चुप हो रहा यजुर्वेद बोला

कि जिसको सर्व जीव यज्ञ करके सेवन करते हैं जो परमानन्द स्वरूप है और जिसका ध्यान योगी मन में करते हैं और बिन उसकी इच्छा के दर्शन प्राप्त नहीं कर सके और जिनको हम नेति २ वर्णन करते हैं वे शुद्ध सदाशिव हैं फिर सामवेद ने कहा कि जिससे तीन लोक प्रकट होते हैं और जिसको योगी अति विचार से समझते हैं और जिसके अंश से उत्पत्ति करनेवाला और पालन करनेवाला और प्रलय करनेवाला है वह केवल सदाशिव है फिर अथर्वणवेद बोले कि जिसको सन्त परब्रह्म वर्णन करते हैं उसकी भक्ति करके उसका यश गाते रहते हैं जो केवल आपही मुक्ति के देनेवाले हैं वह सदाशिव हैं यह वचन वेद के सुनकर दोनों देवता बहुत ही हँसने लगे और शिव की माया से मोहित होकर कहने लगे कि योगियों का पति, कुरूप, जटा धारण करनेवाला, विष खानेवाला, नग्न शरीर, बैल पर चढ़नेवाला जिसके भूषण सर्प हैं श्मशान की भस्म शरीर में मर्दन कर भूतों की संगति में रहता है वह परब्रह्म क्योंकर हो सक्ता है जिसकी संगति से सबको ग्लानि है यह कहकर दोनों हास्य करने लगे तब तो प्रणव ने कहा कि हे सृष्टि के उपजानेवाले ब्रह्मा ! और हे पालनेवाले विष्णो ! हमारी बात मन लगाकर सुनो तुम अपने मुखों से ऐसी विपरीत बात मत कहो तुम तीनों लोक के उपदेष्टा और विश्वासित हो वेद के मत को खण्डन मत करो वेदों ने सत्य ही कहा है परम शिवका कुछ रूप रेख नहीं है पर वे तीनों लोक में नाना प्रकार की लीला करते हैं तुम्हारे लिये उन्होंने स्वरूप धारण किया है वे तीनों लोक के अन्तर्यामी हैं वे तुम्हारी विनय के अनुसार ब्रह्मा के भ्रूमध्य से उपजे और शिव के बहुत लीलाधारी रूप हैं जिन्होंने अपने भक्तों के लिये बड़े २ चरित्र किये हैं हम शिवके चरित्रों के मूल वर्णन

करते हैं जिससे तुम्हारी मति परब्रह्म के विरुद्ध न हो और तुमको अटल बुद्धि प्राप्त हो सो कहते हैं कि जब कोई जीव न था वरन संसार, निर्गुण, प्रकृत, पुरुष, ब्रह्मा, विष्णुवर्ग, सृष्टि आदि कुछ भी न था तब केवल अद्वितीय, निर्गुण, माया से परे, ज्योतिमात्र सदाशिव थे जिनको वेद नेति २ करके बखानते और अहर्निश वर्णन करके फिर भी उनके भेद को नहीं जानते ऐसे निर्गुण स्वरूप शिव के नाम से विराजमान हैं वही अलख निरञ्जन स्वरूप शिव तीनों गुणोंसे श्रेष्ठहैं जिनके अंशसे तुम तीनों देवता उपजे हो उसमें शिवजी के पूर्ण अंशसे हर हैं तुम दोनों को उनकी सेवा करनी उचित है जो और शिवजी शिवलोक में रहते हैं वही हर, रुद्र और अविनाशी हैं और जो शक्ति सहित अवतार लेते हैं वही शिव कैलास में स्थित हैं और शक्ति रहित मृत्यु को जीते हुए दिखाई देते हैं और सर्व प्रकार की लीला करके स्वाधीन रहते हैं उनके चरित्र कोई जानने नहीं पाया जो उनकी इच्छा होती है वही करते हैं वे मायाजाल से परे हैं जिनके सब देवता और मुनि दास हैं जिनके चरित्रोंको वेद और पुराण और धर्मशास्त्र नहीं जानते तुम उनकी माया से भूलकर पशुओं के समान भटकते फिरते हो वही शिव लीलाधारी अपनी इच्छा के अनुसार बहुतसे रूप धारण करते हैं कभी शरीर धारते कभी शरीररहित कभी योगी और कभी भोगी कभी भूतों की संगति में और कभी नग्न शरीर में भस्म लगाये सेलीके भूषण पहिने जटा रखाये हुये कभी परमहंसी गति को दिखलाते कभी अपने में आपही को देखकर ध्यान करते हैं कभी चक्रवर्ती राजाओं के समान नाना प्रकार के भोग भोगते हैं और शक्ति समेत सिंहासन पर बैठकर राज्य करके प्रजा पालन करते हैं और सब देवता और दैत्य उनको प्रसन्न करके अपना २ मनोरथ पाते हैं उन

का यश लक्ष्मीजी गाती हैं विष्णु मृदङ्ग बजाते हैं ब्रह्मा ताल देते हैं सरस्वती वीणा धारण करती हैं इन्द्र बांसुरी बजाते हैं वे शिव ऐसे हैं यद्यपि यह सब बातें प्रणव ने सुनाईं पर उन दोनों के मनमें कुछ न आया कारण यह था कि शिवजी की माया से वे इस बात को नहीं मानते थे इतने में शिवजी ने इच्छा की कि इनका मोह दूर करना चाहिये।

पन्द्रहवां अध्याय।

स्कन्दजी बोले कि हे कुम्भज! इतने में दोनों के बीच एक ज्योति प्रकट हुई जिसके प्रकाश से सब पृथ्वी और आकाश पूर्ण होगया उसमें से एक सुन्दर स्वरूप उपजा जिसको देख ब्रह्मा ने पांचवें मुख से यह कहा कि हे विष्णो! हमारे और तुम्हारे बीच में यह कैसी आश्चर्यदायक ज्योति प्रकट हुई है जिसमें किसी मनुष्य का स्वरूप दिखाई देता है यह कह वह कह ही रहे थे कि ब्रह्मा को इस प्रकार का स्वरूप भासित हुआ कि एक मनुष्य नीललोहितवर्ण, चन्द्रभाल, त्रिशूल हाथ में सर्पों का भूषण बनाये खड़ा हुआ है सो ब्रह्माजी ने कहा कि तुम तो वही हो जो हमारी भ्रू के मध्य से उपजे थे तुम्हारे रोने के कारण हमने तुम्हारा नाम रुद्र रक्खा था और भी बहुत से नाम रक्खे थे तुमको उचित है कि हमारी शरण में आवो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे जब कि ब्रह्माजी ने मोहवश ढिठाई से यह वार्त्ता की तो ऐसा गर्व ब्रह्मा का देख शिवजी ने महाकोप किया और एक मनुष्य को उपजाया जो भक्तों को आनन्द देनेवाला और शत्रुओं के लिये अति भयंकर है उसके भाल में चन्द्रमा तीनों नेत्र लाल शरीर में सर्प लिपटे हुये निदान हर प्रकार अपने समान अपनी लीला के लिये प्रकट किया उस उपजे हुये मनुष्य ने हाथ बांध शिवजी से बिनती की कि हमारा नाम रख

दो और जो मुझे काम करना है वह कह दो शिवजी बोले कि तुम काल के समान भासित होते हो इससे तुम्हारा नाम कालराज हुआ और जोकि तुम विश्व के भरण की शक्ति रखते हो इससे तुम्हारा नाम भैरव भी है और जोकि तुमसे कालको भी भय होगा इससे कालभैरव भी तुम्हारा नाम है और जोकि तुम गणों के दुःख मिटानेवाले हो इससे अमरादिक भी तुम्हें कहेंगे और तुम भक्तों के पाप खा डालोगे इससे तुम्हारा पापभक्षण भी नाम है इसी तरह और भी तुम्हारे नाम होंगे और सब भक्तों के मनोरथ तुमसे पूर्ण होंगे अब अपना काम सुनो कि पद्मसुत जो ब्रह्मा है यह महाशत्रु है इसको भलीभांति शिक्षा दो और इसके सिवाय और भी जो संसार में इस विधि के विरोधी हैं उनको दण्ड दो और हमारी मुक्तिनगरी अर्थात् जो काशी हमारी है और हमको प्राणके समान प्रिय है उसका स्वामी हमने तुमको किया तुम सदा के लिये वह स्थान अपना समझो अर्थात् तुम काशी के कोतवाल होकर सबको शिक्षा दोगे काशी में तुम्हारी दुहाई फिरेगी तुम वहां अपना राज्य करोगे और जो मनुष्य काशी में पाप करें उनको उपदेश करो तुम्हारा तेज तीन लोक में कोई न सहसके और जो कोई काशी में शुभ अशुभ कर्म करते हैं उनको चित्रगुप्त नहीं लिख सके वहां यमराज की आज्ञा नहीं चलती यह सुन कालभैरव प्रसन्न हुये और मनमें सोचने लगे कि ब्रह्मा को क्या दण्ड देना चाहिये फिर विचार किया कि ब्रह्मा ने पांचवें मुखसे शिवजी की निन्दा कर उनको पुत्र बनाया है इसलिये उचित है कि उसका वही पांचवां शिर काट डालूं इस इच्छा से भैरव क्रोधित हुये पहिले उनका स्वरूप महाभयानक होगया सो बाईं अंगुली के नख से ब्रह्मा का पांचवां शिर काट लिया उस समय बड़ा हाहाकार मच

गया और देवता और मुनि आदि सब कांपने लगे और विष्णु भी हाथ जोड़ स्तुति करने लगे और ब्रह्माजी भी कांपकर महा दुःखी हुये और शतरुद्री का जप करने लगे और शिवजी की शरण में गये सो शिवजी ने कहा कि हे विष्णो और ब्रह्मा! कुछ भय मत करो तुम दोनों सृष्टि के उपजानेवाले और पालन-कर्ता और मैं प्रलय का करनेवाला हूं तुम मुझको अपने समान प्रिय हो हम तुम तीनों देवताओं में कुछ भेद नहीं है पर जिस मुख से ब्रह्मा ने निन्दा की केवल उसे हमने कृपा करके दण्ड दिया हमने यह चरित्र कर तुम्हारा मोह दूर कर दिया जब तुमने वेद और पुराणों की आज्ञाओं को न समझा तो मुझको तुम्हारी भलाई के लिये प्रकट होना पड़ा इसके पीछे भैरव से शिवजी ने कहा कि हे भरणकर्ता भैरव! जो काम करना वह समझ बूझकर करना ब्राह्मण चाहे कैसाही भ्रष्ट होगया हो पर उसका वध करना महापाप है तुमको ब्रह्मा का पांचवां शिर काट डालने के कारण दोष लगगया है उसको दूर करो और काया-पालव्रत धारण करो यद्यपि तुमको पुण्य पाप कुछ नहीं है पर वेद के अनुसार सब करना चाहिये कि अन्य मनुष्य भी ऐसा करें तुम शिरको हाथ में लिये हुये भिक्षाटन करते सर्वलोकों की परिक्रमा करो यह कहकर शिवजी ने एक स्त्री प्रकट की जिसका शरीर बहुत बड़ा था उसका नाम ब्रह्महत्या रक्खा वह महाभयंकर और महाभय देनेवाली सामग्री धारे जिसका भय-दायक रक्त शरीर रक्त ही वस्त्र पहिने सर्वशरीर में रुधिर लगाये बड़े भयानक दांत जिसकी जिह्वा मुखसे निकली हुई आकाश तक शिर उठाये हाथ में खप्पर लिये जिसमें से लहू पीती थी और प्रलयकाल के मेघ समान महाभयंकर ब्रह्महत्याको शिवजी ने प्रकट करके उससे कहा कि काशी हमारी नगरी है वहां जब

तक भैरव लौट न आवें तब तक उनको न छोड़ना चाहे कोई करोड़ों उपाय करे और सिवाय काशी के तुम्हारी तीनों लोक में गति होगी यह रहस्य कहकर शिव अन्तर्धान होगये और भैरव ने भी शिवजी की आज्ञा स्वीकार की और ब्रह्मा का शिर लिये हुये भिक्षा मांगते फिरे और ऊंचे शब्द से सबको अपना पाप जो लगा था सुनाते थे यद्यपि भैरव शुद्ध थे पर संसारी मनुष्यों की शिक्षा के निमित्त उन्होंने ऐसा किया ।

सोलहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! भैरवको ब्रह्महत्या ने छोड़ा और वह पीछे २ बड़ा शब्द करती हुई चली जहां भैरव जाते वहां वह भी जाती भैरव संसारभर में भ्रमण करते फिरे और सातों द्वीप में जो जो तीर्थ थे वह सब भैरव ने अकेले किये और साथ में वही स्त्री थी और कोई नहीं था यहां तक कि वह पाताल लोक तक गये पर वह स्त्री न छूटी निदान उन्होंने ऊपर के लोक में भी भ्रमण किया परन्तु वह न हटी इसी प्रकार भैरव ब्रह्मलोक पर्यन्त फिरे जहां भैरव शिर लेकर जाते थे वहां के निवासी अन्न धन से परिपूर्ण होजाते थे निदान महादुःखी हो भैरव नारायणलोक को इस इच्छा से चले कि वहां जाने से पापसे छूटेंगे विष्णु ने भैरव को देख लक्ष्मी से कहा देखो परब्रह्म शिव आते हैं यह धरती धन्य है और हम तुम सब शुभ हैं यह तो पूर्ण स्वरूप से सदाशिव हैं जिनके नाम लेने और दर्शन करने से फिर मनुष्य का शरीर नहीं मिलता वही कृपा करके यहां आते हैं जब कि भैरव निकट आये तो विष्णु ने सर्व सभा सहित उठकर भैरव की स्तुति की और कहा कि तुम तो सब पापों के दूर करनेवाले और भक्तों के आनन्ददायक और अविनाशी हो तुम यह क्या चरित्र और लीला कर रहे हो हम-

से वर्णन करो और जो तुम हाथ में शिर लिये हुये भ्रमण कर रहे हो इसका क्या कारण है तुमतो संसार के महाराजाधिराज हो यह तुम्हारा भीख मांगना आश्चर्य देता है भैरव बोले कि हम ब्रह्मा का शिर काट पापी हुये उस अधर्म से छूटने के कारण सर्वसृष्टि में फिरते हैं विष्णु ने कहा कि मुझसे तीनों लोक के मोहनेवाली अपनी माया को दूर रखिये तुम सृष्टि भरके स्वामी हो जो तुम्हारी इच्छा होती है वही सब करते हो वह सब तुमको शोभायमान है तुम तो संसार से भिन्न हो तुमको पुण्य पाप से कुछ प्रयोजन नहीं तुम्हारे नाम जपने से सर्वपाप भाग जाते हैं जब तुम प्रलय में सब देवता, दैत्य, मुनीश्वर और वर्णाश्रमों को नष्ट करते हो तब तुमको क्यों पाप नहीं लगता उस समय ब्रह्मा का तो अभावही कर देते हो अब केवल तुमको एकही शिरके काटने से पाप लग सक्ता है अन्य कल्पों के ब्रह्माओं के शिर तुम्हारे गले में पड़े हुये हैं उनकी ब्रह्महत्या तुमको क्यों नहीं लगती अब अपने को पापी ठहराते हो तुम्हारी विचित्र लीला है देवता और मुनि उसको कोई नहीं जानते और जिस भांति कि सूर्य के उदय होने से अँधियारा जाता रहता है उसी भांति तुम्हारे भक्त के चाहे वह कैसा ही पापी हो पाप नष्ट हो जाते हैं जो मनुष्य एकबेर तुम्हारा ध्यान करता है उसके दुःख और ब्रह्महत्या आदि पाप दूर होते हैं तुम्हारे नाम लेने से पापों का पर्वत नष्ट हो जाता है चाहे कोई शत्रु भी तुम्हारे नाम शिव, शंकर, शशिशेखरादि ले वह भी आवागमन से छूटे और वह सदा कैलास में स्थित रहेगा तुम्हारा नाम शुभ है तुमको यह शिर हाथ में लेकर भ्रमण करना उचित नहीं है हमारी बड़ी भाग्य है कि जिसको योगी योग करके नहीं पाते वह हमारे लोक में आज विराजमान हुये हम

धन्य हैं और हमारा लोक धन्य है जो आप ऐसे स्वामी को आज देखते हैं आपकी दृष्टि अमृतकासा गुण रखती है जिसको देखकर फिर आवागमन का भय नहीं रहता जो अच्छे लोग तुम्हारा भजन करते हैं वे स्वर्ग और मोक्ष तृण के समान जानते हैं विष्णु यह कह रहे थे कि भैरव ने भीख मांगी सो लक्ष्मी ने भिक्षा देकर प्रणाम किया और भैरव आगे चले और पीछे २ ब्रह्महत्या साथ हुई।

सत्रहवां अध्याय।

स्कन्दजी बोले कि हे कुम्भज! विष्णु ने ब्रह्महत्या को भैरव के पीछे जाते देखकर कहा कि भैरव का पीछा छोड़कर जो तुझे वर चाहिये वह हमसे मांग ले ब्रह्महत्या ने हँसकर कहा कि मैं शिवजी की आज्ञा से भैरव के पीछे फिरकर अपने को शुद्ध करती फिरती हूं भैरव को कुछ दुःख नहीं देती हूं जो कोई भैरव का नाम लेता है मैं तुरन्त उसका घर छोड़ भाग जाती हूं हमारा अधिकार भैरवपर केवल इतना ही है कि यह बात केवल शिवजी की आज्ञा से हुई है उस आज्ञा को कौन भङ्ग कर सक्ता है यह कहकर ब्रह्महत्या उसी प्रकार भैरव के पीछे चली भैरव ने विष्णु के ऐसे विश्वास को देखकर कहा कि जो इच्छा हो वह हमसे वर मांग लो हमको यह चाण्डाली हत्या कुछ दुःख नहीं देसक्ती हम यह आपही संसार के लिये चरित्र कर रहे हैं विष्णु बोले कि हमको यही बड़ा वर मिला कि आप हमारे लोक में आये हम यह चाहते हैं कि हम प्रति-दिन आपके चरणकमलों का ध्यान किया करें और हमको हरदिन आपके दर्शन मिलें भैरवने कहा अच्छा यही वर हमने तुमको दिया तुमभी देवता और मुनीश्वरों को वर दिया करो और तीनों लोक के स्वामी होकर आनन्दपूर्वक बैठे रहो यह

कहा और सब देशों की परिक्रमा कर काशी की ओर चले वह काशी जिसकी बराबर तीनों लोक में कोई क्षेत्र नहीं और जहां सबको परममुक्ति प्राप्त होती है जब भैरव काशी के समीप पहुँचे तब ब्रह्महत्या अतिभयवती हो चिल्लाने लगी जब भैरव बैठ गये तो वह हाहाकार करके पृथ्वी के नीचे चली गई और भैरव के हाथ से शिर धरती में गिर पड़ा भैरव अति प्रसन्न हुये और सब देवता और मुनीश्वरों ने जय २ उच्चारण किया भैरव नाचने लगे हे कुम्भजमुनि ! काशी की महिमा देखो वह सबसे श्रेष्ठ है यह काशी शिवजी को कैसी प्यारी है कि जो पाप भैरव का और किसी स्थान में नहीं छूटा था वह काशी के भीतर जाते२ छूटगया हम उसकी महिमा कहां तक कहें वह तीनोंलोक से निराली और मोक्ष देनेवाली पुरी है वह सबसे श्रेष्ठ कपालमोचन तीर्थ है जिसके दर्शनहीसे सब पाप नष्ट होजाते हैं और जिसके स्मरण से बड़े २ पाप छूट जाते हैं और मुक्ति मिलती है और वहां देवता और पितरों के तर्पण करने से ब्रह्महत्यादि छूट जाते हैं इसके समान दूसरा तीर्थ नहीं है जैसा कि वेद और पुराणादि कहते हैं और जो कि मार्गशीर्ष की कृष्णाष्टमी को भैरव का अवतार हुआ तो उस दिन जो कोई व्रत करे उसके जन्म भर के पाप दूर होजावें इसी प्रकार उस दिन जागरण का भी यही फल है और जो कदाचित् भैरव के निकट जाकर काशी में इस व्रत को करे तो जो पाप किये हुये हों वे सब दूर होजावें कोई भी दोष न रहे और जो उस दिन भैरव का पूजन करे तो एक वर्ष के बड़े २ पाप सब जाते हैं और जो अष्टमी, चतुर्दशी और रविवार को कोई भैरव की यात्रा करेगा उसके सब पाप छूट जावेंगे और जो कोई भैरव की आठ परिक्रमा करे तो उसको तीनों प्रकार के पाप न लगेंगे

यह भैरव का व्रत सब व्रतों का राजा है और चारों फल का देनेवाला है जो मनुष्य दोनों लोक में सुख प्राप्त करने की इच्छा रखता हो वह इसी व्रत को निश्चयपूर्वक करे इस व्रत के करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं इस भैरवचरित्र के सुनने से मुक्ति होती है और बड़ा आनन्द मिलता है चवालिसवां अवतार पूर्ण हुआ ।

अठारहवां अध्याय ।

वीरभद्र अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! इससे पहले हम वीरभद्र अवतार का विस्तार से वर्णन कर चुके हैं अब संक्षेप में कहते हैं कि दक्षप्रजापति हमारे पुत्र ने बुद्धि की हीनता से शिव के साथ वैर बढ़ाया और उनकी निन्दा की पर शिवशङ्कर ने ऐसे वचनों का कुछ विचार न किया इतने में वह यज्ञ करने लगा सब देवता और हम भी अपने परिवारों सहित उस यज्ञ में आते गये यद्यपि बड़ी धूमधाम थी पर शिवजी विना कुछ शोभा न थी दधीचि मुनि ने सबको समझाया कि तुम सब जाकर शिवजी को यहां लावो पर यह बात किसी को न भाई यहांतक कि विष्णु और हमने भी शिवजी को भुला दिया अन्त को दधीचि मुनि यह बात कहकर कि यह यज्ञ पूर्ण न होगा बाहर चले गये इस बात को दक्षप्रजापति उत्तम समझकर हम सबकी सहायता से यज्ञ करने लगा संयोग से सती अपने पिता के यज्ञ का होना सुनकर अति प्रसन्न हुई और शिवजी से हठ करके आज्ञा पा दक्ष के यहां गई और वहां शिवजी की अति अप्रतिष्ठा देख क्रोधित हुई और कहा कि हे दक्ष और ब्रह्मा और विष्णु और सब देवता और मुनि आदि ! तुम सबकी शुद्धबुद्धि जाती रही है तुम सबने शिव विना यज्ञ करना चाहा है इसका फल तुम

सबको मिलेगा फिर योगधारण कर सती जलगई तब हाहा-
कार होगया और सब विकल हुये सती का मरना सुन बीस
हज़ार गणों ने अपनी प्रसन्नता से अपने प्राण छोड़ दिये और
शेषगणों को जिन्होंने उपद्रव उठाया उन सबको भृगु ने मन्त्रों
के बल से उच्चाटन कर दिया उन सबने भागकर शिवजी के
पास पहुँच सर्ववृत्तान्त वर्णन कर दिया और शिवजी ने हे नारद!
तुमसे सब वृत्तान्त पूछा और फिर तुम्हारा वर्णन सुन शिवजी
ने अति कोपित हो अपनी एक जटा उखाड़कर शिला पर मारी
उस समय पर्वत और नदियों समेत तीनों लोक कांप उठे उस
जटा के प्रथम भाग से एक मनुष्य चतुर्भुजी स्वरूप त्रिनेत्र
किये महाभयानक हाथ में त्रिशूल लिये वीरभद्रनामी उपजा
और शिवजी के सामने आखड़ा हुआ और उसने अपने रोमों
से अपने समान असंख्य गण उपजाये वे सब अट्टहास करते
थे और जटा के दूसरे भाग से श्रीमहाकाली महाभयानक
स्वरूप धारे अपने साथ करोड़ों योगिनियों को लिये हुये बड़ा
शब्द करते प्रकट हुईं फिर वीरभद्र और काली ने हाथ जोड़
कर शिवजी से अपना काम पूछा तब शिवजी ने बड़े कोप से
आज्ञा दी कि तुम दक्ष के यहां पहुँच उसके यज्ञ को विध्वंस
कर सबको दण्ड दो यह आज्ञा पाकर वह सब सेना चली
जिसके चलने से चारों ओर शब्द पूरित हुआ और वीरभद्र
चले जिससे पृथ्वी कांप उठी और वायु प्रचण्ड चलने लगी
वीरभद्र के रथ में बीस अयुत सिंह लगे हुये थे और रथ बीस
कोस लम्बा था जिसमें असंख्य छत्र लगे थे और वह गण जो
वीरभद्र से उपजे थे सो चौंसठ करोड़ थे वह भी वीरभद्र के
साथ चले इनके सिवाय और बहुत से शिवगण विमान पर
आरूढ़ हो चले जिनमें अति प्रसिद्ध गण थे और यह सब

सेना की संख्या जो गणों के साथ चली चौंसठ करोड़ थी और सहस्र कोटि भूतों की सेना थी और क्षत्रपाल भी अपनी सेना समेत चले और भैरव भी असंख्य सेना लेकर साथ हुये इस प्रकार इतनी सेना लेकर वीरभद्र चले जिसकी गणना नहीं हो सकी यह वृत्तान्त दक्ष की स्त्री वीरनी ने जाना जिसने सती का आदर किया था उसने सबसे समझा कर कहा कि अब कुशल नहीं है शिवजी महाकोपित हुये यह बात वीरनी सबसे कह रही थी कि सेना पहुँच गई और जहां हिमालय पर्वत के सुवर्ण के शिखर हैं और मायापुरी के निकट जहां गङ्गा बहरही हैं उस देश का नाम कनखल है वहीं पर दक्ष यज्ञ कर रहे थे निदान वीरभद्र ने पहुँचकर प्रलय की अग्नि के समान होकर उग्रस्वर से कहा कि हम शिवजी की आज्ञा से आये हैं तुममें से किसी को बिन वध किये न छोड़ेंगे ।

उन्नीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! वीरभद्र ने यह कह यज्ञस्थानको जला दिया और सब गणों को आज्ञा दी कि अकाल प्रलय करो यह सुन गणों ने महाक्रोध कर यज्ञ के विद्यमान देवताओं और मनुष्यों की दाढ़ी केश आदि सब उखाड़ डाले और सबको शस्त्रों से मारा ऐसी मार देख दिक्पालों ने कुछ सामना किया पर वे सब वीरभद्र से परास्त होगये और इन्द्र की भुजा उठ न सकी और त्रिशूल से विकल होगये और अनल की शक्ति काटकर उसे त्रिशूल से घायल कर दिया और यमराज का कालदण्ड काटकर मूर्च्छित कर दिया और नैर्ऋति का खड्ग तोड़कर उसके हृदय में त्रिशूल मारा और वरुण की पाश काट उसको अपने बाण से घायल किया और पवन की ध्वजा नष्ट कर उसे फरसे से मारा और कुबेर की गदा तोड़ उसे अपने

त्रिशूल से घायल किया और चन्द्रमा को लात से मारा और आठों वसुओं का मुशल काट दुःख दिया इनके सिवाय और जो युद्ध के लिये खड़े थे उन सबको अपने शस्त्रों से हना यह दशा देख सब देवता भाग खड़े हुये और उनका कोई उपाय न चला और गणों ने महाभयंकर अट्टहास किया और यज्ञ को नष्ट करने लगे इससे अत्रिमुनि भागकर विष्णु के चरणों पर गिर पड़े और कहा कि हमारी रक्षा करो हम आपकी शरण में हैं आप यज्ञरूप और यज्ञ की रक्षा करनेवाले हैं हम देवताओं और मुनि आदि के दुःख को कहां तक वर्णन करें यह जो शिव के गण आये हैं इनको निवारण करो सो दक्षप्रजापति भी विष्णु से यह विनती करके चरणों पर गिर पड़े और बड़ी भारी स्तुति की और कहा कि ऐसी कृपा कीजिये जिससे यह गण निवृत्त हों कदाचित् गणों ने हमारा यज्ञ नष्ट कर डाला तो हमारी बड़ाई में अन्तर पड़ जावेगा ऐसी २ विनयकर दक्ष हाथ जोड़ विष्णु के आगे खड़ा हुआ ऐसी देवताओं और दक्ष की विनती सुनकर विष्णु गणों पर क्रोधित हुये और लड़ाई के लिये खड़े होगये और सब शस्त्र विष्णु के स्मरण करने से आये विष्णु रथ पर आरूढ़ हो युद्ध के निमित्त चले और गणों के सामने खड़े होकर ज्वलित अग्नि के समान दिखाई दिये और गणों को अपने बाणों से विकल करके युद्धस्थान से भगा दिया तब श्रीमहाकाली महाकोपित होकर बड़ा शब्द करती हुई विष्णु के सम्मुख चली और काली की सेना भी विष्णु के ऊपर चढ़ धाई और विष्णु को चारों ओर से घेर लिया और क्षेत्रपाल भी अपनी सेना लेकर विष्णु से लड़ने को चले और भैरव भी विष्णु के सामने चढ़ धाये सो इन तीनों ने विष्णु से बड़ा युद्ध किया विष्णु की बहुत सेना मर गई निदान विष्णु ने सबको परास्त

कर अपना तेज ऐसा बढ़ाया कि कोई उनसे भिड़ न सका अन्त को भैरव और काली और क्षेत्रपाल विष्णु की सेना के भीतर पैठे कि जिस तरह राहु चन्द्रमा को घेर लेता है तब तो विष्णु ने अपना धनुष् हाथ में लेकर सौ बाण चलाये और साथ उसके अपना शंख बजा दिया उस समय जो सब देवता वीरभद्र के भय से भाग गये थे सब विष्णु के समीप आ गये और दोनों ओर से महासंग्राम हुआ श्रीमहाकाली ने हँसकर अपना मुख पृथ्वी से आकाश तक फैला दिया और बहुत सी सेना अपने मुख के भीतर डाली और कइयों का शिर तोड़कर खा लिया और क्षेत्रपाल ने सौ बाण चलाकर बहुत सेना मार डाली और भैरव ने भी अपने त्रिशूल से असंख्य सेना वध की इस प्रकार काली भैरव और क्षेत्रपाल ने देवताओं और विष्णु की सेना बहुत ही मार डाली और विष्णु ने भी सब बाणों को जो चलाने-वाले थे छोड़ दिया और योगमाया से सब बाणों को अभि-मन्त्रित कर चलाया फिर योगमाया से अपने समान बहुत से पार्षद शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुये प्रकट किये जिन्होंने गणों को मारकर बड़ा भय दिया ऐसी योगमाया विष्णु की देखकर वीरभद्र ने अति क्रोधित हो अपना त्रिशूल चलाया जिससे विष्णु की योगमाया सब नष्ट होकर अकेले विष्णुजी रह गये और वीरभद्र ने अपनी गदा विष्णुजी के मस्तक में मारी सो विष्णु न सहकर पृथ्वी में गिर पड़े और दोनों सेना में हाहाकार मच गया और विष्णु ने फिर उठकर अपना चक्र हाथ में लिया जो प्रलयकाल के असंख्य सूर्यों के समान प्रका-शमान था उसकी अग्नि चारों ओर फैल गई और आकाश और पृथ्वी जलने लगे उसको देख सब गण आश्चर्य में हो विष्णु के सामने ठहर न सके वीरभद्र ने शिव का ध्यान किया

कि उनको चक्र के रोक देने की शक्ति प्राप्त हुई जिसके बल से वीरभद्र ने चक्र न चलने दिया।

बीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! विष्णुजी के हाथ से चक्र न चल सका जिसके चलने से प्रलय हो जाता है और विष्णु भी पर्वत के समान खड़े रह गये विष्णु ने मन्त्र पढ़ा जिससे शरीर तो डोल सका पर चक्र को कुछ भी चलने की शक्ति न हुई उस समय हमने आकर विष्णु को समझाया कि जो होना है वही होगा आप वृथा ही हठ करते हैं क्या दधीचि मुनि का वचन अन्यथा हो सक्ता है अब आप इसको शिव की इच्छा जान इस विषय में परिश्रम न करें आप अपने वैकुण्ठ को चलें सो विष्णु अपने धाम को चले गये तब वीरभद्र नाना प्रकार के उपद्रव करते हुए यज्ञ के पास पहुँचे पहिले तो यज्ञ के स्थान को फूँक दिया और किसी गण ने यज्ञ करानेवाले की दाढ़ी उखाड़ डाली और जो शिव के विरुद्ध मुनीश्वर थे उनको मार डाला कई गणों ने यज्ञ का स्थान किसी ने यज्ञ का सामान भ्रष्ट कर डाला और जितने यज्ञ के पात्र थे वह गङ्गाजी में फेंक दिये और जल डाल सब यज्ञकुण्ड बुझा दिये उस समय मख हरिण का रूप धार भाग चला वीरभद्र इस बातको जानकर उसे आकाश से पकड़ लाये और उसका शिर तुरन्त काट डाला और धर्मराज और दक्ष प्रजापति और कश्यप के शिर पर अपनी लात मारी इस के सिवाय कृष्टनेमि और कृशाश्व और अङ्गिरस मुनीश्वरोंके शिरों को लात से मारा और सरस्वती की नाक काट डाली जो देवताओं की माता थी और नख से भग के नेत्र निकाल लिये और भृगुमुनि की मूछें उखाड़ डालीं और मुष्टिका के प्रहार से पूषा के दाँत तोड़ डाले ऐसी बातों से भी संतोष न रखकर दक्ष को पकड़ उसका

शिर काटने लगे पर जब शिर न कटा तो वीरभद्र ने शिव का ध्यानकर शिवजी की आज्ञानुकूल उसका शिर मरोड़कर आग में डाल दिया इसी प्रकार बहुत से उपद्रव कर यथाशक्ति सब को प्रतिफल दिया और उसी चिताभूमि में प्रलय करनेवाले रुद्र के समान विराजमान हुये उस समय हम ब्रह्मा और विष्णु आदि ने शिव के निकट जा विनय की कि आपके गण वीरभद्र ने यज्ञ को विध्वंसकर सबको विकल कर दिया है दक्षप्रजापति ने वास्तव में बहुत ही निर्बुद्धिता का काम किया कि आपको अवधूत समझ यज्ञ में न बुलाया आपने जो दण्ड सबको दिया वे उसके सब योग्य थे पर हमारे अपराधों पर दृष्टि न करके अब दया कीजिये अब सबको यह शुभ मति उपजी है कि आप सर्वोपरि हैं आप कृपा करके यज्ञ पूर्ण करें और वह उपाय करें जिसमें दक्ष जी उठे और इस प्रकार सबको आनन्द दो क्योंकि सबने निश्चय करके यह बात ठहराई है कि तुम्हारे भाग विन यज्ञ न होगा जो आप सब प्रकार दण्ड न देते तो धर्म नष्ट होकर पाप फैल जाता आपकी बड़ाई छोड़ने से मनुष्य वेदहीन हो जाते अब हम सब आपकी शरण में आये हैं सो शिवजी प्रसन्न हुये और वीरभद्र की ओर दया की दृष्टि से देख दिया और वीरभद्र शिव के चरणों पर गिर पड़े विनती की कि जो आज्ञा मुझे मिले उसका पालन करूं शिवजी ने कहा कि अब तुम सब गण क्रोध दूर करो क्योंकि अपना २ सब दण्ड पाचुके हैं यह कह सब गणों को बिदा किया और सबकी ओर कृपा की दृष्टि से देख दिया जिससे सबके अङ्ग पूर्व के समान होगये और जो मर गये थे वह सजीव मनुष्यों के समान उठ खड़े हुये और भृगु के बकरे की दाढ़ी जमाई और दक्ष के शरीर पर बकरे का शिर करके उसको जिला दिया दक्ष ने विचित्र

स्वर से शिव की स्तुति की शिवजी ने यज्ञ के पूर्ण करने के लिये आज्ञा दी सो यज्ञ पूर्ण हुआ और सबको यज्ञभाग देकर शिवजी को भी पूर्ण भाग दिया इसी प्रकार श्रीशिवशङ्कर यज्ञ पूर्ण कर अपने गणों सहित कैलासपर्वत को लौट आये और विष्णु और हम और सब देवता आदि अपने २ लोकों को चले गये हमने अपनी बुद्धि के अनुसार वीरभद्रावतार का चरित्र कह सुनाया जो इस चरित्र को पढ़े वा सुनेगा वह इस लोक में प्रसन्न रहकर अन्त में शिवपद पावेगा इस अवतार की कथा बड़ी आनन्द देनेवाली है।

इक्कीसवां अध्याय।

शरभ अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम शरभ अवतार का वर्णन करते हैं कि पूर्वकाल में दिति के दो पुत्र कनककशिपु बड़ा पुत्र और कनकाक्ष छोटा पुत्र उत्पन्न हुये जो देवताओं के बड़े शत्रु और जिनके अधीन सर्व संसार था संसार भर में केवल उन्हींकी आज्ञा चलती उन्होंने देवताओंको बड़ा दुःख दिया और दोनों ने मिलकर संसार भर का धर्म भ्रष्ट करडाला और अधिक पापों के कारण संसार में बड़े उपद्रव उठने लगे उनमें से जो छोटा भाई कनकाक्ष था उसको तो विष्णु ने वाराह अवतार धार कर मारडाला और जो कनककशिपु था उसके चार पुत्र उपजे उन चारों में से प्रह्लाद सबसे छोटा था वह बड़ा सत्यवादी, तपस्वी, धर्मवान्, आत्मज्ञानी था और विष्णु का बड़ा भक्त हुआ उसने उपजतेही विष्णु की पूजा की सिवाय विष्णु के उसने संसार में और कुछ किसी वस्तु को न देखा और जो विष्णुजी का अष्टाक्षरी मन्त्र है उसको प्रतिदिन आनन्दसे जपता एकदिन कनककशिपु ने प्रह्लादको गुरुके पास विद्याध्ययन के लिये

सौंपा वह गुरु के यहां भी वही विष्णु का अष्टाक्षरी मन्त्र पढ़ा करता था और जो गुरु राजनीति आदि पढ़ाता वह प्रह्लाद न पढ़ते एक दिन कनककशिपु ने प्रह्लाद को परीक्षा लेने के लिये अपने पास बुलाकर पढ़ने का हाल कुछ पूछा और कहा कि हे पुत्र ! जो गुरु से पढ़ा हो वह सुनाइये प्रह्लाद ने उत्तर दिया कि हमने विष्णु का नाम पढ़ा है जिसकी सेवा से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है उस वैकुण्ठवासी विष्णु के समान संसार में और कोई नहीं है यह सुनकर कनककशिपु ने प्रह्लाद को अपनी गोद से फेंक दिया और कहा कि विष्णु कौन है जिसके चरणों की प्रीति तुमको उपजी है तुम विष्णु ब्रह्मा और शिवआदि देवताओं को छोड़कर हमारी सेवा किया करो मुझसे बड़ा और संसार में कौन है मुझसे देवता और दैत्य सब डरते हैं ऐसा वचन पिता का सुनकर प्रह्लाद ने कुछ भय न किया और ऊंचे शब्द से फिर विष्णु का नाम लेकर कहा कि हमपर उपकार करनेवाला वही है यह कह विष्णु के चरणों में और भी प्रीति बढ़ाकर अन्य बालकों से भी प्रीति कराने लगा हे नारद ! यह धर्म बड़ा आनन्द देनेवाला है कि अपने स्वामी के चरणों की सेवा न छोड़े निदान कनककशिपु ने ऐसी बुद्धि अपने पुत्र प्रह्लाद की देखकर दैत्यों को बुलाकर आज्ञा दी कि इसको मार डालो यह बालक हमारा शत्रु होकर हमारे विरोधियों की सेवा करता है यह आज्ञा सुनकर दैत्योंने प्रह्लाद को कितनाही मारा पर प्रह्लाद के शरीरमें एक घाव तक भी न लगा क्योंकि विष्णु ने प्रह्लाद की रक्षा की कनककशिपुने प्रह्लाद का न मरना सुनकर क्रोध करके प्रह्लाद को अपने पास बैठाया और कहा कि हे पुत्र ! तेरा स्वामी कहां है मुझको बतला दे मैं तेरा वध करता हूं वह तुझे बचा लेवे यह कहकर खड्ग ले प्रह्लाद का शिर

काटने को तय्यार होगया पर प्रह्लाद को कुछ भी भय न हुआ उत्तर दिया कि वह हमारा स्वामी सब जगह वर्तमान है और सबमें विद्यमान है विन उसके कौन मारनेवाला है वही स्वामी भक्त का रक्षक है यह सुनकर कनककशिपु ने कहा कि फिर क्यों वह तेरा स्वामी उस खम्भे में दिखाई नहीं देता यह कहकर खम्भे में तलवार चलाई उसमें से महाभयङ्कर शब्द निकला और फिर भक्त के पालनेवाले विष्णु नरहरिरूप होकर उसी खम्भे से निकल आये और ब्रह्मा का वर स्थिर रखकर कनककशिपु का उदर विदीर्ण कर मारडाला और सिंह का सा घोर शब्द कर दैत्यों को भी मारा और महाक्रोधित होकर बड़ा भयानक रूप बनाया जैसा कि प्रलय की अग्नि हो फिर नरहरि ने बड़ा शब्द किया जो तीनों लोक में छा गया और तीनोंलोक भयभीत हुये पृथ्वी कांप उठी पर्वत जलने लगे दिग्गज न रहसके तब नरहरि ने अपना स्वरूप और भी अधिक भयानक कर सहस्र चरण और सहस्रहीनेत्र धारण किये और तीनों अग्नि और सूर्य प्रकट होकर तीनों भुवनों को जलाने लगे ऐसा स्वरूप नरहरि का देखकर देवता वहां ठहर न सके वरन कुछ दूर भाग गये और विष्णु और हम और बड़े २ देवता दूरही से स्तुति करने लगे और हमने प्रह्लाद से कहा कि तुम नरहरि को शान्त करके सब लोगों के दुःख दूर करो प्रह्लाद इस बात को मान नरहरि के पास गये पर तौभी उनका क्रोध न गया वरन वह और चिल्लाने लगे तब तो इन्द्रादि सब देवता वहां से भागकर शिवजी की शरण में गये और हम और इन्द्र और दिक्पति आदि देवताओं ने शिवजी की स्तुति की और विनय की कि हम सब आपकी शरण में आये हैं ऐसा उपाय कीजिये कि जिसमें नरहरि का क्रोध शान्त हो इसी प्रकार का

क्रोध वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ के बिगाड़ने के पीछे किया था जिसको आपही ने दूर किया था हमको इस क्रोधाग्नि का बुझानेवाला दूसरा दिखाई नहीं देता ।

बाईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारदजी ! ऐसी स्तुति सुनकर शिवजी ने प्रसन्न हो इस इच्छा से कि नरहरि का क्रोध दूर करें वीरभद्र अपने गण का स्मरण किया सो वीरभद्र अट्टहास करते नरहरि के समान करोड़ों गणों को साथ लिये हुए आये वह महाभयङ्कर रूप था उन्होंने हाथ जोड़ शिवजी से कहा कि मुझे क्या आज्ञा होती है शिवजी बोले तुम जाकर नरहरि का क्रोध शान्त करो तुम उनको नम्रतापूर्वक समझाना कदाचित् उनके क्रोध की अग्नि तुम्हारे समझाने से दूर न हो तो हमारा भाव बल करके दिखा देना और केवल वचनों ही से उनका गर्व नष्ट कर डालना और उनका संकोच मानकर उनको दण्ड न देना अधिक तेज को अधिक ही से दूर करना और न्यून को न्यून से निवारण करना इसी प्रकार नरहरि के शरीर को अपने में मिलाकर हमारे पास लाना यह सुन वीरभद्र शान्तरूप बन गये और नरहरि के पास जाकर जैसे पिता अपने पुत्र से उपदेश के वचन कहे तैसे कहने लगे कि हे विष्णु ! तुमने नरहरि अवतार संसार के स्थित होने के निमित्त लिया है तुम प्रलय होने का उपाय मत करो तुम तीनों लोक के पालन के निमित्त हो अब शिवजी की आज्ञा मान अन्तर्धान होकर सबको आनन्द दो और दूसरे अवतारों की चाल चलो यही शिवजी की आज्ञा है तुमको शिवजी ने प्रलय करने को अपना तेज नहीं दिया तुम्हारे समान तीनों लोक में दूसरा शिवभक्त नहीं है तुमने उत्तम रीति से वेद के धर्म स्थापित कर दैत्यों को नष्ट कर दिया जिस कार्य के निमित्त यह

तुमने अवतार धारण किया वह कार्य सुगमता से पूर्ण हो गया अब तुम क्यों अपना भयानक स्वरूप बनाये हुये हो इसलिये उचित है कि इस रूप को निवृत्त करो यह वीरभद्र का वचन सुन नरहरि ने अग्नि के समान हो अति कोप से उत्तर दिया कि तुम अपने घर चले जावो जहां से आये हो यह वचन मेरी इच्छा के विरुद्ध कहकर क्यों मेरा क्रोध बढ़ाते हो इस समय हम यही जानते हैं कि हमको कौन निवृत्त करनेवाला है तीनों लोक हमारे अधीन हैं संसार में हमारा सिखानेवाला कौन है हम सबके स्वामी हैं सर्व संसार हमारी कृपा से स्थित है हमारे तेज से सर्व संसार है हमारी नाभिकमल से ब्रह्मा उपजे हमको वेद सत् चित् आनन्द कहता है हम सबके स्वामी, स्वाधीन, सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता और प्रलय के भी करनेवाले हैं और सर्व संसार के राजा हैं वह कौन है जो हमको सिखाता है और किसने अपना सारी प्रभाव तुमसे प्रकट करके तुमको हमारे दूर करने के लिये भेजा है हम काल के नष्ट करनेवाले और संसार के नष्ट करनेवाले भूत के भूत हैं और देवता हमारी कृपा से जीते हैं वीरभद्र ने कहा कि तुम उसको चलकर क्यों नहीं देखते जो प्रलय का करनेवाला है जिसके हाथ में पिनाक और त्रिशूल है यह तुम्हारे वचन बहुत ही अयोग्य हैं तुमको निश्चय करके दुःख प्राप्त होगा यह रीति है कि मरने के समय सबकी बुद्धि विरुद्ध होजाती है तुम्हारे भेजे हुये जितने अवतार हुये जो दशा उनकी हुई है वही तुम्हारी भी होगी अर्थात् शिव क्रोधकर तुम्हारा शरीर नष्ट कर देवेंगे तुम शिवकी बड़ाई और प्रताप नहीं जानते उनको देवताओं के समान जान ऐसा गर्व करते हो तुम प्रकृति हो और शिव पुरुष हैं जिन्होंने तुम्हारे शरीर में वीर्य स्थित किया और तुम्हारी नाभि से कमल पुष्प उत्पन्न हुआ जिसमें

से पञ्चमुखी ब्रह्मा उपजे और ब्रह्मा की भृकुटि से शिव उत्पन्न हुये और उन्होंने सबके ऊपर अपना रूप दिखाया उन्हीं शिव ने हम को तुम्हारे अहंकार के दूर करने के लिये भेजा है तुम केवल एक दैत्य का वध कर इतना अहंकार करते हो अब वृथा मत चिल्लावो यह बात तुम्हारे लिये बहुत बुरी है जब हम क्रोध करेंगे तो तुम लज्जित होगे और तुम अपनी निर्बलता देखकर अपना क्रोध शान्त करोगे संसार में जो मनुष्य बुरे हैं उनके साथ उपकार करना अपने ही को हानिकारक होता है जैसा कि सर्प को दूध पिलाने से उसके विष की ही वृद्धि होती है जो तुम शिवको अपना बनाया हुआ और अपना अधीन कहते हो तो हमको निश्चय हुआ कि तुम संसार के उत्पन्न और पालन करनेवाले नहीं हो और न स्वाधीन और मुक्ति देनेवाले हो शिवजी की आज्ञा से अवतार लेते हो जब तुमने कमठ अवतार लिया तो तुम क्या नहीं जानते कि शिव ने तुम्हारे शिरको जलाकर अपने हार में पिरो लिया जब तुमने वाराह अवतार धारा तो शिवजी ने तुम्हारे दांत उखाड़कर अपना त्रिशूल तुम्हारे शरीर में मार तुम्हारा अहंकार दूर किया और शिव ने भैरव अवतार लेकर तुम्हारे पुत्र ब्रह्मा का शिर काटा कि अबतक ब्रह्मा के पांचवां शिर नहीं है क्या यह बात तुम भूल गये हो तुम दक्षप्रजापति के यज्ञ का स्मरण करो हमने क्षणभर में तुम्हारा शिर काट डाला जब तुमने दधीचि मुनि के साथ युद्ध किया था तब क्या शिवजी का प्रताप नहीं देखा था कि तुम देवताओं समेत मुनि की शरण में गये थे जिस चक्र के बल पर तुम इतना अहंकार करते हो यह तुमको किसने दिया था क्या तुमको सहस्र कमल पुष्प की पूजा भूल गई जिससे तुमको यह चक्र मिला था और शिवजी की माया से तुम्हारी बुद्धि नष्ट होकर तुम क्षीरसमुद्र में

अकेले पड़े रहते हो तुम क्योंकर सतोगुणी और निर्दोष होसक्ते हो हम तुमसे लेकर तृणपर्यन्त सब शिवजी की शक्ति के अधीन हैं तुम्हारा यह सब प्रताप और बल शिवजी की कृपा से है वही शिवजी निष्पाप और तीनों लोक के उपजानेवाले हैं तुम वृथाही इतना गर्व करते हो अब भी समझ जावो तुम और ब्रह्मा शिवजी से बलवान् नहीं हो उनका प्रताप सर्वोपरि है तुम काल हो और शिवजी महाकाल हैं और कालों के काल महेश हैं वही शिवजी संसार के सिखानेवाले हैं तुम और ब्रह्मा नहीं जो शिव क्रोधित होंगे तो तुम्हारा बचानेवाला कोई न होगा तुम्हारे लिये सिवाय मृत्यु के और क्या होगा यह सुनकर नृसिंह ने कोपित हो चाहा कि वीरभद्र को पकड़लेवें पर वीरभद्रने अपना शरीर आकाश में छिपा लिया और शिवजी का तेज जलती हुई अग्नि के समान प्रतीत हुआ जिसकी उपमा सूर्य, वह्नि और बिजली से भी नहीं देसक्ते वह तेज चारों ओर फैल गया उस समय सब तेज शिवजी के तेज में आकर मिल गये आकाश दिखाई न देता था जिससे देवता और मुनि आश्चर्य में हुये पर शिवजी की लीला किसी ने न जानी इतने में शिवजी इस स्वरूप से प्रकट हुये कि उनका आधा शरीर सिंह का दो पंख और चोंच धारे सहस्र भुजा से सुशोभित शीश में जटा मस्तक में चन्द्रमा विराजमान महाभयङ्कर दाँत और नख उनके वज्र के समान थे और वही मानो उनके शस्त्र थे एक कण्ठ आठ चरण और उनके नेत्र क्रोध में भरे हुये सूर्य के समान चमकते थे और सिवाय हुंकार के और कोई शब्द सुनाई न देता था और वे दाँतों से ओठ काटते हुये थे ऐसा भयानक स्वरूप देखकर विष्णु का अहंकार दूर हो गया और वह अति निस्तेज होगये कि जैसे सूर्य के उदय से खद्योत और जैसे सिंह के सामने सिंह का बच्चा होजाता है तैसेही

शरभ अवतार के प्रादुर्भूत होने से विष्णुजी की दशा हो गई सो शरभजी ने बल करके अपना शरीर हिलाया और अपनी दो भुजासे नरहरि की दोनों भुजा पकड़ दो भुजासे नरहरि का हृदय और पूँछसे नरहरिके चरण पकड़ तुरन्त उनको धरलिया और उनको आकाशकी ओर लेउड़े फिर आकाश से पृथ्वी पर डाल-कर फिर पृथ्वी में उतरकर पकड़ा इसी प्रकार बारम्बार उड़कर नरहरि को निर्बल कर दिया उस समय देवता और मुनी-श्वर सब स्तुति करने लगे और नरहरि का सब अहंकार दूर हो गया और वह महादीन हो गये सो उन्होंने शिवजी के एकसौ आठ नाम वर्णन कर स्तुति की और कहा कि हे शरभेश्वर ! जब मुझे क्रोध उपजे तो आप इसी प्रकार मेरा अहंकार दूर किया कीजिये यह कह और अपना शरीर छोड़-कर अन्तर्धान होगये उस समय हमने देवताओं और मुनि-श्वरों समेत शरभेश्वर महाराज की बड़ी सेवा करके स्तुति वर्णन की तब शरभेश्वर शिवजी ने कहा कि यह बात भली भांति समझ लो कि हम और विष्णु कुछ भिन्न नहीं हैं बरन एकही रूप हैं ऐसे चरित्र करके हम परस्पर लीला करते हैं हम और विष्णु समान हैं कुछ भी न्यूनता नहीं जो विष्णु के विरुद्ध है वह मेरा भी विरोधी है और मुझे छोड़ विष्णु की भक्ति नहीं होसक्ती यह कह शिवजी ने नरहरि का शिर और चर्म उठा लिया शिर को तो अपनी माला का सुमेरु बनाकर चर्म ओढ़ लिया और सबके देखते २ शिव अन्तर्धान होगये और देवता आदि भी अपने २ मनोरथ पा अपने २ धामों को गये हे नारद ! इस चरित्र के पढ़ने सुनने से दोनों लोक में बहुत आनन्द मिलता है छियालीसवां अवतार पूर्ण हुआ ।

तेईसवां अध्याय।

यक्षावतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम यक्षावतार का वर्णन करते हैं जिसने तुरन्तही सब देवताओं का मद हरा कि, जब देवता और दैत्य समुद्र के मथने के समय लड़े और दैत्य देवताओं से परास्त होगये तो देवता मारे अहंकार के शिवजी को भूल आप अपने को पृथ्वी आकाश पाताल का स्वामी समझने लगे और इकट्ठे होकर गर्वपूर्वक वार्ता करने लगे सो पहिले विष्णु ने कहा कि हमने शत्रुओं को परास्त किया हमने कालनेमि का वध किया तब इन्द्र बोले कि हमने बहुत दैत्यों को सहजही मारलिया और ब्रह्मादि दैत्यों को हमने मारा इसी प्रकार सब देवता अहंकार से अपनी २ वीरता वर्णन कर सराहना करने लगे शिव ने देवताओं का ऐसा अहंकार जान विचित्र चरित्र किया अर्थात् यक्षरूप से देवताओं के पास जाकर सबसे कुशल पूछी किसी ने न जाना कि यह शिव हैं फिर कहा कि तुम सब इस स्थान पर बैठे हुये क्या करते हो जाना जाता है कि तुम अहंकार में भरे हुये हो क्या कारण है कि तुम सब बैठे हो देवताओं ने कहा कि क्या तुमने नहीं सुना कि यहां देवासुर संग्राम हुआ था हमने दैत्यों को नष्ट कर डाला शेष बचे वह भाग गये यक्षरूपी शिवजी बोले कि हे विष्णु आदि देवताओ! ऐसा मत कहो तुम्हारे ऊपर और कोई है तुम इतनी अहंकार की बात मत कहो कोई बड़ा पुरुष तुम पर है वह सबसे अति बलिष्ठ और तेजस्वी है जो बात वह चाहता है उसी बात को करता है जो तुमको इस बात का निश्चय न होवे तो तुम सब मिलकर एक तृण को काट तो डालो इतना कह शिवजी ने एक तृण देवताओं के ऊपर फेंक दिया सब देवताओं ने

अपने २ शस्त्र उस पर चलाये पर वह कुछ भी न हिला जैसे पड़ा था पड़ा रह गया तो इन्द्र ने अति कोपकर अपना वज्र उस तृण पर चलाया पर वह निष्फल हुआ उस समय विष्णु ने क्रोधित होकर अपना चक्र मारा पर वह भी निरर्थक हुआ तब सब देवता लज्जित हुये और सबको अति विकलता प्राप्त हुई इतने में आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ! तुम कुछ अपने मनों में संशय मत करो तुम सबने अहंकारी होकर अपने स्वामी को नहीं पहिंचाना जो तुम सबसे श्रेष्ठ है उसको तुमने मारे गर्व के भुला दिया वह तुम्हारे मद को देखकर यक्षरूप से प्रकटे और उन्होंने तुम्हारा अहंकार दूर कर दिया अब भी तुम गर्व दूर कर अपने स्वामी के चरण पकड़ो और शिव की शरण में जाकर फिर कभी ऐसा अहंकार न करना यह जो तुम्हारे सामने खड़े हैं यक्षरूपी सदाशिव हैं यह सुनकर सब देवता यक्षेश्वर महादेव के चरणों पर गिर पड़े और बहुत प्रकार से प्रणामकर अहंकार से रहित हुये और निश्चय किया कि जो संसार में बल शिवजी को है वह और किसी को नहीं है फिर शिवजी की स्तुति देवता आदि सब करने लगे और कहा कि हम सब आपकी शरण में हैं हमारा अहंकार दूर हो गया अब आपसे आशा रखते हैं कि फिर हमको अहंकार न उपजे शिव ने प्रसन्न होकर ॐकार उच्चारण किया फिर सब अपने घरों को चले गये सैंतालीसवां यक्षेश्वर अवतार पूर्ण हुआ इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह यक्षेश्वर शिवजी का चरित्र अति पवित्र है इसके पढ़ने सुनने से बड़ा सुख प्राप्त होता है अब हम दश महाकाल शिवजी के अवतारों का वर्णन करते हैं—शक्तिसहित शिव के दश अवतारों का वर्णन—पहिला शिवजी का महा कालरूप है जिनके स्मरण से अति सुख प्राप्त होता है और महाकाली नाम

इस अवतार की शक्ति हैं जिनकी सखियां आनन्द में रहती हैं—दूसरा तारनाम अवतार जिनकी शक्ति का नाम तारा है—तीसरा बालि जिनकी शक्ति का नाम भुवनेश्वरी है—चौथा विद्येश जो सोलह क्लेश दूर करते हैं उनकी शक्ति का नाम विद्या है—पाँचवां भैरव जिनकी शक्ति को भैरवी कहते हैं—छठा छिन्नमस्तक जिनकी शक्ति का नाम छिन्नमस्तका है जो अति तेजोमयी है—सातवां धूमावत जिनकी शक्ति को धूमावती कहते हैं—आठवाँ बगलामुख जिनकी शक्ति का नाम बगलामुखी है—नवां मातङ्ग अवतार शिव का है जिनकी शक्ति को मातङ्गी कहते हैं—दशवां कमल जिनकी शक्ति को कमला कहते हैं इन दशों अवतारों का पूजन और दशों शक्ति के सेवन से सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं और अपने भक्त को कृतार्थ कर देते हैं ५७ अवतार पूर्ण हुये।

चौबीसवां अध्याय।

ग्यारह रुद्रावतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम ग्यारहों रुद्रों का जो शिवजी के अवतार हैं वर्णन करते हैं वे अति बलवान् और सुख के देनेवाले हैं और दैत्यों को नष्ट करते हैं उनकी उत्पत्ति कि क्यों यह उपजे और जिनके चरित्रों के सुनने से वीरता और सुख बढ़ता है हम कहते हैं कि पूर्वकाल में दैत्यों ने महाबलिष्ठ हो देवताओं को बड़ा दुःख दिया यद्यपि देवता दैत्यों से बहुत लड़े पर उनके बल से परास्त हो गये और सामना न करके इधर उधर भाग गये एक दिन सब देवता मिलकर कश्यप के पास पहुँचे और अपने पिता कश्यप के सामने हाथ जोड़कर अपना दुःख कहा कश्यप ने शिव का स्मरणकर सब देवताओं से कहा शिव की इच्छा शुभ है वह धन्य हैं कि तुम्हारा दुःख दूर करेंगे कुछ दिन तक समय देखो वह तुम पर अनुग्रह करेंगे

तुम अपने २ घरों में जाकर शिव का ध्यान किया करो हम भी तुम्हारे लिये शिव का तप स्त्री सहित करेंगे सो कश्यप ने देवताओं के बिदा करने के अनन्तर शिव का बड़ा कठिन तप किया ऐसा कठिन तप कश्यप का देखकर शिव प्रसन्न हुये और कश्यप के समीप प्रकट होकर खड़े हो गये कश्यप स्तुति करने लगे और बारम्बार अपनी स्त्री सहित शिव के चरणों पर गिरे और कहा यद्यपि जो वर मैं मांगना चाहता हूँ अनुचित है पर मैं ढिठाई से वर्णन करता हूँ कि आप मेरे घर अवतार लें और मेरे पुत्र हों देवताओं के साथ मित्रता करके दैत्यों का विनाश करें और देवताओं को उनका राज्य दिला दें और सदा देवताओं की सहायता करें तुम सब देवताओं के राजा हो यह कह कश्यप चुप हो गये शिव यह कहकर कि अच्छा यही होगा अन्तर्धान हुये और कश्यप के मन में बास किया कश्यप ने शिवजी की अनुग्रह जान अपना तेज सुरभी अपनी स्त्री में स्थित कर दिया जिससे सुरभी महा प्रकाशित हुई सो सब देवताओं ने कश्यप के स्थान में आकर शिवजी की जो गर्भ में थे स्तुति की और फिर अपने २ स्थानों को लौट गये और समय पाकर सुरभी से ग्यारह रूप धारण करके शिव उपजे और सुरभी को कुछ प्रसव की पीड़ा न हुई उस समय सब देवताओं को आनन्द प्राप्त हुआ पृथ्वी शोभायमान हो गई देवता और मुनीश्वरों के सब दुःख दूर हो गये विष्णु और हमने देवताओं समेत आकर एकादश रुद्र के दर्शन किये और प्रीतिपूर्वक स्तुति की और कहा कि आप दैत्यों को जीत हम सबको हर्ष दें फिर हमने कश्यप से उनका जातकर्म कराके उनके यह नाम रक्खे कपाली १ पिंगल २ भीम ३ विलोहित ४ शास्त्रभृत् ५ अभय ६ अजपाद ७ अहिर्बुध्न्य ८ शम्भु ९ भव १० विरूपाक्ष ११ तब बड़ा उत्सव हुआ

यह ग्यारहों रुद्र उपजते ही बड़े बलिष्ठ भासित हुये हे नारद! यह कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि वे तो शिव के रूप थे सो माता पिता की आज्ञा पाकर देवताओं के साथ चले और देवताओं की सेना इकट्ठी करने के उपरान्त उन्होंने दैत्यों पर धावा किया और बड़ा युद्ध हुआ सो दैत्यों के सामने देवता न ठहर कर भागकर ग्यारहों रुद्रों के सामने आये रुद्रों ने कहा कि तुम कुछ भय मत करो हम एक निमेष में दैत्यों को नाश कर देंगे हमारे प्रताप के सामने वे नहीं ठहर सकेंगे यह कहा और दैत्यों से सामना किया दैत्य रुद्र के तेज के आगे ठहर न सके और बड़े बड़े वीर दैत्य बहुत युद्ध करने के उपरान्त युद्धस्थल से भाग चले और अपने लोक में जाकर छिप गये देवताओं को विजय पाने से बड़ा आनन्द हुआ और अपने पुराने लोक को रुद्रों की कृपा से पाकर महा प्रसन्न चित्त हुये और ग्यारहों रुद्र सदा देवताओं के साथ रहकर इसी भांति की सहायता करते रहे इस प्रकार हमने रुद्रचरित्र वर्णन किया जिसके सुनने से बड़ा पापी मनुष्य भी शुद्ध हो जाता है।

पचीसवां अध्याय।

दुर्वासा अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिस तरह शिवजी ने अत्रिमुनि के पुत्र होकर अवतार लिया वह कथा हम तुमको सुनाते हैं कि हमारे पुत्र अत्रि हमारी आज्ञा से अपनी स्त्री सहित ऋष्यमूक गिरि पर जाकर विन्ध्या के तट पर बैठे और सौ वर्ष ऐसा कठिन तप किया कि केवल वायु भक्षणकर एकचरण से खड़े रहे इस इच्छा से कि हमको शिव अपने समान एक पुत्र कृपा करेंगे ऐसे कठिन तप से एक जलती हुई अग्नि उपजकर संसार भर को जलाने लगी और तीनों देवता मुनीश्वरों सहित

अत्रि के पास आये अत्रि ने सबको अपने सामने अपने मुख्य वाहनों समेत मुसुकराते खड़े हुये देखा और दण्डवत् कर विनय की कि तुम तीनों देवता रजोगुणी, सतोगुणी, तमोगुणी, उत्पन्न-कर्ता, पालनकर्ता, संहर्ता एक साथ हमारे पास आये हो अब मैं किसकी सेवा करूं मैंने तो एक ही देवता की पूजा की थी अर्थात् वह जो सबका स्वामी है फिर क्यों तुम तीनों देवता एक ही साथ आये इससे मुझे अतिचिन्ता उपजी है इसका कारण कहिये फिर वर दीजिये यह सुन तीनों देवता बोले कि जिस तरह पर तुमने अपने मन में संकल्प किया था वही तुम्हारे सामने आया तुमने ईश्वर का तप किया और प्रकट है कि हम तीनों एकही रूप हैं कुछ किसी प्रकार का भेद तीनों में नहीं हम इससे प्रकट हैं कि तीन पुत्र हम तीनों के अंश से उपजेंगे जो तुम्हारे यश को बढ़ाकर तीनों लोक में प्रसिद्ध होंगे यह वर अत्रि को देकर तीनों देवता अपने २ स्थान को चले गये और अत्रि भी इस आशा पर कि हमारे तीन पुत्र होंगे प्रसन्नचित्त हो अपने घर सिधारे और समय पाकर अत्रि के तीन पुत्र तीनों देवताओं के अंश से उपजे अर्थात् ब्रह्मा के अंश से विधु विष्णु के अंश से दत्त और शिव के अंश से दुर्वासा पर हम दुर्वासा का चरित्र वर्णन करते हैं अर्थात् शिव ने दुर्वासा का शरीर धारणकर बहुत चरित्र किये उन्होंने ब्रह्मतेज धारा और सबका आदर किया और बहुतों के धर्म की परीक्षा की और असंख्य मनुष्यों को धर्म कृपा किया उनका पहिला चरित्र यह है कि सूर्यवंशी राजा अम्बरीष विष्णु का बड़ाभक्त दृढ़व्रती था और वह विष्णु की आज्ञा भलीभांति मानकर सतोगुण धारण किये राज्य करता और सदा एकादशी व्रत रखकर द्वादशी में पारण किया करता एक दिन उसने एकादशी का व्रत करके चाहा कि द्वादशी में

पारण करें उसी समय दुर्वासा पहुँचे उनको केवल परीक्षा लेने की इच्छा थी अम्बरीष ने उनका अतिआदर सत्कारकर भोजन करने को निमन्त्रण दिया सो दुर्वासा मानकर शिष्यों सहित नदी किनारे स्नान के निमित्त गये और वहां इतना विलम्ब किया कि अम्बरीष की परीक्षा लें राजा अम्बरीष दुर्वासा की बाट देखते रहे पर द्वादशी समाप्त होने लगी उस समय राजा अम्बरीष ने पारण में विघ्न देख महाखेदयुक्त हो ब्राह्मणों से पूछा तो जब ब्राह्मणों ने वेद के अनुसार उनको आज्ञा दी कि आप पारण करें तो उन्होंने व्रत पारण कर लिया दुर्वासा राजा अम्बरीष के व्रतपारण करने का हाल जानकर अति क्रोधित हुये और राजा के पास आकर चाहा कि राजा की भक्ति की परीक्षा लेवें और चक्र के भय से भागकर वर्ष भर तीनों लोक में भागते फिरे फिर राजा की शरण में आकर चक्र को अपने पीछे लगाये हुये पहुँचे जो राजा वास्तव में ब्रह्मभक्त होगा तो मन में लज्जित होकर मेरा दुःख दूर करेगा कदाचित् वह विष्णु की पूरी भक्ति नहीं रखता तो अपना व्रत छोड़ देगा यह विचार महाकोप से राजा को शाप देने लगे सो विष्णु के चक्र ने दुर्वासा के मन की इच्छा जान ली और अपना तेज बढ़ाय दुर्वासा की ओर चला दुर्वासा भागने लगे और सर्वदेश और सब देवताओं के लोक फिर कर राजा के पास आये और कहा कि हे राजन्! हम तुम्हारी शरण में आये हैं जो मूर्ख हैं वह इस चरित्र को क्या जानें वह इस चरित्र को और ही तरह समझते हैं यह नहीं जानते कि दुर्वासा तो आप शिव का अवतार हैं उनको कहां दुःख होसक्ता है निदान दुर्वासा को राजा ने देखकर लज्जापूर्वक चक्र से कहा कि तुम दूर होजाओ अब ब्राह्मण को छोड़ दो यह सुनकर चक्र हट गया और राजा ने दुर्वासा

को भोजन कराकर आप भी भोजन किया दुर्वासा ने अतितृप्त और प्रसन्न होकर राजा को आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता न करना हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त यह चरित्र किया है तुमको धन्य है तुम शुभ होजो हमारे ऐसे क्रोध को तुमने सहा तुमको विष्णु की बड़ी भक्ति प्राप्त होगी यह कह दुर्वासा अति प्रसन्न हो चले गये जब विष्णुजी दशरथ के पुत्र रामचन्द्र हुये तब भी दुर्वासा ने ऐसा ही चरित्र किया इसी प्रकार श्रीकृष्णजी की परीक्षा लेकर उनको रानी सहित अपने रथ का खींचनेवाला बनाया और श्रीकृष्णजी की ऐसी ब्रह्मभक्ति देख उनको वज्राङ्ग कर दिया और द्रौपदी की परीक्षा लेकर पाण्डवों को भरपूर किया और हंस और डिम्भक दो भाई जो बड़े उपद्रवी थे उनके पास जाकर अपना अपमान कराया और फिर उनको शाप देकर नष्ट कर डाला सो शिव ने दुर्वासा का अवतार लेकर इस प्रकार के बहुत चरित्र किये हैं और बहुत रीतों से संन्यास मत फैलाया और बहुतों को ज्ञान देकर मुक्त किया ।

छब्बीसवां अध्याय ।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता ! यह कथा हमने संक्षेप में सुनी पर मेरी इच्छा है कि आप विस्तार से जिस तरह कि दुर्वासा ने रामचन्द्र और कृष्णादि की परीक्षा लेकर उनको वर दिया वह कथा सुनाइये ब्रह्माजी बोले कि जब रामचन्द्र ने देवताओं के काम पूरे करने के लिये दशरथ के घर अवतार लिया और देवताओं के लिये असंख्य चरित्र कर समय तक राज्य किया तब हमने मृत्यु को उनके समीप भेजकर संदेशा भेजा कि आप अपने लोक में आकर हम वियोगियों को आनन्द देवें सो काल मुनीश्वरों के स्वरूप से रामचन्द्र के

पास आकर बैठा रहा और समय पाकर विनय की कि महाराज मुझे आपसे कुछ गुप्त वृत्तान्त कहना है कि जिसको दूसरा मनुष्य न जाने हमारी तुम्हारी वार्त्ता में जो कोई आजावे तो चाहे वह कोई हो उसका परित्याग कर दो रामचन्द्र ने माना और लक्ष्मण से कहा कि तुम द्वार पर खड़े रहो कोई यहां न आने पावे फिर काल से कहा कि तुम कौन हो कहां से आये हो क्या आज्ञा देते हो काल ने कहा कि हमको ब्रह्मा ने भेजकर आपको संदेशा दिया है कि अपने लोक में आओ यह वार्त्ता होरही थी कि दुर्वासा परीक्षा के निमित्त आये और लक्ष्मण से कहा कि रामचन्द्र को तुरन्त ही हमारे आने का समाचार दो तब लक्ष्मणजी अति चिन्तित हुये कि जो रामचन्द्र के पास भीतर जाता हूं तो वह मेरा त्याग कर देवेंगे और जो नहीं जाता तो दुर्वासा का कोप सहना पड़ेगा यह तीखे ब्राह्मण अपनी क्रोधाग्नि से मुझे जला-वेंगे ऐसी दशा में उनको यह बात सूझी कि दुर्वासा की ढिठाई करना उत्तम नहीं क्योंकि यह बात वेद के विरुद्ध है कि ब्राह्मण से ढिठाई करो और यद्यपि श्रीरामचन्द्रजी का वियोग मेरे लिये दुःखदायक है पर दुर्वासा की आज्ञा माननी बहुत उत्तम है यह मन में कहकर अति लज्जा के साथ रामचन्द्र के समीप जाकर दुर्वासा का सन्देशा कहा सो काल लक्ष्मण को देखते ही अन्तर्धान होगया और रामचन्द्र ने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कर लक्ष्मण से कहा कि हे प्राणप्यारे लक्ष्मण! इस समय हमारे साथ बड़ा छल होगया अर्थात् काल मुनीश्वर के स्वरूप से आकर ऐसी युक्ति करके मुझको दुःखी कर गया वह वचन जो उसने हमसे लिया था उसको तुम जानते हो उसको तुम सत्य करो और बड़े शब्द से रोने लगे लक्ष्मण भी मूर्च्छित होगये तब दुर्वासा ने भीतर जाकर सबको समझाया ऐसी लीलाकर

दुर्वासा अपने स्थान को बिदा हो चले गये और लक्ष्मण ने रामचन्द्र से बिदा हो सरयू के तट पर योगमार्ग से अपना शरीर छोड़ा और अपना पूर्वरूप धारण किया कुछ दिन पीछे रामचन्द्र भी अपनी सर्व अयोध्या नगरी समेत वैकुण्ठ में विराजमान होगये अब हम कृष्णचन्द्रजी का चरित्र वर्णन करते हैं कि जिस तरह दुर्वासा ने उनकी परीक्षा की श्रीकृष्णजी प्रसिद्ध बड़े ब्रह्मभक्त हुये वह देवताओं के सब कार्य पूर्ण कर अपने नगर में स्थित हो ब्रह्मभक्तिपूर्वक रहने लगे ऐसे ब्रह्मभक्त श्रीकृष्णजी की परीक्षा के निमित्त दुर्वासा आये कृष्ण ने अति नम्रता, आदर, मान और शील से दुर्वासा को लिया और उत्तमोत्तम भोजन कराये तब दुर्वासा ने कहा कि हम रथ पर चढ़ा चाहते हैं पर इस बात पर कि तुम और रुक्मिणी तुम्हारी रानी उसको खींचकर चलाओ ऐसा करने से जो तुम्हारी इच्छा होगी मैं तुमको वर दूंगा कृष्ण ने अति प्रसन्नता से इस बात को स्वीकार कर दुर्वासा की इच्छा पूर्ण की सो दुर्वासा ने प्रसन्न होकर कहा कि हमारी आज्ञा से पायस लो और नग्न शरीर होकर उसको लिपटा लो कि तुम्हारा कोई अङ्ग खुला न रहे कृष्ण ने यह भी किया तब दुर्वासा ने प्रसन्न होकर यह वर दिया कि जहां २ तुम्हारे शरीर में पायस लिपट रही है वहां २ तुम्हारे कोई शस्त्र वेध न करेगा और तुमको किसी कार्य के करने का पाप भी न होगा कृष्ण ने यह वर पा दुर्वासा के आने को शुभ समझा और बड़ी स्तुति की दुर्वासा तो अन्तर्धान हुये और कृष्ण अति प्रसन्न हो पापों से रहित हुये हे नारद ! अब द्रौपदी का चरित्र सुनो एक दिन द्रौपदी अपनी सखियों समेत गङ्गास्नान को गई और स्नान करने लगी सो उसके पूर्व की ओर कुछ दूरी पर दुर्वासा भी स्नान करते थे जब सर्वाङ्ग मल-

कर धोने लगे तो दुर्वासा की कोपीन नदी में छूट गई लज्जा से दुर्वासा जल से बाहर नहीं निकल सके थे यह वृत्तान्त द्रौपदी ने जानकर अपना अञ्चल फाड़कर दुर्वासा की ओर बहा दिया उसको दुर्वासा पहन पानी से बाहर आये और प्रसन्न होकर द्रौपदी से कहा कि हमारी लज्जा जो तुमने रक्खी है उसका फल तुमको मिले इस बात के सब देवता साक्षी हैं कि तुम्हारी लज्जा सदा रहेगी तुमपर जो कष्ट पड़े वह नष्ट होजावे यह बात कहकर दुर्वासा अन्तर्धान होगये पर किसी ने न जाना कि यह कौन थे और एक और चरित्र दुर्वासा का सुनो कि एक दिन दुर्वासा सरोवर में स्नान करने को गये और अपना स्वरूप ऐसा मैला कुचैला बनाया जैसा कभी किसी ने न देखा था उस समय संयोग से गन्धर्वों की तीन पुत्रियां भी स्नान के निमित्त गई थीं उनके यह नाम थे पहिली का नाम रत्नाढ्या, दूसरी का रत्नचूड़ा, तीसरी घृतपूर्णा के नाम से प्रसिद्ध थी उन्होंने दुर्वासा को देखकर बहुत से दुर्वचन कहे और कहा कि हमारे ऊपर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर सुन्दर उत्तम पति हमारे लिये भेजा है यह सुनकर दुर्वासा ने उनको शाप दिया और सबको अपना ब्रह्मतेज दिखाकर कहा कि तुम चाण्डाली होकर बड़ा कष्ट पावोगी पर जब तीनों शरण हुईं तो कहा कि तुम मलमास व्रत करके फिर पहिले के समान होजाओगी यह कहकर दुर्वासा अन्तर्धान होगये इसी प्रकार के और बहुत से चरित्र दुर्वासा ने किये हैं जिनके स्मरण करने से सर्व कष्ट निवृत्त होजाते हैं

उनहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ।

सत्ताईसवां अध्याय

गृहपति के अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अब हम गृहपति अवतार

के चरित्र सुनाते हैं कि नर्मदा नदी के तट पर नर्मपुरनगर में विश्वामित्र मुनि ब्रह्मचारी शिवजी के बड़े भक्त जो सदा यज्ञ करते रहते थे वे शार्दूल गोत्र में उपजे और अपने क्रियाकर्म में अतिदृढ़ और शिवजी की भक्ति में बहुत स्थिर सर्वविद्या-निधान और बड़े बुद्धिमान् थे उन्होंने गृहस्थाश्रम को सबसे श्रेष्ठ जान सचक्षुमती के साथ अपना विवाह किया और गृह-स्थाश्रम में स्थित रहकर अपनी स्त्रीसहित षट्कर्म करते थे और स्त्रीसहित शिवपूजन नित्यप्रति करते और प्रतिदिन पांचों यज्ञकर बलि वैश्वदेव में प्रवृत्त रहा करते थे पर समय बीत गया कोई उनके पुत्र न उपजा तब एक दिन स्त्री ने हाथ जोड़ विनय की कि मैंने आपके साथ आठों प्रकार के भोगकर सदा निश्चिन्त विहार किया है पर मुझे एक इच्छा है जिसकी अभिलाषा गृहस्थ करते हैं विश्वामित्र ने कहा कि हम शिवजी की अनुग्रह से सब कुछ देसक्ते हैं जो तुम्हारी इच्छा हो वह वर हमसे ले लो स्त्री ने कहा जो आप प्रसन्न हैं तो मुझे शिवजी के समान एक पुत्र दीजिये विश्वामित्र ने शिवजी का ध्यान करके कहा कि तेरी इच्छा पूरी होगी शिवजी में सब तरह की शक्ति है यह बात कुछ दूर नहीं यह कह विश्वामित्र तप के निमित्त काशी में आये और मणिकर्णिका में स्नानकर विश्वनाथ की पूजा की और सबको यथाविधि पूजा फिर अपने मन में विचार किया कि काशी में कौन ऐसा शिवलिङ्ग है जो शीघ्र ही सिद्धि देता है सो वीरेश्वर को शीघ्र ही सन्तानदाता जानकर चन्द्रकूप जल से स्नान किया और दृढ़तापूर्वक स्नान करने लगे और प्रतिदिवस वीरेश्वर के ध्यान में प्रवृत्त रहे और द्वादश मास पर्यन्त इस प्रकार व्रत किया कि एक मास केवल एक वस्तु खाकर दूसरे मास में केवल दूध पिया इसी प्रकार एक मास में

केवल एक तरकारी खाकर एक मास में तिल चाबकर एक मास में पानी पीकर एक मास में केवल पञ्चगव्य में कालक्षेप कर एक मास में चान्द्रायण किया फिर एक महीने में केवल कुश की जड़ें खाईं इसी प्रकार द्वादश मास बिता दिये और त्रिकाल वीरेश्वर महादेव की पूजा करते जब तेरहवें महीने स्नानकर प्रातःकाल वीरेश्वर के निकट गये तो वीरेश्वर के बीच में से एक आठ वर्ष का अति सुन्दर बालक जिसका महासुन्दर गौर शरीर सफ़ेद भस्म रमाये सुन्दर केश जो जटा के समान लटके थे धारण किये निकला निदान सर्वाङ्ग अति उत्तम वेद पढ़ते हुये और विश्वामित्र की ओर देखते खड़ा होगया विश्वामित्र ने दोनों हाथ जोड़ स्तुति की तब बालक ने कहा कि वर मांगो विश्वामित्र बोले हे शिवजी! तुमसे कौन बात छिपी हुई है तुम तो सब जानते हो मैं केवल इतनी विनती करता हूं कि मेरी जो इच्छा है उसको पूरी करो शिवजी सुन-कर बोले अच्छा तुम्हारी इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी और तुम फिर नये सिर से युवावस्था को प्राप्त होगे यह कह वह बालक अन्तर्धान होगया और विश्वामित्र ने प्रसन्नतापूर्वक घर में लौट आकर अपनी स्त्री से सब वृत्तान्त कह सुनाया निदान जो उसने शिवजी से वर पाया था वह प्रकट किया यह सुनकर संसारी मनुष्य विश्वामित्र के स्थान पर गये और विश्वामित्र की स्तुति करने लगे और सचक्षुमती के भाग्य की बड़ाई की और अपने अपने स्थान को लौटते गये और विश्वामित्र अपनी स्त्रीसहित शिव का तप करते रहे।

अट्ठाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि शिव के वरदान से अच्छे समय सच-क्षुमती के गर्भ रहा और विश्वामित्र ने गर्भ की रक्षा आरोग्यता

और पालन के निमित्त पांचवें आठवें मास में बहुत दान किया दशवें मासमें शुभलग्न पर पुत्र उपजा दोनोंने मिलकर बड़ा उत्सव किया यहां तक कि तीनों देवता भी बहुत प्रसन्न हुये आकाश से फूलों की वर्षा हुई मन्दिर भर में सुगन्ध फैली देवताओं ने दुन्दुभी बजाई चारों ओर से मोर शोर करने लगे और गन्धर्व और देवपत्नियां नाना प्रकार से नृत्य करने लगीं सर्व ओर से धन्य २ का शब्द पूरित हुआ हम देवताओं समेत वहां गये और विष्णु भी लक्ष्मी सहित सिधारे और गौरी को साथ ले बहुत गणों समेत शिवजी सुशोभित हुये और इन्द्र, सनकादि, आठों वसु, देवता और नाग आदि उस उत्सव में पहुँचे और सब रुद्र गङ्गा सहित रत्न भेंट लेकर आये सबने विश्वामित्र और सचक्षुमती को प्रणाम किया और उस बालक को शिव का अवतार वर्णन कर सबने स्तुति की उस समय शिवजी की आज्ञा पाकर हमने उस बालक के जातकर्म किये मुनीश्वर वेद पढ़ने लगे और हमने वेद में विचार कर उसका ग्रहपति नाम रक्खा इसके पीछे सब अपने २ स्थानों को सिधारे और विश्वामित्र ने चौथे मास निष्कर्म की रीति की और छठे महीने अन्न-प्राशन किया बारहवें मास चूड़ाकर्म हुआ फिर कान छेदे गये पांचवें वर्ष दीक्षा हुई फिर वह बालक वेद पढ़ने लगा फिर गुरु से मन्त्र दिलवाकर सब विद्या सिखाई हे नारद ! तुम नवें वर्ष वहां गये और विश्वामित्र ने तुम्हारी बड़ी सेवा की फिर तुम बालक का हाथ देख कहने लगे कि हे विश्वामित्र ! तुम्हारे पुत्र के सर्वअङ्ग अति शुभ हैं पर एक कुलक्षण है अर्थात् बारहवें वर्ष अरिष्ट है उसकी रक्षा करनी तुमको उचित है तुम तो यह कहकर चले गये और ग्रहपति के माता पिता अतिदुःखी हो रोने लगे यह दशा माता पिता की देखकर ग्रहपति ने कहा

कि तुम इतना क्यों रोते हो तुम्हारे प्रभाव से हमारे मारने के लिये काल भी शक्ति नहीं रखता हमारे रक्षक सदाशिव हैं जिनको वेद काल का भी काल कहते हैं जिसने कालकूट को खा लिया हम मृत्युंजय की सेवा करके मृत्यु को जीत लेंगे इस बात को सत्य जानो यह अमृत समान वचन सुन माता पिता को कुछ आनन्द हुआ कहने लगे कि फिर इस बात को कहो फिर कहो जिससे मृत्यु निकट नहीं आती है पुत्र! तुम जाकर शिवजी की सेवा करो और हमारी सहायता करो शिव की सेवा करके बहुत मनुष्यों ने मृत्यु को जीत लिया है शिव भक्तों का भय हरने-वाले हैं शिव के समान अपने भक्तों को आनन्द देनेवाला और कोई नहीं शिव और शक्ति दोनों भक्त की बड़ी रक्षा करने-वाले हैं इसलिये तुम जाकर शिव की शरण पकड़ो यह आज्ञा माता पिता की पाकर ग्रहपति ने काशी में जाकर मणि-कर्णिका में स्नान किया और विश्वनाथ की पूजाकर अपने को धन्य समझा और शिव का लिङ्ग स्थापितकर तप में प्रवृत्त हुआ और वे गङ्गा से आठसौ घड़े पानी लाकर शिव को स्नान कराते और नित्य प्रति एकसौ आठ श्वेतकमलों की माला शिव को पहिनाते एक पक्ष केवल वृक्षों के मूल खाकर बिताया और छः मास पर्यन्त यही नियम निबाहा दूसरा नियम न बदला फिर पानी फिर केवल एक बूंद पानी पीकर दो वर्ष इस तरह से काटे सो उसके जन्म के बारहवें वर्ष शिव ने बालक की परीक्षा की अर्थात् वज्र बांध ग्रहपति के समीप आकर कहा कि हम इन्द्र हैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुये वर मांगो ग्रहपति ने मधुर वाणीसे कहा कि हमको आपसे मांगने की कुछ इच्छा नहीं है मैं शिव को अपना वर देनेवाला जानता हूं इन्द्र ने हँसकर कहा कि शिव कुछ हमसे भिन्न नहीं हैं हम सब देवताओं के

स्वामी हैं ग्रहपति ने कहा कि तुम यहां से दूर हो जावो हमको वर देनेवाले केवल शिव हैं तुम किस योग्य हो हमको तुम क्या वर दे सक्ते हो हमको इच्छा नहीं है कि और किसी देवता से वर मांगें हमारे को आनन्द देनेवाले सर्वप्रकार से शिव हैं यह सुन इन्द्र ने वज्र उठाय बड़ा भय ग्रहपति को दिया ग्रहपति वज्र की ज्वाला देख मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े और तुरन्त शिव का स्मरण किया सो शिव तुरन्त प्रकट हुये और उनको अपने हाथ से उठाकर बिठाया और कहा उठो २ हे ग्रहपति ! अब कुछ दुःख न होगा तुम्हारा कल्याण होगा यह सुन कर ग्रहपति ने उठकर देखा कि शिव खड़े हैं जिनके वामभाग में श्रीभवानी सकल सृष्टि की माता विराजमान हैं शिव महागौर स्वरूप शरीर भर में भस्म लगाये हैं ऐसे शिव के परिपूर्ण लक्षण देख प्रीतिसागर में मग्न हुआ यह दशा देख शिव हँसकर बोले कि हे ग्रहपति ! तुम इन्द्र से बहुत डरे तुम मत डरो हमने आप इन्द्र होकर यह चरित्र किया है हमारे भक्त को काल भी दुःख नहीं दे सक्ता और कौन है जो ऐसी कठोरता करे हम तुमको वर देते हैं कि तुम देवताओं में पवित्र होकर तीनों लोक में भ्रमण किया करो और सबकी मानसीगति को जानकर तीनों रूप से संसार के कार्य करो और धर्मराज और इन्द्र के मध्य अपना राज्य स्थापित करो और तुमने जो हमारे लिङ्ग की स्थापना की है उसके सेवक को कदापि दुःख न होगा यह कह शिव ने ग्रहपति के माता पिता को बुलाकर उन सबको दिक्पति कर दिया और फिर सबके देखते २ अन्तर्धान होगये और उसी लिङ्ग में जो ग्रहपति ने स्थापित किया था समा गये और ग्रहपति की पुरी का नाम चक्षुमती हुआ जो तेज से पूर्ण है वहां के निवासी नित्य सब बलिवैश्वदेव करते हैं और ग्रह-

पति दूसरे दिक्पाल हैं जो महातेजयुक्त मस्तक में चन्द्रमा धारण किये जिनके गण भी बड़े वीर धीर हैं सो ग्रहपति अपने गणों सहित सदा अपनी पुरी में रहा करते हैं और माता पिता और कुल परिवार सहित उसी देश में भ्रमण करते हैं वहां सबको अप्रमेय सुख प्राप्त है किसी को कुछ भी दुःख नहीं होता जो जीव अग्नि में प्रवेश करते हैं और जो अग्नि की पूजा आदि करते हैं वह उसी देश में जाकर विहारपूर्वक रहा करते हैं जो मनुष्य आप या दूसरे के निमित्त अग्नि की पूजा करते हैं व जो काष्ठादि देकर किसी का शीत छुड़ा देते हैं वे सब उसी लोक में जाकर बड़ा आनन्द पाते हैं और ग्रहपति सबकी सेवा के योग्य हैं यह शिव का अवतार बड़ा तेज और शीघ्र वर देनेवाला है और अग्नि ही से सर्व पाक सिद्ध होते हैं जिनको देवता भोजन करते हैं इससे उचित है कि अग्नि की बड़ी पूजा की जावे वह अग्नि शिव का तेज है जो विश्वामित्र का पुत्र हुआ इस अँधेरे संसार में अग्नि के सिवाय और कोई वस्तु चमकनेवाली और प्रकाश की नहीं है इसके विना तीनों लोक का निर्वाह नहीं और तीनों लोक का आनन्द इसी पर घटित है जो इस ग्रहपति के चरित्र को पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में बड़ा आनन्द पावेगा सत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ।

उन्तीसवां अध्याय।

वृषेश्वर अवतार का वर्णन।

ब्रह्मा ने कहा कि हे नारद! अब हम वृषेश्वर शिवजी के अवतार का वर्णन करते हैं एक समय देवता और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मथन किया और विष्णु सहित बड़ी युक्ति कर सब रत्न समुद्र से निकाल लिये सो लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, शार्ङ्गनामी धनुष् विष्णु ने लिये और सूर्य ने उच्चैश्श्रवा घोड़ा

और मद्य दैत्यों ने ली और इन्द्र ने कल्पवृक्ष और ऐरावत हाथी लिया और कामधेनु गौ मुनीश्वरों को दी और शिव ने कालकूट विष और चन्द्रमा लिया फिर धन्वन्तरि हाथ में अमृत लिये हुये निकले सो अमृत दैत्यों ने छीन लिया देवताओं ने विष्णु से पुकार की विष्णु ने स्त्री होकर माया की और देवताओं को अमृत पिला दिया और धन्वन्तरि वैद्य आरोग्य की रक्षा करने और वैद्यक विद्या में बड़े प्रवीण हुये और जो स्त्री रत्न थी उसको दैत्यों ने उसकी और लड़कियों समेत जो उपजी थीं ले जाकर पाताल में ठहराया और फिर निकलकर देवताओं से भलीभांति लड़े फिर उनसे परास्त हो उनके भय से पाताल में जाकर रहने लगे पर विष्णु पीछा करते हुये उनके लोक में गये और वहां की स्त्रियों को देखकर मोहित हो गये और उन्हीं के साथ विहार करके वहां रह गये और वहाँ विष्णु से बहुत लड़के उत्पन्न हुये वे लड़के विष्णु के समान बड़े बलिष्ठ हुये वह बालक पाताल से निकल सब देवता आदि को दुःख देने लगे यहाँ तक कि इन्द्रादि देवताओं का संकोच छोड़ नाना प्रकार के उत्पात करने लगे तो देवताओं के कहने से हमने देवतादि को साथ लेकर शिवजी के समीप जाकर स्तुतिपूर्वक विनय की कि विष्णु ने पाताल में जाकर बहुत स्त्रियों से विहार कर बहुत लड़के उपजाये हैं वह अपने लोक को लौट नहीं आते और विष्णु के वह लड़के बड़े बलिष्ठ होकर बड़े उपद्रव मचाते हैं सो शिवजी ने ऐसी दीनता सुनकर अपना स्वरूप बैल के समान धारणकर बड़ा नाद किया और तुरन्त ही जहां विष्णु थे वहां पहुँचे और महाघोर शब्द किया जिससे वह नगर भर कांप उठा सो विष्णु ने क्रोधित होकर अपने लड़कों को लड़ाई के लिये आज्ञा दी तो जब वह लड़के शिव अवतार के सम्मुख

आये तो वृषेश्वर अवतार ने अपने सींगों से सबको मार डाला यह सुन विष्णु ने कोपित होकर वृषेश्वर का सामना किया और अच्छे २ शस्त्र चलाये तब तो वृषेश्वर ने कोपित होकर भयानक शब्द कर अपने नख और सींगों से विष्णु को विकल कर दिया विष्णु ने अहङ्कार छोड़ वृषरूप शिव को पहिं-चान स्तुति की और कहा कि हमारा अपराध क्षमा करो शिव-जी बोले कि तुम ऐसे कामी हो गये कि तुमने अपने लोक को भुला दिया अब वेग ही इन स्त्रियों को छोड़ अपने लोक को चले जावो फिर ऐसा न करना यह सुन विष्णु ने अति लज्जासे कहा कि हमारा यहां पर चक्र रक्खा है शिवजी ने कहा कि उस चक्र को यहीं रहने दो हम तुम्हारे लिये दूसरा चक्र देवेंगे सो शिवजी ने दूसरा चक्र बनाकर विष्णु को दिया और कहा इसी समय चले जावो सो विष्णु ने सब देवताओं से अलग जाकर कहा कि यहां जो स्त्रियां अमृत से उपजकर स्थित हैं वे हर प्रकार आनन्द देनेवाली हैं जो इनसे भोग करता है वही इनका स्वामी है सो देवताओं ने उन स्त्रियों के पास जाने की इच्छा की पर शिवजी ने उनकी इच्छा जान तुरन्त यह शाप दिया कि जो इस स्थान पर शान्त मुनीश्वरों और मद्यप दैत्यों के विशेष आवेगा तो वह तुरन्त मर जावेगा यह सुनकर सब देवता भयभीत हो अपने २ घरों को चले गये और शिवजी और विष्णु और देवता सब अपने लोक को गये जो इस चरित्र को सुनेगा वह आनन्द पावेगा बहत्तरवां अव-तार पूर्ण हुआ।

तीसवां अध्याय।

पिप्पलाद अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! अब हम पिप्पलाद अवतार का

वर्णन करते हैं दधीचि मुनि जो तीनों लोक में प्रसिद्ध हैं और जिन्होंने युद्ध स्थान में इन्द्र को परास्त किया और विष्णु और सब देवताओं को शाप दिया और सुवर्चा उनकी स्त्री ने सब देवताओं को शाप देकर कुछ संकोच न किया उन्हीं से एक पिप्पलाद बालक उपजा जिनको शिवजी का अवतार कहते हैं इतना सुन नारद ने कहा कि हे पिता! पहिले सुवर्चा के देवताओं के शाप देने का वृत्तान्त सुनाइये फिर पिप्पलाद के अवतार का वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि जब इन्द्र वृत्रासुर से हारकर देवताओं समेत हमारी शरण में आये तब हमने देवताओं से कहा कि तुम सब दधीचि के घर में जाकर उनकी अस्थि मांगो और उससे एक वज्र बनाओ और उसी वज्र से वृत्रासुर का बध करो तुम्हारी सहायता शिवजी करेंगे यह सुनकर देवताओं ने दधीचि के पास जाकर उनकी हड्डियां मांगी सो तुरन्त ही दधीचि ने अपनी अस्थि दे दीं और आप शिवलोक सिधारे और देवताओं ने उन्हीं हड्डियों से विश्वकर्मा के द्वारा वज्र बनाया और इन्द्र ने उसको अपने हाथ में लेकर वृत्रासुर को मार डाला संसार भर में आनन्द फैला जब यह हाल दधीचि की स्त्री सुवर्चा को मालूम हुआ तो अति चिंतित हो उसने अपने पातिव्रत का तेज दिखाया अर्थात् देवताओं को यह शाप दिया कि आज से सब देवता पुत्रहीन होवें यह कहकर चाहा कि सती हो जावें पर आकाशवाणी ने निषेध किया तब सुवर्चा ने पीपल के मूल में बैठकर अपने को ढाढ़स दिया इतने में एक बालक उसी वृक्ष के नीचे से उपजे जो शिवजी के अवतार हैं उनका चारों ओर यश छा गया और सुवर्चा ने अपना लड़का देख सब दुःख भुला दिये और पुत्र को शिवजी का अवतार जान स्तुति की और कहा कि हमारी मूर्खता दूर करो और पीपल

के वृक्ष के नीचे अपना स्थान करो और सदा प्रसन्न बैठे रहो और मुझको आज्ञा दो कि मैं भी अपने पति के लोक को जाऊं और वहां पति समेत रहकर तुम्हारा ध्यान किया करूं तुम शिव हो हमको भलीभांति विदित हुआ है यह कह और बड़ी प्रसन्नता से सुवर्चा सती हो गई और शिवलोक में जाकर दधीचि सहित सदाशिव की सेवा में लगी रही और सब देवता और मुनि और विष्णु और हम आदि आकर उस बालक को शिव का अवतार समझ बड़ा उत्सव करने लगे और जो कि शिवजी पीपल के वृक्ष के नीचे उपजे इससे हमने उनका पिप्पलाद नाम रख दिया और सब मिलकर पिप्पलाद की स्तुति करने लगे फिर पिप्पलाद की आज्ञा पाय हम सब अपने २ लोकों को गये और पिप्पलाद उसी पीपल की जड़ में बैठकर तप करते रहे एक दिन पिप्पलाद मुनि पुष्पभद्रा नदी के तट पर चले जाते थे मार्ग में एक स्त्री को देखा चाहा कि उसके साथ अपना विवाह कर गृहस्थाश्रम धारण करें सो इस इच्छा से वह उस स्त्री के माता पिता के घर संसारी रीति से गये और अनरण्य लड़की के पिता ने पिप्पलाद का बड़ा सन्मान करके पूजन किया पिप्पलाद ने उनसे उस कन्या को मांगा राजा पिप्पलाद को निर्बल देख चुप रहा तब पिप्पलाद ने कहा कि जो तुम अपनी कन्या नहीं देते तो मैं तुमको इसी समय भस्म किये देता हूं जब राजा ने पिप्पलाद का तेज देखा तो रोते पीटते अपनी लड़की पिप्पलाद से ब्याह दी सो पिप्पलाद अपने साथ स्त्री लेकर अपने स्थान को लौट आये और राजा की कन्या ने पातिव्रत धर्म भली भांति निबाहा शिव के अंश से तो पिप्पलाद और गिरिजा के अंश से पद्मा अर्थात् राजा की पुत्री थी दोनों ने भलीभांति भोग विलास किया एक दिन पिप्प-

लाद की स्त्री ने अपने को भलीभांति सजाया और पिप्पलाद की आज्ञा लेने के उपरान्त गङ्गा स्नान के निमित्त चली मार्ग में धर्मराज ने राजा का स्वरूप धार उसकी परीक्षा लेनी चाही और पद्मा से कहा कि तुम्हारा पति तो बूढ़ा कुरूप और अशुभ है तुम उसको छोड़ हमारे पास आकर विहार करो मुनि की स्त्री होकर क्या आनन्द पावोगी यह कहकर चाहा कि पद्मा के हाथ पकड़ लें पर पद्मा ने अति क्रोधित होकर कहा हे दुष्ट! दूर हो दूर हो मुझे कदाचित् स्पर्श न करना मुझे तू कुदृष्टि से देखता है तेरा नष्ट हो जावे यह शाप सुनकर धर्मराज मुरझा गये और राजा का शरीर छोड़ मुख्य रूप धार विनय की कि हे माता! मैं धर्मराज हूँ परीक्षा से मैंने यह बात कही थी अच्छा किया जो मुझे दण्ड दिया अब कृपा करो क्योंकि तुम जगन्माता हो पद्मा ने धर्मराज को पहिंचान कर कहा कि सत्य-युग में तुम पूर्णरूप रहो तुम पर कुछ भी कोई कष्ट नहीं हो पर त्रेता में एक पैर और द्वापर में दो पैर और कलियुग में तीसरा और चौथा पांव तुम्हारे कट जावें क्योंकि मेरा वचन वृथा नहीं होता यह पद्मा का वचन सुन धर्मराज ने प्रसन्न होकर कहा कि तुमने मुझको बड़े नरक से बचा लिया तुम हमारी माता हो अब मैं बहुत प्रसन्न होकर तुमको वर देता हूँ अर्थात् तुम्हारा पति युवा होकर अति सुन्दर हो जावे वह अति कलावान् विद्वान् बड़ा चरित्र करनेवाला हो इसी प्रकार तुम भी अति सुन्दरी होकर युवावस्था में सदा स्थित रहो और तुम्हारे दश पुत्र बड़े विद्वान् उपजें और तुमको किसी प्रकार का दुःख न हो यह कह धर्मराज अपने लोक को चले गये और पद्मा भी अपने स्थान को लौट आई पिप्पलाद अवतार ने बहुतेरों को संसारसागर से डूबते हुये निकाला और जब संसारी मनुष्यों

को शनैश्चर के दुःख से दुःखी देखा तो वर दिया कि आज से शिवभक्तों को जन्म से सोलह वर्ष तक शनैश्चर कुछ दुःख न देवेगा उसी समय से शनैश्चर सोलह वर्ष पर्यन्त बालकों का कुछ नहीं कर सक्ता शनैश्चर का अशुभ फल पिप्पलाद के नाम के स्मरण से नष्ट हो जाता है अर्थात् पिप्पलाद, कौशिक, गाधि मुनि के स्मरण से शनैश्चर का अशुभ फल नहीं होता हे नारद! पिप्पलाद संसार भर के आनन्द देनेवाले हैं और पद्मा भी गिरिजा का अवतार हैं उनके स्मरण से सन्तान की वृद्धि होती है दधीचि बड़े उदार हुये उनकी बराबरी कोई नहीं कर सक्ता है यह पिप्पलाद का आख्यान अति पवित्र है जो हमने वर्णन किया इस के पढ़ने सुनने वालों को दोनों लोक में सब कुछ मिलता है तिहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ।

इकतीसवां अध्याय।

महेश अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि एक दिन शिव और गिरिजा दोनों ने भोग के निमित्त संसारी जीवों के समान सम्मति कर भैरव को द्वार पर बैठाया और आप अन्तःपुर को गये और बहुत समय तक मनुष्यों के समान विहार में प्रवृत्त रहे एक दिन गिरिजा मतवालों की तरह घर से बाहर निकली और भैरव ने गिरिजा को कुदृष्टि से देखा और बाहर जाने से रोंक लिया गिरिजा ने बड़ा क्रोध कर शिवजी की इच्छा पर भैरव को यह शाप दिया कि तूने हमारे पुत्र होकर हमको कुदृष्टि से देखा और माता पुत्र का भाव छोड़ मनुष्यों के समान कुमार्गी होना चाहता है इसलिये तू मृत्युलोक में जाकर मनुष्यशरीर धारेगा तब तू ऐसे पाप से छूटेगा यह सुन भैरव अति दुःखी हुये भैरव कि वह भी लीला करनी चाहते थे उन्होंने भी श्रीगिरिजा महारानी को यह

शाप दिया कि जो दशा हमारी हो वही अवस्था तुम्हारी भी हो यह शब्द सुन शिवजी बाहर निकल आये और हँसकर दोनों को समझाया भैरव ने विनय की पृथ्वी में भी हम आपके पुत्र होकर उपजें इसी से शिवजी के साथ सब लड़कों को अवतार धारण करना पड़ा शिवजी का नाम महेश और गिरिजा का नामशारदा हुआ चौहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ।

बत्तीसवां अध्याय ।

अवधूतपति अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले अब हम अवधूतपति अवतार की कथा कहते हैं जिन्होंने इन्द्र के अहंकार का नाश किया एक दिन इन्द्र ने सदाशिवजी के दर्शन की इच्छा से तुरन्त सब देवताओं को बुलाया और हर प्रकार की सामग्री इकट्ठी की यह कहकर कि हम सब देशों के महाराजा हैं हमको बहुत सामग्री सहित शिवजी की भेंट करनी चाहिये सो ग्यारहों रुद्र बारहों सूर्य आठों वसु तेरहों विश्वेदेवा और सब मरुद्गण और सब दिक्पति और देवता और मुनीश्वर भलीभांति सजसजाकर बड़ी धूमधाम से इकट्ठे हुये और बृहस्पति को साथ लेकर चले और सब प्रेम में मग्न कोई गाते कोई बजाते कोई हँसते चले और नाना प्रकार के बाजे बजते थे अप्सरा नाचती हुई चली जाती थीं और इन्द्र हर प्रकार के देवताओं का जुदा २ समूह बनाकर सबको साथ लिये हुये चले जब कैलास पर्वत के समीप इन्द्र पहुँचे तो शिवजी ने यह इन्द्र का गर्व जानकर लीला के निमित्त अपना भयंकर रूप धारा कि नेत्र जलते हुये भयानक साज साजे अर्थात् अवधूत रूप था इन्द्र ने अवधूत को देखकर प्रणाम किया और पूछा कि आप कौन हैं कहां से आते हैं जाना जाता है कि आप इसी समय शिवजी के पास

से आते हैं कृपा करके कहिये कि शिवजी कहां हैं क्या करते हैं कहीं चले तो नहीं गये अवधूत ने कुछ उत्तर न दिया फिर इन्द्र ने कहा कि शिवजी कहां हैं बतला दो इसी प्रकार इन्द्र ने कई बार पूछा पर कुछ उत्तर न पाया तब तो इन्द्र ने क्रोधित होकर अपना वज्र उठाया और कहा हे दुष्ट, अवधूत ! तू हमको उत्तर नहीं देता क्या मद्य पिये हुये है मैं तुझको वज्र से मारता हूं तेरा कौन रक्षक है यह कह और वज्र को अवधूत पर चलाया सो वज्र उनकी गर्दन में लगा जिससे श्याम रङ्ग का चिह्न पड़ गया और वज्र जलकर भस्म हो गया और देवताओं की सेना में हाहाकार मच गया और शिवजी में इतनी ज्वाला बढ़ी कि सब देवता जलने लगे इन्द्र ऐसी लीला देख कांप उठे और अपने गुरु का स्मरण किया सो बृहस्पति ने शिवजी का ध्यान किया और शिवजी को जान स्तुति कर इन्द्र से कहा कि यह अवधूत नहीं वरन आप सदा शिवजी हैं इतना कह बृहस्पति ने आदर कर स्तुति की और कहा कि ये सबके स्वामी हैं फिर इन्द्रादिक सब देवताओं ने प्रीतिपूर्वक शिव की स्तुति की ऐसी स्तुति सुनकर शिव प्रसन्न हुये और कहा कि यह स्तुति सुनकर हम प्रसन्न हुये वर मांगो यह सुन बृहस्पति अति प्रसन्न हुये और यह वर मांगा कि इन्द्र आपका सेवक है इसकी रक्षा अवश्य है इन्द्र ने आपका तेज नहीं जाना इस पर अनुग्रह करना उचित है और अपनी क्रोधाग्नि को दूर करो यह सुन शिव बोले कि सर्प अपनी केंचुली को दूर करके फिर ग्रहण नहीं करता पर तो भी हम कृपा करके इस ज्वाला को इतनी दूर फेंक देवेंगे कि इन्द्र पर उसका कुछ फल न होगा और जो कि तुमने इन्द्र को जीव दान दिया इससे तुम्हारा जीव नाम हुआ यह कह उस ज्वाला को उन्होंने गंगा में फेंक

दिया जिससे जालन्धर उपजा उसका वृत्तान्त हम वर्णन कर चुके हैं यह चरित्र कर अवधूत शिव अन्तर्धान हो गये और देवताओं को बड़ा आनन्द मिला और अपने २ स्थानों को लौट गये जो मनुष्य इस अवधूतेश्वर अवतार के चरित्र को पढ़ेगा या सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द पावेगा पचहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ।

तैंतीसवां अध्याय ।

श्रीहनूमानजी के अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम हनुमान् शिव अवतार का वर्णन करते हैं जिन्होंने रामचन्द्र की सहायता कर दैत्यों को वध कर डाला उन्होंने कपिजाति में देह धारण कर रामचन्द्र से बड़ा प्रेम उपजाया और शिवकी आज्ञा पाकर रामचन्द्र की सेवा करते रहे यह हनुमान्, महावीर, कपिनाथ, शिव के अवतार हैं इनकी कथा इस तरह है कि जब शिव ने मोहनीरूप को देखा तो केवल रामचन्द्र के कार्य के निमित्त इस तरह पर लीला की कि शिव मोहित होकर मोहनी रूप को लिपट गये सो शिव का मद अर्थात् वीर्य धरती पर गिर पड़ा जिसको नगमुनि ने शिवकी सैन से रख लिया इस इच्छा से कि उसके द्वारा रामचन्द्र के कार्य सुधारेंगे सो अञ्जनी से हनुमान् उपजे और कपिअवतार लेने का यह कारण था कि चार मास तक रामचन्द्र ने शिव का बड़ा तप वन में किया निदान शिवजी ने परीक्षा लेने के उपरांत अपने गणों सहित अवतार लिया और अपना धनुष् रामचन्द्र को दिया जो सदाशिव प्रलय के समय हाथ में लेते हैं और शिव से आज्ञा पाकर सब देवता बन्दर और रीछ का अवतार लेते गये और

जब कि रामचन्द्र ने रावण को अति बलिष्ठ समझ कर शिवजी की बड़ी स्तुति की तो अञ्जनी के द्वारा शिवजी ने भी अवतार लिया और विष्णु अर्थात् रामचन्द्र का दुःख दूर किया उन्होंने उपजतेही सूर्य को खा लिया तब देवताओं ने जाना कि यह शिवजी का अवतार है रामचन्द्र के बड़े बड़े कार्य किये उनमें से रामचन्द्र की पत्री को सीता के पास पहुँचाया और रावण की पुष्पवाटिका को नष्ट कर दिया लङ्का को जला दिया समुद्र में सेतु तय्यार किया जब लक्ष्मण शक्ति से मूर्च्छित हुये और रामचन्द्र अति दुःखी हुये तो हनुमान् ने औषध लाकर लक्ष्मण को जिला दिया और रामचन्द्र का दुःख दूर किया और रामचन्द्र को कीर्ति देकर आप रावण का बध किया और दैत्यों को मारकर देवताओं को हर्ष दिया और जोकि भक्ति-भाव की रीति को अङ्गीकार कर भक्ति को संसार में प्रसिद्ध किया इससे रामदूत के नाम से प्रसिद्ध हुये रामचन्द्र के कार्य के पूर्ण करने निमित्त शिव ने हनुमान् का अवतार लिया फिर उनकी भुजा उखाड़ कर राम और लक्ष्मण को बड़ा हर्ष दिया और उनकी सेवा से असंख्य पापियों ने मुक्ति पाई है हे नारद! इस बातको निश्चय जानो कि सदाशिव अपने भक्तों के निमित्त असंख्य तन धारण कर अपनी बड़ाई का कुछ विचार नहीं करते यही दशा विष्णु की भी है कि अर्जुन पाण्डव के रथवान् होकर उनका रथ हांका इतना सुन नारद के पूछने के अनुसार ब्रह्मा ने कहा कि सनकादि हमारे चार पुत्र जो परम शैव हैं सदाशिव की मूर्ति हृदय में रख तीनों लोक में भ्रमण करते हैं वे एक दिन विष्णुलोक में गये और वैकुण्ठ को देख अति प्रसन्नता से चाहा कि विष्णु के दर्शन करें सो छः डेवढ़ी तक भीतर चले गये सातवीं डेवढ़ी पर जय और

विजय विष्णु के गणों ने रोंका और किसी प्रकार भीतर जाने न दिया सनकादिक ने क्रोधित हो शिव की प्रेरणा से यह शाप दिया कि तुम दोनों यहां न रहोगे तुमने हमको विष्णु के मन्दिर में जाने से रोंका यह तुम्हारा राक्षसों के समान कर्म है इससे तुम दोनों राक्षस हुये और तुरन्त यहां से च्युत होकर पृथ्वी पर जाओ यह शाप सुनकर दोनों सनकादिकों के चरणों पर गिरपड़े और उनको प्रसन्न किया इतने में विष्णु भी भीतर से निकल आये उन्होंने उनकी बड़ी स्तुति की सो वह विष्णुजी को प्रसन्न कर आज्ञा पाय हमारे लोक को चले आये और वह दोनों गण दितिके पुत्र होके कनककशिपु और कनकाक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुये वह ऐसे बलवान् हुये कि उन्होंने तुरन्तही तीनों लोक को जीत लिया और स्वाधीन होकर तीनों भुवन का राज्य करते रहे निदान देवताओं की इच्छानुसार कनकाक्ष को विष्णु ने वराहरूप धर मारा और कनककशिपु को नरसिंह अवतार धर उसका उदर विदीर्ण किया और जो कि दोनों को तीन जन्म तक राक्षस होने का शाप था इससे फिर उन दोनों ने कुम्भकर्ण और रावण होकर शिव की बड़ी भक्ति की इससे रावण ने देवताओं को परास्त कर तीनों लोक का राज्य किया और फिर रावण ने तुम्हारे उपदेश से मोहित हो कैलास को मूल से उखाड़ लिया इससे शिवजी ने बड़ा भारी शाप दिया और यह कहा कि हमारे समान कोई मनुष्य तुम्हारा अहंकार नष्ट करेगा सो शाप के कारण उन्होंने कुमार्ग अङ्गीकार किया और संसार में बड़े २ उपद्रव मचाये देवतादि दुःखी हो विष्णु के समीप गये और रावण का सर्व वृत्तान्त वर्णन किया विष्णु बोले कि रावण शिवजी का भक्त है वह किसी से जीता नहीं जा सक्ता पर हम शिवजी की अनुमति पाकर तन धारण करेंगे

और शिवजी का तपकर उन्हीं से बाण लेकर रावण को मारेंगे यह कह देवताओं के बिदा करने के उपरान्त चाहा कि मनुष्य होकर चार प्रकार का अवतार लें सो अयोध्यापति दशरथ के यहां इस तरह अवतार लिया कि कौशल्या से रामचन्द्र और कैकेयी से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुहन उपजे यह चारों एक ही विष्णु के स्वरूप हैं जिन्होंने अलग २ चार अवतार लिये और राजा जनक की लड़की सीता के साथ रामचन्द्र का विवाह हुआ निदान रामचन्द्र दशरथ की आज्ञा से राज्य छोड़ देवताओं के कार्य करने के निमित्त वन में गये जहां सीता को रावण ने हरलिया और हर तरह रामचन्द्र को दुःख दिया निदान रामचन्द्र ने अगस्त्य से उपदेश पाकर शिव का तप किया और शिवजी ने प्रसन्न होकर रावण के वध के निमित्त आज्ञा देकर अपना धनुष्बाण कृपा किया सो रामचन्द्र ने रावण को सेना सहित वध करके सीता को पाया।

चौंतीसवां अध्याय।

नारद ने कहा कि यह रामचन्द्र का चरित्र अतिसंक्षेप से है हे ब्रह्माजी! इसको विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि रामचन्द्र के चरित्र अति पवित्र यश, कीर्ति, आरोग्यता और मुक्ति के देनेवाले हैं यह अवतार विष्णु ने देवताओं के लिये पूर्णांश से धारण किया है उन्होंने बहुत से बालचरित्र किये जिससे माता पिता रात दिन बड़े प्रसन्न रहे फिर विश्वामित्र के यज्ञ में जाकर रक्षा की और सुबाहु को सेना सहित मारडाला और मारीच भी मारे गये फिर विश्वामित्र के साथ जनकपुर में जाकर राजा जनक की इच्छा पूरी की वहां चारों भाइयोंका विवाह होगया जब कि राजा दशरथ अपने लड़कों और बहुओं समेत अयोध्या को लौट आये उस समय का आनन्द

कौन बखान सक्ता है निदान देवताओं ने अपने कार्य के निमित्त बड़े बड़े उपाय करके भरत की माता को निन्दा दिलाई अर्थात् रामचन्द्र को दशरथसे वनवास दिलाया पहिले रामचन्द्र चित्रकूट को गये और कई दिन लक्ष्मण और सीता सहित वहीं ठहरे रहे और वहां मत्तगयन्द शिवजी की पूजा की जिसको हमने स्थापित किया था वही शिवजी चित्रकूट के रक्षक हैं यात्रा करनेवालों के पाप भक्षण कर जाते हैं जो मनुष्य चित्रकूट में जाकर उनकी पूजा न करे उसको जाने का कुछ फल नहीं मिलता रामचन्द्र ने भी उससे वरदान पाया भरत अवधवासियों सहित वहां गये और हाथ जोड़ बड़ी भक्ति से लौटने के लिये बिनती की पर रामचन्द्र ने न माना और अपनी पादुका देकर भरत को बिदा किया फिर चित्रकूट को छोड़ दराडक वन को जहां मुनीश्वर रहते हैं गये और सीता को बीच में छोड़ दुरे वनके होने के कारण चले मार्ग में विराध को जो सीता को उठाकर आकाश में उड़ा था मारडाला फिर कुम्भज के स्थान में गये और अगस्त्य के उपदेश से पञ्चवटी को गये जहां कामदेव की सताई हुई शूर्पणखा ने आकर रामचन्द्र से विवाह की इच्छा की निदान रामचन्द्र और लक्ष्मणजीने न माना सो शूर्पणखा यह कहकर कि अपने किये हुये का फल पाओगे सीता को भय देने लगी और अपने नाम के समान उसने अपना शरीर बनाया जिससे लक्ष्मण ने जाना कि यह राक्षसी है सो तुरन्त उसकी नाक काट ली वह रोती पीटती अपने भाई दूषण के पास गई और सब वृत्तान्त कह सुनाया वह शूर्पणखा को आगेकर युद्ध के निमित्त चले रामचन्द्रने सीता लक्ष्मण को सौंप जितने राक्षस लड़ने आये थे उतने अपने रूप बनाकर सिवाय शूर्पणखा के सबका वध किया वह रोती हुई रावण के समीप

गई और सर्व वृत्तान्त रामचन्द्र का कहा सो रावण ने रामचन्द्र को बड़ा बलिष्ठ जान मारीच को सीता के उठा लाने के निमित्त कहा उसने न माना निदान रावण भयभीत हुआ और दोनों इस कार्य के निमित्त चले मारीच रावण का मातुल विचित्र हरिण बन रामचन्द्र के सामने फिरने लगा रामचन्द्र छल में आकर हरिण के वध के निमित्त चले पीछे से लक्ष्मण भी चले सो राम और लक्ष्मण के पीछे रावण आकर सीता को उठा ले गया मार्ग में सीता को रोते देख जटायु ने रावण से युद्ध किया जिसके पंख रावण ने जला डाले जब रामचन्द्र और लक्ष्मण ने लौटकर सीता को न देखा तो अतिखेद कर पृथ्वी पर गिर पड़े और रोते हुये सब जंगल ढूँढ़ने लगे सो जटायु से सब हाल सुना और जटायु ने यह हाल रामचन्द्र का सुनकर अपने शरीर का त्याग किया रामचन्द्र ने आप उसका दाहकर्म किया और पिता के समान शोककर फिर सीता को ढूँढ़ने लगे इतना खेद रामचन्द्र का देख अगस्त्यजी आये ।

पैंतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि अगस्त्यमुनि को देखकर लक्ष्मण ने प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़कर शिर झुकाया मुनिने उनको अति दुःखी देख रामचन्द्र से कहा कि हम वेद का मत आपको सुनाते हैं कि तुम्हारा यह अथाह दुःख दूर होजावे तुम स्त्री के निमित्त ऐसा दुःख क्यों करते हो स्त्री किसकी होती है तुम वेदमार्ग छोड़कर हाय हाय कहते हो और रोते हो यह शरीर जो पांच तत्त्व से बना हुआ है और जड़ है उस पर इतनी प्रीति क्या करते हो केवल जीव सब इन्द्रियों से पवित्र है और सच्चिदानन्द सबसे भिन्न जन्म मरण से रहित है वह स्त्री पुरुष नपुंसक कुछ नहीं है उसका कोई आकार नहीं पर

सबमें विद्यमान है वह अनादि, निरञ्जन, अलख, ब्रह्म माया से परे, निर्भय, नामरूपरहित है और स्त्री जो अति भ्रष्ट और उसका शरीर मलमूत्र से परिपूर्ण है तो बताओ कि सिवाय चर्म के उसके शरीर में क्या है इस बात को न समझ बुद्धि के विरुद्ध सब कार्य कर रहे हो तुमको उचित है कि ज्ञान धारण करके ऐसी चिन्ता मत करो और यह समझ लो कि केवल शरीर ही मरने के योग्य है आत्मा नहीं मरता ब्रह्म एकही है दो नहीं कौन स्त्री और कौन पुरुष है यह सुन सीता के वियोग का दुःख दूर करो तुम वृथाही मोह के वश में पड़गये हो शिवशंभुका स्मरण कर खेदको भूलो यह बात सुन रामचन्द्र बोले कि आप जो कहते हैं कि तन जड़ है उसको क्या दुःख होसक्ता है और आत्मा को तनसे भिन्न बताते हो फिर किसको दुःख होता है उसको बतला दीजिये और मुझको सीता के वियोग का दाह है वह शरीर को जलाता है जो बात कि हम शरीर में प्रतिदिन देखते हैं उसके लिये आप क्या कहते हैं मैं आपसे पूछता हूं कि दुःख सुख का भोगनेवाला कोई है वा नहीं यह सुन अगस्त्यजी बोले कि शिवजी की माया जानने के योग्य नहीं तीनों लोक उसीमें मोहित हैं उसका नाम प्रकृति है उससे सम्पूर्ण संसार को उपजा हुआ समझो और ऐसी प्रकृति का स्वामी शिवजी को समझो जो अनादि और पवित्र है उसीसे यह तीनों लोक दिखाई देते हैं क्योंकि सबका आत्मा वही है जिस तरह कि लकड़ी अग्नि के योग से प्रज्वलित होती है इसी तरह शिवजी से सब जीव अपने २ कर्मों में बँधे हुये प्रकट होते हैं वही पुरानी वासना संसार की क्षेत्रज्ञ है और अन्तःकरण जो चार प्रकार का है उससे उसी का प्रकाश है वही जीव अपने कर्मों के फल पाता है वही कर्मफल को भोग करता है और

सब दुःख सुख अपने कर्मों के अनुसार होता है माया की फाँसी से दुःख सुख है जो माया से भिन्न हैं वे संसार पर प्रबल हैं और मूर्ख संकल्प विकल्प से संसार में संसार देखते हैं रामचन्द्र ने कहा कि जो तुमने कहा वह सब ठीक है पर हमारा दुःख दूर नहीं होता जिस तरह कि मद्य बड़े २ बुद्धिमानों को मतवाला कर डालता है इसी प्रकार भाग्य के भोग्य महादुःखदायक हैं उसी भाग्य के अधीन होकर किसी का वश नहीं चलता उससे सब दुःख सुख होता है हमने भाग्य को सर्वोपरि शिवजी के समान समझ लिया है वह मुझे दुःख देता है अब मैं यह चाहता हूं कि जिसने मेरी स्त्री को बहकाया है उसको मार डालूं हम सूर्यवंशी दशरथ के पुत्र हैं जो शीघ्र ही न मारूंगा तो हमारे जीने से क्या लाभ है हमको इस समय तत्त्वबोध से कुछ प्रयोजन नहीं हमारा मन सीता के वियोग में दुःखी है काम क्रोध को अग्नि के समान शत्रु कहा गया है हमारा शरीर उनसे जल रहा है किसी प्रकार वह अग्नि नहीं बुझती यह अहंकार का भरा हुआ वचन सुन अगस्त्य ने जाना कि हमारा उपदेश लाभदायक न हुआ मन में कुछ क्रोध करके कहा कि हे रामजी! तुम्हारा कुछ अपराध नहीं है यह शिवजी की माया है जिसके अधीन होकर सब देवता मुनि आदि भी बुद्धि को छोड़ दुःख सुख प्राप्त करते हैं जो मनुष्य कि काम और क्रोध के अधीन हैं वे उपदेश से शुद्धमार्ग को नहीं मानते उनको उपदेश के वचन इस तरह अच्छे मालूम नहीं होते जिस तरह कि मरनेवाले रोगी को औषधि और चिकित्सा उत्तम नहीं भासती जो अपनी स्त्री की प्राप्ति के निमित्त रावण का वध किया चाहते हो रावण बड़े भारी दैत्यों का स्वामी है तुम लङ्का में क्योंकर जाकर सीता को प्राप्त करोगे जिसके

यहां देवता सब कार्य और सेवा करते हैं और देवताओं की स्त्रियां रावण के ऊपर पङ्खा डुलाती हैं वह शिवजी की कृपा से संसार भर का राजा है यद्यपि उसने कुमार्ग धारण किया है तो भी उसको दुःख नहीं मिलता तुम अपने को और शत्रु की शक्ति को नहीं देखते मेघनाद के समान जिसका पुत्र है और जिसको शिवजी ने वर दिया है और जिसने इन्द्र को जीतकर सब देवताओं को अपने सामने से भगा दिया और कुम्भकर्ण के समान जिसका लघु भ्राता है और उसका दूसरा भाई विभीषण अमर है और रावण का सब गढ़ सुवर्ण से बना हुआ है और देवता और दैत्य कोई उसको जीत नहीं सक्ता वहां किसी को कुछ भय नहीं उसके पास करोड़ों चतुरङ्गिणी सेना विद्यमान हैं उसको तुम जीता चाहते हो जैसे बालक चन्द्रमा को अपने हाथ से पकड़ना चाहता है वही तुम्हारी त्यों की त्यों अवस्था जान पड़ती है यह कह अगस्त्य चुप होगये ।

छत्तीसवां अध्याय ।

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि जब यह वचन अगस्त्यजी के रामचन्द्र ने सुने तो ठण्ढी सांस भरकर अगस्त्य के चरणों पर गिर पड़े और हाय २ करके चिल्लाकर रोने लगे और कहा कि हे मुनि ! हम दुःखसागर में डूबते हैं हमको डूबने से बचा लो यह सहायता का समय है और उपदेश, ज्ञान, बुद्धि का समय नहीं क्योंकि इस समय हम वियोग की अग्नि से जलते हैं वह उपाय बताइये जिससे सीता मिलें फिर जो आप ज्ञान मुझको सिखावें वह हम मानेंगे मुझे अपना सेवक जानकर क्रोध न कीजिये हम क्षत्रिय मूर्ख और अहंकारी हैं हम वियोगाग्नि से जले हुये हैं आपका वचन जो अमृत के समान है हमारे मन में नहीं ठहर सक्ता आपके सामने हम दूसरा शिक्षा देनेवाला

गुरु नहीं देखते आप वह बात सिखावें जिससे सीता मिलें यह सुन अगस्त्य ने शिव लीला की बड़ी स्तुति की और कहा कि जो तुम यही चाहते हो तो शिवजी की शरण में जाओ और उनका कठिन तप करो और शिवजी के नाम वेद के अनुसार जपो और मनुष्यत्व छोड़ तेज का भरा हुआ रूप धारण कर रावण का वध करो तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा तुम्हारे सामने कोई ठहर न सकेगा तुम सुगमता से सीता पावोगे शिवजी तुम्हारी ओर होकर रावण का पक्ष न करेंगे यह सुन राम ने अति प्रसन्न हो कहा कि हे अगस्त्यजी ! तुम समुद्र के मथने-वाले और इल्वल के शत्रु संसार में प्रसिद्ध हो आप जो मुझ पर प्रसन्न हुये तो हमारे सब मनोरथ पूरे होंगे अब तुरन्त शिवजी के मन्त्र की दीक्षा देकर शिवजी की पूजा की युक्ति बता दो जिससे शिवजी की सेवा में प्रवृत्त होजाऊं और शिवजी मुझसे बहुत ही प्रसन्न होवें अगस्त्यजी ने कहा कि पहिले हम शिव पूजा की तिथि और वार वर्णन करते हैं जिनमें शिवजी की पूजा का आरम्भ करे अष्टमी या चतुर्दशी जो शिवजी की तिथि प्रसिद्ध है वा एकादशी जो विष्णु की तिथि कहलाती है उनके शुक्ल पक्ष में शुभमास पर शिवजी की पूजा का आरम्भ करे इस तरह कि पहिले मुहूर्त भर रात्रि रहे उठ स्नान नित्यकर्म से निश्चिन्त हो जावे फिर संकल्प करे और अपना सर्व शरीर श्वेत वस्त्रों से भूषित करके युक्तिपूर्वक भस्म अवश्य लगावे सब बातों से उत्तम भस्म धारण करना अवश्य है क्योंकि भस्म लगाने से सिद्धि प्राप्त होती है फिर रुद्राक्ष जहां जहां जिस जिस अङ्ग में चाहिये युक्ति से धारण करे हे रामचन्द्र ! भस्म बिन शिव प्रसन्न नहीं होते न सिद्धि प्राप्त होती है फिर व्रत कर प्रसन्नतापूर्वक ध्यान करे। ध्यान। जो परब्रह्म

सदाशिव ब्रह्मा और विष्णु के उपजाने वाले सबके स्वामी कैलासवासी हैं उनके स्वरूप का ध्यान करे कि गौर शरीर भस्म रमाये जिनके वामभाग में गिरिजा विराजमान हैं पांच मुख तीन नेत्र चार भुजा लालरंग की जटाजूट धारे सब भूषणों को पहिने हुये हैं और सांपों को जनेऊ के बदले लपेटे हुये हैं और त्रिशूल, डमरू, वर और अभय धारण किये बाघम्बर ओढ़े कोटि सूर्य के समान महाप्रकाशमान और कोटि चन्द्रमा के सदृश शीतल यह ध्यान कर शिवजी की पूजा करे फिर शिवजी के सहस्र नाम का पाठ करे यह कह अगस्त्य ने रामचन्द्र को वेद का लिखा हुआ सहस्रनाम जिसके जप से शिवजी तुरन्त प्रसन्न होते हैं और सर्व कष्ट नष्ट करते हैं बता दिया फिर कहा हे रामचन्द्र ! तुम इस सहस्रनाम को रात दिन जपो जो कोई भय उपजे तो तुम कुछ न डरना शिव तुम्हारी रक्षा करेंगे और तुमको पाशुपतास्त्र कृपा करेंगे जिसको पाकर शत्रु के वध करने के अनन्तर सीता को पावोगे वह धनुष् जो तुमको सदाशिवजी कृपा करेंगे उसके चढ़ाने से समुद्र तक सूख जावेंगे उसी से शिव प्रलय करते हैं धनुष् शिव को अति प्रिय है और दूसरी युक्ति हम नहीं जानते शिवजी की शरण होने से हर प्रकार का आनन्द मिलता है सर्वकार्य तुरन्त सिद्ध होजाते हैं फिर अगस्त्य ने उन लोगों का वृत्तान्त संक्षेप से सुनाया जो शिवजी की सेवा से अपने २ मनोरथ पा चुके हैं फिर अगस्त्य अपने आश्रम को चले गये ।

सैंतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि रामचन्द्र ने रामगिरि पर जाकर गोदावरी के तटपर शिवलिङ्ग की स्थापनाकर भस्म और रुद्राक्ष धारण किया और शिवलिङ्ग को गौतमी नदी के जल से जो समुद्र से उपजी है

पूजन करके नाना प्रकार के वन के पुष्पों और फलों से पूजा की और सिंह के चर्म पर आसन जमाया और सदाशिव का ध्यान किया और इस प्रकार की मूर्ति सदाशिव की अपने हृदय कमल में स्थित की—ध्यान जो रामचन्द्र ने किया—कोटि सूर्य के समान जिनकी सुन्दर कान्ति और जिनमें कोटि चन्द्रमा के समान शीतलता भोग और कामना के हेतु सर्व प्रकार के भूषण और वस्त्रों से अलंकृत पांच मुख तीन नेत्र ललाई लिये जटा प्रकाशमान डमरू, त्रिशूल, वर, अभय धारण किये चार भुजा से सुशोभित भाल में चन्द्रमा बाघम्बर ओढ़े सर्प का जनेऊ पहिने शिर में जटा के बीच गङ्गा की छटा मस्तक में त्रिवेद कण्ठ में हलाहल की श्यामता कान में कुण्डल के बदले दो सर्प लटकते हुये दोनों चरणकमल के समान विराजमान गौर शरीर भस्म रमाये अति दयावान् अनादि, अप्रमेय, अविनाशी, अद्वितीय, विद्या, हर्ष, सत्यता और धर्म के स्वरूप इसी प्रकार का ध्यान करके रामचन्द्र शिवसहस्रनाम का जप करने लगे और वन के पुष्पों और जड़ों और वायु आदि खाने से चार मास विताये शिवजी ने चाहा कि रामचन्द्र की परीक्षा लेवें सो अकस्मात् समुद्र में बड़े वेग से भयानक शब्द हुआ और जिस तरह कि प्रलय में समुद्र अपनी मर्यादा से बढ़ जाता है सो रामचन्द्र ने चारों ओर देखा पर शब्द के सिवाय और कुछ दिखाई न दिया इतने में अग्नि की ज्वाला चारों ओर इतनी फैली कि चारों ओर से उस ज्वाला से बचना कठिन हुआ रामचन्द्र ने नेत्र मूँद लिये उस समय उनको यह विचार हुआ कि यह किसी दैत्य की माया है तुरन्त धनुर्बाण हाथ में लेकर बाणों से उस ज्वाला को मारने लगे और जितने कि और शस्त्र थे सब उस ज्वाला की ओर फेंक दिये पर किसी शस्त्र ने काम न

दिया इसके सिवाय रामचन्द्र के हाथ से धनुष धरती पर गिर-कर भस्म होगया और बाण और तरकस और अन्य अस्त्र शस्त्रों की भी यही दशा हुई यह दशा देखकर रामचन्द्र मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े और यही दशा लक्ष्मण की भी हुई निदान रामचन्द्र ने शिवजी का ध्यान किया तब तो रामचन्द्र के नेत्र खुल गये और उनका सब दुःख दूर हुआ देखा कि एक महातेजोवान् जिनका अति प्रकाश युत भाल अर्धचन्द्र धारण किये नन्दी पर सवार अपने मुख्य लक्षण प्रकट किये श्रीसदाशिवजी विद्यमान हैं कोई लक्षण बाकी न रह गया जो उनमें न था वाम भाग में गिरिजा विराजमान थीं ऐसे स्वरूप को देखकर रामचन्द्र अति प्रसन्न हुये फिर विष्णु को लक्ष्मी सहित गरुड़ पर चढ़े आते देखा जो रुद्राध्याय जपते हुये चले आते थे फिर मुझे हंस पर आरूढ़ हुये रुद्रसूक्त जपते अपनी ओर आते देखा फिर रामचन्द्र ने उसी ज्वाला से मुनी-श्वरों का समूह अर्थात् ब्रह्मा अथर्व शिर से शिव की स्तुति करते निकलते देखा और फिर देखा कि दिक्पाल अपने मुख्य लक्षणों और स्त्रियों सहित हाथ जोड़े सामश्रुति पढ़ते चले आते हैं फिर गङ्गा को प्रसिद्ध नदियों सहित और समुद्र को वेद का मन्त्र पढ़ते हुये अपनी तरफ़ आते देखा इसी प्रकार शेषादि को स्त्रियों सहित और नन्दीगण और गणेश को मूषक पर चढ़े और षण्मुख को मोर पर आरूढ़ जिनके दायें बायें ब्रह्मा काल और चण्डीश और भृङ्गी गणनाथ को असंख्य गणों समेत आते देखा फिर कन्दवमुनि को त्र्यम्बक मन्त्र जपते और शिव का यश गाते और चित्ररथ गन्धर्वादि अप्सरों और हंस को अपने गणों सहित और उत्तमोत्तम ग्रहों को सूर्य चन्द्रमा समेत और अच्छे २ शिवभक्तों और इसी प्रकार सब

को अपनी ओर आते देखा ऐसी देवसभा शिव की देख जो आनन्द रामचन्द्र को प्राप्त हुआ वह कहने में नहीं आता रामचन्द्र ने शिव को ऐसे स्वरूप और सभा के साथ प्रणाम करके बड़ी स्तुति की।

अड़तीसवां अध्याय।

रामचन्द्र ने असंख्य प्रणाम करने के उपरान्त कहा कि हे सदाशिव! तुम्हारे चरणों को प्रणाम है इसीसे हमारा सब काम है यह कह फिर सदाशिव का नाम जपने लगे तब शिव ने यह लीला की कि एक सोने का रथ प्रकट हुआ जो परिपूर्ण रत्नों और मोतियों से अलंकृत था सो शिव वृषभ से उतर रथ पर आरूढ़ हुये उस समय चारों ओर से जय २ का शब्द हुआ और देवपत्नियां स्तुति करने लगीं और विष्णु और हम भी स्तुति में प्रवृत्त हुये हर प्रकार का उत्सव हुआ ऐसे समय में शिव ने रामचन्द्र की ओर देखा और रामचन्द्र को शिर झुकाये देख तुरन्त रथ से उतर रामचन्द्र को रथ पर बैठा लिया और वह धनुष् जिसको हर हाथ में लेकर प्रलय करते हैं रामचन्द्र को दिया और ब्रह्मा ने पाशुपतास्त्र और कृपा करके अपना तेज भी दिया फिर अक्षय तूणीर देकर रामचन्द्र के सब दुःख नष्ट कर दिये और शिव ने कहा कि यह बाण प्रलय करनेवाला है इसको किसी ऐसे ही बड़े कार्य पर छोड़ना व जब प्राणों का संदेह हो तब चलाना कदाचित् इसके विरुद्ध और किसी समय इसको छोड़ोगे तो जानना कि प्रलय ही हो जावेगी तुम्हारा बड़ा आदर करके हमने तुमको यह बाण कृपा किया यह बाण सब शस्त्रों से श्रेष्ठ है फिर शिव ने सब देवताओं से कहा कि तुम सब अपने २ शस्त्र रामचन्द्र को दो क्योंकि रामचन्द्र मेरे सबसे बड़े सेवक हैं और जो कि रावण बड़ा बलवान् है

इसलिये तुम हमारी आज्ञा से वानर और रीछ आदि होकर रामचन्द्र की सहायता करो इस बात में मुख्य तुम लोगों का बड़ा लाभ है सो यह आज्ञा शिव की सबने मानी और विष्णु ने नारायणशर और ब्रह्मा ने बधदण्ड और इन्द्र ने अग्निबाण इसी प्रकार सबने अपने २ बाण रामचन्द्र को दिये फिर रामचन्द्र ने शिव की स्तुति की और कहा कि समुद्र के पार मनुष्य का जाना कठिन है क्योंकि उसका चार सौ कोस का चौड़ान है कदाचित् पार लांघ भी जावे तो लङ्का का जीतना अति कठिन सिवाय इसके दैत्य बड़े बलवान् हैं उनको जीतना बड़े आश्चर्य की बात है और मुख्य करके जब कि ये सब आपके सेवक हैं फिर हम केवल दो मनुष्य और वे असंख्य क्योंकर जय पावेंगे शिव ने कहा कि हम आप तुम्हारी सहायता करेंगे उनके मरने का समय निकट ही है तुम कुछ संशय मत करो क्योंकि वे धर्म से विरुद्ध होगये हैं यही उनके शीघ्र ही मरने का हेतु है वे तुम्हारी सीता को उठा ले गये हैं ब्राह्मणों को नाना प्रकार के दुःख दिये हमने उनका पक्ष छोड़ दिया है और सब देवता जो किष्किन्धा नगरी में बन्दर का स्वरूप धार उपजे हैं उनकी सहायता से तुम समुद्र में सेतु बांधना और वेग ही समुद्र के पार जा रावण का बधकर सीता को लाना रामचन्द्र ने विनय की कि यह सब कार्य तो आपकी अनुग्रह से हो जावेंगे पर मेरी इच्छा है कि जो आप भी अपने अंश से किसी को उत्पन्न करके साथ भेजें तो मेरा सर्व कार्य पूर्ण होगा और मुझको अपनी सिद्धि पर पूरा विश्वास होगा शिवजी ने मान लिया और कहा कि रुद्र के अंश से हनुमान् का अवतार हो चुका है वे हर तरह तुम्हारा काम पूरा करेंगे तुमको कुछ श्रम न होगा वही सर्व कार्य कर लेंगे अधिक कहने से कुछ लाभ नहीं है हम हर तरह

तुम्हारा काम पूरा करेंगे हमने अभी से सब राक्षसों को मार रक्खा है तुमको केवल यश और कीर्ति दिलाना बाकी है ।

उन्तालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! फिर शिवजी ने रामचन्द्र को अपनी गीता का ज्ञान दिया और आप अन्तर्धान होगये और रामचन्द्र ने अगस्त्य के समीप जाकर यह सब वृत्तान्त कहा अगस्त्यजी अति प्रसन्न हुये और कहा कि तुम्हारा सर्वकार्य सिद्ध हुआ वास्तव में जिस पर शिवजी प्रसन्न हैं उसका दुःख दूर होना क्या कठिन है तुम संसार में पालन के निमित्त दूसरा शरीर हो और जो कि अब तुमने शिवजी से वरदान लिया तो अब तुम तुरन्त जाकर ऋष्यमूक पर्वत पर लक्ष्मी सहित स्थित होजावो थोड़े दिन वहां कालक्षेप करो वहां शिवजी वानर के स्वरूप से आकर तुमसे मिलेंगे उन्हीं के द्वारा तुम्हारे सर्व कार्य पूरे होंगे रामचन्द्र ने अङ्गीकार किया और ऋष्यमूक पर्वत पर जाकर हनुमान् से भेंट हुई उन्होंने रामचन्द्र के सब कार्य किये यहां तक कि रावण मारा गया और सीता को रामचन्द्र ने पाया इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन् ! मेरी इच्छा है कि हनुमान्जी का वृत्तान्त जन्म से बालक्रीड़ा और अन्य चरित्रों सहित सुनूं और यह भी कि हनुमान् ने रामचन्द्र की क्योंकर सहायता की ब्रह्माजी बोले कि अगले कल्प में शिवजी ने संसार के शुद्ध करनेवाली लीला करने को वानरों के कुल में अपना रूप धारण किया इस तरह कि पहिला द्वीप जो जम्बू के नाम से प्रसिद्ध है और जिसके सम्बन्धी नव खण्ड हैं उनमें से जिस खंड का नाम किम्पुरुष है वहां केशरी नामक वानरों के राजा रहते थे वे शिवजी के बड़े भक्त सत्यवादी और निष्पाप थे उनकी स्त्री महासुन्दरी पतिव्रता अञ्जनी षोडश

वर्ष की आयु को प्राप्त थी एक दिन अञ्जनी अपने सोलहों शृङ्गार किये और नाना प्रकार के उत्तम २ भूषण पहने पर्वत के एक शृङ्ग पर खड़ी हुई उस समय एक पवन का देवता समीर जिसका नाम प्रभञ्जन भी था अञ्जनी को देखकर मोहित हुआ और काम की दृष्टि से अवलोकन कर अधीर हुआ सो अपना स्वरूप छिपा अञ्जनी के शरीर में प्रवेश कर गया अञ्जनी ने अपना शरीर कुछ भारी देखा पर इसका कारण न जान उसने केवल यह जाना कि मानो सिवाय मेरे पति के और कोई दूसरा मनुष्य मेरे शरीर को स्पर्श कर रहा है यह जानकर कहा कि तुम कौन हो जो हमारे शरीर को स्पर्श करते हो हे देवता! मुझको मत छुवो पाप छोड़ प्रकट हो अपना स्वरूप मुझे दिखावो यद्यपि तुम काम से भरे हुये हो पर हमारा पतिव्रतधर्म मत छुड़ावो जो तुम न मानोगे तो तुरन्तही जलकर भस्म होजावोगे यह अञ्जनी का वाक्य सुन प्रभञ्जन भयभीत हो अपना मुख्यरूप धारणकर सामने आ खड़ा हुआ और कहा कि हम भलीभांति जानते हैं कि तुम पतिव्रत धर्म में दृढ़ हो और पापरहित हो और अच्छे चरित्र करनेवाली हो और हम इन्द्र के भाई प्रभञ्जन नामक देवता हैं संसार का उपकार करते हैं और हम संसार भर में भीतर और बाहर सब जगह जाकर पवित्र रहते हैं और हमारे स्पर्श से किसी को कुछ पाप नहीं होता हमने ब्रह्म सच्चिदानन्द के समान तुमको आकर दर्शन दिये हैं तुम कुछ संशय मत करो और सदाशिवजी के भजने में प्रवृत्त रहो उनकी इच्छा बड़ी बलवती है उसको कोई वर्णन नहीं कर सक्ता यद्यपि हम कामवश तुम्हारे शरीर के भीतर प्रवेश कर गये पर तुम मन वच कर्म से मुझे पर कुछ क्रोध मत करो मैं तुम्हारी विनती करता हूं तुमको

कुछ पाप न होगा और यह बात प्रकट है कि देवताओं की इच्छा फल दिये बिना नहीं रहती इससे तुम्हारे एक बड़ा बलवान् पुत्र शङ्कर के अंश से उत्पन्न होगा जो शिव के समान बड़ा तेजस्वी होगा और हमारे समान वेगगामी और शत्रुओं के वध में बड़ा चतुर होगा और तुम्हारे कुल का कोई कपि तुम पर व्यभिचार का दोष न रक्खेगा वह रामचन्द्र और सीता का खिलौना होगा और तुमको अति आनन्द देगा तुम्हारे तीनों प्रकार के ताप नष्ट हो जावेंगे तुम उस बालक को शिव का अवतार जानना वह रामचन्द्र के कार्य पूर्ण करेगा और यह सब शिवजी की लीला जानना यह कह पवन देवता अन्तर्धान हुये उसके थोड़े दिनों के पीछे अञ्जनी गर्भवती हुई और पवन के आशीर्वाद से शिवजी अपने सर्वांश से अञ्जनी के गर्भ में आकर स्थित हुये और अञ्जनी अपने गर्भ में शिव के अंश को समझ कर अति प्रसन्न हुई दश मास के उपरान्त अञ्जनी के पुत्र उपजा जो महा सुन्दर और तेजस्वी था तब सब देवताओं ने आकाश से आकर दुन्दुभी बजाई अप्सरों ने नाचा गन्धर्वों ने मङ्गल गीत गाये तीनों लोक में बालक के जन्म का आनन्द छा गया और संसार के कष्ट सब नष्ट हुये।

चालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! उस समय एक बड़ा उपद्रव हुआ कि जब अञ्जनी ने देखा कि पवन के वचन के अनुसार पवनपुत्र में कोई शिव का मुख्य लक्षण नहीं है और उसका स्वरूप वानर के समान है तब उसने अति दुःखी होकर उसको पर्वत के एक शिखर से नीचे डाल दिया इससे बड़ा शब्द हुआ और पर्वत खण्ड २ हो नीचे धस गया धरती कांपने लगी समुद्र सूख गया और तीनों लोक विकल

हुये और हनुमान् ने पृथ्वी पर गिर कर आकाश की ओर देखा और सूर्य के निकलने को देखकर जाना कि कोई पका हुआ फल है सो उसके निगलने की इच्छा की थी कि उसी समय उस स्थान पर राहु आकर हनुमान् के देखने से क्रोधित हुये परन्तु हनुमान् ने सूर्य के रथ को चलने से रोक लिया और राहु को तृणवत् समझ उसकी ओर भी मुख फैला दौड़े राहु तुरन्त भाग गये और हनुमान् ने बड़ा भयानक शब्द किया जिससे देवताओं के लोक में हाहाकार मच गया और देवता आश्चर्य में हुये सो इन्द्र ऐरावत हस्ती पर आरूढ़ हो वज्र हाथ में लिये उसकी ओर चले इतने में हनुमान् ने अपना स्वरूप काल के समान धारण कर सूर्य के पकड़ने को अपना मुख फैलाया पर जब इन्द्र को भी अपनी ओर आते देखा तो मुख फैला इन्द्र के पकड़ने को चला इन्द्र ने क्रोधित होकर अपने वज्र से हनुमान् को घायल किया और हनुमान् धरती पर गिर पड़े हे नारद ! यह चरित्र शिव ने इसलिये किया कि वज्र की सिद्धि जाती न रहे और समीर अपने पुत्र को मरा हुआ जान रोने लगा और शिव का स्मरण कर अति दुःख से मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा और शिव की स्तुति करने लगा उस समय सदाशिव ने आकाशवाणी में यह कहा कि तुम इतने दुःखी मत हो यह बालक हमारे अंश से उपजा है इसको मारनेवाला तीनों भुवन में कोई नहीं है और तुम भी आठ वसुओं में से हमारी देह हो तुमको उचित है कि अपनी श्वास खींचकर सब ओर से अपने अंश अर्थात् वायु को खींच लो सब देवता अपने आप दुःखी हो जावेंगे तुम भली भाँति जानते हो कि भय बिन प्रीति नहीं होती यह आज्ञा पा पवन प्रसन्न हुआ और अपने अंशों को खींच लिया फिर शिव के पास

आनन्द से बैठ गया और वायु के इकट्ठे होने से सब देवताओं के उदर फूल गये संसारभर विकल हुआ और देवता मुनि आदि ने आकर इस अकस्मात् दुःख का वर्णन किया हम सब को साथ लेकर क्षीरसागर में गये और विष्णु से सर्ववृत्तान्त कहा विष्णु ने शिव का ध्यान कर हम सबसे कहा कि इन्द्र ने बहुत बुरा कर्म किया है जिसके कारण पवन ने शिवकी प्रेरणा से ऐसा उपद्रव मचाया है देखो इन्द्र ने शिवपर वज्र चलाया है उचित है कि हम सब अब तुरन्त चलकर शिवकी शरण में जावें यह कहा और हमारे और देवताओं सहित शिवके पास गये और स्तुति और प्रणाम के उपरान्त कुछ लज्जा के साथ देवताओं का उपद्रव सुनाया शिवने हँसकर कहा कि बहुत कारणों और बहुत कार्यों के लिये हनुमान् उपजे हैं वे हमारे अंश और पवन के पुत्र हैं उनको इन्द्र ने मूर्खता से मारा है उत्तम है कि पहिले पवन को प्रसन्न करो फिर हनुमान् के पास चलकर उनको आशीर्वाद दो सो ऐसाही किया हनुमान् शिवकी कृपा-दृष्टि के पड़तेही उठ खड़े हुये उनको देखकर सब देवता और मुनि आदि और सबसे अधिक पवन प्रसन्न हुये और शिव की आज्ञा को स्मरण कर सब देवता आदि हनुमान् को वर देने लगे ।

इकतालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! सबसे पहिले विष्णु ने पवन की ओर देख हनुमान् को यह वर दिया कि तुम्हारा बालक असंख्य बलिष्ठ होकर इन्द्र आदि सकल देवताओं के कार्य के निमित्त हमारे दुःखों के समूह को दूर करे उसके ऊपर सुदर्शन चक्र भी निष्फल होवे हमने कहा हे पवन ! तुम्हारे पुत्र को कोई हमारी फांसी से भी न बांध सकेगा वह तीनों लोक में

निर्भय रहकर सबके दण्ड से बचा रहे सूर्य ने कहा कि हमसे भी अधिक इसका तेज और बल हो हम इसको शिव का अवतार समझ सब विद्या पढ़ा देंगे इन्द्र ने कहा कि इसके शरीर में वज्र भी अपना फल न करेगा और जोकि यह कुलिश अर्थात् वज्र से घायल हुआ है इससे इसका नाम हनुमान् हो अग्नि ने कहा कि इसकी देह में अग्नि अपना प्रभाव न करे यमराज बोले कि हमारा दण्ड भी इस पर निष्फल होगा वरुण बोले कि यह जल में कभी न डूबेगा निर्ऋति बोले कि इस पर हमारा शस्त्र कुछ काम न करे पवन ने कहा कि यह हमारा पुत्र हमसे भी अधिक हो कुबेर बोले कि इसके सर्वकार्य पूर्ण हों ईश अर्थात् रुद्र बोले कि यह सबसे अधिक बलवान् होगा चन्द्रमा ने कहा कि इसको तीनों लोक में अधिक आनन्द प्राप्त होगा शेष आदि जो नागों में सबसे बड़े हैं उन्होंने कहा कि इस पर कोई विष फल न करेगा और अन्य देवता बोले कि इसको हमारे शस्त्रों से कुछ भय न होगा मुनीश्वर बोले कि यह बालक ऊर्ध्वरेता हो और लोहे के समान इसका शरीर अति दृढ़ हो किसी के हाथ से न मरेगा यह शिव का अवतार है रामचन्द्र के कार्यों को पूरा कर उनके दूत के नाम से प्रसिद्ध होगा और उनके दुःख दूर करेगा यह सुनकर विष्णु और हम सबोंने हनुमान् को अपने शरीर से लगा लिया और सबने पवन के ऐसे बालक के पाने के कारण बड़ी प्रशंसा की और फिर सबने हनुमान्‌जी की स्तुति की तब शिवने कहा कि रामचन्द्र के अवतार के लिये हमने कपि का अवतार लिया है सो रामचन्द्र के कार्य कर उनका प्रेम हम सबको दिखा देवेंगे कि रामचन्द्र हमको कितने प्यारे हैं हमारे इस प्रकार के अवतार धारण करने से चाहे हमको कोई हँसे या कुछ कहे पर हमको

अपने भक्तों के कार्य करने अवश्य हैं फिर शिव ने पवन से कहा कि हम प्रतिदिन तुम्हारे पुत्र की रक्षा करेंगे उस पर कुछ कष्ट न होगा और हमारे त्रिशूल से भी उसकी मृत्यु न होगी यह लीलाकर शिव और सब देवता अन्तर्धान हो गये।

बयालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! सब देवताओं के अन्तर्धान होने के अनन्तर पवन हनुमान् को गोद में लेकर अञ्जनी के पास गये और हनुमान् को अञ्जनी की गोद में देकर सब कथा कह अन्तर्धान हुये अञ्जनी ने हनुमान् को अपने स्तनों से दूध पिलाया और केशरी ने भी हनुमान् को देखकर बहुत आनन्द मनाया सो हनुमान् के खेल कूद को देखकर दोनों प्रतिदिन प्रसन्न रहा करते थोड़े दिनों में हनुमान् इतने बलिष्ठ हुये कि पृथ्वी से उड़ कर आकाश में जाकर फिर धरती में कूद पड़ते थे कभी पवन और कभी सूर्य के पास जाकर खेल करते थे और सितारों को खिलौना समझ पकड़ लेते थे तब पवन मना करता और वे चन्द्रमा को चटुवा के समान चाटते और नट के समान आकाश में नाचते कभी गङ्गा जो आकाश में हैं उसमें स्नानकर अपनी पूंछ फटकारते और वह धरती तक आजाती और पर्वतों के तृण उड़जाते थे ऐसे चरित्र हनुमान् के देखकर देवता और मुनि अतिआश्चर्य में होते थे एक दिन हनुमान् मुनियोंके यहां गये पर किसीने उनको न पहिंचाना और उनके पराक्रमके खेल देख कहने लगे कि यह कौन और किसका पुत्र है अभी तो यह दशा है आगे न जानिये क्या करेगा इससे उचित है कि इसको सब मिल शाप दें कि भय जाता रहे ऐसा विपरीत विचार मन में लाकर मुनियों ने हनुमान् को यह शाप दिया कि हे वानरबालक, मूर्ख! अपने बलपर इतना अहंकारी है कि उचित और अनु-

चित को विचार नहीं करता और तू प्रेतों और भूतों के समान कार्य करता है हमारे स्थानों में आकर उपद्रव करता है तेरी बुद्धि जाती रही इससे तुम्हारा बल तुमको विस्मरण होजावे यह शाप हनुमान् ने सुना और कुछ विचार न किया इतने में आकाशवाणी हुई हे मुनियो ! जो शाप तुमने हनुमान् को दिया यह बात तुमने अच्छी नहीं की यह हनुमान् शिवका अवतार है तुम अपने तप का अहंकार करके भूल गये यह रामचन्द्र के निमित्त अवतार हुआ है अब विष्णु के कार्य कौन करेगा ? इससे तुम अपने शाप को खण्डन करो यह सुन सब मुनीश्वरों ने शिव का अवतार पहिंचाना और कहा हे शिव के अवतार, हनुमान् ! हमारे अपराध क्षमा करो सो अब हम अपना शाप इस तरह खण्डन करते हैं कि जब तक तुमको रामचन्द्र न मिलेंगे तबतक तुम इस अपने बल को भूले रहोगे यह कहा और फिर बोले कि अब तुम सूर्य के पास जाकर विद्या सीखो सो हनुमान् ने माता पिता के समीप जा यह सब चरित्र कहा और माता पिता की आज्ञा ले सूर्य के पास जा विद्या पढ़ने लगे सो थोड़े दिनों में सब विद्या सीख गये फिर सूर्य से कहा कि जो उचित हो वह हमसे गुरुदक्षिणा मांग लो सूर्य ने हनुमान् को शिवका अवतार जान स्तुति के अनन्तर कहा कि हे हनुमान् ! हम तुम्हारा मुख्य वृत्तान्त जानते हैं तुम शिवका अवतार हो तुमने रामचन्द्र के लिये अवतार धारण किया है सो तुम पम्पापुर में जाकर बालि और सुकण्ठ जो दोनों भाई हैं उनके पास रहो और सुग्रीव जो हमारा पुत्र है उसका पक्ष करना वहीं तुमको रामचन्द्र आकर मिलेंगे हमको यही गुरुदक्षिणा चाहिये यह सुन हनुमान् ने माता पिता के पास आकर यह सब वृत्तान्त कहा वह सुन प्रसन्न हुये और कहा कि तुम

शिवअवतार होकर हमारे घर उपजे हमारे धन्य भाग्य हैं हम पर कृपा रखना कि हम पर माया अपना बल न करे अब तुम जाकर अपने गुरु की आज्ञा पालन करो क्योंकि जिस कार्य को उपजे हो उसे पूर्ण करना उचित है यह आज्ञा माता पिता से पा हनुमान् अतिप्रसन्न हुये।

तैंतालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजीने कहा कि हनुमान् माता पिता की आज्ञा पा उनको प्रणाम कर पम्पापुर को गये चलने में कुछ दुःख न हुआ और गङ्गाको सुगमता पूर्वक उल्लंघन कर और चित्रकूट को प्रणाम कर रेवा और नर्मदा से पार हो अगस्त्य मुनि के समीप जा उनकी संगति की और उन्हीं से रामचन्द्र की भक्ति की आज्ञा पाकर पम्पापुर पहुँचे और घर के विवाद से सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर चलेगये जहां हनुमान् को भी जाना पड़ा जब रामचन्द्र और लक्ष्मण सीता के वियोग में दुःखी होकर उनके निकट पहुँचे तो हनुमान् अगवानी कर उनको ऋष्यमूक में लाये और सुग्रीव के साथ मित्रता कराय हर प्रकार से रामचन्द्र को प्रसन्न किया और रामचन्द्र के हाथ से बालि का वध कराया और सीता को ढूंढ़ने लगे और समुद्र से पार उतर लङ्का में पहुँचे और बड़ी लीला कर रामचन्द्र को सीता का हाल सुनाकर धैर्य दिया और सीता से बिदा होकर रावण की पुष्पवाटिका को उजाड़ डाला और सब दैत्यों को मार अक्षयकुमार का भी बध किया और अति सुगमता से लङ्का को जलाया जिसमें विष्णु के भक्तों के घर बच गये और रावण के गर्व को तोड़ समुद्र से उतर वानरों के यूथों से सब वृत्तान्त वर्णन किया और मार्ग में उद्यानों को उजाड़ते रामचन्द्र के समीप पहुँचे और सीता की चूड़ामणि दी रामचन्द्र ने यह दशा देख कहा कि हे हनुमन्!

शिव के अवतार तुम हर प्रकार हमारे हितैषी हो हमारे अधीन हो तुमने हमारे दुःख दूर किये खेद है कि हमने अज्ञान अवस्था में तुमको अपना दूत बनाया यह अपराध क्षमा करना यह दशा देख सबको ज्ञान हुआ और सबने हनुमान् को प्रणाम किया हनुमान् ने जाना कि यह सब हमको शिव का अवतार समझ लेंगे तो फिर आज्ञा देने में ढील करेंगे तो कोई कार्य न होगा रघुवीर का कार्य क्योंकर पूरा होगा सो ऐसी माया की कि सबको यह बात भूल गई उनको इतना स्मरण रहा कि यह बड़े बलिष्ठ हैं फिर रामचन्द्र ने हनुमान् को अपने अङ्ग से लगा लिया और लङ्का जाने की तय्यारी हो गई और समुद्र के तट पर पहुँचे समुद्र को देख आश्चर्य में हुये पर किसी को श्रम करना न पड़ा महावीर ने सेतु बांध दिया उसी स्थान पर रामचन्द्र ने शिव का लिङ्ग स्थापित किया और उसका नाम रामेश्वर रक्खा उसी सेतु के मार्ग से श्रीरामजी ने अपनी सेना सहित लांघ कर रावण पर चढ़ाई की दोनों ओर बड़ा युद्ध हुआ हनुमान् ने अकेले बहुतसी दैत्यसेना मार रामचन्द्र की सेना को बचाया जब लक्ष्मण शक्ति से घायल हुये तब रामचन्द्र भी शोक से दुःखी हुये जो कि रात के बीतने पर लक्ष्मण के जीने में सन्देह था सो तुरन्त हनुमान् जाकर दैत्यों को जीत ओष-धियों का पर्वत उठा लाये और लक्ष्मण को जिला दिया और इतनी रामचन्द्र की सहायता की कि रावण का सब तेज नष्ट हो गया और उसके कुल परिवार पुत्र कलत्रों सहित रावण का बध किया जब युद्धस्थल से महिरावण राम और लक्ष्मण को पकड़ ले गया तब रामचन्द्र ने हनुमान् का स्मरण किया सो हनुमान् ने जाकर महिरावण की भुजा उखाड़ी फिर सबको जीत रामचन्द्र सीता को ले अयोध्या में आये इसी प्रकार महावीरजी

ने बहुत से चरित्र कर दैत्यों का बध किया यह चरित्र जो कोई सुने सुनावेगा वह लोक परलोक में बड़ा आनन्द पावेगा ।

चवालीसवां अध्याय ।

वेश्यानाथ अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब हम वेश्यानाथ अवतार का बखान करते हैं नन्दीग्राम जो संसार में प्रसिद्ध है वहां नन्दा नामी वेश्या जो अति सुन्दरी अप्सराओं से भी अधिक रहती थी गान विद्या में अति प्रवीण शिव की भक्ति में अति चतुर थी और प्रति दिन भस्म धारती और भूषणों के बदले रुद्राक्ष पहनती और शिव का यश गाती उसके घर में एक बन्दर और एक कुत्ता था उसने उनके शरीर में भी रुद्राक्ष पहनाया और दोनों को शिव के मन्दिर में नचाती आप ताल देकर गाती इसी प्रकार वह नित्यप्रति उत्सव रचती जब कुछ समय बीता तो शिव प्रसन्न हुए और वेश्यानाथ का तनुधार उसकी परीक्षा के निमित्त त्रिपुण्ड्र मस्तक में धारा और रुद्राक्ष भूषणों के बदले पहिने निदान हर प्रकार शिव के वस्त्राभूषणों से अपने को सजाया और शिव २ कहते हाथ में कङ्कण पहन कर महानन्दा के घर आये ऐसे वस्त्र देख महानन्दा ने बड़े आदर से वेश्यानाथ को ठहराया और हाथ में जड़ाऊ कङ्कण देख लेने की इच्छा की और महालोभ से कहने लगी कि तुम्हारे हाथ के कङ्कण को देखकर हमारी बुद्धि जाती रही है यह तुम्हारा कङ्कण स्त्रियों के योग्य है वेश्यानाथ ने कहा कि तुम इसका मोल क्या दोगी महानन्दा ने कहा कि हमारे कुल में व्यभिचार पाप नहीं है वरन यही कुलधर्म है जो तुम यह कङ्कण हमको दोगे तो मैं तीन रात तक तुम्हारी स्त्री होकर बिहरूंगी यह सुन वेश्यानाथ बहुत हँसकर बोले कि जो तुमने कहा उसको हमने

ठीक समझा यह कङ्कण लो तुम तीन दिन तक हमारी स्त्री हो चुकी हमारा हृदय तीन बार छुवो कि तुम्हारी प्रतिज्ञा पक्की समझी जावे महानन्दा ने माना और तुरन्त वह कङ्कण दे दिया फिर वेश्यानाथ ने बड़ा आनन्द मान अपना सुवर्ण का लिङ्ग जो रत्नों से जड़ा था महानन्दा को अपनी स्त्री समझ सौंपा और कहा कि इसको रक्षापूर्वक रखना मुझको यह प्राण से भी अधिक प्रिय है इसके न होने से जीने की आशा नहीं है सो महानन्दा ने वह लिङ्ग ले लिया और शिव-मन्दिर के भीतर उसको स्थापित कर दिया फिर अपने घर में वेश्यानाथ के साथ शृङ्गारकर आधीरात तक बातें करती रही फिर शिव ने यह चरित्र किया कि अकस्मात् अग्नि उपजकर शिवमन्दिर में लग गई वायु वेग से चली और वह लिङ्ग की मूर्ति जो वेश्यानाथ ने सौंपी थी जलगई पर कुत्ता और बन्दर दोनों बचे रहे यह दशा देख दोनों महानन्दा और वेश्यानाथ अति दुःखी हुये और महानन्दा कुछ भेद न जानकर रोने लगी और वेश्यानाथ ने भी रोकर कहा कि हे वेश्या ! अब हम जीते न रहेंगे क्योंकि मैं पहिले कहचुका हूं कि जब यह मूर्ति न रहेगी तो मैं न जीऊंगा हमारा स्वामी जो जल गया तो हमारे जीने पर धिक्कार है हमारे लिए चिता बनाओ जो ब्रह्मा विष्णु भी आकर हमको निषेध करेंगे तौ भी हम न मानेंगे ऐसी हठ को देख महानन्दा ने अति लज्जापूर्वक रोते पीटते चिता बनाई और वेश्यानाथ सबके देखते २ उस चिता में आग जला उसमें बैठ गये तब महानन्दा ने सबको बुलाकर कहा कि मैं कङ्कण लेकर तीन दिन के निमित्त इसकी स्त्री हुई थी इस समय में हमारा यह पति जला जाता है मैं भी अपने धर्म के स्थित रखने के लिये इसके साथ सती हूँगी यह सुन उसके बन्धुओं

ने मना किया पर उसने कुछ न सुना और अपना धन ब्राह्मणों को दे शिवका ध्यानकर तीन परिक्रमा करने के अनन्तर चाहा कि चिता में प्रवेश करूं कि दीनदयालु शिवजी अपने मुख्य रूप से प्रकट हुये और रोका और अपनी कृपादृष्टि से उसकी ओर देख उसके पाप नष्ट कर दिये यह रूप देख महानन्दा आश्चर्य में हुई शिव हँसे और हाथ पकड़ कहा कि तुम कुछ आश्चर्य मत करो हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त यह लीला की है तुम्हारा ऐसा भाव देख हम प्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह वर लो महानन्दा बोली मुझे तीनों लोक के आनन्द से कुछ काम नहीं केवल अपने चरणों की भक्ति कृपा कर कुल परिवार सहित मोक्ष दे अपने लोक में स्थान दीजिये कि आवागमन से छूटूं यह सुन शिवने गणों का स्मरण किया वह विमान ले आये शिवने अपने सामने सब समेत महानन्दा को विमान पर आरूढ़ कराया और बड़े उत्सव से अपने लोक में भेज दिया वहां वे सब गिरिजा की सेवा करने लगे यह पवित्र कथा सब पापों को दूर करनेवाली और दोनों लोक का आनन्द देनेवाली है और हर प्रकार की चिन्ता दूर कर अतिआनन्द कृपा करती है।

पैंतालीसवां अध्याय।

द्विजेश अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम द्विजेश अवतार का वर्णन करते हैं राजा भद्रायुष जिसके लिये शिव ने ऋषभ का अवतार लेकर उसकी रक्षा और पालन किया और जिसका हम वर्णन कर चुके हैं सो भद्रायुष के धर्म की परीक्षा के निमित्त दूसरी बेर शिव ने द्विजेश अवतार धारण किया शिव अहंकार के भङ्ग करनेवाले और भक्तों को मुक्ति देते हैं वे नाना

प्रकार के रूप धारणकर भक्तों को पालते और शत्रुओं के वध का कारण होते हैं शिवके समान तीनों लोक में और कोई स्वामी नहीं वेद और पुराण सब उनको सबसे श्रेष्ठ कहते हैं उन्हीं के अधीन तीनों लोक और देवता और दैत्यादि सब हैं हे नारद! राजा भद्रायुष अति प्रतापवान् होकर शिव की पूजा में अति विख्यात हुआ उसने अपने आपको बन्धि से छुड़ा लिया और ऋषभ से वर पा सब शत्रुओं को जीत आप राज्य करने लगा और राजा चन्द्राङ्गद की कन्या कीर्तिमालिनी के साथ उसका विवाह हुआ एक दिन भद्रायुष अहेर खेलने के लिये रानी सहित वन में गये और वसन्त ऋतुभर वहां रुचिपूर्वक विहार किया ऐसे समय में शिव ने चाहा कि राजा की परीक्षा करें और फिर शिव ने स्त्री सहित ब्राह्मण का स्वरूप धार एक माया का सिंह रचा जो ब्राह्मण और ब्राह्मणी पर लपका और वे दोनों भयभीत होकर भागे और राजा भद्रायुष को सुनाय ज़ोर से रोने लगे और भद्रायुष के पास गिरते पड़ते आकर कहा कि हे राजन्! हमको बचा लो हम तेरी शरण में आये हैं यह सिंह जो चला आता है हमारे भोजन की इच्छा रखता है इससे हमको बचावो और यह हमको खाने न पावे यह सुन राजा भद्रायुष ने अपना धनुष उठा लिया अभी तीर चलाया भी न था कि सिंह ने ब्राह्मण की स्त्री को पकड़ लिया स्त्री हाय २ करके बहुत रोई और सिंह ने निर्भय होकर उसको खा लिया यद्यपि राजा ने अपने बहुत से बाण उस पर मारे पर उसे कुछ दुःख न हुआ और वहां से निकल वन को गया ब्राह्मण ने संसारी रीति के अनुसार बड़ा खेद किया और देर तक रोता रहा और राजा भद्रायुष से कहा कि हे राजन्! तेरे सब बाण और शस्त्र निष्फल हुये तुझे धिक्कार है द्वादश सहस्र हस्ती का

बल क्या हुआ और तेरा तेज जलकर भस्म होगया वह तेरा खड्ग और शंख और कपाल कहां चला गया और तेरा भीष्म प्रभाव क्या हुआ और तेरा विद्याबल कहां गया क्या उनमें से कुछ भी नहीं है न कुछ तेरे पास उपाय है क्या कोई भी युक्ति तेरे पास सिंह के निवारण की न थी वेदों में लिखा है कि क्षत्रिय ब्राह्मणों की रक्षा करें जब अपना कुल धर्म न रहा तो वह मनुष्य क्या जीता है यह सुन राजा बहुत पछिताया और बहुत शोच विचार कर दीन होगया और कहा वास्तव में हमारा सब बल नष्ट होगया हमारे भाग्य लौट गये मुझे बड़ा पाप हुआ हमारा कुलधर्म भी जाता रहा मैं जानता हूं कि मेरा राज्य नष्ट होगया इससे उचित है कि इस ब्राह्मण को प्रसन्न करूं चाहे इस इच्छा में प्राण भी जावे यह विचार राजा ने ब्राह्मण के चरण पकड़ कहा कि अब तुम दुःख मत करो मुझ पर अनुग्रह कर जो इच्छा हो मुझ से लेलो मैं अपना सर्व राज्य स्त्री तुमको अर्पण करता हूं और मैं भी सेवा के निमित्त उद्यत हूं ब्राह्मण ने कहा कि अन्ध को दर्पण और भीख मांगनेवाले को घर और मूर्ख को पुस्तक और स्त्री रहित पुरुष को धन और द्रव्य से क्या प्रयोजन है जब मेरी स्त्री नहीं है तो मैं राज्य से क्या प्रयोजन रखता हूं मुझको अपनी स्त्री दो और कुछ नहीं चाहता हूं भद्रायुष ने कहा कि यह कौन धर्म है तुमने इसको कहां से सीखा क्या तुम्हारे गुरु ने यही धर्म तुम्हें बताया तुम नहीं जानते कि परस्त्री की संगति दोनों लोक में तीनों ताप देती है संसार में सब वस्तुओं के दाता हैं कइयों ने अपने शरीर के देने में भी शङ्का नहीं की पर स्त्री के देनेवाले को नहीं देखा क्योंकि परस्त्री के साथ भोग करने से जो पाप होता है वह किसी उपाय से नहीं जाता ब्राह्मण ने कहा कि हम ब्राह्मण

के बध से जो पाप होता है उसको भी दूर करसक्ते हैं परस्त्री के साथ भोग करना क्या ऐसा बड़ा पाप है इससे जो तुमको नरक से बचने की इच्छा हो तो अपनी स्त्री हमको दो यह वचन सुन राजा ने मनमें अति भय से विचार किया कि रक्षा न करने के बराबर राजा के लिये दूसरा बड़ा पाप नहीं है इस लिये स्त्री के दान से दूसरे बड़े पाप से बचना उचित है स्त्री के दान के उपरान्त मैं भी अग्नि में जल जाऊंगा यह शोच तुरन्त ही अपनी स्त्री ब्राह्मण को दे दी और आप शुद्ध होकर देवताओं को प्रणाम किया और शिवजी को स्मरण कर शिवजी का नाम जपा और अग्नि की प्रदक्षिणाकर चाहा कि उसके भीतर गिरूं तो तुरन्तही शिवजी अपने मुख्य लक्षणों से प्रकट हुये जिनको देख भद्रायुष अति प्रसन्न हुआ आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई विष्णु और हम देवताओं सहित वहां पहुँचे राजा ने स्तुति की शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि वर मांगो हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त ब्राह्मण का रूप धारा वह स्त्री जिसको सिंह ने खाया गिरिजा है हमने माया का सिंह रचा था अब तुम कुछ सन्देह मत करो तुम हमारे परमभक्त हो भद्रायुष बोले कि हमको तो यही बड़ा वर मिला है कि तुमने प्रकट हो दर्शन दिये पर यह वर मांगता हूं कि मुझको अपने कुल सहित अपना गण बना लो कि तुम्हारी सेवा में प्रवृत्त रहूं इसी शरीर से हम आपके लोक को चलें रानी ने कहा कि मेरी यह इच्छा है कि मेरे माता पिता भी आपकी सेवा में पहुँचें शिवजी ने माना फिर यह वर दे शिव अन्तर्धान हुये और राजा भद्रायुष बहुत दिनों तक राज्य कर उसी शरीर से अपनी स्त्री माता पिता और पुत्र सहित शिव-लोक में पहुँचा इसी प्रकार यही बात राजा चन्द्राङ्गद को स्त्री

सहित प्राप्त हुई जो इस चरित्र को पढ़े व सुनेगा वह शिव के लोक में पहुँचेगा अठहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ।

छियालीसवां अध्याय।

जितनाथ अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम जितनाथ अवतार का वर्णन करते हैं अर्बुदाचल पर्वत में एक भील अपनी स्त्री सहित रहता वह शिवजी का बड़ा भक्त था एक दिन वह भील जीविका के निमित्त कहीं बाहर चला गया स्त्री को घर में छोड़। शिवजी ने परीक्षा के निमित्त यती का रूप धारा और संध्या को भील के घर में गये तब भील भी आया और यती को देख प्रसन्न हुआ और प्रणाम के उपरान्त पूजा की तब यती ने कहा कि हे भील! कोई अच्छा स्थान हमारे रहने को दो हम केवल रातभर रहकर चले जावेंगे भील ने कहा कि हमारा घर बहुत तङ्ग है सिवाय दो मनुष्यों के तीसरा नहीं रहसक्ता यह सुन यती चलने लगे भील की स्त्री ने भील से कहा कि यती के ठहरने के लिये स्थान दो नहीं तो बड़ा अधर्म होगा तुम दोनों घर के भीतर जाकर रहो मैं बाहर जारहूंगी तब भील ने कहा कि स्त्री का बाहर रहना और यती का फिर जाना दोनों बुरी बातें हैं उचित यह है कि मेरी स्त्री और यती घर के भीतर रहैं मैं बाहर अपना निर्वाह कर लूंगा सो भील ने ऐसा ही किया कि दोनों को घर में रख आप बाहर रहा और शस्त्र बांध रात भर घर के चारों ओर पहरा देता रहा उस रात्रि को एक महाभया-नक सिंह ने अपने और सिंहों समेत आकर भील को घेर लिया भील ने उनके साथ युद्ध कर बहुतेरों को मार डाला निदान सिंहों ने भील को मार उसका सब मांस खालिया केवल हड्डियां पड़ी रहगईं जिनको देख यती ने बड़ा खेद किया भीलनी ने

कहा कि तुम कुछ चिन्ता मत करो वह बहुत धन्य है जिसने ऐसी मृत्यु पाई शिवजी अति प्रसन्न होंगे मैं भी चिता लगाकर सती हूंगी क्योंकि स्त्रियों का यही धर्म है सो भीलनी चिता बना अपने पति की हड्डियों के साथ अग्नि में बैठ गई तब सब देवता वहां आये और यती ने भी अपना स्वरूप मुख्य लक्षणों समेत बदला और कहा कि तुम धन्य हो २ हम प्रसन्न हैं जो चाहो वर लो भील की स्त्री प्रसन्नता से मूर्च्छित हुई उसकी जिह्वा से कुछ न निकला तब शिवजी बोले कि हे भीलनी! वर मांग ले फिर कहा कि हमारा यती का स्वरूप हंस होकर तुम दोनों की भेंट करा देगा तुम दोनों दूसरा शरीर धारण कर बड़ा आनन्द पावोगे इस तरह कि तेरा पति मगधदेश में राजा वीरसेन का पुत्र हो नल के नामसे प्रसिद्ध होगा वह पृथ्वीभर का स्वामी होगा और तुम राजा भीम जो मद्रदेश का स्वामी है उसकी पुत्री होकर दमयन्ती के नाम से विख्यात होगी तुम दोनों परस्पर विवाह कर संसारी भोग भोगकर अन्त में मुक्ति पावोगे यह कह शिवजी तुरन्त अन्तर्धान होगये और भील राजा नल होकर तीनों लोक में प्रसिद्ध हुआ और भीलनी दमयन्ती हुई उसी यती के रूप हंस ने शरीर धार नल का विवाह दमयन्ती से करा दिया उनके समान किसी ने राज्य नहीं किया दोनों बड़े शिव-भक्त हुये उनसे इन्द्रसेन राजा हुआ इन्द्रसेन से चन्द्राङ्गद जो शिव का बड़ा भक्त था उसकी स्त्री का नाम सीमन्ती था वह अपने पति से भी अधिक शिव की भक्ति करती और सोमवार को व्रत रख शिव को पूजती और ब्राह्मणों को स्त्री सहित शिव और पार्वती जान बहुत प्रेम से सेवन करती यह कथा प्रसिद्ध है यह यती का अवतार अति पवित्र है और हंस अवतार का चरित्र भी बड़ा शुद्ध है जो इन दोनों अवतारों की कथा सुनेगा

अथवा पढ़ेगा उसको दोनों लोक में आनन्द मिलकर मुक्ति होगी उन्नासीवां अवतार पूर्ण हुआ।

सैंतालीसवां अध्याय।

कृष्णदर्शन अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम कृष्णदर्शन अवतार का वर्णन करते हैं सूर्य के पुत्र मनु के इक्ष्वाकु आदि दश पुत्र उपजे नवां पुत्र मनु का जिसका नाम वह्लिक था वह विद्या पढ़ने को गुरु के यहां गया और बहुत समय तक गुरु के यहां रह विद्या पढ़ता रहा इतने में वह्लिक के न होने पर घरमें इक्ष्वाकु आदि सब भाइयों ने जुदा २ होकर अपने पिता के धन को बांट लिया पर वह्लिक का कुछ भाग न लगाया जब वह्लिक घर आया और सबको अपना २ भाग लिये देखा तो उनसे पूछा कि हमारे भाग में क्या २ आया है क्योंकि हम भी भाग पाने के योग्य हैं भाइयों ने उत्तर दिया कि बांटने के समय तुम्हारा भाग हम सब भूल गये अब भाग नहीं मिलसक्ता हमने पिता को तुम्हारे भाग में दिया उन्हीं से ले लो यह सुनकर वह्लिक ने अति आश्चर्यपूर्वक अपने पिता से कहा कि भाइयों ने हमें भाग न दिया कहा कि अपने पिता को अपने भाग में लो इससे मैं आपकेपास आयाहूं यह सुन मुनि अचम्भा कर चुप होरहे और अपने पुत्र को धर्म में दृढ़ समझ शिवजी का ध्यान कर कहा कि उनके वचन दुःखदायक हैं उनको तुम मत मानो मैं कोई ऐसी वस्तु नहीं हूं कि जिससे तुमको आनन्द हो या तुम्हारे खाने पीने में आऊं उन्होंने तुमसे बड़ा छल किया जो मुझे तुम्हारे हिस्से में दिया पर जो उन्होंने मुझे तुम्हारे भाग में दिया तो बहुत अच्छा हम सदाशिवजी का ध्यानकर तुमको उपाय बताते हैं कि अङ्गिरस मुनि एक बड़ा भारी यज्ञ कर रहे

हैं उनको छःदिन से यज्ञ की युक्ति भूल गई है जिससे यज्ञ पूरा नहीं होता इसलिये तुम वहां जाकर उनको उपदेश करो वे तुम्हारे उपदेश से यज्ञ पूर्णकर जो धन कि यज्ञ से शेष रहेगा वह सब तुमको देवेंगे सो वह्लिकने ऐसाही किया और अङ्गिरसमुनि का यज्ञ दो सूक्त पढ़कर पूर्ण कराया अङ्गिरस शेष धन वह्लिक को दे आप वैकुण्ठ को चलेगये पर जब वह्लिक उस धन को लेने लगे तो शिवजी ने यह चरित्र किया कि अति उत्तम सुन्दरस्वरूप धारे कृष्णदर्शन के नाम से प्रसिद्ध हो परीक्षा के निमित्त वह्लिक के पास आ कहा कि तुम कौन मनुष्य बुद्धिहीन हो हमारा धन लेते हो तुमको किसने भेजा है सच सच कहो वह्लिक बोले कि अपने पिता की आज्ञा से हम यहां आये हैं वैकुण्ठ के जाने के समय अङ्गिरस ने शेष धन हमको दिया है यह सुन कृष्णदर्शन ने बड़ा झगड़ा किया कहा कि तुम्हारा पिता अति धर्मवान् है तुम उसके पास जाकर पूछो जो वह कहेगा हम मानेंगे सो वह्लिकने फिर मुनिके पास जाकर कहा कि हमको ब्राह्मण धन देकर आप वैकुण्ठवास हुआ पर एक मनुष्य उत्तर से आकर वह धन हमको लेने नहीं देता वह कहता है कि यह धन मेरा है तुझे किसने दिया है जब मैंने आपका नाम बताया तो कहा कि उनके पास जाकर पूछो जो कहेंगे तो मानूंगा तब मुनि ने आश्चर्य कर शिव का ध्यान किया और शिवजी की लीला वह्लिक को बताई फिर वह्लिक से कहा कि वह सदाशिवजी हैं जब यज्ञ की शेष सामग्री रहजाती है तो वह सदाशिवजीकी कही जाती है वे रूप धार तुम पर अनुग्रह करने को आये हैं तुम जाकर तुरन्त उनकी सेवा कर उनको प्रसन्न करो वे सबके स्वामी हैं जिनका ब्रह्मा विष्णु भी ध्यान करते और सब देवता मुनि और सिद्ध चारण सेवा से मनोरथ पाते

हैं यह कह मुनि अपने वह्निक पुत्र सहित तुरन्त वहां गये और वह्निक ने हाथ जोड़ विनती की कि हमारे पिता ने तुमको जान लिया कि तुम सदाशिव हो तीनोंलोक सब तुम्हारे हैं मैंने आप को नहीं जाना और तुमसे तकरार की हमारे अपराध दूर करो और हम पर प्रसन्न होकर सब धन ले लो फिर श्राद्धदेव मुनि वह्निक के पिता ने हाथ जोड़ बहुत स्तुति की इतने में विष्णु ने हम और सब देवताओं समेत आकर शिवजी की स्तुति की और ऐसे स्वरूप को देख सबने बड़ा आनन्द मान बड़ा उत्सव किया फिर उसी कृष्णदर्शन शिव अवतार ने वह्निक से कहा कि हम तुम्हारी सत्यता देखकर बहुत प्रसन्न हुये हमने सब धन तुमको दे दिया तुम इसको लो और तुम अपने पिता सहित मुक्ति पावोगे तुमको बड़ा ज्ञान प्राप्त होगा यह कह अन्तर्धान हुये और सब देवता आदि भी अपने २ स्थानों को चले गये और श्राद्धदेव मुनि वह्निक सहित अपने स्थान में पहुँचे सो वह्निक चक्रवर्ती राजा हुआ और उसने शिवजी का बड़ा ही तप किया और संसार में सर्व प्रकार के भोग भोगकर अन्त में शिवपुरी को पहुँचा और गणों में गिना जाकर शिवजी की सेवा में प्रवृत्त रहा जो इस चरित्र को सुनेगा वा पढ़ेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा ।

अड़तालीसवां अध्याय ।

भिक्षुनाथ अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अब हम भिक्षुनाथ अवतार का वर्णन करते हैं पूर्व में एक राजा सत्यरथ नाम शिवजी का बड़ा भक्त हुआ वह विदर्भ देश का राज्य करता सो एक समय तक वह विदर्भ देश में न्यायके साथ राज्य करता रहा एक दिन समय पाकर राजा शाल्व ने सत्यरथ पर धावा करके उसके देश

को घेर लिया और दोनों राजों में बड़ा युद्ध हुआ सो बहुत युद्ध करने के उपरान्त सत्यरथ परास्त हुआ मारा गया रात्रि के समय उसकी रानी युक्ति कर घर से बाहर भाग गई और पूर्व की ओर शिव और गिरिजा का ध्यान कर चली वह गर्भ-वती थी बहुत मार्ग चलने से थक कर तालाव के पास जा एक वृक्ष के नीचे बैठ गई भाग्य से शुभ लग्न में उसी दिन उसके पुत्र उपजा और रानी बहुत प्यासी होकर उस तालाव में पानी पीने गई अभी पानी न पिया था कि एक ग्राह ने उसको निगल लिया और नया उपजा हुआ बालक भूख प्यास से रोने लगा शिवजी को उस बालक पर बड़ी दया उपजी और ऐसी कृपा की कि तुरन्त एक ब्राह्मण की स्त्री बालक के समीप पहुँची और उसके साथ भी एक बालक एक वर्ष की आयु का था वह विधवा निर्धन स्त्री भिक्षाटन कर कालक्षेप करती उसने आकर लड़का पड़ा हुआ देखा और बड़ा अचरजकर कहा कि यह किसका बालक है कौन डाल गया है कोई स्त्री पुरुष यहां दिखाई नहीं देता जिससे इस बालक का हाल पूछूँ उचित है कि मैं इस बालक को उठाकर अपने पुत्र के समान पालूँ पर इसके कुल के हाल पूछने विना इसका उठाना उचित नहीं है ब्राह्मणी को ऐसी चिन्ता में देख शिवजी प्रसन्न हुये और आप भिक्षुक रूप से प्रकट हो स्त्री से कहा कि तुम कुछ संशय मत करो इस बालक का पालन करो इसके पालने से तुमको शीघ्र ही सब प्रकार का आनन्द और भोग प्राप्त होगा स्त्री ने प्रसन्न होकर कहा तुम्हारी आज्ञा से मैं इसे पालती हूं पर आशा रखती हूं कि आप इसके जन्म और कर्म आदि का वृत्तान्त सुना दीजिये मैं जानती हूं कि तुम निस्सन्देह शिव हो और यह बालक पूर्वजन्म में तुम्हारा भक्त रहा है कोई कर्म इससे करते

नहीं बना इससे इसकी यह गति हुई यह सुन शिव स्त्री से अति प्रसन्न हुये और उसको अपना भक्त जान कहा कि यह विदर्भ देश के राजा सत्यरथ का पुत्र है पूर्वजन्म के कर्म से इसने ऐसा दुःख पाया है राजा शाल्व ने इसके पिता को मार-डाला तब इसकी माता वन में भाग आई सो इस बालक के उत्पन्न होनेके उपरान्त ग्राह ने पानी पीते उसे खाडाला स्त्री ने आश्चर्यकर शिवजी से पूछा कि इस बालक के पूर्वजन्म का वृत्तान्त वर्णन करो कि क्यों इसको ऐसा दुःख प्राप्त हुआ और हमारा यह बालक और हम दरिद्र अवस्था में हैं शिवरूपी ब्राह्मण बोले कि पूर्वजन्म में इसका पिता मारडव्यदेश में जो दक्षिण में प्रसिद्ध है वहां का राजा हुआ और वह अपनी प्रजा के पालने और नीति धर्म में प्रसिद्ध हुआ वह शिवजी का बड़ाभक्त था सदा प्रदोष व्रत करता एक दिन राजा प्रदोष का व्रत किये हुये शिवपूजन कर रहा था कि इतने में नगर के बीच बड़ा शब्द हुआ राजा तुरन्त सदाशिवजीकी पूजन छोड़ चले मन्त्री वहां से लौटा आता था और जिस शत्रु ने कि नगर में उपद्रव मचाया था उसको भी पकड़े हुये साथ लाता था सो मन्त्री ने सब वृत्तान्त कहा राजा ने शत्रु को देखा और बहुत क्रोधकर उसका शिर काटडाला उस अशुद्ध अवस्था में फिर भी शिवजी की पूजा छोड़ भोजन कर लिया उसके पुत्र ने भी यही अधर्म किया और धर्म को भूलही गया सो राजा इस जन्म में विदर्भ देश का राजा होकर शाल्व के हाथ से मारा गया और यह उसीका पुत्र है जो तुम्हारे सम्मुख खड़ा है और रानी जिसको ग्राह ने खालिया उसका वृत्तान्त यह है कि वह पूर्वजन्म में भी राजा सत्यरथ की रानी थी उसने अपनी सौतको धोखा देकर मारडाला उसका फल उसको यह मिला कि उसको

ग्राह ने खाया और तुम्हारे पुत्र का यह हाल है कि वह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था इसने अपना जन्म दान लेने में बिताया अब तुमको उचित है कि इन दोनों बालकों से भलीभांति शिवकी पूजा कराओ यह कह शिव ने उस स्त्री को अपने मुख्य चिह्नों समेत दर्शन दिये जिससे स्त्री ने अतिप्रसन्न हो गद्गदवाणी से स्तुति की फिर शिव अन्तर्धान होगये स्त्री ने तुरन्त उस बालक को उठा लिया और अपने बालक सहित घर में आई और एक गांव में जिसका नाम चक्र है वहां रहने लगी और दोनों बालक शाण्डिल्यमुनि से शिक्षा ले शिव की भक्ति करने लगे वे दोनों प्रदोषव्रत रखते इस तरह चारमास बीते एक दिन दोनों मिलकर महानदी में स्नानकर शिवबाना किये हुये घरको लौटे आते थे कि शिव ने दोनों को अपना भक्त जान कृपापूर्वक यह लीला रची कि मार्ग में उन्होंने धन का भरा एक घट पाया घर में आकर अपनी माता से यह हाल कहा ब्राह्मणी ने शिव का अति धन्यवाद किया फिर दोनों शिवका व्रत करते रहे जब एक वर्ष बीत गया तो शिव ने यह चरित्र किया कि एक दिन दोनों ने वन में गन्धर्व की कन्या देखी ब्राह्मण के पुत्र ने उसके पास जाने से निषेध किया पर राजा के पुत्र ने निकट जा वार्ता करने के उपरान्त उसके साथ अपना विवाह कर लिया और शिव ने ऐसी कृपा की कि उसने अपने कुल के राज्यको प्राप्त करके राजकाज किया और वही ब्राह्मणी राजा की माता होकर आनन्द से काल बिताने लगी राजा का नाम धर्मगुप्त हुआ और ब्राह्मण के पुत्र का नाम शुचिव्रत था दोनों ने शिव की बड़ी भक्ति की और सदा प्रसन्न रहे यह शिव अवतार का चरित्र अति पवित्र है दोनों लोक में आनन्ददायक है भिक्षुनाथ शिव अवतार के स्मरण से सर्व कष्ट नष्ट हो जाते हैं बयासीवां अवतार पूर्ण हुआ ।

उनचासवां अध्याय।

नरजरेश्वर अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम नरजरेश्वर अवतार का वर्णन करते हैं जिसने उपमुनि ब्राह्मण का दुःख दूर किया व्याघ्रपाद मुनि जो तप में प्रसिद्ध हैं उनके एक पुत्र उपजा जिसका नाम उपमुनि रक्खा गया वह सदा अपने मातुल के घर माता सहित रहता भाग्यवश दरिद्रता ने आ घेरा संयोग से एक दिन उपमुनि ने दूध पिया उसके पीने से और अधिक दूध पीने की इच्छा हुई और हठ से बार २ अपनी माता से दूध मांगा सो दरिद्रता के कारण दूध का ठिकाना कहां था उसने यव कूट पानी में घोल दूध के ओदर से उपमुनि को पिला दिया उपमुनि ने उसे पीकर कहा कि यह तो दूध नहीं है यह कहकर रोने लगा और बार २ अपनी माता से दूध मांगता था निदान उसने दुःखी हो उपमुनि से कहा कि मैं तो अपने भाग्य से महाधनहीन हूं मैंने पूर्वजन्म में शिव के निमित्त कुछ दान नहीं दिया जो देती तो इस जन्म में धनवान् होती हम वन में रहते हैं भोजन भली भांति नहीं मिलता धन द्रव्य कहां हो धन बिन शिवकृपा नहीं मिलता शिवपूजा बिन सिवाय दुःख के कभी आनन्द प्राप्त नहीं होता यह सुन उपमुनि को पूर्वजन्म के संस्कार से बुद्धि उपजी और अपनी माता से कहा कि अब तुम कुछ खेद मत करो मैं शिव का तप करता हूं और शिव को प्रसन्न कर क्षीरसागर वर में मांग लूंगा यह कह और माताकी आज्ञा ले हिमगिरि में जा बड़ा तपकर वनफलों से शिव का पूजन किया और पञ्चाक्षरी मन्त्र जपा जब उपमुनि को तप करते बहुतसा समय बीता और शिव प्रसन्न न हुये और वर देने के निमित्त न आये तो तीनों लोक उपमुनि के तप से जलने लगे

सो देवताओं की विनती के अनुकूल हम सबको लेकर शिव के पास गये और स्तुति के उपरान्त सब वृत्तान्त कहा शिव हँस कर बोले कि तुम कुछ संशय मत करो उपमुनि दुग्ध के निमित्त तप कर रहा है सो अब हम उसको वर देंगे तुम सब अपने २ स्थानों को चले जावो देवताओं के चले जाने के उपरान्त शिवजी ने उपमुनि की परीक्षा लेने के निमित्त आप तो इन्द्ररूप और गिरिजा को शची और गणों को देवताओं का स्वरूप बना और नन्दी का ऐरावत रूप रच उपमुनि के समीप जाकर कहा कि वर मांगो उपमुनि ने कहा कि हे इन्द्र! तुमको हमारा प्रणाम है हमको शिव के भजने की शक्ति कृपा करो हम केवल शिव से वर मांगेंगे और किसी से वर मांगने की इच्छा नहीं इन्द्र ने कहा कि हे मुनिपुत्र! क्या तू हमको नहीं जानता और अन्य देवताओं के समान हमको विचारता है मैं सब देवताओं का राजा हूं मुझको अप्रसन्न कर कभी किसी को आनन्द नहीं मिलता मेरी पूजा कर जो मन में आवे वह ले ले और शिव निर्गुण देवताओं की गणना में नहीं और वह दीन और निर्बल हैं वह तो दक्षप्रजापति के शाप से भूत हो गये हैं और महा अशुभ हैं इससे उनका वचन सत्य नहीं होता वरन उस समय से कोई शिवजी को नहीं पूजता ऐसे मनुष्य से क्योंकर तुम्हारा काम निकलेगा उपमुनि ने सुन कर बड़े क्रोध से उत्तर दिया कि हे इन्द्र! तुम देवताओं के राजा होकर शिवजी की निन्दा मुख पर लाये तुमको क्या हो गया है जो तुमने शिवजी को नहीं पहिंचाना शिवजी वह हैं जिनकी ब्रह्मा, विष्णु और सब देवता सेवा करतेहैं उनको वेद भी नेति२कर वर्णन करते हैं और वेदान्ती उनको ब्रह्म के नाम से प्रसिद्ध करते हैं और सन्त विवाद छोड़ उनका भजन करते हैं वे तीनों गुण से परे शुद्ध, पवित्र, परमात्मा,

निर्गुण, सगुण और सबके स्वामी हैं हे मूर्ख, इन्द्र! तू उनको नहीं जानता जिनके समान दूसरा कोई नहीं है और मैंने तेरी जिह्वा से शिवजी की निन्दा सुनी यह मुझ पर बड़ा पाप होगा इसलिये मैं तुझे भी नष्ट करूंगा और आप भी मर जाऊंगा यह कह और भस्म लेकर मन्त्र पढ़ इन्द्र पर चलाई और आप भी सब तरह से पवित्र हो चाहा कि अपने को मार डालूँ यह देखकर शिवजी अति प्रसन्न हुये और नन्दी ने शिवजी की सैन समझ तुरन्त भस्मास्त्र पकड़ लिया जिससे अग्नि दूर हो गई और शिवजी ने पूर्व के समान अपना निजरूप धारा और इन्द्र के वह सब लक्षण गुप्त हो गये जिस रूप का उपमुनि ध्यान करते थे वही रूप सामने खड़ा हो गया उस समय सब देवता उस स्थान पर आकर शिवजी की स्तुति करने लगे आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और हर प्रकार से आनन्द मङ्गल हुआ उपमुनि ने शिवजी को प्रणाम किया शिवजी ने उपमुनि को निकट बुलाकर स्कन्द के समान अपने समीप बैठाया और अपना हाथ उपमुनि के शरीर पर फेर दिया और कृपादृष्टि से उपमुनि को अवलोकन कर कहा कि तुम हमारे दृढ़भक्त हो हम तुमसे अति प्रसन्न हुये गिरिजा तुम्हारी माता और हम तुम्हारे पिता हैं तुम सदा युवा रहोगे कोई तुमसे पाप न होगा तुम पर मृत्यु का वश न चलेगा तुमको दूध, दही, घी और शहद के बहुत से समुद्र मिलेंगे तुमको सदा आनन्द रहेगा और तुम सदा बलवान् रह-कर प्रसन्न रहोगे और हमारे भक्तों के शिरोमणि होगे तुम्हारा कुल और गोत्र सब आनन्द में रहेगा और स्त्री पुत्र सब हमारी भक्ति में लगे रहेंगे और पशुपति व्रत को पावोगे तुम्हारा वचन अति स्पष्ट होगा और तुम बड़े वाचाल होगे हम सदा तुम्हारे पास रहेंगे तुमको सब कुछ मिलेगा यह कह शिवजी अन्तर्धान

हुये और उपमुनि भी अपने आश्रम को चले आये जो यह चरित्र पढ़े और सुनेगा वह आनन्द में रहेगा तिरासीवां अवतार पूर्ण हुआ।

पचासवां अध्याय।

जटाधारी अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम जटाधारी अवतार का वर्णन करते हैं कि जिस तरह शिव ने गिरिजा को धोखा दिया इस अवतार का वर्णन शिव के विवाह में विस्तार से हो चुका है यहां केवल संक्षेप से इसका वर्णन होता है जब गिरिजा तप के निमित्त माता पिता की आज्ञा ले वनमें गई इस इच्छा से कि हमारे पति सदाशिव हों सो गिरिजा के कठिन तप के कारण कई बेर शिव ने मुनीश्वरों को गिरिजा की परीक्षा के निमित्त भेजा पर गिरिजा ने कुछ भी मुनीश्वरों से धोखा न खाया अपने तप में दृढ़ रही निदान शिव को भी गिरिजा के देखने की इच्छा उपजी सो शिवजी जटाधारी ब्राह्मण का स्वरूप बना गिरिजा के पास गये और बहुत वार्त्ता और विवाद के उपरांत जब कुछ न चली तो शिवजी ने प्रसन्न होकर अपना मुख्य स्वरूप गिरिजा को दिखाया और कहा हे गिरिजा! तुम मुझे बहुत प्यारी और हमारी प्राचीन शक्ति हो हमने परीक्षा के निमित्त सब काम किये हैं हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं वर मांगो उत्तम है कि तुम हमारे साथ चलो और कैलास पर्वत को अपने चरणों से सुशोभित करो गिरिजा ने लज्जा से शिर झुका और विचार कर कहा कि जो तुम प्रसन्न हो तो हमारे पति होकर हमारा विवाह अपने साथ करो शिव ने कहा अच्छा यही होगा और अन्तर्धान हुये चौरासीवें अवतार का चरित्र पूर्ण हुआ।

इक्यावनवां अध्याय।

नर्तकनट अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम नर्तकनट अवतार का वर्णन करते हैं कि जैसे शिवजी ने नर्तकनट अर्थात् नाचने गानेवाले का रूप धारण करके मैना और हिमाचल को धोखा दिया सो वर देने के अनन्तर एक दिन शिवजी नाचने और गाने-वाले का रूप धर मैना और हिमाचल के घर गये और उनको प्रसन्न कर भिक्षा के बदले गिरिजा को मांगा पहिले तो क्रोध कर निकाले गये पर जब हिमाचल और मैना ने जाना कि यह तो सदाशिव हैं तो गिरिजाका देना मान लिया और शिवने बड़ी २ लीला कर गिरिजा को ब्याहा पचासीवां अवतार पूर्ण हुआ।

द्विजावतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! जब मैना ने शिव को जाना कि यह सबसे श्रेष्ठ सर्वोपरि हैं इनको कन्या देना उचित है तब सब देवताओं ने परस्पर यह सम्मति की कि यह मैना और हिमाचल की बुद्धि दूर करनी चाहिये इस विचार से पहिले वे हमारे पास फिर हमारी आज्ञा से सदाशिव के पास गये और कहा जो हिमाचल तुमको सदाशिव समझ गिरिजा को देवेगा तो इसी शरीर से तुम्हारे लोक में चला जावेगा फिर रत्न और अन्य अद्भुत वस्तु कहां से मिलेंगी देवताओं को ऐसे जीने से मरना उत्तम है आप कोई ऐसा उपाय करें जिससे उनकी वह दिव्य बुद्धि कि हम शिवको अपना जामाता बनाते हैं जाती रहे शिव ब्राह्मण बन वैष्णव स्वरूप धार हिमाचल के समीप गये और कहा कि तुम ऐसे राजा होकर अपनी कन्या साधु अवधूत को देते हो यह बात तुमको उचित नहीं यह साधु का वचन हिमाचल को इतना लगा कि उन्होंने विवाह

का फेरना उत्तम समझा फिर शिव ने यह चरित्र कर कैलास में पहुँचकर सप्तऋषियों का स्मरण किया वे आये सो उनको हिमाचल के पास समझाने बुझाने को भेजा और कहा कि वे दोनों फिर हमारे विवाह करने को नहीं मानते तुम ऐसी युक्ति करो कि विवाह होजावे सो सप्तऋषि ने हिमाचल और मैना को बहुत समझा बुझाकर शिव का विवाह करा दिया हे नारद ! ऐसी लीला शिव ने ब्राह्मण का अवतार धार की है जो इस कथा को पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा छियासीवें अवतार का चरित्र पूर्ण हुआ ।

बावनवां अध्याय ।

अश्वत्थामा अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! द्रोणाचार्य जो ब्राह्मणों में बड़े विद्वान् थे उनको कौरवों ने अपना गुरु बनाया जिनसे उनको धनुर्विद्या प्राप्त हुई फिर उन्होंने उन्हीं के लिये कठिन तप कर शिवजी को प्रसन्न किया शिव ने द्रोणाचार्य के पास आकर कहा कि तुम्हारी बनाई हुई स्तुति सुनकर हम अति प्रसन्न हुये जो चाहो वर लो द्रोणाचार्य ने कहा कि मुझको अपने अंश से एक पुत्र कृपा करो जो हमको कौरवों सहित आनन्द दे और वह सबको जीत बड़ा बलवान् हो मौत उसके सामने न आवे शिवजीने यही वर दिया और अन्तर्धान हुये और द्रोणाचार्य ने अतिप्रसन्नता से यह हाल अपनी स्त्री को सुनाया और वे दोनों शिव की भक्ति में दृढ़ रहे निदान समय पाकर शिवने बड़े पुत्र होकर अवतार लिया जिसका नाम अश्वत्थामा रक्खा गया उसने द्रोणाचार्य की आज्ञा पा कौरवों का पक्ष किया उसके भय से पाण्डव कुछ न कर सके सो विष्णु की प्रेरणा से अर्जुन ने शिव का तप किया और शिव से पाशुपत

अस्त्र पाया जिससे अर्जुन कौरवों पर प्रबल हुये पर फिर भी अश्वत्थामा ने अपना इतना तेज दिखाया कि कोई कुछ न कर सका और सुगमता से पाण्डवों के पुत्रों का वध किया निदान अर्जुन ने रथ पर चढ़ अश्वत्थामा का पीछा किया अश्वत्थामा कुछ न डरा और मार्ग में खड़ा होगया और ब्रह्मास्त्र अर्जुन पर छोड़ा जिससे अर्जुन ने अति दुःखी हो कृष्ण से कहा कि हे विष्णो! यह क्या होता है एक ज्वाला सबको जलाये हुये हमारे सामने चली आती है इसको आप दूर करें हम आपकी शरण में हैं कृष्ण ने शिव का ध्यान कर जाना कि यह ब्रह्मास्त्र है तो अर्जुन से कहा कि यह ब्रह्मास्त्र है तुम्हारे नष्ट करने को अश्वत्थामा ने चलाया है इसको कोई निवारण नहीं कर सक्ता अब तुम तुरन्त शिव का ध्यान करो जो अपना शस्त्र कि शिव ने प्रसन्न होकर तुमको दिया है उससे इसको दूर करो और कोई युक्ति नहीं है यह सुनकर अर्जुन ने शिव का ध्यान कर तुरन्त पशुपति अस्त्र छोड़ा उससे ब्रह्मास्त्र दूर होगया अर्जुन को अत्यानन्द प्राप्त हुआ यह देख अश्वत्थामा ने इस इच्छा से कि संसार में पाण्डवों का वंश न रहे और जो अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की स्त्री उत्तराकुँवरि के गर्भ था उसके वध के निमित्त फिर अपना अस्त्र छोड़ा सो उत्तरा अति विकल हो कृष्णजी की शरण में गई कृष्ण ने ध्यान कर यह चरित्र जान सदाशिव की आज्ञापूर्वक अपना चक्र चलाया और उत्तरा के गर्भ की रक्षा की और कृष्ण सब पाण्डवों को लेकर अश्वत्थामा की शरण में गये और पाण्डवों और अश्वत्थामा में मित्रता और प्रीति करा दी जिससे उपद्रव शान्त होगया सब लोग आनन्द से रहने लगे और अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर प्रसन्न हो बहुत वर दिये यह शिव के अवतार अश्वत्थामा का चरित्र

अति पवित्र संसार में आनन्द देता है वे सदा गङ्गाकिनारे रहते हैं और सबकी दृष्टि से छिपे हैं यह शिव अवतारकथा अति शुद्ध निर्मल सुनने और पढ़नेवालों को बड़ा फल देती है इसके सुनने से सब काम पूरे होते हैं सत्तासीवें अवतार का चरित्र समाप्त हुआ ।

तिरपनवां अध्याय ।

किरातेश्वर शिव अवतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अब हम किरातेश्वर अवतार का वर्णन करते हैं अर्थात् जिस तरह शिवजी ने किरात का अवतार धारण किया और अर्जुन को पशुपति अस्त्र बहुत वरदानों समेत कृपा किया और यह भी वर दिया कि तुमको कोई जीत न सकेगा और महाभारत के युद्ध में अर्जुन को जय दिलाई इतना सुन नारद बोले कि हे पिता ! आप कुछ विस्तार से अर्जुन का वृत्तान्त और किरातेश्वर शिवजी का वर्णन सुनावें ब्रह्माजी बोले कि पूर्वकाल में सोमवंशी कुल में राजा ययाति हुये जिनके पांच पुत्र उपजे उनमें सबसे छोटा लड़का पुरु जो रानी शर्मिष्ठा से उपजा वह राज्य पा धर्मपूर्वक प्रजा पालन करता रहा उसके कुल में राजा शन्तनु हुआ जिसके समान दूसरा राजा न हुआ उसकी दो स्त्री गङ्गा और सत्यवती थीं जो पुत्र कि गङ्गा से उपजा उसका नाम भीष्म था जो बड़ा तपस्वी इन्द्रियजित् था और सत्यवती दूसरी रानी से चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य उपजे जो कि चित्राङ्गद को समनामी गन्धर्व ने मार डाला इससे विचित्रवीर्य को राज्य मिला उनकी दो रानियां थीं राजा उन्हीं के साथ रात दिन भोग विलास करता जिससे राजा को राजयक्ष्मा का रोग होगया यद्यपि सब उपाय कियेगये पर राजा मरगया निदान राजा शन्तनु का कुल नष्ट हो गया

यह देख सत्यवती रानी ने व्यासजी का स्मरण किया और व्यासजी के द्वारा दोनों रानियों से सन्तान उपजाये बड़ी रानी से धृतराष्ट्र उपजे जो अन्धे थे और छोटी रानी से पाण्डु हुये तीसरी बेर राजा की दासी व्यास के समीप गई उससे विदुरनाम विष्णु के बड़े भक्त उपजे इसी प्रकार सत्यवती तीनों पुत्रों को देख भीष्म समेत अति प्रसन्न हुई वे तीनों पुत्र बड़े प्रतापवान् हुये जिन्होंने संसार में बहुत धर्म चलाये और राजा सुबल की कन्या गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र का विवाह हुआ और राजा शूर- सेन की लड़की कुन्ती पाण्डु को ब्याही गई जो वसुदेव की बहिन थी और पाण्डु की दूसरी रानी माद्री मद्रदेश के राजा की पुत्री थी धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि सौ पुत्र उपजे और पाण्डु से पांच पुत्र उनके यह नाम हैं युधिष्ठिर भीम अर्जुन तो कुन्ती से और नकुल और सहदेव माद्री से और विदुर के साथ पारशवी राजा देवक की कन्या व्याही गई जिससे बड़े धर्मवान् पुत्र उपजे यह सब लड़के परस्पर खेलते पर भीम अथाह बल के कारण उपद्रव मचाता यह बात दुर्योधन को भली न लगती वह इस उपाय में रहा करता था कि भीम को किसी प्रकार मारें निदान दुर्योधन की कोई युक्ति न चली और कौरव पाण्डव में बड़ा वैर हो गया मन्त्री के उपदेश से धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को वाराणसी में लाक्षा- भवन के भीतर जलाने को भेज दिया सो वे शिवजी की कृपा और विदुर की सम्मति से बचे रहे और दक्षिण देश में जाकर मार्ग में हिडम्ब दैत्य को भीम ने मारा और व्यास के उपदेश से चक्रपुर में स्थित हुये जहां भीम ने एक दानव को बध कर एक ब्राह्मण का काज सँवारा और इसी स्थान पर द्रौपदी का स्वयंवर सुन कुन्ती सहित वहां गये और मत्स्य वेधने के उप- रान्त द्रौपदी से विवाह किया और वहां कृष्ण से भी भेंट हुई

यह चरित्र पाण्डवों का सुन धृतराष्ट्र ने फिर उनको अति प्रीति प्रकट कर बुला लिया और आधा राज्य पाण्डवों को दे खाण्डवप्रस्थ में रहने की आज्ञा दी कि कुछ विवाद और झगड़ा न होवे सो पाण्डव खाण्डवप्रस्थ में रहे राजा युधिष्ठिर ने और बहुत देश जीते और धृतराष्ट्र की मति से प्रजा पालन कर राजसूय यज्ञ किया फिर अर्जुन तीर्थाटन के लिये संसार भर में भ्रमण कर द्वारका में गये और कृष्ण की अनुमति से सुभद्रा को भगा लाये और अपने साथ ब्याह किया जिनसे अभिमन्यु उपजे अब दूसरे प्रकार हम अर्जुन के बल का बखान करते हैं कि पूर्व समय में श्वेतकी नाम महाराजा शिवजी का बड़ा भक्त हुआ शिवजी ने दुर्वासा से कहा कि तुम जाकर श्वेतकी को यज्ञ करा दो सो दुर्वासा ने यज्ञ कराया और बारह वर्ष तक बराबर घृत की धारा यज्ञ की अग्नि में पड़ती रही इससे अग्नि अति तृप्त हो अजीर्णता से निस्तेज हो गया और हमारे पास आकर कहा कि मैं अति विकल हूँ सो अर्जुन और कृष्ण ने हमारी आज्ञा से अग्नि को शरण में ले उनको खाण्डववन भलीभांति जलाने दिया उस समय मयदानव को जो उसी वन में रहता था कृष्ण की आज्ञा से अर्जुन ने भाग जाने दिया सो मयने एक वाटिका पाण्डवों को ऐसी बनाई कि जिसमें जल पृथ्वी आदि कुछ न भासता था उस स्थान पर दुर्योधन की बुद्धि ने कुछ काम न किया और सब लोगों के हँसने से दुर्योधन अतिलज्जित होगया और पुराने वैर को फिर उठा जुवें के द्वारा पाण्डवों से सब धन और राज्य लेलिया फिर द्रौपदी को भी जुवें में जीता और दुश्शासन दुर्योधन के भाई ने द्रौपदी के पट खींचे पर दुर्वासा के आशीर्वाद से इतने वस्त्र बढ़गये कि दुश्शासन दीन होकर खड़ा रह गया और द्रौपदी की लाज

रह गई निदान पाण्डवों को बारह वर्ष के लिये राज्य से च्युत होकर अपने राज्य से निकलजाना पड़ा और जो कि सूर्य ने एक बर्तन पाण्डवों को दिया था उसी से वह कालक्षेप करते इसी प्रकार पाण्डव द्रौपदी सहित देशाटन करते रहे।

चौवनवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि पाण्डवों ने द्वैतवन में जाकर नाना प्रकार की आपदायें उठाईं उनके भोजन के निमित्त वही सूर्य का दिया हुआ पात्र था उसमें यह गुण था कि जबतक द्रौपदी भोजन न करले तबतक उसके भीतर से भोजन कम न होता इसी प्रकार समय बीतगया दुर्योधन ने इस वृत्तान्त को न जाना सो उसकी यह इच्छा हुई कि पाण्डवों को किसी मुनिआदि से शाप दिलाना चाहिये सो दुर्वासा की बड़ी सेवाकर वर लेने की आज्ञा पाई और कहा कि मैं पाण्डवों का नाश चाहता हूं दुर्वासा ने उसको बहुत धिक्कार दिये और कहा कि यह बात कभी न हो सकेगी उनकी रक्षा करनेवाले आप शिवजी हैं और विष्णु ने जो अवतार धारा है वे शिवजी की आज्ञा से रात दिन उनकी रक्षा करते हैं पर अच्छा हम तुमसे प्रसन्न हैं कुछ उपाय करेंगे यह कह दुर्वासा पाण्डवों के समीप गये उनके साथ दशहजार शिष्य थे और दुर्वासा उस समय गये जब द्रौपदी भोजन कर चुकी थी दुर्वासा ने पूजन पाकर भोजन मांगा और अपने शिष्यों समेत स्नान करने को गये तब पाण्डवों को अति चिन्ता उपजी चाहा कि हम सब मर जावें क्योंकि जब दुर्वासा लौटकर भोजन न पावेगा तो हम सबको बड़ा भारी शाप देवेगा यह विचार करही रहे थे कि आकाशवाणी हुई कि तुम कुछ शोच मत करो कृष्णजी का स्मरण करो यह सुन द्रौपदी सहित सबने कृष्ण का स्मरण किया सो कृष्ण ने तुरन्त आकर सूर्य का दिया हुआ

वही बर्तन मांगा और एक शाक का पत्र बर्तन में देखकर उसको खाया उसके खातेही दुर्वासा और सब मुनि और सब शिष्य तृप्त होगये और अपने स्थान को ऊपरही ऊपर चले गये यह सुन कर पाण्डव अति प्रसन्न हो कृष्ण की स्तुति करने लगे कृष्ण ने कहा कि हम मथुरा को छोड़ द्वारका को गये और वहां सबको बसाया और शत्रुओं पर विजय पाने के लिये उपमुनि के समीप गये उनके उपदेश से बदरिकाश्रम में जाकर सात मास पर्यन्त शिवजी का तप किया शिवजी ने प्रसन्न हो हमको वर दिया जिससे द्वारका पहुँच हमने शत्रुओं को जीता इससे तुमको भी हम कहते हैं कि तुम शिवजीकी सेवाकरो शिव बिन तुम्हारा काम न निकलेगा यह कह अन्तर्यामी श्रीकृष्ण भगवान् अन्तर्धान हुये और पाण्डवों ने एक भील दुर्योधन के पास उनके आचरण की परीक्षा के निमित्त भेजा जिसने वहां का सब हाल देख कर पाण्डवों से कहा पाण्डव दुर्योधन का प्रताप और धन देख दुःखी हुये इतने में व्यासजी आये जो मस्तक में त्रिपुण्ड्र लगाये भस्म, रुद्राक्ष धारण किये जटाजूट रखाये मुख से शिव २ कहते थे ऐसा रूप व्यास का देख पाण्डवों ने उठकर प्रणाम किया और आदर सहित बैठाकर हर प्रकार उनकी पूजा की और कहा कि हमने वन में आकर बड़ा दुःख पाया तुम हमको भूल गये यह तुमने बड़ा अनुग्रह किया कि हमको दर्शन दिये अब हमारे कष्ट निवृत्त होजावेंगे हमको आप उबार लें कि फिर हम राज्य पावें वैसाही आप हमको उपदेश करें व्यासजी बोले कि तुम धन्य हो कि सत्य और धर्म को ऐसे समय में भी नहीं छोड़ते यद्यपि यह बात हमको उचित है कि तुम दोनों ओर के मनुष्यों को एकसा समझें पर जोकि वे बहुत अधर्मी और तुम धर्मिष्ठ हो इसलिये हम तुम्हारे पक्ष पर हैं तुम पर शिवजी अति प्रसन्न

होंगे हर प्रकार तुम्हारा कष्ट नष्ट करेंगे वे सबके स्वामी हैं और सब देवता और मुनि उन्हीं की सेवा करते हैं वे अपने भक्तों का दुःख देख नहीं सक्ते और वेद और पुराण का यह वचन है कि शिवजी शीघ्रही प्रसन्न होते हैं इससे हम तुमको यह उपदेश करते हैं कि शिवजी की सेवा करो वे तुमको अवश्य जय देंगे पाण्डवों ने कहा कि हम सब मिल कर शिवजी की पूजा करें या हममें से एक मनुष्य करे तब व्यासजी ने शिवजी का ध्यान कर शोच के कहा कि नहीं केवल अर्जुन पूजा किया करे फिर व्यासजी ने शिवार्चन की सब विधि उनको बता दी और कहा कि क्षत्रिय को पहिले इन्द्र की सेवा उचित है इससे तुम पहिले इन्द्र को प्रसन्न कर फिर शिवजी के मन्त्र को धारण करो तुम इन्द्रकील जो गङ्गा के तट पर है वहां जाकर तप करो और क्षत्रिय धर्म के अनुकूल अपने शस्त्र अपने साथ लेते जाव कि जो कोई शत्रु आवे तो उसका वध करना यह कहा और इन्द्र का मन्त्र अर्जुन को दिया फिर पार्थिव पूजा की युक्ति सिखाई और भी शिवपूजा की रीतियां बताईं और दृष्टिबन्ध होने की विद्या की शिक्षा की फिर अपना हाथ अर्जुन के शरीर में फेर दिया और बहुत आशीर्वाद दिये फिर अर्जुन के सर्वाङ्ग में भस्म लगादी ऐसी कृपा कर व्यास अन्तर्धान होगये और पाण्डव कुन्ती माता और द्रौपदी सहित शिवजी के प्रेम में डूब गये ।

पचपनवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि व्यासजी के जाने के पीछे सब भाइयों ने अर्जुन को अति तेजस्वी देखा सबको निश्चय हुआ कि हमारे संकट कट जायेंगे फिर सब मनुष्यों ने आशिष देकर अर्जुन को तप के लिये भेजा अर्जुन सबको प्रणाम करते शुभ नक्षत्र देखते हुये चले और इन्द्रकील के निकट जहां गङ्गाजी बहती

हैं पहुँचकर अशोकवन में विराजमान हुये वहां वेदी बना तेजस्स्वरूप धारकर पहिले गुरु की स्तुति की उसके पीछे आसन पर विराजमान हो पञ्चसूत्र पार्थिव विधिपूर्वक बनाने लगे और फिर पार्थिवपूजन के मन्त्र का जप किया इसी प्रकार तीनों समय अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल पार्थिव-पूजन करते थे पहिले दिन उन्होंने इन्द्र की पूजा की कि शिवजी के पूजन में कुछ विघ्न न पड़े फिर शिवजी का ऐसा ध्यान किया कि अर्जुन के शिर से अग्नि निकली जिससे सब वन प्रकाशित हुआ उस वन में इन्द्र के बहुत सेवक रहते थे उन्होंने इन्द्र से जाकर प्रार्थना की कि नहीं मालूम कौन सा मनुष्य अर्थात् तपस्वीश्वर जप कर रहा है जिस कारण हम सब जलने से बच गये इन्द्र ने ध्यान करके यह विचारा कि यह हमारे पुत्र अर्जुन के कार्य हैं यह विचार कर इन्द्र को बड़ा दुःख हुआ और बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारकर हाथ में लाठी लेकर अर्जुन के निकट गये और खड़े होगये अर्जुन ने ब्राह्मण को देखकर उसकी हर प्रकार से पूजा और सेवा की ब्राह्मण ने पूछा कि तुम यह तप किस निमित्त करते हो अर्जुन ने सब वृत्तान्त कह सुनाया इन्द्र ने कहा कि तुम ऐसा तप निष्फल करते हो तुमको ऐसा उचित नहीं क्योंकि संसार के सुख थोड़े दिन रहते हैं केवल मुक्ति का विचार रखना चाहिये सो मुक्ति देना इन्द्र के आधीन नहीं इस कारण यह तुम्हारा तप वृथा है जो मनुष्य मुक्ति देनेवाला है उसी की सेवा करो अर्जुन ने कहा कि हे ब्राह्मण ! आप अपने घर सिधारिये आपको इन बातों से क्या प्रयोजन है हम व्यास-जी की आज्ञानुसार सर्वकार्य करेंगे ऐसी दृढ़ता अर्जुन की देख-कर इन्द्र को पुत्र की अति प्रीति उपजी और अपने मुख्य रूप को धारण करके अर्जुन को दर्शन दिये और कहा कि हमने

ब्राह्मण बनकर तुम्हारी परीक्षा ली अब तुमको कुछ खेद न होगा दुर्योधन जो तुम्हारा शत्रु है वह निस्सन्देह जीतने के योग्य नहीं क्योंकि उसके सहायक भीष्म, द्रोण और कर्ण आदि हैं जिनको हम नहीं जीत सक्के उनको तीनों लोक में कोई नहीं जीतसक्का तीनों लोक में उनके समान कोई बलवान् नहीं इस कारण तुमको उचित है कि शिवपूजन करो वह मुक्ति भुक्ति सब देते हैं उन्हीं की प्रसन्नता से हम विष्णुजी और ब्रह्माजी ऐसे २ पदों को प्राप्त हुये हैं आज से हमारे मन्त्र का त्याग करके शिवजी के मन्त्र को जपो और पार्थिवपूजन करके शिवजी का ध्यान करो तुम्हारी पूजा में कोई विघ्न न उत्पन्न होगा शिवजी वरदान देकर तुमको सुख देंगे यह कह कर और आशीर्वाद देकर उन्होंने अर्जुन के शरीर को छुवा और अपने लोक को चले गये सो अर्जुन ने स्नान और न्यास करके शिवजी का ध्यान किया और फिर पार्थिवपूजन करके एक पाँव से सूर्य के सम्मुख होकर शिवमन्त्र जपा और जिस प्रकार व्यासजी ने उपदेश किया था उसी प्रकार किया जिससे सर्व मुनीश्वर आश्चर्य करते थे फिर मुनीश्वरों ने कैलास पर्वत पर जाकर श्रीसदाशिवजी से प्रार्थना की कि अर्जुन आपका जप तप कर रहा है हमारी अभिलाषा है कि आप वहां जाकर अर्जुन को वर देवें यह श्रवण कर शिवजी प्रसन्न हुये और मुसकराकर कहा कि तुम सब अपने २ स्थान को जावो हम अर्जुन का कार्य सिद्ध करेंगे यह सुन कर सब देवता अपने २ स्थान पर सिधारे।

छप्पनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि शिवजीने सब देवता और मुनीश्वरोंको बिदा करके इच्छा की कि अर्जुन के निकट जाकर वर देवें

परन्तु उस समय यह चरित्र हुआ कि दुर्योधन ने अर्जुन को तप करते सुना कि वह राज्य की वृद्धि के निमित्त तप करता है इस हेतु मूक नाम एक दैत्य को अर्जुन के मार डालने के लिये भेजा दैत्य भैंस का शरीर धरकर तपःस्थल में आया अर्जुन ने दूरही से उसको देखा कि वह अनेक प्रकार के उपद्रव करता मेरी ओर चला आता है उसने विचारा कि यह निश्चय मेरा शत्रु है इसे दुर्योधन ने भेजा होगा इस कारण कि जिसको देखकर अपने हृदय में बुराई आवे उसको वैरी जानना चाहिये और जिसके देखने से अपने मन में प्रसन्नता प्राप्त हो उसको अपना मित्र जानना चाहिये यह बुद्धिमानों ने शत्रु और मित्र की पहिंचान रक्खी है यह विचार कर अपना धनुष् और बाण लिया उसी समय शिवजी भी भीलपति का शरीर धारण करके अपने गणोंसमेत अर्जुन की परीक्षा लेने और वरदान देने चले कांधे पर तरकस था जो बाणों से भरा हुआ था हाथों में धनुष् बाण लिये हुये थे और लुङ्ग और केश बांधे हुये थे निदान सब वस्त्र वीरों के धारण किये थे दैत्य ने यह अभिलाषा की थी कि अर्जुन के सम्मुख होवें पर भीलरूप शिव ने अपना बाण उसकी पूँछपर मारा जो दैत्य के मुख से बाहर निकल गया और वह मरगया अर्जुन ने भी अपना बाण चलाया पर जब दैत्य को पृथ्वी पर गिरते देखा तो विचारा कि वह हमारेही बाण से मरा है इसलिये अपने बाण के लेने के निमित्त अर्जुन शिव २ कहते आये उधर से शिवका गण अपने स्वामी का बाण लेने आया अर्जुन ने कहा कि हमने मारा है हमारा यह बाण है और गणने कहा कि नहीं हमारे स्वामी भीलपति ने राक्षस मारा है इसमें बड़ा विवाद हुआ अर्जुन ने तुरन्तही बाण उठा लिया गणने कहा कि तुम क्यों

ऐसा लोभ करते हो यह बाण तुम्हारा नहीं है तुम क्यों तपस्वियोंका रूप धारकर ऐसा छल करते हो अर्जुन ने कहा कि हे मूर्ख! तू क्या बकता है यह हमारा बाण मुख्य चिह्नों सहित है देखले तब गण ने कहा कि हे मूर्ख! तू तपस्वी नहीं क्योंकि जो तप करता है वह असत्य नहीं बोलता तुम हमको अकेले न जानना हमारे साथ बहुत से गण हैं हमारा स्वामी महाबलवान् राजा है और उसी का यह बाण है यह तुम्हारे पास न रहेगा जो मनुष्य चोर, झूठा, अहंकारी, छली और कपटी होता है उससे तप नहीं होसक्ता इससे हमारा बाण दे दो क्यों पराया दोष अपने शिरपर लेते हो हमारे स्वामी ने तुम्हारे प्राण बचाने के लिये तुम्हारे शत्रु को मारडाला और उनकी भलाई को भूल कर उनका बाण नहीं देते जो तुम्हारी यही अभिलाषा है कि यह बाण मुझे मिलजावे तो चलकर हमारे स्वामी से लेलो वह ऐसे बाण दे दिया करते हैं अर्जुन ने ऐसे कठिन वचन सुनकर शिवजीका ध्यानकर क्रोध करके कहा कि हे मूर्ख! तू अहंकारी है तू ऐसे कठोर वचन हमें कहता है जैसे तेरी जाति और कुल है उसी के अनुसार तू बात करता है हम राजा हैं और तू चोर है इसी प्रकार तेरा स्वामी भी होगा हम क्यों तुझसे या तेरे स्वामी से बाण मांगें उचित है कि तू या तेरा स्वामी हमसे मांगे या युद्ध करलेवे जो जीतेगा उसी का बाण हो तुम यहां क्यों ठहरे हो तुरन्तही जावो और अपने स्वामी को बुलालावो हम शिवजी के आश्रय पर बैठे हैं हम निर्भय हैं वह गण आश्चर्यवान् होकर शिवजी के निकट आया और कहा कि एक तपस्वी बाण लेकर ऐसी २ बातें करता है शिवजी की इच्छा हुई कि अर्जुन के तेज और शक्ति को देखें इसलिये अपने गणोंसमेत अर्जुन के निकट आये।

सत्तावनवां अध्याय

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अर्जुन ने शिवजी की अनन्त सेना देखकर कुछ भी खेद न किया और अपना धनुर्बाण लेकर उनके सम्मुख हुआ शिव किरातरूप ने संसारी मनुष्यों के सदृश प्रथम दूत अर्जुन के निकट भेजा और कहा कि तपस्वी से कहो कि हमारी सेना भरपूर अपनी आंख से देखे और हमारा बाण दे दे और तुरन्तही यहां से चला जावे वरन वह मारा जावेगा उसकी स्त्री रोती फिरेगी यह समाचार सुन कर अर्जुन ने कुछ भी भय न किया और कहा कि हे दूत ! अपने स्वामी से जाकर कहदे कि जो हम डर कर अपना बाण तुझे दे दें तो हमारे कुल में बट्टा लग जायेगा चाहे स्त्री अथवा भाई सब दुःखी होजावें पर हम बाण न देंगे क्या शेर सियार को देख कर डर जाते हैं या राजा वन के मनुष्यों को देख कर भयमान् होजाते हैं यह सुन कर दूत ने वहां से चल कर किरात के पास आ उनसे सब वृत्तान्त कहा किरात अपनी सेनासहित युद्ध करने को उद्यत हुआ और अर्जुन के निकट पहुँच कर अपना शङ्ख बजाया अर्जुन शिवजी का ध्यान कर उनके साथ लड़ाई करने लगा और गणों ने अपने स्वामी की आज्ञानुसार इतने बाणों की वर्षा की कि अर्जुन महादुःखी हो श्रीसदाशिवजी का ध्यान करने लगे और सब बाण काट कर अपने इतने बाण किरात की सेना में वर्षाये कि वह सब भाग गये केवल किरात शिव अवतार खड़े रहे और दोनों ने भलीभांति हर प्रकार का युद्ध किया और दोनों ने उत्तमोत्तम बाण चलाये किरात तो दया करके बाण मारते थे पर अर्जुन अज्ञानअवस्था में तीर चलाता था किरात अवतार ने अर्जुन के सब अस्त्र शस्त्र काट डाले अन्त में दोनों मल्लयुद्ध करने लगे जिससे सर्व सृष्टि में हाहाकार मच गया

सब देवता दुःखी हुये पृथ्वी कांप उठी किरात अर्जुन को पकड़ कर आकाश की ओर ले गये अर्जुन वहां भी न हारे और बहुत लड़े और किरात के दोनों पांव पकड़ कर उनको चारों ओर घुमाया निदान किरातनाथ ने मुसकराकर अपने भक्त के वश हो अपना उत्तमोत्तम स्वरूप धार उसको दर्शन दिया जिसके देखने से अर्जुन को प्रसन्नता हुई और जिस रूप का अर्जुन नित्य ध्यान करते थे वही रूप आगे खड़ा देखा और लज्जित होकर पश्चात्ताप किया फिर प्रणाम करके स्तुति की और कहा कि हमारे सब पाप क्षमा कीजिये और शिवजी के चरणों पर गिर पड़े शिवजी ने अर्जुन को पृथ्वी पर से उठाया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता न करो तुम हमारे बड़े भक्त हो हमने तुम्हारी परीक्षा करने के निमित्त ऐसा चरित्र किया और तुमसे युद्ध करके तुम्हारी शक्ति देखी इस युद्ध से तुम्हारा बड़ा नाम होगा अब जो कुछ चाहते हो वह हमसे मांगो अर्जुन ने शिवजी की बड़ी स्तुति की और कहा कि हम क्या मांगें आप तो अन्तर्यामी हैं सब कुछ जानते हैं पर आपकी आज्ञानुसार यह मांगता हूं कि मुझे दोनों लोक की ऋद्धि सिद्धि कृपा करके दीजिये यह कह कर अर्जुन हाथ जोड़ कर खड़े होगये शिवजी ने अपना पशुपति अस्त्र अर्जुन को दिया और कहा अब तुमको कुछ खेद न होगा हमने तुमको अपना भक्त जान कर यह शस्त्र दिया है किसी से न हारोगे और सब शत्रुओं को जीतोगे हम कृष्णजी से कह देंगे वे तुम्हारी रक्षा करेंगे वे हमारे अंश और बड़े भक्त हैं तुम अपने भाइयों सहित राज्य करो यह कह कर उन्होंने अर्जुन के शरीर पर अपना हाथ फेर दिया और कहा कि जब तुमको क्लेश होगा तब हमारा स्मरण करना हम सब संकट काट देंगे फिर शिवजी अन्तर्धान हुये और अर्जुन भी प्रसन्नतापूर्वक

पशुपति अस्त्र लेकर अपने स्थान में आये और भाइयों से सब वृत्तान्त कह कर सुख दिया यह सुन कर श्रीकृष्णजी वहां आये और कहा कि जैसा हम पहले कहते थे वैसाही अब भी कहते हैं कि शिवजी की सेवा किया करो यह कह कर श्रीकृष्णजी द्वारका को सिधारे और पाण्डव सुखी रहे जब बारह दिन हुये तब पाण्डवों ने अपने नगर में जाकर शत्रुओं को जीतलिया कौरव मारेगये युधिष्ठिर राजा हुये जो मनुष्य इस किरातेश्वर शिव अवतार का चरित्र पढ़े वा सुनेगा वह अपना मनोरथ पाकर शिवलोक में जावेगा।

अट्ठावनवां अध्याय।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन करते हैं अर्थात् वह शिवजीके बारह अवतार जो लीला कर फिर ज्योतिर्लिङ्ग होगये वह अपने भक्तों को बड़ा सुख देनेवाले हैं जिनके दर्शन करने और पूजने से मनुष्य निष्पाप होजाता है और प्रातःकाल उनके नाम लेने से सुख प्राप्त होता है और कोई पाप नहीं रहनेपाता यह अवतार भक्तों के निमित्त पृथ्वी पर हुये थे और फिर उन अवतारों का नाम ज्योतिर्लिङ्ग हुआ सोमनाथ १ मल्लिकार्जुन २ महाकाल ३ ॐकारनाथ ४ केदारनाथ ५ भीमशङ्कर ६ विश्वेश्वर ७ त्र्यम्बक ८ बैजनाथ ९ नागेश १० रामेश्वर ११ घुस्मेश्वर १२ इन बारहों अवतारों की अनन्त महिमा है हम इन बारहों अवतारों की कथा भिन्न २ वर्णन करते हैं प्रथम सोमनाथ सौराष्ट्रनगर में रहते हैं उनको चन्द्रमा ने दक्षप्रजापति से शाप पाकर जब उनका प्रकाश जाता रहा था स्थापित किया था और शिवजी लिङ्गरूप धार-

कर उस स्थान पर स्थित हुये जिनकी सेवासे दुःख और शोक स्वप्न में भी नहीं आते वहां पर चन्द्रकुण्ड है जो सर्वपापों को नष्ट कर देता है दूसरा मल्लिकार्जुन जो श्रीनगर में विराजमान है वहां शिवजी अपने पुत्र स्कन्द के लिये गये और उस स्थानपर ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये जिनके देखने, पूजने और सेवने से नाना प्रकार के सुख मिलते हैं और मुक्ति प्राप्त होती है तीसरे महाकाल उज्जयिनी में विराजमान हैं उन्होंने दूषण दैत्यको जलाकर अपने भक्तों का पालन किया और उसी स्थान पर ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये उनके दर्शन करने से दोनों लोकमें मनुष्य आनन्द से रहता है उसको कभी शोक नहीं होता—चौथे ॐकारनाथ वे विन्ध्याचल पर्वत पर विराजमान हैं जिन्होंने विन्ध्य का दुःख नाश किया और दो रूप धारणकर उसी पर्वत पर स्थित हुये वह भुक्ति मुक्ति दोनों देते हैं उनके दर्शन से अत्यन्त दोष नष्ट होजाते हैं उन दोनों अवतारों को प्रणवस्थल प्रणवेश पार्थिव और परमेश्वर भी कहते हैं यह ज्योतिर्लिङ्ग भक्त के कार्य पूर्ण करने में प्रसिद्ध हैं—पांचवें केदारेश्वर जो नरनारायण हैं और भक्तों के कार्य सिद्ध करते हैं वे हिमालय पर्वत पर केदारस्थान में स्थित हैं जिनके दर्शन से अपवित्र भी पवित्र होजाते यह भरतखण्ड के स्वामी हैं जिनकी सेवासे संसारी मनुष्यों को सुख मिलता है छठवें भीमशङ्कर जिन्होंने भक्त के निमित्त भीम को मारडाला और ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये—सातवें विश्वेश्वर जो काशी में विराजमान हैं और भुक्ति मुक्ति सब कुछ देते हैं जो उनकी भक्ति करते हैं वे सुखी रहते हैं जिनके पूजने और देखने से परमपद प्राप्त होता है—आठवें त्र्यम्बक जिन्होंने गौतम के लिये अवतार लिया और गौतम के पाप नष्ट करने के निमित्त गौतमीनदी के किनारे ज्यो-

तिर्लिङ्ग होकर विराजमान हैं जिनके दर्शन से सब पाप नाश हो जाते हैं तीनों लोकों में सुख प्राप्त होता है—नवें वैद्यनाथ अथवा बैजनाथ वह चिताभूमि में विराजमान हैं उनकी अनन्त महिमा है जिनके दर्शन करने से सब पाप भाग जाते हैं यह अवतार रावण के लिये हुआ था—दशवें नागेश अवतार जो दारुक वन में विराजमान हैं वे अपने भक्तों का पालन करके दुष्टों को दण्ड देते हैं—ग्यारहवें रामनाथ जो सेतुबन्ध में विराजमान हैं जिन्होंने रामचन्द्र को सुख दिया था और प्रीति के कारण वहीं रहे जो कोई इनको गङ्गाजी से स्नान करावे उसके सर्व पाप नष्ट होकर इस लोक में सुख और परलोक में कैलास मिलता है—बारहवें घुस्मेश्वर इस प्रकार हुआ कि दक्षिण दिशा में देवगिरि के निकट एक ग्राम में सुधर्मा नाम एक ब्राह्मण रहता था उसकी दो स्त्रियां थीं तो घुस्मा जो दूसरी स्त्री ब्राह्मण की थी उसके शिवजी की सेवा करने से पुत्र उपजा पर पहिली स्त्री ने उस नये लड़के को मारडाला शिवजी उस स्थान पर प्रकट हुये और उस मरे हुये लड़के को जिला दिया घुस्मा को बड़ा आनन्द हुआ और शिवजी ज्योतिर्लिङ्ग होकर उस स्थान पर स्थित हुये उनका नाम घुस्मेश्वर हुआ जो इस ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन करे या पूजन करे वह दोनों लोक में बड़ा सुख पावे हे नारदजी! ज्योतिर्लिङ्ग की सेवा से मनुष्य अनेक प्रकार के मनोरथ पाते हैं इन द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों को लिङ्गराज भी कहते हैं उनके दर्शन करने और पूजने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है और इस चरित्र के सुनने और पढ़ने से सुख मिलता है सर्व पाप नष्ट होजाते हैं यह हमने शतरुद्र खण्ड वर्णन किया है इसके श्रवण करने और वर्णन करने से मनुष्य

सब मनोरथ और सुख पाता है और दूसरे लोक में निर्वाण-पद मिलता है हे नारदजी! अब किस कथा के सुनने की अभिलाषा है वह कहो शिवजी के १०० अवतारों की कथा पूर्ण हुई।

इति श्रीशिवपुराणे सप्तमखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे-ऽष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५८॥



ॐ नमः शिवाय ।

शिवपुराण भाषा

आठवां खण्ड

पहिला अध्याय ।

सूतजी बोले हे शौनको ! फिर नारदजी ने ब्रह्मा से कहा कि यद्यपि आपने शिव के गुण वर्णन किये हैं पर मुझे तृप्ति नहीं होती इसलिये मैं चाहता हूं कि अब आप लिङ्गों की महिमा का बखान करें अर्थात् जितने पृथ्वी में शिव के लिङ्ग हैं उनका विस्तार कि कौन लिङ्ग किस तीर्थपर है वर्णन करें और यह भी बतावें कि किस स्थान में कितने शिवजी के लिङ्ग हैं उनका हाल भी कहिये ब्रह्माजी ने कहा कि लिङ्गों की संख्या कुछ नहीं है पृथ्वी भर में लिङ्ग ही लिङ्ग समझो और तीर्थ जितने हैं और जो कुछ कि तीर्थों से विशेष हैं लिङ्ग से कोई वस्तु भिन्न नहीं है जो वस्तु जिस प्रकार पर देखी सुनी जावे उस वस्तु को शिव का स्वरूप जानो पर तौ भी अपनी बुद्धि के अनुसार जहां तक कि विष्णु से हमको मालूम हुआ है वहां तक हम लिङ्गों का वर्णन करते हैं कि धरती आकाश पृथ्वी देवता दैत्य और मनुष्यों को जहां जहां कि शिवने उनके स्मरण के अनुसार उनको दर्शन दिया है उस स्थान पर अतिप्रसन्नता से स्थित होगये हैं जिनकी पूजा से मनुष्यों के मनोरथ मिलते हैं धरती में असंख्य शिवजी के लिङ्ग हैं पर हम जो उनमें

अतिप्रसिद्ध और वर्णन के योग्य हैं उन्हीं का बखान करते हैं उन सबसे बड़े और श्रेष्ठ ज्योतिर्लिङ्ग हैं जो पूर्णांश से विराजमान हैं पहिला सोमनाथ जो सौराष्ट्र में गिरिजा सहित है दूसरा मल्लिकार्जुन जो श्रीशैल में है तीसरा महाकाल जो उज्जयिनी में है चौथा अमरेश जो हिमालय पर्वत में स्थित है पांचवां गणनाथ छठा भीमशंकर जो डाकिनी तीर्थस्थल पर है सातवां विश्वनाथ जो काशी में प्रसिद्ध है आठवां त्र्यम्बक जो गौतमी के तट पर है नवां वैद्यनाथ जो चिताभूमि में है दशवां नागेश जो दारुकवन में विख्यात है ग्यारहवां रामेश्वर जो सेतु के ऊपर है द्युतिमान् जो शिवगृह में विराजमान है जो मनुष्य प्रभात के समय पवित्र हो बारहों ज्योतिर्लिङ्गों के नाम जिस मनोरथ करके पढ़े उसका कार्य पूर्ण होजावे उसको संसार में आनन्द और परलोक में मुक्ति हो इन ज्योतिर्लिङ्गों का प्रभाव अप्रमेय है उसका कौन वर्णन कर सक्ता है इन बारहों ज्योतिर्लिङ्गों के विशेष जो छः मास तक बराबर एक लिङ्ग की भी पूजा करे तो उस मनुष्य के सर्व मनोरथ पूर्ण होजावें और वह मनुष्य फिर आवागमन में न पड़े तीनों लोक में आदर पाने के योग्य होजावे जो नीचजाति का मनुष्य भी इनमें से किसी एक के दर्शन करे तो वह उच्च जाति में उपजे और बड़ा धनवान् सुखी हो क्योंकि शिव के भक्त और वेदपाठी और ध्यान करनेवाले और ज्ञानी इन्हीं की भाग्य में मोक्ष है जो मनुष्य कि जन्म से नपुंसक हैं और अन्य मनुष्य आदि भी उनके दर्शन से ब्राह्मण ही मुक्ति प्राप्त करते हैं इससे ज्योतिर्लिङ्गों का दर्शन और पूजन अवश्य है आगे हम अलग २ एक २ ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन विस्तार से करते हैं अब हम इन्हीं के बारहों ज्योतिरूपलिङ्गों का वर्णन करते हैं उनकी अप्रमेय महिमा है और जिनके दर्शन

से दुःख दूर होते हैं पहिले सोमेश्वर अन्तकेश उस स्थान पर है जहां महीसागर नामी समुद्र मिलता है दूसरा रुद्रनाम जो भृगुकक्षा में है तीसरा दुग्धेश चौथा कर्दमेश पांचवां भूमेश छठा भीमेश्वर सातवां लोकनाथ आठवां त्र्यम्बक अर्थात् त्रिनयन नवां बैजनाथ दशवां भूतेश्वर ग्यारहवां गुप्तेश्वर बारहवां व्याघ्रेश इन बारहों उपलिङ्गों के दर्शन से अति आनन्द प्राप्त होता है।

उन लिङ्गों का वर्णन जो पूर्व में हैं ।

प्रयाग जो तीर्थराज कहा जाता है वहां ब्रह्मा के स्थापित किये हुये ब्रह्मेश्वरलिङ्ग सर्वोपरि हैं और सोमेश्वर नामी लिङ्ग दश हयमेध तीर्थ पर स्थित है जो सब उपद्रवों को दूर करके आनन्द देता है और भारद्विजेश्वर और माधवेश शिवटङ्क में हैं और नागेश्वर संकटेश्वर नगर में और काशी में अविमुक्तेश्वर और वृद्ध बाल और कृतबालेश्वर और तिलभाण्डेश्वर और दशाहयमेधेश्वर और मणिकूतेश्वर और तारेश्वर और गोधूमेश्वर और महाभूतेश्वर और किदारेश्वर और रामेश्वर और वटकेश्वर और पूरेश्वर और सिद्धनागेश्वर और पत्तन में दूरेश्वर और मृगेश्वर विराजमान हैं और बैजनाथ जिनकी महिमा वेद ने बखानी है और नागेश्वर और सिद्धेश्वर और कामेश्वर और विमलेश्वर और व्यासेश्वर और भाण्डेश्वर और हुंकारेश्वर और कुमारेश्वर और शुक्रेश्वर और वटेश्वर और सूर्येश्वर और भीमेश्वर और भूतेश्वर और ज्ञानेश्वर और पूरेश्वर और कोटेश्वर और स्वप्नेश्वर और कर्दमेश्वर और अचलेश्वर भी हैं और पुरुषोत्तमपुरी में भुवनेश्वर हैं जो सर्व मनोरथों को देनेवाले हैं वहां गुरु जगन्नाथ के बदले स्थित होकर दर्शन करनेवाले के सर्वकष्ट नष्ट कर देते हैं यह सब पूर्व के लिङ्ग हैं अब हम दक्षिण के लिङ्गों का वर्णन करते हैं ।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम मत्तगयन्दलिङ्ग का वर्णन करते हैं जिनको हमने यज्ञ की वेदी में स्थित किया एक समय कलियुग के प्रारम्भ में हमने इच्छा की कि एक ऐसा यज्ञ करना चाहिये जिससे धर्म अधिक होकर सर्वपाप नष्ट हो जावें यह विचार हमने विष्णु के समीप जा अपना मनोरथ कहा और यह भी कहा कि हमारी इच्छा यज्ञ करने की है आप कोई स्थान बता देवें जो अति शुद्ध हो यह सुन विष्णु ने कहा कि चित्रकूट जो प्रसिद्ध पर्वत है और जिसकी ओर देखने से पापी मनुष्य पापरहित होजाता है जहां कि मन्दाकिनी बह रही है और जिसमें स्नान करने से कोई पाप नहीं रहता और वह नदी और पर्वत के बीच धनुष् के समान है वह स्थान मुझे बहुत प्रिय है वहां जाकर तुम एक पुरी बसावो और शिवलिङ्ग भी वहां स्थापित करो हम भी वहां बारह अंगुलभर की प्रतिमा मूर्ति से प्रकट होंगे और तुम्हारे यज्ञ की वेदी में स्थित होंगे जो मनुष्य कि हमारी मूर्ति के दर्शन करेगा उसके दुःखों को दूर करदेंगे और त्रेता और द्वापर युग में अवतार लेकर संसार को आनन्द देंगे हम एकरूप से चार-रूप होकर दशरथ के घर अवतार लेंगे जहां हम चारों के नाम राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न होंगे और दशरथ की आज्ञा से लक्ष्मण और सीतासहित उसी स्थान में आकर रहेंगे फिर वहां से दण्डकवन में जाकर रामेश्वर लिङ्ग स्थापित करेंगे और उनकी सेवाकर वर पा रावण को कुल परिवार समेत वध करेंगे हे ब्रह्मन्! शिवजी की सेवा विना कोई काम पूरा नहीं होता यह बात हम तुमसे सत्य सत्य कहते हैं इसलिये तुमको उचित है कि पहिले शिवलिङ्ग को स्थापित कर फिर यज्ञ करो

जो हमारे लिये पुरी बसाना उसके लिये राजा भी बनाना हम राम अवतार लेकर उनकी वहां पूजा करेंगे यह कह विष्णु अन्तर्धान हुये और हम तुरन्त विष्णु की आज्ञा से वहीं आये और शिवलिङ्ग की स्थापना की फिर हमने अपने पुत्रों और देवताओं समेत उस लिङ्ग की बड़ी स्तुति की सो शिव वहां प्रकट हुये और मेरी प्रीति को देख उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मन् ! वर मांगो मैंने विनय की कि मेरे ऊपर कृपा करके अपने पूर्णांश से वहीं स्थित रहो क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं यहीं यज्ञ करूं और जो पुरी कि यहां बसाऊं उसके राजा आप होवें और तुम्हारे लिङ्ग का नाम मत्तगयन्द हो यात्रियों के पापों को नाश करदे जो मनुष्य कि यहां आकर तुम्हारे लिङ्ग का दर्शन न करे उसको यात्रा का कुछ फल न हो यह सुन शिवजी ने मान लिया और तुरन्त उस लिङ्ग के भीतर प्रवेश कर गये हमने उसी स्थान पर यज्ञ करके एक पुरी विष्णु के लिये बसाई जिसके देखने से पापों के समूह नष्ट होते हैं और मत्तगयन्द उसके राजा हुये और वह कैलास के नाम से प्रसिद्ध हुआ और शिवलिङ्ग के सामने मन्दाकिनी घाट शिवगङ्गा के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसके स्नान से सब पाप दूर होते हैं जो मनुष्य प्रभात को उठकर मन्दाकिनी का स्नान कर मत्त-गयन्द की पूजा करे वह सब मनोरथ पावे और मरने के उप-रान्त शिवपुरी में स्थान पावे कदाचित् वहां जाकर कोई मनुष्य शिवपूजा न करे तो यात्रा भरका फल जाता रहे जब मत्तगयन्द का दर्शन कर ले तब यात्रा का फल मिलता है रामचन्द्र ने आप वहाँ जाकर इस लिङ्ग की पूजा की है अब हम कोटेश्वर लिङ्ग का वर्णन करते हैं कि संकर्षण पर्वत के पूर्व जहां कोट-नामी तीर्थ जो महाशुद्ध है वहां कोटेश्वर नामी शिवलिङ्ग है

जिसके दर्शन पूजन और स्नान से कोई पाप नहीं रहता अन्त में उसको शिवलोक मिलता है जो मनुष्य कि संकर्षण पर्वत में जाकर तीर्थस्नान के उपरान्त कोटेश्वरलिङ्ग की पूजा करे तो सहस्र गोदान का फल पावे और उसके सर्वपाप भस्म हो जावें और शिवजी उस पर प्रसन्न रहें और चित्रकूट के दक्षिण ओर से आगे पश्चिम ओर को तुङ्गारण्य पर्वत है जहां गोदावरी नदी बह रही हैं वहां पशुपति नामी शिवलिङ्ग है जो कोई गोदावरी में स्नान करके शिवलिङ्ग की पूजा करे वह सदा संसार में प्रसन्न रहे रामचन्द्र ने पशुपतिलिङ्ग की पूजा के उपरान्त गोदावरी में स्नान किया उसके दक्षिण कालिञ्जर पर्वत है जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध है जहां बहुतों ने तप करके सिद्धि पाई है उसका नाम भुक्तक्षेत्र है जो सब पापों का क्षयकर असंख्य आनन्द देता वहां बहुत से अति पवित्र तीर्थ हैं और वहां मन्दाकिनी नदी बहती है जिसके केवल अवलोकन से पाप नष्ट होजाते हैं उस स्थान पर नीलकण्ठ शिवजी का लिङ्ग है जिसके देखने से पाप दूर होजाते हैं वह लिङ्ग गिरिजा सहित विराजमान है वह लिङ्ग राजराजों के मान है जो मनुष्य कि उस तीर्थ में स्नान करके नीलकण्ठ की पूजा करता है वह सम्पूर्ण मनोरथ पाता है और फिर आवागमन से छूट जाता है देवता और मुनि और सिद्ध आदि ने इस लिङ्ग की पूजा से परमपद पाया है कालिञ्जर तीर्थराज है जहां शिव नीलकण्ठ हैं उनकी महिमा पढ़ सुनकर फिर कोई मनुष्य संसार में नहीं उपजता यह आख्यान अति पवित्र है।

तीसरा अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन्! हमको अम्रीश

शिवलिङ्ग की महिमा विस्तार से सुनाइये ब्रह्मा बोले कि जो हमने नीलकण्ठ शिवलिङ्ग का वर्णन किया है उसके दक्षिण ओर अत्रीश्वर नाम शिवजी का लिङ्ग है जो मधुवन में विराजमान है कि अत्रि हमारा पुत्र जो अनसूया का पति है उसने चित्रकूट पर्वत के निकट अति श्रम से स्त्री सहित तप किया है और शिव के ध्यान में लग रहा इतने में ऐसा काल पड़ा कि एकसौ वर्ष तक संसार भर में पानी न बरसने से अति विकल रहा यहां तक कि मुनीश्वरों को भी अति दुःख प्राप्त हुआ सब कुवें तालाब नदी समुद्र आदि सूख गये और वृक्षादि भी सूखे बिन वर्षा किसी को चैन न पड़ा शुभ कार्य दिन २ घटने लगे ऐसी दशा देख अनसूया ने अत्रि से कहा कि संसार भर दुःखी है ऐसा कोई उपाय करो जिसमें जल बरसे और धरती में आनन्द होवे पर अत्रि उसी तरह योग धारण किये हुये बैठे रहे कुछ अनसूया का वचन न सुना तो जो अत्रि के शिष्य थे वह भी वर्षा न होने के कारण दुःखी हो चले गये तब तो अनसूया दृढ़तापूर्वक पार्थिव पूजा करने लगी शिव प्रकट हुये जिनके देखने को देवताओं और मुनीश्वरों का समूह इकट्ठा हो गया यहां तक कि गङ्गा आदि सम्पूर्ण तीर्थ भी दौड़े आये अत्रि और अनसूया का तप देख सब आश्चर्य में हुये और विष्णु आदि सबने कहा कि तप के निमित्त कौन श्रेष्ठ है निदान यह बात ठहरी कि तपके लिये शिव से अधिक कोई श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि वेद की भी यही आज्ञा पाई गई उसके उपरान्त देवता आदि सब अपने २ स्थानों को चले गये पर गङ्गा वहीं रहीं क्योंकि शिव वहां विराजमान थे और इसी प्रकार चौवन वर्ष अत्रि मुनि को तप करते हुए बीत गये एक दिन अत्रि ने ध्यान छोड़कर कहा कि जल दो सो अनसूया कमण्डलु हाथ में

लेकर वन के मार्ग से जल लेने गई गङ्गा ने अनसूया को चिन्तित देखकर कहा हे अनसूया! कुछ चिन्ता मत करो तुम धन्य हो कहां जाती हो तुम्हारी इच्छा मैं पूरी करूँगी यह सुन अनसूया अति प्रसन्न हुई और कहा कि तुम कौन हो क्यों यहां खड़ी हो तुम्हारे देखने से मुझको तुम्हारी बड़ी प्रीति उपजी है गङ्गा ने कहा कि इस स्थान पर शिव ब्रह्मा विष्णु आदि तुम्हारी और तुम्हारे पति की पूजा देखने के लिये आये थे और तुम दोनों की प्रशंसा करते हुये अपने २ लोक को चले गये पर हम शिव के रहने से उनके प्रेम के कारण यहां रहगई हैं मैं तुम्हारे अधीन हूं जो तुमको चाहिये वह हमसे वर लो अनसूया बोली कि यहीं स्थित रहो गङ्गा वहीं रहीं और अनसूया ने जल कमण्डलु में भर अत्रि को दिया अत्रि ने जल पी चिन्तित हो अनसूया से कहा कि यह जल तुमने कहां से पाया है अनसूया ने सब हाल कह सुनाया अत्रि ने तुरन्त उठ गङ्गा को देखा और स्नान कर गङ्गा की स्तुति की और अनसूया ने भी बड़े आनन्द से गङ्गाजी में स्नान किया फिर गङ्गाजी ने कहा कि अब मैं जाती हूं तब दोनों ने हाथ जोड़ विनती की कि तुम यहीं रहो गङ्गाजी ने कहा कि जो एक वर्ष की शिव पूजा का फल हमको दो तो हम रहें अनसूया ने मान लिया और गङ्गा वहां स्थित हुईं इतने में शिव प्रसन्न हो उसी स्थान में अपने मुख्य चिह्नों समेत प्रकट हुये और अत्रि ने शिवजी को शक्ति समेत देख स्तुति की शिवजी बोले कि हम प्रसन्न हैं जो चाहिये वर ले लो अत्रि और अनसूया ने यह सुन कर विनती की कि जो तुम प्रसन्न हो तो यहीं स्थित होजावो शिव अच्छा कह गङ्गा सहित वहां रहे जहां कि अत्रि और अनसूया ने लिङ्ग की स्थापना की थी

और अत्रीश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये और गङ्गा का नाम मन्दाकिनी प्रसिद्ध हुआ उसी स्थान पर बहुत से मुनि अपने परिवार सहित आकर स्थित हुये जो गङ्गा किनारे खेती और यज्ञ करने के अनन्तर शिवजी को प्रसन्न करते रहे फिर शिव प्रसन्न हुये जिससे भलीभांति वर्षा हुई और सबको आनन्द प्राप्त हुआ अत्रि और अनसूया धन्य हैं जिन्होंने शिवजी को प्रसन्न कर वर्षा कराई जो मनुष्य अत्रीश्वर के दर्शन करेगा उसके सब मनोरथ पूरे होंगे जो अत्रीश्वर चरित्र को पढ़े सुनेगा उसको इस लोक में आनन्द और परलोक में परमपद प्राप्त होगा ।

चौथा अध्याय ।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी बोले कि नर्मदा नदी के तट पर असंख्य शिवलिङ्ग हैं जिनकी गणना नहीं होसकी और जितने पत्थर नदी में पड़े हैं वह सब शिवरूप हैं उनकी बड़ी महिमा है पर हम प्रसिद्ध २ लिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनके केवल दर्शन से आनन्द प्राप्त होता है वे ये हैं अवतारेश्वर, परमेश्वर, सुखेश्वर, ब्रह्मेश्वर, रमेश्वर, विमलेश्वर, मदनेश्वर, कुमारेश्वर, पुण्डरीकपति, मण्डपेश्वर, तीक्ष्णेश्वर, धनुर्धरेश्वर, शूलेश्वर, कुम्भेश्वर, कुबेरेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर, नागेश्वर, रामेश्वर, नन्देश्वर, कराटकेश्वर, चन्द्रेश्वर जहां पर कि समुद्र मिलता है वहां धृतकेश शिव का भी लिङ्ग है और सुरतेश्वर, वरचलेश्वर, सोमेश्वर, मङ्गलेश्वर, हरेश्वर, इन्द्रेश्वर और दयेश्वर भी हैं जो दोनों लोक में आनन्द देते हैं और नन्दिकेश्वर रेवा नदी के किनारे हैं उसी स्थान पर ब्रह्महत्याहर तीर्थ भी है इतना सुन नारदजी बोले हे ब्रह्मा ! लिङ्ग की महिमा और ब्रह्महत्याहर तीर्थ का हाल विस्तार से कहिये ब्रह्माजी बोले

कि जब कौरव और पाण्डवों में बड़ा युद्ध हुआ था और जिसमें दोनों ओर से बहुत से जीव मारे गये युधिष्ठिर ने कि शत्रुओं को जीता भी पर तो भी मन को कुछ आनन्द न हुआ मन में हर समय लज्जा और दुःख बना रहा सो एक दिन राजा युधिष्ठिर ने अति विकल हो श्रीकृष्ण से कहा कि हमने अपने कुल को नष्ट किया इससे प्रति समय मेरे मन में उदासी छाई रहती है क्योंकि मुझको नाना प्रकार की हत्या लगी हैं ऐसी हत्याओं के दूर करने के निमित्त जो उपाय आप जानते हों वह कहिये श्रीकृष्ण बोले कि नन्दिकेश्वर जो शिवजी का लिङ्ग है उसी के दर्शन से सब पाप दूर हो जाते हैं उसकी पूजा से सिद्धि प्राप्त होती है और जो उनकी सेवा करते हैं वह तो साक्षात् शिवरूप हैं और जो नन्दिकेश्वर में अर्थात् रेवानदी में एक हत्याहरण तीर्थ भी है जिसके देखने से पाप दूर होते हैं उसी रेवानदी के पश्चिमी तट पर कर्णिकापुरी है उसकी महिमा अति प्रसिद्ध है जहां घर २ शिवजी की सेवा होरही है और असंख्य शिवालय वर्तमान हैं रात दिन वहां के मनुष्य शिवजी के भजन में लगे रहा करते हैं वहां दुःख का लेश भी पाया नहीं जाता वहां एक ब्राह्मण भी रहा करता था जो उतथ्यवंश में उपजा था वह काशी में मर गया उसके सातों पुत्रों ने उसके धन को परस्पर बांटा कुछ दिनों के पीछे उन लड़कों की माता ने मृत्यु के समय अपने पुत्रों से कहा कि मुझको केवल काशी देखने की इच्छा रह गई है सो अब मेरा पहुँचना कठिन है पर हमारी हड्डियां काशी में पहुँचा देना सो इस बात को बड़े पुत्र ने माना और माता के मरजाने के उपरान्त जब कि क्रिया कर्म से सुचित्त हुये तो वही बड़ा पुत्र जिसका नाम सुबाहु था अस्थि ले अपने नौकर समेत काशी में गया और पहिले दिन

घर से चल बीस योजन पर गांव में एक ब्राह्मण के घर ठहरा जब चार घड़ी रात बीती तो घर का स्वामी अर्थात् ब्राह्मण बाहर से घर आया और गौ को घर में बांध चाहा कि दूध दुहे उसके बच्चे ने कोपित हो उस ब्राह्मण को इस वेग से एक लात मारी कि वह मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा फिर ब्राह्मण ने उठकर उस बच्चे को इतना मारा कि वह मूर्च्छित हुआ और गौ दुहकर बच्चे को रस्सी से बांध दिया छोड़ा नहीं यह अपने बच्चे की दशा देख गौ रोई बच्चे ने बहुत समझाया पर कुछ न माना और कहा कि प्रभात को जब ब्राह्मण का पुत्र मुझको दुहने आवेगा जब तक मैं अपने सींगों से छेद के मार न डालूंगी तबतक मेरा क्रोध दूर न होगा बच्चे ने कहा कि तुमको बड़ा पाप होगा वह शाप क्योंकर दूर होगा यह बात उचित नहीं गौ ने कहा कि वह स्थान मुझे स्मरण है जहां जाने से हत्या नष्ट हो जाती है यह सुन बच्चा तो चुप होगया और वह विदेशी ब्राह्मण गौ का वचन सुन आश्चर्य में हुआ और इस बात के याचने के लिये अपना जाना बन्दकर इस बात के तमाशा देखने को वहीं रहा जब भोर हुआ ब्राह्मण तो बाहर चला गया उसके पुत्र ने चाहा कि गौ दुहूं गौने अपने सींगों से मारकर ब्राह्मण के पुत्र को बध करदिया यह दशा देख सब पड़ोसी बान्धव ब्राह्मण के इहां इकट्ठे होगये और गौ को छोड़ दिया और वह जो श्वेतरङ्ग की थी तुरन्त काली होगई और पूंछ उठाये कई वेर भाग चली विदेशी ब्राह्मण जो हत्याहरणस्थल देखना चाहता था गौ के पीछे नौकर समेत चला गौ नर्मदा में जहां नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग हैं गई और तिस समय स्नानकर वैसीही श्वेत होगई ब्राह्मण ने देख बड़े आश्चर्य से कहा धन्य है यह तीर्थ और यह स्थान अतिशुद्ध है और आप नौकर समेत स्नानकर

आगे चला मार्ग में उसको एक सुन्दर स्त्री मिली उसने कहा ठहर जाओ अपनी माताकी हड्डियां इसी तीर्थमें छोड़ दो तेरी माता देवतों के समान होकर मुक्ति पावेगी क्योंकि सदा वैशाख शुक्ल सप्तमी को गङ्गा यहां आया करती हैं सो आज वही दिन है और मैं वही गङ्गा हूं उसी तीर्थ में जाती हूं यह कहकर वह गङ्गा अन्तर्धान होगई और ब्राह्मण ने भी लौटकर हड्डियों को उसी स्थान पर डाल दिया सो ब्राह्मण की माता देवीरूप होगई और उसने अपने पुत्र को बहुत अशीषें दीं फिर शिव-लोक को चली गई ब्राह्मण ने आकर यह समाचार सबको सुनाया इतना सुन नारद ने पूछा कि किस कारण वैशाख की सप्तमी को गङ्गा वहां आती हैं और नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग उस स्थान पर क्योंकर स्थित हुआ ब्रह्माजी बोले कि पूर्वकाल में ऋषिका नाम एक विधवा ब्राह्मणी शिवजी की बड़ी भक्ता थी वह लड़कपन में विधवा हुई उसने पार्थिव पूजनकर अति तप किया सो उसी तप में एक सुर नाम दानव ने चाहा कि ब्राह्मणी के साथ भोग करके उसका तप नष्ट कर दें सो ब्राह्मणी अति विकल हो शिवजी की स्तुति करने लगी और कहा मेरी लज्जा सब आपके हाथ है क्योंकि तुम सदा अपने भक्तों की रक्षा करते हो शिव तुरन्त प्रकट हुये और दानवों को मार डाला और ब्राह्मणी से कहा कि जो इच्छा हो हमसे वरदान मांग ले ब्राह्मणी ने प्रसन्न होकर शिवकी बड़ी स्तुति की और कहा कि अब कौन वस्तु है जो मुझको प्राप्त नहीं है तुमने अपने दर्शन से मुझको कृतार्थ करके सब कुछ दिया है यह स्तुति सुनकर शिव अति प्रसन्न हो बहुत वर दे अन्तर्धान हुये और पूर्ण अंश से लिङ्गस्वरूप होकर नन्दिकेश्वर नाम से उसी स्थान पर स्थित होगये और वहीं अंश रूप हो वितललोक में

हाटकेश्वर के नाम से प्रकट हुये उस समय ब्राह्मणी ने गङ्गा से कहा कि तुम भी इसी स्थान पर स्थित हो जावो मेरी यह इच्छा है क्योंकि तुम्हारे दर्शन से मुझको बड़ा आनन्द हुआ है गङ्गा ने कहा कि तुम सी कोई धन्या, भाग्य की पूरी संसार में दूसरी स्त्री नहीं जिसके लिये शिव प्रकट हुये हैं मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं और मैं तुमसे कहती हूं कि हम सदा वैशाख शुक्लपक्ष की सप्तमी को आया करेंगी यह कह गङ्गा अन्तर्धान हुई उसी दिन से वह स्थल तीर्थ हो गया जहां सब मनोरथ पूरे होते हैं और जिसके स्नान से सम्पूर्ण प्रकार के पाप शान्त हो जाते हैं यह चरित्र अति पवित्र और दोनों लोक में आनन्द देनेवाला है ।

पांचवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! रेवा के किनारे असंख्य शिवलिङ्ग हैं जिनको बुद्धिमान् जान सक्के हैं यह रेवा नदी शिव को बहुत प्यारी गिरिजाके समान है और जिसके पत्थर शिवलिङ्ग के समान हैं वे पत्थर सबके पूजने के योग्य हैं उसके दोनों तटों पर शिव के असंख्य मन्दिर विराजमान हैं वहां देवता मुनि आदि प्रति दिन पर्यटन किया करते हैं और अपनी पत्नियां सहित शिव की पूजा में लगे रहते हैं उसके उत्तर की ओर कपीश्वर शिव-लिङ्ग हनुमान् का स्थापित किया हुआ वर्त्तमान है वहां पर हनुमान् ने बड़ा तप किया था जिससे उनकी ब्रह्महत्या का पाप छूट गया इतना सुन नारद ने पूछा कि आप इस चरित्र को विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्मा ने कहा कि शिव रामचन्द्र की कामना पूर्ण होने के निमित्त वानर का रूप धार हनुमान् के नाम से प्रकट हुये थे और हर प्रकार से रामजी की सहायता कर दूत के नाम से प्रसिद्ध हुये और सीता के समाचार लाने के

उपरान्त समुद्र में कूद गये और लङ्का को जला दिया रावण के लड़के को मार डाला और समुद्र में सेतु बांधा और सब सेना उतार ले गये रामचन्द्र को कुछ श्रम न करने दिया और आप रावण को कुल सहित मार डाला और रामचन्द्र और लक्ष्मण के सब दुःख दूर कर महिरावण की भुजा उखाड़ ली लक्ष्मण को जिलाया और रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता समेत आकर समय तक राज्य करते रहे पर रामचन्द्र रावण ब्राह्मण के वध करने से समय तक पश्चात्ताप करते रहे निदान नैमिषारण्य में जहां हत्याहरण तीर्थ है उसमें अपने भाई सहित जाकर अपने पाप दूर किये और उसमें लक्ष्मण सहित स्नान करके शिवलिङ्ग की स्थापना की जिससे वह अति पवित्र हो गये एक दिन हनुमान् कैलास पर्वत पर गये और अति गर्व से शिवजी के दर्शन की इच्छा कर चले नन्दीश्वर ने आकर रोका और कहा कि तुम इतनी जल्दी शिव के दर्शन किया चाहते हो तुम शिव के दर्शन योग्य नहीं तुमने तो रावण ब्राह्मण को वध किया है तुम अपने गर्व में धर्म को भूल गये अब तुमको चाहिये कि रेवा के किनारे जाकर शिवलिङ्ग की स्थापना करो तब तुम्हारा पाप दूर होगा तब शिव के दर्शन को आना शिव तुम पर कृपा करेंगे यह सुन हनुमान् ने रेवा नदी के तट पर जाकर शिवलिङ्ग स्थापित किया और उसकी पूजा करने लगे और बार २ शिव को प्रणाम करके बड़ी स्तुति की तब शिव प्रसन्न हुये और हनुमान् के पास प्रकट होकर कहा कि हम बहुत प्रसन्न हैं तुम तो हमारे रूप हो हमने तुमसे यह तप इसलिये कराया कि संसार में ब्राह्मण की बड़ाई स्थिर रहे यह कह कर शिव अन्तर्धान हुये और हनुमान् के सब दुःख दूर हो गये और उन्होंने कैलास में जाकर शिव का दर्शन पाया फिर

कोई पाप न रह गया जो कोई मनुष्य पवनेश्वरलिङ्ग की पूजा करता है उसका कोई पाप नहीं रहता जो मनुष्य इस चरित्र को पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द और मोक्ष पावेगा।

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! एक दिन हम और विष्णु दक्षिण की ओर जा रेवानदी के तटपर स्नानके उपरान्त बैठगये उस स्थान पर सब देवता और मुनिआदि इकट्ठे हुये और एक उत्तम सभा रचीगई सो सबने हमसे और विष्णु से पूछा कि तुममें वह कौन मनुष्य है जो नाशरहित, ब्रह्म, निर्दोष, सर्वसृष्टि का स्वामी, निर्गुण, अलख, ईश्वरों का ईश्वर, सबसे श्रेष्ठ, विश्वंभर और नष्ट करनेवाला है कृपा करके वर्णन करो सो हमने पहिले शिवकी माया में पड़कर कहा कि हम परब्रह्म तीनों लोक के स्वामी सबसे श्रेष्ठ हैं यह बात हमारे नामों से जो वेद कहते हैं प्रकट है यह मेरा वचन सुनकर विष्णु क्रोधित हो कहने लगे कि तुम बिन जाने ऐसी बातें वेदके विरुद्ध मत कहो क्या तुमने वेद सब भुलादिये तुम तो वही हो जो हमारी नाभि-कमल से उपजे तुम तो हमारे अधीन हो वरन् हम परब्रह्म हैं हमसे बड़ा कोई संसार में नहीं हमको वेद और पुराण सब ब्रह्म कहते हैं तुम अपने नामों के गर्व में मत रहो क्योंकि अन्धे का नाम नयनसुख भी होता है और कृपण का नाम उदार होता है निदान हमने विष्णु का वचन न माना और शिवकी माया में हम दोनों ने भूलकर परमतत्त्व को विस्मरण किया और अपने को परब्रह्म ठहराया निदान यह बात ठहरी कि वेद जिसको सर्वोपरि कह देवें वही बड़ा समझा जावे हमारे स्मरण करने से वेद आये पूछने पर उन्होंने कहा कि तीनों गुण से भिन्न जो प्रकाशवान् हैं और जिनके शरीर में करोड़ों

ब्रह्माण्ड हैं वह सदाशिव हैं जो प्रलय करनेवाले हैं वे एकही तरह सदा रहते हैं जिनका योगी बड़े उपाय से ध्यान करते हैं इसी प्रकार शिव की बड़ी प्रशंसा की यह सुन हम दोनों ने मूर्खता से यह वचन कहा कि शिव तो निर्गुण, विष के खानेवाले, जटाधारी, वृषपर सवार होनेवाले, नग्नशरीर, योगी, सर्पों के भूषण पहननेवाले, औढर भूतों प्रेतों के साथी और अशुभवस्त्रधारी हैं वे परब्रह्म क्योंकर हो सक्ते हैं यह कह हम दोनों ने हँस २ कर वेदों को चुप करा दिया यह हमारी दशा देख प्रणव ने कहा कि तुम दोनों संसार उपजानेवाले और पालनकर्ता हो ऐसी मूर्खता न करो तुम वेद के वचन मत छोड़ो और शिव को परब्रह्म समझो उन्होंने तुम्हारे लिये चाहे वे निर्गुण हैं पर बहुत शरीर धारण किये उनके अगणित चरित्र और असंख्यभाव देखकर सत्यमार्ग को मत भूलो पर यह प्रणव का वचन हमपर गुणदायक न हुआ तब तो शिवजी ने चाहा कि हम दोनों के अहंकार का नाश करें जैसा कि आगे वर्णन होता है।

सातवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि उस समय उन झगड़ों में हम दोनों के सामने एक बड़ी ज्वाला दिव्यरूप से प्रकट हुई जो पृथ्वी से आकाश तक थी उसका आदि अन्त नहीं जाना जा सक्ता था तिस पीछे शिवजी कृपादृष्टि से लिङ्गरूप धारकर उस स्थान में रेवानदी के किनारे उत्पन्न हुये क्योंकि शिवजी अपने भक्तों के क्लेश दूर करने के लिये करोड़ों युक्तियां करते हैं शिवजी के प्रकट होते ही सबका अहंकार जाता रहा और पृथ्वी प्रकाशवान् होगई सब जय २ शब्द कहने लगे वह लिङ्ग आठ अंगुल का था और चार अंगुल नीचे और चार अंगुल ऊपर था इस

लिङ्ग के प्रकट होते ही शिवजी के गण शिवलोक से आये और लिङ्ग को पूजने लगे फिर देवताओं और मुनीश्वरों ने पूजा की उस स्थान पर बड़ा आनन्द हुआ और सबका शोक जाता रहा नाना प्रकार के बाजे बजने लगे और सबों ने अपने २ मुख से शिवजी का यश गाया और हम और विष्णुजी भी लिङ्ग के निकट आये तब विष्णुजी ने कहा कि यह कौन तीसरा मनुष्य है हमने कहा कि हे विष्णुजी ! हमारा और आपका इसी बात पर निर्णय हो जायगा अर्थात् जो यह लिङ्ग चार अंगुल नीचे और चार अंगुल ऊपर है उसको जो छू लेगा वही हम दोनों में परब्रह्म है विष्णुजी ने मानकर कहा कि हम नीचे का भाग छुवेंगे और तुम ऊपर के भाग को छुवो विष्णुजी शूकर का रूप धारकर नीचे को चले और हम हंस बनकर ऊपर को उड़े शिवजी ने ऐसी लीला की कि वह लिङ्ग अतुललोक तक चला गया जिस से वहां के लोग कृतकृत्य होगये और अतलवालों ने शिवलिङ्ग को भले प्रकार पूजा और शिवजी की स्तुति मयदानव के पुत्र ने की उस समय विष्णुजी वहां आये और शिवजी ने अपने लिङ्ग को बहुत बढ़ाया यहां तक कि वितललोक में पहुँचा वहां के मनुष्यों ने शिवलिङ्ग की बड़ी पूजा की इतने में विष्णुजी भी वहां पहुँचे पर वह लिङ्ग और नीचे को चला गया और सुतललोक में पहुँचा वहां राजा बलि ने उनकी बड़ी पूजा की जब विष्णुजी वहां पहुँचे तो शिवजी का लिङ्ग बढ़कर तलातल में गया वहां त्रिपुरासुर ने उनकी पूजा की जब विष्णुजी वहां पहुँचे तो लिङ्ग बढ़कर महातल में पहुँचा जहां तक्षक आदि ने उनकी पूजा की वहां विष्णुजी के पहुँचने के समय वह लिङ्ग बढ़कर रसातल में गया जहां दानव के पुत्र दत्त ने उनको पूजा

विष्णुजी वहां गये तो शिव का लिङ्ग बढ़कर तुरतही पाताल में गया जहां वासुकि नागादि ने उनकी पूजाकी इसी प्रकार विष्णुजी चौदहों भुवन में गये पर लिङ्ग को न छूने पाये जब लिङ्ग शेष-लोक में गया तब शेषजी ने उनका बड़ी धूमधाम से पूजन किया अन्त में वह लिङ्ग विष्णुजी को पीछे २ फिरते देखकर गुप्त होगया और विष्णुजी थककर लौट आये और शिवजी को सबसे बड़ा समझने लगे और बड़े लज्जित हुये हे नारद ! शिवजी ऐसे ऐसे चरित्र करते हैं तुम भले प्रकार से विचार लो ।

आठवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! इस तरह तो विष्णु का अहंकार दूर हुआ अब मेरी गति सुनो कि जब हमने चाहा कि शिव-लिङ्ग के ऊपर हाथ रक्खें तो वह लिङ्ग तुरन्त भुवर्लोक को गया जहां गुह्यकादि ने शिवजी के लिङ्ग की पूजा की फिर वह लिङ्ग सूर्यलोक में पहुँचा जहां कि सूर्य ने उनका पूजन किया इतने में हम वहां जा पहुँचे पर शिवलिङ्ग स्वर्गभवन में पहुँचा जिसका प्रमाण वेद ने सूर्यलोक से ध्रुव तक वर्णन किया है उसके भीतर और बहुत से लोक हैं फिर शिव मुझको पीछा करते समझ चन्द्रलोक में गये जहां कि चन्द्रमा ने उनकी बड़ी पूजा की इसी प्रकार वह लिङ्ग उडुलोक, शक्रलोक, भूमिलोक, बृहस्पतिलोक, सप्तर्षिलोक, महर्लोक, जनलोक, विष्णुलोक, स्कन्दलोक, शिवलोक, गोलोक आदि में गया जहां उनकी बड़ी पूजा हुई और जब हम पहुँच जाते थे तो तुरन्त शिवलिङ्ग आगे को चला जाता था निदान मैं अति दुःखी हुआ तब केतकीपुष्प ने मुझसे कहा कि तुम यहां हो कहां चले और तुम इतने घबड़ाये हुये क्यों हो सो हमने अपना सब वृत्तान्त वर्णन कर दिया

केतकी के पुष्प ने हमसे कहा कि हम तुम्हारी सहायता करेंगे अब तुम लौट चलो यह बात हम सबके सामने कह देंगे कि तुमने शिवकी मूर्ति को छू लिया है यह बात सुनकर हम उसके साथ चले मार्ग में सुरभी हमको मिली उसने हमसे वृत्तान्त पूछा सो हमने सब वृत्तान्त उससे भी कह सुनाया उसने भी हमसे प्रतिज्ञा की कि हम तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर देंगे यह कहकर वह भी हमारे साथ चली और हम अति अहंकार से दोनों को साथ लिये हुये विष्णु के समीप आये ।

नवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हमने दोनों को साथ लिये हुये विष्णु के पास आकर उनसे पूछा कि तुमने शिवलिङ्ग को छू लिया विष्णु ने निषेध करके हमसे पूछा तो हमने कहा कि हां वास्तव में हमने लिङ्ग को स्पर्श किया है जो तुमको निश्चय न हो तो हमारे दोनों गवाहों से पूछ लो दोनों ने कहा कि हे विष्णो! हम पक्षपातरहित कहते हैं कि शिवलिङ्ग को ब्रह्माजी ने छू लिया है और ब्रह्माजी की विनती के अनुसार शिव ने हम दोनों को तुम्हारे सामने साक्षी देने को भेजा ऐसे दोनों के झूठ वचन सुन शिव अति क्रोधित हुये और ऊंचे शब्द से आकाशवाणी हुई कि हमारा लिङ्ग कब ब्रह्माजी ने छुआ है तुम दोनों धर्म के विरुद्ध क्या झूठ बकते हो केतकी आज से हमारे शिर पर न चढ़ेगी और हे सुरभी! जिस मुख से तुमने यह बात कही और अपने को नीच बनाया उसी मुख से कलियुग में तुम विष्ठा भक्षण करोगी तब हमको ज्ञान हुआ कि जिसने हमारे अहंकार को दूर कर दिया वही सबसे श्रेष्ठ है फिर हमने शिव का एक और लिङ्ग देखा और नाना प्रकार के शिव के रूप दिखाई दिये कहीं वे गणपति सहित

और कहीं देवी के साथ और कहीं शिव को सब देवता और मुनीश्वर पूजते हुये और कहीं हम और विष्णु पूजा करते हुये देखा जब विष्णु और हमने आंखें खोलीं तब केवल शिव का एक स्वरूप भासित हुआ और जब कि शिवजी ने अपनी माया खींची तब हमने उनको अपना स्वामी जाना और दोनों ने हाथ जोड़ बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिवजी! हमको अपना सेवक जानकर यहीं प्रकट हो जाइये सो शिव प्रकट हुये उस स्वरूप का हम बखान नहीं कर सक्के जिस स्वरूप से शिवजी उस स्थान पर प्रकटे हम दोनों दर्शन करते ही कृतार्थ होगये और स्तुति करने लगे और अपने अपराधों का क्षमापन चाहा फिर सुरभी ने विनती की कि यद्यपि मैंने बड़ा पाप किया है पर मेरी यह इच्छा है कि मेरे शिर पर हाथ रखकर आप मेरे पाप दूर करदें और दूसरा यह मनोरथ है कि मैं अपने दुग्ध की धारा से आपका अभिषेक करूं यह कह हम और विष्णु और सुरभी ने बड़ी प्रसन्नता से अपने परिवार और गणों को बुलाया वहां पर एक बड़ी सभा स्थित हुई और सबने शिवजी की पूजा की और बार बार शिवजी की स्तुति की और शिवजी को सबसे श्रेष्ठ समझा शिवजी ने हम सबकी स्तुति सुनकर कहा कि हम केवल तुम्हारे गर्व के दूर करने को लिङ्गरूप होकर प्रकटे कि तुम्हारे अहंकार का नाश कर तुमको अप्रमेय आनन्द कृपा करें अब आगे ऐसा दुःखदायक विचार न करना और यह दूसरा लिङ्ग जो हमने प्रकट किया है उसकी महिमा सुनो कि इसकी पूजा से सब रोग दूर हो जावेंगे इससे अधिक और कोई लिङ्ग अहंकार के नाश करनेवाला न होगा जो हमारे इस लिङ्ग की पूजा करेगा उसके घर सम्पूर्ण प्रकार की ऋद्धि सिद्धि बनी रहेंगी उसको कभी अधर्म की बुद्धि न उपजेगी जैसे

कि कमल के पत्ते पर जल स्पर्श नहीं करता उसको दोनों लोक में मनोरथ प्राप्त होंगे यह सबको वर दे शिव अन्तर्धान होगये और सर्व मनुष्य जय जय कह अपने अपने स्थान को चले गये जो मनुष्य इस चरित्र को पढ़ेगा वह अति प्रसन्न रहेगा और मोक्ष पावेगा दक्षिण के लिङ्ग सम्पूर्ण हुये ।

दशवां अध्याय ।

पश्चिम के लिङ्गों का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब हम पश्चिमदेश के शिवलिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनकी पूजा दर्शन और ध्यान से भक्तों को धन सम्पत्ति आदि यश कीर्ति असंख्य प्राप्त होती है सर्व पाप नष्ट होजाते हैं द्रुपदपुरी में रामेश्वर विराजमान हैं और वहां शिव का दूसरा लिङ्ग कालेश्वर भी है और मथुरा में गोपेश्वर लिङ्ग है जिसकी पूजा से गोपों को अति सुख प्राप्त हुआ और कृष्ण ने भी उन्हीं की पूजा से तीनों लोक का राज्य पाया और वहां शिव का दूसरा लिङ्ग रङ्गेश्वर नामी है और कान्यकुब्जपुर अर्थात् कन्नौज के निकट मदारेश्वर शिवलिङ्ग है जिसके देखने से सर्वपाप नष्ट होजाते हैं और द्वारका में द्वारकेश्वर शिवलिङ्ग है जो महाआनन्द कृपा करते हैं अब हम उन लिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनकी महिमा तीनों लोक जानते हैं पश्चिम समुद्र के तट पर गोकर्ण तीर्थ है जहां बड़ा पाप भी नहीं रहसक्ता जिसके केवल स्मरण से तीनों प्रकार के ताप दूर होजाते हैं और ब्रह्महत्या आदि बड़े २ पाप जिस स्थान के केवल देखने से भागजाते हैं जिस प्रकार कि शिव के स्थान मन्दराचल आदि हैं इसी प्रकार गोकर्ण भी उनका स्थल है जैसा कि वेद और पुराणभी इस बातको कहते हैं जिस तरह से कि सूर्य के उदय से अँधियारा और तारे आदि नष्ट होजाते हैं उसी तरह गोकर्ण के

देखने से सर्व पाप नष्ट होजाते हैं दूसरा कोई स्थान ऐसा पापों के क्षय करनेवाला नहीं है वहां असंख्य मनुष्यों ने तपकर मोक्ष पाया है और जहां कि हम और विष्णुआदि देवताओं समेत रहकर सेवा में लगे रहते हैं और जो फल कि और स्थानों में करोड़ों वर्ष के तप से प्राप्त होता है वह गोकर्ण में केवल एक दिवस में मिलता है ऐसा जो गोकर्णक्षेत्र है वहां महाबलनामी शिवलिङ्ग है जिसको रावण ने पकड़ न पाया उस लिङ्ग को गणपति ने उसी स्थान पर स्थापित किया यद्यपि उस स्थान पर और करोड़ों लिङ्ग हैं पर सबके राजा महाबल हैं वे पूर्ण शिवके रूप हैं उनका मन्दिर सुवर्ण और रत्नों से अलंकृत है और चारों द्वारोंपर सब देवता स्थित रहते हैं अर्थात् विष्णु, हम, इन्द्र, आठों वसु, मरुद्गण, विश्वेदेव, सूर्य और चन्द्रमा तारोंसमेत पूर्व के द्वार पर रहते हैं और मृत्यु, अग्नि अपने गणों सहित और पितृगण और चित्रगुप्त और रुद्रगण दक्षिण के द्वार पर स्थित हैं और गङ्गाआदि प्रसिद्ध नदियां अन्य नदियों और समुद्रसहित पश्चिम के द्वार पर रहते हैं और पवन और कुबेर और चण्डी और जगन्माता भद्रकालिका उत्तर के द्वार पर विराजमान हैं यह सम्पूर्ण शिव को अपनी पूजा सेवा और उत्सव से प्रसन्न करते हैं और चित्रसेन और विश्वावसुआदि सर्व गन्धर्व महाबल लिङ्ग का प्रतिदिन यश गाते हैं और पूर्वचित्ती मेना और घृताची और रम्भाआदि नृत्य से शिवको प्रसन्न करती हैं और क्रतु, वशिष्ठ, कश्यप, याज्ञवल्क्य, विकल्प, अङ्गिरस, जैमिनि, भरद्वाज, विश्वामित्र, भृगु राजऋषि और मुनि सीसन्त आदि और अत्रि और मरीचि और दक्ष और हे नारद ! तुम और संन्यासी और वनचारी और सब आश्रमों के उत्तमोत्तम मनुष्य उनकी

सेवा में लगे रहते हैं महाबललिङ्ग सर्वोपरि है जिनकी सेवा देवता करते हैं और सब मिल उनको प्रणाम करते हैं और नाच और गाने से उनको हर्ष देते हैं वे सब देवताओं के स्वामी हैं सिवाय इनके और करोड़ों शिवलिङ्ग और तीर्थ वहां हैं जिन की सेवा से बड़े २ दुःख और पाप नष्ट होते हैं और आप वेद उनकी महिमा वर्णन करते हैं महाबललिङ्ग का रङ्ग कृतयुग में श्वेत और त्रेता में लाल और द्वापर में पीला और कलियुग में श्याम होता है सो युगके अनुसार महाबललिङ्ग का उसी रङ्ग में ध्यान करना चाहिये ब्रह्महत्यादि पाप भी महाबल के दर्शन से दूर होजाते हैं और दोनों लोक में सिद्धि प्राप्त होती है जो मनुष्य परस्त्री से भोग करते हैं और अनाचारी, दुश्शील, कृपण, नपुंसक, मूर्ख, वितण्डावाद करनेवाले, चोर, कामी और जुवा खेलनेवाले आदि जो बड़े २ पापी हैं वे भी महाबल के दर्शन कर पापों से शुद्ध होजाते हैं वहां अगस्त्यमुनि ने तप किया है और सनकादिक ने भी उसी स्थान पर तप किया है और नैर्ऋति के पुत्रों ने भी उसी शिवलिङ्ग की पूजा कर राज्य पाया और वह्नि भी उसी स्थान पर तप करके दिक्पति हुआ और कामदेव ने उसी स्थल पर तप करने से संसार को फँसाया और शिशुमार और भद्रकालिका और दुर्मुख मुनि और नाग और इलावर्त और गरुड़ और रावण और कुम्भकर्ण और विभीषण आदि सैकड़ों भक्तों ने उनकी सेवाकर अपना २ मनोरथ पाया हम कहां तक उनका वर्णन करें उस क्षेत्र में असंख्य लिङ्गस्थापन किये हुये हैं जो स्थापन करनेवालों के नामों से प्रसिद्ध हैं जिनकी पूजा से परमपद प्राप्त होता है जिस तरह कि गोकर्णक्षेत्र अति पवित्र है उसी प्रकार महाबल शिवकी अप्रमेय महिमा जो कोई मनुष्य वहां जाकर चतुर्दशी

को व्रत करे वह अति सुगमता से अपनी कामना पाता है वहां मित्रसह ने जाकर हत्या से छुट्टी पाई और वह मुक्ति पा पापों से रहित हुआ।

ग्यारहवां अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि आप मित्रसह का वृत्तान्त वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि यह महाबल शिवलिङ्ग का चरित्र मित्रसह के वृत्तान्त समेत गुप्त रखने के योग्य है जिसको गौतम ने प्रकट किया प्रकट हो कि गतसमय में इक्ष्वाकुवंश में मित्रसह राजा बड़ा धर्मात्मा हुआ वह बाणविद्या में अतिप्रवीण, बड़ावीर, धीर, बलवान्, वेद पुराण का ज्ञाता, धर्मरूप, शुद्ध मार्ग चलनेवाला, दयालु और सब राजाओं में शिरोमणि, इन्द्रियजित् केवल अपनी स्त्री से प्रेम करनेवाला था एक दिन उसको आखेट का व्यसन हुआ सो उसने वनमें जाकर भली भांति शिकार किया और सिंह आदि बहुत से पशुओं को मारा जिनके शब्द चारों ओर पूरित हुये राजा ने ऐसी निर्दयता से प्रसन्न हो शुभमार्ग भुला दिया वहां वनमें एक निशाचर रहता था वह राजा की दृष्टि में आया राजा ने उसको मारडाला उस के भाई को बड़ा दुःख हुआ उसने अपने मनमें समझा कि यह राजा तो देवता और दैत्य दोनों का स्वामी है मैं क्योंकर इसको जीतूं क्योंकि यह युद्ध से जीता न जावेगा बड़ा वीर है इसे छलसे मारना उचित है क्योंकि इसने मेरे भाई को मार डाला है यह शोच वह मनुष्य का रूप धार राजा के पास आया और हाथ जोड़ शिर झुका राजा से कहा कि हे महाराज सूर्यवंश के शिरोमणि! मैं इस समय आपकी शरण में आया हूं मेरी रक्षा करो मैं दीन ब्राह्मण हूं राजा ने उसे मित्रों के समान समझ अपना पाककर्त्ता बनाया और शिकार खेल उसको साथ लिये

हुये अपनी राजधानी को लौट गया उस समय राजा की रानी मदयन्ती जो दमयन्ती के समान थी उसने सब अपने सम्बन्धियों की ज्यवनार की और पहिले अपने गुरु को खिलाने लगी सो उसी राक्षस ने भोजन में आमिष अर्थात् नरमांस मिलाकर गुरु के सामने रखदिया जिसको राजा ने न जाना पर गुरुवशिष्ठ जान गये और राजा पर बड़ा क्रोध किया और कहा कि तुझको धिक्कार है कि हमारे सामने मनुष्य का मांस रक्खा तुम धूर्त हो जोकि तुमने राक्षसों का भोजन हमारे सामने परसाया इससे तुम राक्षस होकर अपने कर्म का फल पाओगे सो राजा ने ध्यान करके देखा कि यह छल राक्षस पाककर्त्ता ने किया है तो राजा ने निर्दोष होने के कारण कोपित हो विचार किया कि पाप बिन वशिष्ठ ने वृथा ही हमको शाप दिया हम भी वशिष्ठ को शाप देवेंगे यह विचार शाप देने की इच्छा से उन्होंने हाथ में पानी लिया पर रानी ने विनय की कि गुरु चाहे अपना कितना ही क्रोध करे पर आपको क्रोध न करना चाहिये यह बात वेद कहता है और राजा के चरणों पर गिरकर बहुत समझाया कि गुरु को शाप देना उचित नहीं है निदान राजा चुप होरहा और गुरु के शाप से तुरन्त राक्षस हो वनमें चलागया और कल्माषपादके नामसे संसारमें प्रसिद्ध हुआ और महाभयंकर भूत हो बहुत जीवों को खाने लगा कुछ उसको धर्म अधर्म का स्मरण न रहा उस दशा में एक दिन कल्माषपाद ने एक मुनि को जो अपनी युवा स्त्री से भोग करता था पकड़ लिया जैसे शेर शशे को पकड़ लेता है स्त्री अपने पति को राक्षस के पंजे में देख मूर्च्छित होगई और कहा हे राजन्! तुम क्या कर्म करते हो तुम बड़े धर्मात्मा राजा थे तुम्हीं राजा होकर अपनी प्रजा पर अनीति करते हो क्या दया को तुमने भुला

दिया है तुम्हीं अन्यायियों के समान होकर ब्रह्महत्या करते हो तुम हमारे पति को छोड़ दो नहीं तो मेरा जीना कठिन है क्योंकि विना पुरुष के स्त्री का जीना दुर्लभ है मुझको यह पति प्राण से भी अधिक प्रिय है विना उसके हमारा जीना नहीं होसक्ता हे राजन्! अपनी कृपा ही से मेरे पति को छोड़ दो यह ब्राह्मण युवा वेदज्ञ, तपस्वी, पापरहित और दयावान् है इसके छोड़ने से तुमको बड़ा फल प्राप्त होगा अभी विवाह हुये थोड़े दिन बीते हैं यद्यपि स्त्री बहुत रोई और पीटी पर राजा को कुछ भी दया न उपजी और उसका शिर तोड़ उसको निगल गया उसकी स्त्री ने चाहा कि सती होजावे इस इच्छा से उसने चिता बना राजा को शाप दिया कि हे राजन्! जब तू अपनी स्त्री से भोग करना चाहेगा तो तू उसी समय तुरंत मरजावेगा यह कह वह तो जल गई और देवलोक में अपने पति के साथ भोग भोगने लगी हे नारद! सती होना बड़ा धर्म है और राजा भी शाप की अवधि भोग मुख्यरूप से अपने घर आया पर रानी ने मुनि की स्त्री के शाप देने का हाल जाना तो जब राजा ने मैथुन करना चाहा रानीने निषेध किया क्योंकि वह विधवा होने के दुःख भली भाँति जानती थी निदान राजा मैथुन विना अन्य भोगों को वृथा समझ राज्यकाज छोड़ वन में चला गया और वन में फिरता रहा और संसार भर राजा विना अति दुःखी रहा सो राज्य के मन्त्रियों ने जाकर गुरु से सब वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि अब सूर्यवंश अस्त हुआ जाता है यह आपके अनुग्रह का समय है सो वशिष्ठ ने आकर सूर्यवंश के स्थिर रहने के निमित्त रानी से लड़का उपजाया जिसका नाम अंशुमान् है और अंशुक हुआ जिससे संसार भर के मनोरथ पूरे हुये और कल्माषपाद ने वन में एक स्त्री को देखा जो राजा के पीछे २

बड़े क्रोध से चलती थी और वह महाभयंकर रूप ब्रह्महत्या के नाम से प्रसिद्ध थी जो ब्राह्मण के वध करने के कारण रूप धार राजा के पीछे रहा करती थी राजा ने इस बात को जान बड़े बड़े तीर्थों की परिक्रमा की कि वह दूर होजावे और बड़े बड़े पवित्र मन्त्रों का जप किया यद्यपि बहुत से उपाय किये पर कुछ लाभ न हुआ तब राजा ने मिथिलापुरी में जाकर गौतम से भेंट कर प्रणाम किया और अपना सब वृत्तान्त कहा गौतम ने महाबल शिवलिङ्ग की पूजा के लिये आज्ञा दी सो राजा ने तुरन्त स्नान कर गोकर्ण महाबललिङ्ग की पूजा की और राजा की ब्रह्महत्या छूट गई और शिवसेवा कर परमपद पाया ।

बारहवां अध्याय ।

इतना सुन नारदजी बोले हे ब्रह्मन् ! इसी कथा को विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि जब राजा सब मन्दिरों और तीर्थों में घूम आये और ब्रह्महत्या ने पीछा न छोड़ा तो वह मिथिलापुर को गये और नगर के किनारे बैठकर अति चिन्ता में मग्न हुये उसी समय देखा कि गौतममुनि चले आते हैं जो शिष्य गणों से सुशोभित महातेजस्वरूप हैं जब राजा के निकट पहुँचे तो राजा ने प्रणाम किया और गौतम ने भी राजा की बड़ी प्रशंसा कर कहा कि तुम और तुम्हारी प्रजा कुशल से है यहां क्यों आये हो तुम मुझको बड़े दुःखी भासित होते हो अपना वृत्तान्त वर्णन करो राजा ने कहा कि सब कुशल है पर मुझको ब्रह्महत्या लगी है अर्थात् हमने एक ब्राह्मण को मार डाला सो वही हत्या पिशाची के रूप से मुझे हर समय दुःख देती है वह किसी प्रकार मेरा पीछा नहीं छोड़ती मैंने यज्ञ, हवन, तीर्थ, दान, व्रत, मन्त्र, जप, ध्यान

और देवपूजनादि बहुत कुछ किया पर वह हत्या नहीं छोड़ती अब आप कहिये कि आप इस समय कहां से आते हैं क्योंकि आपके मुख से विदेश का श्रम प्रतीत होता है हमारे पाप कृपा करके दूर कर दीजिये गौतम ने कहा कि धन्य हो जो तुमने हमारे सामने अपना पाप वर्णन किया तुम कुछ भय मत करो सर्व प्रकार शिवजी अपने भक्तों के रक्षक हैं शिवजी ने अपने भक्तों के पाप दूर करने को पृथ्वी में लिङ्गरूप प्रकट किया है वे गोकर्ण में लिङ्ग विराजमान हैं जिनको महाबल कहते हैं उनकी महिमा वेद बखानते हैं उनके समान पापों का क्षय करने-वाला और कोई नहीं इसी प्रकार गोकर्णतीर्थ पापों के दूर करने में सबसे श्रेष्ठ है वहां तुम जाकर पहले गोकर्ण में स्नान कर शिव महाबललिङ्ग की पूजा करो हम अभी वहां से चले आते हैं वहां बड़ा भारी मेला हुआ करता है शिवरात्रि शिवजी को सब व्रतों से प्रिय है उसके समान दूसरा व्रत नहीं जैसा कि वेद कहते हैं इस व्रत को करके चाण्डाल भी मुक्ति पाता है वह शिवरात्रि फाल्गुन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को होती है व्रत करने के उपरान्त रात भर जागता रहे और शिवजी के लिङ्ग की पूजा करे और तण्डुल और बिल्वपत्र शिवजी पर चढ़ावे और प्रणाम करके बारम्बार दण्डवत् करे यह शिवरात्रि का शिवव्रत शिवजी की बड़ी कृपा से मिलता है सो देवता और सब मुनि आदि गोकर्ण में गये थे और सर्वदेशों से स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बालक, युवा समूह के समूह आये हमने भी अपने शिष्यों समेत जाकर महाबल की पूजा से बड़ा आनन्द उठाया है और गोकर्ण में स्नान कर दान दिया और महाबल की पूजा और जागरण कर सर्व मनुष्य अपने अपने स्थानों को लौट गये वहां राजा जनक भी गये थे सो जनक की विनय के अनुकूल

हम यहां आये हैं क्योंकि उनको यज्ञ करना है हम इस समय वहां से आते हैं और मार्ग में एक बड़ी आश्चर्य की बात देखी है।

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! गौतम के इस वचन को सुनकर राजा ने पूछा कि जो बात तुमने आश्चर्य की मार्ग में देखी है वह वर्णन करो गौतम बोले कि लौटने के समय मार्ग में एक तालाब के ऊपर हम स्थित हुये और स्नान आदि नित्यकर्म से निश्चिन्त होकर बैठे उसी समय एक स्त्री को जो चाण्डाली के समान थी और उसके कुष्ठ भी था और उसके शरीर भर में लहू और पस्सी भरी हुई थी और कृमि आदि उसको खाये जाते थे आई हमने जाना कि यह स्त्री मरनेवाली है यही बात हम देख रहे थे कि एक विमान जो सूर्य के समान प्रकाशमान और जिसमें शिवजी के गण बैठे हुये जो परिपूर्ण लक्षणों से युक्त थे मानो वह शिवजी के समान ही थे उतरा गणों को देख हमने प्रणाम करके पूछा कि तुम कहां आये हो उन्होंने कहा कि यह स्त्री जिसको तुम देखते हो उसके लेने को आये हैं यह सुन बड़े अचम्भे से मैंने पूछा कि यह स्त्री तो बड़ी पापिनी भासती है बड़े आश्चर्य की बात है कि इस स्त्री के लेने को तुम आये हो क्योंकि इसकी दशा से यह बात पाई नहीं जाती कि कोई कर्म इसने शिवपुर के जाने के योग्य किया होगा यह सुन शिवगण बोले कि यह स्त्री पहिले जन्म में एक ब्राह्मण की स्त्री थी और उसका नाम सुमुति था जब इसका पति मर गया तब यह धर्म छोड़ नाना प्रकार के पाप करने लगी यहां तक कि जाति पांति से निकाली गई और संस्कारवश एक शूद्र के यहां बैठ गई एक दिन इसका पुरुष कहीं बाहर गया और इसने मद्य पानकर

मांस खाने की इच्छा से एक गौ के बच्चे को बकरे के सन्देह से मार डाला जब देखा कि यह तो बकरी का बच्चा नहीं है यह बछड़ा है तो भी जान बूझकर "शिव-शिव" रटते उस बछड़े का आधा शरीर खागई और आधा जो शेष रहा उसको इधर उधर फेंककर प्रसिद्ध किया कि सिंह इसको खागया है निदान नाना प्रकार के पापकर अन्त में मरकर यमराज के यहां गई यमराज ने नरक के दण्ड को भी छोटा समझ उसको चाण्डाल के घर में जन्म दिया सो वह एक डोम के घर उपजकर जन्म की अन्धी और कोढ़िन हुई सब भाई बन्धुओं ने उसको छोड़ दिया और किसीने विवाह उससे न किया थोड़े दिनोंमें उसके माता पिता भी मर गये वह भूखी प्यासी इधर उधर फिरनेलगी ऐसी दशा में बालकपन और युवा अवस्था बीत गई और बुढ़ापे में इसने बड़ा दुःख पाया संयोग से जब मनुष्य गोकर्ण को चलने लगे तो उनके साथ यह स्त्री भी गई कि उनके साथ कुछ खाने पीने का ठिकाना लगे पर उसको कौन देता था जिस दिन कि शिवरात्रि थी उस दिन वह भी गोकर्ण में पहुँची और सब लोगों से मांगती थी कि मुझको भी कुछ भोजन वस्त्र दो यह सुन एक मनुष्य ने उसके दोनों हाथों में बेलपत्र फेंक दिया उस डोमनी स्त्री ने बेलपत्र को कुछ खाने की चीज़ न जानकर धरती में फेंक दिया अकस्मात् वह बेलपत्र शिवजी पर गिरा और वह रात भर इसी तरह मांगती रही पर कुछ न मिला वह रातभर इसी तरह जागती रही जब सब मनुष्य प्रभात को स्नानकर महाबल शिवलिङ्ग की पूजाकर अपने २ घरों को गये तब वह स्त्री निराश होकर उठती, बैठती, रोती, पीटती लौटकर वहां पहुँची और मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिरपड़ी इतने में सदाशिव ने प्रसन्न होकर एक विमान उस स्त्री के लेने को भेजा अब वह स्त्री शिवलोक को

जाती है क्योंकि पहिले जन्म में उसने शिव २ कहा था और इस जन्म में शिवरात्रि के दिन जागरणकर शिवलिङ्ग को बिल्वपत्र से पूजा श्रीसदाशिवजी का नाम अति शुभ है यह नाम पापों को दग्धकर भस्म कर देता है यह नाम लेकर बड़े २ पापी परमपद पाते हैं और बहुतों ने शिवरात्रि व्रत किसी मनोरथ विना कर शिवपूजा और जागरण करने से कैलास पाया है शिवरात्रि की महिमा कौन वर्णन करसक्ता है निदान शिव के चारों गणों ने उस स्त्री को तेज से पूर्ण कर दिया जिससे उस स्त्री का अति सुन्दर स्वरूप होगया और उसी विमान में चढ़ाकर कैलास में लेगये वहां वह गिरिजा की सखी होगई ऐसी बड़ाई गोकर्णक्षेत्र और महाबल लिङ्ग की है यह कह गौतम चलेगये और वह राजा तुरन्त गोकर्ण में आया और जिस तरह कि गौतम ने शिवलिङ्ग की पूजा बताई थीं उसी तरह मित्रसह राजा ने सब कार्य किये गोकर्ण के सब तीर्थों में स्नान किया और नाना प्रकार का दान दिया और महाबल लिङ्ग की पूजाकर शिवरात्रि व्रत का धारण किया और रातभर जगकर बड़ा उत्सव मनाया सो राजा की हत्या छूट गई जिससे वह अति प्रसन्न हुआ और शिवजी का परमपद मिला यह मित्रसह राजा और महाबललिङ्ग की कथा सर्व रोगों को नष्ट करती है इस चरित्र के पढ़ने और सुननेवाले प्रसन्न रहकर अन्त में परमपद को जाते हैं।

चौदहवां अध्याय।

उत्तर के शिवलिंगों का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम उत्तर के शिवलिंगों का वर्णन करते हैं मन लगाकर सुनो कि नैमिषक्षेत्र जो प्रसिद्ध है वहां ललितेश्वर का शिवलिङ्ग बड़ा आनन्ददायक है

जिसकी पूजा देवता और मुनि आदि करते हैं यह लिङ्ग ललिताजगदम्बा ने स्थापित किया था और वहीं पर ललिता ने बड़ी कठिनता से तप किया और उन्हीं की सेवा से उन्होंने अपना मनोरथ पाया था इस लिङ्ग की पूजा से असंख्य मनुष्यों को मुक्ति मिली है वहां और एक दधीचीश्वर शिवलिङ्ग है उसको दधीचि मुनि ने स्थापित किया था यह दधीचि शिव के बड़े भक्त हैं जिन्होंने क्षुवथमुनि को जीता था इनका वृत्तान्त हम आगे वर्णन कर चुके हैं जो मनुष्य दधीचीश्वर शिवलिङ्ग की पूजा करे वह किसी समय में किसी से न हारे सदा निर्भय रहकर हृष्ट पुष्ट रहे उसके शरीर में कोई शस्त्र और घाव न लगे अब हम एक शिवलिङ्ग का वर्णन करते हैं जिनकी पूजा से पूजनेवाला मनुष्य प्रसन्न हो जाता है जो हमने गोकर्णक्षेत्र का वर्णन किया था वहां चन्द्रभालनामी शिव का लिङ्ग है जिसको रावण कैलास से लाया था और अपने घर लिये जाता था पर शिव वहीं रह गये उसके साथ न गये और वैद्यनाथ जो इसी लिङ्ग के साथ आये थे वह चिताभूमि में स्थित होगये दोनों लिङ्ग रावण के साथ न गये यहां अब इन लिङ्गों का संक्षेप से वर्णन करते हैं पर आगे इसी खण्ड में विस्तार से वर्णन करेंगे एक समय रावण ने हिमालय पर बड़ा तप किया और शिव का लिङ्ग स्थापितकर बड़ा होम किया पर शिव प्रसन्न न हुये तब रावण ने अपने नव शिर काट शिव के लिङ्ग पर चढ़ा दिये और चाहा कि दशवां शिर भी काट कर चढ़ावे कि शिव अति प्रसन्न होकर प्रकट हुये और कहा कि वर ले लो रावण ने कहा कि मुझको ऐसी शक्ति कृपा करो कि तुमको ले जाकर मैं अपने नगर में स्थापित करूं शिव बोले कि अच्छा हमारे लिङ्ग को ले जाकर स्थापित करो पर जो

मार्ग में तुम किसी स्थान पर हमको रख दोगे तो हम वहीं रह जावेंगे तब रावण ने चतुरता से कहा कि अच्छा पर दो रूप धारण करो हम मञ्जूषा में रखकर ले जावेंगे यह सुन शिवलिङ्ग के दो रूप होगये सो रावण दोनों को मञ्जूषा में करके ले चला मार्ग में शिव ने यह माया की कि रावण को बड़े वेग से लघु-शङ्का हुई रावण रोक न सका उसने देखा कि एक गोप पशुओं को चराता है उससे रावण ने कहा कि मञ्जूषा ले लो मैं मूत्र करूं अहीर ने कहा कि मैं एक मुहूर्त भर लिये रहूंगा फिर मैं पृथ्वी में रख दूंगा यह कह गोप ने मञ्जूषा ले ली और रावण कि दो घड़ी तक मूत्र करता रहा पर उसका मूत्र न रुका अहीर मञ्जूषा को अधिक न रख सका और उसने उसको धरती में रख दिया सो दोनों लिङ्ग पृथ्वी में उसी स्थान पर स्थित होगये रावण उनको बड़े बल से उठाने लगा जब वह बल करके थकित हुआ तो उसने अपने अँगूठे से शिवलिङ्ग को दबाया और निरुपाय हो अपने घर चला गया दोनों लिङ्ग वहीं रहगये जो लिङ्ग पीठ की ओर था वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बारह ज्योतिर्लिङ्गों में गिना जाता है और चिताभूमि में विराजमान है और अगले तरफ़ जो लिङ्ग था वह चन्द्रभाल के नाम से विख्यात होकर गोकर्णक्षेत्र में स्थित हुआ उसकी अप्रमेय महिमा है सब जीव चन्द्रभाल की बड़ाई तीनों लोक में जानते हैं वहां शिवरात्रि को बड़ी भीड़ होती है और देवता मुनि और सिद्ध आदि सब आते हैं और सब देशों से चारों वर्णवाले समूह के समूह आते हैं जिनके पाप छूट जाते हैं सर्व रोग नष्ट होते हैं वह निष्पाप होकर परमपद पाते हैं जैसा कि वेद कहता है और भी वहां पर असंख्य लिङ्ग हैं जो दोनों लोक में आनन्द देते हैं उनमें यह विचित्र सिद्धता

है कि माघमास की कृष्णा चतुर्दशी को सब सिंह और हाथी आदि चार कोस की दूरी तक के वहां से भाग जाते हैं और भी दुःखदायी जीव वन के चले जाते हैं और दशमी के दिन से तीनों प्रकार की पवन चलने लगती है और शिव के मन्दिर के पास आकर बन्द होजाती है और नाना प्रकार के बाजे सुनाई देते हैं इसी तरह बड़े २ बादल आकर उसी स्थान पर अच्छे २ शब्द करते हैं वह आश्चर्य की बातें देख सब जय जय शब्द कहते हैं सब स्त्री और पुरुष बड़ा आनन्द और धन्यवाद करते हैं सब मनुष्य भली भांति नाचते गाते हैं चतुर्दशी पर्यन्त शिव वहां विराजमान रहते हैं जिनकी पूजा सब लोग करते हैं वहां शिवरात्रि व्रत को जागरण करके सब मनोरथ मिलते हैं यह कथा जो कोई पढ़े और सुनेगा वह संसार में प्रसन्न रहकर अन्त में परमपद पावेगा।

पन्द्रहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम उत्तर के प्रसिद्ध २ शिवलिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनके दर्शन से सर्वपाप नष्ट होजाते हैं और सब मनोरथ पूरे होते हैं जिनकी पूजा से कोई दुःख और पाप नहीं रहता उनमें से एक तीर्थ पञ्चप्रयाग है जहां स्नान करने से तुरन्तही सर्व प्रकार के दुःख जाते रहते हैं वहां शिव के लिङ्ग हैं उनका हम वर्णन करते हैं अर्थात् सुरप्रयाग में ललितेश्वर और देवेश्वर दो लिङ्ग शिव के हैं जो प्रसन्न होकर अपने भक्त को कृतार्थ कर देते हैं उसके उत्तर और रुद्रप्रयाग में रुद्रेश्वर शिवलिङ्ग है जिसकी पूजा से सम्पूर्ण पाप दूर हो जाते हैं और कनखलक्षेत्र में जहां कि शिव ने दक्षप्रजापति के यज्ञ का विध्वंस कर फिर प्रसन्न हो यज्ञ पूर्ण कराया और उसी स्थान पर लिङ्गस्वरूप होकर स्थित हुये और दक्षेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं

इनकी बहुत बड़ी महिमा है जिनकी पूजा से कोई दोष और पाप नहीं रहता उसके निकट सतीकुण्ड प्रसिद्ध है जिसके ऊपर बिल्वेश्वर नाम शिवलिङ्ग हैं उनकी पूजा से धर्म की वृद्धि होती है और बिल्वपर्वत के ऊपर जो बेल का वृक्ष है उसके नीचे बिल्वेश्वर शिवलिङ्ग स्थित हैं जिनके केवल दर्शन से मनुष्य शिवसमान हो जाता है और दक्षेश्वर के निकट नील शैल के ऊपर नीलेश्वर शिवलिङ्ग है वह लिङ्ग भक्ति और प्रीति का बढ़ानेवाला है जिसके देखने से पाप दूर होकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होती है यह लिङ्ग गङ्गाजी के तट पर है वहां स्नान करना चाहिये और उसी जगह भीमचण्डिका का स्थान है उसके निकट उत्तम कुण्ड है उसके स्नान करने से बड़ा आनन्द और भक्ति प्राप्त होती है आज तक वहां शङ्खध्वनि श्रवण पड़ती है पर पापीलोग उसको नहीं सुनते पूर्वकाल में असमचित्तनामी ब्राह्मण बड़ा पापी हुआ है उसने किसी शिव के भक्त से उपदेश पाकर शिव के नाम का जप किया सो शिव ने प्रसन्न होकर उसको अपना गण बनाया उसका नाम नील रख लिया और आप भी नीलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये तब से नीलेश्वर शिवलिङ्ग की बड़ी महिमा हुई वे दोनों लोक में हर्ष देते हैं और बिल्वेश्वर शिवलिङ्ग के निकट त्रिसूतेश्वर शिव का लिङ्ग है वहां रक्तजल तीर्थ अति पवित्र है जो मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करके शिव की पूजा करे वह परमपद पावे उसके निकट नन्दीश्वर शिव का लिङ्ग है और शिवतीर्थ भी वहीं है जो मनुष्य शिवतीर्थ में स्नान करके नन्दीश्वरलिङ्ग को पूजता है वह दोनों लोक में आनन्द पाता है उसी के निकट भद्रेश्वर शिव का लिङ्ग है जिसकी पूजा से मनुष्य शिव का गण हो जाता है और उसी जगह भैरवेश्वर शिवलिङ्ग है जिसकी सेवा से बड़ा

सुख होता है फिर शालिहोत्रेश्वर शिव का लिङ्ग है जिनकी सेवा से शालिहोत्र ने सब विद्या पाई और कौमुदीतीर्थ के तट पर चन्द्रेश्वर शिवजी का लिङ्ग है जहां कि चन्द्रमा ने शिव की पूजा कर शिवजी के भाल में स्थान पाया और कुब्जाम्र तीर्थ और पूर्ण तीर्थ जो गङ्गाजी के बीच में है उस स्थान पर गङ्गा के बीच में सोमेश्वर शिवजी का लिङ्ग है उसकी पूजा से दोनों लोक में जीव प्रसन्न रहकर शिवजी का गण बन जाता है और अग्नितीर्थ में अग्नीश्वर शिवजी का लिङ्ग है जिसकी पूजा से कभी मुख्य शक्ति कम नहीं होती और वायुतीर्थ में पवनेश्वर शिवजी का लिङ्ग सर्वपापों के क्षीण करनेवाला है वहां गङ्गा के पश्चिमी तट पर तपोवन है जहां कि लक्ष्मण ने बड़ा तप किया था और शिवजी की कृपा से पवित्र हुये थे इस कथा का संक्षेप यह है कि जब रामचन्द्र लङ्का जीत चुके और सीता और लक्ष्मणसमेत घर आये तो लक्ष्मणजी को क्षयी रोग उपजा क्योंकि उन्होंने मेघनाद को मारा था सो वशिष्ठ-मुनि के उपदेश के अनुसार लक्ष्मण तपोवन में गये और बारह वर्ष तक बिन भोजन किये तप करते रहे फिर सौ वर्ष पर्यन्त वनफल खाकर तप किया फिर सौ वर्ष वायु भक्षण कर षडक्षरी मन्त्र जपते रहे और एक चरण से धरती में खड़े होकर शिव का ध्यान किया सो शिव ने प्रसन्न हो वहां पहुँच लक्ष्मण से कहा कि अब तुम शुद्ध होगये अब यह रोग तुमको नहीं रहेगा यह कह शिवजी तो अन्तर्धान होगये और लिङ्गरूप वहीं स्थित हुआ और उसका नाम लक्ष्मणनाथ विख्यात हुआ जिसके दर्शन से कोई रोग नहीं रहता और लक्ष्मण भी शेष का शरीर धारण कर उसी स्थान पर स्थित होगये यह थोड़े लिङ्गों का जो मायाक्षेत्र में हैं हमने वर्णन किया अब और सुनिये कि जो

नैपाल में पशुपतिनाथ शिव का लिङ्ग है वे महिष भाग अर्थात् भैंसे के शरीर का एक भाग हैं जिनकी महिमा वेद बखानते हैं इनका विस्तारपूर्वक वृत्तान्त हम आगे लिखेंगे यह पशुपतिनाथ भक्तों को बड़ा आनन्द देनेवाले हैं और दूसरा शिव का लिङ्ग नैपाल में मुक्तिनाथ है जिनकी पूजा से बड़ा आनन्द मिलता है इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हमने चारों दिशा के लिङ्गों का वर्णन किया अब और क्या सुनोगे ।

सोलहवां अध्याय ।

इतना सुन नारद बोले कि हे ब्रह्माजी ! शिवलिङ्ग की पूजा किस समय में आरम्भ हुई मैं इसको विस्तार से सुना चाहता हूं ब्रह्माजी बोले कि लिङ्ग की पूजा सनातन से है हम उसका प्रारम्भ नहीं बता सके यह बात वेद कहते हैं पर हम कल्पभेद के अनुसार जितना कि सुना है कहते हैं मन लगाकर सुनो कि दारुनामी वन जो प्रसिद्ध है वहां शिव के बहुत से भक्त रहा करते थे और मुनि आदि भी वहां रहकर तीनों काल शिवपूजन करते और शिव का नाम हर समय जपते और हवन आदि हर समय करते इसी प्रकार उनको बड़ा समय बीता और वह समय आया जिसमें उनके ऊपर शिव प्रसन्न हो प्रकट हों सो एक दिन मुनि आदि वन के बाहर जीविका के निमित्त निकल गये और सदाशिव सती के वियोग में रोते चिल्लाते नङ्गे भस्म रमाये सहस्रों कामदेव के समान सुन्दर गौर अङ्ग बड़ी छवि से वहां पहुँचे पहिले तो मुनियों की स्त्रियां वहां से भाग गईं पर जब ध्यान से सदाशिवजी को अवलोकन किया तो शिवजी की माया से सर्व स्त्रियां कामवश हो घरों से बाहर निकल आईं और शिव के समीप मैथुन के निमित्त खड़ी होगईं और कामदेव के वेग से मूर्च्छित हो शिवजी के शरीर में लिपट गईं इतने में सब मुनि

आदि बाहर से आकर इस दशा के देखने पर क्रोध में पूर्ण हुये और शिवजी को मनुष्य के समान जान यह शाप दिया कि तेरा लिङ्ग इसी समय गिर जावे यह शाप देते ही तुरन्त शिवजी का लिङ्ग कटकर धरती में गिर पड़ा और शिवजी की माया से वह लिङ्ग तीनों लोक में भ्रमण कर सबको जलाने लगा सो तीनों लोक दुःखी हो उन मुनियों समेत मिलकर हमारे पास गये और कहा कि यह क्या चरित्र होता है कि सब सृष्टि जली जाती है हमने ध्यान कर सब हाल जान मुनियों से कहा कि तुमने मूर्ख होकर जो काम किया है उसका फल यह है कि क्या तुम नहीं जानते कि वेद कहता है कि जो दिन में अपने घर आवे उसी का नाम अतिथि है उसको प्रसन्न किये विना फेर देना बड़ा पाप है लौटनेवाले मनुष्य के सब शुभ कार्य नष्ट होजाते हैं शिवजी तुम्हारी परीक्षा के निमित्त तुम लोगों के घर गये थे पर तुमने उनको नहीं पहिंचाना और शाप दिया वही शिवजी का लिङ्ग तीनों लोक को जलाये देता है शिवजी की अप्रसन्नता से कहां कुशल है हम और विष्णु भी जिसके सेवक हैं जब तक कि वह शिवलिङ्ग स्थित न हो जावेगा तब तक सृष्टि में आनन्द न होगा यह सुन सब मुनि आदि शिवजी की शरण में गये जिसमें हम और विष्णु भी थे निदान हम सबकी स्तुति सुन शिवजी ने प्रसन्न हो कहा कि वर मांगो हम सबने विनती की कि लिङ्ग को रोक कर शान्त करो शिवजी बोले कि जो गिरिजा योनि रूप से लिङ्ग को धारण करे तो हम शान्त होंगे गिरिजा के सिवाय तीनों भुवन में और कौन है जो हमारे लिङ्ग को रोक सके यह सुन सब देवता आदि ने गिरिजा को प्रसन्न किया जिसने योनिरूप हो शिवजी का लिङ्ग धारण किया जिससे सबको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और सबने बड़ी

स्तुति की पर संसार के माता पिता को नग्न देख किसी ने उनकी पूजा न की पर जब शिवजी ने आज्ञा दी कि हमारे लिङ्ग की पूजा करो तो सबने उसी दशा में पूजा की और उसी दिन से लिङ्ग पूजने की चाल होगई ।

सत्रहवां अध्याय ।

नारद बोले अब मुझको अन्धकेश्वर शिवलिङ्ग की कथा सुनाओ कि क्योंकर वह अन्धक के नाम से जो उनका शत्रु था प्रसिद्ध हुये ब्रह्माजी बोले हे नारद ! युद्धखण्ड में हम विस्तार से अन्धकेश्वर की कथा कह चुके हैं कि जिस तरह शिवजी ने अन्धक को अपने त्रिशूल से छेद कर फिर उसी शरीर से उसको अपना गण बना लिया और वह सदाशिवजी के निकट रह कर सेवा में रहता है यह कथा एक कल्प की है अब जो दूसरे कल्प में हुआ उसको हम कहते हैं कि अन्धक कक्षदैत्य से उपजा था उसने हमारा बड़ा तप कर हमसे यह वर पाया था कि तीनों लोक में कोई उसको न मार सके यह वर पा उसने तीनों लोक को जीत अपने अधीन कर लिया और सब देवताओं को निकाल कर आप तीनों भुवन का राज्य करने लगा और नैर्ऋत्य कोण के समुद्र में एक गर्त अर्थात् गढ़ा था उसमें वह अपनी सेना सहित रहने लगा उसी में से वह निकल कर सेना सहित देवताओं को दुःख दिया करता था और फिर उसी गर्त में चला जाता था देवताओं की वहां कुछ नहीं चलती थी सो सब देवता दुःखी होकर शिवजी की शरण में गये उस समय शिवजी मन्दराचल पर थे सो उन्होंने देवताओं की स्तुति सुनकर कहा कि तुम कुछ सन्देह मत करो हम अन्धक को मार डालेंगे तुम जाकर उसके साथ युद्ध करो फिर हम भी आते हैं सो देवताओं ने सेना सजा अन्धक के साथ युद्ध किया

और बड़ा युद्ध देवता और दैत्यों का हुआ निदान दैत्य परास्त हुये और अन्धक ने युद्ध से भाग कर चाहा कि अपने उसी गर्त में घुस जावें पर शिवजी ने तुरन्त पहुँच कर शीघ्र ही उसको पकड़ लिया और अपने त्रिशूल से उसको छेद कर ऊपर को उठा लिया उस समय अन्धक त्रिशूल के प्रभाव से भवजाल से छुट्टी पाकर स्तुति करने लगा और कहा कि जो कोई मनुष्य तुमको मरने के समय देखता है तो वह भी शिवरूप हो जाता है सो वही कृपा मेरे ऊपर होनी चाहिये शिव ने कहा कि मैं तेरे भाव को देख कर प्रसन्न हुआ वर मांग ले अन्धक ने कहा कि मुझको अपनी भक्ति कृपा करके अपना गण बना लो और लिङ्गरूप होकर यहीं स्थित रहो शिव ने माना और वहीं लिङ्गरूप से स्थित हुये जिसका नाम अन्धकेश्वर संसार में प्रसिद्ध हुआ जो कोई उस लिङ्ग की षट्मास तक पूजा करे उसका मनोरथ पूरा होजावे जिस तरह कि देवल ने पूजन कर सब मनोरथ पाये ।

अठारहवां अध्याय ।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता ! देवल का वृत्तान्त विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी ने कहा कि जो दधीचि ब्राह्मण शिव का परमभक्त था जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं उनका पुत्र शिवदर्शन नामी था शिवदर्शन की स्त्री का नाम दुकूला और वह अपनी स्त्री के अधीन रहा करता और सदा भोगविलास में लगा रहता उसके चार पुत्र उपजे पर तौ भी शिवदर्शन सदा दधीचि के भय से प्रतिदिन शिव की पूजा किया करता एक दिन दधीचि किसी दूसरे ग्राम में गये और शिवदर्शन को शिवपूजन के निमित्त कह गये संयोग से दधीचि बहुत दिनों तक ग्राम से न लौटे यहां तक कि शिवरात्रि आगई

सबने व्रत रक्खा पर शिवदर्शन ने कामवश हो अपनी स्त्री से भोग किया और सुचित्त हो स्नान करने के विनाही शिवजी की पूजा की ऐसी बेधर्मी शिवदर्शन की देख कर शिव क्रोधित हुये और कहा कि हे मूर्ख ! तूने हमारे व्रत में स्त्री के साथ अधर्म से भोग किया सिवाय इसके स्नान विन हमारी पूजा की और जो कि तुमने जानबूझ यह जड़कर्म किया है इसलिये हमारे शाप से तुम जड़ हो जाओ और तुम किसी को छू नहीं सकोगे केवल नेत्रों से देखा करोगे सो शिवदर्शन तुरन्त जड़ हो गया जब कि दधीचि मुनीश्वर ने लौट कर पुत्र की यह दशा देखी तो सर्व वृत्तान्त के सुनने के उपरान्त अति चिन्तित हो रोने लगा और पुत्र को बहुत धिक्कार दिये और उसकी स्त्री को तुरन्त घर से निकाल दिया और पुत्र के मुक्त होने के निमित्त गिरिजा की पूजा का आरम्भ कर दिया और दधीचि और शिवदर्शन दोनों ने गिरिजा को अपने तप से प्रसन्न किया गिरिजा ने शिव को प्रसन्न कर शिवदर्शन को उनकी गोद में डाल दिया सो शिव ने घृत से शिवदर्शन को स्नान करा कर एक गांठ देकर जनेऊ पहनाया और उसका नाम बटुक रक्खा और शिवगायत्री उसको देकर सोलहों वर्ण कृपा किये और अपनी पूजा का अधिकार दिया उसने शिव का नाम मुख से लिया तब शिव और गिरिजा ने प्रसन्न होकर उससे कहा कि जो धन और द्रव्य कोई हमारे ऊपर चढ़ावे वह तुम लिया करो हमारी पूजा में तुम प्रसन्न होगे इसी प्रकार चण्डिका की पूजा में भी तुमको अधिकार है यहां तक कि घृत और तैल आदि जो हमारे ऊपर चढ़े वह भी तुम लिया करो तुमको कुछ दोष नहीं है तुम तिलक लगा कर स्नान के उपरान्त शिव का मन्त्र पढ़ प्रतिदिन शिवजी की सन्ध्या करते रहो और हमारी गायत्री का ध्यान रक्खो पहिले हमारा

भजन करके फिर और कार्य करना हमने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया पर फिर ऐसा काम न करना तुम ब्राह्मण के समान हो हमारी और शिवरानी की भक्ति में लगे रहो तुम सबकी पूजा के योग्य होगे बिना तुम्हारी पूजा हम किसी के सहायक नहीं होंगे और युद्ध में तुम जिसकी ओर होगे उसी की जय होगी जोकि तुम तप से भ्रष्ट हुये इससे तुम्हारा नाम भ्रष्ट भी होगा और ब्रह्मभोज आदि में तुम्हारे खिलाने से वह काम पूरा हो जावेगा इसी तरह शिव और गिरिजा ने बटुक को बहुत वर देकर चारों दिशा में उसको स्थापितकर सबकी पूजा के योग्य ठहराया हे नारद ! ब्रह्मभोज में जो बटुक को बड़ाई प्राप्त हुई उसका वर्णन हम तुमको सुनाते हैं कि उसी नगर में राजा भद्रक के यहां प्रतिदिन ब्रह्मभोज हुआ करता था और शिव ने एक ध्वजा उस राजा को देकर कहा था कि तुम इसको प्रभात के समय बांध दिया करो जब कि ब्रह्मभोज पूर्ण हो चुकेगा तो यह ध्वजा अपने आप गिर पड़ेगी सो राजा प्रतिदिन ब्रह्मभोज किया करता एक दिन अपने आप वह ध्वजा ब्रह्मभोज विना गिर पड़ी राजा ने आश्चर्यकर सब ब्राह्मणों से इसका हेतु पूछा ब्राह्मणों ने कहा कि पहिले बटुक शिव के पुत्र खा चुके इससे यह ध्वजा यज्ञ के पूर्ण होने पर गिर पड़ी अब तुम और ब्राह्मणों को खिलाओ कुछ सन्देह की बात नहीं है हे नारद ! यह देवल की कथा अति पुनीत है जो इसको पढ़ेगा उसको शिव गिरिजा की पूजा का फल मिलेगा चारों दिशा के शिवलिङ्ग पूर्ण हुये।

उन्नीसवां अध्याय।

बारहों ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन।

नारदजी बोले हे ब्रह्मन् ! अब बारहों ज्योतिर्लिङ्गों की कथा वर्णन कीजिये कि वे क्योंकर प्रकट हुये ब्रह्मा ने अति प्रसन्न

हो कहा कि बारहों ज्योतिर्लिङ्गों की कथा वर्णन करते हैं पहिला सोमेश्वर लिङ्ग जिनकी पूजा से सब मनोरथ प्राप्त होते हैं जिनकी अप्रमेय महिमा है और जिनकी सेवा से बहुतों ने परम पद पाया है जिनके भजन से क्षयीरोग भी नष्ट हो जाता है और मनुष्य संसार में नाना प्रकार के भोग पाकर अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है और उसके बहुत सन्तान और सम्पदा होकर उत्तम यश और कीर्ति होती है और सर्वकष्ट नष्ट होते हैं जिनके भजन से चन्द्रमा का क्षयीरोग नष्ट होगया इतना सुन नारदजी ने पूछा कि इस चरित्र को विस्तार से वर्णन करो ब्रह्माजी बोले कि हमारे अंगुष्ठ से जो दक्षप्रजापति उपजा उसने हमारी आज्ञा से सृष्टि को बहुत बढ़ाना चाहा और वीर प्रजापति की कन्या से विवाह कर दश सहस्र पुत्र उपजाये जिनको तुम भली विधि जानते हो वे तुम्हारे उपदेश से त्यागी होगये फिर भी दक्ष ने एक सहस्र पुत्र उत्पन्न किये वह भी तुम्हारे उपदेश से भ्रष्ट हो गये तब दक्षप्रजापति ने क्रोधित होकर तुमको यह शाप दिया कि तुम सदा संसार में फिरकर कहीं पर न ठहरोगे फिर दक्ष ने साठ कन्या उपजाकर दश धर्मराज को और तेरह कश्यप को और सत्ताईस चन्द्रमा को और इसी प्रकार अङ्गिरस और कृशाश्व आदि को दो दो दे दीं चन्द्रमा ने सबसे अधिक रोहिणी के साथ प्रेम बढ़ाया हे नारद ! जो मनुष्य बहुत स्त्रियों को व्याह कर सबके साथ समान प्रीति न करे उसके सामने असंख्य आपदा आती हैं और उसको कभी आनन्द नहीं मिलता वह सदा रोगी रहकर अन्त में नरक को जाता है सो और दक्ष की कन्याओं को चन्द्रमा के बराबर प्रेम न करने के कारण बड़ा दुःख उपजा वे सब दुःखी होकर दक्ष के समीप गईं और रो पीटकर दक्ष से सब वृत्तान्त वर्णन किया दक्ष ने चन्द्रमा को

बुलाकर बहुत समझाया और कहा कि वेद की रीति के अनुसार सब स्त्रियों से बराबर प्यार करो फिर चन्द्रमा को बिदा किया कुछ दिनों तक चन्द्रमा दक्ष के उपदेश पर चला पर थोड़े दिनों के पीछे वह रोहिणी को पहिले के समान सबसे अधिक चाहने लगा तब वे फिर उसी तरह दक्ष के समीप जाकर चिल्लाईं दक्ष ने फिर चन्द्रमा को बुलाकर बड़े क्रोध से कहा कि हे मूर्ख! तूने हमारा उपदेश न माना अब यहां से जा तुझे क्षयीरोग होजावेगा जिससे तुम भोगविलास के काम के न रहोगे यह कहते ही चन्द्रमा क्षयीरोग में ग्रसित हो बहुत दुःखी हुआ उसका तेज नष्ट होगया तब चन्द्रमा की सर्व स्त्रियां अति दुःखी हुईं और देवता भी चन्द्रमा विना चिन्ता में पड़कर उसको हमारी शरण में लाये हमने चन्द्रमा को बहुत धिक्कार देकर कहा कि जबसे इसने राजसूय यज्ञ किया तब से इसको धर्माधर्म नहीं सूझता इसने अपने गुरु की स्त्री तारा को भगाया जो हम इसको न बचाते तो शिवजी ने इसको जला ही दिया था यह बात इसके मन से भूल गई यह सुन चन्द्रमा दुःखी हो हमारे चरणों पर गिरपड़ा और उसने बार२ हमारी स्तुतिकर कहा कि वास्तव में मैंने बारम्बार बड़े पाप किये हैं पर आपने मुझको हरबेर बचा लिया है फिर इस तरह का अधर्म नहीं करूंगा ऐसी विनती कर वह हमारे सामने हाथ बांध खड़ा रहा।

बीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि चन्द्रमा की यह विनती और दीनता देख मुझे दया आई मैंने कहा कि तुम सौराष्ट्रदेश में जो तीनों लोक में प्रसिद्ध है और जहां प्रभासक्षेत्र में शिव पूर्णांश से विराजमान हैं और वह देश शिवजी को अति प्रिय है वहां तप करने

से सर्व दोष और पाप दूर होजाते हैं वहां पहुँचकर तुम शिवलिङ्ग को स्थापित करो और उत्तमोत्तम वस्तु चढ़ाकर शिवजी की पूजा करो और मृत्युञ्जय मन्त्र का जप करना और सर्वन्यास कर एक ही आसन से बैठना और हर प्रकार की चतुरता को छोड़ देना और योग धारणकर शिवजी का स्मरण करना और अपने मनोरथ के पूरे होने पर निश्चय रख शिवजी के प्रेम में लगे रहना क्योंकि शिवजी प्रेम विना प्रसन्न नहीं होते उनके समान अपने भक्तों को पालनेवाला और कौन है तुम हर प्रकार मृत्युञ्जय शिवजी को प्रसन्न करो तुम्हारा यह रोग नष्ट होजावेगा क्योंकि असंख्य मनुष्यों ने शिवजी की भक्ति से सब कुछ पाया और बहुतों ने मृत्यु को जीता है और बहुधा बड़े बड़े पापी भी मुक्ति पागये हैं सो चन्द्रमा ने हमारे वचन को सुनकर तुरन्त प्रभास क्षेत्र में शिवलिङ्ग की स्थापना की और छः मास तक कठिन तप करता रहा और विधिपूर्वक एक अर्बुद मृत्युञ्जय का जप किया शिवजी प्रसन्न हो प्रकटे और चन्द्रमा को वर लेने के लिये आज्ञा दी चन्द्रमा ने प्रणाम और स्तुति के अनन्तर क्षयीरोग के दूर होने के लिये विनय की और कहा कि तुम्हारी भक्ति मुझको सदा बनी रहे शिवजी बोले कि दक्ष का शाप परिपूर्ण नष्ट नहीं होसक्ता परन्तु तुम क्रम से प्रतिमास में घटा बढ़ा करोगे फिर चन्द्रमा ने स्तुतिकर विनय की कि तुम यहां लिङ्गरूप से स्थित रहो इतने में हम और विष्णु ने भी आकर चन्द्रमा की इच्छानुसार कहा कि तुम लिङ्गरूप होकर शक्ति सहित इस स्थान पर स्थित होजावो इस प्रकार सबकी विनती सुनकर शिवजी ने मान ली और पूर्णांश से गिरिजासहित उसी स्थान पर स्थित होगये उस लिङ्ग की सबने पूजाकर बड़ा उत्सव किया उस दिन से शिव वहां पूर्णांश से स्थित हैं फिर

देवता आदि सब अपने २ स्थानों को चले गये सोमेश्वर लिङ्ग की बड़ी महिमा है जैसा कि वेद कहते हैं चन्द्रमा का क्षयीरोग दूर होते कुछ भी विलम्ब न हुआ और उनकी सेवा से हर प्रकार के रोग दूर होजाते हैं बहुधा मुनीश्वरों ने उनकी सेवाकर परमपद पाया है इस लिङ्ग के सामने चन्द्रमा का बनाया हुआ एक कुण्ड है जो मनुष्य उसमें स्नान करे उसका मनोरथ पूर्ण होता है यह चरित्र अति आनन्द देनेवाला है जैसा कि देवता और मुनि आदि और वेद पुराण सब इस बात में सम्मति रखते हैं जिनकी सेवा से फिर आवागमन नहीं होता और हे नारदजी! तुम और शारद और सनकादिक और शेष आदि भी उनकी महिमा वर्णन करते गूंगे हो जाते हो इस चरित्र के सुनने से शिवजी अति प्रसन्न होते हैं।

इक्कीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम मल्लिकार्जुन शिवलिङ्ग का वर्णन करते हैं यद्यपि हमने चरित्र को अति विस्तार से बखाना है पर यहां भी संक्षेप से कहते हैं कि जब शिवजी के पुत्र स्कन्दजी संसार भर की परिक्रमा कर कैलास में आये तो हे नारद! तुमने उनसे गणपति के अधिकार का सर्व वृत्तान्त वर्णन किया जिसको सुन गुह अतिदुःखी हो अपने माता पिता शिवजी और शिवरानीजी के पास जाकर चुपचाप बैठ रहे और स्तुति करने के उपरान्त अप्रसन्न हो क्रौञ्चगिरि में गये यद्यपि माता पिता ने उनको बहुत मनाया समझाया पर स्कन्दजी ने कुछ न माना तब गिरिजाजी ने अपने पुत्र के वियोग में बहुत रोदन किया तब शिवजी ने गिरिजा से कहा कि तुम कुछ दुःख मत करो तुम्हारा पुत्र तुरन्त ही तुम्हारे पास आवेगा गिरिजा ने कहा कि तुम देवता आदि को मनाने के लिये भेजो कि हमारा

पुत्र यहां आवे कदाचित् वह यहां न आवेगा तो हम तुम वहां चलेंगे शिवजी ने गिरिजा को इतना दुःखी देख देवता और मुनियों को गुह के पास भेजा उन्होंने बहुतेरा स्कन्दजी को समझाया पर उन्होंने किसी का कहना न मानकर और भी बहुत हठ की उन्होंने लौटकर शिवजी से सब हाल कह सुनाया सो शिव और शिवरानी पुत्र के वियोग में अति दुःखी हुये सो वियोग का दुःख न सहकर स्कन्दजी के पास गये गुह माता के आने का हाल जानकर तुरन्त तीन योजन और अधिक क्रौञ्च पर्वत पर चले गये कि माता पिता से भेंट न हो निदान माता पिता भी पुत्र की ऐसी हठ जानकर वहां न गये और ज्योतिरूप होकर उसी स्थान पर स्थित हो गये वही संसार में ज्योतिर्लिङ्ग प्रसिद्ध है उसी को सब मल्लिकार्जुन कहते हैं सो हर पर्व में पुत्र के प्रेम से माता पिता उस स्थान पर जाया करते हैं कि पुत्र की भेंट से प्रसन्न होवें पन्द्रहवें दिन तो शिवजी और पूर्णमासी को गिरिजा वहां जाया करती हैं पर वहां नहीं ठहरते वे अपने स्थान को लौट आया करते हैं और रात दिन गुह का स्मरण करते हैं यह दूसरा शिवलिङ्ग बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से है उनके दर्शन से हर प्रकार का आनन्द मिलता है इसकी महिमा तीनों लोक में प्रसिद्ध है हे नारदजी! जब कि यह ज्योतिर्लिङ्ग प्रकट हुआ तो हम और विष्णु और सब देवता आदि ने जाकर उसकी पूजा की और हम सबने बड़ी स्तुति की तब शिवजी प्रकट हुये और हम सबको वहीं वर देकर उसी स्थान में अन्तर्धान हो गये इस दूसरे ज्योतिर्लिङ्ग चरित्र के पढ़ने सुनने से सर्वप्रकार का आनन्द मिलता है।

बाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी! अब हम तीसरे ज्योतिर्लिङ्ग की

महिमा का बखान करते हैं जिनकी सेवा से बहुतेरों ने परमपद पाया है कि अवन्तीपुरी जो सातपुरियों में से है और जिसको उज्जयिनी कहते हैं जिसकी ओर देखने से पाप भाग जाते हैं और शिवजी और शिवरानी में प्रेम बहुत बढ़ता है वहां एक शुद्धाचारी शिवजी का भक्त ब्राह्मण रहता जो भस्म धारण किये हुये रुद्राक्ष पहने सदा शिवशंकर कहा करता था और निष्काम शिवजी की भक्ति में लगा रहता वह सब काम वेद की आज्ञानुसार कर दान आदि नहीं लेता था और विधिपूर्वक पार्थिव पूजन करता सो शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे अपनी अप्रमेय भक्ति कृपा की उसके चार पुत्र थे वह भी शिवजी की सेवा में तत्पर रहते उनके ये नाम हैं पहला देवप्रिय--दूसरा प्रियमेधा--तीसरा सुकृत--चौथा धर्मवादी उसी समय में एक असुर बड़ा बलवान् तीनों लोक को दुःख देनेवाला जिसका नाम दूषण था उपजा वह रत्नमाल गिरिपर अपनी स्त्रीसहित रहने लगा उसने हमारा बड़ा तप किया था और हमसे उसने बड़े बल का वर प्राप्त किया था सो उसने अहंकार से सब देवताओं को भी जीत लिया और उसी पर्वत पर रह तीनों लोक का राज्य करने लगा उसने तीनों लोक का धर्म मिटा भांति २ के पाप किये और सबको दुःख पहुँचाया सो सब देवता और मुनि आदि मेरे पास आकर पुकारे हमने कहा कि हमतो उसे वर दे चुके हैं पर उसको शिवजी मारडालेंगे तुम धैर्य रक्खो यह कह हमने सब देवता आदि सहित शिवजी के समीप जा प्रणाम दण्डवत् और स्तुति के उपरान्त विनय की कि हम सबको दूषण दैत्य बड़ा दुःख देता है तीनों लोक में कोई सुखी नहीं तुम सदा दैत्यों का नाश किया करते हो कृपा करके उसका भी वध करो शिवजी बोले कि तुम सब अपने २ स्थानों को चले

जाओ हम उसको नष्ट करेंगे जब पुत्रों सहित हमारे भक्त को जो उज्जयिनी में रहता है यह दैत्य दुःख देगा तब हम उसको मारडालेंगे यह सुनकर हम सब अपने२ स्थान पर आकर समय को देखने लगे सो शिवजी की माया से दूषण के मन में यह बात उपजी कि शिवजी के भक्तों को दुःख देना चाहिये इसी विचार से उसने अपने वीरों को आज्ञा दी कि देवताओं का मूल ब्राह्मण हैं व उनका मूल शिवभक्त हैं इससे तुमको उचित है कि शिवभक्त को जड़ पेड़ से नष्ट करो यह कह आप सेना सहित शिव भक्तों के वध करने के निमित्त चला और पहिले उज्जयिनी में पहुँचा क्योंकि उसने सुना था कि उज्जयिनी में शिव के भक्त बहुत से रहते हैं उसने उज्जयिनी को चारों ओर से घेर लिया और इतना अन्याय और उपद्रव किया कि सब उज्जयिनी के निवासी अति दुःखी होकर रोने लगे वे लोग विकल हो घरबार छोड़ बाहर को भागे उनको दैत्यों ने पकड़ लिया पर शिवजी के भक्त बराबर अपने घरों में बैठे रहे क्योंकि उनको पूर्ण विश्वास था कि शिवजी हमारे सहायक हैं हम क्यों भागें निदान दैत्य सेना सहित उस स्थान पर पहुँचा जहां शिवजी के भक्त बैठे हुये थे दैत्य ने आज्ञा दी कि इनको बन्दी में छोड़ो और तुरन्त मार डालो यह कह आप दैत्यों सहित उनके मारने के लिये आगे चला पर शिवभक्तों के मन में कुछ भी भय न हुआ उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि वे उस स्थान तक नहीं पहुँचे जहां कि शिवभक्त ब्राह्मण पार्थिव पूजा कर रहे थे कि उनके चारों ओर की धरती फटकर वहां गढ़ा होगया और ऐसा महा भयानक शब्द हुआ कि तीनों लोक कांप उठे बहुत से दैत्य मूर्च्छित होकर गिर पड़े बहुत से भाग गये पर दूषण दैत्य तो भी उसके भीतर पैठ गया कि

उनको मार डालें निकट था कि वह ब्राह्मणों के समीप पहुँच जावे कि शिवजी ने प्रकट हो अति क्रोध से कहा कि तुम्हीं हमारे भक्तों को मारोगे देखो हम इसीलिए प्रकटे हैं तुम्हारे मारने में अब कुछ भी विलम्ब नहीं है हम महाकाल हैं अपने भक्तों को बचाते हैं अब तू आगे न आना पर तो भी दूषण दैत्य ने कुछ न माना आगे चला शिवजी ने एक हुंकार किया जिससे दूषण जलकर भस्म होगया और सब दैत्य जो उसके साथ थे उसी समय जल गये बाक़ी दैत्य भाग कर पृथ्वी के नीचे छिप रहे और ब्राह्मण अपने चारों पुत्रों सहित शिवजी को देख अति प्रसन्नता से शिवजी की स्तुति करने लगा इतने में सब देवता और मुनि आदि उस स्थान में आगये और हम और विष्णु भी बड़े प्रेम से सभा के साथ हुये देवताओं ने दुन्दुभी बजाई आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई हम सबने शिवजी की स्तुति की तब ब्राह्मण ने शिवजी से बिनती की कि हे सदाशिव! आपने आके अपने भक्तों को कृतार्थ कर दिया और हर प्रकार सब दुःखों को दूर करके तीनों लोक को रख लिया पर मेरी विनय है कि इसी गर्त में आप भवानी और गणों समेत स्थित होवें और जो दूषण दैत्य संसार का काल था उसको तुमने नष्ट करडाला इससे तुम्हारा नाम महाकाल हो तुम्हारी पूजा से संसार भर मनोरथ पावे सो और सबने भी इसी बात की विनय की शिवजी ने अङ्गीकार किया और ब्राह्मण की स्थापित की हुई जो शिवलिङ्ग की मूर्ति थी उसी के भीतर शिवजी प्रवेश कर गये उस समय ब्राह्मण ने अपने पुत्र हम विष्णु और सब देवता और मुनि आदि समेत उस मूर्ति की पूजा की फिर सब अपने २ लोक को चले गये।

तेईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद ! महाकाली की पूजा से कोई बात दुर्लभ नहीं बरन् परमपद मिलता है और महाकाल के समान भक्त का आनन्द देनेवाला दूसरा कोई देवता नहीं उनकी पूजा से सब मनोरथ पूरे होते हैं और पाप दूर होते हैं और धन स्त्री पुत्र आनन्द अधिक होकर दुःख का लेश भी नहीं रहता आयु बढ़ती है और सर्वरोग नष्ट होजाते हैं राजा चन्द्रसेन की आपदा इन्हीं की पूजा से दूर हुई और इन्होंने श्रीकर को अपना सेवक बना लिया इतना सुन नारद ने पूछा कि हे ब्रह्माजी ! श्रीकर का चरित्र विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि उज्जयिनी में चन्द्रसेन राजा हुआ वह शिव का बड़ा भक्त था और महाकाल की बड़ी सेवा किया करता और मणिभद्र जो शिव का गण था उसकी चन्द्रसेन से बड़ी प्रीति होगई उसने प्रसन्न होकर राजा को एक चिन्तामणि दी जिसके देखने सुनने स्पर्श करने और स्मरण से सर्वदुःख दूर होकर आनन्द प्राप्त होता है और लोहा, पीतल और पत्थर आदि जो उससे छू जावे वह तुरन्त सोना होजावे राजा चन्द्रसेन उस मणि को पहनकर सूर्य के समान प्रकाशता था जब यह वृत्तान्त दूसरे राजाओं ने सुना तो उन सबको लोभ उपजा और हर प्रकार के उपायों से आकर राजा से वह मणि मांगी क्योंकि यह रीति है कि मूर्ख लोग दूसरे का धन देख जला करते हैं और प्रकट है कि देवता से जो वस्तु प्राप्त हो उसको किसी को न देना चाहिये सो पृथ्वी भर के राजाओं ने इकट्ठे हो चन्द्रसेन पर धावा किया और उज्जयिनी को चारों ओर से घेर लिया पर उस समय भी राजा अति दृढ़ता और सन्तोष से निर्जल रह महाकाल की शरण में गया और रात्रि दिन उनकी पूजा की महाकाल ने उस समय

यह चरित्र किया कि एक गोपी अपना पांच वर्ष का बालक लिये हुये वहां आई और चन्द्रसेन की पूजा देखने लगी बालक को शिवजी की पूजा की बड़ी अभिलाषा उपजी उसने प्रेम-पूर्वक एक पत्थर उठा उसको स्थापित किया और तन मन से उसकी पूजा की और सब विधि से पूजा में लगा केवल अपनी बुद्धि से सब बातें कीं वह बारम्बार शिवजी को प्रणाम करके नाचने लगा जब उसकी माता ने उसको भोजन के निमित्त बुलाया तो वह अपनी माता के पास न गया तब उसकी माता ने उस स्थान पर जाकर अपने पुत्र को भलीभांति मारा और हाथ पकड़कर खींच लिया पर तो भी वह शिवजी के प्रेम में डूब कर न गया तब उसकी माता ने शिवलिङ्ग को बहुत दूर फेंक दिया और अति क्रोध से बालक को मारा उस समय वह बालक बहुत रोया और मूर्च्छित हो पृथ्वी में गिर पड़ा जब उस ने नेत्र खोले तो उसको विचित्र लीला देख पड़ी अर्थात् उसने अच्छा बना हुआ शिवालय देखा जिसमें नाना प्रकार के रत्न और मणियां लगी हुई थीं उसके खम्भे जड़ाऊ सोने के और द्वार भी सोने के थे और हजारों स्वर्ण के कलश चढ़े हुये बीच में रत्नों का एक सिंहासन रक्खा हुआ ऐसी शिवजी की बड़ाई देख वह बालक आश्चर्यपूर्वक अति प्रसन्न हुआ और उसने शिवपूजा की महिमा जानी और दण्डवत् कर पृथ्वी में गिर पड़ा और शिवजी की बड़ी स्तुति की और कहा कि हमारी माता जो अति मूर्खा है उसका अपराध क्षमा कीजिये जो फल मुझे आपकी पूजा में हुआ उसके बदले में केवल यह चाहता हूं कि मेरी माता का अपराध दूर होजावे जब सन्ध्या को वह लड़का अपने घर चला तो देखा कि नया नगर इन्द्रलोकके समान स्वर्ण का बसा है उसमें रत्न मणि और मुक्ता चारों ओर

वर्तमान हैं उसमें सबसे श्रेष्ठ इसकी माता का मन्दिर है जिसमें एक शय्या रत्नसे जड़ी हुई रक्खी है जिसपर श्वेतवस्त्र पड़े हुये हैं उसके ऊपर उसकी माता गोपी सो रही है जो उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणों से अलंकृत है उसका स्वरूप और ही प्रकार का प्रकाशयुक्त होगया है सो उसने अपनी माता को नींद से जगाया उसकी माता ने भी उठकर जब यह चरित्र देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ और अति प्रसन्न हो बालक को अपने शरीर में लिपटा लिया और शिवजी की कृपा समझ राजा के पास यह सब हाल कहला भेजा सो राजा शिवजी का यह चरित्र सुन अति प्रसन्न हुआ और अपने मित्रों सहित जाकर देखा और अति प्रेम में डूबकर बड़ा आनन्द माना और बालक के साथ बहुत प्रेम बढ़ाया और कहा कि उस राजा की बड़ी भाग्य है कि जिसकी प्रजा शिव की भक्ति में इतनी दृढ़ हो।

चौबीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि इसी तरह रातभर शिवजी के चरित्र और महिमा कहते एक क्षण के समान बीत गई और शत्रुओं का भय कुछ भी किसी के मनमें न रहा प्रभात को जब राजाओं ने अपने दूतों से यह शिवजी का चरित्र सुना तो वे अति आश्चर्य में हुये और परस्पर कहने लगे कि जहां पर सदाशिवजी ऐसे प्रसन्न हैं वहां किसी की क्या चल सकेगी निदान वे सब शस्त्रों को डालकर चन्द्रसेन के समीप गये और चन्द्रसेन ने सबका आदर किया फिर सबने महाकाल के दर्शन किये फिर गोपी के मन्दिर में जाकर गोपी की बड़ी प्रशंसा की और जब कि गोपी के स्थापित किये हुये लिङ्ग को देखा तो सब शिवजी की भक्ति में स्थिर होगये और एक बड़ी भारी सभा सजाई गई जिसमें सब राजाओं ने गोपी के पुत्र से भेंट की और उसको बड़ी २

सौगातें दीं और जितने संसार में गोप थे उन सबका राजा उस लड़के को बनाया उस समय हनुमान्जी वहां पर प्रकट हुये सो सब राजा उठ खड़े हुये और हनुमान्जी को जानकर सबने स्तुति की जो बहुत बड़ी है और कहा कि मेरे बड़े भाग्य हैं जो आप यहां आये यह कह सब राजा प्रसन्न हुये और हनुमान्जीने उस गोपी के लड़के को उठा लिया और अपने हृदय में लगाकर उसके सब शरीर को स्पर्श कर लिया और सब राजाओं से हनुमान्जी ने कहा कि यह महाकाल शिवजी का लिङ्ग अति शुभ है वह बड़ा सुख देनेवाला सब दुःखों का नाश करनेवाला भक्तों का मनोरञ्जन और शत्रुओं का नाश करनेवाला है कल तेरसि तिथि और शनैश्चर का दिन था सो प्रदोष के समय इस गोपी के बालक ने शिवजी की पूजा की महाकाल ने प्रसन्न होकर उसको राजा चन्द्रसेन सहित कृतार्थ कर दिया महाकाल के समान दूसरा स्वामी नहीं तीन वेर महाकाल का नाम लेने से दुःख और पीड़ा नष्ट होजाती है यद्यपि प्रदोष व्रत सब व्रतों का राजा है पर जो प्रदोष शनिवार को पड़े तो वह और भी अधिक शुभ है और जो कृष्णपक्ष में प्रदोष होता है उसकी अप्रमेय महिमा है ऐसा योग पाकर जो महाकाल की पूजा करे तो व्रती और महाकाल का पूजक सब अच्छे फल पावें और मोक्ष पाकर सदाशिवजी के समीप रहा करें इस बालक ने ऐसे ही योग में कल के दिन महाकाल की पूजा की थी इस बालक के समान दूसरा कोई गोपों के यश बढ़ानेवाला न होगा इसकी आठवीं पीढ़ी में नन्द नाम गोप उपजेगा वह पूर्ण शिवजी का सेवक होगा वह गोपेश्वर शिवलिङ्ग की पूजा करेगा सो शिवजी की आज्ञा से विष्णु आप उसके पुत्र होकर कृष्ण के नाम से प्रसिद्ध होंगे आज से

इस बालक का नाम श्रीकर होगा यह कह हनुमान्जी ने उसको शिवजी के पूजन की विधि बता दी इस प्रकार श्रीहनुमान्जी राजा चन्द्रसेन और श्रीकर पर अनुग्रह कर अन्तर्धान होगये और सब राजा चन्द्रसेन से आज्ञा लेकर अपनी २ राजधानियों को लौट गये और श्रीकर हनुमान्जी के उपदेश के अनुकूल ब्राह्मण के द्वारा शिवजी की पूजा में लगे और चन्द्रसेन दोनों लोक में प्रसन्न रहकर अन्त में परमपद को पहुँचे हे नारदजी! महाकाल की ऐसी महिमा है यह चरित्र अतिपवित्र है जिसके पढ़ने सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है—तीसरा अवतार पूर्ण हुआ ।

पच्चीसवां अध्याय ।

चौथे ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! एक समय तुम गोकर्णक्षेत्र में जिसका हम वर्णन कर चुके हैं गये और गोकर्ण में स्नान कर तुमने महाबल शिवलिङ्ग की पूजा की और वहां से लौटकर तुम शिवलिङ्गों के दर्शन करते रेवानदी जिसका नर्मदा भी नाम है और शिव की पुत्री प्रसिद्ध है उसके तट पर पहुँचे रेवानदी की महिमा तो तीनों लोक में प्रसिद्ध है कि जिसके दर्शनमात्र से सब पाप और दुःख दूर होजाते हैं और जिसमें स्नान करके संसार में नाना प्रकार के आनन्द और अन्त में परमपद प्राप्त होते हैं तीनों लोक की नदियों में गङ्गा सर्वोपरि है जिसमें स्नान करने से अप्रमेय सुख प्राप्त होता है उससे श्रेष्ठ रेवा है जैसा कि वेद और पुराण बखानते हैं चौदह दिन यमुना में स्नान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं और तीन दिन सरस्वती में स्नान करने से और एक दिन गङ्गा में स्नान करने से सब पाप निवृत्त होते हैं और रेवा के केवल दूर ही से दर्शन से उतना फल होता है और

जिसके कङ्कर भी शिवजी के समान हैं और जहां शिवनिर्मा-ल्य लेने से भी कुछ दोष नहीं वहां और जो तारयन्त्र तीर्थ है वह सब पापों का दूर करनेवाला है हे नारद! तुमने वहां जाकर स्नान किया और प्रणवेश्वर शिवलिङ्ग की पूजा की वहां तुमने विन्ध्याचल पर्वत को देखा जहां संसार भर का आनन्द मालूम होता है वहां नाना प्रकार के वृक्ष और जीवधारी हैं और वह पर्वत दो प्रकार के रूप रखता है सो तुमको अति सुन्दरता से देवताओं के समान रूप धारण किये देख अति प्रसन्न हुआ और तुम्हारी अगवानी कर तुमको उसने प्रणाम किया और बहुत विनती के साथ तुमको अच्छे स्थान पर बैठाया और शुभ वस्तुओं से तुम्हारी पूजा की और तुम्हारे आने से कृतार्थ हुआ और कहा कि अब मैं अपने सब कुलों में श्रेष्ठ कहलाऊँगा मेरी अयोग्य दशा जो पर्वत होने के कारण है जाती रहेगी यह सुन तुमने ठंढी श्वास खींची तब विन्ध्याचल ने कहा हे नारद! आपके ठंढी श्वास लेने का क्या कारण है आप कृपा करके वर्णन कीजिये यद्यपि पृथ्वी थांभने का बल मेरु में है और शिवजी के सम्बन्धके कारण हिमाचल मान के योग्य है पर मेरु केवल मेरी समझ में देवताओं के रहने से श्रेष्ठ गिना गया है और निषध, नील, मन्दराचल, रैवत, क्रौञ्च, किष्किन्धा, श्रीगिरि, सह्य आदि पर्वत पृथ्वी के थांभने में हमारे समान नहीं हैं विन्ध्या-चल के ऐसे अहंकार के वचन सुन तुमने मन में कहा कि अहं-कार से सिवाय दुःख के सुख नहीं मिलता क्या श्रीगिरि से कोई पर्वत अधिक श्रेष्ठ और उत्तम है जिसके शिखर देखकर परमपद मिलता है निदान तुमने विन्ध्याचल से कहा कि वास्तव में तुम सत्य कहते हो तुम ऐसे ही हो पर सुमेरु तुमको कुछ भी नहीं जानता इसी से हमने ठंढी श्वास खींची थी यह कह हे

नारद ! तुमतो चले गये और विन्ध्याचल अति चिन्तित हुआ और कहा कि मुझे धिक्कार है जिसका ऐसा बलवान् शत्रु है मैं क्या करूं जिससे मैं सुमेरु को जीत सकूं निदान उसने नाना प्रकारके विचारों के उपरान्त यह बात मनमें शोची कि शिवजी की शरण में जाकर उनके उपदेश के अनुसार चलूं कि मेरी विजय हो उनकी सेवा से किसने मनोरथ नहीं पाया यह विचार वह नर्मदा के तट पर गया जहां ओंकारेश्वर लिङ्ग विराजमान हैं और वहीं से रेवा निकली है वहां पर विन्ध्याचलने शिवलिङ्ग की स्थापना की जिसका नाम अमरेश्वर है और उसका दूसरा नाम परमेश्वर है सो षट् मास पर्यन्त वह बराबर शिवजी के ध्यान और पूजा में लगा रहा अन्त को शिवजी विन्ध्याचल के ध्यान के अनुसार उसके सामने खड़े होगये और कहा "वरम्ब्रूहि" विन्ध्याचल ने शिवजी की मूर्ति अपने मुख्य लक्षणों समेत अपने आगे खड़ी देखी ।

छब्बीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि विन्ध्याचल ने ऐसे सदाशिव का शुद्ध स्वरूप देख प्रणाम कर बड़ी स्तुति की और कहा मैं आप की शरण हूं हमारा दुःख दूर कर दीजिये हमसे वृथा ही सुमेरु शत्रुता रखता है और वह अपने को हमारा स्वामी और वीर समझता है मैं आपसे यह बात चाहता हूं कि मैं उसको जीत सकूं शिवजी बोले अच्छा यही होगा उस समय सब देवता और मुनि वहां इकट्ठे हो गये और सबने शिवजी को प्रणाम किया और विन्ध्याचलने देवता और मुनि आदि सहित शिवजी से विनय की कि आप कृपा करके यहां स्थित हों सो शिवजी स्वीकार करके जो लिङ्ग कि विन्ध्याचल ने स्थापित किया था उसमें प्रवेश कर गये और दूसरा लिङ्ग पूर्णांश से जो तारेश्वर

था वह दूसरा लिङ्ग शिवजी के अंश से हुआ तथाच जो यन्त्रस्थल लिङ्ग है वह तारेश्वर है और जो पार्थिवलिङ्ग है वह परमेश्वर लिङ्ग है उस समय वहां बड़ा उत्सव हुआ और सबने उस शिवलिङ्ग की पूजा की फिर अपने २ स्थानों को लौट गये और विन्ध्याचल अपने घर में आकर कहने लगा कि मुझको सुमेरु के अहंकार का कारण मालूम होगया वह यह है कि उसकी चन्द्रमा और सूर्य नक्षत्रों समेत परिक्रमा करते हैं इससे उसको अपनी बड़ाई पर अहंकार है सो मैं आज इतना बढ़ूंगा कि सूर्य को चलने से रोंक दूंगा इस उपाय से मैं सुमेरु को जीतूंगा यह शोच वह इतना बढ़ा कि उसने सूर्य की गति को रोंक लिया और सूर्य सहस्रों किरणों से प्रकाश फैलाकर आगे को चले पर घोड़े आगे न चल सके वे वहीं ठहर गये जिससे दो दिशा अर्थात् इन्द्रलोक और कुबेरलोक में बहुत गरमी और किरणों की अधिकता से बड़ा दुःख फैला और सर्वमनुष्य जलने लगे और वरुण और यमराजकी दिशा में अँधेरा छागया जिससे वहां के पुरुष स्त्री सब विकल होगये निदान इसीतरह तीनोंलोक दुःखी हुये और देवता मुनि आदि मिलकर हमारे पास गये और सब वृत्तान्त कह सुनाया हमने कहा कि विन्ध्याचल ने सुमेरु के जीतने को रेवानदी के तट पर प्रणवेश्वर शिवलिङ्ग के निकट बड़ा तप किया है और आप भी एक प्रणवेश्वर नामक लिङ्ग स्थापित किया है उनके वर से उसने इतना बल पाया है इससे तुम भी सब मिलकर वहां जाओ और प्रणवेश्वर की सेवा करो तुम्हारे लिये उत्तम होगा सो वे सब जाकर शिवजी की पूजा करने लगे शिवजीने प्रसन्न होकर कहा कि तुम सब हमारी काशीपुरी में जाकर अगस्त्यमुनि से यह सब वृत्तान्त कहो वह तुम्हारा काम कर देवेंगे यह सुनकर सब देवतादि ने

अगस्त्य के समीप जाकर प्रणाम किया और उनके पूछने पर बृहस्पति ने कहा कि विन्ध्याचल ने सूर्य को रोक लिया है हम शिवजी की आज्ञानुकूल तुम्हारे पास आये हैं अगस्त्य ने अङ्गीकार कर सबको बिदा किया और काशी को अति दुःख से छोड़कर विन्ध्याचल के पास गये जिनको देख विन्ध्याचल कांप उठा और कहा कि मैं आपका सेवक हूँ जो आज्ञा हो उसका पालन करूँ अगस्त्यजी बोले कि जब तक हम लौट न आवें तब तक तुम इसी तरह रहना यह कह अगस्त्य दक्षिण की ओर जाकर फिर न आये और विन्ध्याचल अगस्त्य मुनि के आने की बाट देखता रहा न अगस्त्य लौटे न विन्ध्याचल बढ़ सका इससे तीनों लोक को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ यह चरित्र अति पवित्र है जिसके पढ़ने सुनने से संसार में आनन्द और अन्त में परमपद प्राप्त होता है।

सत्ताईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! हमारे पुत्र स्वायम्भुवमनु बड़े प्रतापी हुये जिन्होंने सब धर्मों का वर्णन कर सब पापों को दूर कर दिया उन्होंने शिवजी की बड़ी भक्ति की और स्मृति बनाकर सब विवादों को दूर किया उनके तीन कन्या और दो पुत्र उपजे जिनके बड़ी सन्तान हुई एक लड़के का नाम उत्तानपाद और दूसरे का नाम प्रियव्रत था और इसी प्रियव्रत ने रथ पर चढ़ सूर्य के समान संसारभर में भ्रमण कर सब द्वीप और समुद्रों को बनाया उसके सात पुत्र उपजे जिनको उसने हमारी आज्ञा से क्रमपूर्वक एक २ द्वीप दे दिया और आप शिवजी की भक्ति में प्रवृत्त हो परमपद पाया उनमें सबसे बड़ा लड़का आग्नीध्र था जो जम्बूद्वीप का स्वामी हुआ उससे नाभि नामक पुत्र उपजा उससे ऋषभ हुआ उसके सौ पुत्र उपजे जिनमें सबसे बड़े पुत्र

का नाम भरत था जो चक्रवर्ती राजा हुआ और नव लड़के योगी हो गये जिनके साथ तुमने बड़ी वार्ता की और इक्यासी लड़के सिद्ध हुये बाकी क्षत्रिय होकर अपने क्षात्रधर्म में दृढ़ रहे भरत का यश तीनों लोक में फैल गया वह शिवजी का बड़ा भक्त था जो लड़का जिस खण्ड में राजा हुआ वह खण्ड उसी के नाम से प्रसिद्ध हुआ निदान स्वायम्भुवमनु की बड़ी पुत्री जिसका नाम आकूती था वह रुचिमुनि से व्याही गई सो रुचि पुत्र की प्राप्ति के निमित्त विष्णुजी का तप करने लगे विष्णु ने प्रसन्न होकर कहा कि वर मांगो रुचिमुनि बोले कि हम तुम्हारे समान पुत्र चाहते हैं विष्णुजी ने कहा कि यही होगा यह कह विष्णुजी अपने लोक को और मुनि अपने घर को लौट आये निदान प्रसूतिकाल में विष्णुजी दो रूप हो आकूती के उदर से उपजे जिनका नाम हमने नरनारायण रक्खा उस समय हम सबने आकर बड़ा उत्सव किया फिर सब अपने २ लोक को चले गये सो दोनों ने अपने दोनों पुत्रों को विष्णु जानकर दीक्षा की फिर नरनारायण दोनों हिमाचल पर्वत में तप के निमित्त गये और जो हिमाचल की एक शाखा केदार के नाम से प्रसिद्ध है वहां दोनों ने बड़ा तप किया और पार्थिवपूजा शिवजी का अखण्ड ध्यान करते रहे इसी प्रकार बहुत काल उनको तप करते हुये बीता तब शिवजी अति प्रसन्न होकर प्रकट हुये जहां कि नरनारायण तप करते थे दोनों ने शिवजी को अपने सामने खड़ा देखकर बड़ी स्तुति की और कहा कि हमको अपनी भक्ति कृपा करो यह कह नरनारायण चुप होगये शिवजी ने कहा कि तुम्हारी ऐसी शुभ स्तुति है कि हम अति प्रसन्न हुये जो मन की इच्छा हो वह मांगलो तुम हमारे रूप हो भक्तों के लिये तुमने धरती में अवतार लिया है यह सुनकर नरनारायण बोले कि हमको अपने चरणों की भक्ति

दो और इसी स्थान पर अपने पूर्ण अंश से स्थित होजावो यह सुनकर हँसकर केदार में जहां नर और नारायण तप करते थे अपने पूर्ण अंशसे स्थित होगये और ज्योतिर्लिङ्ग होकर केदारेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये नरनारायण ने उनकी पूजा की उस समय शिवजी ने कृपालु होकर सबको कृतार्थ कर दिया फिर हम सब अपने २ स्थानों को चले गये और नरनारायण अति सुखपूर्वक वहां रहे वे प्रतिदिन केदारेश्वर की पूजा करते हैं उस स्थानको बदरीवन भी कहते हैं जहां देवता और मुनि आदि शिवजी की पूजा करते हैं यह केदारेश्वर शिव अवतार सब भरतखण्ड के पापों के दूर करनेवाले हैं नारद आदि मुनि विष्णु नरनारायण और इन्द्रादि सहित इनकी पूजा किया करते हैं केदारेश्वर के केवल दर्शन से सब पाप जल जाते हैं वहां जाकर जो मनुष्य कि बर्फ में गलजाते हैं वे परमपद पाते हैं उनको वेप्रयास मुक्ति मिलजाती है और जिनके दर्शन के लिये चलकर जो मार्ग में मरजावे तो भी मुक्ति मिलती है इनकी असंख्य महिमा वेद और पुराण वर्णन करते हैं जब कि कृष्णचन्द्र विष्णुजी के अवतार ने जरासिन्धु से हारकर केदारेश्वर में जाकर बड़ा तप और पूजा की और सात मासतक शिवका ध्यान किये हुये केवल एक चरण से योग धारण किये हुये खड़े रहे तो शिवजी ने प्रसन्न होकर वरदान मांगने की आज्ञा दी कृष्ण ने अप्रमेय बल मांग सबको जीता और जब कि राजा पाण्डु के लड़के वहां गये कि केदारेश्वर के दर्शन करें और अपने पापों से छूटें तो शिव भैंसे का रूप धर वहां से भाग चले सो उन्होंने अति प्रेम से श्वासा को इतना रोंका और यह विनय की कि जो पाप हमको महाभारत के युद्ध में हुआ है उसको कृपा करके दूर करो और यहीं स्थित होजाओ तो शिव पिछले धड़ से उसी स्थान पर स्थित होगये जिससे

पाण्डु के पुत्रों के सर्व दुःख निवृत्त होगये और अगले धड़से नैपाल में जाकर उस देशको कृतार्थ करदिया और हरिहररूप से वहां सबको सुख देते हैं उनके दर्शन से सब पाप छूट जाते हैं यह चरित्र हमने केदारेश्वर का वर्णन किया अब हम भीम-शंकर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं।

अट्ठाईसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि जिस प्रकार कामरूप देश में शिवजी प्रकटे और जिस कारण उनका प्रादुर्भाव हुआ वह सब चरित्र हम वर्णन करते हैं कि पूर्वकाल में भीमनामी दैत्य जो कुम्भ-कर्ण के वीर्य से उपजा था और जिसकी माता का नाम कर्कटी था वह अपनी माता सहित सह्य पर्वत में स्थित हो तीनोंलोक को तृणवत् समझ नाना प्रकार के उपद्रव करनेलगा एक दिन उसने अपनी माता से पूछा कि हमारे माता पिता कौन हैं वे कहां गये हैं तुम अकेली यहां क्यों रहती हो तू हमको विधवा स्त्री के समान विदित होती है सो उसकी माता ने कहा कि तुम कुम्भकर्ण के पुत्र हो जो रावण का छोटा भाई था जिसको दशरथ के पुत्र रामचन्द्र ने मारडाला यह सुनकर भीम ने पूछा कि तेरा पति और है और मेरा पिता अन्य मनुष्य था और कुम्भकर्ण और रावण कौन थे और राम कौन हैं जिन्होंने उनको मारडाला तुम सब वृत्तान्त वर्णन करो सो उसने आदि से अन्ततक रावण के कुल और शूर्पणखा का चरित्र और सीताहरण और फिर लङ्का में श्रीरामजी का गमन और सब दैत्यों का वध विस्तार से कह सुनाया और कहा कि जब मैं विधवा हो गई तो अपने माता पिता के घर रहने लगी वह मेरा दुःख देख मुनियों को जो मेरे पति के वध करने के कारण हुये खाने लगे और दण्डकवन में मुनियों को भक्षण कर दैत्यों को बसाया एक दिन

उन्होंने अगस्त्य के एक शिष्य को जिसका नाम तीक्ष्णाक्ष था भोजन करने की इच्छा की सो हमारे माता पिता को उन्होंने क्रोध की दृष्टि से देख कर जला दिया और मैं माता पिता रहित होकर तुमको लेकर यहां भाग कर बसी शेष वृत्तान्त रामायण में है ।

उन्तीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! रामचन्द्र का चरित्र सुन भीम अति कोपित हो बदला लेने के विचार में हुआ कहने लगा कि देवताओं ने हमारे साथ बड़ी बुराई की है जिनकी सहायता विष्णु ने कर हमारे कुल को नष्ट करा दिया दैत्यों की बड़ी अप्रतिष्ठा हुई है जो मनुष्य अपने पिता का बदला न लेवे वह महानीच है सो वह तप की इच्छा से वन में जाकर हमारा तप करने लगा और इतना कठिन तप किया कि सहस्रवर्ष पर्यन्त श्वास रोंके हुये बैठा रहा पर हम देवताओं का दुःख समझ उस पर प्रसन्न न हुये सो भीम के उग्र तप से तीनों लोक जलने लगे और देवता और मुनि आदि अपने २ लोकों से भाग कर हमारी शरण में पहुँचे और भीम के तप का वृत्तान्त वर्णन कर कहा कि वह दैत्य की स्त्री और कुम्भकर्ण से उपजा है और अपने पिता का बदला लेने की इच्छा से तप कर रहा है उसके तेज से तीनों लोक जले जाते हैं तुम जाकर उसको वर दो कि तीनों लोक जलने से बचे रहें यद्यपि यह वचन कहना हमको उचित नहीं पर हम अपने प्रयोजन से कहते हैं हमने देवताओं को बिदा कर उसके पास जाकर उसको वर मांगने की आज्ञा दी भीम ने कहा कि मुझको अप्रमेय बल कृपा करो कि मैं अपने पिता के शत्रुओं को जीतूं हम यह वर देकर अन्तर्धान हो गये और भीम प्रसन्नचित्त तुरन्त अपनी माता के पास गया और

कहा कि मैं सब मुनि और देवताओं का बध कर डालूंगा तुम अपने नेत्रों से ऐसा सुख देखोगी यह कहा और एक भयानक शब्द किया कि तीनों लोक कांप उठे देवताओं को भय और दैत्यों को आनन्द प्राप्त हुआ सब दैत्य अपने २ परिवारों सहित उसके समीप गये और भीम को अपना राजा बनाया और भीम ने दैत्यों सहित इन्द्र पर चढ़ाई की सो सम्पूर्ण देवता भाग गये और विष्णु की शरण में पहुँचे विष्णु देवताओं को साथ लिये हुये दैत्य के साम्हने खड़े हुये निदान घोर युद्ध मचा दोनों ओर के मनुष्य बहुत ही लड़े और विष्णु और भीम ने भली भांति युद्ध कर हर प्रकार के शस्त्र चलाये निदान विष्णुजी ने अति कोपित हो ब्रह्मास्त्र हाथ में लिया उस समय आकाश-वाणी हुई कि हे विष्णो ! तुम अपने लोक को चले जाओ इस दैत्य को तुम नहीं जीत सकोगे इसको शिवजी बध करेंगे यह आकाशवाणी सुनकर विष्णु तुरन्त अन्तर्धान हो गये भीम ने जय पा अपनी सेना सहित लौटकर देवताओं के जीतने का हाल अपनी माता से आकर कहा और तीनों लोक का राज्य करने लगा और देवताओं के स्थान पर दैत्यों को हद स्वामी बनाया उसने सबके रत्न छीन लिये और वेद पुराण और स्मृति के सब धर्मों को बिगाड़ डाला ।

तीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हम विष्णु और सब देवता आदि ने शिवजीकी शरण में जाकर दण्ड और प्रणाम के उपरान्त स्तुति की और सब वृत्तान्त भीम का वर्णन करके उसके नष्ट होने की विनय की और कहा कि विना तुम्हारे और किसी से वह नहीं मरेगा शिवजी बोले कि अच्छा समय पर हम उसको मारेंगे जब कि वह कामरूप देशके राजा प्रियधर्म को जो हमारा भक्त है दुःख

देगा तब हम उसको मार डालेंगे तब तक तुम अपने २ स्थानों में जाकर दुःख सहो सो हम सब लौटकर समय की बाट देखने लगे एक दिन भीम के मन में आया कि जो शिवजी अपने बाण रामचन्द्र को न देते तो हमारे पिता आदि किसी प्रकार न मारे जाते वही शिव देवता और मुनियों की रक्षा किया करते हैं उन्हीं के बल पर विष्णु बलवान् रहते हैं उसको मैं मारडालूं पर वह शिव देख नहीं पड़ता इसलिये शिवजी के भक्तों को दुःख देना चाहिये वे अपने भक्तों का अपमान न देख सकेंगे निश्चय है कि वे तुरन्त आवेंगे यह इच्छाकर वह अपनी सेना सहित शिवभक्तों को ढूंढ़ने लगा और सबसे पहिले कामरूप के राजा को शिवजी का सेवक समझ वहां आया और नाना प्रकार के उपद्रव कर सब मन्दिर खोदडाले और घरों को नष्ट करदिया और धन और सामग्री सब लूट ली सो सब प्रजा दुःखी होकर राजा के पास जा पुकारी इतने में भीम ने राजा के गढ़ को घेर लिया और राजा को पकड़ बांध लिया और उसको बहुत मारा और राजा के पैरों में बेड़ियां डालदीं और सब राज्य को राजा से छीन सबका स्वामी आप बना पर राजा ने ऐसी दुःख की दशा में भी शिवजी की पूजा न छोड़ी और गङ्गा के स्मरण से मानसी स्नान कर पार्थिव पूजा की और दक्षानामक उसकी रानी जो उसी के पास बन्दि में थी वह भी बराबर शिवजी को पूजती रही सो शिवजी प्रसन्न होकर गुप्त रीति से वहां आये और पार्थिव में स्थित हुये जिसकी पूजा राजा करता था सो एक मनुष्य ने राजा को पूजते हुये देख भीम को खबर दी कि देखो वह इस समय तक पूजा नहीं छोड़ता अब आप उसे अपनी आंखों से देख लेवें सो भीम खड्ग हाथ में लेकर बड़े क्रोध से राजा के पास आया इस इच्छा

से कि उसको इसी समय मार डालूंगा और जो मनुष्य उसकी सहायता करेगा उसको भी नहीं छोड़ूंगा सो जब वह राजा के समीप गया तो दूत का कहना ठीक पाया और कहा हे राजन्! तू यह क्या कर रहा है हमसे सत्य २ कह राजा ने कहा कि हम तो अपनी आपदा के दूर करनेवाले शिवजी की पूजा कर रहे हैं वे अपने भक्तों के बड़े रक्षक हैं जो तुम्हारे मन में आवे वह करो शिवजी रक्षा करनेवाले हैं यह कहकर राजा ने शिव की स्तुति की भीम ने हँसकर कहा कि हम तेरे स्वामी को भलीभांति जानते हैं वे हमारा क्या कर सकेंगे हमारे पिता आदि ने क्या शिवजी की स्थापना नहीं की थी क्या वे शिवजी के भक्त न थे जिन्होंने एक नीच के समान मीच पाई जब तक मैं शिवजी को नहीं देखता हूं तब तक तुम उनको अपना स्वामी समझते हो तू यह कैसा अकर्म कर रहा है इस मूर्ति को अपने सामने से फेंक दे पर राजा को कुछ भी भय न हुआ और अति दृढ़ता से बैठा रहा क्योंकि शिवजी के भक्तों की यही रीति है कि आपत्तिकाल में और भी अधिक शिवजी की प्रीति करते हैं राजा ने इसी विचार से कि शिवजी अपने भक्तों के प्रति समय रक्षक हैं वे अवश्य सहायता करेंगे तो भीम से कहा कि तू बड़ा मूर्ख है जो शिवजी को औरों के समान जानता है जाना जाता है कि तू मरणप्राय है कदाचित् शिवजी क्रोध करेंगे तो तुम जलकर भस्म होजावोगे शिवजी वे हैं जिनके सेवक ब्रह्मा और विष्णु भी हैं औरों की क्या गणना है जो तुम हमारे साथ कुछ बुराई करोगे तो उसी समय जलकर भस्म हो जावोगे भीम ने कहा कि हम भलीभांति तेरे शिवजी को जानते हैं जो तू इसी समय शिवजी की पूजा नहीं छोड़ता तो निश्चय जानना कि तू प्राण से बध किया जावेगा निदान ऐसा विवाद

दोनों से हुआ राजा ने कहा कि तेरे मन में जो आवे वह कर मैं शिवजी की पूजा नहीं छोड़ता भीम ने बहुत दुर्वचन सुन खड्ग हाथ में ले कहा कि तेरे शिवजी कहां हैं इस समय आकर तेरी सहायता करें मैं तेरा शीश धड़ से भिन्न करता हूं यह कहकर भीम ने खड्ग चलाया उसी समय शिवजी पार्थिव के भीतर से प्रकट हुये ।

इकतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! जब शिवजी को गणों समेत भीम ने देखा तो शिवजी का महाभयंकर स्वरूप देखकर भयवान् हुआ सो शिवजी ने तुरन्त उसका खड्ग जला दिया और बड़े वेग से कहा कि हमारा बल देख और अपनी शक्ति हमें दिखा दे जिसपर तुझको इतना अहंकार है सो भीम को बल ने इतना बहँकाया कि वह युद्ध के लिये सामने हुआ और शिवजी के साथ भले प्रकार लड़ा और दैत्यों और शिवगणों से युद्ध होने लगा वह युद्ध देखकर हम और विष्णु आश्चर्य में खड़े रहे जो बाण भीम ने शिव के ऊपर छोड़े वह सब शिवजी ने अपने पिनाक नामी धनुष से काट डाले और हर प्रकार के शस्त्र भीम ने शिव पर छोड़े जिनको शिवजी ने अपने शस्त्रों से दूर किया और अपने त्रिशूल से भीम को धरतीपर गिरा दिया जिसको देखकर सब दैत्य रो उठे पर भीम फिर पृथ्वी से उठकर युद्ध करने लगा और जो २ बातें युद्ध की होती हैं वह दोनों ओर से हुईं इतना कहकर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हमने तुमको निराश हो शिवजी के समीप भेजा और कहा कि शिवजी से कह दो कि यह क्या होता है भीम को मार डालें तुमने जाकर सदाशिवजी की बहुत स्तुति करके विनती की कि भीम को मार डालिये सो शिवजी ने मानकर तुमको हमारे पास भेजा इतने में सब दैत्यों और

भीम ने शिवजी के ऊपर इकबारगी धावा किया उस समय हाहाकार मच गया और सब देवता रोने लगे और हम और विष्णु कहने लगे कि यह क्या होता है उस समय शिवजी ने क्रोधित होकर हुंकार दिया जिससे एक ज्वाला उपजी और सब दैत्यों को जला दिया और भीम को भी उसी ज्वाला ने परिवार सहित भस्म कर डाला सो वही भस्म सदाशिवजी की नासिका की वायु से उड़ श्रीसदाशिवजी और सब देवताओं के शरीर से स्पर्श कर पृथ्वी में गिरी जिससे लाखों गुणदायक औषध प्रकट हुईं और जिनके गुण से सिद्ध लोग नाना प्रकार के रूप धारण करते हैं और जिनके कारण बहुत से कार्य सिद्ध होते हैं और जिनके बलसे भूत और प्रेत आदि भागते हैं ऐसी लीला सदाशिवजी की देखकर देवतादिकों को अति सुख हुआ और सबने हाथ बांध सदाशिवजी की स्तुति की और कहा कि तुम यहीं स्थित रहो सो शिवजी अपने पूर्णांश से उसी स्थान पर जहां भीम को जलाया था स्थित हुये और यद्यपि वह देश अति पवित्र था पर जब शिवजी वहां स्थित हुये तो शुद्ध हो गया और वह भीम पूर्व शंकर के नाम से प्रसिद्ध हुआ जो पत्थर के रूप से वहां है जो इस चरित्र को पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा भीमशंकर नाम छठे ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र पूर्ण हुआ।

बत्तीसवां अध्याय।

विश्वनाथलिङ्ग का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम काशीपति विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जो सब पापों को क्षय करनेवाले और मोक्षदाता हैं वे ब्रह्महत्या को निवारण करते हैं कि प्रलय के उपरान्त जब शिवजी ही निर्गुण रूप से रह गये

और सर्वसृष्टि को अपने में लीनकर अकेले थे और कोई वस्तु सूर्य चन्द्र नक्षत्र कुछ न रहा केवल वही परब्रह्म गुणातीत और जिसके वर्णन में वेद भी गूंगा बहिरा है और मन वचन और इन्द्रियों से भी वह प्रतीत नहीं होसक्ता उस समय वह अकेला ही रह गया तब उसका कोई वर्ण और रूप न था और वह छोटे बड़े मोटे पतले कुछ भी न थे निदान हर प्रकार से निर्गुणरूप था सो उसी निर्गुण ब्रह्म ने सगुणरूप धारने का विचार किया और तुरन्त पाञ्चभौतिक शरीर धार सगुणरूप हो शिव हरके नाम से प्रसिद्ध हुये और उनके शम्भु महेशादि और बहुत से नाम हुये हे नारद ! निर्गुणस्वरूप और सगुण ब्रह्म में कुछ भी भेद नहीं यह श्रीमुख का वचन है फिर सगुण ब्रह्म ने अपने शरीर से शक्ति उपजाई और एकरूप से दो स्वरूप हुये वही शिवजी परमपुरुष तीनों गुणों के उपजानेवाले और शक्ति प्रकृतिरूप ने अपनी लीला के निमित्त एक क्षेत्र पांच कोस का निर्माण किया जिसको आनन्दवन, काशी, वाराणसी, अविमुक्ति, रुद्रक्षेत्र और महाश्मशान आदि बहुत नामों से मनुष्य जानते हैं वह स्थान श्रीपरम शक्ति और परम शिवजी का हुआ यह स्थल श्रीसदाशिवजी को बहुत ही प्रिय है सो शिवशक्ति ने उस स्थान में बहुत विहार किया और लीला करने के निमित्त अति सुन्दर शरीर धारण किया फिर उनको यह इच्छा हुई कि किसी बलवान् पुरुष को उपजावें सो अपनी बाईं भुजा से उन्होंने एक मनुष्य को जो अति सुन्दर और चार भुजा धारण किये था श्याम रङ्ग से उपजाया उसने तुरन्त शिवजी को प्रणाम कर कहा कि मुझे क्या आज्ञा होती है और मेरा क्या नाम है शिवजी ने कहा कि तुम तीनों लोक के स्वामी हो इससे तुम्हारा नाम विष्णु प्रकट होगा और चार

भुजा होने के कारण तुम्हारा नाम चतुर्भुज होगा और हरि और अच्युत और भगवान् आदि और भी बहुत नाम तुम्हारे होंगे अब तुम कठिनता से तप करो कि तुममें अधिक तेज बढ़े और श्वास मार्ग से वेद पढ़ा दिया और आप अन्तर्धान हो गये और विष्णु ने शिवजी की आज्ञा मान तप करने के निमित्त पहिले अपने हाथों से पुष्करिणी को खोदा और अपने श्रमजल से उसे भर दिया और पचास हजार वर्ष पर्यन्त ध्यान में डूब रहे पर जब उनको कुछ तप का फल विदित न हुआ तो विष्णु अति चिन्तित हुये सो इन्होंने घन की गरज के समान आकाशवाणी सुनी कि तुम फिर तप करो तुमको वर मिलेगा विष्णुजी ने फिर बड़ा तप किया और अति प्रेम से शिवजी के ध्यान में डूबे सदाशिवजी उमाशक्ति सहित वहां प्रकट हुये और शिवजी ने अपना शिर हिलाया और विष्णु की स्तुति कर अपनी प्रसन्नता प्रकट की सो उसी दशा में शिवजी के कान से मणिकर्णी उस स्थान पर गिर पड़ी जिससे वह स्थल मणिकर्णी नाम से प्रसिद्ध हुआ और शिवजी ने विष्णुजी से 'वरम्ब्रूहि' कहा विष्णु ने कहा कि हमको अपनी अप्रमेय भक्ति कृपा करो और इस तीर्थ को सबसे श्रेष्ठ और उत्तम पद कृपा करो शिवजी ने माना और कहा कि अब तुम फिर सृष्टि के उपजाने के निमित्त तप करो और हमारे ध्यान में दृढ़ हो जावो यह कह शिवजी अन्तर्धान हो गये और विष्णु फिर तप करने लगे सो बहुत समय तक विष्णु ने तप किया पर शिवजी प्रसन्न न हुये क्योंकि शिवजी की और लीला करने की इच्छा थी जब विष्णु तप करते २ थक गये तो उनके शरीर से इतना पसीना निकला कि धरती भर में भर गया वह पसीना मानो ब्रह्मरूप ही था जिसने पृथ्वी भर को भर दिया विष्णुजी अति चिन्तित हो आश्चर्य में

हुये और शिवजी की माया कुछ भी न जानी और काशी उसी जल में डूब गई पर शिवजी ने उसको अपने त्रिशूल से स्थित कर लिया व विष्णु उसी जलके भीतर सो गये और बहुत समय तक अचेत सोया किये उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि विष्णु की नाभि जो तालाब के समान थी एक कमल उपजाया जो कोटि सूर्य के सदृश प्रकाशमान था फिर शिवजी ने यह लीला की कि अपने दहिने अङ्ग से मुझको उपजाया और उसी कमल के ऊपर मुझको प्रकटाया पर शिवजी की माया से मैंने कुछ न जाना कि मैं क्योंकर उपजा हूँ फिर मैंने विचार किया कि जहां इस कमल की जड़ होगी उसी स्थान से मैं उपजा हूँगा सो कमल की नाल के मार्ग से चला कि उसके मूल तक पहुँचूं मैं सौ वर्ष तक चलता रहा पर उस कमल की जड़ न मिली तब मुझे अति चिन्ता हुई और जो मनुष्य सर्वोपरि है उसकी शरण में गया आकाशवाणी हुई कि तप करो यह सुन मैं तप करने लगा और शिवजी ने अपनी लीला से विष्णु को सचेत किया और वह चैतन्य हो मेरे सामने खड़े होगये और उन्होंने 'वरम्ब्रूहि' मुख से कहा मैंने पूछा कि तुम कौन हो सो हम और विष्णु में बड़ा वाद हुआ इसी विवाद में शिवजी ज्वाला-रूप से प्रकट होकर धरती से आकाश दिखाई दिये सो हम दोनों उसकी थाह के जानने के लिये चले और निराश लौटकर शिव जी की शरण में गये तब शिवजी प्रसन्न हो प्रकटे और कहा कि तुम दोनों हमको प्राण के समान प्रिय हो हे ब्रह्मन् ! तुम सृष्टि उपजावो और हे विष्णो ! तुम उसे पालो तुमको हम कार्यों का बल कृपा करते हैं फिर शिवजी अन्तर्धान होगये हम दोनों ने वही मूर्ति अपने हृदयमें धारण करली और विष्णु अन्तर्धान हो वैकुण्ठलोक के निर्माण करने के उपरान्त उसी स्थान पर

स्थित हुये और मैंने सब ब्रह्माण्ड को उपजाया और चौदह लोक और असंख्य उपलोक जो संख्या में पचासकोटि योजन हैं और चौदह भुवन और जैसे कि सात लोक पृथ्वी के ऊपर हैं वैसेही पृथ्वी के नीचे भी हैं शिवजी ब्रह्मरूप होकर ब्रह्माण्ड उपजाते हैं और विष्णुरूप होकर पालते और हररूप धर सब ब्रह्माण्ड को अपने में लय करते हैं और मुख्य उनका नाम शिवजी है इसी प्रकार उन्हीं शिवजी के तीन रूप हैं उनकी महिमा वेद नेति २ कह पुकारते हैं वे आप निर्गुण हैं परब्रह्म विष्णु और हरके द्वारा संसार भरमें प्रकट और सगुण स्वरूप हैं जैसा कि परम शिवजी के दो रूप वर्णन किये गये हैं एक क्षर दूसरा अक्षर जो दिखाई देता है वह तो क्षर है और जो निर्गुण और देखने में नहीं आता वह अक्षर है सो शिवजी निर्गुण और सगुण दोनों रूप से विराजमान हैं जिनकी महिमा कोई नहीं जानता उन दोनों में कुछ भेद नहीं है जैसे धागे और मोती में और फूल और सुगन्ध में और अग्नि और ज्वाला में कुछ अन्तर नहीं है वरन वे एक ही हैं इस बात को कोई धर्मवाले जानते हैं कि यह बात अति कठिन और गुप्त है धर्मज्ञ मनुष्य पहिले सगुणरूप को जान निर्गुणस्वरूप देखते हैं और निर्गुण को पाकर फिर सगुण की ओर ध्यान देते हैं उचित है कि जब तक निर्गुण का पूरा हाल जाना न जावे तब तक सगुणरूप के जानने में लगा रहे जब भक्त निर्गुण रूप को जान लेता है तो वह फिर पापों से शुद्ध हो जाता है।

तेंतीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! निर्गुणरूप के ज्ञानके उपरान्त जीने के सब कार्य नष्ट होकर पवित्रता प्राप्त होती है और सर्वलोक ब्रह्मरूप दिखाई देने लगते हैं ऐसी बुद्धि और ज्ञान केवल

अच्छे योगियों को प्राप्त होता है वह सब विधिनिषेध से भिन्न होकर ब्रह्मस्वरूप होजाता है और उसको पुण्य पाप और दुःख सुख से कुछ प्रयोजन नहीं रहता यह ज्ञान महाकठिन और दुर्लभ है इसको कोई सत्पुरुषही जानते हैं और योगी बहुत जन्मों के अभ्यास से कुछ २ जानते हैं इसी से शिव ने ज्ञान को अति कृपा करके उपजाया है जो ज्ञान सब वस्तुओं से श्रेष्ठ है इसका विस्तार इस तरह पर है कि एक दिन शिव ने संसार के लाभ के निमित्त यह समझा कि ब्रह्मा ने हमारी आज्ञा से सृष्टि उपजाई तो सब ब्रह्माण्ड के जीव अपने २ कर्मों में बँधे रहेंगे वे हमारे रूप को क्योंकर जानसकेंगे बरन वे संशय-सागर में डूबे रहेंगे सो शिव ने पांच कोस तक काशी को जो अपने त्रिशूल में उठा रक्खा था धरती में छोड़ दिया और अपने लिङ्ग अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथ को भी उसी काशी में स्थापित कर दिया और अविमुक्त अपने लिङ्ग से कहा कि यह हमारा क्षेत्र काशी अविच्छिन्न है यह प्रलय में भी नष्ट न होगा यह हमारे अंश से उपजा है और तुम्हारे त्यागने के योग्य यह काशी नहीं है और न होगी यह हमारे अंश से उपजी है और हमको यह बहुत प्यारी और हमारे दुःख दूर करनेवाली है जो मनुष्य इसके दर्शन करजावेगा उसको फिर आवागमन न होगा और जो मनुष्य काशी में केवल यात्रा कर जावेगा वह परमपद प्राप्त करेगा और जो दूर के रहनेवाले काशी को हमारे नामके साथ स्मरण करेंगे तो वे ब्रह्मा के दिनमें भी नष्ट न होंगे इस बात को निश्चय रक्खो जब समय पाकर हम प्रलय करेंगे तो काशी को अपने त्रिशूल पर रखकर बचा लेंगे और जब ब्रह्मा ब्रह्माण्ड उपजावेंगे तो फिर हम उसको पृथ्वी में रख देवेंगे और हम भी उसी स्थान पर स्थित होकर

संसार भर को पार लगावेंगे यह वचन सदाशिव ने अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथलिङ्ग से कहकर उनको काशी सहित मृत्यु लोक में छोड़ दिया सो अविमुक्त ने काशीको लेकर इस असार संसार को अपने चरणारविन्दों से पवित्र किया उस दिन से काशी पापोंकी दूर करनेवाली हुई जहां मुक्ति दासियों के समान रहा करती है और संसार भर को अति सुगमता से मुक्ति देनेवाली है जिनको हम और विष्णु सेवन करते हैं जो मनुष्य किसी प्रकार के मोक्ष के योग्य नहीं हैं उनको भी काशी मुक्ति देती है और वह पांच कोस तक निष्केवल शिवका रूपहै उस- में असंख्यगुण हैं पर संसार में कौन ऐसा है जो उसका एक गुण भी वर्णन कर सके शिव विश्वनाथ और काशी के उपजने के उपरान्त संसार उत्पन्न हुआ और सदाशिव की आज्ञानुसार वह दुःखों के दूर करने को मानो कुलहाड़ी है सो अविमुक्त काशी को पाकर अति प्रसन्न हुये और संसार भर सनाथ होगया हे नारद ! जब कि लिङ्गरूप विश्वनाथ काशी सहित प्रकट हुये तब विष्णु और हम अपने गणों सहित शिव शिव कहते उस स्थान पर आये और इन्द्र सब देवता और सब दिक्पति और सनकादिक और सिद्धादि सहित आगये जो शिव उच्चारते और हम सबने मिलकर उस स्थान पर बड़ा उत्सव करके सुख माना और बड़े प्रेम से शिवलिङ्ग की पूजा की और अष्टाङ्ग प्रणामकर प्रेमसागर में डूबगये और हम और विष्णु इतने प्रसन्न हुये कि फिर दूसरी बार षोडशोपचार से सामग्री इकट्ठी कर उनका पूजन किया और उससे अधिक किसी को श्रेष्ठ न समझा फिर मनुष्यों ने भी दूसरी बार पूजा की फिर हम सब ने मिलकर स्तुति की जिसके सुनने से शिव प्रसन्न होकर तुरन्त प्रकटे जिनका चतुर्भुजी स्वरूप पांच शिर चन्द्रमा भाल पर

कानों में कुराडल के बदले सर्प, त्रिनेत्र, कराठ में हलाहल का चिह्न विराजमान, हृदय में उत्तमोत्तम माल और उनके सम्पूर्ण अङ्ग प्रत्यङ्ग अति सुडौल और सुन्दर गौर शरीर जिसमें श्वेत भस्म लगी हुई बाईं ओर शक्ति विराजमान शिलादमुनि के पुत्र सहित प्रकटे ऐसा स्वरूप सदाशिव का देख हम सब कृतार्थ होगये और प्रणाम किया और प्रणाम के उपरान्त स्तुति पढ़ी और कहा कि हे अविमुक्तनाथ ! आप यहीं स्थित रहें और कभी भी यहां से न जावें कि यह काशी नगरी सर्वोपरि के पद पावे और मोक्ष क्षेत्र नाम से प्रसिद्ध होवे और यह तुम्हारा लिङ्ग सबसे श्रेष्ठ पूर्णांश से है सो सदा स्थित रहे यह सुन विश्वनाथजी ने अति कृपा से "एवमस्तु" कहा और यही वचन शक्ति और नन्दी ने भी कहा फिर शिव सबको वर देकर उसी लिङ्ग से अन्तर्धान होगये वही ज्योतिर्लिङ्ग विश्वेश्वर विश्वनाथ अविमुक्तनाथ शिव का है जिसके दर्शन पूजा से सब दुःख दूर होजाते हैं और वही काशी क्षेत्र प्रसिद्ध है जो जीवन्मुक्ति कृपा करता है न तो तीनों लोक में काशी के समान दूसरी पुरी है और न विश्वनाथ लिङ्ग के समान दूसरा लिङ्ग है यह सत्य है, सत्य है, सत्य है ।

चौंतीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! विश्वनाथ और काशी के चरित्र भक्तों को मुक्ति देनेवाले हैं जहां मणिकर्णिका ऐसा तीर्थ आनन्द देने वाला विराजमान है जो मनुष्य तीन बेर काशी और विश्वेश्वर को कहे वह इस लोक में मनोरथ और परलोक में परमपद प्राप्त करे वेद और पुराण इस बात को कहते हैं कि शिव केवल भक्ति के अधीन हैं इससे अविमुक्त होकर प्रकट हुये जब इस नाशवन्त संसार में काशी आई तो इस लोक में सब लोगों को अति

आनन्द प्राप्त हुआ संसार में तेज फैल गया किसी को कुछ दुःख न रह गया और सर्व मनुष्य शिवकाशी शिवशंकरकाशी कहने लगे और उत्तम रीति से नाचने लगे और घर २ में मनुष्यों ने आनन्द की सभायें सजाईं और संसार के मनुष्य काशी विश्वनाथ के दर्शन करने के निमित्त बड़े धूमधाम से चले जिनके साथ उनके पुत्र और स्त्रियां थीं वह शिवजी की समाज जो काशी में इकट्ठा हुई उसका वर्णन नहीं हो सक्ता वे सब गाते बजाते हुये पहुँचकर शिव के चरणों को स्पर्श कर अपने हृदय से लगाने लगे कोई अपना सब धन लुटाने लगा इतने में जो मनुष्य शैव थे पर वह दर्शन करने नहीं गये उन्होंने परस्पर शिव की महिमा वर्णन कर सबको उपदेश दिया कि अवश्य चलना चाहिये एक स्त्री ने उन सबके मुखों से विश्वेश्वरनाथ के गुण सुन अपने पति से जो कृपण था कहा कि तुम भी चलो कि विश्वनाथ के दर्शन प्राप्त होवें और वह विश्वेश्वरनाथ के बड़े २ वचन कहकर चुप हो रही।

पैंतीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह वचन अपनी स्त्री का सुनकर उसके पति के मन में अति दुःख उपजा क्योंकि उसने जाना कि वहां जाने से कुछ द्रव्य खर्च होगा कहा कि हे स्त्री! तू बुद्धि-हीन होगई है तूने यह विचित्र वार्ता कहां से सुनी हमारे मन को क्यों जला दिया तुम कहां आज जाकर किसकी संगति में बैठीहो और तुमको यह किसने शिक्षा दी जो निष्केवल मेरे दुःख का कारण है तुम भलीभांति जानती हो कि मैं वृथा खर्च करने से भिन्न रहता हूं अर्थात् बड़े श्रम से कौड़ी २ जोड़कर यह रुपया इकट्ठा किया है बड़ी भाग्य से द्रव्य मिलता है जिसके न होने से कितना दुःख प्राप्त होता है इससे बुद्धिमान् सदा धन सञ्चित

करते हैं सो ऐसे विचार और बुद्धि को अपने मनसे दूर करके अपने घरके कार्य में लगी रह स्त्री जो शिवजी के प्रेम में डूबी हुई थी अपने पति के इस वचन को सुनकर पाँव पर गिर पड़ी और हाथ जोड़कर कहा कि वास्तव में धन का संग्रह करना बहुत अच्छा है पर शिवजी के लिये उसको व्यय करना उचित है तुम और धनसंग्रह कर लेना शिवजी की भक्ति से तो बहुत धन प्राप्त होता है जिह्वा उसी का नाम है जो शिवजी का वर्णन करे और मन उसी को कहते हैं जो शिवजी के ध्यान में डूबा रहे और कान वही हैं जो शिवजी का गुण सुनें और नाक वही है जो शिवके चरणों की सुगन्ध ले नेत्र वही हैं जो शिवजी की मूर्ति को अवलोकन करें हाथ भी वही उत्तम हैं जो शिव-जी की पूजा करें पैर वही हैं जो शिवजी के क्षेत्र में चलें शिर उसी को कहते हैं कि जो शिवजी के प्रणाम में टेढ़ा हो धन और द्रव्य वही है जो शिवजी के कार्य में खर्च हो जो वस्तु प्रिय हो वह सब शिवजी के लिये जाननी चाहिये और सब कर्मों को शिवजी पर वारना चाहिये विश्वनाथ की पूजा बड़े २ पापों के दूर करनेवाली है यह समय शिवजी के दर्शन के निमित्त उत्तम है फिर ऐसा समय न मिलेगा और न ऐसे साथी मिलेंगे इसलिये चलने की तय्यारी करना चाहिये संसार में धर्म से कोई काम बढ़कर नहीं है धर्म के अधीन धन है उसके पति कृपण ने यह सुनकर कहा कि जो भाग्य में लिखा होता है वही होता है हम क्यों उपाय करें और क्यों निरर्थक रुपया खर्च करें भाग्य में कोई न्यूनाधिक्य नहीं कर सक्ता भाग्य को ब्रह्मा विष्णु भी नहीं बदल सक्के जिन हाथों से मुझको रुपया खर्च करना पड़े उन हाथों को मैं जलाना उत्तम समझता हूं जिन हाथों से धन को छल से उपजावे क्या उन्हीं हाथों से

उसको खर्च करना उचित है तू हमको वृथा ही लुटाया चाहती है स्त्री ने फिर चिन्तित हो शिवजी के गुण वर्णन कर चलने की सम्मति दी तब तो उसका कृपण पति अति क्रोधित हो स्त्री को भिड़ककर दुर्वचन देने लगा और कहा कि स्त्रियों को अपने पति की आज्ञा में चलना चाहिये न कि तेरे समान पति पर आज्ञा चलानी उचित है जो तूने फिर इस वचन को कहा तो मैं अपने प्राण दे डालूंगा तेरी मृत्यु तो है मैं घरबार छोड़कर जाता हूं तू घर में भली भांति रहकर जो मन में आवे वह कर यह कह कर वह कृपण अपने घर से चला गया और स्त्री अति दुःखी शिव के प्रेम में डूबी रही।

छत्तीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! कृपण वन में जाकर बहुत रोया उस समय एक शैव वहां आन पहुँचा और उससे रोने पीटने का हेतु पूछा कृपण ने सब वृत्तान्त उसे कह सुनाया शैव ने शिव का ध्यान कर कृपण से पूछा कि तुम्हारी स्त्री ने तुम्हें धर्म की अच्छी सीख दी थी पर तुमने शिव की माया में बँधकर कुछ नहीं सुना जो मनुष्य कि शिव की सेवा नहीं चाहते वे मानों अमृत छोड़ विष पीते हैं जो धन तुमने बड़े परिश्रम से इकट्ठा किया है वह तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं जावेगा वह पुरुष धन्य हैं जो शिव की प्रसन्नता के निमित्त शिव के तीर्थों में जाकर शिव के प्रेम में दानादि करते हैं तुमको उचित है कि विश्वनाथ के दर्शन के निमित्त तत्पर हो जावो इस मनुष्य तनु की देवता भी इच्छा करते हैं ऐसे शरीर को पाकर जो फिर भी भूला रहा तो पश्चात्ताप के सिवाय कुछ हाथ नहीं आता जब शैव ने इस प्रकार उत्तमोत्तम शिक्षा के वचन जो शिव की स्तुति के भरे हुए थे कहे तो कृपण अति प्रसन्न हो शिव के प्रेम में परिपूर्ण

हो गया और शिव की भक्ति और स्तुति की और कहा कि मैं मूर्ख अवस्था में था अब मुझे अति आनन्द प्राप्त हुआ है धन्य भाग्य मेरे कि आपके समान मुझे उपदेशक मिला मैं तो इस समय तक शिव की माया में भूला हुआ था।

सैंतीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिव के भक्त ने कृपण से कहा कि संसार में उत्तम और मध्यम और निकृष्ट तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं उत्तम वह पुरुष हैं जो संसार को नाशवन्त समझकर अहंकार को छोड़ देते हैं और मन से सदा शिव के तप में लगे रहते हैं और नातेदारों जैसे भाई और लड़का आदि को छोड़ द्वैतभाव लोभादि को बारम्बार दूर करते हैं और अहंकार और लोभ काम और क्रोध छोड़ योग में स्थित होकर सदा शिव का ध्यान करते रहते हैं और असंख्य ज्ञान पा संसारी माया छोड़ संतोष धारण कर वन में स्थित रहते हैं और कामदेव को जला-कर और सब नित्यकर्मों को छोड़ केवल मन में शिवजी का ध्यान करते और संसार में रह कर संसार से भिन्न रहते हैं और चिता की भस्म अपने भाल में मलकर फिर आवागमन में नहीं पड़ते वही परमहंसरूप कहे जाते हैं उनके समान और दूसरा कोई संसार में नहीं है और मध्यम वह हैं जो कभी हाथी पर चढ़ते हैं और कभी शिर पर बोझ रक्खे हुये चलते हैं कभी धनवान् और कभी निर्धन और कभी स्वादिष्ठ भोजन से तृप्त और कभी भूखे और कभी सुंदर वसनों से भूषित और कभी नग्न शरीर और कहीं लोग उनका आदर करते हैं और कहीं उनका अति अपमान होता है कभी यशवान् और कभी आनन्दवान् कभी चिन्तित निदान उनकी अवस्था विपर्यय रहती है उनका जन्म एकसा नहीं कटता और अधम वह हैं जो अन्य जीवों

पर दया न करके किसी के मार डालने के विचार में रहकर पाप करने में रातदिन प्रवृत्त रहते हैं और दूसरे के लिये सदा बुराई किया करते हैं और दूसरे को प्रसन्न देखकर ईर्षा से जला करते हैं ऐसे मनुष्य नरक में पड़ते हैं और क्रमपूर्वक एक सौ बीस नरकों में भ्रमण कर अपने कर्मों का स्मरण करते हैं और ऊँचे स्वर से शरण २ पुकारते हैं और कहते हैं कि इस बेर ऐसे नरक से छूट जावेंगे तो फिर वह काम कि जिनसे ऐसी हमारी दशा हुई नहीं करेंगे फिर यम के दूत उनको नाना प्रकार के कष्ट देते हैं और उनको इतनी भूख लगती है जिसकी कुछ संख्या नहीं और उनको एक दाना भी नहीं मिलता यद्यपि उनको प्यास बहुत लगती है पर उनको एक बूँद भर पानी भी नहीं दिया जाता फिर वह नाना प्रकार के शरीर धारण कर जो किसी जन्म में उनसे शिवजी की कृपा से कुछ शुभकर्म बन न पड़ा तो फिर अपनी मुख्य अवस्था प्राप्त कर लेते हैं और उत्तम पदवी के मनुष्य भी कुसंगति से पापी होकर नरक में जाते हैं और अधर्मी भी सत्संगति पाकर परमपद पाते हैं जैसा कि विश्वामित्र आदि रावण और कुम्भकर्णादि के वृत्तान्तों से यह बात स्पष्ट विदित होती है सुसंगति और कुसंगति का परिणाम कितना फलदायक होता है सो जो मनुष्य शिव की सेवा करता है वही उत्तम मुक्ति के योग्य है ऐसे उपदेश के वचन शिवभक्त से सुनकर कृपण को ज्ञान उपजा और आज्ञा ले अपने घर में आकर स्त्री से कहने लगा कि वह स्त्रियां धन्य हैं जो शिवजी की पूजा करनेवाली हैं वही मोक्ष के योग्य हैं स्त्री ने कहा कि ऐसी शुद्ध बुद्धि तुमने कहां से पाई कृपण ने सब वृत्तान्त कह सुनाया फिर दोनों ने आनन्द से सन्तान सहित काशी में जाकर असंख्य धन शिवजी के निमित्त खर्च किया और उत्त-

ोत्तम सुगन्धित पुष्प और बेलपत्र जो खण्डित न थे लेकर शिवजी की पूजा अति प्रेम से की और स्तुति की फिर अपने घर को लौट आये ।

अड़तीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! विश्वनाथ और काशीपुरी से बढ़कर कोई उत्तम नहीं है काशी में मुक्ति दासी के समान सेवा करती है वह काशी चौकोण पांच कोस लम्बी है जो तीनों लोक की सार और तीनों लोक के लिये धर्मरूपा है एक तिल के समान उस पांच कोस में कोई धरती ऐसी नहीं है जहां मरकर मनुष्य मुक्ति न पावे और काशी को शिवजी कभी नहीं छोड़ते वह करोड़ ब्रह्महत्या और करोड़ पापों के दूर करनेवाली है वह हर प्रकार से सबके ऊपर बड़ाई रखती है जहां विष्णुजी भी अपना मरना चाहते हैं इसी प्रकार सब देवता और मुनि और सिद्ध और नाग और मुनीश्वर आदि भी यही चाहा करते हैं कि हम काशी में मरें हमारी शक्ति नहीं है कि काशी की महिमा वर्णन कर सकें और सुनिये कि जो हमारे भौंह के बीच में से शिवजी ने कृपा करके अवतार लिया वह कैलास में रहने लगे और दक्ष प्रजापति की पुत्री के साथ अपना विवाह किया जो फिर हिमाचल की लड़की होकर शिवजी के साथ दूसरी बार ब्याही गई वही शिवजी निर्गुणरूप हुये और उन्होंने नाना प्रकार की लीला की और अपने गणों और गौरी सहित काशी में आकर विश्वनाथ के दरबार में आये और विष्णु और हम सब देवतादि सहित वहां आये कैलासवासी शिवजी ने गिरिजा सहित विश्वनाथ की बड़ी पूजा की इसी प्रकार विष्णु ने सब देवताओं समेत विश्वनाथ की पूजा कर स्तुति की सो विश्वनाथजी ने कैलासवासी शिवजी से भेंट की और विश्वनाथ ने कैलासवासी शिवजी से

कहा कि हम और तुम एक हैं कुछ भेद नहीं है हमको कुछ आज्ञा दीजिये शिवजी ने कहा कि हे विश्वनाथ ! आप यहां काशी में स्थित रहें तब विश्वनाथ ने कहा कि तुम भी कृपा करके गिरिजा और गणों समेत यहां स्थित रहो और सृष्टि भर के राजा होकर सब जीवों को मुक्ति दिया करो जैसा कि तुमको काशी प्रिय है उसी तरह हम इस काशी को प्रिय जानते हैं हम लोगों को यहां ठहराया करेंगे और तुम उनको मुक्ति दिया करो यह कहकर विश्वनाथ अन्तर्धान हो गये और गुप्त रीति से पूर्णांशपूर्वक वहां स्थित हुये सो जो मनुष्य वहां मरता है उसको मुक्ति कृपा करते हैं और कैलासपति शिवजी भी शक्ति सहित वहीं रहते हैं धन्य है काशी जहां दोनों शिवजी के रूप विराजमान हैं और विष्णु और हम सब देवताओं और मुनीश्वरों आदि सहित दोनों मूर्तियों की सेवा और पूजन में रहा करते हैं विश्वनाथ के समान दूसरा लिङ्ग नहीं है और अन्य जितने लिङ्ग हैं वह मानों विश्वनाथ लिङ्ग की सन्तान और परिवार हैं और विश्वनाथजी महाराज सब शिवभक्तों के राजा हैं और हरेश्वर मन्त्री और ब्रह्मेश्वर वेदपुराण के सुनानेवाले और भैरव कोतवाल और तारकेश्वर धनाध्यक्ष और दण्डपाणि चोबदार और वीरेश्वर भण्डारी अर्थात् ख़ज़ानची और ढुण्ढिराज अधिकारी हैं अन्य और सब लिङ्ग विश्वनाथ के आज्ञापालक हैं और वहां महारानी अन्नपूर्णेश्वरी भी हैं जो काशीवासियों को पालती हैं और विष्णु सुर आदि असंख्य लिङ्ग काशी में विराजमान हैं जिनकी सेवा से दोनों लोक में आनन्द और मोक्ष प्राप्त होता है।

अब यहाँ पर हम प्रसिद्ध लिङ्गों का वर्णन करते हैं जो काशी में स्थित हैं।

१ विष्णुसुर २ केशवमुख ३ लोलार्क ४ मिहर ५ कृतवासु-

केश्वर ६ वृद्धकालकेश्वर ७ कालेश्वर ८ कलशेश्वर ९ प्रवृत्तेश्वर १० पशुपति ११ केदारेश्वर १२ कामेश्वर १३ शम्भुत्रिलोचन १४ चण्डेश्वर १५ गरुडेश्वर १६ गोकर्णेश्वर १७ नन्दिकेश्वर १८ प्रीतिकेश्वर १९ भारभूतपति २० मणिकर्णेश्वर २१ रत्नेश्वर २२ नर्मदेश्वर २३ लाङ्गलेश्वर २४ वरुणेश्वर २५ शनीश्वर २६ सोमेश्वर २७ जीवेश्वर २८ रवीश्वर २९ सङ्गमेश्वर ३० हरीश्वर ३१ हरिकेश्वर ३२ शैलपर्वतेश्वर ३३ कुण्डकेश्वर ३४ यज्ञेश्वर ३५ सुरेश्वर ३६ शक्रेश्वर ३७ मोक्षेश्वर ३८ रमेश्वर ३९ तिलभाण्डेश्वर ४० गुप्तेश्वर ४१ मध्यमेश्वर ४२ भूमीश्वर ४३ बुद्धेश्वर ४४ शुक्रेश्वर ४५ ताटकेश्वर ४६ धन्वेश्वर ४७ ऋषीश्वर ४८ ध्रुवेश्वर ४९ महादेवेश्वर ५० त्रिसन्ध्येश्वर ५१ कपर्देश्वर ५२ नीलेश्वर ५३ शरेश्वर ५४ ललितेश्वर ५५ त्रिपुरेश्वर ५६ हरेश्वर ५७ बाणेश्वर ५८ श्रीश्वर ५९ रामेश्वर। जो मनुष्य विश्वेश्वर अर्थात् विश्वनाथ का नाम लेकर विदेशगमन करता है वह अति आनन्द पाता है उसको विदेश में कोई दुःख नहीं पहुँचता और विश्वनाथ की सेवा करके हरिकेश दण्डपाणि के नाम से प्रसिद्ध हो सब शिवगणों के राजा हुये और गुणनिधि ब्रह्मदत्त का पुत्र विश्वनाथ की सेवा और भक्ति से कुबेर हो गया और हम और विष्णु और देवता आदि उन्हीं की सेवा से ऐसे २ पद पर पहुँचे यह विश्वनाथलिङ्ग सबसे श्रेष्ठ है और विश्वनाथ का देश काशी है जो मनुष्य काशी को छोड़ देता है, वह मनुष्य नहीं बरन पशु है मानों उसकी हथेली से मुक्ति उड़गई काशी का चाण्डाल और स्थानों के राजाओं से उत्तम है उसको यमराज का भय नहीं है और न उसको आवागमन का संशय है जो गति कि मुनि आदि ध्यान से पाते हैं वह गति काशी में

विश्वनाथ बे परिश्रम देते हैं उनके पूर्ण उपासक अगस्त्य मुनि हैं और विश्वामित्र ने उन्हीं की सेवा से ब्रह्मऋषि का पद पाया और वशिष्ठ मुनि उन्हीं की पूजा से तीनों लोक में पूजे गये यह सदाशिव विश्वनाथ का आख्यान अतिपवित्र और इसके पढ़ने सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है।

उन्तालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! अब हम त्र्यम्बकेश्वर शिवज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जिस तरह कि हमने विष्णु से सुना है गौतम ऋषि जो शिवजी के बड़े भक्त हुये और जिनके भाल में भस्म और सब अङ्गों में रुद्राक्ष और जिह्वा पर शिव और परम शिव और शिवजी के गुण प्रति समय कहते रहा करते हैं उनकी स्त्री अहल्या नामी बड़ी पतिव्रता थी और गौतम जनक के पुरोहित प्रसिद्ध हैं जब उनके पुत्र उपजे तो वे तपके निमित्त अपने शिष्यों और अहल्या सहित ब्रह्मशैल के दक्षिण की ओर जाकर तप में प्रवृत्त हुये सो उन्हीं दिनों में वर्षा न होने से संसार में काल पड़गया और एकसौ वर्ष पर्यन्त जल न गिरा सब संसार के मनुष्य अति विकल हुये यहां तक कि कुवों में भी जल न रहा और न कोई हरा वृक्ष रहा नदी और नद सब सूखगये और गरमी इतनी बढ़ी कि बहुत से जीव जलकर भस्म होगये और अन्य मुनि भी योग धारण कर अपनी स्त्रियों सहित अपना कालक्षेप करने लगे गौतम ने संसार को इतना विकल देख वर्षा होने के निमित्त वरुण के तप का आरम्भ किया हे नारद! दूसरे की भलाई के बराबर और कोई धर्म संसार में नहीं मानो सब शुभ कर्म इसी धर्म के अधीन हैं अच्छे पुरुषों की यही दशा होती है कि दूसरे की भलाई के लिये बड़े २ उपाय करते हैं और दूसरे

के आनन्द के निमित्त आप दुःख सहते हैं इस बात से शिवजी अति प्रसन्न होते हैं निदान जब कि गौतम ने अहल्यासहित बड़ा तप किया तो वरुण प्रसन्न होकर गौतम के सामने खड़े होकर बोले कि वरदान मांगो गौतम ने कहा कि संसार में वर्षा हो हमारा यह मनोरथ पूर्ण हो वरुण ने उत्तर दिया कि यह बात हमारे अधीन नहीं है यह बात केवल परमेश्वर के अधीन है अर्थात् लाभ, हानि, मौत, जीना, वर्षाकाल, यश, निन्दा, पुण्य, पाप, जय, पराजय, उत्पत्ति, प्रलय, नरक, स्वर्ग यह सब बातें शिवजी के अधीन हैं उन्हीं के भय से सूर्य और चन्द्रमा और नक्षत्र उदय होते और अग्नि और मृत्यु और शेष और दिक्पति और सर्व संसार उन्हीं की आज्ञा से अपना २ कार्य करते हैं और देवता और मुनि और सिद्ध और प्रजापति और सर्वसंसार शिव के भक्त हैं वे परब्रह्म हैं वही निर्गुण, सगुण, स्वामी, स्वतन्त्र, मायापति और सबसे श्रेष्ठ हैं हे गौतम ! हम ऐसा वर नहीं देसक्के और जो तुमको वर नहीं देते तो यह बात निष्केवल धर्म के विरुद्ध है इसलिये हमपर कृपा करके वह वर हमसे मांगो जो हम दे सकें गौतम ने कहा कि तुम सत्य कहते हो पर ऐसी बात करो जिसमें हमको और तुमको कुछ पाप न होवे वरुण ने कहा कि फिर तुम उसी प्रकार का वर मांगो जो हम दे सकें गौतम ने कहा कि आप एक अक्षय जल का कुण्ड कृपा करें वरुण ने अति प्रसन्न होकर गौतम की अति प्रशंसा की और कहा कि पृथ्वी में एक गर्त बनाओ हम तुमको अक्षय कमल देते हैं सो गौतम ने पृथ्वी में एक गर्त किया जिसको वरुण ने जल से भर दिया और कहा हे गौतम ! यह गर्त जो एक हाथ भर का है बड़ा तीर्थ होकर तुम्हारे नामसे प्रसिद्ध हो इसकी सेवा से सब मनोरथ

पूरे होंगे यह कहकर वरुण तो चले गये और अक्षयकुण्ड के जल को पीकर गौतम स्त्री सहित अति प्रसन्न हुये।

चालीसवां अध्याय

ब्रह्माजी ने कहा कि गौतम ने अपने शिष्यों सहित उस गर्त के तट पर जो खेती बुवाई तो यह गौतम की बात संसार भर में प्रसिद्ध होगई और मुनि अपनी स्त्री और शिष्यों सहित समूह के समूह चारों ओर से आकर उसी स्थान पर मन्दिर बनाकर बसे और जो और मनुष्य भी मरनेसे बच गये थे वह भी आकर वहीं बसे सो उस गर्त के कारण एक नगर बहुत लम्बा और उत्तम वहां पर बस गया और लोग अति प्रसन्न होकर रहने लगे और जो लोग भूखों मरते थे प्रसन्न रहे और गौतम कुण्ड का यह प्रभाव था कि चाहे उससे कितना ही जल खर्च किया जावे पर उसमें न्यूनता न होती संयोगवश शिव की माया से एकदिन गौतम ने अहंकार के साथ तुरन्त अपने शिष्यों को जल लाने के निमित्त भेजा सो गौतम के शिष्य आनन्दपूर्वक कुण्ड के तटपर पहुँचे उसीसमय संयोग से मुनियों की स्त्रियों ने भी अपने शिरों पर घट रक्खे हुये आकर कहा कि पहिले हम पानी भरलें तब तुम भरलेना यह सुन गौतम के शिष्यों ने लौटकर अहल्या से कहा कि मुनियों की स्त्रियों ने हमको पानी नहीं भरने दिया यह सुनकर अहल्या ने शिष्यों को साथ लिये हुये जहां मुनियों की स्त्रियां खड़ी थीं जल लिया और लौट आई यह दशा देखकर मुनियों की स्त्रियों ने वहां क्रोध से पानी लिये विना लौटकर अपने २ पतियों से रो रोकर सब हाल कहा और अपने वर्णन में बहुत झूंठ और बनावट कही अर्थात् उन्होंने कहा कि गौतम के शिष्यों ने हमको ग्लानिपूर्वक देख गालियां दीं पर हमने कुछ भी नहीं कहा इस पर भी

गौतम के शिष्य चुप न रहकर अहल्या को अपने साथ लाये उसने जो हमको दुर्वचन दिये और हमारा अपमान किया है वह कहा नहीं जासक्ता इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हम उन स्त्रियों के झूंठ को कहां तक वर्णन करें जो स्त्रियों का स्वभाव है वह सब उन्होंने प्रकट किया स्त्री विष से भी अधिक और भयानक है क्योंकि हलाहल पीकर सदाशिव जगे रहते हैं और विष्णु स्त्री पाकर मोहित हो जाते हैं मृत्युभी स्त्री से अधिक नहीं है क्योंकि मृत्यु तो एक ही को मारडालती है और दुष्टा स्त्री सर्व-कुल को नष्ट कर देती है संसार में वह कौन कर्म है जिसको स्त्री नहीं करसक्ती देखो रामचन्द्र के समान लड़कों को राजा दश-रथ ने स्त्री के अधीन होकर घर से निकाल दिया समुद्र में क्या ऐसी वस्तु है जो प्रवेश नहीं करसक्ती और अग्नि किस वस्तु को जला नहीं सक्ती और मृत्यु किसको छोड़ देती है और स्त्री क्या कर्म नहीं करसक्ती निदान मुनीश्वरों ने अपनी स्त्रियों से यह चरित्र सुन अति कोपित हो चाहा कि गौतम को किसी तरह का दुःख दें इस इच्छा से उन्होंने गणेश की पूजा की सो गणेश ने प्रसन्न होकर कहा कि हे मुनीश्वरो ! तुमको यह योग्य नहीं अपने हाथों अपनी खराबी मत करो अभी कुछ बुरा नहीं हुआ अब भी समझ जावो पर सब मुनीश्वरों ने एकमत हो कहा कि नहीं गौतम को दुःख दो गणेशजी ने कहा कि तुम सब मूर्ख हो जिसने गौतम को सुख दिया था वही फिर भी उनको चैन देगा वह शिव को प्रसन्नकर फिर वैसाही हो जावेगा पर तुमको अति दुःख प्राप्त होगा क्योंकि तुम सब शिवजी की इच्छा से विरुद्ध हो यह कह गणपति अन्तर्धान हुये और गौ का स्वरूप धार बहुत क्षीणाङ्ग कांपते हुये गौतम के खेत को चरने लगे भाग्य से उस समय गौतम भी गौ के पास जौ के खेत के पास

आये और तिनके से गौ को खेत से बाहर निकालने लगे गौ इतनी ज़ोर से पृथ्वी में गिर पड़ी कि जिस तरह किसी ने वज्र से उसको मारा हो गौतम ने अपने शिष्यों से यह हाल वर्णन किया अन्तको धीरे २ सब मुनीश्वरादि इकट्ठे होकर गौतमको धिक्कार देनेलगे और कहा कि तुझपर और तेरे तीन विधि के तप और होम और सबधर्म और तेरी स्त्री और चतुरता और जागरण और विद्या और कलादि सबको धिक्कार है तूने गोहत्या की अब तुम यहां से चलेजावो और अपना मुख किसी को मत दिखाओ जब तक तुम यहां रहोगे देवता और पितर कोई अपना भाग नहीं लेने आवेंगे और इसी प्रकार मुनियों की स्त्रियों ने भी मिलकर अहल्या को बहुत दुष्ट वचन कहे और सब मुनियों ने इस बात को परस्पर ठहराया कि आज से कोई मनुष्य गौतम का मुख न देखे सो वे सब मिलकर कङ्कड़ों से गौतम और अहल्या को उनके शिष्यों सहित मारने लगे और निकाल दिया गौतम ने बहुत विनती से कहा कि हम निकले जाते हैं हमको मारो नहीं यह कहकर गौतम अहल्या और शिष्यों समेत वहां से निकल गये और उस स्थान से एक कोस की दूरी पर अपना स्थान बनाया और कहा कि जब तक हमारी हत्या न छूट जावेगी तब तक हम किसी को न छू सकेंगे और न कुछ कर्म देवता और पितर आदि का कर सकेंगे यह विचार सब कर्म छोड़ अन्न जलरहित अपनी स्त्री सहित पड़े रहे और कदाचित् किसी मनुष्य ने गौतम को कभी धोखे से देख लिया तो अपने मुख को कपड़े से ढांपकर गौतम को ढेले मारता था उस समय गौतम अति चिन्ता से बहुत ही रोने लगते थे जब इसी तरह पन्द्रह दिन बीते तो गौतम मुनि लोगों की शरण में आये और

दूर खड़े होकर प्रणाम और स्तुति के उपरांत हाथ बांध विनय पूर्वक कहा कि अब मुझ पर दया करके वह उपाय बतावो जिससे मेरा यह पाप दूर होवे सो मुनियों को दया उपजी उन्होंने कहा कि तुम्हारे शिष्यों ने बहुत बुरी बात की कि हमारी स्त्रियों को पानी लेने के समय अनादर किया और तेरी पतिव्रता अहल्या स्त्री ने भी बड़ा उपद्रव मचाया इसी से तुमको यह फल मिला पर जो कि अब तुम अहंकार रहित हमसे पूछते हो तो हम तुमसे कहते हैं कि शिव सब पापों के दूर करनेवाले हैं पहिले पृथ्वी की परिक्रमा में प्रवृत्त होकर तीन दिन भ्रमण करके अपना पाप ऊँचे कहते फिरो फिर एक मास तक व्रत करो और एक सौ वेर ब्राह्मणों की परिक्रमा करो तब ऐसे पाप से छूट जावोगे दूसरी युक्ति यह है कि जो तुम इस स्थान में गङ्गा को प्रकट कर उसमें स्नान करो और एक करोड़ पार्थिव पूजा करो तो शुद्ध हो सक्ते हो यह सुनकर गौतम ने तुरन्त मुनि लोगों की एकसौ एक वेर परिक्रमा की और एक करोड़ पार्थिवपूजा कर शिव के ध्यान में लगे और एक ही स्थान पर बैठे रहे इसी प्रकार गौतम की स्त्री अहल्या ने भी यही किया और सब शिष्य उनकी सेवा करते रहे ऐसी अवस्था गौतम की देखकर शिव प्रसन्न हुये और आप गिरिजा और अपने पुत्र और गणों सहित गौतम के पास प्रकट होकर कहा कि वर मांगो तुम मुझको प्राण से भी अधिक प्रिय हो गौतम ने प्रणाम और स्तुति के उपरान्त कहा कि मेरे पाप दूर कर दो यह कह गौतम चुप हुये।

इकतालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! गौतम की स्तुति और विनय के सुनने के अनन्तर शिवजी ने कहा कि यही होगा तुमको

मुनीश्वरों ने अति छल से ऐसा दुःख दिया है सो उनको ऐसी हत्या लगेगी कि जिससे वे फिर आनन्द न पावेंगे क्योंकि उन्होंने वेद के विरुद्ध पाप किया है वरन् उनके देखने से देखनेवाला निष्पाप मनुष्य भी पापी हो जावेगा और यह सब ब्राह्मण मिथ्या शास्त्र को धारण करेंगे और जो हमारे भक्तों को दुःख देनेवाला या उनकी निन्दा करनेवाला है उसको आनन्द कहां है यह सुन गौतम ने हाथ जोड़ विनती की कि महाराज इन मुनीश्वरों ने मेरे लिये क्या अनभल किया इन्होंने तो मुझको ऐसी युक्ति सिखाई जिससे आपके दर्शन हुये शिव ने यह गौतम का वचन सुन अति प्रसन्नता से कहा कि हे गौतम! तुम धन्य हो जो वर चाहिये वह हमसे लेलो मैं तुम्हारे अधीन हूँ गौतम बोले कि हमारा कार्य जो था वह तो हो चुका पर आपकी आज्ञा से मैं चाहता हूँ कि आप मुझे गङ्गा दें सो शिवजी ने अपने शिर से गङ्गा कृपा की वह जो पहिले विष्णु को दी थी और अपने विवाह में हमको कृपा की थी वह गङ्गाजी का जल जो शिवजी के शीश में था स्त्री के रूप से प्रकट हुआ जिसको देखकर गौतम अति प्रसन्न हुये और प्रणाम के उपरान्त बड़ी स्तुति गङ्गाजी की की और कहा कि मेरे ऊपर कृपा करके मुझको शुद्ध करो सो शिवजी ने भी गङ्गाजी से कहा कि गौतम के पाप दूर कर इसको हर प्रकार अपना सेवक समझो गङ्गाजी ने कहा हे शिवजी! हम आपकी आज्ञा से जो आप कहते हैं करेंगी पर विनय यह है कि हम गौतम को उसके कुल सहित पवित्र करके फिर अपने स्थान को लौट जावेंगी शिवजी ने कहा जब तक वैवस्वत मनु का आरम्भ न हो तब तक तुम यहीं स्थित रहो गङ्गाजी ने न माना निदान गौतम ने बड़ी स्तुति की और शिवजी ने भी कहा

कि तुम अवश्य यहां रहो गङ्गाजी ने कहा जो हमारी महिमा यहां बहुत हो और तुम भी गिरिजा और गणों सहित हमारे तट पर ठहरो तो हम मानती हैं पर जिन्होंने गौतम को दुःख दिया है उनको हम पवित्र नहीं करेंगी शिवजी ने मान लिया इतने में विष्णुजी और हम और देवता आदि शिवजी को उस स्थान पर प्रकट होते हुये जानकर आये और सब तीर्थ और क्षेत्र अपने अपने स्थानों से चल कर वहां आये और शिव और गङ्गाजी की स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और कहा कि मांगो जो तुम्हारी इच्छा हो यह सुन सबने विनय की कि तुम अर्द्धाङ्गीरूप से गङ्गा सहित यहां पर विराजमान हो गङ्गाजी ने कहा जो तुम सबसे अधिक हमको इस स्थान पर सर्वोपरि समझो तो हम शिवजी सहित यहीं स्थित होवें सबने माना और कहा कि तुम्हारी बड़ी भारी महिमा का वह समय होगा जब सिंहराशि की बृहस्पति होगी उस समय हम सब यहां आकर तुम्हारे स्नान और शिवजी के दर्शनसे अपने पापों को जो बारह वर्ष में हो गये होंगे सब दूर कर डाला करेंगे सो गङ्गा और शिवजी दोनों वहां स्थित हुये उस दिन से जब कि सिंहराशि पर बृहस्पति आती है तो उस क्षेत्र में सब देवता मुनि और विष्णु और ब्रह्मा जाते हैं क्योंकि दूसरी जगह जाने से ऐसे समय में कुछ फल नहीं होता ।

बयालीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह चरित्र हमने गौतमी नदी के तट पर जो शिवजी ज्योतिर्लिङ्ग त्र्यम्बकनाम से विराजमान हैं वर्णन किया जानना चाहिये कि सब क्षेत्रों से गौतमी गङ्गा अति श्रेष्ठ हैं इसी प्रकार त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग भी सब मनोरथों के देनेवाले हैं इतना सुन नारद ने ब्रह्मा से पूछा कि गङ्गा कहां से

जलरूप हो प्रकटीं और शिवजी का लिङ्ग वहां पर क्योंकर प्रकट हुआ और उनकी महिमा और जो मुनीश्वरों ने गौतम को दुःख दिया यह सब वर्णन करो ब्रह्माजी बोले कि हम सबकी विनय सुनकर गङ्गा जलरूप हो ब्रह्मशैल के भीतर उदुम्बर-शाखा से निकल बड़े वेग से नदीरूप हो बहने लगीं और गौतमी के नाम से प्रसिद्ध हुईं और उस स्थान का नाम गङ्गाद्वार प्रकट हुआ जिसके देखने और छूने से पाप दूर होते हैं और शिवजी भी लिङ्गस्वरूप ही त्र्यम्बक के नाम से प्रसिद्ध हुये सो गौतम ने तुरन्त अहल्या और शिष्यों सहित गौतमी में स्नान कर त्र्यम्बक शिवलिङ्ग की पूजा की और बहुत ही शिव की और गङ्गा की स्तुति की पर जब गौतम के शत्रु मुनि उस स्थान पर आये तो गङ्गा और शिव दोनों अन्तर्धान हो गये उस समय गौतम ने गङ्गाजी से अति विनयपूर्वक उन मनुष्यों के पाप क्षमा करने को कहा तब आकाशवाणी हुई यद्यपि हिंसक और मूर्ख और कामी और परमेश्वर को न जाननेवाला और छली और धूर्त्त और जो शुद्ध होने के योग्य नहीं चाहे पवित्र होजावें पर भक्तों का शत्रु पापों से नहीं छूटसक्ता तब गौतम ने बार बार स्तुति करके कहा कि हे माता-पिता! वेद कहते हैं कि तुम पापियों के पाप दूर करते हो और बुरों के साथ भलाई करते हो इससे हे माता-पिता! तुम प्रकट होकर दर्शन दो और उन सबके पापों को दूर करो यह सुन फिर आकाशवाणी हुई कि तुम जो हमारे बड़े पवित्र भक्त हो इससे हम तुम्हारे अधीन हैं जो तुमने कहा वह हमने माना पर पहिले यह सब अपने पापों की शान्ति का उपाय करें और एकसौ बेर ब्रह्मगिरि की परिक्रमा करें तो इनके पाप निवृत्त हो जावेंगे यह सुन गौतम अति प्रसन्न हुये और सब मुनीश्वरों ने गौतम की आज्ञा से अहंकार

से रहित हो गौतम की स्तुति की फिर ब्रह्मगिरि की परिक्रमा कर प्रायश्चित्त किया इसी प्रकार उनकी स्त्रियों ने गौतम की स्त्री अर्थात् अहल्या की बड़ी विनती कर अपने पाप को निवृत्त कराया तब शिवजी और गङ्गा पूर्ववत् अपने स्थान पर प्रकट हुये जिसमें मुनियों ने स्नानकर शिव की पूजा की और तुरन्त उनके पाप नष्ट होगये और गौतम के चरणों पर लज्जित हो अपने शिरों को रक्खा गौतम ने उनको उठाकर अपनी छाती से लगालिया और इतना अनुग्रहकर समझाया कि उनकी लज्जा दूर होगई उस समय विष्णु और हमने देवतादि सहित उस स्थान पर पहुँच गङ्गा में स्नान कर शिव पूजा की और एक स्तुति हम सबने की तब शिवजी और गङ्गाजी ने कहा कि वर मांगो हम सबने कहा कि हमको अपनी भक्ति दो जिससे हम कभी तुमको न भूलें शिवजी और गङ्गाजी ने कहा कि अच्छा यह कह अपनी मूर्ति में प्रवेश करगये और देवतादि सब अपने २ स्थानों को लौट गये उस स्थान पर कुशावर्त और गङ्गाद्वार और कोटितीर्थ बड़ा आनन्द देनेवाले तीर्थ हैं सो रामचन्द्र भी पञ्चवटी में गङ्गा को देख फिर उस स्थान पर स्थित हुये थे तीनों लोक में गङ्गा बड़ा क्षेत्र है जिसके देखने छूने से हर मनुष्य शुद्ध होजाता है जिसने गङ्गा में नहाया वह सब धर्म कर चुका और जिसने त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग की पूजा की उसको दोनों लोक में बड़ा आनन्द है यह त्र्यम्बक लिङ्ग पापों के दूर करनेवाले हैं इस चरित्र के पढ़ने सुननेवालों को संसार में आनन्द प्राप्त होता है।

तेंतालीसवां अध्याय।

(ब्रह्माजी ने कहा कि अब हम वैद्यनाथ नवें शिव ज्योति-

लिङ्ग का वर्णन करते हैं जिसके दर्शन, स्पर्शन और पूजा और भक्ति से अति आनन्द मिलता है और धन, द्रव्य, स्त्री, पुत्र और कुल से प्रसन्न रहकर अन्तको शिवलोक मिलता है हमारा पुत्र पुलस्त्य जो सप्तऋषियों में प्रसिद्ध है उसके एक लड़का विश्रवा नामी उपजा उसके तीन स्त्रियां थीं पहिली से धनपति शङ्करमित्र अर्थात् कुबेर उपजे और दूसरी से रावण और कुम्भकर्ण दो लड़के पैदा हुये और तीसरी से विभीषण उपजा उन सब लड़कों से रावण अति बलवान् और स्वतन्त्र हुआ जिसके बल और यश को तीनों लोक जानते हैं और रावण तप के निमित्त कैलास पर्वत पर जाकर शिवजी का भजन करने लगा बहुत दिन उसको तप करते बीते पर कोई शिवजी की प्रसन्नता का लक्षण प्रकट न हुआ उस समय रावण धैर्य और दृढ़ता से वहां से उठकर हिमालय पर्वत में तपके निमित्त गया और पर्वत के दाहिनी ओर शिवजी का ध्यान करने लगा गर्मियों में पञ्चाग्नि और वर्षा में वन के बीच और शीतकाल में पानी के बीच बैठ तप किया यद्यपि ऐसा कठिन तप रावण ने किया पर शिव प्रसन्न न हुये तब रावण क्रोधित हो पृथ्वी में एक गढ़ा बनाकर अग्नि स्थापित कर उस स्थान पर पार्थिव पूजा करने लगा और चन्दनादि षोडशोपचार से शिवपूजा की और अति प्रीति से सिवाय शिवजी के और किसी को उसने न देखा और शिवजी की स्तुति कर शिव के सामने नाचा और सुख से शिवजी के सामने गाकर शिवजी की प्रसन्नता चाहने लगा पर तो भी शिवजी प्रसन्न न हुये उस समय रावण अति चिन्तित हुआ और कहा कि मुझे धिक्कार और मेरे बल और ऐसे मोटे शरीर पर सहस्रों धिक्कार है कि शिवजी प्रसन्न न हुये यह विचार उसने हवन किया तो भी शिवजी

प्रसन्न न हुये तब रावण ने विचार किया कि अपने शरीर को आग में जला देना चाहिये सो इसी इच्छा से अपने शरीर में चन्दनादि सुगन्ध लगाकर अपने शिरों को शरीर से भिन्न कर अग्नि में डालने लगा जब नवों शिर होमकर दशवां शिर भी काटना चाहा तब शिव तुरन्त रावण के सम्मुख खड़े हो गये और वरम्ब्रूहि कहा और सर्व शिर उसके शरीर में लगाकर कहा कि वर मांगो रावण शिवजी के देखते ही अतीव ही प्रसन्न हुआ और प्रणाम कर हाथ जोड़ स्तुति करने लगा और कहा कि मैं बहुत ही पराक्रम चाहता हूँ और यह भी मेरी इच्छा है कि आप मेरे नगर को चलें कि मैं कृतार्थ हो जाऊँ शिवजी बोले बहुत अच्छा तुम हमारे लिङ्ग को उठा ले जावो और सदा उसकी पूजा करते रहो पर जो मार्ग में तुमने हमको कहीं रख दिया तो हम वहीं रहेंगे तुम्हारे साथ नहीं जावेंगे तब रावण ने कहा कि अच्छा पर आप अपने दो रूप धारण करें कि मैं आपको कांवरि में उठाकर तुमको अपने नगर में ले जाकर स्थित कर दूँ यह वचन सुनकर शिव ने दो लिङ्गरूप किये रावण दोनों लिङ्ग कांवरि में रखकर ले चला शिव ने मार्ग में यह चरित्र किया कि रावण को लघुशङ्का की इच्छा हुई सो रावण प्रतिज्ञा करने पर भी पृथ्वी में उनको रखकर अति विकल हो गया और जब कि इधर उधर देखने लगा तो एक पशु चरानेवाले अहीर को देखा जो गौ चराता था उससे कहा कि एक क्षणभर कांवरि को ले लो कि मैं पेशाब कर लूँ चरवाहे ने कहा कि दो घड़ी तक मैं कांवरि लिये रहूँगा इतने में जो तुमने कांवरि न ली तो पृथ्वी में रख दूँगा यह कह कांवरि को अपने कन्धे पर ले लिया और रावण मूत्र करने लगा।)

चवालीसवां अध्याय ।

(ब्रह्माजी बोले कि इतने में शिव ने अहंकार दूर करनेवाली अपनी माया प्रकट कर रावण का मूत्र इतना बढ़ाया कि छोटा तालाब भर गया और कांवरि इतनी भारी हुई कि चरवाहा भार न उठा सका और उसको पृथ्वी में रख दिया तुरन्त दोनों लिङ्ग पृथ्वी में इतने दृढ़ हो गये कि रावण ने मूत्र करके बहुत बलकर उनको उठाया पर वह कुछ भी अपनी जगह से न उठे रावण ने अति विकल हो अपने अँगूठे से दोनों लिङ्गों को दबाया और फिर अपने घर चला गया वे दोनों लिङ्ग उसी स्थान पर स्थित हो गये जो लिङ्ग कांवरि के अगले तरफ़ था वह गोकर्णक्षेत्र में स्थित हुआ और चन्द्रभाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ उसकी महिमा हम पहिले वर्णन कर चुके हैं और जो लिङ्ग पीठि के पिछली ओर था वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ यह वैद्यनाथ नवां ज्योतिर्लिङ्ग जिनकी महिमा वेद पुराण गाते हैं उनकी पूजा से असंख्य आनन्द प्राप्त होता है हे नारद ! जब कि रावण लिङ्गों को छोड़कर चला गया तब विष्णु और हम सबने देवतादि सहित शिवलिङ्ग की पूजा की और स्तुति करके विनय की कि हे चिताभूमि में स्थित होनेवाले, वैद्यनाथ ! हम सब पर प्रसन्न होकर दयादृष्टि से देख दीजिये सो उसी लिङ्ग से शिवजी ने गिरिजा सहित प्रकट होकर कहा कि हमसे वर मांग लो हम सबने कहा कि अपनी भक्ति और कृपा करके यहीं स्थित रहो कि यह देश शुद्ध हो जावे यहां तुमने प्रकट होकर हम सब पर अति कृपा की है और जो कि तुम वैद्य के समान मनुष्यों को आनन्द देनेवाले हो इससे तुम्हारा नाम वैद्यनाथ है जो यहां तुम्हारे ऊपर गङ्गाजल लाकर चढ़ावे वह संसार में प्रसन्न रहकर परमपद पावे और गङ्गाद्वार अर्थात् हरद्वार का

जल आपको बहुत प्रिय हो यह सुनकर शिव बोले कि यही होगा और हँसकर उसी लिङ्ग में प्रवेश किया सो हम सबने जय २ कह शिवजी की पूजा की फिर सब देवता आदि अपने २ स्थानों को लौट गये और कथा सुनिये कि जब उस चरवाहे ने जिसको रावण ने कांवरि लेने को दिया था यह चरित्र देखा तो आश्चर्य के सागर में डूब गया उसका नाम बैजू था उसने तुरन्त शिवलिङ्ग की पूजा की और अपने कपोलों से शब्द निकाला और प्रतिदिन उसकी यही प्रकृति थी कि उस लिङ्ग की विना पूजा किये भोजन न करता जब इसी प्रकार कुछ समय बैजू को बीता और शिवजी की प्रसन्नता का समय निकट पहुँचा शिवजी ने चाहा कि इसकी परीक्षा की जावे सो एक दिन बैजू के घर कोई बड़ा भारी उत्सव था जिस में उसके बहुत से भाई बान्धव उपस्थित थे वह भाई बान्धवों की सेवा में लगा रहा जिससे उसको वैद्यनाथ शिवलिङ्ग की पूजा का अवकाश न मिला जब सब भोजन करने लगे तो बैजू को भी अपने साथ भोजन को बैठाया जब सब ग्रास उठा भोजन करने लगे तो इससे पहिले कि बैजू ग्रास कण्ठ में उतारे उसको स्मरण हुआ कि मैंने तो अभी वैद्यनाथ की पूजा नहीं की मुझसे बड़ा अपराध हुआ है मुझपर धिक्कार है क्योंकि मैंने अपने स्वामी को भुला दिया सो वह तुरन्त उठकर सिधारा यद्यपि उसके भाई बान्धव अप्रसन्न हुये पर उसने किसी की कुछ न सुनी हे नारद ! वेद साधु का यही स्वभाव कहता है कि साधु अपने नियम को न छोड़े चाहे संसार भर उससे अप्रसन्न होवे पर वह मनुष्य यही बात करे जिससे धर्म बना रहे निदान बैजू ने वैद्यनाथ के पास जाकर शिवलिङ्ग की पूजा की और दण्डवत् करके पृथ्वी में गिरकर ध्यान किया शिवजी

बैजू की ऐसी भक्ति और नियम देख तुरन्त प्रकट हुये जिनके वामाङ्ग में श्रीजगन्माता गिरिजा विराजमान थीं सो बैजू ने उठ कर प्रणाम किया फिर स्तुति की और प्रेम की अधिकता से नाचने लगा ऐसा प्रेम बैजू का देख शिवजी अति प्रसन्न हुये और कहा कि वर मांगो बैजू ने बिनती की कि आपके चरणों का प्रेम दिन २ बढ़े और तुम्हारे भक्तों की सेवा किया करूं और सब जीवों को तुम्हारा अंश जानकर तुम्हारी सेवा में लगा रहूं और जो मेरा नाम है वही तुम्हारा नाम हो यह सुनकर शिवजी ने कहा कि यही होगा फिर उस लिङ्ग में प्रवेश कर गये और बैजनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुये।

पैंतालीसवां अध्याय।

नारद के पूछने के अनन्तर ब्रह्माजी बोले कि जब रावण ने शिवलिङ्ग के उठाने से निरुपाय हो अपना अहंकार दूर किया और अति प्रेम से शिवजी की शरणागत हुआ तो उस समय आकाशवाणी हुई कि हे रावण! तुम अपने नगर में जाकर निष्कण्टक राज्य करो जब तुमको गर्व उपजेगा तो तुम दुःखी हो जावोगे यह वर पाकर रावण अपने घर प्रसन्न होकर गया जिसको सब दैत्यों ने मिलकर अपना राजा बनाया और मन्दोदरी ने उसकी रानी होकर शिव की भक्ति में बड़ा प्रेम बढ़ाया यह मन्दोदरी पञ्चकन्याओं में से अति सुन्दरी रूपवती थी उससे मेघनाद के समान लड़के उपजे मेघनाद ने तीनों लोकों को जीत लिया और दिक्पालों को जीत उनको अपनी प्रजा बनाया और शेषादि उसे कर देने लगे और चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र उसके अधीन हुये एक दिन सब देवता विकल हो अपने अपने निवासस्थान से भाग वैकुण्ठ से विष्णु की शरण में गये और स्तुति कर विष्णु के सामने झुककर खड़े हुये विष्णु बोले

कि हे देवताओ ! तुम कहां से आते हो तुम सबों के मुख से दुःख प्रकट है इसका कारण कहो सो सब देवताओं ने रावण का अन्याय प्रकट कर कहा कि उसने देवपत्नियों को अपने घर डाल लिया है और तीनों लोक को जीत हर प्रकार सबको दुःख देता है सो कृपा करके आप ऐसे अन्यायी को वध करें यह सुन विष्णु क्रोधित हो देवताओं सहित युद्ध करने लगे और रावण शिव के बल से विष्णु के साथ लड़ा हर प्रकार के बाण दोनों ओर से चले जो २ बाण अग्नि, वायु, सर्प और पर्वतादि रावण पर छोड़े उन सबको रावण ने दूर कर दिया तब विष्णु ने अपनी गदा रावण की भुजा में मारी रावण ने क्रोधित हो विष्णु के हृदय में गदा मारकर बड़ा नाद किया और विष्णु ने अपनी नन्दक रावण पर चलाई पर वह कुण्ठित होकर उलट गई उस समय विष्णु ने अति कोप से अपना जलता हुआ चक्र हाथ में लिया और रावण के कण्ठ में मारा जिससे तीनों लोक में हाहाकार हुआ पर रावण शिव का ध्यान कर ऐसी अकस्मात् आपदा से बचा रहा और विष्णु ने हर प्रकार से रावण के ऊपर बराबर धावा किया पर शिव की कृपा से उस पर कुछ न चला यह दशा देखकर विष्णु को अति दुःख प्राप्त हुआ तब आकाशवाणी हुई कि हे रमा-पति ! कुछ चिन्ता मत करो शिव सर्वोपरि हैं रावण को कम मत समझो इसके ऊपर शिव प्रसन्न हैं उसने शिव का बड़ा तप किया है यही कारण है कि इसके ऊपर कोई दुःख न पड़ा जो कि रावण देवताओं से मर नहीं सका इससे तुमको उचित है कि मनुष्य शरीर धार शिव का तप कर और उनसे वर ले युक्तिपूर्वक रावण को शाप दे उसको मारो तब देवताओं का काम पूर्ण होगा यह सुनकर विष्णु अन्तर्धान हुये और रावण

सर्व देवताओं को पकड़ कर अपने नगर को लौट गया और निर्भय होकर तीनों लोक का राज्य करने लगा और देवता भी आसक्त होकर विष्णुजी की सेवा में पहुँचे हे नारद ! विष्णुजी ने आकाशवाणी सुनकर तुमको बुलाया और कहा कि तुम जाकर ऐसी युक्ति करो जिससे शिवजी क्रोधित होकर रावण से अप्रसन्न होजावें और शाप देवें और हम पृथ्वी पर जाकर मनुष्य का अवतार लेंगे और शिवजी के प्रसन्न करने के पीछे उनके धनुर्बाण को लेकर फिर शिवजी की आज्ञानुसार रावण का वध करेंगे यह कह विष्णुजी ने सब देवताओं को बिदा कर दिया और सर्व देवता अपने २ गृह सिधारे और हे नारद ! तुम रावण के निकट गये और जब उसने तुम्हारा बड़ा आदर किया तब तुमने कहा कि तुम धन्य हो तुम्हारे देखने से हमको बड़ा सुख प्राप्त हुआ हम तुम्हारे राज्य और न्याय और तेज आदि को देखने आये हैं यह सब तुमको शिवजी की कृपा से मिला है शिव ऐसी कृपा किसी पर नहीं करते जैसी तुम पर है शिवजी तुम्हारे अधीन हैं तुमने कौनसा ऐसा यत्न किया है जिससे शिवजी ऐसे प्रसन्न हैं यह सुनकर रावण ने कहा कि हम सब वृत्तान्त कहते हैं।

छियालीसवां अध्याय।

रावण ने कहा कि प्रथम हम कैलास पर्वत पर तप करने गये पर जब बहुत दिनों तक श्रीसदाशिवजी प्रसन्न न हुये तो फिर कुरुक्षेत्र में जाकर तप करते रहे और अतिक्रोध करके पृथ्वी पर गढ़ा बनाकर शिवलिङ्ग को स्थापित किया यद्यपि षोडशोपचार से शिव का तप किया पर वह प्रसन्न न हुये फिर मैं अग्नि जलाकर अपने शिरों को काट २ कर उसमें डालने लगा जब नवां शिर काटने लगा तो शिवजी ने प्रसन्न होकर

दर्शन दिये मैंने यह वर मांगा कि मुझको कोई देवता न जीत सके शिवजी ने प्रसन्न होकर मेरे शिरों को मेरे शरीर में लगाकर और भी अनेक वर दिये जब से शिवजी अन्तर्धान हुये तब से हम तीनों लोकों को जीतकर राज्य करते हैं यह सुनकर नारद ने कहा कि तुम्हारे ऊपर शिवजी ने कुछ कृपा न की क्योंकि वह तुम्हारे साथ तुम्हारे घर न आये वरन् उन्होंने केवल अपना लिङ्ग स्वरूप दिखाया और वह भी तुम तक न आया और मार्ग में ही रह गया हम तुमसे कहते हैं कि तुम वहां जाकर कैलास पर्वत को उखाड़ कर यहां ले आओ उनकी सहायता से सर्वदा अभय और प्रसन्न रहोगे क्योंकि कुबेर के निकट रहते उनको बहुत दिन होगये अब तुम्हारे निकट आकर रहें तुमसे अधिक कुबेर को कौन बड़ाई प्राप्त है उचित नहीं कि तुमको त्यागकर शिवजी उसके पास रहें क्योंकि तुम बुद्धिमान् हो जो कुछ कि उचित हो वह करो यह कहकर तुम चले और देवताओं से यह सब समाचार कहकर उनको सुखी किया और रावण तुम्हारी माया से छलित हो अति अहंकारी बनकर कैलासपर्वत पर गया और उसको जड़से उखाड़ लिया जिससे सब वस्तु उस पर्वत की हिलकर नष्ट हुईं और सब देवता और मनुष्यादि अति दुःखी हुये और सब पक्षी क्लेशित होकर भयवान् हुये और वृक्षादि अपने मूल से उखड़ गये और शिवजी और सब आश्चर्यवान् होकर कहने लगे कि यह क्या है यह सुनकर उमा अर्थात् पार्वतीने शिवसे कहा किसी तुम्हारे भक्त ने तुमको यह फल दिया वाह २ ऐसाही सेवक चाहिये ऐसे वचन सुनकर शिवजी ने विचारकर कहा कि यह रावण का काम है और कहा कि अब फिर किसी को ऐसा वर न दूंगा क्योंकि दूध पिलाने से मानों सर्पों का विष अधिक करना है सर्प को प्रीति

नहीं होती वह तुरन्त ही काट खाता है सो शिवजी ने क्रोधित होकर रावण को शाप दिया कि तुमने जिन हाथों से हमारे कैलास पर्वत को उखाड़ा है उन हाथों का काटनेवाला उत्पन्न होगा उन्होंने यह शाप इस कारण दिया है कि स्वामी अपने सेवक को नहीं मार सक्ता और यद्यपि विष का वृक्ष अपने हाथ का लगाया हुआ हो तो भी लगानेवाला मनुष्य नहीं काट सक्ता सो रावण ने यह शाप सुनकर कैलास पर्वत को अपने मुख्य स्थान पर स्थित कर दिया और अहंकार में भर कर निर्भय अपने घर चला गया और दृढ़ता से अपना राज्य करके अनेक प्रकार के अन्याय करने लगा और अपने शुद्ध आचरण के विरुद्ध होकर शिवजी की भक्ति भी त्याग दी हे नारदजी! तुमने देवताओं से यह सब वृत्तान्त कहा और विष्णुजी ने अति प्रसन्न होकर समय पर राजा दशरथ के यहां अवतार लिया उनका नाम राम हुआ उन्होंने अपने भाइयों भरत शत्रुघ्न और लक्ष्मण सहित नाना प्रकार के बाल चरित्र किये फिर रामचन्द्र और लक्ष्मणजी ने विश्वामित्र के साथ जाकर बहुत लीला करने के पीछे ताड़का नाम राक्षसी को वध किया जिससे विश्वामित्र के यज्ञ में कुछ विघ्न न हुआ फिर जनकपुर में जाकर धनुष तोड़ डालने के पीछे रामचन्द्र का विवाह सीता के साथ हुआ जब रामचन्द्रजी लौट आये तो अयोध्यावासियों को बड़ा सुख प्राप्त हुआ पर जब राजा दशरथ ने श्रीरामचन्द्रजी को राज्यतिलक देना चाहा तो देवताओं के नाना प्रकार के चरित्रों से भरतजी की माता ने रङ्ग में भङ्ग कर दिया और रामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीता सहित वनवासी हुये और चित्रकूट और दण्डकवन में घूमते हुये बहुत दैत्यों को मारा और जब रावण सीताजी को उठा ले गया तो रामचन्द्रजी

बहुत समय तक दुःखी रह फिर अगस्त्य ऋषि की आज्ञानुसार श्रीरामचन्द्रजी ने शिवजी की सेवा कर उनसे धनुष ले लिया और हनुमान् ने उनके रक्षक होकर समुद्र में पुल बांधकर रावण से युद्ध किया और रावण का वध करके सीताजी को लेकर अवधपुरी में फिर आये यह हमने संक्षेप में वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र तुमको सुनाया यह नवें ज्योतिर्लिङ्ग हैं यह चरित्र वैद्यनाथ शिवलिङ्ग का दोनों लोक में सुख देता है और इसके सुनने और कहने से परमपद प्राप्त होता है।

सैंतालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम नागेश ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र वर्णन करते हैं कि प्राचीन समय में एक दारुका नाम राक्षसी ने गिरिजा की बड़ी पूजा की थी जिससे गिरिजा अति प्रसन्न हो दारुका के ध्यान के अनुसार प्रकट हुईं और कहा कि वर मांग दारुका ने कहा कि मुझे एक नगर दीजिये जिसमें मैं अपने पति सहित रहूं तुम हमारी रक्षा किया करो और जहां मैं जाऊं वहां वह वन भी मेरे साथ जावे गिरिजा 'एवमस्तु' कहकर अन्तर्धान हुईं और पश्चिम समुद्र के निकट एक नगरी बसी जो सोलह योजन लम्बी थी वहां नाना प्रकार के सुख की वस्तु प्रकट हुई थी उसमें दारुका अपने राक्षसों सहित रहने लगी और उसका ब्याह दारुक नाम राक्षस के साथ हुआ जो बड़ा वीर और तेजस्वी था वह राक्षस अपनी सेना समेत तीनोंलोक को दुःखी करने लगा और तप, पूजन, यज्ञ, दान, धर्म आदि से रहित हो कुकर्मों में प्रवृत्त हुआ जहां २ दारुका जाती वहां वह वन भी वृक्षों सहित उसी के साथ जाता और वहां हर प्रकार से दारुक उपद्रव करता था इसलिये तीन लोक के देवता और मनुष्य चिन्तित हो सब मिलकर उर्वमुनि के निकट गये और

प्रणाम और स्तुति के पीछे सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि अब हम आपकी शरण में आये हैं तुम हमारी रक्षा करो तुम्हारे सिवाय हमारा रक्षक कोई नहीं क्योंकि तुम्हारे तेज को देखकर वह सब राक्षस भाग जावेंगे तुमतो शिवजी के भक्त हो यह वृत्तान्त सुनकर उर्वमुनि ने क्रोधित होकर राक्षसों को यह शाप दिया कि जो राक्षस पृथ्वी पर जीवों को मारेंगे अथवा यज्ञ, दान, धर्म आदि में विघ्न करेंगे तो वे नष्ट होवेंगे यह कहकर उर्वमुनि अपने ध्यान और तप में प्रवृत्त होगये और देवताओं ने आनन्दपूर्वक राक्षसों के साथ युद्ध का उद्योग किया सो राक्षस उर्वमुनि के शाप का हाल सुनकर अधिक चिन्तित हुये उस समय दारुका राक्षसी ने कहा कि मुझको गिरिजा ने यह वर दिया है कि जहां मैं जाऊंगी वहां यह वन भी जावेगा इस निमित्त उचित है कि जहां शाप प्रवेश न करे वहां चलो इस वचनको सब उत्तम समझकर सागरमें रहनेलगे और जो मनुष्य नाव आदि पर चढ़कर जाते थे उनको वे खींचकर कारागृह में वन्द करते और थलमें आकर अनेक प्रकार के कष्ट देते थे एक दिन बहुतसी नावें पकड़कर लेगये उनमें एक पुरुष शिवजी का बड़ा भक्त था वह शिवजी की पूजा विना जलतक नहीं पीता था उसने सब वन्दियोंको शिवभक्त बनाकर पार्थिव पूजन कराया और सबको मानसी पूजन की विधि बताकर पञ्चाक्षरी मन्त्र की शिक्षा दी वह सब हर समय शिव २ कहकर सदाशिवजी का ध्यान करते थे शिवजी उनपर बहुत दयालु हुये जब उनको छः मास इसी प्रकार शिवपूजन करते हुये व्यतीत हुये तब शिवजीने यह चरित्र किया कि एक राक्षस ने शिवलिङ्ग को उनके सम्मुख देखकर अपने राजा अर्थात् दारुक से यह वृत्तान्त कहा उसने शिवभक्त को डर दिखाकर कहा कि तू सत्य २ कह कि यह क्या करता है

बरन् तुझे लातों से मारूंगा उसने कहा कि मुझको कुछ मालूम नहीं यह सुनकर राजा ने सब राक्षसों को आज्ञा दी कि इसे बध करो यह सुनकर वह सब राक्षस अति क्रोधित हो शिवभक्त के निकट आये शिवभक्त ने बहुत चिन्तित होकर शिवजी का ध्यान किया सो शिवजी गिरिजा सहित अपने लिङ्ग को प्रकट कर आप भी प्रकट हुये जिसको देखकर वैश्यपति शिवभक्त ने प्रणाम और स्तुति की शिवजी ने हुंकार करके सब राक्षसों को दूर कर दिया और अपने पशुपति शस्त्र को देखकर कहा कि इससे सबको मारो और इस वन में ब्राह्मणों सहित बसो यहां अब कोई राक्षस न रहने पावेगा हम यहां ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थापित किये जायँगे उस समय दारुका राक्षसी ने गिरिजा की ऐसी स्तुति और ध्यान किया कि गिरिजा ने प्रकट होकर वरदान देने के निमित्त दया की दारुका ने कहा कि हम न मारी जावें और न हमारे ऊपर शिवजी क्रोध करें तुम आदिशक्ति हो तुम्हारे ब्रह्माजी विष्णुजी और शिवजी सेवक हैं यह सुनकर गिरिजा ने हँसकर कहा कि यही होगा और शिवजी से कहा कि दारुका हमारी भक्ता है इसका और इसके स्वामी का नाश न होवे और यह दारुकवन भी नष्ट न होवे यह सुनकर शिवजी मुसकराये और कहा कि हे गिरिजा ! सोच विचारकर जो उचित हो वह करो तब गिरिजा ने कहा कि युग के अन्त पर्यन्त यहां यह राक्षस रहें और यह वन नगरी सहित बसा रहे और दारुका हमारी शक्ति गिनीजावे वह अपने पतिसहित यहां राज्य करे शिवजीने कहा कि जो कोई मनुष्य अपने वर्ण और धर्ममें दृढ़ रहेगा और यहां आकर हमारे दर्शन करेगा वह पृथ्वी का राजा होगा और इन्द्रदेवता के समान सुखी रहेगा फिर शिवजी ने गिरिजा से कहा कि अब हम भविष्य वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि विभ्रसेन राजा के गृह

एक पुत्र उत्पन्न होगा वह यहां आकर हमारे दर्शन करेगा और वह राजा होकर इनको मारेगा इसी प्रकार बहुत से परस्पर वचन कहके शिवजी नागेश नाम लिङ्गस्वरूप धारकर वहां स्थित हुये यह सुनकर नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि राजा विभ्रसेन उस वन में क्योंकर गया ब्रह्माजी ने कहा कि नैषध में विभ्रसेन राजा हुआ उसने द्वादश वर्ष शिवजी का तप किया सो शिवजी ने प्रसन्न होकर आज्ञा दी कि हे विभ्रसेन ! तुम पश्चिम के समुद्र में जाकर दारुक वनमें राक्षसों को मारो और एक काठकी नाव बनाकर राजाको दी जिसके ऊपर राजा विभ्र-सेन चढ़कर दारुक वन में गया और जब शिवलिङ्ग और गिरिजा के दर्शन पाचुका तब पशुपति शस्त्र जो वहां रक्खा था उससे सब राक्षसों को मारा और श्रीसदाशिवजी और श्री-गिरिजा देवी का पूजन करके फिर अपने नगर को लौट आया वह यही समय था जिसमें गिरिजा ने यह आज्ञा दी थी कि दारुक राज्य करेगा हे नारद ! जो नागेश्वर महादेवजी के चरित्र वर्णन अथवा श्रवण करेगा वह आनन्द पावेगा अब हम रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करेंगे।

अड़तालीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि एक समय चारों मुनि सनकादिक हमारे पुत्र विष्णुलोक में गये जब वह विष्णुजी के मन्दिर के अन्दर जाने लगे तो जय और विजय दोनों गणों ने न जाने दिया सनकादिकों के शाप देने से वह कनकाक्ष और हिरण्य-कशिपु का जन्म लेकर विष्णुजीके हाथ से मारे गये उनको तीन जन्मतक दैत्य होने का शाप था इसलिये वह दोनों रावण और कुम्भकर्ण हुये रावण शिवजी का पूजन करके बड़ा वीर होकर तीनों लोकों को जीतकर राज्य करने लगा पर जब तुमने उसे

छला तब उसने कैलास पर्वत को मूल से उखाड़कर शिवजी से शाप पाया कि हमारे सदृश अन्य मनुष्य तुम्हारे मद का नाश करेगा शाप के कारण रावण धर्म के विपरीत चलने लगा और देवताओं और मुनीश्वरों की प्रार्थना के अनुसार विष्णुजी ने रामचन्द्र का अवतार लिया जिनका वर्णन हम कई बेर कर चुके हैं जब रामचन्द्रजी देवताओं के मनोरथ पूर्ण करने को वन में गये तब रावण सीता को छलकर हर ले गया और लङ्का में रक्खा श्रीरामचन्द्रजी ने कुम्भज तथा अगस्त्यमुनि की शिक्षा और उपदेश से शिवजी की पूजा की।

उन्नासवां अध्याय।

नारदजी के प्रश्न के पीछे ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि अगस्त्यमुनि की शिक्षा से श्रीरामचन्द्र ने सब शरीर में भस्म धारण की और शिवजी का ध्यान करके रुद्राक्ष को पहना और लक्ष्मणजी को रक्षा के निमित्त द्वार पर बिठाया और सहस्र नाम जो वेद में हैं उनका वह जप करते रहे ऐसा तप रामचन्द्रजीका देखकर शिवजी प्रकट हुये और रामचन्द्रजी को अपनी गोद में बिठाकर कहा कि जो चाहते हो वह हमसे मांगो रामचन्द्रजीने कहा कि हम यह चाहते हैं कि रावण को वध करें और सीताजी को ले आवें शिवजीने प्रसन्न होकर अपना तेज धनुर्बाण सहित उनको दिया रामचन्द्रजी ऋष्यमूक पर्वत पर जाकर सुग्रीव और हनुमन्त से मिले फिर रामचन्द्र ने बालि को जो सुग्रीव का भाई था मारकर उसको बड़ा सुख दिया फिर हनुमान् सीता का पता लगाने गये और पता लगाने के पीछे रामचन्द्र से फिर वृत्तान्त आ कहा रामचन्द्रजी ने समुद्र के तट पर पहुँचकर देखा कि किसी प्रकार समुद्र में जाने की राह नहीं है निदान उन्होंने चिन्तित होकर शिवलिङ्ग स्थापित किया और

पूजन आदि के पीछे प्रार्थना की कि हे महाराज! हम किस प्रकार सागर से पार जावें आप हमारी रक्षा कीजिये कि हम समुद्रपार होके रावण को मारें यह कहकर स्तुति करके गल-नाद अर्थात् गलमुँदरी बजाया उसी लिङ्ग से शिवजी प्रकट हुये जैसा श्रीसदाशिवजी का स्वरूप है वैसाही विराट्रूप धारकर रामचन्द्रजी के सम्मुख खड़े हुये रामचन्द्रजी ने ऐसा स्वरूप देखकर शिवजी की बड़ी स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी ने अतिप्रसन्नता से कहा कि वरदान मांगो रामचन्द्रजी ने ऐसा ज्योतिस्स्वरूप देखकर कहा कि मैं चाहता हूं कि समुद्रपार उतरूं और रावण को जीत लूं कि रावण को उसके कुलसहित वध करूं और तुम हमारे स्थित किये लिङ्ग में रहकर संसार को सुख दो शिवजी ने कहा कि ऐसाही होगा और उसी लिङ्ग में जो राजा रामचन्द्र ने स्थापित किया था समागये उस लिङ्ग का नाम रामेश्वर है रामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी ने फिर उसी लिङ्ग की पूजा करके बड़ा आनन्द किया फिर सुग्रीव, जाम्ब-वान्, अङ्गद और हनुमान् ने उनकी पूजा की और रामचन्द्रजी समुद्र में पुल बांधकर रावण को कुलसहित मारकर और विभीषण को राज्यतिलक देकर और श्रीसीताजी को साथ लेकर अवधपुरी को लौट आये हे नारदजी! जो मनुष्य रामेश्वर लिङ्ग में गङ्गाजल चढ़ावे वह दोनों लोक में सुख पावे जो रामेश्वर के दर्शन करे वह सर्वपापों और दोषों से रहित होकर नाना प्रकार के सुख प्राप्त करे बहुत से मनुष्य कहते हैं कि जब इन्होंने पुल बांध लिया तब रामेश्वर महादेव को स्थापित किया यह वचन केवल कल्पभेद के कारण है पर उनकी सेवा से अनेक प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं।

पचासवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम घुस्मेश्वर शिव ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जो बारहवां शिवज्योतिर्लिङ्ग है कि दक्षिण दिशा में जो त्रिदेव नामी शिवजी का धाम है उसमें एक बड़ा नगर है उस नगर में एक विबुध सुधर्मानामी ब्राह्मण रहता था वह रात्रिदिन शिवपूजा करता और सर्वदा भस्म और रुद्राक्ष धारण करता और शिव २ रटा करता था उसकी स्त्री सुदेहा महापतिव्रता और शिवजी की बड़ी भक्त थी वह दोनों विदेशियों की सहायता और कार्यपूर्ण करने में सदा उद्यत रहते और सर्वदा शिवजी का व्रत रखते थे और शिवजी और गिरिजा की पूजा नित्य करते थे जब बहुत दिन व्यतीत हुये और ब्राह्मण की स्त्री के कोई पुत्र उत्पन्न न हुआ तो वह अति चिन्तित हुई अन्त में ब्राह्मण ने उसे बहुत समझाया और कहा कि शिवजी की भक्ति करो इससे उत्तम कोई वस्तु नहीं यद्यपि पुत्र से दोनों लोक में सुख मिलता है पर वेद का यह वाक्य है कि कर्म सर्वोपरि है जो मनुष्य भक्ति करते हैं उनको संसार का सुख भला नहीं भासता देखो कौन किसका पुत्र, पिता, माता, भ्राता है यह सब झूठे बान्धव हैं सब अपने २ लाभ को देखते हैं ऐसे २ उपदेश से ब्राह्मण की स्त्री प्रसन्न होकर सुखी हुई एक दिन अचानक वह स्त्री अपने पड़ोसिन के यहां गई वहां कुछ स्त्रियों से झगड़ा हुआ उन्होंने कहा कि यद्यपि तुझे कोई पुत्र नहीं पर तो भी तू इतना अहंकार करती है तेरा यह गर्व निष्फल है क्या तूने नहीं सुना कि सन्तान विना मुक्ति नहीं मिलती और न ज्ञान फलदायक होता है विष सींचने से कोई बीज पृथ्वी से नहीं उगता सर्व शुभकार्य विना सन्तानके लाभदायक नहीं होते और विना सन्तानके जप, तप,

धर्म, कर्म निष्फल हैं जो सन्तानवाला पुरुष है वह पापी भी हो तो भी मुक्ति प्राप्त करता है तुम किसी प्रकार हमारे समान नहीं हो क्योंकि हम सबके पास सन्तान है और तुम पुत्रहीन हो ब्राह्मणी अतिलज्जित हो घरकी ओर आई और अपने पति के चरण पर गिरकर बहुत रोई फिर सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि मुझको पुत्र दीजिये वरन मैं न जीऊंगी ब्राह्मण ने बहुत समझाया तुम क्यों संसारी सुख ढूँढ़ती हो तुम शिवजी की भक्ति करो और पुत्र के लिये ऐसी चिन्ता न करो पर उसने एक न मानी और सन्तान मांगा की सो ब्राह्मण ने दुःखी होकर शिवजी का ध्यान किया और दो फूल एक उनमें से लड़का उत्पन्न होने का और दूसरा उसके विरुद्ध देकर कहा कि इनमें से एक फूल उठालो यह परीक्षा मैं लेता हूं देखूं पुत्र तेरी भाग्य में है या नहीं स्त्रीने वह फूल उठाया जो लड़का न होने का था इससे ब्राह्मण को अतिदुःख हुआ और स्त्रीसे कहा कि तेरी प्रारब्ध में पुत्र नहीं है स्त्री ने कहा कि तुम दूसरा ब्याह करो मैं उसकी लौंड़ी होकर रहूंगी इस निमित्त उसने ब्राह्मण का विवाह और किया उसका नाम घुस्मा था वह अपने स्वामी की आज्ञानुसार पार्थिव पूजन करने लगी वह नित्य हज़ार पार्थिव बनाकर विधिसे पूजन करती थी जब थोड़े दिन व्यतीत हुये तो शिवजी प्रसन्न हुये और घुस्मा के एक पुत्र उपजा जिस से ब्राह्मण और उसकी स्त्री बहुत प्रसन्न हुई उसने उसके सब जातकर्म किये और एक सभा बड़े धूमधाम से करके भाई और बान्धवों को प्रसन्न किया।

इक्यावनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब घुस्मा के पुत्र उत्पन्न हुआ तब सब मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे और सुदेहा प्रथम

स्त्री की निन्दा होने लगी ऐसे कठोर वचनों से सुदेहा की छाती जलने लगी और अपने सौत के लड़के को देखकर अति चिन्तित हुई जब उसका लड़का खेलता तो उसे बुरा मालूम होता और नित्य उसे मारा करती और उसने पहिली प्रीति को विस्मरण कर दिया यद्यपि उसका पति दोनों को समान जानता पर वह प्रसन्न न होती और नित्य लड़ाई करती घुस्मा कहती थी कि यह पुत्र मेरा नहीं तुम्हारा है मैं तुम्हारी लौंड़ी हूं यह घर धन सब तुम्हाराही है इस वचन के सुनने पर भी सुदेहा की ईर्षा न गई उसके पति और पड़ोसियों ने उसे बहुत शिक्षा की पर उसने कुछ न माना और प्रीति आदि को त्याग उसके विपरीत पति को जलाने लगी हे नारद ! सवतिया डाह बहुत बुरा है इससे पुरुष को उचित है कि दूसरा विवाह न करे विशेष करके जब पहिली स्त्री जीती हो या उसकी सन्तान हो क्योंकि ऐसे ब्याह करने में खेद होता है चाहे सूर्य देवता पश्चिम से उदय हों या अग्नि ठंढी पड़ जावे पर सौतों का मिलाप से रहना बहुत कठिन है या यों कहो कि किसी प्रकार मेल नहीं हो सक्ता जब उस लड़के का ब्याह हुआ तब सबको सुख प्राप्त हुआ पर सुदेहा की अग्नि और भी अधिक हुई यद्यपि घुस्मा से सुदेहा की सेवा उस पुत्र की स्त्री अधिक करती थी पर सुदेहा कुछ भी प्यार न करके कठोर वचन कहती निदान सुदेहा ने यह विचारा कि विना पुत्रके बधके मुझको सुख प्राप्त न होगा और इसी प्रकार जला करूंगी हे नारद ! स्त्री के विचार में कौन ऐसा काम है जिसको वह नहीं कर सक्ती उसको योग्य और अयोग्य कर्म कुछ जान नहीं पड़ता एक दिन उसने लड़के को सोता पाकर मार डाला और उसका शिर वहां डाल दिया जहां घुस्मा शिवजी के लिङ्ग को पूजा करके डाल देती थी जब

प्रभात को इस प्रकार लड़के के अङ्ग भिन्न २ देखे गये तो नगर भर में इस बात की चर्चा फैल गई पर ब्राह्मण और घुस्मा जो शिवजी का पूजन कर रहे थे पूजन को न त्यागकर अपनी जगह से न उठे पूजा के पीछे लड़के को ऐसी अवस्था में देखकर कहा कि शिवजी रक्षक हैं और घुस्मा ने पूर्ववत् अपने पार्थिवों को उसी स्थान पर जहां शिर पड़ा हुआ था डाल दिया और कुछ भी खेद न किया ऐसा सन्तोष और दृढ़ता अपने भक्तों की देखकर शिवजी प्रसन्न हुये और ज्योतिस्स्वरूप होकर दर्शन दिये और सम्मुख आकर खड़े हुये जिनको घुस्मा ने देखकर प्रणाम करके स्तुति पढ़ी शिवजी ने कहा कि वर मांगो हम बहुत प्रसन्न हुये हम तेरे लड़के के मारनेवाले को अपने त्रिशूल से मारेंगे घुस्मा ने कहा कि वह अपने पापों से आप ही मर जावेगी, आप उसको वध न करें मेरी यह अभिलाषा है कि आप इसी स्थान पर गिरिजा सहित स्थित होवें शिवजी ने मुसकराकर कहा कि अच्छा हमारा नाम घुस्मेश्वर शिवलिङ्ग होगा और तुम्हारे नाम के साथ हमारा नाम होगा और इस तालाब का नाम शिवालय होगा तुम्हारे बहुत सन्तान होंगी अर्थात् सौ पुत्र होंगे यह कहकर शिवजी लिङ्गरूप होगये ब्राह्मण ने अपनी दोनों स्त्रियों सहित उनकी परिक्रमा की और शत्रुता त्याग सबने अच्छे प्रकार शिवजी की पूजा की जो इस चरित्र को सुनेगा या पढ़ेगा वह संसारीसुख भोगकर शिवपद प्राप्त करेगा उसके सर्वपाप जल जायेंगे कोई रोग न रहेगा हे नारद! हमने द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग कह सुनाये जिनका वर्णन विस्तार सहित हुआ है यह बारहों ज्योतिर्लिङ्गों के चरित्र मुक्ति देनेवाले हैं शिवलिङ्गों की बड़ी महिमा है जब शिवभक्त को खेद होता है

तब शिवजी प्रकट होकर उसके दुःख दूर करते हैं जो मनुष्य शिवजी की स्तुति करता है उसको शोक दुःख नहीं होता और वह मुक्ति पाता है ।

इति श्रीशिवपुराणेऽष्टमखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे
लिङ्गखण्डस्समाप्तः ॥ ८ ॥



ॐ नमः शिवाय।

शिवपुराण भाषा

नवां खण्ड

पहिला अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद यह नवां खण्ड प्रयाग के समान है जो मनुष्य इसको प्रयाग से कम समझेगा वह बड़ा पापी होगा और शिवजी के विरुद्ध होकर संसार में लज्जित होकर परलोक में नरक की अग्नि में डाला जावेगा प्रयाग को त्रिवेणी इस निमित्त कहते हैं कि वहां गंगा, यमुना और सरस्वती का सङ्गम है और इस खण्ड में नामकी महिमा, भस्म का माहात्म्य और रुद्राक्ष की बड़ाई वर्णन की गई है सो शिवजी गङ्गाजी के समान भस्म यमुनाजी के सदृश और रुद्राक्ष सरस्वती के स्थान पर है जिस प्रकार कि काशीपुरी सब नगरियों से उत्तम है उसी प्रकार यह खण्ड सबसे उत्तमोत्तम है और जिनके ललाट पर भस्म नहीं है और जो रुद्राक्ष नहीं पहिनते और जिनकी जिह्वा से शिव २ नाम नहीं निकलता वह अधर्मी और पापी हैं जो यह तीनों आभूषण पहिने हैं वह श्रीसदाशिवजी के सदृश हैं शिवजी की महिमा अनन्त है जिसके सुनने से अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं और सन्त और भक्त लोग नाम को प्राण से अधिक प्यारा रखते हैं हम विष्णुजी और हर सब सदाशिवजी के नाम का जप करते हैं और इन्द्र आदि देवता शिवजी का स्मरण कर सर्वदा आनन्द में रहते

हैं और मुनि सिद्ध आदि नामही का जप करके सर्वपापों से रहित हो आनन्दपूर्वक रहते हैं और श्रीरामचन्द्रजी सीतासहित और श्रीकृष्ण राधा प्यारी सहित शिव २ रटकर सुखी हैं उन्हीं मनुष्यों को धन्यवाद है जो शिवजी का नाम जपा करते हैं उनके समान संसार में कोई जीव नहीं जिसके मुख से एक बेर भी शिवजी का नाम निकलता है उसके सर्व कार्य परिपूर्ण हो जाते हैं शिव २ कहने से सर्व पाप और दोष नष्ट होते हैं और जिसके देखने से सुख मिले उसका मुख तीर्थ के सदृश है और शिवजी का नाम पापों के वन के जलाने को आग के समान है और ब्रह्महत्यादि बड़े २ पाप शिवजी के नाम लेने से दूर हो जाते हैं शिवजी के नाम की नाव इस संसारी समुद्र के पार करने को सुगम युक्ति है शिवजी का नाम अमृत के समान है जिसके रटने से शोक दुःख नहीं रहते जो मनुष्य कि मनसा, वाचा, कर्मणा से शिवजी का जप करे वह पुरुष धन्य है क्योंकि जो मनुष्य प्रीति से शिवजी का नाम जिह्वा से निकालता है उसके सब पाप नाश हो जाते हैं और किसी देवता को सिवाय शिवजी के इतनी शक्ति नहीं कि पाप नष्ट करे शिवजी का नाम अमृततुल्य पीने के योग्य है और दूसरी युक्ति पवित्र करने के निमित्त नहीं देखी जाती है जिन मनुष्यों को राज्य का गर्व है अथवा जो संसार की सम्पत्ति से अहंकारी हैं उनको शिवजी के नाम लेने की इच्छा नहीं होती वह कभी किसी प्रकार मुक्ति प्राप्त नहीं कर सके और हे नारद ! पूर्व जन्म के पुण्य विना किसी मनुष्य को शिवनाम लेने की प्रीति नहीं उपजती शिवजी का नाम बड़ा उत्तम है उसके जपने से श्रीसदाशिवजी अपने भक्तों के अधीन होजाते हैं जिसने बहुत जन्मपर्यन्त कठिन तप किया हो वह निस्संदेह शिवजी के नाम

के माहात्म्य को जानता है शिवजी २ कहने से चारों ओर से सुख और आनन्द प्राप्त होता है जिस प्रकार कि अग्नि वन के वृक्षों को जला देती है इसी प्रकार शिवजी का नाम सब दोषों को जला देता है जैसे कि पुरियों में काशी और वर्णों में ब्राह्मण उत्तम हैं वैसे ही सब नामों में शिवजी का नाम उत्तमोत्तम और बड़ा है जितनी कि भक्तों में विष्णुजी की महिमा है उतना ही नामों में शिवजी का नाम है यद्यपि शिवजी के अनन्त नाम हैं और सर्व कार्यों की सिद्धि में सब एकसे हैं और पापों का नाश करते हैं पर जो कोई मनुष्य शिवजी के नाम को किसी देवता के नाम के सदृश विचारे तो वह बड़ा पापी है क्योंकि शिवजी सब देवताओं से बड़े हैं यद्यपि कोई मनुष्य किसी प्रकार से शिवजी का नाम लेवे वह निश्शङ्क मुक्ति प्राप्त करता है यद्यपि इस संसारसमुद्र के पार होने के सहस्रों यत्न हैं पर शिवजी के नाम के समान कोई भी नहीं है वह ऐसा नाम है जिसको कह कर सुमति नामक स्त्री जो अतिपापिनी थी नरकसे बचगई और दूसरे जन्म में शिवपुरी उसके रहने को मिली देखो राजा इन्द्रद्युम्न जो बड़ा पापी था उसको एक सिंह ने मार डाला जो कि राजा बड़ा पापी था इस निमित्त उसके लेने को यमराज के गण आये उस समय श्रीसदाशिवजी की आज्ञानुसार शिव-गण भी पहुँचे क्योंकि उसकी जिह्वा से शिवनाम निकला था यद्यपि इसने यों ही नाम ले लिया था पर तो भी वह सदाशिव का रूप धारकर शिवपुरी में विराजमान हुआ सिवाय इसके बहुत मनुष्य शिवनाम कहने से मुक्त हुये हैं जैसा कि इस बात को वेद और पुराण कहते हैं पर तो भी वेद, पुराण, शेष और शारदा नाम के माहात्म्य को अच्छे प्रकार वर्णन नहीं कर सके जो प्रथम नमः पद को कहकर शिवाय कहे तो यह पञ्चाक्षरी मन्त्र

हो जाता है जो सब मन्त्रों का राजा है जिसकी महिमा सबसे उत्तम है और जिसके सुनने और कथा कहने से सब पाप नष्ट होते हैं यह मंत्र वेद में लिखा है कि गुप्त रखना चाहिये क्योंकि सब मंत्रों का राजा है जिसके अधीन सात करोड़ मंत्र हैं इसी पञ्चाक्षरी मन्त्र को जपकर हम विष्णुजी और अन्य देवता और मुनि निर्भय होकर नाना प्रकार के सुख भोगते हैं और पार्वतीजी को इसी मंत्र के जप करने से अर्द्धाङ्गीरूप मिला है उसी के जप करने से गङ्गा सब तीर्थों से पवित्र हैं उसी के जपने से कोई पाप और दोष नहीं रहता और श्रीसदाशिवजी इस मन्त्र के जपनेवाले के ऊपर किसी अवस्था में भी अप्रसन्न नहीं होते ।

दूसरा अध्याय ।

नारदजी बोले कि हे संसार के उपजानेवाले ब्रह्मा ! मेरी यह इच्छा है कि आप फिर अपने मुखकमल से शिवनाम का माहात्म्य विस्तार से वर्णन करें और मुझसे सुमति नामक स्त्री और इन्द्रद्युम्न राजा की कथा विस्तार से वर्णन करिये ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि सुमति एक ब्राह्मणी कि जिसका नाम कैकेयी था उसके पिता ने उसको एक अच्छे ब्राह्मण के साथ व्याह दिया वहां उसने अपने पति के साथ नाना प्रकार के विहार किये थोड़े समय के पीछे उसका पति मर गया उसने संसारी जीवों की रीति के सदृश थोड़े दिन तो शोक माना परन्तु जब कामदेव ने उसको सताया तो वह इसके वेग को न सहकर व्यभिचारिणी हो गई यद्यपि उसने गुप्त करके यह अशुभ कर्म किया पर वह प्रसिद्ध हो गया उसके भाईबान्धव सुनकर आये और सुमति को नगर से निकाल दिया अचानक वन में उसे एक शूद्र मिला और उसे अपने घर ले आया और अपनी स्त्री के समान उसे

रक्खा सुमति ने मद्य पी और मांसाहारी होकर अपने पुराने धर्म को विस्मरण कर दिया एक दिन शूद्र घर से किसी ओर चला गया तो सुमति स्वाधीन हो नाना प्रकार के दुष्कर्म करने लगी एक दिन सुमति ने मद्यपान करके चाहा कि मांस खाऊँ इसलिये वह गोशाला में गई और अँधेरी रात देखकर एक बछड़े को तलवार से मार डाला पर जब घर आई तो चिन्तित होकर शिव २ कहने लगी पर तो भी उसके मांस को खा गई और यह बात प्रसिद्ध की कि सिंह ने बछड़ा मार डाला है जब उस स्त्री की मृत्यु का समय आया और मृत्यु के भँवर में फँसी तो यमराज के गण उसे बांधकर महादण्ड देकर यमराज के निकट लाये यमराज ने उसे नरक में न भेजकर एक चाण्डाल के घर उत्पन्न किया जहां वह अन्धी होकर बिन माता पिता के कुष्ठ के रोग से दुःखी रही और इसी से उसका विवाह भी न हुआ और भूखों मरने से चाण्डालों की जूठन खाकर पेट भरती थी यह दशा उसकी तरुणावस्था में हुई पर वृद्ध होने पर भी उसने सुख न पाया तब वह बहुत रोई और इतना रुदन किया कि मानों आंसू की एक नदी वह निकली उस समय श्रीसदाशिवजी ने यह चरित्र किया कि वह चाण्डाली गोकर्णक्षेत्र में जहां शिवरात्रि का मेला था मांगती खाती हुई मेले के संग गई वह मेला माघ कृष्ण चतुर्दशी को था उस दिन सब लोग व्रत रखते थे यद्यपि उस चाण्डाली ने उस दिन बहुत कुछ मांगा पर उसको कुछ भी भिक्षा न मिली एक मनुष्य ने केवल बेलपत्र थोड़े से उसे दे दिये पर जब उसने देखा कि यह पत्र कोई खाने पीने की चीज़ नहीं हैं तब उसने उसको धरती पर फेंक दिया अचानक वह बेलपत्र शिवलिङ्ग के ऊपर चढ़ गये सो उस चाण्डाली के सर्व पाप और दोष जल गये क्योंकि उसको उस दिन कुछ न मिला

था इसलिये उसे निर्जल व्रत हो गया और दुःख से उसे रात्रि भर नींद भी न आई इससे उसने अचानक में जागरण किया और प्रातःकाल भी कोई वस्तु उसे न मिली इस निमित्त वह तड़पकर अपने घर गई मार्ग में वह मारे भूख के मर गई इससे शिवजी अतिप्रसन्न हुए और अपने गणों को भेजकर यह आज्ञा दी कि इसे विमान पर चढ़ाकर शिवलोक में ले आवो शिव के गणों ने ऐसा ही किया शिवजी और शिवरानीजी ने दयालु होकर उसे अच्छा स्थान बैठने को दिया फिर शिवरानी ने उसे अपनी दासी करके रक्खा हे नारद! ऐसा पद सुमति को दो बार शिव २ कहने से मिला इसी प्रकार अनन्त मनुष्यों ने केवल शिवनाम कहकर मुक्ति पाई है।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गत कलियुग में एक इन्द्रसेन नामक सर्वसंसार का राजा बड़ा वीर उपजा पर वह बुद्धिहीन मित्रों का शत्रु और बुरे स्वभाव का था ब्राह्मणों के विरुद्ध चलता और जीवहिंसा करके सर्वदा पाप करता और केवल अपने शरीर की रक्षा कर आप सुखी रहकर अन्य जीवों को मार डालता था और परस्त्री और पराये धन को अपना विचार कर ब्राह्मणों को वध करता था और मद्यपान करके अपने गुरु की निन्दा और उससे ग्लानि करता बरन वह बड़े २ पाप करके भी संतोष न करके ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ सम्भोग करता था और वेद के विपरीत रहकर देवताओं का पूजन, तप, जप आदि कुछ नहीं करता प्रजा का भी पालन न करता था नित्य कुसंगति में बैठकर शिकार खेला करता और किसी कार्य में चित्त न लगाता राजा को बहुत दिन ऐसे निन्द्य कर्मों में बीत गये एक दिन राजा अपने मन्त्रीसहित वन में शिकार खेलने को

गया और चारों ओर से उसके अधिकारियों ने मुनीश्वरों को वन से बाहर निकालना चाहा इस समय में शिवजी की माया से एक बड़े बली सिंह ने राजा को एक ही झपेट में मार डाला और किसी ने इस महापापी राजा की रक्षा न की यमदूत राजा के लेने को आये और शिवगण भी शिवजी की आज्ञानुसार वहां आये और राजा को शिवपुरी में लाये वहां राजा श्रीसदाशिव का रूप होगया शिवजी ने उसको अपना गण विचारकर आनन्दपूर्वक उसे बुलाया और अपने आसन पर उसको आधा स्थान दिया और कहा कि हे राजा इन्द्रसेन! तुम हमारे बड़े भक्त हो उचित है कि जो तुम्हारी अभिलाषा हो वह हमसे मांगो हम वरदान देंगे यह सुनकर राजा के प्रेम से आंसू गिरे और सुख के कारण कुछ न बोल सका अन्त में शिवजी ने आप ही वरदान देकर उसको अपना गण बनाया उसका नाम चण्ड हुआ और मुण्डगण से उसकी बहुत मित्रता हुई इस निमित्त शिवभक्त को उचित है जब शिवजी का जप अथवा किसी प्रकार की पूजा करे तो आग्नेय दिशा में चण्ड मुण्ड की भी पूजा कर दिया करे क्योंकि इनकी पूजा से शिवजी बहुत प्रसन्न होकर कष्टों को नष्ट कर मनोरथ पूर्ण कर देते हैं और यह पद राजा इन्द्रसेन को केवल एक बार शिवजी के नाम लेने से मिला यद्यपि उसने जान बूझ कर नहीं कहा पर वह केवल किसी वार्ता में उसकी जिह्वा से निकल गया अर्थात् उसके मुख से यह पद (आहरपरहर) निकला था उसी समय उसको सिंह ने मारा जब यमराज के दूतों के द्वारा यह हाल मालूम हुआ तो उसने आश्चर्यवान् होकर चित्रगुप्त से इसका मुख्य वृत्तान्त पूछा जब चित्रगुप्त ने उनसे (आहरपरहर) पद के मुख से निकलने का हाल कहा तब यमराज और उसकी

सब सभा आश्चर्यवान् होकर प्रसन्न हुई और शिवजी की महिमा को बारम्बार प्रणाम किया जो कोई इस पवित्र कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा वह दोनों लोक में सुख पावेगा।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! करोड़ों जन्मों के पाप शिव-नाम कहने से नष्ट होजाते हैं और धन और सर्वसुख की सामग्री मिलती है और कोई ऐसा दोष नहीं जो शिवनाम कहने से नष्ट न हो इस माहात्म्य पर हम एक इतिहास कहते हैं कि उज्जयिनी नगरी में एक ब्राह्मण बड़ा पापी रहता था उसका नाम असमचित्त था जब वह उत्पन्न हुआ तो उसका पिता मर गया और जब वह पांच वर्ष का हुआ तो उसकी माता भी मर गई इससे वह बड़ा दुःखी हुआ और निर्धन होकर बहुत रोया और वह विना माता पिता के होकर अपने धर्म के विप-रीत सन्ध्या आदि जो ब्राह्मणों के उत्तम धर्म हैं उनसे भी रहित हुआ और उसने कोई विद्या भी न सीखी जब तरुण हुआ तो चोरी सीखकर परदेश गया और चोर बन-कर नाना प्रकार के पाप किये और ब्राह्मणों की स्त्रियों को बध किया और परदेशियों और यात्रियों को मार्ग में मारा और उनको दुःखी कर लूटता रहा और ब्राह्मणों का स्वरूप त्याग कर दैत्यों का रूप धारण किया उसका शरीर टेढ़ा हो गया और उसका वर्ण काला भयंकर और छोटा हो गया उसने बहुत सी हत्यायें कीं और जीवों को मार डाला एक समय यह असम-चित्त चोरों के साथ मायाक्षेत्र में गया और चाहा कि चोरी करें इससे वह अपने साथियों के साथ इधर उधर फिरने लगा सो एक स्थान पर ब्राह्मण बैठे थे असमचित्त आधी रात को चोरी करने गया वहाँ ब्राह्मण लोग शिवजी की पूजा करते और कथा

सुनते थे और बड़ी स्तुति करके श्रीसदाशिवजी के मुख्य लक्षण धारण किये जप करते थे असमचित्त ने अपने समूह से कहा कि तुम सब लोग अच्छे प्रकार जो यह सब वार्त्तालाप करते हैं सुनो क्योंकि यह सब धीरे २ बातें कर रहे हैं यह धन आदि के विषय की बातें मालूम होती हैं यह सब धनवान् मालूम होते हैं हमको उचित है कि इनका धन सब लूटकर इनको मार डालें और अब अपना वेष बदलकर शिवभक्त बनकर इनके निकट चलें वे हमें न जानेंगे कि चोर हैं और भक्त जानकर कुछ न कहेंगे यह कह असमचित्त ने अपने साथियों सहित यही किया और वस्त्रादि बदलकर शिवपूजकों के निकट गये और प्रणाम किया और शिवजी का माहात्म्य अच्छे प्रकार श्रवण किया निदान उनकी संगति और शिवजी के नाम के प्रभाव से असम-चित्त के पाप नष्ट हुये और हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से कहने लगा कि हे मुनीश्वरो! मैं बड़ा पापी हूँ मुझको अपना सेवक जानकर पार लगा दो मैं केवल कहने ही का ब्राह्मण हूँ पर मैं अपना धर्म नहीं जानता मेरा जन्म मिथ्या है मैंने करोड़ों पाप किये हैं और ब्राह्मणों को हजारों दण्ड दिये हैं इसलिये मेरी यह प्रार्थना है कि ऐसी युक्ति बताइये जिससे मेरे सब दोष नष्ट हो जावें यह कहकर अति प्रेम से ब्राह्मणों के चरणों पर गिर पड़ा और रुदन करने लगा ब्राह्मणों ने कहा धन्य है धन्य है जो तुम ऐसे धर्म के स्थान पर आये अब तुम अपने पहिले के पापों का विचार न करो तुमको उचित है कि गङ्गाजी के तट पर जो महागिरि है और जहां पवित्र शिवजी का मन्दिर है वहां जाकर शिवजी की सेवा करो और शिवजी के नाम महादेव आदि का जप करो तुम उस नाम के जप करने से कृतार्थ हो जावोगे इस निमित्त असमचित्त उसी स्थान पर जाकर ब्राह्मणों

की आज्ञानुसार रात्रि दिन महादेव का नाम रटता रहा यहां तक कि यह नाम रात्रि दिन जपते २ उसे सात दिन और सात रातें व्यतीत हुईं सो श्रीसदाशिवजी ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये और कहा कि धन्य है तुमको तुम्हारा कल्याण होवे तुम उठकर हमसे वरदान मांगो तुम अपने पहिले के पापों से निर्भय रहो यह सुनकर असमचित्त ने दण्डवत् करके स्तुति की श्रीसदाशिवजी ने असमचित्त की अभिलाषा के अनुसार उसको सर्वविद्या दे दी सो असमचित्त अतिविद्वान् हो और शिवजी के तत्त्व और स्वरूप को जानकर शिवजी की स्तुति करने लगा जिसके सुनने से श्रीसदाशिवजी ने अति प्रसन्न होकर कृपादृष्टि से देख दिया और कहा कि हम तुमसे प्रसन्न हैं तुम हमारे गण होकर विमान पर चढ़कर हमारे कैलास में विराजमान होजाओ तुम्हारा नाम नील होगा और हम नीलेश्वर होकर इस स्थान पर विराजमान होंगे और इस पर्वत का नाम भी नील ही होगा जिसके स्मरण करने से सुख मिलेगा और अंशरूप होकर हम सर्वदा इस स्थान पर तुम्हारे साथ रहेंगे और गङ्गाजी के तट पर जो हमारा कुण्ड है उसमें नहाने से मनुष्य हमारा रूप धारण कर लेगा तथा च नील १ नीलेश्वर २ यह दोनों रूप बहुत सुख देनेवाले हैं और करोड़ों दुःखों के दूर करनेवाले हैं यह कहकर श्रीसदाशिवजी ने अपना डमरू बजाया जिसके शब्द से ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि और सिद्ध आदि उस स्थान पर आकर शिवजी की स्तुति करने लगे और नील की भी महिमा बखानी और सब देवता भी अंशरूप होकर वहां स्थित रहे इसलिये वह स्थान अति पवित्र है जिसके देखने से पापी पापों से रहित हो पवित्र होजाता है और नील दिव्य रूप होकर कैलास पर्वत पर गये इसी प्रकार बहुत से मनुष्यों ने शिवजी का नाम कहकर बड़ा पद पाया है ।

पांचवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पञ्चाक्षरी मन्त्र बहुत अच्छा है और उसकी महिमा अनन्त है जिसके जप करने से सब सिद्धि उत्पन्न होकर हज़ारों पाप नष्ट होते हैं इस मन्त्र के अक्षरों की महिमा बखानने की किसी को शक्ति नहीं इसी के द्वारा वेदों ने सिद्धि पाई है और आप सत् चित् आनन्दस्वरूप सदाशिव इस मन्त्र में सर्वदा स्थित रहते हैं यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है जिसके जपने से मनुष्य आवागमन से रहित होकर ब्रह्मपद प्राप्त करता है जो मनुष्य संसारी सुखों में लिप्त होकर इस लोक में फँस जाते हैं उन्हीं के निमित्त श्रीसदाशिवजी ने इस मन्त्र को प्रकट किया यद्यपि जप तप यज्ञ और तीर्थ आदि संसारी मनुष्यों के लिये सुगमकर्म हैं पर जो इस मन्त्र को अपने हृदय में धारण किये हैं उनको इन कर्मों से क्या प्रयोजन है जब तक मनुष्य इस मन्त्र को नहीं जपता तब तक वह सत्यमार्ग से भटकता फिरता है यह मन्त्र सब मन्त्रों का महाराजाधिराज और सर्व वेदान्त का शिरताज है कैवल्य मुक्ति के निमित्त यह मन्त्र दीपक के सदृश है इसके जप करने से शिवजी सर्वदा निकट ही रहते हैं और यही मन्त्र पापों के सागर के लिये बड़वानल और दोषों के समूह के लिये अग्नि के समान है और यह मन्त्र सबसे उत्तम है क्योंकि इस मन्त्र के स्वामी सबके मालिक हैं सब मनुष्य इसका जप कर सक्के हैं किसी को मनाही नहीं और जो दूसरे मन्त्रों में अवगुण हैं वह कभी इस मन्त्र में नहीं होसक्के और जो संस्कार दीक्षा आदिक हैं वह इस मन्त्र को किसी अवस्था में अयोग्य नहीं करसक्के जो कोई मनुष्य गुरुके उपदेश विना इस मन्त्र को जपे तो भी यह मन्त्र फलदायक होता है और प्रकट हो कि शिवजी

में दो अक्षर हैं वह दोनों सर्वपापों का नाश कर देते हैं और जब नमः अथवा नमस्कार के साथ यह कहे जावें तो मोक्ष में कोई शङ्का नहीं जो कोई सद्गुरु से इस मन्त्र को लेकर पवित्र स्थान अथवा नगरी में प्रेम से इसका जप करे तो जापक के सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हों इसमें कुछ भी आश्चर्य न जानो इससे उचित है कि यत्न और शुद्धि से इस मन्त्र को सद्गुरु से लेवे और पुण्यक्षेत्र में शुभ घड़ी पर अति पवित्र हो इसका जप करे सद्गुरु यहां पर ब्राह्मण के आशय से लिखा गया और अन्य सब वर्ण शिष्य कहलाते हैं वेद का यही वाक्य है पर गृहस्थ को उचित है कि अपने से नीच को अपना गुरु न करे इससे उसे बड़ा पाप होता है इसका मुख्य तात्पर्य यह है कि जो मनुष्य इस मन्त्र को गुरु से लेकर जप करे तो तुरन्त ही उसके सर्वपाप नष्ट हों इस पर हम एक इतिहास कहते हैं जो अति पवित्र और पापमोचन है और इससे दुःख भी दूर हो जाते हैं और नित्य अधिक २ आनन्द मिलता है और पञ्चाक्षरी मन्त्र की महिमा समझी जाती है और जापक को कोई मनुष्य दुःख नहीं दे सक्ता और उसके ऊपर शिवजी दयालु होकर प्रसन्न रहते हैं कि यदुवंशियों के कुल में एक राजा दाशार्ह नामक बड़ा विद्वान् और सर्वशास्त्रों में दक्ष उपजा और वह बड़ा वीर, संतोषी, युद्ध में चतुर, स्वभाव का दृढ़, धर्म में तत्पर, शत्रुओं को जीतनेवाला, तरुण, अतिसुन्दर और शीलवान् था उसने काशी के राजा की लड़की के साथ अपना विवाह किया उसका नाम कलावती था जो महासुन्दर और पतिव्रता थी सो राजा ने अपना अन्तःपुर नाना प्रकार से अलंकृत कर अपनी स्त्री से मैथुन करना चाहा पर वह कलावती उसके निकट न गई तब उसने दुःखी होकर विवश हो अभिलाषा की कि बलात्कारपूर्वक

उससे भोग करें इससे वह उठा कलावती ने ऐसा देखकर हाथ जोड़ विनतीकर राजा से कहा कि महाराज मुझे न छूना और न मेरे हाथ को पकड़ना क्योंकि आप धर्म और अधर्म को जानते हैं और जो कि धर्म वेद कहते हैं उनको सब मानते हैं आप जल्दी न करें क्योंकि जो जल्दी काम किया जाता है उसका परिणाम बुरा होता है मैं व्रत धारण किये हुई हूं जो आप मुझको लिपट जायँगे तो अच्छा न होगा सिवाय इसके दोनों ओर की प्रीति विना सुख प्राप्त नहीं होता पर दुःख ही मिलता है यदि कोई मनुष्य विना स्त्री की इच्छा उससे भोग करता है तो कुछ लाभ नहीं पाता वेद का वाक्य है कि नीचे लिखी हुई स्त्रियों से भोग करना उचित नहीं पहिली वह स्त्री जो पुरुष से प्रीति न करे दूसरी वह जो रोगिणी हो तीसरी जो गर्भवती हो चौथी जो किसी व्रत या नियम वा संयम में हो पांचवीं वह जो कामदेव से रहित हो छठी वह जो मासिक धर्म में हो यद्यपि कलावती ने राजा को बहुत सा उपदेश किया पर राजा को कुछ भी समझ में न आया संतोष से रहित हो काम में भर कर रानी का हाथ पकड़कर अपने हृदय से उसे लगा लिया और जो कुछ मन में आया सो किया हे नारदजी! संसार में ऐसा कौन जीव है जो कामदेव से रहित हो क्योंकि जब काम उदय होता है तब मनुष्य निर्बुद्धि हो जाता है सो राजा का हृदय जलने लगा और घबराकर समझा कि मैं अग्नि से भस्म हुआ जाता हूं ऐसी अपनी अवस्था देखकर राजा ने रानी को छोड़ दिया और दूर खड़ा हुआ यद्यपि उसको भोग करने की अधिक इच्छा थी पर रानी ने कहा कि मुझको आश्चर्य होता है कि तुम्हारा ऐसा कोमल शरीर है पर हमारे लिये यह अग्नि समान हो गया यह सुन कर रानी ने हँसते हुये हाथ

जोड़कर कहा कि इस बात में कुछ सन्देह और विचार न करो इसका यह कारण है कि एक बेर दुर्वासा मुनि हमारे पिता के यहां पधारे और बाल अवस्था में प्रसन्न होकर मुझे उपदेश दिया और शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र देकर शुभ घड़ी में यथा-रीति मन्त्रशास्त्र के यन्त्र भी दिये इससे मेरा शरीर पवित्र और पापों से रहित है इसलिये जो उस मन्त्र से रहित और पापी हैं वह हमारे शरीर को नहीं छू सके और तुमने अपने राज्य के मद में व्यभिचारिणियों और मद्यपान करनेवाली वेश्याओं से भोग किया है और तुम नित्य स्नान भी नहीं करते और न किसी दिन शिवबाना पहनकर उनके पञ्चाक्षरी मन्त्र का जप करते हो और न उनका कभी पूजन किया इन कारणों से तुम मुझे नहीं छू सके राजा ने आश्चर्य कर रानी से भोग करने की तृष्णासे युक्त हो कहा कि तुम मुझे वही मन्त्र बता दो कि जिसके श्रवण करने से मेरे सब दोष जाते रहें और तुमसे मुझे सुख प्राप्त हो क्योंकि तुमसे भेंट किये विना मुझे प्रसन्नता न होगी रानी ने कहा कि मुझे उचित नहीं है कि मैं तुमको मन्त्र बतादूं और आप अधर्मी होकर अपने शरीर पर पाप लूं पर तुमको चाहिये कि गर्ग मुनि जो आपके पुरोहित हैं उनसे मन्त्र लेने को उनकी शरण में जावो यह सुनकर राजा रानी को साथ ले गर्ग मुनि की सेवा के निमित्त गये और उनको दण्डवत् कर कहा कि हे महाराज ! मुझे कृतार्थ कीजिये अर्थात् शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र हमें दीजिये गर्ग मुनि दोनों को साथ लेकर यमुनाजी के तट पर गये और सब उचित कार्यों के पूर्ण कराने के पीछे राजा को बिठला कर शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र सुना दिया उस मन्त्र के सुनते ही राजा के सब पाप मुख से निकलने लगे मानो जले हुये कङ्कड़ निकलते थे राजा के सब पाप जलकर राख

होगये जिसके देखने से राजा और रानी आश्चर्यवान् हुये उन्हों ने गुरुजी से विनती की कि आप इस चरित्र का कारण बताइये कि क्यों हमारे मुख से अग्नि निकली यह सुनकर पुरोहितजी ने उत्तर दिया कि हज़ारवर्ष तुमको बड़े २ पाप करते व्यतीत हुये हैं और जब पाप पुण्य बराबर हुये तो तुम्हें मनुष्य का जन्म फिर मिला जब तुमने शिवजी का मन्त्र धारण किया तब तुम्हारे पापी हृदय से सब छोटे और बड़े पाप जलते हुये पत्थरों के सदृश तुम्हारे मुख से निकले अब तुम पापरहित हो फिर गर्गमुनि ने मन्त्र की महिमा बखानकर कहा कि करोड़ों जन्मों की ब्रह्महत्या आदि पाप तुरन्त ही इस मन्त्र के प्रभाव से नाश होजाते हैं यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है और यह मन्त्र शिवजी को अति प्रिय सब मनोरथों को सिद्ध करता और दोनों लोकों में पापों को हरता है श्रीसदाशिवजी इस मन्त्र के वश में हैं विष्णुजी और ब्रह्माजी इस मन्त्र की सेवा करते हैं इस पञ्चाक्षरी मन्त्र की बड़ी महिमा है इसको मूर्ख लोग नहीं जानसके वरन् इसकी महिमा ब्रह्मा और विष्णु भी नहीं समझते केवल अपनी बुद्धि से रात्रि दिन वर्णन करते हैं देवताओं और मुनीश्वरों को इतनी शक्ति नहीं कि इसको जानसकें केवल सुबुद्धि से उसका वर्णन करके अपने मनोरथ पूर्ण पाते हैं जितने वेद और तन्त्र शास्त्र के मन्त्र हैं और अन्य जो श्रीसदाशिवजी के सात करोड़ मन्त्र हैं उन सब मन्त्रों का यह पञ्चाक्षरी मन्त्र राजा है और शिवजी अक्षररूप हैं और यह मन्त्र मानो उनका मुख्य वचन है इसलिये इसके जप करने से शिवजी अवश्य मिलते हैं यह निस्संदेह है वेद इस मन्त्र को स्थूल प्रणव तथा दीर्घ ॐकार कहते हैं इसी से भक्तजन दोनों में भिन्नता नहीं समझते क्योंकि ॐकार और पञ्चाक्षरी में पांच

अक्षर हैं केवल स्वर और व्यञ्जन का भेद है और जब कि कोई मनुष्य काशीजी में मरता है तो श्रीसदाशिवजी यही पञ्चाक्षरी मन्त्र उस मृतक के कान में फूंक देते हैं जिससे वह मुक्त हो जाता है और कलियुग में भी इसी मन्त्र का जप करनेवाला श्रीसदाशिवजी का रूप होजाता है इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! पञ्चाक्षरी मन्त्र की महिमा बखानकर गर्गमुनि राजा और रानी सहित प्रेमसागर में डूब गये जब चैतन्य हुये तो फिर कहा कि हे राजन्! तुम पापों से रहित हुये तुमको अब उचित है कि अपनी रानी के साथ प्रसंग करो और अपनी राजधानी में रहो राजा गर्गमुनि की आज्ञा से अपने घर आया और जब रानी से मैथुन किया तो रानी का शरीर उसको चन्दन का सा ठंढा मालूम हुआ जो कोई इस कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसके सर्व मनोरथ पूर्ण होंगे और उसका बड़ा कल्याण होगा।

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम भस्म का माहात्म्य और महिमा वर्णन करते हैं भस्म दो प्रकार की है महाभस्म १ स्वल्पभस्म २ सो महाभस्म शिवजी का मुख्य रूप है और स्वल्पभस्म की अनेक शाखा हैं श्रौत १ स्मार्त २ लौकिक ३ जो वेद की रीति से धारण की जाती है उसे श्रौत कहते हैं और स्मृति अथवा पुराण की रीति से जो भस्म लगाई जाती है उसे स्मार्त कहते हैं और जो संसारी अग्नि से उत्पन्न हुई है उसे लौकिक कहते हैं पहिले और दूसरे प्रकार की भस्म केवल ब्राह्मण धारण करें और तीसरी को सब वर्ण तनुपर अलंकृत करें ब्राह्मण वेद के मन्त्र से भस्म लगावें पर अन्य मनुष्य केवल नाम से भस्म धारण करें ब्राह्मणों को

यज्ञ की भस्म अवश्य लगानी चाहिये और औरों को जली हुई सामग्री की जिसमें गोमूत्र पड़ा हो भस्म बनाकर धारण करना उचित है वह सब पानी मिलाकर भस्म लगावें और भस्म त्रिपुण्ड्र के अनुसार धारण करें हम विष्णुजी और इन्द्र सब देवता सर्वदा भस्म धारण करते हैं और पार्वती लक्ष्मीजी और उपदेवता आदि भी भस्म लगाते हैं और योगी सिद्ध और नागादि भी भस्म से ख़ाली नहीं रहते जो मनुष्य भस्म नहीं धारण करते वह मुक्ति को नहीं प्राप्त होते वेद का वाक्य है कि विना भस्म धारण किये सब आचार और पूजन निष्फल है चाहे सौ करोड़ कल्प वीत जायँ पर जो मनुष्य विना भस्म और त्रिपुण्ड्र के रहते हैं वह नित्य पाप ही किया करते हैं और दोनों लोक में दुःख पाते हैं भस्म पापियों को प्रिय नहीं होती और वे नरकगामी होते हैं जो मनुष्य भस्म को अतिप्रेम और परिश्रम से धारण करते हैं उन पर कुछ भी दुःख नहीं पड़ता उनके पाप जलकर भस्म हो जाते हैं यह अयोग्य है कि विना भस्म लगाये वेद के मन्त्र का जप करे क्योंकि न शिवजी उसपर कृपालु होते हैं न कोई कार्य बनता है भस्म का माहात्म्य अनन्त और अनादि है उसको कोई वर्णन नहीं कर सक्ता सब अपनी २ बुद्धि से बखान करते हैं सब प्रकार के मनुष्य भस्म धारण कर सक्ते हैं कुछ कुल और वर्ण का विचार नहीं और उत्तम, अधम, मूर्ख, नीच, बुद्धिमान् निर्बुद्धि जो भस्म धारण किये हैं वह तीर्थों के समान हैं जहां मनुष्य भस्म धारण करनेवाले रहते हों वहां यज्ञ और अन्य शुभ कर्म बहुत होते हैं ऐसे पुरुष जप तप और व्रतों का शुभ फल प्राप्त करते हैं इन लोगों की सेवा करनी चाहिये यद्यपि कोई मनुष्य बड़ापापी भी हो और वर्ण आश्रम और आचार से रहित हो जो वह भी भस्म लगावे तो अति

शुभ और पवित्र है वह मानो सर्वविद्यानिधान है उसने सब सुकर्म कर लिये जो मनुष्य ऐसे भस्मधारी की निन्दा करता अथवा उसको धमकाता है अथवा उसको मारता है वह अपने जन्म का नाश करता है उसको चाण्डाल जानकर उससे ग्लानि करनी चाहिये क्योंकि शिवजी की आज्ञा है कि सब भस्म धारण करें और जितनी भस्म की कणिका किसी के शरीर में होंगी वह शिवलिङ्ग हैं और पुरुष, स्त्री, बालक, तरुण और वृद्ध सब भस्म धारण कर सक्के हैं किसी को मनाही नहीं और कुछ अधिक पवित्रता की भी आवश्यकता नहीं और कुंकुम आदि के तिलक के ऊपर भस्म लगानी चाहिये और जो नित्य शिवरानी और गिरिजापति का ध्यान करके प्रीति से भस्म और त्रिपुण्ड्र लगाते हैं उनके जीवहत्या ऐसे बड़े २ पाप नष्ट हो जाते हैं जो मनुष्य त्रिपुण्ड्र अथवा भस्म की निन्दा करता है वह शिवजी ही का वैरी है चाहिये कि जब तक भस्म को धारण न कर ले तब तक पानी न पीवे और न भोजन करे क्योंकि भस्म को त्याग करनेवाला नरक में पड़ता है जहां उसे रुधिर आदि पीने का कष्ट मिलता है उस ललाट को धिक्कार है जिस पर भस्म न लगी हो उस गांव को भी धिक्कार है जहां कोई शिवमन्दिर न हो उस जन्म को धिक्कार है जिसको पाकर शिवपूजन न करे उस विद्या पर धिक्कार है जिससे किसी को लाभ न मिले विना भस्म के तन्त्रशास्त्र और पञ्चाक्षरी मन्त्र के उपदेश का कोई अधिकारी नहीं केवल वेद के अधिकारियों को शक्ति है कि चाहें जिस प्रकार भस्म लगावें पर और मनुष्य इसके अधिकारी नहीं सब मनुष्य भस्म और त्रिपुण्ड्र के उपासक हैं जो मनुष्य वेद की रीतियों की शिक्षा दे अथवा यज्ञ कराये उसे उचित है कि नित्य भस्म और त्रिपुण्ड्र धारण करे

विष्णु आदि देवताओं के पूजनेवालों को उचित है कि भस्म और त्रिपुण्ड्र लगावें जो मनुष्य वेद की रीति पर चलनेवाला दशों प्रकार के त्रिपुण्ड्र को लगावे वह वेद के विरुद्ध है इसको वेद और पुराण स्पष्ट वर्णन कर सक्ते हैं कि जो भस्म धारण किये हैं वह सबसे उत्तम हैं कदाचित् वह मनुष्य चाण्डाल भी हो पर शुद्ध हो जाता है जो मनुष्य नित्य भस्म लगाता है वह अति पवित्र है और गङ्गाजी आदि तीर्थ सब उसके शरीर में रात्रिदिन स्थित रहते हैं और सर्व तीर्थ और क्षेत्र भी उसमें रहते हैं और पञ्चाक्षरी आदि सब उत्तमोत्तम मन्त्र उसके शरीर में वर्त्तमान रहते हैं उसके दोनों ओर के असंख्य कुल तर जाते हैं और वह भी संसारी सुखों को पाकर मुक्ति प्राप्त करता है और क्रम से पहिले सब लोकों में घूमकर हमारे लोक में जाता है और हमारे सहस्र वर्ष पर्यन्त हमारे लोक में रहकर अति सुन्दर स्त्रियों के साथ विहार करके फिर वह विष्णुलोक में जाता है और फिर विष्णुजी के सहस्र वर्ष पर्यन्त वहां रहकर शिवलोक में विराजमान होता है जहां जरा मृत्यु और किसी प्रकार का खेद नहीं है वह जब तक चाहता है तब तक वहां रहता है और अन्य गणों के समान उसे शिवगण का पद मिलता है और श्रीसदाशिवजी के समान हो जाता है यह हम सत्य २ वर्णन करते हैं और वेदों को साक्षी देते हैं और जो कुछ उपनिषद् कहते हैं उनका सार भी यही है कि जो हमने कहा और सब देवता और सृष्टि भर के समस्त जीवधारी और मुनि सिद्ध आदि यही वर्णन करते हैं और श्राद्ध, हवन, जप, तप, यज्ञ और देवताओं के पूजने में भी भस्म या त्रिपुण्ड्र धारण करना आवश्यक है और जो मनुष्य भस्म की निन्दा करते हैं वह करोड़ों पापों में फँसकर बहुत समय

पर्यन्त नरकगामी रहते हैं यद्यपि स्नान पवित्र है पर सब स्नानों से भस्मस्नान अति पवित्र कहा गया है यह मनुष्य सब तीर्थ, यज्ञ, जप, तप, व्रत आदि के फल को केवल भस्म धारण करने से पाता है और गङ्गा आदि जो देवताओं की नदी हैं वह भस्म से उत्तम नहीं भस्म तीनों लोकों को पवित्र करनेवाली है परम शिवजी भस्म के स्वरूप हैं जो मनुष्य विना भस्म धारण किये कोई अच्छा काम करता है वह मूर्ख और निर्बुद्धि है क्योंकि उसको वैसा फल नहीं मिलता और इसके आगे जप, तप, यज्ञ, व्रत, तीर्थ और ध्यान सब निष्फल हैं जिसने भस्म न धारण की वह व्यर्थ ही इस संसार में उत्पन्न हुआ जो विधि से भस्म और त्रिपुण्ड्र धारण करे तो अधिक फल होता है और स्त्री जो मासिक धर्म में हो और वह पुरुष जिसने गुरु के मुख से मन्त्र न लिया हो और वनचारी पुरुष मध्याह्न तक पानी मिलाकर भस्म लगावें पर दोपहर के पीछे विना जल के भस्म लगानी चाहिये और संन्यासी को सर्वदा विना जल के भस्म धारण करनी उचित है और वह तारस्वरूप शिवजी का ध्यान करे वह तारस्वरूप दो प्रकार का है एक सूक्ष्म, दूसरा स्थूल जिसका तात्पर्य एक अक्षर और पांच अक्षर से है, भस्म जो तीन प्रकार की है उसको किसी ने तीन प्रकार पर भी वर्णन किया अर्थात् वेद १, शिवानल २, भव ३ उसमें अघोरमन्त्र मुख्य है उचित है कि अघोरमन्त्र से लकड़ी को शुद्ध करके जलावे और बेल, पलाश, शमी, बड़ और पीपल की लकड़ी भस्म के निमित्त उत्तम है और जो पवित्र सामग्री से बनाई गई अर्थात् दारु, लोहा, मिट्टी, कांसा, चांदी आदि के बर्तनों से बनाई गई हो और वह अन्न जो होम में बर्ता जाता है वह भी पवित्र है, अब हम भस्म धारण करने की विधि

बताते हैं त्रिपुण्ड्र शब्द से तीन रेखा मानी जाती हैं जिनमें एक देवता विराजमान हैं और भृकुटी से दोनों भवों के अन्त तक त्रिपुण्ड्र लगाना चाहिये इससे अधिक नहीं पहिली रेखा मध्यमा से खींचे तीसरी अनामिका से बीच में अंगुष्ठ से भस्म लगाना उचित है कि सत्ताईस स्थानों पर रेखा लगावे जिनमें एक २ देवता विराजमान रहते हैं और प्रणवाक्षर १, शुचि २, आत्म ३, लोक ४, श्रुतिगण ५, शुक्ति ६, सवन ७, दिवौक ८ यह तीन प्रकार के सब देवता हैं जिनको हर एक रेखा के निमित्त हम भिन्न २ वर्णन करते हैं उचित है कि हर एक रेखा जिससे वह सम्बन्धित हैं दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे उससे मुक्ति मिलती है अब हम सत्ताईस रेखाओं का विस्तार सहित वर्णन करते हैं और उनके देवता बताते हैं उनमें ३२, १६, ८ और ५ भेद हैं और वे सब स्थान भिन्न भिन्न हैं जैसा कि वेद कहते हैं अर्थात् शिर, ललाट, कर्ण, नेत्र, नासिका, मुख, कण्ठ, भुजा, उदर, हाथ, छाती, पांजर, नाभि, मुष्क, त्रिवली और दोनों जांघों का मध्य भाग और चरण यह सब ३२ हैं, सो अष्टवसु, सप्तदिग्धेश, आठों दिक्पति और आठों इन्द्र का नाम लेकर ऊपर लिखे हुये स्थानों में त्रिपुण्ड्र लगावें और शिर, ललाट, कण्ठ, अंस, भुजा, उदर, हाथ, स्तन, नाभि, पांजर, पीठ यह १६ स्थान हैं, जिनके यह देवता हैं, शिव, शिवभक्त, नाद, ईशान, वेदसूक्त और नवइन्द्र (अर्थात् नव इन्द्र) इनका नाम लेकर ऊपर लिखे हुये स्थानों में त्रिपुण्ड्र धारण करे, सिवाय इनके ब्रह्मरन्ध्र, शिर, भुजा, ललाट, कण्ठ, स्तन, नाभि, त्रिवली, हाथ, पीठ, उदर यह सब १६ स्थान हैं इनमें परम शिव, शिव, दिश, ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, गुरु, रुद्र, सूर्य, द्विजेश, वाम, मरुत्, वसु, हर और हर-

देव को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे और शिर, ललाट, दोनों कान, दोनों कन्धे, हृदय, नाभि यह आठ स्थान हैं इनमें ब्रह्मा और सप्तर्षियों को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र धारण करे और शिर, भुजा, नाभि और हृदय यह पांच स्थान हैं इनमें पांचों देवताओं को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे ।

सातवां अध्याय ।

नारदजी ने प्रश्न किया कि हे महाराज ! आपने भस्म धारण करने की विधि बताई पर कृपा करके कोई ऐसा इतिहास कहिये जिससे किसी पापी ने भस्म के प्रभाव से मुक्ति प्राप्त की हो इतना कह सूतजी बोले कि हे शौनको ! ब्रह्माजी अपने पुत्र की ऐसी प्रीति देखकर बोले कि वामदेव नाम शिवजी के एक योगी हैं निर्भय होकर सदा एकान्त में रहते हैं सबको एक-दृष्टि से देखते हैं उनका कोई स्थान नहीं और वह क्रोध, काम, मोह और लोभ से रहित हैं किसी से कोई वस्तु नहीं लेते और मौन साधे रहते हैं और केवल भस्म धारकर संसार में फिरकर शिवजी को स्मरण किया करते हैं और वह सब पर प्रसन्न और दुःख और सुख से रहित परमहंस अद्भुत निष्क्रोधी हैं एक दिन वह क्रौञ्चारण्य में गये उसमें भूतादिकों के सिवाय कोई न रहता था उस वन में एक ब्रह्मराक्षस अतिनिर्दयी भयानक रहता था और पापों के कारण बहुत भूखा प्यासा रहता था कोई मनुष्य भय के कारण वहां न जाता था जब उसने मुनि को देखा तो उनके खाने को चला पर वामदेव निर्भय होकर खड़े होगये ब्रह्मराक्षस उनके शरीर में लिपट गया और इच्छा की कि दोनों भुजाओं से दबाकर एक ग्रास करूं पर उनके छूने से उसके सर्वपाप निवृत्त होगये जिस प्रकार कि चिन्तामणि के मलने से लोहा स्वर्ण होजाता है अथवा जिस प्रकार काक हंस

की संगति से मानसरोवर पाता है अथवा मनुष्यादिक देव-ताओं की कृपा से अमृत प्राप्त करते हैं उसी प्रकार वह सत्संग पाकर शुद्ध हुआ हे नारद! सदाशिवजी की महिमा देखो जो कि राक्षस भूख प्यास से विकल होकर वामदेव को वध करने को था वही उनके छूने से आनन्दपूर्वक कृतार्थ होगया क्योंकि जो भस्म वामदेव के शरीर में लगी थी वह राक्षस के भी लग गई और वह हाथ जोड़कर उनके चरणों पर गिरा और प्रार्थना की कि हे महाराज! कृपा करके मुझे तार दीजिये आपने हम पर बड़ी दया की जो आपके छूने से मुझे सुख मिला यह प्रकट है उसका वर्णन नहीं होसक्ता मैं दुःख के समुद्र में डूबा हुआ हूं आप हमारी रक्षा करके उबारिये मुझको छूने ही से सुख प्राप्त हुआ है मेरे सब पाप और ताप नाश होगये वामदेव ने कहा कि हे राक्षस! तुम ऐसे कुरूप और भया-नक कौन हो क्योंकि तुमको यहां खाना पीना कुछ नहीं मिलता तुम किस कारण ब्रह्मराक्षस हुये हमसे सब वृत्तान्त कहो ब्रह्म-राक्षस ने दण्डवत् करके हाथ जोड़कर कहा कि हे महाराज! इस जन्म से पच्चीसवां जन्म मेरा राजा का था मेरा नाम दुर्जन था मैं यवन देश में राज्य करता था मेरे स्वभाव में निर्बुद्धिता पाप अहंकार और क्रोध बहुत था सारी प्रजा मुझको शत्रु सम-झती थी मेरे सर्वकार्य निष्फल होते थे और मैं प्रजा को लूटता था इससे नगरी उजड़ गई मैंने वेद आदि का वाक्य असत्य मानकर गर्भवती स्त्रियों से प्रसंग किया यद्यपि मैंने भोग करने के योग्य स्त्रियों को बन्दीगृह में रक्खा पर मैंने उनके साथ भोग न किया और न उनको अवसर ही दिया कि वे अन्य पुरुष से भोग करें और मैंने सब वर्णों की स्त्रियों के साथ भोग किया अर्थात् मैंने पतिव्रता स्त्रियों और जो मासिक धर्म में थीं और

जिनका विवाह नहीं हुआ था और तरुण और जिनकी आयु कम थी सबके साथ भोग किया और तीनसौ ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ प्रसंग किया और चारसौ क्षत्रियों की स्त्रियों को मैंने रक्खा और छःसौ वैश्यवर्ण की स्त्रियों और एक हजार शूद्र की स्त्रियों से कुकर्म किया और सौ चाण्डालों की स्त्रियां हजार पुलिन्दों की स्त्रियां पाँच सौ शैलूषी चार सौ रजकों की स्त्रियां और अनन्त वेश्याओं के संग प्रसंग किया रात्रि दिन सिवाय व्यभिचार के और कोई कर्म न करता था पर तो भी सुखी न रहता नित्य नवीन स्त्री से भोग करता इससे तरुण अवस्था ही में अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित हो गया और नाना प्रकार के दुःख भोगे और अपनी स्त्री से कभी मैथुन न किया और फिर मुझे शत्रुओं ने चारों ओर से धावा करके जीतकर दुःखी कर दिया और बुद्धिमान् मन्त्रियों ने भी ग्लानि करके मुझे त्याग दिया अन्त में मैं मर गया यमगण मुझे पकड़कर यमराज के सम्मुख ले गये और रुधिर के कूप में मुझे डाल दिया सो मैंने तीन सौ वर्ष पर्यन्त उसमें रहकर बहुत कठिन दुःख उठाये फिर मेरा पिशाच का जन्म हुआ और एक वन में जहां एक भी मनुष्य न था मुझे स्थित किया सो वहां भूख और प्यास से तलफता सौ वर्ष तक रहा फिर दूसरे जन्म में सिंह, तीसरे में अजगर, चौथे में बिच्छू, पांचवें में सुअर, छठे में गर्ग, सातवें में श्वान, आठवें में फेरू, नवें में बैल, दशवें में हरिण, ग्यारहवें में बन्दर, बारहवें में भैंसा, तेरहवें में न्यवला, चौदहवें में काक, पन्द्रहवें में खच्चर इसी प्रकार और अन्य जन्मों में गधा, बिल्ली, बकरी, मछली, चूहा, मेढक, घुग्घू, हाथी होता रहा अब यह पचीसवां जन्म मेरा ब्रह्मराक्षस का है जो आप देख रहे हैं मुझको इस जन्म में यह बड़ा क्लेश है कि कुछ खाने को नहीं मिलता और

अब अपने पापों का स्मरण करके रोता हूं पर यह मुझे मालूम नहीं होता कि किस शुभ कर्म से आज आपके दर्शन पाये वह कौन जप तप या योग तीर्थ मैंने किया जिससे ऐसे पद को प्राप्त हुआ आप कहिये कि आप क्योंकर यहां आये और हम ऐसे पापी को दर्शन दिया मुझको आप कृतार्थ कीजिये क्योंकि मैं जानता हूँ कि अब हमारे अच्छे दिन आये हैं यह कहा और वामदेव के सम्मुख हाथ जोड़ खड़ा रहा।

आठवां अध्याय।

नारदजीका प्रश्न सुनकर ब्रह्माजी बोले कि राक्षस के वर्णन के पीछे वामदेव ने कहा कि यह सब भस्म का प्रभाव है अर्थात् जो हमारे शरीर में भस्म लगी है वह तुमनेभी धारण करली उसके प्रभाव से तुम्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और प्रथम जन्मों के पाप सब निवृत्त हो गये भस्म की महिमा केवल श्रीसदाशिव जानते हैं और कोई नहीं बूझ सक्ता जैसे कि शिवजी के चरित्र वर्णन नहीं हो सक्ते इसी प्रकार भस्म की अनन्त महिमा है पहिले समय में एक ब्राह्मण द्राविड़ देश में उत्पन्न हुआ जो बड़ा अधर्मी पापी और चोरी और व्यभिचार में फँसा रहता और शूद्रों के समान होकर सर्वदा परस्त्रीगमन करता था और वेश्याओं से भी मैथुन करता था अकस्मात् वह ब्राह्मण एक शूद्र के घर कुकर्म के निमित्त गया शूद्र ने उसे कुकर्म करते पाकर मार डाला और अपने घर के बाहर फेंक दिया पर प्रातःकाल उसके शरीर में चारों ओर से भस्म उड़कर लग गई और शिर, भुजा, हृदय और मुख में उसके रेखायें बन गईं उस समय यमराज के गण आये और इच्छा की कि उसको यमराज की सभा में लावें पर शिवगणों ने आकर और झिड़ककर यमगणों से कहा कि यहां से चले जावो और उस पापी ब्राह्मण को

विमान पर चढ़ा लाये उस अवस्था में यमराज आप ही शिव-गणों के निकट आये और पापी ब्राह्मणके छुड़ाने का कारण पूछा और कहा कि हमको बड़ा आश्चर्य और संदेह है कि ऐसा मनुष्य जो चोरी और व्यभिचार ऐसे २ कुकर्म करे और अन्त में एक शूद्र के हाथ से मारा जाय वह शिवपुरी को सीधा चला जाय यह सुनकर शिवगणों ने कहा कि हे यमराज ! यह अब पापरहित है इसके सब दोष भस्म होगये क्योंकि इसके शिर, हृदय, भुजा और मुख में भस्म विराजमान है इससे हम श्री-सदाशिवजी की आज्ञानुसार इसको शिवपुरी लिये जाते हैं यह कहा और विमान पर चढ़ाकर शिवपुरी में ले गये वामदेव ने कहा कि हे ब्रह्मराक्षस ! भस्म शिवजी का वस्त्र और आभूषण है इसके लगाने से पापी को भी मुक्ति मिलती है इसका धारण करनेवाला श्रीसदाशिवजी को अति प्रिय है भस्म सर्व पापों को नष्ट करती है शिवजी को प्रसन्न रखती है सब देवता मुनीश्वर आदि सर्वदा भस्म धारण किये रहते हैं और ब्रह्मा विष्णु नित्य भस्म लगाकर सर्व कर्म पर मनोरथ पूर्ण करते हैं इतनी कथा कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह भस्म का माहात्म्य सुनकर ब्रह्मराक्षस के सब पाप नष्ट हुये उसने वाम-देव के चरण पकड़ कर हाथ जोड़ प्रणाम कर प्रार्थना की कि हे महाराज ! आप धन्य हैं और मेरे भी धन्य भाग्य हैं कि आपकी संगति मिली अब मुझको इस जन्म से कृपा करके मुक्ति दिलाइये और एक बात मुझे स्मरण हुई है उसे सुनो वह यह है कि जिस जन्म में मैं राजा था तब मैंने थोड़ी सी धरती एक ब्राह्मण को दान दी थी जब मैं यमलोक में गया तो यमराज ने मुझसे पूछा कि यद्यपि तुमने बड़े २ पाप किये हैं पर एक पुण्य भी कियाहै कि तुमने थोड़ी सी धरती एक ब्राह्मण

को दान दी थी उसी कारण तुमको पच्चीसवें जन्म में एक योगीश्वर मिलेंगे जिनकी दया से तुम्हारे पाप नाश हो जायँगे और मुक्ति पावोगे मुझको भासता है कि यह वही अवस्था है जो यमराज ने कही थी मैं बहुत जन्म तक नाना प्रकार के दुःख उठा चुका हूं क्योंकि मैं बड़ा पापी था अब मुझको अपना सेवक समझकर भस्म मन्त्र सहित दीजिये क्योंकि तुम भस्म धारण किये हुये शिवजी का रूप हो और तुम संसार के मनोरथ पूर्ण करने के लिये फिरा करते हो जो मनुष्य सब लोगों का उपकार करते हैं वह निष्पापी कल्पवृक्ष के समान हैं यह कहकर ब्रह्मराक्षस चुप होकर वामदेव के सम्मुख खड़ा होगया ऐसी ब्रह्मराक्षस की बिनती सुनकर वामदेव प्रसन्न हुये और शिवजी और शिवरानीजी को स्मरण करके अपनी झोरी से भस्म निकाल त्रिपुण्ड्र धारा और अन्य अङ्गोंमें भी भस्म लगाई भस्म के धारण करते ही ब्रह्मराक्षस पवित्र होगया और उसका पहिले जन्म के समान शरीर बदलकर वह बड़ा तेजस्स्वरूप हुआ उस समय तुरन्त ही आकाश से विमान आया और वह उस पर चढ़कर शिवपुरी गया और शिवगणों में मिल गया हे नारद ! भस्म की ऐसी ही महिमा है हमने अपनी बुद्धि के अनुसार कह सुनाया जो मनुष्य इस भस्ममाहात्म्य को सुनेगा या पढ़ेगा वह दोनों लोक में सुख प्राप्त कर मुक्ति पावेगा।

नवां अध्याय।

नारदजी ने कहा कि हे महाराज ! आपने मुझे बहुत अच्छी कथा सुनाई और मैं भस्मकी महिमा सुनकर अति प्रसन्न हुआ पर मैं आपसे एक वार्ता पूछता हूं कि जो मनुष्य वेद के जानने वाले और परमज्ञानी हैं उन्हीं के गुरु करने से और उन्हीं के उपदेश से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं और श्रीसदाशिवजी प्रसन्न

होते हैं या सब लोगों का उपदेश लेकर सिद्धि प्राप्त हो सकी है मनुष्य को किस प्रकार का गुरु करना उचित है सूतजी बोले हे मुनियो! ब्रह्माजी ने नारद का प्रश्न सुनकर उनकी अति प्रशंसा कर अति प्रेम से उत्तर दिया कि श्रद्धा ही सब मनुष्यों के मनोरथ पूर्ण करती है और श्रद्धा से पूजन का फल मिलता है श्रद्धा सब पापों को नाश करती है श्रद्धा ही से धर्म मिलता है श्रद्धा ही से शिवा दोनों लोक में अतिफल देती है श्रद्धा ही से नीचों पर देवता प्रसन्न रहते हैं बिना श्रद्धा के सर्व कार्य निष्फल होते हैं बिना श्रद्धा के जप, तप, मन्त्र, तन्त्र, पूजन, शिक्षा सब अकारथ हो जाते हैं सब मन्त्र देवता गुरु भाव से फल देते हैं संसार में भाव उत्तम है भाव से सुख, दुःख पुण्य, पाप प्राप्त होते हैं बिना भाव के धर्म और दोष नष्ट होते हैं इस वचन को श्रीसदाशिवजी ने अपने मुख से कहा है इससे यद्यपि इस विषय में असंख्य कथा हैं पर हम उनमें से एक इतिहास कहते हैं कि प्राचीन समय में एक राजा जिसका नाम सिंहकेतु था वह पाञ्चाल देश में राज्य करता और वह सर्व-विद्यानिधान और शिवजी का बड़ा भक्त था एक दिन वह अच्छे २ वीरों को सङ्ग लिये शिकार खेलने गया उसके सङ्ग एक शङ्कर नामी मनुष्य जो जाति का शबर था गया उसने इधर उधर फिरते टूटी फूटी शिला शिवालयों में देखीं जो अर्घे से बाहर पड़ी थीं सो इसने तुरन्त ही एक शिवलिङ्ग को बड़े प्रेम से उठा लिया और राजा के निकट दौड़कर उसे दिखाया और कहा कि हे राजन्! इस शिवलिङ्ग को देखिये मैं इसे पूजूँगा आप मुझे पूजा की विधि बता दीजिये यद्यपि मैं नीच हूं पर मैंने सुना है कि नीच लोगों को भी प्रेम से श्रीसदाशिवजी का ध्यान करना चाहिये शिवजी जाति को न विचारकर उनको भी वरदान

देते हैं राजा ने निषाद से कहा कि हम तुम्हें ऐसी रीति बताते हैं जिससे शिवजी तुरन्त ही प्रसन्न हो जावें कि पूजनेवाला मनुष्य पहिले स्नान करे फिर पवित्र वस्त्र पहिन अच्छे स्थान पर बैठे फिर भस्म धारण करके शिवजी को स्नान करावे और चन्दन, अक्षत, अर्घ्य, पुष्प, बेलपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य से शिवजी का पूजन करे फिर शिवजीके आगे नाचे गावे तदनन्तर शिवजी को प्रणाम और स्तुति करके अपने गाल बजावे और विधिसंयुक्त प्रदक्षिणा करे यह शिवपूजन सुगम और सरल रीति से वर्णन किया तुम भली भांति विचारो कि चिता की भस्म शिवजी को अति प्रिय है उसको शरीर में धारण करने से सुख प्राप्त होता है इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारदजी! यद्यपि राजा ने हँसी से यह कहा पर शबर बहुत प्रसन्न हुआ और राजा के वाक्य को उसने श्रद्धा से सुना उसी समय वह अपने गृह आया और शिवलिङ्ग की पूजा करने लगा वह नित्य प्रथम अपने शरीर में भस्म धारण करता और दिन २ शिवजी के चरणारविन्दों में प्रीति बढ़ाकर ध्यान धरता था जो वस्तु उसे अच्छी लगती थी उसे शिवजी को प्रथम भोग लगाकर फिर आप खाता था इसी प्रकार वह अपनी स्त्री सहित शिवजी की पूजा करके भजन गाता था इस प्रकार उसे बहुत समय बीता तो शिवजी प्रसन्न हुये और चाहा कि उसकी परीक्षा लें तो जब शबर पूजन करने लगा तो चिताभस्म को जहां पर रखता था वहां पर न देखी क्योंकि शिवजी ने चिता भस्म उसकी दृष्टि से दूर कर दी यद्यपि वहां चिताभस्म बहुत रक्खी हुई थी पर उसको दिखाई न दी उसने उठकर चारों ओर ढूंढ़ा पर न पाने से आश्चर्य कर विकल हो अपनी स्त्री से कहा कि मैंने भस्म को बहुत ही ढूंढ़ा पर वह नहीं मिलती इस

समय मुझे बहुत ही खेद है जो कि हमारी पूजा में विघ्न पहुँचा है इससे हमारा जीना वृथा है यह कह वह बहुत रोया यह दशा उसकी स्त्री ने देखकर बहुत दुःखी होकर कहा कि हे प्राणप्यारे! तुम क्यों इतना घबड़ाते हो मैं इसी समय सती होती हूं जो चिताभस्म मेरे जल जाने से मिले उससे तुम अपना काम करो शबरने उत्तर दिया कि चारों पदार्थों के प्राप्त करने के लिये तो तुम्हारा शरीर है और हमारे विहार के निमित्त है इसका तुम त्याग मत करो क्योंकि अभी तुम्हारे कोई पुत्र भी नहीं उपजा और संसार का आनन्द भी तुमने नहीं उठाया फिर तुम क्यों इस पवित्र शरीर के जलाने को उद्यत होती हो स्त्री ने कहा कि मैंने सत्पुरुषों से सुना है कि जो दूसरे के उपकार के लिये अपना शरीर छोड़े तो उसका जन्म सफल हो जाता है मुख्य करके जब शिव के काम में शरीर का त्याग हो तो इससे उत्तम संसार में और क्या है ऐसे मनुष्य की भाग्य संसार में सर्वोपरि है मेरे हजारों जन्म के शुभ कार्य उदय हुये हैं जो मैंने शिवजी के लिये यह उद्योग ठहराया है यह सुन शबर ने मान लिया सो स्त्री ने अति शुद्ध हो स्नानकर चिता बनाई और उस में अग्नि लगाय शिव को बार २ प्रणाम करती हुई अग्नि में प्रवेश करगई सो तुरन्तही भस्म होगई उसी भस्म को शबर ने अपने शरीर में मलकर शिवजी की पूजा की और शिवपूजने के उपरान्त प्रतिदिन के नियम के अनुसार शबर ने हाथ में प्रसाद लेकर पीठ की ओर को हाथ बढ़ाया कि उसकी स्त्री प्रसाद लेले क्योंकि वह प्रतिदिन पूजा करके अपनी स्त्री को प्रसाद दिया करता था देखा कि उसकी स्त्री तो जल गई थी नये शिरसे सजीव होकर हाथ जोड़ उसके सामने से पहिले के समान वस्त्रों से भूषित हो शिव २ मुख से कहती हुई चली

आती है शबर ने पूछा कि यह क्या आश्चर्यदायक चरित्र है तू जलकर क्योंकर जी गई शबरी ने कहा कि तुम्हारे देखते हुये जब मैं अग्नि में प्रवेश कर गई तो मुझे अग्नि में प्रवेश करने का कुछ भी दुःख न हुआ मानों मैं अमृत के कुण्ड में चली जाती थी और जिस तरह कोई मनुष्य निद्रा से जागकर उठ बैठे उसी तरह मैंने उठकर घर को देखा और तुम्हारे पास प्रसाद लेने को पूर्व के समान आई हूं इतना कह ब्रह्मा बोले हे नारद! यह दोनों यही बातें कर रहे थे कि उस स्थान पर विमान उतरा शिवजी ने प्रसन्न होकर चार गणों सहित विमान भेजा था उन्होंने हाथ पकड़कर शबर और शबरी को उसके भीतर बैठा लिया और दोनों शिवलोक में पहुँचकर शिव-स्वरूप होगये और सदा प्रसन्न रहे हे नारदजी! भस्म धारण करना बड़ी बात है भस्म लगाने से शिवजी इतने प्रसन्न होते हैं उसमें चिताभस्म की बड़ी महिमा है उसके समान कोई वस्तु श्रेष्ठ नहीं जिसके कारण शबर और शबरी ने जो नीच थे परमपद पाया जो मनुष्य पवित्र होकर भस्म और रुद्राक्ष धारण करके शिवजी का गुण वर्णन करे वह दोनों लोक में सुख पावे।

दशवां अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी! भस्म का माहात्म्य और वर्णन करो क्योंकि भस्म शिवजी को अति प्रिय है और शिवजी का वस्त्र और आभूषण इससे बढ़कर और कुछ नहीं है जो भस्म विना शैव होना चाहता है वह शैव नहीं है बरन वह शिवजी के विरुद्ध है उसके समान दूसरा संसारमें दुष्ट और नास्तिक नहीं ब्रह्मा बोले वास्तव में चारों पदार्थों की देने-वाली भस्म है उसको शरीर में लगाने से सर्वशोक और दुःख दूर

होजाते हैं यह भस्म तन मन का बल बढ़ाकर मृत्यु के समय में भी मन को आनन्द रखती है इस पर हम एक पवित्र इतिहास कहते हैं मन लगाकर सुनो कि दशारराय देश का राजा वज्रबाहु हुआ जिसके असंख्य स्त्रियां थीं उनमें से भाग्यवश बड़ी रानी के गर्भ रहगया तो अन्य स्त्रियों ने ईर्षा से उसको विष पिला दिया यद्यपि उसने अपनी उन सौतों का छल न जाना पर बहुत कष्ट उठाने के अनन्तर वह अच्छी होगई विष ने अपना कुछ फल न किया और न उससे गर्भ में कुछ विघ्न हुआ निदान नियमित समय पर उसके उदर से एक पुत्र उपजा जिससे उसकी सौतों को और भी अधिक डाह उपजा और लड़के को भी उपजने के समय से अति विकलता रही जिससे वह बराबर रात दिन रोतारहा और रानी ने भी विषके प्रभावसे बड़े बड़े दुःख उठाये और राजा की आज्ञा से बड़े २ बुद्धिमान् वैद्यों ने बहुत से उपाय किये पर कुछ भी फल न हुआ पहिले तो रानी विष के प्रभाव से आप ही विकल थी दूसरे अपने पुत्र के रोने के कारण और भी अधिक दुःखी हुई रात और दिन भर उसको निद्रा न आई इससे वे दोनों क्षीण होगये इसी तरह थोड़े दिनों तक राजा ने दोनों को ऐसे दुःख में पाकर विचार किया कि यह दोनों माता और पुत्र पूर्व जन्म के अति पापी हैं जो दुःख भोग रहे हैं इनका किसी शुभ कर्म से हमारे यहां आगमन हुआ पर इनको सुख न मिलेगा इन्होंने मेरे आहार विहार में अपने रोने पीटने से विघ्न डाला है यह विचार कर राजा ने अपने भीलों को आज्ञा दी कि रानी को उसके पुत्र सहित रथ में चढ़ा कर वन में छोड़ आवो भील ने राजा की आज्ञानुकूल दोनों को अति निर्दयता से वन में ले जाकर छोड़ दिया और आप लौट आया सो रानी लड़का लिये भूखी प्यासी दुःखी हो कुछ आगे

को चली पर कुछ दूर जाकर थक गई फिर थोड़ी देर वन में उसने एक पगदण्डी पाकर उसी के सहारे से चली निदान उस ने बहुत दूर जाकर नगर देखा जिसमें बहुत स्त्री और पुरुष बसते थे वहां का राजा पद्माकर नामी वैश्यवर्ण था उसकी दासी रानी को देखकर उसके समीप आई और उस पर दया करके उससे वृत्तान्त पूछा और सब वृत्तान्त सुनने के अनन्तर अति प्रेम से उसे राजा पद्माकर के पास लेगई पद्माकर उसको रोगिणी और दुःखी जान अतिचिन्तित हुआ और जब रानी के मुख से उसने सर्व वृत्तान्त सुना तो उस पर अतिअनुग्रह कर उसे अपने मुख्य मन्दिर में ठहराया और उसको अपनी माता समान जान उसकी बड़ी सेवा करने लगा और उसको अच्छे २ भोजन और वस्त्रों से सदा प्रसन्न रखता फिर उसने सद्वैद्यों को रानी के रोग दूर होने के लिये नियत किया पर तो भी लड़के को कुछ आराम न हुआ और घावों के कारण जो विष के प्रभाव से उसके शरीर में हो गये थे महादुःखी हो और फिर कुछ दिन जीकर मर गया रानी इतना रोई पीटी कि कई बेर मूर्च्छित होगई यद्यपि स्त्रियों ने उसे बहुत समझाया पर उसे किसी का उपदेश न लगा और बराबर रोती रही निदान एक दिन भाग्य-वश ऋष्यनाम शिवजी के योगी उस स्थान पर आये और उन्होंने रानी के पास आकर उसको बहुत समझाया तो रानी ने रोकर हाथ जोड़ उनसे विनय की कि मेरा कोई पति भ्राता आदि नहीं है मैं पुत्रहीन रोग में ग्रसित निर्बल हूं पुत्र बिना मेरा जीना कठिन है मैं धन्य हूं कि मैंने मरने के समय आपका दर्शन पाया यह सुनकर ऋष्य ने मरे हुये लड़के के शिरहाने पर जाकर शिवजी के मन्त्र से भस्म फूंककर मरे हुये लड़के के मुख में डाल दी जिससे वह बालक तुरन्त जी उठा और उसकी

सब इन्द्रियां बलवान् होगईं और वह तुरन्त ही दूध के लिये रोने लगा सब तमाशा देखनेवाले आश्चर्य में हुये और सब लोगों को इतना आश्चर्य और आनन्द हुआ जो कहने से बाहर है और रानी भी अतिप्रसन्नता से लड़के को गोद में लेकर अतिसुखी हुई और तुरन्त उसने अपना शिर योगी के चरणों पर रख दिया ऋषभ ने अतिदया से लड़के के सर्व शरीर में भस्म लगाई जिससे उसके रोग और निर्बलता न रह गई और रानी फिर लड़के समेत योगी के पांव पड़ी योगी ने उसको धरती पर से उठाया और प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया और कहा कि हे रानी! तुम जरामरणरहित समय तक जीती रहो तुम्हारे पुत्र का नाम भद्रायुष् है यह अपने पिता की राज्य पा अपनी रानियों समेत बड़ा आनन्द पावेगा जब तक यह बालक विद्या न पढ़ चुके तब तक तुम इसी स्थान पर स्थित रहो ऋषभ ऐसा उपदेश देकर चले गये और रानी अपने पुत्र भद्रायुष् सहित वहीं स्थित रहीं भद्रायुष् ने सर्व विद्या पढ़ ली जब सोलह वर्ष का भद्रायुष् हुआ तो शिवयोगी ने शिवपूजा की विधि उसको बता दी और उसको सहस्राक्षरी मन्त्र बताया और मन्त्र से भद्रायुष् के सर्व शरीर में भस्म लगा दी जिससे भद्रायुष् को बारहसहस्र हाथी का बल होगया फिर एक खड्ग और एक शङ्ख भद्रायुष् को देकर बहुत से आशीर्वाद दिये और फिर आप विदा होगये जिससे भद्रायुष् के अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई और अपने पिता की राजधानी में पहुँचकर आप राजा हो विवाह करने के अनन्तर विहार करने लगा और राजा अर्थात् पद्माकर के भाई को अपना भाई समझ उसको बड़ा आनन्द देता रहा और भद्रायुष् ऐसा शिवभक्त हुआ कि उसको तीनों लोक ने बहुत अच्छा शिव-

भक्त समझा हे नारद ! भस्म का माहात्म्य और प्रभाव ऐसा है जिसकी महिमा सदाशिव ही जानते हैं और कोई क्या जाने भस्समाहात्म्य पूर्ण हुआ।

ग्यारहवां अध्याय।

रुद्राक्ष का माहात्म्य।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम रुद्राक्ष माहात्म्य वर्णन करते हैं जिसकी महिमा वर्णन करने में सर्व देवता और मुनियों की जिह्वा थकित है रुद्राक्ष शिवजी को अतिप्रिय और पवित्र है उसके दर्शन करने जपने और पूजने से सर्व पाप भस्म होजाते हैं यद्यपि सदाशिव स्वाधीन हैं और उन पर कोई स्वामी नहीं पर एक समय में सदाशिव ने संसार के उपकार के लिये दिव्य सहस्र वर्ष तप किया जब उन्होंने दोनों नेत्र खोले तब दो जल के बिन्दु उनके नेत्रोंसे पृथ्वी पर गिर पड़े वह दोनों आंसू पृथ्वी में गिरकर वृक्ष होगये और शिवजी की कृपा से वह सब भक्तों को प्राप्त हुये और धीरे २ हर देश में रुद्राक्ष वृक्ष उपजने लगा अर्थात् अयोध्या, मथुरा, काशी, गौड़देश और सह्यगिरि में बहुत ही रुद्राक्ष पैदा होने लगा जो सर्वपापों के नष्ट करनेवाले हैं और उनके केवल दर्शन से अप्रमेय सुख प्राप्त होता है इसी प्रकार रुद्राक्ष चार रङ्ग के उपजे श्वेत, रक्त, पीत और श्याम सो वह चारों वर्णों के लिये शुभ और पवित्र हैं जिनको चारों वर्ण क्रमपूर्वक धारण कर सक्के हैं उनको सर्वोपरि समझना चाहिये और उनको सब देवता और मुनि और मनुष्य मांस और मद्य छोड़ने के अनन्तर शिवजी के प्रेम से धारण करें जो मनुष्य भक्ति और मुक्ति का चाहनेवाला है उसको उचित है कि वह पवित्र हो रुद्राक्ष पहने सब शिवभक्त देवता रुद्राक्ष धारण करके बड़ा सुख पाते हैं मुख्य करके रुद्राक्ष धारण करना

शिवभक्तों को उचित है और उनको रुद्राक्ष बहुत प्रिय होना चाहिये क्योंकि रुद्राक्ष उनके असंख्य दुःखों को दूर करनेवाला है रुद्राक्ष से सर्वमनोरथ पूर्ण होसक्ते हैं और रुद्राक्ष के समान पवित्र तीनों लोक में दूसरी वस्तु नहीं जो कोई मनुष्य रुद्राक्ष माला की तरह पर धारण करे उसके समान तीनों लोक में कोई देवता और मुनि आदि नहीं है रुद्राक्ष की माला सब मालाओं से उत्तम है इसके धारण करने से मनुष्य काल से भी भय नहीं मानता और रुद्राक्ष धारण करनेवाला मांस, पलाण्डु, लहसुन, मद्य आदि धारण न करे और रुद्राक्ष सब देवताओं को प्रिय है मुख्य करके पांचों देवताओं को बहुत ही प्यारा है और सबसे अधिक इसको शिव प्रिय जानते हैं और जो कि सब देवताओं के मन्त्र रुद्राक्ष से जपे जाते हैं इसलिये रुद्राक्ष की माला सब मालाओं से श्रेष्ठ है और विष्णु और हम और इन्द्रादि सब देवता रुद्राक्ष की माला धारण करते हैं यह शिव का उत्तम भूषण है और जो रुद्राक्ष आमले के फल के समान है वह उत्तम है और जो बदरी के समान है वह मध्यम रुद्राक्ष है और जो मध्यम रुद्राक्ष छोटा हो तो उसे अधम समझना चाहिये और जो रुद्राक्ष आमलक के समान है वह बहुतही शुभ और मनोरथ देनेवाला है यद्यपि सर्व प्रकार के रुद्राक्ष शुभ और पापों के दूर करनेवाले हैं कोई रुद्राक्ष दुःखदायक नहीं पर जो रुद्राक्ष गुञ्जा के समान है उसको सर्व मनोरथों के देनेवाला समझना चाहिये इसी प्रकार जितना रुद्राक्ष बहुत छोटा हो उतनी ही उसकी बड़ाई और उसके धारण करने में अधिक फल जानना चाहिये और जो रुद्राक्ष कि दृढ़ और चिकना कांटों समेत मोटा हो वह सर्व मनोरथों का देनेवाला है और भक्त के सब पापों को नष्ट कर देता है और नीचे लिखे

हुये रुद्राक्ष किसी अवस्था में धारण करना उचित नहीं हैं क्योंकि उनके धारण करने से कोई मनोरथ सिद्ध नहीं होता जो कीड़ों से खाये हुये हों १ जो कांटों विना हों २ जो कटे हुये हों ३ जो छिद्र करने के समय फट गये हों ४ जो रुद्राक्ष का स्वरूप न रखते हों ५ और जो कृत्रिम अर्थात् मुख्य रुद्राक्ष न हों किसी वस्तु से बनाये गये हों ६ और जो रुद्राक्ष आप किसी शिवभक्त ने वृक्ष से लाकर बनाया हो वह उत्तम रुद्राक्ष है और जो रुद्राक्ष अन्य मनुष्य के द्वारा आया हो वह मध्यम है जिस रुद्राक्ष को हमने सर्वोपरि वर्णन किया है उसके धारण करनेवाले मनुष्य को मुख्य सदाशिव का रूप समझना चाहिये और उचित है कि भक्त निश्चयपूर्वक आलस्य छोड़ मन्त्र के साथ रुद्राक्ष धारण करे कि कोई पाप उसके सामने न आवे जो मनुष्य जान बूझकर मन्त्र विना रुद्राक्ष धारण करता है वह नरक में जाकर किसी स्थान में सुख नहीं पाता पर जो अज्ञानी मनुष्य मन्त्र विना रुद्राक्ष धारण करे तो उसको कुछ पाप नहीं है क्योंकि आप सदाशिवजी ने इस बात को कहा है और भूत आदि जो दुःखदायक हैं वे रुद्राक्ष धारण करनेवाले को कुछ दुःख नहीं दे सक्के वरन रुद्राक्षधारी मनुष्य को देखकर भाग जाते हैं और उससे सदा डरते रहते हैं और अभिचार आदि जो पाप हैं वे रुद्राक्ष के देखने ही से भस्म हो जाते हैं उसके देखने से देवता आदि सब अतिप्रसन्न होते हैं और परम शिवजी उसके देखने से प्रतिदिन मन में प्रसन्न होकर हँसते हैं यद्यपि कोई मनुष्य ज्ञान और ध्यान से हीन अनाचारी और कुकर्मी हो वह भी रुद्राक्ष प्रेम से धारण करे तो सर्व पापों से छूटकर परमपद पाता है और जो मनुष्य कि रुद्राक्ष की माला से केवल मन्त्र जपता है उसको हाथ के जप करने से करोड़ों भाग

अधिक पुण्य मिलता है और धारण करने से जप करनेवाले को दश भाग अधिक फल होता है जब तक कि रुद्राक्ष शरीर में धारण किये हुये कोई मनुष्य रहता है तब तक उसको अकालमृत्यु का भय नहीं होता और उसको अवस्था के पूर्ण होने विना मृत्यु नहीं होती और उसको मरने के समय शिव का ज्ञान प्राप्त होता है उसके धारण करने से मनुष्य मुक्ति पाता है जिस मनुष्य के शरीर में रुद्राक्ष और भस्म का त्रिपुण्ड्र हो और वह मनुष्य मृत्युञ्जय मन्त्र का जप कर रहा हो तो ऐसे मनुष्य के देखने से शिवजी के दर्शन करने के समान फल होता है ऐसे मनुष्य की बड़ाई वर्णन नहीं हो सक्ती रुद्राक्ष सब वर्णाश्रम धारण करें बरन शूद्र को भी रुद्राक्ष धारण करने का अधिकार है पर शुद्धता और निश्चय अवश्य चाहिये और जब कि दिन के समय मनुष्य रुद्राक्ष धारण करता है तो उसके रात्रि के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं और रात्रि के समय धारण करने से दिन के सर्व पाप दूर होते हैं इससे उचित है कि हर समय रुद्राक्ष धारण किये रहे जो मनुष्य कि त्रिपुण्ड्र और रुद्राक्ष धारण करके शिर में जटा रखाते हैं वे नरक में नहीं जाते और न संसार में उनको कोई पाप लगता है और जिनके भाल में त्रिपुण्ड्र और शिर में एक दाना रुद्राक्ष का है और मुखपर पञ्चाक्षरी मन्त्र है वे अपने सब लोगों में सेवा के योग्य हैं और जो मनुष्य ऐसा बाना नहीं रखते वे निस्संदेह नरक में जाते हैं उनकी सहायता कोई नहीं कर सक्ता और जो मनुष्य कि ऐसा बाना रखते हैं चाहे वे स्त्री हों वा पुरुष शिवजी के बहुत प्यारे हैं और चाहे वे बड़े पापी, अनाचारी और भ्रष्ट हों पर वे अतिपवित्र हैं उनको दोनों लोक में बहुत आनन्द मिलता है वे सब लोगों से मारे जाने के योग्य नहीं और सर्व

मनुष्यों की बड़ाई के योग्य हैं हे नारद! रुद्राक्ष बहुत प्रकार के हैं जिनका विस्तार हम वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब पाप दूर होते हैं कि जो एकमुखी रुद्राक्ष है वह तो सदाशिवजी का रूप है उससे मुक्ति और भक्ति दोनों मिलती हैं और उसके दर्शनमात्र से ब्रह्महत्यादि पाप दूर होते हैं उसके धारण करनेवाले के सर्व उपद्रव नष्ट होकर उसके सर्वमनोरथ पूर्ण होते हैं जिसने ऐसा रुद्राक्ष पाया उसके बड़े भाग्य हैं वह प्रतिदिन पवित्र और पापों से शुद्ध है और द्विमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से तुरन्त गोवध का पाप दूर होजाता है और धारक के सर्वमनोरथ पूर्ण होते हैं और उसके घर में सर्व सुख की सामग्री उपस्थित रहती हैं और त्रिमुखी रुद्राक्ष से धन और विद्या की वृद्धि और उसके धारण करने से स्त्री के मार डालने का पाप दूर होता है मुख्य करके वह ज्वर जो तीन दिन के पीछे आता है उसके धारण करने से नहीं रहता है और चतुर्मुखी रुद्राक्ष हमारा रूप है उसके धारण करने से बड़ा आनन्द प्राप्त होताहै उससे मनुष्य के मारडालने का जो पाप है वह जाता रहता है और उसके स्पर्श और अवलोकनसे चारों पदार्थ मिलजाते हैं और पञ्चमुखी रुद्राक्ष शिवजी का रूप है उसके धारण करने से भक्ति और मुक्ति मिलती है कोई दुःख नहीं रहता सर्वप्रकार के पाप और भक्ष्याभक्ष्य के जो दोष हों और जो परस्त्री भोग आदि के पाप होवें सब दूर कर धारण करनेवालों को मुक्ति मिलती है और षरमुखी रुद्राक्ष स्कन्द के समान है उसको दाहिनी भुजा में धारण करना चाहिये वह ब्रह्महत्या आदि सब पापों को दूर करके सर्वसुख देनेवाली है और सप्तमुखी रुद्राक्ष जिसको महासेन और अनन्तादि कहते हैं उसके धारण करने से निर्बल दरिद्री भी राजा होता है उसके

सर्व पाप दूर होजाते हैं और जो अष्टमुखी रुद्राक्ष है वह वटुकभैरव का रूप है उसके धारण करने से आयु बढ़कर अन्त में शिवजी मुक्ति कृपा करते हैं और जो रुद्राक्ष नवमुखी है वह दुर्गा का स्वरूप है उसको दाहिने हाथ में धारण करना चाहिये इसके धारण करनेवाला हमारे समान सबका राजा होकर सब पापों से शुद्ध रहता है और दशमुखी रुद्राक्ष को जनार्दन समझकर जो मनुष्य उसे धारण करता है उसके सर्वकार्य सिद्ध होते हैं और वह किसी के मारे नहीं मरता और एकादशमुखी रुद्राक्ष को जो कोई रुद्र जानकर धारण करता है वह सबको जीतता है और जो द्वादशमुखी रुद्राक्ष है वह सूर्यरूप है उसे शिखा में धारण करने से सर्वरोग दूर होजाते हैं उसको दोनों लोक में सुख मिलता है जो रुद्राक्ष तेरह मुख का है वह विश्वेदेव का स्वरूप है उसके धारण करने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष को ललाट पर बांधने से कोई कष्ट नहीं होता और धारक के सर्व पाप तुरन्त दूर होजाते हैं हे नारद! हमने इतना रुद्राक्ष का वर्णन किया सब प्रकार के रुद्राक्ष की महिमा अनन्त है उचित है कि इन सबकी माला बनाकर प्रेम से धारे जो सौ दाने की माला है वह मोक्ष देती है एकसौ चालीस दाने की माला आरोग्यता और बल देती है और ३२ दाने की माला धन और पन्द्रह दाने की माला अभिचार कराती है और एकसौ आठ दाने की माला सर्व कार्यों को सिद्ध करनेवाली है यद्यपि मालायें अनेक प्रकार की हैं पर यह माला सबसे उत्तम है पुत्रजीवा की माला लड़का देती है और मणिजा धन की वृद्धि करती है मोतियों की माला भाग्य को बढ़ाती है कुशमाला पापों को हरती है सोने और रूपे की माला सर्वमनोरथ पूर्ण करती है श्वेतशिला की माला सुगति देती है कमल माला आरोग्यता

और धनदायक है, पर अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों फलों की देनेवाली रुद्राक्ष की माला है उसके समान अन्य माला नहीं वह सब मालाओं से अधिक फल देनेवाली है और रुद्राक्ष के एक दाने का जप अन्य मालाओं के करोड़ बेर जप करने के समान है हम केवल इतना कहते हैं कि रुद्राक्ष की बड़ाई शारदा भी नहीं वर्णन करसक्कीं हमने रुद्राक्ष का माहात्म्य तुम्हें संक्षेप से सुनाया अब और क्या श्रवण करोगे।

बारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने नारद के पूछने पर कहा कि जिन २ अङ्गों में रुद्राक्ष धारण करनी चाहिये उनको हम वर्णन करते हैं कि ग्यारहसौ रुद्राक्ष एक ही विधि से धारण करने की आज्ञा है और फिर हज़ार तक के लिये दूसरा वचन है और फिर कोई चारसौ भी कहते हैं हम प्रथम प्रकार का वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब कष्ट नष्ट होते हैं और उसके पहनने से बड़े २ पाप भी दूर होजाते हैं ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करना अति सुख देता है उसके धारण करने की महिमा सौ वर्ष पर्यन्त कोई नहीं बखान सक्का अब हम जितने रुद्राक्ष अङ्गों में धारण करने चाहियें वर्णन करते हैं अर्थात् ५५० रुद्राक्ष का मुकुट बनावे और तीनसौ रुद्राक्ष का यज्ञोपवीत बनाकर उसकी तीन लड़ियां कर पहने और एकसौएक रुद्राक्ष गर्दन में और तीन रुद्राक्ष शिखा में धारण करे और जनेऊ में तीन रुद्राक्ष धारण करने चाहिये और दाहने कान में पांच और बायें कान में छः पहनने चाहिये इसी प्रकार भुजाओं और हाथों में बांधे और ग्यारहसौ में जो बचें वह कटि में बांधे इस प्रकार रुद्राक्ष का धारण करने-वाला दोनों लोक में पवित्र और पापरहित होता है और वह श्री-सदाशिवजी के समान नमस्कार करने के योग्य है उसके दर्शन

करने से रोग दूर होजाते हैं और जो इतने रुद्राक्ष धारण करके सदाशिवजी का ध्यान करे और जिह्वा से शिव २ रटे तो ऐसे मनुष्य के देखने से कोई पाप नहीं रहता यह ग्यारहसौ रुद्राक्ष धारण करने की विधि है अब एक सहस्र रुद्राक्ष धारण करने की रीति बताते हैं कि शिखा में तीनसौ रुद्राक्ष का मुकुट बनावे और गले में पैंतीस की कण्ठी पहने और पांचसौ रुद्राक्ष कन्धे में और एकसौ आठ रुद्राक्ष का उपवीत बनावे और दोनों भुजों में बत्तीस और दोनों हाथों में सोलह धारण करले जो मनुष्य पांचसौ कन्धे में व एकसौ का यज्ञोपवीत बनावे ३२ भुजाओं में पहने १६ हाथों में धारण करले व जो मनुष्य इस रीति से सहस्र रुद्राक्ष धारण करता है उसके सब पाप दूर होजाते हैं वह दोनों लोक में आनन्द पूर्वक रहता है और वह कुल सहित परमपद को पाता है देवता भी उसको प्रणाम और दण्डवत् करते हैं जो ऐसे रुद्राक्ष पहनता है जैसे कि रुद्र अर्थात् शिवजी सबके स्वामी हैं वैसे ही वह मनुष्य भी उत्तम है और अन्य प्रकार से भी रुद्राक्ष धारण करने की आज्ञा है कि शिर में एक और ललाट में चालीस और छाती में एकसौ आठ और बत्तीस गले में और दोनों कानों में छः छः और दोनों भुजाओं में बत्तीस और दोनों हाथों में चौबीस इस तरह से दोसौ उञ्चास रुद्राक्ष धारण करनेवाला मनुष्य शिव के समान है उसके ऊपर शिव नित्य प्रसन्न रहते हैं इतने रुद्राक्ष धारण करके यदि शिवपूजन करे तो कोई कष्ट न भोगे हे नारद ! जो मनुष्य शिर में एक रुद्राक्ष धारण करके शिर से स्नान करता है उसको गङ्गा के स्नान का फल होता है जो बिना जल के उसका पूजन करता है वह गिरिजा और शिवजी के पूजन के फलको प्राप्त करता है जो मनुष्य रुद्राक्ष को धारण किये हुये

मरता है वह शिवगति पाता है जो मनुष्य नित्य रुद्राक्ष पूजता है उसे राजा के समान धन मिलता है इस पर हम एक रुद्राक्ष-माहात्म्य का इतिहास कहते हैं जिसके सुनने से रुद्राक्ष के धारण करने का प्रेम अधिक होता है एक क्षत्रिय जाति का राजा गङ्गाके पश्चिम दिशा में राज्य करता था उसका नाम देवीदत्त था उस ने किसीसे शिवपूजन का उपदेश न लिया था पर झाड़ी के वृक्ष के नीचे नित्य कूप के तटपर देवता का पूजन करता था उसी नगरी में एक तेली मरकर वेताल होगया था एक दिन उसी वेताल ने झाड़ी के निकट आकर राजा को अपना शरीर दिखाया राजा उसको अपनी प्रजा का मनुष्य समझ और भलीभांति पहँचान मरे हुये को जीता देख अति आश्चर्यवान् हुआ कि यह मरा हुआ किस प्रकार जी उठा उसने वेताल से पूछा कि तुम कहां आये हो क्योंकि तुम मरगये थे उसने उत्तर दिया कि हे राजन्! मैं वेताल होकर यमदूत का गणहूं जिस कामको आया हूं वह यह है कि इस समय एक वैश्य यहां आवेगा और बैलके मारने से मरजायगा और जोकि वह बड़ा पापी है इससे हम उसे बांधकर यमराज के निकट ले जावेंगे राजा ने कहा कि तुम हमारे निकट आवो हम कुछ पूछेंगे वेताल ने मान लिया अभी कोई वार्त्ता उनमें न हुई थी कि तुरन्त ही एक वैश्य कूप के निकट आया उसके साथ एक बैल था वैश्य ने स्नान करने के निमित्त बैल को उसी कूप के निकट बांध दिया और आप स्नान करने गया और जब पगड़ी बांधे हुये बैल के निकट पहुँचा तो उसने अपने सींगों से वैश्य को घायल करके मार डाला वेताल ने बांधकर इच्छा की कि यमराज के निकट ले जाऊँ पर शिवगणों ने कहा कि हे वेताल! इसे छोड़ दो वेताल ने कहा कि यह तो बड़ा पापी धर्म के विरुद्ध कुमार्ग में चलनेवाला और

देवताओं के मन्त्र आदि से ग्लानि करनेवाला है इसको हम नरक में डालेंगे तुम मुझे क्यों रोकते हो तुम यमराज की आज्ञा को नहीं मानते जब इस उपदेश से भी वेताल ने उसे न छोड़ा तो शिवगणों ने त्रिशूल मारकर उसे घायल कर दिया और वैश्य को उसके हाथ से छुड़ाकर विमान पर चढ़ाकर शिवपुरी में ले गये और ऊँचे शब्दों से कहा कि यह पापी नहीं है देखो इसके शिर में रुद्राक्ष है इसके सर्व दोष भस्म होगये यह कह कर शिवगणों ने उसे शिवलोक में पहुँचा दिया जहां शिवजी की आज्ञा से वह शिवका गण होगया और वेताल रुदन करते हुये राजा से यह वृत्तान्त कहकर यमराज के पास गया यह चरित्र देख राजा अति आश्चर्य कर आप रुद्राक्ष मोल लेने बाज़ार में गया और बहुत धन देकर उसे लिया और अति प्रेम से धारण कर दोनों लोक में जीता रहा अन्तकाल में शिव-लोक में पहुँचकर आनन्दपूर्वक रहा अब दूसरी कथा सुनिये।

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम एक और इतिहास कहते हैं जिससे रुद्राक्ष की बड़ाई और शिवजी की प्रसन्नता प्रकट है इससे शिवभक्ति अधिक होती है कि प्राचीन काल में कश्मीर नगर का राजा भद्रसेन नामक था उसका पुत्र सुधर्म नामी बड़ा वीर और बुद्धिमान् और शिवजी का भक्त था राजा के मन्त्री का पुत्र भी जिसका नाम तारक था अति शीलवान् और विद्वान् था सो दोनों राजपुत्र और मन्त्री के पुत्र में परस्पर बड़ी मित्रता थी और वे दोनों बड़े सुन्दर थे उनके समान संसार में कोई विद्वान् न था दोनों ने बाल अवस्था से विद्या सीखने में मन लगाया उन दोनों ने विना उपदेश रुद्राक्ष की बड़ाई जानी और वे दोनों लड़कपन से शिवपूजन करते थे और उन्होंने

मणि की अभिलाषा न करके सब शरीर में रुद्राक्ष पहना और उनको सब मनुष्य स्वर्ण और आभूषण पहनने को कहते थे पर उन्होंने किसी के वचन को न सुना और रुद्राक्ष धारण करने को न त्यागा यहां तक कि राजाने भी उन्होंको बहुत कुछ कहा सुना पर उन्होंने एक न माना संयोगवश एक दिन राजा के यहां पराशर मुनि आये राजाने उनकी बहुत सी सेवा की जिससे वह बहुत प्रसन्न हुये राजा को मालूम था कि पराशर मुनि सर्वज्ञ हैं इसलिये उन्होंने हाथ जोड़ दण्डवत् कर स्तुति पढ़कर प्रार्थना की कि हे महाराज! मेरा पुत्र और मेरे मन्त्रीका पुत्र दोनों रुद्राक्षके धारण करने में ऐसे लीन हैं कि वह एक निमेष भर भी उसको नहीं त्याग करते यद्यपि हमने अपनी प्रजा सहित उनको उपदेश किया पर वह कुछ भी नहीं सुनते वह रुद्राक्ष के आभूषण पहनते हैं और उन्होंने किसी से विधि भी नहीं पूछी केवल अपनी ही बुद्धि से पहने रहते हैं हे महाराज! इसका क्या कारण है और वह किसी संगति में भी नहीं बैठते यह कह कर पराशर मुनि ने कहा कि तुम अपने पुत्र और मन्त्रीसुवन के पहिले जन्म का वृत्तान्त सुनो कि पूर्वकाल में एक वेश्या महानन्दानामी नन्दिग्राम में रहती थी वह बड़ी धनवती थी उसका बड़ा कुल था उसने एक बन्दर और कुत्ते को पालकर उन्हें नाचना सिखाया था और आपभी बहुत स्त्रियों समेत शिव के करताल का गीत बनाती थी और बन्दर और कुत्ते को रुद्राक्ष पहना कर नचाती थी वह दोनों ऐसा नाचते थे कि देखनेवालों को अतिप्रिय भासता था वह वेश्या इसी प्रकार उनको नचाकर प्रसन्न रहती और रात्रिदिन शिवभक्ति में डूबी रहती एक दिन उसके घर में आग लगगई उस वेश्याने झटपट दोनों को बाहर निकाला जब वह मन्दिर जलकर भस्म होगया

और अग्नि बुझगई तब वह बन्दर और कुत्ता उस गृह में न आये पर वनहीं में दुःखी फिरतेरहे और रुद्राक्ष धारण किये वह मरगये और शिवपुर में जाकर सुखी रहे वही बन्दर तुम्हारे घर उत्पन्न हुआ और वही कुत्ता मन्त्री के घर उपजा जो तुम्हारे पुत्र का मित्र है दोनों ने प्रथम जन्म का स्मरण करके रुद्राक्ष धारण किया यह शिवपूजन और रुद्राक्ष धारण करके फिर शिवलोक में जावेंगे यह सुनकर राजा ने पराशरजी से विनती की कि आप दया करके हमारे पुत्र का भविष्यत् वृत्तान्त वर्णन कीजिये कि आगे क्या होगा ? पराशरजी ने राजपुत्र को बुलाकर शिर से पांवतक देखा उन्होंने कहा कि इस समय इस पुत्र की अवस्था द्वादश वर्ष की है और शिवजी की भक्ति में लीन है यह लड़का सातवें दिन अवश्य मरेगा मृत्यु अतिबलवान् है पर काल के भी काल श्रीसदाशिवजी हैं मृत्यु शिवजीसे भयवान् रहता है जो शिवजी कृपा करेंगे तो तुम्हारा पुत्र मौत से बच जावेगा तुमको उचित है कि इससे शिवपूजन करावो और अनेक प्रकार से शिवजी को प्रसन्न करो बहुत सी युक्तियां आयु के बढ़ाने की हैं पर सबसे सुलभ शिव का पूजन है और रुद्राध्याय सबसे अधिक मृत्यु से बचानेवाला है यह उसका फल है उसको पढ़ पढ़ कर शिवजी को स्नान करावे और फिर उसी निर्माल्य से आप स्नान करे और नाना प्रक[illegible] से मन लगाकर शिवजी का पूजन करे और निश्चय करके [illegible]स्ना धारण करे उससे सर्व पाप नाश होते हैं और बहुत स[illegible] पर्यन्त जीता रहता है हम इस बातको शिवकी सौगन्द खाकर कहते हैं उसको मृत्यु का भय नहीं होता वह सदा प्रसन्न रहकर शिवजी का प्यारा होजाता है जिस तरह शतरुद्री का अभिषेक करावोगे उतना ही उतने वर्षों तक तुम्हारा पुत्र जीता रहेगा तु[illegible] है

दशहज़ार पाठ शतरुद्री का कराकर अपने को प्राप्त करना करावो कि दशहज़ार वर्षतक तुम्हारा पुत्र जीता रहेगा होता है फिर रहित शत्रुओं पर प्रबल और पापों से पवित्र अभक्ष्य मनन साथ उतने समय तक वह राज्य करेगा राजा ने यह मुनि सब वचन सुन मानलिया और पराशर ने बहुत से ब्राह्मणों को बुला कर आप ब्राह्मणों सहित सात दिन में दश हज़ार शतरुद्री का जप कराया और उसी जल से राजा के लड़के को स्नान कराया यद्यपि वह सातवें दिन मूर्च्छित होगया परन्तु अन्त में चेत आया क्योंकि पराशर ने उसकी भली विधि रक्षा की और पराशर ने पूछा कि मूर्च्छा की अवस्था में क्या दशा हुई राजा के लड़के ने कहा कि एक मनुष्य दण्डा हाथ में लेकर भयानकरूप से मेरे वध करने को आया उसी समय तुरन्त महावीर ने पहुँच कर उस मनुष्य को भली विधि मार पीट वरुणपाश से बांध लिया फिर और कुछ मैंने नहीं देखा फिर आपने हमारी रक्षा की यह सुन पराशर अति प्रसन्न हुये और बहुत अशीषें दीं और राजा को पूर्ण धैर्य प्राप्त हुआ और मुनियों ने बड़ी सेवा की इतने में हे नारद ! तुम वहां पहुँचे राजा ने तुम्हारा सन्मान कर तुमसे पूछा कि जो तुमने कोई बात आश्चर्य की देखी है तो कहो तुमने कहा कि हमने तो इस समय बड़ा आश्चर्य देखा है कि अभी मृत्यु तुम्हारे पुत्र के मारने को आई थी सदाशिवजी इस बात को जान गये और वीरभद्र को गणों समेत भेजा कि मृत्यु का कुछ बल चलने न दें सो वीरभद्र मृत्यु को दूर कर कैलास पर्वत पर चले गये और तुम्हारे पुत्र को अमृत के पीने का स्वाद प्राप्त हुआ था तुम्हारा पुत्र दश सहस्र वर्ष पर्यन्त जीता रहेगा और निष्कण्टक राज्य करेगा और मन्त्री का पुत्र भी तुम्हारे पुत्र का सेवक रह फिर

और अग्नि बुझगई हे सेवक होंगे फिर दोनों शिवलोक में जाकर आये पर वनहीं में गिने जावेंगे हे नारदजी ! यह कहकर तुम सरगये और को चले गये और सर्व सभा को अति प्रसन्नता उत्पन्नहुई इस कथा के कहने सुनने से दोनों लोक में बड़ा आनन्द प्राप्त होता है।

चौदहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी ! यह युक्ति हमने मुक्ति के प्राप्त होने के लिये बताई और बहुत सी कथायें भी कहीं अब दूसरा उपाय कहते हैं जिसके धारण करने से शिवजी की भक्ति बढ़ती है और जिस उपायके करनेसे व्यासजी पराशरके पुत्र सिद्ध हुये उसको हम विस्तारपूर्वक कहते हैं जानना चाहिये कि शिवकीर्तन का श्रवण और शिवकीर्तन का मनन शिवजी के पाने के लिये बहुत उत्तम है उचित है कि अपने कानों से शिवजी के नाम सुने और उसका मन से मनन करे इसके करने से भुक्ति मुक्ति दोनों पदार्थ प्राप्त होते हैं सब साधनों से यह उपाय सर्वोपरि है सो पहले गुरु के मुख से शिव का यश सुने और आप उसका कीर्तन और मनन करे इस बात के करने से शिवजी का योग प्रकट होता है और शिवजी का पद पाकर संसार की सर्व व्याधि निवृत्त हो जाती हैं श्रवण इस तरह करे कि जैसे मैथुन और स्त्री की प्रीति के समान दृढ़तापूर्वक नियम रख शिवजी का यश सुने और इन्द्रियों को जीत लेवे और ऊँचे शब्द और अनुराग के साथ शिवजी के गुणों और नामों को वर्णन करे वही गीत या तो वेदके पद हों वा देवताओं के बनाये हुये अथवा मनुष्यकृत ही हों उनके कीर्तन से सब दुःख दूर होकर आनन्द प्राप्त होता है और सुनने और गाने के उपरान्त युक्तिपूर्वक मन से उनको शुद्ध करना चाहिये और उसके साधन के लिये मनन

...श्य और उसका फल केवल सदाशिवजी का प्राप्त करना ...भना उचित है और श्रवण सत्संगति से प्राप्त होता है फिर कीर्तन को जानना चाहिये फिर मनन को समझो यह मनन सबसे बड़ा पद रखता है और जो कि शिवजी की कृपा से सब कुछ होता है इसलिये उचित है कि शिवजी को हर प्रकार प्रसन्न करे यह उपाय अति सुगम है इसी युक्ति से शिवजी का पद पाना सुगम है बड़ी भाग्य से यह बात होती है इसकी महिमा वेद और पुराण गाते हैं जब सदाशिवजी प्रसन्न होते हैं तब यह उपाय मनुष्य को भासित होता है इसके सिवाय और कोई उपाय सदाशिवजी के प्राप्त होने के लिये नहीं है क्योंकि बड़े २ सिद्धों ने मुख्य इसी को धारण किया है और सनकादिक जो सिद्ध के नाम से प्रसिद्ध हैं इसी युक्ति को सर्वोपरि बताते हैं और विष्णु और हम सदा इसकी प्रशंसा करते हैं और व्यास भी इसी युक्ति को जानकर जीवन्मुक्त और बड़े ज्ञानी हुये सो हम व्यासजी की कथा कहते हैं कि जब व्यासजी ने वेद को चार भाग में बांट रात्रि दिन के परिश्रम से सब पुराणों को बनाया पर मन में उनके सन्तोष न हुआ तब उन्होंने अति चिन्तित हो तप के निमित्त पूर्ण उद्योग किया और ब्रह्म नदी के तट पर बैठ तप में प्रवृत्त हुये कि मन शुद्ध होवे और शिव का ध्यान कर इन्द्रियों को जीत समय तक तप करते रहे शिवजी ने ऐसा तप व्यास का देख अति प्रसन्नता से सनत्कुमार को व्यासजी के पास जाने की आज्ञा दी सो जब सनत्कुमार ने व्यास को अपना दर्शन दे उनको विमान पर आरूढ़ किया तब तो व्यास ने शिवजी को प्रसन्न जान सनत्कुमार की पूजा की उस समय हमारे पुत्र सनत्कुमार ने प्रसन्न होकर कहा कि हे व्यास! शुक्राचार्य के पिता और मुनीश्वरों के राजा तुम धन्य

हो तुमने सब जीवों पर दया कर वेद के भाग किये और तुमने सब पुराणों को सर्वोपकारार्थ बनाया तुम्हारा तो पुत्रादि सहित बड़ा परिवार है तुम उनके विना क्यों तप करते हो इस समय तुम बड़े उच्चाट मालूम होते हो तुम्हारे पास तो कोई दासादि भी नहीं हम चाहते हैं कि तुम इसका कारण वर्णन करो यह सुन व्यास ने प्रणाम के उपरान्त विनती की कि वास्तव में आप सत्य कहते हैं कि मैंने वेदों को क्रमपूर्वक कर सब पुराणों को बनाया और दूसरों के लाभ के लिये बड़ा श्रम किया मैंने चारों पदार्थ स्थापन कर अपनी बुद्धिमानी का फल सबको दिखाया और संसार में सबका गुरु प्रसिद्ध हुआ हूँ पर तो भी मुक्ति का धर्म मुझको प्राप्त नहीं हुआ उसी के लिये मैं तप कर रहा हूँ पर हमारी कामना पूरी नहीं होती हां अब कि तुम हमारे तप के प्रभाव से यहां आये हो तो आश्चर्य नहीं है कि तुमने हमको अपना सेवक समझा हो तुम सर्वज्ञ हो और दूसरों की भलाई करना तुम्हारा काम है मुझको आशा है कि आप अनुग्रह करके वह उपाय बतावेंगे जिससे मुक्ति प्राप्त होगी और मन शुद्ध होगा यह सुन सनत्कुमार बोले कि शिवजी की माया किसी के जानने के योग्य नहीं वह माया सर्व संसार को मोहित करनेवाली है वह बिन शिवभक्ति के नाना प्रकार के दुःख देती है यद्यपि तुमने वेदों के भाग किये और पुराणों को बनाया पर धर्म नहीं जाना और न शिवजी का तत्त्व जाना मैं तुम से कहता हूँ कि शिवजी सबसे श्रेष्ठ और शरणागतवत्सल हैं जिनके गुण वेद गाते हैं और उनको मुमुक्षु के नाम से प्रकट करते हैं ऐसे शिव का श्रवण और कीर्तन और मनन परम मुक्ति के पाने का उपाय है इन तीनों उपायों के साथ शिव का प्रेम हर प्रकार की मुक्ति देता है हमने बड़े भाग्य से यह बात पाई है और मुझको नन्दीश्वर

ने बड़ी कृपा से इस बात को सुनाया था हम अपनी कथा कहते हैं जिसके श्रवण से तुम्हारे संशय दूर हो जावेंगे कि पूर्वकाल में हम भी ज्ञानहीन होकर संशय के समुद्र में वृथा भ्रमण करते रहे और परममुक्ति के पाने का उपाय न जाना इसीलिये हम तीनों लोक में समय तक पर्यटन करते रहे पर मेरे मन में निश्चय न हुआ और शिव की माया से मोहित हो घूमते २ मन्दराचल पर्वत में गये और एक स्थान पर अचल बैठकर एकाग्र मनकर समय तक तप में लगे रहे और इन्द्रियजित् हो शिव का स्मरण किया सो शिव ने मुझ पर प्रसन्न हो नन्दीश्वर को आज्ञा दी और नन्दीश्वर मेरे संदेह दूर करने के निमित्त आये जिनको देखकर मैंने प्रणाम किया और आगमन का हेतु पूछा तब नन्दीश्वर जो शिव के अंश और सब गणों के राजा हैं उन्होंने मुझ पर अनुग्रह कर शिव की आज्ञानुसार मुझसे कहा कि हे सनत्कुमार ! शिव के यश का कीर्तन, श्रवण और मनन मुक्ति का देनेवाला है इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं है शिव ने हम को बड़े उपाय से बताया है इसके करने से बहुतों को मुक्ति मिल चुकी है इसलिये तुमको उचित है कि श्रवणादि तीनों कर्म दृढ़तापूर्वक करो हे नारद ! यह उपदेश देकर नन्दीश्वर शिव के समीप चले गये और हमको बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ तुमको उचित है कि तुम भी यही तीनों उपाय कर धर्म और मुक्ति पावो इससे उत्तम और कोई युक्ति नहीं यह शिक्षा दे सनत्कुमार अपने विमान पर आरूढ़ हो चले गये यह कथा सुन नारद ने ब्रह्मा से पूछा कि मैंने श्रवणादि साधन मुक्ति की युक्ति सुनी कदाचित् कोई मनुष्य यह उपाय न कर सके तो इससे कोई और उपाय सुगम है या नहीं ब्रह्मा ने कहा कि जो कोई मनुष्य यह तीनों साधन न कर सके तो उसको उचित है कि

शिववीरलिङ्ग की पूजा भक्ति के साथ करे और शिववीरलिङ्ग की पूजा से उसका मनोरथ पूरा हो सक्ता है और षोडशोपचार की सामग्री इकट्ठी कर उसी शिवलिङ्ग की पूजा करे और अति प्रेम से पूजन करके शिवजी को रिझावे ऐसा मनुष्य भी परममुक्ति पाता है सो ऐसी पूजा करने से बहुत मनुष्य अपने मनोरथ और परममुक्ति पाचुके हैं पर भक्ति अवश्य चाहिये और श्रवणादि तीनों उपायों विना शिवजी की पूजा से भी मुक्ति मिलती है हे नारद ! अब और क्या सुनने की इच्छा है ।

पन्द्रहवां अध्याय ।

नारदजी बोले हे ब्रह्मन् ! हम यह पूछते हैं कि सब देवता वीररूप में पूजे जाते हैं या शिवजी का वीरलिङ्ग पूजा जाता है क्या कारण है कि शिवजीका केवल वीरलिङ्ग पूजा जावे और दूसरे देवताओं का नहीं ब्रह्माजी बोले कि इस तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देनेवाला सिवाय शिवजी महाराज के दूसरा नहीं है उन्होंने यह बात मुझसे कही थी वही चरित्र हम तुमको सुनाते हैं जिसके सुनने से दोनों लोक में अप्रमेय आनन्द मिलता है कि शिवजी निष्केवल ब्रह्मस्वरूप निर्गुण सगुण और शिवलिङ्ग-स्वरूप और निराकार हैं और वीरस्वरूप ही शिवजी को समझो जिनका वर्णन साकार किया जाता है और सक-लाकल भी शिवजी को केवलीमान करके कहते हैं और वेद भी शिवजी को ब्रह्मके नाम से बखानते हैं इसलिये लिङ्ग और वीर दोनों में सदाशिवजी सब लोगों की पूजा के योग्य हैं किसी दूसरे के लिये ब्रह्म का नाम नहीं होसक्ता और तीनोंलोक सदा-शिवजी के सेवक हैं क्योंकि सिवाय शिवजी के और किसी में निष्कलङ्कत्व नहीं है इसीसे और किसी ने अपने लिङ्ग की पूजा कराना नहीं चाहा सब देवता और जीव बड़े वर्णन किये गये हैं

उनमें ब्रह्मतत्त्व अधिक नहीं है वीरलिङ्ग सब देवताओं के पूजने के योग्य है ऐसी बात के समझ लेने से बहुत ही आनन्द प्राप्त होता है यह बात वेद में प्राचीन से है और सिद्धि देनेवाली है जिसके पढ़नेवाला सर्वसिद्धि करता है इसी बात को नन्दीश्वरने सनत्कुमार से कहा था सनत्कुमार बोले कि हे नन्दीश्वर! तुमने शिवजी के चरित्र अतिपवित्र वर्णन किये पर जोकि तुमने और देवताओं की वीरपूजा वर्णन की पर शिवजी के लिङ्ग की पूजा को धारण किया इस बात के सुनने से मुझे सन्देह उपजा है इससे मैं चाहता हूं कि शिवजी के लिङ्गका वर्णन मुझे सुनाइये नन्दीश्वर ने कहा कि व्यतीत कल्प में जब प्रलय होगया तब ब्रह्मा और विष्णु में बड़ा युद्ध मचा उस समय शिवजी दोनों के अहङ्कार दूर करने को खम्भे के समान जो आदि अन्त से रहित था प्रकट हुये और उनको लिङ्ग के समान लक्षण प्रतीत हुये और दोनों के अहंकार को नष्ट कर और परम धर्म की शिक्षा की उसी समय से शिवजी का लिङ्ग प्रचलित हो लिङ्गवीर की पूजा तीनों लोक में प्रारम्भ हुई इस पर हम पूर्वकाल की और कथा सुनाते हैं कि पूर्वकाल में विष्णु सब देवताओं के राजा अपने बिछौने में आनन्द करते थे कि उसी समय ब्रह्मा सुगमता से स्वाभाविक विष्णु के आनन्दस्थान में पहुँचकर विष्णु को लेटे हुये देख कोपित होकर कहा कि हे अहंकार के भरे हुये! तुम कौन हो तुम हमारे आने पर भी लेटे रहे तुरन्त उठो और सब अहंकार को दूरकर हमको देखो हम तुम्हारे स्वामी कृपा करके तुम्हारे पास आये हैं हम तीनों लोकों में श्रेष्ठ और प्रजा के उपजानेवाले हैं विष्णु बोले कि हे ब्रह्मन्! हमारे पुत्र! हमने जान लिया है कि तुम आये हो आनन्द से स्थित होवो ऐसे कटुवचन क्यों कहते हो ब्रह्मा ने

कहा कि हे विष्णु ! तुम किस २ के पुत्र नहीं हुये हो तुमने दुर्बुद्धि संचित कर धर्म अपने हृदय से दूर किया क्या तुम नहीं जानते हो कि हमारे नाम स्वयम्भू, अज, परमेष्ठी, ब्रह्मा, विधाता आदि बहुत हैं मैं तुम्हारा पिता और तीनों लोक का धारण करनेवाला हूं तुमने क्योंकर हमको अपना पुत्र कहा तुम संशय से अपने को स्वामी जानते हो हमारा उपजानेवाला तीनों लोक में कोई नहीं तुम्हारी बुद्धि जाती रही यह सुन विष्णु बोले कि हे पुत्र ! हम जगदीश हैं तुम हमारी नाभि से उपजे हो और माया से भूले हो जो अपने को सबका स्वामी समझते हो निदान इसी प्रकार ब्रह्मा और विष्णु बहुत समय तक बड़ा विवाद करते रहे जिसका मुख्य आशय अपनी २ बड़ाई बताने का था सो दोनों में बड़ा युद्ध हुआ और दोनों ओर से हर प्रकार के शस्त्र और बाण चले और दोनों ओर के सम्बन्धी और सहायक सहायता के लिये दोनों ओर खड़े रहे और दोनों ओर के गणों ने अपना बल युद्धस्थान में दिखाया और अपने २ विमानों में सब देवता आरूढ़ होकर उस स्थान में आये और ऐसा युद्ध देख आश्चर्य करने लगे पर शिवजी की माया से किसी ने मुख्य भेद न जाना विष्णु ने माहेश्वर बाण छोड़ा जिससे ब्रह्मा ने क्रोधित हो पाशुपतास्त्र त्यागा जिससे बहुत ही प्रकाश फैल गया और दोनों बाण परस्पर ठहर कर प्रलय करने लगे यह दशा देख सब देवता भय खा कहने लगे कि यह कैसा प्रलय असमय होता है उचित है कि हम सब शिवजी की शरण में जाकर बचें ऐसी सम्मति के उपरान्त सब देवताओं ने शिवजी के समीप जा प्रणवरूप शिवजी को देख प्रणाम किया और शिवजी और शिवरानी को अपने मुख्य चिह्नों से देख स्तुति करने लगे ।

सोलहवां अध्याय।

नन्दीश्वर ने कहा कि देवताओं की स्तुति सुनकर सदाशिवजी ने प्रसन्न हो अपने गणों को बुलाया वह सब आये फिर देवताओं से शिवजी ने कहा कि हे पुत्रो! तुम कहां चले हो हम तुम्हारे मुखों को चिन्ता से मुरझाया हुआ देखते हैं यह सुन सब देवताओं ने विनय की कि ब्रह्मा और विष्णु में बड़ा युद्ध हो रहा है उनके सहायक और परिवार के मनुष्य बहुत ही लड़ रहे हैं जाना जाता है कि अभी प्रलय होनेवाला है तीनोंलोक जले जाते हैं और हम भी ऐसी अग्नि से जलकर आपकी शरण में आये जो उचित हो वह कीजिये शिवजी ने कहा हम वहां चलेंगे सो अपने गणों को तय्यारी के लिये आज्ञा दी तो गण शस्त्र सहित उद्यत हो गये बाजे बजने लगे और भद्रनाम रथ बाणों से भरा हुआ आया जिसमें शिवजी और शिवरानी अपने पुत्रों सहित आरूढ़ हो चले और देवताओं सहित युद्धस्थल में पहुँचे और दोनों को अपनी माया में मोहित लड़ते हुये देख अनुग्रह किया और उन दोनों के मध्य में ज्योतिरूप होकर प्रकट हुये और उस अग्नि के खम्भ की गति किसी ने न जानी और दोनों के जलते हुये बाण दूर हुये जिस से ब्रह्मा और विष्णु आश्चर्य में हुये और परस्पर मिलकर युद्ध का त्याग किया और प्रतिज्ञा की कि जो इस ज्वाला के खम्भे की आदि अन्त का पता ले आवे वही बड़ा है सो विष्णु शूकर रूप धर पृथ्वी के नीचे और ब्रह्मा हंस का रूप धर आकाश को चले और जब दोनों ने आदि अन्त न पाया तो युद्धस्थल में लौट आये पर ब्रह्मा केतकी फूल को साक्षी कर गवाही के लिये अपने साथ लाये कि वह झूँठ कह देवे कि ब्रह्मा ने

उस ज्वाला के खम्भ के अन्त को देखा है और विष्णु ने अन्त न पाने का हाल आकर कहा ।

सत्रहवां अध्याय ।

नन्दीश्वर बोले कि शिवजी विष्णु की सत्यता पर अति प्रसन्न हुये और ब्रह्मा के मिथ्या वचन बनावट और दुर्बुद्धि को देख कोपित हो उनको शाप देने के निमित्त अपने मुख्यरूप से प्रकट हुये जिनको देख विष्णु ने स्तुति की उसको सुन शिव ने प्रसन्न हो कहा कि हम तुम्हारी सत्यता से प्रसन्न हुये और हम तुमको वर देते हैं कि तुम हमारे समान होंगे अब से बराबर तुम्हारी भी पूजा और गुण वर्णन हमारे समान होगा और कोई मनुष्य हम तुम में भेद न समझे हमने तुमको हर प्रकार अपना कर लिया फिर ब्रह्मा से क्रोधित होकर कहा कि हे ब्रह्मन् ! तुमने दुष्टता से संसार के आनन्द के निमित्त बड़ाई के लिये अपने धर्म को छोड़ा और तुमने इच्छा की कि ऐसा झूंठ बोल तीनों लोक में हम अपनी पूजा करावें और छल से साक्षी भी लाये इसलिये हम तुम से कहते हैं कि तीनों लोक में तुम्हारी पूजा न होगी कोई देवता और मुनि आदि तुम को नहीं मानेगा यह सुन ब्रह्माने लज्जित हो विनय की कि वास्तव में हमने शुद्धमार्ग को छोड़ा पर आप मेरा अपराध क्षमा करें मैंने मूर्खता से आपको नहीं जाना शिवजी ने यह सुन प्रसन्न हो कहा कि तुम्हारी विनती से मैं प्रसन्न हूं तुमको युक्ति से वर दिया जावेगा वैतानिक मख कर्मादि में तुम गुरु हुआ करोगे और पूरा भाग पाओगे फिर शिवने केतकी के पुष्प से कहा कि तुमने जो धर्म के विरुद्ध झूंठ साक्षी दी है सो तुम आज से हमारी पूजा के काम न आवोगी सो केतकी ने दुःखी हो शिव से विनय की कि मेरा अपराध क्षमा हो क्योंकि सब पाप तुम्हारे स्मरण से

नष्ट हो जाते हैं और मैं तुमको शरीर सहित देखती हूँ मुझ-
को क्योंकर दुःख होसक्ता है तुमको वेद और पुराण सब शरणा-
गत पालक कहते हैं हमारे सर्व पाप नष्ट करो शिव प्रसन्न
हो बोले कि तुम हम पर वितान के द्वारा चढ़ोगी इसी प्रकार
सब पर शिव ने कृपापूर्वक देखा उस समय ब्रह्मा और विष्णु
ने दायें बायें खड़े हो अपने परिवार सहित शिव की पूजा की
जिससे शिव ने प्रसन्न हो कहा कि तुम दोनों मुझे प्राण के
समान प्यारे हो यह आज का दिन अति पवित्र है यह दिन
बड़ा ही मुक्ति देनेवाला है इसका नाम शिवरात्रि है यह प्रति-
दिन व्रत करने से व्रतियों को बड़ा आनन्द देता है इस दिन
व्रत करो और हमारी लिङ्गपूजा करो तुम्हारे दोष और पाप
नष्ट हो जावेंगे और जोकि हम लिङ्गस्वरूप होकर प्रकटे इससे
इस स्थान का नाम लिङ्गालय होगा और यह लिङ्ग हमारा जो
बहुत बड़ा है यह आप सूक्ष्मरूप होकर रहेगा और हम सब
की पूजा के निमित्त इस लिङ्ग में प्रवेश करेंगे इस स्थान का
नाम अरुणाचल होगा इस स्थान पर हमारी पूजा करके परम-
पद प्राप्त होगा इन तीनों स्थान की बड़ी महिमा है यह कह
शिव ने सब मरी हुई सेना को जिला दिया और चाहा कि ब्रह्मा
और विष्णु आदिक के मन से संशय दूर हो जावे फिर इनको
गर्व न हो इसलिये शिव ने कहा कि तुम सब इस बात को सुनो
हम सब वेदों का सार वर्णन करते हैं कि हमारे दो स्वरूप हैं
एक निष्कल दूसरा सकल और हम ब्रह्म, अलख, सर्वसृष्टि के
प्राण हैं पहिले हम खम्भरूप से उपजकर फिर सर्वअङ्गोंसमेत
प्रकट हुये यह हमारा निष्कल ब्रह्म स्वरूप है और सगुण
रूप धारण करने से सकल के नाम से प्रसिद्ध होता हूँ ये दोनों
हमारे रूप प्रसिद्ध हैं तब तुम्हारे ये दोनों रूप सिवाय हमारे

और किसके हैं तुम दोनों ने अपने अपने को परस्पर स्वामी समझ इतना युद्ध किया हम इस स्थान पर निराकाररूप से आये तुमको उचित है कि फिर ऐसा काम मत करो और भ्रम में न पड़ो हम परब्रह्म परमात्मा हैं तुम इस बात का निश्चय रक्खो और हमारे लिङ्ग की पूजा करो तुम्हारे मनोरथ इसी से पूरे होंगे हमारा लिङ्ग और बेर दोनों पूजने के योग्य हैं दोनों में कुछ भेद नहीं है और जगत्कृति पांच प्रकार की है उसे हमारी लीला जानो अर्थात् संसार की उत्पत्ति, पालन और प्रलय और अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष इन पांचों कर्मों में पांच देवता हैं अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र और महेश और हम इनमें से चारों देवता तो शरीरसहित दिखाई देते हैं पर पांचवां दिखाई नहीं देता और तुम दोनों ब्रह्मा और विष्णु शक्ति से उपजे हो और रुद्र और महेश यह दोनों हमारी ही देह हैं यह दोनों अविकृत हैं और तुम विकृत हो यह कह शिव अन्तर्धान हुये और ब्रह्मा विष्णु आदि को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और शिवजी की स्तुति कर अतिप्रसन्नता से अपने २ लोक को चले गये और नन्दीश्वर से यह पवित्र कथा सुन सनत्कुमार भी अपने स्थान को गये हे नारद ! हमने यह शिवचरित्र वर्णन किया तुम भलीभांति निश्चय से समझो कि शिव अपनी भक्ति अतिप्रसन्नता से देते हैं जो मनुष्य शिव के चरित्र पढ़ता सुनता है वह लोक में आनन्द उठा अन्त में शिवपुरी को जाता है और शिव का गण हो फिर आवागमन में नहीं पड़ता ।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे नवमस्खण्डः समाप्तः ॥ ९ ॥

—:०:—

ॐ नमः शिवाय।

शिवपुराण भाषा

दशवां खण्ड

पहिला अध्याय।

सूतजी बोले हे शौनक! नारद ने शिवरात्रिव्रत के सुनने के उपरान्त कहा कि हे पिता! जितने शिव के व्रत हों वह आप सब वर्णन करें ब्रह्मा बोले कि शिवजी के असंख्य व्रत हैं जो भुक्ति और मुक्ति देते हैं पर नीचे लिखे हुये बारह व्रत अतिआवश्यक और प्रसिद्ध हैं जिनको याज्ञवल्क्य ने अपनी स्मृति में वर्णन किया है उन व्रतों को अवश्य करना चाहिये क्योंकि उनके किये विना सिद्ध नहीं होता यह बारह व्रत शिवको अतिप्रिय हैं इसी से जो मनुष्य परम शैव हैं वह इन व्रतों को अवश्य करते हैं इनकी महिमा आप सदाशिव ने पार्वती और विष्णु से वर्णन की है जिनके द्वारा यह बारहों व्रत संसार भर में प्रसिद्ध हुये वह यह दोनों हैं अष्टमी और दोनों हर तिथि अर्थात् एकादशी और दोनों त्रयोदशी और दोनों चतुर्दशी और जितने महीने में चन्द्रवार पड़ें यह सब मिलकर बारह व्रत हर महीने में हुये और शिवजी की आज्ञा है कि अष्टमी के व्रत में फलाहार करना चाहिये और शुक्लपक्ष की एकादशी को निर्जल व्रत करना उचित है पर कृष्णपक्ष की एकादशी को भोजन कर लेना उचित है इसी प्रकार दोनों त्रयोदशी में भोजन करना उचित है और शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में भोजन करने की आज्ञा है पर

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में नहीं वह निर्जल ही रहनी चाहिये और सब प्रहरों में शिवजी की पूजा करनी चाहिये और सब सोम-वार के व्रत को भोजन करने की आज्ञा है और इस व्रतमें शिव की पूजा शक्तिसहित करनी उचित है कि प्रतिमास में यह सब बारहों व्रत धारण करे और अतिप्रेम से शिव की पूजा करे और अपनी सामर्थ्य भर शिवभक्तों को भोजन करावे और यथा-शक्ति दान दे और इन बारहों व्रतों में से जो मनुष्य एक व्रत भी नहीं करता उसको पतित कहते हैं उस पर शिव किसी दशा में भी प्रसन्न नहीं होते और वह मनुष्य दोनों लोक में दुःखी रहता है और जो शिव का भक्त सब व्रतों को करता है वह परमपावन है कदाचित् कोई मनुष्य इन बारहों व्रतों में से मास भर के बीच एक भी करता है वह भी शुभ है दोनों प्रकार के व्रत रखनेवालेसे शिवप्रसन्न होते हैं हे नारद! चार चीजें भुक्ति और मुक्ति देनेवाली हैं वह यह हैं पहिला शिव का पूजन दूसरा रुद्र जप तीसरा शिव का व्रत चौथा काशी में मरना यह चारों बातें शिव को प्रिय और मुक्ति पाने की हैं और संसार में बड़ा सुख देनेवाली हैं और जितने व्रत हमने ऊपर वर्णन किये उन सब में शिव का व्रत अर्थात् शिवरात्रि बड़ा पद रखती है उसको सब वर्णाश्रम और बालक और युवा और स्त्री भी रख सक्ती हैं यह व्रत अकाम सकाम दोनों रीतों से रक्खा जाता है और इस व्रत के करने से शिवपुरी प्राप्त होती है और यह व्रत चारों फल का देनेवाला और सब व्रतों का सर्वोपरि है और यह व्रत असंख्य हत्याओं का मिटानेवाला है और असंख्य धर्मों का कृपा करने-वाला है इस व्रत की महिमा शेष और शारदा और हम और विष्णु पूरे तौर से वर्णन नहीं कर सके जिस तरह कि शिव की महिमा असंख्य है इस व्रत के करने से बहुतों ने मुक्ति पाई है

और दोनों लोक में प्रसन्न रहे हैं कोई मनुष्य चाहे कैसा ही पापी हो इस व्रत के करने से वह पवित्र हो जाता है इस व्रत को व्रतराज कहते हैं और सब व्रत इस व्रत के सामने शिर झुकाये रहते हैं संसार में जितना धर्म जैसे कि तप योगादि हैं उनमें कोई व्रत इसके समान नहीं यह व्रत शिव को प्राण के समान प्रिय है वेद की आज्ञा है कि शिव को यह व्रत पार्वती के समान प्रिय है और शिव उसको षरमुख के समान जानते हैं और यज्ञदत्त ब्राह्मण के पुत्र गुणनिधि और सुमति स्त्री और व्याधादि ने अज्ञानता की अवस्था में इस व्रत को करके कैसी गति पाई है और देवता और मुनि आदि ने इस व्रत के रखने से क्या २ पदार्थ नहीं पाये हे नारद ! हम कहां तक वर्णन करें तुम इस व्रत को सर्वोपरि जानो यद्यपि प्रतिमास की कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को उक्त शिवव्रत होता है पर माघ मास में इस व्रत को आवश्यक वर्णन किया है और इसी वचन के अनुकूल फाल्गुन मास की चतुर्दशी को भी यह शिवरात्रिव्रत उत्तमोत्तम समझा गया है जो आधी रात तक वही शिवतिथि शिवव्रत कहा जाता है यह शिवव्रत करके जो उसी दिन पारण करे तो क्या बात है बड़ी भाग्य से शिवरात्रिव्रत का पारण उसी तिथि के भीतर मिलता है पर चन्द्रमा के अस्त पर नहीं हे नारद ! शिवरात्रिव्रत करके पारण बहुत शोच विचारकर करना चाहिये और रात्रि के चारों प्रहरों में शिवजी की चार पूजा करनी चाहिये रात्रि के समय पारण नहीं करना चाहिये और चन्द्रास्त के संगम को छोड़ना चाहिये चन्द्रमा के संगम बिन दिन में पारण करना पड़े तो बड़ी भाग्य से मिलता है पर जो चौदसि तिथि न मिले तो अमावस्या के योग में पारण करना उचित है यह शिवरात्रिव्रत जो हर वर्ष में एक बेर होता है सर्व प्रकार

की मुक्ति का दाता है इसके धारण करने से सर्व प्रकार के दुःख दूर होते हैं यहां तक कि ब्रह्महत्या को भी दूर करनेवाला है इसके सिवाय और कोई व्रत संसार में नहीं है जो कोई मनुष्य इस व्रत को नहीं करता वह असंख्य नरकों में नाना प्रकार के क्लेश उठाता है और उसका कोई कार्य पूर्ण नहीं होता और वह मनुष्य चाण्डालके समानहै और वह मुक्ति नहींपाता और संसार में रोगों से ग्रसित रहताहै और उसका सब परिवार नष्ट हो जाता है कदाचित् अज्ञानअवस्था में भी यह व्रत हो जावे तो व्रती मनुष्य निश्चय करके अच्छी गति पाता है चाहे कोई पापी भी इस व्रत को करे तो निश्चय करके दोनों लोक में प्रसन्न हो और जो मनुष्य निश्चय करके इस व्रत को धारण करेगा उसको देखकर यमराज भी भयभीत रहते और शिवजी प्रसन्न रहकर उसको हर प्रकार अपना गण बना लेवेंगे और सर्व पदार्थ उस को कृपा करेंगे और उसका सर्वकुल मुक्ति पावेगा और उसकी देवता और मुनि सब प्रतिष्ठा करेंगे और हम और विष्णु भी उसको बहुत मानेंगे चारों पदार्थ उससे दूर न होंगे हे नारद! अब हम चारों प्रहर की पूजाविधि वर्णन करते हैं।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म करे और अतिप्रसन्नता से शिवालय में जाकर शिवजी की स्तुति करे पहिले अतिपवित्रता के साथ पानी हाथ में लेकर संकल्प करे इस प्रकार पर कि हे श्रीसदाशिवजी! मैं तुम्हारा व्रत करता हूँ वह पूर्ण हो और कोई उसमें विघ्न न हो और ऐसी इच्छा करने के अनन्तर सर्व सामग्री पूजन की संग्रह कर उस स्थान पर जहां कोई प्रसिद्ध शिवलिङ्ग हो वहां जावे और शिवजी के दक्षिण और पश्चिम की ओर आसन लगाकर पूजन की

सामग्री रक्खे और यथाशक्ति स्नान करके अच्छे वस्त्र पहिनकर बैठे और तीन बेर आचमन करके पूजन करे और जैसा चाहिये वैसा मन्त्रों सहित पूजन करे और नाच और गान समेत स्तुति-प्रवृत्त होकर शिवजी का मन्त्र जप करे फिर यथाविधि प्रणाम करे और मन्त्रों सहित पार्थिवपूजा भी करे पर जो मनुष्य जिस की पूजा करता हो प्रथम उसकी पूजा करके फिर पार्थिवपूजन करे और फिर शिवलिङ्ग जो उस स्थान पर स्थापित हो उनकी पूजन करे और शिवरात्रि का माहात्म्य आप पढ़े या जो आप अनपढ़ हो तो और से श्रवण करे और कथा कहनेवाले की नानाविधि से सेवा करे और अच्छे २ भोग शिवजी को लगा कर चारों प्रहर में संकल्प करके एक २ लिङ्ग की पूजा करे और रात्रि को जागरण करके बड़ा उत्सव करे और फिर प्रातः-काल दूसरी बेर स्नान करके शिवपूजन करे और गाल बजाकर गावे नाचे और बारम्बार दण्डवत् और स्तुति कर दोनों हाथ जोड़ शिर झुकावे और आठों प्रकार दण्डवत् कर बिनती करे कि मैंने यथाशक्ति शिवरात्रिव्रत किया है और श्रद्धा और उद्योगपूर्वक आपके प्रेम में मन लगाया है मुझको सेवक जान प्रसन्न होकर मेरा मनोरथ पूर्ण करो यह कह पुष्पाञ्जलि भी शिवजी पर छोड़ दे और ब्राह्मणों को प्रसन्नता से दान दे और शिव के भक्तों और द्विजों और यतियों को उत्तमोत्तम भोजन करावे और अपनी शक्ति के अनुसार उनको भी दान देकर शिवजी का ध्यान कर आप भी भोजन करे अब हम चारों प्रहर के चारों पूजनों की विधि विस्तार से वर्णन करते हैं कि संध्या के समय पहिले संध्यादि सर्व नित्यकर्म से निश्चिन्त हो प्रथम प्रहर में इस प्रकार पूजा करे कि सब सामग्री इकट्ठी कर शिवजी के दोनों लिङ्ग अर्थात् पार्थिव और शिवलिङ्ग जो उस

स्थान पर ही पञ्चामृत से जुदा २ मन्त्र पढ़कर पूजा करे और जलधारा को इरबेर करके शिवजी का लिङ्ग धोवे और जलधारा करने में एकसौ आठ मन्त्र पढ़े और शिव की पूजाकर सब पूजाकी सामग्री मन्त्रों के साथ चढ़ावे या तो अपने गुरु के दिये हुये मन्त्र से या शिवजी के पञ्चाक्षरी मन्त्र से या केवल शिव के नाम से शिवपूजा करे और चन्दनादि सर्वसामग्री और अक्षत और काले तिल और कमलपुष्प और उत्तमोत्तम करवीर अर्थात् कनेर यह सब आठ २ शिवजी का नाम लेकर चढ़ावे और उत्तम सुगन्धित धूप देकर बैठ आरती उतारनी चाहिये और उत्तम पकवान नैवेद्य के लिये लाकर श्रीफल अर्थात् बेल का अर्घ्य दे और दण्डवत् करके जैसा चाहिये ध्यान करे और शिवजी का बाना धारणकर गुरु का दिया हुआ मन्त्र जपे पर जो कोई दूसरे देवताका भक्त है तो वह पञ्चाक्षरी मन्त्रका जप करे और गोमुद्रा शिवजी के आगे दिखाकर शिवजी का तर्पण जल में बैठकर करे और पांच ब्राह्मणों को भोजन करावे जो सामर्थ्य न हो तो केवल एक ब्राह्मण के भोजन का संकल्प करे और जब तक कि पहला प्रहर बीत न जावे तब तक हर प्रकार का उत्सव करे और पहिले प्रहर के पूर्ण होने पर पूजा फल देकर विसर्जन कर देवे जब दूसरे प्रहरका आरम्भ हो तो इसमें भी वही पूजा का विधान है पर कुछ अधिक है वह यह है कि जौका लखोहर और कमलपुष्प पहिले प्रहर से दूने चाहिये और घृत शहद सहित दूध की नैवेद्य लगा बीजपूरका अर्घ्य दे और पहिले से दूना शिवजी का जप करना चाहिये और तृतीय प्रहर की पूजा में इतना और विशेष चाहिये कि गेहूं का लखोहर और मदार के फूल और नाना प्रकार के धूप दीप और नैवेद्य के लिये पुवा और बहुत प्रकार के शाक और

तरकारियां और अर्घ्य के लिये पका अनार और कर्पूर की आरती प्रथम प्रहर से दूनी करे और शिवजी के मन्त्र का जप करे और चौथे प्रहर में इतना अधिक है कि मूंग और उड़द और प्रियंगु अर्थात् काकुन का लखोहर सातों नाजों समेत और शंख का फूल अर्थात् शंखाहूली वा कौड़ियाला और सिद्ध भोजन जो अन्न से बनाये गये हों उनकी नैवेद्य अथवा उड़द की नैवेद्य अच्छे प्रकार से बनवाकर लगानी चाहिये और नाना प्रकार के फलों अथवा केले के फल का अर्घ्य देना चाहिये और पहिले से दूना शिवजी के मन्त्र का जपकर बड़ा उत्सव मनाना चाहिये और चारों प्रहर में असंख्य ही बिल्वपत्र शिवजी के ऊपर चढ़ाव क्योंकि यह शिवजी को अतिप्रिय है और नाना प्रकार के उत्तम २ वस्त्र बनवाकर अति प्रेम से शिवजी के ऊपर चढ़ावे और बहुत मनुष्यों को इकट्ठा करके चारों प्रहर नाच, गाना आदि उत्सव करे और जागरण भी करे दूसरे प्रकार का संकल्प मन में न लावें और शिवरात्रिमाहात्म्य को सुने और अतिप्रसन्नता से रात भर बिता दे और एक ही आसन से चारों प्रहर में दंभ और लोभ न करके बहुतही रुपया खर्च करे जब सूर्य उदय हो तब ब्राह्मण को दण्डवत् कर उठे और स्नानकर फिर शिवजी की पूजा करे और मन में अति प्रसन्न होवे और नाना प्रकार के उपहार संग्रहकर शिवजी का अभिषेक शुद्ध जल से करे और संकल्प किये हुये ब्राह्मणों के सिवाय और ब्राह्मणों को भी भोजन करावे और प्रेम से अपने जाति के मनुष्यों को भी भोजन करावे और सिवाय इनके और मनुष्यों को भी जितने कि आजावें भोजन करावे और ब्राह्मणों को भलीप्रकार दान दे कुछ रुपये और कोष का लोभ न करे वरन सबका पूर्ण आदर करे यह ऊपर लिखे हुये सब कार्य अन-

वान् मनुष्यों के लिये वर्णन किये गये पर दरिद्रता और कुछ धन पास न होने पर जो ऊपर की रीतें न हो सकें तो कुछ दोष नहीं है फिर शिवजी की बहुतही स्तुति और दण्डवत् करके प्रीति के साथ पुष्पाञ्जलि शिवजी पर छोड़ दे और दोनों हाथ जोड़ शिवजी को नम्रता से बार २ दण्डवत् करे और ब्राह्मणों से आशीर्वाद ले शिवजी को और देवताओं सहित विसर्जन करे फिर आप ब्राह्मणों की आज्ञा ले अपने परिवार सहित भोजन करे हे नारद! इस तरह सब महीनों में शिवरात्रि व्रत कर उसका उद्यापन किया करे तब पूर्णफल पावे और इस लोक में आनन्द से रह परलोक में शिवजी के समीप जावे हमने विष्णु सहित जिस तरह यह शिवरात्रिव्रत शिवजी से सुना है उसी तरह से तुमको सुना दिया अब और क्या सुनने की इच्छा है।

तीसरा अध्याय॥

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि आपने शिवरात्रिव्रत तो वर्णन किया उसका उद्यापन सुनने की इच्छा है जिसके करने से शिवजी का व्रत पूर्ण और मन का मनोरथ पूरा होता है और शिवजी अपने भक्त पर प्रसन्न होते हैं और दोनों लोक की कामना पूरी होती है ब्रह्माजी बोले कि हम शिवरात्रि व्रत का उद्यापन वर्णन करते हैं जिसके करने से यह व्रत परिपूर्ण हो जाता है मन लगाकर सुनो कि जब शिवरात्रि व्रत चौदह वर्ष तक बराबर करलेवे तब उसका उद्यापन इस प्रकार करे कि त्रयोदशी के दिन को संयमपूर्वक रह चतुर्दशी को अन्न जल रहित व्रत करे जैसा हम पिछले अध्याय में वर्णन कर चुके हैं और दिव्य मण्डल शिव का खास जिसको गौरीतिलक कहते हैं रचकर वहां पर लिङ्गतोभद्र और सर्वतोभद्र बनावे और वहां आठ कलश स्थापित कर [illegible] और फूलों और वस्त्रों से

पूर्ण करे उसके मध्य में एक हाटकमयी कलश रक्खे जिसके ऊपर शिव गिरिजा और नन्दीश्वर की प्रतिमा सुवर्ण से बनवा कर स्थापित करे और अपनी सामर्थ्य भर यह तीनों मूर्ति सोने की बनवावे और दीपक जला दाहिनी ओर रक्खे और बड़ी प्रसन्नता से रात भर जागरण करे और चारों प्रहर में चार बार पूजा करे और ब्राह्मणों को वरण देकर अच्छी तरह प्रसन्न करे और अपने आचार्य को भी वरण देकर सबके साथ मिल बड़ा उत्सव करे फिर दूसरी बार नहा सब मिलकर शिवजी की पूजा करे तदनन्तर पूरा होमकर यथाशक्ति आप ब्राह्मणों को भोजन करावे और दान देकर वस्त्र और आभूषण उनको दे और सबसे अधिक अपने आचार्य की सेवा करके विधिपूर्वक गौ दे और तीनों सुवर्ण के शिव के रूप सामग्री समेत उसको देकर फिर प्रणाम के उपरान्त दण्डवत् करे पुष्पाञ्जलि शिव को देकर फिर दण्डवत् और स्तुति करे फिर ब्राह्मणों की आज्ञानुकूल आप भी अपने परिवारसहित भोजन करे यह उद्यापन धनवानों के लिये है और उद्यापन से व्रत पूरा हो जाता है अब किस बात के सुनने की इच्छा है।

चौथा अध्याय।

नारद बोले कि हे पिता! मुझको शिवरात्रि के माहात्म्य सुनने से अभी तृप्ति नहीं हुई बिना जाने जिन्होंने शिवरात्रि व्रत किया उन्होंने क्या फल पाया है यह कहिये ब्रह्मा बोले कि शिवरात्रि व्रत की एक कथा हम तुमको सुनाते हैं जो [illegible] आनन्द देती है कि पूर्वकाल में एक व्याध था जिसको निषाद कहते थे वह जीवों को दुःख देता और [illegible] हिंसक था और उसका मन अतिकठोर और [illegible] परिवार सहित रहा करता था वह एक वन में जाकर [illegible] से जीवों को मारता और

चोरी करके बहुत धन लाया करता था उसने लड़कपन से कोई पुण्य न की उसमें सब ही कुकर्म थे वह सदा वन में रहकर किसी समय किसी को चैन नहीं देता था सो ऐसे काम करते हुये उसको कुछ समय बीत गया एक दिन भोजन न होने से उसके माता पिता और स्त्री आदि ने क्षुधा से कहा कि हम भूखन मरते हैं हमारे लिये भोजन लावो यह सुन निषाद अपना धनुर्बाण ले वन में गया उसी दिन शिवरात्रि थी पर निषाद ने नहीं जाना कि आज शिवरात्रि है वह शिकार के लिये दिन भर वन में फिरता रहा पर भाग्यवश कुछ न मिला जब रात्रि हुई तो निषाद दुःखी हो कहने लगा कि अब मैं कहां जाऊं क्या करूं मुझको तो शिकार आदि नहीं मिला इससे घर जाना ठीक नहीं इसी विचार में वह नदी किनारे गया और सोचा कि इसके किनारे वन के पशु पानी पीने को अवश्य आवेंगे उनको हम छिपकर मारेंगे और उसको घर में लेजाकर सबको भोजन करावेंगे सो ऐसा ही किया कि नदी के किनारे एक जगह छिपकर बैठ रहा उस नदी के तट पर बेल का वृक्ष था उसके ऊपर छिपगया और देखने लगा कि कोई जीव आवे जिसको मैं वध करूं सो रात्रि के पहिले प्रहर वहां एक हरिणी प्यास की मारी उछलते कूदते आ पहुँची निषाद ने तुरन्त उसको देखकर मारने की इच्छा से तीर धनुष पर चढ़ाया कि जल और बेलपत्र दोनों पृथ्वी पर गिरे अकस्मात् उसके नीचे शिव का लिङ्ग था जिसके ऊपर पानी और बेलपत्र दोनों गिरे थे यह भाग्यवश पहिले प्रहर की पूजा होगई और इस बात के प्रभाव से निषाद के सब पाप नष्ट होगये और हरिणी ने निषाद को बिल्व के वृक्ष पर देख कहा कि तुमने क्यों धनुष ताना है निषाद ने कहा कि हमारे परिवार के मनुष्य भूखे हैं इससे तेरे मारने की इच्छा है

तेरे मांस से वे सब जो दिन भर के भूखे हैं तृप्त होजावें यह सुन हरिणी ने चिन्तित हो सोचा कि इसको किसी प्रकार निवारण करना चाहिये तो निषाद से कहा कि निषाद जो हमारे मांस से तुम्हारा मनोरथ पूरा होता है तो हमारे धन्यभाग्य हैं दूसरों के प्राण बचाने के बराबर और कोई श्रेष्ठ धर्म नहीं है और निश्चय है कि मेरे मांस से तुम्हारा परिवार पूर्ण तृप्त होगा पर एक कारण है कि मेरे घर छोटे २ बच्चे बहुत हैं मैं चाहती हूं कि उन सबको अपनी बहिन को सौंप आऊं तब लौटकर तुम्हारे पास आऊं यह मैं तुमसे प्रतिज्ञा करती हूं क्योंकि संसार में सत्यता के बराबर दूसरी वस्तु नहीं है देखो आकाश पृथ्वी सत्यता से थँभे हुये हैं यद्यपि उसने इस प्रकार विनय के बहुत वचन कहे पर निषाद ने न माना तब हरिणी अति भय खा बोली कि जो मैं अपने बच्चे सौंपकर तुरन्त तेरे पास न आऊं तो मुझे वही पाप हो जो वेद के विरुद्ध कर्म करनेवाले को और उस ब्राह्मण को जो तीनों समय की सन्ध्या नहीं करता और उस स्त्री को जो अपने पति के विपरीत कार्य करती है और द्वेष, ईर्षा, विरुद्ध कर्म, धर्म का छोड़ना और शिवपूजा का त्यागना विश्वासघात इत्यादि जो प्रसिद्ध पाप हैं वे सब प्रतिज्ञा छोड़ने पर मुझको हों और इसी प्रकार की और बहुत सी सौगन्दें खाईं और निषाद के सामने नम्र हो खड़ी रही सो निषाद ने हरिणी का वचन सत्य जाना व जाने की आज्ञा दी हरिणी जल पी अपने घर चली और निषाद प्रहर भर राततक उसके आने की बाट में जागता हुआ बैठा रहा संयोग से हरिणी की बहिन अपनी बहिन को ढूँढ़ते तटपर आ पहुँची जिसको देख फिर निषाद ने धनुष् खींचा तब बहुत से बेलपत्र गिरने से दूसरे प्रहर का शिवपूजन हो गया और निषाद

के असंख्य पाप छूट गये हरिणीने कहा कि हे वन के पशु! इस समय क्या कर रहे हो तो निषाद ने जैसा कि पहिले कहा था वर्णन किया हरिणी ने भय खा कहा कि हमारे बड़े भाग्य हैं क्योंकि यह शरीर नाशवन्त है यदि इससे औरों को आनन्द मिले तो इससे अधिक और क्या है पर विनय यह है कि मैं अपनी छोटी लड़की को अपने पति को सौंप कर लौटी आती हूं इस तरह बहुत विनती कर हरिणी ने बहुत सी सौगन्दें खाईं और कहा कि जो पाप प्रतिज्ञाभङ्ग करनेवालों और अपनी स्त्री छोड़ अन्य स्त्रियों के साथ रमण करनेवालों और वेदमार्ग छोड़ अपने मन के अनुसार चलनेवालों और विष्णु के भक्त होकर शिवनिन्दा करनेवालों और माता पिता की छाया देखनेवालों को होते हैं जिनका फल नरक है वह सब पाप मुझे लगें जो मैं प्रतिज्ञा के अनुसार लौट न आऊं निषाद ने कहा अच्छा तो हरिणी प्रसन्न हो पानी पी अपने घर गई और निषाद ने जागरण कर दो प्रहर रात के बिता दिये जब हरिणी देर तक न गई तो हरिण चिन्तित हो प्यास से व्याकुल आप भी चला जब नदी किनारे पहुँचा तो निषाद ने फिर अपना धनुष सीधा किया जिससे जल और बिल्वपत्र शिव के लिङ्ग पर गिर पड़े इससे उसका तीसरा पूजन भी होगया और हरिण ने निषाद को देखकर कहा कि तुम यह क्या करते हो निषाद ने वही पूर्व के समान वचन कहे जिसको सुन हरिण बोला कि मेरे धन्यभाग्य हैं कि तुम्हारे कुटुम्ब को तृप्त करनेवाला हूं देखो जो मनुष्य दूसरों का लाभ नहीं करते उन्होंने संसार में वृथा ही जन्म लिया पर मेरे घर में एक छोटी उमर का बच्चा है सो उसे मैं अपनी स्त्री को सौंपकर तुम्हारे पास आऊंगा निषाद ने कहा कि तुम्हारे समान और भी आये और

प्रतिज्ञा कर इस समय तक न लौटे मुझको उन्होंने बड़ा धोखा दिया है अब मैं तुझको नहीं छोड़ता क्योंकि मुझे निश्चय नहीं हरिण बोला कि मैं झूंठ नहीं बोलता क्योंकि संसार में सत्यता का बड़ा पद है मैं शपथ करता हूं कि मैं अवश्य ही तुम्हारे पास लौट आऊंगा जो लौट न आऊं तो जो पाप कि सन्ध्या के समय और दिन में स्त्री के भोग और शिवरात्रि व्रत रखकर भोजन करने और ब्राह्मण होकर सन्ध्या न करने से और वृक्ष से बिल्वफल तोड़ने और सामर्थ्य होने पर दूसरे की भलाई न करने और शिवपूजा बिन भोजनादि करने से होता है सब पाप मुझे लगें यह सुनकर निषाद ने कहा कि अच्छा घर में होकर शीघ्र हमारे पास आजाना हरिण पानी पी घर गया जहां हरिणी आदि इकट्ठे होकर अपना २ वृत्तान्त कह दुःखी हुये और सत्त्वधर्म में पड़कर पहिले वह हरिणी जो सबसे पहिले आई थी उसने अपने पति हरिण से कहा कि हमने पहिले प्रतिज्ञा की थी इस लिये मैं बधिक के पास जाऊंगी तुम दोनों घर में रहकर पुत्र को पालन करते रहना तब दूसरी हरिणी ने कहा कि नहीं मैं जाऊंगी क्योंकि पहिली स्त्री घर की स्वामिनी कहलाती है यह सुनकर हरिण बोला कि नहीं हम जावेंगे और अपने मांस से उसको प्रसन्न और तृप्त करेंगे क्योंकि बालक केवल माता से पल सक्ते हैं तुम दोनों घर रहो पर दोनों ने हरिण का कहना न माना और कहा धिक्कार है हम पर जो विधवा होकर घर में रहें निदान लड़ते झगड़ते हुये वे सब जहां पर कि बधिक था चले पीछे उनके बच्चे भी चले क्योंकि रक्षक बिन उन्होंने रहना उचित न जाना और कहा कि जो माता पिता की आस्था होगी वही हमारी भी होगी बधिक उन सबको आते देख अति प्रसन्नता से पहिले

की तरह तत्पर हुआ जिससे फिर भी पहिले की तरह जल और बेलपत्र शिवजी के लिङ्ग पर गिर पड़े और चौथा पूजन होगया जिससे बधिक के सर्व पाप नष्ट होगये और हरिण अपनी दोनों हरिणियों समेत बोला कि अब हमारे शरीर को शुद्ध करो और तुरन्त हमको मारो पर बधिक जिसके सर्व पाप जल गये और शिवपूजा के बल से उसे शुद्ध बुद्धि उपजी थी अतिदया से कहने लगा कि हे पशो! यद्यपि पशुओं को बुद्धि नहीं होती पर वे धन्य हैं कि अपने शरीर के भी नष्ट होने से दूसरों की भलाई पर तय्यार हैं और मैंने मनुष्य होने पर अपना जन्म जीवों के वध करने में बिताया और ऐसे २ पाप कर कुल की पालना की न जानिये मैं किस अवस्था को प्राप्त हूंगा मैंने कोई धर्म का काम नहीं किया मेरे जीने पर हज़ारों धिक्कार हैं निदान बधिक ने इसी चिन्ता से आंसू बहा अति दया कर ऊंचे शब्द से कहा कि हे शुद्धहरिणो! अपने घर जाओ तुम धन्य हो और तुम्हारा धर्म धन्य है और तुम अति शुभ हो यह वार्त्ता हो ही रही थी कि शिवजी अति प्रसन्न होकर वहीं आ प्रकटे और अपने हस्तकमल से बधिक का हाथ पकड़ कहा कि हम तुमसे अति प्रसन्न हुये हैं जो चाहिये वह हम से वर मांग लो तुमने शिवरात्रि व्रत रख अपने पापों को नष्ट कर डाला और हमने तुमको अपने भक्तों में गिना ऐसी वार्त्ता और ऐसा स्वरूप श्रीजगत्पिता सदाशिवजी का देख सुनकर निषाद जीवन्मुक्त हुआ और शिव के चरणों के आगे गिर पड़ा उसकी जिह्वा से केवल इतना वचन निकला कि सब पाया शिवजी अतिप्रसन्न हुये और दया से उसकी ओर देख उसके सब दुःख दूर कर दिये और उसका नाम स्कन्द रख उसको बहुत वर दिये और कहा कि हे निषाद! तुम अपने

कुल के राजा होगे और तुम्हारे मनोरथ पूरे होते रहेंगे अब तुमको कोई दुःख नहीं देगा तुम जाकर शृङ्गवेरपुर को अपनी राजधानी बना अतिसुखपूर्वक राज्य करते रहो तुम्हारे बहुत सन्तान होंगी जिसकी प्रशंसा देवता भी करेंगे और हमारे भक्त रामचन्द्र तुमको अपना सेवक जान तुम्हारे घर आवेंगे और तुम्हारे साथ प्रीति दृढ़कर तुमको बड़ा यश देंगे पर तुम हमारा भजन मत भूलना तुमको दुर्लभ मुक्ति प्राप्त होगी सो तुमको सर्व संसारी भोग भोगने के उपरान्त शिवपुरी मिलेगी इतने में शिव के दर्शन पाकर सब हरिणों ने मृगयोनि त्याग देवस्वरूप पाया और विमानों में आरूढ़ हो शाप से छूट देव-लोक को चले गये आज तक वे आकाश पर प्रकट होते हैं इस चरित्र के उपरान्त शिवजी अन्तर्धान होगये और लिङ्गस्वरूप से वहां स्थित हो व्याधेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये और अर्बुद गिरि जो प्रसिद्ध है उसी में यह शिवलिङ्ग स्थित है इस लिङ्ग के दर्शन पूजन से भक्ति मुक्ति मिलती है और व्याधा भी स्कन्द के नाम से जैसा कि शिव ने उसका नाम रक्खा था प्रसिद्ध होकर शिवजी की कृपा से शृङ्गवेरपुर में गया और वहां रहकर सब भीलों का राजा हुआ और शिवजी की कृपा से देवताओं के समान आनन्द करता रहा जब कि रामचन्द्र ने त्रेतायुग में अवतार लेकर उसको शिवभक्त जाना तो उसके घर में जाकर उसको प्रतिष्ठित किया और रामचन्द्र ने अति अनुग्रह कर उसको शिव की भक्ति कृपा की जिससे निषाद को शिवजी की सायुज्य मुक्ति प्राप्त हुई और वह तीनों लोक के दुःख सुख से छूट गया हे नारद! शिवरात्रिव्रत ऐसा है जिसको व्याध ने अज्ञानता में कर इस लोक में राज्य और परलोक में मुक्ति पाई यद्यपि शिवजी की सायुज्य मुक्ति ज्ञान विना नहीं मिलती पर

शिवरात्रिव्रत ने व्याध को बैपरिश्रम दे दी जो मनुष्य भक्ति से शिवरात्रिव्रत करेगा उसकी यही दशा होगी सब वेद और पुराणों ने विचार करके शिवरात्रिव्रत को सब व्रतों का राजा बताया है इसके समान कोई जप तप यज्ञ और व्रतादि शुभ कर्म नहीं जो इसको पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्दपूर्वक रहेगा हे नारद! और कथा सुनो।

पांचवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिस तरह से गुणनिधि ब्राह्मण ने शिवरात्रिव्रत कर आनन्द पाया है वह हम वर्णन करते हैं कि द्रुपदपुरी जो गङ्गा के तट पर है और जिसको कम्पिला भी कहते हैं वह पुरी अतिपवित्र है वहां शिव रामेश्वर के नाम से और शक्ति कालीश के नाम से विराजमान हैं वहां एक ब्राह्मण यज्ञ करनेवाला यज्ञदत्त नामी रहता था वह दीक्षित नाम से प्रसिद्ध हो शिव का बड़ा भक्त हुआ और राजा के द्वारा उसको बहुतसा धन और सम्पत्ति प्राप्त थी उसकी स्त्री भी बड़ी धर्मवती और गृहस्थी के कार्य में चतुर थी उनके एक पुत्र उपजा जिसका नाम गुणनिधि रक्खा और उसको बड़ा धर्म और विद्या सिखाई और उसका विवाह कर दिया थोड़े समय के अनन्तर गुणनिधि अयोग्य संगति से दुष्ट होगया और उसने वेद और पुराणों के सब कर्म छोड़ जुयें में अपने पिता का धन नष्ट कर दिया पर उसकी माता उसके दोष छिपा रखती थी और यज्ञदत्त इस बात को नहीं जानता था यद्यपि माता ने अति नम्रता और प्यार से गुणनिधि को उपदेश कर शुभमार्ग सिखाये पर उसने कुछ न माना धीरे २ गुणनिधि बड़ा व्यभिचारी, चोर, मद्यपी, चुगुल, मांसभक्षी होकर अपनी स्त्री को छोड़ परनारियों से विहार करने लगा यहां तक कि जितना राजा ने यज्ञदत्त को

धन दिया था वह सब गुणनिधि ने उड़ा दिया संयोग से एक दिन यज्ञदत्त ने अपनी अंगूठी किसी जुवारी के हाथ में देखकर उससे पूछा कि तुमने यह कहां से पाई है जुवारी ने क्रोध से कहा कि मैंने चोरी नहीं की तुम्हारे पुत्र से जुयें में पाई है तुम्हारा पुत्र जुवा खेलनेवालों में अद्वितीय है यह सुन यज्ञदत्त लज्जा से घर आये और अपनी स्त्री से पूछा कि गुणनिधि की क्या दशा है पर उसने प्रेम के कारण पुत्र का मुख्य वृत्तान्त छिपा रक्खा तब यज्ञदत्त ने कुश और पानी मांगा गुणनिधि के नाम से सोदक छोड़ दिया अर्थात् उसको त्याग दिया पर गुणनिधि की माता ने हाथ जोड़ नम्रतासे अपने पतिको इतना समझाया कि वह गुणनिधिको घर रखने में कुछ राज़ी हुआ पर जब गुणनिधिने अपने पिताकेक्रोध का यह हाल सुना तो रोते पीटते पिता के भय से भाग गया जब चलते २ थक गया तो बैठकर सूर्य के अस्त होने तक बराबर रोता रहा संयोग से वह शिवरात्रि का दिन था जैसे कि चारों वर्ण में ब्राह्मण और तारों में चन्द्रमा और नदियों में गङ्गा और शिवभक्तों में कृष्ण और वेदों में सामवेद और मन्त्रों में प्रणव और देवियों में शिवरानी और पुराणों में भारत है तैसे ही व्रतों में शिवरात्रि है निदान उस दिन एक शिवका परमभक्त शिवरात्रिव्रत धारण किये हुये असंख्य भक्तों को साथ लिये पूजा की बहुतसी सामग्री सहित उस मार्ग से आ निकला जहां गुण- निधि थककर बैठा था जो कि गुणनिधि बहुतही भूखा था उसने उत्तम २ व्यञ्जनों की सुगन्ध पाकर मन में यह बात ठहराई कि जब यह लोग खाने की चीज़ें शिवको चढ़ाकर अचेत होंगे तब मुझको उठाने का अवसर मिलेगा सो उन भक्तों के पीछे गुण- निधि भी चला शिवभक्तों ने शिवालय में पहुँचकर षोडशोपचार से शिवकी पूजा की और गुणनिधि अपने मनोरथ के लिये उन

सबकी पूजा देखता रहा शिवभक्त पूजाके उपरांत कुछ २ ऊंघगये गुणनिधि सबको सोता हुआ जान शिवालय के भीतर गया और धीरे २ पग रखते हुये चाहा कि शिवकी नैवेद्य उड़ाले और इस बातके लिये कि जिसमें भोजन देख कर चुरावे उसने अपने शरीर के वस्त्रसे एक टुकड़ा फाड़कर एक बत्ती बनाई और उस को जलाकर शिवके ऊपर से भोजनादि ले लिया और अतिहर्ष के कारण शीघ्रही शिवालय से बाहरको चला पर गुणनिधि के शीघ्र चलने के कारण उसका पांव किसी शिवभक्त के चरण में लग गया जिसने बड़ा शब्द किया और कहा कि चोर जाता है पकड़ो यह सुन नगर के रक्षक तुरन्त पहुँच गये और अपने बाणों से गुणनिधि को मारडाला और गुणनिधि और जन्म के पुण्य के कारण शिव की नैवेद्य खाने से बच रहा क्योंकि जो मनुष्य प्रसाद छोड़ शिवकी नैवेद्य खाते हैं उनको बड़ा दुःख होता है जैसा कि सब वेद और पुराण इस बात को लिखते हैं निदान यमराज के गणों ने आकर गुणनिधि को बांधकर चाहा कि यमराज के सामने लेजावें उसी समय शिव ने अपने गणों को बुला सब वृत्तान्त के बताने के अनन्तर आज्ञा दी कि गुणनिधि को यमराज के प्यादों के हाथ से छुड़ा दो हमारे पास लावो क्योंकि उसने शिवरात्रि व्रत करके हमारी पूजा अपनी आंखों देखी और हमारी नैवेद्य खाने से बचा रहा हमने उसको अपना सेवक कर लिया अब वह नरक में नहीं जा सक्ता वह व्रत सब व्रतों से मुझे प्यारा है मुख्य करके जो शिवरात्रि के दिन हमारा पूजन देखता है वह सबसे मुझे प्रिय है उसने दीपक जला हमारे ऊपर अपने हाथ से आरती उतारी इस समय वह कलिङ्गदेश का राजा होकर फिर हमारे यहां आवेगा और निधिनाथ होकर हमारे मुख्य मित्र के नाम से

विख्यात हो आनन्दपूर्वक रहा करेगा सो शिव के गणों ने जाकर गुणनिधि को यम के दूतों से वार्त्तालाप कर छीन लिया और शिव के समीप लेगये गुणनिधि कलिङ्ग का राजा होकर दम के नाम से प्रसिद्ध हुआ फिर शिव की कृपा से निधिपति हो शिव का निजमित्र होगया इतना कहकर श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद! कदाचित् यह व्रत भूल से भी होजावे तो भी इतना फल मिलता है जितना कि ऊपर कहा गया॥

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब और भी शिवरात्रिव्रत का माहात्म्य सुनिये पूर्वकाल में सौमाणि नाम एक ब्राह्मण की कन्या अतिसुन्दरी हुई उसके पिता ने एक ब्राह्मण के साथ उसका विवाह कर दिया सो दोनों स्त्री पुरुष नाना प्रकार के विहार करने लगे संयोग से उसका पति युवावस्था में मर गया पति के मरने के पीछे सौमाणि थोड़े समय तक उत्तम रीति से कालक्षेप करती रही निदान फिर उसको कामदेव ने सताया सो वह कामदेव की ज्वाला न सहकर पुंश्चली होगई जाति के मनुष्यों ने उसको अपनी पंक्ति से उठाकर घर से निकाल दिया फिर तो वह स्त्री स्वाधीन होकर भ्रमण करती वरन जो मन में आता वह करती थी एक दिन वह वनमें पर्यटन कर रही थी कि एक शूद्र उसको अपनी स्त्री बनाकर अपने घर लेगया और सौमाणि मांस खाने और मद्य पीने लगी और उसके बहुत सन्तान उपजीं एक दिन उसका पति कहीं चलागया तो सौमाणि ने मद्य पी और मद्य में मांस खाने की इच्छा से गोशाला में जहां बहुत से बकरे भी रहा करते थे गई रात्रि होने के कारण उसने एक बछरे को बकरा समझा और जब कि उसको मारकर घर लाई तब उसने जाना कि यह बकरा नहीं है वरन

बकरा है उसने मुख से शिव २ कहा पर क्षणमात्र में उसको पकाकर खा लिया निदान मरने के पीछे थोड़े समय तक नरक में रहकर एक चाण्डाल के घर उपजी वह जन्म की अन्धी उपजी और उसके माता पिता मरगये और अन्धी होने से और किसी बान्धव बिना मारी २ फिरने लगी और यह भी कि उसके कुष्ठ का रोग उत्पन्न होगया वह रात दिन अतिकष्ट से शरण २ पुकारने लगी और जो कुछ चाण्डालों का जूठा भोजनादि पाती उससे अपने दिन काटती जब कि फाल्गुन कृष्ण की चतुर्दशी को गोकर्णक्षेत्र में लोग मेले के लिये गये तो उस समय वह अन्धी कोढ़िन भी भोजनादि पाने की आशा से यात्रियों के पीछे २ हो मांगती खाती हुई गोकर्णक्षेत्र में पहुँची और सब मेलेवालों से दोनों हाथ बढ़ा भिक्षा मांगने लगी एक शिवभक्त ने एक मुट्ठी बिल्वपत्र की उसके हाथ में फेंक दी जब अन्धी ने जाना कि, यह भोजन की वस्तु नहीं है तो उसने उसे क्रोध कर फेंक दिया संयोगसे वह बिल्वपत्र शिवजी के लिङ्ग पर गिरे वह शिवरात्रि का दिन था शिवजी ने जाना कि हमारी पूजा अन्धी ने की है वह इसी तरह रात भर मांगती रही पर भाग्यवश किसी ने उसको कुछ न दिया जिससे शिवने जाना कि इसने हमारा व्रत निर्जल रख रात जागरण में बिताई है जब प्रभात को सब मेलेवाले चले गये तो वह अन्धी चाण्डालिनि भूखी प्यासी धीरे २ चलकर बहुत दिनों में अपने देश पहुँची और पृथ्वी में गिरकर मरगई शिवजी ने अपने गणों को बिमान समेत उस स्त्री के लेने को भेजा जब शिवजी के गण आये तो गौतममुनि जो संयोग से वहां उपस्थित थे उन्होंने भेद पूछा सो गणों ने सर्ववृत्तान्त बतलाया और वह गण उस चाण्डालिनि को बिमान पर चढ़ाकर

शिवपुरी को लेगये जहां वह मुक्ति पा जगदम्बा की सखी हुई हे नारद ! शिवरात्रिव्रत इसी प्रकार का फल देनेवाला है सब शास्त्रों का वचन है कि शिवरात्रि सर्वकार्य सिद्ध करती है इसी व्रत को राजा मित्रसह कर ब्रह्महत्या के पाप से छूटा इस चरित्र के पढ़ने और सुननेवाला दोनों लोक में प्रसन्न रहता है और इस व्रत के प्रताप से सर्वपाप नष्ट होजाते हैं।

सातवां अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि राजा मित्रसहने जिस प्रकार शिवरात्रिव्रत करने से बड़ा पद पाकर मुक्ति पाई वह शिव-चरित्र कहिये ब्रह्मा बोले हे नारद ! शिवरात्रिव्रत की महिमा सबसे अधिक मुक्ति देनेवाली है फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को व्रत करना और जागरण और शिवस्वरूप का दर्शन और पूजन और बेलपत्र का चढ़ाना बहुत बड़ाई रखता है दूसरा कोई पदार्थ इसके समान जल्दी मोक्षदाता नहीं है दशहज़ार वर्ष गङ्गाजी का स्नान भी शिवव्रत के बराबर नहीं है जितने संसार में शुद्ध दिवस हैं वह सब शिवरात्रि के दिन शिवरात्रि में स्थित होते हैं और विष्णु और हम और सनकादिक और देवता और वेद आदि पुराण सब शिवरात्रि की महिमा के वर्णन करने में सम्मति रखते हैं शिवरात्रिव्रत सौ यज्ञ करनेकेसमान है शिवरात्रि व्रतसे और जागरणसे बड़ा फल होता है इसमें बड़ी श्रेष्ठता है क्योंकि करोड़वर्ष के तपसे भी उसका पद बड़ा है और जो एक बेलपत्र सेभी शिवजीकी पूजा करे तो उसके समान और कोई बात मुक्ति देनेवाली नहीं है इसी पर हम एक इतिहास कहते हैं जैसा कि बेलपत्र के चढ़ाने से सर्व पाप दूर होगये कि राजा मित्रसह वैवस्वतकुल में बड़ा धर्मवान्, सर्व शास्त्र, वेद और पुराणों का जाननेवाला, वीर, नीतिमान्, दयावान्, महाशक्तिमान्, महा-

तेजवान्, सब पृथ्वी का स्वामी, ब्राह्मणों का सेवक, सुन्दर और शुभकर्मकर्ता राजा हुआ उसकी स्त्री मदयन्ती राजा नल की स्त्री दमयन्ती के समान पतिव्रता थी एक दिन राजा सेनासहित वन में आखेट को गया उसने बहुत से जीव मारे और उसको शिकार में इतना प्रेम बढ़ा कि उसने समय तक अपनी राजधानी को लौटकर अपनी प्रजा का हाल भी न लिया संयोग से उसी वन में राजा ने एक कमठनामी निशिचर को मारा जिसके भाई को अपने भाई के मरने से बड़ा दुःख हुआ वह इस इच्छा से कि राजा से बदला लेना चाहिये मनुष्यस्वरूप धार राजा का सेवक होगया जब राजा शिकार खेल लौटकर घर आया और अपने गुरु को बड़े धूमधाम से निमन्त्रण दिया तो कमठ ने रसोईदार होकर छल से मनुष्य का मांस तरकारी में मिलाकर गुरु के आगे परसा सो गुरु ने इस बात को जानकर राजा को शाप दिया कि तुम बारह वर्ष तक राक्षस रहोगे राजा ने अपनी निर्दोषता स्मरण कर चाहा कि वह भी गुरु को शाप दे पर रानी ने बर्जा राजा राक्षस होकर कल्माषपाद के नाम से प्रसिद्ध हुये और बहुत से जीवों को भक्षण करने लगे एक दिन उसने एक युवा ब्राह्मण को जो अपनी स्त्री के साथ भोग करता था पकड़ा यद्यपि ब्राह्मणी ने बहुत बिनती कर समझाया पर राजा ने कुछ न सुनकर तुरन्त उसका शिर तोड़कर खालिया स्त्री ने सती होने के समय राजा को शाप दिया कि जब तू अपनी स्त्री से भोग करेगा उसी समय तुरन्त मर जावेगा स्त्री तो सती होकर दूसरा शरीर धर अपने पति से जा मिली और राजा ने भी बारह वर्ष बीतने पर पूर्ववत् मनुष्य हो चाहा कि अपनी स्त्री से मैथुन करें पर रानी ने न माना तब राजा ने मैथुन बिना अन्य संसारी भोगों को वृथा समझ वन में

चला गया वहां एक मुनि के उपदेश से तीर्थयात्रा करने लगा और जनकपुर में गौतममुनि से भेंटकर कहा कि मुझको ब्रह्महत्या लगी है जिससे मैं दुःखी हो भ्रमण करता हूं मैंने सब उपाय किये पर वह दूर नहीं होती गौतम ने राजा की विनय और नम्रता देख कहा कि कुछ संशय मत करो तुम सदाशिव की पूजा करो कोई पाप न रहेगा पश्चिमी समुद्र के तीर गोकर्णक्षेत्र में जाकर महाबलनाम शिवलिङ्ग की पूजा करो और वहां शिवरात्रि व्रत करो और हम इस समय वहां से आते हैं सो मित्रसह चलकर गोकर्ण में पहुँचा और महाबल शिवलिङ्ग के पूजने और गोकर्णक्षेत्र में नहाने और शिवरात्रि व्रत के करने से सब पापों से शुद्ध होगया और अपनी राजधानी में पहुँचकर रानी सहित भोग भोगने लगा और मरने के उपरान्त शिवजी का गण हुआ हे नारद ! शिवरात्रि व्रत इतना मुक्ति देनेवाला है जो इस चरित्र को प्रति दिन सुने वा पढ़े उसकी इक्कीस पीढ़ी पर्यन्त मुक्ति होती है यह इतिहास बहुतही पवित्र है।

आठवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम चौदशव्रत का माहात्म्य वर्णन करते हैं जिससे प्रकट होगा कि जो यह व्रत अज्ञानता में भी होजावे तो उत्तम फल मिलता है कि पूर्वकाल में किरातदेश का राजा विमर्षण हुआ वह बड़ावीर, धीर, बलवान्, जीवों का हिंसक, कठोरचित्त, दुष्ट, अन्यायी, नीच, सब जीवों के मांस का खानेवाला, कामी, क्रोधी और सब वर्णों की स्त्रियों से भोग करनेवाला जिसको व्यभिचार के सिवाय और कोई कर्म उत्तम न भासता यद्यपि वह राजा इतना कुमार्ग चलनेवाला था पर तौभी वह चौदश के व्रत को बहुत प्रिय जानता था वह दोनों पक्षों की चतुर्दशी में शिवजी की पूजा करता यद्यपि वह प्रति दिन शिवजी की पूजा करता

पर चतुर्दशी के दिन बड़े उत्सव से शिवजी को पूजता था उस दिन वह आप शिवजी के सामने नाच गान कर सबको दान देता और उसकी रानी जिसका नाम कुमुद्वती था बड़ी शीलवती और कलावान् थी उसने अपने पति को इतने अधर्मों में लगे हुये देखकर कहा कि कहां तुम्हारे यह काम और कहां शिवजी की पूजा यह दोनों कर्म एक ही शरीर से सम्बन्ध नहीं रखते तुम प्रति दिवस मांस खाते हो और सब प्रकार की स्त्रियों से भोग करते हो और सब जीवों को वधकर अन्याय से काल बिताते हो मुझको बड़ा संशय है कि ऐसी दशा पर तुमने शिवजी की प्रीति कहां से सीखी मैं चाहती हूं कि तुमसे इस बात का मुख्य हेतु सुनूं राजा ने रानी का यह वचन सुन हँसकर कहा कि मैं पूर्वजन्म में कुत्ता था और प्रति दिन पम्पापुर में फिरा करता था मेरा जन्म भूखे प्यासे और दौड़ते हुए कष्ट पाया संयोग से एक दिन शिवजी के भक्तों का समूह शिवालय में जाकर बड़े प्रेम से पूजा करता था मैं भूखा दूर से खड़ा हुआ यह चरित्र देखने लगा मुझको शिवजी के भक्तों ने देखकर मारा मैं तुरन्त वहां से भाग गया और मैं बहुत भूंकता था फिर मैं छिपे २ पिण्ड आदि भोजन की वस्तुओं के लोभ से उसी शिवालय के किनारे आया बहुत बेर शिवालय के चहुँ ओर फिरता रहा और छिपे २ भोजन पाने के लोभ से शिवजी की पूजा देखता रहा एक मनुष्य ने अति क्रोध से एक बाण मुझ पर चलाया सो शिव की पूजा देखते २ बाण लगकर मर गया और जो कि शिव को देखते हुये मैं मरा था इससे राजा हुआ मैंने चतुर्दशी का पूजन और दीपों की माला देखी थी उसी दिन से मैं गत वर्तमान और भविष्य के सब हाल जान गया और जो कि मैं सब भक्ष्याभक्ष्य वस्तु खाता हूं तो यह

बात पूर्वजन्म के संस्कार से कि मैं कुत्ता था क्योंकि प्रकृति का मिटना कठिन है इससे सब चतुर्दशी के दिन मैं पूजा करता हूं जिससे मेरे सब कार्य शुभ होते हैं हे रानी! तुम भी शिव की पूजा किया करो स्त्री ने फिर पूछा कि हे राजन्! तुम तीनों काल को जानते हो मैं चाहती हूं कि आप मेरे पूर्वजन्म का वृत्तान्त वर्णन करें राजा बोले कि पूर्वजन्म में तुम कबूतरी थीं एक दिन तुमको एक मांस का टुकड़ा मिला जिसको लेकर तुम आकाश की ओर उड़ीं सो एक गृध्र ने तुमको देखकर तुम्हारा पीछा किया और तुम प्राणों के भय से भागती २ श्रीगिरि शिवालय के ऊपर बैठ गईं गृध्र ने पहुँचकर मांस का टुकड़ा छीन तुमको इतना घायल किया कि तुम गृध्र के उड़ जाने के अनन्तर शिवालय से गिरकर मर गईं तुमने मरने के समय शिव का लिङ्ग देखा इससे तुम इस जन्म में हमारी रानी हुईं जब रानी ने अपने पहिले जन्म का वृत्तान्त राजा से सुना तो उसको शिव की भक्ति बहुत बढ़ी कहा हे राजन्! अब अपनी और हमारी भविष्य कहो कि मुझे भरोसा हो यह सुन राजा बोले कि हम दूसरे जन्म में सिन्धु के राजा होंगे और तुम राजा संजय की पुत्री होकर हमारे साथ ब्याही जाओगी और तीसरे जन्म में हम राजा सौराष्ट्र के पुत्र होकर तुम्हारे साथ जो कलिङ्गदेश के राजा की कन्या होगी विवाह करेंगे चौथे जन्म में हम राजा गान्धार होकर तुमको जो मगधदेश के राजा की लड़की होगी व्याह लावेंगे पांचवें जन्म में हम उज्जयिनी के राजा और तुम राजा दशारण्य की पुत्री होकर हमारी रानी होगी छठे जन्म में हम आनर्त के राजा और तुम ययाति के कुल में उपजकर हमारी जाया होगी सातवें जन्म में पाण्डव देश के राजा होकर पद्मवर्ण के नाम से प्रसिद्ध होंगे और तुम

राजा वैदर्भ के घर जन्म लेकर वसुमती के नाम से प्रसिद्ध होगी और जब तुम्हारा पिता स्वयंवर रचेगा उसमें हम तुमको सब राजाओं से जीतकर लेआवेंगे और शिव की पूजा में हम दोनों लगे रहकर भोग विलासकर सन्तानवान् होंगे फिर पुत्रको राज्य दे हम दोनों वन में जाकर अगस्त्य मुनि से ज्ञान पाकर तुम्हारे समेत शिवपुरी में पहुँचेंगे और शंकर सदाशिवजी के गणों में मिले जावेंगे हे रानी! यह चतुर्दशीव्रत करके हम सात जन्म तक राजा होते रहेंगे सो इसीप्रकार की वार्ता बहुत देर तक करके अपनी शेष आयु शिवपूजन और चतुर्दशीव्रत में बिताई और सातवें जन्म में शिवपुरी पाकर मुक्ति होगी ऐसी शिवव्रत की महिमा है इस चरित्र के पढ़ने सुनने से दोनों लोक में अति सुख प्राप्त होता है।

नवाँ अध्याय ।

त्रयोदशीव्रत का माहात्म्य ।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम प्रदोषव्रत का वर्णन करते हैं कि प्रदोषव्रत शिवजी को बहुत प्रिय और सब बड़े मनोरथों का देनेवाला है वह स्त्री पुरुष धन्य हैं जो इस व्रत को करते हैं उचित है कि सब महीनों के दोनों पक्षों में त्रयोदशीव्रत करके निर्जल रहे सो इस व्रत का विधान ऐसा है कि प्रभात को स्नानकर नित्य क्रिया और सदाशिवजी की पूजा करे उस समय कोई संसारी कार्य न करना चाहिये जब तीन घड़ी दिन शेष रहे तो सामर्थ्य के अनुसार आप फिर स्नान करे और मौन साध श्वेत अम्बर पहिने और संध्या का जप करके शिवजी का ध्यान करे और सदाशिवजी की प्रेम के साथ परिपूर्ण पूजा करे और पूजा की सब चीजें इकट्ठी कर शिवजी को प्रसन्न करे और यथाशक्ति शिवजी की पूजाकर मन में अति प्रसन्न होवे और अपने सर्व

परिवार सहित सदाशिवजी की पूजाकर स्तुतिपूर्वक दण्डवत् करे और प्रदोषकाल में शिवजी की पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर उनको दान दक्षिणा दे और उनसे आज्ञा लेकर आप भी हविष्य अर्थात् लवण विना खावे इसके समान दूसरा व्रत और दूसरी शिवजी की पूजा नहीं है ऐसी शिव पूजा सर्वपापों की क्षय करनेवाली और सब मनोरथों की देनेवाली और छोटे बड़े पापों को दूर करनेवाली है जो शिवपूजा प्रदोषकाल में करे तो सौ ब्रह्महत्या का पाप दूर होजाता है जो तेरसि व्रत में भोजन करते वे दोनों लोक में सुखी रहते हैं जो मनुष्य तेरसि का व्रत करता है उसको कोई आपदा नहीं सताती और प्रदोषकाल में शिवजी की पूजा अति आनन्द देनेवाली है यह बात वेद और पुराण कहते हैं और यह बात लोक में अतिप्रसिद्ध है और मुनि भी इस बात को मानते हैं प्रदोषव्रत से दरिद्रता और पाप दोनों दूर होजाते हैं इस पर हम एक विचित्र कथा वर्णन करते हैं जिसके सुनने से शिवजी की भक्ति बढ़ती है पूर्वकाल में राजा चन्द्रसेन नाम उज्जयिनी का राजा शिवजी का बड़ा भक्त हुआ वह बड़ी प्रीति से सदा त्रयोदशीव्रत कर उस दिन बड़ा उत्सव करता और प्रदोषकाल में तेरसि के दिन शिवजी की पूजा करता जिससे वह सदा सुखी रहा करता था और महाकाल लिङ्ग की पूरी पूजा करता सो एक दिन मणिभद्र नाम शिवजी के गण ने राजा से प्रसन्न होकर और उसके साथ प्रेम बढ़ा अति प्रसन्नता से उसे चिन्तामणि कृपा की उस रत्न में यह गुण था कि जिसके पास वह हो या जो मनुष्य उसे देखे या उसको स्पर्श करे अथवा उसका स्मरण करे तो वह मनुष्य सर्व आपदाओं से छूट अप्रमेय आनन्द उठावे और उसके स्पर्श से सर्व प्रकार की धातु सुवर्ण होजाती थी उसके

धारण करने से राजा सूर्य के समान तेजस्वी हुआ जब पृथ्वी भर के राजाओं ने यह बात जानी तो उन सबने बहुत हठ से उसको मांगा पर राजा ऐसे बहुमूल्य रत्न को कब किसी को देता था क्योंकि जो वस्तु किसी देवता से प्राप्त हो वह देने के योग्य नहीं होती सो सब राजाओं ने इकट्ठे होकर राजा उज्जयिनी पर चढ़ाई की और चारों ओर से दौड़कर उज्जयिनी को घेर लिया और रातभर नगरभर को दुःख देते रहे प्रभात को तेरसि थी राजा अति प्रेम से महाकाल शिव की पूजा को गया और जब तीन घड़ी दिन शेष रहा तो प्रदोषकाल पाकर राजा महाकाल की शरण में जाकर उसी समय पूजा की संयोग से एक स्त्री पांच वर्ष का लड़का गोद में लिये हुये वहां आई और राजा की पूजा देखते ही जब वह स्त्री घर आई तो बालक को इतना प्रेम हुआ कि उसने एक शिला स्थापितकर जिस तरह कि राजा को पूजन करते देखा था उसी तरह आप भी पूजा करने लगा माता ने उसे भोजन के निमित्त दो तीन बेर बुलाया पर वह पूजा छोड़ न गया तब उसकी माता क्रोध में लड़के को मारपीट हाथ पकड़कर घर में खींच लाई और शिवलिङ्ग को दूर फेंक दिया लड़का हाय २ कह और रो पीट कर मूर्च्छित होगया सो बालक ने उस मूर्च्छावस्था में एक रत्नों का भरा हुआ शिवालय और उसके मध्य में रत्नों के सिंहासन पर रत्नों का शिवलिङ्ग देखा और शिव की महिमा जानकर बहुत स्तुति की और कहा कि मेरी माता मूर्ख है उसका अपराध क्षमा करो जब कि सन्ध्या को वह अपने घर गया तो देखा कि इन्द्रलोक के समान वह नगर होगया जिसके मन्दिर सुनहरे और सब रत्नों से जड़े हैं उन सबै मन्दिरों में से उसकी माता का मन्दिर सबसे अधिक प्रकाशमान है जिसके भीतर

रत्नों की शय्या पर उसकी माता सोरही है उसने अपनी माता को जगाया जब माता ने यह विचित्र चरित्र देखा तो अति प्रसन्न हुई पुत्र ने कहा कि यह सब शिव की कृपा कटाक्ष से है कुछ आश्चर्य की बात नहीं है और राजा ने इस विचित्र वृत्तान्त को सुन पूजा को पूरी कर उस स्त्री के मन्दिर को देखने गया और बालक के साथ प्रेम बढ़ा गोपी स्त्री की बहुत प्रशंसा की और सब राजा लोग शिव की इतनी कृपा देख राजा से मित्रता कर अपने २ नगरों को सिधारे।

दशवां अध्याय।

नारदजी के प्रश्न करने के उपरान्त ब्रह्मा बोले कि चन्द्रसेन की शेष कथा यह है कि यद्यपि सब राजाओं ने उज्जयिनी को चारों ओर से घेर रक्खा था पर ऐसे चरित्र के होने पर सबके मन में कुछ भी भय न हुआ और रात्रि क्षणवत् बीती और सब राजाओं ने अपने दूतों से इस विचित्र चरित्र को सुन अचम्भे में चित्रवत् चुप होगये और कि जहां पर सदाशिवजी ऐसे प्रसन्न हैं वहां हमारी क्या चलसक्ती है यह विचार कर राजाओं ने हथियार पृथ्वी पर डाल दिये और राजा चन्द्रसेन के समीप जाकर उनके महाकाल के दर्शन किये फिर गोपी के घर में जाकर गोपी की अति प्रशंसा की और उसके पुत्र के स्थापित किये हुये लिङ्ग को देखा और सभा करके सब राजाओं ने बालक से भेंट किया और उसको असंख्य धन दे गोपों का राजा बनाया उस समय श्रीहनुमानजी ने वहां प्रकट होकर सबको दर्शन दिया सब राजाओं ने उठकर दण्डवत् कर स्तुति की हनुमानजी ने बालक को गोद में उठा लिया और उसके शरीर भर में हाथ फेरकर कहा कि हे सब राजाओ! चन्द्रसेन के ऊपर शिवजी प्रसन्न हैं तुम कोई इनसे वैर न करना और महाकाल

उसके ऊपर अति प्रसन्न हैं शिव ने तेरसिव्रत के माहात्म्य प्रकट होने को यह सब चरित्र किया है तुम सबको उचित है कि आज से तुम भी शिव के भक्त होजाओ तेरसिव्रत सब व्रतों का राजा है उसके समान और कोई व्रत नहीं है मुख्य करके जब शनैश्चर के दिन तेरसि हो तो अतिश्रेष्ठ है और कृष्णपक्ष की त्रयोदशी अतिपवित्र है जो ऐसा योग पाकर कोई मनुष्य महाकाल की पूजा करे तो लोक में प्रसन्न रहकर अन्त में मुक्ति पावे देखो इस बालक ने इस कारण कि कृष्णपक्ष की चतुर्दशी शनैश्चर को शिवजी की पूजा की और ऐसे पद पर पहुँचा इसकी आठवीं पीढ़ी में नन्दनाम अहीरों के राजा होकर उनके घर विष्णु अवतार लेंगे आज से इस बालक का नाम श्रीकर होगा तुम सब अपने २ घरों में जाकर तेरसि का व्रत रक्खो और शिव की पूजा में मन लगाओ और भस्मादि धारणकर प्रदोषव्रत में प्रदोषकाल के भीतर शिवजी की पूजा किया करो फिर हनुमान्जी ने श्रीकर को शिव पूजा की विधि सुनाई और पहिले नाम माहात्म्य सुनाकर भस्म धारण की रीति बताई फिर रुद्राक्ष की महिमा सुनाकर अन्तर्धान हुये और सब राजा चन्द्रसेन से आज्ञा लेकर अपने २ घरों को चले गये और श्रीकर ब्राह्मण के साथ पूजा करता रहा और सदा तेरसि का व्रत करने लगा और चन्द्रसेन और श्रीकर शिव के भक्तों में प्रसिद्ध और तेरसि व्रत करनेवालों में बड़े विख्यात हुये और उन्होंने तेरसिव्रत का माहात्म्य संसार में चारों ओर प्रसिद्ध कर दिया और दोनों लोक में प्रसन्न रहकर अन्तकाल में मुक्ति पाई हे नारद ! तेरसिव्रत की ऐसी महिमा है जो इस कथा को पढ़े सुनेगा उसको अवश्य ही मुक्ति मिलेगी और यह त्रयोदशी का चरित्र सब बड़े मनोरथ देनेवाला है ।

ग्यारहवां अध्याय।

नारद के पूछने पर फिर भी ब्रह्मा त्रयोदशीव्रत को कहने लगे कि हे नारद! धन्य वही पुरुष है जो शिव का ध्यान करता है क्योंकि ऐसा मनुष्य संसार में प्रसन्न रहकर मरने के पीछे मोक्ष पाता है शिव सबके गुरु और प्राण और मित्र और बान्धव और पिता हैं जो मनुष्य सब धर्म छोड़ शिवजी को भजता है उसके सब संसारी कर्म छूट जाते हैं वही जिह्वा, कान, हाथ, आंख, शिर, पांव हैं जो शिव के गुण कहें व सुनें वा उसको देखें अथवा पूजन दण्डवत् करें अथवा शिव के तीर्थों की यात्रा करें वही शिव के भक्त हैं शिव को भक्ति सबसे प्रिय है मुख्य करके जो मनुष्य त्रयोदशी का व्रत करता है वह तो सब भक्तों से शिवजी को प्यारा है इस व्रत के करने से शिव का प्रेम बढ़ता है ऐसे मनुष्य को सदाशिव सर्व प्रकार की सिद्धि कृपा करते हैं इस व्रत में केवल सदाशिवजी की पूजा प्रदोषकाल में अवश्य है सिवाय शिवजी के और कोई उस समय उस व्रत में पूजा के योग्य नहीं क्योंकि केवल शिवपूजा से और सब देवता प्रसन्न होजाते हैं जो मनुष्य प्रदोष व्रत करता है वह किसी दशा और समय में दरिद्री नहीं हो सक्का वह मनुष्य सर्व सम्पदा पाकर उत्तम कुल और श्रेष्ठ सन्तान पाता है और जो मनुष्य प्रदोषकाल में शिव की पूजा नहीं करते वे सदा दरिद्री रहा करते हैं शिव की पूजा प्रदोषकाल में सबसे श्रेष्ठ है उसके करने से अति आनन्द प्राप्त होता है और प्रदोषकाल में सब देवता शिवजी की सेवा में पहुँचते हैं और शिव शिवरानी सहित उत्तम आसन में स्थित होते हैं और सब देवता विष्णु और हम शिव के आगे भजन करते हैं इस तरह पर कि विष्णु मृदङ्ग बजाते हैं और हम करताल बजाते हैं और श्रीसरस्वती

देवी वीणा बजाती हैं और लक्ष्मी गाना गाती हैं और तुम भी वीणा बजाते हो इसी प्रकार नाना प्रकार की लीलाओं से शिव और शिवरानी को रिझाते हैं बाकी और जितने देवता उप-देवता हैं वह सब सेवा में खड़े रहते हैं उस समय कोई देवता अपने लोक में नहीं रहता सब शिवलोक में जाकर शिव की सेवा में लगे रहते हैं इससे उचित है कि ऐसे समय में सिवाय शिवजी के और कोई देवता पूजा के योग्य न समझे उस समय केवल सदाशिवजी की पूजा से और सब देवता प्रसन्न होते हैं कोई देवता क्रोध नहीं करता कदाचित् कोई मनुष्य उस समय किसी अन्य देवता की पूजा करता है तो वह देवता पूजनेवाले पर अति कोपित होता है उचित है कि प्रदोषकाल में सब कार्यों को छोड़ शिवकी सेवा में जावे कोई मनुष्य चाहे कैसा ही रोग और दुःख में पड़ा हो जो प्रदोपकाल में सदाशिव की पूजा करे तो वह अवश्य ही आनन्द पावेगा इस पर हम एक विचित्र व्याख्यान कहते हैं कि दक्षिण के देश में जो देश वैदर्भ के नाम से प्रसिद्ध है वहां का राजा सत्यरथ नामी बड़ा धर्मात्मा हुआ वह सत्यवक्ता, शीलवान्, क्रियावान्, दयावान् और शिव का बड़ा भक्त था उसने अति दया कृपा और धर्म और न्याय के साथ राज्य किया उसके राज्य में कोई दुःखी न था बहुत समय बीतने पर राजा शाल्व ने जो सत्यरथ का शत्रु था सत्यरथ के नगर को घेर लिया दोनों में बड़ा युद्ध हुआ जिसमें सत्यरथ मारा गया और उसकी सेना और रानी सब भाग गये रानी रातभर भागती हुई प्रभात को पूर्व की ओर एक तालाब पर बैठ गई जहां उसके एक पुत्र शुभलग्न में उपजा और वह प्यासके वेगसे नदीके तट पर गई चाहा कि पानी पी प्यास बुझाऊं कि एक मगर ने उसको पकड़ निगला और वह बालक

उस दशा में रोता हुआ क्षुधा तृषा से विकल हुआ उसके रोने पीटने पर शिव को दया आई सो जहां वह बालक पड़ा था वहां एक ब्राह्मणी स्त्री जो विधवा थी आई और बालक को अकेले देख आश्चर्य में हुई और कहा कि मैं नहीं जानती कि यह किस जाति का बालक है उस समय सदाशिव ने भिक्षुक ब्राह्मण का रूप धर ब्राह्मणी के पास आकर कहा कि तुम संशय छोड़ इसको पालो इस बालक से तुमको बड़ा सुख प्राप्त होगा यह पहिले जन्म में राजा का पुत्र था यह त्रयोदशी व्रत में नगर में उत्पात होने के कारण हमारी पूजा छोड़ नगर के समाचार लेने को चला गया और अपने शत्रु को बांध इसने अपने हाथ से उसका शिर काट डाला और उसी अशुद्ध दशा में हमारी पूजा छोड़ भोजन किया इससे वैदर्भ राजा के यहां उपज कर इस कुदशा को प्राप्त हुआ है ब्राह्मणी! त्रयोदशी-व्रत के त्यागने से किसी मनुष्य को सुख नहीं मिलता और इसकी माता ने पहिले जन्म में अपनी सवति को बड़े छल से मार डाला इसी से उसको मगर ने नदी में खा डाला और तेरा पुत्र जो तेरे साथ है इसने पूर्व जन्म में कुधान्य दान लिये इससे इसकी ऐसी अवस्था हुई तुमको उचित है कि दोनों बालकोंसे शिवकी पूजा कराकर संसारी सर्व प्रकार की धन सम्पत्ति पा अंत में मुक्त हो जावो यह कह शिव ने अपने मुख्य रूप और लक्षणों से ब्राह्मणी को दर्शन दिया ऐसा अनूप रूप सदाशिव का देख ब्राह्मणी ने दण्डवत् और स्तुति की फिर शिव अन्तर्धान हो गये।

बारहवां अध्याय।

नारद के पूछने पर ब्रह्मा बोले कि सदाशिवजी के अन्तर्धान होने पर ब्राह्मणी उस बालक को उठाकर अपने पुत्र सहित

अपने घर आई और चक्र नाम नगरी में रहने लगी वह दोनों बालकों को ले भिक्षाटन कर उनको पालती जब दोनों कुछ युवा हुये तो उन्होंने दीक्षा पाकर सब विद्याओं को सुगमता से पढ़ा एक दिन दोनों बालकों ने शाण्डिल्य मुनि को शिष्यों सहित शिव के गुण वर्णन करते हुये देखा और शाण्डिल्य मुनि से मन्त्र पा शिव की पूजा करने लगे और शाण्डिल्य मुनि के उपदेश के अनुसार प्रदोष व्रत करने लगे जब चार मास बीते एक दिन दोनों स्नान के निमित्त नदी के तट पर गये और स्नान कर शिव ध्याना किये हुये अपने घर लौटे आते थे कि शिव प्रसन्न हुये और उनको मार्ग में धन का भरा हुआ घट मिला उसको लेकर उन्होंने माता के सम्मुख रख दिया माता ने कहा कि तुम दोनों बराबर बांट लो तब राजा के पुत्र ने कहा कि यह घट तुम्हारे पुत्र ने पाया है मैं नहीं लूंगा। जब हम पर गिरिजानाथ कृपा करेंगे तब हम भी असंख्य धन प्राप्त कर लेंगे यह कह वह पूर्ववत् शिवपूजा और त्रयोदशी व्रत करता रहा यहां तक कि पूरा एक वर्ष बीता संयोग से वे दोनों एक दिन वन में गये और एक गन्धर्व की लड़की को जो बहुत सुन्दरी थी, देखा ब्राह्मण के बालक ने कहा कि हम इस कन्या के निकट नहीं जावेंगे क्योंकि व्रतधारी को स्त्रियों की संगति और उनके पास जाना निषेध है पर राजा का पुत्र उसके पास गया दोनों प्रीतिसागर में डूब परस्पर की प्रेम वार्त्ता करने के उपरान्त अपना २ कुलाचार कहने लगे गन्धर्व की कन्या ने कहा कि मैं कोद्रविक गन्धर्व की लड़की हूं जो सब गन्धर्वों का राजा है और मैं गानविद्या भली भांति जानती हूं मैंने शिव की कृपा से तुमको पाया है यह कह मुक्ता की माला राजा के पुत्र को दी राजपुत्र बोला कि मैं जाति पांति

से विहत और राज्य से हीन हूं मुझे क्यों अपना पति किया चाहती हो और तुमने अपने पिता से भी इस बात की आज्ञा नहीं पाई गन्धर्व की लड़की ने कहा कि मैं अपने माता पिता की आज्ञा पा तुम्हारी रानी हूंगी तुम तीसरे दिन उसी स्थान पर आकर हम सबको देखोगे यह कह पूर्ण प्रतिज्ञा कर दोनों अपने २ घर को लौट गये और दोनों अपने २ बड़ों को समाचार देकर प्रतिज्ञानुसार नियत स्थान पर जा पहुँचे गन्धर्व ने दोनों से कहा कि हम सदाशिव के यहां नाचने गाने को गये थे वहां सदाशिव ने हमसे कहा कि पृथ्वी में एक धर्मगुप्त नामी राजपुत्र माता पिता हीन राज्यभ्रष्ट हो गुरु के उपदेश से त्रयोदशी का व्रत करता है उसके सब पितर पापों से छूट हमारे लोक में आगये हैं और तुमको आज्ञा दी जाती है कि तुम जाकर उसकी सहायता करो कि वह अपने शत्रु को जीत अपना राज्य पावे इसलिये पहिले मैं यह लड़की तुम्हारे साथ ब्याहे देता हूं फिर तुम्हारे शत्रुओं का नाशकर तुमको तुम्हारा राज्य दिलाऊंगा कि तुमको शिव की सेवा का फल प्राप्त हो कि कितना शिव की पूजा अप्रमेय फल देती है तुम अपनी रानी सहित संसारी भोग भोगकर फिर शिवपुरी को जाओगे यह कहा और अपनी पुत्री राजपुत्र से ब्याह दी और शत्रुओं का नाश कर उसका राज्य उसे दिलाया फिर गन्धर्व अपने देश को लौट गया और राजा ब्राह्मणी सहित जो माता के समान थी और उसका लड़का जो भ्राता के सदृश था और रानी और सब कुल परिवार सहित जन्मभर भोग भोगता रहा हे नारद! यह त्रयोदशीव्रत चारों पदार्थों का दाता है इसकी महिमा के पढ़ने सुनने से दोनों लोक में आनन्द मिलता है।

—१२—

तेरहवां अध्याय ।

ब्रह्मा बोले कि अब हम एक और कथा त्रयोदशी के माहात्म्य की कहते हैं कि पूर्वकाल में देवताओं और दैत्यों में इन्द्र और वृत्रासुर ने परस्पर बड़ा युद्ध किया था वृत्रासुर ने युद्ध में अपने शरीर को इतना बड़ा करके दिखाया कि सब देवताओं को सामना करने की शक्ति न रही और सब युद्धस्थान को छोड़ भाग गये और बृहस्पति की शरण में जाकर कहा कि महाराज! हमको वृत्रासुर ने युद्धस्थान से भगा दिया हमारा कोई उपाय उस पर नहीं चलता अब वह उपाय बताइये जिसमें हमको विजय प्राप्त हो बृहस्पति ने सदाशिव का ध्यान कर देवताओं से कहा कि यह वृत्रासुर पूर्वजन्म में चित्ररथ नामी एक राजा था जिसने विधिपूर्वक तेरसिव्रत किया और शिव को अति प्रसन्न कर उसने धन द्रव्य सब कुछ पाया पर शिवरानी के शाप से वृत्रासुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ है और शिव की कृपा से बड़ा बलिष्ठ और प्रतापवान् हुआ और गिरिजा के शाप के कारण देवताओं को दैत्य होने से दुःख देता है जो तुम वृत्रासुर को जीता चाहते हो तो सदाशिवजी की पूजा करो और शिव का प्रदोषव्रत धारो तुमको अवश्यही जय मिलेगी क्योंकि प्रदोषव्रत करने से हर मनुष्य अपने मनका मनोरथ पासक्ता है और प्रदोष व्रत के रखने की विधि यह है कि कार्त्तिक के प्रारम्भ से वर्ष के अन्त तक सब मासों में प्रदोषव्रत धारण करके और शुक्लपक्ष में जो शनैश्चर को प्रदोष पड़े वह बड़ा ही फल का देनेवाला है उसकी विधि हम वर्णन करते हैं उचित है कि मध्याह्न को शिव का ध्यान करे और तिल और आमलों के पानी से नहावे और शिव की पूजा बहुत वस्तु चढ़ाकर करे फिर सन्ध्या के समय प्रदोषकाल में शिवलिङ्ग की पूजा किसी

स्थान पर स्थापित हो स्नान कर मौन धारण करे और गोघृत के बहुत से दीपक जलावे ये दीपक हज़ार से लेकर एकसौ तक भी उचित हैं और जो न होसके तो बीस दीपक अवश्य जलाने चाहियें और सर्व प्रकार की सामग्री से और उत्तमोत्तम नैवेद्य आदि और प्रेम के साथ शिव को भेंट दे और शिव की शतरुद्री सुने और दो सौ बेर सदाशिव की परिक्रमा करें हे इन्द्र! इस उपाय से तुम सब तीर्थ व्रत को करो और सदाशिव को प्रसन्न करके उपरान्त दैत्यों से सामना करो तुमको अवश्य जय मिलेगी यह सुन इन्द्र देवताओं सहित अति प्रसन्न हुये और गुरु की आज्ञानुकूल प्रदोष व्रत करने लगा और शिव को प्रसन्न समझ वृत्रासुर के साथ युद्ध कर वृत्रासुर को वज्र से मारा और सब देवताओं को अति आनन्द प्राप्त हुआ हे नारद! तुमको एक और तेरसि व्रत की कथा सुनाते हैं जिसके करने से बड़ा आनन्द मिलता है अर्थात् त्रयोदशी व्रत धारण कर विधि से शिव की पूजा करे और चांदी का बैल बनवाकर शिव और पार्वती की प्रतिमा सोने की बराबर इस तरह पर तय्यार करावे कि दश भुजा और पांच मुख तीन नेत्र होवें और तांबे के कलशमें उन मूर्तियोंको स्थापित करे और पञ्चरत्न के फल और फूल लगावे और चांदी या वंशपत्र अथवा मिट्टी का घड़ा रखकर दूसरा कलश स्थापित करे जिसको वस्त्र माला और भूषणों से सुशोभित करे और विधिपूर्वक षोडशोपचारकर तन मन से शिव पूजा करे और इसी तरह चारों प्रहर रात्रि में जागरण कर उत्सव करे और शिवकी बहुत प्रकार से दण्ड- वत् और स्तुति करे जब भोर होजावे तो फिर स्नान करके शिव के पूजने केउपरान्त होम करे और गुरु की पूजा करे और फिर विसर्जन कर ब्राह्मणों को स्वादिष्ट भोजन करावे और फिर

उनकी आज्ञा पा आप भी भोजन करे इसी प्रकार जो मनुष्य प्रदोषव्रत करे तो वह सब मनोरथ पा सक्ता है उसको कोई संसारी दुःख नहीं व्यापता और अन्तमें शिवलोक को चला जावे और दूसरी प्रदोष व्रत की यह विधि है कि जब त्रयोदशी को शनैश्चर पड़े और शुक्लपक्ष हो तो सन्तान की प्राप्ति के निमित्त त्रयोदशी व्रत का आरम्भ करे और मङ्गल के दिन तेरसि व्रत भी अति शुभदायक है कदाचित् तेरसि शुक्र को हो उसके रहने से स्त्री और भाग्य की वृद्धि होती है कदाचित् रविवार को त्रयोदशी पड़े तो उसके रहने से आयु वृद्धि और रोग की शान्ति होती है उचित है कि एक वर्ष तक बराबर हर मास में दो बेर प्रीतिपूर्वक त्रयोदशीव्रत करे और सङ्कल्प करके निश्चयपूर्वक सन्ध्या के समय सदाशिव का पूजन करे और चारों ओर दीपक जला अपना मनोरथ शिव के समीप कहे और नन्दी के अण्डकोश को देख फिर उसके दोनों सींगों के मध्य अवलोकन करे और पुच्छ को देख अपने सब पापों से शुद्ध होजावे क्योंकि संसार में जितने सब तीर्थ हैं वह सब बैल के अण्डकोश में स्थित हैं फिर उस बैल को दाना चुगा देवे और हर प्रकार उसकी सेवा करे और फिर ब्राह्मणों को यथाशक्ति आप दक्षिणा दे और मौन हो ब्राह्मणों को भोजन करावे और आप लवणरहित भोजन करे अथवा खीर खावे निदान एक वर्षपर्यन्त इसी प्रकार तेरसिव्रत करे अथवा वर्षभर तक शनैश्चरवार त्रयोदशी को प्रदोषव्रत कर सब व्रतों का फल पावे उसको कोई दुःख नहीं दे सकेगा हे नारद ! यह प्रदोषव्रत कई प्रकार का है जो नाना प्रकार से भक्त को अतिआनन्द देता है अब और त्रयोदशीव्रत की युक्ति सुनिये अर्थात् जिस तरह स्त्रियों को यह व्रत करना उचित है कि मार्गमास की

शुक्लपक्ष में त्रयोदशीव्रत जो अतिपवित्र है प्रारम्भ करे उसमें चँबेली की दँतवन कर शिवपूजा करे और मरुवा के पुष्प अति प्रेम से शिवजी के ऊपर चढ़ाकर नारङ्गी का अर्घ्य दे और फेनी चिरौंजी की नैवेद्य लगा और अन्य फल आदि और स्वादिष्ठ भोग सामने रक्खे और जैसा चाहिये पूरा पूजन करे इस मास की पूजा में शिव का अनङ्ग नाम है रात्रि को मधु भोजन करे दूसरे मास में उदुम्बर अर्थात् गूलर की दँत॰ वन कर जाती सुगन्धित पुष्प शिवके ऊपर चढ़ावे और दाड़िम अर्थात् अनार का अर्घ्य दे और अशोकवर्ती की नैवेद्य लगावे आप श्वेत चन्दन खावे इस मास में शिवजी का नाम नाटेश्वर जानना चाहिये और तीसरे मास अर्थात् तपमास में विष्णु॰ क्रांता की दँतवन करके कुन्द के पुष्प शिव पर चढ़ावे और बीज॰ पूर का अर्घ्य देकर पौंड़े की नैवेद्य लगावे इस मास में शिवका नाम योगेश समझना चाहिये आप मूली खावे और शिवजी का ध्यान करे चतुर्थ मास में अनार की दँतवन कर धतूरे के पुष्प शिव पर चढ़ावे श्रीफल अर्थात् बेल का अर्घ्य दे इस मास में शिव का नाम वीरेश है रात्रि को कङ्कोल भोजन करना चाहिये पांचवें मधु मास में मल्लिका अर्थात् बेले की दँतवन कर मदनपुष्प अर्थात् धतूरा शिव पर चढ़ावे और उसी का अर्घ्य देकर खर्जुक अर्थात् खजूर की नैवेद्य लगावे और शिव का नाम इस मास में भव जानकर आप रात्रि के समय कर्पूर खावे और छठें राधमास में लटजीरे की दँतवन करके उत्पल का अर्घ्य दे और शिव का महारूप जानकर चँबेली के पुष्प चढ़ावे और पट्टक नाम अन्न की नैवेद्य लगावे और व्रती स्त्री आप रात्रि को जातीफल अर्थात् जायफल खावे सातवें मास में सहदेई की दँतवन कर बकुल पुष्प शिव पर चढ़ावे और श्रीफल

का अर्घ्य और मधु की नैवेद्य लगावे और शिव का प्रद्युम्न नाम जानकर आप रात्रि को लवङ्ग भोजन करे और आठवें शुचि अर्थात् आषाढ़मास में नारङ्गी की दँतवन करके कदम्ब के पुष्पों से शिवपूजा करे और नारियल का अर्घ्य दे दधि की नैवेद्य लगावे और शिव का नाम उमापति जान रात्रि को तिल खावे और नवें श्रावणमास में जाती की दँतवन कर कमल पुष्प शिव पर चढ़ावे और जामुन के फलों का अर्घ्य देकर दूध की नैवेद्य लगावे और शिव का नाम शूलपाणि जानकर रात्रि को गन्ध धूप खावे दशवें भाद्रपदमास में कङ्कोल की दँतवन कर चम्पक के फूलों से शिवजी की पूजा करे और सुपारी का अर्घ्य देकर सोहारी की नैवेद्य लगावे और शिव का सद्देव नाम जानकर अगुरु आप भोजन करे और ग्यारहवें कुवारमास में कंकेल की दँतवन कर कनेर के पुष्प शिवजी के ऊपर चढ़ावे और ककोंटीफल का अर्घ्य देकर सितमुण्डक की नैवेद्य लगावे और आप व्रती स्त्री कनततोय अर्थात् कुम्हड़ा खावे और बारहवें कार्तिक मास में ऊर्जकदम्ब की दँतवन कर रक्त उत्पल शिवजी पर चढ़ावे और कमठाफल का अर्घ्य देकर सोहारी की नैवेद्य लगावे और शिवजी का नाम जगदीश्वर जानकर व्रती स्त्री रात्रि को मदनफल अर्थात् मैनफल खावे इस प्रकार स्त्री त्रयोदशी व्रत कर सिद्धि पावे इस बात में कुछ संशय नहीं है जब एक वर्ष इस प्रकार व्रत करके पूर्ण हो जावे तो फिर व्रत का उद्यापन करे शिवजी की पूजा कर होम करे और अपने आचार्य को दान दे और जागरण करे इस कथा के सुनने पढ़ने से दोनों लोक में आनन्द मिलता है प्रदोषव्रतमाहात्म्य पूर्ण हुआ।

———:०:———

चौदहवां अध्याय।

एकादशीव्रत के माहात्म्य का आरम्भ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम एकादशी व्रत का माहात्म्य वर्णन करते हैं जो व्रतराज सर्वपापों का नष्ट करनेवाला है और यह एकादशी तिथि सब तिथियों में श्रेष्ठ और उत्तम है हे नारद! शिवजी को दोनों पक्षों की एकादशी प्रिय हैं इनमें जो मनुष्य व्रत रखता है उसपर शिवजी अति प्रसन्न होते हैं और कृष्णपक्ष की एकादशी में भोजन करने की इस तरह आज्ञा है कि जब प्रदोषकाल आवे तब शिवजी की पूजा कर प्रसन्न होवे निदान त्रयोदशी व्रत के समान इस व्रत को समझ संध्या को शिवजी की पूजा करके भोजन करे पर शुक्लपक्ष की एकादशी में अन्न जल रहित व्रत रक्खे विधि यह है कि प्रभात को उठ नियम से स्नानकर शिवजी की पूजा करे और दिन भर शिवजी के काम और सामग्री के इकट्ठा करने में बिता दे और सन्ध्या के समय फिर स्नानकर शिवजीकी पूजा करे और हर प्रकार शिवजी को रिझावे और अति प्रसन्नता से उत्सव करके अपने गालों को बजावे और कृष्णपक्ष में भोजन करके शुक्लपक्ष में इस व्रत को निर्जल रहना उचित है पर निर्जल रहने ही से पूर्णफल मिलता है और आधा फल दूध पीने से प्राप्त होता है निदान किसी प्रकार व्रत करे क्योंकि व्रत के छोड़ने से मनुष्य की भलाई नहीं है यह व्रत शिवजी को अति प्रिय है इसके त्याग करने से बुराई है और इस व्रत के करने से सर्वमनोरथ पूरे होते हैं इस व्रत का करनेवाला मनुष्य संसार में भोग भोगकर अन्तकाल में शिवपुरी पाता है जो इच्छा हो वही पूरी हो इसपर हम एक कथा कहते हैं कि सूर्यवंशी राजा मान्धाता ने यह व्रत किया संयोग से अयोध्या में काल पड़ा

और अन्न न उपजने से प्रजा अति दुःखी हुई सो सब प्रजा इकट्ठी होकर राजा की डेवढ़ी पर आई और विनती की कि हे महाराज, पृथ्वीपाल, धर्मात्मा! क्यों अकाल पड़ा कौन ऐसा पाप हुआ है जिससे यह दुःख मिलता है अयोध्या के सब मनुष्य भूख के मारे मरते हैं कोई उपाय नहीं सूझता आप महाराज हो कोई उत्तम उपाय बतावो हम तुम्हारी शरण में आये हैं हम सबको बचाओ मान्धाता राजा अपनी प्रजा के दीन वचन सुन अति विकल हुआ और ब्राह्मण और सत्पुरुषों को बुला लज्जा से शिर झुकाये बोला कि आप सब इस बात को बतावें कि क्यों हमारे अवध देश में वर्षा नहीं होती सो ऐसा उपाय बतावो जिससे वर्षा होवे ब्राह्मणों ने सोच विचार कर कहा कि हमको कोई कारण वर्षा न होने का मालूम नहीं होता पर हम वर्षा होने की युक्ति बताते हैं यह कह उन्होंने बहुत ही उपाय बताये जिनको राजा ने किया पर तौ भी वर्षा न हुई तब राजा आश्चर्य में हो चिन्तित हुआ और निराश हो एक वन को चला गया वहां एक तपस्वी था जिसका नाम लोमश था जो बड़ा विज्ञानी और शिवजी का भक्त था राजा उनको सिद्ध जान उनके आगे खड़े रहे और दण्डवत् कर हाथ जोड़ विनय की कि हे मुनीश्वर, सर्वज्ञ! अयोध्या में वर्षा नहीं होती प्रजा महा-दुःखी है यद्यपि मैं असंख्य उपाय कर चुका हूं पर पानी न बरसा निदान विकल होकर वन में आया हूं भाग्य से आपके चरणों के दर्शन हुये आप कृपा करके पानी बरसने की युक्ति मुझे बतावें यह सुन लोमश ने राजा से कहा कि शिवजी की कृपा से मैं वर्षा की युक्ति बताता हूं तुमको उचित है कि अपनी प्रजा समेत शिवजी को स्मरण कर व्रत करो इस व्रत में शिवजी की पूजा करके भोजन करना चाहिये सो राजा ने विदा होकर

अपने राज्य में आ एकादशी व्रत धारण किया और अपनी प्रजा से भी यही व्रत रखाया और इतनी वर्षा हुई जिससे सबको आनन्द हुआ और अन्न बहुत उपजा हे नारद! इस व्रत के करने से इसी प्रकार के मनोरथ तुरन्त प्राप्त होते हैं इस व्रत के करने से कोई दुःख नहीं रहता इसी प्रकार राजा मुचुकुन्द और राजा जनक और चक्रवर्ती राजा सगर ने यह व्रत कर क्या २ पदार्थ नहीं पाये अब श्रीरामचन्द्र की कथा सुनो कि दशरथकुमार श्रीरामचन्द्र बड़े प्रतापी हुये उन्होंने भाग्यवश वनवास अङ्गीकार कर विचित्र चरित्र किये जिनको सुनकर रावण सीता महारानी को उठाकर लङ्का में लेगया निदान रामचन्द्र उठते बैठते सीता की खोज में विकल हो पम्पापुर में पहुँच हनुमान्जी की सहायता से बड़ी वीर सेना के साथ समुद्र के तटपर आये पर जब समुद्र का पार उतरना कठिन जाना तो सेना को समुद्र के तट पर खड़ी कर इधर उधर फिरने लगे और लोमश ऋषि को तप करते हुये पाकर उनके समीप गये और दण्डवत् और प्रणाम के उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि समुद्र पार जाना अति कठिन है आप कोई उपाय बतावें कि हम सेनासहित समुद्र से उतर रावण को नष्ट करें यह रामचन्द्र का वचन सुन लोमश ने शिव माया को जान हँस दिया और रामचन्द्र से कहा कि पहिले तो तुम विष्णु का अवतार दूसरे शिव के भक्त तुम्हारे मनोरथ पूरे होने में क्या सन्देह है तुम सदा शिव का ध्यान करो वे बिगड़े हुये सब काम ठीक करेंगे तुम्हारे समान और कोई शैव नहीं तुम को भाग्यवश यह दुःख हुआ है क्योंकि जब तुमने मनुष्यतनु धरा तो मनुष्य को अवश्य कष्ट होता है इसी कारण आपको मनुष्य होने से यह दुःख हुआ है तुमको चाहिये कि तुम

एकादशी व्रत धारण करो और शिव की पूजा कर उस दिन फलाहार करो और शिव का शिवरानी समेत ध्यान करो और शुक्लपक्ष की एकादशी में अन्न जल रहित व्रत करो इससे तुमको सिद्धि प्राप्त होगी एकादशी के समान दूसरा व्रत नहीं है जैसा कि वेद और पुराण गाते हैं यह सुन रामचन्द्र लोमश से बिदा होकर अपनी सेना में गये और लोमश की शिक्षा के अनुसार एकादशी व्रत को आरम्भ किया सो दृढ़ सेतु बांध शिवलिङ्ग स्थापित कर समुद्र पार उतर रावण को मार सीता को पाया हे नारद! यह एकादशी व्रत ऐसा फल देनेवाला है और यह व्रत विष्णु और शिव दोनों का है इसके करने से विष्णु और शिवजी दोनों प्रसन्न होते हैं यह व्रत सब देवताओं और मुनीश्वरों को बहुत प्रिय है इसके माहात्म्य के सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है एकादशी माहात्म्य पूर्ण हुआ।

पन्द्रहवां अध्याय।

अष्टमी का माहात्म्य व व्रत।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! अब अष्टमी व्रत का माहात्म्य सुनो सब महीनों की अष्टमी तिथि को यह व्रत करना उचित है और सोमवार व्रत के समान इस व्रत को विधि से करे केवल भादों मास में कुछ थोड़ा अन्तर है और शेष दोनों व्रतों के लिये एक ही विधि है सो भादों मास के शुक्लपक्ष में शिवपूजा की विधि इस तरह पर है कि प्रदोषकाल में दूब लाकर शिवजी की पूजा करे तो पूजन करनेवाले का एक भी पाप नहीं रह जावेगा उसके तन मन दोनों तेजवान् होजावेंगे और फूल और फल और दूब और बिल्वपत्र शिव के ऊपर चढ़ावे और अर्घ्य और नैवेद्य और दधि और अक्षत और लावा देवे और शिव को प्रसन्न होकर दण्डवत् करे और प्रेम से शिव को रिझावे फिर

ब्राह्मणों को उत्तम भोजन करावे पर क्षार और नोन का भोजन न तो आप खावे और न ब्राह्मणों को भोजन करावे ब्राह्मणों को भोजन कराने के अनन्तर उनको दान देकर बिदा करे हे नारद ! जो इस प्रकार भादों की अष्टमी का व्रत करे तो उसके सम्पूर्ण दुःख दूर होजावें यहांतक कि ब्रह्महत्या भी इससे नष्ट होजावे सर्वमनोरथ पूरे होवें और संसार में प्रसन्न रहकर अन्त में शिवपुरी प्राप्त हो असंख्य जन्मों के पाप नष्ट होजावें यह दूर्वाष्टमी व्रत शिव को अति प्रिय है जिसके करने से कोई पाप नहीं रहजाता चारों वर्ण इस व्रत के करने का अधिकार रखते हैं और सब वर्णों की स्त्रियों को भी यह व्रत करना अवश्य है यह ऊपर की लिखी हुई युक्ति हमने भाद्रपदमास की अष्टमी के लिये वर्णन की अब और महीनों की अष्टमी व्रत का हम वर्णन करते हैं कि अगहन मास के कृष्णपक्ष में निर्जल रहकर इस व्रत को करे इसका नाम कालाष्टमी व्रत है इसके करने से भक्त को मुक्ति मिलती है इस दिन दोपहर के समय भैरव ने जन्म लिया था इससे यह व्रत भैरव व्रत के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसके करने से सब पाप नष्ट होजाते हैं यह भैरव का व्रत अति आनन्ददायक है इसको कर असंख्य भक्तों ने मुक्ति पाई है यह व्रत शिव को बहुत प्रिय और सब व्रतों का राजा है और सबको चारों फल का देनेवाला है जो मनुष्य लोक परलोक में अप्रमेय आनन्द की इच्छा रक्खे उसको यह व्रत करना अवश्य है क्योंकि इस व्रत के करने से भैरव अतिप्रसन्न होते हैं और प्रकट है कि जब भैरव अतिप्रसन्न हैं तो संसार में वह कौन वस्तु है जो व्रत करनेवाले को अलभ्य हो सो अवश्य यह व्रत करे मध्याह्न को बड़ा उत्सव करे और चारों प्रहर रात को शिव की पूजा करके जागरण कर रात बिता दे जब प्रभात होजावे तब

स्नानकर शिव की पूजा करे और ब्राह्मणों के बालवटुक अर्थात् बहुत छोटे बच्चों का पूजन करके आठ बालकों को भोजन करावे फिर दूसरे ब्राह्मणों को भी भोजन करावे और सामर्थ्य भर आप उनको दक्षिणा देकर दण्डवत् करे उन सबके विदा होजाने के अनन्तर आप कुल और मित्रोंसहित शिव का स्मरणकर भोजन करे यह भैरवव्रत एक वर्ष तक करना चाहिये जिसके करने से चारों पदार्थ मिलते हैं और भैरव सदा शिव के पूर्णस्वरूप हैं हम एक भैरव की महिमा का इतिहास वर्णन करते हैं कि एक दिन सब देवता और मुनीश्वर इकट्ठे बैठकर कहनेलगे कि कौन परब्रह्महै इस बात में तकरारकर इस बात के पूछने को इकट्ठे हो हमारे पास आये और कहा कि सबमें कौन परब्रह्म, अनादि, अनन्त, अविनाशी, सर्वसृष्टि का राजा, निर्गुण, सगुणस्वरूप है जिसकी बराबरी कोई नहीं करसक्ता जिसको वेदान्ती सच्चिदानन्द कहकर मानते हैं और जिसके भय से शेष धरती को अपने शिर पर रक्खे हुये हैं और जिसकी आज्ञा से सूर्य प्रति दिवस संसार में उजियाला करते और चन्द्रमा और नक्षत्र आकाश पर स्थित हैं यह प्रश्न सुन हमने कहा कि ऐसा मनुष्य जो तुम पूछते हो हम हैं दूसरा कोई नहीं क्योंकि ब्रह्म और स्वायम्भुव आदि हमारे नामों से यह बात सूचित है हे नारद ! शिव की माया से मैंने ऐसे वचन कहे वह माया बड़ी बलवान् है यह सुन विष्णु हमसे अप्रसन्न हुये और उन्होंने अपने को ब्रह्म ठहराया और कहा क्या कोई मनुष्य अन्धा होकर नयनसुख के नामसे प्रसिद्ध नहीं होता व कुबेर का नाम पाकर क्या भीख नहीं मांगता है तुमने वेद के अर्थ नहीं समझे इस तरह हम दोनों ने बड़ा झगड़ा किया और वेदों पर भी झगड़ा पड़ा सो वेदों ने हमारे पूछने के अनुसार कहा कि परब्रह्म केवल

सदाशिव हैं क्योंकि वे तीनों गुणों से भिन्न कहाते हैं और उनके अङ्गों से तुम भी दोनों उपजे हो यह सुनकर हम दोनों वेदों के ऊपर अति कोपित हुये फिर प्रणव ने देवताओं के रूप से आकर कहा कि हे विष्णु और ब्रह्मा! तुम वेद के वचन को असत्य जानते हो वेद सत्य हैं उनमें झूठ का कुछ भी लेश नहीं तुम भली भांति इस बात को जानो कि परम शिव का कुछ रूप नहीं है परन्तु परम शिव की लीला, रूप बहुत हैं जो अपने किसी भक्त के निमित्त प्रकट होकर असंख्य चरित्र करते हैं उसी परम शिव ने हर होकर कैलास में वास किया और शक्ति सहित नाना विधि की लीला कीं उनके चरित्र कौन जानता है जो उनके मन में आता है वह करते हैं तुम संसारी जीवों के समान सत्य मार्ग छोड़ संशय में पड़े हो यह कैलासवासी शिव अपनी इच्छा के अनुसार कभी शरीर धारते और कभी निश्शरीर होकर एक समय योगी और दूसरे समय में भोगी होजाते हैं कभी नग्न हो तनमें भस्म धारण करके ध्यान में बैठ जाते हैं कभी चक्रवर्ती राजाओं के समान सभा साज उनपर आज्ञा चलाते हैं और सब देवता उस सभा में आकर दोनों शिव और शिवरानी को रिझाते हैं लक्ष्मी शिव के गुण गाती हैं और हे विष्णो! तुम मृदङ्ग बजाते हो और तुम ब्रह्मा ताल देते हो और सरस्वती वीणा अलापती हैं और इन्द्र भी बहुत शोच समझ वीणा बजाते हैं और अन्य सब शिव का भजन प्रसन्न होकर करते हैं यद्यपि ऐसे २ वचन प्रणव ने दोनों को समझाये पर ब्रह्मा और विष्णु कब मानते थे क्योंकि शिवजी की माया ऐसी न थी जो उनको यह बात समझने देती ऐसे समय में शिव ने अनुग्रह कर यह विचार किया।

सोलहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! एक ज्वाला हमारे और विष्णु के सामने प्रकट हुई जिसके प्रकाश से सर्व पृथ्वी और आकाश पूरित हुये और उस ज्वाला के मध्य में से एक मनुष्य प्रकट हुआ जिसको देख हमने अपने पञ्चम मुख से कहा कि यह कौन है कि हमारे तुम्हारे बीच में उपजा है वह मनुष्य नीललोहित अङ्ग भाल में चन्द्रमा हाथ में त्रिशूल और भूषणों की जगह सर्प पहिने था हमने कहा कि तुम तो वही हो जो हमारे दोनों भवों के बीच से उपजे थे और तुमको हमने रोते देखकर तुम्हारा नाम रुद्र रक्खा था यह सुनकर रुद्र अर्थात् सदाशिव अति कोपित हुये और एक मनुष्य को उपजाया जो भक्तों को प्रसन्न करनेवाला और शत्रुओं को दुःख देनेवाला था वह काल के समान प्रकट हो कालराज के नाम से प्रसिद्ध हुआ है और जो कि विश्व के भरण की शक्ति रखता था इससे भैरव उनका नाम पड़ा और जो कि उनसे काल ने भी भय खाया इससे कालभैरव के नाम से प्रसिद्ध हुआ और दुःखों के समूह दूर करने से आमर्दक और भक्तों के पाप दूर करने और भक्तों के मुक्त करने से उनका पापभक्षक नाम हुआ इसी प्रकार और नामों से भी प्रसिद्ध हुये शिव ने उनसे कहा कि इस प्रजा के उपजानेवाले ब्रह्मा ने हमारी निन्दा की है इसको दण्ड दो कि संसारी जीवों को इसकी शिक्षा हो और तुमको हमने अपनी काशीपुरी का कोतवाल नियत किया यह सुनकर भैरव ने हमारे पांचवें शिर को जिससे शिव की निन्दा की थी काट डाला तब शिवजी ने भैरव की ब्रह्महत्या दूर करने को यह युक्ति बताई जैसा कि और खण्डों में वर्णन हो चुका है यह कहकर शिव तो अन्तर्धान हो गये और भैरव ने भी हमारा शिर हाथ में लिये हुये तीन लोक

की परिक्रमा की पर उस स्त्री ने जो ब्रह्महत्या होकर भैरव के पीछे लगी थी पीछा न छोड़ा निदान भैरव सर्व स्थान घूमकर सब देवताओं के लोक में गये और जब विष्णुलोक में गये तब विष्णु ने बहुत बहुत समझाया कि महाराज! तुमको हत्या नहीं लग सक्ती तुम तो शिव स्वरूप के सदृश बरन शिव स्वरूप ही हो तुम्हारे कण्ठ में ब्रह्मा के शिरों की माला विराजमान है जो अगले कल्पों के ब्रह्मा थे क्या उस समय तुमको ब्रह्महत्या नहीं लग सक्ती थी तुम आप लीला करके अपने को पापी दिखलाते हो तुम्हारे स्मरण से औरों की ब्रह्महत्या दूर हो जाती है तुमको ब्रह्महत्या क्योंकर लग सक्ती है जब तुम प्रलय कर सर्व सृष्टि का नाश कर देते हो तब तो तुमको कोई पाप नहीं लगता अब केवल ब्रह्मा के एक शिर काटने से अपना ऐसा स्वरूप बनाये हुये फिरते हो फिर विष्णु ने ब्रह्महत्या को जो स्त्री के रूप में थी बुलाकर बहुत समझाया कि तू भैरव का पीछा छोड़ दे उसने कहा कि मेरा क्या अपराध है यह सदाशिव की आज्ञा है फिर भैरव अपनी भक्ति विष्णु को दे आगे चले जब मुक्तिपुरी काशी में भैरवजी आये तब वह ब्रह्महत्या आपही गुप्त होगई हे नारद! काशी की महिमा कोई वर्णन नहीं कर सक्ता देखो ब्रह्महत्या तीनों लोक की परिक्रमा करने पर भी दूर न हुई और काशी में पहुँचते ही भाग गई और काशी में कपालमोचन तीर्थ सबसे अधिक फल देनेवाला है जिसके केवल स्मरण से बड़े २ पाप नष्ट हो जाते हैं वहां तर्पण करने से ब्रह्महत्या तुरन्त नष्ट हो जाती है सब वेद और पुराण कहते हैं कि इसके समान दूसरा तीर्थ नहीं है वहां भैरव सदाशिव विराजमान हैं जिनकी सेवा से सब दुःख दूर हो जाते हैं जो कोई मनुष्य वह भैरव का व्रत काशी में भैरव के पास जाकर करे उसके सब पाप दूर हो जावें और उस दिन

जो कोई भैरव की पूजा करे तो एक वर्ष के विघ्न नष्ट हो जावें और सप्तमी चतुर्दशी रविवार और भौमवार को भैरव के स्थान में जावे उसके सब पाप दूर हो जावें जो मनुष्य भैरव की आठ परिक्रमा करे उसके तीनों प्रकार के पाप दूर हो जावें सिवाय इसके जो बिना काशी के और दूसरे स्थान में भी यह भैरव का व्रत कोई मनुष्य करेगा तो भी उसको बड़ा फल होगा सब शिव के भक्तों को उचित है कि अगहन कृष्णपक्ष की अष्टमी को यह व्रत करें और भैरव के व्रत की कथा सुनें और दूसरों को सुनावें तो बड़ी पुण्य पाकर मुक्ति पावेंगे भैरवअष्टमी का व्रत पूर्ण हुआ ।

सत्रहवां अध्याय ।

सोमप्रदोषव्रत का माहात्म्य ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम सोमप्रदोषव्रत की महिमा वर्णन करते हैं जिसके सुनने से इस व्रत के करने का निश्चय बढ़ता है इस व्रत के करने से दोनों लोक के मनोरथ पूर्ण होते हैं इस व्रत को सब स्त्री पुरुष कर सक्ते हैं यह सोमवार का व्रत शिव को अति प्रिय और और व्रतों का राजा है जिसके करने से दोनों लोक के मनोरथ मिलते हैं करोड़ों जन्म के पाप दूर हो जाते हैं उचित है कि सोमवार का व्रत दिनभर करके सन्ध्या के समय शिव की पूजा करे यह व्रत सोमप्रदोष कहलाता है इस व्रत में फलाहार करना चाहिये दिनभर अन्न जल रहित रह सन्ध्या को शिव की पूजा करे और त्रयोदशीव्रत के समान सब बातें करनी चाहिये और प्रत्येक प्रकार वही त्रयोदशीव्रत के उपचार करने चाहिये उचित है कि अति पवित्रता से इन्द्रियों को जीत विधिपूर्वक बड़े प्रेम से शिव की पूजा करे और वेद के अनुसार और लौकिक अर्थात् पुराण और तन्त्रादि के मार्ग से भी शिव की पूजा उचित है और इतना ध्यान लगावे

कि दूसरे को न देखे और सोमशिव का भजन करे और एक ही भक्ति का नियम इस व्रत में करना चाहिये यह व्रत चाहे किसी तरह से करे सदाशिवजी की दया का कारण है सो भाग्यहीन और सन्तानहीन निर्धन सब अपना मनोरथ पाते हैं सिवाय इसके जिस मनोरथ के लिये यह व्रत करे निस्सन्देह वह इच्छा पूरी हो जावे और वाजपेय और अश्वमेधादि यज्ञ मानो कर चुका और संसार में प्रसन्न रह अन्त में जब शिवपुरी को जाता है तब वहां से फिर कभी वह च्युत नहीं होता वरन वह सदा वहां स्थित रहता है यह व्रत चारों वर्णाश्रम चाहे वह पुरुष हो व स्त्री सब कोई कर सक्ता है और विधवा स्त्री अथवा बिन ब्याहा पुरुष भी इस व्रत के करने का अधिकार रखते हैं अब हम एक इतिहास वर्णन करते हैं जिससे जानोगे कि इसी व्रत में चित्राङ्गद मृत्यु से बचा रहा और उसकी स्त्री ने यही व्रत कर अपने पति सहित शिवपुरी में स्थान पाया कि आर्यावर्त्त देश में एक चित्रवर्म नाम राजा बड़ा धर्मात्मा यज्ञ करनेवाला संसार के सब भोगों से भरपूर शत्रुओं पर प्रबल शिवजी का बड़ा भक्त हुआ उसने प्रेम-पूर्वक शिवजी का भजन किया उसके बहुत से सुन्दर पुत्र उपजे बहुत काल के उपरान्त उसके कन्या उपजी जो बहुत सुन्दरी थी उसके उपजने से राजा ने अति प्रसन्न हो दान मान से ब्राह्मणों को धनी कर दिया कि जैसे हिमाचल को गिरिजा के उपजने से आनन्द हुआ था उसी प्रकार राजा चित्रवर्म को उस कन्या के उत्पन्न होने से आनन्द प्राप्त हुआ राजा ने ज्योतिषी को बुलाकर कन्या का हाल पूछा ज्योतिषी ने कहा कि इस तुम्हारी कन्या का नाम सीमन्तिनी है यह उमा के समान शुभ होगी और दमयन्ती के समान सुन्दरी और वाचालता और बुद्धि में वाणी के सदृश और कला के जानने में लक्ष्मी

के समान और यह देवताओं की माता अदिति के बराबर सन्तानवती होगी और तेज में सूर्य के समान और सुन्दरता में चन्द्रमा के सदृश होकर दश हज़ार वर्ष पर्यन्त अपने पति के साथ भोग भोगेगी और इसके आठ पुत्र उपजेंगे यह सुन राजा ने ज्योतिषी को बहुत धन दे बिदा किया और राजा और रानी दोनों महा प्रसन्न हुये कि इतने में एक बुद्धिमान् ब्राह्मण निर्भय हो कहने लगा कि हे राजन्! यह तुम्हारी लड़की चौदह वर्ष में विधवा होजावेगी हम सत्य कहते हैं पर शिवजी इस दुःख के दूर करनेवाले हैं यह सुनकर राजा रानी समेत शोकसागर में डूबकर मूर्च्छित हुये फिर धैर्य धर सदाशिवजी को स्मरण किया और चिन्ता और मन से दुःख दूर कर प्रत्येक मनुष्य की प्रतिष्ठा के अनुसार आदर से सबको बिदा किया और सदैवकाल सदाशिव का स्मरण कर अपनी स्त्री और कन्या सहित दुःखी रहा करता था जब वह कन्या युवावस्था को प्राप्त हुई और उसने अपनी सहेलियों से सुना कि ब्राह्मण ने बताया है कि मैं विधवा होजाऊंगी तो यद्यपि वह मन में चिन्तित और दुःखी हुई पर मुख से कुछ न कहकर मैत्रेयी के पास जो याज्ञवल्क्यमुनि की स्त्री थी गई और दण्डवत् करके सब वृत्तान्त वर्णन किया और कहा मैं तुम्हारी शरण में आई हूं जो मेरे पति के आयु की वृद्धि का उपाय हो वह कहिये यह कहकर बार २ रोई और मैत्रेयी के चरणों में गिर पड़ी मैत्रेयी ने उसको चरणों पर से उठाकर कहा कि तुम शिव और गिरिजा की शरण में जाओ तुम्हारे सब दुःख दूर होजावेंगे और सोमवारव्रत करके सोमाशिव की पूजा करो कि सन्ध्या के समय सोमवार को पूजाकर ब्रह्मभोज करो और सोमाशिव को प्रसन्न कर तुम निस्सन्देह अपना मनोरथ पाओगी इससे

अधिक और कोई उपाय पति की आयु के बढ़ने का नहीं इस व्रत के करने से किसी प्रकार का दुःख नहीं रहता और सदाशिव सब दुःख निवृत्त करते हैं सो सीमन्तिनी यह शिक्षा पा अपने घर को लौट आई और विधि से सोमवारव्रत धारणकर सोमशिव की यथाविधि पूजा की और फिर उसका विवाह करके चित्रवर्म राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

अठारहवां अध्याय।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी ने कहा कि नैषधदेश का राजा नल और उसकी रानी दमयन्ती जिसका हम पहिले वर्णन कर चुके हैं यह दोनों राजा रानी शिव के बड़े भक्त हुये उनके एक बालक उपजा जिसका नाम इन्द्रसेन रक्खा गया वह भी शिव की भक्ति में अति प्रसिद्ध था उसके एक लड़का चित्राङ्गद के नाम से उपजकर चन्द्रमा के समान सुन्दर हुआ वह परम शैव होकर सर्व विद्या और कलाओं में प्रवीण हुआ वह मधुरवाणी बोलता राजा चित्रवर्म ने चित्राङ्गद के उत्तम आचरण को जान अपनी लड़की का विवाह बड़ी धूमधाम से उसके साथ कर दिया राजा चित्राङ्गद विवाह के उपरान्त थोड़े समय तक अपने श्वशुर के घर में रहा और अपनी सीमन्तिनी नाम स्त्री सहित सोमवारव्रत करता रहा एक दिन औरों समेत राजा चित्राङ्गद नाव पर चढ़ यमुना नदी में जलविहार करता था कि एकाएक नाव डूब गई कोई मनुष्य भी जीता न बचा यहां तक कि केवट भी न बचा सो दोनों किनारों पर हाहाकार मचा और किनारे की सेना रोने पीटने लगी और राजा चित्रवर्म इस वृत्तान्त को सुन बहुत घबड़ाकर नदी किनारे पहुँचकर रोने लगा और रानी भी इतनी मूर्च्छित हो धरती पर गिरी कि फिर उसको चेत न हुआ इसी प्रकार सीमन्तिनी अपने पतिका डूबना

सुन विकल हुई और उसके भाई और मन्त्री और सर्व राज्य सभा प्रजाआदिक कोई ऐसा न था जो शोकसागर में डूबा न हो और राजा इन्द्रसेन रानी सहित अपने पुत्र के डूबने का हाल सुन शोकसागर में डूबा और उसकी प्रजा की भी यही दशा हुई निदान दोनों पति और स्त्री के माता पिता को बुद्धिमानों ने समझाया सो राजा चित्रवर्म ने अपने घर लौटकर अपनी सीमन्तिनी कन्या को समझाया और डूबे हुये राजा का सब क्रियाकर्म किया फिर सीमन्तिनी ने चाहा कि सती होजाऊं पर अपने पिता के मना करने से सती न होने पाई और वैधव्य धर्म में स्थित रही यद्यपि वह विधवा होगई पर उसने सोमवार का व्रत न छोड़ा जैसा कि मैत्रेयी ने उसको बताया था जब सोमवार का दिवस आया तो दिन भर अन्न जल रहित रह प्रदोषकाल में शिवजी की शिवरानी सहित पूजा की और अतिप्रेम से उत्सव किया इसी प्रकार वैधव्य अवस्था में सोमवारव्रत करते उसको तीन वर्ष का समय माता पिता के घर में बीता और राजा चित्राङ्गद के पिता राजा इन्द्रसेन पर शत्रुओं ने धावा करके राज्य छीन उसको रानी सहित बन्दी में डाल दिया तब वे राजा बलि के समान नाना प्रकार की आपदाओं को प्राप्त हुये और सीमन्तिनी के व्रत के कारण डूबे हुये चित्राङ्गद ने बहुत आनन्द उठाया और यमुना से निकलकर जीता रहा ऐसी कृपा सदाशिवजी ने की और श्वशुर आदि सब अतिप्रसन्न हुये।

उन्नीसवां अध्याय।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी बोले कि राजा चित्राङ्गद यमुना के बीच में डूबकर मरने से बच रहा और सब मर गये इसकी कथा यह है कि उसने वहां असंख्य सर्पों की स्त्रियों को जब क्रीड़ा करते देखा और वे सब राजा को सुन्दर देख उसको

अपने साथ पाताल में ले गईं जहां बहुत से नगर सांपों से बसे हुये थे सो राजा उनके द्वारा तक्षक के नगर में गया जो परिपूर्ण हीरा मोती पन्ना नीलम और अन्य नाना प्रकार के रत्नों से जटित था चित्राङ्गद ने राजा तक्षक को रत्नों से जड़े हुये सिंहासन पर सुशोभित देखा और ऐसी विचित्र सामग्री और दास दासियों को देख भौंचक रह गया और तक्षक को अतिप्रकाशवान् तेजरूप देखकर प्रणाम किया और तक्षक ने भी राजा को ऐसे तेज और सुन्दरता से देख अपनी स्त्रियों से शुभ दृष्टिपूर्वक पूछा कि यह कहां से आया है तुमने इसको क्योंकर देखा सो तक्षक की स्त्रियों ने उत्तर दिया कि हम इसके कुलादि को कुछ नहीं जानतीं इसको यमुना नदी में पाकर यहां लाई हैं निदान तक्षक ने राजा से पूछा कि तुम कौन और किस-के पुत्र और कहां के वासी हो सब कहो यह सुन राजा ने हाथ जोड़ शिवजी का स्मरण कर तक्षक को दण्ड प्रणामकर अपना सब वृत्तान्त कह दिया और कहा कि बहुत जन्मों के पुण्य से महाराज आपके दर्शन हुये यह दर्शन हमारे बड़ों और पितरों को भी न हुआ था यह सुनकर तक्षक अति प्रसन्न हुआ और कहा कि हे राजपुत्र ! तुम कुछ सन्देह मत करो एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ उसे कहो कि तुम सब देवताओं में किस देवता की पूजा करते हो यह हमको बता दो फिर और वार्त्ता होगी राजपुत्र ने बिनती की कि जिसको सब वेदों ने महादेव नाम करके वर्णन किया है वही शिवजी सबके पूजने के योग्य हैं हम उन्हीं की पूजा करते हैं ब्रह्मा और विष्णु भी जिसके अङ्ग हैं और उन्हीं के अंश से उपजे हैं और तीनों रूप जिसका ध्यान करते हैं और जिसकी आज्ञा से सृष्टि उपजती पलती और विन-शती है और जो कारण का भी कारण और धाता का भी धाता

और तेजों का तेज है और इसी प्रकार शिवजी के बहुत गुण कथन कर कहा कि वही एकाकी, अविनाशी, अनादि हमारे स्वामी हैं हम उन्हीं की पूजा करते हैं ऐसी महिमा सदाशिवजी की सुनकर तक्षक ने अतिहर्ष और अनुग्रह से कहा कि हे राजपुत्र! हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुये जो तुम ऐसा जानते हो तो तुम्हारे समान दूसरा कोई शुद्ध और सत्पुरुष नहीं है तुम यहां रहकर सबके राजाधिराज हो हमारे इस देश में सदा आनन्द है दुःख का नाम भी कोई नहीं जानता यहां न कोई बूढ़ा होता न कोई मरता न कोई रोग किसी को होता है ऐसे मधुर वचन सुन राजपुत्र ने हाथ जोड़ तक्षक से विनती की कि हमारी स्त्री और माता पिता प्रजा हमको मूवा हुआ जान बड़े दुःख को प्राप्त हुये हैं न जानिये वह मर गये हों या जीते हों इसलिये मैं समय तक यहां नहीं रह सक्ता कृपा करके मुझे वहां भेज दीजिये यह सुनकर तक्षक ने अति प्रसन्नता से नानाप्रकार के भूषण, रत्न, वस्त्र और सामग्री देकर शिवजी की भक्ति का वर दिया और कामक नाम घोड़ा अर्थात् वह जो अपनी इच्छानुसार स्थान में पहुँच जावे और एक राक्षस सामग्री पहुँचा देने को अपने लड़के समेत विदा किया और कहा कि जब हमारा स्मरण करोगे तब हम तुरन्त तुम्हारे पास आवैंगे राजपुत्र तक्षक से विदा हो घोड़े पर चढ़ तक्षक की दी हुई सर्व सामग्री सहित यमुना के तट पर खड़ा हो गया और दोनों राजकुमार घोड़ों पर सवार इधर उधर नदी के किनारे भ्रमण करने लगे ।

बीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने नारद के पूछने पर कहा कि उस दिन सोमवार था और सीमन्तिनी व्रत रक्खे हुये अपनी सखियों सहित स्नान

के लिये यमुना के किनारे गई थी दोनों को घोड़े पर आरूढ़ देख जाना कि यह मेरा पति है क्योंकि शरीर के मुख्य लक्षणों से ऐसा जाना जाता है और राजपुत्र ने भी सीमन्तिनी को देख कर जाना कि यह हमारी स्त्री है कि वह बहुत ही विधवा के लक्षण धार क्षीणाङ्ग हो गई थी सो वह अपने घोड़े से उतर कर यमुना के तट पर बैठ गया और सीमन्तिनी को बुलाकर अपने समीप बैठाया और हर बेर उसकी ओर देख आश्चर्य-पूर्वक कहा कि तुम किसकी स्त्री और किसकी कन्या हो और क्यों तुम्हारी यह दशा हुई तुम लड़कपन में विधवा हो गई हो पर सीमन्तिनी लज्जापूर्वक आंखें आंसुओं से भरकर कुछ उत्तर न दे सकी पर उसकी सखी ने सैन की आज्ञा पाकर कहा कि यह सीमन्तिनी राजा नल के पोते की रानी है और राजा चित्र-वर्म की बेटी है सोमवारव्रत करती है इसका पति यमुना में डूब गया यह विधवा हो अपने माता पिता के घर रहती है और शिव की पूजा किया करती है यद्यपि तीन वर्ष बीते पर इसको पति नहीं भूलता आज सोमवार होने के कारण स्नान के निमित्त यहां आई है और इसका श्वशुर इन्द्रसेन शत्रुओं से हारकर राज्यहीन होगया है और अपनी रानी सहित शत्रुओं की बन्धि में अपने पुत्र के वियोग से मरने के किनारे हो रहा है और शिवपूजा और सोमवारव्रत नहीं छोड़ता फिर सीमन्तिनी ने मधुरवाणी से कहा कि तुम कौन हो किन्नर या गन्धर्व या शरीर धारे कामदेव का रूप या कोई सिद्ध हो अपना मुख्य वृत्तान्त कहो तुम्हारे देखने से जाना जाता है कि तुम हमारे पति का स्वरूप रखते हो यह कह और मूर्च्छित हो धरती पर गिर पड़ी चित्राङ्गद ऐसी दशा अपनी स्त्री की देख धैर्य धर दृढ़तापूर्वक सीमन्तिनी को बहुत समझाया कि हमने तुम्हारे पति को कहीं

देखा है वह तुम्हारे सोमवारव्रत और सुकर्मों से जीता है और तुरन्त ही तुम्हारे निकट आता है केवल दो तीन दिन में तुम्हारे दुःख दूर हो जाते हैं हम यह सन्देशा कहने आये हैं क्योंकि हम तुम्हारे पति के मित्र हैं तुम इस बात को प्रसिद्ध न करना और मन में प्रसन्न रहना परन्तु सीमन्तिनी ने बारम्बार उसकी ओर देखकर विचार किया कि हमारा स्वामी यही है क्योंकि याज्ञवल्क्य की स्त्री के वचन और शिवजी की कृपा से कुछ दूर नहीं कि वह जीता रहा हो फिर राजा ने तुरन्त ही सीमन्तिनी के कान में कुछ चुपके से कह दिया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि तुम अपने माता पिता से जाकर इस बात को कहो तुम थोड़ी ही देर में अपना पति पाओगी यह कहकर उसने अपनी राजधानी में जाकर तक्षक के पुत्र को शत्रु के निकट भेजा उसने जाकर सब वृत्तान्त चित्राङ्गद और शिवजी की दया का वर्णन किया और कहा कि चित्राङ्गद के माता पिता को छोड़ दो वरन् तुम से युद्ध होगा और तुम मारे जाओगे यह सुनकर शत्रु ने मित्रता कर ली और चित्राङ्गद को उनका राज्य और माता पिता दे दिये उस समय सारी प्रजा ने इकट्ठे होकर राजा के पुत्र को देखा जैसा सुख उसके माता पिता को उस समय प्राप्त हुआ उसे हम वर्णन नहीं कर सके उसके पिता राजा इन्द्रसेन ने प्रेम और प्रीति से उसको अपने हृदय से लगाया और उसकी माता ने लिपट कर बहुत आशीर्वाद दिये उसने सभा में बैठकर अपना वृत्तान्त कह सुनाया और जब कि दूतों ने राजा चित्रवर्म को यह कहा तो वह अपनी रानी और सीमन्तिनी सहित अतिप्रसन्न हुआ और बहुत दान और पुण्य किया सबने सीमन्तिनी की प्रशंसा की और फिर चित्रवर्म ने चित्राङ्गद को बुलाकर नये शिरसे विवाह कर

दिया और बड़ा दहेज दिया और सब बरातियों को उत्तम २ नाना भांति के भोजन खिलाये फिर सीमन्तिनी को चित्राङ्गद के साथ भेज दिया जो वस्त्रादिक और आभूषण चित्राङ्गद ने तक्षक से पाये थे वह सीमन्तिनी को पहिनाकर बहुत सी और उत्तम वस्तु उसको दीं और राजा इन्द्रसेन चित्राङ्गद को राज्य सौंपकर अपनी रानी सहित वन में गया और वहां तप और योगाभ्यास करने लगा और मरने के पीछे मुक्त हो शिवपुरी में गया राजा चित्राङ्गद ने मगधदेश का राज्य दशहजार वर्ष पर्यन्त किया और उस समय में सीमन्तिनी से आठ पुत्र और एक पुत्री उपजे वह जन्मभर सुखी रहे और सीमन्तिनी ने सोमवारव्रत को न त्यागा वह सर्वदा अपने पति राजा चित्राङ्गद समेत शिवजी और शिवरानीजी का पूजन करती थी और सदाशिवजी उन पर प्रसन्न थे।

इक्कीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि अब हम दूसरी कथा कहते हैं जिसमें सोमवारव्रत की महिमा है कि प्राचीन समय में एक ब्राह्मण देवमित्र नामी विदर्भदेश में बड़ा विद्वान् और वेद जाननेवाला हुआ उसका मित्र सारस्वत नामी ब्राह्मण था फिर वेदमित्र और सारस्वत के एक एक पुत्र हुआ जिनका नाम सामवान् और सुमेधा था यह दोनों बालक सर्वकार्य और स्वभाव में समान थे उन्होंने एक ही गुरु से विद्या पढ़ी और दोनों ने माता पिता की सेवा करके उनको प्रसन्न किया एक दिन दोनों के माता पिता ने अपने लड़कों से कहा कि अब तुम सोलह वर्ष के होचुके और यह अवश्य है कि तुम्हारा विवाह होजाय पर विना धन के विवाह नहीं होसक्ता इसलिये तुमको उचित है कि तुम दोनों राजा के पास जाओ और अपनी विद्या प्रसिद्ध करके

राजा को प्रसन्न करो कि धन मिले और तुम्हारा ब्याह भी होजावे ऐसा सुनकर वे दोनों राजा विदर्भ के निकट गये और अपनी चतुराई और चपलता से विद्या प्रकटकर बहुत सा धन पाया फिर राजा ने हँसकर उनसे कहा कि मगधदेश का राजा जिसको चित्राङ्गद और जिसकी रानी को सीमन्तिनी कहते हैं वह दोनों सोमवारव्रत को रखकर शिवजी और शिवरानीजी का पूजन करके ब्राह्मणों की सेवा करते हैं और ब्राह्मणों को उनकी स्त्रियों सहित भोजन कराके बहुत धन देते हैं इस कारण तुमसे कहते हैं कि तुम दोनों एक पुरुष और दूसरा स्त्री बनकर वहां जाओ और वहां से धन लेकर फिर हमारे निकट आना ऐसी राजा की आज्ञा सुनकर वह दोनों डरे और कहने लगे कि हमको ऐसा धन नहीं चाहिये क्योंकि देवता, गुरु, माता, पिता और राजा अपने कुल में छल करने से नष्ट होजाते हैं इसी कारण कहा गया है कि राजा के यहां छल से न जावे क्योंकि छली के सर्वकार्य नष्ट होजाते हैं और उसका हृदय स्थिर नहीं रहता ऐसे २ वचन धूर्त को सुखी रखते हैं सज्जन पुरुष ऐसी बात नहीं मानते हमने अच्छे कुल में जन्म लिया है हमसे ऐसी बुरी बात न होगी तुम हमसे ऐसी अधर्म की बात न कहो राजा से वेद का प्रमाण देकर कहा कि वेद की आज्ञानुसार हम यह कहते हैं कि देवता, गुरु, माता, पिता और राजा की आज्ञा को न टालना चाहिये यद्यपि वह अच्छी हो या बुरी पर इसमें विचार नहीं करना चाहिये उस आज्ञा का शीघ्र पालन करना चाहिये सो तुम हमारी प्रजा और हम तुम्हारे राजा हैं इस आज्ञा को अङ्गीकार करो सो दोनों ने राजा की आज्ञा से इस बात को माना और सामवान् स्त्री का वेष करके सीमन्तिनी रानी के पास गया पर सुमेधा पुरुष के वेष में ही रहा और सोमवार

के दिन सीमन्तिनी के घर में ब्राह्मणों की भीड़ देखी सीमन्तिनी ने हर स्त्री को गौरी और पुरुष को शङ्कर का रूप जानकर पूजा किया पर जब उनकी बारी आई तो सीमन्तिनी आदि सामवान् को कृत्रिम स्त्री जानकर बहुत हँसे पर उनको गौरीशङ्कर ही समझ कर उनकी भी पूजा की और उनके मन में दूसरा भाव न आया पूजन के पीछे भोजन कराये भोजन के पीछे दाहने हाथ से पान दिया फिर दण्डवत् कर दक्षिणा और बहुत सा दान देकर विदा किया और सबको भारी २ वस्तु देकर प्रसन्न किया वह दोनों बहुत सा धन लेकर घर सिधारे मार्ग में साम-वान् जो स्त्री बन गया था और उसने गिरिजा महारानी का स्वरूप धारा था वास्तव में स्त्री बन कामवश हो सुमेधा की ओर देखकर कहने लगा कि देखो यह कैसा बन काम के लिये योग्य है सुमेधा ने यह सुनकर समझा कि यह हँसता है और कुछ न विचारकर आगे चला पर फिर वह कामवश होकर कहने लगी कि मैं तुम्हारी स्त्री हूं तुम क्यों मुझसे भोग नहीं करते मैं नहीं चल सकी इस समय कामदेव के बाण से महा-दुःखी हूं तुम मुझसे भोगकर मेरे प्राण बचाओ यह सुनकर सुमेधा ने पीछे फिरकर देखा कि वास्तव में एक स्त्री महासुन्दरी चली आती है तो उससे कहा कि तुम पुरुष होकर ऐसी वार्त्ता क्यों कहते हो तुम वेदपाठी ब्रह्मचारी और निष्पाप हो क्यों ऐसे निरर्थक वचन कहते हो उस स्त्री ने कहा कि जो तुमको निश्चय न हो तो मेरी योनि को देखो मैं पुरुष नहीं हूं मैं तुम्हारी स्त्री हूं यह कहकर उसने अपना शरीर खोला जिसको देखकर उसके मित्र सुमेधा ने चुप होकर आश्चर्य कर शिवजी का ध्यान किया इतने में स्त्री ने फिर प्रार्थना की कि अब तुम्हारी शङ्का भी दूर होगई अब क्यों भोग करने में विलम्ब करते हो

देखो यह वन कैसा विहार करने के योग्य है इस समय हमारा मनोरथ पूरा करो सुमेधा ने कहा कि हम तुम दोनों वेदपाठी हैं ऐसी बातें मत कहो तुम पुरुष हो पर स्त्री बन गये इस लिये शिवजी और शिवरानीजी का ध्यान करो यद्यपि हमने अधर्मी धूर्त बनकर राजा की आज्ञानुसार अपने माता पिता के उपदेश के विरुद्ध ऐसे कार्य किये उसी का यह परिणाम है पर उचित है कि अब चुप रहकर अपने घर चलें और देवता और गुरु से उपदेश लेकर इस पाप से छूटें कदाचित् तुम पुरुष न बनोगे और इसी प्रकार स्त्रीरूप धारण किये रहोगे तो मैं अपने पिता की आज्ञा लेकर अपनी स्त्री तुम्हें बना लूंगा यह कहकर उसने शिवजी की माया और सीमन्तिनी रानी के प्रभाव की बड़ी प्रशंसा की पर उस स्त्री ने कामदेव के वेग से कुछ न सुनकर उसे कण्ठ से लगा लिया सो सुमेधा अति परिश्रम से अपने को छुड़ाकर उस स्त्री सहित घर में पहुँचा और अपने पिता से सब समाचार कह सुनाया दोनों के पिता दुःखी होकर राजा विदर्भ के निकट गये और क्रोधित होकर राजा से कहा कि तुमने क्यों ऐसा बुरा काम हमारे पुत्रों से कराया जिससे हमारा पुत्र स्त्री-रूप बन गया यह मेरा इकलौता बेटा था हमारे पितर निराश होगये क्योंकि और कोई सन्तान इस कुल में नहीं यह कहकर सारस्वत ब्राह्मण बहुत रोया और अचेत हो भूमि पर गिर पड़ा राजा ने सामवान् को स्त्रीरूप देखकर आश्चर्य किया और हाथ जोड़ विनती कर दोनों ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि इसका स्त्री-भाव किसी प्रकार निवृत्त करो यह सुनकर दोनों ब्राह्मणों ने कहा कि शिवजी की भक्ति हृदय में दृढ़ करो निदान स्त्री समेत वह सब गिरिजा की शरण में गये और नाना विधि से गिरिजा को प्रसन्न किया गिरिजा ने प्रकट हो दर्शन दिया और कहा कि

वरदान मांगो तो राजा ने विनय की कि हमको यही वरदान चाहिए कि यह लड़का पुरुष होजाय गिरिजा ने कहा कि हम अपने भक्त की अवज्ञा करना नहीं चाहतीं पर हम तुमसे यही कहती हैं कि सारस्वत ब्राह्मण के दूसरा पुत्र होगा और हमारी शक्ति से इसके दुःख दूर हो जावेंगे यह अब पुरुष नहीं हो सक्ता इसका विवाह सुमेधा के साथ कर दो यह कहकर गिरिजा अन्तर्धान हुईं और सब अपने २ घर सिधारे सारस्वत ने अपने लड़के को जो स्त्री बन गया था सुमेधा ब्राह्मण के साथ ब्याह दिया वे दोनों स्त्री पुरुष प्रसन्न रहकर विहार करने लगे सारस्वत के दूसरा पुत्र उपजा जिससे उसे बड़ा सुख प्राप्त हुआ हे नारदजी! ऐसी शिवजी की भक्ति सीमान्तिनी रानी को हुई सोमवार व्रत की महिमा तुमको विदित हुई होगी कि कैसी अनन्त है और शिवजी किस प्रकार इस व्रत के करनेवाले से प्रसन्न होते हैं इस चरित्र का सुननेवाला और कहनेवाला कुछ दुःख नहीं पाता मासिकव्रत माहात्म्य पूर्ण हुआ।

बाईसवां अध्याय।

वार्षिक व्रतों का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हमने मासिकव्रत वर्णन किये अब हम वार्षिक व्रतों का वर्णन करते हैं जिनके करने से सुख मिलकर मुक्ति प्राप्त होती है जिनके सुनने से सर्व पाप नष्ट होकर सर्व सिद्धि मिलती है एक व्रत उनमें से उमामहेश्वर नामक है और वह सर्व मनोरथ पूर्ण करता है यह व्रत शिवजी और गिरिजा को अति प्रिय है अर्थात् चैत्र और मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी और पूर्णमासी और अमावस को यह व्रत करना उचित है इस प्रकार से कि अपने गुरु की आज्ञानुसार इस व्रत को करे और यथाविधि सब व्रत की रीतें करे

कि प्रातःकाल उठ संकल्प कर नदी में स्नान करे और नित्यकर्म करके अपने घर में आवे और उत्तम मण्डप बनाकर पांच कलश स्थापित करे और उनको अच्छे कपड़ों से ढांप दे और उसके ऊपर शिवजी और गिरिजा की सोने की प्रतिमा बनाकर स्थापित कर दे शिवजी का स्वरूप शंख, चक्र, गदा, पद्म सहित और गिरिजा का स्वरूप आभूषण संयुक्त बनाना चाहिये और प्रीति से उनका विधिपूर्वक पूजन करे और सामग्री इकट्ठी करके शिवजी का जप करे और हवन करके पञ्चाक्षरी मन्त्र पढ़े फिर विसर्जन कर देवे और ब्राह्मणों को स्त्रियों सहित भोजन कराकर दक्षिणा दे बहुत प्रसन्न करे इसी प्रकार प्रदोष काल में शिवजी का पूजन करके आप मधुर भोजन दूधसमेत खावे और एक वर्ष पर्यन्त दोनों पक्षों में इस व्रत को करके शिवजी का पूजन करे ब्राह्मणों की सेवा करे जब वर्ष समाप्त होजावे तब व्रत का उद्यापन करे कि शतरुद्री को पढ़कर शिवजी को स्नान कराये और प्रथम रीति से शिवजी का ध्यान और पूजन करे और पूजन के पीछे ब्राह्मणों को दान देकर अपने गुरु की सेवा करे और उनकी आज्ञानुसार अपने बान्धवों के साथ शिवजी को स्मरण करके भोजन करे इस यत्न से जो मनुष्य इस व्रत को करता है उसके ऊपर शिवजी प्रसन्न होते हैं और उसकी इकीस पीढ़ियां तर जाती हैं और संसार में सुख प्राप्त होकर अन्तकाल में शिवपुरी प्राप्त होती है यह व्रत दुःखों का जलानेवाला और मनोरथ सिद्ध करनेवाला है पर इस व्रत को सामग्री इकट्ठी करके करना चाहिये हम एक वृत्तान्त वर्णन करते हैं जिससे तुमको इस व्रत की महिमा विदित होगी जो वेद और पुराणों में लिखी हुई है कि प्राचीनसमय में वेदभनामी एक ब्राह्मण आनर्त देश में बड़ा सन्तानवाला और बड़ा धनी और वीर था उसके एक

लड़की थी जिसको शारदा कहते थे वह बड़ी पण्डिता थी जब वह द्वादश वर्ष की हुई तो उसको एक बूढ़े ब्राह्मण ने जिसकी स्त्री मर गई थी जो वहां के राजा के मित्रों में था और उसके घर बहुत धन था विवाह के निमित्त उसके पिता से कहा वैदर्भ ने उसे बूढ़ा विचारकर बड़ी चिन्ता की पर अति भयभीत होकर अपनी लड़की को उसके साथ ब्याह दिया सो मध्याह्न के समय विवाह हुआ उसी सन्ध्या को बूढ़ा ब्राह्मण नदी के तट पर से सन्ध्या करके आता था कि उसको मार्ग में सर्प ने काट खाया और वह मर गया ऐसा उपद्रव देखकर सबको बड़ा दुःख हुआ और उसके भाई बान्धव क्रियाकर्म के पीछे अपने घरों को लौट आये शारदा विधवा होकर अपने माता पिता के घर रही इसी प्रकार कुछ समय व्यतीत हुआ एक दिन उसके भाई किसी स्थान पर ब्याह में गये उनके पीछे वैध्रुव मुनि जो अन्धे थे अपने शिष्यों का हाथ पकड़ उसके घर आये उसने मुनि की सेवा करके भोजन कराये वैध्रुव मुनि बहुत प्रसन्न हुये और उसको यह वरदान दिया कि तुम्हारे पति से तुम्हें एक पुत्र होगा जो देवताओं की कृपा से बड़ा धर्मवान् होगा शारदा ने आश्चर्य करके हाथ जोड़कर मुनि से प्रार्थना की कि हे महाराज! वास्तव में आपका वाक्य सत्य होता है परन्तु मैं विधवा हूं मुझको ऐसा फल कहां से मिलेगा हमारा पति विवाह के दिन ही मर गया था हमारी यह अवस्था पहिले जन्म के पाप से हुई यह सुनकर मुनि ने शिवजी का ध्यान कर कहा कि मैं अन्धा हूं विना देखेभाले मैंने तुम्हें ऐसा वरदान दिया परन्तु मैं श्रीसदाशिवजी को प्रसन्न करके अपने दिये हुये वरदान को सत्य कर दूंगा जो तुम हमारी आज्ञा मानो तो सब सत्य हो सक्ता है अर्थात् तुम उमामहेश्वर व्रत जो शिवजी का है धारण

करो निश्चय है कि हमारा वाक्य असत्य न होगा यह सुनकर शारदा बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि मैं अवश्य ही यह व्रत करूंगी सो मुनि ने उसको सब विधि बता दी इतने में उसके भ्राता आदि ने जब आकर यह वृत्तान्त सुना तो प्रसन्न होकर मुनि से कहने लगे कि हे महाराज! आप धन्य हैं जो आप यहां आये हमारा कुल शुद्ध होगया यह हमारी पुत्री आपकी शरण में है तुम यहां इस शिवालय में रहो यह पतिहीन लड़की आपकी सेवा करेगी और व्रत धारण करके आपकी दया से अपना मनोरथ पावेगी पर जबतक यह व्रत समाप्त न हो तबतक आपका चला जाना उत्तम नहीं निदान मुनि ने उसके माता पिता और भाइयों की ऐसी विनती सुनकर वहां रहना अङ्गीकार किया वह सब मुनि की सेवा करने लगे और शारदा से उमामहेश्वर का व्रत रखवाया और शारदा ने अति प्रेम और प्रीति से उमामहेश्वर का पूजन हृदय से किया।

तेइसवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि इस प्रकार शारदा को व्रत करते हुये एक वर्ष बीता तिस पीछे उसने उस व्रत का उद्यापन किया जैसा आगे वर्णन किया उसने प्रदोषकाल में शिवपूजन करके जागरण किया और रात्रि भर शिवजी का मन्त्र जप करती रही और मुनि ने भी रातभर योग तप और जप आदि से गिरिजा को प्रसन्न किया सो दोनों की ऐसी भक्ति देखकर गिरिजा ने दर्शन दिये जिससे वे सुखी हुये मुनि जो अन्धे थे नेत्रवान् होगये और दोनों गिरिजा के चरणों पर गिर पड़े और हाथ जोड़कर बड़ी स्तुति की गिरिजा ने अति प्रसन्न हो दोनों को हाथ से पकड़कर उठा लिया और कहा कि हे मुनिजी! और हे शारदा! मैं तुम्हारी कामना पूरी करूंगी यह सुनकर मुनि ने प्रार्थना की

कि यह शारदा विधवा होकर अपने माता पिता के यहां बैठी है मैंने जो इसे आशीर्वाद दिया तो बेजाने बूझे अन्धेपन में दिया उसको आप पूर्ण करें यह सुनकर देवी ने कहा कि तुम अगले जन्म का वृत्तान्त शारदा का सुनो यह शारदा एक द्रविड़ ब्राह्मण की पुत्री थी जो एक ब्राह्मण की दूसरी छोटी स्त्री हुई उसने अपनी सवति को जो बड़ी थी अनेक प्रकार के कष्ट दिये और उसका स्वामी भी उसकी सुन्दरता और स्वरूप को देखकर ऐसा मोहित था कि उसने अपनी पहिली स्त्री को किंचिन्मात्र भी सुख न दिया इसी प्रकार पहिली स्त्री की सारी अवस्था व्यतीत हुई जब पहिली स्त्री मर गई तब छोटी स्त्री अर्थात् शारदा बहुत सुखी होकर अपने पति से विहार करने लगी उसके पड़ोस में एक ब्राह्मण तरुण रहता था जिसने शारदा की सुन्दरता पर मोहित होकर उसका हाथ पकड़ लिया शारदा ने क्रोधित होकर उसे बहुत दुर्वचन कहे पर वह शारदा के मोहसागर में अति विकल हो मर गया और जो कि इसने अपनी सवति को बहुत क्लेश दिया इसका कारण वह इस जन्म में विधवा हुई और बराबर २१ जन्म तक विधवा ही होगी और उसी ब्राह्मण की स्त्री होकर फिर विधवा हो गई और जो उसका पहिले वर्ष में पति था वह पाण्डव देश में एक ब्राह्मण के यहां उत्पन्न हुआ है वह बड़ा धनी बोधवान् सुन्दर और शिवपूजन में लीन रहता है सो उसके साथ नित्य स्वप्न में इससे भेंट हुआ करेगी वह स्थान यहां से ३६० योजन है उसके साथ स्वप्न में शारदा भेंट कर शुभ घड़ी में एक पुत्र पावेगी जिसको उसका पिता देखकर बहुत प्रसन्न होगा इसने पहिले जन्म में हमारी सेवा की थी इसलिये हमने इसे दर्शन दिया तिस पीछे गिरिजा ने शारदा से कहा कि तुम्हारा पति तुम्हें स्वप्न में नित्य मिलेगा

और तुम उसको और वह तुमको देखकर परस्पर प्रसन्न होगे तुम अपने पुत्र को उसे देकर अपने व्रत का फल आधा दे देना और उसके साथ जाकर उसकी सेवा करना विना स्वप्न के और किसी प्रकार तुम उससे न मिलोगी परन्तु व्रत को कभी न छोड़ना और जब वह तुम्हारा स्वामी मर जावे तब तुम उसके साथ सती हो जाना फिर तुम विमान पर चढ़कर शिवजी की भक्ति पावोगी तुम्हारा पुत्र बड़ा वीर और धनवान् होगा यह कहकर देवी अन्तर्धान हुई और शारदा ने यह वर पाकर बड़ा आनन्द किया और प्रभात को यह सर्व वृत्तान्त मुनीश्वर ने शारदा के माता पिता से कह सुनाया उनको भी सुनने से बड़ा सुख प्राप्त हुआ फिर मुनि जाकर अपने स्थान को चले गये और शारदा नित्य अपने स्वामी को पाकर सुखी रहने लगी वह थोड़े ही दिनों के पीछे गर्भवती हुई सब बान्धव और मनुष्य उस नगर के उससे ग्लानि करने लगे और दया न करके उसको घर से निकालना चाहा और कहा कि इसके शिर से बाल दूर कर दो जब वह उसके माता पिता सहित इस बात के करने को तय्यार हुये तब आकाशवाणी हुई कि इसने कोई कुकर्म नहीं किया तुम क्यों इसे कष्ट देते हो इसका ब्रह्मचर्यव्रत नाश नहीं हुआ इस पर कामदेव ने बल कुछ न किया इस पर जो मनुष्य दोष लगावेगा उसकी जिह्वा फट जावेगी यह सुनकर उसके माता पिता और भ्राता और बान्धव बहुत प्रसन्न हुये और शेष अन्य मनुष्य बहुत आश्चर्य में होकर कहने लगे कि किसी ने यह बात झूठ आकाशवाणी के ओढ़र से कही है यह बात समझ में नहीं आती सो तुरन्त उनकी जिह्वा फट गई और उन्होंने बड़ा कष्ट भोगा तब सब लोग उसकी प्रशंसा करने लगे फिर एक वृद्ध मनुष्य ने कहा कि स्त्रियों को शारदा के पास

भेजो कि वह सर्व वृत्तान्त जानकर हमको समझावें सो स्त्रियों ने उससे पूछकर सब पर वह वृत्तान्त प्रकट किया सबने यह सुनकर उसकी महिमा वर्णन की फिर सर्व मनुष्य प्रशंसा करते हुये अपने २ घर सिधारे ।

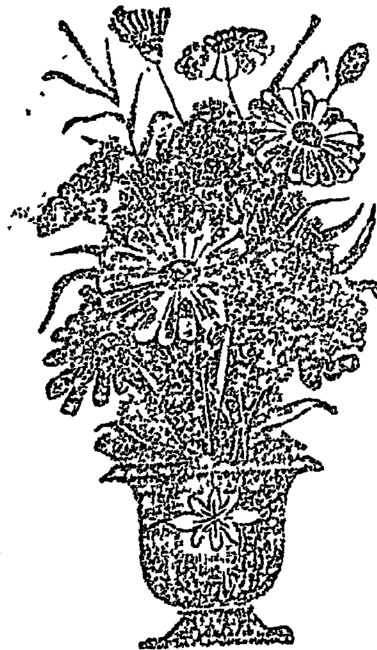
चौबीसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! शुभ घड़ी में शारदा के एक सुन्दर पुत्र उपजा उसने बाल्यावस्था में विद्या पढ़ी वह सूर्य के समान प्रकाशवान् था उसका नाम शारदेव हुआ उसने तीन वर्ष में तीनों वेद पढ़े और शिवपूजन करने लगा और विवाह करके अपनी सन्तान को सुखी रक्खा कुछ समय के पीछे अपने माता पिता सहित गोकर्णतीर्थ में गया जब शिवरात्रि थी सबने गोकर्णनाथ के स्नान के पीछे शिवजी की पूजा की और वहीं ठहरे शारदा भी अपने पति को वहां देख बहुत प्रसन्न हुई और उसके स्वामी को भी अपनी स्त्री और पुत्र को देखकर आश्चर्य हुआ कि यह तो वही स्त्री और वही पुत्र जिसको हम स्वप्न में देखते हैं यह विचार कर वह शारदा के निकट गया और कहा कि तुम किसकी स्त्री और किसकी पुत्री हो तुम्हारा क्या नाम है तुम किसलिये हमारी ओर बेर-बेर देखती हो तुम्हारी प्रीति हम में कुछ कम नहीं है शारदा ने रो करके अपना वृत्तान्त कह सुनाया यह सुनकर ब्राह्मण ने हँसकर पूछा कि यह किसका पुत्र है जिसके देखने से जो प्रीति पिता की होती है वह मुझे प्राप्त हुई है और पूछा कि जब तुम विधवा होगई तब यह किस प्रकार पुत्र उपजा तब शारदाने अति लज्जित हो उत्तर दिया कि हे स्वामिन् ! यह लड़का शारदेव है सब विद्यानिधान है यह सुनकर उसने

मुसकराकर कहा कि बड़ा आश्चर्य है कि तुम्हारे पति ने तुम्हारा हाथ भी न पकड़ा था कि मर गया फिर यह पुत्र किस प्रकार उत्पन्न हुआ जाना जाता है कि तुमने धर्म के विरुद्ध कर्म कर इसको उत्पन्न किया इसी से तुम गोल मोल कहती हो उचित है कि सत्य २ वृत्तान्त कहो यह सुनकर शारदा ने सब मुख्य वृत्तान्त कहा फिर निर्लज्जित होकर कहा कि हे स्वामिन् ! तुम मुझे भले प्रकार जानते हो और मैं भी तुम्हें जानती हूं तुम हमारे सुख देनेवाले हो यह कहकर सब वृत्तान्त कहा ब्राह्मण को निश्चय हुआ और फिर उसने अपना वृत्तान्त सबको कह सुनाया और बताया कि तुम हमारी स्त्री हो शारदा ने तुरन्त ही अपने व्रतों का आधा फल उसे दे दिया और पुत्र को उसे देकर उसके अधीन हुई ब्राह्मण को अपने पहिले जन्म का वृत्तान्त मालूम हुआ उसने अपनी स्त्री और पुत्र को पहिंचान लिया और अपने माता पिता की आज्ञानुसार शारदा को अपने घर ले गया शारदा ने उसकी बड़ी सेवा की और दोनों सुखी रहे निदान ब्राह्मण मर गया शारदा उसके साथ सती हुई उस समय विमान आया और दोनों शुद्ध होकर उस पर चढ़ शिवपुरी में गये ब्राह्मण गणों का राजा हुआ और शारदा गिरिजा की सखी हुई हे नारद ! यह कथा अति पवित्र है इसके सुनने और कहने से बड़ा सुख दोनों लोक में मिलता है संसार में भक्ति और परलोक में मुक्ति मिलती है और नाना प्रकार के पाप दोष दूर हो जाते हैं इस चरित्र के श्रवण करने से भक्ति अधिक होती है कोई रोग नहीं रहता सुख धन और सम्पत्ति कहनेवाले और सुननेवाले को मिलती है यह कथा पवित्र है स्त्रियों के पति की अवस्था बढ़ानेवाली है इस उमामहेश्वर व्रत को राजव्रत कहते हैं इससे सब प्रकार का सुख मिलता है

शिवजी और गिरिजा को यह व्रत अतिरोचक है इस व्रत के करने से शिवजी और गिरिजा की प्रीति अधिक होती है।

इति श्रीशिवपुराणे दशमखण्डे सर्वव्रतमाहात्म्य-
वर्णनो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥



ॐ नमः शिवाय।

शिवपुराण भाषा

—⁂—

ग्यारहवां खण्ड

पहिला अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! हमने शिवजी का निर्गुण और सगुण रूप वर्णन करके दोनों स्वरूपों के चरित्र तुमको सुनाये और शिव के अवतारों का विस्तार से वर्णन करके शिवजी को कैलास में जाना और सतीचरित्र और गिरिजाचरित्र सब प्रकट किये और शिवजी के पुत्रों की कथायें वर्णन कर उनके सौ अवतारों का भी वृत्तान्त कह सुनाया और शिव के लिङ्गों की कथा विस्तार से कहकर सब तुमको बताया अब कोई कथा शेष नहीं है जिसका पुनर्वर्णन करें पर जिस कथा के सुनने की अभिलाषा हो वह हमसे पूछो कि हम तुमसे कहें इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनको! जब नारद ने ब्रह्मा से यह वचन सुना तो विनती की कि हे पिता! तुमने बड़ी कृपा करके मुझे यह सब शिवचरित्र कह सुनाया हमको इसके सुनने से परमधर्म प्राप्त हुआ है अब मेरी इच्छा है कि आप मुझको सर्व ब्रह्माण्ड की स्थिति की रीति बतावें जिसके जानने से हमारे मन में कुछ संशय न रहे और मैं यह भी जानूं कि कौन कहां है और क्या काम करता है और किस प्रकार से कौन कहां का राज्य करता है और यह भी कि चौदहों लोक के लोग किसको पूजते हैं हे शौनको! यह वचन नारद का सुनकर ब्रह्माजी बोले कि शिव

सबकी पूजा के योग्य हैं और यद्यपि वह तीनों गुणों से परे हैं पर तो भी ब्रह्माण्ड की भलाई के लिये सगुण स्वरूप धारण करते हैं वही सबके स्वामी हैं यह कहते हुये ब्रह्मा को अति प्रसन्नता प्राप्त हुई और उनके सब रोम खड़े होकर नेत्रों से आंसू की धारा बह निकली और बारम्बार शिव के चरणों का ध्यान करके नारद से कहने लगे कि हे नारद! तुम धन्य हो कि तुमने बार २ शिव के चरित्रों का वर्णनकर मेरे मन में शिवजी की प्रीति दूनी की हे नारद! जो मनुष्य शिव के चरित्र सुनते हैं उनसे श्रेष्ठ तीनों लोक में और कोई मनुष्य नहीं है और जो कोई मनुष्य शिवजी के चरित्रों के सुनने के लिये किसी से कुछ प्रश्न करते हैं वे वे परिश्रम भवसागर से पार उतर जाते हैं हे नारद! शिव के दो स्वरूप हैं एक क्षर दूसरा अक्षर उनमें से क्षर अर्थात् सगुणस्वरूप और अक्षर निर्गुणस्वरूप है और सर्व ब्रह्माण्ड में वह गुप्त और प्रकट है इसी प्रकार दो भांति की माया भी है पहिली विद्या और दूसरी अविद्या जिनमें सदा-शिवजी ब्रह्म होकर विराजमान हैं और शिव सगुणस्वरूप माया से परे शरीररहित और बड़े ईश्वर हैं उन्हीं सगुणस्वरूप शिव की लीला से तीनोंलोक की अस्ति भासती है यह उन्हीं का कार्य है और चौदहों लोक और ब्रह्माण्ड सब प्रकृति की कृत्य से उप-स्थित हुआ है और सदाशिव का विराट्‌रूप पहिले सब मनुष्यों के ध्यान करने के योग्य है जिसके ऊपर के भागों में सात लोक और सात ही नीचे के लोक हैं नीचे के लोकों का यह विस्तार है अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ और पाताल ७ यह नीचे के लोक विराट्‌रूप के चरणों की भांति हैं और ऊपर के लोक यह हैं भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ जो ऊपर के अङ्ग

शीश आदि की भांति हैं और उपलोक भी इन्हीं भागों में गिने गये हैं अब और विस्तार सुनिये कि विराट्रूप का पगतली पाताल टखना रसातल पिंडली महातल गांठें तलातल रानें सुतल और शरीर का एकभाग वितल और दूसरा भाग अतल और जांघें महातल हैं और नाभि भूर्लोक और भुवर्लोक और छाती स्वर्लोक और मुख जनलोक मस्तक तपलोक और शिर सत्य-लोक और गर्दन महर्लोक है निदान शिर से पांव तक ऊपर के क्रम के अनुसार चौदहों लोक को विराट्रूप के अङ्ग समझकर ध्यान करना चाहिये इसी प्रकार और सब उपलोक और चौदहों लोकों के मध्य में प्रकट हैं और ब्रह्मा से लेकर चींटी तक जो कुछ है वह सब विराट्रूप शिव का शरीर और उनके अङ्ग जानकर कोई वस्तु शिवजी से भिन्न न जाननी चाहिये उस विराट्रूप शिव की भुजा इन्द्र हैं और अग्नि मुख और दिग्देव ९ कान और आकाश शब्द और अश्विनीकुमार नाक और सूर्य नेत्र और रात दिन भवें और यमराज दाढ़ें और ब्रह्मा लिङ्गेन्द्रिय और सरस्वती जिह्वा और माया दांत और वेद ब्रह्मरन्ध्र और कवियों की काव्य उस रूप की हँसी है और संसार का आनन्द उस विराट्पुरुष की दृष्टि है और ऊपर का ओष्ठ प्रीति और नीचे का ओष्ठ लोभ और पांजर समुद्र और पर्वत हड्डियां और वृक्ष केश और लक्ष्मी चाल है और बाल्यावस्था युवावस्था और बुढ़ापा माया और प्रभात और सन्ध्या वस्त्र और श्वास पवन जो ७२ हैं और वर्षनेवाले बादल शरीर के रोम और प्रकृति हृदय और मन चन्द्रमा है और सर्व मुनीश्वर पांचों इन्द्रिय और दैत्य बल और देवता दशों प्रकार के धर्मशास्त्र और पुराण और जो ब्राह्मण वेदपाठी हैं वह मुख्य सदाशिव स्वरूप हैं और धर्मवान् क्षत्रिय भुजा और वैश्य ऊरु और शूद्र

चरण हैं और चारों वर्णाश्रम चारों वेद और संन्यस्त सहित उस विराट्रूप परमेश्वर के पांचों मुख हैं जो कोई मनुष्य ऐसे विराट्रूप का ध्यान करता है वह सर्व पापों से छूट जाता है हे नारद! हम तुमको चौदहों लोकों का वृत्तान्त विस्तार से सुनाते हैं कि जिस प्रकार ब्रह्माण्ड चौदहों लोक में बांटा गया है भूतल कि जिसमें सात खण्ड हैं वह एक अयुतयोजन लम्बा है वहां स्वर्गलोक से भी अधिक आनन्द है वहां के खण्ड अति प्रकाशवान् और सुन्दर हैं और वहां सर्व प्रकार के आनन्द की सामग्री सबको प्राप्त है और भोगविलास के लिये महासुन्दर स्त्रियाँ और असंख्य धन उपस्थित है और मन्दिर अति सुन्दर और स्थान २ पर विचित्र प्रकार से विद्यमान हैं किसी वस्तु की न्यूनता नहीं वहां के स्त्री पुरुष रात्रि दिन क्रीड़ा और विहार में लगे रहकर सोने रूपे के आभूषणों से सदा अलंकृत रहते हैं और वहां तोता और मैना आदि पक्षी मधुर वाणी से बोलते हैं जिनकी प्रियवाणी से कामदेव प्रबल होता है और देवताओं के स्थान रत्नों से जड़े हुये कि जिनके देखने से विश्वकर्मा भी लज्जित होते हैं और वहां किसी को जरा, मृत्यु, दुःख, चिन्ता नहीं होती और सबके शरीर प्रकाश से देदीप्यमान हैं क्योंकि वे सब रसायन खाते हैं और वहां बहुधा दिति की सन्तान अर्थात् दैत्य और दानव और कद्रू के पुत्र काली आदि सर्प रहते हैं जो प्रतिदिन प्रसन्न रहकर आनन्द में अपना समय बिताते हैं और वहां महाशिरोमणि के प्रकाश से रात और दिन कुछ जाना नहीं जाता और न वहां अँधेरा होता है एक ही तरह पर सब रात दिन दिखाई देता है उनके सम्पूर्ण मन्दिर रत्नों से बनाये गये हैं और वहां के स्त्री पुरुष क्या २ आनन्द नहीं उठाते और कोकिला और पपीहा

आदि अन्य पक्षी अपनी मधुर वाणी से कामदेव को बढ़ाते हैं और वहां की पुष्पवाटिकाओं में हज़ारों छायावाले तरह २ के वृक्ष फल फूलों समेत मन को बड़ा आनन्द देते हैं जिनके ऊपर पक्षियों के बालक चहक २ कर धीरे २ बोलते हैं और नदी में कमल के फूलों की पंक्ति और मछलियों का इधर उधर फिरना और जलजन्तुओं का भ्रमण और चक चकवी और हंसों के समूहों का पंक्ति बांधकर बैठना मन को खींच लेता है और वहां की उज्ज्वल जल की भरी हुई नदियां जिनके दोनों तटों पर नाना वर्ण के पक्षी बैठे रहते हैं और उनके दोनों तटों पर सघन वृक्ष जल के भीतर झुके खड़े हुये हैं और फिर कमल पुष्प की पंक्ति भीतर से दूर तक चली गई है यह सब वस्तु चित्त के मोहनेवाली हैं उस लोक के राजा शेषजी हैं जो नीचे के सातों खण्डों के राजा हैं जिनके सम्मुख अप्सरा सदा नृत्य करती हैं और नागों की कन्या सेवा करती हैं यह हमने संक्षेप से सातों खण्डों का वृत्तान्त वर्णन किया अब हम जुदा २ हर एक लोक का वृत्तान्त वर्णन करते हैं।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! पहिले हम अतल का वृत्तान्त वर्णन करते हैं जहां मनुष्य पुण्य करने से पहुँचकर सब दुःखों को भूल जाता है जिसका राजा मय दानव का पुत्र है जिसने छियानबे माया मन के हरण करनेवाली बनाई हैं यह लोक किसी को सदाशिव की सेवा बिना प्राप्त नहीं होता और उसका विस्तार दश सहस्र योजन है यहां का राजा मय दानव का पुत्र माया में ऐसा प्रवीण है कि उसकी माया कोई मनुष्य नहीं जान सका और वह रात दिन सदाशिव के ध्यान में रहा करता है और बे परिश्रम तीनों लोकों में भ्रमण किया करता है और

उसके स्मरणमात्र ही से तीन प्रकार की महासुन्दर स्त्रियां आकर उसके सामने उपस्थित हो जाती हैं जिनको कामिनी स्वैरिणी और पुंश्चली कहते हैं और वह तीनों लोकों को कामजाल में बन्धवान् करनेवाली हैं जो मनुष्य पहिले जन्म में अच्छे काम करता है वही मनुष्य दूसरे जन्म में अतललोक में प्रवेश कर सर्व प्रकार के विहार करता है और वे स्त्रियां हाटक अर्थात् स्वर्ण के रस को खाकर विहार करती हैं और उन स्त्रियों के केवल हँसने और स्पर्श से मनुष्य प्रीति में डूब जाता है वहां का सा आनन्द देवताओं को भी नहीं मिलता जैसा मनुष्य वहां जाकर पाता है और जो मनुष्य हाटकरस खानेवाली स्त्रियों से सम्भोग करते हैं वह अपने आपको ही ईश्वर मानते हैं उसके दश सहस्र हाथी का बल हो जाता है और वह सदा मदान्ध हो जाता है और यह हाटकरस जिसका गुण ऊपर वर्णन किया गया है शिव की सेवा करके मय दानव के पुत्र ने पाया उसने हाटकरस के मिलने के लिये हाटकपति शिव की पूजा की थी जब उसने बहुत ही हाटकपति शिव की सेवा की तब हाटकपति शिव ने उसको यह हाटकरस कृपा किया और जो उस समय मय दानव के पुत्र ने सदाशिव की स्तुति की थी वह अब भी किया करता है और वह यह है कि हे सदाशिव! तुम सबके नाथ अनाथों के पालनकर्त्ता हो तुम तीनों लोक के दुःख दूर करनेवाले और सुख देनेवाले हो तुम्हारी महिमा अति गुप्त है जिसके वर्णन से वेद और पुराण भी थक गये हैं और हे महाराज! तुम्हारी सेवा से असंख्य मनुष्यों ने मुक्ति पाई है और संसार में बहुत ही सुख पाया है और ब्रह्मा विष्णु और सनकादिक सब देवता तुम्हारी सेवा किया करते हैं और तुम सबके अर्थ पूर्ण कर देते हो यह

बात सब वेद और पुराण तुमको प्रणाम कर कहते हैं यही मुझे इच्छा है कि आपका भजन निश्शङ्क किया करूं आपका नाम तो अधम उद्धारण है इस बात को सुनकर हमने आपकी शरण पकड़ी है हे नारद! इस तरह प्रतिदिन मय दानव का पुत्र शिव की स्तुति किया करता है और अतललोक में उसे अप्रमेय आनन्द रहता है यह वृत्तान्त तो अतललोक का है और वितललोक का यह वृत्तान्त है कि वह अतल-लोक के नीचे उँचाई में दश हज़ार योजन अण्डे के समान गोल है और वह तालाब और नहरों और नदियों से जिनमें कमल फूले हुये हैं अति शोभायमान है और उसमें नाना प्रकार की जड़ी बूटी और फले हुये छायावाले सघन वृक्ष जिन पर पक्षी मधुर वाणी से राग गाकर मन को हर लेते हैं सुशोभित हो रहा है कहीं पर भँवर फूलों पर बैठकर गुञ्जार करते कहीं सरोवरों पर हंस बैठे हुये हैं वहां पर हाटकेश नाम शिवलिङ्ग विराजमान हैं वे अपने गणों सहित लिङ्गस्वरूप से रहकर तीनों लोक का पालन करके वहां के राजा को बूढ़ा नहीं होने देते और सदा शिवरानी को साथ लेकर विहार किया करते हैं जिनके शीश से जल की धारा बहकर हाटक के नाम से प्रसिद्ध है उसको पीकर अनल अति बलवान् हो वायु के संगम कर जो थूक कि उसके मुख से बाहर गिरता है उसी को हाटक नामी कञ्चन कहते हैं जिसको दैत्य भूषण बनाकर पहनते हैं और उसी का भूषण वहां की स्त्रियां भी पहनकर अपने पतियों की सेवा में प्रवृत्त रहा करती हैं और राजा बलि हर प्रकार शिव की पूजा करते हैं और वह स्तुति जो राजा बलि शिव की करते हैं यह है कि देवताओं के देवता, शरणागत के पालने-वाले, सर्व संसार के दुःखहर्त्ता! तुम अपने भक्तों के अधीन

होकर निर्गुण होने पर भी शरीर धारण करते हो और सबकी आत्मा हो ब्रह्मा विष्णु और देवतादि तुम्हारा ध्यान करके सब कुछ पाते हैं और ब्रह्मा और विष्णु और रुद्र तुम्हारे रूप हैं तो तुम्हारी आज्ञा से संसार उपजाकर और पालकर अन्त में नष्ट कर देते हैं वेद तुमको कहते हैं कि तुम सबमें और सबसे भिन्न हो तुम्हारा आदि और अन्त नहीं और तुम अविनाशी पुरुष हो वेद नारद, शारद और शेष तुम्हारे गुण वर्णन करते हुये थक जाते हैं पर अन्त नहीं पाते इसी प्रकार सब वहां के रहनेवाले शिवजी की स्तुति करके प्रसन्न रहते हैं हे नारद! अब सुतललोक का वृत्तान्त सुनिये वह दश सहस्र योजन चौकोन है वहां का राजा विरोचन का पुत्र बलि है जिसने विष्णु को दान देकर पूर्ण कर दिया हे नारद! राजा बलि अतिधन्य है जिसके मन में सदाशिव का प्रेम स्थित रहता है और जिसको शिव की भक्ति के कारण विष्णु मार न सके राजा बलि के समान और कौन ब्राह्मण का माननेवाला है जिसने संशय छोड़ विष्णु की इच्छा पूरी की और ब्राह्मणरूप विष्णु देखकर सर्व प्रकार का विरोध दूर किया और अपनी खराबी देखकर धर्म न छोड़ा वह मनुष्य संसार में शिव कहने के योग्य है जिसके मन में ब्राह्मण के चरणों की प्रीति दृढ़ हो और उन्हीं राजा बलि से बाणासुर उपजा जिसके मन में सिवाय शिवजी के और किसी की जगह न थी और जिसने एक पर्वत को मलकर मट्टी कर डाला और जिसके बल को दिक्पति और नाग सम्हार न सके हे नारद! यह भी शिव की कृपा समझो जो राजा बलि ने बाणासुर के समान पुत्र पाया और जिसके नगर की रक्षा विष्णु को सौंपी गई यह बात राजा बलि को सदाशिव की अतिकृपा से प्राप्त हुई इतना सुनकर नारद ने पूछा कि महाराज! मुझे

बताइये कि राजा बलि ने किस प्रभाव से ऐसा आनन्दपद और सत्पुत्र पाया ब्रह्माजी बोले कि जिससे राजा बलि ने एक मुनि की आज्ञानुसार सदाशिव का प्रेम बढ़ाकर और तीनों लोकों को अपने अधीन करके देवताओं को अपना कर देनेवाला बनाया और जिस कारण वह ब्रह्मभक्त हो विष्णु से न हारा और उसके पूर्वजन्म का वृत्तान्त भी हम वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सदाशिव का प्रेम अधिक होकर भक्ति और मुक्ति मिलती है ।

तीसरा अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पूर्व काल में कण्वनामी बड़ा पापी मनुष्य ब्राह्मणों की निन्दा करनेवाला हुआ वह परस्त्रियों से भोग करता और हर प्रकार के कुकर्म करनेवाला था और वह बहुत से जीवों को वध कर इतना दरिद्रता में घिर गया कि उसके शरीर में कोपीन तक भी न थी और वह चोरी और छल से अपना समय बिताता इस तरह वेश्याओं के साथ मैथुन कर उसने अपना धर्म नष्ट कर डाला एक दिन वह कण्व एक वेश्या के लिये पान फूल और चन्दन लिये हुये दौड़ा जाता था कि भाग्यवश उसका भार जल्दी चलने से पृथ्वी में गिर पड़ा और वह मूर्च्छित हो गया और जब कुछ देर के पीछे उसे चेत हुआ तो जो पान व फूल आदि पृथ्वी पर गिर पड़े थे वह शिव के नाम संकल्प कर दिये और मुख से "नमश्शिवाय" भी कहा इतने में वह मर गया सो उसे पापी जान यमराज के दूत लेने को आये और उसे तुरन्त पकड़कर यमराज के पास ले गये जहां अपराधियों को दण्ड दिया जाता है सो एक दिन यमराज ने उससे कहा कि हे पापी ! तूने संसार में बड़े २ पाप किये और अपने धर्म को छोड़ दिया तेरे पाप हम मुख से वर्णन

नहीं कर सके पर तुझे हम बड़े नरक में डालेंगे यह सुनकर कण्व ने उत्तर दिया कि हे महाराज, यमराज, एक ही दृष्टि से देखनेवाले ! हमारी बात मन से सुनो मैं कुछ पापी नहीं हूं मेरे पाप सब नष्ट हो गये हैं यह सुन धर्मराज ने चित्रगुप्त को बुला कर कहा कि हे चित्रगुप्त ! इस मनुष्य की बात मन लगाकर सुनो कि यह मनुष्य इतना पापी होने पर भी कैसी ढिठाई से वचन कहता है इसको मैं अवश्य ही नरक में डालूंगा यह सुन चित्रगुप्त ने तुरन्त शिव का ध्यान किया और उस पापी पर शिव की कृपा जान यमराज से कहा कि इस मनुष्य ने जन्म भर बड़े बड़े पाप किये पर मरने के समय इसने एक पुण्य का काम किया है कि वह एक वेश्या के निमित्त पानादि लिये जाता था संयोग से पृथ्वी में गिरकर इसने सर्व सामग्री शिव को अर्पण कर दी और मरने के समय शिवजी के चरणों को ध्यान किया हमारे विचार में यह नरक में डालने योग्य नहीं इसको स्वर्ग-लोक देना चाहिये और तीन घड़ी तक इसको इन्द्रासन मिलना चाहिये वहां जो कुछ इसके मन में आवे वह करे यह सुनकर यमराज ने मान लिया और उत्तमरूप से कण्व को दर्शन दिया और शिव की महिमा बखानी इतने में बृहस्पति देवताओं समेत आये और कण्व को ऐरावत हाथी पर चढ़ाय इन्द्र के घर में ले गये और बृहस्पति ने इन्द्र से कहा कि तीन घड़ी के लिये कण्व को अपनी गद्दी पर बैठाओ यह हमारी आज्ञा मानो इसने उत्तम २ वस्तु शिव के अर्पण किया इससे तुम्हारी गद्दी इसको मिली है यह सुनकर इन्द्र अपने गुरु की आज्ञा मानकर चिन्ता-पूर्वक वहां से किसी स्थान पर जा बैठे और कण्व इन्द्र के बदले गद्दी पर बैठकर बहुत ही प्रसन्न हुआ हे नारद ! कण्व ताम्बू-लादि शिव के अर्पण करने से इस गति को पहुँचा और जो

मनुष्य शिव और गिरिजा की पूजा करते हैं वे सदा मुक्ति पाकर आनन्द से रहते हैं शिवपूजक को संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं इसी प्रकार असंख्य मनुष्यों ने करव और गुणनिधि के समान शिवजी की कृपा से शिवलोक पाया है निदान उस समय हे नारद ! तुमने करव के समीप जाकर कहा कि अब तुम शची अर्थात् इन्द्राणी को अपने पास बुलावो जिससे तुम्हारा राज्य सुशोभित होवे क्योंकि तुमको उससे मुख्य आनन्द प्राप्त होगा पर करव ने हँसकर तुमसे कहा कि हमको शची से कुछ प्रयोजन नहीं फिर तुम ऐसी बात मत कहना फिर करव ने दान देना आरम्भ किया और अगस्त्य को हाथी और विश्वामित्र को घोड़ा गालव्य को गौ और कल्पवृक्ष देकर बहुत अच्छी चीजें सबको दे दीं और शिवक्षेत्रों में जाकर बड़ी पूजा की और उसने तीन घड़ीपर्यन्त बहुत ही दानादि दे ब्राह्मणों को प्रसन्न किया फिर इन्द्र पूर्व के समान अपनी गद्दी पर आ बैठा और बड़े क्रोध से शची को बुलाकर आंखें लाली करके कहा कि तुम्हारे साथ करव ने अवश्य ही कुकर्म किया है तुम हमसे सत्य २ कहो यह सुन शची ने हँसकर कहा कि तुम अपने ऐसा सबको देखते हो तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है करव बहुत शुद्ध मनुष्य है यह करव बहुत ही निर्मल और शिव इस पर दयालु हैं यह मोह आदि के जाल से छूटकर बड़ा भक्त हो गया है और परमपद पाकर तीनों लोक का आनन्द उठावेगा यह कह शची चुप हो गई।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शची की ऐसी बातें सुनकर इन्द्र अति लज्जित हुये पर जब कि उसने देखा कि ऐरावत हाथी और उच्चैश्रवा घोड़ा और कामधेनु गौ आदि कुछ नहीं हैं तो बृहस्पति से कहा कि यह सब वस्तु कौन चुरा ले गया

बृहस्पति ने कहा कि यह सब वस्तु कण्व ने दान कर दिया उसने स्वाधीनता में जो चाहा सो किया उसने अपना राज्य तीन घड़ी के लिये जानकर अच्छे २ काम कर लिये यह सुनकर इन्द्र ने कहा कि हमको वह उपाय बतलाओ जिससे हम सब अपनी वस्तु पावें बृहस्पति ने उत्तर दिया कि इस बात की सम्मति यमराज के पास जाकर करो सो इन्द्र यमराज के पास जाकर उनसे आदर पाय कहा कि तुमने कण्व की दुष्टता को नहीं जाना तुमने क्यों हमारा स्थान उसको दिया उसकी दुष्टता से मुझे बड़ा दुःख हुआ है देखो उसने हमारी सब वस्तु दे दीं हमारी सब सामग्री ला दो यह सुनकर यमराज ने कण्व को बुलाकर अतिक्रोध से कहा कि तूने यह कौन कर्म किया है तुझको पराये धन के नष्ट करने से बड़ा नरक मिलेगा और तुम अपने कुकर्मों का बुरा फल पाओगे यह सुनकर कण्व ने अतिक्रोधकर निर्भय हो यमराज से कहा कि मैं बड़ा पापी हूं पर मुझे संशय नहीं है हमने इन्द्रासन पाय क्या ऐसा पाप किया तुम क्यों हमको ऐसा शाप देते हो जब तक हमारा वहां अधिकार रहा हमने जो मन में आया और जो उचित कार्य था किया तुम किस कारण उसको पाप गिनते हो यमराज ने कहा कि दान देना पृथ्वी में उचित है जहां दान देने से फल मिलता है और देवताओं के लोक में दान देना उचित नहीं यह बात वेद और पुराण कहते हैं इससे तुमको दण्ड दिया जाता है तुमको बहुत ही दण्ड देवेंगे क्योंकि तुमने वेद के विरुद्ध कर्म किया है इसी तरह यमराज और चित्रगुप्त ने कण्व को बहुत डरवाकर और धोखा देकर कहा कि इसको नरकों में डाल दो और नाना प्रकार के दुःख दो पर चित्रगुप्त ने हँसकर कहा कि हे धर्मराज ! आप वेद और पुराणों के विरुद्ध ऐसा

वचन कहते हैं कण्व क्यों नरक में जा सक्ता है उसने वेदानुसार उत्तम धर्म किये जो दान शिव के नाम से दिया जाता है वह निष्फल नहीं होता इसलिये तुम वेद का आशय समझकर कण्व को नरक में मत डालो कण्व के सर्व पाप ऐसे धर्म के कामों से जल गये हैं इसके समान तीनों लोक में कोई देवता और मनुष्य नहीं है धर्मराज ने ऐसे वचन चित्रगुप्त से सुनकर इन्द्र से कहा कि तुम देवताओं के राजा व्यभिचार करने में प्रसिद्ध हो तुमने सौ अश्वमेध यज्ञ करके इन्द्रलोक को पाया है और कण्व ने अपने शुभ कर्मों से सब पापों को भस्म कर डाला है तुम अगस्त्यादि मुनीश्वरों के समीप जाकर विनयपूर्वक उनसे अपनी सब चीजें मांगो और उनको धन द्रव्य असंख्य देकर अपनी वस्तु ले लो सो इन्द्र ने अपने लोक में जाकर मुनियों को बहुत धन दे अपनी वस्तु लौटा ली और अपने राज्य को फिर पाकर अतिप्रसन्न हुये और कण्व भी विरोचन का पुत्र हो सुरुचि के उदर से उपजा जो वृषपर्वा की पुत्री थी और विरोचन ने अपना शिर इन्द्र को देकर तीनों लोक में यश प्राप्त किया और विरोचन से बलि उपजे यह बलि बड़े पराक्रमी होकर शिव की कृपा से सदा प्रसन्न रहे जिनके तेज को इन्द्र न सहकर कश्यप के समीप गये और बलि इन्द्र होकर सब देवताओं के राजा हुये और उन्होंने आपही दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा और शेष आदि के सब कार्य किये और शिव की कृपा से तीनों लोक के राजा होकर सब ब्रह्माण्ड को जीत लिया और जिनके द्वारपर ब्राह्मण का स्वरूप धार विष्णुजी गये और इन्द्र के मनोरथ पूर्ण करने को बलि से सर्वभूमि दान लेकर इन्द्र को दे दी यद्यपि विष्णु ने राजा बलि से बड़ा छल किया पर तौ भी बलि को कुछ दुःख न हुआ और अपने दान के कारण सुतललोक में

जाकर विष्णु के प्रति दिन दर्शन पाने से आनन्द से रहते हैं यह राजा बलि का पूर्ण वृत्तान्त है।

पांचवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! अब तलातललोक का वृत्तान्त सुनिये जो सुतललोक के नीचे है और वह लम्बाई चौड़ाई में सुतललोक ही के समान है जिसमें उत्तमोत्तम मन्दिर रत्नों और मुक्ताओं से जड़े हुये और नदियां और झीलें कमल-पुष्पों से सुशोभित हैं जहां मय दानव रहता है जिसकी माया अतिबलवान् है जिसने त्रिपुर को इस प्रकार बनाया था कि कोई देवता उसको देख न सक्ता था वह शिव की कृपा से हर प्रकार की माया रच सक्ता था वह मानों माया का स्वरूप ही था क्योंकि बहुधा उसने नवीन रचनायें कीं और वह दैत्यों में इतना प्रतिष्ठित था कि जितनी विश्वकर्मा की देवताओं में प्रतिष्ठा है यह मय दानव शिव की कृपा से निर्भय होकर आनन्द में रहता है और वह त्रिपुर के जलने के समय शिव की शरण में जाकर बच रहा और तलातललोक नाना प्रकार की उत्त-मोत्तम वस्तुओं और वन उपवनों से जिनमें पक्षी मधुर वाणी से बोलते सुशोभित हैं जहां नाना प्रकार के नदी नाले और विचित्र उद्यान फूलों और फलों से भरे हुये स्वर्ग के समान हो रहा है वहां किसी को कुछ भी दुःख और क्लेश नहीं और मय दानव वहां के निवासियों सहित शिव की बड़ी स्तुति करता है कि हे सदाशिव! तुम शरण में आये हुये के पालनेवाले और दुःखों के नाशकर्ता हो जो तुम्हारी शरण में आते हैं उन पर तुम तुरन्त ही दयालु हो जाते हो मैंने इस बात को स्पष्ट ही देखा है कि जब तक मैं तुमको जानता न था तब तक मैंने सुख नहीं देखा और जब मैं आपकी शरण में आया तो तुमने

मुझे अपना सेवक जानकर बड़ी दया की तुम्हारी यह सदा से रीति है कि अपने भक्तों को आनन्द देते हो तुमने मुझे अपनी सेवा में रखकर तलातल लोक का राजा बनाया इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले हे नारद ! इस तरह से मय दानव शिवजी की स्तुति करके प्रसन्न रहा करता है अब महातल पांचवें लोक का वृत्तान्त सुनो जहां कद्रू का पुत्र तक्षक राजा है उसके फण में इतने रत्न हैं कि उस लोक में कभी अँधेरा नहीं होता उस लोक के चारों कोणों में नदियां, तालाव, कूप, वावली आदि सुशोभित हैं और वह लोक सुन्दर वनों, उपवनों, विचित्र फुलवारियों और सघन वृक्षों से महारमणीक हो रहा है और स्थान २ पर छायावाले वृक्ष अतिशोभायमान हैं जिन पर पक्षी मधुर स्वर से आलाप रहे हैं और वहां पर तक्षक, सुषेण, कुहुक आदि सर्प महाविषधर विराजमान हैं जो अतिभयंकर हैं और मणियों से जो उनके शीश में लगी हुई हैं प्रकाशवान् हो रहे हैं और सदा गरुड़ से डरते रहते हैं उनके लिये विहार के निमित्त सर्व प्रकार की सामग्री वस्त्र, आभूषण, रत्न, मन्दिर वर्तमान हैं और उनके तेज और वल को हम कहां तक वर्णन करें वह अकथनीय है वहां का राजा तक्षक शिवजी का बड़ा भक्त है जिसने चित्राङ्गद से मित्रता कर और उसको शिवभक्त जान उसके सब कार्य पूर्ण कर दिये हे नारद ! नीचे लिखी हुई स्तुति जिसका तक्षक प्रतिदिन पाठ करता है हम तुमको सुनाते हैं मन देकर सुनो कि हे शंकर, सदाशिव, भक्तों के पालनेवाले ! तुम्हारी महिमा अलख है जिसको ब्रह्मा, विष्णु, सब देवता, मुनि, शेष, शारदा, सनकादिक और व्यास भी पार नहीं पासके और वे नाना प्रकार से तुम्हारी स्तुति करते हैं पर तो भी थककर मौन हो जाते हैं यह महातल लोक का वृत्तान्त

है अब हे नारद ! रसातललोक का वृत्तान्त सुनो कि वह महातल के नीचे है और उसकी लम्बाई और चौड़ाई ऊपर लिखे हुये लोकों के समान है वहां दानव और दैत्य जिनको कालकेय और कवच कहते हैं रहा करते हैं जो बड़े बलिष्ठ और प्रतापवान् हैं सो एक समय देवताओं ने उनको बड़े तेजस्वी जानकर सुरमा को पाणिनाम दानवों के राजा के समीप भेजा उसने वहां पहुँचकर कहा कि तुम नहीं जानते कि विष्णुजी तीनों लोक के स्वामी और सबके पालनकर्त्ता हैं वह चाहते हैं कि दैत्यों को मारकर तीनों लोक को अपने अधीन कर लेवें तुम क्यों अचेत हो तुम्हारा अब जीना कठिन है ऐसे वचन सुनकर वहां के निवासी बहुत डरे तब से वे सदा भयभीत रहकर अहर्निश शिवजी की सेवा किया करते हैं कि देवताओं से बचे रहें हे नारद ! यही रीति है कि जो सदाशिवजी की शरण में आता है वह सदा निर्भय रहता है उसको कुछ दुःख नहीं होता अब आगे हम पाताललोक का वर्णन करते हैं जो रसातल के नीचे है उसकी लम्बाई चौड़ाई और ऊँचाई भी ऊपर लिखे हुये लोकों के समान है वहां वासुकि, शंख, कुलिक, धृतराष्ट्र, धनञ्जय, कमल, अश्वतर, देवदत्त, कर्कोट आदि नाग रहते हैं जिनके शिरों में पांच, सात, दश, सौ और हज़ार तक मणियां लगी हुई हैं वे मणियां ऐसी प्रकाशवान् हैं जिनसे रात और दिन कुछ जाना नहीं जाता वहां पर जरा मरण निर्बलता आदि का कुछ भय नहीं और उनके मन्दिर अति सुन्दर और वज्र रत्नों से जड़ित हैं जिनकी शोभा चारों ओर फैली हुई है और वे नाग सब शिवजी की भक्ति में तत्पर रहते हैं जिनसे उनको शिवजी की कृपा से कुछ भय और संशय नहीं है उनके वासुकिनाम राजा हैं जो सदाशिवजी की यह स्तुति करते हैं कि हे शिवजी !

तुम आदि अन्त रहित सबके स्वामी हो और तुम तीनों लोक के उत्पत्तिकर्ता पालनकर्ता और संहर्ता परब्रह्म हो हम तुमको पहिंचानकर तुम्हारी शरण में आये हैं तुमको सब भक्तवत्सल कहते हैं क्योंकि तुम प्रसन्न होकर भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हो और तुम सबमें व्याप्त हो जैसे जल में शीतलता, अग्नि में उष्णता, सूर्य में प्रकाश, दूध में घृत वर्तमान है इसी प्रकार कोई वस्तु संसार में तुमसे भिन्न नहीं ब्रह्मा से तृण तक सब तुम्हारे अधीन हैं तुम कानों विना सुनते, विना आंखों के देखते, विना नाक सूंघते, विना मुख वेद पढ़ते, विना भुजा सर्व कार्य करते, चरण विना चलते और विना लिङ्ग के सृष्टि को उत्पन्न करते हो यद्यपि तुममें कोई इन्द्रिय नहीं पर तुम्हीं सर्व कार्य करते हो इस बात को कोई नहीं जानता वेद भी तुमको नेति २ वर्णन करते हैं और ब्रह्मा, विष्णु, देवता आदि भी तुम्हारी महिमा वर्णन नहीं कर सके तुम केवल भक्ति के अधीन हो हे नारद! यह सात लोक जो वर्णन किये सात लाख योजन हैं जो सप्ताम्बर कहे जाते हैं ।

छठा अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह सातों लोक जो हमने ऊपर वर्णन किये दश २ हज़ार योजन हैं जो अण्डे के समान गोल और सुडौल हैं उनकी लम्बाई सात लाख योजन है उन सातों लोकों के नीचे एक और लोक है जो सब लोकों का मूल है उसका विस्तार बीस हज़ार योजन है जिसमें शेषजी विराजमान हैं उनके हज़ार शिर और हर शिर में मणि आदि रत्न अति सुशोभित हैं शेषजी पृथ्वी को अपने शिर पर धरे हैं और शिवजी के तामसीस्वरूप हैं और शिवजी का नित्यप्रति ध्यान किया करते हैं उनके नाम संकर्षण, अनन्त आदि हैं उनका संकर्षण नाम

इसलिये है कि जितनी वस्तु संसार में वर्तमान हैं उन सबको यह खींचनेवाले हैं और अनन्त उनका नाम इसलिये पड़ा कि वे अथाह हैं जब प्रलयकाल आता है तो वे रुद्र के दोनों भवों के बीच से निकलकर ग्यारह शरीर धार अपने प्रकाश से प्रलय करके सब का नाश करदेते हैं उस समय उनके हाथ में त्रिशूल होता है और प्रलय करते हुये उनका स्वरूप महासुशोभित होता है जब प्रलय कर चुकते हैं तो सुन्दर स्वरूप धार आभूषण पहन लेते हैं और नागकन्या उनकी नाना भांति से सेवा करती हैं हे नारद! उनके पूजन स्मरण से सबको सुख प्राप्त होता है और उनका पूजन देवता मनुष्यादि सब करते हैं उनकी पूजा से शिवजी की भक्ति प्राप्त होती है इसी प्रकार और सब देवताओं की पूजा इस-लिये की जाती है कि शिवजी के चरणों की प्रीति बढ़े इसी से उचित है कि शिवजी के चरणों की सेवा नित्य दिन करे और शेषजी भी यही विचारकर शिवजी की भक्ति किया करते हैं और नित्य पूजा की सामग्री इकट्ठी कर दण्डवत् और पूजन के अनन्तर शिवजी की यह स्तुति किया करते हैं कि हे शिवशङ्कर, त्रिलोकीनाथ! तुम आदि निराकार ज्योतिस्वरूप हो पर भक्तों के आनन्द के लिये सदा भूतल में अवतार धरते हो फिर दुष्टों को दण्ड दे अपने भक्तों को प्रसन्न कर लोक में सुख और पर-लोक में मुक्ति देते हो आपने कहां और किसके कार्य को पूर्ण नहीं किया जब आपने हलाहल विष से जलते हुये देखा तो आप ही ने उसको पीकर देवताओं को जलने से बचाया देखो व्याध ने कोई ऐसी पूजा न की कि उसके चरणों से बिल्वपत्र वृक्ष से टूटकर आपके लिङ्ग पर गिरे उससे आपने उसको अपना पूजनेवाला जानकर मुक्ति दी इसी प्रकार आपने एक हरिण को उसकी हरिणियों समेत परमपद दिया तुम सदा अपने

भक्तों के निमित्त नाना प्रकार के स्वरूप धारकर अवतार लिया करते हो आपने विष्णुजी पर प्रसन्न हो जालन्धर, त्रिपुर और तारक दैत्यों का नाश कर दिया और पहिले कामदेव को भस्म कर फिर उसकी स्त्री का दुःख देख उसे जिला दिया और जब आप अपने चरणकमल भूमिलोक पर मार कर नाचते हैं तो उससे सर्वलोक कांप उठते हैं और जब तुम अपनी पवित्र भुजा ऊपर उठाते हो तो उस समय आकाश घूम जाता है आपने ब्रह्मा का पांचवां शिर काट कर सबका सन्देह दूर कर दिया हम आपकी महिमा वर्णन नहीं कर सके आपसे काल भी डरता है और ब्रह्मा और विष्णु आदि देवता आपकी भवों को देखते रहते हैं कि क्या आज्ञा होगी हे सदाशिव! आपने गज, गङ्गा, व्याध, शबरी, शवर, श्रीकर, करव और गुणनिधि जो महापातकी थे उनको उत्तम गति दी और की क्या कथा है ।

सातवां अध्याय ।

इन सब लोकों की कथा सुनकर नारद ने पूछा कि हे ब्रह्मन्! आप बताइये कि नरकलोक कहां है वह सब तीनों लोक में गिने जाते हैं व भिन्न हैं ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र! जो नीचे के सातों लोक हमने वर्णन किये जहां शिवजी के बड़े २ मन्दिर हैं उन सबमें पाताल के नीचे जल के ऊपर नरकलोक हैं जो संख्या में पचपन करोड़ हैं और वे पापियों के दण्ड देने के स्थान हैं पर उनमें जो नरकराज हैं उनका हम वर्णन करते हैं तामिस्र १ लोहदण्ड २ महारौरव ३ शाल्मल रौरव ४ कुसुदल ५ भीष्म ६ भयंकर ७ पूतरज ८ कालसूत्र ९ संघात १० तापन ११ कङ्काल १२ सञ्जीवन १३ महापथ १४ विचर्चित १५ अन्ध १६ कुम्भीपाक १७ असिपत्र १८ पतन १९ अग्निमन्थन २० संदग्ध २१ पर अन्य मुनियों ने उन नरकों की संख्या २८ बताई है सो

इक्कीस तो वही हैं जो ऊपर वर्णन किये गये शेष यह हैं क्षारकर्दम २२ राक्षसभोजन २३ शूलप्रोत २४ दण्डशूल २५ घोर २६ अवटनिरोधन २७ सूचीमुख २८ और यमराज इन नरकों में अतिभयंकर रूप धार पापियों को दण्ड देते हैं और वे अपराधियों को टेढ़ी भौंह, भयंकर दाँत और तीनों आंखें लाल किये भैंसे पर सवार प्रलय के समान शब्द करते हुये पापी को दिखाई देते हैं जिनको देखकर पापी थरथरा जाते हैं और वही धर्मराज धर्म करनेवाले लोगों को अति शोभायमान स्वरूप से दर्शन देकर उनको कृतार्थ कर देते हैं उनका नाम ऐसे सुन्दर स्वरूप के साथ धर्मराज प्रसिद्ध है उनका लोक दक्षिण में है जहां पितर रहते हैं जो धर्म अधर्म के लिये परस्पर वार्त्ता करते हैं उन्हीं की सम्मति से पापियों को दण्ड दिया जाता है और चित्रगुप्त भी लोगों के कर्मों के लिखनेवाले हैं वे रात दिन मनुष्यों के बुरे भले कर्म लिखा करते हैं और हमारे बारह पुत्र जो श्रवण के नाम से प्रसिद्ध हैं वे हर मनुष्य के शुभाशुभ कर्म से चित्रगुप्त को खबर देते हैं और उस सभा में अच्छे २ धर्मात्मा पृथ्वी के राजा जिन्होंने जन्म भर नीति के साथ राज्य किया सभापति हैं वहां की यह रीति है कि जब कोई मरकर वहां जाता है तो पहिले पितर-लोक विचार करते हैं कि यह मनुष्य पापी है या धर्मात्मा जो धर्मात्मा हुआ तो उसको अच्छी जगह देते हैं और जो पापी जाना गया तो उसको नरकों में डाल देते हैं और जो मनुष्य पापी व शिवजी के विरोधी होते हैं उनको यमदूत सब नरकों में भ्रमण कराते हैं हम सर्वपापों का विस्तार कि किससे कौन नरक प्राप्त होता है वर्णन करते हैं जिससे मनुष्यों को लज्जा और भय से रहित करके शिवजी के चरणों में प्रेम

बढ़ाता है जो मनुष्य दूसरे की स्त्री या धन ले लेते हैं वे यमदूतों से पकड़े जाकर तामिश्र नरक में डाले जाते हैं जहां उनको लोहू और चरबी पीनी पड़ती है और वे बहुत मार खा कर अपने किये हुये कर्मों का पश्चात्ताप करते हैं और जो मनुष्य छल से किसी स्त्री का पातिव्रत धर्म ले लेते हैं वे अन्ध-तामिश्र नरक में पड़कर बड़ा दुःख सहते हैं और जो मनुष्य मान और ममता में पड़कर जीवों के साथ शत्रुता करते हैं और केवल परिवारवालों के पालन में प्रवृत्त रहते हैं और जीवों का वध करते हैं ऐसे मनुष्य रौरव नरक में डाले जाकर नाना भांति के दुःखों में पड़ते हैं वहां कोई मनुष्य उन की सहायता नहीं करता और जिसके लिये उन्होंने अपना धर्म नष्ट किया था वही अपना पूरा बदला लेते हैं और जो मनुष्य केवल अपना शरीर पालन करके दूसरों की भलाई में मन नहीं लाता वह भी इसी रौरव नरक में पड़कर अपना मांस जो यमदूत उन्हीं के शरीर से काट २ कर उन्हें देते हैं खाते हैं यह रौरव नरक महाकठोर है जो मनुष्य चित्त के कठोर निर्दयी होकर पक्षियों की हिंसा करते हैं वे कुम्भीपाक नरक में पड़कर जलते हुये तेल में डाले जाते हैं और जो मनुष्य कि ब्राह्मण और पितर आदि के जन्म भर विरुद्ध रहे वे काल-सूत्र नरक में जाकर बड़ा ही दुःख उठाते हैं यह कालसूत्र नरक दशसहस्र योजन विस्तार में है और पृथ्वी उसकी सम्पूर्ण तांवे की है और वह सूर्य और अग्नि की गरमी से जल रही है जब पापी उसमें छोड़ा जाता है तो उस गरमी को सम्भार नहीं सक्ता और चारों ओर दौड़ता फिरता है और कहीं उसको ठहरने की जगह नहीं मिलती और जो मनुष्य अपना मुख्य धर्म छोड़ पाखण्डी हो कालक्षेप करते हैं वे असिपत्र नरक में पड़कर

अग्नि समान उष्ण पृथ्वी में दौड़ाये जाते हैं और खड्गों से मारे जाते हैं वे ऐसे दुःखों को न सहकर पग २ पर गिर पड़ते हैं और किसी प्रकार से आनन्द नहीं पाते और जो मनुष्य अदण्ड्य मनुष्यों पर दण्ड लगाते उनको यमदूत ऊपर लिखे हुये नरक में डालकर भली भांति मारते हैं और ऊख के खण्डों के समान कोल्हू में डालकर पेर डालते हैं और जो मनुष्य प्रति दिन पञ्च मख किये विना भोजन कर लेते हैं वे कव्वे के समान होकर कृमि भक्षण करते हैं और मरने के समय वे भी कीड़े होकर आप भी कीड़े खाते हैं और जो मनुष्य रत्नादिकों की चोरी करते हैं वे संदग्ध नरक में डाले जाकर अग्नि से दागे जाते हैं और जो मनुष्य शास्त्र विवर्जित स्त्रियों से भोग करते हैं उनके लिये खम्भ नामी नरक बना हुआ है जो रात दिन अग्नि के समान जलता है और लोग उसी खम्भे में लिपटाये जाते हैं और जो मनुष्य पशुओं के समान सिवाय मैथुन के और कुछ कार्य नहीं करता वह कण्टक और शाल्मलि नरक में डाला जाता है और यमदूत उसका लक्ष्य बनाकर अपने तीरों से छेदते हैं और जो मनुष्य राजा व अधिकारी होकर धर्म की रीतियों पर नहीं चलते और पुराने धर्मों को तोड़ सर्व धर्मों का खण्डन कर एक नवीन मत प्रकट करते हैं वे सब वैतरणी नदी में डाले जाते हैं यह नदी महाअशुद्ध जिसमें समूह के समूह पापी गोते खाते हैं मल, मूत्र, रक्त, केश, अस्थि, नख, मांस आदि से भरी हुई और जो मनुष्य शौच, धर्म, नियम और लज्जादि का कुछ विचार न करके वेश्याओं के साथ सम्भोग कर पशुओं के समान हो जाते हैं वे पूयोदक नरक में पड़कर मेद, मज्जा, मल, मूत्र, फल आदि भोजन के बदले खाते हैं और जो मनुष्य ब्राह्मण होकर

वन के पशुओं का शिकार किया करते हैं वे मरने के अनन्तर विकराल नरक में पड़ते हैं और यमदूत उनका शरीर शिर से पांव तक छेद डालते हैं और जो मनुष्य झूठ ही पाखण्ड कर के यज्ञ के आदर से निर्दयता के साथ जीवों के वध का कारण होते हैं वे विशेष करके नरक में डाले जाकर बड़ी आपत्ति में पड़ते हैं और अपनी स्त्री छोड़ दूसरे वर्ण की स्त्री से मैथुन करते हैं वे लालाभक्ष नरक में पड़कर वीर्य पीते हैं और जो मनुष्य चोरी और लूटमार करके औरोंका धन हरते हैं और गांव उजाड़ देते हैं वे सारमेयादन नरक में प्रवेश करते हैं जहां दोसौ सत्तरि महाभयंकर पक्षी ऐसे पापियों का मांसभक्षण करते हैं और जो मनुष्य लोभ से अथवा दान लेने की इच्छा से झूठी गवाही देते हैं वा धन और दान के सम्बन्धी व्यवहारों में झूठ वर्णन करते हैं वे अनन्त नरक में डाले जाते हैं जहां सौ योजन ऊँचा पर्वत बहुत अँधेरे में है सो यमदूत ऐसे मनुष्य को उस पहाड़ पर चढ़ाकर शिर के बल नीचे डाल देते हैं और पापी मनुष्य के शरीर के टुकड़े २ हो जाते हैं और जो कोई ब्राह्मण या स्त्री होकर मद्य पीते तो ऐसे मनुष्य कूप नरक में पड़ते हैं जहां वे बड़ा दुःख पाते हैं हे नारद ! यह ऐसे यहां भयंकर इक्कीस नरक हैं अब हम नरक के सात खण्डों का वर्णन करते हैं मन देकर सुनो कि जो कोई मनुष्य ऐसे मनुष्यों के साथ जो वर्णाश्रम, तप, जप, नियम और आचार में परिपूर्ण हो कठोरता अन्याय अशीलता करे तो वह क्षार नरक में शिर के बल डाला जाता है और जो पुरुष किसी मनुष्य को बलिदान की तरह उसको बलि देते हैं वा जो स्त्री मांस खाती है ऐसे पापी रक्ष-भोजनी नरक में पड़कर दण्ड पाते हैं और यमदूत आप ऐसे मनुष्यों को यमराज के सन्मुख पछाड़ कर उनका मांस शरीर से

काट २ कर खा लेते हैं और जो मनुष्य पाप रहित मनुष्यों को विश्वास देकर फिर उनको मार डालते हैं और जीवों के मार डालने से प्रसन्न होकर जाल से जीवों को पकड़ते हैं और दया-भाव छोड़ देते हैं ऐसे मनुष्य शूलप्रोत नरक में पड़कर बहुत भूख और प्यास से दुःखी रहते हैं और उनके मांस कव्वे, चील्ह, गृध्र अपनी चोंच से नोच २ कर खा डालते हैं और जो मनुष्य जीवों के साथ अपकार करते हैं वे दण्डशूक नरक में पड़कर सप्तमुखी अथवा पंचमुखी सिंहों से दुःख उठाते हैं और जो अन्धे आदमियों को सीधी राह से भटकाकर नाले या गढ़े में जाने को भटकाते हैं वे निरोधन नरक में पड़कर बड़ा दुःख पाते हैं और जो अतिथि और अभ्यागतों को क्रोध की दृष्टि से देखते हैं उनके नेत्र कव्वे और चील्ह मरने के उपरान्त निकाल लेते हैं और जो मनुष्य धन सम्पत्ति से अहंकारी होकर उसकी संग्रह में लगे रह कर सब लोगों को ग्लानि की दृष्टि से देखते हैं और धन के बटोरने और रक्षा करने के सिवाय दूसरा कार्य नहीं करते वे शूचीमुख नरक में डाले जाते हैं और यमदूत उनको सुइयों से घायल कर देते हैं हे नारद ! वहां ऐसे २ नरक हजारों हैं जो विस्तार भय से वर्णन नहीं किये और समझना चाहिये कि हर मनुष्य न्यूनाधिक्य पापों के अनुसार नाना प्रकार के दुःख झेलते हैं इसी प्रकार धर्मात्माओं को स्वर्ग के लोकों में नाना प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है और जब तक कोई पुण्य पाप शेष रहता है तब तक मनुष्य को इस मर्त्यलोक में आकर शरीर धारण करना पड़ता है और जिसकी जैसी वासना होती है उसी के अनुसार उसके लक्षण प्रतीत होते हैं अर्थात् पुण्य पाप के अनुसार पुण्य पाप भोगना पड़ता है जो मनुष्य यह कथा चित्त देकर पढ़े या सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द उठावेगा।

आठवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम नीचेके लोकों की कथा वर्णन कर चुके अब ऊपर के लोकों की कथा विस्तार से वर्णन करते हैं कि ऊपर के लोकों में आठ लोक नीचे के लिखे अनुसार गिने जाते हैं उनमें क्षितिलोक है जिसमें मनुष्य रहते हैं यह लोक पचास कोटि योजन विस्तार में है और उनके सम्बन्धी सात द्वीप यह हैं जिनको चारों ओर से दिग्गज घेरे हुये हैं पहिला जम्बूद्वीप दूसरा प्लक्ष तीसरा शाल्मलि चौथा कुश पांचवां क्रौंच छठा शाकद्वीप सातवां पुष्कर यह सातों द्वीप पहिला पहिले से और दूसरा दूसरे से लम्बाई में दूना है और सातों समुद्र जो सातों द्वीप के गिर्द खाई की तरह पर हैं उनके नाम यह हैं पहिला क्षारोदधि दूसरा इक्षुरसोदधि तीसरा सुरोदधि चौथा घृतोदधि पांचवां क्षीरोदधि छठा मण्डोदधि सातवां शुद्धोदकोदधि और राजा प्रियव्रत मनु के पुत्र सातों द्वीप के राजा हुये थे सो प्रियव्रतने अपने सातों पुत्रों को एक २ द्वीप दे दिया था जहां उन्होंने राज्य किया उन सातों लड़कों के यह नाम हैं अग्नीध्र १ जिह्व २ मुखबाहु ३ कनकरेत ४ घृतपृष्ठ ५ मेधातिथि ६ वीतिहोत्र ७ इतनी कथा सुनकर नारद ने विनय की कि हे महाराज! आपने यह सृष्टि का वृत्तान्त बहुत संक्षेप से वर्णन किया और मेरी यह इच्छा है कि सर्व सृष्टि का वृत्तान्त विस्तार से सुनूं ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र! शिवजी की माया और पृथ्वी भर का वृत्तान्त वर्णन से बाहर है उसको कोई मनुष्य पूर्णरूप से नहीं जानता पर तो भी हम अपनी विद्या और निश्चय से वर्णन करते हैं।

जम्बूद्वीप का वृत्तान्त।

यह जम्बूद्वीप नियुत योजन विस्तार से है और कमल फूल के समान गोल और बराबर है उसके भीतर नव खण्ड और

आठ पर्वत हैं उन खण्डों के यह नाम हैं पहिला भद्राश्व दूसरा हरिवर्ष तीसरा किम्पुरुष चौथा भारत पांचवां केतुमाल छठा रम्यक सातवां हिरण्यमय आठवां कुरु नवां इलावर्त जो आठों खण्डों के बीच में है और आठों पर्वतों के यह नाम हैं पहिला गन्धमादन दूसरा निषध तीसरा हेमकूट चौथा हिमालय पांचवां माल्यवान् छठा नीलगिरि सातवां श्वेत आठवां शृङ्गवान् और इलावर्त जो आठों खण्डों के बीच में हमने वर्णन किया है उसकी नाभि में सुमेरु नामी एक पर्वत सब पर्वतों का राजा है जो सब स्वर्ण ही का है और द्वीप के बीचोंबीच में सुशोभित है और इलावर्त के चारों ओर बहुत से पर्वत हैं अर्थात् पूर्व की ओर एक और दक्षिण की ओर तीन और पश्चिम की ओर एक और उत्तर में तीन पर्वत स्थित हैं और सुमेरु के चारों ओर चार पर्वत घिरे हुये हैं अर्थात् पहिला मन्दर दूसरा मेरु तीसरा सुपार्श्व चौथा कुमुदाख्य और वहां चार वृक्ष हैं पहिला आम्र दूसरा जामुन तीसरा कदम्ब चौथा बरगद और वहां चार ही चार समुद्र हैं पहिला दधि का दूसरा शहद का तीसरा शर्बत का चौथा शुद्ध जल का और वहां चार वन देवतों के विहार के निमित्त हैं पहिला नन्दन वन दूसरा चैत्ररथ तीसरा वैभ्राजक चौथा सर्वतोभद्र और मेरु के पूर्व की ओर दो पर्वत देवकूट नामक हैं और दक्षिण की ओर कैलास और करवीर आदि हैं और त्रिशृङ्ग और मकर उत्तर की ओर हैं और सुमेरु के ऊपर विचित्र नगर बसे हुये हैं और ईशान की ओर सदाशिवजी विराजमान रहते हैं और बीच में हम अर्थात् ब्रह्मा और नैर्ऋत्य दिशा में विष्णु भगवान् का लोक है अर्थात् तीनों देवता अपने गणों सहित अपनी २ पुरी में रहते हैं और उसकी आठों ओर दिक्पति भी हैं हे नारद! यह नव खण्ड जम्बूद्वीप के हैं जो ऊपर वर्णन

किये गये उन नव खण्डों में भरतखण्ड कर्मक्षेत्र अर्थात् शुभ कार्य करने के योग्य है क्योंकि इस खण्ड में शुभकार्य करने से उत्तम फल प्राप्त होता है और उस कर्मभूमि में मनुष्य पुण्य पाप करके उत्तम फल भोग करता है और इसमें युग भी बदलते रहते हैं और शेष सब खण्डों में त्रेतायुग बना रहता है और सर्व मनुष्य वहां सदा प्रसन्न रहते हैं और देवताओं के समान दशसहस्र हस्ती का बल रखते हैं ।

नवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सब खण्डों के रहनेवाले शिव की पूजा और सेवा में लगे रहते हैं और सदाशिव सबसे सेवा किये जाते हैं जैसा कि आगे वर्णन किया जाता है कि मधुखण्ड में शेषनाग जो सब नागों के राजा हैं बड़े प्रेम से सदाशिव की पूजा और स्तुति करके दण्डवत् करते हैं और यह विनती करते हैं कि हे सदाशिव ! हम तुम्हारे शुभचरणों को जो लाल और कमल के समान हैं ध्यान करते हैं तुम मृत्यु को जीते हुये हो और जो तुम्हारी इच्छा होती है उसी प्रकार का रूप धारण करते हो और तुम्हारी माया सर्वसंसार को मोहे हुये है और वही सर्वकार्य करने की शक्ति रखती है और तुम्हारे तीनों गुणों से ब्रह्मा-विष्णु और हर अवतार लेते हैं और तुम्हीं संसार के उत्पन्न करनेवाले और पालन करनेवाले और नष्ट करनेवाले हो और तुम्हीं से संसार उपजता और तुम सबसे भिन्न हो और देवता, मुनि, मनुष्य सब तुम्हारे अधीन और तुम्हारे मायारूपी तागे में बँधे हुये हैं जिनके अधीन होकर सर्व मनुष्य अपना अपना कार्य करते हैं वह शुद्धस्वरूप आपही हैं क्योंकि सर्व जीव तीनों गुणों में भूले हुये हैं इससे आप उनकी दृष्टि में नहीं समाते और जो कि शेषजी ऐसी स्तुति शिवजी के सामने पढ़ा करते

हैं इसी से वे नीरोग रहते हैं और इसी प्रकार भद्राश्वखण्ड में हयग्रीव नाम सदाशिव की पूजा वहां के राजा करते हैं और शिव का मन्त्र जपकर यह स्तुति करते हैं कि हे महेश! आपके चरित्र अतिविचित्र हैं और तुम्हारी माया के अधीन सर्वमनुष्य और देवता आदि हैं हर जीव को अपनी मुक्ति बनाने के लिये केवल आपकी कृपा ही चाहिये आपकी दया बिन मनुष्य भव-सागर से पार नहीं हो सक्ता और हरिवर्षखण्ड में विष्णु का नृसिंह अवतार शिवजी की पूजा और ध्यान करके मन्त्र जपते हैं और अतिप्रेम से शिवजी की स्तुति करते हैं कि हे देवताओं के देवता, शिवशङ्कर, जगदीश! हम पर कृपा करो तुम्हारे समान और कोई देवता नहीं तुम्हारी सेवा सब देवता और मुनि करते हैं हे ईश, गिरिजापति, सबके स्वामी और सर्वसंसार में श्रेष्ठ! और सबके उपजानेवाले आप किसी से नहीं उपजे और यद्यपि सर्वशास्त्र और वेद पुराण और शुक शेष आपका यश गाते हैं पर अन्त नहीं पाते ऐसी आपकी असंख्य महिमा हैं हम उनका कहां तक वर्णन करें और तुम्हारा नाम अतिपवित्र तीनों लोक को आनन्द देनेवाला है हमको अपना सेवक जान कर कृपा करते रहो निदान नृसिंहजी वहां के रहनेवालों समेत शरभनाथ शिवजी की सेवा में अहंकार छोड़ ध्यान लगाये रहते हैं और किम्पुरुषखण्ड में वहां के राजा समेत श्रीराम-चन्द्रजी शिवजी की पूजा करके उनका मन्त्र जपते हैं और अतिप्रेम के साथ शिव का यश गाकर यह स्तुति करते हैं कि हे शिवशङ्कर, रुद्र, दीनबन्धु, दुःख के दूर करनेवाले, सबके स्वामी! आपने राजा काम का उद्योग पूर्ण किया और शबर की इच्छा पूरी की और चन्द्रशेखर और श्रीकर को मुक्ति दी और धर्मगुप्त और शुचिव्रत और सत्यसिन्धु को

कृतार्थ कर दिया और शरभ अवतार धार नृसिंह का गर्व दूर कर दिया तुम अतिदयालु और अपने भक्तों को मोक्ष देते हो और हर प्रकार अपनी शरण में आये हुये को तारनेवाले हो आप अपने भक्तों का दुःख देख नहीं सके और इसी से अति भयंकर स्वरूप धारते हो आपको हमारा दुःख अच्छा न लगा और हमारे दुःख को दूर करने को आपने हनुमान् अवतार धारण किया और श्रीसीताजी के वियोगसागर में कि जिसमें हम डूबते थे आपने पार लगाया और हमने आपकी कृपा से रावण और महिरावण को वध किया और सर्वलोकों का राज्य जो हमको प्राप्त हुआ है वह केवल आप ही की चरणसेवा का परिणाम है और भरतखण्ड में नर नारायण सदाशिव की पूजा करके शिव के मन्त्र का जप करते हैं और यह स्तुति करते हैं कि हे ईश, शङ्करनाथ! आप सब जगह प्रकट और मन, वचन, इन्द्रिय, विचार और श्रुति से बाहर हो और तुम्हारे वर्णन से वेदों को भी आश्चर्य है और तुम परमेश्वर और परम पुनीत और प्रलय करनेवाले और अप्रमेय दया की खानि हो और ब्रह्मा और विष्णु और सनकादिक आपकी सेवा में लगे रहते हैं तुम्हारी माया संसार को इतना वश किये हुये है और इतना इस संसार को अधीन किये हुये है किसी को नट की तरह पर नचाती है और कोई स्थान ऐसा नहीं है जहां तुम्हारी माया प्रवेश नहीं कर सकी पर जो मनुष्य आपकी शरण में आये हैं वे निस्सन्देह उस मायाजाल से छूट कर आनन्द उठाते हैं हे नारद! नर नारायण के तपोबल से शिव के भक्त नर नारायण के निकट ही स्थित रहते हैं और उस स्थान का नाम संसार में केदार प्रसिद्ध है जहां उनकी सेवा करने से तुरन्त पाप दूर हो जाते हैं और जो मनुष्य कि केदार

में अपना शरीर डुबा देते हैं वे तुरन्त मुक्ति प्राप्त करके आनन्द उठाते हैं और केतुमालखण्ड में कामदेव अपनी सेना और उस खण्ड के राजा सहित शिवजी की पूजा में प्रवृत्त रहकर शिव का नाम लिया करते हैं और स्तुति करते हैं कि हे ईश, मायापति, शंकर ! हम पर कृपा करो आप दुष्टों को अति भय देनेवाले हो मैंने सत्यमार्ग को ग्रहण कर आपको पहिंचाना और हे शिव ! तुम सदा स्वाधीनता से शुद्धबुद्धि रक्खे हुये रहते हो जो वर्णन से बाहर है और जो कि आपने मुझे क्रोधाग्नि से जला दिया इस बात को मैं आपकी बड़ी कृपा समझता हूं यद्यपि मैं तीनों लोक को फँसा सक्ता हूं पर आपके सामने होते हुये मुझे बड़ा भय उपजता है मैं आपकी शरण में हूं आप मेरे सब पापों को नष्ट कर दें क्योंकि आप शरण में आये हुये मनुष्यों का पक्षपात करते हैं और रम्यक खण्ड में मनुष्य स्वरूप विष्णु शिवजी के पूजक हैं जो शिवजी की सदा स्तुति करते हैं कि हे जगदीश ! आप ब्रह्माण्ड के महाराजाधिराज हैं आपकी चरणसेवा लक्ष्मी करती हैं और ब्रह्मा और विष्णु और हर तीनों देवता केवल आपके दर्शन से पवित्र हो जाते हैं और आप परब्रह्म परमात्मा हैं आपकी महिमा शेष आदि भी वर्णन नहीं कर सके और हिरण्मयखण्ड में लक्ष्मीपति पितृगणों समेत शिव की पूजा में रहकर शिव का मन्त्र जपा करते हैं और यह अच्छी स्तुति करते हैं कि हे देवताओं के ईश ! शरण में आये हुये मनुष्यों के पालनेवाले और भक्तों को आनन्द देनेवाले, दीनानाथ, त्रिभुवनपति, सर्व प्रकार से शुद्ध ! आपका यश वेद वर्णन करते हैं आपकी महिमा अनन्त है आपने चन्द्रसेन को कृतार्थ कर दिया और गुणनिधि को मुक्ति दी मुझ पर आप कृपा कीजिये और मेरे दुःख को निवारिये

और कुरुखण्ड में वाराह विष्णु का अवतार शिव की पूजा करके षडक्षरी मन्त्र जपते हैं और यह स्तुति करते हैं कि हे कामदेव के जलानेवाले, गिरिजापति ! आप सर्व संसार के स्वामी हैं आपने गजगङ्गा हर और श्रीकर नन्दी किरात आदि को मुक्ति दी इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद ! इसी प्रकार सब खण्डों में शिवजी की पूजा की जाती है इस जम्बूद्वीप की कथा सुनने से अप्रमेय आनन्द मिलता है और भय दूर होता है ।

दशवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह सम्पूर्ण वृत्तान्त जम्बूद्वीप का है इस जम्बूद्वीप के आधीन और आठ उपद्वीप हैं जिनके यह नाम हैं पहिला स्वर्णप्रस्थ दूसरा चन्द्र तीसरा शुक्ल परिवर्तन चौथा रमणक पांचवां मन्दिरहरण छठा जन्य सातवां सिंहल आठवां लम्ब और जम्बूद्वीप को चारों ओर से क्षार समुद्र घेरे हुये है जम्बूद्वीप के पीछे प्लक्षद्वीप है जिसका राजा अधमछवि नाम बड़ा राजा हुआ उसके सात पुत्र उपजे जिनके यह नाम हैं पहिला शिव दूसरा यवस तीसरा सुभद्र चौथा वेशान्त पांचवां क्षेम छठा अमृत सातवां अभय सो राजा ने अपने द्वीप के खण्ड करके अपने सातों लड़कों को परस्पर बांट दिया और वे सातों खण्ड उन्हीं सातों लड़कों के नाम से प्रसिद्ध हैं और इस द्वीप में पर्वत भी सात हैं और इस द्वीप में नीचे लिखे हुये चार वर्ण बसते हैं जिनके दर्शन देवताओं के दर्शन के समान मनुष्यों को कठिनता से मिलते हैं वहां के चार वर्णों के यह नाम हैं ऊर्ध्वायन १ परमहंस २ पतङ्ग ३ सत्यङ्ग ४ सो यह सब सूर्य की पूजा करते हैं और सूर्य ही का मन्त्र जप करते हैं और यह कहते हैं कि हे सूर्य देवता ! तुम रोगों के नष्ट करनेवाले हो तुम्हारा शरीर तीनों गुणों से भरा हुआ है और तुम सदाशिव का

स्वरूप हो आपके उदय होने से पृथ्वी में प्रकाश होता है और तुम शिव की अष्टमूर्ति में से एक मूर्ति हो तुम्हारी बड़ी महिमा है तुम्हारी सेवा सब करते हैं कृपा करके हमारे दुःख भी दूर करो यह संक्षेप में प्लक्षद्वीप का वर्णन है अब शाल्मलि द्वीप का हाल सुनो कि उसके समान किसी द्वीप में आनन्द नहीं है और वह प्लक्षद्वीप से दूना बड़ा है और उसको सुरोद समुद्र चारों ओर से घेरे है वहां यज्ञबाहु नामी राजा प्रियव्रत का पुत्र उस द्वीप का राजा हुआ उससे सात पुत्र उपजे जिनके यह नाम हैं सुरोचन १ सोमस्व २ रमणक ३ देवभद्र ४ भद्र ५ आप्यायन ६ अविज्ञात ७ सो राजा यज्ञबाहु ने शाल्मलि द्वीप के सात भागकर सब लड़कों को बांट दिये उन्हींके नाम से वहां सात खण्ड प्रसिद्ध हुये इस द्वीप में सात नदी और सात पर्वत हैं वहां के निवासी शिवजी को चन्द्रमा जानकर उनको पूजते हैं क्योंकि वेद ने चन्द्रमा को भी शिवरूप बताया है और जो स्तुति वह करते हैं वह यह है कि हे चन्द्रमा! शीतलस्वभाव से सबको प्रसन्न करनेवाले आप मानों अमृत का कुण्ड हैं आपही से सब जड़ी बूटी तय्यार होती हैं आपकी महिमा वेद और पुराण वर्णन करते हैं और संसार की आरोग्यता आपही से है इसके उपरान्त कुशद्वीप है जिसको घृतादि चारों ओर से घेरे है सो उसका राजा हिरण्य हुआ जो प्रियव्रत का पुत्र था उसके सात पुत्र उपजे जिन्होंने अपने पिता के द्वारा सातों द्वीप पाये और वे द्वीप उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुये और राजा हिरण्य द्वीपों को बांट कर तप में प्रवृत्त हुआ उन लड़कों के यह नाम हैं वसु १ वसुदान २ दृढ़रुचि ३ नाभगुप्त ४ सत्यव्रत ५ विवक्क ६ वामदेव ७ इसमें भी पर्वत और नदियां सात २ हैं यहां के निवासी अग्नि को शिवरूप जान उनकी

पूजा और पाठ करते हैं फिर क्रौञ्चद्वीप है जिसको पयोदधि समुद्र घेरे हुये है और कुशद्वीप से दूना है वहां क्रौञ्च नामी एक पर्वत है जहां स्कन्द शिव विराजमान रहते हैं और राजा घृतपृष्ठ जो राजा प्रियव्रत का पुत्र है उस द्वीप में राज्य करते हैं उनके सात पुत्र उपजे सो राजा घृतपृष्ठ ने अपने द्वीप के सात खण्ड कर सातों लड़कों को बांट दिये और आप तप के लिये वन में गया वह सातों खण्ड उन लड़कों के नाम से प्रसिद्ध हुये पहिला अनन्त दूसरा बुध तीसरा मेख चौथा मेघपृष्ठ पांचवां भ्राजिष्ठ छठा लोहित सातवां वनस्पति वहां भी सात पर्वत और नदियां हैं वहां के निवासी शिव को जलरूप समझ जल मन्त्र करके जप करते हैं और शिव की यह स्तुति करते हैं कि हे परब्रह्म, आनन्द के देनेवाले! तुम्हारी स्तुति सनकादिक करके थक गये हैं और अन्त को नहीं पहुँचे तुम परमपावन रूप हो और तुमने प्राणों की स्थिति के निमित्त अवतार धारण किया और तुम्हारे आदि अन्त को कोई नहीं जानता तुम परब्रह्म सर्वोपरि हो तुमसे सबको तृप्ति प्राप्त होती है उक्त द्वीप के उपरान्त शाकद्वीप है जिसकी लम्बाई तैंतीस लाख योजन है जिसको दधिसागर चारों ओर से घेरे है और इस समुद्र की लम्बाई द्वीप के बराबर है और एक शाक नामी वृक्ष उस द्वीप में है जो अपनी उत्तम सुगन्ध से सर्व द्वीप को सुगन्धित कर रहा है और राजा मेधातिथि प्रियव्रत का पुत्र इस द्वीप का राजा था और जब राजा मेधातिथि के सात पुत्र उत्पन्न हुये तो उसने सब द्वीप को सात खण्ड करके एक एक खण्ड सब लड़कों को बांट दिया सो वे सातों खण्ड उन्हीं लड़कों के नाम से प्रसिद्ध हैं जिनके यह नाम हैं पहिला पुरोज दूसरा मनोज तीसरा पवमान चौथा धूम्रानीक पांचवां चित्ररूप छठा

बहुरूप सातवां विश्वाधार और इस द्वीप में भी सात समुद्र और सात पर्वत हैं और वहां के निवासी पवनरूप सदाशिव को जानकर उन्हींके मन्त्र का जप करते हैं और यह स्तुति पवन की करते हैं कि हे शिव, परमात्मा, ईश ! दश प्रकार के शरीर हैं पर वे विना जीव जो मुख्य तुम्हीं हो जड़ हैं और तुम तीनों लोक के भीतर बाहर रहकर निष्पाप और निर्मल बने रहते हो और सर्व संसार में प्रकट और गुप्त तुम्हीं दिखाई देते हो और तुम्हीं ब्रह्म हो जिसका आदि अन्त कुछ नहीं और तुम किसी तत्त्व से नहीं और शुद्ध स्वरूप हो और तुम्हारा आधार कुछ रूप नहीं है और तुम शिव की अष्टमूर्ति में से एक मूर्ति हो और पांच तत्त्वों में जो चौथा तत्त्व है तुम्हीं हो तुम निष्पाप और निर्मल हो और तुम्हारे वश में तीनों लोक के जीव हैं और ब्रह्म धर्म के मूल तुम्हीं हो तुम्हारी सहायता और बल से योगी ब्रह्मपद प्राप्त करते हैं हम तुम्हारी शरण में हैं हमको बचाओ इस द्वीप के उपरान्त पुष्कर द्वीप है जो लम्बाई में शाकद्वीप से दूना और पुष्कर द्वीप को चारों ओर से शुद्धोदक समुद्र घेरे हुये है और यह समुद्र भी अपने द्वीप के बराबर लम्बा है और इस द्वीप में पुष्कर नामी कमलपुष्प तीन पत्ती के आकार अति सुन्दर है और इस द्वीप में केवल एक पर्वत है जिसको मान-सोत्तर कहते हैं और इस द्वीप के राजा महाराजा वीतिहोत्र प्रियव्रत का लड़का था जिसके दो पुत्र उपजे अर्थात् पहिला रमणक और दूसरा धातिक सो राजा वीतिहोत्र ने अपने द्वीप के दो खण्ड कर दोनों पुत्रों को बांट दिये और आप सदाशिवजी की पूजा में लगे रहे वहां के सब निवासी केवल कर्म को सदा-शिवजी का स्वरूप समझकर उनकी सेवा पूजन करते हैं अर्थात् वह कर्म को प्रधान जानते हैं और यह स्तुति करते हैं कि जो

लिङ्ग सदाशिव का ब्रह्म कर्मरूप है उसको हम प्रणाम करते हैं वह कर्म ऐसा है कि जिसके अधीन देवता मुनि आदि और तीनों लोक हैं जिससे तीनों लोक को दुःख सुख प्राप्त होते हैं ब्रह्मा सदा सृष्टि उपजाते और विष्णुजी अवतार लेकर उसकी पालना में लगे रहते इसी प्रकार शंकर शिव तीनों लोक को नष्ट कर प्रलय करते हैं और उसी कर्म के वश में पड़कर शेष पृथ्वी को धारते हैं और लोकपाल अपने लोकों में नाना प्रकार के दुःख सुखों को भोगते हैं और सूर्य और चन्द्रमा और सर्व ग्रह ध्रुव कर्म के अधीन होकर उदय होते और कभी अस्त हो जाते हैं इसलिये कर्मरूप जो शिव हैं हम उन्हीं की दण्डवत् और सेवा करते हैं इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उसके ऊपर लोकालोक है जो बहुत ऊँचा और बड़ा है जिसको ग्रह, नक्षत्र सूर्य और ध्रुव भी नहीं लांघसक्ते यह लोकालोक की पृथ्वी की संख्या में पचास कोटि योजन है और वहां एक पर्वत तुर्यभागनामी है जिसके चारों ओर ब्रह्मा के स्थापित किये हुये दिग्गज स्थित हैं उनके नाम यह हैं पहिला अपराजित दूसरा वामन तीसरा गतपर्व चौथा पुष्कर पांचवां चूड़ छठा ऋषभ और उसी स्थान में विष्णु भगवान् अपने भक्तों समेत विराजमान रहकर संसार की पालना करते हैं उसके आगे फिर सिवाय योगीजनों के और कोई नहीं पहुँच सक्ता वहां कोई मनुष्य किसी प्रकार नहीं पहुँच सक्ता क्योंकि मनुष्यों की दृष्टि में वह स्थान दिखाई नहीं देता यह वह स्थान है जहां अपने पङ्खों से सैन सुमन हंस आदि और ब्राह्मण या पक्षी उड़ सक्ते हैं जैसा कि वेद कहते हैं यह पृथ्वी सौ योजन पर्यन्त है हे नारद! यह क्षितिलोक का वर्णन है जिसको खण्डों और द्वीपों समेत बखान किया जिसके सुनने से मनुष्य को अति आनन्द मिलता है।

ग्यारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! क्षितिलोक के ऊपर भुवर्लोक है जिसकी लम्बाई सूर्य तक एक लाख योजन से अधिक है और वहां अपनी पुण्य की संख्या के अनुसार हर जीव पहुँच कर नानाप्रकार का आनन्द और अप्रमेय प्रसन्नता प्राप्त करता है वहां किसी प्रकार का दुःख मनुष्य को नहीं होता और इस भुवर्लोक में और भी बहुत उपलोक हैं जैसा कि हम उनके नाम और संक्षेप से वृत्तान्त वर्णन करते हैं पहिला पिशाचपुर है जहां भूत प्रेतादि रहते हैं और यह भूत और प्रेत देवयोनि अर्थात् तेजरूप हैं पृथ्वी के अंश नहीं हैं और उनको कुछ दुःख नहीं है और वे तीनों लोक में जासक्ते हैं और दूसरों पर प्रसन्न होकर उन्हें वर भी देसक्ते हैं जो कि यह शुभकार्य कर्म करते हैं इससे उनको थोड़े से द्रव्य और पद पर अधिकार है और जो मनुष्य कार्य करने से उस लोक में जाकर भूत प्रेत होते हैं उसका विस्तार हम कहते हैं अर्थात् जो मनुष्य दूसरे की संगति में वा दूसरे मनुष्य के अधीन होने के कारण कुछ सामग्री इकट्ठी कर विधिरहित किसी मनोरथ के पूर्ण होने की इच्छा से किसी देवता की पूजा करते हैं तो ऐसे मनुष्य मरने के अनन्तर दूसरे जन्म में भूत प्रेत होकर पिशाचपुर में वास पाते हैं और शिवजी का मन्त्र जप भूतनाथ महादेव की स्तुति करते हैं दूसरा गुह्यक लोक है जो पिशाचपुर के ऊपर है जहां जीव को दुःख नहीं उसके निवासी सदाशिवजी के आज्ञाकारी हैं और धनद्रव्य दान करते हैं और केवल अपने कुलदेवताओं को मानते हैं और उन्हीं के वचन को सत्य समझते हैं और उत्तम मार्ग से धन सञ्चित करते हैं और सब मनुष्यों के साथ शील और स्नेह रखकर किसी से सम्बन्ध व प्रीति नहीं तोड़ते सो ऐसे उत्तम

कामों के कारण वहां के स्त्री पुरुष निश्शोक धनवान् रहकर प्रसन्न रहा करते हैं वहां किसी को कुछ दुःख नहीं है और मणिग्रीव गुह्यपति अपने गणों सहित शिवजी की स्तुति किया करते हैं तीसरा गन्धर्वलोक है जो गुह्यलोक के ऊपर और जिसमें चारण और गन्धर्व बसे हुये हैं यह गानविद्या में अति प्रवीण हैं और अहर्निश ईश्वर के गुण गाया करते हैं और बड़ा विहार करते हैं और जो दुःख मनुष्य को होता है उनको वह नहीं होता और जो मनुष्य कि इस असार संसार में गान-विद्या से उनको प्रसन्न करते हैं वह मनुष्य वह लोक पाते हैं और वसु जो गन्धर्वों के राजा हैं सर्व गन्धर्वों सहित शिवजीकी सेवाकर और शिवजी का मन्त्र जप शिवजी की स्तुति किया करते हैं कि हे ईश, शंकर, सर्व मनुष्यों के राजा ! आपकी सेवा ब्रह्मा और विष्णु भी करते हैं वेद पुराण शेष और शारदा आपका यश बखान अति आनन्द पाते हैं तुम्हारी महिमा अप्रमेय है जिसका अन्त देवता मुनिआदि कुछ भी नहीं पाते पर आपकी कृपा से एक मूर्ख और नीच मनुष्य भी उसको जान लेता है चौथा विद्याधरलोक है जो गन्धर्वलोक से ऊपर है और वहां हर प्रकार का धन भरपूर है वहां के विद्याधर सर्व प्रकार की विद्याओं को जानते हैं और वे अतिनिर्दोष और महापवित्र हैं जो मनुष्य कि ऐसे मनुष्यों को जो शास्त्र की आज्ञानुसार ऐसे हैं कि उनको विद्या की शिक्षा देना उचित है और उनको उत्तम द्रव्य देकर विद्या पढ़ाते हैं वही मनुष्य इस विद्याधरलोक में स्थित होते हैं जिनको कोई मनुष्य कुछ भय नहीं दे सक्ता और चित्रगुप्त जो सब विद्याधरों के राजा हैं सब विद्याधरों सहित शिव की पूजा करके शिव का पञ्चाक्षरी मन्त्र जपते हैं और यह शिव की उत्तम स्तुति पढ़ते हैं कि हे गिरीश, सदाशिव, परब्रह्म, जगदीश, संसार के उप-

जानेवाले, पापों से शुद्ध, अविनाशी, गिरिजापति, अपने भक्तों के पार करनेवाले! तुम अपने तीन गुण से संसार को उपजाते पालते और मारते हो और तुम सतीपति हो आपकी महिमा सूक्ष्मतर है और तुम मन वचन और कर्म से तीनों लोकों में विचरते हो पांचवां सिद्धलोक विद्याधरलोक से ऊपर है जो मनुष्य कि दृढ़तापूर्वक धर्म करते हैं वही लोग वहां जाकर रहते हैं और वहां सदाशिवजी की पूजाकर शिव का मन्त्र जपते हैं और शिव की विनयपूर्वक स्तुति करते हैं कि हे महाराज! आप परमहंस रूप धारकर अपना वेष भूतों का सा रखते हो पर जो मनुष्य जिस वस्तु की इच्छा करता है उसको आप वही कृपा करते हैं आप अपने शरीर को केवल भस्म से सुशोभित करते हो और अपने भक्तों को रत्न और मणि आदि देते हो और अपने कण्ठ में केवल हलाहल और सर्पों की सेली रखते हो और अपने भक्तों को रत्नों की माला पहिनाते हो हे शंकर! आपका वेष बहुत बांका है आप हर प्रकार अपने भक्तों से प्रीति करते हो छठा अप्सरालोक सिद्धलोक से ऊपर है यह लोक अतिभोग विलास का स्थान है और वहां रम्भादि साठि हज़ार अप्सरा रहती हैं वे नाचने और गाने में अतिचतुर हैं और वह बड़ी बुद्धिमती धर्म से सुशोभित देवताओं के समान हैं और मानों कामशास्त्र की खानि हैं यह अप्सरा क्षीरसागर के मथने के समय अतिसुन्दरता से प्रकट हुई थीं और जिस को देखते हुये सब देवता और मुनि बुद्धि से रहित हो मोहित होगये थे और ये अप्सरा इन्द्र की सदा सहायता किया करती हैं क्योंकि योगी यती और तपस्वियों के लिये यही अप्सरा भेजी जाती हैं कि उनके तप में विघ्न डालें क्योंकि कामदेव रस का बढ़ानेवाला और ज्ञानमार्ग का भ्रष्ट और न्यून करने-

वाला है ये सब अप्सरा रति के समान भोग विलास करती हैं सो जो स्त्रियां धर्मपूर्वक पातिव्रत धर्म को बचाती हैं वह स्त्रियां इस लोक में पहुँचकर भोग विलास करती हैं सातवां राहुलोक है जो अप्सरालोक के ऊपरहै जहां सिंहिका का पुत्र राहु रहता है और राहुलोक के नीचे दशसहस्र योजन सूर्य हैं जब देवताओं को अमृत बांटा जाता था तब विष्णु भगवान् ने राहु का शिर काट डाला था और जब कि राहु ने कठिन तप किया तो शिव ने उसको ग्रह बना दिया सो राहु ग्रह का नाम निर्भय हो देवताओं के समान आकाश पर विराजमान हुआ और शिर कट जाने का स्मरण कर सूर्य चन्द्रमा के साथ शत्रुता की और उसने बदला लेने को बड़े २ उपाय किये सूर्य का मण्डल लम्बाई में दशसहस्र योजन है और चन्द्रमण्डल बारहसहस्र और राहुमण्डल तेरह हजार योजन लम्बा है सो समय पाकर राहु सूर्य और चन्द्रमा को घेर लेता है और तेजपूर्वक सब देवताओं को डांट डपट बताता है निदान विष्णु भगवान् अपना चक्र भेजते हैं जिसके देखने से राहु को आश्चर्य होता है संसार में ऐसे समय को ग्रहण कहते हैं और मनुष्य ऐसे समय में थोड़ा दान धर्म करके बड़ा पुण्य पाते हैं यह हमने आठवें राहु ग्रह का संक्षेप वृत्तान्त वर्णन किया अब हम राहु का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि वह क्योंकर आठवें ग्रह के नाम से प्रसिद्ध हुआ जब विष्णु भगवान् ने राहु का शिर काटडाला तब राहु वहां से भाग कर हरप्रकार शिव का तप करने लगा और बड़ा कठिन तप किया और हरप्रकार शिव के चरणों में प्रेम बढ़ाया सो ऐसे कठिन तपसे सदाशिवजी प्रकट हुये और फिर दर्शन देने के उपरान्त उसको ग्रह बनाया और उसी दिन से राहु अपने लोक में स्थित

रहकर शिव की सेवा किया करता है और अत्यन्त प्रेम से शिव की स्तुति करता है और हे ईश, अविनाशी, महेश ! अपने भक्तों को अति प्रसन्नता देनेवाले और दुःख दूर करनेवाले हैं मेरा केवल यह मनोरथ है कि मुझको अपने चरणों की भक्ति कृपा करो यह भुवर्लोक का वर्णन उपलोक सहित है जो हमने वर्णन किया।

बारहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! भुवर्लोक के ऊपर स्वर्लोक है जिसके मन्दिरों की प्रशंसा वर्णन नहीं कर सक्ते और स्वर्लोक में उपलोक भी बहुत हैं जो मानों आनन्द की खानि हैं और स्वर्लोक की सीमा सूर्यमण्डल से ध्रुवलोक तक गिनी जाती है और ब्रह्माण्ड के बीच में सूर्य जाकर प्रकाश करते हैं और अतिप्रसन्नता से तीनों लोकों को प्रकाशमान करते हैं और सूर्य की गति तीन प्रकार की हैं अर्थात् शीघ्र मध्य और सम जिनके यह नाम हैं पहिली उत्तरायण दूसरी दक्षिणायन तीसरी विषुवत् जिससे छः ऋतु और द्वादश मास प्रकट होते हैं और लोक प्रकाशक सूर्य का रथ केवल एक पहिये का है और उनका एक नेत्र मेरु के मस्तक पर पड़ता है और दूसरा मानसोत्तर के मस्तक पर और कोल्हू के समान जिसके द्वारा तेल बनाया जाता है वैसा चारों ओर रथ घूमता है और सूर्य के घोड़ों का नाम छन्द है और सूत का नाम अरुण है और साठि हजार बालखिल्य ऋषि जिनका डील अंगुष्ठ के प्रमाण है जो सूर्य के रथ के आगे २ वेद उच्चस्वर से पढ़ते हुये और सूर्य का यश गाते हुये चलते हैं सिवाय इसके और भी ऋषि और नागादि और सप्तऋषि सूर्य की सेवा में तत्पर रहते हैं और सप्तऋषि हर मास में सूर्य की सेवा से बदलते हैं और दूसरे नाम के

सप्तऋषि उनके बदले तत्पर होते हैं और रथ की लम्बाई जिसमें सूर्य चढ़ते हैं नव हज़ार योजन है और सूर्य का लोक एक लक्ष योजन ऊंचा है जहां सूर्य स्थित होकर शिव की पूजा से तीनों लोक को अतिआनन्द कृपा करते हैं और जिस तरह कि सूर्य ने तप करके ऐसी पदवी पाई है संक्षेप से उसकी कथा यह है कि हमारे पुत्र मरीचि जो बड़े ज्ञानी हैं उनके कश्यप उपजे और कश्यप ने गृहस्थधर्म अङ्गीकार कर तेरह कन्या दक्ष प्रजापति की विवाहीं उन तेरह स्त्रियों में से जिनका अदिति नाम था उनके उदर से बारह लड़के उपजे तिनमें एक लड़का जिनका नाम सूर्य है वे काशीमें तप करने के उद्योग से गये और उन्होंने बहुत वर्षों तक अतिकठिन तप किया सो सदाशिव अतिप्रसन्न होकर वर देने को सूर्य के पास आये और कहा "वरम्ब्रूहि" यह सदाशिव का वचन सुन सूर्य ने अपने नेत्र खोले और देखा कि शीश में गङ्गा की धारा बह रही है और चन्द्रमा भाल में साठि हज़ार कला से प्रकाशित है और कण्ठ में हलाहल विराजमान है और चार भुजा के साथ छाती अति सुन्दरता से शोभायमान है और मुखकमल महाप्रकाशमान है उदर में त्रिवली कटि अतिसुन्दर दोनों जङ्घा केले के खम्भा के सदृश हैं और पिंडुलियां सब दुःख दूर किये देती हैं और सबसे अधिक चरणकमल की झलक मन को लोभाती है जिनके नख नवीन चन्द्रवत् विराजमान हैं सूर्य ने ऐसा स्वरूप सदाशिव का देखा और अतिप्रेम से प्रणाम के उपरान्त अपनी सामर्थ्य के अनुकूल यह स्तुति की कि हे देव, सदाशिव ! हमारे स्वामी आप घट २ व्यापक और अन्तर्यामी हैं आपकी अप्रमेय महिमा देवता और मुनि आदि वर्णन करके थक जाते हैं पर उनका अन्त नहीं पाते आप परब्रह्म शरीररहित और माया से परे हैं पर तौ भी

चरित्र करने के लिये शरीर धार अवतार लेते हैं आपके असंख्य नाम जैसे शिव और परम पुरुष और पुरातन व ईशादि हैं और ब्रह्मा विष्णु और हर जो तीनों गुण हैं ऐसे २ आपके असंख्य स्वरूप हैं जो दुःखों को दूर करते हैं आपका राज्य तीनों लोक में प्रकट है और वेद व पुराणों में उसका वर्णन है इस स्तुति करने के अनन्तर अतिप्रेम से सूर्य ने दोनों हाथ बांध विनती की कि महाराज! मैं अपनी भाग्य की सराहना करता हूँ और मैं धन्य हूँ क्योंकि आपने शरीर धार अपने दर्शन से मुझे प्रतिष्ठित किया वेद ने सर्वश्रेष्ठ मनोरथों पर आपके दर्शन को सर्वोपरि वर्णन किया है मुझे इच्छा है कि मैं प्रतिदिन आपकी सेवा किया करूँ क्योंकि मुझको संसार में इससे अधिक और कौन वरदान लेना चाहिये कि आप हमारे सामने खड़े हैं यह कह सूर्य चुप हो रहे और सदाशिव ने अतिप्रसन्न हो बिना सूर्य के मांगे यह वर दिया कि हे सूर्य! तुम बड़े तेज और प्रकाश की खानि होकर जीवों के कर्म के साक्षी होगे और हर प्रकार अपने भक्तों को आनन्द देते रहोगे और अपने सेवक के सर्व रोग नष्ट करके उसको मुक्त करोगे और भुवर्लोक के ऊपर हमने तुम्हारा लोक नियत किया वहां तुम स्थित रहकर तीनों लोक में भ्रमण करो इस प्रकार का वर सदाशिव सूर्य को दे आप अन्तर्धान हो गये और सूर्य अतिप्रसन्न हो प्रणाम के उपरान्त अपने घर आये और अपने लोक में स्थित होकर शिव की सेवा किया करते हैं जो मनुष्य सूर्य का व्रत करते हैं व सूर्य का तप और यज्ञादि करते हैं वे सूर्यलोक में जाकर परम सुख पाते हैं यह सूर्यलोक का संक्षेप में वृत्तान्त है जहां मनुष्य उनके ध्यान से पहुँच सक्ता है।

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सूर्यलोक का वृत्तान्त ऊपर हो चुका अब हम चन्द्रलोक का वर्णन करते हैं यह चन्द्रलोक सूर्यलोक से एक लाख योजन ऊपर है जहां बड़े धर्मात्मा और पुण्यवान् और शुभ मनुष्य जाकर बड़ा सुख उठाते हैं और वहां पर दुःख और चिन्ता नहीं है वहां मनुष्य यह अमृत जो चन्द्रमा की किरणों से टपकता है पीकर अतिआनन्द पाता है और फिर किसी प्रकार का दुःख उस मनुष्य के निकट नहीं आता यह चन्द्रलोक आनन्द की खानि असंख्य दुःखों का दूर करनेवाला और सर्व मनोरथों के पूरने का स्थान है वहां स्त्रियों के साथ मैथुन करने के लिये सब कुछ सामग्री है वहां चन्द्रमा राजा हैं और जिस प्रकार कि चन्द्रमा ने इतना बड़ा लोक पाया वह कथा हम तुमको सुनाते हैं कि अत्रि जो हमारे मन से उपजे और जो बड़े बुद्धिमान् शीलवान् तेजस्वी प्रसिद्ध हैं उन्होंने अनसूया के साथ जो कर्दममुनि की कन्या है अपना विवाह किया और हमारी आज्ञा पा अत्रि अनसूया सहित ऋक्षकुल गिरि पर जाकर नर्मदानदी के तट पर स्थित हुये और उन्होंने श्वास रोक कठिन तप किया यद्यपि इस प्रकार सौ वर्ष बीत गये पर तो भी अत्रि का मन तप के ऊपर और अधिक लगा रहा और एक पांव से खड़े हो खाना पीना सब छोड़ दिया और यह मनोरथ मन में ठाना कि जो कोई मनुष्य जगदीश है हम उसकी शरणागत हैं और इच्छा करते हैं कि ऐसा मनुष्य हमको एक पुत्र कृपा करे जो उस मनुष्य के समान हो और जब कि ऐसा कठिन तप करते हुये अत्रि को एक समय बीत गया तो अत्रि मुनि के शीश से एक अग्नि की ज्वाला बाहर निकली और सर्व मनुष्य जलने लगे और देवता, मुनि

और मनुष्य सब विकल हो हमारे शरण में गये और विनय की कि महाराज ! सब मनुष्य जले जाते हैं इसका कारण क्या है आप कृपा करें कि यह तप्त दूर होजावे यह बात सुनकर हम देवताओं सहित विष्णु भगवान् के समीप गये और प्रणाम के उपरान्त विष्णु की स्तुति कर सर्व वृत्तान्त कहा सो ऐसे वृत्तान्त के सुनने से विष्णु आश्चर्य कर सब देवताओं समेत शिव के समीप गये और सब हाल वर्णन किया गया शिव बोले कि तुम कुछ संदेह मत करो अत्रि मुनि तप कर रहे हैं और योग करके पवन जीत प्राणायाम किये हुये ध्यान में बैठे हुए हैं यह कहा और शिव हम और विष्णु समेत सब देवताओं को साथ लिये हुये अत्रि मुनि के तपस्थल में गये और बैल और हंस और गरुड़ अपने २ मुख्य वाहन पर आरूढ़ शस्त्र बांधे हम तीनों देवता पहिंचाने जाते थे और हम तीनों ने अत्रि मुनि से मुसुकराते हुये एक ही साथ "वरम्ब्रूहि" कहा कि तुम्हारा यह तप पूर्ण होगया तुम्हारे समान तीनों लोक में और किसी ने ऐसा कठिन तप नहीं किया यह तीनों देवताओं का वचन सुन अत्रि मुनि ने अपना शीश झुका हाथ जोड़ विनय की कि मुझे एक बड़ा यह संदेह उपजा है कि तुम तीनों देवता एक ही साथ प्रकट हुये हमने तो केवल एक ही देव का तप किया था फिर क्या कारण है कि तुम तीनों देवता आये हो प्रथम कारण कहकर फिर वर देवें यह बात सुन तीनों देवता अतिप्रसन्नता से बोले कि हम तीनों ने यह बात तुम्हारी इच्छा से विरुद्ध नहीं की वरन् जैसी तुमने इच्छा की वही तुमको दिया गया क्योंकि हम तीनों जगदीश कहलाते हैं और हम तीनों में कुछ भेद नहीं है यही कारण है कि हम तीनों देवता तुम्हारे पास आये हैं और हम तुम्हारे तप से अति प्रसन्न हैं और तुमने

सन्तान की प्राप्ति के निमित्त यह तप किया था सो तुम्हारे तीन पुत्र हम तीनों के अंश से उपजेंगे जो तीनों लोक में प्रसिद्ध होकर अपने माता पिता के यश को बढ़ावेंगे यह वर देकर तीनों देवता अपने २ लोक को चले गये और अत्रि मुनि भी अपने घर में जाकर अति प्रसन्न हो रहने लगे क्योंकि जब उनको यह बात स्मरण होती थी तो वे फूले नहीं समाते थे सो समय पाकर तीनों देवता अत्रि के घर में उपजे तब आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और बाजे बजाये गये और सर्वसंसार और सृष्टि ने उस समय क्या क्या आनन्द नहीं पाया ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा उपजे और विष्णु के अंश से दत्त और शिव के अंश से दुर्वासा उपजे इस जगह हम केवल चन्द्रमा का चरित्र वर्णन करते हैं कि चन्द्रमा तप की इच्छा से काशी में गये और वहां सदाशिव के चरणों का ध्यानकर कठिन तप करने लगे सो शिवजी प्रसन्न हो चन्द्रमा के सामने खड़े हुये सो चन्द्रमा ने शिव को देखा और दण्डवत् के उपरान्त स्तुति की और शिव ने स्तुति सुन चन्द्रमा को वर देकर सूर्यलोक के ऊपर उनको एक लोक कृपा किया पहिले सब ब्राह्मणों का राजा बनाया सो चन्द्रमा ऐसा लोक पाकर सदाशिव की स्तुति किया करते हैं कि हे शंकर ! आप तीनों लोक के स्वामी और अन्तर्यामी हैं आपके समान दूसरा कोई देवता नहीं है आपकी सेवा ब्रह्मा विष्णु आदि करते हैं आपने भक्तों के लिये बहुत अवतार धारण किये हैं देखो रामचन्द्र के लिये तुमने हनुमान् का अवतार लिया और कामरूप की कामना पूरी की और गुणनिधि और चन्द्रसेन को अपना कर लिया आपने असंख्य अधमों को तार दिया है और बहुत भक्तों की रक्षा की और बहुत भक्तों की इच्छा पूर्ण की और बहुत भक्तों को आवागमन से छुड़ाया यह चन्द्रलोक

एक लाख योजन सूर्यलोक से ऊपर है जहां मनुष्य जाकर दुःखों से बचा रहता है अब हम उडुगणों का वृत्तान्त वर्णन करते हैं जो अति प्रकाशमान विदित होते हैं जहां अश्विनी आदि नक्षत्र हैं वे सब शिव की सेवा तन मन से करते हैं यह उडुगण लोक तीन लाख योजन चन्द्रलोक से ऊपर है जिस तरह कि लोक नक्षत्रों ने पाया उसकी कथा इस तरह पर है कि दक्षप्रजापति से साठि कन्या उत्पन्न हुईं उनमें से अश्विनी और रेवती आदि सत्ताईस कन्या काशीपुरी में जाकर अति कठिन तप करने लगीं इस इच्छा से कि हम सब शिव को अपना पति बनावेंगी सो शिवजी ऐसा प्रेम अश्विनी आदि का देख वर देने को गये और "वरन्ब्रूहि" कहा ऐसे वचन जो अमृत से कम न थे अश्विनी आदि ने सुनकर अति प्रेम से हाथ बांधकर प्रणाम के अनन्तर यह स्तुति की कि हे देव, शंकर! आपदाओं के निवारण करनेवाले और सबके निर्दोष पति तीनों लोक से भिन्न और तीनों लोक में मिले हुये हैं और आप अपने भक्तों को आनन्द देते हैं हमारी इच्छा है कि आप हमारे ऊपर कृपा करके हमारे पति होवें यह वचन सुन सदाशिव ने कहा कि हमने तुमको चन्द्रलोक के ऊपर एक लोक रहने को दिया और हमारे आठ स्वरूप हैं जो तीनों लोक के कारण और सबके उपकारी प्रसिद्ध हैं उनमें से चन्द्रमा कि वह भी हमारा रूप है सो तुम्हारा पति होगा और तुम अपने लोक में स्थित होकर चन्द्रमा के साथ भली भांति विहार करो और जो कि तुम सबने हमारा तप पुरुषों के समान किया है इससे तुम्हारा नाम पुरुषों के समान प्रसिद्ध होगा यह कह शिव अन्तर्धान हो गये और वे भी दक्ष प्रजापति के घर में पहुँचीं और दक्ष प्रजापति ने शिव का वर जान उन सबको चन्द्रमा के साथ विवाह दिया

और उन सबको ऐसे पति के मिलने से अति प्रसन्नता प्राप्त हुई और बारह राशि होकर चन्द्रमा को बड़ा आनन्द दिया और शिव की सेवा कर शिव का नाम जपने के उपरान्त शिव के सामने स्तुति किया करते हैं कि हे ईश, गिरीश, महेश! आप सब जीवों में प्रकट हैं और सबसे श्रेष्ठ हैं और देवताओं के देवता हैं और अन्यायियों के लिये बड़े भयंकर हैं और आप भूतनाथ और संसार के प्रलय करनेवाले हैं और यह सब नाम सदाशिव के हैं हे चन्द्रचूड़! हे मृड! हे धूर्जटे! हे तारक! हे शूलपाणि! हे त्रिपुरनाशक! हे शम्भु! हे गिरिजापति! हे भक्तमनोरथपूरक! हे वामदेव! हे असितकण्ठ! हे सनातन! हे कामनाशक! हे त्र्यम्बक! हे परब्रह्म! हे परमात्मा! हे नाथ! आपके गुणों के गीत वेद गाते हैं हम पर ऐसी कृपा करो कि किसी समय में हम पाप न करें और रात्रिदिन आपकी भक्ति अधिक होती रहै और आपकी सेवा हर प्रकार करते रहैं क्योंकि हमने इस बात को भलीभांति समझ लिया है कि आपके विरुद्ध होकर फिर कुछ आनन्द नहीं हो सक्ता हे नारद! यह संक्षेप वृत्तान्त उडुगणलोक का है।

चौदहवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उडुगणलोक के ऊपर शुक्र का लोक है जो उडुगणलोक से दो लक्ष योजन ऊंचा और शुक्र सूर्य के आगे और पीछे एक ही साथ चलते हैं और उनका आगे और पीछे हो जाना सूर्य की गति पर घटित है और जो मनुष्य कि संसार में काव्य करते हैं वही लोग शुक्रलोक में प्रवेश कर नाना प्रकार के आनन्द प्राप्त करते हैं वहां दुःख का लेश भी नहीं है यह शुक्र हमारे पुत्र भृगु से उपजे और काशी में जाकर शिव का तप करने लगे और बहुत प्रकार के पुष्प

शिवजी के लिङ्ग पर चढ़ाये यद्यपि बहुत समय तक शुक्र ने तप किया पर वर न पाया तब शुक्र केवल एक चरण से खड़े होकर शिवजी के ध्यान में स्थित रहे और पूरक के उपाय से अपनी श्वास ऊपर खींच ध्यान और योग किया सो एक समय तक शुक्रजी इसी तरह खड़े रहे शुक्रजी के ऐसे तप से फिर शिव अपने स्थान पर स्थित न रह सके वे तुरन्त वर देने के लिये शुक्र के समीप गये और मुख से "वरम्ब्रूहि" कहा पर शुक्र ने ध्यान के कारण यह वचन न सुना तब सदाशिव ने अपनी मूर्ति शुक्र के मन से खींच ली जिससे शुक्र ने अति विकल होकर अपनी आंखें खोल दीं और सदाशिवजी को अपने आगे खड़ा देखकर अति प्रेम से प्रणाम के उपरान्त यह स्तुति की कि हे गिरीश महाप्रभु! हमारे ऊपर कृपा करो आप सब पर निर्दोष मृत्यु से परे और मृत्यु के भी मृत्यु और संसार के नष्ट करनेवाले और तीनों लोक के भेद जाननेवाले हैं और संसार के प्यारे और शुद्ध और तीनों लोक के पालन करनेवाले और अपने भक्तों के कृतार्थ करनेवाले और हरप्रकार के दुःखों के दूर करनेवाले हैं इस स्तुति के करने के अनन्तर शुक्र चुप होगये शिवजी ने "वरम्ब्रूहि" कहा तब शुक्र ने विनय की कि हम आपकी शरण में हैं हमको मृत्युंजय मन्त्र दीजिये सिवाय इसके और जो उचित है वह कृपा कीजिये यह सुन शिवजी बोले कि यही होगा और तुम उडुगणलोक के ऊपर जो लोक है वहां जाकर स्थित रहो और दैत्यों के पुरोहित होकर मृत्युंजयमन्त्र की सहायता से प्रसन्न बने रहो यह वर देकर शिव अन्तर्धान होगये और शुक्र भी सदाशिव की आज्ञानुकूल उसी लोक में जो शिवजी ने दिया था जाकर रात्रि दिवस शिवजी की सेवा में लगे रहे अब हम बुधलोक का वर्णन करते हैं कि बुधलोक शुक्रलोक से

दो लक्ष योजन ऊपर है वह लोक आनन्द की खानि और सुन्दर विचित्र मन्दिरों से सुशोभित जिनमें अद्वितीय रत्नजटित हैं वर्तमान है वहां बुध विराजमान हैं उनकी कथा इस भांति की है कि चन्द्रमा तीनों लोक में बड़ाई पाकर कामदेव की अहंकार की बुद्धि से भ्रष्ट हुये क्योंकि ऐसा मनुष्य संसार में कौन है जो प्रभुत्व पाकर अहंकार से बचा हुआ रहे सो चन्द्रमा ने बृहस्पति अपने गुरु की स्त्री को भगाकर अपने घर में रक्खा यद्यपि बृहस्पति ने अपनी स्त्री को उनसे मांगा पर चन्द्रमा ने न माना निदान बृहस्पति सदाशिवजी की शरण में गये और सब दैत्य चन्द्रमा के पक्ष पर खड़े हुये और तारकासुर के समान बड़ा युद्ध हुआ जिससे तीनों लोक में हाहाकार होगया निदान सदाशिवजी ने अति क्रोध से अपना त्रिशूल उठा लिया तब हम और विष्णु ने चन्द्रमा के पास जाकर उसको समझा बुझा तारा को शिवजी की शरण में ले गये और बृहस्पति को तारा देदी और शिवजी का क्रोध दूर कर दिया जब बृहस्पति ने तारा को गर्भवती देखा तब अतिक्रोध से कहा कि हे तारा ! अपना गर्भ तुरन्त गिरा दो नहीं तो हम तुमको जलाकर भस्म कर डालेंगे सो तारा ने गर्भ गिरा दिया और जब कि उससे अति सुन्दर पुत्र उपजा तो बृहस्पति और चन्द्रमा दोनों ने उसको लेना चाहा इस बात पर दोनों में बड़ा झगड़ा हुआ बृहस्पति कहते थे कि यह हमारा पुत्र है और चन्द्रमा का वचन था कि हम इसके पिता हैं निदान इस बात का निर्णय तारा पर घटित किया गया पर तारा ने लज्जावश कुछ न कहा निदान हमने तारा से पूछा तो तारा ने कहा कि यह चन्द्रमा का पुत्र है इस बात के सुनते ही तुरन्त चन्द्रमा ने बहुतसा दान देकर लड़के को उठा लिया और हमने उस लड़के को बुद्धिमान् पा उसका नाम बुध

रक्खा और बुध काशीजी में जाकर बड़ा तप करने लगे तब शिवरानी ने शिवजी से कहा कि इस लड़के को वरदान दो सदाशिव ने बुध के पास जाकर कहा कि जो तुझे चाहिये वरदान मांग ले यह वचन सुनकर बुध ने विनती की कि हे अनाथों के नाथ! हम धन्य हैं कि आपने हम पर कृपा करके हमको अपने दर्शन से कृतार्थ किया इससे अधिक और कौन वर है जिसको हम मांगें जो आप प्रसन्न हैं तो जो आपकी इच्छा हो वह दीजिये यह बुध का वचन सुनिकै शिव को बहुत भाया और अति प्रसन्न होकर बुध को ग्रह का पद दे दिया और अपना डमरू भी बजा दिया जिसको सुनकर सब देवतादिक आये और बुध की प्रशंसा करने लगे और सूर्य और चन्द्रमा ने दो राशि बुध को दीं और सदाशिव ने उसको एक लोक दिया इस के उपरान्त शिव अन्तर्धान होगये और बुध भी अपने लोक में पहुँचकर सुशोभित हुये वे सदाशिव की सेवा बहुत प्रेम से किया करते हैं इस लोक में वे मनुष्य जाते हैं जो बड़े बुद्धिमान् होते हैं अब हम भौमलोक का वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि बुधलोक के ऊपर भौमलोक दो लाख योजन ऊंचा है वहां मङ्गल ग्रह स्थित रहते हैं जो तीन पक्ष पर्यन्त एक ही राशि में रहते हैं उनकी कथा इस तरह पर है कि जब सती यज्ञ में गई और अपनी अप्रतिष्ठा देख उसने अपने प्राण छोड़ दिये तब शिवजी भी दक्ष के यज्ञ विध्वंस करने के अनन्तर सर्वस्व त्याग सती के वियोग में मौन होकर बैठ रहे और अपनी श्वास चढ़ाय कठिन तप करने लगे जब बहुत समय के उपरान्त शिवजी ने अपना श्वास उतारा तब शिवजी के भाल से एक बिन्दु पसीने का पृथ्वी में गिरा जिस से तुरन्त एक पुत्र उपजा जिसका रङ्ग कुन्दरू के फल के समान रङ्ग था उस समय पृथ्वी स्त्री का रूप धार वहां आई और लड़के को

अपनी छातियों से दूध पिलाने लगी यह चरित्र देख शिव अति प्रसन्नता से हँसे और कहा कि हे पृथ्वी! यह लड़का हमारा है पर जो कि तुमने इसको दूध पिलाया इससे यह लड़का अब तुमको दिया जाता है यह सुनकर और ऐसा बालक पाकर पृथ्वी ने अति प्रसन्न हो लड़के को ले लिया और शिवजी की बड़ी स्तुति की सो अवसर पाकर भौम काशी में गये और अपने कठिन तप से शिवजी को प्रसन्न किया और सदाशिवजी ने भौम के समीप जाकर उनको दर्शन दिया भौम ने शिव को देखा और स्तुति की कि हे जगदीश! हम पर कृपा करके हमारा हाथ पकड़ो आपके चरित्र अति सूक्ष्म हैं जिनको वेद भी वर्णन नहीं कर सके हैं और ब्रह्मा और शेष भी वर्णन करके पार नहीं पाते यह सुनकर शिव बोले कि हे भौम! तुम हमको बहुत प्यारे हो हम तुमको तीसरा ग्रह नियत करते हैं और बुधलोक के ऊपर तुम्हारा लोक रहेगा तुम वहां जाकर निर्दोष हो स्थित हो जाओ यह कह शिवजी अन्तर्धान होगये और भौम अपने लोक में जाकर आनन्द से शिव की सेवा करने लगे और उनका यश रात्रि दिन गाया करते हैं वहां के निवासी रात्रि दिन आनन्द उठाते हैं इस लोक के मन्दिर अति सुन्दर जिनमें विचित्र रत्न-जटित अत्यन्त शोभा देरहे हैं और जिस तरह कि बृहस्पति ने अपना लोक पाया वह कथा इस तरह पर है कि बृहस्पति आङ्गिरस से उपजे और आङ्गिरस हमसे उत्पन्न हुये सो बृहस्पति ने काशी में जाकर बड़ा कठिन तप किया सो ऐसा घोर तप देख सदाशिव प्रसन्न होकर वरदान देने को बृहस्पति के पास आये और मुखसे "वरम्ब्रूहि" वचन कहा पर बृहस्पति ने गूढ़ ध्यान के कारण इस वाक्य को न सुना पर जब कि सदाशिव ने अपना रूप बृहस्पति के मन से निकाल लिया तो बृहस्पति

ने चिन्तित होकर अपने नेत्र खोल दिये और देखा कि वही स्वरूप जिसका मैं ध्यान करता था आगे खड़ा है सो बृहस्पति ने प्रणाम के उपरान्त स्तुति की शिव ने कहा कि तुम सब देवताओं के गुरु होगे और देवपुरोहित होकर आचार्य के नाम से प्रसिद्ध होगे और भौमलोक से जो ऊपर का लोक है उसमें रहोगे यह वर देकर शिवजी अन्तर्धान होगये और बृहस्पति भी अपने लोक में जाकर देवताओं के गुरु हुये अब हम शनैश्चर के लोक का वर्णन करते हैं जहां मनुष्य जाकर बड़ा आनन्द उठाता है और वहां सूर्य के पुत्र शनैश्चर स्थिर रहकर शिव की यह स्तुति करते हैं कि हे नाथ ! आप परमगति के देनेवाले हैं और आप दीनदयालु हैं और जो मन वचन और कर्म से आपकी सेवा करते हैं आप उनके अधीन हैं और आपके समान आप ही हैं इसप्रकार शनैश्चर शिव की बहुत स्तुति कर रात्रि दिन आनन्द में रहा करते हैं और एक राशि में ढाई वर्ष तक रहते हैं क्योंकि इनकी चाल बहुत ही धीरी है और हर जगह पर अटकते और ठहरते हुये चलते हैं इसी तरह वे बारहों राशि में भ्रमण करते हैं और जिसकी ओर देख देते हैं उसको बड़ा दुःख मिलता है और जिस कारण शनैश्चर ने यह लोक पाया वह यह है कि सूर्य जो कश्यप के पुत्र हैं उनकी स्त्री छाया से शनैश्चर उपजे जो शनैश्चर ऊपर को दृष्टि करें तो सम्पूर्ण सृष्टि नष्ट होजावे इससे शनैश्चर सदा शिर झुकाये अपना मुख देखा करते हैं कि किसी पर दृष्टि न पड़े निदान शनैश्चर ने काशी में जाकर बड़ा कठिन तप किया जब इस प्रकार उनका बहुत समय बीता तो सदाशिव ने प्रसन्न हो दर्शन दे उन्हें यह वर दिया कि बृहस्पति के लोक से ऊपर जो लोक है वहां तुम जाकर रहो यह वरदान देकर शिवजी अन्तर्धान

हुये और शनैश्चर भी सदाशिवजी के कृपा किये हुये लोक में जाकर शिवजी की सेवा और स्तुति में प्रवृत्त रहे और वह सदा यह स्तुति करते हैं कि हे परब्रह्म, परमेश्वर, अनादि, तीन लोक के पालनेवाले ! आप माया से परे व सबसे श्रेष्ठ अविनाशी पुरुष हैं और सदा अवतार धारण कर अपने भक्तों को मुक्ति देते हैं।

पन्द्रहवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शनैश्चरलोक के ऊपर ऋषि-लोक है जहां हमारे सात पुत्र सप्तऋषि के नाम से प्रसिद्ध हैं वे सदा शिवजी की यह स्तुति किया करते हैं कि हे परब्रह्म, परमेश्वर, दीनानाथ, महेश ! हमको अपना सेवक जानकर हम पर कृपा करो आप सत्त्वपति हैं और सत्त्व ही का रूप होकर सत्त्व के रक्षक हैं और सत्त्व के श्रेष्ठ करनेवाले हैं और आपकी सामग्री अति आश्चर्यदायक है और आपकी लीला जो आप सगुणरूप धारण करके करते हो बड़ी आश्चर्य देनेवाली है और सिवाय सप्तर्षि के और जितने ऋषिलोग धर्मवान् होते हैं वे सब इसी लोक में स्थित होते हैं अब हम ध्रुवलोक का वर्णन करते हैं कि ध्रुवलोक तेरह लाख योजन ऊँचा है वहां बहुत सुन्दर और विचित्र मन्दिर दोषों से रहित शोभा देते हैं वहां मनुष्य जाकर बड़ा आनन्द उठाते हैं और वहां के भवन आठ प्रकार के रत्नों आदि से सुशोभित हो रहे हैं जिनमें धर्मात्मा विराज-मान रहते हैं और उनकी परिक्रमा सब ग्रह, नक्षत्र, चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि, इन्द्र, धर्मराज, ब्रह्मा, कश्यप आदि करते हैं और जिसप्रकार कोई पशु किसी खम्भे से बँधा हुआ हो और खम्भे के चारों ओर फिरै उसी प्रकार सब ज्योतिर्गण ध्रुव के चारों ओर घूमते हैं और जिस तरह कि बादल आकाश में वायु के सहारे से लटके रहते हैं और पृथ्वी में नहीं गिरते उसी तरह यह भी

पृथ्वी में नहीं गिरते शिवजी की आज्ञा से लटके हैं और कोई मुनि पुराण की रीति से कहते हैं कि जहां तक तारे दिखाई देते हैं वह शिशुमार चक्र में गुंधे हुए हैं और उन सबके ऊपर ध्रुव स्थित हैं हे नारद ! ध्रुव बड़े भाग्यवान् हैं जिन्होंने विष्णु की कृपा से यह पद प्राप्त किया और शिवजी की सेवा कर अपने रहने के स्थान को अचल कर लिया उनकी कथा इस तरह पर है कि हमारे पुत्र स्वायंभुवमनु हुये जिन्होंने शतरूपा से अपना विवाह किया उनके पुत्र उत्तानपाद प्रजा के अति प्रसन्न करनेवाले राजा हुये और उत्तानपाद के दो स्त्रियां थीं एक सुरुचि दूसरी सुनीति सो ध्रुव सुनीति से उपजे एक दिन ध्रुव ने अति प्रेम से अपने पिता की गोद में बैठने की इच्छा की पर राजा ने सुरुचि अपनी दूसरी स्त्री के संकोच से ध्रुव को अपनी गोद में न लिया और सुरुचि ने अति अहंकार से ध्रुव को कठोर वचन कहे जो तीर के समान ध्रुव के हृदय को फाड़कर पार होगये और ध्रुव रोते हुये अपनी माता के पास आये सो सुनीति ने पूछा कि तुमसे सुरुचि ने क्या कहा और जब ध्रुव ने उससे सर्व वृत्तान्त कहा तो सुनीति अति दुःखकर कहने लगी कि सत्पुरुषों ने कहा है कि विना ईश्वर की सेवा के किसी को आनन्द नहीं मिलता इस लिये तुमको उचित है कि ईश्वर के चरणों का ध्यान करके तप करो हमारी वही परमेश्वर सहायता करेंगे फिर उसने अपने पुत्र को हृदय से लगा लिया ध्रुव ने कहा कि तुम को कुछ चिन्ता न करनी चाहिये मैं वह पद पाऊँगा जहां कोई मनुष्य नहीं पहुँचेगा यह कहकर और अपनी माता से आज्ञा ले तप करने को चले और मार्ग में नारद से भेंट कर आशीर्वाद पा मधुवन में गये और वहां उन्होंने दश सहस्र वर्ष पर्यन्त तप करके सब इन्द्रियों को जीता और एक ही चरण से पृथ्वी में खड़े होकर

श्वास ऊपर चढ़ाई जिससे तीनों लोक में पवन का चलना बन्द हो गया और सब जगह प्रलय के लक्षण प्रतीत होने लगे सो सब देवता विष्णु की शरण में गये और विनय की कि यह दुःख तीनों लोक में है विष्णु बोले कि तुम कुछ चिन्ता मत करो ध्रुव तप करते हैं यह कह तुरन्त वरदान देने को चले और ध्रुव के पास जाकर "वरम्ब्रूहि" शब्द कहा ध्रुव ने अपना मनोरथ कहा और उनकी स्तुति की विष्णु तथास्तु कह ध्रुव से बोले कि तुम काशी में जाकर इतना तप करो कि जिससे सदाशिव प्रसन्न होवें और शिवजी से यह वर मांगना कि जो वर हमको विष्णु ने दिया है वह अचल हो और जब छत्तीस हजार वर्ष राज्य कर लेना तब अपने लोक में जो ऋषिलोक से भी ऊपर है चले जाना और हम प्रतिदिन काशी में सदाशिवजी की पूजा को जाते हैं आज तुम भी हमारे साथ चलो हम तुमसे अति प्रसन्न हैं यह कहा और ध्रुव को साथ लेकर गरुड़ पर चढ़ विष्णुजी काशी में पहुँचे और ऊपर का लिखा हुआ वर ध्रुव को फिर देकर आप मणिकर्णिका के किनारे उतरे और तीर्थ में स्नान और विश्वनाथ की पूजा प्रेम के साथ कर फिर विष्णु अपने धाम को चले गये और ध्रुव ने काशी में स्थित होकर अपनी इन्द्रियां जीत शिवलिङ्ग स्थापित किया और महा कठिन तप में लगे सो विश्वेश्वर महादेव अति प्रसन्न हो ध्रुव के सामने प्रकट हुये और कहा "वरम्ब्रूहि" ध्रुव ने प्रणाम कर यह स्तुति की कि हे ईश, नाशरहित, सबसे श्रेष्ठ, परब्रह्म, पाप रहित ! हमको अपना सेवक जान हमारे ऊपर कृपा करो विष्णु का वर हमारे लिये अचल हो जावे यही वर हम चाहते हैं हम आपकी शरण में आये हैं यह सुनकर शिवजी बोले कि यही होगा यह कहकर शिवजी अन्तर्धान हुये और ध्रुव भी यह वर पा पहिले अपने

पिता के पास गये और उत्तानपाद ने ध्रुव को अति आदर से लिया और उनकी माता भी अति प्रसन्न हुई फिर राजा ध्रुव को राज्य सौंप आप वन में तप करने को चले गये और ध्रुव ने छत्तीस हज़ार वर्ष पर्यन्त पृथ्वी का राज्य किया फिर राज्य का कार्य अपने पुत्र युवराज को सौंप आप तप में लगे जहां विष्णु के गण विष्णु की आज्ञानुसार विमान लेकर विद्यमान हुये और ध्रुव दिव्य तनु हो विष्णुलोक को चले गये और जो लोक कि ऋषिलोक से भी ऊपर है वहां स्थित हुये और प्रसन्नता में मग्न हो दुःखरहित अचल स्थित हैं और सर्व नक्षत्रगणों के मध्य में सब नक्षत्रों के आधार हैं और शिवजी की यह स्तुति किया करते हैं कि हे ईश! सबके स्वामी और सबके नाथ! वेद आपके गुणों के पात्र हैं आप सर्वोपरि हैं क्योंकि यह बात हमने विष्णु की सेवा करके जानी है सो ध्रुव विष्णु के भक्त शिवजी का यश गाया करते हैं और निर्भय रहते हैं यह ध्रुव लोक की कथा पूरी हो गई और सुरलोक केवल उसी स्थान तक है।

सोलहवां अध्याय।



ब्रह्माजी बोले हे नारदजी! ध्रुवलोक के ऊपर महर्लोक है जो क्षितिलोक अर्थात् पृथ्वी से एक करोड़ योजन ऊँचा और जहां किसी प्रकार का दुःख नहीं है वहां के सब भवन सुवर्ण के रत्नों से जड़े हुये जिनको देखकर बुद्धिमान् मनुष्य भी आश्चर्य करते हैं वहां अट्ठाईस करोड़ देवता रहते हैं जो बड़े तपस्वी और दोषों से पवित्र हैं और संसारी व्यवहार छोड़ ब्रह्मचर्य धार संसारी मनुष्यों के समान कोई कर्म नहीं करते वह शिवजी के सगुण और निर्गुण दोनों रूप की उपासना करते हैं और कुकर्मों की उनको इच्छा नहीं और उनके मनों में सदाशिवजी स्थित रहते हैं और पञ्चाक्षरी मन्त्र जो तारकमन्त्र

कहा जाता है जपकर सोऽहंभाव में डूबे हुये हैं और सदाशिवजी के दोनों रूप के चरित्रों की लीला गाया करते हैं कि हे ब्रह्म सनातन, ईश, परमसच्चिदानन्द ! आप सबके बीच और सबके बाहर हैं आपका यश शेष वर्णन करके थक जाते हैं आप प्रकृति और पुरुष और अलख और अनादि और परमात्मा शरीर रहित हैं आप कानों बिन सुनते और बिन आँखों देखते और जिह्वा बिन सब स्वाद लेते और नाक बिना सूंघते और बिन त्वचा स्पर्श करते और हाथों बिना तीनों लोक के सर्वकार्य करते और मुख बिना सब वेदों को पढ़ते और लिङ्ग बिना सृष्टि उपजाते और अन्य अङ्गों बिना सर्वकार्य करते हैं ऐसे जो आप और जिनके ऐसे कार्य हैं उनको हमारा प्रणाम है और ऐसे निर्गुण स्वरूप में आप अगुण और अकर्म और अनाम हैं और आप ही सगुणरूप होकर शक्तिसहित विराजमान हैं और भक्तों के मनोरथ पूरे होने के लिये आप शरीर धारण करते हैं और तुम दोनों रूपों में बड़े विहार करते रहते हो हमारे ऊपर अनुग्रहकर हमको संशयों से दूर रक्खो और रात्रि दिवस हमारे मन में अपनी छाया रक्खो हे नारदजी ! यह पहिले पुत्र हमारे इस प्रकार की स्तुति पढ़ा करते हैं सिवाय इनके और जो कोई लोक में बड़े तपस्वी होते हैं वह भी इस लोक में जाकर प्रसन्न रहते हैं अब हम जनलोक का वर्णन करते हैं जो महर्लोक के ऊपर और जो पृथ्वी से दो करोड़ योजन ऊंचा है और जहां सुवर्ण के मन्दिर बहुमूल्य उत्तम मुक्ता और रत्नों से जटित हैं और वहां भृगु आदि मुनि जो हर प्रकार से शुद्ध हैं स्थित होकर शिवजी की सेवा करते हैं और पञ्चाक्षरी मन्त्र शिवजी का जप-कर हाथ जोड़ अति प्रेम से शिवजी की स्तुति पढ़ते हैं कि हे ईश, परब्रह्म, शङ्कर ! आप सब देवताओं के स्वामी हैं और

आप दोषहीन और वेद और पुराण से अलख और बुद्धि से भी परे हैं पर तौ भी आप भक्ति के वश में हैं आप जैसा चाहते हैं वैसा ही सर्वकार्य करते हैं और ब्रह्मा और विष्णु आपकी सेवा करते हैं अब हम तपलोक का वर्णन करते हैं जिसके भवन और मन्दिर रत्नों से बने हैं और सर्वप्रकार भी रत्नों और बहुमूल्य मुक्ताओं से बनाये गये हैं और वहां सब मन्दिरों के आठ खण्ड हैं जहां केवल वही मुनि लोग पहुँच सक्ते हैं जिन्होंने छलछन्द छोड़ कठिन तप किया है यह लोक धरती से चार करोड़ योजन ऊंचा है यहां हमारे पुत्र सिद्ध निर्दोष हैं वे सब शिवजी के पूजन में लगकर पञ्चाक्षरी मन्त्र का जप करते हैं और सनकादिक और दक्षादिक वहां शिवजी की स्तुति गाया करते हैं कि हे गिरिजापति, स्कन्द के पिता ! आप बड़ा आनन्द कृपा करनेवाले और गिरिजा के आनन्द देनेवाले हैं हम पर अनुग्रह कर हमारे सब दुःख दूर करो और आपकी माया जो तीनों लोक की माता और आप से उपजी है उसकी चाल ढाल निराली है तुम्हारी सेवा से विष्णु ने संसार के पालने की सेवा का पद पाया और हमने भी ब्रह्मपदवी पाई और आपकी कृपा से शेषजी भी धरती का भार अपने शिर पर रक्खे हुये हैं और सूर्य-चन्द्रमा-नक्षत्रगण आप ही के प्रताप से उदय होते हैं और आप ही की आज्ञा से अग्नि जलती और पवन चलती और पानी अपनी मर्यादा से नहीं बढ़ता क्योंकि जो पानी अपनी मर्यादा त्याग दे तो धरती सब डूब जावे और आकाश भी सबको अवकाश देता है यह सब आपकी कारीगरी है क्योंकि तीनों लोक आपके अधीन हैं अब हम सत्यलोक का वर्णन करते हैं जो तपलोक के ऊपर है और पृथ्वी से आठ कोटि योजन ऊंचा है वहां रोग चिन्ता और पाप तीनों प्रकार के दुःख और

आधिव्याधि आदि अपना स्पर्श नहीं कर सक्ते हैं ऐसा सत्य-लोक हमने सदाशिवजी की सेवा से पाया है उसकी प्रशंसा और मन्दिरों की सुन्दरता हम कहां तक वर्णन करें जो मनुष्य कि संसार में वेद पढ़ते हैं वे लोग हमारे इस सत्यलोक में प्रवेश करते हैं और जो मनुष्य कि माघमास में प्रयागजी जाकर स्नान करते हैं वे हमारे देश में आकर नाना प्रकार के भोग भोगते हैं अब हम वह कथा वर्णन करते हैं जैसे यह लोक हमने पाया सो गौरीशंकर की आज्ञानुसार उनकी कृपा से हम विष्णु की नाभिकमल से उपजे और एक समय तक इन्द्रियों को जीते हुये शिवजी का शक्ति सहित ध्यान करते रहे ऐसा तप देख शिवजी प्रसन्न हुये और हमारे सामने प्रकट हो शक्ति-सहित हमको दर्शन दिया वह सुन्दरता हम कहां तक वर्णन करें शिवजी के शीश में जटा और गङ्गा की धारा और मस्तक में चन्द्रमा विराजमान माथे में त्रिपुण्ड्र लगाये और कानों में सर्प लटकाये तीनों नेत्र ललाई लिये ओष्ठ कुँकुम के समान लाल और चन्द्रमा के समान सफ़ेद उज्ज्वल मुख सुन्दर केश और कण्ठ में तीनों रेखा और सुन्दर कन्धे और चार २ भुजा जिनमें शूल और कपाल और वर अभय धारण किये हृदय में रुद्राक्ष की उत्तमोत्तम माला पहिने नाभि गम्भीर और कटि अति सुन्दर और जांघें केला के खम्भे के समान पिंडलियां अति सुडौल और चरण कमल के सदृश जो हर प्रकार अपने भक्तों के दुःख दूर करनेवाले हैं और कोटि चन्द्र और सूर्य के समान प्रकाशमान शीश से चरण पर्यन्त सफ़ेद भस्म लगाये हुये जिनको देखकर शतकोटि काम लज्जित हो जावें और बाईं ओर गिरिजा विराजमान जिनकी अतुलित सुन्दरता का वर्णन करना महाकठिन है ऐसे सदाशिवजी का शक्ति सहित

अनूपरूप देख हमारे मन में अति प्रसन्नता हुई और अति प्रेम से हमको कुछ तन-वदन की सुधि न रही पर जब कि हम को चेत हुआ तो हमने प्रणाम किया और अतिप्रेम से स्तुति की हे जगदीश! बड़े सुख के देनेवाले वेद और पुराण सब आपका यश गाते हैं और मन और वचन और वेद आपही की प्रशंसा करते हैं पर फिर भी अलख पुकारते हैं और यद्यपि शुक और सनकादि और मुनि और शेषादि आपका गुण बखानते हैं पर अन्त नहीं पाते और आप अपने भक्तों के अधीन रहते हैं क्योंकि यह बात वेद कहते हैं और आप अपने भक्तों के निमित्त बहुत प्रकार के अवतार लेकर उनको वर देते हैं देखो तुमने हरिकेश और गुणानिधि और चन्द्रसेन और हर और पिङ्गला और वृषकेतु और सेनव्रत और श्रीकरादि को उनके प्रेम के कारण अपने लोक में स्थान दिया हम आपको ब्रह्म निर्गुण और सबसे श्रेष्ठ वर्णन करके कर्मरूप से भिन्न जानते हैं और न्यायशास्त्र आपको प्रमाण के नाम से प्रकट करता है इसी प्रकार वैशेषिक शास्त्र भी यही बात कहता है और सांख्यशास्त्र प्रकृति और पुरुष और पातञ्जलि शास्त्र आपको योग करके प्रसिद्ध करते हैं और मन्त्र यन्त्र और यामलि और डामर और पञ्चरात्र और सोम और सावर और वाम और पाशुपति और नाकुल और कपाल आदि जो मार्ग हैं वे सब आपको ईश्वर जानते हैं निदान जिस प्रकार सर्वजल का समूह सागर है उसी प्रकार जितने संसार में मार्ग हैं वे सब देखने में धारण करने पर अपने २ मनोरथ के अनुसार जाने जाते हैं और वे सब अन्त में आप ही की ओर प्रेरणा करते हैं यद्यपि सर्वमत आपको हरप्रकार से वर्णन करते हैं पर आपका मुख्यरूप नहीं जानते और वेद आपको मन और वचन से न मिलनेवाला और आश्चर्यरूप वर्णन

करते हैं पर वह भी कहते २ थकित होजाते हैं और अन्त नहीं पाते पर जिसके ऊपर आप कृपा करते हैं वह आपको सुगमता से जानता है और बहुत से मनुष्य जो शास्त्र को न जानते और केवल मूर्ख थे केवल प्रेम और नियम से आपको पागये हैं और श्रीकर और बैजू और गुणनिधि आदि ने आपकी सेवा कर मुक्ति पाई इससे विदित है कि आपकी अप्रमेय महिमा है हमको अपना सेवक जान हम पर कृपा करो यह वाक्य सुनकर शिव बोले कि हे ब्रह्मा ! तुम धन्य हो और हमारे बड़े भक्त हो क्योंकि धर्म ने अपना प्रकाश तुम में किया हम तुमको वही वर देते हैं जो तुम्हारी इच्छा हो मैंने विनय की कि हमारे मन का मनोरथ पूरा होवे तब शिव हमारी इच्छा जानकर बोले कि तुम को संसार के उपजाने की शक्ति प्राप्त होगी और सब ब्रह्माण्ड पर तुम्हारा लोक होगा और सर्व जीव जड़ चैतन्य तुम्हारे आधीन रहेंगे और हमारे समान तुमको ज्ञान होगा यह कह शिव अन्तर्धान हो गये और हमने भी सृष्टि उपजाई और अपने लोक में स्थित रहे ।

सत्रहवां अध्याय ।

यह वृत्तान्त ब्रह्माण्ड का सुन नारद ने ब्रह्मा से कहा कि तीनों लोक का न्यूनाधिक्य वृत्तान्त मैंने सुना अब हमको यह इच्छा है कि मन्वन्तरों का हाल सुनूँ ब्रह्माजी बोले कि चौदह मन्वन्तर हैं जो सर्व संसार के जगदीश प्रसिद्ध हैं पहिला स्वायम्भुव दूसरा स्वारोचिष तीसरा उत्तम चौथा तामस पांचवां रैवत छठा चाक्षुष सातवां वैवस्वत जिनका समय बीत रहा है आठवां सावर्णि नवां रुचि दशवां ब्रह्मसावर्णि ग्यारहवां दक्ष-सावर्णि बारहवां रुद्रसावर्णि तेरहवां देवसावर्णि चौदहवां ऐन्द्र-सावर्णि सो यह चौदहों मन्वन्तर हमारे एक दिन में बीत जाते

हैं और हरएक मन्वन्तर के सप्तर्षि और देवता और इन्द्र भिन्न २ हैं अर्थात् पहिले मन्वन्तर के सप्तर्षि आदि अन्य हैं और दूसरे मन्वन्तरों के दूसरे और हर एक मन्वन्तर के दश दश पुत्र हैं और यह मन्वन्तर वर्त्तमान भविष्य और गत समय के हैं और जब कि यह चौदह मन्वन्तर बीत जाते हैं और अपना २ समय पूरा कर लेते हैं तो उसको कल्प कहते हैं और इसी का नाम हमारा एक दिन है और जब कि एक चौयुगी बीत जाती है तो उसके पीछे प्रलय हो जाती है और हम भी आनन्दपूर्वक सो जाते हैं अब हम हर एक मन्वन्तर के लड़कों के नाम और सप्तर्षियों और देवता और इन्द्र जो जिस मन्वन्तर के समय में स्थित होते हैं वर्णन करते हैं पहिले स्वायंभुवमनु हुये जिनके पुत्रों के यह नाम हैं आग्नीध्र १ अग्निबाहु २ मेधा ३ मेधातिथि ४ वसु ५ ज्योतिष्मत् ६ द्युतिमत् ७ हव्य ८ सवन ९ शुभ्र १० जो उनके समय में सप्तर्षि थे उनके यह नाम हैं मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरा ३ पुलह ४ क्रतु ५ पुलस्त्य ६ वशिष्ठ ७ और उस मन्वन्तर के देवताओं का नाम याम और इन्द्र का नाम यज्ञ हुआ दूसरे स्वारोचिष मनु हुये जिनके पुत्रों का नाम हवि १ ध्रुव २ सुकृत ३ ज्योति ४ मूर्ति ५ तप ६ पृथु ७ मनस्य ८ नभ ९ सूर्य १० उनके पुत्रों के यह नाम हैं ऊर्जस्तम्भ १ परस्तम्भ २ ऋषभ ३ वसुमत् ४ ज्योतिष्मत् ५ द्युतिमत् ६ रोचिषमत् ७ और देवताओं का नाम तुषितादित और इन्द्र का रोचन नाम हुआ तीसरे मनु की संज्ञा उत्तम हुई जिनके पुत्र यह हैं दक्ष १ उर्जति २ उर्ज ३ मधु ४ माधव ५ शुचि ६ शुक्रवह ७ नभस ८ नभ ९ ऋषभ १० और इस मन्वन्तर में वशिष्ठ के पुत्र जिनको उर्ज कहते हैं सप्तर्षि हैं और देवताओं को सत्यवेदश्रुत और इन्द्र को सत्याजित् बोलते हैं चौथे मनु का

नाम तामस जिनके पुत्रों का नाम नीचे लिखा गया है द्युतिपात् १ सौतपस्य २ तप ३ तापन ४ तपरति ५ शूल ६ अकल्माष ७ धन्वी ८ खड्ग ९ महर्षि १० और उस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के यह नाम हैं गर्ग १ पृथु २ वागिस ३ जन्य ४ धाता ५ कपीलु ६ कपिवास ७ और देवताओं का नाम सत्य और इन्द्र को विशिष कहते हैं और पांचवें मन्वन्तर का नाम रैवत है जिनके पुत्रों का नाम चौथे मनु के अन्त के चार पुत्रों के समान है शेष पुत्रों के यह नाम हैं निरुत्सव ५ आरण्यप्रकाश ६ निर्देह ७ सत्य ८ चित्त ९ कृतु १० और उस मन्वन्तर में सप्तर्षियों को देववाह १ जयश्रुत २ शिर ३ कनकरोम ४ पर्जन्य ५ ऊर्ध्ववाह ६ सोमप ७ कहते हैं और देवताओं का नाम भूत और इन्द्र का नाम विभु है छठे चाक्षुषमनु हैं और जो अङ्गिरस के लड़कों के नाम हैं वही नाम इस मनु के पुत्रों के भी हैं और गिनती में दश हैं और सप्तर्षियों के यह नाम हैं भृगु १ सुन्दर २ अम्बर ३ विवस्वत ४ सुधर्म ५ विरजा ६ सुहेतु ७ और इस मन्वन्तर में पांच प्रकार के देवता हैं आप १ प्रसूर २ कृतु ३ प्रथुग्र ४ खेल ५ और इन्द्र का नाम मन्त्रद्रुम है सातवें वैवस्वत मनु हैं जो अब बीतते हैं उनके पुत्रों के यह नाम हैं इक्ष्वाकु १ भृगु २ गरुड़धृष्ट ३ शर्याति ४ नारिष्यन्त ५ नाभाग ६ दिष्टक ७ रोष ८ प्रषध्र ९ वसुमान् १० और सप्तर्षियों के यह नाम हैं अत्रि १ वशिष्ठ २ कश्यप ३ गौतम ४ भरद्वाज ५ विश्वामित्र ६ जमदग्नि ७ इस मन्वन्तर में बारह आदित्य और बहत्तर मरुद्गण और ग्यारह रुद्र और विश्वामित्र देवता हैं और इन्द्र को पुरन्दर कहते हैं आठवें सावर्णिमनु हैं जिनके पुत्र वीरवान् १ अवन्तिवन २ सुमन्त ३ धृत ४ मान ५ वसु ६ वरिष्णु ७ आरव्य ८ विष्णुराज ९ सुमति १० और सप्तर्षियों के यह

नाम हैं पराशर १ व्यास २ अत्रिज ३ कृपाचार्य ४ द्रोणाचार्य ५ अश्वत्थामा ६ गालव्य ७ और इस मन्वन्तर के तीन प्रकार के देवताओं के नाम अज १ मरीचि २ कश्यप ३ और बलि इन्द्र का नाम है नवें मनु का नाम रुचि है जिनके पुत्र धृष्टकेतु १ दीप्तकेतु २ पञ्चहस्त ३ निरकृत ४ वृषकेतु ५ प्रथुश्रव ६ द्युम्न ७ श्रव ८ ऋचीक ९ गयबृहत् १० हैं और सप्तर्षियों के यह नाम हैं मेधातिथि १ वसु २ ज्योतिष्मान् ३ धृतमत ४ सावर्णि ५ हव्य ६ पुलह ७ और प्रियमुख देवताओं और प्रभु इन्द्र का नाम है दशवें ब्रह्मसावर्णि हैं जिनके पुत्रों का अक्षय १ उत्तमोजव २ भूरिसेन ३ वृषसेन ४ शतानीक ५ निशमित्र ६ जयद्रथ ७ भूरिद्युम्न ८ दर्श ९ सुवर्चि १० और हिष्मत देवताओं और शम्भु इन्द्र को कहते हैं ग्यारहवें मनु वृषसावर्णि कहे जाते हैं जिनके पुत्रों के यह नाम हैं सर्वगत १ सुरनीक २ क्षामक ३ दर्शकुहु ४ बाहु ५ नामखण्ड ६ मनु ७ दृढेषु ८ सुशर्म ९ अदाह १० और सप्तर्षि इन नामों से प्रसिद्ध होते हैं हविष्मत् १ अनघ २ निस्स्वर ३ अष्टवर्ग ४ चारुधृष्ट ५ वशिष्ठ ६ दत्त ७ और तीन प्रकार के देवता हैं भंगम १ कामगम २ निर्वाणप्रकास ३ और इन्द्र वैधृत कहे जाते हैं बारहवें मनु रुद्रसावर्णि नाम से विख्यात हैं जिनके पुत्र देववान् १ उपदेव २ देवश्रेष्ठ ३ सुरनाथ ४ देवक ५ देवप्रवर ६ वरदेव ७ देवप्रिय ८ सुरप्रिय ९ प्रियरेवा १० और यह सप्तर्षि हैं वशिष्ठसुत १ अत्रिसुत २ अङ्गिरासुत ३ कश्यपसुत ४ पुलहसुत ५ पुलस्त्य ६ भृगुसुत ७ और इस मन्वन्तर में ब्रह्मा के पुत्र पञ्चहरित के नाम से देवता विख्यात हैं और इन्द्र का नाम ऋतुधाम है तेरहवें देवसावर्णि के पुत्रों के यह नाम हैं चित्र १ विचित्र २ तप ३ वृषधृत ४ अग्र ५ सुनेत्र ६ क्षेत्रवृद्ध ७ निर्भय ८ द्रोण ९ सुतप १० और

सप्तर्षियों को धृतमति १ हव्यपान २ तत्त्वदर्शी ३ सुतपाणि ४ परापक ५ निरुत्सव ६ निर्देह ७ बोलते हैं और देवताओं को सुतराम और इन्द्र को दिवसपति कहते हैं चौदहवें मनुपुत्रों के नाम बुध्न १ तरङ्ग २ मेरु ३ विष्णु ४ प्रवीण ५ सुनन्दन ६ तेजस्वी ७ सम्बल ८ तनुय ९ अनूप १० और सप्तर्षियों को अग्नीध्र १ मागध २ अतिबाह्य ३ शुचि ४ युक्त ५ शुक्र ६ अजित ७ कहते हैं और देवताओं का नाम चाक्षुप और इन्द्र का नाम शुचि है ।

अठारहवां अध्याय ।

इतना सुन नारद बोले हे पिता ! मन्वन्तरों का वृत्तान्त सुनकर मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ अब मुझको यह इच्छा है कि सातवें मन्वन्तर अर्थात् वैवस्वत का जो अब बीत रहा है उसका सब वृत्तान्त जानूं और राजाओं की कथा जो इस मन्वन्तर में हो चुकी सुनूं ब्रह्मा बोले कि अब हम वैवस्वतमनु की सन्तान का वर्णन करते हैं और जोकि उक्त मनु की सन्तान में बड़े धर्मवान् राजा बीते हैं इसलिये उनकी कथायें पुण्य और वृद्धि का कारण हैं कि सूर्य जो कश्यप से उपजे उनकी स्त्री संज्ञा नाम से श्राद्धदेव और यम दो पुत्र और यमुना नाम कन्या उपजी फिर संज्ञा सूर्य के तेज की अधिकता से मैथुन और उनका बल न सह सकी और उसको यह शक्ति न रहा कि फिर सूर्य के साथ भोग करे सो संज्ञा ने अपनी स्त्री के समान दूसरी स्त्री बनाई और उसका नाम छाया रक्खा छाया ने अपने उपजने का कारण संज्ञा से पूछा और कहा कि जिस प्रकार तुम्हारा दुःख दूर होजावे वह बात मैं करूं संज्ञा ने छाया को अपने ऊपर प्रसन्न पा उत्तर दिया कि मैं अपने पिता के घर जाती हूं तुम मेरे बदले यहां रहकर हमारे दो लड़कों और एक लड़की को अपनी

सन्तान के समान जानना और उनका पालन पोषण भलीविधि करना जो मुझको चाहती हो तो यही करना और कोई मनुष्य यह भेद न जाने यह सुन छाया ने उत्तर दिया कि अच्छा तुम जाओ जो हम पर बीतेंगी हम सह लेंगी यह सुन संज्ञा मौन हो अतिलज्जा से अपने पिता के घर गई और जब उसके पिता ने मुख्य वृत्तान्त सुना तो संज्ञा से अतिअप्रसन्न हो उसको बहुत भय दिया और निन्दा का विचारकर उसका त्याग कर दिया विचारी संज्ञा अपना स्वरूप बदल घोड़ी का स्वरूप धार उत्तर की ओर वन में चली गई और इधर उधर वन में विकल फिरती रही और अपने घर जाना न चाहा यह हाल सूर्य ने कुछ न जाना और बराबर छाया के साथ रहते रहे और जिस तरह कि संज्ञा से भोग विलास करते थे उसी प्रकार छाया से भी करते रहे यहां तक कि दो बालक और एक कन्या छाया के उदर से उपजे पहिला सावर्णि जो आठवां मनु होगा पहिले उपजा दूसरा शनैश्चर जो सातवां ग्रह है दूसरी बेर उत्पन्न हुआ तीसरी बेर तापती नाम की कन्या जो सावर्णिमनु के साथ ब्याही गई यद्यपि छाया बहुत समय तक इस तरह पर रहती सहती रही कि उसको किसी ने न जाना कि यह संज्ञा नहीं है पर फिर उसको पूर्व की बुद्धि में विरोध उपजा कि वह अपनी मुख्य सन्तान पर अधिक प्रेम करने लगी और संज्ञा के पुत्रों को अतिग्लानि से देखने लगी ऐसी कुदृष्टि सावर्णिमनु ने सह ली पर यम को इस दुःख के सहने की शक्ति न रही और चाहा कि छाया को मारूं इस इच्छा से यम ने अपना पैर छाया के ऊपर मारने की इच्छा से उठाया यह दशा यम की देख छाया ने अतिकोपित हो यम को यह शाप दिया कि जो पैर तुमने हमारे मारने को उठाया है यह पैर तुम्हारा शरीर से भिन्न होकर

गिर जावे यह शाप सुनकर यम क्रोध करते ओंठ कँपाते सूर्य के समीप गये और सब हाल कह सुनाया और विनती की कि हे संसार के प्रकाश करनेवाले, महाराज! हम पर ऐसी अनुग्रह करो कि हमारा पैर गिरने से बच जावे यह सुन सूर्य को अति आश्चर्य हुआ कि यह क्या हाल है और यम से कहा कि यह बात कुछ भेद की भरी हुई है क्योंकि जब माता ने अपनी सन्तान पर न्यून वा अधिक प्रीति की तो इसमें कोई बात अवश्य छिपी हुई है और हमको बड़ा खेद है कि तुम बड़े धर्मवान् सत्यवादी थे सो तुम्हारी माता के क्रोध ने तुमको दोष लगा दिया अब हम मुख्य कारण जान लेवेंगे पर हम वह शाप जो तुम्हारी माता ने तुमको दिया है मिटा नहीं सक्के क्योंकि संसार में कोई पिता यह बल नहीं रखता कि माता के शाप को निवृत्त कर सके पर हम तुमसे कहते हैं कि तुम पृथ्वी में नहीं जावोगे और न तुमको कुछ पीड़ा होगी तुम कुछ संदेह मत करो तुम तीनों लोक के स्वामी और न्यायाधीश होगे यह इस तरह यमको समझाकर सूर्य क्रोध-पूर्वक छाया से कहने लगे कि हे बुद्धिहीन, स्त्री! यह तूने कैसा अकर्म किया है माता के निकट सर्व पुत्र समान होते हैं उनसें थोड़ी और बहुत प्रीति रखनी अच्छी नहीं होती इसका क्या कारण है छाया ने उत्तर दिया कि तुम्हारी स्त्री संज्ञा के यह दो लड़के और एक लड़की है और आरम्भ से अन्त तक सब समाचार कह सुनाया सूर्य यह सुनकर तुरन्त अपने श्वशुर के घर गये और अपने श्वशुर के मुख से संज्ञा का सर्व वृत्तान्त सुन लिया और उन्होंने अपना तेज कम कर दिया और उत्तम रूप धार चले कि ऐसे स्वरूप के देखने से संज्ञा को प्रसन्नता हो और अपने श्वशुर की आज्ञा ले सूर्य उस वन में जहां संज्ञा रहती थी जा पहुँचे और देखा कि संज्ञा घोड़ी बनकर फिर रही है

सूर्य ने अपने को घोड़ा बन चाहा कि सम्भोग करें पर संज्ञा न मानकर भागने लगी निदान सूर्य ने अति कामवश हो अपना वीर्य मुख के मार्ग से संज्ञा के मुख पर छोड़ दिया सो संज्ञा की नासिका से तुरन्त दो पुत्र उपजे जो अश्विनीकुमार के नाम से प्रसिद्ध हैं और वह देवताओं के वैद्य हैं फिर सूर्य ने अपना स्वरूप अपनी स्त्री को अतिसुन्दर कर दिखाया और संज्ञा भी प्रसन्न होकर अपने मुख्यस्वरूप में प्रकट हुई और सूर्य के साथ अपने घर आई और आगे से भी वह अधिक आनन्दपूर्वक रहने लगे और छाया भी बहुत मेल मिलाप से सूर्य के घर रहने लगी और सन्तान की यह दशा हुई कि श्राद्धदेव सातवें मनु हुये और यम ने दिक्पति हो बड़ा पद पाया और यमुना नदी होकर कृष्णचन्द्र की बहुत प्यारी हुई यह संज्ञा की सन्तान है जिसका ऊपर वर्णन हुआ और छाया के सन्तान की यह कथा है कि सावर्णि आठवें मनु हुये और शनैश्चर ग्रह बड़ी पृथ्वी पर स्थित हुये हे नारद! यह चरित्र अतिआनन्ददायक है और यह अतिसन्तानप्रद और मुक्ति मुक्तिदाता है।

उन्नीसवाँ अध्याय।

नारद के पूछने पर ब्रह्माजी बोले कि अब जो मन्वन्तर बीत रहा है अर्थात् श्राद्धदेव का वंश वर्णन करते हैं जिनमें भारी २ राजा बड़े २ तेजवान् यशस्वी हुये हैं कि श्राद्धदेव ने पुत्र की कामना के निमित्त वशिष्ठ मुनि की सहायता से वरुणयज्ञ आरम्भ किया कि कोई तेजवान भाग्यवान् पुत्र उपजे इतने में श्राद्धदेव की रानी ने वशिष्ठ से विनय की कि महाराज! ऐसा उपाय कीजिये जिससे कन्या उपजे क्योंकि कन्या बड़ा पुण्य बढ़ानेवाली है और पुत्री के उपजने से जन्म शुभ हो जाता है और कन्यादान करने से मुक्ति मिलती है सो यह बिनती रानी

को वशिष्ठ ने मान ली और पुत्र के उपजने के मन्त्र के बदले कन्या के उत्पन्न होने का मन्त्र पढ़ा लड़का पैदा होने के बदले कन्या उपजी जिसका नाम इला रक्खा गया और श्राद्ध-देव मनु ने वशिष्ठ से कहा कि यह बात हमारी इच्छा विना क्योंकर हुई वशिष्ठजी ने मुख्य वृत्तान्त राजा से कह सुनाया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता मत करो हम तुम्हारा मनोरथ पूरा करेंगे सो श्राद्धदेव ने इला को अतितेजवान् देख इडा नाम से उसको अपने पास बुलाया और जो दुःख कि मन में था उसको दूर करके कहा कि हमारे पास खेलो इडा बोली कि महाराज! आपको पुत्र की कांक्षा है और जो कि मैं मित्रा-वरुण के अंश से उपजी हूं इसलिये मैं उनके पास जाकर तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगी यह कहा और मित्रावरुण के समीप जा दोनों हाथ जोड़े हुये बिनती की कि मैं आपके अंश से उपजी हूं जो कुछ आप आज्ञा दें सो करूं यह सुनकर मित्रा-वरुण बोले कि हे इडा! हम तुम्हारी बिनती और सत्यता से प्रसन्न हैं तुम संसार में हमारे नाम से प्रसिद्ध होगी और तुम श्राद्धदेव का लड़का होकर सुद्युम्न का नाम पाओगी यह सुनकर इडा तुरन्त निर्भय हो मनु के पास आई और वशिष्ठ ने सदाशिव को प्रसन्न कर यह वर मांगा कि इडा श्राद्धदेव की लड़की लड़का हो जावे शिवजी यह वर दे अन्त-र्धान हो गये और इडा भी लड़का हो सुद्युम्न के नाम से प्रसिद्ध हुये और अपने शुद्ध आचरण से श्राद्धदेव को अतिप्रसन्न रक्खा संयोग से एक दिन सुद्युम्न विदेशियों का वेष धर शिकार खेलने को उत्तर की ओर गया और सुरगिरि के नीचे जहां शिव गिरिजा सहित विहार कर रहे थे जा पहुँचा सो वहां पहुँचते ही सुद्युम्न अपने साथियों समेत स्त्री हो गया ऐसी दशा

के देखने से उसके साथी आश्चर्य में हो चुप हो गये इसका कारण यह है कि एक समय में सब देवतादि सदाशिव के देखने को इसी स्थान पर गये थे उस समय श्रीगिरिजा महारानी शिव के साथ विहार कर रही थीं सो देवता भेंट करने का उचित समय न जान अपना मनोरथ पाये विना लज्जापूर्वक बदरीवन में जाकर ठहरे पर गिरिजा इस बात को जान अतिलज्जित हुईं इससे शिव ने कहा कि आज से जो मनुष्य यहां आवेगा वह स्त्री हो जावेगा इस भय से कोई मनुष्य वहां नहीं जाता निदान सुद्युम्न अपने साथियों समेत वन में अतिदुःखी हो पर्यटन करता रहा और कहीं पर न ठहरा संयोग से चन्द्रपुत्र बुध ने वहां पर सुद्युम्न को जो स्त्री हो गया था देखा और मोहित हो चाहा कि उसके साथ भोग करें और उस स्त्री ने चन्द्रपुत्र से रमना चाहा सो दोनों के संयोग से एक प्रतापवान् पुत्र उपजा जिसका नाम पुरूरवा हुआ जिसका वंश बहुत बढ़ा उसके कुल में बड़े २ प्रसिद्ध राजा उपजे और उसी समय से सोमवंश प्रसिद्ध हुआ जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र ने अवतार लिया यद्यपि सोमवंश संसार में बहुत फैला पर हम विस्तारभय से इस वंश के राजाओं का वर्णन छोड़ देते हैं सो सुद्युम्न ने वशिष्ठ अपने गुरु का बहुत स्मरण किया और गुरु अतिकृपा कर उस स्त्री के पास गये और उसको ऐसी दशा में पाकर इसलिये कि फिर वह पुरुष हो जावे सदाशिव का बड़ा तप करने लगे निदान शिव ने अतिप्रसन्न हो वशिष्ठ से कहा कि जो चाहते हो वही वर हम तुमको देंगे वशिष्ठ बोले कि सुद्युम्न पूर्व के समान फिर पुरुष हो जावे मेरा केवल यही मनोरथ है शिव ने पूर्व का वचन स्मरण कर कहा कि सुद्युम्न एक महीने स्त्री होकर दूसरे महीने पुरुष हो जाया करेगा और अपना राज्य विधि-

पूर्वक करता रहे यद्यपि सुद्युम्न ने यह वर पा राज्य अपने शिर पर लिया पर उसके राज्य में प्रजा उससे प्रसन्न न रही और सुद्युम्न से तीन पुत्र उपजे जिनके नाम उत्कल १ गय २ विमल ३ हुये सो उत्कल के नाम से उत्कल देश प्रसिद्ध हुआ और विमल पश्चिम के देश में स्थित रहे इन तीनों के रहने से वे तीनों देश इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुये निदान राजा सुद्युम्न अपना राज्य पुत्र को दे तपोवन में चला गया और उनके सर्व पुत्र बड़े धर्मवान् राजा हुये ।

बीसवां अध्याय ।

इतना सुनकर नारद ने पूछा कि हे पिता ! राजा सुद्युम्न के राज्य छोड़ने और उनके वन में चले जाने के उपरान्त मनु ने क्या कार्य किया ब्रह्माजी बोले कि मनु के दश पुत्र उपजे जिनके नाम हम अभी वर्णन कर चुके हैं उनमें से इक्ष्वाकु जो सबसे बड़े थे उनका वंश हम वर्णन करते हैं कि इक्ष्वाकु के सौ पुत्र उपजे जो सबके सब धर्मवान् और प्रजा की पालना में अद्वितीय थे उन सौ पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्र का नाम मलकक्ष था और इसी ने अयोध्या का राजा हो परिपूर्ण राज्य किया जो कि श्राद्ध में मांस की आवश्यकता थी इसलिये इक्ष्वाकु ने मलकक्ष से कहा कि मांस लाओ यह अपने पिता की आज्ञा सुनकर मलकक्ष तुरन्त वन में गये और एक शशा को मारकर ले चले मार्ग में श्रम और भूख से कुछ थोड़ा सा उसका मांस भक्षण कर गये बाकी लाकर इक्ष्वाकु को दे दिया वशिष्ठ गुरु ने जाना कि यह मांस जूठा है सो राजा से कहा और राजा इक्ष्वाकु अपने पुत्र से अप्रसन्न हो सब राज्य काज तज वन में चले गये वहां सदाशिव का तप करने लगे फिर उत्तम ज्ञान पा जो उनको वशिष्ठमुनि से प्राप्त हुआ था परम पद को सिधारे

फिर वशिष्ठ ने मलकक्ष को राजा बनाया जिनका नाम संसार में शशाद विख्यात हुआ फिर क्रमपूर्वक नीचे लिखे के अनुसार राज्य करते रहे।

सूर्यवंशीय राजाओं के नाम।

१ वैवस्वतमनु २ इक्ष्वाकु ३ मलकक्ष अर्थात् शशाद ४ रिपुंजय ५ कौस्तुभ ६ हरिवाह ७ अणाभि ८ वशिष्ठराश्व ९ पृथु १० चन्द्र ११ युवनाश्व १२ सारस्वत १३ बृहदश्व १४ कपिल १५ दढाश्व धुन्धमार के तीन लड़कों में से बड़ा था इसी से अवध का राजा हुआ १६ हर्यश्व १७ निमिकुम्भ १८ संहताश्व १९ कृशाश्व २० प्रसेनजित् २१ युवनाश्व जब युवनाश्व के कोई पुत्र न उपजा तो यह राजा अतिअप्रसन्न हो अपनी एकसौ रानियों समेत वन में चला गया और वहां मुनियों ने इकट्ठे होकर राजा से पुत्र प्राप्ति के निमित्त इन्द्रयज्ञ कराया भाग्यवश राजा एक दिन रात्रि को प्यासे हो पानी पीने को उस घर के भीतर गये जहां यज्ञ की सामग्री रक्खी हुई थी और सब मुनीश्वर सो रहे थे सो राजा ने उस कलश का जल पी लिया जिसको मुनीश्वरों ने मन्त्र पढ़ बन्द कर दिया था निदान जब मुनीश्वरों ने प्रभात के समय कलश जल से खाली पाया तो सब मनुष्यों से पूछा और कहा यह वही कलश था जिससे राजा के घर पुत्र उपजता निदान राजा ने सर्ववृत्तान्त जान ईश्वर को दण्डवत् की और नियमित समय के उपरान्त राजा की कुक्षि फाड़कर एक सुन्दर पुत्र उपजा और वह दूध के लिये रोने लगा मुनीश्वरों को अति चिन्ता उपजी कि उसको दूध क्योंकर मिलेगा क्योंकर यह बालक बढ़ेगा सो इन्द्र ने प्रकट हो कहा कि हे मान्धाता! तुम मत रोओ और उसको दूध देकर जीता रक्खा इसी से इनका नाम मान्धाता हुआ और ईश्वर ने राजा युवनाश्व की ऐसी पालना

की कि कुक्षि के फटने पर भी वह जीता रहा फिर राजा राज्य काज मान्धाता को सौंप आप तप में प्रवृत्त हुआ और राजा मान्धाता सर्वभूमि के चक्रवर्ती राजा हुये और त्रसदस्यु के नाम से प्रसिद्ध हुये और मान्धाता के दो बालक उपजे एक पुरुकुत्स दूसरा मुचुकुन्द इनमें से राजा मुचुकुन्द ऐसे हुये कि जिनकी शरण में इन्द्र आये और राजा मुचुकुन्द ने इन्द्र की सहायता की और ऐसा कोई राजा नहीं हुआ और पुरुकुत्स से जो राजा मुचुकुन्द के भाई थे त्रय्यारुणि उपजकर राजा हुआ और उनसे सत्यव्रत नामी एक बालक उपजा जिसने तन्त्र मन्त्रों को भ्रष्ट कर डाला और अपनी स्त्री को मार नाना प्रकार के पाप करने लगा निदान राजा त्रय्यारुणि ने सत्यव्रत को आज्ञा दी कि वह घर से निकल जावे और सत्यव्रत राजा की आज्ञानुकूल घर से निकस रसोईघर के पास रहने लगे और राजा सत्यव्रत अपने पुत्र के कुकर्म देख राज्य छोड़ वन में चला गया और सदाशिव का तप करने लगा और विश्वामित्र भी घर बार छोड़ राजा के निकट तप करने लगे इतने में विश्वामित्र की स्त्री अपने एक पुत्र को जो मँझला था कण्ठ में रस्सी बांध बेंचने लगी और उसका मूल्य सौ गऊ चाहती थी सत्यव्रत ने लड़के को गला बँधा हुआ देख अति अनुग्रह कर उसको छुड़ा दिया और उसका पालन आप करने लगा सो वह विश्वामित्र का पुत्र उस समय से गालव्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ और उसने विश्वामित्र की कीर्ति को बढ़ाया और एक गोत्र गालव्य के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ और सत्यव्रत ने इस प्रकार विश्वामित्र का प्रतिपाल किया और नाना प्रकार के वनपशु मारने लगा और वशिष्ठमुनि राज्य, कुटुम्ब की पालना करते रहे पर सत्यव्रत को घर में न बुलाया यहां तक कि सत्य-

व्रत को बाहर रहते बारह वर्ष बीत गये जब सत्यव्रत को मांस न मिला तो उन्होंने अतिविकल और क्षुधा से क्रोधित हो वशिष्ठ की एक गौ मार डाली और उसका मांस अपने घर लाकर आप मुनि के पुत्र सहित भोजन किया यह समाचार वशिष्ठ ने सुना और उसको बड़ा पापी ठहराया और जो कि सत्यव्रत ने गौ को पहिले तो पितृकर्म और उनकी प्रसन्नता के निमित्त वध न किया था दूसरे वह गौ गुरु की थी तीसरे गुरु से आज्ञा भी न ली थी इससे तीन प्रकार के पापों से महापाप समझ उसका नाम त्रिशंकु रख दिया इतने में विश्वामित्र वन से अपने घर आये और सत्यव्रत के ऊपर अति प्रसन्न हो उसको ऋण्या-रुणि के बदले चक्रवर्ती राजा बनाया और शरीर सहित उसको स्वर्ग में बैठा दिया जहां देवताओं ने उसको स्वर्ग से नीचे डाल दिया पर विश्वामित्र ने उसको गिरने न दिया वरन रोक लिया सो त्रिशंकु आज तक आकाश में दिखाई देते हैं राजा सत्यव्रत से हरिश्चन्द्र उपजे जिन्होंने राजसूययज्ञ पूर्ण किया और संसार में सम्राट् के नाम से प्रसिद्ध हुये पर जब राजा हरिश्चन्द्र के कोई पुत्र न उपजा तो वह अति चिन्तित हो वन में चले गये और वहां नारद से उपदेश पाकर वरुण के मन्त्र का जप किया और यह संकल्प किया कि हे वरुण ! जो हमारे पुत्र उपजेगा तो उसको हम बलि देकर तुम्हारा यज्ञ करेंगे सो वरुण ने प्रसन्न हो कहा कि अच्छा तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा निदान राजा के पुत्र उपजा जिसका नाम रोहित रक्खा गया और तुरन्त वरुण ने पहुँचकर राजा से कहा कि हमारा यज्ञ करो राजा ने उत्तर दिया कि जब पशु बलि दिया जाता है दांतों से रहित हो तब बलि के योग्य होता है अभी इस बालक के दांत हैं ऐसा पशु अभी यज्ञ के योग्य नहीं क्योंकि जब पशु के दांत नहीं होते तो

राजा को जो यज्ञ करता है और पशु के लिये भी उत्तम होता है निदान तुरन्त बालक के दांत गिर पड़े राजा ने कहा कि दांत फिर हो जावें सो दांत तुरन्त पहिले के समान प्रकट हुये वरुण ने कहा कि दांतों करके हीन हो तब वह बालक दन्त रहित हो गया तब राजा ने यह ओढ़र किया कि जब पशु तरुण होता है तब यज्ञ के लिये शुभ है यह कह राजा ने अपने पुत्र के बचाने के लिये वाचालतापूर्वक वरुण को निरुत्तर कर दिया और जब रोहित तरुण हुआ तो उसको वन में भेज दिया कि वह बच जावे जब वरुण ने रोहित को घर में न देखा तो राजा का छल जान बड़ा क्रोध किया और राजा महोदर रोग में व्याप्त हो गया और रोहित ने चाहा कि घर में जाकर राजा को देखूं पर इन्द्र ने ब्राह्मण का स्वरूप धार रोहित के पास जाकर उसको निषेध किया और कहा कि तीर्थ में भ्रमण करना अति पुण्य-दायक है घर जाना कुछ अवश्य नहीं सो रोहित ने ऐसा ही किया और बराबर वन में रहे और इन्द्र प्रति वर्ष आकर रोहित को यही समझाते रहे कि घर जाना अच्छी बात नहीं और रोहित छः वर्ष तक वन २ पर्यटन करते रहे फिर अजीगर्त के मँझले लड़के को मोल ले अपने पिता राजा हरिश्चन्द्र को दिया उस बालक का नाम सत्यपुहुप था जिसको राजा ने बलि दे यज्ञ किया और वरुणादि सब देवताओं को प्रसन्न कर दिया और राजा उस कठिन रोग से छूट फिर रोहित से हरित और हरित से चम्प और चम्प से विजय और विजय से मृग और मृग से वृक और वृक से बाहु उपज कर इसी क्रम से राज्य करते रहे पर जब बाहु पर शत्रुओं ने चढ़ाई कर उनको राज्य से भ्रष्ट कर दिया तो राजा बाहु अपनी स्त्री पुत्र सहित भागकर ऊर्जमुनि की शरण में गये जहां राजा बाहु से सगर उपजे

और सगर विष सहित उत्पन्न हुये थे इसी से उनका नाम सगर अर्थात् विष सहित रक्खा गया और सगर ने मुनि से एक महा-तेजस्वी बाण पाकर शत्रुओं को जीता और अपने पिता का राज्य पा धर्मराज का प्रचार किया।

२२ मान्धाता वा त्रसदस्यु २३ मुचुकुन्द २४ प्रकृतिशक २५ त्रय्यारुणि २६ सत्यव्रत अर्थात् त्रिशंकु २७ हरिश्चन्द्र २८ रोहित २९ हरित ३० चम्पक ३१ विजय ३२ मृग ३३ वर्ग ३४ बाहु ३५ सगर।

इक्कीसवां अध्याय।

इतना कह सूत पौराणिक बोले कि हे मुनियो! जब यह सगर का वृत्तान्त नारद श्रवण कर चुके तो जगतपिता श्रीब्रह्माजी से पूछा कि महाराज! बाहु के पुत्र क्योंकर विषसहित उपजे जिससे उनका नाम सगर हुआ ब्रह्मा बोले कि जब राजा बाहु रात दिन स्त्रियों से भोग विलास में फँसा और राज्यकाज सब त्याग दिया तो उस समय हैहय, तालजंघ और शक यह तीनों राजा जो उसके बड़े शत्रु थे राक्षसों के पास व समूहसहित जो उनके सहायक थे राजा बाहु पर चढ़ धाये और राजा को परास्त कर आप राज्य करने लगे और उन्होंने अपने मित्रों को बहुत से देश दे दिये और राजा बाहु राज्यभ्रष्ट हो ऊर्जमुनि की शरण में जाकर वहां रहे उनकी बड़ी रानी गर्भवती हुई और उसकी सवति ने ईर्षा और वैरभाव से उस रानी को विष दे दिया कि वह या उसका गर्भ जीता न रहे निदान राजा बाहु वहां ऊर्ज-मुनि के स्थान पर मर गये और उसकी बड़ी रानी ने सती होना चाहा पर ऊर्जमुनि ने सती न होने दिया और उसी से राजा का क्रियाकर्म कराकर उसको अपने यहां ठहराया जहां शुभ-लग्न में रानी से एक अति तेजस्वी बालक उपजा और ऊर्ज-

मुनि ने बालक को विषसहित देख उसका नाम सगर रख दिया और जातकर्म करने के अनन्तर उक्त मुनि ने सगर को पहिले सब विद्या सिखाई फिर ऐसा बाण दिया जो हर एक को मिलना कठिन है और शिवजी की पूजा सिखाकर उससे शिवजी का पूजन कराया शिव सगर से अति प्रसन्न हुये और सगर शिवजी की प्रसन्नता और ऊर्जमुनि की सहायता से शत्रुओं पर चढ़ उसी बाण से जो उक्त मुनि ने दिया था सब शत्रुओं का विनाश कर उन पर प्रबल हुये और राक्षसादि जो यवन की जाति में से थे भाग गये और जाकर उन्होंने वशिष्ठ की शरण ली और सगर ने वशिष्ठजी के निषेध करने और उनका पक्ष करने से उनको वध करना छोड़ा पर उन सबके मुख्यधर्म को नष्ट कर दिया कि कइयों के शिर भर के सब बाल मुड़ा डाले और कइयों के आधे बाल कटवाकर आधे रहने दिये इसी प्रकार हर एक का अनादर कर निकाल दिया और वेद के अनुसार सबको स्थित किया फिर सगर ऊर्जमुनि को गुरु बनाकर अश्वमेध यज्ञ करने लगे और संस्कार कर घोड़ा सेना के साथ भेजा और राजा के साठ हज़ार पुत्र भी साथ गये सो घोड़ा समुद्र के अग्निकोण में गया जहां इन्द्र ने छल करके घोड़ा चुरा लिया और कपिल मुनि के समीप बांधकर आप चले गये और राजा के सब पुत्रों ने ढूँढ़ने पर भी कहीं पृथ्वी भर में घोड़ा न पाया तो पृथ्वी खोदने लगे और जब कि घोड़े को देखा कि कपिल मुनि के पास बँधा हुआ है तो वे सब एक ही बेर कहने लगे कि यही मनुष्य है कि जिसने हमारा घोड़ा चुराया देखो यह मनुष्य कैसा धूर्त है कि आँखें बन्द किये बैठा हुआ है और हमारा घोड़ा चुराया इसको मारो और मार डालो क्योंकि यह बड़ा पापी है यह कहा और अपने शस्त्र लेकर कपिल की ओर

चढ़ दौड़े जब कपिल ने अपनी आँखें खोलीं तो वे सब श्रीकपिलदेव महाराज की क्रोधाग्नि से जलकर तुरन्त ही भस्म होगये केवल चार बालक जीते बचे और पञ्चजन्यनामी एक और बालक जो दूसरी रानी से था जीता रहा उसी पञ्चजन्य का दूसरा नाम असमञ्जस है और जिससे अंशुमान् नामी एक बालक उपजा और उसी अंशुमान् ने कपिल के पास से घोड़ा लाकर यज्ञ पूर्ण कराया यह सुनकर नारद ने ब्रह्मा से पूछा कि आप इस कथा को विस्तार से वर्णन करें ब्रह्माजी बोले कि यह पञ्चजन्य अर्थात् असमञ्जस केशिनीनामी रानी से उपजा था वह पहिले जन्म में योगी था और योग के भ्रष्ट होने से राजा के घर उपजा और अयोध्या के बालकों को इकट्ठा कर सरयूनदी में जहां वह खेला करता था सबको डुबाकर मार डाला सो उन लड़कों के माता पिता ने असमञ्जस के ऐसे कुकर्म देख राजा से जाकर पुकारा राजा ने असमञ्जस को घर से निकाल दिया पर असमञ्जस अपने पिता से अलग हो प्रसन्नतापूर्वक सरयूनदी के तट पर गया और सब बालकों को जीता ही सरयू से बाहर निकाल दिया यह देखकर सब अयोध्यावासी अति आनन्द और आश्चर्य को प्राप्त हुये और राजा ने भी आश्चर्य कर अपने पुत्र को सिद्ध योगी समझा निदान अंशुमान् जो असमञ्जस का पुत्र था अपने दादा राजा सगर की सेवा करता रहा और घोड़ा लाने को समुद्र के तट पर जाकर उस मार्ग से जिसको उसके बड़ों ने खोदा था पृथ्वी के नीचे गया और देखा कि एक ढेर भस्म का इकट्ठा है और विष्णु के अवतार कपिलमुनि बैठे हैं सो अंशुमान् ने दण्डवत् के उपरान्त प्रणाम किया और कपिल ने अंशुमान् से बहुत प्रसन्न हो कहा कि यह घोड़ा जो बँधा हुआ है राजा सगर की

यज्ञ का है तुम इसको ले जाकर यज्ञ पूरा करो और ये तुम्हारे साठ हज़ार चचा जलकर भस्म होगये हैं इसमें हमारा कुछ अपराध नहीं है यह सब गङ्गा जल से मुक्ति पावेंगे तुम गङ्गाजी के लाने के लिये युक्ति करो यह सुन अंशुमान् ने अतिप्रसन्नता से घोड़े को लाकर यज्ञ पूर्ण किया और बहुत सा धन और द्रव्य यथायोग्य बांटा और राजा सगर ने एक सौ अश्वमेध यज्ञ किये और संसार भर का राज्य किया फिर अंशुमान् को अयोध्या का राज्य काज दे आप महावन में तप करने गये और ऊर्ज-मुनि के उपदेश से सदाशिव की पूजा कर परमपद पाया।

बाईसवां अध्याय।

इतना सुनकर नारद ने पूछा कि राजा सगर के साठ हज़ार पुत्र क्योंकर उपजे और असमञ्जस क्योंकर उत्पन्न हुये ब्रह्मा बोले कि राजा सगर के दो रानियां थीं एक का नाम सुमति था और दूसरी को केशिनी कहते थे इन दोनों रानियों ने अपनी सेवा से ऊर्जमुनि को अति प्रसन्न किया एक दिन मुनि ने अति प्रसन्न हो कहा कि तुम दोनों की जो इच्छा हो वह हमसे मांगो यह सुन सुमति बोली कि मुझको साठ हज़ार पुत्र दीजिये और केशिनी ने कहा कि मैं केवल एक पुत्र चाहती हूं मुनि ने कहा कि यही होगा सो सुमति से एक तोंबी जो छोटे २ बीजों से भरी थी प्रकट हुई उस तोंबी को घृत के कुण्ड में डाल दिया जिससे निर्दोष उत्तम साठ हज़ार बालक उत्पन्न हुये और कपिल मुनि के क्रोध से जल गये और केशिनी से एक बालक उपजा जो पञ्चजन्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसका ऊपर वर्णन हुआ और पञ्चजन्य से अंशुमान् उपजे और अंशुमान् से राजा दिलीप पैदा हुये सो राजा अंशुमान् ने दिलीप को राज्य दे गङ्गाजी के लाने के लिये बड़ा तप किया निदान

मनोरथ पाये विना उसी अपने तपस्थल में मर गये और राजा दिलीप भी राज्य त्याग करके गङ्गाजी के लाने को गये और अपने पुत्र को राज्य दे आप भी मनोरथ पाये विना स्वर्गी हुये पर उनके पुत्र भगीरथ गङ्गाजी के लाने को गये और उन्होंने अपने तप से आदिशक्ति महारानी को प्रसन्न किया और गङ्गाजी ने प्रसन्न होकर भगीरथ को अपने दर्शन से कृतार्थ किया जब कि राजा भगीरथ ने अपना मनोरथ कहा तो गङ्गाजी ने कहा कि हे राजा भगीरथ! हम चलने को उद्यत हैं पर संसार में ऐसा कौन है जो हमारे वेग को रोंके क्योंकि रोंकने विना हम लोकों को छेद भूतल को चली जावेंगी यह सुनकर राजा भगीरथ ने सदाशिवजी का बहुत दिनों तक तप किया और सदाशिवजी प्रसन्न होकर राजा भगीरथ के सम्मुख प्रकट हुये राजा भगीरथ ने प्रणाम कर बड़ी स्तुति की सदाशिवजी बोले कि वर मांगो राजा ने अपना मनोरथ कह सुनाया सदाशिवजी ने अङ्गीकार किया क्योंकि वे सदा गर्व के दूर करनेवाले हैं और जब कि भगीरथ ने गङ्गाजी से विनय की कि सदाशिव तुम्हारा वेग सहेंगे तब गङ्गा ने अपनी धारा छोड़ी जिससे तीनों लोक में हाहाकार मच गया उस समय सर्वजीव अति विकल हुये और सदाशिव ने केवल अपनी जटा में गङ्गाजी को रोंका कि फिर उनकी धारा दिखाई न देती थी कि कहां चली गईं और राजा भगीरथ ने अपना मनोरथ सिद्ध होते हुये न देख शिव की बड़ी स्तुति की सो शिव ने प्रसन्न होकर अपनी जटा को निचोड़ा जिससे तीन बूंदें निकलकर तीन धारा हो गईं पहिली धारा पाताल को चली गई जिसका नाम भोगवती है और दूसरी धारा आकाश में विराजमान हुई जिसको मन्दाकिनी कहते हैं और तीसरी धारा भगीरथ के साथ

हुई जिसका नाम भागीरथी है निदान राजा भगीरथ गङ्गा को लेकर चले सो गङ्गा सब देशों को पवित्र करती हुई वहां पहुँची जहां कि राजा सगर के पुत्र भस्म का ढेर हुये पड़े थे और केवल गङ्गाजल के स्पर्श से वे सब स्वर्ग को चले गये जो मनुष्य गङ्गा को निश्चयपूर्वक पूजते हैं वे निस्संदेह मुक्त होकर आवागमन से छूट जाते हैं और राजा सगर का कुल इस प्रकार है जो क्रमपूर्वक राज्य करते रहे ।

३६ असमञ्जस ३७ अंशुमान् ३८ दिलीप ३९ भगीरथ ४० श्रुत ४१ नाभि ४२ सिन्धुद्वीप ४३ अयुतायु ४४ ऋतुपर्ण राजा बलि के मित्र जिनको सुदास भी कहते हैं ४५ अनुपर्णा ४६ मित्रसह जिसको कल्माषपाद भी कहते हैं ४७ सर्वकर्मा ४८ अनरण्य ४९ मरिडद्रुम ५० निघ्न जिसको खट्वाङ्ग भी कहते हैं यह चक्रवर्ती राजा हुआ इनका नाम भी चक्रवर्ती था ।

तेईसवां अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि खट्वाङ्ग से दिलीप उपजे जिनको दीर्घबाहु भी कहते हैं जिन्होंने उत्तम धर्म से राज्य किया और गुरु की गौ को जिसका नाम नन्दिनी था उसकी बहुत सेवा की और उसी की सेवा से राजा के एक पुत्र उपजा जिनका नाम रघु हुआ जिन्होंने पृथ्वी भर को जीत लिया और जिनके नाम से सूर्यवंश रघुवंश के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ और रघु से राजा अज उपजे जिन्होंने धर्मयुद्ध कर अपने शत्रुओं को जीता उनकी रानी का नाम इन्दुमती था और अज से राजा दशरथ उपजे जिन पर शनैश्चर ग्रह का कुछ बल न चला और राजा दशरथ से चार बालक उपजे राम १ लक्ष्मण २ भरत ३ शत्रुघ्न ४ जिनकी उपमा वर्णन नहीं हो सक्ती और रामचन्द्र मुख्य विष्णु के अवतार हैं उनका चरित्र वर्णन करना अवश्य

नहीं क्योंकि उनके शुभ चरित्र सब कोई जानते हैं उनके नाम लेने और सुनने से सर्वपाप नष्ट हो जाते हैं राजा दिलीप की वंशावली नीचे लिखी है।

५१ दिलीप ५२ रघु ५३ अज ५४ दशरथ ५५ रामचन्द्र ५६ कुश ५७ अनित्य ५८ निषध ५९ पुण्डरीक ६० क्षेमध्वज ६१ दिवा ६२ आविक ६३ पारिपत्र ६४ बलि ६५ अस्थिल ६६ वज्रनाभ ६७ खगन ६८ कङ्कनाभ इनके समान जैमिनि के शिष्यों में कोई दूसरा नहीं हुआ और याज्ञवल्क्य ने इनसे योगशास्त्र में पूर्णता प्राप्त की ६९ पुष्प ७० ध्रुवसिन्धु ७१ सुदित ७२ अग्निपर्ण ७३ शीघ्र ७४ मरुत्त।

मरुत्त सदा अमर हैं जो यज्ञ मरुत्त ने किया है उसके समान दूसरा यज्ञ नहीं हुआ और शेष उन्हीं की सामग्री से राजा युधिष्ठिर ने भी यज्ञ किया था और न मरुत्त के बराबर और कोई राजा हुआ है वे महाशैव थे और चक्रवर्ती राजा थे उन्होंने कलियुग का आगमन जान भरतखण्ड को छोड़ दिया और कलापग्राम में जहां सप्तमुनीश्वर चले गये थे वहां आप भी जाकर ठहरे जब कलियुग बीत जावेगा तब मरुत्त फिर भरतखण्ड में आवेंगे और सूर्यवंश को फिर बढ़ावेंगे और मरुत्त के उपरान्त राजा वाण मरुत्त की सन्तान से राजा हुये।

७५ प्रश्नकृतसिन्धु ७६ उष्ण ७७ सहस्रबाहु ७८ पशुशाङ्कि ७९ प्रसेनजित् ८० तक्षक ८१ बृहद्बल जिनको अर्जुन ने मार डाला।

सो इक्ष्वाकु से बृहद्बल तक सब राजा इक्ष्वाकुवंशी हैं और अब आगे जो राजा कहे जाते हैं वह भविष्यकाल के राजा हैं जिनको हम भविष्यवाणी करके वर्णन करते हैं यह राजा आगे श्रीअयोध्या नगरी में होंगे।

८२ बृहदारण्य राजा बृहद्बल से उपजेगा और उनकी सन्तान में नीचे लिखे राजा राज्य करेंगे ८३ उरुकऋषि ८४ वत्सनबृद्ध ८५ प्रतिव्योम ८६ द्वारक ८७ सहदेव ८८ बृहदश्व ८९ भानुमान् ९० प्रतीकाश ९१ सुप्रतीक ९२ मुरदेव ९३ सुनकच्छत्र ९४ पुष्कर ९५ अन्तरक्ष ९६ सुशा ९७ अमित्रजित् ९८ बृहद्राज ९९ विरही १०० कृतञ्जय १०१ रणजय १०२ शाकप्रेश १०३ सिद्धोद १०४ लाङ्गल १०५ प्रसेनजित् १०६ क्षुद्रक १०७ रङ्गयाम १०८ सुरथ १०९ सुमन्त्र ।

यह इक्ष्वाकुवंश केवल सुमन्त्र तक होगा और सुमन्त्र पर पूर्ण होजावेगा और फिर दूसरा वंश चलेगा इस सूर्यवंश की कथा अति पवित्र है जिसके पढ़ने सुनने से आनन्द प्राप्त होता है और सर्व कामना सिद्ध होती हैं ।

चौबीसवां अध्याय ।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे महाराज ! आपने सूर्य को श्राद्धदेव के नाम से वर्णन किया इससे हम चाहते हैं कि श्राद्धदेव का सर्व वृत्तान्त और श्राद्ध का विस्तारपूर्वक विधान आपसे सुनें क्योंकि श्राद्ध करने से अपने पितर बहुत प्रसन्न होते हैं पर हम नहीं जानते कि पितर कौन हैं यह प्रश्न नारद का सुनकर ब्रह्मा बोले कि यही प्रश्न भीष्मपितामह ने मार्कण्डेय मुनि से किया था और मार्कण्डेय मुनि ने उत्तर दिया था सो वही प्रश्नोत्तर हम वर्णन करते हैं और मार्कण्डेय मुनि ने सनत्कुमार के द्वारा पितरों का हाल जाना था जिन्होंने भीष्म से कहा और भीष्म के द्वारा राजा युधिष्ठिर ने सुना था ।

राजा युधिष्ठिर ने भीष्म से उस समय में जब कि भीष्म कुरुक्षेत्र में घायल हो बाणों की शय्या पर लेटे हुये थे विनय की कि महाराज ! जो मनुष्य संसार में पुष्टि की इच्छा रखते हैं

उनको क्या करना चाहिये और वंश के बढ़ने का कौन उपाय है और संसारी खेद और चिन्ता से छूटने के लिये शास्त्र की क्या आज्ञा है ? यह प्रश्न युधिष्ठिर से सुनकर भीष्म बोले कि जो मनुष्य तन मन से श्राद्ध करते हैं वे सब मनोरथ पाते हैं और जब पितर प्रसन्न होते हैं तब निस्संदेह वंश की वृद्धि होती है और पितरों की प्रसन्नता से दोनों लोक में अप्रमेय आनन्द मिलता है और पितर देवताओं के भी देवता हैं जिनकी सेवा से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है और संसार में पितरों की सेवा से सब कुछ मिला है यह पितरों की महिमा युधिष्ठिर ने सुनी और अति आश्चर्य से विनय की कि महाराज ! आपने जो यह महिमा पितरों की वर्णन की ठीक २ है आप मुझे इस बात की आज्ञा दें कि मैं आपसे पूछूं कि कई मनुष्यों के पितर नरकों में पड़े हुये हैं और कइयों के स्वर्ग में और कइयों के मनुष्य होकर संसार में हैं सो यह सब बराबर क्योंकर अपनी सन्तान के विषय में इतनी भलाई कर सक्ते हैं मुझको समझाइये मैं इस बात के मानने में कुछ संकोच करता हूं भीष्मजी बोले कि एक दिन हम श्राद्ध करने लगे और हमारे पिता राजा शन्तनु देव-स्वरूप धारण करके हमारे पास आये हमने चाहा कि उनके हाथ में पिण्डा रख देवें पर शन्तनु बोले कि इस तरह से पिण्डा देना उचित नहीं तुमको चाहिये कि पिण्डा कुशा में रखकर पृथ्वी में रख दो सो हमने इसी तरह पर किया और हमारे पिता शन्तनु ने अति प्रसन्न हो कहा कि जब तक तुम्हारी जीने की इच्छा हो तब तक तुम जीते रहोगे और ऐसे बलिष्ठ होगे कि तुम्हारे समान संसार में दूसरा वीर न होगा सिवाय इसके और जिस पदार्थ की तुमको इच्छा हो वह हमसे मांगो क्योंकि कोई वस्तु ऐसी नहीं है कि जिसको हम नहीं दे सक्के हमने विनय की कि

जो आप मुझसे प्रसन्न हैं तो जो बात मैं पूछता हूं वह मुझे बता दीजिये कि आप पितर और श्राद्ध का हाल मुझे सुना दीजिये शन्तनु बोले कि हमने एक बेर मार्कण्डेय मुनि से पितृकल्प पूछा था और जो कुछ कि उन्होंने हमको उत्तर दिया था वह यह है कि मार्कण्डेयजी ने कहा कि एक बेर हम तप करते थे कि अकस्मात् हमारी दृष्टि आकाश की ओर चली गई और हमने देखा कि एक विमान जिसमें एक बालक अंगुष्ठ के प्रमाण बैठा हुआ है अन्तरिक्ष में उड़ता हुआ चला जाता है हमने दण्डवत् कर प्रणाम किया और कहा कि आप कौन हैं हम चाहते हैं कि आप अपना वृत्तान्त हमको सुनावें तब उस लड़के ने कहा कि हम सनत्कुमार हैं और हमारे चार भाई और हैं तब हमने कहा कि कृपा करके हमको पितरकल्प सुनाइये सनत्कुमार बोले कि पूर्वकाल में जब कि ब्रह्मा ने देवताओं को उपजाया और उनसे कहा कि हमारा यज्ञ करना क्योंकि तुम हमारी सन्तान हो पर देवता यह ब्रह्मा की आज्ञा न मानकर अपने प्रयोजन में लगे रहे तब ब्रह्मा ने अपना तेज बढ़ाकर अति क्रोध से देवताओं को यह शाप दिया कि तुम सब सत्यज्ञान और ब्रह्मज्ञान से विहीन होजाओगे और माया में भटकते फिरोगे सो ऐसा ही हुआ कि देवताओं का सब ज्ञान जाता रहा और वे सब दुःखी और विकल हो ब्रह्माजी की शरण में आये और जब ब्रह्माजी को अपनी सेवा से अति प्रसन्न किया तब ब्रह्माजी ने कहा कि जब तुम सब अपने विमानों को छोड़ अपने लड़कों से विनयपूर्वक पूछोगे तब तुमको पूर्ववत् ज्ञान प्राप्त होगा सो देवताओं ने ऐसा ही किया और बालकों ने अपने २ पिताओं से कहा कि हे पुत्रो! तुम पूर्व के समान ज्ञान पाओ जब कि देवताओं ने अपने पुत्रों के मुख से यह वचन सुना कि

सब जो वास्तव में हमारे पुत्र हैं और धर्म के विरुद्ध वे सब
अपना पुत्र कहते हैं तो वे सब आश्चर्य और लज्जा से
की सेवा में पहुँचे और विनय की कि महाराज! बड़ा
धेर है कि हमारे पुत्र हमीं को अपना लड़का कहते हैं यह
द हम लोगों के समझ में नहीं आता हम चाहते हैं कि यह
हम पर खुल जावे ब्रह्माजी बोले कि तुम सब बुद्धिहीन और
हो और तुम्हारे पुत्र ज्ञानवान् हैं क्योंकि जो तुम्हारे लड़कों
तुमसे कहा वह बहुत ठीक है और जो कि तुमने उनको
पजाया और उनके शरीर धारण के कारण हुये वे सब धर्म के
वढ़ानेवाले हैं इससे वे सब और तुम जितने कि देवता परस्पर
पुत्र हो सो तुमको चाहिये कि तुम सब जाकर यज्ञ करो कि हम
सबको आनन्द कृपा करें यह सुनकर देवता पितरों के
रव्य वृत्तान्त जानकर अति प्रसन्न हुये और उसी समय से
देवता और पितर मिलकर संसार के सब कार्य करते हैं जो
मनुष्य पितरों का श्राद्ध करता है वह सब मनोरथ पाता है और
पितर सब परस्पर पुत्र हैं और सब मनोरथों के पूरे करने की
शक्ति रखते हैं इनमें से तीन शरीर रहित और चार शरीर
सहित हैं और यह पितर देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं इस बात
को निश्चय करके और तुम केवल पितरों की भक्ति के कारण
जरा मृत्यु से छूट जाओ क्योंकि तुम्हारे समान दूसरा पितरों
की सेवा करनेवाला नहीं है और वेद कहते हैं कि देवताओं
की पूजा से पितरों की सेवा श्रेष्ठ है और पितृभक्ति से वंश की
वृद्धि और दोनों लोक में आनन्द और रोग और निर्बलता से
छुट्टी मिलती मनोरथ पूरे होते और धन और द्रव्य सब कुछ प्राप्त
होता है और जो परमपद कि जप और योगादि उपायों के करने
से नहीं मिलता जैसा कि प्रेमपूर्वक पितरों की भक्ति करने से प्राप्त

होता है और जो मनुष्य अपने गोत्र का नाम लेकर वाक्य शुद्ध पढ़कर पिण्डा देते हैं वह मनुष्य हर प्रकार प्रसन्न रहते हैं और पितर पितामह प्रपितामह आदि श्राद्ध के समय सब आते हैं और अपने नाम का पिण्डा सब लेते हैं पर पवित्रता और शुद्धता अवश्य चाहिये और जो मनुष्य पितरों का तर्पण करते हैं वह मनुष्य लोक परलोक में बड़ा आनन्द उठाते हैं इसलिये उचित है कि पितरों की भक्ति सबसे अधिक करे वे मनुष्य संसार में शुभ हैं जिनको पितरों का प्रेम अधिक है और जो मनुष्य पितरों की सेवा करनेवाले हैं वे शिव को बहुत प्रिय हैं सो जो मनुष्य सदा शिव को प्रसन्न करना चाहे उसको पितरों की भक्ति अवश्य करनी चाहिये हे शान्तनव ! यह पितृमहिमा सनत्कुमार ने मुझको सुनाकर दिव्य दृष्टि कृपा की और अति कृपा से हमको ज्ञान दिया और आप तुरन्त अन्तर्धान हो गये इसलिये तुमको उचित है कि पितरों की भक्ति करो क्योंकि पितरों के समान कोई नहीं जानना चाहिये कि पहिले पितरों की पूजा करे फिर और सबकी पूजा करे मनुष्य चाहे कैसा ही भ्रष्ट और पापी होवे पर पितरों की प्रसन्नता से उसके निकट कोई दुःख नहीं आता जो मनुष्य पितरों की महिमा पढ़ता सुनता है वह दोनों लोक में आनन्दित रहता है ।

पच्चीसवां अध्याय ।

मार्कण्डेयजी बोले कि हे भीष्म ! पूर्वकाल में भरद्वाज मुनि के सात पुत्र उपजे जिन्होंने योग कर बड़ा यश पाया और अपने किसी कुकर्म से योग की पदवी से च्युत हो दूसरे जन्म में वे सातों विश्वामित्र के पुत्र हुये और गर्ग मुनि को अपना गुरु बनाया उनके नाम यह थे पहिला पाकदिष्ट, दूसरा क्रोधन, तीसरा उदित, चौथा हनसर्प, पांचवां सनक, छठां विषसर्प,

पिता मर गये तो सातों ने धनुष और बाण फेंक दिया और
में रहकर अन्त को मर गये और तुरन्त हरिण हो कालि
पर्वत में रहने लगे पर उनको पूर्व के जन्मों का स्मरण बना
इसी से वह धर्म के मार्ग में स्थित रहे उनके नाम यह हुये प
थ, दूसरा त्रसित, तीसरा उन्मुख, चौथा बधिर, छठवाँ
। अनेत्र, सातवां नारदप्रिय सो इन सातों ने पहिले जन्म
रण रहने से पशुओं के धर्म त्याग दिये और बिन स्थान
ग विलास रहित रहने लगे और योग कर भारी तप
समय के उपरान्त उसी कालिञ्जर पर्वत में मर गये सो
उनके चरण चिह्न उक्त पर्वत में दिखाई देते हैं और
रान्त सुरद्वीप में चकवा चकवी होकर पशु के सम
र्म न किया वरन वेद के अनुसार उन्होंने सब काम वि
को पूर्वजन्म की सुधि बनी रही और उनके यह
हिला निस्पृह, दूसरा निर्मम, तीसरा शान्त, चौथा
ांचवां अपरश्र, छठा निवृत्त, सातवां निवृत्त सो यह
तीर तप करते मर गये और फिर मानसरोवर में
र्वजन्म के चरित्रों को जानते रहे और कोई पहिला
भुलाया और ब्रह्मज्ञान में भरपूर रहे उनके नाम
हिला सुमन, दूसरा सुवाक्, तीसरा सिद्ध, चौथा पञ्च
दर्शन, छठां सुनेत्र, सातवां स्वतन्त्र और यह
ह स्थल है जहां से सरयूनदी निकली है और जहां
हंस रहा करते हैं और तपी और योगी और सि
जगह है और सदाशिव अहर्निश वहां विरा
रते हैं और यह मुख्य सदाशिव के रहने का
ने से मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है निदान यह
है नि को तीर

वां पितृवर्ती सो विश्वामित्र ने अपने सातों लड़कों से
सन्न हो उनको शाप दे दिया और अपने आश्रम से
ाला तब वे सब गर्ग मुनि के पास जा शिष्य हो फिर वहीं रहे
र्ग मुनि के पास एक कपिला गौ थी जो वर्ष भर में एक
देती अकस्मात् एक दिन वह किसी चरवाहे बिना वन
गई गर्ग ने उन शिष्यों को गौ लाने को भेजा लौटने
वह ऐसे भूखे हुये और बालकपन की बुद्धि से ऐसा
कि उन्होंने गौ को मारकर भूख मिटाने का उद्योग कि
फिर कुछ उनमें से कहने लगे कि गुरु की गौ को मार
नहीं और कइयों ने इस बात को माना भी नहीं
ालक ने जो पितरों का भक्त था उसने कहा कि
ी गौ के वध करने पर तय्यार हो तुमको उचित है।
ितरों का आवाहन करके श्राद्ध करो और फिर पू
ा कार्य करो तो इस युक्ति से अवश्य है कि तुम प
न होगा निदान सब भाइयों ने इस बहाने से मिलक
ांस से पेट भरा और गर्ग से आकर कहा कि महाराज
ूध की खानि थी उसको सिंह खा गया पर उसका बच्च
हे गुरु जो बड़े कृपावान् और सीधे थे उन्होंने
त्य जान गौ के बच्चे को ले लिया और वे सातों भा
भाई ही हुये और व्याध के घर उपजे पर चा
ाध के घर में जन्म लिया पर वह जीवों का वध न
सारनदेश में स्थित होकर धर्म में दृढ़ रहे केवल इस
उन्होंने पितरों के कार्य के निमित्त गो-वध किया थ
वामे जन्मों और ज्ञान को न भूले और उनके नाम य
के नाम नरवीर, दूसरा निवृत्ति, तीसरा शान्त, चौ नय
चौथा